॥ आयुर्वेद प्रादुर्भाव ॥

श्रीप्रभू परममंगल परमपुरुष श्रीऋषभ देवभगवांन पहलीसम्यक्त पायके १३ भव किया जिसमें नवमें भवमें प्रभु जीवानंदनामके सर्वविद्यासंपन्न वैद्य भये फेर तीर्थंकर नांम पुण्य पैदाकर सर्वार्थ सिद्ध विमान १२ में भवमें गये उहां निर्मल तीन ज्ञानयुक्त मरु-देवीराणीनाभराजाके पुत्रपणे युग ईश्वर १३ में भवमें भये सर्व संसारधर्म चलाया आगे लोकोंकों रोगाग्रसित जाण ऋषभसंहिता या ब्रह्मसंहिता नांम आयुर्वेद तीनकाल भूत १ भविष्यद् २ वर्त्तमान ३ विधियुक्त मनुष्योंके हितार्थ रचनाकी अष्टांगोपांग समेत पूर्वकृत अभ्यास औरमति १ श्रुति २ अवधि ३ इस तीनज्ञानके निर्मल बलसें धनंजय कोपमें ऋषभदेवका नाम ब्रह्मालिखा है, समवसरणमें चार मुखसे देशना देणेसे फेर जंगलमेंसें अनेक औषधी और पृथ्वीगत धातु उपधातु वगेरे रस रसायणरूप रोग दूर करणेकों अनेक युक्तियां निकाली फेर अपणे शंतानोंकों यह विद्या सीखाकर परंपरा वढाई जिसमे आत्रेयनें ये विद्या पूर्ण सीखी दिनपर दिन रसायणविद्याकी उन्नतीकी ध्वजा फरकणेलगी नई २ सुद्धिकी खोज निकासने लगे तद पीछे स्वामी इस प्रजाके सुख-जीवनके लिये तयांसी पूर्व लाखवर्ष राज्यंपाला पीछे अयोध्यामें राजा भरतचक्रवर्त्ती भये राजा भरतकूं इंद्र भी लोकीकशास्त्रवालोंने लिखा है, राजा भरतने ही वेद बनाकर ब्राह्मणोकों पढाया था राजाभरतने ही ब्राह्मण वंशकी स्थापना करी तद पीछे वैद्यकविद्या वो ब्राह्मणोंनें सीखी ओर रोंगीयोंका रोग मिटाने लगे एसें असंख्य वर्षतक चलते रहा वाद इहां भरतवर्षमें मांस खाणा मदिरा पीने आदिकी कर्त्तव्यताचली ब्राह्मणलोक भी केइयक इसही प्रवृत्तिमें लगकर तरे २ के आसवोंके और तरे २ के मांसके गुण ओगुण प्रकास करनेकी खोजमें रहकर नये २ ग्रंथ अपणे २ नांमोंसें रचकर उसमें आसुरी चिकित्साभी लिखी तवसें चिकित्साके तीन अंग होगये दैवी १ मानुषी २ ओर आसुरी ३ दैवी चिकित्सामें धातु उपधातु रत्न उपरत्नोंका सोधन मारण और परीक्षाकर रोगोंपर अनुपानोंसे चावल रत्ती अधरत्ती देकर वडे भयंकर रोगोंकों खोदेणा दैवता जैसी कुदरत रखनेवाली दवासो दैवी कहलाती है, सो रसायण रसमात्रा १ (२ रसायणं यथा प्रोक्तं जराव्याधिविनाशकं) रसायण उसीका नांम है, जो बुढापा ओर रोंगोको मिटावे अछी रीतीकी वनी धातुवगेरे रसायण धीरे २ पथ्यमें रहनेसें देरसें फायदा देती है, कच्ची फुंकी भई धातु एकवेर मुंख तुरत खोल देती और रमनक दिखाती है, लेकिन् पीछेसें उसका फल बुरा है, केइक मूर्खो एसा कहते हैं जडीपत्तीसें फूंकी जाय धातु सो अछी धातुसे या उपधातुसें फूंके सो अछी नहीं यह बात वे समझीकी है, परमात्मा ऋषभ देवादिकोंसें कोइ वस्तु छिपी नहीं थी उन सर्वज्ञ ऋपिनें एसी विधि दरियाप्तकरके लिखी है, सो कोइ भी समय वालकसें लेकर बुढ्ढेतक कभी नुकसान नहीं करे जिस २ प्रका-

मोतब्बर दवाकीलागत और फी लेता वे वखत आताभी नहीं मूर्खोंसे चाहे विगाडभी होतारहे लेकिन् पैसा नहीं खरच पडे सो अछा मूर्ख वैद्योसें कोइ सहज चेतनशक्तीवाला आरामभी भाग्ययोगसें होजाता है, जेसें अंधा अदमी पथर फेंके किसीके न किसीके लगहीजाय लेकिन् निसाणे चोट मारणेवाला कभी नही कहलावेगा एसें समझणा जव एसे मूर्खोंसें अत्यंत बेमारी वढजाती है, तव डाकदर या पंडित वैद्योंके तरफ दोडते हैं, स्यात् कष्टसाध्य होय तो सोमें पचास सुधर भी जाते हैं, असाध्यका इलाज ही क्या है, अगर एसी बेमारीमें वैद्य दवाके दांम मांगे तो केइयक मोतब्बर होकरके भी सुणके सरद होजाते हैं, वाहिरजाके लोकोंसें कहते हैं, हमने तो इनोंमें कुछ नही देखा और वडे लोभी है, इत्यादि मनमानी वातें वणाते हैं, लेकिन् एसे लोकोंको इतनेपर ही विचारलेणा चहिये एक देशीडाकदर आता है, तो दोरुपे फी लेता है, और दवा सरकारी सफाखाणेकी देता है, जोकी सरकारके पैसे कीहै, और एककी च्याररुपे फी है, एककी असरफी भी है, इसका कारण क्या है, असल कारण इसका यही है, जेसा २ इल्म जादातर होगा उसकी फी भी उसी मुजव होगी वलके देशीवैद्योंकों घरकी तो दवादेणा और न किसीका नोकर है, सर्व खरच इसीपर चलाये चाहता है, इतनाभी विचार नहीं करते यह सव मूर्खताइकी अंधाधूंधी मचरही है, इसवास्ते सर्व प्रजाहितकारक जीवन प्राणरक्षक परभव और इस भवका सुधारक यह वैद्यदीपक ग्रंथ मेनें भाषामें वणाकर अज्ञान अंधकार दूर करणेकों मनमंदिरमें यह ग्रंथ दीपकवत उजाला करेगा इसमें जरा संदेह नही जो इस ग्रंथसे वैद्यकीकी आजीविका करेगा तो भी सफल होगा और भाग्यवांन ग्रहस्थोकों अपने आत्माकी रक्षा कुटुंवकी रक्षा करणेकों यह ग्रंथ उद्योतकारक है, मुर्ख वैद्योकों पहचाणनेकूं यह ग्रंथ कसोटी है, बिना पढे एसा होता है, दुहा। सोना पीतलसारखा पीलेकी परतीत। गुण औगुण जाणे नहीं सवकुं कहे अतीत ॥१॥ सो अंधकार जरूरही मिटजायगा जव पूर्ण वैद्य नही मिले तव आप इसग्रंथकूं पूर्ण वैद्य समझकर इसकी दवा लो जो इसके लिखे अनुसार तुमारा रोग असाध्यमालम देतो कुटुंवका वंदोवस्तकर मोहजाल छोडकर परभव साधो इह परभवकी सिद्धि इस ग्रंथमे है, इसग्रंथमें देशी अजमायस दवा हकीमी डाकदरी होमियापैथिक सव च्यारों इलाजोंका संग्रह है, यद्यपिमें प्राकृत संस्कृत शास्त्रीसिवाय अंग्रेजी नहीं पढाहुं तो भी अंग्रेजी पढे फारसी तेलिंग महाराष्ट्रादि देसवासीयोंकी सोहवत तथा अंग्रेजी दवायोंका सास्त्रीमें वंगला गुजरातीमें उलथा इत्यादि ग्रंथोसे वरतावा देखके डाकतरी और होमियापैथिक दवायें लिखी हैं, में दक्षण हेद्रावादमें रहकर मुसलमीन हकीमोसें तजूरवेकी ये नुकसे वहोतही हासिल किये हैं, वाकी वैद्यक शास्त्र जो जो मेने परिश्रमसें पढाहूं सो संक्षेपमें जीवनचरित्र आगे लिखा सो देखो रोगीके आराम होणेमें चिकित्साके चार

रसें धातु उपधातुओंकों जडीपत्तीसें या धातु उपधातुसें फूंकणी वताई है, सो ही प्रकार अमृतरूप है, विनाशास्त्र मूर्खके कहणेसें या अणपठ जोगी फकडोकी फूंकी दवाका विश्वास कभी नही करना इस वैद्यक विद्यामें गुरुउपदेश और प्रमाणीकशास्त्र और अनुभवीक्रिया कुशलताही प्रमांण है, १ दूसरी जडीपत्तीसें वणे जो दवा सोमानुषी इलाज कहलाता है चीरणा दाग गुलदेणा वगेरे २ तीसरा जलचर थलचर खचर इन प्राणीयोंके अंगोपांगकी वणी दवा मद्य प्रमुख यह सव आसुरी चिकित्सा है, ३ यह तीनो संसारमें प्रचलित है, रोगीकूं रोग मुजव पथ्य जरूर करणा पथ्य करनेसे, विना दवा भी रोग जाता है, विना पथ्य कितनाही इलाजकरनेसें भी रोग नहींजाता, हांवा जेवखत कुपथ्य करते भी रोग चलाजाता है, सो हजारोंमें एकका, उसमें जो कारण है, सो हम आगे लिखेगें, जहां चेतनशक्ति वलवान होती है, और वेदनी कर्मके परमाणु कम जोर होजाते हैं, तहां यह स्वरूप वणता है, वाकी तो अग्नींमें हाथ देणेसें जलेहीगा इस तरे कुपथ्य समझणा (प्रश्न) डाकदरी दवामें परहेज नहीं सो क्याकारण उत्तर पथ्य जरूर है, नहीं कोण कहता है, उन लोकोंका भावार्थ एसा है, सो तुम समझते नहीं जो हमेसा खाणेकी जिसकी खुराक है, वह नुकसान कम करती है, और करती भी है, इसमें वुद्धिका कांम है, जिसकों जो चीज खाणेसें रोग भया है, अगर वह रोगी वही चीज खाते जायगा और दवाभी खायगा देखलेणा फायदेके वदले नुकशांन उठायगा चेतनशक्ति प्रवल होणेपर विनादवा भी रोग जायगा युरुपीयनदवा अत्यंत शीतदेशीयोंके वास्ते और करडेमेदेवालोके वास्ते वहोत फायदेवंद है, अपणा देश उष्ण, और नरम वीर्यके मनुष्य है, इसवास्ते दवाका वरतावा देस मुजव ही श्रेष्ठ है, दुसरे आसुरी दवा जिसमें जानवरोंका अंग और मदिरा टिंचर मिली भई दया धर्मीयोकों विचारणा चाहीये, फेर तो वहवात है, मरता क्या नहीं करता, रुचे सो पचे, सरकारी असपतालोंमें ना वारिसकों धर्मादा गरीवोंके लिये वहोत ही उपगारणी है, डाकदरलोक इल्मचीरणे फाडणेंमें पास होते हें दवा वणानेवाले लंदनमें दुसरे व्यापारी है, जगन्नाथ वैद्य प्रागवाला लिखता है, दरसाल वारेकोडरुपये हिंदसे दवाकी विकरीके विलायत जाते हैं, हिंदवाले उद्योगवान होते तो परदेश जाता हुवाधन इहांही नहीं रहता मूर्ख विद्याहीनोंने वैद्यक विद्याका इतना दरजा घटादिया सो अंग्रेजी पढेभये लोक देशी वैद्योंकों एक जातके पशु समझते हैं, सो सचाही है, प्रजाभी एसी अणपढ है, सो मूर्ख और पंडितोकों एकसीहीसमझती हैं, मूर्खोसें इलाज कराते २ असाध्य रोगी होजाते हैं, मूर्खलोकोंने यह भी रुजगार समझ लिया है, सो पचास रोगोंके इलाज लिखकर वैद्य वण वेठते हैं, इसवास्ते खुसामदीसें वेरवेर उसरोगीके घर जाणा और पेसे टकेकी उंठगाद । देणा एसोंसें दुनिया वडी राजी रोगी मरे चाहे जिये कारण पढाहुआ वैद्य

मोतज्वर दवाकीलागत और फी लेता वे चखत आताभी नहीं मूर्खोंसे चाहे बिगाडभी होतारहे लेकिन् पैसा नहीं खरच पडे सो अछा मूर्ख वैद्योसें कोइ सहज चेतनशक्तीवाला आरामभी भाग्ययोगसें होजाता है, जैसें अंधा अदमी पथर फेके किसीके न किसीके लगहीजाय लेकिन् निसाणे चोट मारणेवाला कभी नही कहलावेगा एसें समझणा जब एसे मूर्खोंसें अत्यंत बेमारी वटजाती है, तब डाकदर या पंडित वैद्योंके तरफ दोडते हैं, स्यात् कष्टसाध्य होय तो सोमें पचास सुधर भी जाते हैं, असाध्यका इलाज ही क्या है, अगर एसी बेमारीमें वैद्य दवाके दांम मांगे तो केइयक मोतज्वर होकरके भी सुणके सरद होजाते हैं, वाहिरजाके लोकोंसें कहते हैं, हमने तो इनोंमें कुछ नही देखा और वडे लोभी है, इत्यादि मनमानी बातें वणाते हैं, लेकिन् एसे लोकोंको इतनेपर ही विचारलेणा चहिये एक देशीडाकदर आता है, तो दोरुपे फी लेता है, और दवा सरकारी सफाखाणेकी देता है, जोकी सरकारके पैसे कीहै, और एककी च्याररुपे फी है. एककी असरफी भी है, इसका कारण क्या है, असल कारण इसका यही है, जैसा २ इल्म जादातर होगा उसकी फी भी उसी मुजब होगी वलके देशीवैद्योंकों घरकी तो दवादेणा और न किसीका नोकर है, सर्व खरच इसीपर चलाये चाहता है, इतनाभी विचार नहीं करते यह सब मूर्खताइकी अंधाधूंधी मचरही है, इसवास्ते सर्व प्रजाहितकारक जीवन प्राणरक्षक परभव और इस भवका सुधारक यह वैद्यदीपक ग्रंथ मेंने भाषामें बणाकर अज्ञान अंधकार दूर करणेकों मनमंदिरमें यह ग्रंथ दीपकवत उजाला करेगा इसमें जरा संदेह नही जो इस ग्रंथसे वैद्यकीकी आजीविका करेगा तो भी सफल होगा और भाग्यवांन ग्रहस्थोकों अपने आत्माकी रक्षा कुटुंबकी रक्षा करणेकों यह ग्रंथ उद्योतकारक है, मुर्ख वैद्योकों पहचाणनेकूं यह ग्रंथ कसोटी है, विना पढे एसा होता है, दुहा । सोना पीतलसारखा पीलेकी परतीत । गुण औगुण जाणे नहीं [illegible] अतीत ॥१॥ सो अंधकार जरूरही मिटजायगा जब पूर्ण वैद्य नहीं मिले तब आप इसग्रंथकूं पूर्ण वैद्य समझकर इसकी दवा लो जो इसके लिखे अनुसार तुमारा रोग [illegible] देतो कुटुंबका बंदोबस्तकर मोहजाल छोडकर परभव साधो इह परभवकी सिद्धि इस ग्रंथमें है, इसग्रंथमें देशी अजमायस दवा हकीमी डाकदरी होमियोपैथिक सब स्थानोंके इलाजोंका संग्रह है, यद्यपिमें प्राकृत संस्कृत शास्त्रसिवाय अंग्रेजी नहीं पढाहूं तो भी अंग्रेजी पढे फारसी तेलिंग महाराष्ट्रादि देसवासीयोंकी मोहबत तथा बंगाली [illegible] सास्त्रीमें बंगला गुजरातीमें उलथा इत्यादि ग्रंथोंसे बणवाया [illegible] डाकदरी और होमियो पैथिक दवायें लिखी हैं, मैं दक्षण हैद्राबादमें रहकर मुसल्मान हकीमोंसें [illegible] मुकसे पहोतसी हासिल किये हैं, मारी [illegible] जो जो मैंने [illegible] पढाहूं सो संक्षेपमें जीवनचरित्र आगे लिखा सो देखो रोगीके आराम होनेमें [illegible]

पाये हैं, रोगीकी परिक्षाकरणेवाला वैद्य सो साध्य १ कष्टसाध्य २ और असाध्यकुं पहचान करे साधारण रोगमें वडा इलाज नहीं करे कष्टकारी वडे रोगमें छोटा इलाज नहीं करे देसकाल अवस्था रोगका और रोगीका वल पहचान करणेवाला वैद्य प्रथम पाया १ रोगकुं मिटाणेवाली सास्त्रकेलिखे मुजब नई या पुराणी शुद्ध दवा मिलणी दुसरा पाया २ रोगीका टहल वंदगी करणेवाला पथ्य तइयार करणेकी चतुराईवाला वैद्यके वचन मुजब कर्त्ता होणा तीसरा पाया ३ रोगी वैद्यके कहे मुजब खारी कडवी दवा अमृतसमान करके पीवै जो रोगी दवा लेणेकुं इनकार करे सो रोग मिटणा मुसकल है, कहे मुजब ही पथ्यकरे तो निश्चै आराम होय ये चोथा पाया ४ (वैद्य एसा होणा चाहिये) (श्लोक)—तत्वाधिगतशास्त्रार्थो दृष्टकर्मास्वयंकृतिः। लघुहस्तः शूचिः शूरः सज्जोपस्कृतभेषजः॥ प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमान्व्यवसायी प्रियंवदः। सत्यधर्म्मपरो यश्च वैद्य ईदृक् प्रशस्यते ॥ २ ॥ (अर्थ)—गुरूसें अछीतरे शास्त्रकुं पढाहुवा होय दूसरे वडे वैद्योकों इलाज करते जिसनें देखा होय और आप रोगकुं पहचानकर चिकत्सा करणेमें चतुर होय और सिद्धहस्त अर्थात् जिस रोगीका इलाजकरे सो जलदी अच्छा होय सरीर मन और वस्त्रोसें पवित्र होय शूरवीर होय अच्छी २ औषधी चंद्रोदय प्रतापलंकेश्वर लक्ष्मीविलास चिंतामणि मृत्युंजय रामवाण सूचीभरण ब्रह्मास्त्रादिक जिसके पास तइयार होय तत्काल जिसकी वुद्धि फिरती होय रोगोंके अनुपानादिकमें वुद्धिमान होय संसारव्यवहारका जाणनेवाला होय प्यारा वचन वोलेणवाला होय सत्य और दयाधर्मका धारणेवाला होय एसा वैद्य लायक तारीफके होता है ॥ २ ॥ (श्लोक)—व्याधेः तत्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः। एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यप्रभुरायुषः ॥३॥ (अर्थ)—रोगोंके पहचाणनेका पांच कारण जो निदानादिक उस तत्वका जांणकार होय रोग मिटाणेकी औषधी पथ्य वताणेवाला होय वैद्यकी वैद्यकता इतनेमें हीं है, लेकिन् आयुष्य देणे समर्थ नहीं ॥ ३ ॥ (अव निषेध वैद्यके लक्षण) (श्लोक)—कुचैलः कर्कशः स्तब्धः कुग्रामी स्वयमागतः। पंच वैद्या न पूज्यन्ते धन्वंतरिसमा अपि ॥ ४ ॥ (अर्थ)—देही और वस्त्रकरके मलीन करडा कठोर वचन वोलणेवाला अभिमानी खोटे गांमका वासिंदा और संसार व्यवहारका नहीं जाणनेवाला विगर वुलाये चला आवे ये पांच वैद्य धन्वंतर जेसा भी होय तो भी पूजणेलायक नहीं॥४॥ (अथ रोगीके लक्षण) (श्लोक)—आयुष्मान् सत्ववान्साध्यो द्रव्यवानात्मवानपि। उच्यते व्याधितः पादो वैद्यवाक्यकृदास्तिकः ॥ ५ ॥ (अर्थ)—आयुवाला होय वलयुक्त साध्य द्रव्यवान् होय ज्ञानी वैद्यका आज्ञाकारी और आस्तिक अर्थात् वैद्यपर श्रद्धा रखणेवाला होणा ॥ ५ ॥ (उत्तम औषधीका लक्षण) (श्लोक)—प्रशस्तदेशसंभूतं प्रशस्तेहनि चोद्धृतं। अल्पमात्रं वहुगुणं गंधवर्णरसान्वितम् ॥ ६ ॥ (अर्थ)—उत्तम जगेमें पैदा भई होय और शुभ-दि[illegible] निकाली होय थोडी भी देणेसे गुण वहोतकरे दुर्गंधरहित देखणेमें अच्छी रसयुक्त

एसी औषध उत्तम है ॥ ६ ॥ (खराब औषधीके लक्षण) (श्लोक)—वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोखरमार्गजाः । जंतुवन्हिहिमव्याप्ता नौषध्यः कार्यसाधकाः ॥ ७ ॥ (अर्थ)—इतनीं जगेकी औषधी रोग मिटाणीवाली नहीं होती सांपके वंबीकी खोटी जमीनकी जलके पासकी श्मसाणकी ऊखरकी जहां चूना निकलता होय उस जमीनकी और रस्तेकी कीडोंकी खाई भई अग्निसें जलीभई जाडेकी जलीभई एसी दवा रोगोंकों नहीं मिटासकती ॥ ७ ॥ (श्लोक)—स्निग्धोऽजुगुप्सुर्वलवान्युक्तो व्याधितरक्षणे । वैद्यवाक्यकृदश्रांतः पादः परिचरः स्मृतः ॥ ८ ॥ (अर्थ)— दूतके लक्षण) नवी अवस्थाका ताकतवर रोगीकी रक्षाकरणेमें तत्पर वैद्यके हुकमका करणेवाला आलसरहित एसा टहल वंदगी करणेवाला परिचारक दूत होणा ये च्यार पाये विना रोगीकी लंबी ऊमर-विना नहीं मिलते संसारमें सर्व इल्म सीखणा फायदेवंद है, जिसमें भी दोयसें तो जरूर वाकब होणा चहिये प्रथम तो तन दुरस्तीका इल्म सोशास्त्रोंमें लिखाभी है, (श्लोक) धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनंयतः । अतो सम्यक्तनुं रक्षेन्नरकर्मविपाकवित् ॥ ९ ॥ (अर्थ)—धर्म १ धन २ काम ३ और मोक्ष ४ ये च्यारोंका साधन शरीरसें होता है, इसवास्ते कर्मोंके फल जाणनेवाले पुरुषोंनें रोगोंसें शरीरकूं हमेसां बचाणा यह श्लोक सारंगधर संहिताका है, बाद सरकारी कायदेसें जरूर वाकब होणा नहीं तो तन मन धन तीनोंकों तकलीफ पोहचती है, यद्यपि सर्वज्ञका धर्म पूरा जांणके शक्ति मुजब और समय मुजब चलणेवाला इस शरीरका सुख और सरकारके कायदोंकी पाया वंधीवाला ही होता है, तोभी विशेषज्ञान करणेकों वैद्यदीपक ग्रंथकूं घरमें जरूरही रखना शरीरका साधन है, और कायदेकुं समझणेवास्ते ताजी रायत हिन्द समझणा जरूर है, इसग्रंथमें एसी दवायोंका संग्रह है, सो सबसें बणसके इसीवास्ते ही डाक्टरी और होमियो पैथिक इलाज भी लिखा है, यह दवायां बहोत जगे मोल विकती है, जो नियम रखते हैं, उनोकेवास्ते शुद्ध देशी इलाज लिखा है. मेरे इसग्रंथके जाहिरकरणेका यही मतलब है, के शरीर तो नासमान है, जो कुछ अजमायसी कांम और इलाज है, उनकूं जगतमें जाहिरकर देणा इल्म लेकर बांटणा यही कल्याण है, छिपा २ के रख-णेपर आर्योंकी यह दशा होगई ये बात नापसंद है. धन्य है. सरकार अंग्रेजका राज्य जिसमें इल्म सिखाणेकूं जगे २ इस्कूल रोगियोंके लिये दवा खाना सडकें इस्तगत पानीके नल रोसनी चिठी मणियाडरमाल वगेर घर बेठे पोहचाणेकी पोष जो पुस्तक शोकोंमें नहीं लिखाइ जाती सो आज २ च्यार रुपेमें मुद्र और जिल्दवंधी सबेन मिलते हमी एने छापाखाने कहांतक तारीफ लिखें हमारे बडे २ एजेंबे वो बात बतावाम हमार साथ चलता प्रत्यक्ष उपगार सरकार अंग्रेजका हम देखते हैं. इनका बदला बादन [illegible] है यह हम अन्तःकरणमें चाहते हैं, जिनके राज्यमें सिंह और बकरी एक घाटपर पाणी

पीरही है, अर्थात् बदमांस लुच्चोंकों दंड और सज्जनोंका प्रतिपाल होरहा है, राज्यधर्म एसाही श्रेयकारी है, किं बहुना.

पुस्तकमिलणेका ठिकाणा बीकानेर राजपूताना बडा उपासरापास उपाध्याय श्रीरामलालजीकी विद्याशालामें ये पुस्तक मिलेगा निछरावल रु ७।) पोष्ट खरच परदेशी ग्राहकोंकुं जुदा पडेगा दसपुस्तक एक संग लेणेवालेकूं रु. १०) सइकडे कमीसन मिलेगा.

हमारे इहां इतनी पुस्तकें छपीभयी तइयार है.

करुणाबत्तीसी दादा गुरुदेव गायनपूजा.	।)
शोलेचाणक्य स्वरोदय शकुनावली भाषा.	।।।)
सिद्धमूर्त्तिविवेकविलास मूर्त्तिमंडणका अद्भुत ग्रंथ.	।।)
खरतरगछतप गछ ३७ पूजा गायनविधि स्तवनों समेत.	२)
श्रावग व्यवहार चतुराईका चमत्कार अनेक दृष्टांत.	१।)
रत्नसमुच्चय जैनीयोंका सर्व धर्मकर्त्तव्य रत्नसागरसें दोयसे वस्तु ज्यादा.	५।)
वैद्यदीपक भाग पहिला.	रु. ७)
भाग दुसरा छपेगा.	रु. ३।।)

रोग नहीं होणेके सामान्यकारण फागुण चेतके महीनेंमें गुड नहीं खाणा आसोज कातीमें बहोत नहीं खाणा पोसके महीनेमें भूखा नहीं रहणा तो अदमीके रोग नहीं होता वेशाख जेठके महीने टाल दस महीनेदिनका सोणा नहीं दस्त पेसाबकुं रोकणा नहीं रातकूं जागणा नहीं वसंतऋतू टालके, बहोत जल पीणा नहीं टेमसें ज्यादा या कम गरिष्ट पदार्थ खाणा नहीं असाढ सावण भादवे तीन महीनेमें मैथुन करणा नहीं वरसात वरसतेमें कुपथ्य नहीं, सरदऋतूमें जल ज्यादा पीणा भोजन करके ऊपरसें जल पीणा नहीं विना मिठे डालाभया गरम किया भया दूध भोजनपर पीणा हाजमा नहीं होय तो सींधानिमक भुनाजीरा डाल छाछ पीणा दूध पीणा नहीं भोजनकर २।। घंटे पहले मैथुन नहीं करणा स्नान नहीं करणा २।। घंटे पहली तेल नहीं मसलाणा पग चंपी नहीं करणा भोजनकर रस्ते चलणा नहीं दोडणा कुस्ती वगेरे २।। घंटेतक करणा नहीं भोजन कियेबाद २ घडीबाद थोडा २ जल पीणा २ वखत हद ४ वखत रातके भोजन करणेसे प्राय हेजा और जलंदर रोग होता है, पांनवीडेमे १३ गुण है, तोभी खूनकी तासीर तथा पित्तरोगीकूं खाणा नहीं पांनवीडेके पहिलेके दो पीक थूक देणा तीसरा गिटणा पांनकी डंडी तोडदेणा पांच घंटे बीतेविगर भोजन करणा नहीं गरमीकी मोसममें ज्यादा मैथुन करणा नहीं भोजन करणेके पहले जल पीणा नहीं भूखा प्यासा रस्ते चलभया दस्त पेसावकी संकायुक्त मैथुन करणा नहीं पांव उघराणे फिरणा नहीं सिरपर बोझा उठाणा नहीं उकडू आसन बहोत बैठणा नहीं रातकूं सातघंटेसे ज्यादा नींद

लेणा नहीं च्यार घडीके तडके पीछै मैथुन करणा नहीं तुरतका जमाया दही खाणा नहीं ऋतुधर्म बंध भई वृद्धास्त्रीसें रजस्वलासें रोगीस्त्रीसे चंडालादि अधमजातिसें मैथुन करणा नहीं मैथुनबाद जलपीणा नहीं दूध पीणा पांन बीडी खाणा हवाखाणा शरीर दबाणा गरम सुहावते जलसें स्नान करणा ॥ सूर्यकी धूप ज्यादा लेणी नही ठंडकालमें पीठकी तरफ धूप लेणी अग्नि ठंडकालमे सामनें दूर धरणी जहरी चीजोंका धूंआ लेणा नहीं गांजा सुलफा मदत चंडूल पीणा नहीं अशुद्ध और अग्निमें कच्ची रही धातु उपधातु यानाज वगेरे खाणा नहीं कसके पगडी बांधणी नहीं गरमागरम भोजन करणा नहीं ज्यों बहोत ठंडाभी खाणा नहीं विनाकारण क्रोध और अहंकार करणा नहीं उचित समय चूकणा नहीं, विश्वास प्रतीती होय तोही करणा असलसे खता नहीं कमसलसें नफा नहीं। नीमें हकीम खतरे ज्यांन नीमें मुल्ला खतरे इमान १ अर्थात् हकीम और उपदेशक ये दोनों पूरे पंडितहीकी दवा और उपदेश कबूल करणा गलीमें २ दवा फूंकी धातु बेचे उनोंसें लेणी नहीं लेणी तो जो वो दवा अच्छी तरे फूंक जाणता होय उसकी आज्ञासें लेणी विना जाणी कोइभी चीज मूंमें डालणी नहीं राजका महसूल चोरणा नहीं विना-कारण जीवदया टाल झूठ बोलणा नहीं चोरी छोटी या बडी करणी नहीं औरतोंकीमें फिलमें रातदिन बैठणा नहीं काम व्यवहार विचारके करणा बडे २ भाग्यवांन पंडि-तोंकी और संकटमें सहाय करे एसोंसें दोस्ती करणी अणजाणे जलमें घुसणा नहीं ठंडे जलसे स्नान कर गरम भोजन करणा नही गरम जलसे स्नान कर ठंडा भोजन करणा नहीं रोगी आदमीके संग भोजन करणा नहीं उसके बिछाणे सोणा नहीं धूपमें फिर कर गरम शरीरसें जल पीणा नहीं स्नान करणा नहीं जहरी जांनवर तथा दुष्ट पाडोसी होय तो निशंक सोणा नहीं लड्डु वगेरे खानपान रंग बदले दुरगंध आवे मुदत बीते बाद खाणा नहीं पत्तोंका साग जादा मिरच मसाला खटाइ हींग तेल गुल खाणा नहीं रोगके मुजब पथ्य करणा यथाशक्ति दांन ग्यान हमेसां सीखणा या सुणना कुलकी और सत्य बोलणेवालेकी कदर देव गुरुका दरसण कर स्तवना करणी इनबातोंसे दीर्घायु और रोग नहीं आता इति ॥

(प्रश्न) आप यह अपूर्व वैद्यक ग्रंथकेरो अभ्यास किया क्योंके मारवाडमें इन दिनोंमें इस विद्याका प्रचार वैद्योमें नहीं देखनेमें आता है और जो कुछ रसकपूर हिंगूल पारा वगेरेकी अशुद्ध दवाका धूंआ पीणा बफारा गूंआणा इत्यादिक सुजाक गरमी गठिया भगंदर कोडी नगरा आदि रोगोंमें देते हैं उनमें कितने एक रोगी एक बेर आराम हो जाते हैं फेर अनेक नासूर कोट रगतपित्त गंठीया गालना गलणा [illegible] [illegible] चकते देह भयानक रूप सोजा आदि अनेक रोगोंको भोगने मरणांत हुए जाते हैं फेर चतुर वैद्यनेंभी एकाएक नहीं सुधरने इनवास्ते हमारे मारवाडी जवानों [illegible] [illegible]

ग पूंछके एसा कहते हैं की धातू सर्वथा नहीं लेणी इहांतक रसोंका विश्वास जाता रहा और आपने वडे२ भयंकर रोग मिटाये सो इसधातुहीकी दवायोंसें बारा वर्षसें हम देख रहे हैं आपके रसोसें विगाड आजतक किसीका नहीं देखा यहभी आपके अनुभवका विज्ञान अधिक देखा सो रोगी जो असाध्य होय तो उसका नहीं सुधरणा जो आप फुरमाते हो वो सइकडों जगे हमने पतवाणा है फेर किसी वैद्योंसे हमने सुधारता नहीं देखा नही सुणा है इस वैद्यविद्याकी आपके इलाजोंकी प्रसंसा हमने वहोत२ ब्राह्मणोंसें जेनीयोंसें अनेक दिसावरोंके अच्छे२ पंडितोसें सुणी है हम तो आपके कृपाभिलाषी विद्यार्थी शिष्य हैं तारीफ लिखे जितनी लिख सकते हैं लेकिन् हाथ कंगणकों आरसी क्या हजारों वैद्य गणतारोमें आप चंद्र है धर्मके न्याय पक्षमें आप सूर्य है जो किसी समझदारने आपके मुखारविंदकी अनेक नयोंकरके युक्त वाणी और समय२के दृष्टांत सुणा है वो तो धन्यवाद दिये विगर कभी रहा नहीं और रहेगा नहीं और आपकेपास इस वैद्य विद्याकी जिसने संथा ली है वो जगतमें अवस्य मांनने और पूजा प्रतिष्ठाके दरजे पहुंचा है, ओर आपका हृदय इस विद्या दानमें एसा निर्मल कल्पवृक्षकी उपम हें सो अंतःकरणसे आप सिखा देते हैं कपट बिलकुल नहीं रखते ईश्वरसे हमारी यही प्रार्थना है आपका यह अमूल्य चिंतामणी रत्नरूप जीवितारोग्य चिरस्थाई रहे जिसमें विद्या भास्करके प्रकाशसें दुष्ट कुमतिरूप अंधकार आर्योंके हृदयसें निकलता जाय किंवहुना कलम पुष्करणा मुहता पं० विष्णुदत्तशर्मा विद्यार्थी शिष्य हाल मु० लातुरका गौड पं० कमलनयनशर्मा विद्यार्थी शिष्य हाल मुकाम कुरुक्षेत्र का उ० श्रीउदय-चंदजीगणिः वीकानेर विद्यार्थी पं० श्रीजीवणमलमुनिः विद्यार्थी मु० वीकानेर श्रीजगन्नाथदाधीचमिश्र शर्मा विद्यार्थी शिष्य मु० वीकानेर से। श्रीनथमल विद्यार्थी मु० कलकत्ता पं० भेरुंलाल आसोफा विद्यार्थी शिष्य दाधीचशर्मा इत्यादि अनेक विद्यार्थीयोंके प्रशंसापत्र शुभं ॥

(उत्तर)—अहो प्रिय पाठकगणो मेरी जन्मभूमि वंगाल देशमें मुख्य राजधानीमें मुरसिदावाद वालूचर जीयागंज है उहां कोटंचिक द्विज सारस्वत गोकुलचंद्र मेरे पिताका नाम है. माताका नांम वसंती था जव में सात वर्षका भया तव पिताने वंगला सीखणे विठलाया लेकिन् माष्टरके भयसें फेर सीखणे नहीं गया ये वात इकवीसे सालकी है विक्रमशताब्द उगणीसके खैल कुतुहलमें मस्त रहता मेरा पिता नोकरीवास्ते रंग पुर गया पीछेसे २२ का काल पडा मेरी मां कईया साथ असपतोंके इहां कार्य करणे रही में रायवहादुर श्रीलक्ष्मीपतिसिंघजीकी कोठीमें रहता राजा वावू छत्रसिंघजीके पास टीपीका खेलमें मस्त रहता उस वखत मुलतानका कोठारी मोतीलाल जो वडी कोठीके दांनशालामें गंगाकिनारे रहता था उसने मुझे रेल दिखाणेके वाहने अजीमगंज ले गया मेनें अपूर्व वस्तु देखी यह वात साल तेईसके पोषकी है मुझे कहा रेल चढेगा मैंने वडे

हर्षसें कहा चढूंगा उस दिनोंमें मेरा पिता पांवसें किसी जखमी फोडेसे लाचार होय वालूचर आया था हलचल नहीं सकता था मेरे भाइ या बहन नहीं थी एकाएक था उस वणिक धूर्त्तने मुझसें बोला तेरे पिछाडी कोन है मेंनें माबाप बताया तब उसनें सोचा होगा स्यात् सरकारी एनसें पकडा न जाउं तब मुझे पीछा धरमगोदारेमें विठलाके वालूचर भेज दिया जबसें में मेरी मांसे रेल चढा ये नित हठ किया करता दिन १५ या २० बाद एक दिन सडकपर लाखकी टिप्पी खेलतेकूं पूर्वोक्त धूर्त्तनें मुझे फेर बतलाया मेने कहा रेल चढाओ उसने कहा तेरी मांसे पूछवा दे में उसका हाथ धर घरकी तरफ ले चला वो धूर्त्त मेरे पिताके भयसे घरके पास सडकपर खडा रहकर मेरेकूं बोला तेरी माकूं इहां बुला ला में जबरदस्ती रोकर माकूं बुला लाया मेरा बाप पीडासे विकल था धूर्त्तने कहा में नलहट्टी जाताहु तुमारा लडका केइ दिनोसें रेल चढणेवास्ते कहता है अगर तुमारी इजाजत हो तो में परसुं पीछा आउंगा सो लेते आउंगा मेरी मांने रहनेका पत्ता उसका पूछा और आज दिनतक किसी साहूकारने उहां एसी कपटता करी नहीं थी भवतव्यता प्रबल दुसरे दिन प्रभातमूं आंधारे रेलपर मुझें लेगया उहां एक बुड्ढेभी टिकटले आबेठे वो परम पूज्य श्रीसाधूजी महाराज धनरूपजी नांमके यती थे ऊमर उनोकी ६० की थी बस दिल्ली पहुंचे वो धूर्त्त उनोसें खरचा लेकर मुलतान चल धरा हमारे आधार उस परम पुरषका रह गया २३ के फल्गुनमें बीकानेर पहुंचे बडे शांतशील पुरुषोत्तमनें पढाणा सरू किया आखिर हेमकोश तक पढ गया पीछे व्याकरणचंद्रिका डीड वाणेके वासिंदे ओदीच्य ब्राह्मन श्रीरामचंद्रजी पद् शास्त्रीसे डेढ वर्षके करीब पढा कुछ गुनूजी गुसांइसेंभी पढा जब थारे मासी धर्म कर्त्तव्य जीव विचारादि पद् प्रकरण सूत्र पूज्यने पढाये अनुक्रमसें अठाईसकी साल माघवदि तेरसकों पंडित पदकी दिक्षा देकर द्विजन्मा बणाया हमारे पूज्यके बडे दो शिष्य थे पं० श्रीहर्ष-चंद्रजीमुनिः पं० करमचंदजीमुनिः बडे शिष्य गुरुमें अलग रहते थे पूज्यने मकसूदाबाद जाते अपणा सर्वस्व द्रव्य वोसिराय छोटे शिष्यके सुप्रत कर दिया था ये पढणेमें लिखणेमें पूठे फांटीये बणाणे कतरणीके कांम कोरणी करणेमें पुस्तककी पटडी बाजा बणाणेमें अद्वितीय विश्वकर्मा थे गूंथणा रंगणा सीणा और तंत्रविद्यामें पटुही प्रवीण थे उनोंनें केइयक चमत्कारीक तंत्रभी मुझें सिखलाये थे बाद किसी कारण योगसें उनोंका मेरेपर द्वेष पड गया सत्य है क्रोधादिकषाय गुणस्थानक चढने उपसम श्रेणिमें इग्यारमें गुणठाणसें मुनियोकों नीचे गिराता है अज्ञानके वश नव पल्योपम [illegible] है. आजकलके मनुष्योंकी तो चकारीही क्या में संगतसें भंग पीना और मेहका [illegible] करणे लगा संगतका असर प्रबल है (दूहा) सतसंगतमें सुधरे नहीं, सो मोटा निरभाग, कुसंगमें बिगडे नहीं, ताका मोटा भाग १ उनका हेतभी मेरे दिनके, पाने [illegible] निरादर

फिकर लगा इसी कारण में लिखणाभी वहोत जलदी सीखा और पुस्तकें लिखणे लगा उस वखत श्रीपूज्यजी हंससूरजी तीसकी सालमें मुझें दफतरीका कायदा वगसा वहोत ग्रंथोके देखणेसें में जोडन कला भाषाकी सामान्य कविताईभी करणे लगा गायन कला भी सीखा पांत्र श्रीमोतीचंद्रजीमुनिः पास सुभाषित और उवाई सूत्रवृत्ति सब सूत्रोंकी माई पढी दफतरके प्रताप ओस वंशकी वंशावली चवदेसे चम्मालीस गोत्रोंकी इतिहास समेत जाणनेमें आई ये प्रताप सब गणेश्वरकी कृपाका था वाद पं० श्रीधनजी जतीके संग मुंबईके आदेशपर गया उहां प्रतिक्रमणविधि मंडल पूजादि विधि सीखणेमें आई ३२का चोमासा मुंबई चिंतामणजीके पाटिये किया उहां सोनाटोलीके धूर्तोंके हाथ सो रुपे ठगाये अक्षर इहांतक जम गया सो अंबालाल गुजराती जैन पांच रुपे हजार श्लोकोंका देणे लगा उहां पूनेका महाराष्ट्र पंडित पट्शास्त्रीसे लालवागमें गीतगोविंदकाव्य श्रीकृष्ण विहारीका तथा वैद्यजीवन लोलिंवराज ये दोय काव्य पढा वखतावर जीमुनि पासपन्नवणा सूत्र पढा उहांसे तेतीसका चोमासा हेदरावादका किया वेगम वजारमें उहां अमलीका कट्ट मिरच हींग खाणेसें उपदंश मालम पडा एक वेकूव वैद्यनें रस कपूर दिया खुराक गोचरीमें पूर्वोक्त सब खाता उसनें मना कुछ नहीं किया सब व्याधीकी जड फिरंगकी गंठिया सांधे पकड गये फेर जिस वैद्योंकों बुलाया वोभी पांच२ चार२ रुपे लेगये और अशुद्ध पारा देणे लगे मसूंडे फूलतेही पारा समझ छोड देता एसे पांच च्यार शठोंसे धोखा पाया मुझकों इस विद्या सीखणेकी वहोत खयास भई उस पीडासें मरणांत कष्ट तक पहुंचा जव फेर चोतीसके कार्त्तिक में मुंबई पहुंचा उहां लूंपक गच्छी श्रीमाणकचंदजी जतीनें मेरा सब पूर्वावस्था पूछके वमनकी गुटिका देकर क्यालोमेल अंग्रेजी रस कपूर मखनमें चटाया तीसरे दिन मसूडे फूले मंजन कराया फेर मेरी भूख खुली उनोंनें केइयक पात्र जांण सद्य जैन मंत्र चमत्कारीक तंत्रभी सिखलाया पूत्राम्नायका सद्य फल तिजयपताका यंत्रभी सिखाया केइ२ औषधी अनुभविक सिखाई फेर मिगसर शुक्लांतमें पूज्य पादके दरशणकूं वीकानेरकुं आया मेरा आणेपर पारखोके खणका पूठिया श्रीजीनें मुझें सुप्रत किया इहां उत्तराध्ययन सूत्रका जयघोष विजयघोष ब्राह्मणोंके अध्ययनका व्याख्यान किया महावल मलया सुंदरीकी चतुष्पदी वांची पैंतीसकी सालका आदेश श्रीजीके हुक्मसें अमरावतीका चातुर्मास किया इहां रूपचंद वालापुरके श्रावकसें जुलाव मलम केइयक अजमायस चुटकले सीखा ये श्रावक फूलचंदजी लोंका गच्छके जतीसें सीखाथा सोमलकी क्रिया वहोतही सद्यफलदभी मुझें सिखलाई इहां अंवादेवीके मंदिर पास एक दिगंवर अग्रवाल और एक परवाल वणियेकी संगतसें में कुछ २ दिगांवर जैनोंके वातोसेंभी वाकव भया कर्मयोगसें नायका भेद ग्रंथ सीखणेकी चटपटी एक मौलवी मुसलमांनसे मुझें लगी इहां इस कहणा वटकीभी परीक्षा होगई (दुहा) वो खावे

अरुवोडसें, उनका जहरी अंग, इन तीनोंसें वचता रहणा, भोजक भूत भुजंग १ और सेवडेकी जातकूं सिलाम सात कीजीयें इसकी परीक्षा कुछ तो पहली हेदरावादमें कीथी इहां दृढ विश्वास पाया इहांसें नागपुर गया इहां राजवैद्यके घराणादार केशवचंदजी पंडित जती वडे उदार और दयाल थे हमारी हिफाजत वहोत करी उहां भाव हर्ष गच्छके श्रीपूज्यजी चंद्रसूरजीके संग वडे विद्वान सभा चतुर सुभाषित भंडार श्रीजुहारमलजी पंडितवरनें मुझें जंबूद्वीप पन्नत्ती सूत्र तथा चार प्रकरण जीव विचार नवतत्व दंडक संग्रहणी ये सवोंका अर्थ दोय महीनेमें खूवही सिखा दिया औरभी जैनधर्मकी केइवाते सीखी उहां खरतरगच्छी रायचंदजी जती एक राजवैद्य एक महाराष्ट्र ब्राह्मण एक हकीम मुसलमीनभी नांमी था उनोंकीभी संगत कभी २ होती उहांसे पीछा अमरावती आया वरोडे गया चंद्रकी चोपइ वांची फेर वेद मुंहता पदमसी नेणसीके मुनीम पूनमचंदजीनें तीन चिठी मुझकूं हेदरावाद कोठीमें वुलाणेकुं दी उहांसे अंतरीकजी पार्श्वनाजीकी यात्रा कर भ्राणपुरके १८ मंदिरोके दरशण कर हेदरावाद गया उहां मेंनें व्याख्यान सरू कीया निहालचंद पूनमचंदजी गोलछावडा गुणका रागी और उक्त मूनीमजी दोनोंनें वडे अनुरागसें मेरा इलम वधाणेकूं किसन गढके पारखके मुनीम टोटा जालमचंदजीकों व्याख्यान सुणने वुलाया मेरे विद्यावृद्धिका वखत आया ये श्रावक लूंणीयागजमलजीके पासही छोटेसे वडा अजमेरमें भया था इसने मुझें अनेक जैन शास्त्रोंके रहस्य और वागभट्टादि शास्त्रोंके वैद्यक रहस्य प्रतिवादियोंके कुतर्कका खंडन हकीमी यूनानी नुसके सरवत मुरव्वा चटनी घी तेल प्रमुख वणानेकी क्रिया मुख जवानीसें वताते रहा उस वखत माहाराष्ट्री भाषा संयुक्त तीन भाग निघंट रत्नाकर च्यार लाख श्लोकोंकी एक संहिता मेंनें पाई जिसमें वैद्य वैद्याके चीरणा और गोली शग निकालणे शस्त्रविद्या टाल और संपूर्ण सातोंइ अंगतीनोंइ चिकित्साथी संस्कृतका बोध था जालमचंदजीकी शिक्षासें इस सातोंइ अंगके अर्थसें सामान्य तौर वाकव हुवा नायका भेद ज्ञातयोवना अज्ञात योवनादि भेदभेदांतर कुछ२ समझणे लगा कविताइ वढी तत्वोंका कुछ२ वाकफकार भया पैतालीस आगमकी पूजा तीसकी सालमें वीकानेरमें वणाई थी इहांपर वीस विहरमानजीकी वणाइ स्तवन छंद लावण्यां वगेरे तो हजारोंही वणाये लेकिन कंठाग्र पाठ ज्यादा श्लोक नहीं थे इधर परम गुरु ४ दिनके अणसणसें वीकानेरमें स्वर्ग पधारे वडा अफसोस उनोंके उपगारका आया मेंने उनोंकी चाकरी नहीं वजाई और उहां एक पूनमचंद भोजक वडा चमत्कारी तांत्रिक देवी उपासी था उनोंनें मेंने तीन चमत्कार मयतांत्रिक दिखलाये इस सीखणेके वदले उसनें दोयसे रुपैयी मंत्र मुझकों हवालत करवाया जवसें मानिक दस रुपया उनकूं मैं देने लगा वो वडा सरल स्वभावी और कुंवारा था उहांसें मेंनें गुलवर्गे चोमासा किया उहां मंत्रादि चमत्कारोंसें

जतियोंके नामका डंका वजाया वाद वेगम वजार हेदरावाद इकतालीसमें मकान भाडे लेकर जा रहा वैद्यक परिश्रम करणा सरू किया रातको दो वजेसें ७ वजे तक पढता पांच ग्रंथ मूंकर लिये माधवनिदान योगचिंतामणी सारंगधर वैद्यजीवन और कामिल २ श्लोक निघंट रत्नाकरके खैर इसही अभ्यासमें हमारे श्रीपूज्यजी महाराज चंद्रसूरजी उहां पधारे उनोंकी सरवरावास्ते सेठ संघमुख्य मगनमलजी श्रावकसें मुलाखात भई महाराजकी सरवरा वहोतही करी लेकिन् मेरे पढी विद्याका रमणक और राज्य सभाकी वाकवी और इल्मका तजुरवा इसी पुरुषकी संगतसें वढते चला में इहांतक सरलथाकी धूर्त्तोंके हाथ हजारों रुपे विश्वाससें दे देकर ठगाये गया व्याजके लालचसें वहोतोनें गिरीवीमें खोटा माल विश्वाससें धर२के ठग लिया मीयां कमावे मुठे२ अल्ला ले गया उंठे२ वो हाल लातूर पेठ तीन वखत साहूकारोनें इलाजकेवास्ते वुलाया उहां सातोंइ धातू क्रमसें फूंकी विद्यार्थी विष्णुदत्त जव हमारे पासही रहता था अभ्यास करणे हैदरावादमें करीव १० ब्राह्मन आते थे विद्या वहोत पुखत और तरक्की परथी रोगोंका इलाजभी होणे लगा जस वढणे लगा वडे२ वैद्य च्यारोंसे मोहवत वंधी संभइया तैलंग ब्राह्मण वैद्य धुरंधर ७० वर्षका सिधू मुनरवाड तैलंग ये डाकटरी और रसक्रियामें वडाही प्रवीण था इसकी संगत और इस रसोंकी नइ२ तरकी वकी हमेस पहर२ भर गोष्टी भया करती रामलालजी पारीक ब्राह्मण थे आत्मारामजी दादू पंथी वूंदीवाला साक्षात दुसरा धन्वं-तरी था उसका विद्यार्थी गणेशलालजी जो कोटेमें रहते हैं उनोंकी खरल इनोंने छ वर्ष घोटी थी इनोंसें मेरी वडी प्रीती थी इन तीनोके संग मेरा इलाजोंका रोगीयोंपर केइ वखत काम पडा था चोथा लोका वापू तैलंग ब्राह्मन अनुपांनके वदलणेमें और रसोके वरतणेमें वडा नामी था उसका इलाजभी शिवलाल मोतीलाल पीतीकी वेटीका जापेमें हिस्टिरीया तथा और दोचार जगे इलाज देखणेमें आया संभइयेने केइयक धातु तांवे-श्वरकी अभ्रककी सहज तरकीव फूंकणेकी वताइ कची धातू रह जाय उसकी परीक्षा वताई काष्टादिक तथा जहरादिकोंके सोधणेकी तरकीव वताई सेठ श्रीमगनमलजी के इहां दो वखत जीमणा दोनों वखत उनोसें वातचीत हरेक वात धर्म संवंधी वैद्यकके सातों अंगकी भया करती उनोंके सहारेसे नफे नुकसांनकाभी कुछ खयाल भया दोनों भवोंका राजमृगांक पारदभस्म हेमगर्भ पोटलीरसभी इनोंकों मेनें वणाकर दी हेमगर्भ पोटली रस इंकन्ना कचे गांधीनें वणाणी सिखलाई जिससे वुद्धिद्वारा सव पोटलीरस मुझे वणाणा आगया चंद्रोदयभी मेनें अपणे हाथसे दो वखत वणा लिया पारेके शुद्ध कर-णेके आठोंइ संस्कार मेनें केइ वखत कर डाला इस संस्कार विधिकों संभइया महाराष्ट्र द्रविड वडे२ विद्वान वैद्योनें मुझे अतीव२ धन्यवाद दिया साल पेतालीसमें हमारे गुरु ..पंदर्ग हैदरावाद पधारे उनोंकी सेवा पांचसे रुपेसें करी तव उनोनें प्रसन्न होकर

ावण पताका सूर्य पताका आदि ३५ यंत्र और जैनाम्नायके रोग मिटाणेके सो मंत्रविधि समेत पतवाणे भये वताये सो सव सत्य फलद थे वो फेर सिद्धगिरी गिरनार यात्रा कर बीकानेर पधारे हमारे शिष्य श्रीमाली ब्राह्मनकूं दीक्षा जा करदी वाद ढूंढक मत पराक्त नाटक गुजराती छापेका एक जेठा कच्छी श्रावकने भेट की वंसीधरलालने अज्ञान तिमर भास्कर और आर्य देशविवस्था भेट की इन तीनोंके पढणेसें वेदशास्त्र व्यवस्था और दयानंदजीका छद्म इत्यादिमें वहोत वाकव हुवा साल छयालीसमें गोविंददाश सराव- गीका इलाज करणे मुंवइ गया पीछा जव आया तव आर्यासमाजी याज्ञेश्वरानंदकी सभा भई केइयक ब्राह्मन विद्वान चर्चामें साक्षी थे नियम था ना जवाव होय सो धर्म छोडे तीन दिन वडी चर्चामें खंडन मंडन विषय वहोत चला आखिर सव जुवावोंकी विजय पाकर श्रीनेमचंदजी जेपुरवालोंके समक्ष १० जती और छया लीसकी आखा तीजकूं शिष्य हमारा जती वणाया सभानें तथा शिष्यने युक्ति वारिधिः पद लिखा मुंवइमें श्रीधर शिवलालसें विक्रियार्थ २५ रुपे सइकडे कमीसनसे व्याकरण काव्य कोश वेदांत न्याय छंद अलंकार नाटक ज्योतिष वैद्यक भारत वाल्मीक संप्रदायोंके अनेक शास्त्र कमीशन द्वारा विचणे लगा और वांचते रहता दो वर्षमें अन्य मतांतरीयोंके पौराणादिक अनेक पूर्वोक्त शास्त्रोंके रहस्यका जांणकार होगया लक्ष्मणभट्टकों मैंनें वडे कष्टसें वचाया था वो श्रीरा- मपंडित निजाम सरकारका पांचसे रुपे मासिक पगार पाणेवालेकों वेद पढाया करता उसके भाइका जीर्णज्वर उपद्रव संयुक्त मैंनें इलाज किया आमदरफतसें जर्मनके छपे वेद साठ हजार मुझें वतलाया ब्राह्मन सिवाय वेद कभी ब्राह्मन सुणना पढणा तो दूर रहा लेकिन आंखोंसें पुस्तक कभी नहीं दिखाते लेकिन् संसारमें धन्य२ महिमा है. इस वैद्यविद्याके उपगारकी सो वो भट्टजी और पंडित श्रीरामजी अंतरंगसें सव मूल और अर्थ मुझे वतादिया जव जैनोकी वातकभी मूंपर लाते तो आखिर उनकों जवावमें मौन ही करणा पडता इस तरे चारोंही वेदोंका सारांस समझणेमें आया और केइयक हस्त लाघवता रसायण क्रिया अनेक चालाकोंसें अपणे जाती कायदेसें हासलकी (सर्वे भूतें श्वेतांवरा) इति वचनात् संवत सेंतालीस तक वीकानेर वाणेका दिलमें विचार बिल- कुल नहीं था फकत शिखरगिरीकी यात्रा और कुटंव यात्रा आदि कल्याणकभूमि परमेश्व- रोंकी उमेद किया करता हीरालाल अग्रवालाकी सोवत दिगंवरसें समयसार नाटक और तत्वार्थ सूत्र दसुं पढे तबसें दिगंवर वार्तालापमें सनातन धर्मवालोंमें मर्के. पेटा छोटे लगी कारण दिगांवर मत जिन सेनाचार्य पुर्वधारी एकका शास्त्र लिखा भया है सनातन श्वेतांवरोंका शास्त्र पांचसे आचार्योंकी सम्मतीका लिखा भया है [illegible] आचार्य और पांच हज्जार साधू जमा भये थे उसीसे वीचापट्टन होकर [illegible] सलफाइ वंदरमें सेंतालीसका चतुर्मास किया वाद हैदरावाद आया जिसमें [illegible]-

लजीसें वांची दशवीकालिकसूत्र रायप्रश्नी ज्ञाता अंतगड दशा प्रमुख सूत्र नेमचरित्र राम चरित्र प्रद्युम्न चरित्र गुणमाला प्रकरण आत्मप्रबोध प्रकरण दानादिकुलक शांतिनाथ चरित्र वर्द्धमांन देशना वैराग्यशतक गुणस्थान क्रमारोह गौतम प्रच्छाफेर अनेक धर्मिक अवलोकन किया और शरीर कुशलतामें अशुद्ध पारेके प्रताप कंठमाल जानू नासूर भगंदर संधिवातादिक अनेक रोगोंका इलाज मेरे शरीरका मेनेंही करके अच्छा किया दुसरे वडे२ भारी रोगोंका इलाज वीकानेरमें दो हजार अदमी मेनें अछे किये होंगे असाध्य वैमार मेरे पास वहोत आते हैं, कष्टसाध्यतकमें सुधारसकताहूं दवायां मेरे पास अनेक रस धातू फूंकी भई शुद्ध तइयार है, तुम लोकोंकों इल्म सिखाया फेर सीखाणेकी उमेद रखताहुं वहोत वात मेनें विद्यालाभादिक नफे नुकसांनोकी ग्रंथ वढ जाणेके सवव नहीं लिखी है, सं० १९५८ के माघमें श्रीपूज्यजीने मुझें उपाध्याय पद दिया इहांसे फेर वारे वर्षमें च्यार पांच वषत मैंने देशाटन किया उहांभी वहोतसें इल्म और सत्संगत भई (श्लोक) संसार विषवृक्षस्य, द्वेफलअमृतोपमे, काव्यामृत रसस्वाद, संगमं सज्जनैःसह १ ये वात में जाणकर अपूर्व ग्रंथ वांचणेकूं हमेस उमेदवार रहता हुं संसारमें भले वुरे सव तरेके अदमी है ठोकर खाकर सुधर जाणा वुद्धिवानोंका काम है विद्या सव पूराणी पडणेसें भूल पाती है वैद्यक विद्या ज्यों पुराणी होती जाती है, त्यों त्यों वढती जाती है सोध अंग्रेज लोक ज्यों ज्यों पदार्थोंकी वढाते जाते हैं, मेंनेभी इस मुजव अपने क्षयोपशम माफक और द्रव्य माफककेई वाते वढाई है इसारा तो उनोंकोभी शास्त्रका है, मुझेंभी वोही है, इनोंका संप धन मदत राज्य सासनके सबब दिप२ कर रही है, इन च्यारोंकी न्यूनता होणेसें दीपक मन मंदरमें प्रकाशित है, प्राचीन शास्त्रकार त्रिकालदर्शी थे नही पढणा ये हमारी भूल है, इस वखत स्वतंत्रतामें जो फल वुद्धिमांनोकों दोनोंभवोंका हासिल होता है, सो परतंत्रतामें कभी नहीं होता इय वातमें ने वहोत दूरकी लिखी है, जैसी वुद्धि होगी वो उतनीही समझ लेगा इस वखत मेरे शिष्यकामिल विद्याके निजके पाले भये तीन है, पं० क्षेमचंद पेमचंद अमरचंद इग्यारे किये केइ मर गये केइ चले गये चेला और पुत्रवोही है, जो गुरु मातापिताका भक्त होय और गुरुका अवर्णवादी होय और धनके लालचसें चेला होय स्वार्थके वश लाचारी करे फेर जेसा का तेसा एसे कुशिष्यकों शिष्य नहीं समझा जावै विनारसकी तरे विद्यार्थी शिष्य आजतक मेरे २५ है, वो सव आज्ञाकारी है, इसतरे वैद्य विद्या हासिलकी और वैद्यदीपक प्रकाशका पूर्णताभी आया छपाणे दिया गया ॥ सं० १९६२ में मेरी अवस्या अंदजन ४८ वर्षकी है, ५३ की सालमें दादासाहिवकी वडी पूजा मेनें वणाई है, थूलभद्रजीका नाटिक मेंनें वणाया कल्पद्रुमकलिकाकी तथा वारेमासी पर्वोंकी श्रीपालचरित्रकी हिन्दुस्थानी भाषाकी संकलना मेंने करी है, आठ ग्रंथ छपे हैं, पचीस

ग्रंथ हिन्दुस्थानी भाषाके संकलित लिखे भये तइयार है, भाषा हिन्दुस्थानी सर्व देशमा-मनीय है (दुहा) इधर उधरके लाख रुपइये, अठी उठीके हजार, इकडम निकडम आठ आनां, सूमापइसा चार १ इसवास्ते ये भाषा सर्वोपरी है, शास्त्रोंके वांचणे और सुणणेसें वो जो शकाओं और कुतर्के थी सो सब स्वत मिटती चली गई इससे ठीक २ सिद्ध भया जितना अर्द्धदग्धपणा है, सोही कुतर्क संका पैदा करणेकी जड है, सब शास्त्रोंमें बहुश्रुतीपणा श्रेयस्कर है, (दुहा) भरियासो छिलके नहीं, छलके सो आधा, मिनखांतणी पारखा बोल्या और लाधा १ इस वैद्यविद्याके प्रताप वडे वडे श्रीमंतोसे मुलाखात चतुराई इस भव सुधारणेकी शक्ति विशेष कर पर भव सुधारणेकी शक्ति चमत्कारीक मंत्र तंत्र यंत्र सब बातें इनकों हासिल भई और होयगी वैद्यविद्या कभी निष्फल नहीं जाती इसही वास्ते अंग्रेज सिरकार जैसा हुक्म डांकटरोंका रखते हैं वैसी इनोंकी चढनी कलाका सब बातोंका वखत है, ये बात एसीही हमारे पांडवादि राजोंके वखतथी जैन वैद्य वागभट्ट वृद्ध राजाधर्म राजाका वैद्य था उस वखत अनेकानेक वैद्य एसी कुदरत और हुकमत धराते थे यवन बादशाहोंके लुकमान आदि हकीमभी आर्यावर्त्तके गये भये नांमी भये थे इस वखत देशी वैद्य विद्या पारगामी हजारोंमें एक मिलेगा बाकी तो फकत चिकित्सक मात्र इन नाकदर-दानीके सबब बाय रहे हैं, यह वैद्यविद्या संसारमें अपूर्व वस्तु है, वैद्य लोकोंने लकडी हाथमें रखणी सरू करी है. सो प्रथा प्राय सूसा पंकंबरसें चली है, सूसेको एक लकडी एसी मिली थी सो प्राय तरे२ के जहर उतारणे और केइ रोगोंकों मिटाणेवाली एसी जडी हाथमें रखता था अब तो स्यात् स्वानादिकोंके डरसें रखते होंगे बाकी तो लकडी रखणेमें केइयक तो जाहर गुण है. (दुहा) जलथा गण नाप छिद्रकारण, वैरी भाजण दंत लकडीमें गुण है घणा, राखो वैद्य रसन्त १ वैद्यक ज्योतिष विद्या आदि सर्व विद्याका पीहर तो ब्राह्मणोंके घर है, और सासरा जतियोंके घर है. लोक एसा कहते हैं क्योंके पुस्तकके पत्रेकतरणा लीके फांटीये पूठा पटडी निटांगपोतें बांधणा सो धणा हरताल हिंगूलेसें अलंकृत करणा बडी हिफाजतसें रखणा दोदो हजार २५ से वर्षोंकी करीब लिखी पुस्तकें भंडारोंमें रखणी ये सब चतुर विद्याका सरस्वतीका सासरदाना सिद्ध होता है, इसमें विपरीत अवस्था शिथिल बंधनादिक ब्राह्मणोंके पास सरस्वतीका पीहर-पणेमें आता है पुस्तकोंका इनसें पीहरकी अवस्था सिद्ध होती है जैसे भाषा ग्रंथादिक देखा ये श्लोक लिखा है उसका अर्थमें न्यारेन्यारे मतोवाले पोषित होते लेकिन उसका असली अर्थ उन लोकोंके मनकी बुद्धिका हेतु था आजकी ...... [illegible] चलने लगे हैं, इसवास्ते हीन दशाके प्राप्त होकर ...... [illegible] हो .... सो लिखता हूं ॥ भाषाका अर्थ प्रगट है सो ग्रंथादिकोंमें भी ...... [illegible] क्योंकिवास्ते भी ...... [illegible]

पणा मांनते हैं इसवास्ते अपणी ईश्वरता याने (ऐश्वर्यता प्रगट करणेकों) मायाकूं अग्रे श्वरीपणा दिया था विना जैन दीक्षा लिये सूत्रोंका तत्त्व नहीं पढाणा आदि अन्य दर्शनी योकूं अपणी चमत्कारीपणेकी विद्या नहीं सिखलाणे आदि वहोत वातोंमें माया रखते थे इसवास्तेही सर्वदर्शनियोंकी परीक्षा करणेपर विद्या मंत्र तंत्र गायन वादित्रादि एकसो आठ विधान समकालमें वादसाह पिरोजसाहके सांमने जतियोनें करके दिखाई अमावसकी पूनम मकाननाडोलाइका मंदिर आदि एक जगेसें सइकडो कोस एक रात्रीमें उडाके लेजा धरणे आदि संवत् विक्रमके सोलेसे तक कर वताई इत्यादि वाते सव दर्शनी जतीयोंका प्रसिद्धपणें जानते हैं, राजा वादसा और प्रजा सव गुरू करके वतलाते थे और गौरव वढाकर मांन रखते थे इसवास्तेही गढ चितोडके किलेमें और जेसलमेरके किलेमें इत्यादि अनेक राजमहलोंके पास जैन मंदिर अभी सईकडों किलोंमें मौजूद है, जैन मंदिरमें नहीं जाणा इत्यादि वातोंके गपोडोंपर राजोंका दिल नहीं खिचाथा अगर एसा होता तो जैन मंदिर महलोकें नजीक कव वणणे पासे रावलपिंडीके किलेतक जैनोका मंदिर मौजूद है उहांतकही आर्योंकी शीमाथी ये सव पूर्ण माया धारी जैन उपदेशक महिमा धारी जतियोंके मायापणेका है, अकवरनें सभामें खुद फरमाया था प्रत्यक्ष जंगम खुदा जिनचंद सूर है, जिसकों में आंखोंसें देख रहा हुं जगत्कर्ता खुदा तो अनुमांनसें लोक और में मानता हूं वस ये प्रतिष्ठा जतियोनें अपणी ईश्वरता दिखलाणेके लिये मायाकूं अग्रेश्वरी वणाई थी अव ये माया उस वातोंसें तो हटी जती २ योंके आपसमें फेली पुस्तक लिखणे वांचणेकूं नहीं देणा और लेजावे सो फेर पीछीभी नहीं देणा विद्या चमत्कार आपसमें सीखणा नहीं जो उनोंके पासे सीखे सो उनोंकीही पीछी निंद्या और जमावट उखेडणा गुण किसीमें होय तो वो मूंपरभी नहीं लाणा और औगुण जराभी नहीं होय तो हरतरेसे लोकोंमें प्रगट करणा मर्मोंका उघाडणा कोई चेला सुधरता होय आप धनके लालचकु शीख देकर विगाड देणा पुस्तकें अन्य दर्शनियोंकू वेचणी आपसमें देणी नहीं कुलकी रीत पढणा लिखणा पढाणेका वो आजिवाका छोड सरकार दरवार गवा जमानत खेती आदि प्रगटपणे करणी एवं लाजका छोडणा है सो सव ओगणकी जड है, सो आज जतियोमें विरलोमें रही है नइ रोसनी वाले जतियोंमेंसे अलग छंटे है, वो माया रखते हैं कुछ२ तो जैनवर्ग पूजते हैं लेकिन् वो चमत्कार और पूजा तो वो कहणा वट होगई सोना गया कर्णके साथ ॥ पैशुन्यता पहले दिगांवर जैन नांम धारियोमें थी पराया छिद्र दरसाणा या चुगली करणा किसीका न्याय संपन्न वचन देश क्षेत्र कालभावकी अपेक्षाके होय उसकूंभी नहीं मानना इसका नांम पिशुनता है, जव ये पिशुनता अन्य मतवालोंपर चलाते थे तव अपणे मतमें दूषण सुनकर और नग्नपणेकी करपात्रीकी वनोवासी आदिकी कष्टता देखकर अन्य दर्शनी

क इनोंका धर्म कबूल करते थे दक्षणमें राजा और प्रजा और मंदिर सब दिगांबर गोका हो गया था भट्टारक जिनशेनाचार्यने श्रावगी गोत्र ८४ लोहाचार्यने गर्गाचार्यनें अग्रवाल गोत्र राजा और सुनारोंका बणाया विना अदमी पालखी दिल्हीमें बादसाहोके फर्मानें एक भट्टारकनें चलाइ ये पिशुनताभी इनके वृद्धिका हेतु था बस अब इनसें उलटा परिणाम चला भट्टारक लोक अपणे द्रव्यके लालच जातीमेंसें बेकसूर श्रावगीकूं काल देणा भमर (भोजनके वखत) अडजाणा ये इतना रुपया देगा तो पारणा करूंगा इत्यादि पिशुनताके कारण उन वणियोमें पिशुनता फैली सो उनोका वीस पंथ प्राचीन खंडन कर तेरा पंथ गुमान पंथ निकाला भट्टारकोंकी आजिविका तोडी मंदिरमें आपही पंच और आपही पांडे बणे इस कारण चतुर्विधसंघ भगवंतनें इकीस हजार वर्ष तक चलेगा एसा लेख जिन शेनाचार्यने अपणे बनाये उत्तर पुराणमें लिखा था सो विल-कुल प्राय आस्त होकर दो संघ श्रावक श्रावक ण्योंइ रह गई वात तो एसी करणेकी थी जो भट्टारक और जाति कायदा सुधर जाता लेकिन् आपशमें पिशुनताने फैलाव किया भट्टारकभी थोडे रहे नग्न मुनि तो हैं इनहीं भट्टारकोंको नइ रोसणीवाले गुरु मांनते नही वीसपंथी मानते हैं इतिश्री ॥ बुद्धिवोद्धोंमेंथी जब चीन ब्रह्मा जपान आदि पांच बाद-साहोंके गुरु पूंगी थे मुडदा खाने आदि उपदेश और लांबा गुरू आदि एकसो वीस वर्षसें फेर चोलाबदलके फेर पीछे वोही ६ महीनेका बालक होजाणा पूंगी लोकोंके धर्मस्थान पर अकस्मात् विना अदमीके लाये चाह दूध भोजन टेबलपर वखतपर स्वत हाजर हो जाणा जिनोंकी परिक्षा बडे २ युरोपियन डाकटरोंनें करी लेकिन् पता नहीं लगा आखिरको यही कहणा पडा बडे तांत्रिक हैं, ये सर्व महिमा उनोंके योगविद्या और बुद्धिका था, लकडेके घोडे अदमी, कागजोका कपडा, छापा शिलाका, कांचकी चीजों लकडीका कांम पुलपाणीपर एसी मजबूत और जलदी बांधणी इत्यादि अनेक बुद्धिकी कारीगरी [illegible]णा इलम और धन इत्यादि जो उनोंके ग्रहस्थों पास था बुद्धिसें आजकल औरही [illegible]मला चला जपानने मुडदे खानेमें खूनका ठंडापणा होता है बहादुरी नहीं रहती इ[illegible] यादि गौतम बुद्ध और पूंगियोंका उपदेश छोड मारके ताजा खाणा इत्यादि केइ्याने अपणी प्रत्यक्षपणे सिद्धकर अभीतो बडे सूरवीर इलमदार बादसाहीके दरजे पोहचे [illegible] एसी बुद्धि विचार बौद्धका उपदेश एक बुद्धमूर्ति [illegible] अन्य देव नहीं पूजना उसमें उलटा विचार चीणोका है हजारो देव पूजणे लगे बुद्धि घटेगी [illegible] लोगों [illegible] कर दिया इतिश्री मूर्त्ति [illegible] जब [illegible] लोकोंने [illegible] बुद्धि श्री दयानंदजी [illegible] आचार्योकी मूर्ति [illegible] अपना [illegible] अन्य दर्शनोंके नहीं पढाने [illegible] कभी नहीं पढाने लेकिन् इनतानो जैनोंकी निंदनता है, सो मूर्त्तिका [illegible]

वांचके ग्रहस्थोंकों यथार्थ सुणा देते हैं मगर ये तो अर्थभी नहीं सुणाते तोभी इनकूं अग्रे मतावलंवी वैदपर वडायकीन सब लोक रखते हैं इहांतक लोकोंकों खबर नहीं थी दर्शनी वेदमें क्या लिखा हैं वेद ईश्वरकृत है. इतनी श्रद्धापर लाखों करोंडो आदमी वेदो खते थे माननेवाले वधते जाते थे सृष्टिकी उत्पत्तीमें पुराण पुराणोंके आपसमें रातदिन एकसो अंतर एक पुराण दैवीभागवतमें सुकदेवजीके पांच पुत्र भये श्रीमद्भागवतमें उस सुअमाव- दैवकूं जन्म ब्रह्मचारी इत्यादि एक पुराणसें दुसरे पुराणकी वात नहीं मिलती तो रात्रीमें मूर्खताके सवव मतकी हमेसां वृद्धि थी दयानंदजीनें लिखा है, फेर वेदोमें सब जीवोंते सब मारके होमणेका हुकम यज्ञमें मांस खाणेका हुकम और वैष्णव संप्रदाय ...और ... वत- जनी रामानंदी रामसनेही आदि भक्तिमार्गवालोनें यज्ञादि वेदोंकी कर्त्तव्यता तो न और मानी दया वैराग्य कवूल करकेभी वैदोकों ईश्वरकृत मांनते थे इन मतावलंवियोंकलोंमें वेदोंकों कवूलभी किया और उस कर्तव्यताकी निंदा अपणी वणाई वाणीयोंमें करी इ नहीं वातकूंभी मूर्खपणा दयानंदजी सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते हैं, तोभी मतकी वृद्धि थी भण्डीके माला ग्रंथमें चोरी कर स्त्रीपर पुरुषसें जारीकर मनुष्योंकों मारकर लोंकोकों जवरन् ... धारी करकेभी वैष्णव मतके साधुओंको खिलावे सो परमेश्वरका भक्त कहावे और वैकुंठ जा ... या ऐसी २ कथाओंपरभी मूर्खताकेभरे इमान लाणेवाले एसा दयानंदजी लिखते हैं इतनी वा ... र्त्ता रहतेभी वैष्णवमतके साधूओंकी वृद्धि थी ब्राह्मण और गृहस्थ विष्णुमतकी पूजा कर ... ता थे और करतेभी है वस अव इस मतके द्वेषी दयानंदस्वामी प्रगटे सो वडी च ... लाकी औ ... टी पडिताईके जोरसोरसे आर्यासमाज मत चला दिया वेद उनोंने पढा लेकिन ... अपणे पूर्व र ऋषियोंके अर्थोंसे घृणा आई अव चतुरतासे विचार किया जो में जैनधर्मवाल ... ओंकी तरे ... वेद छोड दूंगा तो मेरा उपदेश कोण मानेगा क्योंके जैनियोंका कहणा है जिस ... शास्त्रोंमें अनेक जीवोंको मार होम करणा लिखा .उस वेदोकों परमेश्वरका कहा कोण वुद्धि ... ान मांन सकता है तव आपने भाष्य वणाया जिसमें दया धर्मका अर्थ धातूओंकों ... खेंचताणके कर दिया और लिखा वेदका अर्थ ब्राह्मण मांसाहारी मूर्खोंने विगाड दिया ... व ब्राह्मणोंके तीर्थोंकी श्राद्ध गरुड पुराणादिककी वहोतही निंदा लिखके ब्राह्मणोकी आजीवि ... का तोडणे केइ ढंग वणाये दयानंदजीका अर्थ शैव विष्णुमतके आचार्य नहीं मांनते हैं ... इ जो कभी ब्राह्मणोंकी आजीविका स्वामीजी कायम रखके शंकर स्वामी रामानुज वलभ ... माधवा- चारी वगेरोंकी तरे ग्रंथ वणाते तो हिंदुस्थानके सव ब्राह्मण स्वामीजीकों स्यात ... कलंकी भगवानका अवतारही लिख मारते लेकिन् तोभी अंग्रेजी पढे जो कृश्चियनोंकी ... तरफ झुकणेवाले थे उनोंकों स्वामीजीने और समाजने वडा उपगार कर हिंदुधर्म दया ... के नमू- नेपर कायम रख लिया पंडिताईने मूर्खत्ताकों हटाया ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ ... शांतिः

इति ग्रंथकर्ता संक्षेप जीवनचरित्र ॥

मारवाडी प्रजा तथा गुजराती महाराष्ट्रादि सर्व देसवाले जब परदेश स्वजनोंको
ाद देते हैं तो लिखते हैं भाईजी डीलारा घणा जावता राखी जो सारी मुदारडी
ूं छे लेकिन शरीरका यत्न किमतरे होता है सो बिलकुल नहीं जाणते इसबातकी
लता मेने इस ग्रंथमें कर दिखाई अब लेके पढणा और इस रस्ते चलणा प्रजाके
ा है, येभी जगतमें मसहूर है के एसा कोण मूर्ख होगा सो अपणी और अपणे कुटं-
ो तनदुरस्ती नहीं चाहते होंगे निश्चै चाहते हैं.

जैनधर्ममें संवेगी साधू यती ढूंढिये तेरा पंथी वगेरे फिरके साधूओंके है दिगंबर जैन
रक तथा पंडित लोक हैं वो अपणा और पराया सबका भला चाहते हैं शैव
ु मतमेंभी अच्छे शांतशील कषायरहित शास्त्रोंकेवेत्ता ब्राह्मण और साधू अभी
ूद है, वोभी स्वार्थ परमार्थ दोनों करके जन्म सफल करते हैं तथा अनेक गुणवंत
ोवारे जातिके वैस्य ओसवाल श्रीमाल पोरवाल अग्रवाल श्रावगी महेश्वरी
दे गुणज्ञ जो धर्मपारायण हैं तेसे २ अन्यभी वर्णोमें जो जो शांत सज्जन हैं उन
प्रजागणके तथा हमारे बीकानेरके महाराज बहादुर राठोड वंश मुकुटमणि
पति न्यायसंपन्न खटदर्शनादि प्रजा प्रतिपालक १०८ श्रीगंगासिंहजी साहिब और
राज्य वर्ग स्वामिभक्त दिवान प्रमुख सर्व साहिबोंको अर्पण में इस ग्रंथको कर्त्ता हूं
प्रयासकी सफलता कर चिरंजीव आप लोक रहे ॥

 इतनी महनत होनेपरभी दाम अल्पही
ाये हैं सबका भला होय ।श्रीरस्तुः॥ ग्रंथ छपाके प्रसिद्ध कर्त्ता पं० क्षेमचंद पेमचंद.

अनुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.

प्रकाश पहला १ सृष्टिक्रम.

किरण २ री.

किरण ३ री सातधातु.

किरण ४ थी [illegible]

किरण ३ री अंग्रेजी दवा.

प्रकाश ६ ठा बुखारके सहचारी रोग.

१४ किरणोंकी तपसील किरण १.

अथ वैद्यदीपक ग्रन्थ ॥

श्रीसरस्वत्येनमः—अथ वैद्यदीपक ग्रन्थस्य प्रस्तावना ॥ युगादौव्यहाराद्ध्वा सर्वोयेनप्रकाशितः स श्री वृषभयोगींद्रो दद्यादोव्यय संपदं १ वंदेहं लोकनाथाय आयुधर्मप्रकाशके धन्वंतरीं युगादीशं श्री नाभि नृप सूनवे २ अविद्यांध मनुष्याणां विद्यादानशलाकया चक्षुरुद्घाटितंयेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ३ वैद्यदीपक ग्रन्थोयं द्योतकृत्हृदिमंदिरं रोग शत्रु प्रणाशाय रामबाणावलीमिव ४ ॥

प्रकाश पहिला ॥

सृष्टिक्रम ॥

जब अपने आस पास की निर्जीवी चीजों का ज्ञान पाते हैं तो अपने आप क्या हैं, अपना शरीर काहे का बना हुआ है कैसे ही उस में कैसी २ शक्ति कैसा २ काम करती है, इतना ज्ञान जो

अपने में नहीं तो बड़ी शर्मिन्दगी की बात है. जगत् में जो अज्ञान है सो ही दुःख की जड़ है उस में भी शरीर संबन्धी अज्ञान तो बड़े ही क्लेश का कारण है, सूक्ष्म नज़र से देखे तो जगत् में जितनी जानने योग्य वस्तु है उसका सम्पूर्ण ज्ञान भी शरीर में से मिल सकता है शरीर की रचना नाम कर्म की एक सौ तीन प्रकृति से जीव और कर्म दोनों शामिल होके शरीर के संबन्ध में रचना रचता है सर्व चौरासी लाख जीवायोनि में मनुष्य जैसी कोई योनि नहीं है क्योंकि अनेक संसारिक अद्भुत कार्यों का करने वाला है सो तो विद्या बुद्धि बल से रेल, तार, अग्निबोट, बिजली, विमान आदि अनेक पूरा वे प्रत्यक्ष पने मनुष्य कृत हैं तैसे ही जप, तप, इन्द्रियदमन, अष्टांग योग का पारंगामी होकर अनंत ज्ञान रूप केवल लक्ष्मी प्राप्त करके जन्म मरण से रहित होकर पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर यह पुरुष हो जाता है बस सर्वोपरि मनुष्य जन्म है द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा यह संसार नित्य है १ तीनों काल में पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा संसार अनित्य है २ द्रव्य ६ हैं. धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकासास्तिकाय ३, जीवास्तिकाय ४, पुद्गलास्तिकाय ५, और काल ६. जीव और पुद्गल को चलने का सहाय देवे सो धर्मास्तिकाय १ जीव और पुद्गल को थिर रहने का सहाय देवे सो अधर्मास्तिकाय २ जीव और पुद्गल को रहने को अवकाश देवे सो आकासास्तिकाय ३ चेतन शक्ति ज्ञान १ दर्शन २ कर्म काटने की शक्ति सोचारित्र ३ और तप ४ यह स्वरूप वाला चर्म चक्षु से अरूपी कर्म के संबन्ध से जीव कहलाता है और कर्म जड़ से रहित होने से ईश्वर होने वाला अनंत शक्ति वाला

जीवास्तिकाय है ४ पूर्ण और गलन अर्थात् कभी भर जाय कभी बिखर जाय फिर रूप १ स्पर्श २ गंध ३ और रस ४ परमाणुओं करके शोभित सो पुद्गलास्तिकाय है ५ वर्त्तने का स्वभाव है नई को पुरानी करे पुरानी को नई करे समय १ काष्ठा २ लव ३ मुहुर्त्त ४ दिन ५ रात पक्ष मास वर्ष इत्यादिक पहचान करके काल द्रव्य है ६ यह सब द्रव्य जहां है सो लोग है वही संसार है जिस में चार गति हैं नरक गति १ तिर्यच गति २ मनुष्य गति ३ देव गति ४ इस में नीचे पृथ्वी के सात नरक हैं बहुत पाप करने वाला जीव नरक जाता है इसी तरह कर्मों के शुभ अशुभ योग से जीव पूर्वोक्त चारों गति में भटकता है जैसे डोर में बंधी चकरी लेकिन डोर अलग वस्तु है और चकरी अलग वस्तु है जीव अशुभ उद्यम से बांधता है जीव शुभ उद्यम से खोल सकता है ऐसे जीव और कर्म जुदे २ द्रव्य हैं और अशुभ योग से बंधा हुवा भी है इस वास्ते जीव और कर्म का संबन्ध आदि भी है और अनादी भी है क्योंकि किसी भी मत वादी ने जीव बनने की आदि नहीं लिखी आत्रेय महर्षि अग्नि-वेशचरक वृद्धवागभट्ट और सुश्रुतादिकों ने अपनी रची संहिता में जीव द्रव्यको अजर अमर अविनाशी अक्षय ही लिखा है जब संसार में जीव की आदि नहीं तो कर्म के संबन्ध बिना अकेला जीव तो संसार में रह ही नहीं सकता अकेला भया फिर तो मुक्ति होकर अचल पद में ही लोकाग्र पर जाके ठहरेगा निर्मल भये बाद कर्म नहीं लगेगा जब कर्म रहित होगा तो जन्म मरण से भी बचेगा इस वास्ते जीव बनने की आदि नहीं तो कर्म भी अनादि

रहित है ये दोनों इस अपेक्षा आदि करके रहित हैं और सहचारी हैं जिस वस्तु की आदि नहीं उसका अंत भी नहीं है इतना विशेष है भवो भव में जीव अशुभ क्रिया अठारे पाप स्थानकों से मन १ वचन २ काया ३ इन में करना १ कराना २ और पाप करते २ को अच्छा समझना ३ इस से जीव समय २ कर्म बांधता है और शुभ क्रिया दान शील तप और भावना इन शुभ कारणों से अथवा अकामनिर्जरा अज्ञान पने कष्ट सहने से जीव समय २ कर्म तोड़ता भी है इस तरह कर्मों का आदि भी है और अंत भी है जैसे सोना जीवों के उद्यम से धूड़ में से जुदा भी होता है और फिर परमाणु विखरता २ मिट्टी में ही मिल जाता है लेकिन धुर में कोई नहीं वता सकता कि मिट्टी और सोना कब शामिल भये थे ऐसे जीव और कर्म का संवन्ध नित्यानित्य जानना जो वस्तु अकर्त्रिम है उसका नाश भी नहीं है जैसे आकाश, और कर्त्रिम वस्तु घट है तो उसका नाश भी है, तैसे कर्म जीव करता है वह नाश भी हो जाता है, जीव अकर्त्रिम है तो वह नाश भी नहीं होता कर्म आठ हैं ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ वेदनी ३ मोहनी कर्म ४ नाम कर्म ५ गोत्र कर्म ६ आयु कर्म ७ अंतराय कर्म ८ जीव में सर्व पदार्थ जानने की शक्ति है उसको नहीं जानने देवे सो ज्ञानावरणी कर्म आंख के ऊपर पाटे समान १ जैसे २ उस कर्म का क्षयोपशम होता है वैसे २ ज्ञान शक्ति वढ़े है १ दर्शनावरणी कर्म २ सो देखने की शक्ति जीव में सर्व वस्तु की है लेकिन इस कर्म के वश देख नहीं सकता जैसे कोई आदमी राजा का

दर्शन कर सकता है लेकिन पहरेदार दर्शन नहीं करने देता २ वेदनी कर्म से सुख और दुःख जीव भोगता है वह कर्म शहत लगी-तलवार के चाटने समान है चाटते मीठा पीछे जीभ कट जाती है ३ मोहनी कर्म मदिरा के नशे समान है जैसे नशे में सुध नहीं रहे ऐसे मोह के वश सब सुध बुध भूल जाता है ४ नाम कर्म चितारे जैसा है जैसे चितारा अच्छी बुरी शकल बनाता है इस वजह देव मनुष्य का सुन्दर रूप नरक तिर्यच का कुरूप इस कर्म के वश बनता है ५ गोत्र कर्म कुंभार जैसा है जैसे कुंभार एक चीज ऐसी बनाता है सो पूजने योग्य दूसरी अपूज्य इस तरह इस कर्म से ऊंच नीच गोत्र होता है ६ आयु कर्म बेड़ी के खोड़े जैसा अर्थात बेड़ी समान है जिस २ योनि का आयु कर्म बांधा है वह भोगने से छुट-कारा होता है ७ अंतराय कर्म राजा के भंडारी समान है राजा हुक्म देता है इस को फलानी चीज देदो लेकिन भंडारी दे नहीं इस तरह जीव दान दिये चाहता लाभ लिये चाहता भोग उप भोग भोगे चाहता वीर्य शक्ति फिरायें चाहता लेकिन अंतराय इन बातों को रोके सो अंतराय कर्म है ज्ञानावरणी की ५ प्रकृति हैं मति ज्ञानाव-रणी १ श्रुति ज्ञानावरणी २ अवधि ज्ञानावरणी ३ मन पर्यव ज्ञाना-वरणी ४ केवल ज्ञानावरणी ५ ऐसे पांच ज्ञान हैं जिसको जो ढके सो ज्ञानावरणी कर्म है जैसा २ आवरण ज्ञान के बहुमान करने से अलग होता जाता है तैसे २ प्रकाश होता जाता है जैसे पूर्ण मासी के चन्द्र का उजाला है तैसे जीव शक्ति में लोकालोक जानने का उजाला है लेकिन बादलों की तरह कर्मों का आवरण

रहित है ये दोनों इस अपेक्षा आदि करके रहित हैं और सहचारी हैं जिस वस्तु की आदि नहीं उसका अंत भी नहीं है इतना विशेष है भवो भव में जीव अशुभ क्रिया अठारे पाप स्थानकों से मन १ वचन २ काया ३ इन में करना १ कराना २ और पाप करते २ को अच्छा समझना ३ इस से जीव समय २ कर्म बांधता है और शुभ क्रिया दान शील तप और भावना इन शुभ कारणों से अथवा अकामनिर्जरा अज्ञान पने कष्ट सहने से जीव समय २ कर्म तोड़ता भी है इस तरह कर्मों का आदि भी है और अंत भी है जैसे सोना जीवों के उद्यम से धूड़ में से जुदा भी होता है और फिर परमाणु बिखरता २ मिट्टी में ही मिल जाता है लेकिन धुर में कोई नहीं बता सकता कि मिट्टी और सोना कब शामिल भये थे ऐसे जीव और कर्म का संबन्ध नित्यानित्य जानना जो वस्तु अकर्त्रिम है उसका नाश भी नहीं है जैसे आकाश, और कर्त्रिम वस्तु घट है तो उसका नाश भी है, तैसे कर्म जीव करता है वह नाश भी हो जाता है, जीव अकर्त्रिम है तो वह नाश भी नहीं होता कर्म आठ हैं ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी २ वेदनी ३ मोहनी कर्म ४ नाम कर्म ५ गोत्र कर्म ६ आयु कर्म ७ अंतराय कर्म ८ जीव में सर्व पदार्थ जानने की शक्ति है उसको नहीं जानने देवे सो ज्ञानावरणी कर्म आंख के ऊपर पाटे समान १ जैसे २ उस कर्म का क्षयोपशम होता है वैसे २ ज्ञान शक्ति बढ़े है १ दर्शनावरणी कर्म २ सो देखने की शक्ति जीव में सर्व वस्तु की है लेकिन इन कर्म के वश देख नहीं सकता जैसे कोई आदमी राजा का

दर्शन कर सकता है लेकिन पहरेदार दर्शन नहीं करने देता २ वेदनी कर्म से सुख और दुःख जीव भोगता है वह कर्म शहद लगी-तलवार के चाटने समान है चाटते मीठा पीछे जीभ कट जाती है ३ मोहनी कर्म मदिरा के नशे समान है जैसे नशे में सुध नहीं रहे ऐसे मोह के वश सब सुध बुध भूल जाता है ४ नाम कर्म चितारे जैसा है जैसे चितारा अच्छी बुरी शकल बनाता है इस वजह देव मनुष्य का सुन्दर रूप नरक तिर्यंच का कुरूप इस कर्म के वश बनता है ५ गोत्र कर्म कुंभार जैसा है जैसे कुंभार एक चीज ऐसी बनाता है सो पूजने योग्य दूसरी अपूज्य इस तरह इस कर्म से ऊंच नीच गोत्र होता है ६ आयु कर्म कैदी के खोड़ जैसा अर्थात बेड़ी समान है जिस २ योनि का आयु कर्म बांधा है वह भोगने से छुटकारा होता है ७ अंतराय कर्म राजा के भंडारी समान है राजा हुक्म देता है इस को फलानी चीज देदो लेकिन भंडारी दे नहीं इस तरह जीव दान दिये चाहता लाभ लिये चाहता भोग उप भोग भोगे चाहता वीर्य शक्ति फिराये चाहता लेकिन अंतराय इन बातों को रोके सो अंतराय कर्म है ज्ञानावरणी की ५ प्रकृति है मति ज्ञानावरणी १ श्रुति ज्ञानावरणी २ अवधि ज्ञानावरणी ३ मन पर्यव ज्ञानावरणी ४ केवल ज्ञानावरणी ५ ऐसे पांच ज्ञान हैं जिसको जो ढके सो ज्ञानावरणी कर्म है जैसा २ आवरण ज्ञान के बहुमान करने से अलग होता जाता है तैसे २ प्रकाश होता जाता है जैसे पूर्णमासी के चन्द्र का उजाला है तैसे जीव शक्ति में लोका लोक जानने का उजाला है लेकिन बद्दलों की तरह कर्म का आवरण

जानना ज्यों २ वायु से बद्दल अलग होते हैं त्यों २ प्रकाश दिखाई देता है ऐसे शुभ क्रिया और शुभ भाव उस आवरणों को दूर करता है दर्शनावरणी की नव प्रकृति है निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ स्त्यानर्धि ५ चक्षु दर्शनावरणी ६ अचक्षु दर्शनाव-वरणी ७ अवधि दर्शनावरणी ८ केवल दर्शनावरणी ९ वेदनी की २ प्रकृति, सुख वेदनी १ दुःख वेदनी २ मोहनी कर्म की २८ प्रकृति क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ इन ऐकेक को चार गुणा करना सो इस तरह अनंतानुबंधी क्रोध १ प्रत्याख्यानी क्रोध २ अप्रत्याख्यानी क्रोध ३ संज्वलना क्रोध ४ इस तरह मान के ४ भेद माया कपटाई के ४ भेद लोभ के ४ भेद यह तो शोलेकषाय है अनंतानुबंधी क्रोध वज्र पर लकीर जैसा है सो जावज्जीव क्रोध जीव से जाता ही नहीं यह क्रोध १ और मान और माया और लोभ वाला निश्चय नरक गति जाता है प्रत्याख्यानी क्रोध तलाव का पानी सूखे बाद जमीन फटे जैसा सो पीछा बरसात होने से सब लकीरें मिट जाती है इसी तरह कोई संवत्सरीपर्वादि कारण बनने से क्रोध दिल से मिटा देता है इस की अवधि वर्ष दिन की है यह मोहनी कर्म वाला तिर्यच गति में जाता है २ अप्रत्याख्यानी क्रोध वेलू पर हवा से लकीरें पड़ने जैसा है इस क्रोध की अवधि पन्द्रह दिनों की है जब दूसरी हवा जोर से चली तब वह वेलू की लकीरें मिट जाती हैं इस तरह यह कषाय वाला पन्द्रह दिनों के पीछे निशल्प हो जाता है यह जीव मर के मनुष्य गति में जाता है ३ संज्वलना क्रोध १ मान २ माया ३ और लोभ ४ वाले की थिति बहुत थोड़ी है संज्वलना क्रोध पानी

के लकीर जैसा है ऐसा मोहनी कर्म वाला देव गति में जाता है इसी तरह मान के १ माया के २ लोभ के ३ वज्र के थंभा जैसा आदि दृष्टांत उत्तराध्यन प्रमुख सूत्रों से जानना नवनोषायक है हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुगंछा ६ स्त्री वेद ७ पुरुष की इच्छा करे सो, पुरुष वेद ८ स्त्री की इच्छा करे सो, नपुंसक वेद ९ दोनों की इच्छा करे सो, सम्यक्त मोहनी १० मिश्र मोहनी ११ मिथ्यात्व मोहनी १२ सम्यक्त जो शुद्ध देव शुद्ध गुरु शुद्ध धर्म इस में जीव को मूर्छित कर देवे सो सम्यक्त मोहनी, मिथ्यात्व और सम्यक्त इन दोनों में जीव को मूर्छा देवे अर्थात नहीं पहचानने देवे सो मिश्र मोहनी इसी तरह कुदेव कुगुरु कुधर्म में मूर्छा देवे सो मिथ्यात्व मोहनी यह २८ प्रकृति मोहनी कर्म की है यह कर्म सब कर्मों का राजा है इन्हों का अर्थ विस्तार कर्मग्रन्थ पंचसंग्रह गोमटसार सूत्रादिकों से जानना सूचना मात्र यहां लिखा है अब सब अंगोपांग की रचना करने वाला नाम कर्म की एक सो तीन प्रकृति सो संक्षेप करके नाम मात्र यहां लिखता हूं इस कर्म का सहचारी होकर जीव तरह २ का शरीर रचता है बहुत ईश्वर कर्त्ता मानने वाले गर्भादि रचना में ईश्वर की कारीगरी बतलाते हैं सो तत्त्व के अजान हैं कर्मों की प्रकृति के अजान हैं जीव और कर्मों की कारीगरी है ईश्वर ऐसे मलीन स्थान में क्यों प्रवेश कार रचना की कारीगरी पना करता है (प्रश्न) ईश्वर और माया इन दोनों ने मिलके रचना रची है (उत्तर) तुम्हारे समझ में आई सो बात एक तरह से सही भी है, जीव है सो निज रूप शक्ति करके ईश्वर ही है, माया शब्द कर्म पर नाम रूप कर्म

ही है पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर माया कर्म से रहित है वह माया से अलग है इस वास्ते हम जो जीव और कर्म की कुदरत लिखते हैं वह न्याय संपन्न है ईश्वर की शक्ति से सृष्टि की रचना मानना यह सब बात वन्ध्या पुत्रवत् खकुसुमवत् है एक अशुद्ध नैगमनय की अपेक्षा करके ईश्वर कर्त्ता मानने वालों के वाक्य सच्चे हैं, जैसे एक सुथार पायली बनाने वास्ते जंगल में लकड़ी लेने को चला किसी ने पूछा कहां जाते हो सुथार बोला पायली लाने को इसी तरह जीव ईश्वर सत्ता करके है लेकिन अभी कर्म सहचारी होने से भया नहीं, हो गया तो फिर सृष्टि में रचना करेगा नहीं इस वास्ते ईश्वर तत्व निर्णय हमारा बनाया भाषा ग्रन्थ देखो संसार की बहुत सी रचना घट पटादिक मनुष्य कृत है पांच समवायों के मिलने से सो हम आगे लिखेंगे और कई एक स्वसत्ता रूप ६ द्रव्य है सो पहली लिखा ही है, अथ नाम कर्म की प्रकृति १०३ लिखते हैं नरक गति नाम कर्म १ तिर्यंच गति नाम कर्म २ मनुष्य गति नाम कर्म ३ देव गति नाम कर्म ४ एकेन्द्री जाति ५ बेन्द्री जाति ६ तेंद्री जाति ७ चोरेंद्री जाति ८ पंचेंद्री जाति ९ उदारिक शरीर १० वैक्रिय शरीर ११ आहारक शरीर १२ तेजस शरीर १३ कार्मण शरीर १४ औदारिक अंगोपांग १५ वैक्रिय अंगोपांग १६ आहारक अंगो-पांग १७ औदारिक औदारिक बंधन १८ औदारिक तेजस बंधन १९ औदारिक कार्मण बंधन २० औदारिक तेजस कार्मण बंधन २१ वैक्रिय बंधन २२ वैक्रिय तेजस बंधन २३ वैक्रिय कार्मण बंधन २४ वैक्रय तेजस कार्मण बंधन २५ आहारक आहारक बंधन २६

आहारक तैजस बंधन २७ आहारक कार्मण बंधन २८ आहारक तैजस कार्मण बंधन २९ तैजस, तैजस बंधन ३० तैजस कार्मण बंधन ३१ कार्मण कार्मण बंधन ३२ औदारिक संघातन ३३ वैक्रियसंघातन ३४ आहारकसंघातन ३५ तैजससंघातन ३६ कार्मणसंघातन ३७ वज्रऋषभनाराचसंघयण ३८ ऋषभनाराचसंघयण ३९ नाराचसंघयण ४० अर्द्धनाराचसंघयण ४१ कीलिकासंघयण ४२ छेवट्ठासंघयण ४३ समचोरससंस्थान ४४ न्यग्रोधसंस्थान ४५ सादिसंस्थान ४६ वामनसंस्थान ४७ कुब्जसंस्थान ४८ हुंडकसंस्थान ४९ कृष्णवर्ण ५० नीलवर्ण ५१ लोहितवर्ण ५२ हारिद्रवर्ण ५३ श्वेतवर्ण ५४ सुरभिगंध ५५ दुरभिगंध ५६ तिक्तरस ५७ कटुकरस ५८ कषायरस ५९ आम्लरस ६० मधुररस ६१ कर्कशस्पर्श ६२ मृदुस्पर्श ६३ गुरुस्पर्श ६४ लघुस्पर्श ६५ शीतस्पर्श ६६ उष्णस्पर्श ६७ स्निग्धस्पर्श ६८ रूक्षस्पर्श ६९ नरकानुपूर्वी ७० तिर्यगानुपूर्वी ७१ मनुष्यानुपूर्वी ७२ देवानुपूर्वी ७३ शुभविहायोगति ७४ अशुभविहायोगति ७५ पराघात ७६ उच्छ्वासनामकर्म ७७ आतपनामकर्म ७८ उद्योतनामकर्म ७९ अगुरुलघुनामकर्म ८० तीर्थंकरनामकर्म ८१ निर्माणनामकर्म ८२ उपघातनामकर्म ८३ त्रसनामकर्म ८४ बादरनामकर्म ८५ पर्याप्तनामकर्म ८६ प्रत्येकनामकर्म ८७ स्थिरनामकर्म ८८ शुभनामकर्म ८९ सौभाग्यनामकर्म ९० सुस्वरनामकर्म ९१ आदेयनामकर्म ९२ यशःकीर्त्तिनाम कर्म ९३ स्थावरनामकर्म ९४ सूक्ष्मनामकर्म ९५ अपर्याप्तनामकर्म ९६ साधारणनामकर्म ९७ अस्थिरनामकर्म ९८ अशुभनामकर्म ९९

दुर्भगनामकर्म १०० दुःस्वरनामकर्म १०१ अनादेयनामकर्म १०२ अपयशःअकीर्तिनामकर्म १०३ इस तरह इस नामकर्म ने शरीर संबन्धी रचना रची है औदारिक शरीर एकेन्द्री पृथ्वी १ पानी २ अग्नि ३ हवा ४ और बनस्पति ५ इन पांचों से लेकर वेंद्रीय २ तेंद्रीय ३ चोरेंद्रीय ४ और तिर्यंच पंचेन्द्रीय और मनुष्यों का जानना देवता और नारकियों का शरीर वैक्रिय जानना चौदेपूर्वधारी साधू आहारक शरीर रचता है खाये पीये को हजम करे सो तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर से काया रची जाती ५ यह दोय शरीर सूक्ष्म है जीव चारों गति वालों के संग में रहता है संघयण हाड़ों की मजबूती का नाम है संस्थान शरीर के शकल का नाम है बाकी शब्द पर अर्थ जानना विस्तार इन्हों का गुरु गम जैन पंडितों से सीखना, आयु कर्म की चार प्रकृति है, देवायु १ नरकायु २ तिर्यंचायु ३ मनुष्यायु ४ अंतरायकर्म की ५ प्रकृति है दानांतराय १ लाभांतराय २ भोगांतराय ३ उपभोगांतराय ४ वीर्यांतराय ५ इस तरह इन आठो कर्मों की एक सो अट्ठावन मूल प्रकृति है, सांख्यमत कर्त्ता कपिल देवजी ने प्रकृति और पुरुष से सृष्टि मानी है सो प्रकृति याने स्वभाव कर्मों का पुरुष सो जीव इन दोनों से संसार नित्य है ऐसा माना है सो पूर्वोक्त कहने से मिलता है कपिल देवजी ने २५ तत्व माने हैं सर्वज्ञ के उपदेश में नव तत्व हैं जो चीज विस्तार वाली होती है उसका नाम तत्व है जैसे जीव तत्व १ अजीव तत्व २ पुण्य तत्व ३ पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ संवर तत्व ६ निर्जरा तत्व ७ बन्धतत्व ८ मोक्ष तत्व ९ जीव

अजीव का वर्णन पहली छव द्रव्य में कर ही दिया है नवप्रकार से जीव शुभ कर्म सहचारी होकर पुण्य बांधता है ४२ प्रकार से सुख भोगता है पाप ८२ प्रकार से जीव भोगता है मिथ्यात्व और अव्रत से अठारे पाप स्थानक से जीव पाप बांधता है पाप आने का द्वार सो आश्रव ५ उस द्वार को रोकना सो संवर ६ सत्ता में बंधे भये कर्मों को जलावे सो निर्जरा १२ भेद का तप, बंध जीव कर्मों का ४ तरह से, मोक्ष जीव कर्मों से रहित होना सो, नव भेद से, इसका विस्तार नव तत्व प्रकरण से समझना, कापिल देवजी रज १ सत २ तम ३ ऐसे तीन पुरुष का मन परिणाम कहते हैं, सर्वज्ञ देव छव कहते हैं कृष्ण लेस्या १ नील लेस्या २ कापोत लेस्या ३ तेजो लेस्या ४ पद्म लेस्या ५ शुक्ल लेस्या ६ कपिल देवजी पांच ज्ञान इन्द्रिय पांच कर्म इन्द्रिय हाथ पांव गुदा आदि को कर्मेंद्रिया कहते हैं सर्वज्ञ देव दश प्राणों को धारने वाला पुरुष अथवा पंचेंद्रिय तिर्यंच कहते हैं इन प्राणों से रहित होना उस को मरण कहते हैं, स्पर्शन इन्द्रिय इसके आठ विषय हैं १ रसना इन्द्रिय इनके पांच विषय हैं २ घ्राण इन्द्रिय इस के दो विषय हैं ३ चक्षु इन्द्रिय इस के पांच विषय हैं ४ श्रोत्र इन्द्रिय इस के तीन विषय हैं ५ एवं ५ श्वासो श्वास ६ आयु ७ मनोबल ८ वचनबल ६ कायबल १० इत्यादि सृष्टि का क्रम संक्षेप कर बतलाया. (प्रश्न) तुम ने जो कर्मों का स्वरूप लिखा सो हमने किसी भी वैद्यकशास्त्र में देखा नहीं. (उत्तर) तुम ने देखा है लेकिन उन बातों को समझते नहीं. जगह २ प्रकृति और पुरुष लिखा है उन प्रकृति का विस्तार सर्वज्ञकथित शास्त्रों में है

औरों में नहीं,, इस वास्ते प्रकृतिबंध है सो ही ८ कर्मों की मूल प्रकृति का स्वरूप है. (प्रश्न) कर्म तो जड़ है वह जीव को सुख दुःख कैसे भुगा सकता. (उत्तर) जड़ पदार्थ मदिरा और जहरादिक है सो खाने पीने से चेतन की कहो क्या गति होती है, प्रत्यक्षपने परवश होकर सुध बुध भूल दुःख पाता है, और प्रत्यक्ष देखते हो संसार में सर्व वस्तुओं का बनना जीव के उद्यम से जड़ पदार्थ लोह पत्थर लकड़ी के औजारों से अनेक पदार्थों की सिद्धि होती है. (प्रश्न) जीव तो सर्व सुख चाहता है फिर दुःख का काम कैसे करता है. (उत्तर) जैसे मक्खी शहद घी में सुख की अभिलाषा कर प्रवेश करती है फिर तो जो हाल है सो तुम हम देखते हैं (प्रश्न) मक्खी में तो ज्ञान नहीं है मनुष्य में तो ज्ञान है फिर दुःख का काम कैसे करता है. (उत्तर) मक्खी के क्षयोपशम माफक मक्खी में भी ज्ञान है मनुष्यों के क्षयोपशम माफक मनुष्य में भी ज्ञान है उन्हों में भी आपस में तरतमता है तो आप को विचार करना चाहिये चोरी जुआ, रंडीबाजी रोगों पर कुपथ्य करने आदि से दुःख क्यों पाता है, कहोगे कि अज्ञान से, तो विचार लो अज्ञान कर्म उस ने पहले बांधा है तभी तो उस को आगे कष्टकारी वस्तुओं की बुद्धि पैदा होती है, सो कहा भी है " दोहा—को सुख को दुःख देत है कर्म देत झकझोर, उलझत सुलझत आप ही धजा पवन के जोर." " बुद्धिः कर्मानुसारिणी " फिर कृष्ण ने अर्जुन से कहा है. " यतः अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं, कृतकर्मस्य क्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि. " अर्थ इस का प्रकट है

(प्रश्न) हम तो यों जानते हैं कि परमेश्वर ही जीवों को सुख दुःख देता है, हुक्म वगैर कुछ नहीं होता. (उत्तर) तुम को अज्ञान का उदय है इस वास्ते ऐसा कहते हो. भला तुम को हम पूछते हैं. एक ने एक आदमी को मारा, एक ने चोरी करी, ये तुम्हारी समझ मूजिब तो ईश्वर के हुक्म से ही ठहरेगा तो फिर इनकी सजा राजा वा ईश्वर देगा या नहीं. तो कहोगे. देगा. भला पहले तो उस को हुक्म दिया फिर सजा क्यों, तो कहोगे ईश्वर ने हुक्म ऐसे कामों का नहीं दिया उसने शैतान के बहकाने से किया. जरा सोच जो वह कर्म जो है उसी को तुम शैतान कहते हो. दोनों का फर्क है राजा तो सर्वशक्तिमान् है नहीं और न उनको त्रिकालदर्शी ज्ञान है इस वास्ते पुलिस आदि महकमे बनाकर गवाह (साक्षी) पर अन्याय को रोका चाहता है जिस पर भी अन्यायी तो तरह २ से अन्याय करने से बंद नहीं होते, ईश्वर सर्वशक्तिमान् है और परम कृपावंत है, तो फिर प्रथम पाप करते प्राणियों को रोक ही क्यों नहीं देता फिर सजा देने में तकलीफ लेता है, तुम बुद्धि खर्चो न तो ईश्वर पाप वा पुण्य कराता न सजा देता सब कर्मों की रचना है, (प्रश्न) हम को इस पर ईश्वर की रचना मालूम देती है, दिन रात ऋतु वगैरः मर्यादा किस ने बांधी है इत्यादि अनेक बातें हैं. (उत्तर) यह संसार में पांच समवायों का संबन्ध है सो हम तुम को समझाते हैं. इस संसार में छव दर्शन हैं. कालवादी १, स्वभाववादी २, भवितव्यतावादी ३, कर्मवादी ४, पुरुषकृत उद्यमवादी ५ और छट्ठा स्याद्दर्शन सर्वज्ञस्याद्वादी ६. (प्रश्न) हम समझे नहीं, यह

क्या बात है. (उत्तर) कालवादी कहता है, काल ही से सब कुछ होता है, जैसे काल से ही सृष्टि की उत्पत्ति होती है, काल से ही नाश होता है, ऋतुकाल पर औरत गर्भ धारती है, काल से पुत्र जनती है, काल से बोलना, काल से चलना, काल से दूध का दही होता है, काल से दरख्त के फल लगना है, काल से तरह २ के पदार्थ होते है, काल से चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्त्ती, नवनारायण, नव प्रतिवासुदेव, नव बलदेव, नव नारद, ग्यारह रुद्र होते हैं, काल से उत्सर्पणी अवसर्प्पणी के छः आरे होते हैं. सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतुधर्म होता है. काल से बालक विलास, काल से यौवन में काले केश होते हैं, काल से बुढ़ापे में इन्द्रियों का शिथिल होना इत्यादिक बातें सब कालवादी काल से ही बतलाता है, काल को ही ईश्वर मानता है १, तब स्वभाववादी कहने लगा अरे ! काल से क्या होता है, सब वस्तु स्वभाव से ही पैदा होती है और स्वभाव से ही विनाश होती है, देखो छतेयोग यौवनवती स्त्री बांझनी के सन्तान नहीं होता औरत के मुंह पर तथा हथेली पगथली में बाल नहीं उगते, नीम के दरख्त के आम नहीं लगते, वसंत में बागों की हरियाली होती है मोर पंखों में चित्राम कौन करता है, सांझ की वक्त बद्दलों में रंग कौन करता है, जीवायोनि में तरह २ की अंगोपांग की रचना, हिरनों के सुंदर नेत्र, बोर बबूल आदि के तीखे कांटे, रूप और रंग गुण जुदे २ वस्तुओं में, जुदे २ साप में जहर, उसके मस्तक की मणि जहर उतार देवे, पहाड़ थिर, हवा का चलना, अग्नि की झाल ऊंची

जाना मछली और तूंबा जल में तिरे, कौआ ऊंट पत्थर डूब जावे, पांखों वाले जानवर उड़ें, सूंठ से वाय मिटे, हरड़े आदि से दस्त लगे, कोरडू सीजे नहीं, देश की तासीर से जमीन में लकड़ी का पत्थर हो जाय, सूर्य गरम चन्द्रमा ठंडा भव्य जीव मोक्ष जाय, छओं द्रव्य अपना २ स्वभाव नहीं छोड़ें, ऐसे स्वभाववादिओं का कहना है २, तब भवितव्यतावादी कहने लगा, अरे! काल और स्वभाव से क्या होता है, भवितव्यता वगैर कोई काम सिद्ध नहीं होता, दरियाव में तिरे चाहे जंगल में भटके क्रोड़ों भी यत्न करे अनहुई होय नहीं भवितव्यता होती है सो ही होता है, आम के वसंत में मांजर लगती है, कोई हवा से अथवा मनुष्य जानवर खंखेर भी देवे तो भी आम लगने हैं सो लगे ही जिधर की तरफ भवितव्यता होती है, प्राणी का मन उधर ही दौड़ता है सौ वर्ष उद्यम करे वह वस्तु नहीं मिले भवितव्यता के वश वगैर विचारे आय मिलती है, आठवां चक्रवर्त्ति सभूम दरियाव में डूबा, ब्रह्मदत्त बारमें चक्रवर्त्ति की आंख गोवाल ने फोड़ी, कृष्ण नारायण की द्वारिका जली, पांवों में बाण लगा, कोयल पर शिकारी ने बाण तका ऊपर से सिकरा तक रहा है, कोयल कूक रही है, हाय प्राण कैसे बचेंगे अकस्मात् बाण छूटा सो सिकरे के लगा, शिकारी को सांपने डंक मारा, कोयल के प्राण बचे यहां भी नियति बलवती रही शस्त्र से मारे आदमी भी जी जाते हैं और हजारों यत्न करने वाले मकानों में बैठे भी मर जाते हैं, इत्यादि बातों से नियतिवादी भवितव्यता सिद्ध करता है ३, तब कर्मवादी बोला—काल स्वभाव भवितव्यता से क्या होना

मिथ्यात्व है. धन्य है सर्वज्ञस्याद्वादी अरिहंत भगवंत जिसने यथार्थ न्याय सर्वांगनय से ठहराया: जैसे पांच अंधों ने एक हाथी के एक २ अंग पकड़ा सूंड, पकड़ने वाला लोह की दांतरड़ी घास काटने की उसकी शकल वाला यह जानवर है. दूसरे अंधे ने कान पकड़ा सो बोला यह जानवर छाज जैसा है. तीसरे अंधे ने पांव पकड़ा सो बोला जाड़े मूसल जैसा यह जानवर है. पूंछ पकड़ने वाला अंधा बोला यह जानवर बुहारी जैसा है. पांचवां अंधा पीठ पर हाथ फेर के बोला यह जानवर मांचे जैसा है इत्यादि अपने २ हठ से पकड़े हुवे बाद से आपस में लड़ने लगे. यह अंधे कुल ग्राम के वाशिंदे थे, पहलीं इन्हों ने हाथी देखा नहीं था, इतने में हाथी का जानने वाला सूझता हुवा पुरुष आया उसने कहा क्यों लड़ते हो यह पांचों ही अंग का धारणे वाला एक यह हाथी नाम का जानवर है जो २ अंग तुमने पकड़ा हैं सो एक पक्ष सच्चा ही है बाद उन पांचों को पांचों ही अंग समझाय एक हाथी सिद्ध किया. इस दृष्टान्त मूजब संसार में पांच दर्शन हैं छट्ठा दर्शन जैन सर्वज्ञस्याद्वादी का है, इसका न्याय सर्वांगसंपन्न अखंडित है. (प्रश्न) मनुष्य सर्वज्ञ होना ही नहीं, तुमने मताभिमान से अरिहंत को सर्वज्ञ लिखा है तुम्हारे तीर्थंकर थे तो मनुष्य ही हां विशेष बुद्धिमान कहो, सर्वज्ञ मत कहो. (उत्तर) अगर तुम प्रेक्षावान हो, और न्यायवंत हो तब तो समझ ही लोगे मैं न्याय वाक्यों से उनकी सर्वज्ञाता तुम्हें सिद्ध कर देता हूं, सच्चा सदैव सच्चा ही है. कोई रागी द्वेषी न माने तो क्या उनकी सचाई जाती है, सो कभी नहीं, प्रथम तो उन

रुष की मूर्त्ति ही सर्वज्ञ पना सिद्ध करती है कि ऐसी योग मुद्रा धारण करने वाला पुरुष अल्पज्ञ नहीं था तदउपरांत उन्हों के जीवन चरित्र से सर्वज्ञ पना सिद्ध है, संसार में भटकने की जड़ राग द्वेषादिक अठारह दूषण सो उन्हों का लेष भी केवल ज्ञान प्राप्त भये बाद उन्हों में नहीं था क्रोड़ानकोड़ इन्द्रादिक देवता जिस की सेवा करते थे. चौंतीस अतिशय, पैंतीस वाणी के गुण, आकाश में छत्र चमर देव दुंदभि आदि गुण और किसी देवों में नहीं था इस वास्ते तीर्थंकर केवली सर्वज्ञ थे. (प्रश्न) हम क्योंकर प्रतीत करें कि तीर्थंकर केवली सर्वज्ञ थे, न मालूम पीछे से तुम लोगों ने ऐसे अपूर्व गुण उन्हों के लिख लिये होंगे. (उत्तर) क्यों जी हमने लिख लिया होगा तो हम पूछते हैं और २ मतवादियों का हाथ किसने पकड़ा था कि तुम अपने इष्ट देवों का ऐसे गुण मत लिखो लिखा वही है कि जैसा २ गुण उन्हों में था और जैसा २ काम उन्हों ने किया था बस उन्हीं कामों के करने से उन्हों को ईश्वर माना है (प्रश्न) तुम को क्या खबर भई कि अर्हंत सर्वज्ञ थे. (उत्तर) हम सम्प्रदाय परम्परा से सुनते आये हैं कि मन में जो कुछ जिसने विचारा उसको तीनों कालों की बात अर्हंत परमेश्वर कहते थे इस उपरांत और यह आगम जो सिद्धांत है सो उन्हों का सर्वज्ञ वीतरागी पना सिद्ध करता है. उन्हों के कहे शास्त्र में किसी भी जगह स्वार्थ सिद्ध पना अथवा अपने शिष्य प्रशिष्यों की आजीविका निमित्त नहीं लिखी है. केवल सर्व मोहादिक त्यागने से मुक्ति होती है ऐसा त्याग वैराग्य और दया की बारीकी का विचार बिना जैन आगम

टाल और किसी मत के ग्रन्थों में नहीं है, न्याय इसका ऐसा मजबूत हैं सो किसी भी प्रतिवादी से खंडित नहीं हो सकता जैसे व्याकरण पढ़ा, व्याकरण पढ़ने वाले की परिक्षा कर सकता है. तैसे ही प्रेक्षावान न्याय वेत्ता उस सर्वज्ञ के आगम को सुन के पढ़के अर्हत परमेश्वर सर्वज्ञ थे ऐसा जान सकता है जिस परमेश्वर के वचन पूर्वा पर विरोध कर के रहित है बुद्धिमान डाक्टर बुहलर ऐसा लिखता है. जैन के तीर्थंकर श्री महावीर तो दूर रहा लेकिन जैन धर्म का एक आचार्य श्री हेमचंद्र के साढ़े तीन करोड़ श्लोकों की रचना शब्दानुशासन देख के मेरी कलम सर्वज्ञ लिख सकती है ऐसा बहुत से अंगरेजों ने निश्चय किया है. नाम कहां तक लिखें और विद्या से हीन हैं तथा पक्षपाती हैं, उन्हों को तो क्या खबर होय. (प्रश्न) दूसरे धर्मों में क्या पण्डित हुये नहीं, या हैं नहीं उन्हों ने तो अर्हत को सर्वज्ञ नहीं लिखा. (उत्तर) जो वे अर्हत को सर्वज्ञ माने तो दूसरा धर्म ही उनके क्यों रहे. मिथ्यात्व मोहनी के उदय से उन्हों को यथार्थ सूझा नहीं जैसे सन्निपात रोगी को पांडु रोगी को सफेद वस्तु भी अन्य रूप से दिखाई देती है और फिर मत पक्ष से इतना विरोध जाहिर किया कि जैन मन्दिर में नहीं जाना, हाथी से मरना कबूल, ऐसे द्वेषी अर्हतागम कब सुने और बांचे जिन २ पुरुषों ने देखा वा सुना उन्हों ने तो समझ ही लिया गौतम गोटिक चौवालीस सौ ब्राह्मण, शय्यंभवभट्ट हरिभद्र मलयगिरि गुसांई आदिक अनेकों ने, बगैर जाने बूझे किसी को झूटा नहीं कहना और निन्दा तो किसी मत की भी नहीं करना. निन्दा महा पाप

का हेतु है जैसे हरि भद्राचार्य ने लिखा है. " यतः पक्षपात नमेवीरे,
न द्वेष कपिलादिषु, युक्ति मद्वचनंयस्य, तस्यकार्यः परिग्रहः " १ हमने
तो सर्वांग संपन्न सर्वज्ञ का शास्त्र देखा और उस में जो २ कथन हैं सो
मात्र सिद्धांत है, संसार में सर्वोत्तर ज्ञान उस ने ही प्रकट करा
उस में ही यह आयुर्वेद है. यद्यपि वीत रागी हुये बाद फिर संसार
कथा नहीं विचारते पूछे जिसका प्रत्युत्तर सर्वज्ञ निश्चय देवे बाकी
तो पट शास्त्र आठ निमित्त उन्हों के उपदेशित मोक्ष मार्ग साधक
धर्मोपदेश में मिला हुवा है, " किंबहुना " इस बात को समझना
यह समझना चाहिये जीव और शरीर का आरोग्य संबन्ध है व
तक सब काम चलता है सो अपने देखते हैं. जीव शरीर में
निकल के जाना है और क्या २ कार्य करता है. सो नहीं दी
इस वास्ते सारी मुदारडीला सुं है यह लिखावट सच्ची है.
और प्रकृति से बुद्धि और मन का सहचारी पना है. पांच
इन्द्री, है जैसे चमड़ी से स्पर्श का, १ नेत्र से रूप का २
पांचों का ज्ञान प्रकट है, कर्मेंद्रिय से बोलना, पकड़ना. चल
करना, और मल त्याग करना सो. वाणी १, हाथ २.
लिंगेंद्री ४, गुदा ५. यह जानना. जल १, अग्नि २
पृथ्वी ४. और आकाश ५, इन पांचों में जो २ गुण रहा
इस शरीर में मालूम देता है. बाहिर जो इन्द्रियां की
देती है, सो ज्ञान इन्द्री नहीं है इन्हों के अन्दर जो
२ काम करती है ज्ञान इंद्रिय वगैरह
और हाड़ों से बनी हुई है

जो अन्दर ज्ञान इन्द्रियां और कर्म इन्द्रियां कुदरत का काम देने वाली ज्ञान तंतु और गति तंतु है सो ज्ञान इन्द्रियां और कर्मेंद्रियों का काम देती है ऐसे शरीर में जीवात्मा ने निवास किया है, इस जीव के बाबत अनेक मतांतरियो ने संकल्प विकल्प किया है. जीव है सो क्या चीज है. इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो कुछ नहीं. कोई तो कहता है शरीर में से चलती रसायणिक क्रिया में से उत्पन्न भया चेतन है. इस प्रश्न के करने वाले चार्वाक् वृहस्पति नाम के आदि में भये हैं. यह प्रश्न वहुत कठिन है इसका शंका समाधान नन्दी सूत्र की टीका में वहुत है, पदार्थ वादियों के मत में भी यही बात है शरीर और चेतन जुदा २ नहीं हैं. शरीर में खून है सो जीवन है और इस खून का फिरना दूसरा जो चेतन वाला पदार्थ उसके ऊपर आधार रक्खे है, वह पदार्थ प्राणवायु है. अंगरेजी में उसको आक्सिजन कहते हैं, यह प्राणवायु खून को साफ करती है. इस से प्राण धारण रहता है, इस वास्ते वैद्यक में इस वायु का नाम सार्थक धरा है. यह प्राणवायु शरीर की क्रिया वास्ते जितनी चाहिये इतनी नहीं मिले, तब शरीर का चेतन कम पड़ जाता है, और बिलकुल नहीं मिले तब शरीर की सब क्रिया बंद हो जाती है, उसको मौत कहते है, जिस में जीवित तत्व कम होता है, उस में चेतन वाला खून कम होता है. शुद्ध और प्रमाण वाले खून से मनुष्य में चेतन और वल जियादा होता है जो आदमी नाताकत और दुबले होते हैं, उसका भी यही कारण है. लम्बी उमर और कम उमर भी इसी खून से तासीर रखती है, कितनेक आदमियों को

जीव एकाएक कोई भी बीमारी बनते ही निकल जाता है और किन- नेक रोगों में जिंदगी का अंश कम २ से कम होता जाता है और चेतन कम होता २ आखिर बंद हो जाता है. आत्मवादी कहता है जीव शरीर जुदे २ हैं, आत्मा परमात्मा रूप है. लेकिन प्रकृति से बंधा भया वीर्य और स्त्री के आर्त्तव का आहार पर्याप्ति करता शरीर पर्याप्ति बांधता है, इस वास्ते जीव कहलाता है पीछे इन्द्रिय पर्याप्ति ३ फिर सासोश्वास पर्याप्ति बांधता है ४, मन पर्याप्ति ५, और भाषा पर्याप्ति ६. ऐसे छः पर्याप्ति मनुष्य बांधता है. ६ कई एक पदार्थवादी ऐसा कहते हैं, जीव कहां से आय के प्रवेश नहीं करता है. वीर्य में और स्त्री के आर्त्तव में रहे भये जीव हैं सो ही प्रवेश करते हैं उस पर ऐसा दृष्टांत देते हैं जैसे सूरज की किरणों में अग्नि है और सूर्य कांतमणि में भी अग्नि है ये दोनों अलग २ होय जहां तक बादर (स्थूल) अग्नि पैदा नहीं होती इस दृष्टांत मूजब रज और वीर्य में रहे जीव ही पैदा होता है इति. वह जीवात्मा सर्व विषयों को जानता है क्योंकि ज्ञानानंद पूर्ण पवित्र है इस वास्ते जीभ से पांच रस. अथवा छः रस जानता है. आंख से पांच रंग, नाक से सुर भी गंध १ दुर भी गंध २. कान से जीव शब्द १ अजीव शब्द २ और इन दोनों से मिल के निकले सो मिश्र शब्द ३ जानता है. स्पर्श ८ ठंडा १, गर्म २, हलका ३, भारी ४, सुंहाला ५, खरधरा ६, लूखा ७ और चुपड़ा ८ इत्यादि इन्द्रियों द्वारा इन स्वरूपों का भोक्ता बन रहा है. अब पुरुषों स्वभाव ३ तरह होता है और ९ तरह का भी होता है लेकिन यहां तीन का स्वरूप दिखाते हैं. सत्वगुणी प्रकृति, धर्म दयावंत

आस्तिक पना नव तत्वों पर, उदारता सम्भावना क्रोध रहित पना सत्यवचन बुद्धिवान् धीरज क्षमा ज्ञान सरलपणा निंदा बिकथा अशुभ कर्म करता शंके इच्छा रहित करे बड़ा विनयवान १, रजोगुणी प्रकृति, क्रोधी दूसरे को मारने की इच्छा सुख की अधिक २ इच्छा करे, कपटी कामी बुरे वचन बोलने वाला अधैर्य अहंकार और भटकने की इच्छा २ तमोगुणी प्रकृति, नास्तिक पना, स्वर्ग नरक मोक्ष पाप पुण्य माने नहीं बहुत खेद बड़ा आलस्य दुष्ट बुद्धि अति निंदित काम अति निंदित सुख में प्रीति बहुत नींद अज्ञान अति क्रोध महा मूर्ख पना पहली १५८ प्रकृति में यह सब आ गया है तो भी जियादा समझने को यहां फिर लिख दिया है इस में फिर कोई में दोय गुण की प्रकृति कोई में तीनों हो मिले भये इत्यादि अनेक भेदों के मिले भये भी मनुष्यो की प्रकृति देखने में आती है आत्मा है सो शरीर रूपी घर का राजा है प्रकृति से बंधा हुवा इस से सर्व व्यवहार करता है शरीर बिना पहचाने नहीं जाता जीव बिना शरीर कुछ कार्य नहीं कर सकता इस राजा के सब कामों में इधर उधर फिरने वाला मनरूपी प्रधान है सारा सार बात को समझाने वाला अंतः-करण रूपी न्यायाधीश है और बुद्धि चित्त वगैरा उसके सलाहगीर हैं. जहां तक ये सब कारबारी अपने २ योग्य रीति का काम बजाते हैं वहां तक शरीर का भोक्ता जीव राजा बहुत वर्षों तक सुख और आनंद से राजधानी भोगता है जब पूर्वोक्त कार बारी अपना २ धर्म भूल कर अयोग्य रीति पर चलने लगते हैं तब शरीर रूप घर में बड़बड़ अर्थात रोग पैदा होता है उस बलवे को दबाने को जीवात्मा

आप उपाय नहीं करता है तब शरीर की दशा बिगड़ती है. जैसे टूटा हुवा किल्ला निरुपयोगी होने से उस में रहने वाला राजा छोड़ दूसरे मजबूत किल्ले का आसरा लेता है इस तरह यह जीव बिगड़ शरीर को छोड़ बड़ा दुःखी होकर निकल कर दूसरे शरीर की रचना रचता है, शरीर में सुख होने से जीव सुख मानता है और शरीर के दुःख से दुःख लोग कहते हैं. जीव है सो शरीर रूपी कैद खाने में पड़ा है, सच है, जिस शरीर में वह दुःख पाता है, तो वह कैद खाने से भी जियादा दुःख की जड़ है और जो सुख पाता है तो यही शरीर सुख शांति का भुवन हो जा । है और इसी शरीर सेती प्रकृति (कर्म की) उपाधि छोड़ मुक्ति प्राप्ति कर लेता है. शरीर से भव भ्रमण भी पैदा कर लेता है. स्वर्ग और नरक भी शरीर से ही जीव बांधता है. उमर की कुछ मुद्दत नहीं है तो भी इस वक्त सौ वर्ष की उमर गिनने में आती है. इस मध्य क्षेत्र आर्या-वर्त्त आश्री, सुख से शरीर का निरभाव चले तो. नहीं तो थोड़े ही मुद्दत में पूराकर निकलता है, जैसे भोजन कर दौड़ भोग करे तेल मसलावे पगचंपी करवावे, स्नान करे, अथवा भोजन कर दिन को सो जावे, इन बातों से उपक्रम लग के उमर पूरी थोड़ी मुद्दत में ही कर गुजरता है, इत्यादि आयुक्षय करने का अनेक वरतावा है आगे दिन रात्रि चर्या में लिखेंगे. उस मूजब चलना. इस संसार में चिंता शोग दुःख और रोग वगैर का विरला आदमी होगा यह सब खराबी की जड़ अज्ञानता है और यह अज्ञानता जीव ने ही कर्मों के संबन्ध से पहली बांधी है. इस वास्ते शुभ उपाय से शरीर का

सुखदाई योग में आत्मा को बहुत मुद्दत तक कायम रखना यह अपना फर्ज है, फिर शुभ कर्त्तव्य करता हुवा परमेश्वर पद को प्राप्त करना. (प्रश्न) तुमने पेश्तर लिखा है सुख दुःख कर्मों से होता है, फिर आरोग्य शरीर को रखना, परम पद का उद्यम करना लिखते हो. (उत्तर) हे मित्र ! हमने तो सब लिखा है तुम अच्छी तरह विचारो कर्म किस का नाम है, किया जाय सो कर्म वह तो उद्यम जीव से ही होता है, पांच समवायों में हमने सिद्ध कर दिया है कोई भी काम पांचों समवाय मिले वगैर नहीं होता, इस उपरान्त फिर तुम्हें समझाते हैं. सर्वज्ञ भगवान् कहते हैं कहां तो कर्म बलि-वान होता है तो जीव को दबा लेता है, कभी जीव बलवान होता है, तब कर्म को हटा देता है. शरी में सब दोष बराबर हैं, तब तक तो रोग नहीं होता, गर्म और ठंड बराबर है, २ तो व्याधि नहीं होती, ठंड बधेगी तब तो कफ, और बादी की बीमारी होती है, गर्मी बधने से पित्त की, पहली कहे भये तीन गुण में से एक सतोगुण भी आनंद देता नहीं. इसी तरह रज और तम भी आनंद देता नहीं, संसार में जो फक्त शांति धर कर बैठे रहते हैं, वह भी सुखी नहीं हैं और जो कोई बुद्धि विगर तामसी स्वभाव रखकर आलसु होय ऊंघते रहते हैं जैसे फक्त मीठा अन्न ही को खाया करे और वह पोषण कारक वस्तु है, तो भी फक्त सतोगुणी होने से आनंद नहीं आता उस के साथ रजोगुण वाला दाल, साग और तमोगुण वाला मिर्ची मसालों का स्वाद होता है तभी जिह्वा इंद्रिय मजा पाती है, रजो गुणी शक्कर में मीठा जियादा लड्डू वगैरः में जियादा डाला जावे तो मिठास जियादा होने

के सबब खाया नहीं जाता और तमोगुणी आटा जो जियादा डालने में आवे और शक्कर कम डालने में आवे तो वायु जियादा होकर पचे नहीं तब दस्त की बीमारी पैदा होती है इस तरह जगत में जहां देखो तहां समानता अथवा योग्य प्रमाण में ही स्वाद देखने में आता है और जहां २ प्रकृति का हीन योग अथवा अति योग देखने में आता है, वहां एकता समानता और सुख का नाश देखने में आता है. जैसे अपने हिंद के मनुष्यों में सतोगुण का अति योग दाखिल भया जिस से सब पृथ्वी की प्रजा को सब के पिछाड़ी रहना पड़ा, जिसमें भी अग्रेश्वरी वणिक जाति. जब तक तीनों गुण जगह की जगह बरतते थे तब तक यह दशा हिंद की नहीं थी. संसार से जिन्हों ने विरक्तता धारली है, उन्हों में तो पूरा सतोगुण ही चाहिये सो भी विरले हैं. रजोगुण के अति योग से मुसलमानों की बादशाही टूट गई, तैसे ही यूरोप की प्रवृत्ति पूजा, प्रजा की घटती का वक्त चला आता है और तमोगुणी पने से पहाड़ों के बाशिंदे भील वगैरः हमेशा दुष्ट बुद्धि करके वह जंगली हालत में जिंदगी गुजारते हैं, जिन लोगों में सतोगुण का अति योग है वहां अप्रवृत्ति अर्थात् कम उद्यमी पना अथवा संसार से विरक्तता के कारण दरिद्र पना देखने में आता है, ऐसा होना चाहिये जैसे राम सतोगुणी न्याय-संपन्न दयावंत थे परंतु रावण अन्याई पर कैसा रजोगुण और तमो-गुण बतलाया और जहां रजोगुण का अति योग है. वहां भी थोड़ा उद्यमी पना अथवा संसार में बहुत अनुराग (प्रेम) होने से भी दरिद्री पना देखने में आता है फिर वहां राग. द्वेष, कुसंप, ईर्षा,

झूठ, कपट और कजिये की वढ़ौतरी देखने में आती है और जहां तमोगुण जियादा है, वहां बुद्धि का भ्रष्ट पना, अधम पना अति क्रोध, वहुत आलस्य और वहुत अज्ञान पना देखने में आता है और जहां पर इन तीनों की समानता है और जितने २ अंशों करके यह तीनों गुण रहे भये हैं, इतने मात्र ही सुख संपत्ति शांति अच्छा उद्यम देखने में आता है. हिंदुस्थान की प्रजा में अंदर २ कुसंप देश में कुसंप जाति में कुसंप न्यात में कुसंप कुटुम्ब में कुसंप आखिर घर में कुसंप और शरीर में भी कुसंप यह तीनों ही प्रकृति की असमानता सव तरह के विगाड़ का हेतु है. वास्ते प्रकृति का एक पना और समानता यत्न से रखना यही अपना कर्त्तव्य है यही सुख की जड़ है, यही निरोगी पना है, यही वैद्यगी का सार है. शरीर और मन में प्रकृति का फेर फार नहीं होने देना यही वैद्य विद्या का पहला कर्त्तव्य है और अज्ञान पने से अथवा पूर्व कृत पाप कर्म के उदय से प्रकृति विगड़े वाद उसको समानता लाने का यत्न करना यह वैद्य विद्या का दूसरा कर्त्तव्य है, रोग मिटाने के अथवा पहली से रोग होवे ही नहीं ऐसे उपाय आगे वताये हैं जिसको वेर २ ध्यान में रखने की जरूरी है, जिसमें भी रोग मिटाने के उपायों से रोग आवे ही नहीं ऐसी विधि से चलने की विधि को ध्यान में लाने की वहुत जरूरी है इस ग्रंथ में अच्छी तरह से यह वात लिखी है ॥

इति श्रीमद्जैन धर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय राम ऋद्धिसारगणिः विरचिते वैद्यदीपक ग्रन्थे सृष्टि-वर्णनो नाम प्रथमः प्रकाशः ॥ १ ॥

प्रकाश दूसरा ॥

किरन पहली, शरीर ॥

शरीर की रचना का विस्तार और सूक्ष्म ज्ञान मात्र ग्रन्थ वांचने से नहीं मिल सकता है, सब वैद्य लोग शरीर का सूक्ष्म ज्ञान समझ नहीं सके ऐसा भी नहीं हो सकता तो भी अशक्य है तो भी सामान्य ज्ञान तो हर मनुष्यों को समझना चाहिये, दूसरी विद्या का अपने चाहे जितना सूक्ष्म ज्ञान सीख भी लिया, लेकिन जहां तक शारीरक विद्या संबन्धी थोड़ा भी ज्ञान नहीं सीखा तहां तक मनुष्यों की पर्पदा में तथा ज्ञानियों की सभा में अपने पिछाड़ी ही है. ऐसा मानना चाहिये, इस वास्ते यह विद्या की वाकिफाकारी होने को क्यों जुदे २ ग्रन्थ वांचने की तसदी लेते हो जो वर्णन शरीर संम्बधी इस ग्रन्थ में किया है, उसमें से सामान्य ज्ञानं तो वांचने वालों को जरूर ही होगा ऐसी आशा है ॥

गर्भ की उत्पत्ति ॥

जो बाहर की शकल देखने में आती है, उनके वर्णन करने की जरूरी नहीं दिखती. शरीर जीवात्मा का एक घर है और घर

के अंदर जितनी तैयारी होती है, तैसी ही इस शरीर में सब तरह का साधन मौजूद है, मनुष्य का शरीर यह कुदरती अद्भुत कर्मों की रचना का एक उम्दा नमूना है, जैसे आदमी जड़ पदार्थों से घड़ियाल में चलने की शक्ति धर देता है, तैसे शरीर रूपी घड़ियाल में चेतन का उद्यम प्रकृति रूप जड़ पदार्थ से बना हुवा है. ज्ञान और गमन करने वाला जीव है, जैसे घड़ियाल का चक्र घस जाने से अथवा अकस्मात् कोई कारण बनने से चलते चक्र अटक जाते हैं उस ही तरह यह शरीर रूपी घड़ियाल भी बन्द पड़ जाती है कर्म रूप का सहचारी चतुर कारीगर चेतन का बनाया घड़ियाल जो शरीर सो मनुष्य वह भी स्त्री पुरुष के संयोग से बनाता भी है और नहीं भी बना सकता तो एक हिसाब मनुष्य से शरीर की रचना की कारीगरी किसी किस्म रच के जीवात्मा नहीं डाले जाता यह कुदरती मामला है, तो भी इस घड़ियाल का संचा और काम और उसके चक्र को पण्डितों ने उखेल २ कर उसका सूक्ष्म ज्ञान मनुष्यों ने समझ लिया है. विचार तो यहां तक है कुदरती कारीगरी के संचे में कोई हरज पहुंचा होय तो मनुष्य की अकल और चातुरी शक्ति बने जहां तक सुधार तो सकती है यह भी काम मनुष्य बुद्धिवानों का कम नहीं है, जिस से वह शरीर रूपी घड़ियाल बहुत दिनों तक चल सकती है, ऐसी तजवीज कर सकता है इतने वर्षों तक इस शरीर घड़ियाल का जितना ज्ञान मैंने प्राप्त किया सो सबों के समझने वास्ते लिखता हूं ॥

गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि ॥

गर्भ में यह शरीर किस क्रम से बंधता है और वृद्धि पाता है सो पहले जानने की जरूरत है, इस में वह तो बड़ा बारीक विचार है कि गर्भ किस तरह पैदा होता है सो तो पूरा समझना बड़ी कठिन बात है अपने लोगों में यहां तक अजान पना गतानुगत गडर प्रवाह से चला आता है और बगैर इस शरीर विद्या के अजान होने से इन २ बातों को सच्ची भी मानते चले आये जैसे कि हनुमान जी कान में पैदा भये, नासकेत जी नाक में, कीचक बांस की भूंगली में, मानधाता राजा पुरुष के गर्भ पेट में, रह गया इत्यादिक अनेक गपोड़ों को मानना और कहना उसको फलाने का शाप था और कहीं किसी का वरदान था यह सब बातें गधे के सींग मुजिब है. (प्रश्न) क्यों जी यह ऐसी २ बातें तो प्रमाणिक शास्त्रों में लिखी है, वह झूठ कैसे हो सके. (उत्तर) क्या कागज पर जो कलम से लिखा गया सो सब सच्चा ही है. ऐसा अगर माना जायगा तब तो जिसके मन में आवे वह वैसा ही लिख के आप सत्यवादी और आप अपने चोरी झूठ बोलना जीव घात पर आदि कुकर्मों को भी अपने सत्कर्त्तव्य में लिख के ठहरा लेगा और यहां तक भी लिख लेगा कि मैं ही परम पूज्य अंतरयामी ईश्वर हूं. (प्रश्न) नहीं २ ऐसे लेखों को बुद्धिमान् बुद्धि से तपास करके फिर सच्चे को सच्चा और झूठे को झूठा मानेंगे. (उत्तर) तो बस तुम्हारे ही वचन और समझ से ही इन्साफ हो गया. कि समझ से न्याय संपद

वचनों को मानना कान में, नाक में, वांस में, और पुरुष के पेट में गर्भाशय संवन्धी स्यान और पुरुष के वीर्य और स्त्री का रज (आर्त्तव) गर्भ को वधाने की वायु आदि पदार्थ वगैर औरत और मर्द के संयोग से और स्त्री के गर्भ रहने की पोलार और शरीर में किस जगह है, इतना जब तुम समझोगे तो फिर समझ ही लोगे कि यह बात कभी नहीं हो सकती, जोकि कान, नाक में गर्भ रहे. (प्रश्न) क्यों जी ऐसे शास्त्रों के बनाने वाले क्या शारीरक ज्ञान समझते नहीं थे, सो ऐसी २ बातें लिख दी. (उत्तर) हम ऐसा क्योंकर कह सकते की वह नहीं जानते थे या जानते थे लेकिन इतना तो हम जरूर कह सकते हैं कि शरीर विद्या के अजान बांचने वाले और उन शास्त्रों के सुनने वालों की परिक्षा तो उन्हों ने जरूर कर ही डाली है, उन्हों ने विचारा होगा कि देखिये श्रोतार और वक्ता कैसेक अकलबन्द हैं, सो सुण के या बांच के " हरेनमः तहत्त " ऐसा कहते हैं, या कुछ तर्क भी करते हैं, जो तर्क करेंगे तब तो बुद्धिमान् हैं, ऐसा समझा देंगे और नहीं किया तो समझा जायगा कि भैंस के सामने गीत नाद करने जैसी कथा होगी ऐसी कुतूहलों की बातों से राजी होकर हमारी सेवा तो तन, मन, धन से जरूर ही बजावेंगे. " अलंविस्तरेण " और पदार्थ विद्या वाले ऐसा भी कहते हैं, मंत्र या तंत्र से या देवता सिद्ध पुरुषों के वरदान से कुछ सन्तान नहीं होता, यह वचन निश्चयनय के आश्रय का है, जिस जिस जगह पांचों समवायों में से कोई भी समवाय की कमी रहेगी वहां तो होगा नहीं लेकिन मंत्र, तंत्र और सिद्ध पुरुषों का आगे

इस के सन्तान होगा ऐसे ज्ञानद्वारा निकला जो वचन वह झूठ होता नहीं, जैसे ज्योतिष् के गणितद्वारा ग्रहण, तारों का उदयास्त, पृथ्वीकम्प आदि अनेक बातों को पहली कहते हैं और वह ही बात उसी दिन होती है, जैसे सामुद्रक से या कोक वात्सायन के लेख से बात मिलती है. दोहा—"छिद्रदंता कोई इक मूरख, कोई इक निरधन टाट का । रूपवन्ती कोई इक सीता, कोई इक काना साधका" (प्रश्न) क्यों जी ! यह लक्षणों वाले ऐसा होते हैं तो फिर कोई इक शब्द क्यों दिया. (उत्तर) इन लक्षणों का विरोधी और कोई लक्षण ज़ियादा बलवान् उन्हों के शरीर में पड़ा होवे तो इन बातों को रोक देता है, इस वास्ते कोई इक ऐसा शब्द धरा है. इस अपेक्षा मन्त्र, तन्त्र, देव सिद्ध पुरुषों के वचन और पूर्वोक्त पांचों समवाय स्त्री पुरुषादिकों का शुद्ध संयोग गर्भोत्पत्ति का कारण है ॥

निश्चय सिद्धांत है पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध से ही गर्भ पैदा होता है पंचेंद्री तिर्यंच और मनुष्यों का तो और एकेंद्री से लेकर चोरेंद्री जीवों की उत्पत्ति तो विना माता पिता के गर्भ बगैर समूर्छिम अनेक कारणों करके उत्पत्ति है सो प्रकट ही है. एकेंद्री किसे कहना आखिर पंचेंद्री तक किसे कहना यह संक्षेप समझ जीवविचार प्रकरण से सीखो. पंचेंद्री समूर्छिम मनुष्य तिर्यंचों के विष्ठा और मूत्रादि चौदह जगह पंचेंद्री मनुष्य और तिर्यंच भी कम शरीर अंगुल के असंख्यातमें भागवाले पैदा होते हैं, तुरन्त ही मर जाते हैं. चर्मचक्षुवालों को दिखाई नहीं देता, सर्वज्ञों ने ज्ञानद्वारा देखा थोड़े बहुत बुद्धिमानों के उद्यम से खुर्दबीन कांचद्वारा भी

दीखने लगा यह भी सर्वज्ञ भगवान् की सर्वज्ञता सिद्धपना प्रत्यक्ष आज के जमाने में प्रतीति करने लायक जाहिरा भई, उन्हों ने तो पहले ही से कहा था कि वीर्य और खून वगैरों में जीव है परन्तु मिथ्यात्वी कहते थे यह जैनों का गपोड़ा है, लेकिन खुर्दबीन बनाने वाले बुद्धिमानों ने तो सर्वज्ञ का वचन सत्य २ कर बतलाया. (प्रश्न) क्योंजी तुम्हारे सर्वज्ञों ने तार, बिजली, रेल, खुर्दबीन, फोनोग्राफ वगैरा क्यों नहीं बनाये, फिर सर्वज्ञता कैसी. (उत्तर) तुम को यह तो खबर है ही नहीं कि सर्वज्ञ कैसे होता है. घनघाती कर्मों के क्षय करने से तो केवलज्ञान होता है संसार का कोई भी काम उन्हों के करना बाकी नहीं रहा सो संसार का काम करें और करावें फक्त उन्हों के तो आप संसार से तिरना और सत् उपदेश देके जीवों को तारना इतना ही वह शरीर रहा जहां तक था तुम वहां तक क्यों जाते हो. यह सर्व विद्या श्री ऋषभदेव सर्वज्ञ नहीं भये थे और तीन ज्ञान युक्त थे गृहस्थपने में ही थे जभी उन्हों ने बहत्तर कलायें चलाय दी थी. जो कुछ कलाविज्ञान तुम को आज के जमाने में देख के आश्चर्य होता है वह सब बहत्तर कला के अन्दर ही की है. (प्रश्न) अगर अन्दर की है तो यहां इन बातों का प्रचार क्यों नहीं रहा ? (उत्तर) कई बातें कोई वक्त प्रकट हो जाती हैं कोई वक्त लोप हो जाती हैं. (प्रश्न) हम तो यही जानते हैं यह विद्या पहले यहां नहीं थी इस वक्त अन्य देशांतरी बुद्धिमानों ने प्रकट की है, प्रत्यक्ष देखें हम तो वही सच्ची मानते हैं. हक नाहक्क आर्यावर्त्त वालों की कलाकुशलता आगे ऐसी २ चीज़ों की थी सो

हम कैसे मानें . (उत्तर) हम तुम्हें पूछते हैं क्या तुम प्रत्यक्ष टाल और कुछ प्रमाण नहीं करते हो अगर नहीं मानते हो तो बतलाओ तुम्हारा परदादा था या नहीं, दूर से धूआं देखते हो, अग्नि नहीं दीखती तो वहां पर अग्नि है, ऐसा मानते हो या नहीं, दरियाव का यह पार तो देखा है, पहला पार तो किसी ने देखा नहीं इस वास्ते पहला पार है या नहीं, इत्यादि अनेक बातों को नहीं देखा है, सो मानते हो या नहीं. (प्रश्न) यह बातें तो हम मानते हैं. अनुमान प्रमाण से, वह हमारा अनुमान प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है, जैसे हमने रसोई में अग्नि का धुआं देखा है, तब हम को अनुमान भया है कि जहां धुआं दिखाई देवे वहां जरूर अग्नि होती है, ऐसे ही बहुतों के परदादे हमने प्रत्यक्ष देखे हैं, इस से अनुमान होता है कि हमारा परदादा भी जरूर होगा. ब्रह्मपुत्र, सिंधु, गंगा वगैरः नदियों का पहला पार पांच चार दिन नाव में बैठ के जाने से देखा है इस वास्ते अनुमान करते हैं कि दरियाव का भी पहला पार होगा लेकिन तुम किस अनुमान से कहते हो कि हमारे आर्यवर्त्त में इत्यादि अनेक कलाकुशलता मौजूद थी. (उत्तर) हमारा अनुमान भी प्रत्यक्ष से सम्बन्ध रखता है कि हमारे इस आर्यावर्त्त में बड़ी २ चमत्कारिक विद्या थीं, सुनो ! प्रथम तो हमारे देश में ऐसी कहनावत है कि "पानी की रेल कैसे जोर से चल रही है, फलाने आदमी की बात क्या तार बंधी है. अर्थात् क्या तार बंधे बात करते हैं" इस से अनुमान होता है कि इस संसार में जो २ उपमा देने योग्य चीज होती है उस ही की उपमा दी जाती है, आकाश के फूलों की उपमा या

मनुष्य के सींग की उपमा नहीं दी जाती अर्थात् जो वस्तु होती नहीं उसकी उपमा किसी जगह भी नहीं सुनी. दूसरा हमारा यह अनुमान प्रत्यक्ष से संबन्ध रखता है, हमारे इस देश के कारीगरों की बनाई भई अनेक चीजों को पहले अपने देश में ले जाते हैं, फिर उसी नमूने को देखकर बनाके यहां भेजते हैं, हमने देखा है जैसे ढाकाई मलमल का नमूना देख इकतारी मलमल बनाई, काश्मीरी दुशाले के नमूने पर ऊनी कपड़े बीकानेर से चमड़े की कुप्पियां रंगीज के विलायत जाती हैं, इत्यादि कहां तक लिखें नजर पसार के देखो. इस देश में वायता चंदेरी के दुपट्टे आदि कैसे २ कपड़ों की कारीगरी थी. आज बनना बन्द हो गया तो भी ८० वर्ष के आदमियों ने पहरा है और देखा है तो इस वक्त नहीं बनने के सबब उसकी क्या नास्ती मानी जायगी, परदेशियों की चीज की रगराणक और दाम कम, इस वास्ते लोग लेते हैं तब यहां वालों की वस्तु बिकती नहीं तब करना बन्द भया लेकिन इन देशी परदेशियों की चीज एक भाव पड़ती है इस के दाम जियादा, ज्यों चले भी जियादा, परदेशी कारीगरी कलों की चीजें टूटे फूटे फटे बाद कोई काम नहीं देतीं, बुद्धि से विचारो बहुत कारीगरी के मकानात और अनेक वस्तुयें तो दंगे फिसादों में जाहिलों ने मिट्टी में मिला दीं रहे सये भी आबू के जैन मन्दिरों की कोरणी, ताजबीबी का रोजा क्या देखने से बड़े २ विद्वान अंगरेज भी चकराते हैं और इस का नमूना नहीं बन सकता, बहुत नमूने रूप चीजों को अंगरेज सर्कार लण्डन ले गये तीसरा हमारे पास आगम प्रमाण कलाकुशलता का मौजूद है,

वसुदेव हिंड चरित्र में कल का हाथी एक पहर में सौ योजन चलने-वाला बनाकर भेजा गया था उस के पेट में आदमी बैठाये गये थे. यह ग्रन्थ अढ़ाई हजार वर्ष का बना मौजूद है. राजा अशोक चंद्र का चरित्र, कल से चौदह रत्न स्वतः चलने के बनाये गये थे. रामचंद्र और कृष्ण के वक्त विमान चलते थे सो रामायण और प्रद्युम्नचरित्र से साबित है. हमारे ग्रन्थों में तो विद्याधरों की बहुत ही कला-कुशलता का बयान है. कहां तक लिखें उस कलाविज्ञान के करोड़ में हिस्से की विद्या फैलनी नहीं है (प्रश्न) ग्रन्थों में तो कविताई का दखल बहुत है थोड़ीसी बात का विस्तार और बड़ाई बहुत की है उन सबों को सचा कैसे मानें. (उत्तर) कविताई का दखल नगरी राजा रानी हाथी घोड़े आदि पदार्थों में जरूर है सो तो साहित्य की मर्यादा है, अलंकार, नव रसादि रस वगैर साहित्य और ग्रन्थों की शोभा नहीं दीखती लेकिन वह उपमा सत्य ही माननी चाहिये, जैसे उववाईसूत्र में चम्पा नगरी का वर्णन, तैसे मुम्बई, कलकत्ता, जैपुर आदि शहर प्रत्यक्ष हैं, राजा अशोक चंद्र का वर्णन तैसे आज है ॥

इस तरह कोई बात उस वक्त जियादा थी तो कोई बात इन्हों में जियादा है, इस तरह तारतम्यता पुण्य के फेरफार से मनुष्यों में होती ही है, जैसे दोहा—" पाग भाग सुकृत प्रकृत वाणी चाल विवेक. अक्षर लिखे न एकसा देखो मुल्क अनेक" यह तो सब एक सरीखे होते ही नहीं और इन वर्णन ग्रन्थों को सुन के अपनी २ उन्नति का कर्त्तव्य भी चारों वर्णों के बुद्धिमान सोच के करने भी लग जाते हैं अपनी २ हैसियत मूजब. जैसे हमारे बीकानेर के

राजाधिराज महाराज श्रीमान् गंगासिंह जी बहादुर ने अपने पूर्वज वीर पुरुषों का चरित्र सुन के छोटी ही उमर में वीर पुरुषों के अग्रेश्वरी बनकर चीन पर चढ़ाई करी और मान पाया, इस वास्ते ग्रन्थों का वर्णन भी हितकारी है व्यर्थ नहीं समझना और जो जो यथार्थ इतिहास हैं सो तो जैसा भया वैसा ही लिखा है, उदाहरण कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत उठाया यह तो सच्ची बात है, इन्द्र का मानहरण ईश्वरता का कर्त्तव्य, यह कविताई का दखल कहो या यकीन लाना तुम्हारी श्रद्धा पर है इसी तरह जो २ इतिहास में यथार्थ है सो और उसका वर्णन जुदा २ स्वतः बुद्धिमान् समझ लेते हैं जिस में अलंकार नहीं वह ग्रन्थ शून्य है, जैसे शृंगाररहित सधवा स्त्री. (प्रश्न) हम तो ग्रन्थों की सब बातों पर यकीन नहीं लाते, मानने योग्य होय तो मान भी लेते हैं. (उत्तर) हमारा भी यही सिद्धांत है, यथार्थ ही को हम मानते हैं, लेकिन जिन बातों पर न्याय से प्रमाण ठहरा है, अथवा उस ग्रन्थ का रचयिता क्रोध लोभ से रहित था, ऐसों के वचन हम प्रमाण करते हैं, वह चाहे आगम प्रमाण ही है, प्रत्यक्ष अनुमान से संबन्ध भी नहीं रखता होय, जैसे—स्वर्ग और नरक मोक्ष इत्यादिक जो २ बात हो, यही बात न्यायमत का प्रवर्त्तक गोतम भी अपने न्यायसूत्र में लिखता है कि वीतराग का वचन है सो ही यथार्थ है, बाकी अल्पज्ञों के वचन एक २ नय से सच्चे भी हैं, सर्वांग नय से झूठे भी हैं, लेकिन हम तुम्हें पूछते हैं कि प्रमाणीक यथार्थ इतिहासों में कलाकुशलता आर्यावर्त्त में थी आज के जमाने से करोड़ों दर्जे, सो तुम मंजूर करते हो या नहीं. (प्रश्न) तुम्हारी लिखी युक्तियों से हम लाजवाब हैं, तो भी इतनी कसमसी हमारे

जरूर है कि क्या जानें ऐसी संप और बुद्धि का फैलावा अंगरेजों के जैसा उद्यम हिंद में कैसे था, इस वास्ते कला कौशल होने का विचार पड़ता है. (उत्तर) हमारे आर्यावर्त्त के लोग इन तीनों बातों में पहले पूरे थे, संप तो विद्या पर होता है सो तो हम क्या लिखें यहां के लोगों के बनाये भये ग्रन्थों के उल्थे अंगरेजी या और २ भाषा में करले गये और अभी भी कर रहे हैं, थोड़ासा पूरावा देता हूं जरा बानगी देखने से बुद्धिमान् सब ढिगार कर लेते हैं वैद्यकविद्या का अंगरेजी में पहले उल्था भया जिसका कारण पहले ऐसे भया ज्योतिष्विद्या का प्रथम चलना इस आर्यावर्त्त से भया, ईरानी लोग इस विद्या को यहां से ले गये, यूनानियों से युरोप में फैली. बेली और प्लेफेअर यूरोपी विद्वान् इस बात को कबूल करके लिखते हैं कि यह विद्या पांच हजार वर्ष पहले भारत में प्रचलित थी. वह समय आर्यों की बहुत उन्नति का था. इस विद्या का पूरा अंग हिंद से ही हमारे यहां यूनानियों के मारफत प्राप्त भया. रेखागणित, अंक गणित, बीज गणित, त्रिकोणादि गणितों में आर्य पूरे थे, ऐसे ही व्याकरण. गानविद्या, वास्तुविद्या में यहां के कारीगर नामी थे. बादशाह सिकंदर इस विद्या के सीखने को अपने कारीगरों को यहां छोड़ गया था, इस तरह इस विद्या ने भी यहां से यूनानियों द्वारा युरोप में प्रवेश किया, इस तरह युद्धविद्या में भी यह देश वाले बड़े जबर थे. मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और यन्त्र मुक्त आदि अस्त्र, शस्त्र, गदा, वीरघातनी, शक्ति, शतघ्नी, सहस्रघ्नी आदि बना जानते थे और चलाते थे, व्यूहादिक रचते थे. हजारों इतिहास मौजूद हैं. अन्य देशान्तरी लोग

आर्यों के तावे थे, इसी तरह चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि ग्रन्थों का उल्था पहले बारह सौ वर्ष के अरबी में भया, फिर हैल्पर ने इसको अनुवाद लेटिन में किया और वुलरस ने जर्मनभाषा में किया, इस वास्ते सर्व विद्यावंत यहां थे, यहां से धीरे २ आगे से आगे फैलता गया, इस वास्ते बड़ा संप था, बुद्धि का फैलावा था और उद्यम भी था, लेकिन सिकंदर के आक्रमण पीछे यह दशा हिंद की दिन पर दिन घटती का चला आया, जो सच्चे ग्रन्थों का लेख मंजूर नहीं करोगे तब तो यह अन्य देशांतरियों की चलाई आज तो यह विद्या तुम हम प्रत्यक्ष देखते हैं जब यह बात कभी तो अपने शास्त्रों में लिखेंगे ही, लेकिन जब यह विद्या लुप्त हो जायगी और इस रेल तार के वर्णनरूप शास्त्र को देख तुम्हारी तरह यकीन नहीं लावेंगे लोग कि शास्त्रों में योंही लिख दिया है, कभी ऐसी बात भी हो सकती है, सम्यक्त्वंत तो न इस वक्त इस विद्या को नई कहते हैं न उस वक्त प्रमाणिक लेख को झूठा कहेंगे. (प्रश्न) अब हम को यकीन भया कि तुम्हारा लेख सर्व न्याय संपन्न सच्चा है, पूरावे बहुत मजबूत दिये. (उत्तर) तुम्हारी बुद्धि का आशय जैसा हमने जाना कि यह अंगरेजी पढ़े भये और चाहे कितना ही मजबूत प्रमाण और पूरावा रखना होय तो भी मन्जूर नहीं करते और जो बात अंगरेज विद्वानों ने लिखा है वह सब सच है इस वास्ते हमने वैसे ही पूरावे लिखे, इस पर तुम्हारा ऐसा सवाल होगा कि यह लोग झूठ नहीं लिखते जैसा प्रमाण प्रत्यक्ष में इन्हों ने पाया है वैसा ही लिखते हैं, अच्छा है ऐसा ही, लेकिन एक इस में भी विचार है, प्रत्यक्ष देखा सो तो

उन्हों का लिखना कथंचित् सच्चा भी है लेकिन दो हजार चार हजार वर्ष के पहले की बात में प्रत्यक्षपना उन्हों को कैसे हो सके, जिस पर तुम कहोगे रुपया, पैसा, मोहर, जयस्थंभ, कीर्तिस्थंभ शिवालय, जिनमंदिर, जिनमूर्त्ति, शिलस्थंभ इन्हों पर खुदा भया जो लेख मिला अथवा अन्य देशांतरियों ने हिंद में आके जो इतिहास पहले लिख ले गये उन्हों में जो २ लिखा परावा मिला, सो ही अंगरेजों ने लिखा है इस वास्ते हमको प्रतीति है, यह बात तुम्हारी कोई २ अंश करके सच्ची भी है, लेकिन सर्वांग सच्ची नहीं, कहोगे क्यों, देखो, दो सौ वर्ष से इन्हों का प्रचार हिंद में भया उन में किसी साहिब को कुछ मिला, किसी को कुछ, पहले किसी को कुछ मिला, बाद उस ही बात को झूठ करने वाला दूसरे साहिब को दूसरा कालान्तर से मिला, ज्यों २ मिलता गया सो २ उन्हों ने अपने ग्रन्थ में लिखा, पहले परावे का लेख पिछला परावा झूठा ठहराता है, इस तरह पर थोड़ासा यहां लिखता हूं बुद्धिमान् तो इतने में ही समझ लेंगे, पहले एक साहिब ने लिखा है भारतवर्ष के सब पुस्तकों से पहला पुस्तक वेद है, आर्य्यावर्त्त की सोध से लाख वर्ष का बना ठहरता है. अब दूसरे साहिब मेक्समूलर अभी भये वह प्रमाण देते हैं कि वेद का मंत्रभाग बने उन्तीस सौ वर्ष भये और छन्दभाग को बने इकतीस सौ वर्ष. ब्राह्मण पुकारते हैं सतयुग के शुरू में ब्रह्मा ने वेद रचे हैं जिसको चालीस लाख वर्ष बतलाते हैं. कहो अब आप इन दोनों साहिबों के लेख में से किन को मंजूर करोगे अंगरेजी पढ़े आर्य्यसमाजी और शैव वैष्णव तो वेद के मानने वाले

पहली कलम मंजूर करेंगे क्योंकि मीठा २ गडपप्प कडवा २ थूथू, वेद के विरोधी मुसल्मान, अंगरेज, बौद्ध चीन वाले आदि पिछला लेख मंजूर करेंगे, अब दूसरा प्रमाण अंगरेजी पढ़े नाम जैनों के वास्ते लिखता हूं, जिन्हों ने फक्त जैन जाति में जन्म लिया है, जैन के तत्वों के अजान उन के वास्ते, एक साहिब मेक्समूलर लिखता है जैन और बौद्ध एक हैं, दूसरे जर्नलकनिंग होम साहिब लिखते हैं जैन धर्म नव धर्मों से आदि है और बौद्ध धर्म प्राचीन नहीं है, एक साहिब लिखते हैं, जैन धर्म में से बौद्ध धर्म पचीस सौ वर्ष के लगभग गया के मुल्क में निकला है, इन तीनों में से पिछला लेख नामी विद्वान् विद्यमान डाक्टर यूरोपी बुहलर साहिब का है, इन तीनों लेखों में से कौनसा सच्चा मानते हो. (प्रश्न) हम तो वही मानते हैं जो पूरी सावूती और पूरे पूरावे का है. (उत्तर) यह कहना न्यायसंपन्न है, लो फिर चाहे अंगरेज होय चाहे दूसरा, पक्षपातरहित वचन मानना वही लेख सच्चा है. यही हमारा सिद्धांत है सर्वविस्तरेण ॥

अब गर्भ की व्यवस्था लिखते हैं ॥

वीर्य और खून के संयोग से उस में से सजीव पिंड बंधता है, मर्द की गोली में जो धातु होता है उस में बारीक २ तंतु जैसा पदार्थ होता है, सूक्ष्मदर्शक कांच से देखने से वह तंतु बारीक २ सिर और पूंछड़ी वाले हलने चलने जीव दिखाई देते हैं. सम्बन्ध

भया पीछे कमल के मुंह में गिर कर गर्भस्थान में जाता है औरत के गर्भस्थान के बाजू पर गांठें होती हैं उस में बारीक अंडों के जैसा कण पैदा होता है, वह कण पकने के समय पर ऊपर तिरके आता है और गर्भस्थान की नली का एक छेड़ा उस के लग जाता है, पीछे यह अंडा जैसा कण उस लगी हुई नली में फूटता है और उस में से गर्भ रहने लायक पदार्थ गर्भस्थान में दाखिल होता है और आया भया वीर्य के साथ मिलता है, इन दोनों के संयोग से गर्भ रहता है. इस तरह गर्भ रहा भया गर्भस्थान की नली में से होकर गर्भाशय में जाता है तब गर्भाशय का पड़ जाड़ा पड़ता है और गर्भवाले पदार्थ के आस पास वींटीज कर एक थैली जैसा हो जाता है, इधर गर्भ वधता है, कारण माता के खून की नशों की शाखा उस में जाके ९ या १० महीने तक पोषण करता है, एक महीने का गर्भ पाव से आधा इंच जितना लम्बा होता है और उस में अंगोपांग की प्रकटता नहीं दीखती लेकिन मुंह की जगह छोटीसी फाड़ होती है और दो आंखों की जगह काला दाग दिखाई देता है. अब दो महीने का गर्भ सवा से डेढ़ इंच लम्बा होता है और आसरे डेढ़ रुपया भर वजन होता है और मुंह, नाक, कान, आंख वगैरह चहरे का अवयव खुला दीखे ऐसा होता है और हाथ पांव के कितने एक भाग अलग पड़े भये दीखते हैं और आंख के ऊपर की काचान होती मालूम पड़ती है, तीसरे महीने में हाड बनने शुरू होते हैं और दो से अढ़ाई इंच लंबा होता है, २॥ से ४। तोला वजन में होता है और मांस के लोचाओं की निशानियां मालूम देती हैं, चहरा और सिर बराबर हो जाता है,

आंख के पोपचे ढके भये, झांपने की कोर छोटी, मुंह बंद, हाथ पांव प्रकट और हाथ की अंगुलियां छोटी मालूम देती हैं. चौथे महीने का गर्भ ५ से ६ इंच तक लम्बा और ७ से ७॥ रुपये भर वजन में होता है, चमड़ी गुलाबी रंग की, मुंह खुला, आंख पर पतला पर्दा, नख होना शुरू होता है और जाति स्त्री पुरुष की मालूम होती है, शरीर के सब अंग उपांग बन जाते हैं, हृदय बनता है इस वास्ते चेतना धातु प्रकट होती है, उस से गर्भरूपी जीव रूप, रस, गन्ध वगैरह की इच्छा करता है, पांचवें महीने का गर्भ ६ से ७ इंच लम्बा और १२ से १८ रुपये भर वजन में होता है, इस महीने में हाड और मांस बधता है, सिर का कद बड़ा होता है नख प्रकट दीखते हैं सिर के बाल दीखना शुरू होता है और मन चेतनावाला होता है, छठे महीने का गर्भ ९ से १० इंच लम्बा और एक रतल वजन में होता है. आंख मिची हुई होती हैं और चेहरा लाल जामुन के रंग जैसा, बाल रुपहरी रंग का होता है, इस महीने में बुद्धि पैदा होती है. सातवें महीने का गर्भ १३ से १५ इंच लम्बा ३ से ४ रतल का वजन में होता है, चमड़ी गुलाबी रंग की जाड़ी, नख बड़ा लेकिन आखिर तक नहीं पहुंचा भया, आंख के पर्दे दूर भये भये. आठवें महीने का गर्भ १४ से १६ इंच लम्बा ४ से ५ रतल वजन में होता है. आगे से चमड़ी जाड़ी और नख पूरे होते हैं. नवें महीने का गर्भ १७ से २१ इंच लम्बा और ५ से ९ रतल वजन लगभग ७ रतल वजन में होता है. इस तरह नवें महीने तक गर्भ का बढना होता है पीछे बालक बाहर आता है उस वक्त तक उस का शरीर पूरा नहीं

होता है उसकी हड्डी पूरी नहीं और कच्ची होती है जैसे २ वधता जाता है तैसे २ हड्डी और दूसरे पदार्थ धातु वगैरह सम्पूर्ण होता जाता है इस तरह सम्पूर्ण परिपक्व भया मनुष्य का शरीर सरासरी १४० रतल का होता है शरीर के बांधे में हाड पिंजर मांस और स्नायु अर्थात् संधि बंधन का मुख्य भाग बजता है, इस वास्ते उन जुदे २ भागों का वर्णन करते हैं ॥

हाड पिंजर, (स्केलेटन *Skeleton*).

शरीर की मजबूती हाड पिंजर ऊपर है, शरीर के दूसरे सर्व भाग हाड पिंजरों के लगे भये रहे हैं और इस शरीर का रक्षण भी हाडों से है, माथे की खोपड़ी, छाती का पिंजर और पेट की बखोल यह तीनों पोलार की जगह हैं और यह सब हाड पिंजर के बीच में आये भये हैं. इन तीनों पोलारों में जिंदगी के बहुत जरूरी का अवयव धरने में आया भया है और हाडों से उनका रक्षण होता है, हाड पिंजरों से हाथ पांव बने भये हैं जिस के ऊपर हाल चाल वगैरः तरह वार गति बन रही है. हाड पिंजरों का जुदा २ हाड. मांस के बंधनों से ऐसा मजबूत बंधा भया है और मांस से ढका भया है सो एक दम टूट नहीं सकता, एक सौ चालीस रतल सरासरी वजन इस शरीर का गिना गया. जिस में से हाड पिंजर का सरासरी वजन २५ रतल आसर है. हाड पिंजर के हाडों की जुदे २ पंडितों ने जुदी २ गिनती करी है. उस में कुछ २ तफावत

मालूम पड़ता है और प्राचीन ग्रन्थकारों की गिनती से इस वक्त वालों की गिनती में बहुत फर्क दीखता है, दोनों की गिनती नीचे के कोठे में देखो ॥

अर्वाचीन गिनती.	प्राचीन गिनती.	
माथे की खोपड़ी में ८	सब सिर में, ...	.... ६५
चेहरे में १४	६ खोपड़ी में	२ आंख में
टांक में १	२ कपाल में	४ कान में
वागेड़ में २६	१ तालवे में	४ कण्ठ में
छाती के सीने में. १	२ हिडकी में	९ डोक में
पांसली २४	३ नाक में	३२ दांत
दो हाथ तथा खंभे में ६४	सब धड़ में	.... ११५
दोनों पांव तथा पग-	२ हांस में	३० पीठ में
तल में ६२	८ छाती में	२ पगतल में
.... ३२	७२ पांसली में	१ त्रिक
के छोटे हाड ६	१ उपस्थ	१ गुदा
	शाखाओं में	.... १२०
	६० दोनों हाथों में	६० दोनों पांवों में
कुल २३८	कुल	.... ३००

ऊपर के कोठों में हाडों की गिनती में बड़ा तफावत है सो
तफावत विशेष करके छाती तथा पसवाड़ों के हाडों में है अभी
की गिनती में छाती में एक हाड और २४ पसलियां उस के लगी
भई हैं, प्राचीन पंडितों ने छाती के और पसवाड़ों के मिलाकर
अस्सी हाड गिनाये हैं इतने पचपन हाडों की बढ़ोतरी दीखती है
अभी के डाक्टर लोग छाती के एक २ तरफ बारह २ पसलियां गिनते
हैं और प्राचीन परिडतों ने एक २ तरफ छत्तीस २ पसलियां गिनी
हैं, इस पर ऐसा अनुमान होता है एक २ पसली को तीन २ जुदे २
हाडों की बनी भई वह मानते थे, इस के अलावा हाडों की गिनती
में जो मतभेद देखने में आता है उसका कारण ऐसा है कई ए
परिडत तो नरम कवले हाडों को हाडों की गिनती में नहीं गिनते
और कितनेएक गिनते हैं. गर्भावस्था में हाडों की शुरूआत कूर्च
होती है और बालक जन्मे पीछे उस में से धीमें २ बधना
होता है शरीर में हाड जुदी २ शकल के हैं कितनेक तो
कितनेक छोटे. कितनेक चपटे. कितनेक चौड़े. कितनेक
और कितनेक बेडोल होते हैं. लम्बे हाड पहले बीच में
होते हैं और पीछे से उनका छेड़ा संध मिलके एक हो जा
कारण सभी ऊपर लिखे हाडों की गिनती में फर्क आता है.
बहुत से हाड बाहर से कर्रा होता है लेकिन अन्दर से
हैं जैसे कितनेक हाड सख्त और बरडे हैं. तैसे कई
तरह खुलते हैं. हाडों पर तरह २ के नीरे और
और खरदरी जगह होती है जिन में नसों और रगों

कूर्चा तथा सांधे (कार्टीलेज Cartilage).

हाडों का पहला स्वरूप कूर्चा है, यह कूर्चा एक तरह का नरम आधा हाड है, वह करी, स्थितिस्थापक, वरड़ और जाडे रवड़ जैसा सफेद पदार्थ है, वह हाडों जैसा सख्त और वरड नहीं है परंतु उस में हाडों जैसा गुण धर्म रहा भया है, गर्भ में पहले कूर्चा, पीछे उस में से हाड तैयार होते हैं और कितने एक कूर्चे जवानी में हाड हो जाते हैं और कितने एक कूर्चे बुढ़ापे में हाड हो जाते हैं और कितने एक कूर्चे अंत तक कूर्चे ही बने रहते हैं, कान, नाक, भांपने, पांसली और सांधाओं में रहे कूर्चे हमेशा कूंर्चे ही रहते हैं ॥

सांधे, (ज्वाइन्टस Joints).

दो हाड जहां संधते हैं, उसको सांध कहते हैं, शरीर में ऐसे सांधे वहुत हैं, कितने एक सांधे तो जरा भी हलते चलते नहीं, दाखिला—जैसे सिर की खोपड़ी में और चेहरे के सांधे वहुत से इस किस्म के हैं सो एक दूसरे हाड के संग ऐसा मजबूत संधा भया है, सो ऐसा बाहर से दिखाई देता है, जाने एक ही है, ऐसा मालूम देता है, दूसरी तरह के सांधे थोड़े २ हलचल करते हैं, ऐसी संधियों में हाडों का छेड़ा अड़ोअड़ होता नहीं, लेकिन दो हाडों के बीच में गादी जैसा पदार्थ होता है, जैसे कमर तथा गर्दन के सांधे, ऐसी जात के सांधों से संधा भया अवयव चारों तरफ फिर सकता है,

इन सांधों में एक तरफ के हाड के गोल दड़ी जैसा सिर होता है और सामने के हाड में छेड़े पर दड़ी बैठ जाय ऐसा गोल खड्डा होता है और गोल होने के सबब वह चोतरफ फिर सकता है, हाथ के खवे और पग के थापों में इस तरह के सांधे हैं, फिर कितने एक सांधे खींखी नाकीवाले होते हैं, नरामादगी की तरह कोहनी, पोंहचे, गोडे और गिरिये. यह आठों में नरामादगी है, उस से संदूक के ऊपरले ढकने मूजब दो तरफ ही फिर सकते हैं, हाडों का दोनों नाके जहां आगे शामिल होते हैं, उस पर कूर्चे का एक थर होता है. ये कूर्चे स्थितिस्थापक अर्थात् फिर ऐसे होने से सांधों पर जोर को धक्का लगने पर भी उन कूर्चों के सबब उन हाडों का बचाव होता है, सांधों के चारों तरफ पड़त लपटा होता है उस में चिकना-रस पैदा होता है और वह रस सांधाओं का पोषण करता है, सांचों में जैसे तैल की जरूरत पड़ती है तैसे सांधों को नरम रखने को इस रस की जरूरत है. दो सांधों को जुड़ा रखने को एक अथवा जियादे बन्धन होते हैं, सो संधिबन्धन कहलाते हैं, यह बन्धन मांस की बनी सफेद तांतुओं का होता है, कितने एक बन्धन पाट जैसे होते हैं और पग के हाथ के थापे के बन्धन थैली जैसे होते हैं, मतलब के जैसे सांधे होते हैं तैसे हीज उन के बेसते भये बन्धन होते हैं, इन बन्धनों के सिवाय प्यास पास आये भये मांस के लोचे जिन्हों को स्नायु नाम से कहते हैं वह भी सांधों को मजबूत करते हैं ॥

मांस का लोचा स्नायु, (मसल्स *Muscles*).

———o———

शरीर के सब जगह जो मांस देखने में आता है वह मांस इकट्ठा जथाबन्द नहीं है, लेकिन जुदा २ मांस के लोचाओं से बना भया है हाथ और पांव की पिंडली मांस के बड़े लोचों से बनी भई ऐसी दीखती हैं लेकिन ऐसा है नहीं इन पींडियों में मांस के जुदे २ टुकड़े हैं यह बहुत सफाई के संग जुड़े भये होने के सबब एक जैसा मालूम देता है ये मांस के लोचे सब एक तरह के नहीं हैं, बड़े, छोटे, लम्बे, ओछे, गोल, चिपटे, चोरस, तिखूने, ऐसे जुदे २ शकल और कद के होते हैं और जहां जैसा चाहिये ऐसे बने भये हैं ये लोचे मांस के रेशों का बना भया है, कितने एक लोचे रेशों की जूड़ी अथवा बंडलों का बना भया है ॥

शरीर का हाड पिंजर, यह सब हाडों का खोखा है इस खोके के आस पास सब जगह लोचाओं से ढका भया है उस सेती हीज़ चलन बलन होता है, शरीर की गति और सब काम इन स्नायुओं से होता हो रहा है, चलना, खाना, हाथ हिलाना, बोलना, आंख फेरने तक का काम शरीर के छोटे बड़े सब कामों में स्नायु की जरूरत पड़ती है, चेहरे पर आनन्द, क्रोध, दिल्लगी, मन के विकार, इस स्नायु से ही सम्बन्ध रखता है, यह मांस के लोचे स्नायु वगैरह दो प्रकार का है. एक तरह के स्नायु अपनी इच्छा के प्रमाण चलता है और दूसरी तरह के स्नायु अपनी इच्छा के आधीन नहीं हैं, हाथ पांव अंगुलियों का चलना, मुडना, आंख के डोले फिराना,

नाक की पुरड़ियों का चौड़ा करना, वगैरः अवयव के स्नायुओं को अपनी मन मूजब चला सकते हैं, लेकिन आंतों की गति अपनी इच्छा से नहीं है, हवा तथा अन्न जाने की नलियां, हौजरी, मूत के फुक्के, गर्भस्थान और धोरी नशों वगैरः अवयवों के मास के लोचे अपने आप ही संकोचते हैं और फूलते हैं और उन लोचाओं पर अपना इख्तियार नहीं चलता जो उन्हों को संकोचा देवें या चौड़ा कर देवें, ये दोनों ही लोचे ऐसा रेशे का बना भया है, लेकिन इस दूसरी तरह के स्नायु इच्छा मूजब काम देने वाले स्नायु की तरह लाल और वड़ा नहीं है, लेकिन वे एक पड़त की तरह पसरे भये होते हैं और उन्हों को वन्धन की जुरूरत नहीं है, मांस के लोचे और स्नायुओं का काम संकेचने का है, उन्हों के संकोचने से गति पैदा होती है, जवाड़ी के स्नायु संकोचने से जवाड़ी चलती है, और खुराक चवाया जाता है, हाथ के स्नायु संकोचने से हाथ चलता, मुड़ता है, पांवों के स्नायुओं के संकोच से पांवों से चला जाता है, कितने एक स्नायु एक दूसरे के विरुद्ध गुण के होते हैं, जैसे एक से तो आंख और मुट्ठी उघड़ती है और दूसरे स्नायुओं से बन्द होती है, इन स्नायुओं में चैतन्य गुण है तहां तक तो काम देता रहता है, शरीर में ऐसे मांस के लोचे ५०० आसरे हैं ॥

स्नायु वन्धन (टेंडेंस *Tendons*).

हरएक स्नायु के नाके सफेद चिकने मजबूत डोरे जैसा होता है उन डोरों से हाडों के मजबूतपने से लगे रहते हैं, इन डोरों को

स्नायूबंधन कहते हैं, ये स्नायुबंधन बहुत मजबूत होते हैं, कितनी एक वक्त हाड टूटने पर भी वह बन्धन टूटते नहीं ऐसे मजबूत होते हैं, हाथ पावों की अंगुलियां हिलाती वक्त जो डोरी जैसी रगें दीखती हैं वह स्नायुबंधन हैं, जिस जगह शरीर में स्नायुबंधन लगे भये होते हैं उन २ भागों को स्नायुबंधन कहलाता है ॥

संयोजक. (कोनेक्टिव टिस्यु *Connective Tissue*).

शरीर में हाडों के ऊपर का पड़त स्नायु खून की नालियां मंज्जा-तंतु और चमड़ी वगैरः भाग एक दूसरे के साथ सम्झड़ जुड़े भये हैं सो गोंद अथवा लेई की तरह शरीर में एक चिपनेवाला चिकना पदार्थ है सो सब शरीर में फैलकर सब शरीर के अवयवों को ऊपरा ऊपरी जोड़ के रखता है, वह पदार्थ बारीक तंतु अथवा परमाणुओं से बना भया है सो जोड़ने का काम करता है, इस वास्ते ऐसे पदार्थ को संयोजक ऐसा नाम से करके मैंने लिखा है ॥

चर्बी. (फेट *Fat*).

संयोजक नाम का जो पदार्थ हाड मांस के लोचे तथा उन्हीं के बन्धनों को संग में जुड़ने का काम देता है उस के संग एक पीले रंग का दूसरा पदार्थ होता है उस को चर्बी या मेद कहते हैं, संयोजक में पीले रंग के लोचे चर्बी के होते हैं, चर्बी कारबोन और

हैड्रोजन की बनती है उस से कारबोन वाले पदार्थ जैसे दूध मीठा दही आदि के बने गरिष्ठ पदार्थों के जियादा खाने से, तैसे ही शरीर को चाहिये इतनी कसरत के नहीं करने से, तैसे ही मेदवृद्धि-रोग में कहे कारणों से चर्बी बढ़ती है, चर्बी का जमाव जियादा करके जांघ, चूतड़ और पेट पर होता है जिस के बधने से आदमी वृथा पुष्ट बन जाता है ॥

त्वचा चमड़ी, (स्किन *Skin*).

हाड पिंजर वगैरः सब अवयवों के ऊपर के पड़त को चमड़ी कहने में आती है, चमड़ी से शरीर के अंदर के वस्तुओं का रक्षण होता है और उस चमड़ी से स्पर्श के आठों विषयों का ज्ञान होता है. पसीना निकलता है बाहर के पदार्थों को चूस लेने का काम करती है इसका विशेष वर्णन इस प्रकाश के चौथे किरण में करेंगे ॥

किरण दूसरी. शरीर का मुख्य भाग ॥

अपने देशी लोग इन बातनों को कुछ नहीं जानते हैं. इस वास्ते शरीर के दर्दों में कुछ नहीं जानते हैं और डाक्टर वैद्यों को भी भूल चक्कर में गिरा देते हैं. ऐसे सर्व रोगियों की जुबान पर विश्वास नहीं लाकर डाक्टर वैद्य लोगों ने निज ने तपासना नार्द दर्द कलेजे में होता है और बताता है तिल्ली में, दर्द आंत में है

बताता है कलेजे में, इतना अजानपना होना तो नहीं चाहिये, शरीर के अन्दर का चाहिये तो सूक्ष्म ज्ञान लेकिन सामान्य ज्ञान तो जरूर ही सीखना. हाड का पिंजर तो शरीर का मुख्य पाया है, मांस और मांस के लोचों से शरीर की आकृति बने है और आदमी सुडौल दीखता है, शरीर का हाल चाल होता है, धोरी नशों से और आसमानी नशों से खून फिरता है और शरीर के जुदे २ भागों में पहुंचता है, ज्ञानतंतुओं से शरीर के जुदे २ भागों के हालत का ज्ञान होता है, शरीर के सर्व से जरूरी के अन्दर के अवयव जैसे मगज, फेफड़ा, अंतःकरण, कलेजा और आंतड़े, यह सब शरीर का जीवस्थान है, इन अवयवों पर शरीर के हयाती का मुख्य आधार है, यों तो जीव असंख्य प्रदेशों करके सर्व शरीर में व्यापक है, दूसरे हरएक भाग का वर्णन सम्पूर्ण तौर से शरीरविद्या में आता है, इन अवयवों का विस्तार वर्णन करें तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जाय इस वास्ते मतलब पूरता वर्णन यहां लिखेंगे, शरीर में सिर और धड़ ये दो मुख्य अङ्ग हैं, ये दोनों गर्दन से जुड़े भये हैं, जो गर्दन से जुदे २ कर दिये जांय तो शरीर का सब व्यवहार बन्द हो जावे सो मौत कहलाती है, माथा सिर एक शरीर का उत्तम अंग कहलाता है, क्योंकि सब शरीर पर अधिकार भोगने वाले का महल मुख्य स्थान में आया भया है सो मगज अथवा भेजा कहलाता है, सिर में बाहर नजर पड़ने अवयवों में खोपरी अथवा मगज की तूंबड़ी देखने को दो आंख, सुनने को दो कान, सूंघने को दो नसकोर और बोलने को मुंह, ये सब अवयव उस अधिकारी के उपयोग के वास्ते

महल के आस पास कर्म कारीगर से बना है, सिर में मुख्य दो झरोखे अथवा पोल है, एक तो खोपड़ी में पोल, दूसरी मुंह में पोल उस अधिकारी का घर खोपड़ी की पोल में हैं, इस घर में ज्ञान तंतु और गति तंतु का संग्रह भया है, इस संग्रह का मगज नाम है, मुंह की पोल में जीभ दांत वगैरः आये भये हैं, मुंह के गोखले में से एक नली कण्ठ में से होकर छाती में होकर पेट में उतरती है, सो अन्न नल कहाता है और खोपड़ी की पोल में से एक नल पिछली पीठ की करोड़ में उतरे है, सो करोड़ रज्जु नल कहलाता है, वास्तव में इन दोनों नलों के रास्ते सब शरीर का व्यवहार चलता है।

धड़ एक में माथे की तरह दो बड़ी पोल है, एक तो छाती की, दूसरी पेट की, छाती की पोल अथवा पिंजर एक कोठरी जैसा है, छाती की पोल में दो तो फेफसे और हृदय ये दो मुख्य जीव की जगह है, इस के अलावा मुंह की पोल में से कण्ठ में से उतरा भया अन्न नल छाती में होकर पेट में उतरता है, इन अवयवों के सिवाय औरतों के दो स्तन होते हैं, छाती तथा पेट की पोल के बीच में मांस के गुंमट की आकार का एक गोल परदा दिवाल की तरह आया भया है, अन्न नल ये दिवाल को भेद कर पेट में उतरता है, पेट की पोल के ऊपरले भाग में यकृत याने कलेजा प्लीह याने तिल्ली आमाशय याने होजरी पक्वाशय याने आंतरड़ा आया भया है होजरी के ऊपर के नाके पर अन्न नल मिलता है और नीचे के [illegible] से छोटे आंतों की शुरुआत होती है, पेट की पोल के नीचले भाग में मूत्राशय याने पुके आये भये हैं, जिस में से मूत्र, मूत्र की नली

बताता है कलेजे में, इतना अजानपना होना तो नहीं चाहिये, शरीर के अन्दर का चाहिये तो सूक्ष्म ज्ञान लेकिन सामान्य ज्ञान तो जरूर ही सीखना. हाड का पिंजर तो शरीर का मुख्य पाया है, मांस और मांस के लोचों से शरीर की आकृति बने है और आदमी सुडौल दीखता है, शरीर का हाल चाल होता है, धोरी नशों से और आसमानी नशों से खून फिरता है और शरीर के जुदे २ भागों में पहुंचता है, ज्ञानतंतुओं से शरीर के जुदे २ भागों के हालत का ज्ञान होता है, शरीर के सर्व से जरूरी के अन्दर के अवयव जैसे मगज, फेफड़ा, अंतःकरण, कलेजा और आंतड़े, यह सब शरीर का जीवस्थान है, इन अवयवों पर शरीर के हयाती का मुख्य आधार है, यों तो जीव असंख्य प्रदेशों करके सर्व शरीर में व्यापक है, दूसरे हरएक भाग का वर्णन सम्पूर्ण तौर से शरीरविद्या में आता है, इन अवयवों का विस्तार वर्णन करें तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जाय इस वास्ते मतलब पूरता वर्णन यहां लिखेंगे, शरीर में सिर और धड़ ये दो मुख्य अङ्ग हैं, ये दोनों गर्दन से जुड़े भये हैं, जो गर्दन से जुदे २ कर दिये जांय तो शरीर का सब व्यवहार बन्द हो जावे सो मौत कहलाती है, माथा सिर एक शरीर का उत्तम अंग कहलाता है, क्योंकि सब शरीर पर अधिकार भोगने वाले का महल मुख्य स्थान में माना गया है सो मगज अथवा भेजा कहलाता है, सिर में बाहर नजर पड़ने अवयवों में खोपरी अथवा मगज की तूंबड़ी देखने को दो आंख, सुनने को दो कान, सूंघने को दो नसकोरे और बोलने को मुंह, ये सब अवयव उस अधिकारी के उपयोग के वास्ते

महल के आस पास कर्म कारीगर से बना है, सिर में मुख्य दो झरोखे अथवा पोल है, एक तो खोपड़ी में पोल, दूसरी मुंह में पोल उस अधिकारी का घर खोपड़ी की पोल में है, इस घर में ज्ञान तंतु और गति तंतु का संग्रह भया है, इस संग्रह का मगज नाम है, मुंह की पोल में जीभ दांत वगैरः आये भये हैं, मुंह के गोखले में से एक नली कण्ठ में से होकर छाती में होकर पेट में उतरती है. सो अन्न नल कहाता है और खोपड़ी की पोल में से एक नल पिछली पीठ की करोड़ में उतरे है, सो करोड़ रज्जु नल कहलाता है. वास्तव में इन दोनों नलों के रास्ते सब शरीर का व्यवहार चलता है ।

धड़ एक में माथे की तरह दो बड़ी पोल है, एक तो छाती की, दूसरी पेट की, छाती की पोल अथवा पिंजर एक कोठरी जैसा है, छाती की पोल में दो तो फफसे और हृदय ये दो मुख्य जीव की जगह है, इस के अलावा मुंह की पोल में से कण्ठ में से उतरा भया अन्न नल छाती में होकर पेट में उतरता है, इन अवयवों के सिवाय औरतों के दो स्तन होते हैं. छाती तथा पेट की पोल के बीच में मांस के गुंमट की आकार का एक गोल परदा दिवाल की तरह आया भया है, अन्न नल ये दिवाल को भेद कर पेट में उतरता है. पेट की पोल के ऊपरले भाग में यकृत याने कलेजा प्लीहा याने तिल्ली आमाशय याने होजरी पक्वाशय याने आंतरड़ा आया भया है होजरी के ऊपर के नाके पर अन्न नल मिलता है और नीचे के नाके से छोटे आंतों की शुरूआत होती है. पेट की पोल के नीचले भाग में मूत्राशय याने फुक्के आये भये हैं. जिस में से मूत्र, मूत्र की नली

के रस्ते बाहर आता है, मूत्र की नली के नीचे वृषण की कोथली आई भई है, जिस के आधार सब शरीर टटा भया है, करोड़ में हाडों की एक पोली नली उतरी भई है, ये नली अखीर ऊपर के तरफ मगज से सम्बन्ध रखती है और नीचे कमर तक जा पहुंची है धड़ के अन्दर छाती और पेट इन दोनों पोलों के सिवाय दो तरफ दो हाथ और नीचे दो पांव आये भये हैं, मगज में रहे अधिकारी के हुक्म से पदार्थों को पकड़ते हैं, छोड़ते हैं, इस शरीर को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं ॥

माथा, सिर की तूमड़ी, (स्काल Skill).

इसकी हकीकत पीछे लिखी जिस मूजब है, मुख्य तीन पोल इस शरीर में हैं, खोपड़ी की, छाती की, और पेट की शरीर के सब [illegible] वाले भाग इन तीनों में आये भये हैं, शरीर में सब अवयवों की जुदी २ क्रिया वही जीवन है, इन सब [illegible] स्थानों में यह मगज सर्वोपरि स्थान है इस वास्ते उसका [illegible] भी बहुत मजबूत किल्ले में भया है, वह किल्ला सिर की खोपड़ी है इस सिर की खोपड़ी में चार मुख्य इन्द्री आंख, नाक, कान, [illegible] आये भये हैं ॥

मगज, भेजा, मन, (ब्रेन Brain).

[illegible] खोपड़ी की पोल में बराबर बैठा भया है, खोपड़ी की जमीन [illegible] की [illegible] के [illegible] हैं, इनने उस के खड्डे खोचरे हैं, उस

में मगज बराबर बैठा भया है, खोपड़ी में मगज के वास्ते तीन ढकने याने पुड़त है, सब से ऊपर का पुड़ जाडा और मजबूत है और खोपड़ी के चारों तरफ आया भया है, उसका एक फांटा मगज के दो भागों के बीच में उतरता है. मगज में से जो खून फिर के पीछा जाता है, इस वास्ते बाहर के पुड़ में नली जैसा रास्ता होता है, दूसरा पुड़ भेजे के बीच में है, सो पुड़ दोलड़ा है और उस की पोल में प्रवाही पानी जैसा निर्मल है उस में थोड़ा खार का भाग होता है. तीसरा पुड़ मगज के लगों लग आया भया है. उसको अन्तर पुड़ कहते हैं. मगज के पोषण वास्ते उस में खून की नलियों का जाल पसरा भया है, मगज के चार भाग हैं जिस में से दो मुख्य हैं, अगला भाग सो तो बड़ा भेजा पिछला भाग सो छोटा भेजा, बड़ा भेजा सिर के अगले तरफ और ऊपर के तरफ धरा भया है, भुमारों के जरा ऊपर से दोनों कानों के छेद के आगे होकर सिर के आस पास एक लकीर खेंचने से भेजे की हद का अड़गड़ा मन में आ सकता है, इस पर से गोल टोपसी जैसा और खर खोदरा दीखता है, उसके बीच में एक फाड़ होने से बीच में उसके दो भाग, अर्ध गोलाकार से भया २ है. इस बड़े मगज के गहरास में तीन छोटी २ पोलार की जगह है और उसके तले से कितने एक तंतु निकलकर नाक. आंख. कान. जीभ वगैरः में गैली है. छोटा भेजा सिर के पिछले हाडों के ख्याड़ में भरा भया है. यह बड़े भेजे की तरह टोपसी जैसा नहीं. लेकिन किताब के पत्रों की तरह उस में पुड़त होता है. उनके भी अर्ध गोल भाग हैं. उनका कद नारंगी

पानी तथा रत्न जैसी जरूरी चीजें रह सकती हैं, अगली कोथली आंख के निर्मल सफेद पुड़ के और रत्न की कोथली के बीच में है वह कोथली सब से छोटी है उस में आंख का पानी रहता है, इसका वजन पांच गेहूं भर है. आंख की बिचली कोथली सख्त पुड़की बनी भई है. उस में आंख का रत्न लटका भया है, यह रत्न आगे से पीछे से गोल हीरा जैसा पार दर्शक है, आंख की तीसरी कोथली सब से बड़ी है, जो सब के नीचे पुड़त में है जिस में बिल्लौर जैसा निर्मल पदार्थ इन भागों की मदद से अपने बाहर का पदार्थ देख सकते हैं. जो चीज अपने देखते हैं उस के ऊपर से निकलते उजवालों के किरण डोले के सफेद स्वच्छ पड़दे के अन्दर से आंख के अन्दर दाखिल होता है उस में से पूर्वोक्त कोथली में से होकर कीकी में से ये किरणों जैसा प्रकार होता है किरणों अन्दर इकट्ठी होकर रत्न में दाखिल होकर एक मिलते हैं, बाद रत्न में से निकल, सब से पिछली कोथली के बिल्लौर में घुस के वहां से तन्तु वाले पुड़त पर इकट्ठे होते हैं. वहां मूल पदार्थ की आकृति का प्रतिबिम्ब उस पर पड़ता है, उसकी खबर मगज को पहुंचते ही उस चीज की शकल रूप रंग वगैरः का जीव को ज्ञान होता है, अंधेरे में पड़ी चीज में से किरणों निकलते नहीं इस से उसकी परछांह तन्तु पुड़ पर पड़ता नहीं इस वास्ते अंधेरी में पड़ी चीजों को अपने देख नहीं सकते सो दर्शनावरण कर्म है. आंख के कोनों में डोले से लगा एक २ मांस की गांठ देखने में आती है, उसको अश्रुपेसी कहते हैं. उस में आंसू पैदा होता है, ये आंसू आंख को बहुत फायदे

मंद है, उस आंसू से डोले भीगे और ताजे रहते हैं और आंख में कोई फूस फांटा जाता है, उसको आंसू धोकर बाहर निकाल डालता है आंखों के कोने में नाक के जड़ के पास एक बारीक छेद है, उस में से आंसू आधे इंच जितनी लम्बी नली के रास्ते नाक में उतरता है, भांपने बार २ मिचते रहते हैं, उस से आंख की रक्षा याने हिफाजत होती है, इतना ही नहीं लेकिन डोले के ऊपर के आंसू कोने के तरफ ढकेली जरूर उस पूर्वोक्त नली के रास्ते नाके में हवा का आना जाना होता है. उस हवा से वह आंसू के सूक्ष्म परमाणु होकर उड़ जाते हैं. इस वास्ते नाक में आंसू मालूम नहीं पड़ते हैं, जब कोई भी बीमारी के सबब आंख के आंसू नाक में बहता बन्द होता है. तब वह आंसू आंख का गाल पर बहने लग जाता है, उसको नाक स्वर का दर्द कहते हैं ॥

कान, श्रवणेन्द्रि, (इयर Ear).

सुनने की इन्द्री को कान कहते हैं. कान का जो बाहर का भाग दीखता है, सो नरम हाडों का याने कूर्ची का बना भया है. [illegible] कान में एक २ छेद है. ये छेद के आगे से एक छोटी नली [illegible] है, सो आसरे डेढ़ इंच लम्बी है, [illegible] चमड़ी का [illegible] है. कान की असली नली का [illegible] भाग नरम हाड याने कूर्ची का बना भया है और पिछला भाग हाड का बना भया है. [illegible] की चमड़ी बहुत पतली होती है. कान में जो मैल होता है सो

बाहर से नहीं आता इस चमड़ी में से पैदा होता है. कान के विच-
ले भाग में खड्डा है उस के तथा बाहर के कर्ण नली के बीच में
एक बारीक पर्दा आया भया है. उसके भाग में से एक महीन नली
निकलकर अन्दर के भाग में उतरी है. इस से और कान के विचले
भाग में से मुंह के सम्बन्ध रहा भया है. कान का आखीर अन्दर
का भाग सब से जरूरी का है क्योंकि उस में सुनने के तन्तुओं
आये भये हैं. इस भाग का वर्णन सहज में समझ में नहीं आ सके
ऐसा है. लेकिन मगज में से आये भये श्रवण तन्तुओं इस भाग में
दाखिल भया है, उन तांतुओं के प्रवेश वास्ते उस में महीन २ छेद
हैं. कान बाहर हवा में जो कुछ आवाज होता है, उस हवा का शब्द
सुरंग कान के अन्दर पर्दे पर पड़ता है, तब वह शब्द मृदंग के
पुड़ की तरह उस आवाज को अन्दर श्रवण तन्तु मगज को
पहुंचाता है, वहां सुनने का ज्ञान उस जीव को प्राप्त होता है ॥

नाक घ्राणेंद्री, (नोज़ *Nose*)

नाक का अगला भाग पांच नरम हाडों का अर्थात् कूर्चाओं की
बना भया है. बाहर दो छेद दीखता है उसको नसकोरा कहने में
आता है. नाक के दो भाग हैं, एक तो बाहर दीखे सो दूसरा अंदर
का. अन्दर के नाक की जड़ कपाल के साथ है, जैसे बाहर दो छेद
हैं ऐसे अन्दर भी दो छेद हैं वे मुंह के पिछले भाग से तथा गले
के साथ सम्बन्ध रखता है. दो नसकोरों के बीच में एक पर्दा है,

बाहर से नहीं आता इस चमड़ी में से पैदा होता है, कान के पिछले भाग में खड्डा है उस के तथा बाहर के कान नली के बीच में एक बारीक पर्दा आया भया है, उसके भाग में से एक बारीक नली निकलकर अन्दर के भाग में उतरी है, इस से और कान के पिछले भाग में से मुंह के सम्बन्ध रहा भया है, कान का भीतर अन्दर का भाग सब से जरूरी का है क्योंकि उस में सुनने के तन्तुओं आये भये हैं, इस भाग का वर्णन सहज में समझ में नहीं आ सके ऐसा है, लेकिन मगज में से आगे भये श्रवण तन्तुओं उस भाग में दाखिल भया है, उस तंतुओं के प्रवेश वास्ते उस में महीन २ छेद हैं, कान बाहर हवा में जो कुछ आवाज होता है, उस हवा का शब्द पुद्गल कान के अन्दर पर्दे पर पड़ता है, तब वह शब्द सुरंग के पुड़त की तरह उस आवाज को अन्दर श्रवण तन्तु मगज को पहुचाता है, वहां सुनने का ज्ञान उस जीव को प्राप्त होता है ॥

नाक घ्राणेंद्री, (नोज़ *Nose*)

नाक का अगला भाग पांच नरम हाडों का अर्थात् कूर्चाओं का बना भया है, बाहर दो छेद दीखता है उसको नसकोरा कहने में आता है, नाक के दो भाग है, एक तो बाहर दीखे सो दूसरा अंदर का बाहर के नाक की जड़ कपाल के साथ है, जैसे बाहर दो छेद हैं, तैसे अन्दर भी दो छेद हैं वे मुंह के पिछले भाग से तथा गले के साथ सम्बन्ध रखता है, दो नसकोरों के बीच में एक पर्दा है,

मुंह ... का अटकाव करता है, ... शक्ति रखते हैं ये सुगं-
गैरः का अटकाव करता है, ... शक्ति रखते हैं ये सुगंध
ह खसबोई वगैरः परखने की शक्ति रखते हैं ये सुगंध
मुद्गल पहली नाक के गीलास वाले पदार्थ में जब प्रवेश
तभी खुसबो की भावना पैदा होती है जब नाक सूखा होता
वासना का ज्ञान नहीं होता है, खूसबो की बराबर समझ
उस सुगंध दुर्गंध पदार्थ को जब हवा से ऊपर चढ़ाते हैं तब
जियादा असर मालूम पड़ता है, मगज के तंतुओं में से
जोड़ा सूंघने की क्रिया करता है, वह मगज में से नीचे उतरे
उसकी बारीक शाखायें नाक के ऊपरले भाग में पसरे हैं और
सुगंध दुर्गंध को परखे है नाक के नीचे का भाग मुंह तथा
नसों के संग सम्बन्ध रखता है जिस से यह श्वांस लेने का तथा
दी २ आवाज निकालने के काम में उपयोगी होता है सब प्रा-
णियों की खुशबू परखने की शक्ति बराबर नहीं है कारण कर्मों के
आवरण के क्षयोपशम मूजब है इस आवरणों के मुताबिक ही मगज
के संग सम्बन्ध रखने वाले घ्राण तंतुओं जैसे जिसके होते हैं तैसी
ही उस में शक्ति होती है कोई आदमी तो बहुत तरह के खुसबू
परख सकता है कोई नहीं परख सकता है एक आदमी को एक चीज
की खूसबू अच्छी लगती है वो ही खूसबू दूसरे को अच्छी नहीं लगती॥

जीभ स्वादेन्द्रि, (टंग Tongue).

स्वाद को जानने वाली इन्द्रिय जीभ है जीभ आस पास के भाग

तालुवा पडजीभ वगैरों में भी कुछ २ स्वाद जानने की शक्ति मालूम देती है जीभ के अग्रभाग पर दाना २ होता है उन दानों तक मगज के स्वाद इन्द्रियों के तंतु पसरे भए होते हैं जिस से जीभ को अनेक वस्तु का स्पर्श होते ही स्वाद की परीक्षा हो सकती है जो पदार्थ जैसे ज्यादा पतला होता है सो जल्दी जीभ के तंतुओं में घुसकर जल्दी स्वाद का असर करता है और कठिन पदार्थों के परमाणु जीभ से पैदा हो तेरस में प्रवेश जब करता है तब रस का स्वाद मालूम पड़ता है जीभ के अंदर के तंतुओं को जो स्वाद का ज्ञान होता है वो ज्ञान मगज को तंतू पहुंचाते हैं तब आपने को उस २ रस का ज्ञान होता है जीभ मांस के लोचों से बनी है चारों तरफ से स्नायु जीभ के लगे भये हैं इस वास्ते जीभ इधर उधर फिरती है खुराक चाबने में जीभ बहुत मदद करती है खुराक को बेर २ दांत के नीचे लाती है और जीभ की अणी खुराक को नरम करती है और बोलने के काम में जीभ का मुख्य उपयोग है ॥

चमड़ी त्वचा स्पर्शेंद्रि (स्किन *Skin*).

मगज के ज्ञान इन्द्रियों में पांचमी त्वचा है उस करके स्पर्श का ज्ञान होता है चमड़ी शरीर के अन्दर के भागों को ढककर उस का रक्षण करती है प्राचीन पंडितों के शास्त्रप्रमाण से सात पुड़त है और डाक्टरों ने इस के दो पुड़त माने हैं जिसमें ऊपर का पड़त बहुत महीन पतला है जिसमें जलने से उस पर फफोला हो

जाता है सो ऊपर के पड़त का है इस के नीचे दूसरा पड़त है वह
बहुत सख्त और जाडा है उस पर छोटी २ बहुत अणियां होती है उस में
ज्ञान तंतुओं के जाल पसरे भये होते हैं चमड़ी के नीचे छोटी गां-
ठें होती है उस में से पसीना पैदा होता है और चमड़ी के महीन
छेदों में से बहार निकलता है चमड़ी के ये छेदों की गिनती जैना-
दिक प्राचीन ग्रन्यकारों ने साढ़ा तीन क्रोड़ की संख्या मानी है डा-
क्टरों के अनुमान से एक इंच चोरस जगह में २८०० छेदों की
गिनती करने में आई है सब शरीर पर इस हिसाब से ७० लाख
पसीने का छेद है प्राचीन पंडितों की गिन्ती शरीर के बढ़ाई पर है
क्योंकि कोई कालांतर में प्राचीन पंडित उमर और शरीर की बढ़ाई
मानते चले आये वेदों में युग के हिसाब पर घटत बढ़त है जैनों
के अरोकी गिन्ती मुजब है इस की चर्चा यहां नहीं लिखते ग्रन्थ
बढ़ जावे पसीना पानी जैसा पदार्थ है वो हमेशा निकलता रहता है
लेकिन हवासे सूख जाता है सो हमेशा अपने नजर नहीं आता
सब दिन रात में सरासरी तीन रतल पसीना पैदा होता है पसीने
के संग खून में से कितनी एक खराब वस्तु शरीर में से निकल
जाती है पसीने सिवाय चमड़ी में से एक चिकना तेल जैसा पदार्थ
निकलता है जिस से चमड़ी हमेशा नरम और सुंआली रहती है
और चमड़ी में शोषण करने की भी शक्ति है जिस से तेल तेल
वगैरः को अन्दर खेंचती है ॥

छाती, फेफसा, छाती की पोल.(चेस्ट Chest).

छाती की पोल में रक्ताशय बड़ी खून वहनी नस और दो फेफसे आये भये हैं, अन्न नल भी छाती में होकर पेट में उतरता है और श्वास नली का भी थोड़ा हिस्सा छाती के पोल में आया भया है, छाती के दोनों तरफ दो फेफसे हैं और बीच में रक्ताशय (हार्ट) है, छाती के दोनों तरफ बारह २ पांसलियां हैं, छाती के पीछे पीठ की तरफ बीच में करोड़ है और छाती के अगली तरफ उरोस्थि अर्थात् छाती का हाड है, जिस के सङ्ग पांसलियां लगी भई है, ये सीने का हाड आसरे पांच इंच लम्बा है, ये सीने का हाड अव्वल से तो बहुत टुकड़ा २ होता है, लेकिन पीछे से अवस्था पर आपस में जुड़ जाते हैं, ये सीने का हाड गले के तरफ चोड़ा होता है और नीचे की तरफ सांकड़ा होता है कोडी के पास अनी-दार होता है, पीठ की तरफ बारह ही पांसलियां करोड़ के मनियों के संग जुड़ी भई है और अगली तरफ सात पांसलियां सीने की हड्डी के संग जुड़ी भई है, नीचे की तीन पांसलियों का अग्रभाग खुला है पांसलियां स्थिती स्थापक है नर्म और झुक सकती है, इस वास्ते श्वासों श्वास की क्रिया में मदद देने वाली है ॥

फेफसा फुप्फुस (लंग्स Lungs).

फेफसे दो हैं वह छाती के दोनों तरफ आये भये हैं, फेफसे की शकल मृदंग जैसी है, ऊपर से संकड़ा नीचे से चोडा होता

है और गुण इसका बदली जैसा होता है, दरेक फेफसे का वजन डेढ रतल का होता है, बायें फेफसे से दाहिना फेफसा जरा जियादा वजन में होता है, लेकिन दाहिने फेससे से बायां लम्बा जियादा होता है, फेससे स्थिति स्थापक और बादल जैसे होने करके दबता है और फूलता है फेफसे के अन्दर छोटे २ बहुत छेद होते हैं अथवा पोले दाने होते हैं वह हवा से भरे भये होते हैं, उस के छेदों की गिनती डाक्टरों ने करी है, जिसका अनुमान ३० करोड़ छेदों का है, जो फेफसा फक्त कोथली जैसा होता तो उस में हवा को बहुत थोड़ी जगह मिलती लेकिन करोड़ों छेद होने के सबब हवा को बहुत जगह मिलती है, हरएक फेफसे में हवा से भरे छेद एकंदर १४०० चोरस फुट जितनी जगह रोके इतनी हवा है, पीठ के तीसरे मनियें के सामने से श्वास नली के दो शाखायें हैं, सो दाहिनी शाखा दाहिने फेफसे में जाती है, बाइ बायें फेफसे में पहुंचते २ वह श्वास नली के शाखाओं का उत्तरोत्तर भाग विभाग होकर आखिर बारीक शाखा पर बारीक पर पोटे होकर ठहरता है श्वास नलियों के असंख्य अग्रभाग जहां आगे फेफसे को मिलते हैं वहां हवा और खून आपस में सम्बन्ध होते ही खून शुद्ध होता है ॥

रक्ताशय, हृदय, अंतःकरण दिल (हार्ट *Heart*).

रक्ताशय ये छाती की पोलार में दोनों फेफसे के बीच में कुछ बाई तरफ तिरछी पड़ी भई एक मांस की थैली है बाई नरफ

तो पीठ की करोड़ के हाड के पसवाड़े साथ और आगे में पांसली के भीतर की कोर संग चोतरफ लगा भया है इस पर्दे के ऊपर की तरफ संग बाई दाहिनी तरफ तो फफसा और बीच में रक्ताशय जुड़ा भया है और नीचे के पसवाड़े संग दाहिणी तरफ तो कलेजा बायें तरफ तिल्ली और बीच में होजरी जुड़ी भई है इस पर्दे में तीन छेद हैं जिस में से एक में से धोरी नस और दूसरे छेद में से अन्न नल छाती में से पेट में उतरे है तीसरे छेद में से बड़ी काली नस पेट में से छाती में जाती है इन तीनों छेदों के अलावा उस पर्दे में कितनेक महीन छेद है उन्हों में से ज्ञान तंतुओं को रस्ता मिलता है ॥

पेट की पोल, उदर, पेट (अंडोमेन *Aundomen*).

शरीर में से सब से बड़ी पोल पेट की है. पेट की पोल के पिछले भाग में पीठ की करोड़ आई भाई है और ऊपर के भाग के बाजू पर पांसलियां है, आगे का और पसवाडे का ढकनां स्नायु तथा चमड़ी का बना भया है ऊपर की तरफ छाती के और पेट के बीच में गुम्मट के आकार का पर्दा है और नीचे के तरफ पेडू अथवा वस्ति स्थान है पेट को दवा के देखने से दुवले आदमी का पेट ढकना आखर करोड के मनियें तक हाथ में लग जाता है यही पेट का ढकना गर्भवती औरत का और मेद वाले तथा जलंदर वगैरः उदर रोगियों का बहुत बढ़ जाता है पेट की दिवाल के मध्य

रेखा में सूंडी का खड्डा है, उस के नीचे पेडू है और पेट के आखरी ऊपर के तरफ पांसलियो के बीच के भाग को फेफड़ा या कोड़ी कहते हैं वाजू वालों को पसवाड़े कहते है, पेट में होजरी कलेजा तिल्ली आंतरियां मूत्राशय के गुर्दे वगैरः बहुत जरूरी के अवयव आये भये हैं, उन सबों की हद और जगह जानने के वास्ते पेट के चौतरफ दो तो आडी और दो खड़ी लकीर दोलड़ी कल्पने से उस पेट का नव हिस्सा होता है उस में नीचे लिखे यन्त्र मूजिब कोटे आये भये हैं ॥

१ दाहिनी पासली पास के भाग में.	२ फेफड़े वाले मध्य भाग में.	३ बाईं पसली के पास भागमें
कलेजा का दाहिना भाग पित्ता छोटे आंतों का पहला भाग बड़े आंत का दाहिना लपेटा दाहिने गुर्दे का ऊपरला भाग ॥	होजरी का बिचला भाग और दाहिना अग्रभाग कलेजा का बाया भाग.	होजरी का बाया अग्रभाग तिल्ली बड़े आंतरों का लपेटा बाया गुर्दे का ऊपरला भाग.
४ दाहिना कमर तरफ भाग में	५ मुंडी वाले मध्य भाग में.	६ बांये कमर तरफ भाग में.
ऊपर चढ़ता बड़ा आंतरा दाहिने गुर्दे का नीचे का भाग छोटे आंतरों का थोड़ा भाग.	बड़े आंतरे का आड़ा भाग छोटे आंतरों का थोडा गुच्छला.	बड़े आंतरे का नीचे उतरता भाग बाये गुर्दे का नीचे का भाग छोटे आंतों का थोड़ा गुच्छला.
७ दाहिनी जांघ तरफ के भाग में.	८ पेडू वाले नीचे के भाग में.	९ बांये जांघ तरफ भाग में.
छोटे आंतरे का छेड़ा और बड़े आंत का शुरुआत का भाग पेशाब के जाने वाली दाहिनी नली.	छोटी आंत का गुच्छला पेशाब का भरा हुआ होने से बढ़ा भया मूत्राशय.	बड़े आंतरे का नीचे का और [illegible] भाग पेशाब ले जाने वाली बांई नली.

इस लिखे कोटे से सामान्य तौर पर इतना तो जरूर समझ में आ जायगा. पेट के दाहिने तरफ पांसली के नीचे कलेजा

(यकृत्) कलेजे के नीचे थोड़ा त
भाग और मूत्राशय और सब के नी
वाली दाहिनी नली इतने अवयव अ
ऊपर होजरी और कलेजे का थोड़ा
भाग में बड़ा आड़ा पड़ा भया आंत
सब से नीचे पेड़ू में छोटे आंतरे औ
आये भये हैं, पेट के बाईं तरफ पां
छोड़ा तिल्ली और बड़ा आंतरा उस
मूत्राशय और सब से नीचे जांघ के
नली इतना भाग आया भया है ॥

अन्न न

पेट की पोल के होजरी वगैर
पहले होजरी में अन्न कहां से होक

नल के रास्ते होजरी में, उस होजरी के संग जुड़े भये छोटे आंतरे फिर उन्हों में उन छोटे आंतरों से जुड़े भये बड़े आंतरे में होकर सफरों में आता है, गले से लेकर होजरी के ऊपर के नाके तक पहुंचता यह अन्न नल की लम्बाई १२ इंच की है अन्न नल श्वास नली के पिछाड़ी है जिस से जिस वक्त खुराक निगलने में आता है तब उस खुराक का कोई भी दाना श्वास नली में नहीं उतर सके इस वास्ते श्वास नली का मुंह बन्द करने को एक छोटा ढकना जीभ के संग लगता है, वह खुराक गले से उतरते वक्त श्वास नली का मुंह ढक देता है तब उस के ऊपर होकर के खुराक अन्न नल में प्रवेश करता है ॥

होजरी, अन्नाशय, आमाशय ॥

गले से गुदा तक खुराक का एक ही रास्ता अथवा नल है, जिस में होजरी खुराक का सब से पहला भाग है होजरी पेट के फेफड़े वाले मध्य भाग में तैसे ही बाईं पसलियों के तरफ आया भया है, होजरी के ऊपर उरोदल पटल और कलेजे का बायां पासा है होजरी के बायें तरफ तिल्ली है, दाहिनी तरफ कलेजा है नीचे आंतरा है पिछाड़ी करोड़ है, होजरी के ऊपर के छेड़े पर अन्न नल का संयोग होता है और नीचे के छेड़े में आंतरा शुरू होता है होजरी की शकल पानी की मशक अथवा छोटी पखाल जैसा है, जब उस में खुराक जाता है तब वह चौड़ी होती है तब उस की

(यकृत्) कलेजे के नीचे थोड़ा तो छोटे तेरा ही बड़े आंतरे का भाग और मूत्राशय और सब के नीचे जांघ के पास मूत्र ले जाने वाली दाहिनी नली इतने अवयव आये भये हैं, पेट के बीच में ऊपर होजरी और कलेजे का थोड़ा भाग उरा के नीचे सूंडी वाले भाग में बड़ा आड़ा पड़ा भया आंतरे का भाग और छोटे आंतरे और सब से नीचे पेडू में छोटे आंतरे और स्त्री का गर्भस्थान इतने भाग आये भये हैं, पेट के बाईं तरफ पांसलियां के नीचे होजरी का बायां छेड़ा तिल्ली और बड़ा आंतरा उस के भी नीचे बड़ा आंतरा तथा मूत्राशय और सब से नीचे जांघ के पास मूत ले जाने वाली दाहिनी नली इतना भाग आया भया है ॥

अन्न नल ॥

पेट की पोल के होजरी वगैरः भागों का वर्णन करने से पहले होजरी में अन्न कहां से होकर किस तरह आता है सो जानना चाहिये, खाया भया खुराक इस नल में होकर नीचे जाता है यह अन्न नल मांस मय स्नायुओं का बना भया है उस के संकोचने से खाया भया खुराक धक्के खाकर होजरी में जाता है, यह नल मुंह की खिड़की अथवा गले के नीचे के भाग से शुरू होता है, वह नल श्वास नली के पीछे और जरा बाईं तरफ करोड़ के आसरे नीचे उतरता है, पहले लिखा जो छाती और पेट के बीच में गुम्मट के आकार में होकर होजरी में पहुंचता है, इस नल का सम्बन्ध आखर गुदा द्वार तक पहुंचा है जैसा खुराक खाने में आता है सो अन्न

नल के रास्ते होजरी में, उस होजरी के संग जुड़े भये छोटे आंतरे फिर उन्हों में उन छोटे आंतरों से जुड़े भये बड़े आंतरे में होकर सफरों में आता है, गले से लेकर होजरी के ऊपर के नाके तक पहुंचता यह अन्न नल की लम्बाई १२ इंच की है अन्न नल श्वास नली के पिछाड़ी है जिस से जिस वक्त खुराक निगलने में आता है तब उस खुराक का कोई भी दाना श्वास नली में नहीं उतर सके इस वास्ते श्वास नली का मुंह बन्द करने को एक छोटा ढकना जीभ के संग लगता है, वह खुराक गले से उतरते वक्त श्वास नली का मुंह ढक देता है तब उस के ऊपर होकर के खुराक अन्न नल में प्रवेश करता है ॥

होजरी, अन्नाशय, आमाशय ॥

गले से गुदा तक खुराक का एक ही रास्ता अथवा नल है, जिस में होजरी खुराक का सब से पहला भाग है होजरी पेट के फेफड़े वाले मध्य भाग में तैसे ही बाईं पसलियों के तरफ आया भया है, होजरी के ऊपर उरोदल पटल और कलेजे का बायां पासा है होजरी के बायें तरफ तिल्ली है. दाहिनी तरफ कलेजा है नीचे आंतरा है पिछाड़ी करोड़ है. होजरी के ऊपर के छेड़े पर अन्न नल का संयोग होता है और नीचे के छेड़े से आंतरा शुरू होता है होजरी की शकल पानी की मश्क अथवा छोटी पखाल जैसा है. जब उस में खुराक जाता है तब वह चौड़ी होती है तब उस की

है पाचन भया रस इस नल के रास्ते खून को मिलता है बड़ा आंतरा दाहिने जांघ के तरफ भाग से शुरू होता है बड़े आंतरे का तीन हिस्सा करने में आवे तो दाहिने जांघ के पास से शुरू होता है सो दाहिनी पांसली तक वह ऊपर चढ़ता है पीछे वहां से कालजे के नीचे से वह बाईं तरफ फिरता है और फिर वहां से फेफड़े वाले भाग में होकर बांईं पसली तक वह पेट में आड़ा पड़ता है तीसरा भाग तिल्ली के नीचे शुरू होकर पेट की बांईं तरफ जांघ तक सीधा उतरता है इस तरह बड़ा आंतरा एक, सौ, तीन तरह से पेट में रहा है बड़े आंतरे की लम्बाई पांच फीट है ऊपर चढ़ता पहला भाग २॥ इंच जाड़ा है लेकिन आगे जाते बड़े आंतरे पतले होते जाते है वह आंतरे का तीसरा भाग नीचे उतरते की जाड़ाई १॥ इंच से जियादा नहीं है सफरे का नल बड़े आंतरे का जो छेड़ा बायें जांघ तरफ उतरता है वहां से टेढ़ा नल शुरू होता है वह सफरे के मुंह तक जाता है उसको सफरा अंग्रेजी में (रेक्टम) कहते हैं वह बायें तरफ से शरीर के मध्य भाग तरफ फिरता है और बीच में से सीधा उतरता है सफरे के अगली बाजू पर मूत्राशय याने पेशाब का फुक्का और गर्भस्थान आया भया है और पीछे से दोनों बैशक याने चूतड़ों के साथ लगा भया है हाड के संग सफरा ६ से ८ इंच लम्बा है सफरे के मुंह में मांस की शाखा गोल आंटा खाया भया है वह ढीला होने से सफरे का मुंह खुलता हैं और संकोचने से बन्द होता है ॥

कलेजा यकृत्, (लिवर Liver).

कलेजा एक बड़ा अवयव है उसका वजन आसरे ४ रतल होता है वह दाहिनी तरफ पांसलियों के नीचे पसवाड़े आया भया है लेकिन वह बड़ा है इस वास्ते फेफड़े वाले मध्य भाग में तैसे ही जग बाई पांसली के भाग तक पहुंचा भया है दाहिने तरफ से बाई बाजू तक कलेजे की लम्बाई आसरे एक फुट की है और चौडाई आठ इंच की है कलेजे के ऊपर उरोदर पटल आया भया है और नीचे अन्नाशय आंतरा तैसे मूत्राशय आया भया है कलेजे का बड़ा भाग दाहिने तरफ से पांसलियों से ढका भया है इस वास्ते दबाने से मालूम नहीं पड़ता है जब उस में कोई विकार होने से बाहर आता है तब वह दबाने से मालूम पड़ता है कलेजे के ऊपर बजाने से भद्दी आवाज आती है कलेजा बारीक हजारों दानों का बना भया है इस हरएक दाने में खून के महीन रगों का जाल पसरा भया है कलेजे का मुख्य काम खून शुद्ध करने का है और पित्त नाम का रस पैदा करने का है होजरी और आंतरों की सिराओं मिलके एक बड़ी सिरा होती है वह मध्य सिरा (पोर्टल वाइन) कहने में आती है यह मध्य सिरा कलेजे में दाखिल होकर उस की शाखाये बनकर उसका खून शुद्ध होता है कलेजे में जो पित्त रस पैदा होता है इस पित्त को ले जाने वाली एक नली कलेजे में से बाहर निकलती है वह पित्ताशय कहलाता है यह पित्त आंतरों से मिलके उस के अन्दर के खुराक को पचाता है खुराक में जो चर्बी

और चिकनास का भाग होता है उसको पित्त जल्दी पिघलाता है पित्त से आंतरों को जल्दी गति मिलती है और दस्त खुलास आता है पित्त का थोड़ा भाग दस्त के रास्ते बाहर निकलता है उस से दस्त का रंग पीला होता है चौबीस घन्टे में तीन रतल पित्त पैदा होता है ॥

पित्ताशय, पित्ता (गालब्लेंडर *Galblinder*).

कलेजे में पित्त का स्थान है यह पित्ता कलेजे के नीचे के तरफ लगा भया है यह एक गाजर जैसी थैली है पित्त की नली होजरी के नीचे छेडे से शुरू होता छोटे आंतरे से मिलता है इस पित्त की नली के संग दूसरी (पांक्रियाफ) नली का संयोग होता है इन दोनों की एक नली होकर आंतरे में प्रवेश करती है इस दूसरी नली में से थूक जैसा एक रस आंतरे से मिलके पाचन क्रिया में मदद करती है पित्त कलेजे में पैदा होकर पित्ताशय में इकट्ठा होकर पित्ता की नली के रास्ते होकर आंतरे में जाता है ॥

तिल्ली, प्लीहा (स्पलीन *Spleen*).

पेट की बांई तरफ पड़खे में नवमी दशमी ग्यारमी इन तीन पांसलियों से ढकी भई हैं वह तिल्ली है कलेजे की तरह ऊपर से दबाने से मालूम नहीं पड़ती उरोदर पटल और होजरी के रस पुडतों से संधी भई है उसका रंग वादली रंग की सलेट जैसा है वह पांच इंच लम्बी तीन इंच चौडी और १० से १५ तोला वजन में है उसका भी काम खून शुद्ध करने का है बुखार की बीमारी में

वह बढ़ती है यहां तक बड़ी हो जाती है कि एक सख्त पत्थर जैसी गांठ सब पेट में फैल जाती है ऐसी तिल्ली बधी भई २० से ४० रतल तक वजन की होती है जब मिटती है तो यहां तक छोटी हो जाती है उसका वजन एक तोले से वजन वैसी नहीं होता॥

॥ मूत्रपिंड-गुरदा ॥ (किडनी *Kiddney*)

मूत्रपिंड दो हैं मूत्रपिंड दोनों करोड के दोनों तरफ कमर के पिछले भाग में आये भये हैं हरएक गुर्दा ४ इञ्च लम्बा २ इञ्च चौड़ा १ इञ्च जाडा होता है उसका वजन आसरे १० से १२ रतल का है बाहर से वह साफ और लीसा है उसकी शकल उर्द के दाने जैसी है दाहिणा गुर्दा कलेजे के संग लगा भया है और बांये गुर्दे का ऊपर का भाग तिल्ली से ढका भया है गुर्दा बारीक नलियों का बना भया है इस नलियों के चौ तरफ नसों का जाल बंधा भया है उसमें से कितना एक खराब निकम्मा भाग जुदा होता है दूसरा मायना उसका ऐसा है मूत्र पेशाब का पैदा होना है सब दिन में २ से ३ रतल पेशाब पैदा होता है दोनों गुर्दे में पैदा होता है हर एक गुर्दे के अंदर के तरफ एक छोटा खम्भा होता है उस में से एक २ बारीक नली सरू होती है वह पेडु के भाग को लांघ कर मूत्राशय (ब्लंडर) में जाता है इस नली को मूत्र नली कहते हैं॥

॥ मूत्राशय-फुक्का ॥ (ब्लंडर *Blander*)

दोनों तरफ के मूत्र पिंड में मूत्र पैदा होता है मूत्र-नली के

रास्ते यह मूत्र वस्ति के आगे भाग में जहां ढगाला होता है उस भाग को मूत्राशय कहते हैं मूत्राशय का आकार अगडे से मिलता है यह मूत्राशय एक मांस की थेली है उस के अंदर तीन नाका हैं उस में से दो नाकों के रस्ते मूत्रपिण्ड में से मूत्र मूत्राशय में आता है और तीसरे नाके के रस्ते बाहर निकलता है गुड़दे में से पेशाब बूंद २ मूत्राशय मे इकट्ठा होता है और जिस वक्त मूत्राशय भर जाता है तब उस को बाहर निकालने को मूत्राशय को नांग की साखाओं संकोचा कर मूत्र को गति देती है ॥

॥ उत्पत्ति-अवयव ॥

जिस अवयवों से सन्तान पैदा होते हैं उस को जननेंद्रिय भी कहते हैं पुरुष अथवा स्त्री इन दोनों के उत्पत्ति अवयवों की रचना जुदी है वृषण वीर्याशय और लिंग यह तो पुरुष के उत्पत्ति अवयव हैं गर्भाशय उस के अन्दर का भाग और योनि यह औरतों के उत्पत्ति अवयव है अब यह दीपक मर्यादा की जमीन में रहा भया सब संक्षेप से जरूरी के अवयवों को प्रकाश कर दिखाता है वृषण (टेस्टीकल्स) आंडो की मांस मय यह थेली है इस के अंदर दो गोली थेली की रगों तथा नसों से लटक रही है गोली दोनों अंडे की शिकल गोल है दहनी गोली से बांई गोली जरा नीची और बड़ी है हरेक गोली की सरासरी १ इंच से १॥ डोढ इंच तो लंबाई, १। इंच चौड़ाई, १ इंच जाडाई, तन्दुरस्त शरीर में हरेक गोली का वजन २ से २॥ तोला तक होता है आंडों की थेली के

बीच रेखा होता है जिस से थेली के दो हिस्से है गोली भी अलग २ है गर्भ में रहे बच्चे की गोली मूत्रपिण्ड के पास होती है बच्चा जब करीब आठ महीने का होता है तब वह गोली पेट की दिवाल में से रस्ता कर आंडों की थेली में उतरती है जन्म के समय किसी किसी बच्चे के वह गोली पेड़ू में होती है कोई वक्त एक ही गोली उतरती है दूसरी नहीं उतरती गोली के ऊपर एक जाडा मजबूत पुड होता है और उस के नीचे मकड़ी के जाले जैसा महीन पुडत होता है यह गोलियां आसरे आठ से बारीक नलियों की बनी भई है यह हरेक नली २००/१ इंच अर्थात् एक इंच का दोसेमा भाग जितनी पतली होती है और लम्बाई में वह नलियां कम से कम १३ इंच की ज्यादा से ज्यादा ३३ इंच की होती है यह आठसे इन नलियों का बेड़ा सांध कर लम्बी की जावे तो पूरा माइल तक लम्बी डोरी हो जावे ऐसे बहुत तांतुओं की गोलियां बनी है गोलियों में ऐसे दो २ तीन तीन नलियों का गुच्छा होता है नली के बाहर धोरी नसों की महीन जाल पसरी भई होती है उसके खून में से धातु पैदा होता है जिस रगों से डोरियों से थेली में गोलियां लटक रही है उस रगों में वीर्यगत्त धमनी और शिरा होती है शिराओं के अन्दर जब खून भर जाता है तब वह कोई वक्त सूज जाता है यह वीर्य नल धमनी तथा शिरा पेड़ू के छेदों में से पेट में दाखल होते हैं और शिरा [illegible] शिरा के संग मिलती है धमनी बड़ी धमनी में से निकली भई शाखा है और वीर्यनल मूत्राशय ऊपर होकर वीर्याशय को मिलता है [illegible] निकली भई नलियां आगे जाने [illegible]

एक होती है और उस गोली की नस आगे से ऊपर चढ कर पेडू की पोल में मूत्राशय के फुके के पीछे जाता है और पेशाब के फुके तथा सफरे के बीच में दो छोटी कोथलियां हैं उस नली के संग जुडता है इस कोथलियों में धातु इकट्ठा होता है उस को वीर्याशय कहते हैं वीर्याशय की हरेक कोथली में से एक २ नली निकलती है वो नली आंडों की गोली में से निकलने वाली वीर्य नली के संग मिलकर पेशाब करने के रस्ते में खुलती है और उस ही रस्ते बाहिर आता है मूत्राशय के नीचे हरेक नली वीर्य की चोडी गुंचलादार होती है वीर्य पहली आंडों में पैदा होता है फिर पेडू में रहा भया वीर्याशय उस में ऊपर चढकर आता है फिर मूत्र नली द्वारा उस का पतन होता है लिंग मूत्र नली शिश्न मेढ कहने में आता है इस के अंदर का दो नल ऊपर होता है और तीसरा नल उस के बीच में नीचे के भाग में होता है वह हरेक भाग मजबूत और सफेद तंतुमय नली के जैसा है उन्हों के बीच में बहुत पड़दा होता है हरेक नल में छोटे २ खाने होते हैं उन में खून भरीजता है और खाली होता है जब खून भरीजता है तब लिंग जोर में आता है और जब खून खाली हो जाता है तब शिथल हो जाता है गर्भाशय कमल (वुम्ब) यह स्त्री जात के होता है और वह पेडू की पोल में सफरा तथा मूत्राशय के बीच में आया भया है गर्भाशय की शिकल जामफल अमरूद जैसा ऊपर से चौड़ा और नीचे से सांकड़ा है वह ३ इंच लम्बा और २ इंच चोडा है कुमारी का गर्भस्थान वजन में आसरे २ से ४ तोले का

होता है बच्चे वाली का ४ से ५ तोले तक का होता है गर्भस्थान मांस के जाडे स्नायुओं का बना हुआ है अंदर से पोला है उस के नीचे के सांकडे भाग में एक गोल खम्भा है और छेडे पर एक चीरा है वह कमल का मुंह है यह कमल मुख्य सम्बन्ध मार्ग के संग सम्बन्ध रखता है ऋतुधर्म और बच्चा किस तरह पैदा होता है सो आगे लिखेंगे स्त्रीप्रकरण में गर्भस्थान बढना शुरू होता है उसका वजन बढ कर १ से ३ रतल तक का हो जाता है गर्भ रहां पीछे वह पेडू के ऊपरले भाग में चढता है सो सूंडी तक पहुंचता है गर्भस्थान के ऊपरले दो खूणे ३ से ४ इंच लम्बी एकेक पतली नली लगी भई होती है जिस का एक मुंह गर्भस्थान की कोथली में खुलता है और दुसरा छेडा खुला रहता है गर्भस्थान की बाहर दोनों तरफ बन्धन से लगी भई अंडे के शिकल की दो छोटी गांठ हैं जिन को अंग्रेजी में ओवरी कहते हैं यह हरेक गांठ १॥ इंच लंबी ॥। इंच चौडी जाड ई। इंच से जरा कम है उस हरेक गांठ का वजन ।ि ॥। तोले का होता है इस गांठ में मटर के दाणे जितने २।१० से ५० दाणे होते हैं उन में अंडे की सुफेदी के मिलता पतला प्रवाह होता है इन में का दाणा जब बडा होता है और जिस वक्त मजबूत होता है तब गांठ के आखर ऊपर उपस आता है और उस के ऊपर गर्भस्थान के आगे जो कहीं दोनों तरफ की नलों का छेडा लग जाता है उस नली में वह दाणा फूटकर अपने अंदर का बहने वाला पदार्थ उस नली में गिरा देता है पीछे वह रस नली से गर्भस्थान के कोथली में उतरा भया मुंह के रस्ते गर्भस्थान में आता है

एक होती है और उस गोली की नस आगे से ऊपर चढ़ कर पेडू की पोल में मूत्राशय के फुके के पीछे जाता है और पेशाब के फुके तथा सफरे के बीच में दो छोटी कोथलियां हैं उस नली के संग जुडता है इस कोथलियों में धातु इकट्ठा होता है उस को वीर्याशय कहते हैं वीर्याशय की हरेक कोथली में से एक २ नली निकलती है वो नली आंडों की गोली में से निकलने वाली वीर्य नली के संग मिलकर पेशाब करने के रस्ते में खुलती है और उस ही रस्ते बाहिर आता है मूत्राशय के नीचे हरेक नली वीर्य की चोडी गुचलादार होती है वीर्य पहली आंडों में पैदा होता है फिर पेडू में रहा भया वीर्याशय उस में ऊपर चढकर आता है फिर मूत्र नली द्वारा उस का पतन होता है लिंग मूत्र नली शिश्न मेंढ कहने में आता है इस के अंदर का दो नल ऊपर होता है और तीसरा नल उस के बीच में नीचे के भाग में होता है वह हरेक भाग मजबूत और सफेद तंतुमय नली के जैसा है उन्हों के बीच में बहुत पड़दा होता है हरेक नल में छोटे २ खाने होते हैं उन में खून भरीजता है और खाली होता है जब खून भरीजता है तब लिंग जोर में आता है और जब खून खाली हो जाना है तब शिथल हो जाता है गर्भाशय कमल (बुम्ब) यह स्त्री जात के होता है और वह पेडू की पोल में सफरा तथा मूत्राशय के बीच में आया भया है गर्भाशय की शिकल जामफल अमरूद जैसा ऊपर से चौड़ा और नीचे से सांकड़ा है वह ३ इंच लम्बा और २ इंच चोडा है कुमारी का गर्भस्थान वजन में आसरे २ से ४ तोले का

होता है बच्चे वाली का ४ से ५ तोले तक का होता है गर्भस्थान मांस के जाडे स्नायुओं का बना हुआ है अंदर से पोला है उस के नीचे के सांकडे भाग में एक गोल खम्भा है और छेडे पर एक चीरा है वह कमल का मुंह है यह कमल मुख्य सम्बन्ध मार्ग के संग सम्बन्ध रखता है ऋतुधर्म और बच्चा किस तरह पैदा होता है सो आगे लिखेंगे स्त्रीप्रकरण में गर्भस्थान बढना शुरू होता है उस का वजन बढ कर १ से ३ रतल तक का हो जाता है गर्भ रहां पीछे वह पेडू के ऊपरले भाग में चढता है सो सूंडी तक पहुंचता है गर्भस्थान के ऊपरले दो खूणे ३ से ४ इंच लम्बी एकेक पतली नली लगी भई होती है जिस का एक मुंह गर्भस्थान की कोथली में खुलता है और दूसरा छेडा खुला रहता है गर्भस्थान की बाहर दोनों तरफ बन्धन से लगी भई अंडे के शिकल की दो छोटी गांठ हैं जिस को अंग्रेजी में ओवरी कहते हैं यह हरेक गांठ १॥ इंच लंबी ॥। इंच चौडी जाड ई । इंच से जरा कम है उस हरेक गांठ का वजन ।मि ॥। तोले का होता है इस गांठ में मटर के दाणे जितने २।१० से ५० दाणे होते हैं उस में अंड की सुफेदी के मिलता पतला प्रवाह होता है इस में का दाणा जब बडा होता है और जिस वक्त मजबूत होता है तब गांठ के आखर ऊपर उपन्न आता है और उस के ऊपर गर्भस्थान के आगे जो कही दोनों तरफ की नली का छेडा लग आता है उस नली में वह दाणा फूटकर अपने अंदर का बहने वाला पदार्थ उस नली में गिरा देता है पीछे वह रस नली के गर्भस्थान के कोथली में उतरा भया मुंह के रस्ते गर्भस्थान में आता है

॥ स्तन-बाबे ॥ (ब्रेस्ट Breast)

गर्भाशय सिवाय स्तन भी स्त्री जाति का खास अवयव है वह स्तन उत्पत्ती अवयव के संग कितना एक सम्बन्ध रखता है स्त्री के जब गर्भ रहता है तब उस स्तनों के शिकल में फेरफार होता है पैदा होने वाला बालक के वास्ते स्वभाव कुदरत से उस में दूध का पहले से ही संग्रह होता है स्तन मांस के लोचों की बनी भई एसे दीखती है लेकिन मांस के १५॥ २० झूमखों की बनी भई है उस में दूध पैदा होता है ॥

किरण ३ (सात धातू 7 Materials)

जिस पदार्थों से शरीर धारण रहता है उनों को धातु कहते हैं प्राचीन वैद्यक शास्त्र प्रमाणे शरीर को पोषण करने वाली सात धा-तु हैं १ रस शरीर में तृप्तितरावट करता है २ रक्त शरीर में जीव-न शक्ति देता है ३ मांस लेपन कर अवयवों को जोड़ता है ४ मेद चिकणास लाता है ५ अस्थिहाड शरीर को धारण करे है मजबूती दे है ६ मज्जा मींजी हाडों की नलियों को भरे है ७वीर्य शरीर का सत है जिस से प्रजा पैदा होती है जैसे पृथ्वी का वीर्य पारा है वृक्षों का गूंद है तैसे ॥ जिस क्रम से गर्भ का बंधेज पोषण होता है इसी क्रम से शरीर के अंदर की सातों ही धातुओं का उत्तरो-त्तर बंधेज होता है एसा मालुम देता है इस वास्ते पूर्व संप्रदाय मु-जब उन सातों ही धातुओं की व्यवस्था कुछ समझने की जरूरी है रस १ खुराक के पहिले पाकको रस कहने में आता है अच्छी त-

रह जब जठराग्नि से पका भया खुराक का पहिले रस सारतत्व होता
है यह जल जैसा प्रवाही सुफेद ठंडा मीठा चिकना और चलने
वाला होता है ऐसा रस सब शरीर में है तो भी इस की मुख्य ज-
गह हृदय है यह रस धोरी नसों के रस्ते होकर सब धातुओं में जा
कर पोषण करता है जिस की मंद अग्नि है उस के खुराक का
रस विदग्ध अर्थात् जला जाता है विदग्ध होने से रस तीखा और
खट्टा होता है ऐसा रस बहुत रोगों को पैदा करता है उस कच्चे
रस को आम कहते हैं यह जहर का काम करता है साधारण बो-
ली में उस को रस विकार कहते हैं रक्त २ होजरी आमाशय में से
जब यह रस कलेजे में जाता है तब पित्त के संयोग से रंगपा
कर तथा पक कर उस का खून बनता है खून सो सब शरीर में
रहा भया है जीव का सर्वोत्तम आधार है यह रक्त चिकना भारी
मीठा तथा गमन करने वाला है खून बिगड़ने से पित्त जैसा खट्टा
होकर रोग पैदा करता है इस विकार को लोही खून विकार कह-
ते हैं कलेजा और तिल्ली यह रक्त का मुख्य ठिकाना है मांस ३ खून
में रही अग्नि कर के पका तथा वायु कर के गट्ट भया खून इसी का
नाम मांस है खून के स्थान में रहा भया रस वह तो खून मांस में
गया भया खून सो मांस ऐसे मांस से मेदा मेद में से अस्थि
हाड में से मींजी मींजी में से वीर्य पैदा होता है गरमी शुक्र वायु
पोली शिराओं का विभाग अर्थात् शाखाओं बनाती है तैसे वायु
मांस में प्रवेश कर मांस की पेसियां बनाती है शरीर में ऐसे मांस
की पेसी ५०० हैं शिरायें स्नायुयें और सांध यह सब मांस की

पेसीयों से ढकी भयी है जिस से यह सब ताकतवर और चलते हैं यह पेसियां सब शरीर में हैं मेद ४ ज्यादा अन्दर की अग्नि में पक कर ज्यादा घट्ट होता है उस को मेदा या चरबी कहते हैं मेद भारी चिकनी बल देने वाली शरीर को जाडा करती है मेद विशेष कर पेट में रहती है हाड ५ मेद अन्दर की अग्नि से पक कर वायु उस को शोषण करती है तब उस के रूप का पलटना वह हाड कहलाता है जैसे दरख्त अन्दर के सत्व से खडा रहता है तैसे मांस सूखने पर भी बहुत मुद्दत तक यह शरीर हाडों के आधार चलता है वह सत्व रूप है इस वास्ते शरीर में हाड तीनसौ ३०० मज्जा हाडों में रही अग्नि उस से पक कर जो घट्ट सार सत्व है तया पसीने की तरह हाडों में से अलग निकलता है उस का नाम मींजी है यह मज्जा ६ बडे हाडों में ज्यादा करके अन्दर रहता है वीर्य व धातुओं का आखरी सत्व सारभूत धातू वीर्य है ॥

धातुओं का अन्य रूप (लक्षण *Habit*)

शरीर में सातों ही धातुओं की हमेशा क्रिया चलती है जो खुराक खाने पीने में आती है वह पाचन क्रिया विषय में लिखेंगे उस मुजब होजरी में पक कर उस में से मल मूत्र अलग होता है उस में से सार पदार्थ रस पैदा होता है वह रस का ठिकाणा हृदय में जाकर मूल रस में मिलता है वहां से फैल कर सब शरीर को पोषण करता है हृदय में गये बाद इस रस का तीन हिस्सा होता है स्थूल १ सुक्ष्म २ और मल ३ स्थूलरस तो अपनी निज जगह में ही रहता है सुक्ष्मरस धातुओं में जाता है और मलरस धातुओं के

मेल में जा मिलता है जैसे अंगार से सांठे का रस पकता जाता है मेल ऊपर आता जाता है तैसे ही रस में रही अग्नि कर के आहार के रस का पचन होता है पचती वक्त वो रस पांच दिन डेढ घडी तक अपने मूल रस में ही रहता है पीछे वो रस खून में जाता है वहां भी इतनी ही मुदत रह कर मांस में जाता है इस तरह वीर्य में पहुंचते एक महीना के करीब मुदत होती है एकेक धातु का पाक होते उस में से मैल छूटने जाता है एकेक धातु का निकलता भया मेल इस मुजब पाचन होता आहार के रस में से मेल निकले सो कफ १ खून धातू में से मेल निकले सो पित्त २ मांस धातू में से मल निकले सो कान का मेल ३ मेद धातु में से मेल निकले सो पसीना ४ हाड धातू में मेल निकले सो नख ५ मज्जा धातू में से निकले मेल सो नेत्रमल ६ वीर्य में से मेल निकले सो गालों पर चिकणाई या जुवानी में खीलों का होना ७ रस धातू में से निकला भया कफ प्राण वायू में चलायमान धमनी नाडी में होकर शरीर के मूल कफ में मिल कर कफ को पोषण करता है आहार के रस में से मेल जुदा भया पीछे सारभूत रस का दो भाग होता है जिस में से सूक्ष्म रस व्याननाम के वायु कर के प्रेरित भया धमनी के रस्ते शरीर की गरमी को कम कर के शरीर के धातू को पोषण करता है. खून का भी दो भाग जिस में से स्थूल भाग व्यान वायु से प्रेरित धमनी के रस्ते मांस धातु में मिलता है वहां काल का मेल छोड कर व्यान वायु से शिराओं के रस्ते बाहिर आता है इसी तरह मांस का दो भाग स्थूल १ और सूक्ष्म २ जिस में से सूक्ष्म भाग तो मूल

मांस धातू का पोषण करता है स्थूल भाग व्यान वायु से प्रेरित हो कर शरीर के मूल मेद धातू में जाता है उस में से पकते वखत पसीना निकलता है शरीर की गरमी से तप कर शिराओं के छेओं के रस्ते बाहर निकलता है जीभ दांत काख वगेरे में मेल निकसता है वो भी मेद चरवी का मैल है कितनेक आचार्य ऐसा कहते हैं इसी तरह मेद भी दो तरह का होता है जिस में सूक्ष्म भाग तो पेट में रहकर मेद धातू का पोषण करता हैं स्थूल भाग व्यानवायु से प्रेरित धमनी के रस्ते हाड में जाता है वहां अग्नि से पकते व्यान वायु से शिराओं में होकर उस का मैल नख बनता है शरीर के रूं भी हाडों का मैल है एसा भी मानते हैं इसी तरह हाड के दो भाग सूक्ष्म १ स्थूल २ सूक्ष्म भाग तो मूल हाड में रहकर उनों का पोषण करता है स्थूल भाग व्यान वायु द्वारा प्रेरित मज्जा में वहां पकते वखत मैल जो निकलता है सो पूर्व की तरह नेत्रों में मैल तथा चिपडी आंख होती है इसी तरह मज्जा का दो भाग जिस में से सूक्ष्म तो मूल मज्जा में रहकर मज्जा का पोषण करता है स्थूल का वीर्य बनता है उस वखत मैल नहीं निकलता सांठे का आखरी रस मिश्री को निखारणे के दृष्टांत एसा केइ आचार्य मानते हैं केइ आचार्य युवानी में मूं पर खीलों का होना सो धातु के पकते समय में मैल मानते हैं धातु कम पैदा जब होने लगता है या ज्यादा निकल जाता है तब वह मैल थोडा होने पर दिखाई नहीं देता मिश्री को निखारते ज्यों थोडा मैल आता है तैसे मज्जा से वीर्य पकते भी थोडा मैल आता है सो गाल वगेरों पर खील अथवा चिक-

खास आता है एकेक धातू पकते सवा च्यार २ दिन लगता है ऐ-
सा भी पूर्वाचार्य जैनों का कथन है केइयक छ धातू पकते एकेक
जगह ५ दिन डेढ घडी मानते हैं वीर्य का मैल नहीं मानते आखिर
सातोंइ धातुओं बनते तीस दिन के लगभग होता है यह दोनों का
एक ही सिद्धांत है यह पाचन क्रिया में शरीर में कमवेसी गरमी के
लिये जितनी कसर रहती है तब धातुओं की पुष्टी में और मैल के
जथे में बध घट होती है कितनेक आदमीयों के कफ जादा होता है
कितने एक के पित्त जादा होता है कितने एक के कान में मैल
ज्यादा होता है कितनों के पसीना ज्यादा होता है कितनों के रूं तथा नख
जादा बढता है कितनों के आंख में गीड तथा आंखों चिपडी होती
है कितनों के खीलं तथा गालों पर चिकणास जादा होता है ऊपर
लिखी सातोंइ धातूओं की अंदर की पाचन क्रिया में कमवेसी पणे
से ही एसा लक्षण होता होगा इस लच्चणों द्वारा अनुमान करने में
आता है ॥

॥ तीन दोष-वात-पित्त-कफ ॥
ऊ वींड वाइल्ल फलग्म

ऊपर लिखा सात धातू का उत्पत्ति क्रम वह मुख्य तीन ची-
जों से शरीर में क्रिया चलती है आहार के रस को लेकर उस में
से क्रम से बणते धातुओं को अपने २ ठिकाणे लजाने का काम
वायु करती हैं यह वायु सब शरीर में फैली भई है आहार के रस
की चाल से यह भी मालम होता है के शरीर में पाचन क्रिया फ-
कत होजरी में और आंतों में ही होती है एसा नहीं है किन्तु अ-

ग्नि सब शरीर में है इतना तो है पक्वाशय के आसरे ही शरीर की सब गरमी और पाचन शक्ति का आधार है इस से मालम भया के पित्त नाम का एक अग्नि शरीर में अपना हक्क धराता है तीसरा मुख्य पदार्थ कफ है सो रस का मैल है या रस का दूसरा बणो सो पदार्थ है यह भी सब शरीर में व्यापक और शरीर को पोषणे वाला है इस वास्ते वैद्यक शास्त्र में इन तीनों की प्रधानता इन तीनों की बध घट से रोगीपणा समानता से निरोगीपणा इत्यादि प्रकृती जानने को आधार रक्खा है येवाय पित्त कफ या मैल मल जब बिगड के रोग करता हैं इस वासते तीनों को दोष भी कहते हैं जगत में धारण करने को चंद्रमा १ सूर्य २ और वायु ३ कि जैसी क्रिया है ऐसी ही क्रिया शरीर को धारण करने को इन तीनों की है चंद्र जैसे दूसरे को ठंडता देता है तब ताकत बढती है तैसे कफ का धर्म है, सूर्य गरमी द्वारा सब को हरण करता है तैसे पित्त का धर्म है, वायु फूंक देती है विक्षेप करती है सो वायु का धर्म है यह तीनों बिगडे तो शरीर का नास कर देती है अवस्था में १ दिन में २ रात में ३ और भोजन में ४ इन चारों में आदि में मध्य में और अंत में इन तीनों का वखत है, सो इस मुजब बालकपणे में कफ की अधिकता १ दिन के प्रथम भाग में कफ की अधिकता २ भोजन के अंत में कफ की अधिकता ३ जवानी में पित्त का जोर १ दिन के मध्यान्ह में पित्त का जोर २ भोजन के मध्य में पित्त का जोर ३ वृद्ध अवस्था में वायु का जोर १ दिन के अंत भाग में वायु का जोर २ भोजन की सरुआत में वायु का

जोर ३ रात के प्रथम भाग में कफ का जोर १ भोजन के पीछे पचने के अन्त में कफ का जोर २ रात्री के मध्य भाग में पित्त का जोर १ भोजन पचने मध्य मे पित्त का जोर २ रात के अंत में वायु का जोर १ भोजन पचने के आदि में वायु का जोर २ ॥

॥ पांच वायु ॥ (३ विंड)

वायु का लक्षण दोष धातू मल वगैरों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है शरीर की क्रिया को चपलता देती है वायु शरीर में जहां तक शुद्ध होय तहां तक शरीर में फुरती चैन सब चेष्टाओं की प्रवृत्ति कर के धातुओं को अच्छी तरह गति देकर इंद्रियों को चपलता शरीर के सब क्रिया में मदद देती है वायुकार जो गुण है सूक्ष्म शीतल रूखा हलका चलने वाला यह उस के मुख्य गुण है वायु पांच तरह का हैं १ उदान कंठ में रहता है २ प्राण हृदय में रहता है ३ समान आंतरों में रहता है ४ अपान मलाशय में रहता है ५ व्यान सब शरीर में रहता है उदान वायु ऊंची गति करती है उस से बोलना गाना वगैरः होता है जब वह उदान वायु बिगडती है तब स्वर भंग तथा हांस के ऊपर के भाग में रोग पैदा करता है प्राण वायु का कार्य संसगति करता है और आहार को रस्ता देता है प्राणों को धारण करता है प्राण वायु जब बिगडती है तब हिचकी रोग श्वास रोगादिक होता है उदान प्राण वायू का शुद्ध संयोग है सो ही आयु है समान वायु का कार्य आमाशय (होजरी) तथा पक्वाशय (आंतरा) में फिरे हैं जठराग्नि के संग मिल के आहार को पचावे है पाचन क्रिया में पैदा हो

मूत्र का विरेचन करता है मल मूत्र रस वगेरों को जुदा २ करता है रस को रंग देना हृदय का कफ तथा अंधकार का नाश करता है रूप का धारण क्रांति बधानी शरीर के ऊपर का लेप मालस वगेरे को पचाना इत्यादिक काम करता हैं दीपक जैसे एक जगह रहा भया लेकिन सब घर में प्रकाश करता है तैसे यह पाचक पित्त सब शरीर की अग्नि को ताकतवांन करता है रंजक पित्त रस का खून बनाता है रस को खून का रंग देता हैं साधक पित्त बुद्धि धृति (हिम्मत) स्मृति वगेरः पैदा करे है साधक पित्त अंतःकरण में है इस वास्ते धारणाशक्ति तथा याद शक्ति यह सब अन्तःकरण द्वारा जीव के प्रकाशित होता है आलोचकपित्त रूप आकार ग्रहण करता है नेत्र इस पित्त द्वारा देखता हैं भ्राजक पित्त शरीर पर लेप तेल वगेरः मालस को पचा कर शोषण करता है चमडी पर दमक चमक लाता है ॥

॥ कफ-श्लेष्म ॥ (फलेग्म)

कफ का स्वरूप सुपेद भारी स्निग्ध ठंडा मीठा और बिगडने से खारा कफ विशेष कर तमोगुण वाला है कफ पांच प्रकार का है क्लेदनकफ आमाशय होजरी में है १ अवलंबन कफ अंतःकरण में है २ रसन कफ कंठ में है ३ स्नेहन कफ शिर में है ४ श्लेष्मण कफ सांधों में है ५ क्लेदन कफ अन्न को भिजाना है अच्छी तरह धारण करना रस को ग्रहण करना सब इंद्रियों को तृप्त करना सांधों को अच्छी तरह जुडा रखना इत्यादि पानी की किया

ते रस को जुदा करता है मल मूत्र को जुदा २ निकाल के गिरावे है समानवायु जब विगडती है तब मंदाग्नि अति सारदस्त और गोला वगेर: अनेक रोगों को पैदा करे है अपानवायु का कार्य बडे आंतर में तथा सफरे में रहकर मल मूत्र वीर्य गर्भ स्त्री के रितुधर्म (खून) वगेर: को नीचे के द्वार तरफ खेंचकर लेजाने का काम करता है अपानवायु जब विगडती हैं तब वस्ति गुदा स्थान वीर्य का रोग प्रमेह वगेर: बडे २ भयंकर रोगों को यह वायु पैदा करती है व्यान वायु का कार्य सब शरीर में फिरता है रस को धमनी तथा शिराओं में चढावे है पसीना तथा खून को वहाता है गति पास में लाना दूर फेंकना आंखमूंचणी खोलणी इत्यादि काम व्यान वायू का है व्यान वायु जब विगडती है तब सब शरीर में रोगों का जन्म पैदा करती है कोई वखत यह सब वायु एकदम विगडती है तब बडे कष्ट से प्राणी मर जाता है ॥

॥ पित्त ॥ (बाइल)

पित्त का स्वरूप गरम प्रवाही पीला हरा सारक तीखा कडवा हलका चिकणा पित्त पकती बखत खट्टा है आमवाला पित्त हरा है आम विगर का पीला है स्वभाव पित्त का स तो गुणी है वह पित्त पांच प्रकार का है पाचक पित्त १ पक्वाशय आंतरों में है १ रंजक पित्त कलेजे में और तिल्ली में है २ साधक पित्त हृदय में है ३ आलोचक पित्त आंखों में रहता है ४ भ्राजक पित्त चमडी में रहता है पाचक पित्त खुराक को पचाता है अग्नि को बढाता है मल

...का विरेचन करता है मल मूत्र रस वगैरों को जुदा २ करता
रस को रंग देना हृदय का कफ तथा अंधकार का नाश करता
रूप का धारण क्रांति वधानी शरीर के ऊपर का लेप मालस
वगैरे को पचाना इत्यादिक काम करता हैं दीपक जैसे एक जगह
हा भया लेकिन सब घर में प्रकाश करता है तैसे यह पाचक पि-
त सब शरीर की अग्नि को ताकतवांन करता है रंजक पित्त रस
का खून बनाता है रस को खून का रंग देता है साधक पित्त बुद्धि
धृति (हिम्मत) स्मृति वगैरः पैदा करे है साधक पित्त अंतःकरण
में है इस वास्ते धारणाशक्ति तथा याद शक्ति यह सब अन्तःकरण
द्वारा जीव के प्रकाशित होता है आलोचकपित्त रूप आकार ग्रहण
करता है नेत्र इस पित्त द्वारा देखता है भ्राजक पित्त शरीर पर
लेप तेल वगैरः मालस को पचा कर शोषण करता है चमडी पर
दमक चमक लाता है ॥

॥ कफ-श्लेष्म ॥ (फलेग्म)

कफ का स्वरूप सुपेद भारी स्निग्ध ठंडा मीठा और चिगटने से
...फ विशेष कर तमोगुण वाला है कफ पांच प्रकार का है
...कफ आमाशय होजरी में है १ अवलंबन कफ अंतःकरण
२ रसन कफ कंठ में है २ स्नेहन कफ शिर में है ४ ...
कफ सांधों में है ५ क्लेदन कफ अन्न को भिजाता है अच्छी
धारण करना रस को ग्रहण करना सब इंद्रियों को तृप्त क...
सांधों को अच्छी तरह जुदा रखना इत्यादि पानी की क्रिय...

ते रस को जुदा करता है मल मूत्र को जुदा २ निकाल के गिरावे है समानवायु जब बिगडती है तब मंदाग्नि अति सारदस्त और गो- ला वगेरः अनेक रोगों को पैदा करे है अपानवायु का काय बडे आंतर में तथा सफरे में रहकर मल मूत्र वीर्य गर्भ स्त्री के रितुधर्म (खून) वगेरः को नीचे के द्वार तरफ खेंचकर लेजाने का काम करता है अपानवायु जब विगडती हैं तब वस्ति गुदा स्थान वीर्य का रोग प्रमेह वगेरः बडे २ भयंकर रोगों को यह वायु पैदा कर- ती है व्यान वायु का कार्य सब शरीर में फिरता है रस को धमनी तथा शिराओं में चढावे है पसीना तथा खून को वहाता है गति पास में लाना दूर फेंकना आंखमूंचणी खोलणी इत्यादि काम व्यान वायू का है व्यान वायु जब विगडती है तब सब शरीर में रोगों का जन्म पैदा करती है कोई बखत यह सब वायु एकदम विगडती है तब बडे कष्ट से प्राणी मर जाता है ॥

॥ पित्त ॥ (बाइल)

पित्त का स्वरूप गरम प्रवाही पीला हरा सारक तीखा कडवा हलका चिकणा पित्त पकती बखत खट्टा है आमवाला पित्त हरा है आम विगर का पीला है स्वभाव पित्त का स तो गुणी है वह पित्त पांच प्रकार का है पाचक पित्त १ पक्वाशय आंतरों में है १ रंजक पित्त कलेजे में और तिल्ली में है २ साधक पित्त हृदय में है ३ आलोचक पित्त आंखों में रहता है ४ भ्राजक पित्त चमडी में रह ता है पाचक पित्त खुराक को पचाता है अग्नि को बढाता है मल

हैं यह तंतु वारीक तांतों जैसी है इन की ओपमा विजली के तार जैसी है सब तांतणे काच की वारीक नली जैसे है उस के अंदर तेल जैसा निर्मल पदार्थ है विजली के तार में जैसे अंदर धातु और ऊपर गटापरचा का लेप होता है तैसे ही तांतणों के अंदर का पदार्थ प्रवाही धातु का काम करता है और ऊपर का बारीक पुडत गटापरचे का काम साधता है ऐसे कितनेक तांतुओं मिल के बंडल होता है ऐसे कितनेक बंडल इकट्ठे मिलके तंतु होते हैं हरेक तंतु के दो नाके होते हैं जिस में से एक छेडा मगज में अथवा करोड रज्जू में होता है दूसरा छेडा जिधर के तरफ तंतु जाता है उस भाग में होता है स्पर्श रूपादिक पांचों इंद्रियों का समाचार मगज को पहुंचता है तब उसका ज्ञान होता है एक चीज को हाथ में लेने का मन होता है और उस को लेने को हाथ को मगज की प्रेरणा होती है तब लंबा करके उस चीज को हाथ उठा लेती है इसी तरह धर देना होता है मगज अथवा मनका बाहर के पदार्थों के साथ का व्यापार मगज अथवा करोड रज्जु से चलता है ज्ञानतंतु तथा गति तंतु यह दो तरह के हैं कितनेक तंतु बहार का व्यवहार किसी भी इंद्री पर चले उस की खबर मगज को देकर सावचेत करे है उस को ज्ञानतंतु कहते हैं यह ज्ञानतंतु मगज और करोड रज्जू और मज्जा की जगह से निकल कर शरीर में फैलाता करती हैं और दूसरी तरह के तंतु भेजने का हुकम शरीर के हर किसी जगह पहुंचा कर गति अथवा क्रिया पैदा करती हैं इस तरह के तंतुओं को गति तंतु कहते हैं इन दोनों तंतुओं से आगे सब शरीर

क्लेदन कफ करता है १ अवलंबन कफ अंतःकरण के भागों को तैसे शिर और दोनों हाथों को सांधों को धारण करता है २ रसन कफ कंठ और जीभ को नरम रखता है ३ स्नेहन कफ स्नेह याने तेल जैसा चिकणा पदार्थ इंद्रियों को देकर तृप्त करता है ४ श्लेष्मण कफ सब सांधों को अच्छी तरह जोड रखता है ॥

॥ किरण ४ थी ॥ (शरीर की जुदी क्रिया)

शरीर के अंदर तरह २ की क्रिया किस तरह चलती है शरीर में तरह २ के रोग किस कारण से होता है शरीर के मुख्य अवयवों की क्रिया का विस्तार की व्याख्या करने पर हृदय में अच्छी तरह यह दीपक प्रकाश करेगा शरीर में जितने भाग ज्यादा चेतन शक्ति वाले हैं उनों का यहां वर्णन करेंगे शरीर में एसी चेतन की क्रिया करने वाली मुख्य तीन चीज है मगज १ फेफसा २ और रक्ताशय ३ ये तीन पाया इस शरीर के जीवन की जड है इस में किसी एक पाये में खटका होने से यह तिपाई टिक नहीं सकती यह तीन मुख्य मर्म स्थान है इस के अलावा कलेजा होजरी आंतरे मूत्राशय वगेरः भी जीव के आधार भूत है ॥

॥ मज्जातंतु-ज्ञानतंतु-गतितंतु ॥

शरीर के अंदर चलती क्रिया शरीर के संग सम्बन्ध होता बाहिर की क्रिया का संदेसा ले जाना और लाने वाले को मज्जा-तंतू कहते हैं मगज और करोड रज्जू यह मज्जातंतुओं का विचला ठिकाणा (सेन्टर) है इस जगा में से यह तंतुओं शरीर में फैले

हैं यह तंतु बारीक तांतों जैसी है इस की ओपमा बिजली के तार जैसी है सब तांतणो काच की बारीक नली जैसे है उस के अंदर तेल जैसा निर्मल पदार्थ है बिजली के तार में जैसे अंदर धातु और ऊ-पर गटापरचा का लेप होता है तैसे ही तांतणों के अंदर का पदार्थ प्रवाही धातु का काम करता है और ऊपर का बारीक पुडत गटा-परचे का काम साधता है ऐसे कितनेक तांतुओं मिल के बंडल हो-ता है ऐसे कितनेक बंडल इकट्ठे मिलके तंतु होते हैं हरेक तंतु के दो नाके होते हैं जिस में से एक छेडा मगज में अथवा करोड र-ज्जु में होता है दूसरा छेडा जिधर के तरफ तंतु जाता है उस भाग में होता है स्पर्श रूपादिक पांचों इंद्रियों का समाचार मगज को पहुंचता है तब उसका ज्ञान होता है एक चीज को हाथ में लेने का मन होता है और उस को लेने को हाथ को मगज की प्रेरणा होती है तब लंबा करके उस चीज को हाथ उठा लेता है इसी त-रह धर देना होता है मगज अथवा मनका बाहर के पदार्थों के साथ का व्यापार मगज अथवा करोड रज्जु से चलता है ज्ञानतंतु तथा गति तंतु यह दो तरह के है कितनेक तंतु बहार का व्यवहार किसी भी इंद्री पर चले उस की खबर मगज को देकर मालुम करे है उस को ज्ञानतंतु कहते हैं यह ज्ञानतंतु मगज और करोड रज्जु और मज्जा की जगह से निकल कर शरीर में फैलाया करती है और दूसरी तरह के तंतु भेजने का हुकम शरीर के हरकिसी ज-गह पहुंचा कर गति अथवा क्रिया पैदा करती है इस तरह के तंतु ओं को गति तंतु कहते हैं इन दोनों तंतुओं के जाल सब शरीर

क्लेदन कफ करता है १ अवलंबन कफ अंतःकरण के भागों को तैसे शिर और दोनों हाथों को सांधों को धारण करता है २ रसन कफ कंठ और जीभ को नरम रखता है ३ स्नेहन कफ स्नेह याने तेल जैसा चिकणा पदार्थ इंद्रियों को देकर तृप्त करता है ४ श्लेष्मण कफ सब सांधों को अच्छी तरह जोड रखता है ॥

॥ किरण ४ थी ॥ (शरीर की जुदी क्रिया)

शरीर के अंदर तरह २ की क्रिया किस तरह चलती है शरीर में तरह २ के रोग किस कारण से होता है शरीर के मुख्य अवयवों की क्रिया का विस्तार की व्याख्या करने पर हृदय में अच्छी तरह यह दीपक प्रकाश करेगा शरीर में जितने भाग ज्यादा चेतन शक्ति वाले हैं उनों का यहां वर्णन करेंगे शरीर में एसी चेतन की क्रिया करने वाली मुख्य तीन चीज है मगज १ फेफसा २ और रक्ताशय ३ ये तीन पाया इस शरीर के जीवन की जड है इस में किसी एक पाये में खटका होने से यह तिपाई टिक नहीं सकती यह तीन मुख्य मर्म स्थान है इस के अलावा कलेजा होजरी आंतरे मूत्राशय वगेरः भी जीव के आधार भूत है ॥

॥ मज्जातंतु-ज्ञानतंतु-गतितंतु ॥

शरीर के अंदर चलती क्रिया शरीर के संग सम्बन्ध होता बाहिर की क्रिया का संदेसा ले जाना और लाने वाले को मज्जा-तंतू कहते हैं मगज और करोड रज्जू यह मज्जातंतुओं का विचला ठिकाणा (सेन्टर) है इस जगा में से यह तंतुओं शरीर में फैले

भी मालम नहीं देता इस तरह गति तंतु की मारफत मगज अथवा करोड रज्जू का हुकम जिधर की तरफ गति तंतु गई है उधर की तरफ ही जाता है हाथ के अंदर गया भया गति तंतु को काट डाले तो पीछे हाथ के अंदर गति उत्पन्न करने वाली कूदरत कटे भये ऊपर के भाग में रहेगी नहीं क्योंकि कटे बाद मगज का हुकम उस भाग में चल सकता नहीं नीचे की तरफ फेर जो काम अपनी इच्छा से होता है उस का व्यापार मगज के संग चलता है और जिस १ काम में अपनी इच्छा की जरूरी नहीं उसका व्यापार करोड रज्जू के संग चलता है हाथ पांव वगैरः शरीर के कितनेक भागों को हलचल करने की अपने को इच्छा होती है तब उस २ भागों को क्रिया में जोडने को मगज है सो गति तंतु के मारफत हुकम पहुंचता है गति तंतु का अगला नाका उस भाग के स्नायुओं को अर्थात मांस के तांतों को मगज का हुकम सुनाता है तब वह स्नायु काम करने लग जाते हैं यह काम तो मनुष्य की इच्छा के आधीन है और होजरी हृदय आंतरों वगैरे में जो क्रिया होती हैं उस पर अपनी सत्ता अथवा इच्छा काम नहीं कर सकती उस २ भाग में जो गति तंतु है सो अपनी निज कुदरत से काम किया करती है करोड रज्जू का हुकम उस गति तंतू पर चलता है तब होजरी में अपनी क्रिया करती है यह हुकम बिना कारण होना नहीं होजरी जहां तक खाली रहती है तब तक उस की क्रिया बन्ध रहती है होजरी में जब खुराक मिल्ता है तब आस पास की गांठों (ग्लांडों) को खबर पहुंचाने से होजरी में रस क्रिया करने का

में सेल भेल होकर फैलावे किया है तिस पर भी वह अपना २ काम करती है मगज के तंतु खोपरी के भेजे का चार हिस्सा है जिस में से सब से बडा हिस्सा और ऊपर के मगज में गे कितनेक तंतु सीधी खोपरी के छेदों के रस्ते निकल कर इस में मुख्य पांच ज्ञान इंद्रियों के तंतु हैं इनों की सीधी क्रिया मगज के संग चलती है इन सबों की क्रिया आपस में जुदी २ है आंख में गई तंतु बाहर के प्रकाश को लेकर मगज को पहुंचाती है तब अपणे देख सकते हैं इसी तरह शब्दादिक चारों इंद्रियों का व्यापार समझ लेना इस तरह मगज को खबर उस तंतुओं द्वारा पहुंचती है तब जिस जगह शब्दरूपादि पांच मुख्य विषयों का भेदांतरों के जगह वगेरा का मगज में ज्ञान होता है करोड रज्जू खोपडी के पिछाडी के नीचे के मगज में से कितनेक तंतु पीठ की कारोड में उतरे भये हैं इस तंतुओं का नाम करोड रज्जू है पीठ की करोड में से ३१ जोड तंतु निकलती है उस की शाखा हाथ पैर छाती पीठ वगेरः सब धड में फैल गई है जो इस दोनों तंतुओं में कसर हो जाय तो उन उन इंद्रियों को ज्ञान में कसर होती है तार की डोरी बीच में टूटे बाद समाचार नहीं पहुंचा सके तैसे दृष्टांत जो ज्ञान तंतु पीठ की करोड रज्जू में से हाथ की अंगली तक पहुंचती है उस से अंगलियों को ज्ञान हो रहा है जो वो तंतुओं को बीच में से काट दिया जावे तो पीछे अंगलियों को जो स्पर्श होय उस का मगज को ज्ञान नहीं होता कटे बाद वह भाग अलग हो जाने से नीचे का भाग झूठा पड जाता है उस को जलावे अथवा सूई चुभावे तो

भी मालम नहीं देता इस तरह गति तंतु की मारफत मगज अथवा करोड रज्जू का हुकम जिधर के तरफ गति तंतु गई है उधर की तरफ ही जाता है हाथ के अंदर गया भया गति तंतु को काट डाले तो पीछे हाथ के अंदर गति उत्पन्न करने वाली कूदरत कटे भये ऊपर के भाग में रहेगी नहीं क्योंकि कटे बाद मगज का हुकम उस भाग में चल सकता नहीं नीचे की तरफ फेर जो काम अपनी इच्छा से होता है उस का व्यापार मगज के संग चलता है और जिस २ काम में अपनी इच्छा की जरूरी नहीं उसका व्यापार करोड रज्जू के संग चलता है हाथ पांव वगेरः शरीर के कितनेक भागों को हलचल करने की अपने को इच्छा होती है तब उस २ भागों को क्रिया में जोडने को मगज है सो गति तंतु के मारफत हुकम पहुंचता है गति तंतु का अगला नाका उस भाग के स्नायुओं को अर्थात मांस के तांतों को मगज का हुकम सुनाता है तब वह स्नायु काम करने लग जाते हैं यह काम तो मनुष्य की इच्छा के आधीन है और होजरी हृदय आंतरों वगेरो में जो क्रिया होती हैं उस पर अपनी सत्ता अथवा इच्छा काम नहीं कर सकती उस २ भाग में जो गति तंतु है सो अपनी निज कुदरत से काम किया करती है करोड रज्जू का हुकम उन गति तंतु पर चलता है तब होजरी में अपनी क्रिया करती है यह हुकम बिना कारण होता नहीं होजरी जहां तक खाली रहती है तब तक उस की क्रिया बन्ध रहती है होजरी में जब खुराक गिरता है तब आन पान की गांठों (ग्लांडों) को खबर पहुंचने ही होजरी में रस किया करने का

में सेल भेल होकर फैलावे कियां है तिस पर भी वह अपना २ काम करती है मगज के तंतु खोपरी के भेजे का चार हिस्सा है जिस में से सब से बडा हिस्सा और ऊपर के मगज में से कितनेक तंतु सीधी खोपरी के छेदों के रस्ते निकल कर इस में मुख्य पांच ज्ञान इंद्रियों के तंतु हैं इनों की सीधी क्रिया मगज के संग चलती है इन सबों की क्रिया आपस में जुदी २ है आंख में गई तंतु बाहर के प्रकाश को लेकर मगज को पहुंचाती है तब अपणे देख सकते हैं इसी तरह शब्दादिक चारों इंद्रियों का व्यापार समझ लेना इस तरह मगज को खबर उस तंतुओं द्वारा पहुंचती है तब जिस जगह शब्दरूपादि पांच मुख्य विषयों का भेदांतरों के जगह वगेरा का मगज में ज्ञान होता है करोड रज्जू खोपडी के पिछाडी के नीचे के मगज में से कितनेक तंतु पीठ की करोड में उतरे भये हैं इस तंतुओं का नाम करोड रज्जू है पीठ की करोड में से ३१ जोड तंतु निकलती है उस की शाखा हाथ पैर छाती पीठ वगेरः सब धड में फैल गई है जो इस दोनों तंतुओं में कसर हो जाय तो उन उन इंद्रियों को ज्ञान में कसर होती है तार की डोरी बीच में टूटे बाद समाचार नहीं पहुंचा सके तैसे दृष्टांत जो ज्ञान तंतु पीठ की करोड रज्जू में से हाथ की अंगली तक पहुंचती है उस से अंगलियों को ज्ञान हो रहा है जो वो तंतुओं को बीच में से काट दिया जावे तो पीछे अंगलियों को जो स्पर्श होय उस का मगज को ज्ञान नहीं होता कटे बाद वह भाग अलग हो जाने से नीचे का भाग झूठा पड जाता है उस को जलावे अथवा सूई चुभावे तो

शुद्ध करने की जगह में अपने संग खेंचके ले जाता है दूसरा खून
का जरूरी का काम बदन में गरमी देने का है जब खून नहीं फि-
रता है तो छाती के भाग पर जैसी गरमी मालूम दे है ऐसी हथे-
ली पगथली पर लगती नहीं है जब किसी भी बेमारी में खून का
फिरना बराबर नहीं रहता तब पहले हाथ पांव ठंडे होते हैं जब
खून जलदी २ फिरता है तब सब बदन में बराबर गरमी रखता है
देसी केइयक आचार्य ऐसा भी मानते हैं शरीर में जब कफ बिग-
डेगा और पित्त हाथ पैरों में जाकर ठहरेगा तब शरीर ठंडा हाथ
पैर गरम और शरीर में पित्त बिगडेगा और कफ हाथ पैरों में जा
कर ठहरेगा तब बदन तो गरम और हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं श-
रीर में जो खून फिरता है सो दो तरह का है हृदय के बांये भाग
में धमनी या धोरी नसों में लाल किरमची रंग का खून होता है
और कलेजे के दहणे खंड में और काली नसों में मैला और जा-
मुन के रंग जैसा स्याह खून होता है इस काले रंग के खून को
लोक जानते हैं जैसा नुकसान करने वाला नहीं है फेफसे में जा
कर शुद्ध भये बाद यही खून शरीर को पोषण करता है लोही ज-
रा खट्टा चिकणा और पाणी से कुछ भारी है स्वाद में जरा खारा
है खून में गरमी सौ डिग्री है खून के दो भाग हैं एक तो रक्तर-
जकण दूसरा रक्तजल रक्तरजकण खून में असंख्याता हैं जिन से
खून लाल दिखता है खून का जल जैसा प्रवाही भाग दूसरा उस
में रंग नहीं है यह रक्तजल दो पदार्थों का बना भया है जिस को
अंग्रेजी में फिब्रिन और सीरम कहते हैं खून तो एक हजार भाग

हुकम देता है शरीर की सब क्रिया मगज महाराज के आधीन है तंतू उस के हलकारे हैं ज्ञानतंतुओं शरीर के जुदी २ जगह की खबर पहुंचाने को पहरायत है गतितंतू मगज महाराज के द्वार पर खडे भये पहरायत है सो मालक का हुकम जुदी २ जगह पहुंचाते हैं इस करके हाथ पकडने का पांव चलने का आंख खोलने मूंचने का मुंह चाबने का काम करता है जब इस में कोई भी जगह की क्रिया बन्ध पडे अथवा बराबर नहीं चले तो समझ लेना उस २ भागों के तंतुओं में कसर हो गई शरीर जड होता है वातरक्त गलत कोढ शुनबहरी कमर के नीचे का भाग रह जाय लकवा हो जाने वगेरे रोग ज्ञानतंतु गतितंतुओ का व्यापार अटकने से होता है उन्माद (पागलपणा) अपस्मार (मिरगी) बाइ (हिस्टीरिया) हिचका वगेरः रोग भी मगज़ के बिगाड से अथवा मन के बिगाड से पैदा होते हैं ॥

॥ रुधिर-खून-लोही ॥ (ब्लड *Blood*)

खून का काम शरीर में मुख्य जीवतव्यता का आधार है सब शरीर का पोषण खून से होता है खुराक को पोषण करने वाला सार रूप हिस्सा कितना एक रसायण क्रिया में अलग होकर खून के संग मिलता है तब इस हिस्से को खून अपनी गति में जुदे २ भागों को चहिये जितने प्रमाण का बांट देता है उस भागों के अंदर निकम्मे पदार्थों को अथवा मैल कचरे को अपने प्रवाह में खेंच कर शरीर के बाहिर निकालने की जगह में फेंक देता है अथवा

शुद्ध करने की जगह में अपने संग खैंचके ले जाता है दूसरा खून का जरूरी का काम बदन में गरमी देने का है जब खून नहीं फिरता है तो छाती के भाग पर जैसी गरमी मालूम दे है ऐसी हथेली पगथली पर लगती नहीं है जब किसी भी बेमारी में खून का फिरना बराबर नहीं रहता तब पहले हाथ पांव ठंडे होते हैं जब खून जलदी २ फिरता है तब सब बदन में बराबर गरमी रखता है देसी केइयक आचार्य ऐसा भी मानते हैं शरीर में जब कफ बिगडेगा और पित्त हाथ पैरों में जाकर ठहरेगा तब शरीर ठंडा हाथ पैर गरम और शरीर में पित्त बिगडेगा और कफ हाथ पैरों में जाकर ठहरेगा तब बदन तो गरम और हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं शरीर में जो खून फिरता है सो दो तरह का है हृदय के बांये खण में धमनी या धोरी नसों में लाल किरमची रंग का खून होता है और कलेजे के दहणे खंड में और काली नसों में मैला और जामुन के रंग जैसा स्याह खून होता है इस काले रंग के खून को लोक जानते हैं जैसा नुकसान करने वाला नहीं है फेफसे में जाकर शुद्ध भये बाद यही खून शरीर को पोपण करता है लोही जरा खट्टा चिकणा और पाणी से कुछ भारी है स्वाद में जरा खारा है खून में गरमी सो डिग्री है खून के दो भाग हैं एक तो रक्तरजकण दूसरा रक्तजल रक्तरजकण खून में असंख्याता है जिस में खून लाल दिखता है खून का जल जैसा प्रवाही भाग दूसरा उस में रंग नहीं है यह रक्तजल दो पदार्थों का बना भया है जिस को अंग्रेजी में फिब्रिन और सीरम कहते हैं खून के एक हजार भाग

में ७९० भाग पाणी का १३० भाग खून के दाणे का ६७ भाग आलव्यु मेन का २ भाग फिब्रिन का वाकी रहे इग्यारह भाग जिस में चूना मेगनेसिया सोडा लोह वगेरः पदार्थ है इस तरह रसायण प्रयोग से जुदा २ करने वाले विद्वानों को मालम पडा है खून का फिरना वडी धमनी नसां फेफसा केशवाहनी यह खून की छोटी वडी नदियों हैं अपने शरीर में खून चक्कर की तरह फिरता है उस का मुख्य साधन रक्ताशय है रक्ताशय यह खून का होद है वांये वाजु के रक्ताशय में से शुद्ध खून का एक नल (.धोरी नस) निकलती है जिस की एक वडी शाखा पेट तथा दोनों पैरों में जाती है और दूसरी शाखाओं दोनों हाथ तया शिर में जाती है आगे जाते दरख्त के माफक इस वडी शाखाओं में से बारीक नसें उस में से आखिर केशवाहनी वाल जैसी सूक्ष्म नलियां जाल के माफक आखर चमडी तक फैलाव किया है इस जाल में से लाल खून फिर रहे पीछे वाद उस में से पीछे ऐसी हीज महीन फस्तें निकलती हैं और जैसे छोटे २ वाहले मिल के आगे जाते एक वडी नदी हो जाती है अथवा दरख्त का दृष्टांत समझना छोटी २ डालियों के समुदाय मिल कर नीचे जाते वडा थड हो जाता है इस वजह छोटी २ अनेक फस्त एक ही मिल के एक वडी फस्त शरीर के नीचे के भाग में से और दूसरी वडी नस दो हाथ तथा शिर के तरफ से शाखाओं में से ऊपर के भाग में से ऐसे दो वडी फस्त काला खून लेकर रक्ताशय के दहणे खंड में उतरे हैं वहां खून को डालता है वहा से काले खून का दो फांटा होकर एकेक रग दोनों

तरफ के भाग में फेफसे में जाता है फेफसे में गई भई रगों भी
केशवाहिनी नसों की तरह जाल के माफक फैल जाती है और फे-
फसे में हवा के खाडों की महीन नसों की जाल के सम्बन्ध में
आता यह काला खून वहां शुद्ध होकर केशवाहनीयों के रस्ते सा-
फ लाल खून वहां से पीछा फिरता है और यह जाल आगे जाते
एकट्ठी मिल कर उसकी एक धमनी होती है वह शुद्ध खून को
पीछा रक्ताशय के बांये खड में दाखिल करती है जैसे पहले लि-
खा है उस मुजब शुद्ध खून सब से बडी धमनी के रस्ते निकला था
इस तरह ही शुद्ध खून रक्ताशय के बाये खंड में से बडी धमनी
के रस्ते निकल कर शरीर में सब जगह फैलता है और वहां से
काला खून बडी शिराओं के रस्ते रक्ताशय के दहने खंड में दाख-
ल होकर वहां से पीछा दो फस्तों के रस्ते फेफसे में जाता है फे-
फसे में यह काला खून शुद्ध होकर पीछा रक्ताशय के दहणे खंड
में दाखल होकर वहां से फिर शरीर के पोषण वास्ते धमनी के र-
स्ते फैलता है खून का एसा फिराव होते १॥ मिनट लगता है
होजरी आंतरा और तिल्ली के शिराओं का खून पश्चात् रक्ताशय में
नहीं जाकर कलेजे में जाता है वहां फेफसे की तरह उस की म-
हीन सालें फैल कर उस खून की शुद्धि होती है और पीछे रक्ता-
शय की तरफ बहता है औरतों के गर्भाशय में इस खून की बात
फेर दूसरी है लिखा है गर्भदशा में फेफसा काम नहीं करता है
गर्भ को ताजा खून मिलता है गर्भ की नाभि में नाल होता है उस
रस्ते फिरता हुआ खून लाल रंग का गर्भ के पेट में आता है और

वाकी का खून इस से अलग और थोडा कलेजे में होकर रक्ता-
शय तथा फेफसे में फिर कर फेर गर्भ नाल की धमनी के रस्ते
शुद्ध होने को जाता है एसा कितनेक पंडित कहते हैं खून शरीर
में किस कारण से जलदी २ फिरता है सो लिखते हैं रक्ताशय
मांस की कोथली का वना भया है उस के अंदर के स्नायुओं तंग
और ढीला होते रहता है जब कोथली खून से भर जाती है तब
तो वह स्नायु तंग होकर खून को बाहिर निकालती है पीछे वोही
स्नायु ढीले होकर कोथली को चौडी कर खून दूसरे को आने को
जाय देती है स्नायुओं का एसा धर्म है रक्ताशय में जुडे २ खंड
हैं उस के बीच में पडदे वाले दरवाजे हैं वह दम २ में खुलते हैं
और भिडते हैं रक्ताशय के एक खंड में खून भरता है तव तो सं-
कोच पाता है उसी वखत सामने का खंड चौडा होता है जिसे वो
खून उस खंड में धकेलीजता है वहां से धमनियों में धकेलीजता
है रक्ताशय के खंड वारा फिरते तंग और ढीला भया करता है
उस से खून को धक्का लगता रहता है फिर धमनियों में खून की
जोडा जोड हवा होती है वह हवा भी खून को गति दिया करती
है इस के अलावा खून को धकेलने वाले दूसरे भी छोटे२ कारण
भी वहुत है धमनियां स्थिति स्थापक है इस वास्ते भी खून को ग-
ति मिलती है शरीर के स्नायुओं की हमेश गति होने से नजीक के
रक्त शिराओं पर दबावट होणे से भी खून आगे धकेलीजता है सा-
सोश्वास से भी खून की गति को भी कुछ मदद मिलती है इ-
त्यादि अनेक कारण खून को फिरता रखता है यह क्रियायें ही

शरीर का चेतन्य है नाडी के भी खून से सम्बन्ध है वांये रक्ताशय के खंड में से खून वडी धमनी में जाता है जिस से धमनी चौडी होती है उस का धक्का धमनी के आखरी नाके तक पहुंचता है इस को नाडी का ठबका कहते हैं हरेक वखत रक्ताशय के संकोचाण से नाडी का ठबका पैदा होता है यह ठबके जुवान आदमी के नाडी का एक मिनट में आसरे ७५ वखत होता है ॥

॥ सासोश्वास ॥ (रेस्पीरेशन *Respiration*)

सासोश्वास की इस शरीर में वडी जवर क्रिया है खून जैसे शरीर का जीवन है लेकिन इस खून को सजीवन करने वाला सासोश्वास की क्रिया है खून शरीर में फिरता है फेफसे में शुद्ध होता है प्राण को देने वाला हवा को अंदर दाखल करने वाला और वाहर से फेफसे में प्राणों को हरणे वाली एसी एक जहरी हवा को वाहर निकालने वाली श्वासोश्वास की क्रिया है अपने उश्वास लेते हैं तब वाहर की हवा अंदर जाती है और श्वास लेते हैं याने छोडते हैं तब अन्दर की हवा वाहर निकलती है यह सब आदमी जानते हैं जरूर जानने की वात इस में जो है सो हम लिखते हैं शरीर के अंदर पहले लिखी जो ज्ञानतंतु गतितंतुओं की अपार जुडीयां और धमनियां जैसे रगों वाल से भी वहुत महीन उनोंका जाल सब जगह फेला भया है ऐसे ही दोन वडा जाल दोनों फेफसे में वायु नली की फेली भई है नाक के नल कों से फेफसे तक के रस्ते को वायु मार्ग अथवा श्वास नली कहते हैं इस नाक के रस्ते

गले के पिछले भाग में से स्वर नली में होकर श्वास नली में से फेफसे में जाती है स्वर नली और श्वास नली यह दोनों एक ही रस्ता है लेकिन उस की जुदी २ क्रिया समझणे को उस के दो भाग ठहराये गये हैं ऊपर का भाग जो जीभ की जड गले के नल गोटे याने घांटे तक आया भया है उस को स्वर नल कहते हैं और नीचे के भाग को श्वास नली कहते हैं श्वास नली का ऊपर का भाग चोडा और बडा हैं गले के ऊपर के भाग में बाहर से जो ऊंचा टेकरे जैसा दिखाई देता है यह स्वर नली का भाग है उस को घांटा लोक कहते हैं कंठ भी कहते हैं इस स्वर नली का काम आवाज पैदा करने का है इस के बीच रस्ते के दो तरफ दो तार है वो दोनों तार तंबूरे के तारका काम करते हैं अर्थात जुदा २ स्वर पैदा करते है इस तार के बीच का रस्ता लंबा सांकडा और त्रिकोणाकार है उस में से हवा आती जाती है वह कंठ द्वार है यह तार स्नायुओं के सम्बन्ध से हिलता है तब वह रस्ता सांकडा चो-डा अथवा बंध होता है इस रस्ते से हवा विगर और कोई भी प-दार्थ जा नहीं सकता जो अकस्मात कोई भी पदार्थ इधर के तरफ जाने का बनता है तब उसी वखत यह रस्ता बंध हो जाता है जल पीते खाते हसणे से गले में गया पदार्थ अपना रस्ता छोड स्वर न-ली की तरफ जाता है तब स्वर नली कंठ को अटका देती हैं उस को इस स्वर नली के नीचे के रस्ते को श्वास नली कहते हैं श्वा-सोश्वास की क्रिया श्वास नली नीचे छाती में उतरे पीछे उस के दो भाग होते हैं एक तो वांये फेफसे में जाता है एक दहणे फेफ-

से में पहुंचने के पहिले श्वास नली के विभागों पर विभाग होकर आखर महीन नलियां होकर फैलाव्रा करती है और आखरी के नाके पर जल के छोटे पपोटे जैसे पपोटे होकर ठहरता है सब फेफसे के अन्दर और ऊपर ऐसे पपोटे रहे भये हैं इन पपोटों पर खून के बाल जैसी पतली रगों का जाल पसरा भया होता है और उस में रक्ताशय में से आये भये विगडा खून वहता है और स्वच्छ साफ होता है अपने अच्छी हवा का जो श्वास लेते हैं वह आखर उन पपोटों तक पहुंचता है और जैसे हवा ज्यादा अच्छी होगी तैसाही उस के संग आने वाला खून ज्यादा साफ होता है खून के अंदर हवा (कारबोनिक असिड ग्यास) पपोटे के अंदर की हवा में मिलता है और उस हवा के अन्दर की प्राणवायु (आक्सिजन) खून में घुसती है वह प्राणवायु को संग लेकर फेफसे में शुद्ध भया खून रक्ताशय में पीछा फिरता है श्वासोश्वास की क्रिया में शरीर के खून में फेरफार होता है जरूरी का सो इस मूजब १ फेफसे में खून के संग बाहर की हवा का मिलना होते ही अशुद्ध खून काला बदल कर शुद्ध लाल खून बन जाता है जो कि शरीर को पोषण करता है २ श्वासोश्वास से खून की गरमी एक दो डिगरी बढती है ३ श्वासोश्वास से फिब्रिन नाम का तत्व बढता है ४ श्वासोश्वास से खून में प्राणवायु की वृद्धि होती है और उस के अन्दर का कारबोनिक असिड तैसे ही नाइट्रोजन का [illegible] होता है इस के अलावा हसणा रोणा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सब छींक उकार हिचकी खासी इत्यादि सब कामों में श्वासोश्वास

गले के पिछले भाग में से स्वर नली में होकर श्वास नली में से फेफसे में जाती है श्वर नली और श्वास नली यह दोनों एक ही रस्ता है लेकिन उस की जुदी २ क्रिया समझणे को उस के दो भाग ठहराये गये हैं ऊपर का भाग जो जीभ की जड गले के नल गोटे यानें घांटे तक आया भया है उस को स्वर नल कहते हैं और नीचे के भाग को श्वास नली कहते हैं श्वास नली का ऊपर का भाग चोडा और बडा हैं गले के ऊपर के भाग में बाहर से जो ऊंचा टेकरे जैसा दिखाई देता है यह स्वर नली का भाग है उस को घांटा लोक कहते हैं कंठ भी कहते हैं इस स्वर नली का काम आवाज पैदा करने का है इस के बीच रस्ते के दो तरफ दो तार है वो दोनों तार तंबूरे के तारका काम करते हैं अर्थात जुदा २ स्वर पैदा करते है इस तार के बीच का रस्ता लंबा सांकडा और त्रिकोणाकार है उस में से हवा आती जाती है वह कंठ द्वार है यह तार स्नायुओं के सम्बन्ध से हिलता है तब वह रस्ता सांकडा चोडा अथबा बंध होता है इस रस्ते से हवा विगर और कोई भी पदार्थ जा नहीं सकता जो अकस्मात कोई भी पदार्थ इधर के तरफ जाने का बनता है तब उसी वखत यह रस्ता बंध हो जाता है जल पीते खाते हसणे से गले में गया पदार्थ अपना रस्ता छोड स्वर नली की तरफ जाता है तब स्वर नली कंठ को अटका देती है उस को इस स्वर नली के नीचे के रस्ते को श्वास नली कहते हैं श्वासोश्वास की क्रिया श्वास नली नीचे छाती में उतरे पीछे उस के दो भाग होते हैं एक तो बांये फेफसे में जाता है एक दहणे फेफ-

से में पहुंचने के पहिले श्वास नली के विभागों पर विभाग होकर आखर महीन नलियां होकर फैलावा करती है और आखरी के नाके पर जल के छोटे पपोटे जैसे पपोटे होकर ठहरता है सब फेफसे के अन्दर और ऊपर ऐसे पपोटे रहे भये हैं इन पपोटों पर खून के वाल जैसी पतली रगों का जाल पसरा भया होता है और उस में रक्ताशय में से आये भये विगडा खून वहता है और स्वछ साफ होता है अपने अच्छी हवा का जो श्वास लेते हैं वह आखर उन पपोटों तक पहुंचता है और जैसे हवा ज्यादा अच्छी होगी तैसाही उस के संग आने वाला खून ज्यादा साफ होता है खून के अंदर हवा (कारबोनिक असिड ग्यास) पपोटे के अंदर की हवा में मिलता है और उस हवा के अन्दर की प्राणवायु (आक्सिजन) खून में घुसती है वह प्राणवायु को संग लेकर फेफसे में शुद्ध भया खून रक्ताशय में पीछा फिरता है श्वासोश्वास की क्रिया में शरीर के खून में फेरफार होता है जरूरी का सो इस मुजब १ फेफसे में खून के संग बाहर की हवा का मिलना होते ही अशुद्ध खून काला बदल कर शुद्ध लाल खून बन जाता है जो कि शरीर को पोषण करता है २ श्वासोश्वास से खून की गरमी एक दो डिगरी चढती है ३ श्वासोश्वास से फिब्रिन नाम का तत्व वढता है ४ श्वासोश्वास से खून में प्राणवायु की वृद्धि होती है और उस के अन्दर का कारबोनिक असिड नेसे ही नाइट्रोजन का कमीपणा होता है इस के अलावा हसणा रोणा [illegible] प्रसव छींक डकार हिचकी खासी इत्यादि सब कामों में श्वासोश्वास

मदतगार है बाहिर की हवा अंदर अंदर की बाहर यह क्रिया ह-
मेश चलती है यह क्रिया जिन्दगानी को बहुत मददगार है वह
इस तरह से है शरीर में एक जहरी पदार्थ बढ़ते रहता है वह प्र-
माण मुजब ही चाहिये बढे सो बाहर निकलना चाहिये उस को
कारबोनिक असिड कहते हैं हवा में जुदे २ तत्व रहे भये हैं और
हवा के संग जुदे २ पदार्थों का मिलाप होते ही उस में रसायणी
फेरफार होते रहता है यह बात रसायण शास्त्र से सिध हो चुकी है
बाहर की हवा भी अंदर जाकर रसायणीक फेरफार करती है ए-
सा पंडितों ने अनुभव से सिद्ध कार लिया है ऐसे रसायणीक योग
से एक तरह का असिड पैदा होता है लेकिन जो अंदाज से जो
वह असिड जादा रह जाय शरीर में तो खून फिरना बंध हो जा-
ता है और मर जाता है प्राणवायु और कारबोनिक असिड यह दो-
नों काले और लाल खून में होते हैं प्राणवायू (आक्सीजन से)
असिड ज्यादा होता है प्राणवायु तथा कारबोन इन दो पदार्थों के
योग से कारबोनिक असिड बनता है एसी समझ में सुनने से आ-
ई है प्राणवायु का कितनाएक भाग खून के संग रहकर बदन में
फिरता है इस वजह खून के संग फिरते उस के संयोग से धीमे २
कारबोनिक आसीड बन कर खून के संग फेफसे में आता है और
श्वास नली के हवा के संग मिल के बाहर निकल गिरता है श्वा-
सो श्वास चलना या बंध करना मगज के आधीन नहीं है जो मगज
श्वासो श्वास पर अपणी सत्ता चलाये चाहे तो थोडी देर तो चला
सकता है लेकिन श्वासो श्वास को जादा देर तक बंध करने से या

जोर से चलाणे से जिन्दगी को जोखम पहुंचता है तो यह श्वासो श्वास किस की प्रेरणा से चलता है शरीर का सब जीवन व्यापार तो कर्म बद्ध चेतन अदभुत शक्ति वाला जो अंदर व्यापक है उस का है लेकिन जुदी क्रिया शरीर की अदभुत रचना के संचों से ही चल रही है जीव और कार्मण शरीर का काय योग का सामिल संयोग ही सिध होता है इस मुजब तत्वदृष्टि के विचार से शरीर के अवलोकन याने देखते से श्वासो श्वास की क्रिया का कितनाएक अनुमान हो सकता है जो वस्तु स्थिति स्थापक होती है उस के संग में आने वाली वस्तुओं को रस्ता देती है लेकिन उसका एसा ही गुण है सो पीछा संकुडा कर उस वस्तुओं को निकालने का प्रयत्न करता है कलेजा फेफसा पांसलियां छाती पेडू के बीच का पडदा वगैरः कितनेक अवयवों में हमेस संकोचण और फूलने का गुण है हवा का स्वभाव जहां आकाश याने रस्ता पोल मिले वहां ही घुसणे का है बाहर की हवा नाक तथा मुंह से रस्ते श्वासनली में दाखल होने का प्रयत्न करती है श्वासनली उस को फेफसे त-क लेजाती है फेफसे पोले होणे से उस हवा को रस्ता देता है और फेफसा फूल जाता है तब आस पास की पसलियां और छा-ती के नीचे का भाग उरोदर पटल का पडदा नीचे झुक कर रस्ता देता है एसी गति में तो आयात के संग याने गह तो हवा के घु-सने का स्वरूप अब इस के संग प्रत्याघात लगता है याने पीछी इस हवा को निकालने का प्रयत्न होता है सो इस तरह स्थिति स्थापक पणे का एसा गति स्वभाव है उस में से तो पांसलियां उ-

रोदर पटल और फेफसा पीछा संकोचा कर हवा को धक्का मारता है जिस से तुरत ही वह हवा नाक और मुंह के रस्ते पीछी बाहर निकल पडती है एसी क्रिया हमेशा चलती है श्वासो श्वास में हवा फेफसा और पांसलियां छाती के नींचे का पडदा यह सब क्रिया करने वाले पदार्थ मददगार है श्वासोश्वास में हवा का प्रमाण इस मुजब हर वक्त श्वास लेते कितनी हवा तो बाहर से अंदर जाती है और निश्वास से कितनी हवा बाहिर निकलती है ये जाने पीछे अपने आस पास की हवा का भी बिचार बांध सकते हैं इस विचार में तारतम्पता तो वहुत है कहां तक लिखें लेकिन मध्यम उमर का तनदुरस्त आदमी दर श्वास में सरासरी ३० से घन इंच हवा ३५ तक लेता है और पीछा निकालता है इस हिसाब से दिन रात २४ घंटे में एक आदमी को छ लाख छयासी हजार अथवा सात लाख घन इंच हवा आसरे चाहिये महनत का काम करने वाले आदमी को इस से ज्यादा अर्थात दूणी हवा चाहिये अब इस आसरे पर हिसाब लगाने से हर किसी घर में या कोठे में कितनी हवा है और वह कितने आदमीयों के पूरे जितनी है उस का ख्याल हो सकता है फेर एक आदमी के अंदर से निकले जो श्वास के संग हवा वह आस पास की कितनी हवा को बिगाडती इस पर से यह भी आदमी जान सकता है इस सब ज्ञान से आदमी अपने रहने के स्थल में जितनी साफ हवा चाहिये आवागमन होय एसा उपाय कर लेना युवान तन्दुरस्त आदमी का एक मिनट में आसरे २० श्वासो श्वास चलता है इस का विस्तार

ख़ूराक हवा में तीसरे प्रकाश में लिखा है ॥

॥ पाचन क्रिया ॥ (डाईजेश्चन Digestion)

पाचन क्रिया शरीर का मुख्य जीवन है क्योंकि ख़ून का पोः षण पाचन क्रिया से अर्थात रस से होता है इस की व्यवस्था जा- णने की जरूरी है ख़ुराक का रस्ता मुंह में से सरू होता हैं और गुदा के द्वार तक उस का नाका आया है उस ख़ुराक के रस्ते की लंबाई ३५ फीट है इस बात से आदमी को आश्चर्य पैदा होगा के आदमी की लंबाई सिर से लेकर पांवों की अंगली तक जादे से जादा ६ से ७ फीट की है तो फिर गले से लेकर गुदा तक ख़ुराक मार्ग की लंबाई पांच गुणी छ गुणी जादा कहां से आगई उस का खुलासा इस तरह है मुंह के दरवाजे से होजरी तक तो नल सीधा उतरा भया है होजरी के नीचे वो नल आंतरों के रूप से गुंचला याने आंटे खाता गुदा द्वार तक पहुंचा है इस वास्ते ख़ुराक मार्ग इतना लंबा है ख़ुराक पहले अन्न नल में होकर होः जरी में होजरी में से छोटे आंतरों में फेर बडे आंतरों में फिर स- फरे में होकर खा या ख़ुराक गुदा पास आता है यह सब एक ही नल संग्रह है लेकिन जुदा २ ठिकाना क्रिया अलग २ इस वास्ते जुदे २ नाम हैं ख़ुराक का निकम्मा हिस्सा जो मल गुदा द्वार पर आने के पहले जो २ क्रिया ख़ुराक की होती है सो पाचन क्रिया में लिखते हैं पाचन क्रिया का ठिकाना मुंह होजरी कलेजा पाकि- याक आंतरे यह पाचन क्रिया के वास्ते जुदे २ रस पैदा करने वा-

ले अवयव है थूक जठररस पित्त तथा आंतरों में तरह का २ रस पाचक क्रिया करने वाले रस है मुंह में थूक की क्रिया मुंह में चावणे का काम होता है और थूक इस काम को मदद करता है पाचन के काम में थूक की वहुत जरूरी है थूक को पैदा करने वाली मुख्य छ पिंड मुंह में है दोय तो कान के नजीक दोय जीभ नीचे दोय जबाडो के नीचे मुंह में थूक किस २ जगह पैदा होता है उस का अनुभव कर अनुमान बांधना और ऊपर लिखे छ पिंड अथवा थूक नलियों का भी निर्णय करना थूक खूराक के संग मिल के जुदा २ काम वजाता है ॥ १ थूक से मुंह और जीभ हमेसा भीजा रहता है जिस से बोलने चालने को जीभ को सहज से काम होता है २ ॥ खाणे का पदार्थ दांत से चाबे जाता है उस को थूक एक रस बनाता है उस से स्वाद की भी खवर पडती है ३ थूक खुराक में मिल के उस को नरम करता है जिस से चावणे का निगलने का काम सहज से होता है ४ थूक खुराक में मिल के उस में रसायणी क्रिया करता है और विशेष कर के स्टार्च वाले खुराक को पचाणे के काम में मदद करता है होजरी में होती पाचन क्रिया अन्न नल के रस्ते जाकर होजरी में पहुंचता है उस खुराक के संग जठररस मिलता है होजरी के अंदर का पुड मधुमक्खी के छाते जैसा होता हैं उस में महीन २ असंख्याते छेद होते हैं यह छेद उस के अंदर की नलियों का मुंह है उनों में से एक तरह का रस होजरी में झरता है जिस को जठररस अथवा पाचन रस कहते हैं यह जठरस हमेशा दस बीस रतल तक पैदा

होता है यह रस खुराक को गाल कर एक रस कर देता है इस
रस में ज्यादा भाग पानी का है हजार भाग में पांच भाग दूसरे प-
दार्थों का है जिस में पेपसीन निमक वगेरे खारों का समावेश हो-
ता है होजरी में गये पीछे भी सब खुराक की एक सदृश पाचन
क्रिया नहीं होती कितनेक नरम पदार्थ जलदी पचता है बराबर
खूब चाव कर के उतारे भये पदार्थों से थोडा चावा भया अथवा
विगर चावे उतारा भया पदार्थ देर से पचता है कितनेक पतले प-
दार्थ होजरी में जाता है के तुरत ही खून की नलियां उस का शो-
षण करना शुरू होता है और होजरी में से ही खून के संग मिल
के शरीर में दाखल होता है होजरी का मुख्य काम खुराक को
विलोय कर एक रस करने का है वह खुराक एक रस होकर जैसे
जैसे पचता जाता है तैसे २ थोडा भाग होजरी के नीचे भाग से
संधा भया छोटा आंतरा में जाता है आखर होजरी टीली
गिरने से नहीं पचा भाग भी आंतरों में चला जाता है
छोटे आंतरों में कितनाएक रस पैदा होता है फिर कालेजे
में से पांक्रियाम नाम का एक पिंड होजरी के पिछाडी रह-
ता है उस में से जो रस आंतरों में बहता है वह रस आंतरों के
खुराक पर काम करता है कालेजे में से पित्त पैदा होकर पित्ताशय
में आता है वहां से पित्त छोटे आंतरों में जाता है कालेजे का शि-
रत शिरा अर्थात काले खून की रगों में से [illegible]
था होजरी में एकठा भया खून की एक बडी शिरा [illegible]
कारण रक्ताशय के [illegible]

ले अवयव है थूक जठररस पित्त तथा आंतरों में तरह का २ रस पाचक क्रिया करने वाले रस है मुंह में थूक की क्रिया मुंह में चावणे का काम होता है और थूक इस काम को मदद करता है पाचन के काम में थूक की बहुत जरूरी है थूक को पैदा करने वाली मुख्य छ पिंड मुंह में है दोय तो कान के नजीक दोय जीभ नीचे दोय जबाडो के नीचे मुंह में थूक किस २ जगह पैदा होता है उस का अनुभव कर अनुमान बांधना और ऊपर लिखे छ पिंड अथवा थूक नलियों का भी निर्णय करना थूक खूराक के संग मिल के जुदा २ काम बजाता है ॥ १ थूक से मुंह और जीभ हमेसा भीजा रहता है जिस से बोलने चालने का जीभ को सहज से काम होता है २ ॥ खाणे का पदार्थ दांत से चाबे जाता है उस को थूक एक रस बनाता है उस से स्वाद की भी खबर पडती है ३ थूक खुराक में मिल के उस को नरम करता है जिस से चावणे का निगलने का काम सहज से होता है ४ थूक खुराक में मिल के उस में रसायणी क्रिया करता है और विशेष कर के स्टार्च वाले खुराक को पचाणे के काम में मदद करता है होजरी में

पाचन क्रिया अन्न नल के रस्ते जाकर होजरी में पहुंचता है खुराक के संग जठररस मिलता है होजरी के अंदर का पुड मधुमक्खी के छाते जैसा होता हैं उस में महीन २ असंख्याते छेद होते हैं यह छेद उस के अंदर की नलियों का मुंह है उनों में से एक तरह का रस होजरी में झरता है जिस को जठररस अथवा पाचन रस कहते हैं यह जठरस हमेशा दस बीस रतल तक पैदा

होता है यह रस खुराक को गाल कर एक रस कर देता है इस
रस में ज्यादा भाग पानी का है हजार भाग में पांच भाग दूसरे प-
दार्थों का है जिस में पेपसीन निमक वगेरे खारों का समावेश हो-
ता है होजरी में गये पीछे भी सब खुराक की एक सदृश पाचन
क्रिया नहीं होती कितनेक नरम पदार्थ जलदी पचता है बराबर
खूब चाब कर के उतारे भये पदार्थों से थोडा चाबा भया अथवा
विगर चाबे उतारा भया पदार्थ देर से पचता है कितनेक पतले प-
दार्थ होजरी में जाता है के तुरत ही खून की नलियां उस का शो-
षण करना शुरू होता है और होजरी में से ही खून के संग मिल
के शरीर में दाखल होता है होजरी का मुख्य काम खुराक को
विलोय कर एक रस करने का है वह खुराक एक रस होकर जैसे
जैसे पचता जाता है तैसे २ थोडा भाग होजरी के नीचे भाग से
संधा भया छोटा आंतरा में जाता है आखर होजरी खाली
गिरने से नहीं पचा भाग भी आंतरों में चला जाता है
छोटे आंतरों में कितनाएक रस पैदा होता है फिर कलेजे
में से पांक्रियाफ नाम का एक पिंड होजरी के पिछाडी ल-
गती है उस में से जो रस आंतरों में बहता है वह रस आंतरों के
खुराक पर काम करता है कलेजे में से पित्त पैदा होकर पित्ताशय
में आता है वहां से पित्त छोटे आंतरों में जाता है कलेजे का सि-
रा शिरा अर्थात काले खून की रगों में से [illegible] होता है आंतरे सं-
गा होजरी में इकट्ठा भया खून की एक बड़ी शिरा [illegible] अन्तः
कारण रक्ताशय के तरफ नहीं जाकर कलेजे में जाती है वहां इस

होता है उस का सोषण होने आगे जाते वह मल घटना शुरू हो-
ता है वडे आंतरे भी रस का शोषण करता है इस वास्ते जो वी-
मार मूंह से खुराक नहीं ले सकता उस को पतला प्रवाही खुराक
पिचकारी से गुदा के रस्ते वडे आंतरे में चढा सकते हैं इस तरह
चढाया भया दूध वगेर पतलो पदार्थों को वडा आंतरा शोषण कर-
लेता है उस से बीमार को पुष्टता मिलती है वडे आंतरे का मल
नीचे उतर मफरे में होकर आखर गुदा द्वार से नीचे गिरता है इस
तरह खुराक का सार रस बनता है और निकम्मा मल निकल जाता है
पाचन क्रिया में ऊपर लिखे पित्त वगेरः जो रस सो खुराक को प-
चाकर सारभूत रस को खून में चढाणे की मदद करता है वह ब-
हुत से रस भी खून के अंदर से ही आता है मतलब इस का ऐ-
सा है खून के तत्वों से ही पाचन क्रिया होती है और पाचन क्रि-
या पीछे भी खून के तत्वों को बढाती है ॥

॥ शरीर की सर्व क्रिया ॥

ज्ञान क्रिया न्यारे २ तरह २ का ज्ञान होने वास्ते मगज में
ज्ञानतंतु लगे भये हैं यह बात भेजे के प्रकरण में अच्छी तरह लि-
ख दिया है चमडी से फकत स्पर्श का ज्ञान होता है इतना ही न-
हीं वह चमडी से और भी कई फायदे हैं चमडीमें क्रोडों महीन छे-
द हैं उस रस्ते से पसीना निकलता है इस पसीने में अंदर से कि-
तनेक निकम्मे पदार्थ बाहिर आते हैं सो क्षार कार्बोनिक असिड
वगेरे फिर चमडी में शोषण करने का स्वभाव है दवा पाणी हवा

खून में से पित्त जुदा भया पीछे बाकी का खून रक्ताशय में जाता है पित्ताशय के अंदर का पित्त आंतरे में पाचन क्रिया चलती है तभी उस में बहता है पाचन क्रिया जब बंध होती है तब पित्ताशय में से जाता भया पित्त आंतरों में उसका छेद बंध होता है पित्त खुराक को पचाने वाला मुख्य पदार्थ है पित्त कितनेक दरजे जुलाब की गरज सारता है उस से आंतरों का रस सहज से आगे धकेलीजता है अनुभव से भी यह बात सिद्ध होती है कि जब पित्त आंतरों में ज्यादा जाता है तब दस्त खुलास आता है अथवा बहुत वखत अतीसार होजाता है प्रमाण से कम जब पित्त आंतरों में जाता है तब दस्त की कबजी होती है और पांडु पीलिया कमले का रोग होता है पीलीयेकी बिमारीका मुख्य कारण एसा है के खूनमें से जितना पित्त होना चाहिये इतना पैदा नहीं होय तब वह खून में ही रहता है उस कर के खून में पित्त का भाग बढने से शरीर पीला पड जाता है छोटे आंतरों में पाचन ॥ होजरी में जो पाचन क्रिया बाकी रह गई होय सो पूरा यहां होता है चरबीका भाग आंतरों में गलता है पाचन होता रस का शोषण होकर खून में चढना शुरू होता है पाचन और शोषण होते बाकी के पदार्थ नीचे उतरते जाता है जैसे २ नीचे उतरता है तैसे २ सार भूतरस खून में सूकता जाता है और निरुपयोगी मलके मिलता भाग आगे धकेलीजता जाता है और बडे आंतरों में प्रवेश करता है बडे आंतरे में खुराक जाता है तब वह खुराक मलके लगभग पतला होता है बडे आंतरे में कुछ जादा जाने जैसा पाचन क्रिया होती नहीं तो भी उस में जो कुछ सारभूत तत्व

होता है उस का सोपण होते आगे जाते वह मल घटना शुरू हो-
ता है बडे आंतरे भी रस का शोषण करता है इस वास्ते जो बी-
मार मुंह से खुराक नहीं ले सकता उस को पतला प्रवाही खुराक
पिचकारी से गुदा के रस्ते बडे आंतरे में चढा सकते हैं इस तरह
चढाया भया दूध वगेर पतलो पदार्थों को बडा आंतरा शोषण कर-
लेता है उस से बीमार को पुष्टता मिलती है बडे आंतरे का मल
नीचे उतर मफरे में होकर आखर गुदा द्वार से नीचे गिरता है इस
तरह खुराक का सार रस बनता है और निकम्मा मल निकल जाता है
पाचन क्रिया में ऊपर लिखे पित्त वगेरः जो रस सो खुराक को प-
चाकर सारभूत रस को खून में चढाणे की मदद करता है वह ब-
हुत से रस भी खून के अंदर से ही आता है मतलब इस का ऐ-
सा है खून के तत्वों ने ही पाचन क्रिया होनी है और पाचन क्रि-
या पीछे भी खून के तत्वों को बढाती है ॥

॥ शरीर की सर्व क्रिया ॥

ज्ञान क्रिया न्यारे २ तरह २ का ज्ञान होने वास्ते मगज में
ज्ञानतंतु लगे भये हैं यह बात भेजे के प्रकरण में अच्छी तरह लि-
ख दिया है चमडी से फकत स्पर्श का ज्ञान होता है इतना ही न-
हीं वह चमडी से और भी कई फायदे है चमडीमें क्रोडों महीन छे-
द है उस रस्ते से पसीना निकलता है इस पसीने में अंदर से कि-
तनेक निकम्मे पदार्थ बाहिर आते हैं सो क्षार कारबोनिक असिड
वगेरे फिर चमडी में शोषण करने का स्वभाव है दवा पाणी हवा

वगेरः बाहर का पदार्थ छिद्रों के रस्ते शरीर में प्रवेश करता है खून की शुद्धि तथा गति को उत्तेजन देता है शोषण क्रिया शरीर के कितनेक भागों में शोषण क्रिया हमेशा चलती है रस को चूस के अंदर चढाना उस को शोषण क्रिया कहते हैं फेफसा होजरी आंतरे और सब शरीर की चमडी में शोषण क्रिया चलती है इस अवयवों के अंतरपुड के अंदर बहुत बारीक छेद है यह हरेक छेद एक २ महीन नलियों का मुख समझणा यह छेद उन २ अवयवों का रस को चूस कर नलियों के रस्ते चढाता है उस पर कितनीक क्रिया भये बाद वह रस खून में मिलता है यह नालियां उनों का मूंह से रस का चूसणा करती है और उस नलियों के अंतर पुड भी छेद वाला होता है जिस से उस नलियों में सर्व जगह शोषण क्रिया चलती है काली नसां याने शिराओं जिस रस को चूसती है वह रस कलेजे में तैसे ही फेफसे में जाकर वहां वह रस शुद्ध होता है और होजरी तथा आंतरों की नलियां जिस रस को चूसती है वह उन नालियों के रस्ते पहले रस को शोधने वाली कितनीक थेलियां होती है उस में शुद्ध होकर रक्ताशय में जाता है फेफसे की नालियां कारबोनिक असिड को बाहर निकाल देकर प्राण वायु को अंदर लेती है यह भी काम शोषण क्रिया से होता है चैतन्यक्रिया शरीर में गति अथवा चलन वलन का काम चलता है में प्रवेश करत स्नायुओं से है और फिर स्नायुओं से भी महीन रूमलके लगभग के कितनेक भाग में आये भये हैं वह शरीर में चन पाचन क्रिया हथरथर धुजा करते हैं इस तरह स्नायुओं का सं-

कोषाणा इन सूक्ष्म तंतुओं का धूजना इस कारण कितनेक पदार्थों को गति दिया करती है रसोत्पादक क्रिया शरीर में तरह२ की रस क्रिया चलती है इस रस क्रिया से कितनेक रस पैदा होते हैं थूक पित्त वीर्य वगैरा रस तो शरीर के पोषण क्रिया में काम देता है कितनेक रस निकम्मे हैं जैसे कि पेशाब पसीना बगल वगैरा में रहे दूषरस इत्यादि पित्त वगैरा का मिलरस शरीर के जुदे२ संचों में तैय्यार होता है कलेजे में पित्त वीर्याशय में वीर्य स्तन में दूध तैय्यार होता है और पीछे वह जुदी क्रिया से जुदा२ होकर बाहिर निकलता है अगर जो बाहिर नहीं निकलेगा तो जरूर बिमारी हो कर नुकसानी करेगा उपयोगी रस भी चाहिये जिस से ज्यादा या कम पैदा होगा तो शरीर में हरकत पैदा करेगा कलेजे में पित्त रस कम पैदा होता है तो पाचन शक्ति मंद हो जाती है और जो ज्यादा पैदा होय तो तब दस्त की बिमारी और भी पित्त गरमी अनेक रोग पैदा करता है इस तरह थूक कम पैदा होगा तो पाचन क्रिया बराबर नहीं होती है और ज्यादा बढ कर बाहिर निकले तो भी पाचन क्रिया में नुकसान होता है जो चिकाणा रस सांधों को मजबूत पोषण करता है वह अगर कम पैदा होगा तो सांधों को धक्का लगता है घसता है और ज्यादा पैदा होगा तो चरबी बढनेसे चलने की शक्ति कम पड जाती है स्वाभाविक वेग ३६ इस शरीर में ऊपर लिखी क्रिया के अलग भी कितनेक वेग स्वभाव से पैदा होते हैं और जिन्दगानी को वह क्रियाओं की बहुत जरूरी है वोहि वेग अपनी भूलप्रमाद से अज्ञान दशा से मालिक ने रोक रखा है तो शरीर को

नुकसान पहुंचता है अब उन वेगों की तफसील इस मुजब है ॥ १ मूत्र ॥ पाचन क्रिया में रस शरीर में चढता है वाकी रहा निकम्मा पदार्थ में से जाडा मलसोदस्त होकर निकल जाता है और उस में का प्रवाही पदार्थ सो मूत्रापिंड में होकर पेशाब के रस्ते बाहिर आता है मूत्रपिंड महीन नलियों का बना भया है उन नलियों के आस पास बाल जैसी महीन नलियों का जाल पसरा भया है उस में से उन नलियों का शोषण करने वाले पर माणु पेशाब को खेंचता है पीछे मूत्र नल के रस्ते मूत्राशय में जाता है इस तरह बूंद २ मूत्राशय में एकठा होता है जब वह आशय भर जाता है तब वह स्नायु दबते हैं और पेशाब की शंका होती है और गति होती है इस में कितनेक गतितंतु मन के इच्छा के आधीन, मगज से लगे भये हैं वह अगर पेशाब को रोकना चाहे तो कितनेक देर रोक सकते हैं किसी काम की जरूरी से जो आदमी रोक सकता है वह इस बात का प्रत्यच्च पूराबा है लेकिन इस स्वभावी वेग की हाजत को रोकना इस से नेत्रों में नुकसान गुडदे पोते में दरद वगैर होता है कारण पेशाब के संग दूसरे चारादिक जो पदार्थ जाता है उस में एकाध पदार्थ जहरी है वह पेशाब के रस्ते निकलना ही अच्छा है पेशाब को रोकणे से वह पदार्थ जब बाहिर नहीं निकलता खून में रहता है तब नुकसान करता है तनदुरस्त आदमी को हमेश २४ घंटे में सो १०० से १२५ सवासे भर पेशाब होता है मौसम ऋतु के फेरसे पसीनो ज्यादा हो-

सीना कम होता है इस प्रमाण को ख्याल में लाये उपरांत जो ज्यादा बढे या ज्यादा घटे तो कोई भी बिमारी रोग समझना वहु मूत्र प्रमेहादि जननेंद्रियों की रगों में दरद मूत्रकृछ शिर में दरद पेशाब का रुकणा और इस के संग मल की भी रुकावट होती है २ । मल ॥ खुराक का सार भूतरस खेंच्यों के बाद निकम्मा कचरा बडे आंतरे में धकेलीजता २ सफरे में आता है सफरे के स्नायु ढीले होते है तो भी मल को गति नहीं दे सकता तैसे वायु से मल का अवरोध होता है तो भी मल की प्रवृत्ति नहीं होती लेकिन कितनेक आदमी हाजत भये पीछे जान कर दस्त को रोकता है उस मे सफर में तथा आंतरे में वायु का कोप होता है पीछे उस में दरद होता है होजरी में जो दरद शिर में शूल नीचे वायु अटके तो आफरा भी हो जाता है ॥ ३ वीर्य ॥ वीर्य यह खुराक की पाचन क्रिया आखरी सारभूत तत्व है जैसे दूध पर क्रिया होण से आखर घी निकलता है तैसे वीर्य बन कर आंटो में से वीर्य नल के रस्ते वृषण रज्जू में होकर पेडू में जाता है मूत्रपिंड में से जैसे मूत्र पेडू में मूत्राशय में एकठा होता है तैसे वृषण आंटो में का वीर्य मूत्राशय के नीचे चौतरफ एकेका वीर्याशय है उस में वह वीर्य एकठा होता है वीर्य तरुण अवस्था में होना शुरू होता है और पूरी अवस्था में पूरा होता है वृषण के अन्दर को बहणे वाले वीर्य में [illegible] तनेक परमाणु होते हैं इस में चैतन्य वाले तंतु होते हैं जिस से स्त्री पुरुष के संयोग से गर्भ रहता है यह खुलासा गर्भोत्पत्ती में लिख दिया है मलमूत्र की तरह वीर्य की [illegible]

नुकसान पहुंचता है अब उन वेगों की तफसील इस मुजब है ॥
१ मूत्र ॥ पाचन क्रिया में रस शरीर में चढता है बाकी रहा निकम्मा पदार्थ में से जाडा मलसोदस्त होकर निकल जाता है और उस में का प्रवाही पदार्थ सो मूत्रपिंड में होकर पेशाब के रस्ते बाहिर आता है मूत्रपिंड महीन नलियों का बना भया है उन नलियों के आस पास बाल जैसी महीन नलियों का जाल पसरा भया है उस में से उन नलियों का शोषण करने वाले पर माणु पेशाब को खेंचता है पीछे मूत्र नल के रस्ते मूत्राशय में जाता है इस तरह बूंद २ मूत्राशय में एकठा होता है जब वह आशय भर जाता है तब वह स्नायु दबते हैं और पेशाब की शंका होती है और गति होती है इस में कितनेक गतितंतु मन के इच्छा के आधीन, मगज से लगे भये हैं वह अगर पेशाब को रोकना चाहे तो कितनेकि देर रोक सकते हैं किसी काम की जरूरी से जो आदमी रोक सकता है वह इस बात का प्रत्यक्ष पूरावा है लेकिन इस स्वभावी वेग की हाजत ो रोकना इस से नेत्रों में नुकसान गुडदे पोतें में दरद वगेर होता है कारण पेशाब के संग दूसरे चारादिक जो पदार्थ जाता है उस में एकाध पदार्थ जहरी है वह पेशाब के रस्ते निकलना ही अच्छा है पेशाब को रोकणे से वह पदार्थ जब बाहिर नहीं निकलता खून में रहता है तब नुकसान करता है तनदुरस्त आदमी को हमेश २४ घंटे में सो १०० से १२५ सवासे रुपये भर पेशाब होता है मौसम ऋतु के फेरसे पसीनो ज्यादा होता है तो पेशाब कम होता है कोई वखत में पेशाब ज्यादा तो प-

सीना कम होता है इस प्रमाण को ख्याल में लाये उपरांत जो
ज्यादा बढे या ज्यादा घटे तो कोई भी बिमारी रोग समझना बहु
मूत्र प्रमेहादि जननेंद्रियों की रगों में दरद मूत्रकृच्छ्र शिर में दरद
ाव का रुकणा और इस के संग मल की भी रुकावट होती है
। मल ॥ खुराक का सार भूतरस खेंच्यों के बाद निकम्मा क-
रा बडे आंतरे में धकेलीजना २ सफरे में आता है सफरे के स्ना-
यु ढीले होते हैं तो भी मल को गति नही दे सकता तैसे वायु से
मल का अवरोध होता है तो भी मल की प्रवृत्ति नहीं होती लेकिन
कितनेक आदमी हाजत भये पीछे जान कर दस्त को रोकता है
उस में सफरे में तथा आंतरे में वायु का कोप होना है पीछे उस में
दरद होता है होजरी में भी दरद शिर में शूल नीचे वायु अटके तो
आफारा भी हो जाता है ॥३ वीर्य ॥ वीर्य यह खुराक की पाचन
क्रिया आखरी सारभूत तत्व है जैसे दूध पर क्रिया होणे से आखर
घी निकलता है तैसे वीर्य बन कर आंडो में से वीर्य नल के रस्ते
वृषण रज्जू में होकर पेडू में जाता है मूत्रपिंड में से जैसे मूत्र पेडू
में मूत्राशय में एकठा होता है तैसे वृषण आंडों में का वीर्य मूत्रा-
शय के नीचे चौतरफ एकेक वीर्याशय है उन में वह वीर्य एकठा
होता है वीर्य तरुण अवस्था में होना शुरू होता है और पूरी ज-
वानी में पूरा होना है वृषण के अन्दर को वहणे वाले वीर्य के कि-
तनेक परमाणु होते हैं इस में चैतन्य वाले तंतू होते हैं जिस से
स्त्री पुरुष के संयोग से गर्भ रहता है यह खुलासा गर्भोत्पत्ती और
में लिख दिया है मलमूत्र की तरह वीर्य को बारम्बार प्रवृत्ती नहीं

होती लेकिन जिस वक्त वीर्याशय वीर्य से पूरा भर जाता है तब उस को रस्ता देना चाहिये स्त्री पुरुष के आपस में वीर्य के खेंचने वाले औरत मर्द ही है यह जीव कर्म की कुदरत आकर्षण शक्ति एसा भी सिद्ध करती है वीर्य की प्रवृत्ती भी आपस में ही औरत मर्द से ही होणी दूसरी तरह नहीं करनी वीर्य के प्रगट भये वेग के रोकने से जननेंद्रिय में शूल चलती है वीर्य की पथरी बंध जाती है धातु झरने लग जाता हैं स्वप्न में वेर २ वीर्य जाता है और शरीर नाताकत हो जाता है प्रदर प्रमेह वगेर: रोग होते हैं पेशाब अटकता है अंग में पीडा छाती में दरद होता है ॥ अधोवायु । ४ ॥ गुदा के रस्ते जो हवा निकलती है उस को अधोवायु कहते हैं सफरा यह अधोवायु की जगह है जैसे स्नायु मल को गति देता है तैसे वायु भी मल को गति देता है जो यह वायु का कोप होता है तो दस्त की कबजी हो जाती है और पेशाब खुलास नहीं आता आफरा होता है मगज घूमता है पेट गुड २ करता है इस वासते जबरदस्ती अधोवायु कभी रोकणा नहीं इंद्री में चमचमाट बूंद २ पेशाब का आना इस के रोकने से होता है ॥ ५ ॥ उलटी (कै) के होती होय तो दवा से बन्ध करना लेकिन उस को गला या मुंह बंध कर आती कै को रोकना नहीं इस के रोकने से अरुचि पित्त विकार सोजा पांडु ज्वर कोढ चकर वातरक्त गलतकुष्ट पित्तीके ददोड़े आदि अनेक रोग पैदा होते हैं ॥ ६ ॥ छींक ॥ छींक के रोकने से शिर दुखने लगजाता है

शरदी से या पेट में कृमि पडने से छींक आती होय तो इलाज क-
रना लेकिन आती छींका को रोकनी नहीं ॥ ७ ॥ डकार ॥
आती डकार को रोकने से हिचकी खासी अरुचि कांपणी और
छाती में गोटे उठकर दरद होता है ॥ ८ ॥ बगासी ॥ बगासी
आती को रोकने से शिर फिर जाता है दरद होता है अंग टूटता
है चमडी शून्य जैसी हो जाती है सांधे संकोचीजते हैं तैसे आंखें
मुंह नाक और कान में दरद पैदा होता है ॥ ९ ॥ भूख ॥ शरीर
में रात दिन की महनत से जो तत्व काम पड जाता है उसकी
भरती करने को दूसरे पोषण तत्व की जरूरी पडती है इस पो-
षण तत्व की कमीपणे को जनाने वाली वृत्ति को भूख कहने में
आती है यह भूख भी स्वभाविक वेग है पोषण की जरूरी पडती
है तभी भूख लगती है उस वक्त जो भूख को मारते हैं याने रोकते
हैं उस से शरीर सूकता है ताकत घटती है तेजकांति घटती है
शरीर के सांधे २ टूटने है शिर घूमता है आंखों का तेज घटता है
इस वास्ते भूख की वेल पर भोजन करना देरी नहीं करना ॥ १० ॥
प्यास यह प्यास भी स्वभावी वेग है कंठ होठ का सूकना यह प्यास
की निशानी है प्यास को रोकने से मुंह में शोष पडता है कानों से
सुनने की शक्ति कम होती है शरीर थकता है श्वास चढता है
छाती में दरद होता है ॥ ११ ॥ आंसु ॥ हर्ष अथवा शोक से
अथवा कोई पदार्थ आंख में पडने से आंसु आंख में आते हैं उन
आंसु का रोकना है इस वेग को रोकने से [illegible] रोग पैदा होता है ॥ १२ ॥
[illegible] का दरद अरुचि शिर में [illegible] रोग पैदा होता है [illegible]
श्वास ॥ श्वास के [illegible] विकार के [illegible]

के रोकने से गोले का रोग हृदय का रोग (हार्ट डिझीझ) वगेर दरद पैदा हो जाते हैं ॥१३॥ नींद ॥ शरीर का संचा सब दिन चलने से थक जाता है हाथ पांव ढीले पडते हैं और मन निर्बल पडता है इनों की विश्रांति याने विसांई के लिये दर्शनावर्णी कर्म- कारीगर की प्रवृत्ती से नींद आती है इस नींद से बहुतसी क्रिया- ओं बंध होकर शरीर जडवत् मालुम देता है पांचों इंद्रियों को वे शुद्धि आ जाना देखने का आवरण आंख को सोचक्षु दर्शनावरणी बाकी च्यार इंद्रियों की अपने २ विषयों का आवर्ण सो अचक्षु दर्शनावरणी कर्म का उदय भाव है सो नींद स्वभावी वेग है नींद में यह तीन क्रिया चलती रहती है श्वासोश्वास खून का फिरना और पाचन क्रिया मृत्यु में इन तीनों की क्रिया नहीं रहती बाकी दशा सब नींद में मृत्यु कैसी है नींद की वखत टालने से आलस अजीर्ण शिर का दरद चक्कर वगेरः बिमारी पैदा होती है इन तेरह वेगों को जवरन पैदा करना नहीं अैसे कई आदमी कपडे की वत्ती डाल के छींक लेते हैं विना प्यास जवरन जल पीते हैं इत्यादि तेरोंई का जवरन पैदा करना नहीं भये वेग को रोकना नहीं इस के अलावा जिस २ रोग में जो २ कामों की मनाई है अथवा उस रोग में पथ्य है वह करना पथ्यापथ्य मुजब विद्वान वैद्य डाक्टर जिस की दवा करनी उस दवा मुजब पथ्य करना अथवा अपनी बुद्धि पूर्वक इस दीपक के उजाले में चलना ॥

इति श्री जैन धर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय राम ऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे त्रितीयो प्रकाश ॥

प्रकाश ३

॥ शरीरका यत्न ॥

शरीररचना उसके अवयव और क्रिया जाणे पीछे उस क्रियाकूं यथायोग्य नियममें रखणेवास्ते शरीरका संरक्षण और पुष्टिकारक पदार्थ तथा उनोंका गुण और धर्म समझणा वैद्य विद्यामें ये तीसरा प्रकाश बडा हितकारी है क्योंके पदार्थोंका गुण तथा धर्म जाणे विगर उसका वरतावा करणेसें उससे बहोतसी बैमारियां पैदा होती है इतनाही नहीं इनोंसें अथवा दुसरे कारणोंसें जो दरद पैदा होता है उस दरदोंकों मिटाणेकूं इनही पदार्थोंका उपयोग करणेमें आता है बलके बाजे वखत दवासेंभी जादे गुण येही पदार्थ दिखा देते हैं इसवास्ते हमेसां वरतावमें आते भये पदार्थ जैसेंकी हवा पाणी और खुराक तैसें कसरत नींद वगेरे दुसरेभी जानने योग्य बाबतोंकों जरूर जाणना चाहिये शरीरके साधनका मुख्य दो प्रकार है तन दुरस्तही रहे रोग आणे पावे नहीं एसा जो ज्ञान जिसमेंभी उद्यमकी प्रबलता वैसें वरतावसें चलना दुसरे प्रकारमे कर्मयोगसे जो रोग हो जावे इसमें कर्मकी प्रबलता बाद उपायोंका करणा इसमें जीवका उद्यम अच्छा होणा न होणा कर्मोंकी प्रबलता इतिस्याद्वादः ॥ इस प्रकाशमें रोग हो नहीं सके एसा जो पुरुष कृत उद्यम उसका निर्णय लिखेंगें इस प्रकाशमें च्यार किरण है १ पहलीमें हवा पाणीका निर्णय २ दुसरीमें खुराक निर्णय ३ तीसरीमें ऋतुचर्या ४ चोथीमें दिनचर्या रात्रिचर्या नित्यपालणेके नियम इत्यादि विवरण लिखा जायगा शरीर निरोग रहणा ये पूर्व जन्ममें जीवदया जिसने पाली है भूखे प्यासे दीनहीणकूं सब तरेसें जिसनें सुख दिया है वो प्राणी निरोग शरीरवंत लंबी उमरके साधनकी शुद्धि सर्व सामग्री उसकूं मिलती है सात सुखमें मुख्य सुख निरोगी काया है कुटुंबमें माता पिता भाई बेटा बेटी बहिन आदि कोईभी बेमार पडे तबभी अदमीके दिलमें बहोत चिंता इधर उधर वैद्य डाक्तरोंके पास जाणा कमाईमें हरज फेर दवा दारूमें धनका नाश जो मूरख वैद्य विद्याहीन यमराजका दूत मिले तो शरीरकाभी नाश घरके काम संभालणेवाली माता स्त्री वगेरे बेमार पडणेपर बाल बच्चोंकी सार संभाल रसोई वगेरे कामोंमें जो जो हरजा पहुंचता है सो प्राणियोंके प्रत्यक्ष है जो कमाणेवाला होय वोही बेमार होजाय तो उस घरकी क्या दशा होती है और जो नित्त कमावे नित्त घरखरच चलावे उनके बेमार पडणेपर क्या दशा होती है शिरपर फरजाभी जिनोंकों नहीं मिले उनोंको बेमारी पर क्या दशा होती है कलियुगमें वैद्य विद्याभी एक दुकानदारीका रुजगार बन गया है क्या वैद्य क्या डाक्टर गरीब मोहताजोंसेंभी विगर पैसे बात नहीं करते सो हाथमें हाथ मिलाके उनकी दाद फरियाद सुनते हैं भाग्यवान तो अपने स्वार्थमें मग्न हो पर्वा

दा सफा खाना सरकारने वणवाया है वो असलमें वास्ते मोहताजोंके है जीमे रहमलाकर गरीवोंका इलाज भाग्यवान के मुजव करणा ये वैद्य डाकटरोंका फरज है हवा पाणी वनस्पती ये तीनों कुदरती दवा पृथ्वीपर स्वभाव जन्य हाजर है परम कृपालु परमेश्वर ऋषभदेवने इनोंका शुभयोग और इनोंसे होता अशुभयोगका ज्ञान तथा न्याय अपणे मुखद्वारा आत्रेय पुत्र आदि प्रजाकूं उपदेश देकर आरोग्यता सीखाई इन तीनोंका सुखदाई योग जाणना दुसरेकूं वताणा इसमें क्या खरच लगता है जिस दवा वनाते खरच लगता है वो तो अपणे शक्ति अनुसार देणा नुकसा लिखणेमें हरज करणा नहीं भाग्यवानोंकों चहिये सो पूर्ण वैद्योंकों द्रव्यकी मदत देकर गरिवोंकों दवा दिलाणा सरकार अंग्रेजभी दोदानोंकोंही परसन किया है विद्या दान और औषधी दान सच है रोग संयुक्त अगर राजाभी है तो दुखी है निरोगी करसाण अपणी झूंपडीकोंही राज्यभुवन मानता है इस कलियुगमें अणपढभी वैद्यवणे फिरकर अपणी आजिवका चलाते हैं क्योंके लोक सव रोगग्रस्त भयेवाद दोडादोडी करते हैं लेकिन् किस तरे वर्त्तणेसें वेमारी आवेही नहीं ये वात थोडेही लोक जाणतेहैं ये अज्ञान दुखकी जड है इस अज्ञानके वस अपणी और पराइ सवके शरीरकी खरावी प्राणी करते हैं तनदुरस्तीके साधन जितनेअदमीके स्वाधीन है उसके पालणेका यत्न जरूरसें करणा आते रोगकों वंध कर देणा लेकिन् तनदुरस्तीके सर्व उपाय अदमीके हाथ नही है कितनेक तो दैवाधीन है, यानेकर्मस्वभाव वस है कितनेक राज्याधीन है कितनेक नियम लोक समुदायाधीन है कितनेक नियम प्रत्येक अदमींओंके स्वाधीन है रुतुओंका एकदम फेरफार होणा हैजा मरी विस्फोटक (प्लेग) यह तो दैवाधीन समुदाई कर्मके आधीन है शहर सफाई खातेके अमलदारोकी वे दरकारी होकर रोगगींदकीसें होता है इत्यादिकेइ वातें राज्याधीन है लोकरूढी वचपणेमें विवाह जीमणवार वगेरे कुचालोंसें जो जो रोग पैदा होते हैं ये वात जाति समाजके आधीन है और प्रत्येक अदमी खानपानादिकके अज्ञानसें अपणे शरीरमें रोग पैदा कर लेवे ये वात प्रत्येक अदमीके स्वाधीन है आदमी प्रत्येककों तनदुरस्तीके नियमोंका ज्ञान होय तव तो समाज और जाति सुधरे और समाजके मुख्य २ सहर सफाइ म्युनिसपलमें रहणेसें वोभी सुधारा होसके इस तरे कितनेक दरजेजो अदमीके वस नहीं वो वहोतोसें वण सके एसा है लेकिन् निकाचित कर्मवद्धआखरप्रवल है ॥ इस जाणकार मनुष्यके तनदुरस्तीके उपाय वरतणेसें अपणेकूं कुटंवकूं और विवेकी पडोसियोंकोभी तनदुरस्तीका फल लिमता है शरीर संरक्षणका ग्यान और उसका नियम पालना इत्यादि वाते वडी कोलेजमें सीखणेसेंही मिलता एसा एकांत पक्ष नहीं है घर अथवा कुटुंव येभी सांमान्य ज्ञान सिखाणेंकू अनुभविक पाठशाला है अगर पाठशाला कोलेजमें चतुराईका नियम सीखेवादभी घरकी पाठशालाका चलता अभ्यासकूं सीखणा और उस मुजव चल-

णेकी जरूरी है कडुंवेके मावाप घर पाठशालाके माष्टर है, अपणे कुलपंपरासें चलता आया जो दयाधर्मका खानपान विचारसे बंधा हुआ आचारसें जिनोंके मावाप वरतते है बालक प्रायें वेसाही सीखता है जिसमें मावापोंकी अछी चाल चलण पुन्यवान सपूतही सीखता है सात विसनोंमेंका व्यसन दुराचार तो दुसरेकी देखादेख विगर कहे वहोत बुद्धिहीन सीख लेते है कारण इस मिथ्या मोहनीके संग जीवकूं अनादि कालका परिचय है और आगेभी उसको कष्ट आपदा भोगणे हैं फेर दुर्गतीमें तथा संसारमें रुलणा है तो वो आनुपूर्वी उस प्राणीकूं उस बुद्धिद्वारा उसी तरफ खेंचती हैं माता पिता गुरु वगेरे सीखाते तोभी नहीं सीखता है अछी आचरणकूं. बुरीमें झट चित्त देता है तो भी माता पिताकी चतुराईका असर केइकतो पूराही सीख लेते हैं केइयक आधा इत्यादि कर्माधीन तारतम्यता है और जिसके वडेरे कडुंवेके लोक स्नान दांतण नहीं करते कपडे मेले पह न ते पाणी विगर छाणे पीते नसां पीते है इत्यादि वहोत आदते वो वालकभी सीख लेते हैं वाजे पुन्यवान वीस कुटुंबे वालोंसेभी बढकर अछी क्रिया नियम सीख लेते हैं और द्रव्यवान विनयवान दातार निकल आते है उसपर ऐसा दृष्टांत देते है पिता अंधा, मूरख, काणा, निर्धन, होय तो क्या. पुत्रकोंभी एसा होणा, क्या द्रव्य नहिं कमाणा, वस इसमेंभी स्याद्वाद है तोभी उद्यम तो अछाही करणा, ओर सिखाणा, शरीर सबकों प्यारा है वहोत लोकतो अज्ञान याने पथ्या पथ्य नहीं जाणते बेमार होते हैं. जाणके बेमार थोडे होते हैं, वेदनी कर्म अशाता जब उदयमें आणा होता है तब जाणता बूझताभी कुपथ्य आचरता है, यह तो जीव और कर्मका झगडा है, ज्ञानसें चलणेमें जीव बलवान, अज्ञानसें चलणेमें कर्म बलवान, हम तो ज्ञानसेंही सिद्धि मानतेंहं, इस वास्ते हमारा कहणा सर्वज्ञकी आज्ञानुसार यही है पहले तो सदाचरणाअसदाचरणा सुखदाइयोगसो पथ्य, दुखदाई योग सो कुपथ्य, इसकूं अछी तरे समझलो, यह तो ज्ञान, फेर उस मुजब चलोये क्रिया, ज्ञान क्रियासें मोक्ष है, यह बात संसार पक्ष और मुक्ति पक्ष दोनों तरफ समझणा, जिस पु-रुषने अपणी आत्माका भला चाहा है, उसने सब सुखका भला चाहा, जिसने अपणे शरीर संरक्षणका नियम पाला वो दुसरेकुं नियम पलाया जैसा है. कारण मात पिताके रस्तेमाथे पुत्र चलते हैं.

किरण पहली १

हवा तथा पाणी

हवा तथा पाणी और खुराक ये जीवनके मुख्य तीन पदार्थ है, खुराकबिना तो आदमी केयेक दिन निकाल सकते हैं, पाणीविगर दिनेकघंटे निकाल सकते हैं, ले-किन हवाविगर थोडी देरभी जीना [illegible] है, इस हिसावसें खुब मालुम पडता है हवा

दा सफा खाना सरकारने वणवाया है वो असलमें वास्ते मोहताजोंके है जीमे रहमलाकर
गरीवोंका इलाज भाग्यवान के मुजव करणा ये वैद्य डाकटरोंका फरज है हवा पाणी
वनस्पती ये तीनों कुदरती दवा पृथ्वीपर स्वभाव जन्य हाजर है परम कृपालु परमेश्वर
ऋषभदेवने इनोंका शुभयोग और इनोंसे होता अशुभयोगका ज्ञान तथा न्याय अपणे
मुखद्वारा आत्रेय पुत्र आदि प्रजाकूं उपदेश देकर आरोग्यता सीखाई इन तीनोंका सुख-
दाई योग जाणना दुसरेकूं वताणा इसमें क्या खरच लगता है जिस दवा वनाते खरच
लगता है वो तो अपणे शक्ति अनुसार देणा नुकसा लिखणेमें हरज करणा नहीं भाग्यवा
नोंकों चहिये सो पूर्ण वैद्योंकों द्रव्यकी मदत देकर गरिवोंकों दवा दिलाणा सरकार
अंग्रेजभी दोदानोंकोंही परसन किया है विद्या दान और औषधी दान सच है रोग संयुक्त
अगर राजाभी है तो दुखी है निरोगी करसाण अपणी झूंपडीकोंही राज्यभुवन मानता है
इस कलियुगमें अणपढभी वैद्यवणे फिरकर अपणी आजिवका चलाते हैं क्योंके लोक सब
रोगग्रस्त भयेवाद दोडादोडी करते हैं लेकिन् किस तरे वर्त्तणेसें वेमारी आवेही नहीं
ये वात थोडेही लोक जाणतेहैं ये अज्ञान दुखकी जड है इस अज्ञानके वस अपणी
और पराइ सवके शरीरकी खरावी प्राणी करते हैं तनदुरस्तीके साधन जितनेअदमीके
स्वाधीन है उसके पालणेका यत्न जरूरसें करणा आते रोगकों वंध कर देणा लेकिन् तन-
दुरस्तीके सर्व उपाय अदमीके हाथ नहीं है कितनेक तो दैवाधीन है, यानेकर्मस्वभाव
वस है कितनेक राज्याधीन है कितनेक नियम लोक समुदायाधीन है कितनेक नियम प्रत्येक
अदमीओंके स्वाधीन है रुतुओंका एकदम फेरफार होणा हैजा मरी विस्फोटक (प्लेग) यह
तो दैवाधीन समुदाई कर्मके आधीन है शहर सफाई खातेके अमलदारोकी वे दरकारी
होकर रोगगींदकीसें होता है इत्यादिकेइ वातें राज्याधीन है लोकरूढी वचपणेमें विवाह
जीमणवार वगेरे कुचालोंसें जो जो रोग पैदा होते हैं ये वात जाति समाजके आधीन है
और प्रत्येक अदमी खानपानादिकके अज्ञानसें अपणे शरीरमें रोग पैदा कर लेवे ये
वात प्रत्येक अदमीके स्वाधीन है आदमी प्रत्येककों तनदुरस्तीके नियमोंका ज्ञान होय
तव तो समाज और जाति सुधरे और समाजके मुख्य २ सहर सफाइ म्युनिसप-
लमें रहणेसें वोभी सुधारा होसके इस तरे कितनेक दरजेजो अदमीके वस नहीं वो
वहोतोंसें वण सके एसा है लेकिन् निकाचित कर्मवद्धआखरप्रवल है ॥ इस जाणकार
मनुष्यके तनदुरस्तीके उपाय वरतणेसें अपणेकूं कुटंवकूं और विवेकी पडोसियोंकोभी त-
नदुरस्तीका फल लिमता है शरीर संरक्षणका ग्यान और उसका नियम पालना इत्यादि
वाते वडी कोलेजमें सीखणेसेंही मिलता एसा एकांत पक्ष नहीं है घर अथवा कुटुंव येभी
सांमान्य ज्ञान सिखाणेकू अनुभविक पाठशाला है अगर पाठशाला कोलेजमें चतुराईका
नियम सीखेवादभी घरकी पाठशालाका चलता अभ्यासकूं सीखणा और उस मुजव चल-

णेकी जरूरी है कडुंबेके मावाप घर पाठशालाके माष्टर है, अपणे कुलपरंपरासें चलता आया जो दयाधर्मका खानपान विचारसे वंधा हुआ आचारसें जिनोंके मावाप वरतते है बालक प्रायें वैसाही सीखता है जिसमें मावापोंकी अछी चाल चलण पुन्यवान सपूतही सीखता है सात विसनोंमेंका व्यसन दुराचार तो दुसरेकी देखादेख विगर कहे वहोत बुद्धिहीन सीख लेते है कारण इस मिथ्या मोहनीके संग जीवकूं अनादि कालका परिचय है और आगेभी उसको कष्ट आपदा भोगणे हैं फेर दुर्गतीमें तथा संसारमें रुलणा है तो वो आनुपूर्वी उस प्राणीकूं उस बुद्धिद्वारा उसी तरफ खेंचती हैं माता पिता गुरु वगेरे सीखाते तोभी नहीं सीखता है अछी आचरणकूं. बुरीमें झट चित्त देता है तो भी माता पिताकी चतुराईका असर केइकतो पूराही सीख लेते हैं केइयक आधा इत्यादि कर्माधीन तारतम्यता है और जिसके वडेरे कडुंबेके लोक स्नान दांतण नहीं करते कपडे मेले पह न ते पाणी विगर छाणे पीते नसां पीते है इत्यादि वहोत आदते वो बालकभी सीख लेते हैं बाजे पुन्यवान वीस कुडुंबे वालोंसेभी वढकर अछी क्रिया नियम सीख लेते हैं और द्रव्यवान विनयवान दातार निकल आते है उसपर ऐसा दृष्टांत देते है पिता अंधा, लूला, काणा, निर्धन, होय तो क्या. पुत्रकोंभी एसा होणा, क्या द्रव्य नहिं कमाणा, वस इसमेंभी स्याद्वाद है तोभी उद्यम तो अछाही करणा, ओर सिखाणा, शरीर सबकों प्यारा है वहोत लोकतो अज्ञान याने पथ्या पथ्य नहीं जाणते वेमार होते हैं. जाणके वेमार थोडे होते हैं, वेदनी कर्म अशाता जब उदयमें आणा होता है तब जाणता बूझताभी कुपथ्य आचरता है, यह तो जीव ओर कर्मका झगडा है, ज्ञानसें चलणेमें जीव बलवान, अज्ञानसें चलणेमें कर्म बलवान, हम तो ज्ञानसेंही सिद्धि मानतेहैं, इस वास्ते हमारा कहणा सर्वज्ञकी आज्ञानुसार यही है पहले तो सदाचरणा असदाचरणा सुखदाइयोगसो पथ्य, दुखदाई योग सो कुपथ्य, इसकूं अछी तरे समझलो, यह तो ज्ञान, फेर उस मुजब चलोगे क्रिया, ज्ञान क्रियासें मोक्ष है, यह बात संसार पक्ष और मुक्ति पक्ष दोनों तरफ समजणा, जिस पुरुषने अपणी आत्माका भला चाहा है, उसने सब जगका भला चाहा, जिसने अपणे शरीर संरक्षणका नियम पाला वो दुसरेकुं नियम पलाया जैसा है, कारण मात पिताके स्नेभावे पुत्र चलते है.

किरण पहली १

हवा तथा पाणी

हवा तथा पाणी और खुराक ये जीवनके मुख्य तीन पदार्थ है, खुराकविना तो आदमी केइयक दिन निकाल सकते हैं, पाणीविगर दिन कइक निकाल सकते है, लेकिन् हवाविगर थोडी देरभी जीना मुशकिल है, इस दिखानेसे स्पष्ट मालुम नहीं. हवा

ये सबसे ज्यादे उपयोगी चीज है, दुसरे दरजे जल है, तीसरे दरजे खुराक है, तोभी एक चीज इनोंमेसें हाजर नहीं होय तो दुसरे पदार्थ एक दुसरेका काम नहीं दे सकता है, फकत हवासेया फक्त पाणीसे याफक्त खुराकसें, अथवा इनोंमेंसें दो चीजोंसेंभी जिंदगानी नहीं रहसकतीहे, येतीनोसें जिंदगानी चलती है, और वखतपर मौतकी नीसा णीभी इन तीनोंसें वण जाती है जो पदार्थ शरीरकूं उपयोगी है वोही पदार्थ विगडे भये होय तो, अथवा चहिये जिस उन मानसें कम या वैसी होय तो, अथवा हरेकके मिजाजतासीरकूं नहीं माफगत होय तो शरीरकूं नुकशान पंहुचा देती है इन सब वातोंका ज्ञान शरीर संरक्षणमें आ जाता है.

हवा (अएर)

जगतमे सर्व जीव आसपासकी हवा लेते हैं वो हवा जब बाहर निकलके पीछी नहीं फिरती बस वो अंतक्रिया है जीवतव्यका रक्षण मुख्य हवा है; हवा अपणे नजरसें नहीं देख सकते हैं जब वो स्थिर हो जाती है तो उसका स्पर्शभी मालम नहीं देता हवा चलती है तब वो पवन कहलाती है जो जो काम करती है सो नेंत्रोसें जगत देखता है उसका ज्ञानस्पर्शसे जाहिरहै समस्त जगत् पवन महासागरसें ढका भयाहै हवारूपी महासागर कमसें कम सो मील उंडा याने गहिरा है ये कथन डाकतर अर्वाचीन विद्वानोंका है प्राचीन आचार्य तो चवदे राज लोकके आस पास घनोदधी घनवात मानते है अर्थात् हवा और पाणीकेही आधार ये चवदे राजलोक है लेकिन् एसा तो है जैसें २ ऊपर चढणेमें आवे तैसें २ हवा जादे पतली मालम देती है.

साफ हवाके तत्व

लोक मनमें यूं धारते होंगें की हवा स्यात् एकही पदार्थकी वणी भई है लेकिन् विद्वानोका निश्चयकीया भया है हवामें मुख्य चार वस्तू हैं वो वहोत चतुराई और आश्चर्यके साथ एकठी मिली है प्राण वायु (आ क्सि जन) नाइट्रो जन (शुद्ध हवा) कार-वानिक एसिड ग्यास) ये चावलोकेकोयलेंके संग प्राण वायु जब मिलती है तब ए वणती है। और पाणीके सुक्ष्म परमाणु (वराल) ऐसी च्यार वस्तु हवाके संग मिली भई है अपणे आस पास तीन तरेकी वस्तुओं है कितनीक तो पत्थर लकड जैसी कठन कितनीक पाणी और दूध जैसी पतली प्रवाही वाकी कितनी एक तो हवा जैसी वायु रूपसें दिखती है जो जलके सुक्ष्म परमाणुओंसें (अर्थात् वरालोंसें) हवा वणी भई है वो तो जुदी होकर उसका माप हो सकता है उसमेंसें एक प्राण वायु (जो आक्सिजन) कहलाती है प्राणका आधारभी मुख्यपणे उसी वायुसें हैं प्राण वायु विगर चराकभी जलती नहीं फेर ऐसाभी हें जो सब हवा प्राण वायुही होती तो जगतमें जीव किसी तरे जीते नहीं फिर सकते तुरतही मर जाते कारण जीवोंकों जितनी चहीये उससें जादे सक्त होजाती इस

वास्ते प्राणवायूके संग दुसरी हवा कुदरती मिली भई है वो हवा प्राणके आधारभूत नहीं है और उस हवामे जलती चराक रखणेसें बुझ जाती है, श्वास लेणेमें और चीजोंके जलाती वखत उनमान माफक ये दो हवा मिली भई काम देती है अदमीके हाथमें एक अंगूठा और च्यार अंगुलियां है उसकूं याद करणेसें तुमकों याद आवेगा की हवामें एक भाग प्राणवायूका है च्यार भाग खाली हवा याने (नाईट्रोजनका है) और हवा इन दोनोंसें मिली भई है, दुसरे दो हवाके भाग इनोंमें मिले भये है वो वहोत थोडे हैं तोभी वो भाग वहोत दोनुं उपयोगी हैं कोयला क्या चीज है सो तो अपणे जाणतेहैं जंगल जलके जमीनमें दट जाता है उसके काले पत्थर जैसें जमीनमेंसें निकलते हैं उसकूं कोयला कहते हैं जो रेलके इंजनमें जलाये जाते है चावलोंमेंसें एक तरेके कोयले हो शकते है ये चावलोके कोयले (कारवान) कहलाते है अंग्रेजीमें प्राणवायु और कोयलोंके मिलणेसें एक तरेकी हवा वणती है उसकूं कारवोनिक एसिड ग्यास अंग्रेजीमें कहते हैं ये हवामें तीसरी वस्तु है ये हवा वहोत भारी वजनदार है सो कोइ २ वखत गहरा उंडा खालीकूं एके तले एकठी होके रहती है कुंवरेमें तथा बहुत दिनोंके बंध मकानमेंभी रहती है एसी हवामें रखी भई सिलगती वत्ती बुझ जाती है जो अदमी उस हवामें दम लेता है वो एकदम मर जाता है लेकिन् ये हवाभी वनस्पतीकूं पोषण करती है इस हवा विगर वनस्पती ऊग सकती नहीं दिनकों उसका भाग दरखतकी जड वनस्पती चूस लेती है इस हवाके अढाइ हजार भागमें एक भाग इस जहरी हवाका है इतनी थोडी होणेसें वो हवा अपणेकूं कुछ हरकत नहीं पोहचाती है लेकिन् जो हवामें उस हवाका भाग जराभी जादा होय तो लोक बेमार हो जाते हैं हवामें चोथा भाग पाणीके परमाणुओंका है याने-घराल है जो लोक थालीमें थोडा पाणी धर देवे तो वो पीमे २ उड जाता है अर्वाचीन विद्वान डाकटरोंका कहणा है, के सूर्यकी गरमी हमेसां पाणीकूं वराळरूपसें खेंचती है सर्वज्ञके कहे सूत्रोंमें लिखा है के जल वायूके योगसें सुक्ष्म होकर परमाणू रूपसे आकाशमें मिल जाता है वोही पीछा हमेसा ओस हो हो कर आठोर पहर झरता है, लेकिन एसा है, की दो घडी दिनचा की रहणेसें जादा मालम देता है. दो घडी दिन चडे जहांतक, वादसूर्यकी किरणोकी उष्मा द्वारा सूक जाता है वोही वराळ सुक्ष्म परमाणुओंके बादर पुद्गल बंधकर यानें बादल होकर या धूंअर होकर वरसता है जो हवामें पाणीके परमाणु नहीं होतेतो सूर्यके तापकी गरमीसें शरीर जल जाता, और झाड वनस्पती जल जाती लोक मर जाते. इस कारण जहां जलकी नदी दरियाव वनस्पती वहोत है उहां वरसादभी प्राय बहोत होती है रेतीके मुलकमें कम इस उपरांत प्राणियोंके पुन्य वा पापकी क्रिया-येगीसें कर्मादिक पांच समवायोके संजोगसे कभी तो रेतीकी जमीनमेंभी वहोत वरसाद होती है और इनका जळ और वनस्पती जहां उहां वरसात बिल्कुल नहीं वरस्सी

यहांभी स्याद्वाद है ॥ उनमान मुजब योग्य प्रमाणमें ये चारोंही मिली हवा है सो तो स्वछ है याने साफ है इस हवासे तनदुरस्ती रहती है.

॥ हवाकूं बिगाडणेके कारण ॥

दुनियामें वहोत तरेके जहर हैं जिससें वहोत अदमी मरते हैं एक तरफ विचारके देखें तो खराब हवा वरावर कोइ भी जहर नहीं है अंग्रेजोंके इतिहास हिन्दमें आणेका पढा उसमें लिखा है कलकत्तेके केदखानेमें एक छोटी कोटडीमें १४६ गोरोंकों डाला गया उसके फकत दो छोटी वारियोंथी दरवजा वंध कर दिया था दुसरे दिन फजरमें दरवज्ञा खोला तव फकत २३ अदमी जीते मिले वाकी सव मर गयेथे उनोंकों किसने मारा खराव हवानें, कारण हवाका जहां थोडा आणा जाणा एसी छोटी कोटडीमें वहोत अदम्योंकों वंध कर देणेसें उनोंके श्वाससें कोटडीकी हवा विगड कर उन अदम्योंकी जान गई, इन लोकोंकी तरे एक रातमें इन विचारोंकी जेसें जान गई एसें तो विरली जगे मरते होंगे लेकिन इतना तो है ताजी हवा नहीं मिलणेसें वहोत अदमी सव जिंदगानी तक, नाताकत और वैमारतो रहतेही हैं, हवा विगडणेके कारण नीचे मुजव १ श्वासके रस्ते निकलती अशुद्ध हवा ।। अपने हमेसा श्वास लेते हैं लेकिन वाहरकी जो हवा श्वासके रस्ते अंदर लेते हैं उससे वाहर निकालते हैं सो हवा फकत जुदी है, शरीरकी सफाई और स्नान हे वोही शौच है इसीसें ही वैकुंठ मिलती है ऐसे माननेवाले और मुं धोणा हाथ पाव दम २ में धोणा लेकिन शरीरके अंदरकी मलीनताका। क्या हाल है उस वावतका विचार थोडोंकोहीं भया होगा श्वासोश्वाससें जो हवा अपने अंदर लेते हैं वो अपने शरीरके अंदरके भागकूं धोकर कुछ २ मलीनताकूं तो वाहिर ले जाती है इसी वास्ते योग विद्याके स्वरोदय ज्ञानके वेत्ता इस श्वासा द्वारा केइयक नेती धोती वस्ती करते हे जिनोंकों पूरा ज्ञान नहीं भया है वो तो इस कर्त्तव्यसे श्वासद्वारा रोग मिटाते हे और पूरे स्वरोदय ज्ञानवाले नवली रसकपालभाती आदि श्वासाके कर्त्तव्यसे निरारंभी होकर रोग मिटाते हैं मेसमेरेजम (देवाकर्षण) सें पराये रोग मिटाणे आदि सव योगविद्याकी कर्त्तव्यता श्वासासें अनेक चमत्कारोंका संवंध है ॥ श्वासके संग निकलती हवा अपने संग तीन चीजोंकों वाहिर ले जाती है १ कारवानिकऐसिडग्यास, २ हवामें मिलापाणी ३ गंदाकचरा, पहली चीज स्वच्छ हवामें वहोत थोडी होती है लेकिन जो हवा श्वासके संग वाहर निकलती है उसमें जहरी हवाका भाग सो गुणा विशेष प्रमाणमें होता है अपनेकूं वो दिखती नहीं है जैसे अंगारमेंसें धूंआ निकलता है तैसे वो वाहिर निकलती है एक संकडी कोटडीमें चूला जलाया जावै जैसें वो धूंएसें भर जाती है इस तरे जो अदमी सांकडी कोटडीमें सूता है तो उसके मूंमेंसें जहरी हवा निकलकर अपने आसपासकी साफ हवाकूं भी विगाड देती है अगर उस कोटडीमें साफ ताजी हवाकूं आणे

जानेकूं खुलास जगे नहीं होय तो अपने मूंमेंसे नीकली भई जहरी हवा फेर अपनेही श्वासके रस्ते अंदर जानेसें मोतकी नीसानी आपहुंचती है लेकिन दरवजोंमेंसें, छप्परमेंसें बारीयोंमेंसें, कितनीक हवा बाहर निकल जाती है, और कितनी एक बाहरकी खुली हवा अंदर आती है इस वास्ते ही वास्तुक शास्त्रकार सोनेके मकानोंमें हवाके खुलासा वास्ते बारी जाली झरोखे बणाते हैं श्वासके संग दुसरी चीज बाहिर पाणी (भिजाणेकी)वस्तु निकलती है इस मूंकी हवामें पाणी है या नहीं अगर उसकी चोकस तपास करणी होय तो सिलट पाटीपर या राजस चकूपर श्वास डालो उसी वखत भीजके दब्वा पडेगा इससे समझा जाता है के श्वासके संग पाणी निकलता है, तीसरा पदार्थ गंदा कचरा निकलता है श्वासका पाणी साफ नहीं होता है वो बरतणके धोवण जैसा मैला और गंधा होता है उसमें सडा पदार्थ मिला भया होता है वो जो शरीरपर रहणे देनेमें आवे तो बेमारी निश्चे होती है श्वासके अंदरका मलीन पदार्थ जहरी हवा जितनी खराबी करती है हर-दम बुकाणी जो वस्त्रसे बांधके रखते है वो रसायणिक योगसें वहोत नुकसानकारक है मुंपर दाग मूंके बाल उड जाणा और जहरी हवा साफ निकलने नहीं पाती है इसीवास्ते जैनीयोंके आचारांग सूत्रमें लिखा है खासी करते डकार लेते छींक लेते बगासी लेते वखत साधू हाथ देकर वस्त्र देकर ये वेगोंकों छोडे कारण इस वेगोंके भये पीछे श्वासके खेंचणेका जोर रहता है उसमें जहरी जानवर या चहिये जिससे जादा हवा अंदर नहीं जा सके बाकी हरवखत श्वास लेते हाथ या वस्त्र देणा नहीं लिखा है देखो प्रत्यक्ष उ-दाहरण दुसरे अदमी मुं लगाकर पाणी पीणेमें वहोत अदमी गंदकी समझते हैं उससे दुसरेका जूठा पाणी नहीं पीते हैं ये बात वहोत अछी है लेकिन वो जूठा जल नहीं पीणा इसका असली मतलब क्या है सो वो लोक नहीं जाणते फेर सकडी कोटडीमें वहोत अदम्योंके एकठे होणेसें एक दुसरेके फेफसेमेंसें निकलती भई खराब हवा और गंदा पदार्थ वो लोक बेर २ श्वासके संग अंदर खेंचते है वो जूठा अन्न और पाणीसें सोगुणी खराबी उपादे करता है इसतेर गाय भेंस उंट बकरे कुत्ते वगेरे जानवर भी अदम्योंकी तेर श्वासके संग जहरी हवा निकालते हैं वो भी हवाकू बिगाडते हैं २ चम-डीके छेदोंमेंसें पसीना नो बाफ (नराळ) निकलती है वो भी हवाकू खराब करती है एक अदमीके बदनमेंसें २४ घंटेमें लगभग ३० औंस पसीना (वराळ) बाहर निकलता है, ३ चीजोंके जलानेकी क्रियासें हवा बिगडती है लोक इस बातकू सुनके आश्चर्य पांवेंगे जहां कुछ जलानेका काम होय उहांकी हवा केसें बिगडती है प्राण वायु बिगर नो जगार निकलेगी नहीं जो चराकको एक संकडे बरतनमें तुम खिलाके रख दो तो थोडे वखतमें बुझ जायगी क्योंके उस बरतनका सब प्राण वायु नष्ट हो जाता है इस तरह मुख्य करके घरोंमें आदे चराकोंसनी जादा करनेसें और तो प्राण वायु तुरत उहांसे पूरी होकर श्वासो-

निक ऐसिडगेस (जहरी हवा) चढ जाती है और उस घरमें रहनेवालोंको वैमार डालती है लेकिन् इस वातोंकी समझ हमारे आर्यावर्त्तमें नहीं होनेसे इस वर्त्तमानमें वेमारीका पक्का कारण नहीं पिछान सकते फैर वर्तमान चिकित्साकोंकी क्या तारीफ करी " दोनूं ढूंगे एकोढाल जैगोपालसा जैगोपाल इतिश्री इसवास्ते चराक मैणवत्ती और सिगडी (अंगीटी) सें हवा विगडती है इसवास्ते वैमार अदमीके संकडे कोठेमें अणसमजू वैद्य और प्रजा इन २ वातोंकों करके हवाकूं वहोतही विगाड देतेहैं ४ ॥ दुरगंध हवा ॥ जेसें सडीचीजमेंसें उडती भई जहरीहवा वहोत खरावी करतीहै जिसवखत दरखत अथवा प्राणीनास पाताहै तव वो तुरतही सडणेलगताहै उस सडेमेसें वहोत नुकसानकारी हवा उडतीहै और उसका पुद्गल याने रजकण हवासें वहोत दूरतक फैलताहै इसवास्ते जैन सूत्रोंमें मुरदा जिसघरमें पडाहोय उसके संलग्न सोहाथतक सूतक मानाहै वीचमें रस्ता पडा होय तो नहीं मानते कारण हवासें दुरगंध के परमाणु उडके कोसो दूर चलेजाते है जो अपणीं आंख अपणे सूंघणेके नाक इंद्रीजेसी तीखीं होतीतो सडते प्राणीमेंसें उडकर उंचेजाते और हवामें फेलाते असंख्य छोटे २ जंतु अपणे देखसकते मतलव एसी सडी हवामें होकर जातेभये अपणे नाकके पास जो दुरगंध आती भई मालमदेती है वो दुसरी कुछ नहीं है उस सडी वस्तुमेंसें उडते सूक्ष्मजंतू छोटे २ जीव है जो श्वासके रस्ते अपणे शरीरमें घुसजाते हैं एसा डाकदर लोक इस वखत कहतेहै जैनोके पन्नवणा सूत्रमें चौदे जो सडी जगे प्राणीके मुडदे वीर्य खून पित्त खंखार थूक मोरी मलमूत्र इत्यादि जगोंमें समुर्छिम अंगुलके असंख्यातमेहिस्से जितना छोटा जिनोकों चर्मनेत्रवाले नहीं देखसके सर्वज्ञने केवल ज्ञानद्वारा देखा एसें असंक्षाजीव अंतर्मुहूर्त्त वाद पैदा होता है एसा लिखाहै ये वात अर्वाचीन डाकटर विद्वानोनें भी प्रत्यक्ष पणेक वूल कियाहै इसतरेही घरमेंसें साग तरकारीके छोंतूं तथा कचरांफूस आंगणमें अथवा घरके पास लोक फेंक देते हें अथवा घर अंगण वगैरे नही झाडते इससें हवा विगडतीं है इसीवास्तें जैनसूत्रोंमें साधूओंको प्रतिलेखना प्रमार्जना काजानिकालणा दिनमें दो वखतका हुकम लिखाहे, चमारलोक कसाईलोक रंगरेजे एसे रुजगार वाले दुसरे भी लोक उनोके कामोंसें भी हवा विगडतीं हे एसी जगोसें नाक मूं वंधकरके निकलणा-विपाकसूत्रमें गौतमगणधर नै मृगालोढेकी दुरगंधी वावत नाकमूं मुखवस्त्रिका जो हाथ मेंथी उससें मृगाराणीके कहणे सेंढका एसा लिखाहै फेर मुंडदागाडणेकीजगे वालणेकी जगे अदम्योंकी वस्तीसें वहोत दूर रखणी चहिये गाडणेसें जलाणेमें हवा कम विगडती हे जिसमें भी जेसें जंवूद्वीप पन्नत्ती सूत्रमें ऋषभ देव वगैरे वहोत साधूओंकों देवतोंने जलाया जिसमे वढिया चंदन कपूर आदिअनेक खसवोदार वस्तुओंसे अग्नि संस्कार किया मतलव सुगंधीचीजोंसें हवामें जहरका असर नहीं फैलता जमीनमेंसे वाफ अथवा

वराल निकलती है हवा उसमें थोडी दाखल होती है और ये जमीनके अंदरकी हवा ऊपरकी हवाके साथ मिलती है जिसमें भी जब जमीन भीगी भई होती है तबतो सडी वस्तु वहोत नुकशान करती है भाजीपाला सडा भया वहोतकरके बुखारके उपद्रवका कारण है मारवाडमें ये बात प्रत्यक्ष हमनें अनुभव करी है जब बहोत बरसात होकर ककडी मतीरे टींडसी वगेरेके वेलों आदि सडती है तब जाट वगेरे ग्रामीणोकों शीतज्वर ये चीजें सहरमें आके जब पडी २ सडती है तब हवामें जहर फेलकर सहरवालोकों शीतज्वर आदि रोग हवाके बिगाडसें होता है ५ घरके गलीचीमेंसें खराब हवा होजाती है घरके खालकुंडी मोरी वाडे अकूरडे और जाजरू ये गलीचीकी जगे है इसवास्ते हमे ससाफ रखवाणा जैनोके सूत्रोंमें इस २ जगोमें जीवोंकी उत्पत्ति और इन २ सें बचणा बोही दया है लेकिन् बडे सहरोंमें गृहस्थियोंकों साफरखाणेका उद्यमही बण आवे तो अछा हैं साधूओंको एसी वस्तीमें रहणाही क्यों ऊपरकी बाबतें हवा बिगडणेके कारण साधू तथा गृहस्थियोंकों तदनभना है ६ कारखाने जैसें कोयलेकी खाण लोहेके कारखाणे ऊन तथा रेसम बणणेकी कलें मील तैसेंइ दुसरीभी धातु तथा रंग बणाणेके कारखाने तैसेंइ तेर २ की कारीगरी बणाणेके कारखाने हैं सो असलीमें हवाकू बिगाडनेके कारखानेही है इस कारखानेमेंमें कोयले रूरग तेसें पत्थरकी कोरणी करणेवालोंके पत्थरकी रांत और और २ धातुओंके महीन २ रजकण उडउडके काम करणेवालोंके शरीरमें घुसकर श्वास नलीके फेफसेके छातीके रोगोंकूं पैदा करते हैं ७ चिलम चुट्टा चिलमका और चुरटोंका पीणा ये जैसें पीणेवालोंकी छातीकूं बिगाडती है तैसें बाहरकी हवाकूंभी बिगाडती है ये व्यसन दक्षण गुजरात मारवाडमें बहोत चल रहा है बीडियों और चिलमोंके पीनेसे हवा नित्यें बिगडती है ऐसें हवा बिगडणेके बहोत कारण है इन सब बातोंसें बचणा अदर्भीके स्वाधीनताईकी बात है कर्मोंकी विचित्रतामें जो बुद्धि मनुष्योंने पाई है उसका अछा उपयोग नहीं करते पशुओंकी तरे फकत ऐसा घमंड रखते है जो कर्मोंमें लिखा है सो होगा ऐसे एकांतपक्षी लेकिन् ऐसा नहीं विचारते वो तुमारे कर्मोंने आगे बिगाड होणेवास्तेही तुमारी समझमे सदुधमकी बुद्धिकों फेर दी है स्याद्वादमत श्रीजिनवरको नहि कहिये एकांत ॥ उन कुकर्मोका फल ऐसें बेवकूफोंको मिले उनमें नगाई पता ऐसे बे परवारहणेसें कष्टफल भोगते २ अमूल्य मनुष्य जन्म काम श्वास क्षय वगेरे रोगोंमें गमाके कष्ट भोगते २ आधी उमरमें जाते है गांजा तुरफे पीनेवाले हमने मसान दुख्याने मरते देखे है इस संसारमें आके किया नहीं पढी ज्ञान नहीं कमाया देश जाति कुटुंबका सुधारा नहीं किया और न परभवका साधनका ज्ञानयुक्त मत मिलनी नहीं ऐसे अब अदर्भोने मनुष्यजन्म पशुओं की तरे पाकर वृथा ही खो गये.

स्वभाव कुदरतसें हवा साफ.

देखो पांचो समवायोंके योगसें प्रथम तो हवा विगडतीकुं बंध करणेमें मनुष्योंका उद्यम है तैसे कालादिक चारो समवाय मिलके हवाकूं साफ करणेकाभी साधन पूरावना है वो जो अगर नही होता तो सृष्टीमे उत्पन्न होणा स्थिती रहणाभी नहीं होता ये साधन जैसे इनही समवायोंसें विगडके प्राणियोका प्रलय करता है तैसेंही येही पांचों समवाय मिलणेसें विगडी हवाकूं साफभी करती है इन समवाय संबंधकूं चाहे ईश्वर मानलो हवामें चलन स्वभाव धर्म है उससें विगडी हवाकूं पवनके झपट्टेसें खेचके ले जाती है दुष्ट परमाणु छिन्नभिन्न हो जाते हैं और ताजी हवा मिलणेसें जो नुकशान पहुंचणा था । इतना नुकशान नही पोंहचता है ऊपर लिखी जो हवा एक दुसरेके संग मिल जाती है जैसें थोडा दूध पाणीमें एकमेक हो जाताहै चूलेका धूआं थोडी देर पीछै दिखता नहीं ऐसें श्वास वगेरेसे सब विगडी हवा साफ जादा हवामें मिलकर पतली हो जाती है इसवास्ते इजा कम करती है हवा कोइ वखत जादा कोइ वखत कम चलती है क्योंके हवामें वैक्रिय शरीर रचणेका स्वभाव है. दृष्टांत जैसें कृष्ण एक थे लेकिन् सब राणियोंके महलमें नारदजीनें कृष्णकूं देखा वैक्रियसे कोइ इस वातकूं नहीं माने उनोने वैक्रिय शरीरका दृष्टांत इसमुजव जांणनां जैसें लिगेंद्री पडी दशामें दो अंगुल होती है जिसकी तेजी दशामें कितनी वढोतरी होती है इस मुजव वैक्रिय शरीर वायू करती है अथवा किरडा जैसे रंग वदलता है वैसा वैक्रिय शरीर शक्ति जाणनी खुसकर्ता ताजी हवा चलती है जिस्सें हवा साफ रहती है श्वास प्राणवायूकों अंदर लेती है और कारवोनिक एसिड गेसकूं वाहर निकालती है झाड वनस्पती इससें उलटीही चाल करती है वनस्पती दिनकूं कारवोनकूं अंदर चूसती है और प्राणवायूको वाहर निकालती है इससेंभी वायुके आवरणकी हवा अर्थात् दिनकूं दरखतोकी हवा साफ होती है और रातकूं वनस्पती प्राणवायूकों अंदर खेंचती है और कारवोनिक एसिड गेसकूं वाहर निकालती है. लेकिन् इसमेंभी इतना फरक है रातकूं जितनी प्राणवायूकूं वनस्पती खेंचती है जिससें दिनकूं प्राणवायूकों जादा निकालती है इसवास्तेही दरखतोंके नीचे रातकूं सोणेकी मनाइ विवेक विलासग्रंथमें जिनदत्तसूरिजीने लिखा है इसतरे हवा एक दूसरेके संग मिलणेसें पवनसें और दरखतोंसें हवा साफ होती है वरसादभी हवाकूं साफ करणेमें मदतगार है इसवास्ते इन सब क्रियाकूं वंध नहीं करणा साफ हवा वहोत अमोल वस्तु है उसके मिलनेका यत्न हमेसा करणा वस्तीमें दटी भई हवा है इस वास्ते हमेस खुली हवा खाणेकूं जाणा चाहिये इसमें शरीरकूं वहोत फायदा मिलता है फिरणेसें शरीरके अवयवोकूं कसरत मिलती है ताजी हवा कसरतसेंभी जादे फायदे वंद है दिनमें तो फिरण घिरणेसें ताजी हवा मिल जाती है लेकिन् रातकूं घरमें सोणेसें साफ

हवाका मिलणा इमारत बणाणेवाले चतुर कारीगर और वास्तुकशास्त्र पढे इजनेरोंके हाथ है आगेके कुंढोके बनाये मकान होय तो उसकूं सुधराणा चहिये ये सब काम धनवंत और जाणकार दिलदलेलोकाहै तोभी अपणी हैसियत मुजब तो जरूरही बणे जहांतक प्रयत्न करणा बाकी तो वो बात है मन चले लेकिन् टट्टू नहीं चले उद्यम करते सीधा और उलटा फल होय तो कर्मोंकी रचना प्रबल समझणी. मलीन कचरा और सडती चीजोंमेंसे उडती गलीच हवासें प्राणी एकदम नहीं मरता है लेकिन् इस वजे बहोत दिनोंतक रहनेमें आवे तो मरण निश्चे होय क्योंके जैन सूत्रोंमें उपक्रम लगके प्राणीकी आयु टूटती है जिसके मुख्य सो भेद है निश्चे मृत्यु एक है ऐसा लिखा है उसमेंके ऐसें २ कारण है लेकिन् वो अपने प्रत्यक्ष नहीं जाण सकते हैं बहोत अदमी तो रोगसें ही मरते हैं वो रोग काहेसें होता है अगर पूरा निदान किया जावे तो बहोतसे रोगोंका कारण खराब हवा ही निकलेगी खराब सकूथ जहर पेटमें जानेसें एकदम प्राणी मर जाता है लेकिन् ऐसा नहीं समझना के थोडा २ जहर अफीम वगेरे नुकशान नहीं करता मगर वो भी कोई वखत सखत् जहरका काम कर गुजरता है इस तरे हमेशों की थोडी २ खराब हवाका जहर शरीरमें वडे नुकशानका कारण वण जाता है फेर बेमार अदमीके आसपासकी हवा जलदी बिगडती है इस वास्ते बेमार अदमीके पास जादा जत्था बंध साफ हवा आणे देनी जैसें शरीरके बाहर ताजी हवा चहिये तैसे शरीरके अदर भी ताजी हवा लेनेकी जरूरी है जैसें बादलीका अथवा कपडेका टुकडा रुबलेयाने नरम हाथसें पकडा भया होय तो बहोत पाणी चुसता है और उसकूं दाबके पकडा होय तो वो टुकडा कम पाणी चुसता है ये हाल अंदरके फेफसेका है जो फेफसा थोडा दबा भया होय तो उसमें जादा हवा प्रवेश करती है उससें खून अछी तरे साफ होता है इसवास्ते लिखते वांचते इत्यादि हजारों काम करते फेफसे बहोत दबे ऐसा टेडा बांका होकर नहीं बेठणा क्योंके अंदर हवा जा नहीं सक्ती इत्यादि ॥

॥ अदमी प्रति हवाकी जरूरी ॥

हरेक अदमी २४ घंटेमें सरासरी ४०० घन फीट हवा श्वासोश्वासमें लेता है शरीरके अंदर इसका हिसाब ॥ सात फीट लंबा सात फीट चोडा सात फीट उंचा ऐसी एक कोटडीमें जितनी हवा अटे इतनी हवा एक अदमी हमेशां फेफसेमें लेता है श्वासोश्वासके लेती भई हवामें कारबोनिक एसिडगेसका नुकशान करनेवाला पदार्थ हजार भाग वाके हवामें ४ सें १० भाग जितनी है लेकिन् जो हवा शरीरमेंसें बाहिर निकलती है उसके हजार भागमें कारबोनिक एसिडगेसका ४० भाग है अर्थात् अढाई हजार भागमें सो गुणा है इसमें सिद्ध भयाके अपणे भीतरकी हवा श्वासके श्वासमें निकलती है एक तरफ तो जहरी हवाकूं बनस्पती चुस लेती है दुसरी तरफसें [illegible] ताजी हवा

उस हवाकूं खेंचके ले जाती है लेकिन् मकानमें हवाके आणे जानेका रस्ता नहीं होय तो कुदरती समवाय सुलटे सो उलटे हो जाते है एक अदमीकूं ७ सें १० फीट चोरस जगे अथवा खणकी जरूरी है जो इतनी जगेमें एकसें जादा अदमी वैठे या सोवे तो उस जगेकी हवा जरूर ही विगडे हवाके निकास पेसारपर जगेकी विस्तारका आधार है हवा जो जादा खुलास आती होय तो जादे अदमी भी थोडी जगेमें रह सकते हैं ऐसा नहीं होय तो वडी जगेमें भी थोडे अदम्योंकों सुखदाई हवा नहीं मिल सकती जो मकान वहोत घरोंके वीचमें आया भया होय तो उसमें उजाला या हवाके वास्ते छपरेमें भी हवाका निकास पैसार रखवाणेकी जरूरी है अदम्योंके मूंमेंसें खराव गंध आती है सो अंदरसें निकलती खराव गंधकी वो है इससें हवाका विगाड और वहोत अदम्योंके एकठे होनेसें जो अदमीका जी घभराता है तव खुल्ली हवामें जानेसें जीवकूं आराम मिलता है ये वातसें अदमी अनुभव कर सकता है के घरकी हवा विगडी भई है या अछी है वाहरसें आये अदमीकूं खराव गंध आवै या जी घभरावे तो समझ लेना इस मकानमें हवा अछी नहीं है शुद्ध वातावरणकी हवाके हजार भागमें १० भाग कारवोनिक एसिडगेसका है अगर इस प्रमाणसें वढकर १० भाग हो जाय तो भी वैमारी नहीं होती इस हिसावसें एक अथवा इससें जादा वढ जाय तो ऐसें हवावाले मकानमें रहनेसें वहोत नुकशान होता है ये परिक्षा हवाकी दुरगंधीके फेरफारसें मालुम हो सकती है ॥

॥ उदक, अप्प, जल । वाटर ॥

जिंदगीकूं मदतगार दूसरी जरूरीकी वस्तु जल है. पाणी प्रवाहीरूपसें ही काम देती है इतनाहीं नहीं खानपानकी दुसरी चीजोंमें भी पाणीका अंश रहा भया है छोटे वालकोंका इकेले दूधसें पोषण होता है उसमें भी जादे हिस्सा जलका है इस वास्ते उसकूं जादे पाणीकी गरज नहीं होती अपणे शरीरमें रस रक्त मांस वगेरे धातुओंमें भी जलका मुख्य भाग है मनुष्यका शरीर सरासरी वजन ७५ सेर गिणें तो उसमें ५६ सेर आसरे पाणी यानें पतला प्रवाही पदार्थ आया भया है जिस अनाज वनस्पतीसें अपणा शरीर पोषीजता है वो सव पाणीसें ही तइयार होती है मलीनता ये वहोत रोगोंका कारण है सो भी पाणीसें ही धुपके साफ होती है अगर जो जरादेर प्यास लगे वाद जल नहीं मिले तो प्राण तडफडणे लग जाते हैं अर्थात् प्राण भी निकल जाता है पाणी विगर प्राण केसें जाता है उसकूं जाणनेकी समझ इस तरे है शरीरके सव अवयवोंका पोषण प्रवाही रससे होता है जैसें दरखतकी जडमें डाला भया जल वो रसरूप पेढसें वडी डालोंमें वडे डालोंसें छोटी डालियोंमें इस क्रमसें सव अंगोपांगमें पोंहचके तेजी और हरा पणा रखता है तैसें शरीरमें भी पीया भया जल खुराककूं रस रूप वणाकर शरीरके सव जगे पोंहचाता दे जो जल कम मिले तो रस और खून जाडा होणा सरू होता है

आखर जाडा होते २ गति बंध होकर मृत्यु होती है खूनके फिरणेकी कितनीक नलियां बाल जैसी महीन होतीहै तो उसमें जादा व जाडा खून महीन नलियोंमें चक्कर नहीं खा सकता. पाणी इतना गुणकारी है वो भी जादा पीणेमें आवे या मलीन विगडा भया होय तो निश्चै प्राणोंका हरणेवाला होता है. खराब जलसें बडे २ नुकशान होता है इय बात दुनिया सब पूकारती है परदेशमें कोइ बेमार गिरजावे तो कहते है पाणी लग गया लेकिन् घर बैठे बेमार गलीच पाणीसें हो जाते हैं उसकी और मलीन जल कैसा होता क्या परीक्षा है क्या क्या बेमारी पैदा करता है उसके सुधारणेकी क्या तजवीज है इय बातोंकूं नहीं जाणकर रोगोंके मिटाणेका इलाज बैलोंसें कराते २ लाचार हो बैठ जाते हैं लेकिन् उसका मूल कारण समझे विगर इलाज होता नहीं इस तरेका अज्ञान फैल रहा है देखो इस दीपकका उजाला सो अंधकार मिटे ॥

॥ पाणीका नमुना ॥

जल खारा मीठा लूणीया हलका भारी मैला और साफ दुरगंध या गंधरहित वगैरेका होना जमीनकी तासीरपर है अथवा आस पासकी चीजोंपर आधार है इसपरसे ये भी सिद्ध होता है आकाशके बदलोंमेंसें जो जल बरसता है वो सर्वोत्तम उसमें भी आसोजकातीका वो पीणे लायक होता है और जमीनपर गिरे पीछे उस जलमें अनेक पदार्थोंका मेल होनेसें विगडता है. पृथ्वीपरका और आकाशका पाणी तो एकही है लेकिन् दुसरे पदार्थोंके संयोगसें गुणमें तफावत होता है हरसाल हर बखत बहोत जल अनेक स्थलोंमें बरसते रहता है और जमीनपर पडा भया जल असंख्य नदी नालोद्वारा दरियावमें जाता है ऐसा है तो भी दरियाव भरके कभी उछलता याने छिलकता नहीं है उसका कारण ऐसा है के वो दरियावका पाणी सुक्ष्म परमाणु होकर [illegible] याने बराळरूपसें आकाशमें जाता है सुक्ष्म हो गया जिस लव्नको विगाड लोकोंनें सूक गया ऐसा बणा लिया है वो बराळ बदलके धूंअर बरसात और बरफ ओले हो जाते हैं तलाव कूए बावडीका और गिराये जाय जो पाणी इत्यादि सबके परमाणु उडते हैं सो आकाशमें चढता है सखत गरमीकी मोसममें पाणीका सूक्ष्म परमाणू बहोत उंचा चढता है इस कारण ही उष्णकालमें नदी नाले जलाशय सूक जाते हैं बरसात फिर २ तेर २ होता है इसका बयान श्रीभगवती सूत्रमें है इस जलकी उत्पत्ती स्थिती और नाशका जो [illegible] है ऐसा सर्व जड चेतन पदार्थोंका घटत वधत आपणा द्रव्य नित्य है गुन भी नित्य है पर्याय अनित्य है बरसातका कितना एक पाणी नदी और तलावोंमें जाता है कितना एक जल जमीनमें घुसकर जमीनकूं गीला करती है पछे उस जलमें [illegible] [illegible] [illegible] उनोंमें भी जलकी [illegible] होती है जहां ठंड ज्यादा है वहां बरसातका पाणी अनेक बरफ हो जाता है बरफोंमें गलकर बडी नदियोंके प्रवाहमें पडता है इस तरे फरता।

होणा चराल उंचा चढणा ये क्रम संसारमें अनादि अनंत है जीव विचार प्रकरणमें हवाके अनेक भेद पाणीके अनेक भेद लिखा है उसमें पाणीके मुख्य दो भेद हैं १ अंतरिक्ष जल १ भूमी जल २ आकाशमेंसें जल जो वरसता है उसकूं अधर झेल लेना वो तो अंतरिक्ष जल है जमीनमें पडे पीछे नदी कूआ तलावसे जो मिले सो भूमी जल है आकाशमें भी कितनेक मलीन पदार्थ फिरता है उसके संयोगसें आकाशके पाणीमें कुछ २ विकार होता है तो भी जमीनपर पडे जलसें अच्छा होता है आसोज कातीका जल पहलेके वरसादसे जादा अच्छा होता है इसवास्ते उपाशकदशा सूत्रमें आनंद श्रावक वगेरोंनें आसोजकातीका अंतरीक्ष जल जन्मभर पीणारख्का है ऐसा लिखा है फेर मोसम विगरका वरसाभया पाणी जेसें पोसमाहका वरसाभया अंतरीक्ष जलभी नुकशान करताहै तेसें मोसमकाभी वरसा नुकशानकारी है जेसें अश्लेषा नक्षत्रका वरसाभया जल वहोत हानी कर्ता है नालक वचन है वैदांघर वधावणा अश्लेषावूठां ॥ आकाशमेंसें जो गडे याने ओले गिरते है उसका जल तो अमृत जैसा मीठा और अच्छा है लेकिन् वो वंधाभया खाणा वंधीवरफकाखाणा जैनसूत्रोंमें अभक्ष लिखा है अभक्ष सूत्रकारोंने जो जो वस्तुकूं लिखीहै वो सव रोगकर्ता समज लेणा इनोंका गलाभया जल केइयक रोगोंमें अच्छा है वरसातकी धाराका जल जाडेकपडेकी झोली वांधके पात्रमे लिया जाय या साफ आगोरके टांकेका जल ये सव जल उपयोगी है भूमीजलका दो प्रकार है जांगल १ और आनूप २ जो मुल्क थोडे जलवाला थोडे वृक्षवाला पित्त तथा खूनके विगाडके उपद्रव वाला होय वो जांगल देश कहलाता है उसकाजलसो जांगल जल तेसें जो मुल्क वहोत जलवाला वहोत वृक्षोंवाला और वायु तथा कफके उपद्रववाला होय उसका जो जल सो आनूप जल कहलाता है जंगलका जल स्वादमें खारा भलभला पाचन करनेमें हलका पथ्य और वहोत विकारोंकूं मिटाता है अनूपका जल मीठा और भारी होणेसें सरदी तथा कफका विकार पैदा करता है इसके सिवाय साधारण देशका जल जिसमें नही जादा जल हमेसां पडा रहता होय और न वहोत दरखतोंका झूंड होय याने दोनुं सरासरी होय वो देश हेद्रावाद नागपुर अमरावती खानदेश आदि समझना इनोका जल और जुदे २ जलाशयोंके भेद गुण दोष नीचे मुजव ॥ नदीका जल पडे जलसे वहोत अछा वहोतसी वडी नदियोंका जल जमीनके तलेमुजव अछे और वुरे स्वाद मट्टीके तासीर मुजव होता है वरसातकी मोसममें नदीके जलमें धूल कचरा और गंदकी वहकर एकठी होती है उस वखत वो जल पीणेलायक नहीं होता दो च्यार दिन पडे रखनेसें साफ नींतरकर पीणेके लायक होताहै झाडीमें वहते नदी नाले देखनेमें तो साफ दिखते है और वो जल पीणेमें भी मीठा लगता है लेकिन् अनेक दरखतोंकी जडसें लगकर वहणेसें वो जल महा खराव होता है उस जलसें वुखारकी पैदास होती है और ऐसी हवामें रहनेसें भी वहोत

नुकशान होता है जैसे शिखरगिरी पार्श्वनाथ पहाड आबू गिरनार आदि पहाडोंके नदी नालोंका जल पीनेवाले बुखार ताप तिल्ली वगेरे रोगोंसें दुखी रहते हैं यही हाल बंगालेके पास अडंग देश रायपुर वगेरे झाडीका जल समझना ऐसे जलकूं तीन उकालेमें शेरका तीन पाव रखकर गरम कर पीछे ठंडा कर जाडे वस्त्रसें छाण कर पीना केइ एक नदी छोटी २ होती है जिसका जल धीमें २ चलता है फेर उस पर मनुष्योंकी और जानवरोंकी गंदकी मैल चला आता है (जैसें) दक्षण हैद्राबादकी मूसा नदी एसोंका जल पीणे लायक नहीं नल होनेके पहले कलकत्तेकी गंगा नदीका जल भी बहोत नुकशान करता था अद-म्योंका स्नान मैल आदि गंधर्कामे, दुसरे बंगालेमें जलदागकी प्रथामें मुडदेकूं गंगामें ही डाल देते थे उस गधसे भी पाणी बहोत बिगड जाता था नलके पाणीमें कदर्जीयत देखनेमें आती है मुंबई कलकत्ता वगेरे शहरोंमें, बहोतसे शहर तथा गामडोंमें पाणीकी तंगचीके लिये कूवा वगेरे जलाशय नहीं होनेके सबब एसी गंधे जलवाली नदियोंमें नि-र्वाह करणा पडता है इस कारण सब वस्तीवालोंके तन दुरस्तीमें बिगाड होता है खुली साफ हवामें महनत मजुरी कर शरीरकूं अछी तरे कसरत देनेवाले गांमडोंके वासिंदोंकूं बुखार सताता है उसका असल मतलब गंदा खराब पाणी ही समझना जिस जगे जल-का एक ही स्थल तलाव वगेरे होता है तब लोक उसीमें स्नान करते हैं मैले कपडे धोते है जानवर नाहते हैं और वो ही जल पीते हैं इससें बहोत नुकशान होता है इसवास्ते हमारे जैनी श्रावक विमल मंत्री वस्तुपाल तेजपालादिकोंने प्रजाहितार्थ हजारों कूवा बावडी पुष्करणीयां करवाई ऐसा लिखा है जेसलमेरु पास लोद्रवकुंड रामदहर पास उ-दयकुंड अजमेरु पास पुष्करकुंड ऐसे तीन अखूट जल पुष्करणी राजा उदाई सींधु देश-वालेके पाणीकी तंगी फोजमें होणेसें पद्मावती देवीने तीन जलाशय बणाये इत्यादि, राजा अशोक चंद्रादिकोंने दरखत और सडक जलके नहेर अपने चंपा वगेरे जलके तरे खरचों बणवाणा सरू कियाथा तवारीकोंसे सावित है, चाहिये सरकार राजा माहाराजा सेठ साहुकार अथवा सामान्य प्रजा भी मिलके जलकी तंगी मिटानेका जलके सुधारनेका प्रयत्न करे अगर जो पाणी पीनेकी एक ही नदी होय तो ऊपरके तरफका जल पीनेके लेणा वस्तीके निकासकी तरफ अर्थात नीचेकी तरफ स्नान कपडा धोना जानवरोंकू पाणी पिलाणा गजरदम जल साफ रहता है उस पछुन जल भरना ठेना लोकोंके मुंहसे पासें सरकारकूं चहिये जल स्नानघर पहरा बिठलाना और न्हाना धोना रोकना जो नदी मेर आदमीकी जजाई गई ताउ उन जलोंमें डालते हैं फेर कमाना नोरसे जो नदी बहोत पाणीकी बडी है उनका मैल कचरा वहे वह आता है या किनारे भ पाणी है लेकिन जो नदी छोटी और चलते पाणी तथा तलाव इसका सबोंमें ढोरी नदीका पाणी अच्छा होता है इस पाणीके सुधारनेके जिनोंके मुख लिखाते

जलमे घुसके स्नान करणा दांतण करणा वस्त्र धोणा मुरदेकी राख तथा हाड (फूल) डालकर जलकूं खराब कर प्राणियोंकू रोगी करणा धर्म कायदेमें सखत मनाई है अस्थि यामुरदेकी राखसें हवाभी खराब न होणे पावै इसस्वास्ते उनोंकों वीचमें देकर स्तूप करादेणा (थडाछतरी) की जैनियोंकी परंपरा है जबसे भरत चक्रीनें कैलास. पहाडपर सोभायोंपर स्तूप कराया तबसें, कूवेका जल पाणीका खारा मीठापणा जमीनके स्वाद तासीरपरहे गहरे कूवेका पाणी छीलर कूवेसे (नजीक पाणी वालेंसे) अच्छा होता है जेसे बीकानेरमे साठ पुरुषके कूवेका निहायत ऊमदा जल है और साफ है कूवेके आसपासकी जमीन पोली होती है और उसमें कपडेके धोया मैलका पाणी स्नानका वरसादका गंधा पाणी भरता है तो वो जल विगडता है लेकिन साठ पुरुषके कूवेतक पोहचणा नहीं संभवता जिन कूओंपर दरखतोंके झुंडझुम रहें होय उसमें पत्ते गिरते रहते हैं सूरजकी गरमी पोंहच नहीं सकती ऐसे कूवेका जल अकसर विगड जाताहै इसतरे जो कूये नहीं वाये जाते याने हमेसा पाणी नहीं निकाले जाता ऐसेका जल खराब होता है और जो कूआ मजबूत बंधाभया होय न्हाणे धोणेके पाणीका निकास दूर जाता होय आसपास दरखत या गलीचपणा नही होय जिसकी गार वेरवेर निकाली जावै ऐसे कूवेका तथा वहोत गेहरे कूवेका खा रासकर रहित जमीनके कूवेका पाणी साफ और गुणकारी होता है लेकिन् आसपासकी जमीनसे आयाभया गंदा कचरा उस जलमें न आता होय टांका (कूंड) का पाणी, टांकेका पाणी वरसातके जलसे मिलता होता है लेकिन् छत आकासीका पाणी नलसे जो टांकेमें लिये जाता है उस छतपर धूल कचरा जांनवरोंकी वीट कूत्तेवीलीकी विष्ठा वगैरे गलीच पदार्थोंसें पाणीमे मैल होकर विगाड होता है इस वातोंका ख्याल रखना दुरस्तीका जल टांकेका अछा है लेकिन ये जल हमेशा वंध रहणेसें विगडता है इस्वास्ते हमेसां पीणे लायक नहीं है टांकेका जल स्वादमे मीठा और थंडा होता है पचणेमें भारी है वहोतसे जलका फायदा कुफायदा नही समझणेवाले लोक वहोत वरसोंतक टांकेकू धोकर साफ नही करते पाणीकूं तंगीसे खरचते हें पीछले चोमासेंके रहे जलमें दुसरा जल फेरले लेते हैं इस वातोंका खयाल रखणा एक वरसातसें छपरा छत मोरी वगेरे धुपके साफ भये वाद जल लेना (जीवाणी) जलके जीवोंकूं छाणके कूवेके वाहर कूंडी वगेरेमें डलवाणा आखिर यह दया पलणी मुसकिल है क्योंके कूंडीमें थोडा जल होय तो गरमीसें सूकके मरते है जादा होय तो जानवर पी जाते है वहोत दिन पडे रहे तो गंधकीके डरसे कूवेका मालक धोकर जमीनपर फेक देता है जीवाणी लेजाणेवाले रस्तेमें गिरा देते हैं एक जलके जीवको दुसरे कूवेके जलमें गेरणेसें दोनुं मर जाते हैं वस विचारके देखा तों आखर हिंसाका वदला देना होगा कोई उपाय संसारवासमें इसका नहीं है इसपर ये वात है दुहा गोतमका प्रश्न है वीर भगवा-

...किसविषयलें १

से, जीवे जीव आहार विना जीव जीवे नहीं भगवत कहो विचार दया धर्म किसविषयलें १
उत्तर भगवानका (दुहा) जीवे जीव आहार जयणासें वर तो सदा गौतम सुनो विचार
टले जितनोही टालिये २ करुणावंतपणा है वो ही दया धर्मपणा है नलका पाणी, नदि
योंका या तलावोंमेंसें छणणेके वास्ते गहरे कूवेमे लिये जाता है उहांसें छाणकर
(फील्टर) होकर नलमें आता है साफ कीये जाता है नदीके जलसें ये अच्छा है
वादसाही अमल राजोंके अमलदारीमे नदीके इधर क्यारे वणाये जातेथे उसमेंसेजा
आकर जो जल जमा होताथा सो अछा होताथा घरोंमे नल किसीराज वियोंनें लाख
वर्षमें तो लगाये नही आगेकी क्या खबर विना प्रमाण लिख नही सकते सहरोंके पाह-
रतो दूर २ से जलकी नेहरे राजोंनें बंधवाईथी यहतो इतिहास है और किसी राजवोंने
लगाया होगा नल तो आपकेही घरमें लेकिन प्रजाके नही, आगे पाणीकूं दूर पोंहचाणेकूं
चमडेके बंबे पिचकारे वगेरे यंत्र तो प्रचलितथे नलके पाणीसें आदमी गोरा और वृथा पुष्ट
थोडे दिनमें दिखणे लगता है अंदर सत्व कम होता है लेकिन जिस २ जगेके जलकी
लागसे हजारो आलम मरतेथे वो तो सुधारा हो गया मुंबई कलकत्ते वगेरे घडे सहरोंमें
नीचे गटरकी गंधी सरदीसें बुखार (प्लेग) दुष्ट विस्फोटक रोग प्रजाकूं भारत वर्षमे
चहोत दिकूकर रख्का है ये सर्व महिमा दुष्ट गंध गटर मोरियोकी हवा और तरीसें चल
रही है। सं। विक्रमके तेपनसें मुंबईसें सरूभया सात वर्ष भया अगर उद्यम आदि
पांचो समवाय सुलटे होकर वर्ते जरूर मिटेगा, जंगल खुसक मुलकमें ये रोग होणा
नहीं पांचो समवाय सीधे हें जहांतक, तलावका, पाणी कितनेक तलाव तो तलसीके
जलका होता है जिसके नीचे या आसपास तलावके पहाडका झरणा होता है उनका
तो अखूट जल होता है कितनेक वरसाती जलका होता है इनमेंभी आसपासके गंध
कचरे वगेरे जलके पूरमें वहके आते है दोय च्यार दिनबादनीचे जमता है तब जल
साफ होता है लेकिन जिस तलावमें लोक नदीका हाल लिखा है [illegible] भारी [illegible]
[illegible] होता होय तो वो जल पीणेकूं नही लेणा तलावका पाणी मीठा [illegible] बिमारियोंको पैदा करता है
त्रिदोषहर और सरदी करता है लेकिन मैला जल बहोत [illegible] जल महता है तलावका [illegible]
पाणी बिगडणेके कारण नदी तलाव का फरक है नदीका जल [illegible] होणा संभव है, [illegible]
गया है इसवास्ते नदीसें तलावके पाणीसें जादा बिगाड होणा [illegible] गुरुवाहै लेकिन [illegible]
— उपयोग लिराते है, सो धणआशा राजा महा राजोंमेंभी [illegible] कमेवर तलावका [illegible]
॥ वेभी घडी बात है, हेमंत ऋतु तथा। शिशिर ऋतुमें [illegible] तथा पहाडके [illegible] पाणी [illegible]
[illegible] है गमत और ग्रीष्म ऋतुमें कूवेका [illegible] है [illegible] ऋतुमें [illegible]
[illegible] ऋतुमें आकाशसें गिरता [illegible] जल अथवा [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] अथवा जिस जलपर दिनभर तो सूर्यका किरण पडती [illegible]

एसा जलपथ्य है ये जल अंतरीक्ष जल जेसागुणकारी है रसायण रूप है ताकतवर है पवित्र वडा हलका अमृत जैसा है एक प्राचीन आचार्यनें एसाभी लिखा है पोषमें सरोवरका माघमे तलावका फागुनमे कूएका चेत्रमें पहाडोके कुंडका वैशाखमे झरणेका जेठमे जमीनकूं चीरडाले एसे जोरसे वहते भये नालेका, या नदीका अशाढमे कूवेका श्रावणमे अंतरीक्षजल भादवेमेकूएका आसोजमे पहाडके कुंडोका काती मिगसरमे सवजलाशयका जल पीणे लायक है लक्ष्मीवल्लभ जैन निघंटसे पूर्वोक्त विवरण लिखा है.

॥ खराव जलसे प्रगट वेमारी ॥

खराव जलसें अनेक रोग होते है उसमें मुख्य २ रोग लिखते है, कितनेक रोग जीवोंसे याने कृमीसें पैदा होते हैं लेकिन उन जीवोंके पैदासकी जगे असलमे खराव जल है, जमीनके संयोगसें पाणीमें खार मिलणेसें पाणीमें मिठास और पाचनशक्ति वढती है लेकिन जो खारका अंस जादा होता है तो येही जल कितनेक रोगोंका कारण वण जाता है जलमें वनस्पतीका सडना और मरे जानवरोके दुरगंधित परमाणु जव मिलता है तो वहोतही खरावी करता है बुखारठंढ देके (ज्वर) तेसें विषमज्वर तेसें मेलेरिया नाम हवासें पैदा होणेवाले तावका कारण खराव पाणी है पाणीकेभिगाणेसें हवा विगडती है हवा विगडणेसें पाचनशक्ति मंद पडती है तव वुखार आता है जंगल देशका जल लगणेसें जो रोग होता है सो पाणी लगे कहलाता है, दस्त मरोडा ॥ २ ॥ ये दस्त मरोडेकी वेमारी खराव पाणीसें पैदा होती है क्यौंके ये रोग चोमासेमें जादा पैदा होता है मतलववरसातके जलमें मैला कचरा वहकर आय मिलता है एसा जल पीणेसे अतिसारकी वैमारी पैदा होती है (३) कवजीयत । अजीर्ण भारीअन्न खराव जलसें अजीर्ण अथवा कवजियतका रोग होताहे (४) कृमि जंतु खराव पाणीसें शरीरके अंदर तेसें वाहर कृमियोंका उपद्रव होता है साफ पाणी चमडीमें पैदा होणेवाले कृमियोंकों मिटाता है गंधेजलसें पैदास होती है (नारू) नारूके दरदसें वहोत लोक कष्ट पाकर मरजातेहे ये नारू खराव जलके स्पर्शसें अथवा विगरछाणे या गंधेजलके पीणेसे होता है (६) चमडीका रोग दाद खाज गडगुमड वगेरे खराव जलसें होता है कृमिनाशक दवाओंसें ये रोग मिटता है इसरोगमें जीव खराव जलसें पैदा होता है ये अनुभव है (७) हैजा [कोलेरा] कितनेक आचार्य लिखते है विशूचिका रोग अजीर्णसें होता है और कितनेक कहते हैं पाणी तथा हवाके अंदरके जहरी जानवरोंसें होता है इसमें जादा फरक नहीं है कारण अजीर्णसे कृमि कृमीसें अजीर्ण होता है [८] पथरी [असमरी] जलके विकारसें पैदा होती है लोकीकका एसा कहणा है धूल कंकर खाणेसें पथरी वंध जाती है ये तदन झूठ है असलमें जादा खारवाला जल पीणेसे पथरी प्रायें होती है येवात माधवाचारीके भी देखणेमें नही आई दूसरे तो माधवकूं सर्वोपरी

निदान समझते हैं प्राचीन जैन शोमाचार्यने लिखी सो बात डाक्तर भी मांनते है इत्यादि प्रत्यक्ष अनुमविक पाणीके रोग मेंने लिखा है सो यथार्थ है नमाने सो पतमाण लेवे ॥

॥ जलकी परिक्षा साफ करणेकी विधि ॥

साफ जल रंग खसबो स्वाद रहित तथा निर्मल और पारदर्शक होता है याने आर पार साफ होता है सेवाल तथा वनसतीके योगसें जल हरा रंग पकडता है और प्राणियोंके शरीरका कोई भी द्रव्य जलमें मिला भया होता है तब जल पीलास पकडता है जलकी परिक्षा बहोत तरे हो सकती है जिसमें सहज परीक्षा इस तरेसें है साफ काचके सुपेद प्याले पारदर्शकमें जल भरके वो प्याला उजालेमें धरणेसें उसका निज रंग अथवा मैलापणा मालम हो सकता है पाणीमें दुरगंध होय वो पीणेसें यासुंघनेसें एकदम उसकी खबर पडणी मुसकिल है लेकिन उसकूं उकालकर उसकी खसबो सुंघी जावे तो उसके गंधकी मालम हो सकती है यह तो प्राचीन जैनीयोंकी चलती परीक्षा है डाक्टरी परीक्षा लिखते हैं पाणीकूं एक शीसीमें भरकर पीछे खूब हिलायकर वो पाणी सुंघणा जलमें पोटास डालणेसें जो वो (गंध) आवे तो समझना जल अछा नहीं है जलमें दो पदार्थोंका भेल है एक तरेका पदार्थ पिघलके पाणीके संग मिला भया होता है दुसरी तरेका पदार्थ पाणीसें अलग होजानेवाला लेकिन जलमें मिला भया होता है प्यालेमें जल भरके थोडी देर स्थिर रखनेसें जो नींचे बैठता है तो समझ लेणा इस जलमें दुसरी वस्तुका भेल है पाणीमें खार वगेरे पदार्थ कितनाक है वो जाननेके वास्ते थोडा जल तोलकर बरतणमें जलाणा पाणी सब जलेबाद तपेलीकेतले जो खार वगेरे पदार्थ रहे उसकूं तोलनेसें मालम होगा की इतने जलमें इतना खारका भाग है एक ग्यालन जलमें खार वगेरे पदार्थ १५ रत्ती होय उहांतक वो जल पीणे लायक है खार ज्यों कम होय सो जल अछा लेकिन खार बिगरका अछा जल भी स्वाद नहीं देता खार मिला जल पीणेमें मीठा और पाचन शक्तिकूं मदत देता है खार जादा होय तो जल खारा लगता है और नुकशान भी करता है पाणीकूं साफ करने और अछा करनेका अनेक उपाय है सहज उपाय जैनोंकी प्रसिद्ध किया है ॥ पाणीकूं शेरका तीन पाव उकालके मट्टीके बरतणमें टारके पीणा ये जलकूं कल्पसूत्रमें शुद्ध लिखा है साफ है गुणकारी है और हलका है जलमें फिटकडी और निर्मली घांटके डालनेसें पाणीके मैलकूं तले बिठलाती है जल छाने बिगर कभी पीणा नहीं नातणा जाडे मजबूत वस्त्रका होना, अब डाक्तरी क्रिया ॥ एक मटकीके नीचे महीन छेद करना उसमें आंगेनक वेलू तथा कोयलेका भूका भरना उनपर दुसरा मटका जिसके तले छेदकर उसमें डोरा पोकर लटका देना उसमें जल भरणा तीसरा खाली मटका रेती कोयलेंआदिके नीचे धरना उसमें टपक २ जो जल आवे वो पीने लायक होता है स्टेशनोंपर ऐसा देखा है ॥

॥ पाणीका दवा मुजब वर्त्ताव ॥

जैसें खराव जल कितनीक वेमारियां पैदा करता है तैसें कितनेक रोगोंकूं मिटानेमें दवाका काम करता है जो जो बेमारी अशुद्ध जलसें पैदा होती है वो शुद्ध जलसे होती नहीं इलाजके तरीके गरम जल तथा ठंडा जल दोनुं काम देता है सो इस मुजब १ शीतोपचार ठंडे जलका गुण, रक्त स्तंभक दाह शामक और संकोचकारक होणेसें खून गिरतेकूं वंध करता है इसवास्ते इतने रोगोंकों फायदे वंद है १ खूनकागिरणा नकसीर वहती है तव तालवेपर ठंडा जल डालनेसें वंध होता है ऐसे वंध नहीं होय तो नाकमें छावके या पिचकारी मारणेसें उसी वखत खून वंध होता है जखमके खूनकूं ठंढे पाणीका पाटा एकदम वंध करता है हाथमें चकु वगेरे कोई हथियार लगा होय तो ठंडे जलका पाटा वांधणेका रिवाज है चोट वगेरे लगके खून नहीं निकला और लील जमणेका संभव है जलका भींगा वस्त्र वांधे रखनेसें तुरत खून विखरके दरद मिटता है तरवार वगेरेका जादा जखमपर हरदम गीला पाटा रखनेसें जलदी आराम होता है सुवावड कुसुवावड यानें अधूरा गिरणा जव खून गिरणासरू होता है तव गर्भाशयपर ठंडा पाणी डालनेसें अथवा उसमें वरफका टुकडा धरणेसें खून गिरता वंध होजाता है पेडू साथल यानें जांघ उत्पत्ति अवयवपर ठंडा पाणीका भीगा वस्त्र धरनेसें फायदा होता है लेकिन गर्भपातके चिन्ह मालम पडते ही ये इलाज करना मासिक ऋतु धर्मका खून अगर जादा जाने लगे तव भी इसीतरे ठंडे पाणीके इलाजसें मिटता है मूर्छा मृगी हिस्टिरिया वगेरे तथा मेसमेरिजमसें वेसुद्धी वगेरे रोगादिकोंमें आंख तथा शिरपर ठंडा पाणी छांटणेसें जलदी जागृत अवस्था होती है, २ संकोचन ॥ ठंडा जल स्नायुओंकों संकुडाता है इस वास्ते आंडोमें सूजन हो जावे अथवा आंतरे उतरकर वहोत दरद करे तव वृषणपर ठंडे पाणीका भीगा वस्त्र धरणा अथवा वरफ धरणा जिस्सें आंतरे सकुडा कर चढ जाता है प्रदर और तोके धुपणी सुपेद पाणी गिरनेका रोग होता है जिस्सें सुपेद लाल तथा मिश्र रंगका खून गिरता है वो ठंडा पाणीके छांटनेसें या पिचकारीसें वंध हो जाता है इसतरें औरतोका शरीर नाताकत वालककी कांच निकलती है ये दोनू ठंडे पाणीकी धार देनेसें संकुडा कर अंदर चली जाती है शरीरका आवाज वैठते ऊठते औरतोके मूत्र मार्गमें अवाज भया करती है वो भी ठंडा पाणी उसपर छाटणेसें फायदा होता है पुरुषके वीर्य गिरणे अथवा स्वप्न दोष होणा तव रातकू सूती वखत पेडू तथा कमरपर जल छिडकणेसें वीर्यकी गरमी कम होती है वीर्यकूं वहनेवाली नसो मजवूत और संकुडाती है ऐसा होनेसे कितनेक दर जे फायदा पहुचता है ३ दाह शमन । ठंडा जल शरीरके अंदरकी और वाहरके दाहकी शांति कर्त्ता है आंखकी गरमी जैसें खूनसें आंख लाल हो गई होय तो मूमें ठंडा पाणी भर लेना ऊपरसें ठंडा पाणी छांटणा मिट जाती

है सखत ताप बुखार शिरपर ठंडा पाणीका वस्त्र धरणा या बरफ जिससें मगजमें बुखा-रकी गरमी नहीं चढसके क्योंके बुखारकी गरमी मगजपर चडनेसें तुरत प्राण निकल जाता है (उष्णोपचार) गरम इलाज,वादीपर कफके रोगोंमें गरम पाणी बहोत फायदे बंद है जेसें सेक वफारा नास पिचकारी कुरले जलमें बैठणा स्नान धोणा वगेरे शेक शरीर-पर गांठ गड गूमड सोजा इसपर लूपरी(पोटिस) बांधनेकी रिवाज हैं लेकिन गरम जल-का सेक पोटिस बांधनेसें जादा फायदे बंद है होतेभये दरदमें गरम जलका सेक दरदकूं दबा देता है और जोर करे पीछे पीडाकूं कमकर देता है और जल-दी पकाता है पेटमें दरद गुरदेकावरम सोजा पांसली तथा छातीमें चमक शूल जम गया खून वगेरे दरदोमें गरम पाणीका सेक फायदा करता है गरम जलमें फुलालीनका कपडा या ऊनका गरम कपडा नीचोकर दरदकी जगोंपर वेर २ धरणेसें वाफका सेक लगता है अथवा अंगीठीपर जलकी तपेली रखकर ऊपर चालणी रखणी उसपर गरम कपडा धरकर ऊपर थाली ढक देना इसतरे पाणीकी वराल कपडेमें आती है उस कप-डेसें किया भया सेक बहोत फायदा करता है योनि तथा इंद्रीका पकणा आंटोकी सूजन ये भी गरम पाणीके शेकसें आराम होता है पेडूपर गरम जलके सेक करनेसे पेसाबका खुलासा होता है (नास)गरम पाणीकी नास अथवा वफारेसें पसीना आकर शरीर हलका पडता है शरद गरमीका तप शरदी शिरका दरद मिट जाता है शिरके दरदमें गरम जल-की नास फायदा देती है सखत बंध कुष्ठके पुराणे दरदमें जब किसी भी दवासें दस्त नहीं आवे तो गरम पाणीकी पिचकारीसें तुरत आता है डाकदर गरम जलमें एरंडीका तेल भी मिलाते हैं (कुरले) गरम पाणीके करनेसें मूंके फाले मूं आजाणा दांतकी पीडा दांत निकलाये बाद जो तकलीफ हो जाती है सो सब मिट जाती है गरम जलमें बैठ-नेसे हिचकी धनुर्वात जो कमाणकी तरे बदनमें कूं करदेती है सो, मूत्रकृच्छ्र वगेरे पहो-तसे दरदोमे गरम जलमें सहमके ऐसेंमें कमर चूड निठाणा निग औरतका ऋतु धर्म अटके और दरदकरके आता होय उस औरको गोडेतक गरम जलमें रखकर घंटे भर में आराम होता है अब हमने जो जो बेमारियां पसीने निकालके लोकोंकूं आराम किये हैं गरम पाणीसे सो लिखते हैं, उपदंश(गरमी) लिंगद्रीपर गरम जलकी धारा देना वायके रोगोंमें पसीना गरम पाणीसे देना स्नान भी करवाना सन्निपात और आमके ज्व-रमें पसीना निकालना जीर्णज्वरमें पसीना निकालना कुआकने गठिया होप जिसमें पसी-ना निकालना वायके अजीर्णमें पसीना निकालना जाडेमें हिचकीमें आमसे आमके कफके रोगमें सर्व वादीके रोगोंमें टबटोम स्नान कराना उन्मादरोग पागल पनेमें गरम जलसें जलकी धारा देना भया घंटे भरतक स्नान कराना उरू स्थंभमें पसीना निकालना यह रोगमें पावोंमें हाथोंमें रस इनके फूल और ना नीडीमतक जो

पदरोगमे विद्रधी अंदर पेटमे या बाहर पकनेवाली गांठमे मस्तक रोगमे कर्ण रोगमे नेत्र रोगमे नाककेरोगमे मुख रोगमे सूजनके रोगमे पथरीके रोगमे शूलके रोगमे पसीना गरम जलसे निकालना औरतके जापेके रोगमे नरम थोडा पसीना निकालना विष रोगमे जलकी धारा और स्नान कराना जिस २ रोगोमे वायूकी और कफकी प्रवलता है वो रोग ऊपर लिखे सो सब आराम होते है मैने अनुभव किया है सो ही लिखा है ये समझ रोगोकी जो निदान मैने आगे लिखा है उस प्रकार रोगोकी परिक्षा कर लेना अथ पसीना निकालनेकी विधि लिखते हैं, पहली तेल या घीमे सींधा निमक मिलाकर घंटे भर शरीर मसलाणा फेर एकांत कोठेमे हवा न आतीहोय जहां बैठ कंवल या रजांइ जिस्से शरीर सब ढाककर संकडे मूंके घडेमे खूब उकाला भया जल झवोलके अंदर धरवा देना पसीना पूछके साफ करते जाणा जब वाफ बंध हो जाय तब कपडे पहन लेना पसीना सूके बाद फेर बाहर आणा पूर्वोक्त रोगी वहोत निर्वल होय तो पसीना थोडा देना या सर्वथा देना ही नहीं पित्तसे उठे रोगोमे पसीना देना नहीं इसीतरे वाय कफके सर्व रोगोमे शेरका तीन पाव रहा जल पथ्य है अति सारके रोगमे दशांस सोले शेरका शेर या सो शेरका शेर औटाया जल सो दवाकी एक दवा है जल उकालती वखत वाय हरण कर्त्ता कफ हरण कर्त्ता रोगोके अनुसार दवाये भी मिलाते हैं पसीने निकालनेवाले जलमे दवायोका असर वाफसे अंदर पोहचके गुण करता है ।

॥ किरण दूसरी २ खुराककी जरूरी ॥

अदमीका शरीर एक जीवित चलता सांचा है एनजिनका दृष्टांत शरीर ऊपर घटता है जिसतरे अंजन चल शके इसवास्ते वलीता हवा और पाणीकी जरूरत पडती है इसतरे शरीरके चलनेवास्ते खुराक पाणी और हवाकी जरूरत है इंजनकूं हांकनेवाला नोकर पगार बंध एनजीनीयर चाहिये तैसें अदमीके शरीरमें कर्म बद्ध स्वभाव शक्ति सिद्ध जीव इस शरीरका चलानेवाला है इसवास्ते बाहरकी गतीकी उसकूं जरूरत है नहीं विगडे कलोंकों कारीगर सुधारते है तैसें वैद्य डाकटर इस शरीर संचेके सुधारनेवाले है ये स्वाभाविक गती कायम रखनेकूं उसकूं खुराक हवा पाणीकी जरूरत पडती है शरीर उसके जन्मके संग ही ओछे अधिक प्रमाणमें कोईकूं कोइ तरें हमेस क्रिया करताही रहता है जैसें एनजीन उसकी क्रियामें धूआं और राख वगेरे निकम्मे पदार्थकूं बाहिर फेंक देता है तैसें शरीरभी चमडी फेफसा मलाशय मूत्राशय द्वारा निरर्थक पदार्थ पसीना मल तथा पैसाव रूपकों बाहर फेंक देता है ऐनजीनके अंदर वलीता जल और हवा जोकी ऐनजीनसें पूरा होता है तो भी उस अंजनसें अलग रहता है लेकिन अदमी जिस खुराक हवा पाणीकूं शरीरके अंदर लेता है वो चीजों शरीरमें क्षय पाणेके पहले उस शरीरके संग मिल जाता है और उससें उस वस्तुओंका पोपण कारक भाग शरीरमें मिलता

है और निरर्थक हिस्सा बाहिर निकलता है मल मूत्र तथा पसीनेके रूपमें शरीरमेंसें जाता है वो शरीरका क्षय कहलाता है इय हमेसां होता है और इसक्षयका बदला खुराक हवा और पाणीसें पूरा होता है अदमी जो महनतका काम जादा करता है त्यों जादा घसारा लगता है और जो जादा क्षय होगा तो पोषण कारक पदार्थ जादा चहियेगा चलने बोलणेमें वांचणेमें और आंखमटकारणे जेसी क्रियातकमें शरीरके परमाणु समय २ में खिरता है और उसकी जगे नये परमाणु आते जाते हैं इसपर विद्वानोंनें एसी भी गिणती करी है सात २ वर्षसें अपणे शरीरका साबत खोखा नयाही बंधता है मतलब आगे जो सातवर्ष पहिले अपणे शरीरमें जो हाड मांस खून वगेरे था सो सब खिरते २ खिरजाता है और क्रम २ सें नये २ रजकणोंसें शरीरकुं दुसरे परमाणुओंसें नयाही बणा देता है सांपकूं कांचली गिराते तो आदमी देखते हैं लेकिन् वो तो मुदतपर छोडता है। अदमी और सब तरेकी जीवायोनि समय २ में कांचली गिराते हैं और नई धारण करते हैं इसवास्ते जैनसूत्रकार शरीरकूं पुद्गल कहते हैं शरीरमेंसें हमेस एक वडाजथा नासपाते जाता है नख तथा बाल बढता है और गिरते भये अपणे नजरोंसें देखते हैं लेकिन् लाखों सूक्ष्मरजकणे शरीरमेंसें उडते है सो अपणेकुं दिखता नहीं शरीरमें लाखों छेद मल मूत्र और श्वासवगेरोंके दुसरे द्वारोसें शरीरका भाग विनास होते जाता है समय २ में जो परमाणु शरीरमेंसें खिरते जाते है अगर भरती नही होय तो सूक २ कर प्राणी मरजाते क्षय राजरोग इसीका नांम है उत्पत्ति स्थिती और नाश ये तीनों सृष्टिका जो नित्यनियम है सो क्रम अपणे शरीरमें हमेसां चलता है ऐसा देखकर सब सृष्टिका प्रवाह इसीतरे नित्यानित्य समझ लेणा शरीरके पुराणे पडे भाग बुड्ढे अद-मीकीतरे अपणा २ काम नहीं कर सकते वो निकलकर उसकी जगे नये पर्याय लग जाणा ये कुदरती स्वभाव है उस नियमकूं चलानेवाला क्षुधा वेदनी कर्म याने भूख ना-मका हलकारा टेमोटेम शरीरके भागोंकूं भरने वास्ते अन्न पान मांग लेता है जो मांग-णीका अनादर किया जावे या देरीसें दिया जावे तो उसकी मददगार अशाता नाम वेद-नी कर्म वो जोर करके नाश अथवा जादा परमाणुओंका निकलना इसकूं कोई रोक नहीं सकता अर्थात् बेमारीका हो जाणा ये उस कर्मकी साबूती मिल जाती है क्योंके जितना जलदी शरीरके परमाणु नाश होते हैं इतने जलदी रोगके कारण वो परमाणु पीछे नहीं भरती होते जैसे चराकके रोसनी लायक तेल नहीं भरनेमें आता है तो चराक बुझ जाता है इस तरे शरीरकी घसारे नुकसानी भरनेके वास्ते कुछ बाहरके चीजोंकी जरूरी पडती है उसका नाम खुराक है खुराक जरूरी वस्तु है तो भी उसका वजन खाने और खानेवालेकी प्रकृतीका विचार करेबिगर खानेमें आवे तो वो ही खुराक अनेक रोगोंको पैदा कर देता है खुराकका वजन क्योंके उसे एक नियम नहीं हो सकता

पदरोगमे विद्रधी अंदर पेटमे या बाहर पकनेवाली गांठमे मस्तक रोगमे कर्ण रोगमे नेत्र रोगमे नाककेरोगमे मुख रोगमे सूजनके रोगमे पथरीके रोगमे शूलके रोगमे पसीना गरम जलसे निकालना औरतके जापेके रोगमे नरम थोडा पसीना निकालना विप रोगमे जलकी धारा और स्नान कराना जिस २ रोगोमे वायूकी और कफकी प्रबलता है वो रोग ऊपर लिखे सो सब आराम होते है मैने अनुभव किया है सो हीं लिखा है ये समझ रोगोकी जो निदान मैने आगे लिखा है उस प्रकार रोगोकी परिक्षा कर लेना अथ पसीना निकालनेकी विधि लिखते हैं, पहली तेल या घीमे सींधा निमक मिलाकर घंटे भर शरीर मसलाणा फेर एकांत कोठेमे हवा न आतीहोय जहां बैठ कंबल या रजाइ जिस्से शरीर सब ढाककर संकडे मूंके घडेमे खूब उकाला भया जल झबोलके अंदर धरवा देना पसीना पूछके साफ करते जाणा जब वाफ बंध हो जाय तब कपडे पहन लेना पसीना सूके बाद फेर बाहर आणा पूर्वोक्त रोगी बहोत निर्बल होय तो पसीना थोडा देना या सर्वथा देना ही नहीं पित्तसे उठे रोगोमे पसीना देना नहीं इसीतरे वाय कफके सर्व रोगोमे शेरका तीन पाव रहा जल पथ्य है अति सारके रोगमे दशांस सोले शेरका शेर या सो शेरका शेर औटाया जल सो दवाकी एक दवा है जल उकालती वखत वाय हरण कर्त्ता कफ हरण कर्त्ता रोगोके अनुसार दवाये भी मिलाते हैं पसीने निकालनेवाले जलमे दवायोका असर वाफसे अंदर पोहचके गुण करता है ।

॥ किरण दूसरी २ खुराककी जरूरी ॥

अदमीका शरीर एक जीवित चलता सांचा है एनजिनका दृष्टांत शरीर ऊपर घटता है जिसतरे अंजन चल शके इसवास्ते बलीता हवा और पाणीकी जरूरत पडती है इसतरे शरीरके चलनेवास्ते खुराक पाणी और हवाकी जरूरत हैं इंजनकूं हांकनेवाला नोकर पगार बंध एनजीनीयर चाहिये तैसें अदमीके शरीरमें कर्म बद्ध स्वभाव शक्ति सिद्ध जीव इस शरीरका चलानेवाला है इसवास्ते बाहरकी गतीकी उसकूं जरूरत है नहीं बिगडे कलोंकों कारीगर सुधारते है तैसें वैद्य डाकटर इस शरीर संचेके सुधारनेवाले है ये स्वाभाविक गती कायम रखनेकूं उसकूं खुराक हवा पाणीकी जरूरत पडती है शरीर उसके जन्मके संग ही ओछे अधिक प्रमाणमें कोईकूं कोइ तरें हमेस क्रिया करताही रहता है जैसें एनजीन उसकी क्रियामें धूआं और राख वगेरे निकम्मे पदार्थकूं बाहिर फेंक देता है तैसें शरीरभी चमडी फेफसा मलाशय मूत्राशय द्वारा निरर्थक पदार्थ पसीना मल तथा पैसाब रूपकों बाहर फेंक देता है ऐनजीनके अंदर बलीता जल और हवा जोकी ऐनजीनसें पूरा होता है तो भी उस अंजनसें अलग रहता है लेकिन अदमी जिस खुराक हवा पाणीकूं शरीरके अंदर लेता है वो चीजों शरीरमें क्षय पाणेके पहले उस शरीरके संग मिल जाता है और उससें उस वस्तुओंका पोपण कारक भाग शरीरमें मिलता

है और निरर्थक हिस्सा वाहिर निकलता है मल मूत्र तथा पसीनेके रूपमें शरीरमेंसे
है वो शरीरका क्षय कहलाता है इय हमेसां होता है और इसक्षयका बदला खुराक
हवा और पाणीसें पूरा होता है अदमी जो महनतका काम जादा करता है त्यों जादा
घसारा लगता है और जो जादा क्षय होगा तो पोपण कारक पदार्थ जादा चहियेगा चलने
बोलणेमें वांचणेमें और आंखमटकारणे जेसी क्रियातकमें शरीरके परमाणु समय २ में
खिरता है और उसकी जगे नये परमाणु आते जाते हैं इसपर विद्वानोंनें एसी भी गिणती
करी है सात २ वर्षसें अपणे शरीरका सावत खोखा नयाही बंधता है मतलब आगे जो
सातवर्ष पहिले अपणे शरीरमें जो हाड मांस खून वगेरे था सो सब खिरते २ खिरजाता
है और क्रम २ सें नये २ रजकणोसें शरीरकुं दुसरे परमाणुओंसें नयाही वणा देता है
सांपकूं कांचली गिराते तो आदमी देखते हैं लेकिन् वो तो मुदतपर छोडता है। अदमी
और सब तेरकी जीवायोनि समय २ में कांचली गिराते हैं और नई धारण करते है
इसवास्ते जैनसूत्रकार शरीरकूं पुद्गल कहते हैं शरीरमेंसें हमेस एक वडाजथा नासपाते
जाता है नख तथा वाल वढता है और गिरते भये अपणे नजरोंसें देखते हैं लेकिन्
लाखों सूक्ष्मरजकणे शरीरमेंसें उडते है सो अपणेकुं दिखता नहीं शरीरमें लाखों छेद मल
मूत्र और श्वासवगेरोंके दुसरे द्वारोंसें शरीरका भाग विनास होते जाता है समय २ में
जो परमाणु शरीरमेंसें खिरते जाते है अगर भरती नही होय तो सूक २ कर प्राणी
मरजाते क्षय राजरोग इसीका नांम है उत्पत्ति स्थिती और नाश ये तीनो सृष्टिका
जो नित्यनियम है सो क्रम अपणे शरीरमें हमेसां चलना है ऐसा देखकर सब
सृष्टिका प्रवाह इसीतरे नित्यानित्य समझ लेणा शरीरके पुराणे पडे भाग छुडे अद-
मीकीतरे अपणा २ काम नहीं कर सकते वो विखरकर उसकी जगे नये पर्याय लग
जाणा ये कुदरती स्वभाव है उस नियमकू चलानेवाला क्षुधा यदनी कर्म यानें भूख ना-
मका हलकारा टेमोटेम शरीरके भागोंकू भरने वास्ते अन्न पान मांग लेना है जो मांग-
णीका अनादर किया जावे या देरीसें दिया जावे तो उसकी मददगार नजाता नाम बंद-
नी कर्म वो जोर करके नाश अथवा जादा परमाणुओंका विखरना हमेह कोई रोक नहीं
सकता अर्थात् बेमारीका हो जाणा ये उस कर्मकी साबुती मिल जाती है क्योंकि जितना
जल्दी शरीरके परमाणु नाम होते हैं इतने जल्दी रोगके कारण वो परमाणु पीछे नहीं
भरती होते जैस चगके रोसनी टायक तेल नहीं भरणेसें जाता है तो चगक पुन जाता
है इस तरे शरीरकी पसाई नुकसानी भरणेके वास्ते कुछ पादरके नरोंसी उसकी पडना
है उसका नाम खुराक है खुराक जरूरी वस्तु है तो भी उसका पचन ऊपरी और
खानेवालेकी प्रकृतीका विचार कीयेवगर खाणेमें आवे तो भी ही खुराक ...
रोगोंको पैदा कर देना है खुराकका पचन सपोष जिन एक लिखन नहीं ... कुदरत

शरीरका कद वंधा प्रकृती तथा कसरत मेहनतपर खुराकका प्रमाण रहता है अदमी अपणे २ खुराकका प्रमाण आपही करसकता हे इसवातका निश्चय वैद्य याडाकदर नहीं वांध सकते अपनी बुद्धि द्वारा निश्चयकर खुराकका अनुमांन वांधकर उसी प्रमाण मुजव हमेसां खाना पीणा करणा चाहिये हमेसां कमसे कम ४० रुपियेभर खुराक पोषनकूं जरूरही चहिये जादेमे जादा सेर या सवासेर खुराक दुरस्त है लेकिन् मथुराके चोवे औरभी वहोतसे लोक वे प्रमाण खानेवाले होते है उनोकूं ये प्रमानसे क्या होसकता है महनती लोक जाट कुनवी मल्ल वगेरे तो महनत कसरतके सववदूना तिगुना खाते है महनतमें जितना क्षय उतनी भरती परमाणुओंकी होनीही चहिये फेर सहरमें वाहर साफ आव हवाकी कसरतसें प्राणी दुगुणा आहार करते है ये भी एक कसरतही समझना लेकिन् एसा तो प्रत्यक्ष देखते है वाजे तो थोडे खाणेवाले निरोगी होते है और वाजे वहोत खाणेवाले रोगी, लेकिन सामान्य वात तो इतनींही है कद और महनत मुजव जादा खुराक खाना चहिये देखते है वडे एनजीनमें वडा वोइलर होता है सो जादा कोयला खाता है छोटा थोडा खाता है काम दोनुं करता है चलता है शक्तिमें फेरफार जरूर होता है इस मुजव ही आदम्योंका समझणा प्रकृती तासीरका भी वहोत विचार है एक ऊमर वरावर कदके दो अदम्योंमें एक कफकी तासीरवाला जादा नहीं खा सकता और दुसरा पित्त प्रकृतीवाला जादा खा सकता है थोडे खाणेवाले वहोत खानेवालेकी निंदा किया करते है और वहोत खानेवाले थोडे खानेवालेकी असलमें दोनोंकी भूल है शेरभरकी खुराक निरोग शरीरवालेकी चाहे तीन शेर तककी होय, लेकिन उद्यमी और सूरवीरता आलस्य रहित प्रमाणोपेत निद्रा ये सव पूर्व पुण्यकी निशाणी है क्योंके आहारमें विवहारमें चातुरकों इतनी जाय लज्जा न चाहिये थोडा खाना मंदाग्नि छोटा शरीर ये पापकी निशाणी है थोडा खाके नाजुक वणना मरदमीका चिन्ह नहीं और वहोत खाके वृथा पुष्ट वणना नहीं महनत करे नहीं ऐसे मांगखानेवाले सव भिक्षुक जानना, मांगखाना उनहींको अछा है जो संसारकी ममता त्याग परमेश्वरकी भक्तीमें ही एक तलीन है शरीरके घसणेसें मनकी इछा जो खुराक लेणेकी होती है सो भूख कहलाती है भूख मुजव हरअदमीकूं खुराक लेना चहिये कम लेनेसें पूरा पोषण मिलता नहीं और चहिये जिससें जादा लेनेसें वरा-वर पचता नहीं इन दोनों कारणोंसें शरीरमें तरे २ की वेमारियां पैदा होती है ॥

॥ खुराककी तपशील ॥

सृष्टीका प्रवाह चलते प्रजापति ऋषभ जगदीश्वरने सरीकूं हितकारी वनस्पतीकी खुरा-क चलाइ १ इस वास्ते प्रथम खुराक वनस्पती १ वाद वनस्पती, और मांस, ये दुसरी खुराक अदम्योंने कालादिकोंमें अन्नादिक नहीं मिलनेसें सरूकी २ ऐसा जैन सूत्रोंमें लिखा है अब साढी अठारे हजार वर्ष वीतनेपर भारत वर्षकी प्रजा फकत मांसाहारसेंही

निर्वाह करेगी क्योंके असी १ मसी २ कृषी ३ इन तीनों कर्मोका प्रलय होगा वनस्पती
मिलेगी नहीं ऐसा अनंती वेरहोचूका ओर फेर भी होगा हितकारी खाणा अहितकारी छोडणा
ये विचार ज्ञानसे हैं, बुद्धेः फलं तत्वविचारणं च । अर्थात् बुद्धि पानेका फल यही है
सो सुखकारी सदा चरणा करे ॥ इन दो वर्गोमेंसें प्रजालोकोंमें मांसाहारियोंका जथा
बहोत है अगर इन दोनों प्रकारके जत्थेका विचारकी बारीकीमें जंगली लोकोंकों टाल
[illegible] जावे तो वाकीकी सुधरी भई प्रजा समुदायमें विशेष पणे वनस्पतीके खुराकसें नि-
ह करते मालम देते हैं क्योंकी जो वेजीटेरियन हैं वो तो फक्त वनस्पती पर ही
[illegible]ते हैं और जो मांसाहारी हैं उनोके खुराकमें भी जादा भाग तो वनस्पतीका ही है
इस्सें ये बात सिद्ध है के वनस्पतीसें बहोत लोक जी रहे हैं अब ये दो तरेका खुराक
है लेकिन् मनुष्य अदमीके लायक और पौष्टिक खुराक तो मुख्य वनस्पती ही है जो
तत्व वनस्पतीमें रहै भये हैं उसके अनुमान कुछ अंशांस तत्व मांसमें है ऐसा मांसाहा-
रियोंका निश्चय है क्योंके केवल मांसाहारी लोक मांस खानेसें जीते है उसमें भी हम
बुद्धिद्वारा अनुमान करते है के उन मांसोमें मुख्यपने वनस्पतीकाही तत्व है सो ही
जीवन है वकरी भेड गाय सूअर हिरण भैंसे वगेर जो जानवर मुख्यपणे वनस्पतीके
खानेवाले है केवल मांसाहारी जानवर सिंह चीता स्याल वगेरेका मांस वो लोक खाकर
जिंदगानी कभी नहीं निभासके अर्थात् खाय तो निश्चे मरे इस वास्ते सर्व प्रजाके वास्ते
फकत वनस्पतीके आहारकी ही जरूरी है १ इस भारत वर्षमें तरे २ के अनाज और
फल फूलेल वनस्पतीका बडा पाक होता है इस भूमी बराबर कोइ भूमी नहीं है क्योंके
कुदरत स्वभाव सिद्ध शुद्ध खान पान हाजर रहते क्यों अभक्ष खाणा २ मनुष्य जातीका
शरीर मांसाहारके लायक नहीं है जैन वैद्यक आयुर्ज्ञानार्णव ग्रंथमें [illegible] कीया
है और डाकतर लोकोंके भी आपसमें इस बातपर बहोत तकरार है तो भी [illegible]
दवा पाणीका विचार करनेपर इस आर्यावर्त्तके लोकोंकी होजरी बिलकुल मांस पचा
नहीं सकती यह तो खूब निश्चय हो गया है ३ जन्मसे टेव पड जानेसें इन देशोंमें भी कि
तनेक मांसाहारी लोक मांसाहार करते हैं और फायदेसेंपर शीत कटिबंधके बहोत लो-
क मांसाहार जत्था बंध करते हैं यह हमेसेका मावरा और शरीरके अदरकी गरमीसे
ऐसा निर्दइ खुराक होजरी स्यात् धारण करती होगी लेकिन हमारा देशका थोडा भाग
उष्ण कटिबंधमें बाकीका सब समशीतोष्ण कटिबंधमें है इस वास्ते इनोकों ही भी
बिलकुल मांस पचाणे लायक नहीं ४ मारेसे लोक सोमल अफीम भी खा [illegible] आखिर
उनोंकी प्रत्यक्ष दशा बिगडती है यह थोडा निर्णय बहोत ही बुद्धिमानोंका है ॥ मांसा
हारी लोकोंकू वनस्पतीके खुराक बिगर चलता नहीं और वनस्पतीके खुराककी धारणा
वालोंको मांसकी जरूरी कीसी तरेह भी नहीं होती ५ ॥ वनस्पतीके खुराकमें [illegible]

शरीरका कद वंधा प्रकृती तथा कसरत मेहनतपर खुराकका प्रमाण रहता है अदमी अपणे २ खुराकका प्रमाण आपही करसकता हे इसवातका निश्चय वैद्य याडाकदर नहीं वांध सकते अपनी बुद्धि द्वारा निश्चयकर खुराकका अनुमांन वांधकर उसी प्रमाण मुजव हमेसां खाना पीणा करणा चाहिये हमेसां कमसे कम ४० रुपियेभर खुराक पोपनकूं जरूरही चहिये जादेमे जादा सेर या सवासेर खुराक दुरस्त है लेकिन् मथुराके चोवे औरभी वहोतसे लोक वे प्रमाण खानेवाले होते है उनोकूं ये प्रमानसे क्या होसकता है महनती लोक जाट कुनवी मल्ल वगेरे तो महनत कसरतके सववदूना तिगुना खाते है महनतमें जितना क्षय उतनी भरती परमाणुओंकी होनीही चहिये फेर सहरमें वाहर साफ आव हवाकी कसरतसें प्राणी दुगुणा आहार करते है ये भी एक कसरतही समझना लेकिन् एसा तो प्रत्यक्ष देखते है वाजे तो थोडे खाणेवाले निरोगी होते है और वाजे वहोत खाणेवाले रोगी, लेकिन सामान्य वात तो इतनींही है कद और महनत मुजव जादा खुराक खाना चहिये देखते है वडे एनजीनमें वडा वोइलर होता है सो जादा कोयला खाता है छोटा थोडा खाता है काम दोनुं करता है चलता है शक्तिमें फेरफार जरूर होता है इस मुजव ही आदम्योंका समझणा प्रकृती तासीरका भी वहोत विचार है एक ऊमर वरावर कदके दो अदम्योंमें एक कफकी तासीरवाला जादा नहीं खा सकता और दुसरा पित्त प्रकृतीवाला जादा खा सकता है थोडे खाणेवाले वहोत खानेवालेकी निंदा किया करते है और वहोत खानेवाले थोडे खानेवालेकी असलमें दोनोंकी भूल है शेरभरकी खुराक निरोग शरीरवालेकी चाहे तीन शेर तककी होय, लेकिन उद्यमी और सूरवीरता आलस्य रहित प्रमाणोपेत निद्रा ये सव पूर्व पुण्यकी निशाणी है क्योंके आहारमें विवहारमें चातुरकों इतनी जाय लज्जा न चाहिये थोडा खाना मंदाग्नि छोटा शरीर ये पापकी निशाणी है थोडा खाके नाजुक वणना मरदमीका चिन्ह नहीं और वहोत खाके वृथा पुष्ट वणना नहीं महनत करे नहीं ऐसे मांगखानेवाले सव भिक्षुक जानना, मांगखाना उनहींको अछा है जो संसारकी ममता त्याग परमेश्वरकी भक्तीमें ही एक तल्लीन है शरीरके घसणेसें मनकी इछा जो खुराक लेणेकी होती है सो भूख कहलाती है भूख मुजव हरअदमीकू खुराक लेना चहिये कम लेनेसें पूरा पोपण मिलता नहीं और चहिये जिससें जादा लेनेसें वरावर पचता नहीं इन दोनों कारणोंसें शरीरमें तरे २ की वेमारियां पैदा होती है ॥

॥ खुराककी तपशील ॥

सृष्टीका प्रवाह चलते प्रजापति ऋषभ जगदीश्वरने सरीकूं हितकारी वनस्पतीकी खुराक चलाइ १ इस वास्ते प्रथम खुराक वनस्पती १ वाद वनस्पती, और मांस, ये दुसरी खुराक अदम्योंने कालादिकोंमें अन्नादिक नहीं मिलनेसें सरूकी २ ऐसा जैन सूत्रोंमें लिखा है अव साढी अठारे हजार वर्ष वीतनेपर भारत वर्षकी प्रजा फकत मांसाहारसेंही

निर्वाह करेंगी क्योंके असी १ मसी २ कृषी ३ इन तीनों कर्मोंका प्रलय होगा वनस्पती मिलेगी नहीं ऐसा अनंती वेरहोचूका ओर फेर भी होगा हितकारी खाणा अहितकारी छोडणा ये विचार ज्ञानसे हैं, बुद्धेः फलं तत्वविचारणं च । अर्थात् बुद्धि पानेका फल यही है सो सुखकारी सदा चरणा करे ॥ इन दो वर्गोंमेंसें प्रजालोकोंमें मांसाहारियोंका जथा वहोत है अगर इन दोनों प्रकारके जत्थेका विचारकी वारीकीमें जंगली लोकोंको टाल दिये जावे तो वाकीकी सुधरी भई प्रजा समुदायमें विशेष पणे वनस्पतीके खुराकसें निर्वाह करते मालम देते हैं क्योंकी जो वेजीटेरियन है वो तो फकत वनस्पती पर ही जीते हैं और जो मांसाहारी है उनोके खुराकमें भी जादा भाग तो वनस्पतीका ही है इस्सें ये वात सिद्ध है के वनस्पतीसें वहोत लोक जी रहे हें अब ये दो तरेका खुराक है लेकिन् मनुष्य अदमीके लायक और पौष्टिक खुराक तो मुख्य वनस्पती ही है जो तत्व वनस्पतीमें रहे भये हें उसके अनुमान कुछ अंशांस तत्व मांसमें हैं ऐसा मांसाहारियोंका निश्चय है क्योंके केवल मांसाहारी लोक मांस खानेसें जीते हे उसमें भी हम बुद्धिद्वारा अनुमान करते हे के उन मांसोमें मुख्यपने वनस्पतीकाही तत्व है सो ही जीवन है वकरी भेड गाय सूअर हिरण भेंसें वगेरे जो जानवर मुख्यपणे वनस्पतीके खानेवाले है केवल मांसाहारी जानवर सिंह चीता स्याल वगेरेका मांस वो लोक खाकर जिंदगानी कभी नहीं निभासके अर्थात् खाय तो निश्चे मरे इस वास्ते सर्व प्रजाके वास्ते फकत वनस्पतीके आहारकी ही जरूरी है १ इस भारत वर्षमें तरे २ के अनाज और फल फूलेल वनस्पतीका वडा पाक होता है इस भूमी वरावर कोइ भूमी नहीं हे क्योंके कुदरत स्वभाव सिद्ध शुद्ध खान पान हाजर रहते क्यों अभक्ष खाणा २ मनुष्य जातीका शरीर मांसाहारके लायक नहीं हे जैन वैधक आयुज्ञानार्णव ग्रंथमें खूब निश्चय कीया हे और डाकतर लोकोंके भी आपसमें इस वातपर वहोत तकरार हे तो भी टेव प्रकृती हवा पाणीका विचार करनेपर इस आर्यावर्त्तके लोकोंकी होजरी बिलकुल मांस पचा नहीं सकती यह तो खूब निश्चय हो गया हे ३ जन्मसे टेव पड जानेसें इस देशमें भी कितनेक मांसाहारी लोक मांसाहार करते हे और कायलछंपेर शीत कटिबंधके वहोत लोक मांसाहार जत्था बंध करते हे यह हमेसेका भारग और शरीरके अंदरकी नसोंमें ऐसा निर्दय खुराक होजरी स्यात् धारन करती होगी लेकिन् हमारा देशका थोडा भाग उष्ण कटिवधमें वाकीका सब समशीतोष्ण कटिवंधमें हे इस वास्ते इनोंकी होजरी बिलकुल मांस पचाणे लायक नहीं ४ नास्तिक लोक सोमल अफीम भी खा लेते हे आखिर उनोकी प्रत्यक्ष दशा विगडती हे यह चोथा निर्णय वहोत ही बुद्धिवानोंका हे ॥ मांसाहारी लोकोंके वनस्पतीके खुराक विगर चलता नहीं और वनस्पतीके खुराकको पचनाचालोकों मांसकी जरूरत कोभी स्वप्न भी नहीं होती ५ ॥ वनस्पतीके खुराकसें शरी-

१९

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी बुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नहीं करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है ॥६॥ वहोतसी वेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलव वनस्पतीका खुराक विशेष पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपणे परसन करते हैं ॥७॥ जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत वतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्पाल काग चील वगेरे सव जानवर महा आलसू वेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, वलद सव कामके धोरी हत्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हत्थणी स्त्री जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो बुद्धिवान समझ लेंगें ॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीत्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ वरावर वणके रहता है लेकिन मांसमें फीत्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीत्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा वध कर वहोत वखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और उत्साहकूं पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें ३ भागका है और गहुं चावल तैसें फलीके नाजमें ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक यूरोपि विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता है के मांस खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाकटर विद्वान् वनस्पतीके खुराककों परसन कर रहे हैं ॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दर जे संबंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सकत मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सवोके सम्मत है आर्यवेद, स्मृति पुराण, वाइवल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके बारीकीका विचार विख्यात है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन बात एकठ करै, उतरे बेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन (अर्थात् पुष्टिवाला १ चरबीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकूं अंग्रेजीमें स्टार्च कहते है सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें बहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके खुराकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण तथा वढानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोइमें कम होता है अपने हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सक्कर और साबू दाणोंमें पौष्टिक तत्व बिलकुल नहीं है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरबीका है सकर और साबू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरबीवाले पदार्थोमें मुख्य घी मक्कण तेल वगेरे है, अनाजोमें चरबीका भाग सइकडेमें १ (गहुंमें है) आदे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरबीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च यानें आटेके सत्ववाले पदार्थोमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बोन नामके पदार्थसें होता है और बोकारबोन इसतरेके गुणकमेंसे तैसें चरबीवाले पदार्थोमेंसें पेदा होता है गरम देश मारवाड अरबस्थानादिकोंमें तैसें गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे नाफगन आता है ४ खार, शरीरका हरेक भाग खारके मेलसें बना भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो खानेकी चीजोमें थोडा और बहोत अंसों करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारसें ही बना भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी बहोत जरूरी है खार कमती होनेसें हाड पोचे और बरडे होकर तूटे ऐसे हो जाते हैं छोटे बालकोंका दूधमें पोषण होता है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमें उनमान मुजब खार देना ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोषणकूं पाणी जैसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खुनके प्रवाहो पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खुन पतला है इसवास्ते ही फिर सकता है जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खुन जाडा पडके फिरते [illegible] आता है ये प्रवाही तत्व जैसें पाणीसें मिलता है तैसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थमें भी थोडे [illegible] मिलता है गहुं बाजरी चावल वगेरे जो कुछ खानेमें आता है उसमें पाणीका भाग है साकतरकारीमें फलादिकोमें पाणीका बहोत भाग होता है इन पांच तरेके [illegible]

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी बुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नही करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है ॥६॥ वहोतसी वेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलव वनस्पतीका खुराक विशेष पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपणे परसन करते हैं॥७॥ जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत वतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्याल काग चील वगेरे सव जानवर महा आलसू वेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, वलद सव कामके धोरी हत्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हथणी स्त्री जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो बुद्धिवान समझ लेंगें ॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीत्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ वरावर वणके रहता है लेकिन मांसमें फीत्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीत्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा वध कर वहोत वखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और उत्साहकूं पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें ३ भागका है और गहुं चावल तैसें फलीके ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता है के खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाक्टर विद्वान वनस्पतीके खुराककों परसन कर रहे हैं ॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दर जे संबंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सक्त मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सवोके सम्मत है आर्य-वेद, स्मृति पुराण, वाइबल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके बारीकीका विचार विख्यात है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन घात एकठ करै, उतरे बेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन (अर्थात् पुष्टिवाला १ चरबीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकूं अंग्रेजीमें स्टार्च कहते हे सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें बहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके खुराकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण तथा बढानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोइमें कम होता है अपने हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सकर और साबू दाणांमें पौष्टिक तत्व बिलकुल नहीं है ऐसा विद्वानोंने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरबीका है सकर और साबू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरबीवाले पदार्थोमें मुख्य घी मस्कण तेल वगेरे है, अनाजोमें चरबीका भाग सइकडेमें १ (गहुमें है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरबीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च यानें आटेके सत्ववाले पदार्थोमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बान नामेक पदार्थसें होता है और चोकारबोन इसतरेके खुराकमेंसे तैसें चरबीवाले पदार्थोमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड जरवस्थानादिकोंमें तैसें गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका हेरक भाग खारके मेलमें बना भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो [illegible] रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारसें ही बना भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी बहोत जरूरी है खार कमती होनेसें हाड पोचे और बरड होकर तूटे ऐसे हो जाते हैं छोटे बालकोंका दूधमें पोषण होता है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमें उनमान मुजब खार लेना ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोषणकूं पाणी जैसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खुराकके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी वुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नहीं करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है ॥६॥ वहोतसी वेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलव वनस्पतीका खुराक विशेष पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपणे परसन करते हैं ॥७॥ जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत वतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्याल काग चील वगेरे सव जानवर महा आलसू वेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, वलद सव कामके धोरी हस्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हस्थणी स्त्री जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो वुद्धिवान समझ लेंगें ॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीब्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ वरावर वणके रहता है लेकिन मांसमें फीब्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीब्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा वध कर वहोत वखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और शक्ति पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें २ भागका है और गहुं चावल तैसें फलीके ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता है के मांस खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पेदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाकटर विद्वान वनस्पतीके खुराककों परसन कर रहे हैं ॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दर जे संवंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सकत मनाई जैनोके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सवोके सम्मत है आर्यवेद, स्मृति पुराण, बाइबल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके वारीकीका विचार विख्यात है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन बात एकठ करै, उतरे बेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन (अर्थात् पुष्टिवाला १ चरबीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकूं अंग्रेजीमें स्टार्च कहते है सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें बहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके खुराकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण तथा बढानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोइमें कम होता है अपने हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सक्कर और साबू दाणोमें पौष्टिक तत्व बिल्कुल नहीं है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरबीका है सक्कर और साबू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरबीवाले पदार्थोमें मुख्य घी मक्कण तेल वगेरे है, अनाजोमें चरबीका भाग सइकडेमें १ (गहुंमे है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरबीवाले पदार्थ ठंड कालमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च याने आटेके सत्ववाले पदार्थोमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बोन नामके पदार्थसें होता है और बोकारबोन इसतरेके खुराकमेंसे तेसें चरबीवाले पदार्थोमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड अरबस्तानादिकोंमें तेसें गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका हरेक भाग खारके मेलसें बना भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो खानेकी चीजोंमें थोडा और बहोत अंशो करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारमें ही बणा भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी बहोत जरूरी है खार कमती होनेसें हाड पोचे और बरडे होकर तूटे ऐसे हो जाते हैं छोटे बालकोंका दूधसें पोषण होता है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमे उनमान मुजब खार डला ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोषणकूं पानी जैसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योंके खूनके प्रमाणो पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खून पतला है इसवास्ते ही फिर सकता है जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खुन जाडा पडके फिरतो बंध हो जाता है ये प्रवाही तत्व जैसे पाणीसें मिलता है तेसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थमें भी प्रवीण मिलता है गहुं बाजरी चावल वगेरे जो हम खानेमें लाते है उसमें पाणीका भाग है खानेकी चीजोंमें फलादिकोंमें पाणीका बहोत भाग होता है इन पांच तरेके खुराकमेंसे

रकूं जितना नुकशान होनेका संभव है उससे मांसाहारसे नुकशान होना जादा संभव है प्रत्यक्ष देखो मांस जलदी बिगड जाता है फेर प्रत्यक्ष आंखोसें देखनेमें अछी बुरीकी परिक्षा जैसें शट वनस्पतीकी हो जाती है तैसी परिक्षा मांसकी नहीं हो सकती रोगी जानवरका है या निरोगीका है वनस्पतीका अजीर्ण ऐसा नुकशान नहीं करता मांसका अजीर्ण वहोत ही नुकशान करनेवाला प्राण घाती अनेक रोगोंका कारण है जिसमें डर थोडा फायदा वहोत ऐसा व्यवहार विशेष पसन करने लायक होता है ये सृष्टिका अनादि नियम है॥६॥ वहोतसी वेमारियोमें हमेस मांस खानेवाले अदम्योंकों मांसका त्याग करके वनस्पतीके खुराकका आसरा लेना होता है मतलव वनस्पतीका खुराक विशेप पथ्य (प्रकृतीके) अनुकूल है इस वास्ते डाकटर भी विशेषपणे परसन करते हैं॥७॥जो जो अदमी मांसमें जादा ताकत वतलाते हैं उसका दृष्टांत और प्रमाण हम आगे लिखते हैं मांसाहारी सिंह चीता स्पाल काग चील वगेरे सव जानवर महा आलसू वेकाम क्रूर प्रकृती प्रजाघाती महाशठ इत्यादि, वनस्पतीके खानेवाले घोडे जिससें सूरवीर पृथ्वी जीते, वलद सव कामके धोरी हत्थी जो इतनी ताकत धराता है की सिखाई भई हत्थणी स्त्री जाती होकर नाहरकूं ठोकरसें मार डालती है, और हिरणकेसी सीघ्र गति धराते है इस वास्ते विचार लेणा चहिये ये वनस्पतीमें घास है सो हलकीमें हलकी खुराक है वो खानेवाले उद्यमी साहस सत्वधारी और सरल बुद्धीवाले होते है इस दृष्टांतसें मांसकी ताकत कैसी कहे सो बुद्धिवान समझ लेंगें॥८॥ अदमियोंके खूनमें एक हजार भागमें तीन भाग फीब्रीन नामका एक तत्व होनेकी जरूरी है वनस्पतीके खुराकसें वो पदार्थ वरावर वणके रहता है लेकिन मांसमें फीब्रीनका तत्व जादा है इस वास्ते मांसाहारियोंके खूनमें फीब्रीनका तत्व चहिये जिससें जादा वध कर वहोत वखत अनेक रोगोंका कारण हो जाता है ॥९॥ डाकटर पार्क नामका एक यूरोपि विद्वान प्राणी जन्य और वनस्पती जन्य आहार विवरण लिखता भया जताता है के उत्तम मांसमें उष्णता और उत्साहकूं पैदा करनेवाला तत्व सो भागमें ३ भागका है और गहुं चावल तैसें फलीके नाजमें ये तत्व सो भागमें ४५ सें लेकर ८० तक होता है ऐडमस्मिथ नामका एक यूरोपि विद्वान वेल्थ ओफनेशन्स अर्थात् प्रजाकी दोलत इस नामके ग्रंथमें लिखता है के मांस खाने विगर अनाज घी दूध और दुसरी वनस्पतीसें शारीरक और मानसिक शक्ति और वहोत ही अछी तन दुरस्ती अदमीयोंमें पैदा हो सकती है इसतरे और भी सईकडो डाकटर विद्वान वनस्पतीके खुराककों परसन कर रहै हैं ॥१०॥ वैद्यक विचार धर्मशास्त्रसें वहोत दूर जे संबंध रखता है अगर धर्म शास्त्रका सारांश विचारके देखे तो मांस खानेकी सक्त मनाई जैनोंके सूत्र सिद्धांतमें है अहिंसा परमोधर्मः ये सवोंके सम्मत है आर्यवेद, स्मृति पुराण, वाइवल, कुरान, अवस्ता, लेकिन् इन २ ग्रंथोमें प्रवृत्ति भी मानी है

और निवृत्तीमें जादा फल लिखा है दुनियांमें जैनियोंकी दयाके वारीकीका विचार विख्यात है नालक वचन भी है, दुहा, शिव भक्ती अरु जैन दया, मूसलमीन इकतार, तीन बात एकठ करै, उतरे वेडा पार, ॥

॥ जिंदगीकूं जरूर खुराक ॥

जिंदगीकूं कायम रखनेवास्ते हमेसां चहिये उस खुराककी पांच जात है नाइट्रोजन (अर्थात् पुष्टिवाला १ चरवीवाला २ आटेका सत्ववाला ३ जिसकू अंग्रेजीमें स्टार्च कहते हे सो, खार ४ पाणी ५ अपने शरीरमें वहोत तरेका तत्व है सबोंका इन पांच तरेके खुराकसें पोषण होता है इस वास्ते अपनी नित्य खुराकमें इन पांच प्रकारोंकी जरूरी है इन पांचोमें दुसरे सब तत्वोका समावेस हो जाता है १ पौष्टिक खुराक शरीरकूं पोषण तथा वढानेकूं जरूरका है कोइअनाजमें जादा नाइट्रोजन, कोइमें कम होता है अपने हमेस वापरनेवाले पदार्थ घी मक्कन सकर और साबू दाणोंमें पौष्टिक तत्व विलकुल नहीं है ऐसा विद्वानोने निश्चय किया है घी मक्कणमें तो मुख्य भाग चरवीका है सकर और साबू दाणोमें स्टार्च आटेका सत्व है लेकिन् ये चारोंही पदार्थ शरीरकी गरमी कायम रखनेका काम करते हैं २ चरवीवाले पदार्थोंमें मुख्य घी मख्कण तेल वगेरे है, अनाजोमें चरवीका भाग सइकडेमें १ (गहुंमे है) जादे मे जादा सइकडेमें ६ (मकीमें है) चरवीवाले पदार्थ ठंड कालेमें जादे खाणा चहिये ३ स्टार्च याने आटेके सत्ववाले पदार्थोमें मुख्य मिश्री खांड गुड चावल और दुसरे अनाज है शरीरमें श्वासो श्वासकी जो क्रिया चलती है वो कार्बोन नामके पदार्थसें होता है और वोकारवोन इसतरेके खु... मेंसे तैसें चरवीवाले पदार्थोमेंसें पैदा होता है गरम देश मारवाड अरवस्थानादिकोंमें ... गरमीकी मोसममें स्टार्च तत्ववाला पदार्थ जादे माफगत आता है ४ क्षार, शरीरका ...रेक भाग खारके मेलसें वणा भया है दूधमें भी खार है अनमें भी खार है खार तो खानेकी चीजोमें थोडा और वहोत अंसों करके रहा भया ही है हाडतो मुख्य खारसें ही वणा भया है इसवास्ते हाडोके पुष्टिवास्ते खारकी वहोत जरूरी है खार कमती होनेसें हाड पोचे और वरडे होकर तूटे ऐसे हो जाते है छोटे वालकोंका दूधसें पोपण होता है और उसमें स्वभाव सिद्ध खार होता ही है इसवास्ते खुराकमें उनमान मुजब खार लेणा ही चहिये ५ (पाणी) शरीरके पोपणकूं पाणी जैसे प्रवाही पदार्थकी जरूरी है क्योके खून... पाणी पेत फिरनेपर जिंदगीका आधार है वो खून पतला है इसवास्ते ही फिर सक... जो शरीरमें प्रवाही भाग कम हो जाय तो खुन जाडा पडके फिरते वंध हो जाता ... प्रवाही तत्व जैसें पाणीसें मिलता है तैसें दुसरे खानेके हरेक पदार्थसें भी शरीरकूं ...लता है गहुं बाजरी चावल वगेरे जो कुछ खानेमें आता है उसमे पाणीका भाग है ...गतरकारीमे फलादिकोमें पाणीका वहोत भाग होता है इन पांच तरेके खुराकमेंसे

हरेकका कितना वजन शरीरके पोषण वास्ते हमेस जरूरीका है शरीर रचना टेव (याने मावरा) प्रकृती याने तासीर देशकी हवा पाणी तैसें ही ऊमर मुजव जादा और कम खुराक लेनेमें आता है तो भी विचले दरजे कोनसा २ खुराक कितने २ वजनमें लेना चहिये उसका प्रमाण नीचे मुजव ॥

१ पोष्टिक तत्ववाला खुराक हमेस १० रु भर.
२ चरवीवाला खुराक ८ रु भर.
३ आटेका सत्ववाला खुराक ३० रु भर.
४ खार ४ रु भर.
५ पाणी १५० रु भर.

ऊपर लिखा है के पाणी और प्रवाही तत्व चरवीवाले पदार्थकूं टालके और सव तरेके पदार्थोंमें रहा भया है ऊपरके कोठेमें पहिले चार प्रकारका खुराकका जो प्रमाण लिखा है उसमें प्रवाही तत्व वाद करके लिखा है जो इन चारों प्रकारके पदार्थोंकों प्रवाही तत्व साथ गिणे तो लगवग दुगुणा प्रमाण आवे मतलव ऊपर (५२) रुपिया भर चारों लिखा है मध्यम प्रमाणसें उसके वदले संग १०० रुपिया भर खुराककी हरेक अदमीकों जरूरत है और जल १५० रुपिये भर अलग गिणना चहिये ॥

खुराककी मुख्य चीजोंमें ऊपर लिखा पांच
तत्वोंके प्रमाणका यंत्र ॥

खुराकके मुख्य २ वस्तुओंमें पौष्टिक तत्व (नाइट्रोजन) चरची आटेका सत्व (चरवीवाले और आटेके सत्ववाले पदार्थमें कारवोन वहोत है खार और पाणी ये हरेक वस्तुओंमें १०० सइकडे कितना भाग है सो नीचेके कोठेसे मालम होजायगा मांस मछीयोंका तथा इंडोंका भाग आर्य वैद्यक ग्रंथनें लिखणा परसन नहीं किया यह तो परमार्हतोंका वैद्यक ग्रंथ है आगे जो डाकदरी दवा हम लिखेंगे सो तो वणी भई तइयार है और लोक अजाण पने आपत्काले मर्यादा नास्ति इसवास्ते वर्त्तमान प्रवाह है ग्रंथ कर्त्तायों नहीं लिखता है के तुम निश्चे वो हीलो ॥

खुराककी चीज	नाइट्रोजनका पौष्टिकतत्व	चरवीका तत्व	स्टार्च याने आटेका तत्व	क्षारका तत्व	पाणीका प्रवाही तत्व
चावल	५	-।।।	८३।	-।।	१०
साबूदाणा	०	०	८२	०	१८
गहूं	१४।।	१	६९	१।।	१४
ज्वार	१२।।	४ •	७०	१।।	१२
बाजरी	१०	४।।	७१।	२।।	११।।।
चिना	२२	३	६२	२	११

उडद	२४॥।	१।	५८॥	३	१२॥
तूर	२२	१	६२	३	१०
मटर	२२	२	५३	२	१५
मसूर	२५	१।	६०	२	११॥।
जव	१३	२	६८	२	१५
मकी	१०	६॥।	६४॥	१॥	१३॥
कुलथी	२३।	२॥	५९।	३।	१२
आलू	१॥	१०	२३॥	१	७४
कोबीज	-।	-॥	५॥	-॥।	९१
गाजर	-॥	-।	८॥	-॥।	९०
सकरमिश्री	०	०	९६॥	-॥	३
दूध	४	३॥।	५	-॥	८६॥।
मख्कण	-।	९१	०	२॥।	६
घी	-।	१००	०	०	०

रसायण शास्त्री विद्वानोंने रसायणिक प्रयोगोसें जुदा २ भाग छांट कर वस्तुओंका ऊपर लिखे मुजब तत्व सोधके निकाला है इसके प्रताप सब लोक तत्वोके जाणकार इस पदार्थोंसे भया है इय सोध यूरोपी विद्वानोका है हमकूं प्राचीन शास्त्रोमें ऐसी तपसील मिली नहीं अगर भंडारोंमें बंध होगा तो होगा बाकी तो मतांतरोके द्वेषियोंने जलादिये पाणीमें गलादिये वर्त्तमान सोधकोंका उपकार कबूल कर इस ग्रंथमें दाखिल किया है ॥ गुण मुजब खुराककी दो जात है पुष्टिकारक, और गरमी देणेवाला २ जो शरीरमेंके खिरें परमाणुओंकों भरती करे सो तो पुष्टिकारक और शरीरके गरमीकूं कायम रखे सो गरमी दाता खुराक, पुष्टिकारक खुराककी चीजों बहोत है लेकिन् हरेकके अंदरका पौष्टिक तत्वोंका गुण एक दुसरेसें मिलता है पौष्टिक खुराकमें नाइट्रोजनका तत्व जादा है और गरमी देणेवालेमें कारबोनका तत्व जादा है ऐसा जुदे २ करणे वालोने निश्चय किया है गरम खुराकसे मोसम पलटणे पर भी शरीरकी गरमी बराबर रहती है जिंदगीके मिलते सब काम गरमी विगरचल नही सकते बाहरकी हवामे चाहे जितनाफेर होय लेकिन गरमी देणेवाली खुराकसें शररकी गरमी एक हालतसें रहती है जिस जगे ठंड बहोत पाणीका बरफ जम जाता है पारेकी घडीमें पारा ३२ डिग्रीसेंभी नीचे जाता है और गरम देशोंमें जहां पारा १२५ डिग्रीसेभी उंचा चढता है उहांभी बदनकी गरमी तो ९० सें सो १०० डिग्री हमेसां रहती है जो खुराक शरीरकी अंदर गरमीकूं जगे परकायम रखती है उस खुराकमें मुख्य दोय तत्व है १ कारबोन और २ हाइड्रोजन और ये दोय तत्व प्राण वायूके संग रसायण संयोगसें जब मिलता है तब गरमी पैदा होती है ये संयोग हर वखत होते रहता है जब किसी रोगके कारण फेरफार होता है

तभी गरमी कम या वैसी हो जाती है पौष्टिक खुराक वहोत खाणेसें खून चहिये जिसें जादाताकतवर हो जाता है उससें खूनका कलेजेमें या मगंजमें तथा दुसरे अवयवोंमें वहोत जमाव होणेसें वो अवयव वडे हो जाते हैं तथा कलेजेमें रोग हो जाता है मगज पर खूनका जोर चढता है उससें ऐसे खुराक खाणेवाले वडे धास्तीमें आगिरते है पौष्टिक खुराक प्रमाणसरखाकर अगर अंगकूं कसरत मेहनत देणेमें आवे तो वहोत नुकशानका संभव नहीं तो भी खुराक एकही तरेका विशेष खाणेसे जरूर नुकशान करता है खुराक ऐसा खाणा चहिये जिसमें शरीरमें चहिये जितना सब पोषणका तत्व होणा अपणे आर्यलोकोंका खुराक सामान्य सब तत्ववाला है वहोतसे अनाज तथा दालोंमें चहिये जैसा पोषणका सब तत्व आया भया है प्राणियेंके अंगसें पैदा भया खुराक घी माखण मांस इंडे माछी वगेरोमें मांसाहारमें आटेका सत्व अर्थात् गरमी देणेवाला तत्व विलकुल नहीं है इस तरे प्राणी जन्य वस्तुओंमें तो फकत दूध सब तत्ववाला है जभी तो इकेले दूधसें वहोत वर्षोंतक गुजरान चल सकता है घीं मक्खणमें विलकुल चरवी हे वाकी कोईभी तत्व नहीं है चावलमें वहोत भाग आटेके सत्वका है पौष्टिक तत्व सैकडेमें पांच रुपिया भर है इस वास्ते आर्यलोक भातके संग दाल तथा घी खाते हैं ये वहोत अछा करते हैं दालसें पौष्टिक तत्व पूरा होता है और दालमें निमक डाला जाता है सो चावलोंमें क्षारका भाग कम होता है सो निमकसें पूरा होता है और घीसें चरवीका तत्वभी मिल सकता है लडकोंकों चरवीवाला तथा वहोत पुष्टि कारक खुराक कामका नही उनोंकों चावल दूध खांड मिश्री आलु वगेरे खुराक माफ गत आता है क्योंके इनोंमें पौष्टिक तत्व कम है गरमी देणेवाला तत्व जादा है गहुमें चरवीका भाग थोडा है इसवास्ते गहूंकी रोटीमें जादा घीलेके खाणा चहिये ज्वारमें तथा वाजरीमें चरवीका भाग तो चहिये जितना है लेकिन् पौष्टिक तत्व गहुंसें कम है तो भी इस वस्तुओंसे पोषणका काम चल सकता है उडदमें सबसें जादा पौष्टिक तत्व है ठंडकालेमें पौष्टिक तत्ववाला उडदके आटेके संग घी सक्करका संयोग वहोत गुण करता है गरम देशमें ताजी साग तरकारी फायदा करती है अपणा देश गरम है इसवास्ते ठंड कालेसें गरमी मोसममें हरीताजी वनस्पती फायदा करती है खाणा जरूर है चरवीवाले और चिकणासवाले भोजनमें नींबूकी खटाई थोडा मसालाभी चहिये इस तरे खानपानके अनेक भेद होते है एक मुख्य भेद तो ऐसा है भूख प्यास मिटाणेका गुण तो जरूरही होणा, खुराककी उत्पत्तीके मुख्य दोय भेद हैं थावर १ और जंगम २ थावरमें तो तमाम वनस्पती और जंगममें प्राणीजन्य दूध दही मक्खन छाछ आदि, आहारकी जैनसूत्रोंमें चार जात लिखी है असन खाणेका पान पीनेका खादिम चावके खाणेका स्वादिममें पान विडादि पंच सुगंध तथा चाटके खाणे आदि, इनोका भेदांतर वहोत है गुणोंके प्रमाणसें आहारकी आठ जातभी है भारी

चिकणा ठंडा कोमल तथा हलका लूक्खा गरम और तेज पहिले चार तरेका खुराकशीत वीर्य है इसवास्ते चंद्रमाका गुण है पिछला चार तरेका खुराक उष्णवीर्य है इसवास्ते सूर्यका गुण है रसके भेदसें आहारके छव भेदभी है मधुर (मीठा) अम्ल (खट्टा) लवण (खारा) कटुक तिक्त (कडवा) और कषायला प्रभावसें आहारका तीन भेद है पथ्य. पथ्यापथ्य. कुपथ्य. पथ्य तो सुखकारी, पथ्यापथ्य हित अहित दोनूंका करणेवाला कुपथ्य विलकुल नुकसान करणेवाला इन तीनोंका विस्तार लिखेंगें खानपानके पदार्थोंका ऐसे सुक्ष्म भेद बहोत है तोभी सामान्य तरे समझ सके इसवास्ते वांचणेवा-कों छवरस और पथ्यापथ्यकी जाणनेकी जरूरी है, अपणे शरीरके पोषणवास्ते मुख्य खुराकमें छवरस है पृथ्वी पाणीके गुणकी अधिकतासें मीठा रस पैदा होता है पृथ्वी तथा अग्निके गुणकी अधिकतासें खट्टा रस पैदा होता है, पाणी तथा अग्निके गुणकी अधिक-तासें खारा रस पैदा होता है, वायु तथा अग्निकेगुणकी अधिकतासे तीखा रस पैदा होता है वायु तथा आकाशके गुणकी अधिकतासे कडवा रस पैदा होता है, पृथ्वी तथा वायुके गुणकी अधिकतासें कषायला रस पैदा होता है.

इन (छ व) रसोमें.

मीठा खट्टा खारा ये तीन रस वायु नासक है, कषायला रस वायुके जैसा गुण लक्षणवाला है, मीठा कडवा कषायला तीनो पित्त नासक है, तीखारस पित्तके जैसा गुणलक्षणवाला है. तीखा कडवा कषायला कफनाशक है, मीठा रस कफके जैसा गुण लक्षणवाला है.

मीठा रस खून. मांस. मेद. हाड. मीजी. ओज. वीर्य. स्तनका दूध वधाता है, आंखोकों हितकर वाल, और रंगकूं साफ करता है, वल वधानेवाला तूटे हाडोंकों सांधनेवाला वुढे-को जखमसें क्षीणकों हितकारी हैं. प्यास मूर्छा दाहकूं मिटाता है सव इंद्रियोंकों प्रशन्न करता कृमि तथा कफकूं वधानेवाला वहोत खानेसें खासी श्वास अलसक कै (छर्दि)मूंमीठा लेका विगाड. कृमिरोग. कंठमाल. अर्बुद. श्लीपद. वस्ति. पेडूका रोग. मधुप्रमेह वगैरे पैसावका रोग अभिस्यंद वगैरे रोग पैदा करता है, १ खट्टारस आहार वातादिक दोप सोजा तथा आमकूं पचावै. वादीका नाश करे. वायु मल तथा मूत्रकूं खुलास करै पेटमें अग्नि करै. लेपकरनेसें ठंडक करे. हृदयकू हितकारी. वहोत खानेसें दांतजकडे. अंवी जै नेत्र वंध हो जाय. रूखडे होय, कफका नाश होय शरीर ढीला हो जाय कंठ छाती हृदयमें दाह होय २खारा रस मल शुद्ध करे खराव व्रण फोडोंकू साफ करे. गलादेवे खुरा-ककूं पचावै. शरीरकूं ढीला करै गरमी करे अवयवोंकूं नरम करे. वहोत खानेसें खुजली कोढ. सोजा. थोथर हो जाय चमडीका रंग विगडे. मरदमीका नाश होय. आंखोका और इंद्रियोका व्यापार कम हो जाय. मूंपक जावे. आंख दूखे. रक्त पित्त. वातरक्त. खट्टीडकार वगैरे दुष्ट रोग पैदा होता है. ३ तीखा रस अग्नि दीपवन पाचन. मल मूत्रका सोधन करे ...का जाडापणा. आलस. कफ. कृमि. जहरसें पैदा होनेवाले रोग कोढ खुजली इत्यादि

तभी गरमी कम या वैसी हो जाती है पौष्टिक खुराक वहोत खाणेसें खून वहिये जिसें जादाताकतवर हो जाता है उससें खूनका कलेजेमें या मगजमें तथा दुसरे अवयवोंमें वहोत जमाव होणेसें वो अवयव वडे हो जाते हैं तथा कलेजेमें रोग हो जाता है मगज पर खूनका जोर चढता है उससें ऐसे खुराक खाणेवाले वडे धास्तीमें आगिरते है पौष्टिक खुराक प्रमाणसरखाकर अगर अंगकूं कसरत मेहनत देणेमें आवे तो वहोत नुकशानका संभव नहीं तो भी खुराक एकही तरेका विशेष खाणेसे जरूर नुकशान करता है खुराक ऐसा खाणा चहिये जिसमें शरीरमें चहिये जितना सव पोषणका तत्व होणा अपणे आर्यलोकोंका खुराक सामान्य सव तत्ववाला है वहोतसे अनाज तथा दालोंमें चहिये जैसा पोपणका सव तत्व आया भया है प्राणियोंके अंगसें पैदा भया खुराक घी माखण मांस इंडे माछी वगेरोमें मांसाहारमें आटेका सत्व अर्थात् गरमी देणेवाला तत्व विलकुल नहीं है इस तरे प्राणी जन्य वस्तुओंमें तो फकत दूध सव तत्ववाला है जभी तो इकेले दूधसें वहोत वर्षोंतक गुजरान चल सकता है घीं मक्खणमें विलकुल चरवी हे वाकी कोईभी तत्व नहीं है चावलमें वहोत भाग आटेके सत्वका है पौष्टिक तत्व सैकडेमें पांच रुपिया भर है इस वास्ते आर्यलोक भातके संग दाल तथा घी खाते हैं ये वहोत अछा करते हैं दालसें पौष्टिक तत्व पूरा होता है और दालमें निमक डाला जाता है सो चावलोंमें क्षारका भाग कम होता है सो निमकसें पूरा होता है और घीसें चरवीका तत्वभी मिल सकता है लडकोंकों चरवीवाला तथा वहोत पुष्टि कारक खुराक कामका नही उनोंकों चावल दूध खांड मिश्री आलु वगेरे खुराक माफ गत आता है क्योंके इनोंमें पौष्टिक तत्व कम है गरमी देणेवाला तत्व जादा है गहुंमें चरवीका भाग थोडा है इसवास्ते गहूंकी रोटीमें जादा घीलेके खाणा चहिये ज्वारमें तथा वाजरीमें चरवीका भाग तो चहिये जितना है लेकिन् पौष्टिक तत्व गहुंसें कम है तो भी इस वस्तुओंसे पोपणका काम चल सकता है उडदमें सवसें जादा पौष्टिक तत्व है ठंडकालेमें पौष्टिक तत्ववाला उडदके आटेके संग घी सक्करका संयोग वहोत गुण करता है गरम देशमें ताजी साग तरकारी फायदा करती है अपणा देश गरम है इसवास्ते ठंड कालेसें गरमी मोसममें हरीताजी वनसपती फायदा करती है खाणा जरूर है चरवीवाले और चिकणासवाले भोजनमें नींबूकी खटाई थोडा मसालाभी चहिये इस तरे खानपानके अनेक भेद होते है एक मुख्य भेद तो ऐसा है के भूख प्यास मिटाणेका गुण तो जरूरही होणा, खुराककी उत्पत्तीके मुख्य दोय भेद हैं थावर १ और जंगम २ थावरमें तो तमाम वनसपती और जंगममें प्राणीजन्य दूध दहीं मक्खन छाछ आदि, आहारकी जैनसूत्रोंमें चार जात लिखी है असन खाणेका पान पीनेका खादिम चावके खाणेका स्वादिममें पान विडादि पंच सुगंध तथा चाटके खाणे आदि. इनोंका भेदांतर वहोत है गणोके प्रमाणमें आहारकी आठ जातभी है भारी

प्रकारा ३.

चिकणा ठंडा कोमल तथा हलका लूक्खा गरम और तेज पहिले चार तरेका खुराकशीत-
र्य है इसवास्ते चंद्रमाका गुण है पिछला चार तरेका खुराक उष्णवीर्य है इसवास्ते
सूर्यका गुण है रसके भेदसें आहारके छव भेदभी है मधुर (मीठा) अम्ल
(खट्टा) लवण (खारा) कटुक तिक्त (कडवा) और कषायला प्रभावसें आहारका
तीन भेद है पथ्य. पथ्यापथ्य. कुपथ्य. पथ्य तो सुखकारी, पथ्यापथ्य हित अहित दोनूंका
करणेवाला कुपथ्य बिलकुल नुकसान करणेवाला इन तीनोंका विस्तार लिखेंगें खानपानके
पदार्थोंका ऐसे सुक्ष्म भेद वहोत है तोभी सामान्य तरे समझ सके इसवास्ते वांचणेवा-
लोंकों छवरस और पथ्यापथ्यकी जाणनेकी जरूरी है, अपणे शरीरके पोषणवास्ते मुख्य
खुराकमें छवरस है पृथ्वी पाणीके गुणकी अधिकतासें मीठा रस पैदा होता है पृथ्वी
तथा अग्निके गुणकी अधिकतासें खट्टा रस पैदा होता है, पाणी तथा अग्निके गुणकी अधिक-
तासें खारा रस पैदा होता है, वायु तथा अग्निकेगुणकी अधिकतासे तीखा रस पैदा होता
है वायु तथा आकाशके गुणकी अधिकतासे कडवा रस पैदा होता है, पृथ्वी तथा वायुके
गुणकी अधिकतासें कषायला रस पैदा होता है.

इन (छ व) रसोंमें.

मीठा खट्टा खारा ये तीन रस वायु नासक है, कषायला रस वायुके जैसा गुण लक्षणवाला है,
मीठा कडवा कषायला तीनो पित्त नासक है, तीखारस पित्तके जैसा गुणलक्षणवाला है.
तीखा कडवा कषायला कफनाशक है, मीठा रस कफके जैसा गुण लक्षणवाला है.

मीठा रस खून. मांस. मेद. हाड. मींजी. ओज. वीर्य. स्तनका दूध वधाता है, आंखोकों
हितकर वाल, और रंगकूं साफ करता है, बल वधानेवाला तूटे हाडोकों सांधनेवाला घुडु-
को जखमसें क्षीणकों हितकारी हैं. प्यास मूर्छा दाहकूं मिटाता है सव इंद्रियोंकों प्रशन्न
करता कृमि तथा कफकूं वधानेवाला वहोत खानेसें खासी श्वास अलसक कै (छर्दि)मूंमीठा
गलेका विगाड. कृमिरोग. कंठमाल. अर्बुद. श्लीपद. वस्ति. पेडूका रोग. मधुप्रमेह
वगैरे पैसावका रोग अभिस्यंद वगैरे रोग पैदा करता है, १ खट्टारस आहार वातादिक
दोष सोजा तथा आमकूं पचावै. वादीका नाश करे. वायु मल तथा मूत्रकूं खुलास करे
पेटमें अग्नि करै. लेपकरनेसें ठंडक करे. हृदयकूं हितकारी. वहोत खानेसें दांतजकडे. अंधी
जै नेत्र वंध हो जाय. रूखडे होय, कफका नाश होय शरीर ढीला हो जाय कंठ छाती
हृदयमें दाह होय २ खारा रस मल शुद्ध करे खराब व्रण फोडोंकूं साफ करे. गलादेवे खुरा-
ककूं पचावै. शरीरकूं ढीला करै गरमी करे अवयवोंकूं नरम करे. वहोत खानेसें खुजली
कोढ. सोजा. थोथर हो जाय चमडीका रंग विगडे. मरदमीका नाश होय. आंखोका और
इंद्रियोका व्यापार कम हो जाय. मूंपक जावे. आंख दूखे. रक्त पित्त. वातरक्त. खट्टीडकार
वगैरे दुष्ट रोग पैदा होता है. ३ तीखा रस अग्नि दीपवान पाचन. मल मूत्रका सोधन करे
शरीरका जाडापणा. आलस. कफ. कृमि. जहरसें पैदा होनेवाले रोग कोढ खुजली इत्यादि

तभी गरमी कम या वैसी हो जाती है पौष्टिक खुराक वहोत खाणेसें खून चहिये जिसें जादाताकतवर हो जाता है उससें खूनका कलेजेमें या मगजमें तथा दुसरे अवयवोंमें वहोत जमाव होणेसें वो अवयव वडे हो जाते हैं तथा कलेजेमें रोग हो जाता है मगज पर खूनका जोर चढता है उससें ऐसे खुराक खाणेवाले वडे धास्तीमें आगिरते है पौष्टिक खुराक प्रमाणसरखाकर अगर अंगकूं कसरत मेहनत देणेमें आवे तो वहोत नुकशानका संभव नहीं तो भी खुराक एकही तरेका विशेष खाणेसे जरूर नुकशान करता है खुराक ऐसा खाणा चहिये जिसमें शरीरमें चहिये जितना सच पोषणका तत्व होणा अपणे आर्य-लोकोंका खुराक सामान्य सव तत्ववाला है वहोतसे अनाज तथा दालोंमें चहिये जैसा पोषणका सच तत्व आया भया है प्राणियेंके अंगसें पैदा भया खुराक घी माखण मांस इंडे माछी वगेरोमें मांसाहारमें आटेका सत्व अर्थात् गरमी देणेवाला तत्व विलकुल नहीं है इस तरे प्राणी जन्य वस्तुओंमें तो फकत दूध सच तत्ववाला है जभी तो इकेले दूधसें वहोत वर्षोंतक गुजरान चल सकता है घीं मक्खणमें विलकुल चरवी हे वाकी कोईभी तत्व नहीं है चावलमें वहोत भाग आटेके सत्वका है पौष्टिक तत्व सैकडेमें पांच रुपिया भर है इस वास्ते आर्यलोक भातके संग दाल तथा घी खाते हैं ये वहोत अछा करते हैं दालसें पौष्टिक तत्व पूरा होता है और दालमें निमक डाला जाता है सो चावलोंमें क्षारका भाग कम होता है सो निमकसें पूरा होता है और घीसें चरवीका तत्वभी मिल सकता हे लडकोंकों चरवीवाला तथा वहोत पुष्टि कारक खुराक कामका नही उनोंकों चावल दूध खांड मिश्री आलु वगेरे खुराक माफ गत आता है क्योंके इनोंमें पौष्टिक तत्व कम है गरमी देणेवाला तत्व जादा है गहुंमें चरवीका भाग थोडा है इसवास्ते गहूंकी रोटीमें जादा घीलेके खाणा चहिये ज्वारमें तथा वाजरीमें चरवीका भाग तो चहिये जितना है लेकिन् पौष्टिक तत्व गहुंसें कम है तो भी इस वस्तुओंसे पोषणका काम चल सकता है उडदमें सवसें जादा पौष्टिक तत्व है ठंडकालेमें पौष्टिक तत्ववाला उडदके आटेके संग घी सक्करका संयोग वहोत गुण करता है गरम देशमें ताजी साग तरकारी फायदा करती है अपणा देश गरम है इसवास्ते ठंड कालेसें गरमी मोसममें हरीताजी वनस्पती फायदा करती है खाणा जरूर है चरवीवाले और चिकणासवाले भोजनमें नींबूकी खटाई थोडा २ मसालाभी चहिये इस तरे खानपानके अनेक भेद होते है एक मुख्य भेद तो ऐसा है के भूख प्यास मिटाणेका गुण तो जरूरही होणा, खुराककी उत्पत्तीके मुख्य दोय भेद है थावर १ और जंगम २ थावरमें तो तमाम वनस्पती और जंगममें प्राणीजन्य दूध दही मक्खन छाछ आदि, आहारकी जैनसूत्रोंमें चार जात लिखी है असन खाणेका पान पीनेका खादिम चावके खाणेका स्वादिममें पान विडादि पंच सुगंध तथा चाटके खाणे आदि, इनोंका भेदांतर वहोत है गुणोंके प्रमाणमें आहारकी आठ जातभी है भारी

चिकणा ठंडा कोमल तथा हलका लूक्खा गरम और तेज पहिले चार तरेका खुराकशीत वीर्य है इसवास्ते चंद्रमाका गुण है पिछला चार तरेका खुराक उष्णवीर्य है इसवास्ते सूर्यका गुण है रसके भेदसें आहारके छव भेदभी है मधुर (मीठा) अम्ल (खट्टा) लवण (खारा) कटुक तिक्त (कडवा) और कषायला प्रभावसें आहारका तीन भेद है पथ्य. पथ्यापथ्य. कुपथ्य. पथ्य तो सुखकारी, पथ्यापथ्य हित अहित दोनूंका करणेवाला कुपथ्य बिलकुल नुकसान करणेवाला इन तीनोंका विस्तार लिखेंगें खानपानके पदार्थोंका ऐसे सुक्ष्म भेद बहोत है तोभीं सामान्य तरे समझ सके इसवास्ते वांचणेवालोंकों छवरस और पथ्यापथ्यकी जाणनेकी जरूरी है, अपणे शरीरके पोषणवास्ते मुख्य खुराकमें छवरस है पृथ्वी पाणीके गुणकी अधिकतासें मीठा रस पैदा होता है पृथ्वी तथा अग्निके गुणकी अधिकतासें खट्टा रस पैदा होता है, पाणी तथा अग्निके गुणकी अधिकतासें खारा रस पैदा होता है, वायु तथा अग्निकेगुणकी अधिकतासे तीखा रस पैदा होता है वायु तथा आकाशके गुणकी अधिकतासे कडवा रस पैदा होता है, पृथ्वी तथा वायुके गुणकी अधिकतासें कषायला रस पैदा होता है.

इन (छ व) रसोमें.

मीठा खट्टा खारा ये तीन रस वायु नासक है, कषायला रस वायुके जैसा गुण लक्षणवाला है, मीठा कडवा कषायला तीनो पित्त नासक है, तीखारस पित्तके जैसा गुणलक्षणवाला है.
तीखा कडवा कषायला कफनाशक है, मीठा रस कफके जैसा गुण लक्षणवाला है.

मीठा रस खून. मांस. मेद. हाड. मींजी. ओज. वीर्य. स्तनका दूध वधाता है, आंखोकों हितकर बाल, और रंगकूं साफ करता है, बल वधानेवाला तूटे हाडोंकों सांधनेवाला बुड्ढेकों जखमसें क्षीणकों हितकारी हैं. प्यास मूर्छा दाहकूं मिटाता है सब इंद्रियोंकों प्रशन्न करता कृमि तथा कफकूं वधानेवाला बहोत खानेसें खासी श्वास अलसक कै (छर्दि)मूंमीठा गलेका विगाड. कृमिरोग. कंठमाल. अर्बुद. श्लीपद. वस्ति. पेडूका रोग. मधुप्रमेह वगैरे पेसाबका रोग अभिस्यंद वगैरे रोग पैदा करता है, १ खट्टारस आहार वातादिक दोष सोजा तथा आमकू पचावै. वादीका नाश करे. वायु मल तथा मूत्रकूं खुलास करै पेटमें अग्नि करै. लेपकरनेसें ठंडक करे. हृदयकूं हितकारी. बहोत खानेसें दांतजकडे. अंधी जै नेत्र बंध हो जाय. रूखडे होय, कफका नाश होय शरीर ढीला हो जाय कंठ छाती हृदयमें दाह होय २खारा रस मल शुद्ध करे खराब व्रण फोडोकूं साफ करे. गलादेवे खुराककूं पचावे. शरीरकूं ढीला करै गरमी करे अवयवोंकूं नरम करे. बहोत खानेसें खुजली कोढ. सोजा. थोथर हो जाय चमडीका रंग विगडे. मरदमीका नाश होय. आंखोका और इंद्रियोका व्यापार कम हो जाय. मूंपक जावे. आंख दूखे, रक्त पित्त. वातरक्त. खट्टीडकार वगेरे दुष्ट रोग पैदा होता है. ३ तीखा रस अग्नि दीपवान् पाचन. मल मूत्रका सोधन करे शरीरका जाडापणा. आलस. कफ. कृमि. जहरसें पैदा होनेवाले रोग कोढ खुजली इत्यादि

रोगोंकूं मिटावे सांधोंकोंढीला करे. उत्साह कम करे. स्तनका दूध वीर्य तथा मेदका नाश करे, वहोत खानेसें भ्रम. मद गलेमें तालवेमें होठमें सूकापणा शरीरमें गरमी ताकतका नाश कंप पीडा वगेरे रोग पैदा करे, हाथ पांव तथा पीठमे वादी करके शूल पैदा करै ४ कडवा रस खुजली. खाज. पित्त. प्यास. मूर्छा. बुखार वगेरेकों शांत करे. स्तनके दूधकों साफ करे, मल मूत्र मेंद चरबी पीप वगेरेकूं सुकाय डाले वहोत खानेसें गरदनकी नसकूं जकडा देवे. नसां खिचने लग जावै. वदनमें दरद होय. भ्रम होय. शरीर टूटे. सरणें चले कटता होय ऐसा मालमदे. भूखमें मीठापनी कम होजाय. ५ कषायलारस दस्तकूं रोके. शरीरके अवयवोंकों मजबूत करे, व्रण. तथा प्रमेहको. शुद्ध करे. व्रण वगेरेमें घुसके उसके दोषोंकों निकलता है, क्रेदयाने,गारे जैसा पदार्थ पीप पकावका सोधन करे, वहोत खानेसें हृदयमें दरद होय. मूं सूके. पेटमें आफरा नसे जकड जाती है शरीर फुरकता है कांपणी होय तथा शरीर संकुडाता है ६ खानेके पदार्थोंमें अपने अदमी छउं रस खाता है कषायला और कडवा रस खानेमें जादा जाहरा देखनेमें नही आता तो भी कितनेक पदार्थोंमें ये रस गुप्तपनें रहे भये हैं बाकीके चार रस तो खानेमें जाहरा दिखता है जादा ये रसोके खानेसें वहोत नुकशान है सो ऊपर लिखा ही है मीठा रस जादा उपयोगी है तो भी हद उपरांत खानेसें वहोत नुकशान करता है ॥

॥ उजाला २ धान्य वर्ग ॥

चावल, गुण मीठा, अग्निदीपक, बलवर्द्धक, कांतिकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोषहर, और मूत्रवर्द्धक, विचार, चावलोंकी वहोत जाति है. सामान्यतरे कमोद चावल अछे होते है. सबसें साठी चावल पथ्य है, लेकिन वो लाल और मोटा होता है, इस वास्ते लोक खाते भी नहीं है सोखीनलोक तो मर्हीन और लंबे खसबोदारकों परसन करते है, मुलकोंकी अपेक्षा वनिया चावलोंका नाम अलग २ हे, चावलोंमें चिकणास (याने) चरबी थोडी है. उससें जलदी पचता है और हलका है बालकोंको बैमारोकों इसीवास्ते अनुकूल आते हैं साबूदाणे चावलकी जात नहीं है लेकिन गुणमें वो चावलोंसें हलका है इसवास्ते बचोंको और बेमारोंकों खिलाया जाता है. डाकटर या मारवाडी लोक चावल खाणेसे संका करतेहै उसका कारण ऐसा मालम देता है. के लोक चावलोंको बराबर सिजाते नहीं जादा आंच देकर जलदी उतारा भया बराबर सीजता नहीं, तैसें दाल होनेवाले सब अनाज (बाफ) उबाल करके लोक खाते हैं. लेकिन. उनोंकों मंद आंचपर वहोत देरतक चुलेपर रक्खे तो अछी तरे सीजते हैं पूरे सीझणेकी परिक्षा इसतरेमे है थालीमें डालनेसें ठण २ अवाज नहीं करे. फूल जैसे हलके हो जाय. हाथमें ममलनेसें मक्खन जैसा मुलायम होय चपटीमें दाबते चावलोंमें जितना जोर लगे उतनांही कच्चा समझणा. लोक चावलोंकों वायु कर्त्ता समझते है. सो ऐसा वायु करता नहीं है. कितनेक सस्ते दामोके चावल थोडा वादी करे तो ताजुब नहीं. बाकी तो सिजानेकी वे शुद्धीसें वायु करते हैं. ऐसा मालम देता है. चावल

वर्षभर उपरांत पुराणे होना भातके संग दाल घी मिलणेसें वायु कम हो जाती है निमक पूरा होना दाल चावल अलग २ रांधनेसें फेर मिलाकर खानेसें जलदी पचता है सामल रांधनेसें खीचडी होती है वो पचनेमें जरा भारी है खीचडी मूंग तूर वगेरेंकी होती है (गहूंका गुण) पुष्टिकर धातुवर्द्धक बलवर्द्धक मीठा ठंडा भारी रुचिकर तूटीहड्डीकूं सांधनेवाला व्रणकूं मिटानेवाला दस्तकूं साफ लानेवाला (विचार) गहूंकी मुख्य दोय जात है काठा और वाजिया (सुपेद और लाल) सुपेदसें लाल जादा पुष्टिकारक है गहूंमें पुष्टिका तैसें गरमीका तत्व रहा भया है इसवास्ते दुसरे अनाजोंसें ये विशेष उपयोगी और उत्तम पोषणकी वस्तु है गहूंमें खार तथा चरवीका भाग बहोत थोडा है इसवास्ते लोक निमक डाल फेर रोटी वगेरे बनाते है द्रव्यानुसार घी मक्खन और मलाई वगेरेके संग खाना। जादा फायदेवंद है गहूंका मैदा पचनेमें भारी इसवास्ते मंदाग्निवालेनें मैदेकी रोटी पुडी खानी नहीं मकसूदावादी ओसवालोंके इहां नित्य खुराक मैदा है इसवास्ते पित्त वढाणे दालमें अमचूर बहोत डालते है दोनों खुराक निर्बलताका हेतु है फकत दूध विदामकी कतलीसें जिंदगानीका आधारउन लोकोंका है गहूंके आटेसें बहोत पदार्थ बनते हैं गहूंकी राव पचनेमें हलकी है जिसकूं पटोलिया कहते हैं उससे रोटी भारी फेर पीछे पूडी हलवा लड्डू मगध गुलपपडी वगेरे अनुक्रमें पचनेमें एकएकसें भारी है गहू घीके संग खानेसें वादी नहीं करता (वाजरीका) गुण गरम लूखी पुष्ट हृदयकूं हितकारक स्त्रियोंमें कामकूं वढाणेवाला पचनेमें भारी और वीर्यकूं नुकशान करता (विचार) वाजरी गरम है इसवास्ते पित्तकूं खराव करती है इसवास्ते वने जहांतक पित्त प्रकृतीवालेकूं वचणा अछा है लूखी होनेसें वायू करती है जिन २ मुलकोंमें वाजरीकी पैदास जादा है और अनाज कम पकता है तव उहांके लोकोंकों नित्यके मावरेसें वाजरी पथ्य हो जाती हैं जैसें वीकानेर जिलेमें वाजरीका खंतक है मोठ वाजरी और तरबूज (कालिंगा) इस जमीन जैसा और कहांइ भी नहीं होता पोषणका तत्व गहूंके लगभग वाजरीमें है लेकिन गहुंसें चरवीका तत्व जादा है इसवास्ते घी विगरभी नुकशान नहीं करती है (ज्वारका गुण) ठंडी मीठी हलकी लुखी पुष्ट (विचार) ज्वारमें वाजरी जेसाही पोषणका तत्व है चरवी भी वाजरी जितनी ही है ज्वार करडी और लुखी है इसवास्ते वायु करती है लेकिन् नित्यके अभ्यासी मरेठे कुणवी गुजरात काठियावाड वगेरेके गरीव लोक विशेषपणे जुवार और तूरकी दालसें काम चलाते हैं (मूंगका गुण) ठंडा ग्राही हलका स्वादिष्ट कफ पित्तकूं मिटानेवाला आंखोंकों हितकर कुछ वायु करता है(विचार)दालोंकी जातमें उत्तम है आनंद श्रावग उपाशक दशा सूत्रमें मुंगकूं श्रेष्ठ दाल समझके मोकला रखा है सव रोगोंमें मुंगकी दाल तथा ओसामण कितनेक दरजे दूधकी गरज सारता है और नये सन्निपात ज्वरमे जहां दूधकी मनाई है उसमेंभी मुंगकी दालका पाणी हितकारी है ••

दिनोके उपवासके पारणेमें भी यही पाणी हितकर है सावित मुंग वायु करता है इकेली दालकूं जरा कोरी तवेपर सेककर सीजाकर उसकी दाल या ओसामण पूरव दक्षण देशोंमें तथा किसी भी बेमारीमें वायु नहीं करतीहै मुंगकी बहोत जात है उसमें हरे मुंग गुणकारी है (तुंवरका गुण) मीठी तुरी भारी रुचिकर ग्राही ठंडी त्रिदोष हर होकर कुछ वायु कर्त्ता है(विचार)खून विकार मस्सा(अर्स)बुखार और गोलेके रोगमें फायदा करता है दक्षण और पूरबवरामें इसकी दाल मुख्य है उहां इसकी पैदास है चावल तूरकी दाल और घी मिलाके खानेसें वायू नहीं करती गुजरातवाले इस दालमें कोकम अंबली वगेरेकी खटाई कोइयक दही और गरम मसाला देते हैं इससें वायडी नहीं होती दालकी वस्तुमें दही छाछ कच्चा मिलानेसें दो इंद्रीवाले जीव थूकके स्पर्शसें पैदास होते हैं इसवास्ते अभक्ष्य है अभक्ष चीज रोग कर्त्ता होती है इसवास्ते कडी राईता वगेरे द्विदलके बनाना होय तो पहली गोरसमें वाफ निकले ऐसा गरम कर फेर बेसण वगेरे द्विदल मिलाना रोग नहीं कर्त्ता दही खीचडी इस मुजब ही खाना बे समझ लोक गोरस खीचडा खाते हैं गोरस गरम किये विगर,सो, वडा नुकशान कर्त्ता है, वावीस बडे अभक्ष जैनाचार्योंनें रोग होनेके कारण मना किये हैं,देखो अतीचार सूत्र (उडदके गुण) बडापुष्ट वीर्य वधानेवाला मीठा तृप्तिकारक पेसाव लानेवाला मलकूं जुदा करनेवाला स्तनमें दुध वधानेवाला मांस मेदकी वृद्धि करता ताकत देनेवाला वायुकूं तोडनेवाला पित्त कफकूं वधानेवाला (विचार) श्वास थकेला अर्दितवायु जिससें मुं टेढा पडजाय और भी केइयक वायू रोगमें उडद पथ्य है ठंडकालेमें तथावादीकी तासीरवालेकूं फायदेवंद है पचेवाद उडद गरम और खट्टा रस पेदा करता है इसवास्ते पित्त तथा कफकी प्रकृतीवालेकूं तथा इन दोनोंके रोगोंकूं नुकशान करता है दिल्लीकी चोतरफ पंजावतक इसकी दाल हमेसां खाते है काठियावाडवाले इसके लड्डू पुष्टिके वास्ते वहोत खाते है (चणेका गुण) हलका ठंडा लूखा तुरा रुचिकर रंग सुधारक ताकतवर (विचार) कफ तथा पित्तके रोगमें फायदे वंद कुछ ज्वरकूं भी मिटाता है लेकिन् वादी कर्त्ता कवजी करता अथवा जादा दस्त लगावे खुराकमें चिणेकी वहोत चीजें वणती है साबूत आटा और दाल तीनोंतरे काम देता है मोतीचूरका ताजा लड्डू पित्तीके रोगकूं जलदी मिटाता है गुजरातवाले तेलके संयोगसें चने वापरते हैं चणेमें चरबीका भाग कम है इसवास्ते इसमें घी तेल वगेरे जादा डालना तासीर मुजव उन मान माफक खानेसें नुकशान नहीं करता घी कम होनेसें इसके पदार्थ सब नुकशान करते हैं (मोठका गुण) रुचिकर पुष्टिकारक मीठा लुक्खा ग्राही बलवर्धक हलका कफ तथा पित्तकूं मिटानेवाला और वायू करता है रक्तपित्तमें पथ्य है बुखार दाहमें क्रमिरोगमें उन्मादरोगमें पथ्य है. (चवलोंका गुण) मीठा तुरा भारी दस्त लानेवाला लुक्सा वायुकर्त्ता रुचिकर स्तनमें दूध वधानेवाला वीर्यकूं विगाडनेवाला गरम

है(विचार)वहोतवायु कर्त्ता है इसवास्ते इस चीजकूं जादे खाना नहीं जैन ग्रंथोंमें लिखा है महाकंजूस मम्मण शेठ अडवों सोनइयोंका मालक तैलके छमके चवला खाता था और बेटे बहुओंकों खिलाता था खानेमें मीठा पचे बाद खटा रस पैदा करता है ताकतवर है लेकिन् लूखा और भारी है इसवास्ते पेटमें बोझा कर वायू करता है गरम दाहकारी वदनकूं सुकाता है वीर्य नास कर्त्ता है चवला शरीरके जहरका नाश करता है लेकिन् आंखोंके तेजका भी नाश करता है(मटरका)गुण रुचिकर मधुर पुष्टिकर लुखा ग्राही ताकत वढानेवाला हलका पित्त कफकूं मिटानेवाला और वायु करता है निघंटुराजमें जो जो गुण अवगुण हेमाचार्यने लिखा है उसमेंके गुणापगुण विशेषपणे वणानेकी क्रियामें रहता ही है यह तो सामान्यवात है वाकी संस्कारके फेरफारसें गुणोंमें फेरफार भी होता है(दाखला)पुराणे चावलोंके रांधे भये भात हलका हे लेकिन् उसके चुरमुरे पवा वहोत भारी है फेर खीचडी भारी कफ पित्तकूं पैदा करनेवाली मुसकिलसें पचे बुद्धिकूं अडचल करनेवाली दस्त पैसावकूं वधानेवाली फेर थोडे जलमें पकाया भात जलदी पचता नहीं चावलोंकों अछीतरे धोकर पांचगुणे पाणीमें खूब सिजाय गरमहीकूं ओसाय डालणा ऐसा भात हलका और गुणकारी खीचडीकूं मंद २ आंचमें वहोत देरतक पकाणा तव फायदेचंद होती है चणे चवले मोठ वगेरे वायडे हैं फेर कितनेक अनाज पचनेमें खराब होते हैं तो भी घीके संग खानेसें पचता है और वादी कम करता है बीकानेर फलोधीवाले जैसे ज्वारका खीचड और वहोत घी आखातीजकूं खाकर ऊपरसें अमलीका सरवत पीते हैं ग्रीष्म ऋतुमें और तासीर देस मुजव पचजाता है. ऋषभ देवजीने तो सांठे ऊखका रस इस दिन पीया था श्रेयांस पड पोतेने वर्षभरके भूखेकों सुपात्र दान दिया अखय सुख उपार्जन किया इसवास्ते अक्षयतृतीया नाम भया ॥

॥ उजाला २ शाक वर्ग ॥

नित्य खान पानमें शाक तरकारी वहोत कम उपयोगी है समस्त शाग दस्तकूं रोकनेवाला पचनेमें भारी लूखा वहोत मलकूं पैदा करनेवाला और पवनकूं वधानेवाला शरीरके हाडोंकों भेदनेवाला आंखके तेजकूं कम करता शरीरका रंग खुन तथा कांतिकों घटानेवाला बुद्धिका क्षय करनेवाला वालोंकों सुपेद करनेवाला यादशक्ति और गतिकूं कम करता है सव सागोमें रोग रहता है वो रोग शरीरका नाश कर्त्ता है इसवास्ते विवेकी लोकोकूं साग नहीं खाना जैन सूत्रकार शरीर रक्षणकूं ही ऐसा वर्त्ताव चलाया है रोगादिकारणमें जतना लिखता है इस मुजव ही चरकादिकोंका मत है जो दोष खटे पदार्थोंमें है उसके मिलते वहोत दोष सागोमें है यह तो सामान्य अभिप्राय है पश्चिमके पंडितोनें ऐसा भी निश्चय किया है के ताजा फल साग तरकारी विलकुल नहीं खानेसें स्कर्वी याने रक्त पित्तका रोग होता है शाक फलादि उत्तम होना माफक सर उप-

योग करना ऐसा वो लोक कहते हैं एक तरफसें ताजे साग फलोंमें वहोत कम तो फायदा दुसरे तरफ अपणे वजारमें विकते साग फल वगेरेकी दशा उसके बेदरकारी वापरणेसें होता भया वेहद नुकसान इन दोनों वातोंका मुकावला करणेपर आखिर पहली कलमपर ही चलणा हददरजे हितकारीपणा ठहरता है हरी चीजोंका वहोत सावचेतीके साथ वणे जहांतक थोडाही वरताव करणा वुद्धिमानोंका काम है सामान्य अभिप्राय सव वैद्यक ग्रंथोका एसा है तोभी अपणे लोकोमें साग तरकारीका वेहद वरताव देखणेमें आता है जिसमें भी गुजराती भाटिये वैष्णव शैव संप्रदाई तथा जिभ्भाके लोलपी, शरीर सुधारणेमें अज्ञानजो जैन इसवास्ते इन सवोकों अंकुसरूप शाग तरकारीका गुण दोष आगे लिखताहूं जिस वनस्पतीमें ताकत देणेवाला तथा गरमी देणेवाला भाग थोडा होय पाणीका भाग जादा होय इस तरेकी ताजी वनस्पती थोडी खाणी, येसिद्धांत है पान फूल फल कंद वगेरे शागकी कितनीक तरा है ये अनुक्रमसें एकके पीछे एक जादा भारी है पानोका साग सवसें हलका है कंदका साग सवसें भारी है जो की जैन पन्नवणा सूत्रमें वत्तीस अनंत काय लिखी है वो महागरिष्ट रोगकर्त्ता कष्टसें पचता है चंदलिया (चौलाई) । हलका ठंडा रूखा मलमूत्रकूं उतारणेवाला रुचिकर्त्ता अग्निकूं दीपन करता जहरकू हरणेवाला पित्त कफ तथा खूनके विगाडकू मिटाणेवाला सव रोगोंमें प्राय चंदलिया सवोंकी प्रकृतिमें पथ्य है वो जैसें सागमें पथ्य है तैसें स्त्रीके प्रदरमें इसकी जड वालकके दस्तकवजीमे उकाले भये पत्ते तथा जड कोढ वातरक्त खून विगाड रक्तपित्त चमडीके खाजदाद फुनसी वगेरे दरदोमें इसका साग विना लाल मिरचके खाणेमेंआवे तो दाह खुजली सव मिट जाती है इय ठंडा है तोभी वाय पित्त कफ तीनोंकों शांत करता है दस्त पेसाव साफ लाता है पेसावकी गरमीकूं शांत करता है खून शुद्ध करता है पित्तका विगाड मिटाता है किसीभी विगडी दवाकी गरमी अथवा जहर उकालके रस सदनया मिश्री डाल पीणेसें या साग खाणेसें जहर, दस्त पेसावके रस्ते निकलजाता है चंदलियेकु जैसें जादा वाफा जाय तैसें जादा स्वाद और गुण करता होता है मद रक्तपित्त शीलस त्रिदोष ज्वर कफ खांसी दस्तकी वैमारीमें वहोत फायदेवंद है (पालका) अग्निप्रदीपक·पाचक मलशुद्धिकारक रुचिकर तथा उष्ण है सोजा विषदोष हरस तथा मंदाग्निमें हितकारक है (वथवा) वथवेका साग अथवा चीलका साग पाचक रुचिकर हलका दस्तकूं साफ लाणेवाला तापतिल्ली खूनविगाड पित्त हरस कृमि त्रिदोषमें फायदेवंद है (पत्तागोभी) यह फूल गोभीकी चार जातसें अलग होती है भारी है ग्राही है मधुर रुचिकर वातादिक तीनों दोषोंमें पथ्य है स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाली है (लवेकी भाजी) तीनों दोषोंकों हरणेवाली वुद्धिकूं हितकारक रुचिकर और सामान्य तोर सव रोगोंमें पथ्य(लुनीकी भाजी)गरम तुरी मधुर रुचिकर और पाचक है(सरसूंके पत्ते) त्रिदो-

पहर रुचिकर और पाचक है (मेथीके पत्ते) पित्त करता तथा ग्राही है लेकिन् कफ वायु तथा कृमीका नास करता है रुचिकर तथा पाचक है (अरवीके पत्ते) अरबीके पत्तोंका साग रक्तपित्तमें अच्छा है लेकिन् दस्तकूं कवजकर वायुकूं कोपाता है इससें दस्त मरोडा हो जाता है (मोगरी) तीक्ष्ण तथा उष्ण है लेकिन कफ वायुकी प्रकृतीवालेकूं अच्छी है (गलजीभीके) पत्ते हलके हैं कोढ प्रमेह खूनविगाड मूत्रकृच्छ्र तथा बुखारकूं फायदे वंद है (मूलीके पत्ते) मूलेके ताजे पान पाचक हलके रुचिकर और गरम मुलेकेपत्तोंकों वीकानेर गुजरात काठियावाडी तेलमें पकाते है सो तीनों दोषमें अच्छा गिणते है लेकिन कच्चे पत्ते पित्त और कफकूं बिगाडते है, जेसलमेरके रावलजीने तो एसा फुरमाया है मूलामूल नखाव जो सुख चाहे जीवरो, कच्ची मूली वहोत रोगोंमें पथ्य भी लिखी है(परवल)हृदयकूं हितकर वलवर्द्धक पाचक उष्ण रुचिकर कामवर्द्धक हलका और चिकणा खासी खून विगाड बुखार त्रिदोष सन्निपात कृमिके दरदोंमें वहोत फायदे वंद है फलोके सागोमें सर्वोत्तम साग परवल है,(दुधी) मीठी धातुवर्द्धक पौष्टिक शीतल और रुचिकर है लेकिन पचणेमें भारी कफ करता दस्तकूं वंध करता गर्भकूं सुकाणेवाला दुधीका साग जिसकूं कदु मीठातूंवा लवाभी कहते हैं इसका सीराभी वणता है (कोला पेठा) इसकी दो जात हे एक तो पीला लाल सोतो कोला, जिसका साग होता है दुसरेका पेठा आगराई मुरब्बा वणता है वो सुपेद होता है वहोत मीठा ठंडा रुचिकर तृप्तिकर पुष्टिकारक वीर्यवर्द्धक है भ्रांति और थकेलेकों मिटाता पित्त खूनविगाड दाह वायूकों मिटाता है छोटाकोला ठंडा और पित्तकूं मिटाता है विचलेकदका कोला कफ करता है और वडे कदका कोला वहोत ठंडा नहीं मीठा है खारवाला अग्निदीपक हलका मूत्राशयकूं साफकरता पित्तके रोगोंकों मिटाणेवाला एक कविने कहा है, वेंगन कोमल पथ्य है, कोला कच्चा जहर है हरडे कच्ची और पक्की सदा पथ्य है वेर कच्चा पक्का सदा कुपथ्य है, वेंगण वृंताक, वेंगणकी दो जात है काला और सुपेद, काला नींद लाणेवाला है रुचिकारक है भारी तथा पौष्टिक है सुपेद दाह तथा चमडीका दरद पैदा करता है सामान्यतरे वेंगण गरम वायुहर तथा पाचक कहलाता है एक दुसरीतरेके गोल काचर नींबू जैसें गोल वेंगण होता है वो कफ तथा वायु प्रकृतीवालेकूं अछा है तैसें खुजली वातरक्त बुखार कामला और अरुचिरोगवालेकूं हितकारी है(घीया तुराई)स्वादिष्ट तथा मीठी है वायु पित्तकूं मिटाती है बुखारके रोगीकूंभी अछी है (तोरी) वायडी हैं ठंडी तथा मीठी है कफ करती है लेकिन् पित्त दमा श्वास बुखार कृमि इतने रोगोमें अछी है (करेला) कडवा गरम रुचिकारक हलका अग्निदीपक माफक सर खावे तो सव प्रकृतीके अनुकूल है अरुचि कृमि ज्वर वगेरे में पथ्य है(काकेडा) (कंटोला)हलके अग्निदीपक रुचिकर मधुर पचेवाद तीक्ष्ण है गोला शूल पित्त कफ खास श्वास ज्वर प्रमेह अरुचि कोढ वायू तथा हृदयके रोगोंमें पथ्य है

(टीडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् बुद्धिकों विगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात वहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकूं आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कच्ची ठंडी है लूखी है दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पक्की ककडी अग्नि तथा पित्तकूं वढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीभडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक विलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरबूज कफकारक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अच्छा है मतीरेसें क्षयकी वैमारी पैदा होती है इसकूं तरबूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों दोषोंकों विगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कच्चेका साग पक्केकूं हेमंतऋतूमें खाते हैं सो तदन खराव है जब करसान लोक कच्चीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् वहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोलेके रोगमें वहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल वाकी सव फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सव रोगोमें फायदे वंद है दाद कोढ रक्तपित्त वालेकूं महा खराव है हरसकी वेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ठ है(आलु) ठंडा मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोषणकारक वलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें वायु नहीं करता अंगारमे वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके वालकोंकों खिलाणेसें पोषन अच्छी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कच्ची मूली तीनों प्रकृतीमें अच्छी है पक्के मूले (वडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अच्छा नहीं मूलेकूं गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

तीकूं अनुकूल पडता है गाजर मीठा रुचिकर तथा ग्राही है खुजली और खून विगाडके रोगोंमें अच्छा नही हे कितनेक रोगोमें अच्छाभी है लेकिन वीर्यकूं विगाडता हैं इसवास्ते इसकूं समझदार लोक नहीं वरतते है जैनकोम इसीवास्ते जमीकंदोसें विशेष परहैजरखती है (कांदे) डूंगली बलवर्द्धक तीखा भारी मधुर रुचिकर वीर्यवर्द्धक कफ तथा नींद पैदा करै क्षीणता रक्तपित्त उलटी हैजा कृमि अरुचि पसीना सोजा खूनके सब रोगोंमें हितकारी है इसके साग मुरब्बे पाक वगेरे लोकवणाते है दुरंगध इसमें वहोत है कांदे और लसणकूं तो गोकुल वैष्णव विलकुल छीते नहीं वचे हैं सो अछे हैं रांधणेकी युक्ति और दुसरी चीजोंके संयोगसे साग तरकारीके गुणोंमे फेरफार होता है जो साग वायु करता होता है वो वहोत घी तेलके संयोगसें वायु नहीं करता जो साग पचणेमें भारी होता है उसकूं पहली खूब जलमें वाफके फेर घीमें तेलमें लोक छमकते है सूरण आलु वगेरे कंदोकों वो नुकशांन नहीं करता वहोत लाल मिरच मसाला खाणा अछा नहीं क्योंके जादा मसालोंसें पाचन शक्ति कम होकर दस्त संग्रहणी आम्लपित्त रक्तपित्त कुष्टादिक खून विकार हो जाता है.

॥ उजाला ४ दूध विचार ॥

(सामान्य गुण) दूधका मीठा ठंडा पित्तहर पोषण करता दस्त साफलानेवाला वीर्यकूं जलदी पैदा करनेवाला वल बुद्धि वधानेवाला मैथुनशक्ति वधानेवाला अवस्था स्थिर कर्त्ता ऊमर वधानेवाला रसायणरूप तुटे हाडोंकों सांधनेवाला भूखेकूं वचेकूं वृद्धकूं तृप्तिदेनेवाला स्त्री भोगादिकसें क्षीणकों तथा जखम वालेकों जीर्णज्वर श्रम मूर्छा मन संवंधी रोग शोष हरस गुल्म उदररोग पांडु पैसावका रोग रक्तपित्त थकेला तृषा दाह छातीके रोग शूल आफरा अतीसार गर्भश्राव इनोमें दूध पथ्य है विशेष रोगोमें दूध पथ्य है,सन्निपात नवीनज्वर वातरक्त कोढादिकमें मना है नवीनज्वरमें कोनेनपर डाकदर पिलाते है (सन्निपातकी अवस्थामें दूध जहर है) निश्चय सिद्धांत है सुजाक फिरंगकी तरुण अवस्थामें भी दूध खराव है लिस्सी पीते है वो गंठियाकी जड है) धातूकीवृद्धि जितनी जलदी दूधसें होती है एसी कोइभी चीजसें नहीं होती (दुहा) वीर्यवधावण वलकरण जो मोह पूछो कोय पयसमान तिहुं लोकमें अवरनऔषध होय १ गायका दूध ये सव गुण धराता है ऊपर लिखे मुजव (काली गायका दूध) वायु हरता और जादा गुण करता है (लाल गायका) वात हर पित्त हरभी है (सुपेदगायका दूध) जरा कफ करता तुरतकी जणी भई तथा वछडे विगरकी गायका दूध तीनों दोषोंको पैदा करती है वाखडी याने व्यायेकूं दोय चार महीने वीतने वाली गायका दूध उत्तम है इस उपरांत जैसा खुराक खानेमें आवे गुण दोषका आधार उसपर है (भैसका दूध) गुणमें कितनेक दरजे गायसें मिलता है मीठाजादा जाडाजादा भारी वीर्यजादावधानेवाला कफकरता नींदकूं

(टीडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् वुद्धिकों विगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात वहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकूं आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कच्ची ठंडी है लूखी है दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पक्की ककडी अग्नि तथा पित्तकूं वढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीभडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक विलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरवूज कफकारक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अछा है मतीरेसें क्षयकी वैमारी पैदा होती है इसकूं तरवूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चे तीनों दोषोंकों विगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कच्चेका साग पक्केकूं हेमंतऋतूमें खाते हैं सो तदन खराव है जब करसान लोक कच्चीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् वहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोलेके रोगमें वहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल वाकी सव फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सव रोगोमें फायदे वंद है दाद कोढ रक्तपित्त वालेकूं महा खराव है हरसकी वेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ठ है(आलु) ठंडा मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोपणकारक वलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें वायु नहीं करता अंगारमे वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके वालकोंकों खिलाणेसें पोपण अछी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कच्ची मूली तीनों प्रकृतीमें अछी है पक्के मूले (वडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अछा नहीं मूलेकूं गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

तीकूं अनुकूल पडता है गाजर मीठा रुचिकर तथा ग्राही है खुजली और खून विगाडके रोगोंमें अछा नहीं हे कितनेक रोगोमें अच्छाभी है लेकिन वीर्यकूं विगाडता हैं इसवास्ते इसकूं समझदार लोक नही वरतते है जैनकोम इसीवास्ते जमीकंदोसें विशेप परहैजरखती है (कांदे) डूंगली बलवर्द्धक तीखा भारी मधुर रुचिकर वीर्यवर्द्धक कफ तथा नींद पैदा करै क्षीणता रक्तपित्त उलटी हैजा कृमि अरुचि पसीना सोजा खूनके सब रोगोंमें हितकारी है इसके साग मुरब्बे पाक वगेरे लोकवणाते है दुरंगध इसमें वहोत है कांदे और लसणकूं तो गोकुल वैष्णव बिलकुल छीते नही वचे हैं सो अछे हैं रांधणेकी युक्ति और दुसरी चीजोंके संयोगसे साग तरकारीके गुणोंमे फेरफार होता है जो साग वायु करता होता है वो वहोत घी तेलके संयोगसें वायु नहीं करता जो साग पचणेमें भारी होता है उसकूं पहली खूब जलमें वाफके फेर घीमें तेलमें लोक छमकते है सूरण आलु वगेरे कंदोकों वो नुकशांन नहीं करता वहोत लाल मिरच मसाला खाणा अछा नहीं क्योंके जादा मसालोंसें पाचन शक्ति कम होकर दस्त संग्रहणी आम्लपित्त रक्तपित्त कुष्टादिक खून विकार हो जाता है.

॥ उजाला ४ दूध विचार ॥

(सामान्य गुण) दूधका मीठा ठंडा पित्तहर पोषण करता दस्त साफलानेवाला वीर्यकूं जलदी पैदा करनेवाला वल बुद्धि वधानेवाला मैथुनशक्ति वधानेवाला अवस्था स्थिर कर्त्ता ऊमर वधानेवाला रसायणरूप तुटे हाडोंकों सांधनेवाला भूखेकूं बचेकूं वृद्धकूं तृप्तिदेनेवाला स्त्री भोगादिकसें क्षीणकों तथा जखम वालेकों जीर्णज्वर श्रम मूर्छा मन संबंधी रोग शोष हरस गुल्म उदररोग पांडु पैसाबका रोग रक्तपित्त थकेला तृषा दाह छातीके रोग शूल आफरा अतीसार गर्भश्राव इनोमें दूध पथ्य है विशेष रोगोमें दूध पथ्य है,सन्निपात नवीनज्वर वातरक्त कोढादिकमें मना है नवीनज्वरमें कोनेनपर डाक्दर पिलाते हे (सन्निपातकी अवस्थामें दूध जहर है) निश्चय सिद्धांत है सुजाक फिरंगकी तरुण अवस्थामें भी दूध खराब है लिस्सी पीते है वो गंठियाकी जड हैं) धातूकीवृद्धि जितनी जलदी दूधसें होती है एसी कोइभी चीजसें नहीं होती (दुहा) वीर्यवधावण वलकरण जो मोह पूछो कोय पयसमान तिहुं लोकमें अवरनऔषध होय १ गायका दूध ये सब गुण धराता है ऊपर लिखे मुजब (काली गायका दूध) वायु हरता और जादा गुण करता है (लाल गायका) वात हर पित्त हरभी है(सुपेदगायका दूध) जरा कफ करता तुरतकी जणी भई तथा वछडे विगरकी गायका दूध तीनों दोषोंको पैदा करती है वाखडी याने व्यायेकूं दोय चार महीने वीतने वाली गायका दूध उत्तम है इस उपरांत जैसा खुराक खानेमें आवे गुण दोपका आधार उसपर है (भैंसका दूध) गुणमें कितनेक दरजे गायसें मिलता है मीठाजादा जाडाजादा भारी वीर्यजादावधानेवाला कफकरता नींदकूं

(टींडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् बुद्धिकों विगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात वहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकूं आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कची ठंडी है लूखी है दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पक्की ककडी अग्नि तथा पित्तकूं वढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीमडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक विलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरवूज कफकारक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अछा है मतीरेसें क्षयकी वैमारी पैदा होती है इसकूं तरवूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों दोषोंकों विगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कच्चेका साग पक्केकूं हेमंतऋतुमें खाते हैं सो तदन खराव है जव करसान लोक कच्चीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् वहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोलेके रोगमें वहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल वाकी सव फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सव रोगोमें फायदे वंद है दाद कोढ रक्तपित्त वालेकूं महा खराव है हरसकी वेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ठ है(आलु) ठंडा मीठा रूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोपणकारक वलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकूं वधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें वायु नहीं करता अंगारमे वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके वालकोंकों खिलाणेसें पोषन अछी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा है मल रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कच्ची मूली तीनों प्रकृतीमें अछी है पक्के मूले(वडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अछा नहीं मूलेकूं गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

तीकूं अनुकूल पडता है गाजर मीठा रुचिकर तथा ग्राही है खुजली और खून बिगाडके रोगोंमें अच्छा नही हे कितनेक रोगोमें अच्छाभी है लेकिन वीर्यकूं बिगाडता हैं इसवास्ते इसकूं समझदार लोक नहीं वरतते है जैनकोम इसीवास्ते जमीकंदोसें विशेष परहैजरखती है (कांदे) डूंगली बलवर्द्धक तीखा भारी मधुर रुचिकर वीर्यवर्द्धक कफ तथा नींद पैदा करै क्षीणता रक्तपित्त उलटी हैजा कृमि अरुचि पसीना सोजा खूनके सब रोगोंमें हितकारी है इसके साग मुरब्बे पाक वगेरे लोकवणाते है दुरंगध इसमें बहोत है कांदे और लसणकूं तो गोकुल वैष्णव बिलकुल छीते नहीं बचे हैं सो अछे हैं रांधणेकी युक्ति और दुसरी चीजोंके संयोगसे साग तरकारीके गुणोंमे फेरफार होता है जो साग वायु करता होता है वो बहोत घी तेलके संयोगसें वायु नहीं करता जो साग पचणेमें भारी होता है उसकूं पहली खूब जलमें वाफके फेर घीमें तेलमें लोक छमकते है सूरण आलु वगेरे कंदोकों वो नुकशांन नहीं करता बहोत लाल मिरच मसाला खाणा अछा नहीं क्योंके जादा मसालोंसें पाचन शक्ति कम होकर दस्त संग्रहणी आम्लपित्त रक्तपित्त कुष्ठादिक खून विकार हो जाता है.

॥ उजाला ४ दूध विचार ॥

(सामान्य गुण) दूधका मीठा ठंडा पित्तहर पोषण करता दस्त साफलानेवाला वीर्यकूं जलदी पैदा करनेवाला बल बुद्धि वधानेवाला मैथुनशक्ति वधानेवाला अवस्था स्थिर कर्त्ता ऊमर वधानेवाला रसायणरूप तुटे हाडोंकों सांधनेवाला भूखेकूं बचेकूं वृद्धकूं तृप्तिदेनेवाला स्त्री भोगादिकसें क्षीणकों तथा जखम वालेकों जीर्णज्वर भ्रम मूर्छा मन संबंधी रोग शोष हरस गुल्म उदररोग पांडु पैसावका रोग रक्तपित्त थकेला तृषा दाह छातीके रोग शूल आफरा अतीसार गर्भश्राव इनोमें दूध पथ्य है विशेष रोगोंमें दूध पथ्य है,सन्निपात नवीनज्वर वातरक्त कोढादिकमें मना है नवीनज्वरमें कोनेनपर डाकदर पिलाते हे (सन्निपातकी अवस्थामें दूध जहर है) निश्चय सिद्धांत है सुजाक फिरंगकी तरुण अवस्थामें भी दूध खराब है लिस्सी पीते है वो गंठियाकी जड है) धातुकीवृद्धि जितनी जलदी दूधसें होती है एसी कोइभी चीजसें नहीं होती (दुहा) वीर्यवधावण बलकरण जो मोह पूछो कोय पयसमान तिहुं लोकमें अवरनऔषध होय १ गायका दूध ये सब गुण धराता है ऊपर लिखे मुजब (काली गायका दूध) वायु हरता और जादा गुण करता है (लाल गायका) वात हर पित्त हरभी है(सुपेदगायका दूध) जरा कफ करता तुरतकी जणी भई तथा बछडे बिगरकी गायका दूध तीनों दोषोंको पैदा करती है वाखडी याने व्यायेकूं दोय चार महीने बीतने वाली गायका दूध उत्तम है इस उपरांत जैसा खुराक खानेमें आवे गुण दोषका आधार उसपर है (भैंसका दूध) गुणमें कितनेक दरजे गायसें मिलता है मीठाजादा जाडाजादा भारी वीर्यजादावधानेवाला कफकरता नींदकूं

(टीडोरा) भारी है ठंडा है वायडा है मोल उलटी करा देवे एसा है स्तनका दूध वधाता है दस्त कब्ज करता है पित्त रक्तदोष सोजा दाह तथा खास रोगमें पथ्य है लेकिन् वुद्धिकों विगाडती है(पंडोला)वातहर पित्तहर ताकतवर रुचिकर शोषणकरता हितकारक परवलसें गुणमें कुछ कम है(ककडी)इसकी जात वहोत है जिसमें क्षीरा नांमकी है जिसकूं आनंद श्रावकने मोकली रक्खी है उपाशक दशा सूत्रमें,उसके गुण, कच्ची ठंडी है लूखी है दस्तकूं रोकती है मीठी है भारी है रुचिकर है पित्त हरता है पक्की ककडी अग्नि तथा पित्तकूं वढाती है मारवाडकी ककडी जिसकूं गुजराती चीभडा कहते है ये तीनों दोषोंकों कोपातीहै इसवास्ते खाणे और साग लायक विलकुल नहीं है(कालिंगा,)मतीरा,तरवूज कफकारक वायुकारक लोक कहते हैं पित्तवालेकूं अछा है मतीरेसें क्षयकी वैमारी पैदा होती है इसकूं तरवूज भी कहते है जो गरमी मोसममें पैदा होता है, ककडी और मतीरा निश्चै तीनों दोषोंकों विगाडणेवाला है इसवास्ते किसीकामके नहीं वीकानेरवाले कचेका साग पक्केकूं हेमंतऋतूमें खाते हैं सो तदन खराव है जव करसान लोक कच्चीवाजरीका मोरण खाकर ऊपरसें कालिंगे खाते है उससें किसी अंशमें कम नुकशान करते हैं लेकिन् महीनोंतक सीत दाहज्वरका मजाभी वोही लोक चाखते है (वालोल) सेमकी फली,मीठी ठंडी भारी इसवास्ते वायडी है पित्तकूं मिटाती है ताकत देणेवाली है(गुंवार फली)लूखी भारी और कफ करता अग्निदीपक सारक पित्तहर लेकिन् वहोत वायु करती है (सहजनेकी फली) मीठी तुरी कफहर पित्तहर और अत्यंत अग्निदीपक है शूल कोढ क्षय श्वास तथा गोळेके रोगमें वहोत पथ्य है, सहजनेकी फली टाल वाकी सव फलियां वायडी है (सूरणकंद) अग्निदीपक लूखा तुरा हलका पाचक पित्तकरतां तीक्ष्ण मलस्तंभक रुचिकर हरस शूल गोला कृमि कफ मेद वाय अरुचि श्वास तिल्ली खासी इन सव रोगोमें फायदे वंद है दाद कोढ रक्तपित्त वालेकूं महा खराव है हरसकी वेमारीमें शाक इसकी रोटी पुडी सीरा वगेरे करके खाणेसे दवाका काम करता है कंदसाकमें सूरणका साग श्रेष्ठ है(आलु) ठंडा मीठा लूखा मलमूत्रकूं रोकणेवाला पोषणकारक वलवर्द्धक स्तनकादूध वीर्यकूं बधाणेवाला रक्तपित्तका नासकरता कुछ वायु करता है जादा घीके संग खाणेसें वायु नहीं करता अंगारमे वाफ करके अथवा घीमें तलकर पांच दस वर्षके वालकोंकों खिलाणेसें पोषन अछी तरे करता है हाडोंकों वधाता है(रतालु) (तथा सक्करकंद)पौष्टिक तथा मीठा है मळ रोकणेवाला कफ करता है (मूले) भारी है मलकूं रोकता है तीखा है इससें गरम है अग्निदीपक रुचिकर है हरस गुल्म श्वास कफ ज्वर वायु नाकके रोगोमें हितकारी है कच्चा मूळी तीनों प्रकृतीमें अछी है पक्के मूले (वडे मूले) लुखे जादा गरम और कुपथ्य है मूलेके ऊपरके छिलके भारी है और तीखा है सो अछा नहीं मूलेकूं गरम जलमें वाफके फेर जादा घीमें या तेलमें तलते है सो तीनों प्रकृ-

और तन दुरस्तीमें जिंदगानी गुजारते हैं कितनेक लोकोंकूं दूधसं दस्त आता है कितनों-कों कब्ज होजाता है तत्वमें इतनी ही वात है उनोके दूध पीनेका मावरा नहीं है लेकिन् एसे कारण होनेपरभी दूध उनोंकों नुकशानकारी कभी नहीं समझना मावरा पडनेसें वाजे अदमी सोमलभी वे प्रमाण खातोकों मैनें देखा है तव तो अमृत जैसी चीज दूध माफगत मावरा डालनेसें नहीं आवे ये बात कभी संभव नही हो सकती इस वास्ते वणे जहांतक दूधका सेवन हमेस करणा चाहिये पारसी अंग्रेज वगेरे श्रीमंत लोक दूध और दूधमेंसें निकले भये पदार्थ मख्कन मलाई पनीर वगेरे पदार्थोंका जादा उप-योग करते हैं और आर्य कोमके श्रीमंत शाग राईता और लाल मिरचोंका पूर मसालोंके शोखमें पडे भये मालम देते हैं तो पीछे साधारण गरीब लोकोंकी वात ही क्याकरणी दूधकी खुराकमें मारवाडी प्रजा तदन भूल खारही है तो शरीरकी स्थितीकी दशा कैसें सुधरे भाग्यवान लोक जैसे गाडी घोडे घर बाहिर रखते है तैसें गाय भेंसे रखनी च-हिये गाडी घोडोंसे श्रीमंताइ टिक नही सकती लेकिन् गाय भेंसोंसें लडकोंकी बुद्धि टि-केगी और वधेगी तो श्रीमंताई जरूर टिकके रहेगी जितनी गाय भेंस पृथ्वीपर जादा होगी जितना दूध घी सस्ता जादा होगा जैनियोंके उपाशक दशा सूत्रमें दस वडे श्रीमंत श्रावकोंका अधिकार चला है जिणोमें काम देवजीके ८० हजार गइया आनंदजीके ४० हजार इसतरे दसोंके गोकुल लिखा है ऊपर लिखे जानवरोंसें वहोत फायदा होता है इनोकी पूरी हिफाजत तन दुरस्ती रखणी गरीब और तालेवर सबका निर्वाह इन जान-वरोंसे है जब आर्यावर्त्त अपने पूरे प्रकाश परथा तव इन जानवरोंकी असंक्षा कोटी थी मांसाहारियोनें इन जानवरोंकों मार २ आर्यावर्त्तकों सब तरे लाचार कर दिया दूधमें खार तथा खटाईका जितना तत्व रहा भया है उससे जादा खार खटाईका योग हो जाता है तव नुकशान कर्ता है, गुण नहीं करता, इसवास्ते विवेकसें उपयोग करणा कि-तनीक बातें फेर समझने जैसी है खार तथा खटाई दूधमें मिलनेसें दूध फट जाता है इसवास्ते खार तथा खटाईके संग दूध खानेमें आवे जरूर नुकशान करता है वैद्यक ग्रथोमें एसा लिखा है दूध भोजनकी वखत खाना होय तो ऊपरसें पीणा या भातके सग खाना जैसें कछके जैन औसवाल खाते है अथवा भोजनमें दूधके विरोधी पदार्थ नहीं होय तो भोजनमें भी खाना दूधके संग कितनेक पदार्थ मित्रका काम करते है, कितनेक शत्रुका, (दूधके मित्र) दूधमें छवरस है और इन छवरसोंके मिलते स्वभावके पदार्थ इस मुजब है, दूधमें खट्टा रस है उस खटाईका दोस्त आंवला है, दूधमें मीठा रस है उस मीठारसका मित्र चूरा मिश्री है, दूधमें कडवा रस है उस कडवेरसका दोस्तपरवल है, दूधमें तीखा रस है, उस तीखे रसका दोस्त सूंठ तथा आदा है, दूधमें कपायला रस है उस कपायले रसका दोस्त हरडे है, दूधमें खारा रस है, उस खारे रसका दोस्त सींधा

धानेवाला वेमारकूं गायका जादा पथ्य है भैंसकाकम (बकरीका दूध) तुरा मधुर ठंडा हलका रक्तपित्त अतिसार क्षय खास बुखारके जीर्ण रोगोंकी अवस्थामें पथ्य है (गाडरका) दूध खारा मीठा गरम पथरीकूं मिटानेवाला(घोडीका दूध)लूखा गरम बल देनेवाला शोष तथा वायुकूं मिटानेवाला खट्टा खारा और हलका है (उंठणीका दूध) हलका मीठा खारा अग्निदीपक दस्तलानेवाला कृमि कोढ कफ पेटका आफरा सोजा जलंदर वगेरे पेटके दरदोकों मिटाता है (स्त्रीका दूध) हलका ठंडा अग्निदीपक वायु पित्त नेत्ररोग शूल पछाटकूं मिटाता है (धारोष्ण दूध)ताकतवर हलका ठंडा अग्निदीपक और त्रिदोपहर है(गरम तथा ठंडा दूध) दो है पीछै ठंडा पड जाय तो गरमकर पीछे उपयोगमें लेना तथा भैंसके दूध टाल और सव तरेका कच्चा दूध सरदी तथा आम पैदा करता है इसवास्ते कुपथ्य है गरम किया भया दूध वायु कफवालेकूं सुहावता गरम पीणा फायदे वंद है जादा गरमसें मुं उसल जाता है पित्त प्रकृतीकूं नुकशान करता है इसवास्ते ठंडा करके पीना दूधके वजनसें आधावजन पाणी डाल पीछे उकाल पाणी जलेवाद जो दूध रहै वो वहोत हलका तीनों प्रकृतीमें तथा वेमारकूं पथ्य है रढा भया दूध भारी होता है इस वास्ते वैमारोंको तथा मंद पाचन शक्तिवालेकूं अछा नहीं दूधमेसे तीन हिस्सा पाणी जल जावै एक हिस्सा जल रह जावै एसा दूध पीणा, रढा भया दूध ताकतदार है लेकिन पूरी पाचन शक्तिवालेकूं तथा कसरती जवानोंकों पचता है खराव दूध विगडा भया दूध जिसका रंग वदल गया होय स्वाद वदलजाय खट्टा पड जाय खराव वो आवै और फिदकडी वंध जावै एसा दूध नुकशान करता है तीन घडी दो है पीछै वासी दूधकूं गरम नहीं करे तो नुकशान करता है जैनसिद्धांतमे इसीवास्ते दो घडी वाद कच्चे दूधकूं नुकशानकारी लिखा है और जिसका रंग खसवो स्वाद रूप वदल जाय एसी खाणे पीणेकी सव चीजोंकों अभक्ष लिखा है इसवास्ते इय उपयोग सव जगे याद रखणा एसीं अभक्ष वस्तु जरूर रोगका कारण समझ लेणा पांच घडीतक दोहा भया दूध कच्चा पडा रहे तो विक्रिया करता है अर्थात् तरे२ के रोगका हेतु एक आचार्य कहता है गरम किया भया दूध दस घडी वाद विगड जाता है जैन भक्षाभक्ष निर्णयकार गरम दूध जवसे दोहा तवसे सात घंटे वाद अभक्ष मानता है इय वात मैनें अनुभवभी कर लिया है खट्टा होजाता है इसवास्ते दो है पीछे या गरम किये पीछै वहोत देरतक वासी रखणा नहीं (सवेरका दूध)रातकूं जानवर फिरते नहीं इसवास्ते परिश्रम नहीं होता ओर रात ठंडी होती है इसवास्ते सांझके दूधसें फजरका दूध कुछ भारी होता सांझका दूध सूर्यकी गरमी जानवरोंके फिरणेकी कसरतसें फजरके दूधसें सांझका दूध हलका होता है वायु तथा कफ प्रकृतीवालेकूं सांझका दूध जादे माफगत आता है पोपणके पदार्थोंमें दूध वहोत उत्तम पदार्थ है जिसमें पोपणके सव तत्व आये भये है इस दूधपर वैमार साजे योगी लोक वरसों गुजरा न चलाते है

और तन दुरस्तीमें जिंदगानी गुजारते हैं कितनेक लोकोंकूं दूधसं दस्त आता है कितनों-कों कब्ज होजाता है तत्वमें इतनी ही बात है उनोंके दूध पीनेका मावरा नहीं है लेकिन् एसे कारण होनेपरभी दूध उनोंकों नुकशानकारी कभी नही समझना मावरा पडनेसें वाजे अदमी सोमलभी वे प्रमाण खातोकों मैनें देखा है तव तो अमृत जैसी चीज दूध माफगत मावरा डालनेसें नही आवे ये बात कभी संभव नहीं हो सकती इस वास्ते बणे जहांतक दूधका सेवन हमेस करणा चाहिये पारसी अंग्रेज वगेरे श्रीमंत लोक दूध और दूधमेंसें निकले भये पदार्थ मख्कन मलाई पनीर वगेरे पदार्थोंका जादा उप-योग करते हैं और आर्य कोमके श्रीमंत शाग राईता और लाल मिरचोंका पूर मसालोंके शोखमें पडे भये मालम देते हैं तो पीछे साधारण गरीव लोकोंकी बात ही क्याकरणी दूधकी खुराकमें मारवाडी प्रजा तदन भूल खारही है तो शरीरकी स्थितीकी दशा कैसें सुधरे भाग्यवान लोक जैसे गाडी घोडे घर बाहिर रखते है तैसें गाय भेंसे रखनी च-हिये गाडी घोडोंसे श्रीमंताइ टिक नहीं सकती लेकिन् गाय भेंसोंसें लडकोंकी बुद्धि टि-केगी और वधेगी तो श्रीमंताई जरूर टिकके रहेगी जितनी गाय भेंस पृथ्वीपर जादा होगी जितना दूध घी सस्ता जादा होगा जैनियोंके उपाशक दशा सूत्रमें दस वडे श्रीमंत श्रावकोंका अधिकार चला है जिणोमें काम देवजीके ८० हजार गइया आनंदजीके ४० हजार इसतरे दसोंके गोकुल लिखा है ऊपर लिखे जानवरोंसें वहोत फायदा होता है इनोकी पूरी हिफाजत तन दुरस्ती रखणी गरीव और तालेवर सवका निर्वाह इन जान-वरोसे है जव आर्यावर्त्त अपने पूरे प्रकाश परथा तव इन जानवरोंकी असंक्षा कोटी थी मांसाहारियोनें इन जानवरोंकों मार २ आर्यावर्त्तकों सव तरे लाचार कर दिया दूधमें खार तथा खटाईका जितना तत्व रहा भया है उससे जादा खार खटाईका योग हो जाता है तव नुकशान कर्ता है, गुण नहीं करता, इसवास्ते विवेकसें उपयोग करणा कि-तनीक बातें फेर समझने जैसी है खार तथा खटाई दूधमें मिलनेसें दूध फट जाता है इसवास्ते खार तथा खटाईके संग दूध खानेमें आवे जरूर नुकशान करता है वैद्यक ग्रथोंमें एसा लिखा है दूध भोजनकी वखत खाना होय तो ऊपरसें पीणा या भातके सग खाना जैसें कछके जैन ओसवाल खाते है अथवा भोजनमें दूधके विरोधी पदार्थ नही होय तो भोजनमें भी खाना दूधके सग कितनेक पदार्थ मित्रका काम करते है, कितनेक शत्रुका, (दूधके मित्र) दूधमें छवरस है और इन छवरसोंके मिलते स्वभावके पदार्थ इस मुजब है, दूधमें खट्टा रस है उस खटाईका दोस्त आंवला है, दूधमे मीठा रस है उस मीठारसका मित्र बूरा मिश्री है, दूधमें कडवा रस है उस कडवेरसका दोस्तपरवल है, दूधमें तीखा रस है, उस तीखे रसका दोस्त सूंठ तथा आदा है, दूधमें कषायला रस है उस कषायले रसका दोस्त हरडे है, दूधमें खारा रस है, उस खारे रसका दोस्त सींधा

निमक है, इस उपरांत गहूंके पदार्थ पूडी रोटी चावल घी मख्कण कालीमिरच छोटीपीपर पाकमें डाले जाय एसी पुष्ट दीपन चीज भी दूधके मित्र वर्ग है, (दूधके दुस्मन) सींधा निमक टाल सब तरेका खार, दूधके गुणकूं बिगाड डालता है, आंवले टाल सब तरेकी खटाई, गुड मूंग मूले साग दारू मछी मांस दूधके संग मिलके दुस्मनका काम करता है दूधके संग निमक खार तथा गुड खानेसें कोढ प्रमेह मूत्रकृच्छ्र वगेरे रोग पैदा करता है दूधके संग मूंग मोठ मुले गुड तथा मछी मांस कोढ चमडीका रोग करता है दूधके संग वहोत साग दारू आसव खानेसें पित्तके रोग होकर मर जाता है ऊपर लिखी चीजोंकों दूधके संग खाने पीनेसें अवगुण होता है ये वातकी तुरत खबर नहीं पडती लेकिन् सर्वज्ञ परमात्मानें भक्षाभक्ष निर्णय जो फुरमाया सो जिन दत्तसूरि महाराजने विवेक विलास चर्चरी आदि ग्रंथोंमें लिखा ऐसे महा पुरुष विद्वानोंके वचनोंपर प्रतीति रखना और सर्व जीव हितकारक परम पुरुषकी आज्ञा मुजब चलना ये सलामत रस्ता है जो इन वातोंमें प्रजाकूं नुकशानका रस्ता सर्वज्ञ महावीरकूं दीख पडा सो कहा वो वचन पूर्वानुगत वडे दादा साहिबनें तथा और २ ग्रथोमें उमास्वाती वाचकादिकोनें भी ऐसा ही लिखा सत्य वचन सदा पथ्य है सइकडों अदमी जुदे २ नहीं समझ शके ऐसे रोगोंके सपाटेमें आते है तब अदम्योंकों आश्चर्य आता है मतलब वहोत दिनपहले जो ऐसे विरुद्धखान पान करा होता है उन २ रोगोंका दूरकारण वो विरुद्ध पूर्वोक्त बावते समझनी इय संयोगी जहर जाणना, सदापथ्य और प्रमाणोपेत आहार करनेवालोंको अचानक जो रोग हो जाता है सो अज्ञानपनेसें ऐसे संयोग विरुद्ध खान पान कभी करते हैं या किया भया होता है वो ही समय पाय समवायोके संग झट रोगी कर देता है इसके अलावा संयोग विरुद्ध और भी खान पान वहोत है क्रम २ सें लिखेंगें ॥

॥ घी-घृत ॥

(घीके सामान्य गुण) रसायण मधुर नेत्रोंकोंहितकर अग्निदीपक शीतवीर्यवाला बुद्धि वधानेवाला जीवनदाता शरीरकुंनरमकरता वल कांति वीर्यकूं वधानेवाला मलकूं खिसानेवाला भोजनमें मीठास दाता वायुके पदार्थोंका वायु, संग खानेसें मिटानेवाला गड गुमडकूं मिटानेवाला जखमीकूं वलदाता कंठ तथा गायन सुधारनेवाला मेद कफकूं वधानेवाला अंगारसेंजलेकूं फायदेमंद वातरक्त अजीर्ण नसा शूल गोला दाह सोजा क्षय कानका मस्तकका खून विगाड इत्यादि रोगोंमें फायदेमंद है सामज्वर याने आमसंयुक्त नये बुखारमें सन्निपात बुखारमें कुपथ्य है, सादे बुखारमें वारेदिन वीते पीछे कुपथ्य नहीं, बालक वृद्धकूं ववेमये क्षयरोगीकूं कफकेरोगमें आमवातवालेकुं खुराकमें देनेमे मलबंधमें वहोत दारू पीनेसें भये मदात्यय रोगमें और मंदाग्निमें इतने रोगोंमें घी नुकशान करता है, सादे अदमीके हर वखत भोजनमें थकेलेमें क्षीणतामें पांडु

छाणा भया दही वहोत स्निग्ध वायुहरणकरता कफ पैदाकरता भारी ताकतवर पुष्टि-
अग्नि दीप्त करता है इसवास्ते ऐसा दही पुराणे मरोडे ग्रहणी दस्तकूं हितकारी है कपडेसें
पीछेका दही) दस्तकूंरोकता है ठंडा है वायूकोंपैदाकरनेवाला हैं हलका है ग्राही है
दही रुचि करता पित्तकों वायूकों मिटानेवाला धातुओकों ताकत देनेवाला है, मलाइ निकाले
भये दूधमें जांवण दिया भया दही, कचे दूधके जमाये भये दहीसें गुणकारी है, ऐसा
कूं वहोत ही विगाड देता है, इन पांचों जातमें स्वादाम्ल दही अछा है (विचार) पकाये
खडे होजाय कंठमें जलण होजावै ऐसा खट्टा दही अग्निप्रदीसकरै लेकिन् पित्तकूं खून-
और खूनकूं वधावै और विगाडै ५ (अत्यम्ल दही) जिसके खानेसें दांतअंबीज जाय रूं-
होय नहीं खट्टास्वाद प्रगट मालम देवे ऐसादही अग्निप्रदीप्त करे लेकिन् पित्त कफ
तुर लगे ऐसादही मध्यम गुणवाला समझना ४ (अम्ल दही) जिसमें मीठास विलकुल
रक्त पित्तमें भी फायदा करता है३(स्वाद और अम्ल दही) खट्टा और मीठा घट्ट जमाभया जरा
वालाभी होवे वो स्वादुदही सरदी मेद तथा कफ पैदा करता हे लेकिन् वायु हरता है
तरे जिसका स्वाद मालम देवै मीठे रसवाला होय प्रगट तो नही मालम देवे ऐसा खट्टा रस-
तीनों दोषकूं और दाहकूं पैदा करता है २ (स्वादुदही)जो दही घट्ट हो गया होय अछी
समझमें नही आवै ऐसे स्वादवाला होय सो मंददही दस्त पैसावकी प्रवृतिकूं और
मीठा और खट्टा असलमें दोजात है १ (मंददही) कुछ एक तो जाडा लेकिन् दूधकी तरे
और दुर्वलतापर दही अछा है लेकिन् युक्तिसें खाना चहिये, दही पांच तरेका होता है
खूनविगाड सोजा मेद कफकूं पैदाकरता हैं मूत्रकृछ श्लेष्म ठंडकातप अतिसार अरुचि
(गुण दहीका) गरम अग्नि दीपक भारी पाचनभयेवाद खट्टा दस्तकूं रोकता है पित्त

॥ दही ॥

मख्कण खारा तीखा और खट्टा होनेसें उलटी हरस कोढ कफ तथा मेदकूं पैदा करता है॥
है दाहकूं पितकूं श्रमकूं मिटाता है मेद तथा वीर्यकूं वधाता है (वासी मख्कन) वासी
फायदा करता है वचोंकों अमृतरूप है भैंसका मख्कण वायु तथा कफ करता है भारी
दस्तकूं रोकता है वायु पित्त खूनविगाड क्षय हरस अर्दितवायु तथा खासीकी वैमारीमें
गइयाका मख्कण हितकारी है वलवर्द्धक है रंगसुधारता है अग्निदीपनकरता है

॥ मक्खण ॥

है पुराणा घी मलमके जितने लगवग गुण धराता है ॥
फावत है ऐसा उनोके घीमेंभी समझलेना सब तरेके मलमोंमें पुराणा घी गुणकरता
लेकूं वकरीका घी पुराना फायदेवंद जादा है, गाय भैंस वगेरेके दूधके गुणोंमें जेसा
मिर आंखोंमें अंधेरी आवे सो इन रोगोंमें एक वर्षका पुराणा घी फायदे वंद है श्वास
ीकूं, आंखोके रोगमें ताजा घी फायदे वंद है, मुर्छा कोढ जहर उन्माद वादी तथा

कारक रुचिकारक और मीठा होनेसें पित्तकूं वहोत वधातानहीं, जो कपडेमेंवांध पाणी टपकादियाजावे उस दहीका इतना गुण है, अव ऐसेदहीमें मिश्री मिलाय खानेसें प्यास पित्त खूनविगाड तथा दाहकूं मिटाता है गुडडालके खायाभयादही वायुकों मिटाता है पुष्टिकरता भारी है, रातकूं सव भोजनकी मनाई वैद्यकशास्त्र और धर्मशास्त्र करता है जिसमें भी दही खानेकी विलकुल रातकूं मनाई है कोइमहाभयंकररोगके कारण वैद्य वतावे तो इतनी चीजोंमें की कोईभी चीजका संयोग होना, जैसें लूंण जल घी सक्कर वूरामिश्री वगेरे सहत मूंगकीदालके संग वाफनिकाला दहीं आंवला वगेरे मिलाया अनुपान होना रक्त पित्त तथा कफ संवंधी कोइ भी रोग शरीरमें होय तो ऊपर लिखी चीजे डालकरभी खानेसें नुकशान रातकूं होगा, ऋतु प्रमाणसें दही खानेका विचार देखे तो) हेमंत शिशिर वर्षा ये तीन ऋतुमें दही दुरस्त है और (शरद) आसो काती(ग्रीष्म)वैशाख ज्येष्ट(वसंत) फागुण चैत्र इनोंमें सवकूं दही मना है इस ऊपर लिखे नियम विगर वीकानेरवाले ओ-सवालोकेतरे अपनी इछामुजव चाहेजैसा वहोतदही खानेवाले वुखार खूनविगाड पित्त वातरक्त कोढ पांडू भ्रम और भयंकर कामला सोजा कुडजाणा वुढापेमें खासी निद्रानास कमऊमर हो जाणा इत्यादि विकार जरूर होजायगा क्षयरोगी वादीकारोगी पीनसकारोगी कफकारोगी इनोंनें खाली दही भूल चूक कभी नही खाना संयोगसें जेसेंकी गुड कालीमिरच औरदहीसें तो प्रायें पीनस मिट जाता है खानेसें इत्यादि, दहीका योग याने दोस्त) लूण,खार घी सक्कर वूरामिश्री सहत आंवले इनोके संग दही खाना, गरमा गरम चीजोंकेसंग दहीखाना जहर जैसा है,घीके संग दही वायु हरता है आंवलेकेसंगखायाभया कफ हरता है सहतके संग खानेसें पाचनशक्ति वढती है तथा थोडासा विगाड भी करता है मिश्री वूरा कंदके संग दही दाह खून पित्त तथा प्यासकूं मिटाता है गुडके संग खायाभया दही ताकतदेता है वायुकूं दूर करता है तृप्ति करता है निमक जीरा और जल डालके दही खानेमें आवे तो विशेप नुकशान नहीं करता तो भी जिस रोगोंमें दही मना है उस रोगमेंतो निमक जल मिलानेपर भी दही विकार करता है ॥

॥ तक्र–छाछ ॥

(छाछकी जाति और गुण)जादा पाणी डालनेसें या कम डालनेसें अथवा विगर पाणी-की छाछके गुणोंमें फेरफार होता है पाणी डाले विगर तेसें दहीकीमलाई विगर निकाले जो विलोया जावे वो घोलिया कहलाता है, मलाई निकालकर विलोया भया मथित कह-लाता है, आधादही आधाजल डाल विलोया दही उदश्वित् कहलाता है जिसमें पाणी जादाडालके मक्खन विलोयकरविलकुल निकाल लिया जावे सो छछिका कहलाती है, घोलमें मीठा डालकर खावे तो केरीके रस जेसा गुण करता है, मथित वायुकूं पित्तकूं तथा कफकूं हरनेवाला और प्यारा लगता है, तक्रउसका नाम है जिस दहीके शेर भरमें पाव पाणी डाला जावे सो छाछ दस्तकूं रोकती है पचती वखत

मीठी है इसवास्ते पित्त नहीं करती और तुरा उष्ण वीर्य तथा लुखी होनेसें कफकूं तोडती है योगचिंतामणि तथा श्रीआयुर्ज्ञानार्णव महासंहितामें श्रीहेमचंद्र लिखता है तक्रका यथा योगसेवणेवाला कभी विवहारनयसें रोगी नहिं होता और तक्रसें जले भये रोग फेर पीछे कभी होतेभी नही जैसें स्वर्गके देवतोकूं अमृत सुख देता है तैसें मृत्यु लोकमें अदम्योंकों तक्र अमृत समान है तक्रमें इतना गुण लिखा है लेकिन् वो गुणोका मुख्य आधार जिस तरेके दहीमेंसें छाछ करनेमें आवे उसपर समझणा, उदश्वित जातकी छाछ कफ करती है, ताकतवढाती है, और आमकूं मिटाती है, छछिका हलकी पित्तकूं थकेलेकूं प्यासकूं मिटाणेवाली वायुकूं मिटाणेवाली कफकू करनेवाली है, निमक डाल उपयोगमें लीभई छाछ अग्नि प्रदीप्त करता और कफकूं कम करती है, दही खराव होय उसकी छाछ भी अवगुणकारी होती है (छाछ पीणेकी विधि) वायुकी प्रकृतीवालेनें अथवा वायुके रोगीने खट्टी छाछमें सींधा निमक डाल पीणी अछी है, पित्त प्रकृतीवालेने अथवा पित्तके रोगीनें मिश्री डाल मीठी छाछ पीणी अछी है, कफ प्रकृतीवालेने अथवा कफकेरोगमें सेंचलनिमक सूंठ मिरच पींपरका चूर्ण मिलाकर पीणी अछी है, ठंड कालेमें अग्नि मंदमें कफके भये रोगोंमें मल मूत्र साफ नही ऊतरता होय जिसमें जठराग्निके विगाड उदररोगमें गोलेकेरोगमें ववासीरकेरोगमें इकेली छाछका ऐसा प्रयोग है सो असाध्य संग्रहणी तथा हरस जैसा भयंकर रोग अछे होते है, लेकिन् देशी पूर्ण विद्वान वैद्यकी सलाहसें उपयोग करना कारण आम्लपित्त संग्रहणी एक सदृश प्राय रोग है वैद्यकी पूरी अकल चरी निदान याने रोग परीक्षामें हीं है अम्ल पित्तकूं तक्र जहर है ॥ (छाछ पीनेकी मनाई) चोटलगेभयेजखमी सोजेकानिजरोग जोकी मलसे होता है, श्वासकेरोगीकूं, शरीरसूककर दुर्वल हो गया होय जिसकूं, मूर्छा भ्रम उन्माद फकूत प्यास के रोगीकूं रक्तपित्तके रोगीकू वैशाख जेठके महीनेमें आसोजकाती केमहीनेमें राजयक्ष्मा तथा उरःक्षत रोगीकूं तरुणज्वर सन्निपातज्वरीकों इत्यादि रोगीकूं छाछ पीणा नही पीनेसे दुसरे अनेक रोग पैदा होनेका संभव है ॥

॥ उजाला ५ मा फल वर्ग ॥

अपणे मुलकमें अनेक फलोंका लोक वरतावा करते हैं जिसमें मुख्य(केरी)सामान्यतरे केरी हितकारी है कचीकेरी गरम खट्टी रुचिकर ग्राही तथा रुचिकर है पित्त वायु कफ तथा खून विगाड करती है लेकिन् कंठके रोग वायु प्रमेह योनिदोप व्रण अतीसार तैसे प्रमेह रोगमें अछी है, (पक्कीकेरी) वीर्यवर्द्धक है कांतिकारक तृप्तिकारक मांस तथा वल वधानेवाली है कुछ कफ करती है इसवास्ते इसके रसमें सूंठ थोडीसी डालके उपयोग करना (कचीमीठीकेरी) मकसूदावादमें होती है जातिभेदसें कुछ २ विशेप गुणमें फेर फार भी होता है(सामान्य गुण)एकजेसा सव केरीका समझना (जांमून)मलकूं कवजकरे

मीठा कफका नासकरे रुचिकरता वायुकोंमिटाणेवाला प्रमेहकोंमिटानेवाला उदरवि-
कारमेंइसकारस अथवा सिरका अजीर्ण मंदाग्नि मिटादेता है (बोर) अनेक जातिके होतें
है लेकिन् (खट्टा और मीठा)कफकरता बुखार खासी इनोंकों पैदा करता है इनोके अंदर
लटें होती है इत्यादि तुछफलोकों जैन सूत्र अभक्ष लिखता है इस वास्ते खुलेख्याल
खाणा अछानहीं है (अनार) सर्वोत्तम फल है तीनों दोषोंमें हितकर है अतीसारके रोगमें
फायदेवंद है ऊमदा जातिकाबलकी है बाकी कंधार जोधपुर पूना वगेरेकीभी अछी
है (केला) केलाभारी है ठंडा रुचिकर पित्त नाशक है बलदायक है वृष्प है वीर्य वर्द्ध-
क है तृप्तिकारक है मांसवर्द्धक है कफकर्त्ता है दुर्जर याने पचनेमें भारी है प्यास
ग्लानी पित्त रक्तविकार प्रमेह भूख नेत्ररोगोंकूं मिटाता है भस्मकरोग जिसमें मनुष्य
कितना भी खाय लेकिन् तृप्तिनहींहोय उस रोगमे केला फायदे बंद है (आंवला) स्वा-
दमें तुरा तथा खट्टा है गुणमें रसायण पित्तशामक त्रिदोषहर सारक बलबुद्धिदायक
वीर्यसुधारक पौष्टिक स्मृतिदाता थोडेसेमें समझलेना सर्वोत्तम फल है (गीले) हरे आंम-
लेमें इतनेगुण है लोकसमझते नहीं इसवास्ते जहां बजारोंमें विकते है उहां विशेष
कोइ लेता भी नहीं, फकत दिल्ली बनारस वगेरे शहरोमें मुरबा और आचार भी बणाते
है लेकिन् मुरबा जेसा बनारसका है वैसा और जगे नही देखा, शेरकेआठ ही तुलते हैं
सूके आंवले काली मिरच मिलाके चैत आसोजमें भोजनपर फक्की बीकानेरवाले मारवाडी
बहोतलेते हैं हरकिसीरोगमें लेकिन् तेलका वरतावाबहोत इसवास्ते गुण धुप जाता
है, आंवले सूकेकूं हरेआमलेके रसकीया सूके आंवलेके क्काथकी, भावना सो बेरदेके
सुकाता जाय बाद इसका सेवन करे ऊपरसें दूध पीवे इसके गुणोकी संक्षामें लिख
नहीं सकता, प्राये सर्व रोग जाकर बूढापा जरा बिलकुल नहीं आती गहूं घी बूरा चावल
मुंगकी दाल पथ्य खाना, इसके कच्चेफलभी कभी नुकशान नहीं करते मुरब्बे वगेरे सदा
खाना लाभकारी है, (नारंगी) संतरे मधुर रुचिकर शीतल पौष्टिक वृष्य जठराग्नि प्रदीपक
हृदयकूं हितकर त्रिदोषहारक शूल तथा कृमिहारक मंदाग्नी स्वास वायु पित्त कफ क्षय
शोष अरुचि ओकारी वगेरे रोगोंमें पथ्य है, नारंगीकी मुख्य दोय जात है खट्टी और
मीटी उसमेंमे खट्टी नहीं खाणी (करने जंभीरी) वगेरे बहोत जात है, सर्वोपरी नागपुर द-
क्षणका संतरा ऊमदा होता है (दाख अंगूर) गीलीदाख खट्टी औरमीठी तैसें काळी
और सुपेद मुंबईमें कार्फर्डमारकीटमें मणो बंध हमेसां मिलती है और भी जगे २ अं-
गूरकी पेटियां विकती है खट्टीदाख नहींखानी हरीदाख कफ करती है इसवास्ते
थोडामा सींधानिमक लगाके खानेमें कफ नहीं होता दाख उत्तम मेवा है सूकी मुनक्का
कालीदाख सब प्रकृतीके और सब रोगोंमें पथ्य है बेमारोकों वैद्य मना भी नहीं करता
मीठी है तृप्ती करती है नेत्रोंको अछी है ठंडी है श्रमनाशक है सारक याने दस्त

साफ लाणेवाली है पैसाव खुलास लाती है पौष्टिक है खूनविकार दाह शोष मुर्छा बुखार श्वास खास मदिरापीनेसेंभयेरोग उलटी सोजा वातरक्त वगेरे रोगोकों फायदेवंद है (नीवु) नीवु खट्टे और मीठे दो जातके होते है मीठा पूरचदेशमें वहोत है जिसमें वडेकूं चकोतरा कहते है फलोंमें मीठेकी गिणती है खट्टेकूं एकेला कोइ खाताभी नहीं डाकटर सूजनपर मसूडे पककर खूनगिरता होय जिसपर चूसाते भी है सिकंजी जलमे डालके पिलातेभी है वाकी तो प्रजा आचार चटणी मसाला दाल सागमें रसडालके खाते हैं लेकिन चूसके हमेस कोइ खाता नहीं संयोगसें खट्टे नींबु फायदा करता है (मीठा नीवू) स्वाद मीठा तृसीकरता अतिरुचिकारक हलका कफ वायु उलटी खास कंठरोग क्षय पित्त शूल त्रिदोष मिटाणेवाला मलस्तंभक है हेजा आमवात गोला और कृमि पेटमें कीडोकानासकरता जिसकापेट जकडगयाहोय दस्तवंद होकर वद्धगुदोदररोग भया होय खाणे पीणेकी अरुचि भई होय पेटमें वायू तथा शूलका रोग होय किसी तरेका शरीरमें जहरचढा होय इन सव रोगोमें नींवू देणा अछा है, नींवूकी खटाईसे लोक डरके नीवुंकूं वापरते नहीं लेकिन ये ना समझपणेकी वात है बुखार जैसी वेमारीमें भी जो नीवुकूं युक्तिसें वापरे तो नुकशानके वदले फायदा करता है च्यार फाड एकमें सूंठ सीधा लूण, एकमें काली मिरच, एकमें मिश्री, एकमे डीकामाली, ये चुसाणेसें। जी मचलाणा कै वदहजमी बुखार प्रमुख मिटजाता है और अनेक युक्तियां है (खजुर) पौष्टिक स्वादिष्ट मीठी ठंडी ग्राही खून साफ करता हृदयकूं हितकर त्रिदोपहर श्वास थकेला क्षय विप प्यास शोष याने वदनसूकणा आम्लपित्त जैसे महाभयंकर रोगमें पथ्य और हितकारक है उसमें इतना अवगुण हे पचणेमेंभारी कृमि पैदा करता है इसवास्ते छोटे वच्चोंकूं खजुर कोइजातकीभी खाणे नही देणी खजुरकूं घीमे तलणेसें फेर ये दोनों दोप कितनेक दरजे कम हो जाते है फेर गरमीकी मोसममें खजुरका पाणीकर उसमें जरासा अमलीका खट्टा पाणीदेकर सरवतकी तरे पीणेमें आवे तो फायदा करता है (पीड खजुर) सूकी खारक खजुरही है गुणमें जरा फरक है (फालसे)तेसें (पीलू) तैसें करोंदेके फल पित्त तथा आमवायूका नास करता है सव तरेके प्रमेह रोगीकूं फायदेवंद है (सीताफल) मधुर ठंडा पौष्टिक है लेकिन कफ वायु करता है दक्षण हैदरा-वादके गरीव लोक खाकर पेटभर पाणी पीकर टंक टालते है (जाम फल) स्वादिष्ट ठंडा वृष्य रुचिकर वीर्यवर्धक और त्रिदोपहर है लेकिन तीक्ष्ण है भारी है कफ करता है वायु कर्त्ता है उन्मादरोगी पागलकूं अछा है (सफरजंद) मधुर रुचिकर हृदयकू हितकर शीतल ग्राही और पित्तहर है अतीसार रोगीकूं फायदेवंद है और उसका मुरब्बाभी लोक वनाते है (आलु) हृदयकुं हितकर ठंडा भारी उष्ण जड ग्राही तथा धातुवर्धक प्रमेह हरस ज्वर तथा वायुका नास करता है (अंजीर) ठंडा और भारी है प्रमेह मिटाता है (गूलरकाफल)

लेकिन इसमें छोटे जीव होते है इसवास्ते वड पींपर पीलू ढालू तथा गूलर वगेरे पांच दर खतोकेफल अभक्ष जैन सिद्धांत लिखता है रोगादि कारणमें यतना लिखा है असल अंजीर कावल मेंहोतेहे मुसलमीनहकीम वेमारोंकों वहोत खिलाते हैं (कची अमली)अमलीके फल अभक्ष है सदा छोडणेलायक है रोगकर्त्ता है रक्तपित्त आमके तथा रोगकूं पैदा करता है(पकी अमली) वायू रोगमें शूल रोगमें फायदे वंद है वहोत ठंडी है इस वास्ते सांधोंकों पकडे है नसोकों ढीला करे है इसवास्ते हमेस खाणी अछी नहीं मधरास द्रविडदेस कर्णाटकदेश तैलगदेसवाले इसका कट्ट मिरची मसाला तूरकीदालकापाणी चावलोंका मांड डालकर गरमपकाकर भातके संग नित्य दोनों वखत खाते है मावरा पडणेसें गुजराती तथा गरम मुलकोंमें गरम ऋतुमें लोक दालमें सागमें और गुजराती लोक गुड डालके हमेस इसकी कढी वनाकर खाते है वेमारलोकभी हैदरावादमे इमलीका कट्ट खाते हैं लेकिन एसा निडर होकर अमली जादा खाणा अछा नहीं है ऋतु तासीर और रोग और अनुपानका विचार कर वरतणा अछा है, क्योंके नालक वचन है, गया मरदजो खाई खटाई, गईनारजो खाई मिठाई, गईहाटजहां मंडी हथाई, गया वृक्ष जहां वुगला वैठा गया घर जहां मोडा पैठा, नई अमलीसें एकवरसकी पुराणीइमली अछी उसकेभी निमक लगाकर रखणा चहिये (नालेर) वहोत मीठा चिकणा हृदयकूं हितकर पुष्ट वस्ति सोधक रक्तपित्तहर गरमीपारेवगेरेकी तथा आम्लपित्तमें इसका पाणी तथा नालिकेर खंडपाक वहोत फायदेवंद है और वीर्यवर्द्धक है (सकर टेटी) मीठे काचर खट्टेकाचर इयभी एक ककडीकी जात है नदीकी रेतमें पके है (खरवुजा) गुजरातमें सकर टेटी कहते हैं ये स्वादमें मीठा होता हे इसका लोकपनावनाते है गरम होता है हेजा चलता है उस दिनोंमें इसकुं विलकुल खाणा नहीं सुणा है खरवूजेकापना और चावलसंग खाते जो गुचलका आ जावे तो प्राणी मर जाता है कुछ इलाजभी नही है जमीनखेतोंमेंपके सो ककडी और काचर कहलाता है गुजरातवाले कोठींवडा कहते है इसकुं सुकाकर खेल रेवणाते है काचरोकुं सुकाकर रखते है स्वादिष्ट तो होता हे लोकवहोत खातेभी है लेकिन् गुणोंमे तो सवसे हलके दरजेके फल ककडी और काचर है क्योंके तीनों दोषोंकों विगाडता है कचे वायु कफ करते हैं पकेवाद तो जादाही कफ वायुकों विगाडते है तरवूज मतीरा इसीदरजे गुणमें है अभ्रक पारदभस्म सूवर्णभस्म इन तीनोंको ककाराष्टक खराब कर डालता है. कोला १ केलकंद २ करोंदे ३ कांजी ४ कारेला ५ कैर ६ ककडी ७ कालिगा ८ (विदाम चिरोंजी पिस्ता) ये तीनों मेवे हितकर है सव तरेके पाक लढु वगेरेमें लोक इनोंकों खाते है फल और वनस्पतीकी अनेक जाति है (प्रसिद्ध) विशेष वरतावेका गुण दोष लिखा है इतना जाण लेगा उसकी वुद्धि अनेक वस्तुओंपर प्रसार करेगी विदाम मगजकूं तरावट और पुष्ट करता है लेकिन कडवे (खारे) विदाम

जहरका असर करता है वालकके खाणेमें तीन च्यार कडवे विदाम आजाय तो पूरा जहरका असर करके प्राणोंकी हानी कर देता है इसवास्ते (चाख २ के) उपयोग करणा विदाम पचणेमें भारी है ॥

॥ उजाला ६ छट्ठा गुड-खांड-मिश्री ॥

सेलडीके रससें केइ पदार्थ वनते हैं जिसमेंसें गुड खांड मिश्री मुख्य पदार्थ है आगे तो सक्कर सांठे ऊखके रससेंही वणती थी लेकिन आजकल (पदार्थ विद्याके) सोधकोनें ताड फल खजूरादिक वहोत पदार्थोंसे सक्कर वणाणी सरू करी है इसवास्ते गुड खांडके अंदर वहोत तरेका भेल होके आता है उसकी फेर मिश्रीभी वैसीही वणणे लगी है व्यापार और खाणेके पदार्थोंमें फकत धनकी लालचसें एसा दगा होणा सरू भया है और ऐसे दगेकी भेलकी वस्तु जाहिरा वजारमें विक रही है ऐसी चीजोंपर सरकारकूं वंदोवस्त और निगेदास्ती करणेकी जरूरी है के खाणेपीणेके पदार्थोंमे क्या क्या चीज मिलके आती है ये वात लोक नहीं जाणते हैं और प्रजाका वहोत लोक विचले दरजेके तथा गरीबी हालतमें हैं सो जो चीज सस्ती मिलती है वोही लेकर अपणा काम चलाते हैं लेकिन व्यापारकी हरीफाईसें एक दूसरेसे सस्तामालबनाणेकूं उसमें कितनीक चीजें नुकशानकारीभी मिला देतें हैं बजारमे हरसाल नई २ तरेके गुड खांड वनके आती है इसका सामान्य प्रजासें निश्चय होणा मुस्कल है के कोणसी सक्कर तथा मिश्री अछी है इसवास्ते जादा निश्चय और सुधारा तो जवी हो सकता है के देसी गुड खांडही व्यापारीवेचे और प्रजा वापरे अव इनोका सामान्य गुण दोष इहां लिखताहूं, नया गुड गरम तथा भारी होता है खून विकार तथा पित्त विकारकूं नुकशान करता है पुराणा गुड एक वरसके पीछे तीन वरसका वहोत अछा होता है, हलका अग्नि प्रदीपक और रसायणरूप है फीकापणा पांडू पित्त त्रिदोप और प्रमेहकूं मिटाता है दवायोंमें पुराणा गुड काम देता है सहत नहीं होय तो पुराणा गुड लेणा चहिये तीन वरसके गुडसंग आदा खाणेसें कफका रोग मिटता है हरडेके संग खाणेसे पित्तका रोग मिटता है सूंठके संग खाणेसें वायूका नास करता है तीनवर्ष पीछै गुडका गुण कम हो जाता है पुराणा तीन वरसका गुड गोला ववासीर अरुचि क्षय खास छातीकाजखम क्षीणता पांडु किसीअनुपान यादवायोंके संग फायदा करता हैं ऊपर लिखे रोगोंपर, नयागुड कफ श्वास खास कृमि तथा दाहकूं पैदा करे है गरमी पित्तकी तासीरवालेने नयागुड कभी खाणा नहीं चहिये, चूरमा लापसी सीरा वगेरे चीजोमें गिमार लोग गुड वहोत वापरते हैं मजूर लोग रोटीवगेरेमें हमेसां गुड खाया करते है ये गुड साल उतार होणा नहीं तो तनदुरुस्तीमे खलल पोहचाये विगर नहीं रहेगा चूरमा लपसी वगेरे गुडके पदार्थोंमें घी वहोत होणेसे गरमी वहोत नही करता दुवले वदनवाला सूकगयाहोय जखम

लेकिन इसमें छोटे जीव होते है इसवास्ते वड पींपर पीलू ढालू तथा गूलर वगेरे पांच दर खतोकेफल अभक्ष जैन सिद्धांत लिखता है रोगादि कारणमें यतना लिखा है असल अंजीर कावल मेंहोतेहे मुसलमीनहकीम वेमारोंकों वहोत खिलाते हैं (कच्ची अमली)अमलीके फल अभक्ष है सदा छोडणेलायक है रोगकर्त्ता है रक्तपित्त आमके तथा रोगकूं पैदा करता है(पक्की अमली) वायू रोगमें शूल रोगमें फायदे वंद है वहोत ठंडी है इस वास्ते सांधोंकों पकडे है नसोकों ढीला करे है इसवास्ते हमेस खाणी अछी नहीं मधरास द्रविडदेस कर्णाटकदेश तैलगदेसवाले इसका कट्ट मिरची मसाला तूरकीदालकापाणी चावलोंका मांड डालकर गरमपकाकर भातके संग नित्य दोनों वखत खाते है मावरा पडणेसें गुजराती तथा गरम मुलकोंमें गरम ऋतुमें लोक दालमें सागमें और गुजराती लोक गुड डालके हमेस इसकी कढी वनाकर खाते है वेमारलोकभी हैदरावादमे इमलीका कट्ट खाते हैं लेकिन एसा निडर होकर अमली जादा खाणा अछा नहीं है ऋतु तासीर और रोग और अनुपानका विचार कर वरतणा अछा है, क्योंके नालक वचन है, गया मरदजो खाई खटाई, गईनारजो खाई मिठाई, गईहाटजहां मंडी हथाई, गया वृक्ष जहां वुगला वैठा गया घर जहां मोडा पैठा, नई अमलीसें एकवरसकी पुराणीइमली अछी उसकेभी निमक लगाकर रखणा चहिये (नालेर) वहोत मीठा चिकणा हृदयकूं हितकर पुष्ट वस्ति सोधक रक्तपित्तहर गरमीपारेवगेरेकी तथा आम्लपित्तमें इसका पाणी तथा नालिकेर खंडपाक वहोत फायदेवंद है और वीर्यवर्द्धक है (सकर टेटी) मीठे काचर खट्टेकाचर इयभी एक ककडीकी जात है नदीकी रेतमें पके है (खरवुजा) गुजरातमें सकर टेटी कहते हैं ये स्वादमें मीठा होता हे इसका लोकपनावनाते है गरम होता है हेजा चलता है उस दिनोंमें इसकु विलकुल खाणा नही सुणा है खरवूजेकापना और चावलसंग खाते जो गुचलका आ जावे तो प्राणी मर जाता है कुछ इलाजभी नही है जमीनखेतोंमेंपके सो ककडी और काचर कहलाता है गुजरातवाले कोठींवडा कहते है इसकुं सुकाकर खेल खेणाते है काचरोंकु सुकाकर रखते है स्वादिष्ट तो होता हे लोकवहोत खातेभी है लेकिन् गुणोमे तो सवसे हलके दरजेके फल ककडी और काचर है क्योंके तीनों दोषोंकों विगाडता है कच्चे वायु कफ करते हैं पकेवाद तो जादाही कफ वायुकों विगाडते है तरवूज मतीरा इसीदरजे गुणमें है अभ्रक पारदभस्म सूवर्णभस्म इन तीनोंको ककाराष्टक खराव कर डालता है. कोला १ केलकंद २ करोंदे ३ कांजी ४ कारेला ५ कैर ६ ककटी ७ कालिंगा ८ (विदाम चिरोंजी पिस्ता) ये तीनों मेवे हितकर है सव तरेके पाक लड्डु वगेरेमें लोक इनोंकों खाते है फल और वनस्पतीकी अनेक जाति है (प्रसिद्ध) निशेष वरतावेका गुण दोष लिखा है इतना जाण लेगा उसकी वुद्धि अनेक वस्तुओंपर प्रसार करेगी विदाम मगजकूं तरावट और पुष्ट करता है लेकिन कडवे (खारे) विदाम

जहरका असर करता है बालकके खाणेमें तीन च्यार कडवे विदाम आजाय तो पूरा जहरका असर करके प्राणोंकी हानी कर देता है इसवास्ते (चाख २ के) उपयोग करणा विदाम पचणेमें भारी है ॥

॥ उजाला ६ छट्ठा गुड-खांड-मिश्री ॥

सेलडीके रससें केइ पदार्थ बनते हैं जिसमेंसें गुड खांड मिश्री मुख्य पदार्थ है आगे तो सक्कर सांठे ऊखके रससेंही बणती थी लेकिन आजकल (पदार्थ विद्याके) सोधकोंने ताड फल खजूरादिक बहोत पदार्थोंसे सक्कर बणाणी सरू करी है इसवास्ते गुड खांडके अंदर बहोत तरेका भेल होके आता है उसकी फेर मिश्रीभी वैसीही बणणे लगी है व्यापार और खाणेके पदार्थोंमें फकत धनकी लालचसें एसा दगा होणा सरू भया है और ऐसे दगेकी भेलकी वस्तु जाहिरा बजारमें विक रही है ऐसी चीजोंपर सरकारकूं बंदोबस्त और निगेदास्ती करणेकी जरूरी है के खाणेपीणेके पदार्थोंमे क्या क्या चीज मिलके आती है ये बात लोक नहीं जाणते हैं और प्रजाका बहोत लोक बिचले दरजेके तथा गरीबी हालतमें हैं सो जो चीज सस्ती मिलती है वोही लेकर अपणा काम चलाते हैं लेकिन व्यापारकी हरीफाईसें एक दूसरेसे सस्तामालबनाणेकूं उसमें कितनीक चीजें नुकशानकारीभी मिला देतें हैं बजारमे हरसाल नई २ तरेके गुड खांड बनके आती है इसका सामान्य प्रजासें निश्चय होणा मुस्कल है के कोणसी सक्कर तथा मिश्री अछी है इसवास्ते जादा निश्चय और सुधारा तो जबी हो सकता है के देसी गुड खांडही व्यापारीवेचे और प्रजा वापरे अब इनोका सामान्य गुण दोष इहां लिखताहूं, नया गुड गरम तथा भारी होता है खून विकार तथा पित्त विकारकूं नुकशान करता है पुराणा गुड एक वरसके पीछे तीन वरसका बहोत अछा होता है, हलका अग्नि प्रदीपक और रसायणरूप है फीकापणा पांडू पित्त त्रिदोष और प्रमेहकूं मिटाता है दवायोंमें पुराणा गुड काम देता है सहत नहीं होय तो पुराणा गुड लेणा चहिये तीन वरसके गुडसंग आदा खाणेसे कफका रोग मिटता है हरडेके संग खाणेसे पित्तका रोग मिटता है सूंठके संग खाणेसें वायूका नास करता है तीनवर्ष पीछै गुडका गुण कम हो जाता है पुराणा तीन वरसका गुड गोला बवासीर अरुचि क्षय खास छातीकाजखम क्षीणता पांडु किसीअनुपान यादवायोंके संग फायदा करता हैं ऊपर लिखे रोगोंपर, नयागुड कफ श्वास खास कृमि तथा दाहकूं पैदा करे है गरमी पित्तकी तासीरवालेने नयागुड कभी खाणा नहीं चहिये, चूरमा लापसी सीरा वगेरे चीजोमें गिमार लोग गुड बहोत वापरते हैं मजूर लोग रोटीवगेरेमें हमेसां गुड खाया करते है ये गुड साल उतार होणा नहीं तो तनदुरुस्तीमें खलल पोहचाये विगर नहीं रहेगा चूरमा लपसी वगेरे गुडके पदार्थोंमें घी बहोत होणेसे गरमी बहोत नही करता दुबले बदनवाला सूकगयाहोय जखम

चोट लगी होय बवासीर श्वास मुर्छाकारोगी थकाभया रस्तेचलणेसें बहोत महनतका कामकियाहोय गिरणेसे पछाट लगी होय जिसकूं कोइ किसमका मैणा दिया होय उससें मनमें फिकर होय, नसा,हर किसमकाजहर चढा होय मूत्रकृच्छ पथरीकारोगहोय, जीर्णज्वरसेंक्षीणहोय विषमज्वरलगाहोय तो पींपर हरड सूंठ अजमोद इनोकेसंग एकके अथवा चारोंके पुराणे गुड संग दोनों ज्वर मिटता है रक्तपित्त और दाह रोगीकूं भिगाकर सरवतपिलाणा क्षय और खूनविगाड शिलाजीत गिलोयसत अथवा गिलोय कूं घोट स्वरससंग पुराणा गुड ऊपर लिखे सर्व रोगोंमे अछा है पुराणा गुड वडा गुणकारी और अनुपान है गुड मेवाडका अछा एसाही सहतका गुण पुराणे साल उतार तीनवर्ष-तकका समझणा (खांड) सक्करसुपेद पित्तकूं मिटावै ठंडी वलदेनेवाली आंखोकों वनारसी खांड वहोत फायदेवंद वीर्यवर्धकहै खांड कफकरताहै कचीखांडकूं जैनसिद्धांतमें अभक्ष्य लिखीहै इसवास्ते कफकेरोगमें रसविकारसेंभये सोजेमें ज्वरमें आमवातमें इत्यादि केइयक रोगोंमें नुकसान करता है वरतावेमें वूरालेणा मिश्री; कंद,मधुर ठंडी ताकतवर वीर्यवर्धक मलशुद्धकरता लेकिन कफकरता क्षय सूकीखासी प्यासकूं मिटावे है भ्रांति दाह श्रम ववासीर जहरकाविकार मोह मूर्छा मद श्वास उलटी अतिसार खूनविकार तथा पित्तकेविकारोंकों मिश्री कंद गुणकारी है, गुडमें खार, वगेरे पदार्थोंका भेल रहता है खांडमे मैल रहता है लेकिन् मिश्री कंद वहोत दरजे साफ होता है मिश्री कालपीकूं लोक ऊमदा वतलाते हैं लेकिन मरुस्थल वीकानेरवाले हलवाइ जैसी मिश्री सिट्टेदार कूंजा वनाते है एसी मिश्री च्यारो खूंटमें नहीं है मिष्टान्नमें डालणेकूं मिश्री उत्तम है खांड मध्यम है गुड कनिष्ठ है ये तीनों इक्षुरसकी होणी, विलायतीखांड मध्यम और औगुणकारी आर्योंके खाणे लायक नहीं है आर्यका अर्थ सरल स्वभावी मांस मदिराके त्यागी जिनोके रहणेका स्थान सो आर्यावर्त्त कहलाता है इस भरतक्षेत्रमें साढे-पचीस देश आर्योंके हैं गंगासिंधुकेवीच उत्तरमें पिसोर दक्षणमें समुद्रका किनारा तीर्थंकर २४ चक्रवर्त्ति १२ नवनारायण ९ नववलदेव ९ नव प्रतिनारायण ९ इग्यारेरुद्र ११ नव-नारद ९ इत्यादि उत्तमपुरुष इसी आर्यावर्तमें जन्म लेते हैं,मुक्तितो सव मनुष्यक्षेत्रोंसें प्राणी जाता है, लंदन अमेरिकातक जैनसूत्रकार भरतक्षेत्र मानता है, अमेरिकाकूं जैनरामचरित्रमें पाताललंका मानी है वियाधरोकी वस्ती इहां है रावणने जन्म उहांही लिया था ॥

॥ तेल ॥

तेल वहोत जातका है लेकिन खाणेमे तिलीका मारवाडमें, सरसूंका गुजरात, वंगाले, वगेरेमें, तेल खाणेमें वापरणेसें, जलाणेमें या शरीरके मसलाणेमें जादा उपयोग देता है उत्तम खानपानके करणेवाले लोक तेलकूं विलकुल खाते नहीं, घी जैसे उत्तम पदार्थकूं छोडके बुद्धिकूं कमकरणेवाला तेलकूं खाणाभी अछा नहीं है लेकिन तेल सस्ता और

मोठ गुवारफली चिणे वगेरे-वायडी चीजोंमें मिरच मसालोसें लज्जितदार होणेसें मोठ भुजिये चणेकीसेव तो सब मुलकोंमें गरीब और तालेवर जगे २ तेलकी वहोत खाते है मारवाडमें तो बीकानेरवाले वहोत तेल खाते है गुजरातमें मिठाईतक तेलकी बंगालियोका तो जीवनही तेल बण रहाहै, जोधपुर मेंवाड नागोर मेडताआदि वाकीके इकीस रजवाडोमें प्रजा कम तेल खातीहै इसवास्ते तेलका खास गुणदोष जाणनेकी जरूरी है मसलाणेसे शरीरकूं मजवूत करे है वलवर्धक है चमडीका रंग अच्छ करेहै वायुकूं मिटाता है पुष्टिदेता है, अग्निप्रदीप्त करे है, शरीरमें जलदी प्रवेशकरता है, कृमिकूं दूर करता है कानकीशूल योनिशूल शिरकीशूल शरीरकूं हलका करता है, हड्डीतूटे भागे कचराया मुरडाया दवाभया कटाभया पछाडा भया जलेभयेकूं तिलका तेल अछा करे है ये विशेष गुण कल्पसूत्रमें तेलके मसलाणेमें लिखा है वोभी किसी औपधीके संग पकाभया होणा, खालीतेलमें इतना गुण नही है, गरमी पित्तवालेकूं ठंडी और खून साफ करणेवाली दवाइयां, कफ और वायुमें उष्ण कफकूं काटणेवाली दवायां होणा, नारायण लक्ष्मीविलास षटबिंदु चंद-नादि लाक्षादि शतपक्व सहस्रपकादि अनेक पूर्वोक्तगुण इन तैलोंका है पिचकारी भीदी जाती है पीणेमें जैसें मालकांगणीका इस उपरांत गरीबलोक खाणेमें तलणेमें अनेक किस्म वघारमें वरते है कांनमें नाकमें डालते है, इस कामोमें तिलका तेल दुरस्त है, (अवगुण) सांधोंकों ढीला कर धातुओंकों नरमकर डालता है रक्तपित्तरोगकूं करता है शरीरके मसलाणेसें पूर्वोक्त फायदेवंद है, शरीर वाल चमडी तथा आंखोंकों फायदेवंद है लेकिन् तेलपेटमें तिल्लीका या सरसूंका खालीखाणेसें इनतीनोंकूं नुकशान करता है हेमंत और सिसिर रुतुमें वायुकी प्रकृतीवालेकूं सदा पथ्य है.

॥ निमक तथा खार ॥

खाण जमीनमेंसें पैदा होता खार लोक हमेस खाते है दक्षिण प्रांत देशतक लोक जो निमक खाते है वो दरियावके खारे जलसे जमाये जाता है सेंभरपडा सो सवलूण सेंभरमें क्यारे जमाये जाते हैं पंचपदरेका लूण, और निमकोसें श्रेष्ठ है, लूणकरणसर बीकानेरमेंभी लूण होता है इत्यादि स्थान निमक मारवाडमे है लेकिन सींध आदि देशोमें जमीनमें निमककी खाण है जिसमेंसें खोदके निकालते हैं वो सींधा निमक कहलाता है ये सव निमकोंसें उत्तम निमक है वैमारकों तथा धातुवगेरे रस रसायण देवी इलाजोमें वैद्यलोक सींधा निमक वताया करते हैं बुद्धिवानलोक हमेस सींधा निमकही खाते है इंग्लंडसें लीवरपुल-साल्ट जो निमक आता है वो वहोत अछा डाकटरलोक वतलाते हैं खुराककी चीजोंमें निमक ये वडा जरूरीका पदार्थ है यहभी निश्चय हो चुका है निमक विगर अदमीकी जिंदगानी वहोत दिनोंतक नहीं रह सकती है दूधसें जो लोक वरसो गुजरान चलाते हैं उसका कारण एसा है के दूधमें खारका भाग चहिये जिसके लगभग

थाया भया है खानपानमें निमक स्वाद और रुचि पैदा करे है हाडोंकों मजबूतकरता है निमकमें कितनेक अवगुणभी है निमकका अथवा खारका स्वभाव सडाणेका अथवा गालणेका है इसवास्ते प्रमाणसें जादा लेनेमें आवे तो शरीरकें धातुओंकों गलाकर विगाड देता है वहोतसें अदम्योंकों सोख पड जाता है सो भोजनकी चीजोंमें निमक जादा खाते हैं, गहुं वाजरीमें दूध वगेरे चीजोंमें कुदरती खार थोडा २ होताही है और दाल साग वगेरेमें जितना चहिये सो पूरा डालणेसें होता है अपणे लोकोंमे क्षारवाले पदार्थ जादा हमेसां खाणेमें आता है जैसें दाल साग चटणी राईता पापड आचार इन सवोंमें निमक है थोडा २ करतेभी जादा हो जाता है जादा खार निमक खाणेमें आजाता है तो सरीरमेंगरमी शरीरतूटना धातुगिरना वगेरे तुरत मालम देता है तापतिल्ली वगेरे पेटकी गांठ मिटाणेकूं अनसमझु वैद्य बैमारोंकों जादा खार खिलाते हैं उसका नतीजा आगे वुरा मालम देता है मरदीपणा जाते रहता है उसमें मुख्यपणे जादा खार खाणें-सेंही विगाड सिद्ध होता है खार जादा वीर्यका नास करता है इय वात हमेसां ध्यानमें रखणेकी है प्रमाणसर खाणा अति निमक अंधाकरदेता है कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है.

॥ दाल सागके मसाले ॥

जैसें २ प्राणियोंकी विषय वासना वधते चली उसकूं मिटाणे धातु पुष्टि तथा स्तंभ-नकी कितनीक नुकशानकारी दवाइयोंके उलटे सुलटे रस्ते लोक चढ रहे हैं सराप अफीम भांग माजम कोकिन इत्यादि औरभी कइ किस्मकी नुकशानकारी जहरी चीजोंकों खाते हैं ये सब जीवतव्यकी खरावीका निशान है, तैसेही हमेसाके खुराकमें तरे २ के उत्तेजक मसाला स्वादमें लोकोंका सत्यानास करणा सरू कर दिया है प्राचीन पंडित एसा कहतेहैं जगतका वहोत सुधारा और हुन्नर कलाने लोकोंकूं दुर्वल और निसत्व गरीव कर डाला हैं अन्य देसांतरी द्रव्य लिये जा रहे है शरीरका वल जरूर प्राणियोंका घट गया इय तो वात सव सचीही मालम देती है लेकिन् इसतरे खानपानमें वहोत स्वादीपणा वेहद्द शोखीन पणेने वहोत खरावी कर डाली है और फेर होगा एसावी समझदार लोक विचारते हैं सादे खुराककी तारीफ अगले विद्वानोने तथा वर्त्तमांन विद्वानोने करी हें लेकिन इस वातोंकेतरफ थोडोंका ख्याल है रस्ता उलटा चलरहा है दाल चावल घी गहूं वाजरी जुआरकी रोटी घी मूंग मोठ तूरकी दाल धाणा हलदी जीरा निमक उनमान मुजव थोडी मिरच ये सामान्य खुराकका थोडासा नमूना है लेकिन् व्यसन स्वाद और सोख इसकुं थोडासा साह्य और मान मिलता है तवतो वेहद वढ जाता है और उनके करणेवालोंकों चटने चसके स्वादमें और शोपमें डूवा देते हैं इसकेसंग तीन चीजोंकी प्रत्यक्ष नुकशानी होती है धन जाय १ शरीर विगडे २ इजत कमाई और अमोलक वखत जाता है ३

मसालोंमें वापरणेमें वस्तुओं तनदुरस्त अदमीके हमेसकेवास्ते वणी भई नही है उसमेंके कितनेक पदार्थ इंद्रियोंकों वहकानेवाली उत्तेजक है शरीरके वेमारीमें दवाकी तोर युक्तिसें देणेमें आवे तो वो चीजें शरीरकूं फायदेचंद है जैसें इलायची वडी छोटी लोंग जीरा स्याहजीरा दालचीणी तेजपत्ता काली मिरच इत्यादि अलग २ दवाका कांम देती है और येही गरम मसाले हैं, हमेस खुराकमें गरम मसाला खाते हैं सो अच्छा नहीं है निजस्वभावकी जठराग्निकूं दुसरे मसालोंकी वनावटी गरमीसें वधाकर खुराक जादा खाणा विलकुल अछा नहीं इलाज और खुराक वोही अच्छा है के जिसका आखरी द-रजा अछा होय कोइ समेमेंभी विगाड नहिं करे ये वात वैद्य और सामान्य प्रजाकूं हमेस याद रखणेकी है इसवास्ते गरममसाला चमचमाटकरती चटणियां सव अदम्योंकों एक सद्दश कभी हितकारक होती नहीं रुचिकूं जादा जाग्रत करे है जठराग्निकू जादा तेज करे है जिससें खाणेमें तो जादा आता है लेकिन् स्वाभाविक जठराग्नि कृत्रिम अग्निकूं होजरी पचा नहीं सकती जैसें एनजीनमे वोइलेरकूं जादाजोरमिलणेसें गाडियोंकों जोरसें तो चलाता है लेकिन वोइलरका माप और प्रमाणसें गरमी वढ जाती है तो वहोतभार खेंचता भया कभी फटभीजाता है जादा वोझा खेंचनेकूं वोइलरकूं जादा गरमीदेना ये नियम नही है लेकिन् जादावोझा खेंचणेकूं वडे एनजिन और वडा वोइलर जोडना यह तो नियम है जन्मसे छोटे कदवाला अदमी दिलमें एसा विचारे गरम मसाले या गरम दवासें जादा खुराक खाकर कदमें और ताकतमें चढजाउं इस समझसें ऐसें खुराक और दवासे असली निजताकतभी खो वैठता है जादा जोरके काम करणेकूं जैसा वडा एनजिन वडा वोइलेर वनाना पडता हैं तैसें जादा ताकत वढाणेकुं अदम्योंकों ब्रह्मचर्य व्रतपालणा उचित वर्त्तावसें चलता भया एकसे एक जादा ताकतवर वडे कदका संतान उत्पन्न करना चहिये ऐसें मनुष्योंको नकली उपचार करनेकी कोइ जरूरी नहीं रहती आर्यराजा राठोडवारे २ वर्ष दिल्लीमें वादशाह पास रहते थे ब्रह्मव्रत पालते और जव ऋतुदान देतेथे तो केसरीसिंह पदमसिंह जेसे राठोड जैसिंघ कछावा, प्रतापसिंघ सिसोदिया, जैसे नरसिंह पैदा होते थे, खुराक इनोकी साधारण थी मगर वर्तीव ऊमदाथा, लोक समझेगें गरम मसालोंकी शास्त्र कारने विलकुल निंदाकीहै एसाभी मत समझणा जिस वातपर निषेध कियाहै उस वावतपर मनाई है स्याद्वादपक्ष हम जैन धर्मियोका है, अंगीकार इस पक्षसें करणा सो लिखते हैं वहोत वायुकी तासीर होय तव वायुकों शरीरमें वरावर रखणेवास्ते खुराककेसंग माफकसर गरम मसाला लेना तेसें गरीष्ट पदार्थ मिठाई वगैरे खाणेका होय उसके संगभी गरम म-साले चटणी खाणी चहिये सादे खुराकमे विशेषकी जरूरी नहीं, भारी पदार्थ पचाणे जो गरम मसाले मिरचोंकी चटणी खाणी वोभी उनमान मुजव, वहोतसे लोक तथा वुभुक्षत ब्राम्हणोको जव मिष्टान खानेकूं मिलता है तव एधी ओषडोकीतरे घरके हमेस खुराकसें

आया भया है खानपानमें निमक स्वाद और रुचि पैदा करे है हाडोंकों मजबूतकरता है निमकमें कितनेक अवगुणभी है निमकका अथवा खारका स्वभाव सडाणेका अथवा गालणेका है इसवास्ते प्रमाणसें जादा लेनेमें आवे तो शरीरकें धातुओंकों गलाकर विगाड देता है वहोतसें अदम्योंकों सोख पड जाता है सो भोजनकी चीजोंमें निमक जादा खाते हैं, गहुं वाजरीमें दूध वगेरे चीजोंमें कुदरती खार थोडा २ होताही है और दाल साग वगेरेमें जितना चहिये सो पूरा डालणेसें होता है अपणे लोकोंमे क्षारवाले पदार्थ जादा हमेसां खाणेमें आता है जैसें दाल साग चटणी राईता पापड आचार इन सर्वोमें निमक है थोडा २ करतेभी जादा हो जाता है जादा खार निमक खाणेमें आजाता है तो सरीरमेंगरमी शरीरतूटना धातुगिरना वगेरे तुरत मालम देता है तापतिली वगेरे पेटकी गांठ मिटाणेकूं अनसमझु वैद्य बेमारोंकों जादा खार खिलाते हैं उसका नतीजा आगे बुरा मालम देता है मरदीपणा जाते रहता है उसमें मुख्यपणे जादा खार खाणें-सेंही विगाड सिद्ध होता है खार जादा वीर्यका नास करता है इय वात हमेसां ध्यानमें रखणेकी है प्रमाणसर खाणा अति निमक अंधाकरदेता है कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है.

॥ दाल सागके मसाले ॥

जैसें २ प्राणियोंकी विषय वासना वधते चली उसकूं मिटाणे धातु पुष्टि तथा स्तंभनकी कितनीक नुकशानकारी दवाइयोंके उलटे सुलटे रस्ते लोक चढ रहे हैं सराप अफीम भांग माजम कोकिन इत्यादि औरभी कइ किस्मकी नुकशानकारी जहरी चीजोंकों खाते है ये सव जीवतव्यकी खरावीका निशान है, तैसेही हमेसाके खुराकमें तरे २ के उत्तेजक मसाला स्वादमें लोकोंका सत्यानास करणा सरू कर दिया है प्राचीन पंडित एसा कहतेहै जगतका वहोत सुधारा और हुन्नर कलाने लोकोंकूं दुर्वल और निसत्व गरीव कर डाला है अन्य देसांतरी द्रव्य लिये जा रहे है शरीरका वल जरूर प्राणियोंका घट गया इय तो वात सव सबीही मालम देती है लेकिन् इसतरे खानपानमें वहोत स्वादीपणा वेहद शोखीनपणेने वहोत खराबी कर डाली है और फेर होगा एसावी समझदार लोक विचारते हैं सादे खुराककी तारीफ अगले विद्वानोने तथा वर्त्तमांन विद्वानोने करी हैं लेकिन इस वातोंकितरफ थोडोंका ख्याल है रस्ता उलटा चलरहा है दाल चावल घी गहूं वाजरी जुआरकी रोटी घी मूंग मोठ तूरकी दाल धाणा हलदी जीरा निमक उनमान मुजव थोडी मिरच ये सामान्य खुराकका थोडासा नमूना है लेकिन् व्यसन स्वाद और सोख इसकुं थोडासा साहग और मान मिलता है तवतो वेहद वढ जाता है औरउनके करणेवालोंकों भले चमके स्वादमें और शोपमें डूवा देते हैं इसकेसंग तीन चीजोंकी प्रत्यक्ष नुकशानी होती है धन जाय १ शरीर विगडे २ इजत कमाई और अमोलक वखत जाता है ३

मसालोंमें वापरणेमें वस्तुओं तनदुरस्त अदमीके हमेसकेवास्ते वणी भई नही है उसमेंके कितनेक पदार्थ इंद्रियोंकों बहकानेवाली उत्तेजक है शरीरके बेमारीमें दवाकी तोर युक्तिसें देणेमें आवे तो वो चीजें शरीरकूं फायदेचंद है जैसें इलायची वडी छोटी लोंग जीरा स्याहजीरा दालचीणी तेजपत्ता काली मिरच इत्यादि अलग २ दवाका कांम देती है और येही गरम मसाले हैं, हमेस खुराकमें गरम मसाला खाते हैं सो अच्छा नहीं है निजस्वभावकी जठराग्निकूं दुसरे मसालोंकी बनावटी गरमीसें बधाकर खुराक जादा खाणा बिलकुल अछा नहीं इलाज और खुराक वोही अच्छा है के जिसका आखरी द-रजा अछा होय कोइ समेंमेंभी विगाड नहिं करे ये वात वैद्य और सामान्य प्रजाकूं हमेस याद रखणेकी है इसवास्ते गरममसाला चमचमाटकरती चटणियां सब अदम्योंकों एक सदृश कभी हितकारक होती नहीं रुचिकूं जादा जाग्रत करे है जठराग्निकू जादा तेज करे है जिससें खाणेमें तो जादा आता है लेकिन् स्वाभाविक जठराग्नि कृत्रिम अग्निकूं होजरी पचा नहीं सकती जैसें एनजीनमे वोइलेरकूं जादाजोरमिलणेसें गाडियोंकों जोरसें तो चलाता है लेकिन वोइलरका माप और प्रमाणसें गरमी वढ जाती है तो वहोतभार खेंचता भया कभी फटभीजाता है जादा वोझा खेंचनेकूं वोइलरकूं जादा गरमीदेना ये नियम नही है लेकिन् जादावोझा खेंचणेकूं वडे एनजिन और वडा वोइलर जोडना यह तो नियम है जन्मसे छोटे कदवाला अदमी दिलमें एसा विचारे गरम मसाले या गरम दवासें जादा खुराक खाकर कदमें और ताकतमें वढजाउं इस समझसें ऐसें खुराक और दवासे असली निजताकतभी खो वैठता है जादा जोरके काम करणेकूं जैसा वडा एनजिन वडा वोइलेर वनाना पडता हैं तैसें जादा ताकत चढाणेकुं अदम्योंकों ब्रह्मचर्य व्रतपालणा उचित वर्त्तावसें चलता भया एकसे एक जादा ताकतवर वडे कदका संतान उत्पन्न करना चहिये ऐसें मनुष्योंको नकली उपचार करनेकी कोइ जरूरी नहीं रहती आर्यराजा राठोडवारे २ वर्ष दिल्लीमें वादशाह पास रहते थे ब्रह्मव्रत पालते और जब रुतुदान देतेथे तो केसरीसिंह पदमसिंह जेसे राठोड जैसिंघ कछावा, प्रतापसिंघ सिसोदिया, जैसे नरसिंह पैदा होते थे, खुराक इनोकी साधारण थी मगर वर्तांव ऊमदाथा, लोक समझेगें गरम मसालोंकी शास्त्र कारने विलकुल निंदाकीहै एसाभी मत समझणा जिस वातपर निषेध कियाहै उस वावतपर मनाई है स्याद्वादपक्ष हम जैन धर्मियोंका है, अंगीकार इस पक्षसें करणा सो लिखते हैं वहोत वायुकी तासीर होय तब वायुकों शरीरमे वरावर रखणेवास्ते खुराककेसंग माफकसर गरम मसाला लेना तेसें गरीष्ट पदार्थ मिठाई वगैरे खाणेका होय उसके संगभी गरम म-साले चटणी खाणी चहिये सादे खुराकमे विशेषकी जरूरी नहीं, भारी पदार्थ पचाणे जो गरम मसाले मिरचोंकी चटणी खाणी वोभी उनमान मुजब, वहोतसे लोक तथा बुभुक्षत ब्राम्हणोको जब मिष्टान खानेकूं मिलता है तब एधी ओपडोकीतरे घरके हमेस खुराकसें

दूणातिगुना माल खा जाते हैं ऊपरसें चमचमाट साग दाल अचार चटणीभी पधराते है उससे पाचन शक्ति बरावर रहणी मुसकिल है अधसेर अनाज अथवा तरावट माल खाणे-वाला एक १ रुपे भर गरम मसाला खाकर एसा हिसाव लगावे की २ भर गरम मसालेंसे सेर माल हजम करलुंगा एसें पांच रुपये भरसें पांच सेर नही तो तीन सेर तो जरूर हजम करलूंगा ये त्रिरासीका हिसाव खुराकमें काम आवेगा नही अजीर्णहोकर मरणा पडेगा मतलव इतनाही है साग दालमें वहोत मिरच अंवली अचार चटणी और गरम मसाला खाणेका रिवाज वहोत वढता जा रहा है इससें रस विगडता है खून गरम हो जाता है पित्तविगडके रस्ता छोड देता है इसीसे तरे २ के रोगोका जन्म होता है उसका वर्णन कहांतक करें वहोत गरम प्रकृतीवालेकूं सादामसाला धणा जीरा सिंधा निमक और सवकूं माफगत आवे जैसा मसाला है चरकासकूं पथ्य काली मिरच है लोकोंमें लाल मिरच खाणेका वहोत प्रचार वढगया है ये चीज वहोत नुकशान कर्ता है वीकानेरके ओसवाल और तेलंगदेसवाले जितना मिरच खाते हैं एसा कोइ विरली प्रजा खाती होगी लेकिन् ओसवाल घी तो खूव डालते हैं आज कल तो ओसवालोके वीकानेरमें प्राये तिलोकचंदजीका वरतावा वहोत है तैलिंग तो चावल और अमली मिरचोकी चटणी लूखीही खाते हैं मलेवारवाले कच्चे नारेल और थोडी मिरचोंकी चटणी भात संग खाते घीका और खुदाका तोमूं किसने देखा है इसहालतमें गरीव लोक जिंदगानी गुजारते हैं चरकासकी चाहवालोनें मिरचकूं छोड आदा काली मिरच सूंठ पींपर वरतणा शूद्रोके वरतावमें लसण द्रेखणेमें आता है जिनोकूं लाल मिरचका वहोत मावरा पडा है उन लोकोनें जैपुर जिलेकी लाल मिरच वीज निकाल रातकूं एक दोय जलमें भिगाकर पीस घीमें सेक फेर थोडी वरतणी अथवा घीमे कूट थोडी खाणी खट्टा रसका तोड निमक है निमकका तोड खट्टा रस है खट्टे रसमें नींवू अमचूर कोकम खाणे योग्य है लेकिन प्रकृतीकूं माने तो खाणी वघार देणेमें जीरा हींग राई मेथी मुख्य वस्तुओं है वायु कफकी प्रकृतीमें अछी है.

आचार—राईता

आचार और राईता पाचन शक्तिकूं तेज करता है लेकिन् जितने पदार्थ पाचन शक्तिकूं वधाते है और जलदहे इन सबोंका जो प्रमाण चढ जाय तो येही पाचन शक्तिकूं उलटा विगाड देते हैं, दुनिया निरविवेकी समझती नही इनही चीजोंसें तो पाचन शक्ति विगडती है और फेर पाचन शक्ति सुधारणेकूं दुनिया इनही चीजोंकों सेवन करती है आचार राईता तेज राई निमक जादा मिरच वगैरे तेज पदार्थोंसे जीभकूं आदमी तद्द दूरकर देते हैं ये चीज कम अथवा मिठाई तरमालके संगही खाणा हमेस नहीं खाणा खूनविगडजाता है खूनविगडके मंदाग्नि पडकर अनेक रोग शरीरमे जन्म लेता है

चके रहो मारवाडी गुजराती वगैरे इनही वातोसें जादा वेमार होते है, मिरचलाल आगरे दिल्लीसें लेकर ब्रम्हाके देसतक लोक नहीं खाते, बंगाल सरसूंका तेल और मछी संबंधी कुपथ्य हमेस खाते है, उनोमें वैष्णव मांस मच्छी नहिं खाते हैं

चा

आजकल घरघरमें चाहकी उकाली चल रही है अपने देशमें चा चीनसें आती है कितनेक बरससें नीलगिरि तथा आसाम जिल्लेमेभी चा पैदा होणे लगी है अपने देशकी चा उतरते दरजे बजारमें विकती है चीन जेसी चा कहांइभी पैदा होती नहीं रतलका आठ आनासें सो रुपे रतल तक एसी कीमती और इससे जादा कीमतकीभी चीन देशमें पैदा होती है एसें अवल दरजेकी चा बजारमें विकते देखाभी नहीं और लेभी कौन इहां तो सस्तादाम और चोखा कामहोना सो तो वणनामुसकिल है चा दर खतके सूकाये भये पत्ते है मैंने सेंतालीसकें फागुणमे शिखर गिरि पहाडपर ये दरखतोके छोटे २ झुंम देखेथे सूकेवाद इन पत्तोंकों गरम करते हैं तब उसकी सुगंध और स्वाद अछा होता है ये एक थोडे नसेकी चीज है इसवास्ते हमेस पीणेसें दुसरें नसोंकी चीजे अफीम गांजा सुलफा तमाखू सराप भंग धतुरेकी तरे जादा नुकसान नही करती है चाहमें सइकडेके हिसाव गुण करनेवाला भाग १ से ६ तक होता है सबसे हलकी चा में १ वधियासे वधियामें ६ पोष्टिक तत्व हे, सइकडे में १५ भाग और तत्वहे, कबजी करनेवाला तत्व वहोत थोडा है, काली और हरी चा एकही दरखतकी होती है पीछे बनावटी रंगमें फेरफार होता है चाहके ताजे पत्तोंकू गरम कढाइपर अथवा पाणीकी वाफसे सूकाय गरम करनेसें वो रंगमे काली अथवा हरी होती है लेकिन हरी चाहकूं रंग देनेवास्ते नीला थोथा अथवा प्रश्यन ब्लू नामकी जहरी वस्तु किसी वखत लोक देते हैं उसका असर वहोत खराब होता है चा वजनमें वहोत थोडी पीणेसें शरीरमें सुस्ती पैदा होती है और थोडी नींद लाती है और जादा वजनमें पीणेसें अंगमें गरमी और हुसियारी आती है नींद आती होय सोभी चली जाती है नींद रोकनेकों कितनेक लोक रातकूं चा पीते है उससें नींदतो नहीं आती लेकिन वेचैनी पैदा होती है नींद रोकणेकों जो रातकूं वेर २ चाह पीते है और नींद रोकते है इसमें मगजकूं नुकसान पोहचता है जो अदमी अछा ताकतवाला खुराक (टेमोंटेंम) खाते हैं वोलोक प्रमाण मुजब चाह पिये तो कुछ नुकसान नहीं लेकिन हलका और थोडा खानेवाले अर्थात् गरीब अदमियोंनें थोडी चाह(जो थोडी तेज होय सो)पीणी क्यों के हलके खुराक वालोंकों तेज चाह धीमें २ नुकशान करती है वहोत चा पीणेसें मगज तथा मगजके तंतुओंको थकेला चढता है निर्बलपणेसें भमल भ्रांति हो जाती है लोक कहते हैं चा खून जला देती है ये वात कुछ सचभी हैं चा दूधके संग पीणी दूधसें चाहका कैफ याने नसा कम होता है और पोषण मिलता है कितनेक अदमी

दूणातिगुना माल खा जाते हैं ऊपरसें चमचमाट साग दाल अचार चटणीभी पधराते है उससे पाचन शक्ति बराबर रहणी मुसकिल है अधसेर अनाज अथवा तरावट माल खाणे- वाला एक १ रुपे भर गरम मसाला खाकर एसा हिसाब लगावे की २ भर गरम मसालेंसे सेर माल हजम करलुंगा एसें पांच रुपये भरसें पांच सेर नही तो तीन सेर तो जरूर हजम करलूंगा ये त्रिरासीका हिसाब खुराकमें काम आवेगा नही अजीर्णहोकर मरणा पडेगा मतलब इतनाही है साग दालमें बहोत मिरच अंबली अचार चटणी और गरम मसाला खाणेका रिवाज बहोत बढता जा रहा है इससें रस बिगडता है खून गरम हो जाता है पित्तबिगडके रस्ता छोड देता है इसीसे तरे २ के रोगोका जन्म होता है उस- का वर्णन कहांतक करें बहोत गरम प्रकृतीवालेकूं सादामसाला धणा जीरा सिंधा नि- मक और सबकूं माफगत आवे जैसा मसाला है चरकासकूं पथ्य काली मिरच है लोकोंमें लाल मिरच खाणेका बहोत प्रचार बढगया है ये चीज बहोत नुकशान कर्ता है बीका- नेरके ओसवाल और तेलंगदेसवाले जितना मिरच खाते हैं एसा कोइ विरली प्रजा खाती होगी लेकिन् ओसवाल घी तो खूब डालते हैं आज कल तो ओसवालोंके बीकानेरमें प्राये तिलोकचंदजीका बरतावा बहोत है तैलिंग तो चावल और अमली मिरचोकी चटणी लूखीही खाते हैं मलेबारवाले कचे नारेल और थोडी मिरचोंकी चट- णी भात संग खाते घीका और खुदाका तोमूं किसने देखा है इसहालतमें गरीब लोक जिंदगानी गुजारते हैं चरकासकी चाहवालोनें मिरचकूं छोड आदा काली मिरच सूंठ पींपर बरतणा शूद्रोके बरतावमें लसण देखणेमें आता है जिनोकूं लाल मिरचका बहोत मावरा पडा है उन लोकोनें जेपुर जिलेकी लाल मिरच बीज निकाल रातकूं एक दोय जलमें भिगाकर पीस घीमें सेक फेर थोडी बरतणी अथवा घीमे कूट थोडी खाणी खट्टा रसका तोड निमक है निमकका तोड खट्टा रस है खट्टे रसमें नींबू अमचूर कोकम खाणे योग्य है लेकिन प्रकृतीकूं माने तो खाणी बघार देणेमें जीरा हींग राई मेथी मुख्य वस्तुओं है वायु कफकी प्रकृतीमें अछी है.

आचार—राईता

आचार और राईता पाचन शक्तिकूं तेज करता है लेकिन् जितने पदार्थ पाचन शक्तिकूं बधावे है और जलदहे इन सबोंका जो प्रमाण चढ जाय तो येही पाचन शक्तिकूं उलटा बिगाड देते हैं, दुनिया निरविवेकी समझती नही इनही चीजोंसें तो पाचन शक्ति बिगडती है और फेर पाचन शक्ति सुधारणेकूं दुनिया इनही चीजोंको सेवन करती है आचार राईता तेल राई निमक जादा मिरच वगेरे तेज पदार्थोंसे जीभकूं आदमी तट कर देते हैं ये चीज कम अथवा मिठाई तरमालके संगही खाणा हमेस नहीं खाणा खूनबिगडजाता है खूनबिगडके मंदाग्नि पडकर अनेक रोग शरीरमे जन्म लेता है

वचके रहो मारवाडी गुजराती वगैरे इनही वातोंसें जादा वेमार होते है, मिरचलाल आगरे दिल्लीसें लेकर ब्रम्हाके देसतक लोक नहीं खाते, वंगाल सरसूंका तेल और मछी संवंधी कुपथ्य हमेस खाते है, उनोमें वैष्णव मांस मच्छी नहिं खाते हैं

चा

आजकल घरघरमें चाहकी उकाली चल रही है अपने देशमें चा चीनसें आती है कितनेक वरससें नीलगिरि तथा आसाम जिल्लेमेभी चा पैदा होणे लगी है अपने देशकी चा उतरते दरजे वजारमें विकती है चीन जेसी चा कहांइभी पैदा होती नहीं रतलका आठ आनासें सो रुपे रतल तक एसी कीमती और इससे जादा कीमतकीभी चीन देशमें पैदा होती है एसें अवल दरजेकी चा वजारमें विकते देखाभी नहीं और लेभी कौन इहां तो सस्तादाम और चोखा कामहोना सो तो वणनामुसकिल है चा दर खतके सूकाये भये पत्ते है मेंने सेंतालीसकें फागुणमे शिखर गिरि पहाडपर ये दरखतोके छोटे २ झुंम देखेथे सूकेवाद इन पत्तोंकों गरम करते हैं तव उसकी सुगंध और स्वाद अछा होता है ये एक थोडे नसेकी चीज है इसवास्ते हमेस पीणेसें दुसरें नसोंकी चीजे अफीम गांजा सुलफा तमाखू सराप भंग धतुरेकी तरे जादा नुकसान नही करती है चाहमें सइकडेके हिसाव गुण करनेवाला भाग १ से ६ तक होता है सवसे हलकी चा में १ वधियासे वधियामें ६ पोष्टिक तत्व हे, सइकडे में १५ भाग और तत्वहे, कवजी करनेवाला तत्व वहोत थोडा है, काली और हरी चा एकही दरखतकी होती है पीछे वनावटी रंगमें फेरफार होता है चाहके ताजे पत्तोंकूं गरम कढाइपर अथवा पाणीकी वाफसे सूकाय गरम करनेसें वो रंगमे काली अथवा हरी होती है लेकिन हरी चाहकूं रंग देनेवास्ते नीला थोथा अथवा प्रश्यन ब्लू नामकी जहरी वस्तु किसी वखत लोक देते हैं उसका असर वहोत खराव होता है चा वजनमें वहोत थोडी पीणेसें शरीरमें सुस्ती पैदा होती है और थोडी नींद लाती है और जादा वजनमें पीणेसें अंगमें गरमी और हुसियारी आती है नींद आती होय सोभी चली जाती है नींद रोकनेकों कितनेक लोक रातकूं चा पीते है उससें नीदतो नहीं आती लेकिन वेचैनी पैदा होती है नींद रोकणेकों जो रातकूं वेर २ चाह पीते है और नीद रोकते है इसमें मगजकूं नुकसान पोहचता है जो अदमी अछा ताकतवाला खुराक (टेमोटेम) खाते हैं वोलोक प्रमाण मुजव चाह पिये तो कुछ नुकसान नही लेकिन हलका और थोडा खानेवाले अर्थात् गरीव अदमियोनें थोडी चाह(जो थोडी तेज होय सो)पीणी क्यों के हलके खुराक वालोंकों तेज चाह धीमें २ नुकशान करती है वहोत चा पीणेसें मगज तथा मगजके तंतुओंको थकेला चढता है निर्वलपणेसें भमल भ्रांति हो जाती है लोक कहते हैं चा खून जला देती है ये वात कुछ सचभी हैं चा दूधके संग पीणी दूधसें चाहका कैफ याने नसा कम होता है और पोपण मिलता है कितनेक अदमी

दूणातिगुना माल खा जाते हैं ऊपरसें चमचमाट साग दाल अचार चटणीभी पधराते है उससे पाचन शक्ति वरावर रहणी मुसकिल है अधसेर अनाज अथवा तरावट माल खाणेवाला एक १ रुपे भर गरम मसाला खाकर एसा हिसाब लगावे की २ भर गरम मसालेंसे सेर माल हजम करलुंगा एसें पांच रुपये भरसें पांच सेर नही तो तीन सेर तो जरूर हजम करलूंगा ये त्रिरासीका हिसाब खुराकमें काम आवेगा नही अजीर्णहोकर मरणा पडेगा मतलव इतनाही है साग दालमें वहोत मिरच अंवली अचार चटणी और गरम मसाला खाणेका रिवाज वहोत वढता जा रहा है इससें रस विगडता है खून गरम हो जाता है पित्तविगडके रस्ता छोड देता है इसीसे तरे २ के रोगोका जन्म होता है उसका वर्णन कहांतक करें वहोत गरम प्रकृतीवालेकूं सादामसाला धणा जीरा सिंधा निमक और सवकूं माफगत आवै जैसा मसाला है चरकासकूं पथ्य काली मिरच है लोकोंमें लाल मिरच खाणेका वहोत प्रचार वढगया है ये चीज वहोत नुकशान कर्ता है वीकानेरके ओसवाल और तेलंगदेसवाले जितना मिरच खाते हैं एसा कोइ विरली प्रजा खाती होगी लेकिन् ओसवाल घी तो खूव डालते हैं आज कल तो ओसवालोके वीकानेरमें प्राये तिलोकचंदजीका वरतावा वहोत है तैलिंग तो चावल और अमली मिरचोकी चटणी लूखीही खाते हैं मलेवारवाले कचे नारेल और थोडी मिरचोंकी चटणी भात संग खाते घीका और खुदाका तोमूं किसने देखा है इसहालतमें गरीव लोक जिंदगानी गुजारते हैं चरकासकी चाहवालोनें मिरचकूं छोड आदा काली मिरच सूंठ पीपर वरतणा शूद्रोके वरतावमें लसण द्रेखणेमें आता है जिनोकूं लाल मिरचका वहोत मावरा पडा है उन लोकोनें जैपुर जिलेकी लाल मिरच वीज निकाल रातकूं एक दोय जलमें भिगाकर पीस घीमें सेक फेर थोडी वरतणी अथवा घीमे कूट थोडी खाणी खट्टा रसका तोड निमक है निमकका तोड खट्टा रस है खट्टे रसमें नींवू अमचूर कोकम खाणे योग्य है लेकिन प्रकृतीकूं माने तो खाणी वघार देणेमें जीरा हींग राई मेथी मुख्य वस्तुओं है वायु कफकी प्रकृतीमें अछी है.

आचार—राईता

आचार और राईता पाचन शक्तिकूं तेज करता है लेकिन् जितने पदार्थ पाचन शक्तिकूं वधावे है और जलदहे इन सवोंका जो प्रमाण वढ जाय तो येही पाचन शक्तिकूं उलटा विगाड देते हैं, दुनिया निरविवेकी समझती नही इनही चीजोंसें तो पाचन शक्ति विगडती है और फेर पाचन शक्ति सुधारणेकूं दुनिया इनही चीजोंकों सेवन करती है आचार राईता तेल गई निमक जादा मिरच वगैरे तेज पदार्थोंसे जीभकूं आदमी तह नुकर देते हैं ये चीज कम अथवा मिठाई तरमालके संगही खाणा हमेस नहीं खाणा खूनविगडजाता है खूनविगडके मंदाग्नि पडकर अनेक रोग शरीरमे जन्म लेता है

लाचारीसेंभी लोक लेते है जैसें संग्रहणीमे सेकी भांग या पुराणा अफीम खासीके रोगमें, निजुलके दरदमें तमाखूसूंघणा इत्यादि समझना तैसें चा और काफी माफ-कसर(युक्तिसें अपनी तासीर मुजव जो)पीते है उनकूं फायदा देता है, सात व्यसन जैन-सूत्रकारने वडे वताये है वो इस भव परभव दोनों विगाड देते हैं जैसें जूवा तो सात व्यसनोंका राजा १ चोरी २ परस्त्रीगमन ३ वेश्यागमन ४ मदिरा नसा पीना ५ मांस खाना ६ सिकार खेलना ७ इन सातोंसें वचे सो जगतमें धन्य है छोटे २ इसके अंतर्गत औरभी वहोत है जूवा कोडीका तो नहीं खेलें अनेक तरेका फाटका करे १ चीजोंमें नई पुराणी खोटे तोल दगावाजी ठगाई ये सव चोरी है २ परस्त्री टाल दासीके गमन करे ३ और अनेक तरेके नसा करे ४ घरका असवावभी वेचै लेकिन मोल मंगाकर हमेस मिठाई खावे ५ रातकूं खाये विगर चैन नही पडे ६ सच्च नहीं वोले ७ ये सव जिनोंकों व्यसन पड जाते हैं वो वरवाद सव तरेसें होते है फिर छूटनाभी मुसकल है(दुहा)डाकण मंत्र अफीमरस, तस्करने जूआ, परघर रींझींकामणी, येछूटसी मूंआ ॥ १ काफीके भूकेकी थेली वणाकर तपेलीके उकलते जलमे पांच सात मिंट रखकर उतारणेसें काफी तइयार होती है. चा तथा काफीमें वहोत मीठा डालणेसे निर्वल कोठेवालेकों जरूर नुकसान करती है. (कारण) विशेष पीणेमें ये दोनुं चीज आवे तो थोडा मीठा अछा है, काफीके पाणीमें चोथा भाग दूध डालना इन दोनो चीजोंकों गरम पीनेसै पाचनशक्ति कम पडती है धातूमें भी नुकसान होता है अपणे गरम देशमें काफी गरमी पैदा कर नींदका नास करती है इस-वास्ते रातकूं पीनी नहीं फजरका वखत पीणेका है,किसीने जहर खाया होय तो उसकूं नींद नहीं लेना चाहिये इसवास्ते जाग्रत रखणेकूं वेर २ काफी पिलाया करते हैं १ वहोत जाडे शरीरवाला अथवा वहोत खाणेवाला चा और काफी पीणी अछी है २ दुवले अदमी और निर्वल अदमी वणें जहांतक चा काफी पीणी नहीं, वहोत तेजभी पीणी नहीं, अछी तरे दूध मिलाकर पीणा ३ हलका लुखा सूका खुराक खाणेवालेनें और जो उपवास आंविल एकासना उनोदरी वगेरे तपस्या करनेवालोने चा काफी पीणी नहीं पीणी तो थोडी हलकी पीणी ४ फजरमें पुडी वगेरे नास्तेके सग चाकाफी पीणी अछी है भोजन पेटभर किया पीछे पांच चार घंटे वीते विगर पीना नहीं ५ निर्वल कोठेवालेनें वहोत मीठी वहोत सखत उकाली भई अथवा गरमागरम पीनी नहीं थोडा मीठा और दूधमिला-कर कूएके जल जैसी गरम पीनेसें फायदा तासीर मुजव है ॥

॥ उजाला (७ मां) पथ्यापथ्य वर्ग ॥

खानपानकी कितनीक चीजें तनदुरस्त अदम्योंकों थोडासा विगाड वाकी सर्व ऋतूमें और सव देसोमें अनुकूल आता है (२) कितनीक चीजें एककी तासीरकूं माफगत, दूसरे की तासीरकूं नामाफगत, एक मोसममें अनुकूल, दुसरी मोसममें प्रतिकूल, तैसेंही एक

भोजनके संग चाह पीते हैं उससें पाचन शक्तिकूं वडी हरकत पहुंचती है भोजनपर तीन चार घंटे वीत जाय पीछे चा पीणी अछी हैं क्योंके चा पित्तकूं वधाणे वाली है इसवास्ते तीन चार घटे वाद जो भोजनका भाग पचना वाकी रह गया होय वो उसकूं पचाकर नीचे ऊतारता है चा मे थोडासा गुण है सो होजरीकूं तेज करता है पाचन शक्ति तथा रुचिकूं पैदा करेहे चमडी तथा मूत्राशय ऊपर क्रिया कर पसीना तथा पैसाव खुलासा लाता है जिससें खूनपर कुछ अछी असर होती होगी नरमभये ज्ञुस्सोंकों जाग्रतकर थाकेला ऊतारता है ये चाका फायदा है लेकिन उसमें नसा है जिससें तनदुरस्तीकों खलल पोहचाता है जो चाकूं जादा देर उकाले तव पत्तोंका जादा कस निकले तो चा जादा नुकसान करती है इसवास्ते जल उकला और चाके पत्ते डाल चादाणी ढक देणा दोय तीन मिंनटसें जादा चूलेपर नहीं रखणा जादा उकलणेसें स्वाद गुण दोनुं विगड जाता है खांड मिश्री उनमान मुजव डालणी जादासें पेट विगडता हैं चामें नींवूका स्वादभी देतें हैं कली या काचके वरतनमें नींवूकी फाड रख ऊपरसें चाका गरमपाणीडाल चार पांच मिनट वाद दुसरे वरतनमे छाण लेणा चामें फायदा जादा है नहीं, लेकिन दुनियांमें सोखीनताईकी हवा घर २ चलगइ चा का तो एक व्यसन हो गया सव पीते है तो हमभी पीवें इसमें तो वडा नुकसान है फकत चासे कोइ जादा फायदा नहीं है दूध वूरा संग चहिये जो लोक हमेस तरावट माल खाते है अंग्रेज पारसी या औरभी कोई; चा तो उनोकेही पीणे योग्य है, जो लोक घीका दर्शन तो वारतिवार करते है और चाकी उकाली तो हमेस देखादेखी चलरही है ये तदन खराव है वणे तो वचोंकी तनदुरस्ती रखणेको हमेसां दूध पिलाया करो.

काफी

काफी दुसरी वस्तु है ये अरवस्थानसें आती है ये दोनोंका गुण मिलतासा है काफी एक दरखतके वीज है इसकूं वूंददाणाभी कहते हैं कोइ २ मुलकोमें वुंद दाणोंकों सेक सुपारीकी तरे टोक चावकर मुं साफ करते है भोजन किये वाद वूंदकों सेकणेसें उसमेंसें खुसवोदार और ममालादार चीज पैदा होती है वूंदमें एकभाग गुणकारी सिवाय वूंदमें कडवा भाग और कवजी करणेवाला भागजादाहे एक भाग खट्टा है, कचे वूंद दाणे वहोत दिन रह सकते हैं विगडते नहीं सेका भया अथवा दला भया वूंद दाणोकों वहोतदिन रखनेसें खुसवो उड जाती है चामें काफी जादा पौष्टिक तथा शक्ति देनेवाली है लेकिन् वो भारी है इसमें निर्वल और वेमार आदमीकूं पचे नहीं काफीसें अंगमें गरमी और हुसियारी आती है टंडी मोसममे तैसें ठंड मुलकोंमें मुसाफरी करते काफी पीणेमें आवे तो ठंडमेंभी सरीरमें गरमी रह सकती है व्यसन जितने है सव नुकसान करनेवाले हैं लेकिन् किसी वेमारीपर कोइ व्यसनी चीजसें फायदा वैद्य वतलावे तो दवा मुजव रोग मिटाणेवास्ते

ाचारीसेंभी लोक लेते है जैसें संग्रहणीमे सेकी भांग या पुराणा अफीम खासीके रोगमें, नेज्ञुलके दरदमें तमाखूसूंघणा इत्यादि समझना तैसें चा और काफी माफ-सर(युक्तिसें अपनी तासीर मुजब जो)पीते है उनकूं फायदा देता है, सात व्यसन जैन-त्रकारने बडे बताये है वो इस भव परभव दोनों विगाड देते हैं जैसें जूवा तो सात यसनोंका राजा १ चोरी २ परस्त्रीगमन ३ वेश्यागमन ४ मदिरा नसा पीना ५ मांस ज्ञाना ६ सिकार खेलना ७ इन सातोंसें वचे सो जगतमें धन्य है छोटे २ इसके अंतर्गत ौरभी वहोत है जूवा कोडीका तो नहीं खेलें अनेक तरेका फाटका करे १ चीजोंमें नई राणी खोटे तोल दगावाजी ठगाई ये सब चोरी है २ परस्त्री टाल दासीके गमन करे ३ और अनेक तरेके नसा करे ४ घरका असवावभी वेचै लेकिन मोल मंगाकर हमेस मेठाई खावे ५ रातकूं खाये बिगर चैन नही पडे ६ सच्च नहीं बोले ७ ये सब जिनोंकों यसन पड जाते हैं वो वरवाद सब तरेसें होते है फिर छूटनाभी मुसकल है(दुहा)डाकण मंत्र फीमरस, तस्करने जूआ, परघर रींझींकामणी, येछूटसी मूंआ ॥ १ काफीके भूकेकी थेली णाकर तपेलीके उकलते जलमे पांच सात मिंट रखकर उतारणेसें काफी तइयार होती . चा तथा काफीमें बहोत मीठा डालणेसे निर्वल कोठेवालेकों जरूर नुकसान करती है. कारण) विशेष पीणेमें ये दोनुं चीज आवे तो थोडा मीठा अछा है, काफीके पाणीमें चोथा ाग दूध डालना इन दोनो चीजोंकों गरम पीनेसै पाचनशक्ति कम पडती है धातूमें भी कसान होता है अपणे गरम देशमें काफी गरमी पैदा कर नींदका नास करती है इस-ास्ते रातकूं पीनी नहीं फजरका वखत पीणेका है,किसीने जहर खाया होय तो उसकूं नींद ही लेना चाहिये इसवास्ते जाग्रत रखणेकूं वेर २ काफी पिलाया करते हैं १ वहोत ाडे शरीरवाला अथवा वहोत खाणेवाला चा और काफी पीणी अछी है २ दुवले अदमी ौर निर्वल अदमी वणें जहांतक चा काफी पीणी नहीं, वहोत तेजभी पीणी नही, अछी रे दूध मिलाकर पीणा ३ हलका लुखा सूका खुराक खाणेवालेनें और जो उपवास ांबिल एकासना उनोदरी वगेरे तपस्या करनेवालोने चा काफी पीणी नहीं पीणी तो ोडी हलकी पीणी ४ फजरमें पुडी वगेरे नास्तेके संग चाकाफी पीणी अछी है भोजन टभर किया पीछे पांच चार घंटे वीते विगर पीना नहीं ५ निर्वल कोठेवालेनें वहोत ीठी वहोत सखत उकाली भई अथवा गरमागरम पीनी नहीं थोडा मीठा और दूधमिला-र कूएके जल जैसी गरम पीनेसें फायदा तासीर मुजब है ॥

॥ उजाला (७ मां) पथ्यापथ्य वर्ग ॥

खानपानकी कितनीक चीजें तनदुरस्त अदम्योंकों थोडासा विगाड वाकी सर्व ऋतूमें ौर सब देसोंमें अनुकूल आता है (२) कितनीक चीजें एककी तासीरकूं माफगत, दूसरे ी तासीरकूं नामाफगत, एक मोसममें अनुकूल, दुसरी मोसममें प्रतिकूल, तैसेंही एक

२३

देशमें अनुकूल, दूसरे देशमें प्रतिकूल, होती है, (३) और कितनीक चीजों एसी है के सबकी प्रकृतीमें सब मोसममें और सब देसोंमें हमेस नुकसानही करनेवाली है । पहिले आंककी वस्तुपथ्य, दूसरे अंककी पथ्यापथ्य, तीसरेकी कुपथ्य, पथ्य सो हितकर्त्ता, पथ्यापथ्य सो किसीकूं माफगत किसीकूं नहीं, कुपथ्य याने सबकूं नुकशान करता, पूर्वाचार्योंका लेख और हमारा अनुभव किया भया ये विचार विश्वास रखनेलायक है सो लिखता हूं.

पथ्यपदार्थ.

(अनाज) चावल गहूं जव मूंग तूर चणा मोठ मसूर मटर ये सब साधारण तोर सर्वकूं हितकारी है, ये चीजों हमेस खानेमें आवे तो कोइ तरेकाभी नुकसान नहीं करता इन सब अनाजोंमें जुदे २ गुण रहे भये हैं, इसवास्ते इनोका गुण और अपनी तासीरके अनुसार थोडा या जादा वरताव करना, चनोंकों, पथ्यवर्गमें गिणाया है, तोभी जादा खानेसें पेटमें हवा भरकर पेट फूलता है चावल वर्षभरपीछे उतार अछे होते हैं तूरकी दाल घी डाल खानेसें बिलकुल वायु करेनहीं, मूंग वायु करे, लेकिन दालका पाणी त्रिदोषहर, भयंकर रोगमेंभी पथ्य, फरदेश २ वालोके अवलसें मावरेकी चीज उनोंके वोभी पथ्यही गिने जाती है (शाग) चंदलियेकेपत्ते परवल पालका वथुआ खरवोडी पोथीकीभाजी जिसकूं पूरबमें अलता कहते है, रंग होता है, सूरणकंद पानमेथी तोरी भींडी कदू वगेरे, दुसरे पदार्थ, गऊका दूध, गऊका घी । छाछ मीठी गऊकी, मिश्री, अदरक, आंवले, सींधानिमक, अनारमीठी,मुनका,मीठी दाख,अब दुसरी तरे पदार्थोंकी उत्तमता दिख लाते हैं,चावलोंमें, लाल साठी तथा कमोद, अनाजोंमें गहुं और जव, दालोंमें मूंग तूर, मीठेमें मिश्री, पानोके सागमें चंदलिया,फल सागोमें परवल, कंद सागोमें सूरण, निमकमेंसेंधव, खटाईमें आंवले, दूधमें गऊका, पाणीमें वरसादका, अधरलियाभया, फलमें, विलायती अनार, या मीठी दाख (मसालेमें) आदा धाणा जीरा ये चीजें सादे मिजाजमें सदा पथ्य सब मोसम और सब देसोमें, तोभी किसी२रोगमें कोइ वस्तु कुपथ्य इनोंमेंकी होती हैं, जैसें नये बुखारमें बारे दिनतक घी, इकीस दिनतक दूध, ये बात हमारे पूर्वाचार्योंने मनाई की है और अज्ञानपणे जिनोंने खाया है उनोंकों कष्ट और प्राणांतभी देखा है, फकत वातज्वरके पूर्वरूपमें घृतपान लिखा है, लेकिन् ऐसे निदान करनेवाले वैद्यका दर्शन पूरे पुन्यवानोंकों ही होगा, इसवास्ते सामान्य तोर घीमें नये ज्वरमें कुफायदाहे, पानीझरा मोतीझरा ये तीन बातमेंही निकलता है, वैद्य और प्रजा हमेंसध्यानमें रखणा, नयेज्वरमेंचिकनासका खाना, अथवा आते भेद पसीनेमें बुखारमें हवा ठंडी लेना, या गलीचहवा या बिगडा भया पानी पीना, या एसी खुराकका खाना २ तीसरे मलज्वर टाल नये बुखारमें बारे दिन पहले जुलाब संबंधी हरडे वगेरे दवा, या कुटकी चिरायता आदि कडवी कषायली दवाका देना, इन बातोंमें सन्निपात मरणांततक प्राणी पहुंच जाता है, बचे तो जैसें अग्नि-

विष शस्त्रसेंभी बचता है, तैसें आयु प्रबल समझना, नयेज्वरमें पश्चिमके विद्वान सबमें दूध पिलाते हैं, ये बातका निश्चय अभीस्यात् भया नहीं, या किसी दवाका अनुपान होगा मगर विचारने लायक बात है, तैसें कफके रोगीकूं तथा (सूआ) जापेके रोगवालीऔरतकूं मिश्री इसवजे और २ चीजोंकाभी समझ लेना.

पथ्यापथ्यपदार्थ.

बाजरी उडद वाल याने (चवला) कुलथी गुड खांड मक्खन दहीं छाछ भेसकादूध घी आलू तोरी कांदा करेला कंकेडा गुवारफली दूधी (लवा) कोला मेथी मोगरी मूला गाजर काचर ककडी गोभी घीयातोरी, केला अननास आंब जामुन करोंदे अंजीर नारंगी नींबूजामफल सफरजंद पीलू गूंदा तरबूज वगेरे ये सब पदार्थ नित्य लोक वापरते है परंतु प्रकृतीका और मोसमका विचार बिगर किये खावे तो तुरत नुकसान करताहै, जैसें दही शरदऋतूमें शत्रुका काम करता है, वर्षाऋतू हेमंतऋतूमें हितकर है, गरमीकी मोसम जेठ वैशाखके महीनेमें मिश्रीकेसंग खानेसेही फायदा करता है,तैसें ज्वरवालेकूं कुपथ्य है, और अतिसारवालेकूं पथ्य है, इसतरे हरेक वस्तुका स्वभाव समझकर समझदार पूरे वैद्यकी या इस दीपककी सल्लालेकर ये वस्तु खानेमें आवे तो नुकसान नही करती.

कुपथ्य पदार्थ.

दाहकरणेवाला, जलाणेवाला गालणेवाला सडाणेकीकुदरतवाला जहरकागुण करणेवाला पदार्थ कुपथ्य कहलाता है, ये पांच तरेके पदार्थ जो अगर बुद्धि पूर्वक रोग मुजब वरतणेमें आवे तो फायदाभी करता है, तोभी ये चीजें एकंदर शरीरकूं नुकशानहीं करणेवाली है, क्योंके एसी चीज एक रोगकों मिटावे तो दूसरेकूं पैदा कर देती है खार अर्थात् निमक जादा खाणेमें आवे तो पेटकीवायु गोला या गांठकूं गलाती है, लेकिन शरीरकी धातूकों बिगाड मरदमीकूं नुकशान कर्ता है, दाहकरणेवालापदार्थ, पित्तकू बिगाड अनेक किस्मके रोग पैदा करे है, अंबली वगैरे अति खट्टा पदार्थ,शरीरकू गलाकर सांधोंकों ढीलाकर मरदमी कम करती है, एसे २ पदार्थोंसें एकदम नुकशान तो देखणेमें नही आता है लेकिन बहोत दिनोंतक सेवन करणेसें एसा मिजाज बिगाड देता है सो ये बदन अनेक रोगोंका मकान बण जाता है, इसवास्ते पहले जो पथ्य वर्ग लिखा है वो हमेस खाणापीणा चहिये, और पथ्या पथ्यमे लिखा है, उसका थोडा वरताव रखणा चाहिये, ऋतु, प्रकृतीके, अनुसार, और कुपथ्य पदार्थ तो रोगोंपर दवा मुजबही वरतणा, सोभी बहोत जरूर होय तो, हमेसके खुराकमें एसे कुपथ्य पदार्थ कभी वापरणा नहीं, दूसरी बात फेर एसी है के, पथ्यापथ्य पदार्थ है सोभी जिणोंकों नित्यका अभ्यास खाणेका है, जन्मसें, उनोंकों वो चीजें कभी नुकशान नहीं करती, जेसे बाजरी गुड उडद छाछ दही ये चीजें मोसम और तासीर मुजब जेसें पथ्य है, तेसें कुपथ्यभी है, लेकिन मारवाडमें

यही चार चीज हमेस बहोत लोक वापरते है,उडद पंजाबवाले,लेकिन उनोकों नुकशान नहीं करता,इसवास्ते मावरा है सो बचावका कारण है,नुकशान करताभी है, तो थोडे प्रमाणमें, सो मालम नहीं देता, दूध पथ्य है, तोभी किसीकूं नहीं सदता दस्त होता है, इसपरसें एसा निश्चय भयाके खानपानमें अपनीतासीर शरीरकाबंधा नित्यकाअभ्यास ऋतु और रोगकी परीक्षा इनसबोंका विचारकर खानपान करणा चहिये जेसें एकही पदार्थमें प्रकृती और ऋतुभेदसें पथ्य कुपथ्य दोनों गुण रहा भया है, तेसें वोका वोही पदार्थ रसायणी संयोग अर्थात् दुसरी चीजोंके मिलणेसें जिसकूं तंत्र कहते हैं उससें पदार्थोंका धर्म बदलकर तीसराही गुण प्रगट होता है, वो नुकशान करणेवाला नहीं, अथवा है इसका पूरा प्रमाण जहांतक किसीकूं नहीं है, उनोकेवास्ते सीधा और अछा रस्ता एसा है के, वैद्य विद्याके हुकमके अनुसारही चलणा, सहत अछा पदार्थ है त्रिदोषहर है तोभी गरम पाणीके संग, या हर कोई गरमागरम वस्तुके या गरम चीजोंके संग, या सन्निपात ज्वरमें, देणेसें नुकशान करता है, दूध पथ्य पदार्थ है, तोभी मूलेके मूंगके क्षार निमकोंके अथवा एरंड टाल वाकीके तेलके संग खाणेमें आवे तो जरूर नुकशान करता है, बरतणके योगसें वस्तुओमें फेरफार गुणोंमें हो जाता है, खटाइ तांबे पीतलके बरतणमें तथा खारमें, इसीतरे घी कांसीके बरतणमें थोडी देर रहे तो नुकशान करता है, सात दिन रह जाय तो प्राणीकों प्राणांत कष्ट पोहचाता है, फेर दूधकेसंग खट्टेफल गुड दही खीचडी वगेरे खाणेमें आवे तो नुकशान करता है, बुद्धिवानों विचार करो सर्वज्ञ भगवानने संयोगी विषका वर्णन वैद्यक शास्त्रमें किया उसके पढे सुणे विगर इन २ वातोंकी खबर क्या पडे एसाही सूत्रप्रकीर्णोंमें किया है, उहां कुपथ्यका नाम अभक्ष लिखा है, एसे कुपथ्यों-का फल कुछ तुरत मिलता नहीं है,लेकिन् जब बहोत दोष एकठा हो जाता है, तब दुसरेही रूपमें दिखाई देता है, उसवखत उसका कारण लोक समझ नहीं सकते ये संयोग विरुद्ध खान पानसे अनेक रोग पैदा होता है.

सामान्य पथ्यापथ्य आहार विहार

पथ्य आहार

पुराणाचावल जव गहूं तूर चिणा बाजरीदेसी, गरमबाजर थोडी खाणी, घी दूध मक्खन छाछ सहत मिश्री बूरा पतासा सरसूंकातेल गोमूत्र आकाशका पाणी कूवेका पाणी हंसोदकनल परवल सूरण चंदलिया बथुआ मेथी मामालुणी मूले मोगरी कद्दू घीयातोरी बेंगन तोरी करेला ककेडा भींडी गोभी, वालोल (थोडी खाणी) कचे केलेकासाग दाख अनार अद्रक आंवला नींबू बीजोरा कवीठ हलदी धाणा कपत्ते पोदीना हींग सूठ मिरचकाली पींपर धाणा जीरा सींधानिमक हरडे इलायची केशर जायफल लौंग सूंठ, पाननागरवेल केसंग (कथेकी गोली) गहूकेआटेकीरोटी पुडी

भात मीठाभात बुंदिया मोतीचूरकालड्डू जलेबी चूरमा दिलखुसाल पूरणपोली रवडी दूधपाक खीर श्रीखंड वासुंदी (थोडी खाणी) दालकेलड्डू घेवर सकरपारे विदामपाक घीकेतलेमोठके थोडेभुजिये; वडे, दूधघी डालीभइ सेव, रसगुल्ला गुलावजामुन कडाकंद गुलकंद सरवत मुरब्बा चिरोंजी पिस्ता, राईतादाखोंका, मीठा तथा चरका दाणोंका, पापड मूंग मोठकी वडी दाल जाडी पतली ।

कुपथ्य आहार

उडद चवला वाल मोठ मटर ज्वार मकाई ककडी काचर खरबूजा गुवार कोला मूलेकेपत्ते जामफल सीताफल फणस करोंदा गूंदा गरमर अंजीर जामून बोर आंबली तरबूज भैंसकादूध दही, तेल नयागुड दरखतोकेझुंडकापाणी वहोतसाएकदम पाणीकापीणा, निराहारठंडापाणी पीणा, मैथुन करके पीणा, वासीअन्न, छाछदहीके संग खीचड, खीचडी वगेरे दाल मिले भये पदार्थ, सूर्यकेप्रकाशभयेबिगरखाणा, आचार, लगवगवखत भोजनकरणा सवजातकेजहर, ठंडीखीर, सव दूधके पदार्थ, वासीचासणी और खोवेकी टालके, गुजरातमें चोंटियालड्डू, केलाकेलड्डू, रायणकेलड्डू, गुलपपडी तीन भेलकी दाल, पंचभेलीदाल, करडा, कच्चा गरिष्ठ मैदेकी मैदेकी चीज पुडी सत्तू पेडा वरफी चावलोंका चिवडा रातकाभोजन दस्तवंधकर देवे एसी कोईभी चीज मूंजलेएसा गरमागरम अन्न पान, उलटी, पिचकारीदेदेकर, दस्त कराणा येवात अभीके डाकटरलोक परसन करते है, हमारे प्राचीनशास्त्रकारोंने हमेस सलाईसे पेसाव और वस्ती (पिचकारीसे) दस्त कराणापरसन नहीं किया, और हमेसअछाहैभीनहीं कारणविशेपदेखणा, चवीणा चावणा, पांच घंटें विनावीते भोजनपर भोजन करणा, वहोत भूखे मरणा, शरीरतथा वस्त्रमेला रखना, परनिंदा, देव गुरूसें द्वेप करणा ॥

विहार पथ्य

वस्त्र धोये भये साफ पहरना, और शक्ति होय तो अतर गुलावजल केवडाजलसें सुवासित करणा, पोसाखी अतर, पनडी औरखस ठंडकालेमें हीना मसाला १ विछोणे तथा पिलंग वगेरे सोनेके साधन, साफ सुघडपणे रखना २ हवा दक्षिणकीसर्वोत्तम है सोलेणीं ३ हाथपैर कान और गुप्तजगे मैलजमणे नहिं देणा ४ गरमी मोसममें महीन कपडे पहनना, थंड कालेमें गरम, वो कपडे वजनमें, ज्यों कम होय त्यों अछा ५ पांच २ दिनसें हजामतकराय दलिद्र निकाल देणा, इससेनया खून संचरता है ६ कसरतकरणी प्रमाणमुजव हवा खाणी, घोडे वगेरे असवारीपर सुखसें वेठीजे तो वैठणा, कष्ट मालमदे एसानहींवैठणा ७ गहणे हलके वजनके, जिसमें मनुष्यकों हार कुंडल अंगूठी, आनंद श्रावकने उपासग दशासूत्रमें कुंडल अंगूठी दोयही मोकली पहरणे रख्की है ८ मल मुत्रकी संका रोकणी नहीं, जवर न संका पैदा करणी नहीं, मूत्र तथा दस्तकी हाजतरहते स्त्री गमन करणा नहीं स्त्री

संगका वहोत नियम रखणा ९ चित्तकी वृत्तिमें वहोत सतोगुणी आनंदीपणा रखके या सतो गुणीपणा रखणेकूं सतोगुणवाले भोजन करणा, दो घडी प्रभात, दो घडी सांजकूं, समता परिणाम सब जीवोंपर धरणा, फेर वखत मिले तो, दोघडी सदगुणीके मंडलीमे वैठके निर्दोष वात (व्याख्यान) सुणना, संसार अनित्य है, इत्यादि विचार करणा, जिस वर्त्तावसे रोगहोय इज्जतजाय धनजाय फेर धनकी आवंद होय नहीं, एसावर्त्ताव है सोही कुपथ्य है, इनही वातोंसे परभव विगडता है, ये पथ्यापथ्यका विचार विवेक विलास आचार दिनकर तथा राज निघंटसे संक्षेप मात्र लिखा है.

उजाला ८ दुवले अदमीके खाणे योग्य खुराक

वहोत अदमी दिखणेमें पतले और इकेली हड्डीके दिखते है, लेकिन ताकतवर होते है, वाजे पुष्ट और जाडे होकरभी ना ताकत होते हैं, वहोत जाडापणा है सो तनदुरस्ती पणा नहीं समझणा, और वहोत दुवलापणा और वहोत स्थूलपणा है सो प्राये नाताकतीका निशान है, शरीरभी वेडोल दिखता है, खुराकके फेरफारसें, योग्य उपायसें, दुवले अदमी ताजे पुष्ट हो जातेहैं चरवीवढकरजाडाभयाअदमी उपायसेंपतले होजाते है, अब दुवले अदम्योंकों पुष्ट होणे वास्ते नीचे लिखे सो उपाय करणा, दूध थोडी २ मिश्री मिलाय थोडा२ दूध दिनमें वहोत वखत पीणा, उनमान मुजव कसरत कर पीणा, दंड वैठक मोगरी शक्ति मुजव फैरणी, वो नहीं वणे तो, फजर सांझकीवखत महनतका कामकरणा, या साफ हवामें फिरणा, जिससे कसरत मिलके दूध हजम होजाय, तथा हमारे दवाखानाकी अमृतवटी, वो पुष्टिकाकाम, पुष्टि खुराकका काम करती है, और क्रम २ से, दससेरसें वीससेरतक दूधकों हजम करती है, शरीरमें पुष्टि और वहोत ताकत पैदा कर देती हैं, दिन४०लेणा चहिये, तोलेके रु३०। लगते है, गहूं जव मक्की मटर चावल दाल इनोमें पुष्टिकारक तत्व रहा भया है, दुवले अदमीके कामका है, आलू केला केरी मफरजंद पनीर ये सब पुष्ट वस्तु खाणे योग्य है, येसब पुष्टिकारक खुराक दुर्वलकूं ताकत देती है, लेकिन् इस खुराककूं पचाणे वास्ते महनत करणा चहिये, एसी खुराक खाकर पूरी कसरत शरीरकूं नहीं मिले तो चरवीवढकर शरीर जाडा पड जाता है, और अशक्त हो जाता है एसी खुराकसे शरीर मजवूत और पुष्ट होगयेपीछे खुराक वदल देणा चाहिये, तनदुरस्तरहे एसा खुराक खाते रहणा, वेमारी होय जिसमें फेर पाचन शक्ति मंद होय उहांतक पुष्टिकारक खुराक खाणा नहीं, और परिश्रमभी नहीं करणा, वेमारी मंदाग्नि मिटायकर पीछे पुष्टता करणी.

जाडे आदमीलायक खुराक

जाडे अदमी सब नाताकत नहीं होते, खूनवाले पुष्ट आदमी शरीरमें मजवूत होते हैं, फकत मेद चरवी तथा मेदवायूसें जिनोंका शरीर फूलता है वो अशक्त होते हैं, जो

दमी पुष्टिकारक खुराक जैसें घी मक्खन तेल मीठा मिश्री वगेरे जो हमेस बहोत खाते विना महनत कियेविगर एक जगे बैठे रहते हैं, वो ऐसे व्रथा पुष्ट हो जाते हैं, घी क्खनादिक शरीरकी गरमीकायम रखणेकूं लोकखातेहै, वो प्रमाणसरही खाणा हिये जादा खानेमें आवे तो वो पाचन नहीं होकर चरवी शरीरमें एकठी होती है रीर वेडोल हो जाता है, स्नायु वगेरे चरवीसें रुक जाकर अशक्त करदेता है चरवीके डपर पुड चढ जाता है, ताकतवर जाडे अदमीका शरीर लाल मजवूत सखत ार स्थिती स्थापक स्नायुओंकेटुकडोसें वना भया है, और उसपर चरवीका बहोत छोटा स्तर लगा भया है, ये चरवी खुराककी तंगीसे अथवा उपवास करे तव कमहोती है ार फेर चरवी शरीरकूं खपसुरत सुघाट रखती है वधीमइ चरवीसे बहोत स्थूलता ार श्वास आखर प्राणांततकभी हो जाता है, मीठा और आटेकै सत्ववाला पदार्थभी हनत नहीं करनेवाले अदमीके शरीरमें चरबी बढाता है, फेर दवा थोडाफायदा भाग्य- ागसेंही करती है,खुराककी निगेदास्ती उपयोग रखकरप्रमाणमुजव करणा कसरतके अभ्या ासें शरीरका जाडा पणा और वजन कम होता है, अति स्थूल शरीरवालेके(खानेलायक दार्थ) चरवीवालेपदार्थ घी मक्खन खांड और आटेके सत्ववाला पदार्थ बहोत थोडा ाना, और पुष्टिवाला खुराक जादा हेसो खाना, गहुं जव मटर दाल चना पनीर छाछ हरी रकारी कोविज सफरजंद सलगम नारंगी वगेरे फल पथ्य है, (नहींखानेलायक) अथवा ोडा खानेलायक पदार्थ, घी मक्खन मलाई तेल खांड (अनाज) साबूदाना चावल मक्की ुरणपोली कोकम केरी दाख केला जिसमें तेल है इस तरेका सव सूका मेवा, विदाम पेस्ता निमजा चिरोंजी किष्टा वगेरे तैसें आलू सूरन सकरकंद अरवी वगेरे खाना नहीं, ूध थोडा खाना चा काफी पीनेकी टेव होय तों उसमें दूध बहोत थोडा डालना अथवा नीवुसें सुवासित करकेही पीना.

॥ उजाला ९ मगजमज्जातंतूकूं मजवूत करनेवाला खुराक ॥

जिसमें आल्व्युमीन नामका तत्व जादा होता है वो मगजके मज्जातंतूओंकों पोषण करता है, पौष्टिकतत्ववाले खुराकमें आल्व्युमीनका कुछ २ अंश होता है, लेकिन सतावर नामकी वनस्पतीमें इसका अंश वहोतही होता है, इसवास्ते सतावर वगेरे कित- नीक उत्तम वनस्पतीका पाक तथा मुरब्बा वनाकर खाना चहिये, मगज तथा वीर्यकी मजवुतीवास्ते वैद्यकशास्त्रमें कितनीक उत्तम वनस्पती खानी वतलाई है वो दवा मुजव या खुराक मुजव खानी वतलाई है गुणभी पूरा करती है.

भूकोला, शतावर, आसगंध, गोखरू, कोंचकावीज, आंवले, शंखाहुली.

एसी वनस्पती गुणवाली औरभी मुरब्बा वणाकर लड्डु वनाकर अवलेहीचाटनेजैसी खानेमें आवे तो मगजके मज्जातंतू मजवूत होते है वलवुद्धिवीर्य वढता है और मनसंवंधी व्यग्रता अस्थिरता दूर होती है.

अमृतवटी गरमी वगेरे मगजके विकारोंको दूरकर ताकत वीर्य वढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहुं चणा मटर प्याज करेला अरवी सफरचंद अनार केरी वगेरे इस रोगमें पथ्य है.

॥ यादशक्ति तथा बुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति बुद्धि मगजसे संबंध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगेरे जो खान पान लिखा हैं वो सब बुद्धिको वढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक वणाकर घी बूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगेरे पाचनशक्ति मुजब फजर या सांझकूं इनमेंकी कोईभी एक चीजसें बुद्धि यादशक्ति वहोतही वढती है अमृतवटी हमारी वनाई दवा बुद्धि शक्ति वहोतही वढाती है ब्राम्ही१मासा पींपल मासा१ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टंक एसे दोनुं टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन २१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैद्यकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकूं बुद्धी वढाणेकूं वडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी वणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजब लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजब निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक बीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछे एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दवाणेके संचेमें देकर दवाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन बूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतरे दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ बीज पानके संग खाणा, डाक्टरी दवा फासफोरिस मिली भई हरकोइ चीज बुद्धिकूं मगजकूं फायदेवंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तरेके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाक्टरोंने जाहिर कीहे, जिस बेमारीमें पाचन शक्ति विगडगई होय उसमे ये खुराक फायदे[illegible] है साबुदाणेकूं पाणीमें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा [illegible] साबुदाणेके दूसरे दरजे पचणेमें हैं साबुदाणेमें पोषणका तत्व चावलोंमें जादा बेमारी म[illegible] वरसमरके पहिलेका तीन वरस वाद पांच छ वरसोंकाभी चावल नहीं [illegible] दूध आधे पाणीका सिजायाभया भात वहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका [illegible] पुष्ट तो वहोत होता है, लेकिन् बेमार और निर्बल अदमीकूं पचता नहीं, फकत मंद [illegible] तो [illegible] चावल देणा चहिये, रांधेभये वहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की बेमारीमें सूप और ब्राथ देतें है उससें अपणे मुलकमें इस बेमारकों चावलोंका मांड वहोत माफगत आता है एसा पत वाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य बेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त बंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें वहोत है, कितनीक दालोंमें मांस-सेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी है, वहोत निर्बल अदमीकों दाल अछीतरे वाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके निताराभयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग सर्वोपरिहै तूरकी दुसरे नंवरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी बेमारको बहोत अछी खुराकहै पुष्ट करे पेटमे बोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं आता है, दूधकू वहोत ऊकालणा नहीं पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुक-शानकारक वस्तुकूं निकालणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग वहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें बचेकूंभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुक-शान नहीं करता, (अमृतवटी) वालक तथा बुढ्ढेको बेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुवला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु वढाती है, पाचनशक्ति चढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहै, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखु-लिया (बचेका वडाखास) निर्वलता इन सवोंमे वो लोक देते हैं, इसमें वदवो हलके दरजे वालीमें होती है वढियामें नही गरम पाणी या दूधमें इसकी टिकिडियां सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके संगका कोडलीवर वेमारकूं खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है,माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेसें वनाई जाती है (वेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी वेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा है (जैसे गंदी खाईका जल सुबुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

अमृतवटी गरमी वगेरे मगजके विकारोंकों दूरकर ताकत वीर्य वढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहुं चणा मटर प्याज करेला अरवी सफरचंद अनार केरी वगेरे इस रोगमें पथ्य है.

॥ यादशक्ति तथा वुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति वुद्धि मगजसे संबंध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगेरे जो खान पान लिखा हैं वो सब वुद्धिको वढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक वणाकर घी वूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगेरे पाचनशक्ति मुजब फजर या सांझकूं इनमेंकी कोईभी एक चीजसें वुद्धि यादशक्ति वहोतही वढती है अमृतवटी हमारी वनाई दवा वुद्धि शक्ति वहोतही वढाती है ब्राम्ही१मासा पींपल मासा१ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टंक एसे दोनुं टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन २१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैद्यकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकूं वुद्धी वढाणेकूं वडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी वणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजव लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजब निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक बीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछे एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दवाणेके संचेमें देकर दवाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन वूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतेर दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ वीज पानके संग खाणा, डाक्टरी दवा फासफोरिस मिली भई हरकोइ चीज वुद्धिकूं मगजकूं फायदेमंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तरेके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाक्टरोनें जाहिर कीहे, जिस बेमारीमें पाचन शक्ति विगडगई होय उसमे ये खुराक फायदेमंद है साबुदानोकूं पानीमें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा [illegible] साबुदानोके दूसरे दरजे पचणेमें हैं साबुदाणोंसें पोषणका तत्व चावलोंमें जादा बेमारी [illegible] बरसभरकू पहिलेका तीन बरस वाद पांच छ बरसोंकाभी चावल नहीं [illegible] दूध आधे पाणीका सिजायाभया भात बहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका [illegible] पुष्ट तो बहोत होता है, लेकिन् बेमार और निर्बल अदमीकूं पचता नहीं, [illegible] बरसों [illegible] चावल देणा चहिये, रांधेभये वहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की वेमारीमें सूप और ब्राथ देते है उससें अपणे मुलकमें इस वेमारकों चावलोंका मांड वहोत माफगत आता है एसा पत चाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य वेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त वंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें वहोत है, कितनीक दालोंमें मांससेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी है, वहोत निर्वल अदमीकों दाल अछीतरे वाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके निताराभयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग सर्वोंपरिहै तूरकी दुसरे नंबरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी वेमारको वहोत अछी खुराकहै पुष्ट करे पेटमे वोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं आता है, दूधकूं वहोत ऊकालणा नही पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुकशानकारक वस्तुकूं निकालणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग वहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें वच्चेकूंभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुकशान नहीं करता, (अमृतवटी) वालक तथा वुड्ढेको वेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुवला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु चढाती है, पाचनशक्ति वढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहै, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखुलिया (वच्चेका वडाखास) निर्वलता इन सवोंमे वो लोक देते है, इसमें वदवो हलके दरजे वालीमें होती है वढियामें नही गरम पाणी या दूधमें इसकी टिकिडियां सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके संगका कोडलीवर वेमारकूं खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है,माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेंसें वनाई जाती है (वेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी वेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा है (जैसे गंदी खाईका जल सुवुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

अमृतवटी गरमी वगेरे मगजके विकारोंकों दूरकर ताकत वीर्य वढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहुं चणा मटर प्याज करेला अरवी सफरचंद अनार केरी वगेरे इस रोगमें पथ्य है.

॥ यादशक्ति तथा वुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति वुद्धि मगजसे संवंध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगेरे जो खान पान लिखा हैं वो सब वुद्धिको वढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक वणाकर घी वूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगेरे पाचनशक्ति मुजव फजर या सांझकूं इनमेंकी कोईभी एक चीजसें वुद्धि यादशक्ति वहोतही वढती है अमृतवटी हमारी वनाई दवा वुद्धि शक्ति वहोतही वढाती है ब्राम्ही१मासा पींपल मासा१ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टंक एसे दोनुं टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन २१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैद्यकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकू वुद्धी वढाणेकूं वडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी वणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजव लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजव निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक चीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछे एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दवाणेके संचेमें देकर दवाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन बूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतरे दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ वीज पानके संग खाणा, डाक्टरी दवा फासफोरिस मिली भई हरकोइ चीज वुद्धिकूं मगजकूं फायदेवंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तरेके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाकदरोंने जाहिर कीहे, जिस वेमारीमें पाचन शक्ति विगडगई होय उसमे ये खुराक फायदेमंद है साबुदानोंकूं पाणीमें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा [illegible] साबुदाणोंके दूसरे दरजे पचणेमें हैं साबुदाणोंसें पोपणका तत्व चावलोंमें जादा [illegible] वरसभरके पहिलेका तीन वरस वाद पांच छ वरसोंकाभी चावल नहीं [illegible] दूध आधे पानीका सिजायाभया भात वहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका [illegible] पुष्ट तो वहोत होता है, लेकिन् वेमार और निर्वल अदमीकूं पचता नहीं, [illegible] तो अर्जीर्णमें चावल देणा चहिये, रांधेभये वहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की वेमारीमें सूप और ब्राथ देते है उससें अपणे मुलकमें इस वेमारकों चावलोंका मांड वहोत माफगत आता है एसा पत वाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य वेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त वंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें वहोत है, कितनीक दालोमें मांससेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी है, वहोत निर्वल अदमीकों दाल अछीतरे वाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके नितारा भयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग सर्वोपरिहै तूरकी दुसरे नंवरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी वेमारको वहोत अछी खुराकहै पुष्ट करे पेटमे वोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं आता है, दूधकू वहोत ऊकालणा नहीं पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुकशानकारक वस्तुकू निकालणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग वहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें वच्चेकूंभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुकशान नहीं करता, (अमृतवटी) वालक तथा वुड्ढेको वेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुवला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु चढाती है, पाचनशक्ति चढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहे, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखुलिया (वच्चेका वडाखास) निर्वलता इन सर्वोमे वो लोक देते है, इसमें वदवो हलके दरजे वालीमें होती है वडियामें नहीं गरम पाणी या दूधमे इसकी टिकिडियां सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके संगका कोडलीवर वेमारकूं खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है, माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेसें वनाई जाती है (वेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी वेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा है (जैसे गंदी खाईका जल सुवुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

अमृतवटी गरमी वगेरे मगजके विकारोंकों दूरकर ताकत वीर्य बढानेमें सर्वोत्तम वस्तु है दूध सितोपलादि चूर्ण और सहतमे लेनेसें, गहुं चणा मटर प्याज करेला अरवी सफरचंद अनार केरी वगेरे इस रोगमें पथ्य है.

॥ यादशक्ति तथा बुद्धि वधानेकी खुराक ॥

यादशक्ति बुद्धि मगजसे संबंध रखती है, उसकी शक्तिका आधार मनका सुखीपणा और निरोगता पर रहा भया है पिछाडी सतावर वगेरे जो खान पान लिखा हैं वो सब बुद्धिको बढानेवाली है सो लिखते हैं ॥ दूध घी मक्खन मलाई आवलेकापाक या मुरब्बा दवा तरीके थोडा २ खाना विदाम पिस्ता जायफल कांदे इन चीजोंमेकी चीज पाक बणाकर घी बूरेकेसंग न्यारी २ हरेकचीज विदामकीकतली लड्डू सीरा वगेरे पाचनशक्ति मुजब फजर या सांझकूं इनमेंकी कोईभी एक चीजसें बुद्धि यादशक्ति बहोतही बढती है अमृतवटी हमारी बनाई दवा बुद्धि शक्ति बहोतही बढाती है ब्राम्ही१मासा पींपल मासा१ मिश्री मासा४आवलामासा भर रत्तीभरअमृतवटी१टंक एसे दोनुं टंकले दूध भात मिश्री खाय दिन २१ तथा ४१ इसके सिवाय दो दवा देशी वैद्यकमें मगजकी शक्ति याद शक्तिकूं बुद्धी बढाणेकूं बडी कीमियागर लिखी है ब्राह्मी एक तोला दूधसें लेणी या घीसें चाटणी या ब्राह्मीका घी बणाकर पानमें या खुराकके संग खाणा, कोरी मालकांकणी या उसका तेलभी ऊपर मुजब लेणा मालकांकणीका तेल इस मुजब निकालणा मालकांकणी २॥ रुपीयाभर लेकर उसकूं एसा कूटणासो एकेक बीजका दोदो तीन२फाड होवे पीछे एक दो मिंट तवेपर सेकणा पीछे तुरत सणके कपडेमें डाल दबाणेके संचेमें देकर दबाणा तेल निकलेगा, इस तेलकी दो तीन बूंद नागर वेलके कोरे पानपर धरकर खाणा इसतेर दिनमें तीन वखत, तेल निकल सके तो, नहीं तो पांच २ बीज पानके संग खाणा, डाकटरी दवा फासफोरिस मिली भई हरकोइ चीज बुद्धिकूं मगजकूं फायदेवंद है

उजाला १० रोगीकूं खुराक

साबूदाणा अरारूट टापीओका

सब तेरके खुराकमे ये तीन चीज सबसें हलकी और सहजसे पचे एसी मालम डाक्टरोंनें जाहिर कीहै, जिस बेमारीमें पाचन शक्ति विगडगई होय उसमे ये खुराक फायदेवंद है साबुदाणांकूं पाणीनें या दूधमें सिजाकर जरूरीहोय तो मिश्री डालकर पिलाणा बन [illegible] साबुदाणोंके दूसरें दरजे पचणेमें हैं साबुदाणोंसें पोषणका तत्व चावलोंमें जादा बेनारी म[illegible]कों जन्मभरके पहिलेका तीन बरस बाद पांच छ बरसोंकाभी चावल नहीं [illegible] दूध आधे पाणीका सिजायाभया भात बहोत पुष्ट होता है, फकत दूधका [illegible] अदमी[illegible] तो बहोत होता है, लेकिन् बेमार और निर्बल अदमीकूं पचता नहीं, [illegible] बरसों तो अनाजमें चावल देणा चहिये, रांधेभये बहोत पाणीके चावल उसका

निकाला भया मांड वो ठंडा और पोषणकारक होता है इंग्लंड वगेरे और मुलकोंमें हेजे की बेमारीमें सूप और ब्राथ देते है उससें अपणे मुलकमें इस बेमारकों चावलोंका मांड वहोत माफगत आता है एसा पत चाणे गया है (अतीसार) दस्तकी सामान्य बेमारीमे चावलोंका ओसामण दवाका काम देती है दस्त बंध कर देती है दाल हिन्दु लोकोंका जरूरीका नित्य खुराक है, एसा जीमणवार कम होगा जिसमें दाल नहीं होती होगी. दाल पोषणकारक पदार्थ है, पुष्टितत्व दालमें बहोत है, कितनीक दालोंमें मांससेंभी पौष्टिक तत्व जादा है, दालोंकी अनेक जातमें मुख्य मूंग है,मसूरकी दालभी हलकी है, बहोत निर्वल अदमीकों दाल अछीतरे वाफ उसमें सींद्धानिमक हींग धाणा जीरा धाणेके पत्ते डालके निताराभयाजल दियाजाता है, तो पुष्टि और दवाका काम देती है, मूंग सर्वोपरिहै तूरकी दुसरे नंवरकी दाल है, सो पीछाडी लिखाही है, दूधभी बेमारको बहोत अछी खुराकहै पुष्ट करे पेटमे वोझाभी नहीं करता है लेकिन् किसी २ कूं माफगत नहीं आता है, दूधकूं वहोत ऊकालणा नहीं पचणेमें भारी हो जाता है, और उसके अंदरका पुष्टितत्वभी कम हो जाता है, दूहाभया दूधमेसें हवा निकालणे अथवा दूधमें कोई नुकशानकारक वस्तुकूं निकालणेकूं पांच मीन्ट अंदाजन जरा गरम करणा दूध नहीं देणेमें आवे एसें रोग वहोत कम है, मंदाग्निवालेकूं दूधसें आधा पाणी अथवा तीसरे भागका जल समेत गरम कर पिलाणा, माके दूधकी गेर हाजरीमें वच्चेकूंभी एसा जलवाला दूध पिलाणा जल डालणेसें जो लोक नुकशान मानते है, वेसा दूध जल डालाभया कोई नुकशान नहीं करता, (अमृतवटी) वालक तथा वुढेको वेमारको दूध मिश्रीके संग देणेसें तनदुरस्त कर देती है, जीर्णज्वर दुवला हो गया होय अतिसार संग्रहणी मस्सा उलटी आम्लपित्त मरोडा क्षय वादी पित्तकाकास इतने रोगोंकों मिटाकर वदनमें खून वीर्य ताकत वढाती है, आयु वढाती है, पाचनशक्ति वढाती है, कोडलीवरआइल डाकदरी दवा दवामें देते है, पुष्ट है, इसवास्ते रोगीके खुराकमें दाखिल किया है, ताकतवरी दवा या खुराक जिस रोगमें देणा होय जहां कोडलीवरआइल डाकदर लोक देते हैं, क्षयरोग, भूख मरणेसें भये रोग कंठवेल कान नाकमेंसें पीप वहताहै, सो रोग फेफसे कासोजा (न्यूमोनिया) कास श्वास (ब्रोनकाइटीस) फेफसेके पुडतका वरम खुलखुलिया (वच्चेका वडाखास) निर्वलता इन सवोमे वो लोक देते हैं, इसमें वदवो हलके दरजे वालीमें होती है वढियामें नही गरम पाणी या दूधमें इसकी टिकिडियां सहजसें लिये जाती है माल्टाइनके संगका कोडलीवर वेमारकूं खुराककी गरज सारती है, और जलदी हजम होती है,माल्टाइन जव तथा ओट नामके जवके मिलते अनाजमेसें वनाई जाती है (वेमारके पीणे लायक जल) साफ निर्मल पाणी वेमार और तनदुरस्त दोनोंकों अछा है (जेसे गंदी खाईका जल सुबुद्धि प्रधाननें एसा साफ कर राजा जितशत्रूकूं पिलाया राजा-

वडा आश्चर्यवंत हुवा) ये वृत्तांत ज्ञाता सूत्रमें है इसतरेसें या अंग्रेजोंकीतरे (डिसटील्ड) करणा अथवा पहले लिखा ज्यूं तीन उकालेका उकाला ठंडा साफ छाणकर देणा डाक्दर लोक हेजेमें सखत बुखारकी प्यासमें एसे जलमें थोडा २ वरफ मिलाकर पिलाते हैं, (नींबूका पानक) कितनेक बुखारमें नींबूका पाणी देते है, नींबूकी दो फाड कर एक वरतणमें मिश्रीपीसकर दोनोंकों धरणा उसपर ऊकलता पाणी डालणा ठंडा भये वाद पिलाणा या गूदका पाणी २॥ तोला मिश्री १। तोला दोनोंकों एकजगे मिलाकर ऊकलता पाणी डालना इस जलसें कफ श्लेपम हांफणी कंठवेलका रोग ये सब मिटता है, (जवका पाणी) छडेभये जव एक वडा चमचाभर दो तीन चीमठीभर चूरा नींबूकी छाल एक वरतणमें रखकर ऊपरसे ऊकलता जल डालणा ठंडा भयेवाद छाणकर पीणा इसजलसें बुखार छातीका दरद अमूंझणीयेसब मिटती है.

॥ किरण ३ री ऋतुचर्या आहार तथा विहार ॥

रोग होनेके वहोतसे कारण विवहारनयसें मनुष्यकृत है, तैसें निश्चयनयसें देवयाने स्वभावजन्य कर्मकृतभी हैं, उसमें पांच समवायोंमेंसे काल अग्रेश्वरीपणा धारण कर ऋतुओंके, फेरफारका समावेश होता है, वहोत गरमी और वहोत ठंड ये कालधर्मका कुदरती कृत्य है, मनुष्य उसकूं किसीतरे रोक नहीं सकता और वस्तुओंके संयोगसें याने रासायणिक प्रयोगोसें कुदरती मामलेमें फेरफार ऊपर अदमी थोडीदेर जय पा सकता है, जैसेके मोसम विगर वरसाद वरसा देणा लेकिन् जो अपने स्वभाव वस कुदरती फेरफार होते रहता है वो सब प्राणियोंके हितका विचार करे तो अछा है इसवास्ते अदमीकूं इस वातका उद्यम करना फजूल है, कुदरती ऋतूके फेरफारसें हवामें फेरफार होकर शरीरके अंदरकी गरमीसरदीमें हरफेर होता है, इसवास्ते एसी वखतमें हवाकूं सुधारना शरीरपर असर नहीं होसके एसा उपाय करना ये मनुष्यका काम है, वर्षकी जुदी २ ऋतूमें गरमी और ठंडीमें अपने आसपासकी हवामें और हवाके योगसें अपने शरीरमें जो जो फेरफार होताहै उनके अनुसार आहार विहारका नियम रखना इसका नाम ऋतुचर्या है. हवामें गरमी और ठंडी ये दोय गुण मुख्य रहा भया है इन दोनोंका प्रमाण हमेस एक सदृश होता नहीं व्यवहार कालमानमें उनोमें फेरफार देखनेमें आता है भरतक्षेत्रकी पृथ्वीके उत्तर और दक्षिण किनारेपर आये भये प्रदेशोंमें अत्यंत ठंड गिरती है, इस पृथ्वीके गोलेके मध्य रेखाके आस पासके प्रदेशोंमें वहोत गरमी गिरती है और दोनुं अर्द्धगोलेके, वीचके प्रदेशोंमें गरमी और ठंड वरावर रहती हैं इसतरे क्षेत्रका विचार करे तो उत्तर ध्रुवके आसपासके प्रदेशोंमें अर्थात् सैवेरिया वगेरे मुल्कोंमें ठंड वहोत गिरती है, उसके नीचेके तातार तीबेट और अपने हिन्दुस्तानके उत्तरभागमें गरमी और ठंड वरावर रहती है उसमेंभी नीचे विषुवृत्तके आसपासके मुल्कोंमें अर्थात दक्षिण हिन्दुस्थान और (सिलोन)

याने लंकामें धूप वहोत गिरती है, और ऋतुके फेरफारसे उहां फेरफारभी होता है, अर्थात् इन देशोंमें बारे मास एक सदृश ठंड या एक जैसी गरमी नहीं रहती ठंड और गरम ऋतूकी पृथ्वीपर सूर्यकी चालपर आधार है भरतक्षेत्रके उत्तर तथा दक्षिण किनारेपर देशोंमें सूर्य कभीभी सिरेपर सीधी लकीरपर नहीं आता छछ महीना उहांपर सूर्य दिखाई भी नहीं देता वाकीके छछ महीनोमें उहां सूर्य अपने देशमें जेसाउदय अस्त होता जैसा झांखा प्रकास दिखाई देता है, कारण इसका एसा है, सूर्यके उदयहोणेके १८४ मंडल जंबूद्वीपपन्नती सूत्रमें लिखा है, जिसमें कितनेक मंडल तो पृथ्वीके ऊपर आकाश प्रदेशमें मेरूके पाससे सरू है कितनेक मंडल लवण समुद्रमें है सम भूतल मेरूके पास है; उहांसे सातसे नव्वे जोजन ऊपर आकाशमें तारामंडल सरू है, सूर्य पहले है, एकसो दश योजनमें सब नक्षत्र तारामंडल है, जमीनसे नवसें जोजनपर अंत है, सूर्यके विमाण पृथ्वीसे चंद्रकी विमान पृथ्वी असी जोजन उंची है, सब तारे मेरूकी प्रदक्षणा फिरते है सात ऋपिके तारे मृगादिक ध्रुवकी प्रदक्षणा फिरते है, हमेसांके वास्ते मुलकोकी गरमी या ठंडी कायम सिद्ध नहीं होती जिस हिमालयके पास आजदिन वरफाण गिरके ठंढा देस वण रहा है, ये देस किसी कालमें गरम था एसा सिद्ध होता है, कारण गरमीके सबब जब वरफाण गलता है, तब नीचेसें मेंमांथ याने मरेभये हाथी निकलते है, ये हाथी विनागरम देशविना होते नहीं और वरफाणमें क्या खाते थे बस ये मुलक कोइदिन गरम ओजपर था हाथीयोके रहनेलायक वन था एकाएक वरफ गिरा नीचे दबगये सो केइ चेर निकल चूके है, वरफमें दवी वस्तु केइ कालतक नहीं विगडती है अब मध्य हिन्दुस्तान समशीतोष्ण देशमेंभी सूर्यके नजीक पणेसें अथवा दूरपणेसें जुदे २मुलकोंमें कम वैसी गरम और ठंड गिरती है, इसवास्ते वर्षके अथवा ऋतूके दो अयन गिणे जाते है उत्तरायन उष्णकाल दक्षणायन शीतकाल पृथ्वीके गोलका एक नाम मुकररकर उसके बीचमें पूर्व पश्चिम एक लकीर कल्पनकर उसका नाम पश्चिमी विद्वानोंनें विपुववृत धरा है,जैनधर्मवाले मध्य प्रदेशकानाम मेरूधराहै हमारे सर्वज्ञ सिद्धांतसें पृथ्वी गोल थालकी सि कलहै, असली दरियाव खाईके तोर जंबुद्वीपबीचमें लाख जोजनका, जिसके वाहिरकर दो लाख योजनका है, पश्चिमी विद्वान गेंदया नारंगीके डोल पृथ्वीकी गोलाई मानी है, और जमीन वहोत थोडी मानते है, सर्व पृथ्वीकी परिक्रमा ८२ दिनकी रेल वोट द्वारा देणका कहते हैं,जो कुछ देखा स्यात् कथंचित् सत्य है, जगतीकी दिवालचीण पास दक्षणदिसाकी थोडी दिखतीहे वाकी वरफमे दवणेसे नही दिखतीहे पृथ्वी वहोत लंबी चोडी है, दरियाव सगर चक्र वर्त्तकी वखत दक्षिणकी तरफसें खुली जमीनमें आया वहोत जमीन जलमें चली गई उ-त्तरमेंभी दरियाव चक्कर इधरहीसे खा गया ऋपभदेवके वखत जो नकसा भरत क्षेत्र जंबूद्वीपका था सो विगड गया औरही सिकल दिखणे लगी दरियावके आये जलमें वर-

फाण जमगया बुद्धिवान् फिरते हैं, मगर जा नहीं सकते है, खोज करत २ जेसे अमे-
रिका नई दुनियाका पता लगा कालांतरमें खोजी ओर बुद्धिवान उद्यमीकों फेरभी कइ
पते मिलेंगे सर्वज्ञ तीर्थंकरने जो केवल ज्ञानद्वारा देखके प्रकाश किया है, सो तो सब
यथार्थहे वाकी सब पदार्थ निर्णय उनोंका कहा सत्य दीख रहा है, और सत्य है तो ये-
केसें सच्च न होगा हमारे समझमें जो वात नहीं वेठे वो हमारी भूल है, इतनीसी जमी-
नमें गोलाइ पृथ्वीकी मानणी प्रमाणसें सिद्ध नहीं होती लेकिन भरत क्षेत्रकी गोलाईसें
ये हिसाब हम न्याय पूर्वक मंजूर करते हैं, सूर्य छ महीने तक लकीरके उत्तर तरफ
उष्ण कटिबंधमें फिरता है, छ महीने विषुववृतकी दक्षण तरफके उष्ण कटिबंधमें फिरता
है, जब सूर्य उत्तरके तरफ फिरता है, तब उत्तरके तरफका उष्ण कटिबंधके प्रदेशोपर
उत्तर सूर्यकी किरणे सीधी गिरती है, इससे उस प्रदेशोमें सखत ताप गिरता है इसीतरे
दक्षिण तरफ जब फिरता है, तब दक्षण तरफके उष्ण कटिबंधके प्रदेशोपर दक्षण सूर्य-
की किरणे सीधी गिरती है तब सखत ताप गिरता है, अपणा हिन्दुस्थान देश विषुववृत्त
याने मध्यरेखाकी उत्तर तरफ आया भया है दक्षिण हिन्दुस्थान उष्ण कटिबंधमें है,
वाकीका सब उत्तर हिन्दूस्थान समशीतोष्ण कटिबंधमें है, इसतरे सूर्य उत्तरायन छ
महीनेका होता है, तब उत्तर तरफ ताप जादा गिरता है, दक्षण तरफ कम, सूर्य दक्षि-
णायन छ महीनेका होता है, तब दक्षण तरफ गरमी जादा उत्तर तरफ कम, उत्तरायनके
छ महीने फागण चैत वैशाख जेठ आषाढ सावण दक्षणायनके छ महीने भादवा आसोज
काती मिगसर पोह माह छ महीने उत्तरायनके क्रमसें ताकत घटाणेवाले हैं, दक्षणायनके
छनतर २ क्रमसें ताकत वढाणेवाले हैं, वर्ष भरमें सूर्य वारे रासीपर फिरता है दो दो
रासीसें ऋतु वदलती हैं एक वर्षकी छ ऋतु कुदरती हे न्यारें २ क्षेत्रोंमें जुदी २ ऋतु
एकही वखत नहीं वैठती है, तोभी प्राये आर्यावर्त हिन्दुस्तानके देशोमे सामान्य
तोर ऋतू इसमुजब गिणे जाती है वशंत ऋतू फागुण चैत, ग्रीष्म ऋतु वैशाख जेठ, प्रा-
वृट ऋतु असाढ सावण, वर्षाऋतू भादवा आसोज, शरदऋतू कार्तिक मिगसर, हेमंत
शिशिरऋतु पोह माह, इहां वसंतऋतूका आरंभ फागुणसें गिणा हे लेकिन् असली गिण-
ती जैनाचार्योंनें चिंतामणी ग्रंथमें संक्राती पर लगाई है और यथार्थभी है जेसे मेष
वृषकी संक्राती ग्रीष्म ऋतू, मिथुन कर्ककी प्रावृट ऋतू, सिंह कन्याकी वर्षाऋतू, तुल वृ-
श्चिकी शरदऋतू, धन मकरकी हेमंतऋतू, हेमंतमें मेघ वरसे ओले गिरे तो शिशिरऋतू
कहलाती है वहोत ठंड गिरणेसें, तेमें कुंभ मीनकी वसतऋतू, संक्राती लगणेके आठ
दिन पहलेसे पिछली ऋतूकी चर्या धीमे २ छोडणी अगली ऋतुकी ग्रहण करणी, ऋतुओंका
किसनाक पथ्य तो, ऋतू है सो अदमी पास आपही पलाती है, जेसे ठंड गिरे तब गरम
वस्त्रादि वस्तुओंकी इच्छा, गरम जादा गिरे तब महीन वस्त्र ठंडे जल आदि वस्तुओंकी

इच्छा प्राणी स्वतः साधन करताहे केइयक इंग्लंड कावल वगेरे देशमे ठंड हमेश जादा है, उहां वैसाही साधन प्राणी करता है देखो इस हिन्दुस्थानमें ग्रीष्म ऋतुमें क्षेत्रकी तासीरसे चार पहाड वहोत ठंडे है उत्तरार्धमें विजयार्द्ध जिसकूं इस वखत लोक हेमालिया कहते है, दक्षणमें नीलगिरी, पश्चिममें आवू, पुरवमें दरजलिंग, कालांतरमें इनोकी तासीर वदल जाना ताजुव नहीं गरमसेंसरद, सरदसें गरम, हवाके फेरफारोंकों तों अपणे समझ सकते हैं, जितना समझतें है, उस मुजव यथा शक्ति उपायभी करते हैं, लेकिन ठंढ और ताप ऋतूओंका फेरफार अपणे वदनमे क्या क्या फेरफार करता है, और अलग २ छव ऋतू दो दो महीने वातावरणमें किस २ तरेका फेरफार करता हे, उसकी अपने शरीरकूं केसी असर होती है, ये वात अपने लोकोमें वहोत कम समझते होगें इसवास्ते छव ऋतूओंका संक्षेपवर्णन इहां करता हूं, शरीरकी हिफाजत और निरोग रखणेवाले समझदारोंकों ये निर्णय वहोतही फायदेवंद होगा, हेमंत तथा शिशिर ऋतूभरठंड कालेमें खाये भये पदार्थोसें वदनमे रस याने कफका संग्रह होता है वसंत ऋतू लगते गरमी गिरणी सुरू होती है, उससें शरीरके अंदरका कफ पिघलणे लगता है, जो उसका शमन इलाज नहीं करणेमें आवे तो खास कफ ज्वर मरोडा वगेरे रोग होता है, वसंतमें कफकी शांति भये पीछे ग्रीष्मके सखत तापसें शरीरके अंदरका जरूरी चहिये एसा रहा भया कफ जलणे याने क्षय होणा सुरू होता है, तव वायु वदनमें गुप्तपणे एकठी होणी सरू होती है, वर्षाऋतूकी हवा चलतेही दस्त उलटी बुखार वगेरे वायुसें सन्निपातादि कोप अग्नि मंद खून विकारादि होता है, उस वायुकों मिटाणे गरम इलाज करणा अथवा अज्ञानपणे गरम खानपानसें पित्तका संचय होता है शरदऋतू लगतेही सूर्यकी किरण तुलसंक्रांतीमें सोलेसे होकर सखत ताप गिरता है, इतनी किरण और किसी संक्रांतिमें भी नहीं होती है, ये वात सूर्यपन्नत्तीसूत्र तथा कल्पसूत्रकी लक्ष्मीवल्लभी टीकामें लिखा है लोकीक कहना वटभी है (दुहा–आसोजोंकी धूपमें, जोगी होगये जाट ॥ ब्राम्हण होगयेसेवडे, करसे वण गये भाट ॥ १ ॥ धूपके योगसें पित्तका कोप होकर पित्तका बुखार मोतीझरा पाणीझरा सन्निपात उलटी वगेरे अनेक उपद्रव होता है, तव यातो ठंडे इलाजोंसें अथवा हेमंतऋतूकी ठंडी हवासें या शिशिरऋतूकी तेज ठंडसे पित्त शांत होता है, लेकिन् उस हेमंतकी ठंडसें खानपानमें पौष्टिक तत्व जादा आता है, जिससें कफका संग्रह होता है, वो वसंतऋतूमें कोप करता है, हेमंतमें कफका संचय वसंतमें कोप, ग्रीष्ममें वायुका संचय प्रावृट्में कोप, वर्षामें पित्तकासंचय सरदमें कोप, इसवास्ते वसंत वर्षा और शरद इन तीनोंही ऋतूमें रोगकी जादा उत्पत्ती होती है, खानपान तथा विपरीत विहारसे वाय पित्त कफ विगडकर सव ऋतूओंमें रोग हो जाता हे अपणी २ ऋतूमें जादा कोप करता है, जिसमेंभी वेसी २ प्रकृती

वालोंकूं जादा, वसंतमें कफ सर्वोके उपद्रव करता है, लेकिन् कफकी तासीरवालेकूं जादा इसीतरे औरोंकाभी समझ लेना.

॥ वसंतऋतू ॥

वसंतऋतु, जो ठंड कालेमें चिकणा और पुष्ट खुराक खाये जाता है उससे कफका संग्रह होकर ठंढ है सो कफकूं अछीतरे शरीरमें रखता है वसंतकी धूपसें गलना सरू होता है कफ जादेतर मगज छाती और सांधोंमें रहता है, शिरका कफ पिघलकर गलेमें ऊतरता है उससें जुखाम कफ खासीका रोग होता है छातीका कफ पिघलकर होजरीमें जाता है, उससें अग्नि मंद होती है और मरोडा होता है, इसवास्ते वसंतऋतू लगतेही उस कफका यत्न करणा मुख्य इलाज दो तीन है जो तासीरकूं माने सो कर लेना कफकी शांति करणी आहार विहारसें, १ या उलटी जुलावकी दवासें कफकूं निकाल डालणा २ जिसकूं कफकी वहोत तकलीप होय और शरीरमें शक्ति होय वो तो उलटी जुलाव लेना वालक वुड्ढा नाताकत कभी लेना नहीं सोले वर्षतक हरडे रेवचीणीका सत वगेरे वालककूं रोगपर सामान्य दस्त देना तेज जुलाव देना नहीं, (वसंतऋतूका नियम) । भारी तथा ठंडाअन्न, दिनकी नींद, चिकणा खट्टा तथा मीठा पदार्थ नया अनाज इनोंको छोडणा एक वर्षका पुराणा अन्न सहत कसरत जंगलमें फिरणा तेलमर्दन पगचंपी इत्यादि उपाय कफकी शांति करता है पुराना अनाज कफकूं कम करे सहत कफकूं तोडे, कसरत तेलमर्दन दवाणा शरीरके कफकी जगे छुडाय देता है, लूखी रोटी खाकर महनत मजूरी करनेवाले गरीवोंकों ये मोसम विगाड नहीं करती माल खाकर एक जगे वैठणेवालेकूं नुकशांन करती है तभी तो पूर्ण वैद्योकी सलासे मदनमहोत्सव राग रंग गुलाव जल अबीर गुलालादि खेल वगीचोमें जाणा,इत्यादि चला होगाजिसमें धर्मी पुरुष तो मकरंद वागादमें परमेश्वरका रथ फागुण महोछवादिक निकालकर खेल करते है,कामी पुरुषोका मदन महोत्सव गवरां तथा होली वगेरोसें परिश्रम करते हैं, दालिये वडे कफोछेदक खाते है, दोलतमामें के वाहने गतकूं जाग परिश्रमसें कफ घटाते हैं, लेकिन् होलीमें असंबद्ध वचन बोलते हैं, ये रूढी वहोत खराव है इस भंडचेष्टाकूं छोडणा अछा है इस वकणेसें मन्मा- तनु कम जोर होकर वदनमें तथा वुद्धिमें खरावी होती है प्राये दो हजार वर्षसें ये भंड चेष्टा वाममार्गियोके मतकी है लोकोने ए मंगलीक माना है कूंडापंथियोका ये भजन मुख्य है ॥ मारवाड लोकोंमें वडी भूल है, जिस्सें नुकशांनी पाते है, लेकिन् संभलते नहीं अनु विपरीत मनोकल्पित आचरणा चली अव तो कूएमे भंग गिर गई जिसमेंभी जो रहना वह, मस वगपडी के, इसकूं तो रानींधा भाभेजीने भजलोई राम, सोमरद लोक भी वानि २ इस वांतोकों रोकेभी चाहे लेकिन् घरधणियाणीयोंके सामनें विलीसें चूआई इसनाही पट वनामें ठंडा खानेसे वडाई नुकसान भी शीलसातमकूं सव ठंढा खाते है

गुड महा नुकशानकारी, इस ऋतूमें सो गुडराव गुलपपडी अवस्य इस मोसममें खाते हैं, शील देवीके नामका वाहना अरे कुलवंती लक्ष्मीयों विचार करो दयाधर्मसें विरुद्ध और शरीरकूं नुकशांन करता एसा खानपानसे क्या फायदा है, जिस शीतलादेवीकूं पूजते तुमारी पीढिया गुजर गई जब बच्चोंकों ये रोग माके दूधका विकार निकलता था तो काणे अंधे विदरूप लुले लंगडे होते थे हजारों मरते थे जिसकों खोदके निकाल डाला वालकों का महासंकट टाल दिया ऐसे प्रत्यक्ष देव तुम अंगरेजोंकों क्यो नहीं पूजते वो आज साहिबके नामसे विख्यात तुम कलयुगमें इनोंकों दशमा अवतार प्रत्यक्ष विष्णुका समझो, रूढीपर नही चलना, तत्वविचारणा वाजे औरते तीन २ दिन ठंडा खाती है, इससे मतलब क्या निकलता है, रोग शीतलाकातो डाकदरोनें निजोखम कर दिया, अव्वलमें किसी महापुरुषनें सत्तमीकों शीलपालणा चूलेकों नहीं सिलगाणा अर्थात् उपवास करना कहा होगा, जिससे कफकी और कर्मोंकी निवृत्ती हो जावै, तुम लोकोंनें मिथ्यात्वके वसये मामला सरू कर दिया अवल तो एक दोयनेही सरू किया होगा क्रमसें वढा है, जैसें दिल्लीमें, पनघटपर किसी औरतका घाघरा खुल गया लोकोंनें कहा घाघरा पड गयारे घाघरा पड गया, दूर खडेकूं सुनाई दिया आगरा जल गया, आखर वादसाहतक पहुंचीके आगरा जल गया आखर तहकीकातसे घाघरा पडणा सिद्ध भया दुनियाका तो ऐसा ढंग है ॥

॥ ग्रीष्म ऋतु ॥

(ग्रीष्म)गरमीमें वदनका कफ सूकणे लगताहै तव उस कफकी खाली जगे(हवा)वायु भरी जती हैइस मोसममें जैसें सूर्यका ताप जमीन केऊ परके रस कसकूं खेंच लेता है तैसें अदम्योंके शरीरके अंदरके कफरूप प्रवाही वहणेवाला पदार्थोंकूं शोषण करता है इस वास्ते सावधानपणेसें उपाय जरूर करना इस मोसममें जो गरम पदार्थ खानेमें आवे तो वडा नुकशान होता है रस सूके जितना जो पीछा भरती होताजावै वायुकूं जगे नही मिले ऐसे पदार्थ खाने पीणे चाहिये कुदरती पैदा भई वस्तु मधुर रसवाली इस मोसममें चहिये, सो मिलती भी है देशांतरोमें, जैसें केरी, आंब, फालसा, संतरा, नारंगी, अंवली नेचु जामुन वगैरे इस मुजव वरताव करना, १ खारा तीखा खट्टा और लूखा पदार्थ कसरत तैसें धूप अग्नि ये सव चीजें रसकूं सुकाकर गरमी वधाती है तैसें गरम मसाला अथाणा चटणियां मिरचां वगैरे हमेसां ही वहोत खानेसें नुकशान करती है इस मोसममें वहोतही करती है मीठा ठंडा हलका और रसवाले पदार्थ जादे खाना जिससें क्षय होता रस पैदा होता है भाग्यवान लोकोनें दहीका पाणी शार मिश्री मिलाय श्रीखंड खाणा शरवत मुरब्बा पना इत्यादि खाना पीना तलघर तह खानेमें वैठना रक्तपित्त रोगमें जो पथ्य आगे लिखा है वो सव इस मोसममें पथ्य समझना स्री गमन ६

दिनसें अथवा पनरे दिनसें पथ्य लिखा है दुपहरकों, शक्ती मुजब, गरीब साधारण लोक गुलाब अनार नारंगीके वढिया सरवतोंकी एवजीमें अंवलीका पाणी कर उसमें खजूर अथवा पुराणा गुड मिलाकर पीणा अंवली हमेसां खाने लायक चीज नहीं है तोभी प्रकृतीकूं माफगत आवे तो गरमीकी सखत मोसममें साल उतार अमलीका सरवत फायदा करता है रोटीके संग खानेसें भी फायदेवंद है ॥

॥ वर्षा प्रावृट् ऋतु ॥

चार महीने वरसातके है मारवाडमें आद्रासें, दक्षिणमें मृग नक्षत्रसे, वर्षातकी हवा सरू होती है ग्रीष्ममें वायूका संचय भया होता है रस सूकनेसे ताकत घटी भई होती है जठराग्नि मंद भई होती है जलके कणों समेत जव वरसाती हवा चलती है मेह वरसता है पुरानेमें नया पाणी मिलता है ठंडा पाणी वरसणेसें शरीरकी गरमी वाफ रूप होकर पित्तकूं विगाडती है जमीनकी वाफ और खटासवालापाक पित्तकूं वधाय वायू तथा कफकूं दवानेका प्रयत्न करता है और पालर पाणी मैला कफकूं वढाय वाय पित्तकूं दवाता है इसतरे इस मोसममें तीनों दोषोंके आपसमें झगडा चलता है इसवास्ते इन तीनों दोषोंकी शांतिवास्ते युक्ति पूर्वक आहार विहार रखणा वर्षाऋतूका वरताव इस मुजव करणा, जठराग्नि प्रदीप्त करे सव दोषोंकों वरावर रखे ऐसा खान पान करणा अर्थात् सव रस खाना १ वण सके तो ऋतू लगते ही हलकासा जुलाव लेणा खुराकमें वर्ष भरका पुराणा अनाज वरतणा २ मूंग और तूरकी दालका ओसावण उसमें छाछ डालके पीणा फायदेवंद है इस मोसममें दहीमें संचल सींधा या सादा निमक डालके खाणा वहोत अछा है लोक मूर्खताईसें गरमी मोसममें दही खाणा अछा समझते हैं वेसा है नहीं, खाते ठंडा मालम देता है लेकिन् पचती वखत पित्त वढाता है उलटा गरमी करता है मिश्री डाल खानेसें पित्त शांत करता है वरसादमें दही वायूकों शमाता है अग्नि प्रदीप्त करता है युक्ति विना खाया भया दही सव ऋतूंमे नुकशान करता है वरसात तथा हेमंतमें निमक डाला नया दही पथ्य है ३ छाछ नीवु केरी वगेरे खट्टे पदार्थ और मोसमसें इस मोसममें जादा पथ्य है प्रकृतीके अनुसार प्रमाण मुजव सवकूं ये चीज इस मोसममें पथ्य है ४ नदी तलाव कूएके पाणीमें वरसादका मैला पाणी मिलता है इसवास्ते इनोंका जल पीणे लायक नहीं जिस कूएमें या कुंडमें वरसाती पाणी नहीं मिलता होय सो पीणा ५ वरसादके दिनोंमें खारवाला पदार्थ पापड काचरी आचार वगेरे तेसें घी तेलवाले पदार्थ भुनिये वडे सीरे वेढवी कचोरी जादा फायदे वंद है ६ तल घरका वैठणा नदी तलावका पाणी गुड दिनकी नींद धूपका लेना कसरत इतनी वातोंकों वरसातकी मोसममें छोड देना इस मोसममें लूखे पदार्थ खाणा नहीं, वायू वढाता है, ठंडी हवा लेनी नहीं कादा और भीनी जमीनपर पांव उघाडे फिरणा नहीं भीगे कपडे पहरणा नहीं वाय छांट सामने

बैठणा नहीं घरके सामने कादा और गंदकी होणे देनी नहीं पालर जल पीणा नहीं पालरमें नहाणांभी नहीं ८ एसा चार महीनोका प्रावृट्वर्षाका वरतावा हैं, लूंण इस मोसममें जादा खाणा कल्पसूत्रकी टीकामें लिखा है.

॥ शरदऋतु ॥

सव मोसमोंसे शरदऋतू रोगोंके उपद्रवोंकी जड है, सो लिखाभी है रोगाणां शारदी माता, पितातु कुशमाकरः॥सरदऋतू रोगोंकी पैदा करनेवाली माता है, वसंतऋतू रोगोंकूं पैदा करके पालनेवाला पिता है, सर्व रोगोंमे ज्वर राजा है, ज्वर है सो इस मोसमका मुख्य उपद्रव है इस मोसममें वहोत संभलके चलणा चहिये वर्षातमे संचय भया पित्त शरदऋतूकी धूपकी गरमीसें पित्तका कोप वदनमें होकर बुखार आता है, और वरसादसें जो भीगी जमी होती है वो धूपसें जलकी वराल होकर हवाकूं विगाडती है विशेषपणे (जो मुलक नीचे हैं) जहां वरसादका पाणी भरा रहता है, उहां हवा जादे विगडती है, उसकूं अंग्रेजीमें मेलेरिया कहते है ये जहरी हवा बुखारकूं पैदा करनेवाली है जिसकूं (मेलेरियसफीवर)कहते है शीतज्वर एकांतर तिजारी चोथिया वगेरे विषमज्वरकी ये खास मोसम है ये सब पित्तके ज्वर है वहोत अदम्योंकों ये ज्वर वरसोवरस आके हाजरी देता है और कितनोकी सेवा तो मुदततक बजाया करता है, सो छोडताभी नहीं है, शरीरकूं मिट्टी मिला देता है, पेटमें तिल्ली बढ जाती है सरीरकूं विदरूप कर देता है, जीर्णज्वरकेरूपसे वदनमें निवास करता है, वेर २ उथला मारता है, इसवास्ते हुसियारीपणेसे ऋतूसुजब आहार विहार करे पित्तकूं शांत करे बेदरकार लोक अज्ञानकेवस वडे २ कष्ट भोगते हैं, एसी मूर्खताईका वैसा फल चाखना होता है, इस पित्तकूं जीतनेका मुख्य उपाय तीन है (१) (पित्तशमन) खान पान और दवासें पित्त दवाणा(२उलटीसें) या जुलाबसें, पित्त निकाल डालणा (३ तीसरा उपाय तो विरले भाग्य योगसेंही वण आता है,) याने खून निकलवाणा फस्त या जोक वगेरेसें थोडा २ पहलेके दो इलाज तो सहज करने जैसा है, मगर उलटी या जुलाब पथ्यसें कराणा,(मरदका जुलाब और औरतका जापा वरावर है,)पूरे वैद्यसें या इस दीपकके प्रकासकूं देखणा, जुलाब लेना तब मालसकराय घी पीकर तीन पांच या सात दिनतक पहली वमनकर तीन दिन के वाद जुलाब लेना घी पीनेकी मात्रा नित्यकी २ तोलेसें चार तोलेकी वस है आगे लिखेंगे ॥ वायुकी प्रकृतीवालेनें शरदऋतूमें घी पीकर पित्तकी शांति करणी, पित्त प्रकृतीवालेनें कडवे पदार्थ खाणा पीणा सो नीमके दरखत परकी गिलोय, नीमकी अंतर छाल, पित्तपापडा, चिरायता वगेरे मुख्य है, इनोमेंसे हर कोईएक चीजकी फक्की या रातकूं भिगाकर फजरमें उकालकर छाण ठंडाकर मिश्री डाल पीणा, मात्रा तोला १। इससें बुखार आवे नहीं होय तो चला जाय पित्तकी शांति हो जाती है, इससें दूसरा इलाज दूध मिश्री चावलोंके खानेसेंभी पित्त शांत होता है,

दिनसें अथवा पनरे दिनसें पथ्य लिखा है दुपहरकों, शक्ती मुजब, गरीब साधारण लोक गुलाब अनार नारंगीके बढिया सरबतोंकी एवजीमें अंबलीका पाणी कर उसमें खजूर अथवा पुराणा गुड मिलाकर पीणा अंबली हमेसां खाने लायक चीज नहीं है तोभी प्रकृतीकूं माफगत आवे तो गरमीकी सखत मोसममें साल उतार अमलीका सरबत फायदा करता है रोटीके संग खानेसें भी फायदेवंद है ॥

॥ वर्षा प्रावृट् ऋतु ॥

चार महीने वरसातके है मारवाडमें आद्रासें, दक्षिणमें मृग नक्षत्रसे, वर्षातकी हवा सरू होती है ग्रीष्ममें वायूका संचय भया होता है रस सूकनेसे ताकत घटी भई होती है जठराग्नि मंद भई होती है जलके कणों समेत जब वरसाती हवा चलती है मेह वरसता है पुरानेमें नया पाणी मिलता है ठंडा पाणी वरसणेसें शरीरकी गरमी बाफ रूप होकर पित्तकूं बिगाडती है जमीनकी बाफ और खटासवालापाक पित्तकूं बधाय वायू तथा कफकूं दबानेका प्रयत्न करता है और पालर पाणी मैला कफकू बढाय वाय पित्तकूं दबाता है इसतरे इस मोसममें तीनों दोषोंके आपसमें झगडा चलता है इसवास्ते इन तीनों दोषोंकी शांतिवास्ते युक्ति पूर्वक आहार विहार रखणा वर्षाऋतूका बरताव इस मुजब करणा, जठराग्नि प्रदीप्त करे सब दोषोंकों बराबर रखे ऐसा खान पान करणा अर्थात् सब रस खाना १ वण सके तो ऋतू लगते ही हलकासा जुलाब लेणा खुराकमें वर्ष भरका पुराणा अनाज बरतणा २ मूंग और तूरकी दालका ओसावण उसमें छाछ डालके पीणा फायदेवंद है इस मोसममें दहीमें संचल सींधा या सादा निमक डालके खाणा बहोत अछा है लोक मूर्खताईमें गरमी मोसममें दही खाणा अछा समझते हैं वैसा है नहीं, खाते ठंडा मालुम देता है लेकिन् पचती वखत पित्त वढाता है उलटा गरमी करता है मिश्री डाल खानेसें पित्त शांत करता है वरसादमें दही वायूकों शमाता है अग्नि प्रदीप्त करता है युक्ति विना खाया भया दही सब ऋतूंमें नुकशान करता है वरसात तथा हेमंतमें निमक डाला भया दही पथ्य है ३ छाछ नींबु केरी वगेरे खट्टे पदार्थ और मोसमसें इस मोसममें ज्यादा पथ्य है प्रकृतीके अनुसार प्रमाण मुजब सबकू ये चीज इस मोसममें पथ्य है ४ नदी तलाव कूएके पाणीमें वरसादका मैला पाणी मिलता है इसवास्ते इनोंका जल पीणे लायक नहीं जिन कूएमें या कुंडमें वरसाती पाणी नहीं मिलता होय सो पीणा ५ वरसादके दिनोंमें खारखारा पदार्थ पापड काचरी आचार वगेरे तेसें घी तेलवाले पदार्थ युक्तिसे [illegible] ज्यादा फायदे वंद है ६ तल घरका बैठणा नदी तलावका पाणी [illegible] दिनकी नींद [illegible] लेना [illegible] इतनी बातोंको वरसातकी मोसममें छोड देना इस मोसममें सूके पदार्थ खाना नहीं, वायू बढाता है, ठंडी हवा लेनी नहीं [illegible] और [illegible] उघाडे फिरणा नहीं भींजे कपडे पहरणा नहीं वाय छांट सामने

बैठणा नहीं घरके सामने कादा और गंदकी होणे देनी नहीं पालर जल पीणा नहीं पालरमें नहाणांभी नहीं ८ एसा चार महीनोका प्रावृट्वर्षाका वरतावा हैं, लूंण इस मोसममें जादा खाणा कल्पसूत्रकी टीकामे लिखा है.

॥ शरदऋतु ॥

सब मोसमोंसे शरदऋतू रोगोंके उपद्रवोंकी जड है, सो लिखाभी है रोगाणां शारदी माता, पितातु कुशमाकरः॥सरदऋतू रोगोंकी पैदा करनेवाली माता है, वसंतऋतू रोगोंकूं पैदा करके पालनेवाला पिता है, सर्व रोगोंमे ज्वर राजा है, ज्वर है सो इस मोसमका मुख्य उपद्रव है इस मोसममें बहोत संभलके चलणा चहिये वर्षांतमे संचय भया पित्त शरदऋतूकी धूपकी गरमीसें पित्तका कोप वदनमें होकर बुखार आता है, और वरसादसें जो भीगी जमी होती है वो धूपसें जलकी वराल होकर हवाकू विगाडती है विशेषपणे (जो मुलक नीचे हैं) जहां वरसादका पाणी भरा रहता है, उहां हवा जादे बिगडती है, उसकूं अंग्रेजीमें मेलेरिया कहते है ये जहरी हवा बुखारकूं पैदा करनेवाली है जिसकूं (मेलेरियसफीवर)कहते है शीतज्वर एकांतर तिजारी चोथिया वगेरे विषमज्वरकी ये खास मोसम है ये सब पित्तके ज्वर है बहोत अदम्योंकों ये ज्वर वरसोवरस आके हाजरी देता है और कितनोकी सेवा तो मुदततक बजाया करता है, सो छोडताभी नहीं है, शरीरकूं मिट्टी मिला देता है, पेटमें तिल्ली वढ जाती है सरीरकूं विदरूप कर देता है, जीर्णज्वरकेरूपसे वदनमें निवास करता है, वेर २ उथल्ला मारता है, इसवास्ते हुसियारीपणेसे ऋतूमुजब आहार विहार करे पित्तकूं शांत करे वेदरकार लोक अज्ञानकेवस बडे २ कष्ट भोगते हैं, एसी मूर्खताईका वैसा फल चाखना होता है, इस पित्तकूं जीतनेका मुख्य उपाय तीन है (१) (पित्तशमन) खान पान और दवासें पित्त दबाणा(२उलटीसें) या जुलावसें, पित्त निकाल डालणा (३ तीसरा उपाय तो विरले भाग्य योगसेंही वण आता है,) याने खून निकलवाणा फस्त या जोक वगेरेसें थोडा २ पहलेके दो इलाज तो सहज करने जैसा है, मगर उलटी या जुलाव पथ्यसें कराणा,(मरदका जुलाव और औरतका जापा बराबर है,)पूरे वैद्यसें या इस दीपकके प्रकासकूं देखणा, जुलाव लेना तब मालसकराय घी पीकर तीन पांच या सात दिनतक पहली वमनकर तीन दिन के बाद जुलाव लेना घी पीनेकी मात्रा नित्यकी २ तोलेसें चार तोलेकी वस है आगे लिखेंगे ॥ वायुकी प्रकृतीवालेनें शरदऋतूमें घी पीकर पित्तकी शांति करणी, पित्त प्रकृतीवालेनें कडवे पदार्थ खाणा पीणा सो नीमके दरखत परकी गिलोय, नीमकी अंतर छाल, पित्तपापडा, चिरायता वगेरे मुख्य हैं, इनोमेंसे हर कोईएक चीजकी फक्की या रातकूं भिगाकर फजरमें उकालकर छाण ठंडाकर मिश्री डाल पीणा, मात्रा तोला १। इससें बुखार आवे नहीं होय तो चला जाय पित्तकी शांति हो जाती है, इससें दूसरा इलाज दूध मिश्री चावलोंके खानेसेंभी पित्त शांत होता है,

जुलाब पित्त सामक एसा गुणवाला लेना हरडे अमरसरी जवा हरडे अथवा निसोतकी छाल चूरा मिलाय फक्की लेनी, दालभात पतला पथ्य लेना जादा दस्त काली निशोतकी छालसें आता है, लकडी वीचकी निकाल डालणी शरदऋतूका वरताव इस मुजब करणा १ फजरकी ओस पूरवकी हवा क्षार पेटभर भोजन दही तेल खटाई तीखा सूंठ मिरचा-दिक हींग खारा चरबीवाला जादा पदार्थ सूर्य तथा अग्निका तप तेजदारू दिनकी नींद इतनी वस्तुओंका त्याग करना शरीरके निरोगार्थ त्याग है, सो तप है, इछा रोधन है सो तप है १ मिश्री चूरा कंद कमोद साठीचावल दूध ऊख थोडा निमक गहूं, जव, मूंग नदी तथा तलावका पाणी चंदन चंद्रमाकी किरण फूलोंकी माला सुपेद वस्त्र ये सब शरदऋतुमें पथ्य है २ वैद्यकशास्त्र कहता है, ग्रीष्मऋतूमें दिनकूं सोणा, पोसमाहमस्त हेमंतमें गरम पुष्टिदार खुराक खाना शरदऋतूमें दूध मिश्री पीणा इसतरेसें प्राणी निरोग दीर्घायु होता है३ शरदऋतूमें भारी खुराक खाणा नहीं आसोज काती तुलवृश्चिककी संक्रांतीमें बहोत पेटभर खानेसें बहोत नुकशान है, काती वद अष्टमीसे मिगसरके आठ दिन बाकी रहे जहांतक यमदाढ कहलाती है, जो इन दिनोंमें थोडा और हलका भोजन करता है सो मौतकी दाढसे बचता है, शरदऋतूमें खीचडी कुपथ्य है रक्तपित्तका पथ्य इस मोसममें पथ्य है, नदी तलाव जिसपर दिनकी सूर्यकी किरण पडे रातकूं चंद्रकी एसा जल पीणा पथ्य है.

॥ हेमंतऋतु ॥

ग्रीष्मऋतू जैसें अदमीकी ताकतकूं खेंच लेती है, तैसे हेमंत शिशिरऋतू ताकतकी बढो तरी कर देती है, सूर्य ताकत पदार्थोंका खेंचनेवाला, चंद्र ताकत देनेवाला, शरदऋतू लगते सूर्य दक्षणायन होता है हेमंतमे चंद्रकी शीतलता बढनेसें अदम्योंमे ताकत बढणा सरू होता है सूर्यका उदय दरियावमें होता है बाहर ठंड रहणेसें अंदरकी जठराग्नि तेज होणेसें खुराक जादा हजम होता है, गरमीमें सुस्ती रहती है ठंड कालेमें तेजी, उसका यही कारण है जठराग्नि जिसकी तेज उसकूं पौष्टिक खुराक लेणा चहिये मंदाग्निवालेनें हलका और थोडा खुराक लेना चहिये तेजाग्निवाला पूरा पुष्ट खुराक नहीं खावे तो वो अग्नि रस खून वगे-रेकूं सुकाय डालती है मंदाग्निवालोंकूं पुष्ट खुराक खानेसें नुकशान होता है इस ऋतूमें मीठा खाटा लुण और खारा पदार्थ खाणा चहिये मीठे रसमें कफ बढता है तभी प्रबल हुई जठराग्निका बराबर पोषण होता है मीठे रसके संग रुचि पैदा करणेकूं खाटा और खारा रस जरूर खाना चहिये फेर ये तीन रस अनुक्रमें भी खाणेका दिखता है हेमंत ऋतूके साठ दिनोंमें पहले वीस दिनतक मीठा रस जादा खाना बिचले वीस दिनोंमें खट्टा रस जादा खाना बाकी वीस दिनोंमें खारा रस जादा खाणा मीठा रसका ग्रास पहलो लेना [illegible] दाड साग रहना कही अचार वगेरेका ग्रास लेणा चटणी

पापड खीचिया वगेरे अंतमे खाना इस क्रमसें उलट पुलट खावे तो जरूर नुकशान करता है, क्योंके शरद ऋतूका पित्त हेमंतके पहले पक्षमें शरीरमें कुछयकरहा भया होता है, सो पहले खट्टा खारा रस खानेमें आवे तो उलटा नुकशान होता है (हेमंत ऋतू-का वरताव इस मुजब करना) जुलाब लेणा नहीं, तीखा और तुरा पदार्थका जादा सेवन करणा नहीं, खुल्ली जगेमें सोणा नहीं, ठंडे पाणीसे नाहणा नहीं, दिनका सूणा नहीं १ अछीतरे पोषण करे ऐसा पुष्टिकारक खुराक खाना, स्त्री सेवन, तेलका मालिस, कसरत, पुष्टिकारक दवा, पौष्टिक खुराक, पाक, गरम कपडे, अंगीठीसें मकान गरम रखणा हेमंत शिशिरका एकही वरतावा है, ये दोनों ऋतू वीर्य सुधारणेकूं बहोत अछी है सब ऋतूमें आहार विहारका नियम पालनेसें शरीरका सुधारा होता है लेकिन् वीर्य सुधरे विगर शरीरका सुधारा कुछ भी नहीं समझणा वीर्य सुधारणेकूं ठंडी मोसम ठंडी प्रकृती ठंडा देश विशेष अनुकूल होता है ठंडी तासीर ठंडी मोसम ठंडे देशके वसणेवालोंका वीर्य जादा मजबूत होता है लेकिन् इन तीनोंकी अनुकूलता अपणे देशवासिंदोकों पूरी तोर हासिल नहीं है क्योंके अपना देश समशीतोष्ण है प्रकृती तथा ऋतुकी अनुकूलता तो अपणे आधीन है अपणी प्रकृतीकूं ठंडी, याने दृढता, और सत्व गुणवाली करणी, ये अपणे स्वाधीनताकी वात है तैसें वीर्य सुधारणेवास्ते तथा गर्भ धारण करणेवास्ते शीत कालकूं परसन करणा येभी अपणे स्वाधीनकी वात है इसवास्ते इस मोसममें अछे वैद्य या डाक-टरोकी सल्लासें पौष्टिक दवा पाक और खुराक खाणेसे बहोत ही फायदा होता है इस ऋतुमें शरीरकूं जो पोषण देणेमें आता है वो वाकीके आंठ महीनेतक ताकत रखता है वीर्यकू मजवूत करता है ये ऊपर छव ऋतुओंका पथ्य लिखा है सो निरोगी मिजाज वालोंकेवास्ते है रोगीका पथ्य रोग प्रकरणमें लिखेगें देश अपणी तासीरकू पहचान कर पथ्य करणा विशेष विवेचन वैद्य डाकदरोकी सल्लासे समझणा ॥

किरण ४ थी दिनचर्या.

रोगरहित अदमियोंनें आयुष्यकी रक्षावास्ते पिछली चार घडी रात रहै तव ऊठणा जादा निद्रा आती होय तो पांच वजेके पहले उठजाणा जिनके सोते २ सूर्य उदय हो जाता है जिसका वीर्य धैर्य और आयु कम हो जाता है, निरोग अदमी सूर्य उदयतक सोता रहै उसके शरीरकी चिन पिन और सुस्ती कभी मिटती भी नहीं अदमी रोगी सोतारहे सो प्राणांत हो जाता है, जलदी उठणेसें मन उछाहमें रहता है दिनमें काम काज अछी तरे होता है देरके उठणेसें अथवा जागते भी विछोणेमें पडे रहणेसें आलस वढता है प्रभातसमें बुद्धि निर्मल रहती यादशक्तीभी तेज रहती है इसवास्ते पढणा और शत्रू मित्रपर सम परिणाम रखके परम पदका साधन पहले दो घडी निश्चय करणा फेर इस भवके परभवके दोनोंके सुधारणेका प्रयत्न विचारणा परमेष्ठि परमेश्वरका स्मरण करणा (सो इसतरे है) जगजीव

रक्षक, संसारबंधनके छुडाणेवास्ते दया प्रमुख ज्ञानके उपदेशक राग द्वेषादिक अठारे दूषन रहित, इंद्रादिक देवतोंके पूजने योग्य, कर्मरूप वैरियोकों हननेवाले, केवल ज्ञान लक्ष्मीसे लोकालोकके सर्व भावके जाणनेवाले, स्याद्वादनय चक्रसे पदार्थोंके उपदेशक, अनंतबली, अनंत गुणधारक, चोतीश अतिशय, पैतीस वचनातिशय गुण विराजमान, ऐसा परम पुरुष जो परमेश्वर है संसारके तारणेकूं वो वीतराग देव है सो देवाधिदेव है, इति प्रथम पद स्मरण १ दुसरे पदमें सिद्ध बुद्ध पूरण ब्रह्म परमेश्वर ज्योतमें ज्योति विराजमान लोकाग्रपर, सर्व जगतका सचराचर भावके ज्ञायक, दर्शक, जन्ममरणरहित अचल अक्षय अव्याबाध सादि अनंत निर्मल स्थितिरूप सिद्ध परमात्मामें मेरी आतमा तद्रूप हो जावे तो फेर संसारमे मेरा जन्म मरणरूप अवतार नहीं धारूं,इति द्वितीय पद स्मरण, (देवतत्व) २ पंचाचारके पालक, छत्तीस गुण विराजमान, संसारमें दीपककीतरे सत्य पदार्थ दिखला कर उजाला करणेवाले सर्व धर्माचार्योंकों में वंदन करूं ३ द्वादशांग रूप सूत्र अर्थ पढावे अज्ञानी शिष्योंकों ज्ञान पढाकर जगतमें पूज्य वणा देवे संसारका सर्व स्वरूप यथार्थ दिखला मुक्ति पंथ सधावे ऐसें सर्व उपाध्याय पचीस गुणोसें विराजमान जिनोंकों मे वंदन करूं ४ मोक्षका मार्ग साधे सचा उपदेश सीधा देवे सो साधू शांत दांत ज्ञानी ध्यानी ऐसे सत्ताईस गुण विराजमान सर्व साधूकूं में वंदन करूं ५ इति गुरुतत्व ॥ इत्यादि ईश्वर स्तवना करणी ।

ऊषापान.

ये वैद्य निघाका हुकम आदमियोंसें नहीं वणे जैसा है कफ और वायूके रोगवालेकूं तथा सन्निपातमें बुखारमें भी नहीं करने योग्य है, पिछली चार घडी रात रहणेसें ऊठके ईश्वर स्मरण करे पीछे आठ अंजली याने अधसेर जल नाकसे पीणा, नहीं वणे तो ऐसा ही मुखसेंके पीना, पीछे थोडी नींदले लेणी, फेर उठ जाणा, पांच वजे, नींद नहीं आवे तो ऐसा गुन नहीं करता, इसमें आयुष्य वढता है, हरस, सोजा, दस्त जीर्णज्वर पेटका रोग, कोढ, मेद मूत्रका रोग, नूनका, विगाड, पित्तविगाड, कान आंख गला और शिरका रोग मिटता है, अलग २ तासीर मुजब घी सहत दूध छाछ अनुपानमें वैद्य लोक दिलाया करते है तैसे पाणी सामान्य पदार्थ सबकी तासीरकूं अनुकूल है लेकिन् जो वे टम खाते है तथा रातके खान पानके बिलकुल लागी है, उनोकों ऊषा जल पान नहीं करने लायक है, जो फायदा रातके खान पानके त्यागमें है, सो फायदेके हजारमें हिस्से ऊषा जल पान नहीं है ॥

मलमूत्रत्याग.

मलमूत्रका हाजतमें त्याग करणेमें आरोग्य, आयुष्यकी वढोतरी होती है, हाजत भये पीछे रोकना नहीं, रोकणेसें वेमारियां हो जाती है वन पडे तो पावकोस शहरसे बाहिर

जंगल जाणा, बडे शहरोमें वणना मुसकिल है, कहा है, ओले सोवे ताजा खावे, पाव कोस मैदाना जावे, तिण घर वैद्य कभी नहीं आवे, निर्जीव साफजमीनपर मस्तकढांक मलका त्याग करणा दूसरेके किये मल मूत्रपर करणा नहीं दाद खाज सुजाक वगेरे रोग होणा संभव है १ मलमूत्र करते बोलना नहीं २ जोर जबरनसें करना नहीं ३ गुदालिंग मलत्याग किये वाद जलसे धोकर साफ करणा ४ वाद हाथ पांव अछीतरे धोकर साफ करणा वेलू वगेरेसें ५ ॥

मुखशुद्धि दांतण.

नियम वगेरे संभाल कर प्रत्याख्यानकी समासीपर ईश्वरकूं यादकर फेर मंजन या दांतन करणा मैलकूं कफकूं और पित्तकूं साफ करे ऐसा वंबूलका तथा वोरका दांतण अछा होता है दांतण सीधा होणा वांकाटेढा नहीं होणा खूना पकडके दांतका मैल उतारा जावे इतना लंबा होणा बहोत जाडा नहीं होणा ज्यूं बहोत पतला नहीं होणा चीरा करके जीभका मैल घसके उतार डालणा हर किसमका दांतण हाथ लगा सोई करणा नहीं नफे नुकसानका गुण देखणा दक्षणके लोक दांत मजवूतीकूं मासेका दांतण वहोत श्रेष्ठ वतलाते है दांतण नहीं करणेवालोंनें मंजन करणा, सींधा निमक, सेका भया जीरा पीसकपड छाण कर मसलणा, तथा पीसा भया सींधा निमक तिलके तेलमें मिलाकर रगडणेसें मूंके दांतोंके सब विकार दूर होते हैं, तथा जीरा हीराकसीस मांजू फल विदाम छोतूं जलाये कोयले १।२।४।८।१६ इस तोलसे क्रमसें लेकर चूर्ण करणा, मुख सुगंधी करणा होय तो जीरेके वदले आरती कपूर डालणा इससें दांत मूं साफ रहता है मूंके अंदरकी वदवो और रोग मिटता है ॥

कसरत तथा तैलमर्दन.

वण सके तो तनदुरस्त अदमियोनें शरीर निरोग रखनेवास्ते हमेस थोडी २ कसरत करनी मुदगर फेरणा दंड बैठक करणी चलणे फिरनेकी कसरत सवसें अछी है, कसरतसें वदनका खून जलदी २ फिरता है, जहरी तत्व बहोत जलदी वाहिर निकल जाता है, अंग प्रफुलित रहता है, अवयव सुघाट हो जाते हैं, फुरती, काम करनेकी शक्ति वढती है कफका नास होता है, जठराग्नि वढती है, शरीरका वेडोल जाडापणा मेदवृद्धि मिट जाती है, एसा दवासें नहीं मिट सकता, एकाएक रोग पास नहीं आता, चिकणे माल खानेवालोंकूं भी कसरतसें वहोत फायदा है, ठंढकालेमें वसंतऋतूमें कसरत फायदेवंद है निराहार ठंढी वखत करनी, दम हांफणी नहीं चढे जहांतक करणी १ वुड्ढा वालक बेमार और अशक्त अदमीनें दंड बेठकादिक तो नहीं करणी लेकिन् शक्ति और तासीर माफक थोडी देर खुली हवामें फिर आणा, इनोंकी वो कसरतही समझणी २ जुवान अदमीनेभी कसरत माफकसरही करणी कसरत करते मूं सूके, पसीना होजावे, तब छोड देना ३

खास श्वास क्षय रक्तपित्त छातीकाजखम शरीरमें किसी जगेभी जखम होय और वहोतदुवले रोगमें, कसरत करणी नहीं ४ भोजन किये पीछै, स्त्रीगमन किये पीछै, रस्ते चलकर उपवास करके चिंता मलमूत्रकी संकारहते कसरत करणी नहीं ५ वहोत कसरत करनेसें खासी बुखार उलटी ग्लानी प्यास क्षय मूर्छा श्वास तथा रक्तपित्त वगेरे रोग हो जाता हैं, तेल मसलाना यहभी एक तरेकी कसरत है, हमेस फजरमें स्नान करनेके पहले तेलकी मालिस कराणी वहोतही फायदेवंद है निरोगपणा दीर्घायुकरणेवाली ताकत वढाणेवाली जरूर करणेलायक तेलकी मालिस है थोडे दिन कराणेसें इसका फायदा आपही मालम देता है १ चमडी सुंहाली होती है चमडीका लूखापणा खसरा औरभी चमडीका दरद जाते रहता है आगेके होय तो मिट जाते है २ वदनके सांधे नरम और मजबूत होते है ३ रस और खूनकेवंधभये रस्ते खुले हो जाते है ४ जमा भया खून खुला होकर वदनमें फिरणे लगता है, ५ खूनमें मिली वायू दूर होकर वहोत रोग आते भये अटकते हैं ६ जीर्णज्वर तथा ताजे खूनसे तपा भया वदन ठंडा पडता है ७ हवामें उडते जहरी तथा चेपी रोगके जंतू । तथा परमाणू वदनमें विगाड नहीं कर सक्के, कसरत जितना फायदा है ताकत और क्रांती वढती है पुरुषार्थपणा प्राप्त होता है, तेलमें मसाले ऋतू तथा अपनी तासीर मुजव डालके तयारकर मसलावे तो वहोतही अच्छा तेल वनानेकी मुख्य चार किस्म है लोंग मिलामा जमालगोटाका विशेषपणे पाताल यंत्रसे १ तथा उकालकर दवायोका रस तेलमे डाल पकाया जावे २ घाणीमें डालकर फूलोंकी पुट देकर चंबेली मोगरे आदिका ३ सूके मसाले कूटकर जलमें मकरोय तेलमे डाल मट्टीके भरतणका मूं वंधकर धूपमें धरे रातकूं अंदर रक्खे महीने २० दिनसें छाण ले। ४ सुलसा आनकर्णीके चरित्रमें लक्षपाक तेलका वर्णन है कल्पसूत्रकी टीकामें शतपाक सहस्रपाक लक्षपाक तेलराजा सिद्धार्थके मालसका वर्णन और गुण लिखा है मन रोगोकूं मिटाने न्यारे २ तेल और घी दवाईसें वणते है इसकी रिवाज वंगदेशमें नवी जारी है मगर चार महीने वाद वनानेके, हीन सत्व हो जाता है वेसा गुण नहीं रहता, तोभी सामान्य तोर तिल्लीका सादा तेल सवकूं फायदेवंद है शिरमें डालणा कानमें डालना, मन शरीरकी मालम नहीं वण आवे तो शिरमें कानमें पगकी पींडिया हाथ पांवके तले तो जरूर तेलमें मसलणा, हमेस नहीं वने तो अठवाडे, वोभी नहीं वने तो पंदर रोजमें तो अवस्य मसलाना । चणेके आटेमें अथवा आंवलेके चूर्णमें चिकणास दूरकर स्नान करणा या मसालेमे या आजकल साबूमें भी चिकणास दूर करना कहा है, ऐसी मानूलें परन्तु नहीं गिरती.

स्नान वल्किर्म.

स्नानका हेतु तनके मेल दूर करना लिखा है स्नानमें धर्म माननेवाले धर्मांध लोक

वेर २ नाहते हैं लेकिन् जिस कामके वास्ते नाह्णा और जिस तरे स्नान करणा वो वात विरले विवेकी जाणते हैं स्नान करनेका मुख्य हेतु शरीरकी पवित्रताका है वस इसकूं चाहे कितनेइ गाडे भरके धर्म समझो ऊपरके शरीरकी शुद्धि स्नान विगर कभी होणी नहीं है वो करके पीछे क्या करणा उसका खयाल वहुतोंकों नहीं है सो लिखते हैं, जैसें भगवती सूत्रमें तुंगीया नगरीके श्रावक साधूओंकों वांदणे चले तहां पहले (न्हाया कयवलिकम्मा) अर्थ इसका ऐसा है वो श्रावक पहिले स्नान कर वलि कर्म याने देवकी पूजा करे ऐसें सुदर्शन सेठका अधिकार भगवतीमें है जो भगवान महावीरकूं वांदने निकला, उहांभी एसाही लिखा है, ज्ञाता अंतगडदशा प्रमुख अनेक सूत्रोंमें जहां किसी श्रीमंत गृहस्थका शुभकार्य करणा चला हैं, उहां न्हाया कयकलिकम्मा एसा पाठ है, उहां केइयक एकांत नयहठ ग्राही एसा कहते हैं कोइ कुलदेव पूजा होगा भगवतीजीमें खुलासा तुंगिया नगरीके श्रावकोंका सम्यक्त निश्चलका एसा पाठ है, नही चाहते हैं वो श्रावक किसी यक्ष भूत नाग आदि किसी देवताका सहाय, एसे दृढ धर्मियोके, स्थापना अरिहंतही देवकूं पूजणा स्वतः सिद्ध है श्रावक दृढ सम्यक्तवंत अरिहंतदेव या (अरिहंतचैत्य) याने उनोंकी मुर्त्ति टाल अन्य देवकूं वंदे पूजे नहीं, उवाई सूत्रमें देखो अंवड संन्यासी श्रावकका अधिकार, आनंद श्रावकके अधिकार उपासक दशामें तों इहांतक निश्चय दिखलाया है वो श्रावग वंदे पूजे अरिहंतके चैत्यकों, अन्यमतवाले जो हैं वो जिनराजकी मूर्त्तिकों अपना देव वनाकरके पुजे तो आनंद कहता हैं हेवीर परमात्मा और देवतो हरिहरादिक नपुजूं सो तो नपुजूं, लेकिन् मेरा इष्ट अरिहंत देवकी मूर्त्ति अन्य रूप स्थापनासें पूजे जाय, उसकूं पूजं तो वो अन्य देवकी लोक समझे तो मुझें सम्यक्तमें अती चारलगे जैसें वद्रीनाथकी मुर्त्ति जगन्नाथजीकी मूर्त्तिके चोलेके अंदरकी वुद्ध भगवान पार्श्वनाथकी मूर्त्ति और दक्षणमें नेमनाथजीकी काउसग्गधारी पांडरीनाथकी मुर्त्ति,गिरीकेवालाजीकी मुर्त्ति श्रीगोरधननाथजीकी मूर्त्ति,जैपुरपासडिग्गीमें श्रीऋषभदेवजीकी कल्याणरायजीकी मूर्त्ति,यद्यपि जिनराजकी मूर्त्तियां और मंदिर जैनियोंका कराया भया हजारों अन्य मतवालोनें अपणी स्वतन्त्रता कर पूजा और वेसमें फेरफार कियाहै ऐसे जिनराजकी मूर्त्ति अन्य तीर्थी ग्रहीतकी आनंद ने खुलासा कियाहै स्वतंत्रता और विधि स्थापितकी ग्रहणता वंदना पूजा रक्खी है इसपर एकांत नयग्राही एसा कहते है, रायपसेणी सूत्रमें चित्रसारथीके अधिकारमें, जैनी होणेके पहिले न्हाया कयवलि कम्माका लेख है, उसने कोनसा देवपूजा (उत्तर) जिस २ धर्मवालेके जो जो अपणा इष्टदेव है, उसकी पूजा करके फेर दुसरे कार्यमे लगे अवीभी एसा है, शिवके इष्टवाले शिव, विष्णुवाले विष्णु, इत्यादि, मुसलमीन लोकोंकाभी एसा दृढ निश्चय है, पलीतपणे निवाजगुजारे सो काफर, इल्म मंत्रादिक सिद्ध करणेमें पाकी जा मुख्यपणे सवको मंजूर है, इसवास्ते स्नान करना, शरीर पवित्रकरणा देव

ति, नास्तिकोंके कोई देवका इष्ट नहीं होता के इयक जैनलोक, कल्पवृक्ष
चिंतामणी समान देवाधिदेवकी स्थापना छोड अन्य भूत प्रेतोंकी मूर्ति पूजने
येभी एक बुद्धिकी विचित्रता है, कोइ पूछै तुम जैनी नाम धराके उस तुमारे
चलाणेवाले धर्म उपदेशककी मूर्त्ति क्यों नहीं वंदते पूजते, तो कहते हैं, हिंसा
और पाप लगता है, फिर पूछै इहां किस किसम पधारे हो तो कहतेहै जात देणेकूं,
इहां क्या करते हो इसमें पाप नहीं, होता तो कहते है, संसार खाते अब वो
न अन्यमती दिलमें सोचणे लगा इनोंकी समझ केसी है, सो देवकूं संसार खातेके
ठहराया, इय तो हमने किसी भी धर्ममें सुणा नहीं सो दो तरेके देव होय, मुसल
क खुदा, अंग्रेज एक ईश्वर, जैन एक अरिहंत, शिवएक, विष्णु एक, जिनोंका
है वो सब तरेके सुखकी चाहना, एकही परमेष्टसें चाहते हैं, और दमदार वेडा
ा होता है, देव प्रत्यक्ष तो ऐसे बुद्धिवानोंकों कब भया होगा, सो रूबरू कह गया
के, हम तेरे संसारी नोकर हैं, सो तुम कहोगे सो करेगें, इय लोक एकांतनय हठ-
अन्य दर्शनीयोंकों कहतें है, भला इनोंमें कुछ कमी है, नाम धराते है, जैन स्याद्वाद
है श्रावक, तुमनें कोनसी हिंसा त्यागी है, अनाज वेचते, घी वगेरे रस वेचते हो, चूला
खेती वाडी गाय भेस उंठ घोडे जूठ बोलते हो सेरका तीन पाव देते हो सवा
लेते हो, इत्यादि तुमारे कर्त्तव्य तो पंचेंद्री जीवोंतक महा घोर हिंसाके है, उहांतक
ा भया नहीं पाप लगा नहीं और धर्मोपदेशक परमात्माकी मूर्त्ति पूजामें तुमकों पाप
ा जो की तुमारे सूत्रोंमें करणा लिखा हजारों मंदिर हजारो वर्षके मोजूद लाखों वर्षकी
र्तियां मौजूद है, औरंगाबादमें हमने तुमारे पद्मप्रभुजीका मंदिर पचीससें वर्षोंका देखा
नीगांव बीकानेर तालकेमें नवसे वर्षका देखा है मित्र तुम सर्व संसार छोड शिरके
लोच द्रव्य छोड द्रव्य पूजामें पाप मानते, और नहीं करते, तो हम तुमारा वचन
ार नहीं करणा मंजूर करते, स्यात् एक न्यायसें, क्योंके हमने कनीरामजी ढूंढिये
ाधूमें सुणा है श्रावक जब इग्यार प्रतिमा धारता है तब ऊपरकी प्रतिमामें स्नान
छोडता है और स्नान छोडता है तब ही बलि कर्म याने देवकी द्रव्यपूजा छोडता है
नहीं तो तुम हमकूं दिखावो पहले पोमाटालकर श्रावककूं किस जगे स्नान और देवके
पूजाकी मनाई लिखी है जैसें और २ कृत्यका नाम लेलेकर पाप बताया है ऐसा लिखा
अरिहंत देवके मुर्त्तिकी पुष्पादिकसें पुजा करे सो पाप है, हां साधूकूं
द्रव्य पूजाकी मनाइ है मनाई महानिसीत सूत्रमें है साधूकूं
। स्नानभी नहीं करणा है तो देव पूजा भी नहीं इतना सवाल
दक्षनका ढूंढिये महेश्वरी रामसुन्दरदासका यथार्थ जाणके
लिखा है ये पुरुष बडा विवेकी था अन्य दर्शनमें हजारों

आदमी शांतशील परमार्थिक गुणवंत हमने देखे हैं जभी तो जैन ग्रंथोमें लिखा है (हे गोतम अन्यदर्शनीमें अभी एसे मौजूद है, सो एक भवकरके माहाविदेह क्षेत्रसें मुक्ति जाणेवाले अभी भरतमें हाजर है,) सत्य है ॥ नहीं कोई जातको कारण मन मानेकी वाता-हरी भजे सो हरिका होय ऊंच नीच अंतर नही कोय ॥ स्नान करते वखत सर्व शरीरकूं मसलके धोणा(क्यूंके) मैला कुचीला रहणेसें चमडी संबंधी अनेक रोग पैदा हो जाता है जूं लीख चमजूं फूलण (जिसमे) फेर वदवो हो जाती है, तनदुरस्त अदमी तथा वडा छोटा वालककों दिनमें एक वेर तो स्नान जरूर करना, स्नानके इतनें नियम है, १ शिरपर गरमागरम पाणी कभी डालना नहीं इससें आखोंकूं नुकशान पहुंचता है २ वेमार अदमी तथा ज्वर गये वाद जहांतक वदनमें ताकत नहीं आवे एसे अदमीकूं स्नान करना नहीं जिसमें फेर ठंडे जलसें तो विलकुल नहीं करना, वेमार निर्वलने भूखे पेट नहाणा नहीं चा दूध वगेरे नास्ता कर ठहरके नाहणा, धूप चढे पीछे नाहणा ३ सिरपर तो ठंढा जल या कुनकुना कूअेके निकले जल जेसा नीचेके धड परठीक गरम जल कमरके नीचे सुहा-वता गरम तेल जलसें नहाणा पित्तकी तासीरवाले जवान अदमीने ठंडे पाणीसें न्हाणा नुकशान नहीं करता, लेकिन सामान्यतोर थोडा गरम जलका स्नान सवकू माफगत आवे जेसा है ४ वहोत हवावाली तेसें जाहर खुली जगामें नाहणा नही एकांत जगे विगर पूरा स्नान नहीं हो सकता पूरी पवित्रता विगर देवपूजा जो स्नानका हेतू है सो पार नही पडता व वदनकूं पीठी उवटणेसें साफ करे या सावूसें रगडके धोकर साफ स्नान कर सूके रुमालसे पोंछ डाले जिसमें मैल और जल साफ हो जावे, भीगे कपडेसे वो काम हासल नही हो सकता अपवाद मार्गमें जैन मुनि भीगे कपडेसे मैल उतार डाले ये वात भगवती सूत्रके पचीसमे शतकमें देह वकुसके निर्णयमें टीकाकारने लिखा है, तनकूं साफ पूछणेसें खून अछीतरे फिरता है, चमडीपर तेज आता है, कसरत होती है, ५ वुखार दस्त जुखाम कफ वादीके रोगमें तेसें भोजन किये वाद तुरत न्हाणा नहीं जिसने मगज वगेरे गरिष्ट पदार्थ वहोत पेटभर खाया होवे प्यास वहोत उसपर लगे पेटमें जल मावे नही एसें कों जलमें गलेतक २ घंटे वैठाणा हजम हो जाता है, स्नानसें जठराग्नि प्रदीप्त होय आयुष्य और शक्ति वढे उत्साह वल तेज प्रताप वढे मैल खाज थकेला पसीना आलस प्यास और जलण मिटती है, रगडके नाहणेसें चमडीके ऊपरके छेद खुले हो कर वदनके अंदरका निकम्मा पदार्थ जो पसीनासो वाहीर निकल सकता है, स्नान करे पीछे शरीर और मन प्रफुल होता है इंद्रिये शांत होती है रगतपित्त कम होता है ठंडे जलसें इसवास्ते निचिंत होकर अपणे १ इष्ट देवका आवस्यक सूत्रके लो-गस्समें जो लिखा है कित्तिय १ वंदिय २ महिया ३ इसका अर्थ एसा है, हे अंतर्यामी सिद्ध वुद्ध परमात्मा तुम कीर्तन करणे योग्य हो एसा विचार गुण वर्णनरूप भाग

पूजाकेवास्ते, नास्तिकोंके कोई देवका इष्ट नहीं होता के इयक जैनलोक, कल्पवृक्ष कामधेनु चिंतामणी समान देवाधिदेवकी स्थापना छोड अन्य भूत प्रेतोंकी मूर्ति पूजने जाते हैं, येभी एक वुद्धिकी विचित्रता है, कोइ पूछै तुम जैनी नाम धराके उस तुमारे धर्मके चलाणेवाले धर्म उपदेशककी मूर्त्ति क्यों नहीं वंदते पूजते, तो कहते हैं, हिंसा होती है और पाप लगता है, फिर पूछे इहां किस किसम पधारे हो तो कहतेहै जात देणेकूं, फिर पूछे इहां क्या करते हो इसमें पाप नहीं, होता तो कहते है, संसार खाते अब वो वुद्धिवान अन्यमती दिलमें सोचणे लगा इनोंकी समझ केसी है, सो देवकूं संसार खातेके अलग ठहराया, इय तो हमने किसी भी धर्ममें सुणा नही सो दो तरेके देव होय, मुसलमीन एक खुदा, अंग्रेज एक ईश्वर, जैन एक अरिहंत, शिवएक, विष्णु एक, जिनोंका जो इष्ट है वो सब तरेके सुखकी चाहना, एकही परमेष्टसें चाहते हैं, और दमदार वेडा पार भी होता है, देव प्रत्यक्ष तो ऐसे वुद्धिवानोकों कव भया होगा, सो रूवरू कह गया होय के, हम तेरे संसारी नोकर हैं, सो तुम कहोगे सो करेगें, इय लोक एकांतनय हठग्राही अन्य दर्शनीयोंकों कहतें है, भला इनोंमें कुछ कमी है, नाम धराते है,जैन स्याद्वाद धर्मी हैश्रावक, तुमनें कोनसी हिंसा त्यागी है, अनाज वेचते,घी वगेरे रस वेचते हो,चूला चक्की खेती वाडी गाय भेस उंठ घोडे जूठ वोलते हो सेरका तीन पाव देते हो सवा सेर लेते हो, इत्यादि तुमारे कर्त्तव्य तो पंचेंद्री जीवोंतक महा घोर हिंसाके है, उहांतक हिंसा भया नहीं पाप लगा नहीं और धर्मोपदेशक परमात्माकी मूर्त्ति पूजामें तुमकों पाप लगा जो की तुमारे सूत्रोंमें करणा लिखा हजारों मंदिर हजारो वर्षके मोजूद लाखों वर्षकी मुर्तियां मौजूद है, औरंगावादमें हमने तुमारे पद्मप्रभुजीका मंदिर पच्चीससें वर्षोंका देखा गिनीगांव वीकानेर तालकेमें नवसे वर्षका देखा है मित्र तुम सर्व संसार छोड शिरके बाल लोच द्रव्य छोड द्रव्य पूजामें पाप मानते, और नहीं करते, तो हम तुमारा वचन और नहीं करणा मंजूर करते, स्यात् एक न्यायसें, क्योंके हमने कनीरामजी ढूंढिये साधूमें सुणा है श्रावक जब इग्यारे प्रतिमा धारता है तब ऊपरकी प्रतिमामें स्नान छोडता है और स्नान छोडता है तब ही वलि कर्म याने देवकी द्रव्यपूजा छोडता है नहीं तो तुम हमकूं दिखावो पहले पोसाटालकर श्रावककूं किस जगे स्नान और देवके पूजाकी मनाई लिखी है जेमें और २ कृत्यका नाम लेलेकर पाप वताया है ऐसा लिखा अरिहंत देवके मुर्तिकी पुष्पादिकमें पुजा करे सो पाप है, हां साधूकूं द्रव्य पूजाकी मनाइ है मनाई महानिशीत सूत्रमें है साधूकूं । स्नानभी नहीं करणा है तो देव पूजा भी नहीं इतना सवाल दक्षनका लखोटिये महेश्वरी रामसुखदासका यथार्थ जाणके लिखा है ये पुरुष वडा विवेकी था अन्य दर्शनमें इनोंगें

आदमी शांतशील परमार्थिक गुणवंत हमने देखे हैं जभी तो जैन ग्रंथोमें लिखा है (हे गोतम अन्यदर्शनीमें अभी एसे मौजूद है, सो एक भवकरके माहाविदेह क्षेत्रसें मुक्ति जाणेवाले अभी भरतमें हाजर है,) सत्य है ॥ नहीं कोई जातको कारण मन मानेकी वाता- हरी भजे सो हरिका होय ऊंच नीच अंतर नहीं कोय ॥ स्नान करते वखत सर्व शरीरकूं मस- लके धोणा(क्यूंके) मैला कुचीला रहणेसें चमडी संबंधी अनेक रोग पैदा हो जाता है जूं लीख चमजूं फूलण (जिसमे) फेर वदवो हो जाती है, तनदुरस्त अदमी तथा वडा छोटा वालककों दिनमें एक वेर तो स्नान जरूर करना, स्नानके इतनें नियम है, १ शिरपर गरमागरम पाणी कभी डालना नहीं इससें आखोंकूं नुकशान पहुंचता है २ वेमार अदमी तथा ज्वर गये वाद जहांतक वदनमें ताकत नही आवे एसे अदमीकूं स्नान करना नही जिसमें फेर ठंडे जलसें तो विलकुल नही करना, वेमार निर्वलने भूखे पेट नहाणा नहीं चा दूध वगेरे नास्ता कर ठहरके नाहणा, धूप चढे पीछे नाहणा ३ सिरपर तो ठंढा जल या कुनकुना कूअेके निकले जल जेसा नीचेके धड परठीक गरम जल कमरके नीचे सुहा- वता गरम तेल जलसें नहाणा पित्तकी तासीरवाले जवान अदमीने ठंडे पाणीसें न्हाणा नुकशान नहीं करता, लेकिन सामान्यतोर थोडा गरम जलका स्नान सवकूं माफगत आवे जेसा है ४ वहोत हवावाली तेसें जाहर खुली जगामें नाहणा नही एकांत जगे विगर पूरा स्नान नही हो सकता पूरी पवित्रता विगर देवपूजा जो स्नानका हेतू है सो पार नही पडता व वदनकूं पीठी उवटणेसें साफ करे या सावूसें रगडके धोकर साफ स्नान कर सूके रुमालसे पोंछ डाले जिसमें मैल और जल साफ हो जावे, भीगे कपडेसे वो काम हासल नहीं हो सकता अपवाद मार्गमें जैन मुनि भीगे कपडेसे मैल उतार डाले ये वात भगवती सूत्रके पच्चीसमे शतकमें देह वकुसके निर्णयमें टीकाकारने लिखा है, तनकू साफ पूछणेसें खून अच्छीतरे फिरता है, चमडीपर तेज आता है, कसरत होती है, ५ वुखार दस्त जुखाम कफ वादीके रोगमें तेसें भोजन किये वाद तुरत न्हाणा नहीं जिसने मगज वगेरे गरिष्ट पदार्थ वहोत पेटभर खाया होवे प्यास वहोत उसपर लगे पेटमें जल मावे नहीं एसें कों जलमें गलेतक २ घंटे वैठाणा हजम हो जाता है, स्नानसें जठराग्नि प्रदीप्त होय आयुष्य और शक्ति वढे उत्साह वल तेज प्रताप वढे मैल खाज थकेला पसीना आलस प्यास और जलण मिटती है, रगडके नाहणेसें चभडीके ऊपरके छेद खुले हो कर वदनके अंदरका निकम्मा पदार्थ जो पसीनासो वाहीर निकल सकता है, स्नान करे पीछे शरीर और मन प्रफुल्ल होता है इंद्रिये शांत होती है रगतपित्त कम होता है ठडे जलसें इसवास्ते निचिंत होकर अपणे १ इष्ट देवका आवस्यक सूत्रके लो- गस्समें जो लिखा है कित्तिय १ वंदिय २ महिया ३ इसका अर्थ एसा है, हे अंतर्यामी सिद्ध शुद्ध परमात्मा तुम कीर्तन करणे योग्य हो एसा विचार गुण वर्णनरूप भाव

पूजाकेवास्ते, नास्तिकोंके कोई देवका इष्ट नहीं होता के इयक जैनलोक, कल्पवृक्ष कामधेनु चिंतामणी समान देवाधिदेवकी स्थापना छोड अन्य भूत प्रेतोंकी मूर्ति पूजने जाते हैं, येभी एक बुद्धिकी विचित्रता है, कोइ पूछै तुम जैनी नाम धराके उस तुमारे धर्मके चलाणेवाले धर्म उपदेशककी मूर्त्ति क्यों नहीं वंदते पूजते, तो कहते हैं, हिंसा होती है और पाप लगता है, फिर पूछै इहां किस किसम पधारे हो तो कहतेहै जात देणेकूं, फिर पूछे इहां क्या करते हो इसमें पाप नहीं, होता तो कहते है, संसार खाते अब वो बुद्धिवान अन्यमती दिलमें सोचणे लगा इनोंकी समझ केसी है, सो देवकूं संसार खातेके अलग ठहराया, इय तो हमने किसी भी धर्ममें सुणा नहीं सो दो तरेके देव होय, मुसलमीन एक खुदा, अंग्रेज एक ईश्वर, जैन एक अरिहंत, शिवएक, विष्णु एक, जिनोंका जो इष्ट है वो सब तरेके सुखकी चाहना, एकही परमेष्टसें चाहते हैं, और दमदार बेडा पार भी होता है, देव प्रत्यक्ष तो ऐसे बुद्धिवानोकों कब भया होगा, सो रूबरू कह गया होय के, हम तेरे संसारी नोकर हैं, सो तुम कहोगे सो करेंगे, इय लोक एकांतनय हठग्राही अन्य दर्शनीयोंकों कहते है, भला इनोंमें कुछ कमी है, नाम धराते है,जैन स्याद्वाद धर्मी हैश्रावक, तुमनें कोनसी हिंसा त्यागी है, अनाज वेचते,घी वगेरे रस वेचते हो,चूला चक्की खेती वाडी गाय भेस उंठ घोडे जूठ बोलते हो सेरका तीन पाव देते हो सवा सेर लेते हो, इत्यादि तुमारे कर्त्तव्य तो पंचेंद्री जीवोंतक महा घोर हिंसाके है, उहांतक हिंसा भया नहीं पाप लगा नहीं और धर्मोंपदेशक परमात्माकी मूर्त्ति पूजामें तुमकों पाप लगा जो की तुमारे सूत्रोंमें करणा लिखा हजारों मंदिर हजारो वर्षके मोजूद लाखों वर्षकी मुर्तियां मोजूद है, औरंगाबादमें हमने तुमारे पद्मप्रभुजीका मंदिर पचीससें वर्षोंका देखा रिणीगांव बीकानेर तालकेमें नवसे वर्षका देखा है मित्र तुम सर्व संसार छोड शिरके बाल लोच द्रव्य छोड द्रव्य पूजामें पाप मानते, और नहीं करते, तो हम तुमारा वचन और नहीं करणा मंजूर करते, स्यात् एक न्यायसें, क्योंके हमने कनीरामजी ढूंढिये साधूसें सुना है श्रावक जब इग्यारे प्रतिमा धारता है तब ऊपरकी प्रतिमामें स्नान छोडना है और स्नान छोडता है तब ही बलि कर्म याने देवकी द्रव्यपूजा छोडता है नहीं तो तुम हमकूं दिखावो पहले पोसाटालकर श्रावककूं किस जगे स्नान और देवके पूजाकी मनाई लिखी है जैमें और २ कृत्यका नाम लेलेकर पाप बताया है ऐसा लिखा न [illegible] के श्रावक अरिहंत देवके मुर्त्तिकी पूष्पादिकसें पुजा करे सो पाप है, हां साधूकूं [illegible] मनावने द्रव्य पूजाकी मनाइ है मनाई महानिसीत सूत्रमें है साधूकूं [illegible] स्नानभी नहीं करणा है तो देव पूजा भी नहीं इतना सवाल [illegible] देव दर्शनका ठखोटिये महेश्वरी रामसुखदासका यथार्थ जाणके [illegible] किया है ये पुरुष बडा विवेकी था अन्य दर्शनमें इनागं

है, भूख लगे वाद नहीं खाणेसें (जैसें लकडीके लगी अग्नि दुसरी लकडी नही मिलती है, तब उस लकडीकों जलाते जाती है, और आप बुझते जाती हैं,) तैसें शरीरकी अग्नि बुझ जाती है, पक्की भूख लगे वोही वखत भोजनका है, ये नियम दिनका है, रातका नहीं, शुद्ध और सादाभोजन करणा, भोजनकी जगे तथा वासणवरतण मांजेधोये साफ रखणा भोजन वणाणेकी जगे१ भोजन करणेकी जगे२सीधी सामान रखणेकी जगे३ पाणी रखणेकी जगे ५ सोणेकी जगे ६ वैठणेकी जगे ७ देवपूजा करणेकी जगे मंदरीमें ८ स्नान करणेकी जगे ९ उत्कृष्टनव जगे चंद्रवे बांधणे चहिये, मकडी गिलेरी वगैरे जहरी जानवरोकी लाल मलमूत्रादिकसें अनेक रोग होता है, सो नहीं होवे, भोजनकी वखत मन प्रसन्न रहे ऐसी तयारी होणी, ऐसीही वात करनी तथा सुणनी मनमें खेद ग्लानी तथा क्रोध होय ऐसी वस्तु नजरके सांमणे रहणे देणी नहीं प्रियमित्र स्त्री वगैरे स्वजनसंबंधीयोंकों पास रहते जीमणा, वहुत तीखामिरचादिक वहुत खट्टा वहोत खारा और वहोत शाक मसालेवाला पदार्थ खाणा नही, मोसम और तासीरकूं देख स्वाद और रसवाला भोजन करणा भोजनमें जो रस जादा होता है, सव रस वैसाही वण जाता है, १ भोजन करती वखत सींधा निमक लगाय आद्रक तोलेभर पहली खाणा २ भोजन करती वखत रोटी रोटा वगैरे करडे पदार्थ घीसे पहले खाना, वाद दालसागसें खाणा पित्त तथा वायुप्रकृतीवाले मीठे पदार्थ भोजनके मध्यमे खाणा, पीछे दाल भात वगैरे नरमपदार्थ खारकर अंतमें दूध या छाछ वगैरे पतला पदार्थ खाणा ३ स्वादविना आखकूं रुचे नहीं. तथा वासी अन्न खाणा नहीं. ४ गरमागरम उष्ण ताकतका नाश करता है, वहोत ठंढा वायु कफ आंम पैदा करता है, ताजा तयार अन्न खाणा ५ मंदाग्निवालेको उडद वगैरे पदार्थ स्वभावसेंही भारी पडता है, मूंग मोठ चिणा तूर उनमानसें जादा खाय तो भारी पडता है, मिस्साकी पुडी या रोटी वडी नुकशानकारी है, मल और हवा पेटमें वढाती है, अतिसार सग्रहणी होणा ताजव नहीं. और दला भया अन्न वणाणेके फेरफारसें भारी होता है, जेसे गेहूंका सादा वाट रांधे तो वैसा भारी नहीं और लपसी भारी गरिष्ट है, ६ भोजनके पहिले पाणी पीणेसें अग्नि मंद होती है, वीचमें थोडा २ एकाध दफे जलपिया भया घी जितना फायदा देता है, भोजनके अंत आचमनमात्र दो घूंट पीणा, जादा पीणेसें अन्न हजम नहीं होता है, ७ उडद वाजरी गहुं वगैरे (आटेके वणें) पदार्थोंसें आधा पेट भरणा, मुंग तूरकी दाल तथा भातसें पूरा पेट भरणा, दूध या छाछ गऊकी मौली पीणी (क्योंके) हलका पदार्थ है, सो अंतमें पीणा८कितनेक पदार्थ अमृत रूप हैं, लेकिन दुसरी चीजके संग मिलणेसें नुकशानकारी होता है, एकदमतो नफे नुकसानकी खवर नही पडती लेकिन सर्वज्ञ परमात्माने जो वैधकादिक शास्त्रोंमें हुकम दिया है सो हितके वास्तेही दिया है, उपगारीपणे तो ग्रंथही वणाया है

पूजा करे १ है, परमात्मा तुम वंदना करणे योग्य हो एसा विचार कायासे दो हाथ दो पांवको जानू गोडे पांचमा मस्तक नमाय पंचांग प्रणाम वंदन करे २ हे पूरण ब्रम्ह इंद्रादिक जो तीन ज्ञानयुक्त एका भवतारी सम्यक धारी कोटानकोटि देवतोके आप जल १ चंदनादि सुगंध २ कमलादिक सुगंध उत्तम पुष्पोंसे ३ धूपसें ४ दीपसें ५ अक्षत ६ नैवेद्यसे ७ फुलसें ८ महिमा याने द्रव्यादि पूजाके योग हो इसवास्ते हैं, प्रभूमे शरीर धारण किया कर्मोके वस आहारी वन रहा हु इसवास्ते ये चीजोंमें आपके सन्मुख अर्पण कर ये प्रार्थना करता हूं है, दीनवंधु मे भोग उपभोग वस्तु- ओंसे संतोष पाय निराहारी पदकों प्राप्त होवूं एसा करो जेसें आप भये एसा भावसै वलि कर्म १ याने देवपूजा कर फेर सुपात्रोंको तथा दिन दुखियोंको भूखे अनाथकों गाय बैल प्रमुख अपणे स्वाधीन पराधीनकों कुलगुरु तथा भिक्षुकोंकों यथाशक्ति भोजन वस्तु यथायोग्य दान करे। देवपूजाकी वखत केसर चंदनका तिलक करे उत्तम अंग मस्तक है, तेमेंइ केशर चंदन उत्तम पदार्थ है, सो तिलक पांच तरेका है,(सुदर्शन तिलक)नीचेसें चोडा उपरसें पतला १(सुमेरु तिलक)नीचे उपर सम श्रेणिका २(वडपत्र तिलक)वडके पत्र जेसा ३ (पूर्णचंद्र तिलक) विंदाकार थाल जेसा ४(अर्ध चंद्राकार)शिद्धशिला जेसा ५ ये तिलक आत्मा जो श्वासाके संग भृकुटीके वीचमै चक्रपर ठहरता है, फेर मगजमें जाकर करोड रजूं वंकनालमें होकर पीछा नाभीमे जाता है सो छः चक्र है, जिसमें पांच चक्र केसर चंदनमें बुद्धिमान पहले पूजते हैं, निश्चय नयसें आत्मा है सो देव है, आत्मा है, सो गुरु है, २ आत्मा है सो धर्म है, ३ आगम सारमे लिखा है, विवहार- नयमें देव सो आठकर्मोंकि हननेवाले गुरु शुद्ध सच्चा उपदेस देणेवाले २ धर्म केवली भगवानका कहा भया सो द्वादशांगमें लिखा भया ३ नाभिचक्र १ इहां आत्माका ७ रुचि क प्रदेश निर्मल है जिसमें(सोहं)एसी ध्वनि श्वासाके संग ऊपरकों आती है, दुसरा(हृदय चक्र)२ जिसमें चेतनकूं सुखदुखका ज्ञान होता है २(कंठचक्र)२ जिसमेंमें सप्त सूरादिक प्रकाश है ३ (भृकुटि मध्य चक्र) ४ दशमा द्वार भेजा (आत्मा चक्र) ५ इनोका [illegible] २ दुसेर प्रकाशमें हमने लिखा है.

भोजन.

भोजनकी विधान व्यौर २ नदमियोंका न्याग २ है, इसवास्ते इहां लिखणेका प्रयो- जन नहीं लेकिन् [illegible] बात सामान्यतोर सबकेलायकहै सो लिखते हैं, खाणेमे [illegible] ताकत उनमान मुजबही खाणा येवात तनदुरस्ती रखणेकूं और उमर [illegible] लायक है, अधूरी भूखमें तथा अजीर्णमें जीमणा नहीं, [illegible] मोतकी निशाणी है, पूरी भूख [illegible] ये दोनों बातोंमें सावधान रहणा नहींतो नुकसान होता

है, भूख लगे वाद नहीं खाणेसें (जैसें लकडीके लगी अग्नि दुसरी लकडी नही मिलती है, तव उस लकडीकों जलाते जाती है, और आप बुझते जाती हैं,) तैसें शरीरकी अग्नि बुझ जाती है, पक्की भूख लगे वोही वखत भोजनका है, ये नियम दिनका है, रातका नहीं, शुद्ध और सादाभोजन करणा, भोजनकी जगे तथा वासणवरतण मांजेधोये साफ रखणा भोजन वणाणेकी जगे१ भोजन करणेकी जगे२सीधी सामान रखणेकी जगे३ पाणी रखणेकी जगे ५ सोणेकी जगे ६ बैठणेकी जगे ७ देवपूजा करणेकी जगे मंदरीमें ८ स्नान करणेकी जगे ९ उत्कृष्टनव जगे चंद्रवे बांधणे चहिये, मकडी गिलेरी वगैरे जहरी जानवरोकी लाल मलमूत्रादिकसें अनेक रोग होता है, सो नहीं होवे, भोजनकी वखत मन प्रसन्न रहे ऐसी तयारी होणी, ऐसीही वात करनी तथा सुणनी मनमें खेद ग्लानी तथा क्रोध होय ऐसी वस्तु नजरके सांमणे रहणे देणी नहीं प्रियमित्र स्त्री वगैरे स्वजनसंवंधीयोंकों पास रहते जीमणा, वहुत तीखामिरचादिक वहुत खट्टा वहोत खारा और वहोत शाक मसालेवाला पदार्थ खाणा नही, मोसम और तासीरकूं देख स्वाद और रसवाला भोजन करणा भोजनमें जो रस जादा होता है, सव रस वैसाही वण जाता है, १ भोजन करती वखत सींधा निमक लगाय आद्रक तोलेभर पहली खाणा २ भोजन करती वखत रोटी रोटा वगैरे करडे पदार्थ घीसे पहले खाना, वाद दालसागसें खाणा पित्त तथा वायुप्रकृतीवाले मीठे पदार्थ भोजनके मध्यमे खाणा, पीछे दाल भात वगैरे नरमपदार्थ खारकर अंतमें दूध या छाछ वगैरे पतला पदार्थ खाणा ३ स्वादविना आखकूं रुचे नहीं. तथा वासी अन्न खाणा नहीं. ४ गरमागरम उष्ण ताकतका नाश करता है, वहोत ठढा वायु कफ आंम पैदा करता है, ताजा तयार अन्न खाणा ५ मंदाग्निवालेको उडद वगैरे पदार्थ स्वभावसेंही भारी पडता है, मूंग मोठ चिणा तूर उनमानसें जादा खाय तो भारी पडता है, मिस्साकी पुडी या रोटी वडी नुकशानकारी है, मल और हवा पेटमें वढाती है, अतिसार सग्रहणी होणा ताजव नही. और दला भया अन्न वणाणेके फेरफारसें भारी होता है, जेसे गेहूंका सादा वाट रांधे तो वैसा भारी नहीं और लपसी भारी गरिष्ट है, ६ भोजनके पहिले पाणी पीणेसें अग्नि मंद होती है, वीचमें थोडा २ एकाध दफे जलपिया भया घी जितना फायदा देता है, भोजनके अंत आचमनमात्र दो घूंट पीणा, जादा पीणेसें अन्न हजम नहीं होता है, ७ उडद वाजरी गहुं वगैरे (आटेके वणें) पदार्थोंसें आधा पेट भरणा, मुंग तूरकी दाल तथा भातसें पूरा पेट भरणा, दूध या छाछ गऊकी मौली पीणी (क्योंके) हलका पदार्थ है, सो अंतमें पीणा८कितनेक पदार्थ अमृत रूप हैं, लेकिन दुसरी चीजके संग मिलणेसें नुकशानकारी होता है, एकदमतो नफे नुकसांनकी खवर नहीं पडती लेकिन सर्वज्ञ परमात्माने जो वैद्यकादिक शास्त्रोंमें हुकम दिया है सो हितके वास्तेही दिया है, उपगारीपणे तो ग्रंथही वणाया है

जो दूधके संग विरुद्ध पदार्थ है, सो हम दूध प्रकरणमें लिख आये हैं, बाकी इहां लिखते हैं दूध और मछलीके संग मिलणेसें जहर होता है, केला और छाछसें, केला और दहीसें और उष्ण पदार्थसें, घी और सहत बराबर तोल मिलणेसें, सहत और जल बराबर मिलणेमें, बासी अन्नकूं फेर गरम करणेसें इत्यादि पदार्थ सांमिल मिलणेसें जहरका कार्य करता है, सांझकूं दो घडी दिन रहते भोजन हलका करणा रात्री भोजनमें लाल या काली च्यूंटी खाणेमें आवे तो बुद्धि भ्रष्ट होके पागलपणा, जूंसें जलंदर कांटेसे स्वरभंग मकडीसें पित्तीके ददोडे दाहके दस्तादि होते है, रातका अंधा भोजन है, बद हजमी वगैरे अनेक रोग होणा सभव है, जादा इस रात्रीके भोजनके शरीर नुकशान संबंधी दोष रात्रि भोजन निषेध चरित्रमें देखणा रोगादिकपर दवा (या) खुराक वैद्य कारण कठण-पर बतलावे तो सोणेसें दो तीन घंटे पहली जतना करणी धन्य पुरुष तो वोहेजो सूर्यकी साक्षीसेही खान पांनकर व्रत निभावे १० जीमे बाद मूंकूं कुरलोंसे साफ करणा खुराक मसूडोंमें या दांतोंकी छेकडमें रह जाय तो मूं मे बदबो आती है, और दांतोंका मूंका रोग पैदा करता है, ११ भोजनबाद तुरत मेहतनका काम करणा नहीं क्योंके आमवातका रोग होता है, भोजनकर तुरत सोणा नही क्यों के कफ बढकर अग्निका नाश करता है, १२ भोजनकर तुरत नाहणा नहीं, क्यूंके, सरीरमें नुकाशान पहुंचता है, इत्यादि विवेचन (कल्पसूत्रकी टीका तथा) भोजन वागविलास ग्रंथमे है,

मुखसुगंध.

भोजनबाद मूं साफ करणेकूं पाणीके बहोतसे कुरलेकर अंगलीसें मूं साफ करणा, मुख [illegible] कारण मूं साफ करणेका है. जैनमुनिभी आहार किये बाद दंत मार्जन करते [illegible] नहार है, दांत मूं साफ अन्य उपायोंसें भयेबाद सोपारीके फालके और [illegible] कोइ जरूरीभी नही हैं, मुखसुगधमें अपणे देशमें सुपारी पांन इलायची [illegible] मुख्य है. लेकिन इस वखतमें तो घरोघर चिलम चुटका अग्रेश्वरीपणा दीखता है, [illegible] तो इसमें नहीं एक ममले जातीथी लेकिन अब तो बिछोणेसें उठतेही हरिभजन येही [illegible] है. [illegible] मुखवास ठहरा रख्खा है, मुखवासका कारण तो इतनाही है. [illegible] दांतोंमें कोइ अनाजका अंश रहगया होय तो कोइ चाबणेकी चीजमें [illegible] साफ करणा, [illegible] चीज सुगंधीदार और [illegible] होय तो मुंख सुवासित [illegible] मये सुगंधकूं [illegible] नागरवेलके पांन [illegible] कस्तुरी सुपारी [illegible] माथ्वकी [illegible] के निर्णयमें मुख [illegible] गांजा [illegible] मूकी [illegible]

स्वभावतो है, लेकिन वो थूक ऐसा स्वाद होता है, सो अंदर पोहचतेहीजिगर जांनका खाया पीया उसीवखत निकालके बाहिर लाता है, इसवास्ते लोक कहतेभी है, खाय जिसका घर और मू भ्रष्ट, पियेजिसका जन्म और मूं भ्रष्ट, सूंघे जिसके कपडे भ्रष्ट बडे आदमी पीकदानी रखते हैं मगर जो थूक जठराग्निके उपयोगका है, वो निरर्थक जाता है, दक्षणके लोक पांनके संग तमाखू खाते हैं, उनोकाभी यही हाल है,

सुपारी.

मुखवासकी अच्छी चीज है, लेकिन वहोत थोडी खाणी अच्छी है, जिसमें पूरचदक्षणमें छालिया लेकिन वीकानेरवाले कत्थेकी उकालीभई चिकणी सेरोंभरखाते है. इसमें औरतोकूं तो फेरभी जरा अच्छी है, मरदकूं नुकशांन करती है, सोपारीमें वदनके सांधोंको तथा धातूकों ढीला करणेका स्वभाव है, जादा खाणा विलकुल अछा नहीं है, भोजनकर जरासा टुकडा चावकर नाखदेणा चाहिये, सुपारीका जादा टुकडा कंठकूं विगाडता है, पांन ताजा और मूं में गरमी नहीं करे ऐसा होणा चाहिये, व्यसनी वणके जैसा मिले जैसाही चाव लेणा इसमें उलटा नुकशांन होता है, पान और संतरे नागपुर जैसे कहांइ भी नहीं होते ठंढकालेमे बंगला पान दुरस्त है, सवदिन पांन चावते रहणा येभी जंगलीपणा है, कत्था चुनोमें कोइतरेकी दुसरी चीजका मेल नहीं होणा और प्रमाण सर लगाया होणा इन २ वातोकी हुसियारी नहीं होय तो पान खानेका विसनभी नहीं रखणा वहोत पान खानेसें आंख और सरीरकातेज वाल दांत जठराग्नि कान रूप और ताकत इन सवोको नुकशांन पहुंचता है, इलायची लोंग तज येभी मुखसुगंधीकी चीज है, इलायचीतर गरम है, और अच्छी है, छोटी जातकी तज लोंग वायु कफवालेकूं थोडा २ खाणा अच्छा है, इलायचीभी जादे नहीं खाणा धाणा सूंफ ये दो चीज सव मुखसुगंधीकी चीजोंमें जादा परसन करणे लायक है, दीपन पाचन है, और कोइ तरेका दोष नहीं स्वाद है, और कंठकूं सुधारे है.

सदाचार.

अच्छाविचार और अच्छी चाल चलण ये अदमीकूं दोनों भवमें सुखदाई है, अच्छेवरतावेके करणेवाले पुन्यवंतकों अच्छे विचारही पैदा होता है, दुष्टवरतावेवाले दुष्टपापीकूं वुरे विचारही पैदा होते है, दानशील व्रत नियम भलाइ परोपगारीपणा दया क्षमा धीरज संतोपके साथ रुजगार व्यापार नोकरी आदि संसार व्यवहार चलावै, देखो हमारा वनाया ग्रहस्थ व्यवहारलंकार ग्रंथ छपा भया उसमें ग्रहस्थका सर्व रुजगार व्यवहार इह भव परभव नहीं विगडे जैसा सव दृष्टांतकथाओंसें दिखलाया है, श्रावग व्यवहारभी उसीका नाम है, ज्ञान पढकरवणे जहांतक उस रस्ते चलना नहीं तो ज्ञान कोण कामका है, लेकिन आर्यलोकोंकी वहोतसी वुद्धि और विवेकका नासतो खोटी आचरणासे होगया

जो दूधके संग विरुद्ध पदार्थ है, सो हम दूध प्रकरणमें लिख आये हैं, बाकी इहां लिखते हैं दूध और मछलीके संग मिलणेसें जहर होता है, केला और छाछसें, केला और दहीसें दही और उष्ण पदार्थसें, घी और सहत बराबर तोल मिलणेसें, सहत और जल बराबर वजन मिलणेसें, वासी अन्नकूं फेर गरम करणेसें इत्यादि पदार्थ सांमिल मिलणेसें जहरका कार्य करता है, सांझकूं दो घडी दिन रहते भोजन हलका करणा रात्री भोजनमें लाल या काली च्यूंटी खाणेमें आवे तो बुद्धि भ्रष्ट होके पागलपणा, जूंसें जलंदर कांटेसे स्वरभंग मकडीसें पित्तीके ददोडे दाहके दस्तादि होते है, रातका अंधा भोजन है, वद हजमी वगेर अनेक रोग होणा संभव है, जादा इस रात्रीके भोजनके शरीर नुकशान संबंधी दोष रात्रि भोजन निषेध चरित्रमें देखणा रोगादिकपर दवा (या) खुराक वैद्य कारण कठण-पर वतलावे तो सोणेसें दो तीन घंटे पहली जतना करणी धन्य पुरुष तो वोहेजो सूर्यकी साक्षीसेही खान पांनकर व्रत निभावे १० जीमे वाद मूंकूं कुरलोंसे साफ करणा खुराक मसूडोंमें या दांतोंकी छेकडमें रह जाय तो मूं मे वदवो आती है, और दांतोंका मूंका रोग पैदा करता है, ११ भोजनवाद तुरत मेहतनका काम करणा नहीं क्योंके आमवातका रोग होता है, भोजनकर तुरत सोणा नहीं क्यों के कफ वढकर अग्निका नाश करता है, १२ भोजनकर तुरत नाहणा नहीं, क्यूंके, सरीरमें नुकाशान पहुंचता है, इत्यादि विवेचन (कल्पसूत्रकी टीका तथा) भोजन वागविलास ग्रंथमे है,

मुखसुगंध.

भोजनवाद मूं साफ करणेकूं पाणीके वहोतसे कुरलेकर अंगलीसें मूं साफ करणा, मुख सुगंधका कारण मूं साफ करणेका है. जैनमुनिभी आहार किये वाद दंत मार्जन करते है. एसा तिवहार है, दांत मूं साफ अन्य उपायोसें भयेवाद सोपारीके फालके और पान खावणेकी कोइ जरूरीभी नहीं हैं, मुखसुगंधमें अपणे देशमें सुपारी पांन इलायची वगेरे मुख्य है. लेकिन इस वख्तमें तो घरोघर चिलम चुंटेका अग्रेश्वरीपणा दीखता है, आगे तो इसमें बडी एव समझी जातीथी लेकिन अब तो विछोणेसें उठतेही हरिभजन येही [illegible] है, इस [illegible] लोकोनें मुखवास ठहरा रक्खा है, मुखवासका कारण तो इतनाही है. के दाढ तथा दांतमें कोइ अनाजका अंस रहगया होय तो कोइ चावणेकी चीजसें उसके साफ करणा, फेर वो चीज खुसबोदार और फायदेमंद होय तो मुख सुवासित होय और थूक पैदा करणेवाली होय तो वो थूक होजरी मे जाकर खाये भये खुराकके पचाणे मददगार होय, इसवास्ते नागरवेलके पांन कथा चूना केसर कस्तूरी सुपारी [illegible] वगेरे पच्चखाण भाष्यकी टीकामें दुविहारके निर्णयमें मुखवास लिखा है. और लोक खाते है, लेकिन तमाखू गांजा सुलफा चंडूलमें मूकी [illegible] के [illegible] होता है. सो तो दुनियामें छिपा नहीं है, तमाखूमें थूक पैदा करणेका

ठंडा और पांव गरम रखणा चाहिये ७ देरसें सोणा नहीं वहोत पेटभर खाके तुरत सोणा नहीं रातकूं जलदी सोणा फरजमे जलदी उठणा ८ दुनियादारीकी चिंता सब छोड च्यारसरणा लेकर चारूं आहारका त्याग करणा, जीता रहा तो सूर्य उदयवाद खाणापीणा वाकी है, चोरासी लाखजीवायोनिसें अपणे कसूरकी माफी मांगकरके सोणा सात घंटेकी पूरी नींद कहलाती है, फेर तो दलद्रियोंका काम है

॥ सर्वहितकारी कर्त्तव्य ॥

शरीरकूं निरोगपणा रखनेकी जो जो मुख्य २ वाते हैं, वो सब अदम्योंके जानने योग्य है, और वैसेही चलणा चाहिये इस २ वातोंका संक्षेपसे संग्रह इस पुस्तकमें किया गया है; लोकोंके सामान्य सुखकेवास्ते जुदे २ अदम्योंनें अन्नपान और विवहारकी निगेदास्तीसें सावचेती रखनेकी जरूरी है, तैसें सभालोकोनें तथा सरकारके मुकरर किये सहरसफाई खातेके अमलदारोंनें तनदुरस्तीवास्ते पक्की रेखदेख करनेकी जरूरी है, प्रजाके हस्तू जो जो तनदुरस्तीके उपाय है, उस वातोंसें अज्ञान प्रजालोक अनेक उपद्रव और रोगोके कारणमें जागिरते हैं, इस तनदुरस्तीके ज्ञानसें वाकव होणा छोटे मोटे सब अदम्योंका जरूरी काम है, किसी वखतपर एक अदमीके अज्ञानसें हजारों लाखों अदमियोंकी जानकूं जोखम पहुंच जाती है, इसवास्ते अज्ञान प्रजाकूं आहार विहारादिक आरोग्यताके वातोंसें वाकव करणेका फरज विद्वान वैद्य डाकतर और सरकारका है, लोक सुखी रहे एसी कालजी रखनेवाले वैद्य डाकतरोने वैद्यकविद्याकूं उद्धारकर ऐसें करणा चाहिये के जिस २ कारणोंसें रोगोंकी पैदास होती है, उन २ कारणोंकों सोधकर वाहिर जाहिरकर देणा चाहिये ऐसे कारणा, फेर नही होसके उसका योग्य इलाज कामपर लगाणा चाहिये प्रजाकूं ऐसें कारणोसें जाणाकार करणा चाहिये म्युनिसपाल कमेटीवाले वडे २ रस्ते गलीकूंची वेगेरे महोलोमें जाकर तपासकर चाहे जितनी सफाई रक्खे लेकिन् जहांतक लोक अपने घर अंगणमें एकठी भई रोग पैदा करनेवाली गंदकीकों तथा आहार विहारके चोकस नियमोंको नही जानेगें जहांतक सहरसफाइका मुख्य हेतु पार पडेगाहि नही अज्ञानलोक वहोत है, पढे लिखेभी वहुत अदमी शरीररक्षाके नियमसें अजाण है, कोइ कहेगा अव तो इसकूलोमें कला जो सिखाई जाती है, उसके संग लोकोका अज्ञान दूर होणा सरू भया है, ये वातभी ठीक नहीं है, इस वखत जो कलायें सिखाये जाती है, उसमें (अगर) पूरे दरजे ख्याल करे तो शरीरसंरक्षणकी कोईभी शिक्षा देनेमे नही आती है, मारवाडमें तो विद्या पढाणेका आगला क्रम तो रहा नहीं ये लोक यातो इस दरजे पढते है अनुनासका ॥ क्यातो फेर पढते है लखो पचाईरा, खेर इनोंकी तो वातही रहणेदो गुजराती वंगाला माराठी अंग्रेजी जो पाठाशालाओंकी कितावोंमें कसरत हवा पाणी उजाला वेगेरेका विषय दाखल

तवतो यथायोग्य आचार विचार सतसंगत रही नहीं, इनोके सुधरणेकी जड पहिले जो लिखा है. ऋतु और नित्य नियम पालणेकी विधि इसके आधीन है, इतनाहीं नहीं किंतु वहोतसे भ्रष्टाचारोंसें वचणाभी अपणे सदाचारके आधीन है, भ्रष्टाचारोंकी मुख्य जड है. सो व्यसन है, उससें बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, ये वात सव लोक जाणते हैं, लेकिन व्यसनोंके फंदसें विरलेही वचेहोंगें सात विसनादि विवरण हमने पहली लिखा है, अफीम भांग तमाखू मदिरा आदि मुख्य है इससे शरीर न्यात जात कुटंब और देशकी वहोतही खरावी होगई है, जैसे खरावी आज कल वडीमरी अग्निरोहणी (व्यूवोनिकप्लेग) नेभी नहीं करी होगी इसके मारे प्रजाकूं सरकार दवायके उपाय करती हैं, व्यसनका जादा नुकशानतो इहां क्या लिखे लेकिन जो अदमी अपणा कुशल क्षेम शांति चाहता होय तो इनसव जातकेनसा आदिसें वचणा भला है, एकवेर लगा तो फेर छुटणा दुस्वार है॥

(शयन) निद्रा ॥

अच्छीनींद आणेका सरस उपाय महनत है, जो लोक दिनकूं महनत करते नहीं आलसू होकर पडे रहते हैं, उनकूं रातकूं नींद अछीतरे आती नहीं है, सांझका जादा खाणेमें स्वप्न आया करते हैं, पक्की नींदका नास होता है, स्वप्न आल जंजाल आणेसें ऐसा समझणा के मगजकूं वरावर चैन नहीं है, स्वभावी दर्शनावरणीकर्म जन्य नींद अच्छी होती है, स्वप्नशास्त्रमें स्वप्नोंका शुभाशुभ वहोत फललिखा है, वो निमित्त शास्त्र है, वाग्भटने रोग प्रकरणमें शकुन और स्वप्नोंका फल रोगकूं साध्यासाध्य जाणनेका अच्छा प्रकरण लिखा है, ग्रंथ वढजाय इसवास्ते हमारा विचार अष्टांग निमित्त संग्रह करनेका है, समयानुसार देखा जायगा निमित्तशास्त्रकूं झूठा कहते हैं, वो तत्ववेत्ता नहीं है. १ उत्तर या पूर्वके तरफ शिर करके सोणा २ सोणेकी जगा साफ एकांत गडबड [illegible] और अच्छी हवावाली होणी ३ सोणेके बिछोणे साफ होणा मलीनजगे मलीन बिछोणेमें मांकड मुरले वगेरे जानवरसताते हैं नींदमे खलल पहुंचती है चोंमासेमें जमीनपर सोना नहीं चूनेकी गंधि वायु कफ प्रकृतीवालेकूं सोणेसें नुकशान करता है, [illegible] और [illegible] नरम बिछोणे सोणा चाहिये सायरोंने कहाभी है (दुहा) मावण सूवे [illegible], बिन मारे मर जायगा जो जेठ चलेगा वाट ४ खुली जगे [illegible] हनुमें सोना चाहिये गरम तासीरवालेकूं बाकी तो खुली चांदणीमें सोणा नहीं [illegible] जादा हवाका झपाटा सामने होय ऐसा खुला सोणा नहीं, तैसें सोणेके महल [illegible] बिलकुल दरवजा बंधकरसोना नहीं क्यों के ताजी हवा आणे देणी ५ वहोत [illegible] आदि [illegible] विचारमें [illegible] या दुसरे हर कोइ कारणसें मन उ[illegible] होय तो तुरत सोना नहीं ६ सोणेके पहिले शिरकूं ठंडा रखणा, गरम होय तो [illegible] गरम पाणीमें रखणा इसेसें मगजको

ठंडा और पांव गरम रखणा चाहिये ७ देरसें सोणा नहीं वहोत पेटभर खाके तुरत सोणा नहीं रातकूं जलदी सोणा फरजमें जलदी उठणा ८ दुनियादारीकी चिंता सब छोड च्यारसरणा लेकर चारूं आहारका त्याग करणा, जीता रहा तो सूर्य उदयवाद खाणापीणा वाकी है, चोरासी लाखजीवायोनिसें अपणे कसूरकी माफी मांगकरके सोणा सात घंटेकी पूरी नींद कहलाती है, फेर तो दलद्रियोंका काम है

॥ सर्वहितकारी कर्त्तव्य ॥

शरीरकूं निरोगपणा रखनेकी जो जो मुख्य २ वाते हैं, वो सब अदम्योंके जानने योग्य है, और वैसेही चलणा चाहिये इस २ वातोंका संक्षेपसे संग्रह इस पुस्तकमें किया गया है; लोकोंके सामान्य सुखकेवास्ते जुदे २ अदम्योंनें अन्नपान और विवहारकी निगेदास्तीसें सावचेती रखनेकी जरूरी है, तैसें सभालोकोनें तथा सरकारके मुकरर किये सहरसफाई खातेके अमलदारोंनें तनदुरस्तीवास्ते पक्की रेखदेख करनेकी जरूरी है, प्रजाके हस्तू जो जो तनदुरस्तीके उपाय है, उस वातोंसें अज्ञान प्रजालोक अनेक उपद्रव और रोगोके कारणमें जागिरते हैं, इस तनदुरस्तीके ज्ञानसें वाकव होणा छोटे मोटे सब अदम्योंका जरूरी काम है, किसी वखतपर एक अदमीके अज्ञानसें हजारों लाखों अदमियोंकी जानकूं जोखम पहुंच जाती है, इसवास्ते अज्ञान प्रजाकूं आहार विहारादिक आरोग्यताके वातोंसें वाकव करणेका फरज विद्वान वैद्य डाकतर और सरकारका है, लोक सुखी रहे एसी कालजी रखनेवाले वैद्य डाकतरोने वैद्यकविद्याकूं उद्धारकर ऐसें करणा चाहिये के जिस २ कारणोसें रोगोंकी पैदास होती है, उन २ कारणोंकों सोधकर वाहिर जाहिरकर देणा चाहिये ऐसे कारणा, फेर नही होसके उसका योग्य इलाज कामपर लगाणा चाहिये प्रजाकूं ऐसे कारणोंसें जाणाकार करणा चाहिये म्युनिसपाल कमेटीवाले वडे २ रस्ते गलीकूंची वेगरे महोलोमें जाकर तपासकर चाहे जितनी सफाई रक्खे लेकिन् जहांतक लोक अपने घर अंगणमें एकठी भई रोग पैदा करनेवाली गंदकीकों तथा आहार विहारके चोकस नियमोंकों नही जानेंगें जहांतक सहरसफाईका मुख्य हेतु पार पडेगाहि नहीं अज्ञानलोक वहोत है, पढे लिखेभी वहुत अदमी शरीररक्षाके नियमसें अजाण है, कोइ कहेगा अव तो इसकूलोंमें कला जो सिखाई जाती है, उसके संग लोकोका अज्ञान दूर होणा सरू भया है, ये वातभी ठीक नहीं है, इस वखत जो कलायें सिखाये जाती है, उसमें (अगर) पूरे दरजे ख्याल करे तो शरीरसंरक्षणकी कोईभी शिक्षा देनेमें नही आती है, मारवाडमें तो विद्या पढाणेका आगला क्रम तो रहा नहीं ये लोक यातो इस दरजे पढते है अनुनासका ॥ क्यातो फेर पढते है लखो पचाईरा, खैर इनोंकी तो वातही रहणेदो गुजराती वगाला माराष्टी अंग्रेजी जो पाठाशालाओंकी कितावोंमें कसरत हवा पाणी उजाला वेगरेका विषय दाखल

तवतो यथायोग्य आचार विचार सतसंगत रही नहीं, इनोके सुधरणेकी जड पहिले जो लिखा है, ऋतु और नित्य नियम पालणेकी विधि इसके आधीन है, इतनाहीं नहीं किंतु बहोतसे भ्रष्टाचारोंसें बचणाभी अपणे सदाचारके आधीन है, भ्रष्टाचारोंकी मुख्य जड है. सो व्यसन है. उससें बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, ये बात सब लोक जाणते हैं, लेकिन व्यसनोंके फंदसें विरलेही बचेहोंगें सात विसनादि विवरण हमने पहली लिखा है, अफीम भांग तमाखू मदिरा आदि मुख्य है इससे शरीर न्यात जात कुटंब और देशकी बहोतही खराबी होगई है, जैसे खराबी आज कल बडीमरी अग्निरोहणी (ब्यूबोनिकप्लेग) नेभी नहीं करी होगी इसके मारे प्रजाकूं सरकार दवायके उपाय करती हैं, व्यसनका जादा नुकशानतो इहां क्या लिखे लेकिन जो अदमी अपणा कुशल क्षेम शांति चाहता होय तो इनसब जातकेनसा आदिसें बचणा भला है, एकवेर लगा तो फेर छुटणा दुस्वार है॥

(शयन) निद्रा ॥

अच्छीनींद आणेका सरल उपाय महनत है, जो लोक दिनकूं महनत करते नहीं आलसू होकर पडे रहते हैं, उनकूं रातकूं नींद अछीतरे आती नहीं है, सांझका जादा खाणेसें स्वप्न आया करते हैं, पक्की नींदका नास होता है, स्वप्न आल जंजाल आणेसें ऐसा समझणा के मगजकूं बराबर चैन नहीं है, स्वभावी दर्शनावरणीकर्म जन्य नींद अच्छी होती है, स्वप्नशास्त्रमें स्वप्नोका शुभाशुभ बहोत फललिखा है, वो निमित्त शास्त्र है, वाग्भट्टने रोग प्रकरणमें शकुन और स्वप्नोंका फल रोगकूं साध्यासाध्य जाणनेका अच्छा प्रकरण लिखा है. ग्रंथ बढजाय इसवास्ते हमारा विचार अष्टांग निमित्त संग्रह करनेका है. समयानुसार देखा जायगा निमित्तशास्त्रकूं झूठा कहते हैं, वो तत्ववेत्ता नहीं है. १ उत्तर या पूर्वके तरफ शिर करके सोणा २ सोणेकी जगा साफ एकांत गडबड [illegible] और अच्छी हवावाली होणी ३ सोणेके बिछोणे साफ होणा मलीनजगे मलीन बिछोणेमें मांकड मुरले वगेरे जानवरसताते हैं नींदमे खलल पहुंचती है चौमासेमें [illegible] सोना नहीं चूंनका गार वायु कफ प्रकृतीवालेकूं सोणेसें नुकशान करता है, [illegible] और परसदा नरम बिछोणे सोणा चाहिये मायरोंने कहाभी है (दुहा) मावण मूं[illegible] [illegible] उघाडे खाट, बिन मोत मर जायगा जो जेठ चलेगा वाट ४ खुली जगे [illegible] [illegible] ऋतुमें सोना चाहिये गरम तासीरवालेकूं बाकी तो खुली चांदणीमें सोणा नहीं [illegible] सामने होय ऐसा खुला सोणा नहीं, तैसें सोणेके मकान [illegible] सोणा नहीं क्यों के ताजी हवा आणे देणी ५ बहोत [illegible] विचारमें नमाकरणेमें या दूसरे हर कोई कारणसें मन उ[illegible] तो तुरत सोना नहीं ६ सोणेके पहिले शिरकूं ठंडा रखणा, गरम होय [illegible] सोना [illegible] तेलमें [illegible] गरम पाणीमें रखणा इसमां मगजको

बिलकुल शांती होती है, चरकने लंधनकूं सर्वोपरी पथ्य दोपोकूंपकानेमें लिखा है, जिसमें भी पित्त और कफकेवास्ते तो कहनाहीक्या, आसोज सुद अष्टमी सत्तमीसें ओली जिसमें जैनधर्मकी सनातन प्रजा आंबिल नवदिन करते हैं, मंदिरोमें स्नात्र अष्टप्रकारी नवपदादि पूजामें दीपधूपादिक करते हैं, जिससें हवा इस सरदऋतूकी साफ होती है, क्योंकेइ समोसमकी हवा बहोत जहरी होती है, सरीरमें जो पित्तसें खूनसंबंधी विगाड होता है, वो आंबिलका तप (याने जिसमें सब रसोंका त्याग) करके एक चावल या गेहूं या चणा मूंग या उडद ये पांच अनाजोमेंसें एक अनाज बिगर निमक खाया जाता है, जिससे वो बिलकुल शांत हो जाता है, इसतरे ही वसंतकी हवा सुधारणेकू(चैत सुद सप्तमी अष्टमीसें ओली क्रिये जाती है, आसोज मुजब सब पूजा कीये जाती है, जिससें हवा साफ होती है, और आंबिलसे कफकी शांति होजाती है इसतरेही जो जो पर्व बांधा है सो सब वैद्य विद्याके आधारसें ही धर्म व्यवस्थाका प्रसार उस सर्वज्ञने चलाणेका हुकमदिया है,॥श्राद्ध जो आश्विन वदीमें ब्राह्मणोनें भोजनार्थ चलाया है, इसमें एक नयका अंशतो वैद्यकसें संबंध कथंचित् वर्त्तमान श्राद्ध रखता है, मनुमें जो लिखा श्राद्ध(बकरे वा हिरण वगैरेका मांस खाणेका)वोतो शरद ऋतूकी अपेक्षासें तदन विरुद्ध है, और धर्मशास्त्रसे तो विरुद्ध होय जिसमें तो कहणाही क्या, दया परमधर्म फेर कैसें ठहरेगा (क्योंके)मांस खाणेवालेके हृदयमें फेर दया कैसें सिद्ध हो सकती है, दूध और मीठा खाणेसें पित्त शांत होता है, इय एक नय है,१सर्वांग नयसे श्राद्धकी क्रियामें इस ऋतूकी अपेक्षा तदन नुकशान है, वैद्यक शास्त्रमे क्षीरका भोजन इस ऋतूमें कुपथ्य है, पित्तकारी और गरम है इसवास्ते॥फेर श्राद्धके जीमणेवाले पेटभरके पराया माल खाते है, सो शरद ऋतूमें जादा खाणा है, सो जमकी दाढमें जाणा है, फेर एकेक अदमीके आठ २ निहुते आते है, दक्षणाके लालच भोजनपर भोजन करणा है सो अध्यशन सर्व रोगोंकी जड है, श्राद्ध चलाणेवालेका मतलब और होगा वैद्यक मुजब, लेकिन् अभीतो आचरणा रोगी बणणेकी है,॥नवरतोंमे जो बकरे भेसें देवी पूजामें जगे २ मारे जाते हैं, इससे हवामें दुरगंधिके परमाणू फैलते हैं, धूप तथा दीपसें सुगंधीके परमाणू फैलकर हवाकूं साफ करता है, गुजरातमे ब्राह्मन लोक आसोज सुदि अष्टमीकों हवन करते है, उस(घी दूध चिरोंजी बिदाम तिल जवके) होमसें स्वामी दयानंदजी सत्यार्थप्रकाशमें हवा साफ होती है ऐसा लिखते हैं, अग्निका हवन जो लोकोंने माना है इसका कारण तो ऐसा मालम देता है, जब ऋपभदेवके वखत कल्पवृक्ष फल कम देणे लगे कालके माहात्मसें तब भगवान लोकोंकू भूखे मरते देखके कदमूल फल और वनस्पती खाणेका हुकम युगलिक प्रजाको दिया. उनोने खाया लेकिन् पेटमे पचा नही पेट दूखने लगा उनलोकोंने अपणे पेटका कष्ट बयानकिया, भगवान प्रजाकी तनदुरस्ती निव विचार करतेथे इतनेमें

करनेमें आया है, लेकिन् वो क्रम एसा है सो छोटे वालकोंके समझमें नहीं आसके, जैसा है, क्योंके वो शिक्षा विस्तारसें नहीं लिखी गई अंग्रेजी पांचमें धोरणमें थोडे वर्ष भये (सेनीटरी प्राइमर)याने आरोग्य विद्या दाखल करी है, लेकिन् वो वर्षके अंतकेदिन वर्गमें सरू होती है, एसा मालम देता है और परीक्षा करनेवाले फलाणी २ वातोंका सवाल पूछते हैं, इस वातपर ख्यालकरके सिखाणेवाले माष्टर मुख्य २ वातोंका सवाल कंठाग्र करा देते हैं, इसमें माष्टरोंका कुछ दोषभी नहीं है, क्योंके दुसरे जो जो मुख्य २ वातें मुकरर करी हैं, उन २ वातोंकों सिखानेकूही जब पूरा वखत नहीं मिलता तो जैसे विषयोंकों गोण पक्षमें दाखल करी है, उसपर तो पूरा ध्यान कैसें शीखनेवाले दें, इसवास्ते सरकारका ये फरज है, सो इस विद्याकूं वडप्पन देणा चहिये, आरोग्य वैद्यविद्याकूं सर्वविद्या शिरोमणी समझके मुख्य विषय तरीके धोरणमें दाखल करणा चाहिये, सर्व वैद्यकविद्या शीखाणी एसा हेतु हमारे लिखनेका नहीं है, लेकिन् हवा खुराक पाणी कसरत वगेरे हमारे ग्रंथका जैसा तीसरा प्रकाश है, जो के नित्यके खान पान व्यवहार वरतने होय उसके गुणदोष इतनी वाततो अवस्य सबके जाननेयोग्य है, इसके पहले तो सामान्य नियम पीछे वारीक विषयके कितनेक पाठ निसालोंके चलती किताबोंमें दाखल करणी जरूर है, पाणीका साफ करणा मूंसें वोलदेनेवाला विद्वान विद्यार्थी जब घरमें हमेस खानेमें आवे एसी चीजोंकाभी गुण और दोष नहीं जाने ये कितनी अज्ञानता है, मूला और दूध मूंगकी दाल या दूध जब सामल खानेमें आवे तो रोज शरीरमें थोडा २ जहर एकठा होवे, वो आगे क्या विगाड करता है, ये वात वो विद्यार्थी स्वप्नमें भी जब नहीं जाणता तो आरोग्यताके विशेष नियम वो क्या जाने, आकाशके ग्रह और तारोंकी गति तथा फेरफारका नियम तो मुखपाठ पढ जाता है, लेकिन् ऋतुओंके फेरफारसें अपने बदनमें क्याक्या हाल होता है, उसकेवास्ते क्याक्या आहार विहारकी सभाल करणी चाहिये, वो वात वो विलकुल नहीं जाणता, सूर्य तथा चंद्रमाके ग्रहनका कारण और उनके आकर्षणसें दरियावके भरती वेल वढनेका नियम तो तो समझा सकेंगे लेकिन इसही ग्रहचक्रोंकी शरीरपर केसीक असर होती है और उनके आकर्षणसें शरीरमें किस तरेकी भरती और ओट होती है, उसका उस विद्यार्थीको जरासी ज्ञानके भांत नहीं होना इत्यादि कारणोंसें ही पांच तिथोंका उपवास [illegible] नियम [illegible] धर्मरूपमें दाखल भया है, दूज १ पांचम २ अष्टमी ३ इग्यारस ४ चौदस ५ पूनम तथा अमावस उल्टी उस वातोंकी हासीकर अपनी [illegible] आदि करते हैं, भादवेमें जो पित्तका संचय भया उसके कोपका समय कार्तिक आता है इसवास्ते सर्वज्ञने पर्युसन पर्व स्थापन किया जिसमें तेला उपवासादि [illegible] उत्तर [illegible] लोका [illegible] वगेरेके पदार्थ खाते हैं, इसमें जिनकी

अपणे अपणे रोगकी परीक्षाभी करसकता है, परीक्षा किये पीछे इलाज करणाभी
स्वाधीन है, रोग होणेका कारण दूर किये पीछे रोग रहनाभी नही अज्ञानमें भई भूलकूं
ज्ञानसें सुधारे. तब कुदरत अपणा काम करके फेर तनदुरस्तीमें ले आती है,
जीवका स्वरूप अव्याबाध है, इसवास्ते शरीरमें रोगके कारणोंको घटकाणेवाली स्वा-
भाविक शक्ती रही भई है, और पुन्य प्रकृतीके कारणसेभी शातावेदनी कर्मकीभी
रोगकूं रोकणेकी स्वाभाविक शक्ती रही भई है, इसवास्ते रोगके बहोतसे कारण तो बिना
उद्यमसेंही कुदरती क्रियासें दूर होते जाते है, रोगके और कुदरती शक्तिके. या शाता वेदनी
और अशाता वेदनीके. निरंतर जगमें जीव और कर्मके. आपसमें लडाई भया
करती है, शाता वेदनीकी जब जीत होती है, तो रोगकूं पेदा करणेवाले कारणोंका कुछ
असर नहीं होता, और उस शाता वेदनीकी हार होणेपर रोगके कारण उसी वखत रो-
गकूं पेदा करदेता है, पुन्यके योगसें ताकतवर आदमीके शातावेदनीवाले रोगके कारणोंको
अटकाणेवाली शक्ति जादा हो जाती है, निर्बलमें कम होती है, उसमें नाताकत आदमी
वेर २ बेमार होता है, जीवकी कुदरत शक्ती अपणे शरीरमें ऐसी है, उसमें बेमारी पेदा
भये पीछेभी विगर उपाय केइकवख्त दब जाती है, या चली जाती है, ऐसें इस शरी-
रमें वो दाखले अनेक दीखते है, जैसें आंखमें कोईभी कूड़ा फांटा चला जाय तो तुरतही
आपसें पाणी झर २ करचो फांटा धुपकर बाहिर निकल पडता है, या प्रमानमें
गीडके साथ निकलता है, आंख बिना इलाजके अच्छी होती है, किसी वखत जादा
खाणेमें आता है, तो पेटमें बोझा और दरद होता है, तब बहोतसी वखत अपणे आ-
पही उलटी और दस्त होकर मिट जाता है, ऐसी उलटी दस्तकूं रोकणेसें नुकशान
होता है, क्योंके जीवकी जो शाता वेदनी संबन्ध शक्ति है, वो पेटके अंदरका बोझा और
दरदकूं मिटाणेवास्ते उलटी और दस्तकी क्रियावेपार करती है, फेर बदनपर फोडे फ-
फोले छोटी गुमडियें होकर अपणे आपही मिट जाती है, जुखाम सरदगरमीसें खासी
होकर वहोतवखत विगरइलाजकिये अपणे आपही मिट जाती है, इस बजे बुखारभी
होकर अपणे आपही चला जाता है, मतलब असातावेदनी प्रदेशबंध होता है, सो शाता
वेदनी जो जीवने बांधी है, जिससें रोग दूर हो जाता है, जैसें पक्की दिवालपर चूना सूका
या धूलकी मुठ्ठी डालणेसें थोडासा रहता है, बाकी तो गिरजाता है, बाकी रहासो
...के झपट्टेसें अलग हो जाता है, ऐसें वो रोग स्वतः मिटता है, इसपरसे जीवके च्यार
... कर्मोका प्रकृती बंध १ जिसका स्वरूप हमने पहले प्रकाशमें आठ कर्मोंका
है, १ स्थिती बंध, जेसें मोहनी कर्मकी अवधी सित्तर कोडाकोडी
...बे भये कर्म मुदतपर भोगणेसें छूटे सो स्थिती बंध जेसें सन्निपा-
...ग बंध ३ प्रदेश बंध ४ इस चारों बंधोकों लड्डूके दृष्टांतसेंभी

समझणा जैसे सूंठके लड्डूकी प्रकृती तीखा स्वभाव होता है,ऐसा प्रकृतीबंध जाणना १ वो लड्डू महीनाया वीस दिनतक अपणे निज स्वभावसें रहता है,बाद स्वभाव वो नही रहता वो स्थिती याने मुद्दत बंध २ अनुभाग बंध, जैसें आने भरका अध पावका या पावका बंधा भया इत्यादि ३.प्रदेश बंध सो जिस २ पदार्थोंके परमाणु एकठा करके लड्डू बांधा गया उसमें रहे प्रदेश सो प्रदेश बंध ४ जैसे ज्ञानावरणी कर्मका स्वभाव आंखपर पट्टा बांधणे जैसाहै तैसे सूंठका स्वभाव वायु कफ हरणेका है ऐसें जुदे २ कर्मोंका जुदा२स्वभाव, तैसें जुदे२ लड्डूका जुदा २ स्वभाव, पित्तके वायूके कफके हरणेका है कर्मोंके संबंध मुजब, प्रदेश बंधसें भया रोग साध्य. कष्टसाध्यतक होता है, स्थिती बंधवाला साध्य १ असाध्य २ कष्टसाध्य ३ तीनूं होता है, इसतरे कितनेक दरद स्वभावसेंही विगर उपाय मिट जाता है लेकिन् उससें एसा नहीं समझणा के सब दरदयाने रोग विगर महनत विगर इलाज अछे होजायगें थोडे अज्ञानसें थोडा कष्ट. सो बुखार शरदी पेटका दरद वगैरे ये तो थोडी भूलसें जो हो जाता है, तब तो बदनमें एकाध दिन गरमी शरदी दस्त उलटीकी तकलीप देकर पीछा मिट जाता है, अज्ञानसें बडे कष्टका रोग वहोत दिनोंतक चलता है, जो उसके कारणोकों नहीं रोके तो फेर रोग गंभीर रूप पकडता है, रोगके दूर करणेका पहिला उपाय उस रोगका कारणकूं रोकणेका है, जैसें अजीर्णसें बुखार आवै और एक दो दिनका लंघन कर दिया जावे अथवा मूंगकी दालका पतलासा पाणी अथवा वहोत हलका पथ्य लेवे. तो तुरत चला जाता है, इसवास्ते रोगका कारण समझे विगर वहोतसे रोग बढ जाते है, दवा रोगकूं नहीं मिटाती है तो क्या करती है, अर्थात् रोग मिटाणेकू मदतगार होती है, ऐसा समझणा ऊपर जो जीवकी कुदरत शक्ति रोगकू मिटाणेवाली लिखी है, निश्चय नयसें तो वो शक्ति शरीरमें रात दिन अपणा काम करतेही रहती है, उसके सानुकूल आहार विहार और दवा मदतगार होतेही संयोग प्रयत्नसें, कर्म रोगपर,जीवकी जीत होती है, साता अशाताकूं हटाती है, ये विवहार नय है, वैद्यडाकदरोने ऐसा घमंड कभी नहीं रखणाके हम रोग मिटाते हैं ये गर्व रखणा झूठा है, काल और कर्मसें बडे २ हार गये तुम तो चीजही क्या हो पांच समवायोंमेंसें एक तुमारा उद्यम समवाय है, सोभी पूरे दरजे जभी सिद्ध होता है, पिछले चारूं सुलटे होय तो, हां अलबत कितनेकरोग बाहरके है सो काटवाढके लायक उपचारोंसें केइ यक जलदीभी अच्छे हो सकते है.तोभी शरीरके भीतर वहोतसे रोगोपर तो अंदरकी रोग मिटाणेकी कुदरती शक्तीही काम देती है, उसमें दवाकूं समझकर युक्तिसे देणेमें आवे तो कुदरती शक्तीके मदतगार होती है, (अगर) विगर समझे देणेमें आवे तो वोही दवा कुदरती शक्तिकी क्रियाकूं बंधकर उलटी नुकशान करती है, इस वातोंसें कोइ समझेगा दवासें क्या होता है, सो पक्षभी एकांत नय है और दवासें निश्चेही रोग मिटता है, येभी पक्ष एकांत नयकाहै. इसवास्ते स्याद्वादकूं

पैदा होता है, कितनेक कुटुंबोमें खास व्यसन और दुराचार होणेसें उस कुटुंबके मेंबर-लोक रोगी बण वैठते है, (३) जातिकारण, अपणी न्यात तथा जातका खोटा विवहार और रूढी जो पडी भईसें रोगकी पैदासका कारण होय इसमें पुरुषका तथा स्त्री जातिका जुदा २ नुकशान होणाभी आ जाता है,कितनीक जातोंमें बालविवाह वगेरे कुचाला होता है, वो रोग उत्पत्तीका दूरका कारण बण जाता है, कितनीक जातोंमें जैसें, बोहरे वगेरोमें बुरगा पडदा होता है, जिससें ओरतें नाताकत और रोगी होती हे ऐसें औरभी जाति कारणके अनेक दृष्टांत है (४) देशकारण, कितनेक देशोंका हवा पाणी अथवा अदम्योंकी प्रकृती अपनेकूं माफगत नहीं आवै जिससें रोग पैदा होय एसा विवहार कल्पीजैसो (५) कालकारण, बालपणा जवानी और बुढापा वगेरोंमें जुदी २ अवस्थामें तैसें छ ऋतुओंमें जो काम करणा चाहिये अथवा वरतणा चाहिये उसतरे न वरतीजै अथवा विपरीत वरतीजै उस कारणोसें जो रोग पैदा होय सो (६) मंडली कारण, अदम्योंकी जूदी २ मंडली एकठी होकर ऐसे नियम बांधे सो शरीर संरक्षणसें विरुद्ध होय जिस कारणोसें रोग पैदा होय सो (७) राज्यकारण, राज्यके कायदे और धोरण एसे होय सो लोकोंकी तासीर और हवा पाणीके विरुद्ध होय उससें बहोत रोग पैदा हो जाय जैसें अपणा गरम देशके लोकोंकूं सरापयाने-दारूका पीणा बहोतही नुकशान करनेवाला है, और दारूके व्यसनसें बहोतसी बेमारिया हो जाती है, एसा है तोभी दारू वगेरे मादक और मारणेवाली चीजोंकों बेचनेकूं जाहिर लाईसेन्स देणा इय राज्यकारण है, (८) महाकारण, सब सृष्टीके जीव मोतके डरमें आयपडे एसा कोइ व्यवहार बंधें जैसें ब्रह्मचर्य गर्भाधान वगेरे शारीरक उन्नतीके शिखरपर लेजाणेवाली क्रियाओकूं प्राचीन लोक धर्मकी आवश्यक क्रियामें दाखल करके मांनते थे वो अब सृष्टिके लोकोमें विरलोंमें रहा इसका कोइ बंदोवस्तवाला कायदा नहीं होणेसें लोक मनोमती होकर वरतणें लगे, इससें सब सृष्टीकूं डर तथा बहोत खराबी होती है सो दैव कहो चाहे कर्म कहो भवतव्यताकहो जैसें पहली हमने पांच समवाय लिखे हैं ये रोग होनेके सब कारण पांच समवाय और निश्चय १ विवहार २ ये दोय नय विगर होते नहीं, विजली या मकानादि गिरके मरणा या चोट लगणा इसमें भवतव्यता समवायकूं अग्रेश्वरीपणा समझणा गरमी ठंढके फेर फारसें रोग होय जिसमें काल अग्रेश्वरी (व्युव्योनिक) प्लेग,हैजेके होनेमें समुदाणी कर्म बंधेभये कर्मकूं अग्रेश्वरीपणाहे इसतरे तो पांचो समवाय समझणा, निश्चयनयसें वैसेंही कर्म उस जीवने होणा बांधा था विवहारनयसें उसनें उद्यम आहार विहारादिकका वैसा रोग होनेका किया, इस तरे समझणा, बहोतसे रोग विवहारनयसें प्राणीके उलटे उपचार और वरतावेसेंही होता है, कालका स्वभाव तो वरतनेका है, सो कभी ठंड कभी गरमी फेरफार होताही है इसवास्ते अपणा स्वभाव, पदार्थोंका स्वभाव, और ऋतुओंके स्वभाव मुजब वरतणा आहार विहारका

मुरादाबादका छपा भया॥और ये निर्बलता बहोतसे रोगोंका मूल कारण है,॥(२)निज कुटंबमें विवाह होणा येभी निर्बलताका हेतू हैं, वैद्यकशास्त्रमें निषेध कीया है, तभी तो भगवांन ऋषभदेव अपणी प्रजाकूं बलवंत करणेकेलिये युगला धर्म दूर किया, संगमे जन्मे जोडोंसे मैथुन होता था तब प्रजाकी वृद्धि नही थी. और नहीं वो कोइ पुरुषार्थका काम करते थे फकत पूर्वबद्ध पुन्यका फल कल्पवृक्षोंसें भोगते थें, कल्पवृक्षका हीनपणा देख प्रभूने पुरुषार्थ बढाणेकूं दुसरोंकी ओलादसे, विवाह करणेका हुकम दिया, कोइ कहेगा भगवान दो माताओंकी औलाद भरतबाहूबलसे ब्राह्मी सुंदरीका विवाह कैसें किया पिता तो दोनोंके आपही थे॥इसमे विचार ऐसा है, भगवान प्रजापतीने ये विधि इसवास्ते दिखलाईके तुम लोक दुसरे कुटंबकों बेटी दो वो आपतो जाणतेथे मेरी दोनों बेटियां बाल ब्रह्मचारणी यां हैं, इनोके तो रति या शंतानकी प्रवृत्ती होयगी नहीं,भगवानकूं ऐसा किया देख एकके संग जणा भया जोडा दुसरेके जन्में भये जोडोंसें विवाह दुनिया करणे लगी,बडी मनूमें ऐसाही हुकम हैं,और छोटी मनू भृगु ऋषीकी बनाइमें ऐसा लिखा है, माताके सपिंडमें नहीं होय और पिताके गोत्रमें नहीं होय ऐसी कन्या, उत्तम जातिवालोंकों विवाह करणा चहिये छोटी मनुनें नीच कोमका ये काम है, ऐसा बाकी रखा है, बडी मनूका जो कायदा है, उसका कायदाही अर्हन्नीती है, वो बडी और छोटी दो है, कुटंबमें लग्न करणेका निषेध बाबत लोकीक कारण तो बहोत है, इहां लिखणेकूं जगे नहीं है, लेकिन् दुहिता जो नांम बेटीका संस्कृतमें धरा है, सो उसका अर्थ तो ऐसा होता है, के जिसके दूर जांणेसें सबका हित होय, पच्चास वर्ष पहिले गोत्रमें विवाह करणेका बडा तिरस्कार होता था, अब तो धीरे २ उत्तम वर्णके हिंदुओंमें प्रचार चला है, पूर्व विद्वान तथा अर्वाचीन विद्वान सगा कुटुंबमें व्याह करेणेकी मनाई करते हैं, क्योंके जैसें रसायणिक योग दोनुं जुदे २ गुणोका तत्व मिलता है, तभी सिद्ध होता है, गोत्र विवाहसें जाहिर देखते कोईभी पाप नहीं दिखता इसवास्ते कितनीक जात तो सगी बहिन काकाकी बेटीसें व्याह कर लेते हैं, शास्त्र और लोक मर्यादा तथा आदमके बांधे नियमकों तोडकर चलते हैं, ऐसें संबंधसे पैदा भयी औलाद शरीरशक्ती और मानसिक शक्तिसें ऊतरते जाते हैं, फेर जैसें दुसरे सोध और सुधारोंके साधनोंसें जैसा ताकतवर होणा चहिये ऐसी ओलाद बलवान नहीं हो सकती है, जो की शास्त्रादिक ऊपर लिखे प्रमाणोंकों नहीं मानते उनोंनें अपणी औलादके हित सुखकेवास्ते इतना तो जरूरही ध्यांनमें रखणा चाहिये जो के बापके तरफसें कोइ तरेकाभी संबंध न लगता होय ऐसोंके संग व्याह करणा सबसें अच्छा है, दूर देशकी स्त्रीसें व्याह करणा सर्वोत्तम संबंध है, (३) (बालविवाह) बालपणेमें जो व्याह कर देते हैं, उससे जो जो खराबियां होती है, सो तो किसीसें छिपी नहीं हैं. इसका तो इहां क्या लिखे बचपणेमे जो विषय सेवते हैं. उनोके शरीरमें जितनी नुकशानी

कर जाती है, संभाल नही रखणेसें हांफणी दम खासी कफ वगैरेके रोग थोडीसी देरमें हो जाता है, जवानीमें रोगोंकूं अटकाणेवाली शाता वेदनी नामकी शक्तिका जोर होणेसें रोगके लायक करणेवाले कारणोका जोर थोडा लगता है, तींसरी वृद्धावस्थामें फेर शरीर निर्बल पडता है, और ये निर्वलता वदनकूं वेर २ रोगके लायक करती है, (६) (जाति) जातिका विचार करके देखतें हैं, तो पुरुषसेती औरतका शरीर रोगके असरके लायक जादा होता है, कुछ तो अज्ञान विचाररहितपणा और हठ इस कारण आहार विहारमें बिलकुल नफे नुकशांनका खयाल नही रखती और फेर असलमें वदनके बंधेज नाजुक होणेसें गर्भ स्थानमें वेर २ फेर फार उथल पुथल भया करती है, इसवास्ते स्त्रीका निर्वल शरीर रोगके लायक होता है, औरतकी पैदास इस वखत पुरुषसें तीगुणी दिखती है, जादा मरती है, एक २ अदमी तीन २ चार २ सादी वहोतसें किया करते है, जैन सिद्धांत किसी अपेक्षासें औरतकी पैदास पुरुषसें सत्ताइस गुणी जादा लिखते हैं, (७) (धंदा) कितनेक रुजगार रोगके लायक करणेवाला कारण बणता है, सबदिन वैठके काम करणेवाले आंखकूं वहोत महनत खेचल देणेवाले कलेजा और फेफसा दवे इसतरे वैठके काम करणेवाले, रंगका काम करणेवाले, पारा तथा फासफरसकी चीजों बनाणेवाले, सिलावटे पत्थर घडणेवाले, धातुओंका काम करणेवाले, लुहार कसारे ठंठेरे सुनार वगैरे कोयलेकी खाण खोदणेवाले मजूर, कपडेकी मीलमें काम करणेवाले मजूर, वहोत वोलणेवाले, वहोत फूंकणेवाले, रसोइकाकाम रात दिन करणेवाले, इत्यादिक धंदा रुजगार करणेवालोंका शरीर रोगके लायक हो जाता है ऊमर इनोकी प्रमाणसें कम हो जाती है (८)(प्रकृति)प्रकृती, स्वभाव, मिजाज, येभी रोगके लायक करणेवाला कारण है किसीका मिजाज ठंढा, किसीका गरम, किसीका वायडा, किसीका मिश्र, इसमेंके दोय अथवा तीन प्रकृतीकी प्रधानतावालेभी केइयक होते है, गरम मिजाजवाला अदमी क्रोध तथा वुखारके तुरत आधीन होता है, शरदी मिजाजवाला अदमी सरदी कफ दम वगैरे रोगके तुरत स्वाधीन होता है, वायु प्रकृतीवाला अदमी वादीके रोगके स्वाधीन होता है, मूलमें ये प्रकृतीरूप दोप तो उनोंके होता ही है, पीछे उस प्रकृतीकूं विगाडै ऐसे आहार विहारसें मदत जब मिलती है, तब उस मुजब रोग पैदा होता है, इसवास्ते प्रकृतीकूं रोगके लायक कारणोंमें गिणते हैं,

॥ रोगकूं पैदा करनेवाला नजीकका कारण ॥

रोगकूं पैदा करणेवाले नजीक कारणोमें मुख्य २ कारण अठारे है, १ हवा २ पाणी ३ खुराक ४ कसरत ५ नींद ६ कपडे ७ विहार ८ मलीनता ९ व्यसन १० विपयोग ११ रसविगाड १२ जीव १३ चेप १४ ठंढ १५ गरमी १६ मनके विकार १७ अकस्मात १८ और दवा, ये ऊपर लिखी वावतें जुदे२रोगके कारण हो जाते हैं, इनमेंसें मुख्य

(९) पूरा खुराक नहीं खाणेसें क्षय निवलाई(चेहरा) वदनफीका बुखार वगैरे पैदा होता है, इस उपरांत मट्टीके मिले खुराक खाणेसें पांडुरोग होता है, वहोत मसालेदार खुराक खाणेसें यकृत् कलेजा याने लीवर विगडता है, और वहोत उपवास करणेसें शूल वायू वगैरे रोग पैदा होकर शरीरकूं निर्वल करता है, (४)(कसरत) पहली लिखे मुजव कसरतके नियमानु सार शक्ति मुजव कसरतके याने महनतके करणेसें फायदा है, वहोत महनत या आलसु वण वैठे रहणेसें वहोत रोग होता है, वहोत खेचलसें बुखार अजीर्ण उरुस्तंभ (याने नीचेका तंग रह जाणा) श्वास वगैरे रोग होणा संभव है, अल्प श्रम (याने आलसुवणणेसें) अजीर्ण मंदाग्नि मेदवायु अशक्ति वगैरे रोग होता है, भोजनकर कसरत करणेसें कलेजेकूं हरकत पहुंचती है, भारीअनाज खाकर कसरत करणेसें आमवातका याने सांधोंमे दरदका रोग होता है, कसरत २ तरेकी हे, शरीरकी १ और २ मनकी (१) शरीरकी कसरत हदसे जादा खेचल करणेसें हृदयमें धचका धडधडाट नसोंमें खून वहोत जलदी फिरता है, श्वासोश्वास वहोत जोरसे चलता है, उससें मगज तथा फेफसा वगैरे जरूरीके भागोंपर वहोत दवाव होणेसें उनोंका रोग होता है, वहोत खेचलसें भमळ आती है, कानोंमें अवाज होती है, आंखोंमें अंधेरी आती है, भूख मारे जाती है, अजीर्ण होता है, नींद नहीं आती वेचैनी होती है (२) मनकी कसरत शक्ति उपरांत खेचल देणेसें अदमीके मगजमें गुस्सा भरजाणेसें वेहोस हो जाता है वाजे वखत मरभी जाता है, वहोत खेचल करणेसें याने चिंता फिकरसें अंग तवाये जाता हे शरीरमें निवलाई घर करती है वहुत पढणे वांचणेसें वहोत विचारसें फेर मनपर वहोत दवाव करणेसें कामला अजीर्ण वादी पागलपणा वगैरे रोग पैदा होता है स्त्रीयोंके योग्य कसरत नहीं मिलणेसें उनोंका शरीर फीका नाताकत और वेमार रहता है गरीव लोकोंसें पइसेवाले ऐसआरामवाले लोकोंके घरकी औरतें भागसभागी सुखी होती है जो औरतें हमेस वैठी रहती है उनोका हाथ पांव ठंढा चहराफीका शरीर तवाया भया दुवला अथवा वादीसें फूलाभया नाडीनिर्वल पेटकाफूलणा वदहजमी छातीमेंजलण खट्टी डकार हाथ पांवमेंकांपणी तथा चसका हिस्टीरियाका तरे २ का दुखदाई रोग और ऋतू धर्मसंवधी केइ तरेकी वेमारी इत्यादिक रोग जो स्त्रियें अंगकूं पूरी कसरत नहीं देती है उनोंके होता है (नींद) चहिये जिससें जादा देर नींद लेणेसें खून वरावर नहीं फिरता है तव शरीरमें चरवीका भाग जमा होता है पेटकी दूंद वाहिर निकलती है इसकूं मेदवायु कहते हैं कफका जोर होता है उससे कफके केइयक रोग होणा संभव होता है और चहिये जिससें थोडी नींद लेणेसें शूल उरुस्तंभ रोग होताहे दिनकेसोणेसें कफ घटता है, कपडे जेसें शरीरकी हिफाजत करता है तेसें योग्य रीतसें ऋतु मुजव तासीर

(९) पूरा खुराक नहीं खाणेसें क्षय निवलाई(चेहरा) वदनफीका बुखार वगैरे पैदा होता है, इस उपरांत मट्टीके मिले खुराक खाणेसें पांडुरोग होता है, वहोत मसालेदार खुराक खाणेसें यकृत् कलेजा याने लीवर विगडता है, और वहोत उपवास करणेसें शूल वायू वगैरे रोग पैदा होकर शरीरकूं निर्बल करता है, (४)(कसरत) पहली लिखे मुजव कसरतके नियमानु सार शक्ति मुजव कसरतके याने महनतके करणेसें फायदा है, वहोत सहनत या आलसु वण वैठे रहणेसें वहोत रोग होता है, वहोत खेचलसें बुखार अजीर्ण उरुस्तंभ (याने नीचेका तंग रह जाणा) श्वास वगैरे रोग होणा संभव है, अल्प श्रम (याने आलसुवणणेसें) अजीर्ण मंदाग्नि मेदवायु अशक्ति वगैरे रोग होता है, भोजनकर कसरत करणेसें कलेजेकूं हरकत पहुंचती है, भारीअनाज खाकर कसरत करणेसें आमवातका याने सांधोंमे दरदका रोग होता है, कसरत २ तरेकी हे, शरीरकी १ और २ मनकी (१) शरीरकी कसरत हदसे जादा खेचल करणेसें हृदयमें धवका धडधडाट नसोंमें खून वहोत जलदी फिरता है, श्वासोश्वास वहोत जोरसे चलता है, उससें मगज तथा फेफसा वगैरे जरूरीके भागोंपर वहोत दवाव होणेसें उनोंका रोग होता है, वहोत खेचलसें भमल आती है, कानोंमें अवाज होती है, आंखोंमें अंधेरी आती है, भूख मारे जाती है, अजीर्ण होता है, नींद नहीं आती वेचैनी होती है (२) मनकी कसरत शक्ति उपरांत खेचल देणेसें अदमीके मगजमें जुस्सा भरजाणेसें बेहोस हो जाता है वाजे वखत मरभी जाता है, वहोत खेचल करणेसें याने चिंता फिकरसें अंग तवाये जाता है शरीरमें निवलाई घर करती है वहुत पढणे वांचणेसें वहोत विचारसें फेर मनपर वहोत दवाव करणेसें कामला अजीर्ण वादी पागलपणा वगैरे रोग पैदा होता है स्त्रीयोंके योग्य कसरत नहीं मिलणेसें उनोंका शरीर फीका नाताकत और वेमार रहता है गरीव लोकोसें पइसेवाले ऐसआरामवाले लोकोंके घरकी औरतें भागसभागी सुखी होती है जो औरतें हमेस वैठी रहती है उनोका हाथ पांव ठंढा चहराफीका शरीर तवाया भया दुवला अथवा वादीसें फूलाभया नाडीनिर्वल पेटकाफूलणा वदहजमी छातीमेंजलण खट्टी डकार हाथ पांवमेंकांपणी तथा चसका हिस्टीरियाका तरे २ का दुखदाई रोग और ऋतू धर्मसंबंधी केइ तरेकी वेमारी इत्यादिक रोग जो स्त्रियें अंगकूं पूरी कसरत नहीं देती है उनोंके होता है (नींद) चहिये जिससें जादा देर नींद लेणेसें खून वरावर नहीं फिरता है तव शरीरमें चरवीका भाग जमा होता है पेटकी दूंद वाहिर निकलती है इसकूं मेदवायु कहते हैं कफका जोर होता है उससे कफके केइयक रोग होणा संभव होता है और चहिये जिससें थोडी नींद लेणेसें शूल उरुस्तंभ रोग होताहे दिनकेसोणेसें कफ वढता है, कपडे जेसें शरीरकी हिफाजत करता है तैसें योग्य रीतसें ऋतु मुजव तासी

बुद्धिकूं बिगाडता है, ताडी (सींधी) पेसावके गुडदेका रोग मंदाग्नि आफरा दस्त वगेरे रोग करती है, बुद्धिकूं भ्रष्ट करती है, अफीमसें सुस्ती अक्कलका घटणा दिवानापणा पैदा होता है, ज्यादा क्या लिखें शरीर अफीमसें बिलकुल बरबाद होजाता है, एक दूध इसका दोस्त है, बदन माने तो तईयार कर देता है, भांग बुद्धि तथा हूसियारीका नाश करती है, अदमीपणा मिटकर पशूकी तरे मुर्खताई और खुराक होती है, यादशक्ति घट जाती है, विचार शक्तिनहीं रहती चक्कर आताहै मनखराब होताहै ऊमर घटजाती है (तमाखू) तमाखू चावणेसें पाचनशक्ति मंद पडती है, बदहजमी रहती है, पहले तो हुसियारी लेकिन्पीछे सुस्ती आतीहे हाथपैर ढीले होतेहै मनकी चंचलता तथा हुसियारी कम होजाती है, विचारशक्ति कम होजाती है, जादा खानेमें आवे तो जहरका असरकर जीव जान लेती है, तमाखूं पीणेसें छातीमें दाह श्वास तथा कफका रोग पैदा होता है, तमाखु सुंघनेसे गंदकी होती है, फेर तरे २ के रोग होते है, (चाकाफी) इसकाभी लोकोकूं विसन पड जाता है, इसमेंभी थोडा२ नसा होता है, लूखेसूके कम खुराक खानेवाले गरीब लोकोको बहोत नुकशांन करती है, चाकाफीसें मगज तथा उसके तंतु नाताकत हो जाते हैं, (१०) विषयोग, खाने पीनेमे जहरी अभक्ष वस्तु आजावे या एकसें दुसरा पदार्थ विरुद्ध खानेमें सामल आजावै तब वो जहर जितना नुकशांन बदनमें करती है, सो पहले लिखा है, फेर तरे २ के जहर पेटमें जाकर नुकशांन करता है, जहरी हवासें बुखार पांडू मरोडा वगेरे रोग होता है, सीसाके तांबेके पेटमें जाणेसें चूंक होती है, बछनाग पेटमें जानेसें मूर्छा तथा दाह होती है, सोमल तथा रसकपूरसें दस्तके बंध खुल जाते है, ये सबतरेके जहर पेटमें जाकर नुकशांन करता है. (११) रसविगाड, दस्त पेसाब पसीना थूक पित्त इत्यादि पदार्थ खूनमेंसें पैदा होता है, उन सबोंकों शरीरका रस एसा नांम कहणेमें आता है, ये रस चहिये जिससें जादा बढकर शरीरमें रहै, तो जादा नुकशांन करता है, पसीना नहीं निकले तोभी नुकशांन करता है, और जादा निकलें तोभी नुकशांन करताहै, इसीतरेही दस्त वगेरे समझणा. पेसाब कम होय तो पेसाबके रस्तेसें जो नुकशानकारक अंस बाहर निकलणा चहिये वो निकल नहीं सकता और खूनमें जमा होता है, जो पेसाब होणा बिलकुल बंध होजाय तो प्राणी मर जाता है, हेजामरीमें पेसाब रुकके मृत्यु होती है, बहोत पसीना बहोत दिनोंका अतिसार मस्सा तथा नाकमेंसें जाता भया खून तैसें औरतोंका प्रदर इत्यादि बहते भये प्रवाहकूं एकदम बंध करनेसें नुकशांन होता है, पित्त बधनेसें नुकशांन होता है, पित्त बधणेसें पित्तके रोग होते हैं, और खटास बधणेसें सांधोमें दरद होजाता है, (१२)जीवजंतु, कृमि अथवा जंतुवोंसें कंठमाल वातरक्त उलटी मृगी अतिसार चमडीके अनेक रोग पैदा होते हैं. (१३) चेप, चेपी हवासें अथवा

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके विगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें वहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता हे, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूंचकर गरमएकांतदवा धसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू वढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तवही वायु मिटती है, इसवास्ते मगजकूं पुष्ट करे एसी तरावटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका वदन वहोत जुलावके लायक नही होय, उसकुं वहोत जुलाव देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और वहोतसी वखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें स्वतंत्रपणे होता है, तैसें दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें वहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसें प्रतिकूल वहोत गरम या वहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि विगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद् पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नही करनेमें आवे तव इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे वहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा-हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जव वदनमें जड जाता है, तो वडे २ भयंकर रोगोंका कारण वण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोष वढकर खांसी होती है, कफ वढता है, उसकरके फेफसेमें हरकत पहुंच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण. अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों वहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहांतक वदनमें ताकत रहती है, उहांतक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकूं एसा साधारणभी अजीर्ण वडी वेमारीका कारण वण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकूं बुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नही करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तव हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्या नामसें प्रसिद्ध है, प्राये अजीर्णसें वहोतसे

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके विगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें वहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता हे, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूंचकर गरमएकांतदवा धसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू चढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तवही वायु मिटती है, इसवास्ते मगजकूं पुष्ट करे एसी तरावटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका वदन वहोत जुलावके लायक नही होय, उसकुं वहोत जुलाव देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और वहोतसी वखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें स्वतंत्रपणे होता है, तैसें दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें वहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसें प्रतिकूल वहोत गरम या वहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि विगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नही करनेमें आवे तव इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे वहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा-हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जव वदनमें जड जाता है, तो वडे २ भयंकर रोगोंका कारण वण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोप वढकर खांसी होती है, कफ वढता है, उसकरके फेफसेमें हरकत पहुंच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण. अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों वहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहांतक वदनमें ताकत रहती है, उहांतक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकूं एसा साधारणभी अजीर्ण वडी वेमारीका कारण वण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकूं वुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नहीं करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तव हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्पा नामसें प्रसिद्ध है, प्राये अजीर्णसें वहोतसे

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके बिगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें बहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता है, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूंचकर गरमएकांतदवा धसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू बढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तबही वायु मिटती है, इसवास्ते मगजकूं पुष्ट करे एसी तरावटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका बदन बहोत जुलावके लायक नही होय, उसकुं बहोत जुलाब देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और बहोतसी वखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें स्वतंत्रपणे होता है, तैसें दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें बहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसें प्रतिकूल बहोत गरम या बहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि बिगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नहीं करनेमें आवे तब इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे बहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा-हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जब बदनमें जड जाता है, तो बडे २ भयंकर रोगोंका कारण बण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोष बढकर खांसी होती है, कफ बढता है, उसकरके फेफसेमें हरकत पहुंच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण. अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों बहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहांतक बदनमें ताकत रहती है. उहांतक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकूं एसा साधारणभी अजीर्ण बडी बेमारीका कारण बण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकूं बुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नहीं करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तब हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्या नामसे प्रसिद्ध है, प्राये अजीर्णसें बहोतसे

दिलाती है रोगी मर जाता है, फेर धातूके बिगाडसें गरमीका नाश होता है, उपदंश फिरंग गरमी सुजाकसें अथवा डर चिंता फिकरसें बहोत अदम्योंका मगज फिर जाता है, विचार वायु हो जाती है, पागलतक होजाता हे, ऐसे रोगोपर अज्ञानलोक अज्ञानवैद्य आंख मूंचकर गरमएकांतदवा धसोडे जाते है, सो घटाना तो दूर रहा उलटी वायू बढ जाती है, क्योंके ऐसे रोग मूल मगजके खाली पडनेसें धातूके नास होनेसें होता है, इसवास्ते मगज और धातू सुधरे तबही वायु मिटती है, इसवास्ते मगजकूं पुष्ट करे एसी तराबटवाली और शीतल इलाज करणा चाहिये जिसका वदन बहोत जुलावके लायक नही होय, उसकुं बहोत जुलाब देनेसें दस्त मरोडेका रोग होता है, आम तथा खून तूट पडता है, और बहोतसी बखत आंतरे काम नहीं देकर अशक्त होकर मरजाता है.

एक रोग दुसरे रोगका कारण.

कितनेक रोग जैसें आहार विहारके विरुद्ध वरतावसें स्वतंत्रपणे होता है, तैसें दुसरे रोगमेंसेंभी रोग पैदा होता है, जैसें बहोत खानेसें अथवा अपनी तासीरसें प्रतिकूल बहोत गरम या बहोत ठंढा पदार्थ खानेसें जठराग्नि बिगडती है, तैसें जादा विषय सेवणसेभी शरीरका सत कम होकर पाचनशक्ति मंद पडती है, इस मंदाग्निके कारणोका इलाज नहीं करनेमें आवे तब इस मंदाग्निके अंदरसें अनुक्रमसे बहोत रोग पैदा होते है, जैसें (१) मंदाग्निसें अजीर्ण होता है, (२) अजीर्णसें दस्त होता है, (३) दस्तसें मरोडा होता है, (४) मरोडेसें संग्रहणी होजाती है, (५) संग्रहणीसें मस्सा-हरस होजाता है, (६) हरससें पेटका दरद आफरा गोलेका रोग होजाता है, (२) शरद गरमी जुखाम ये छोटासा एक मरज है, तीनचार दिन रहकर ये आपसेंही मिट जाता है, लेकिन् किसी २ वखत जब वदनमें जड जाता है, तो बडे २ भयंकर रोगोंका कारण बण जाता है, शरीरमें खाणे पीणेकी हिफाजत नहीं रहणेसें दोष बढकर खांसी होती है, कफ बढता है, उसकरके फेफसेमें हरकत पहुंच जुलमगार क्षयरोगके निशाण प्रगट होते हैं, पीनस रोगभी जुखामसेंही होता है, (३) अजीर्ण. अजीर्णभी एसा साधारण मरज है, अदम्योंकों बहोतसी वखत अजीर्ण होता है, वो अपणे आपही सहज साधारण उपायसें मिट जाता है, जहांतक वदनमें ताकत रहती है, उहांतक तो जादा हरकत मालम देती नहीं, लेकिन् नाताकत अदमीकूं एसा साधारणभी अजीर्ण बडी बेमारीका कारण बण जाता है, (१) अजीर्णसें मरोडा होता है, (२) मरोडेसें संग्रहणी जैसा असाध्य रोग होता है और (३) हेजेमरीकूं बुलानेवालाभी अजीर्णही है, अजीर्णका इलाज नहीं करनेसें अजीर्ण जीर्णरूप पकडता है, तब हमेसाकेवास्ते घरकरके रह जाता है, ये रोग अंग्रेजीमें डिस्पेपस्पा नामसें प्रसिद्ध है, प्राये अजीर्णसें बहोतसे

आक्षेपवायु १ शरीरकी नसोंमे हवा भरकर वदनकूं इधरउधर फेंकती है.
हनुस्तंभ २ जबाडी वादीसें अर्थात् दाढी जकडके टेढी होय सो.
उरुस्तंभ ३ जांघ वादीसें अकड जाकर चलणेकी शक्ति कम करे सो.
शिरोग्रह ४ शिरकी नसोंमें वादी भरकर शिरकूं जकडा देवे और पीडा करे.
बाह्यायाम ५ पीठकी रगोमें वादी भरकर धनुषकीतरे टेढा वांका झुका देवे.
अभ्यंतरायाम ६ छातीके तरफसें वदनकबाण जैसा वांका टेढा होजावे.
पार्श्वशूल ७ पसवाडोंकी पांसलियोंमें चसके चले.
कटिग्रह ८ कमरकूं वादी पकडके जकड कर देवे.
दंडापतानक ९ लकडीकी तरे वदनकूं सजड जकडा देवे.
खल्ली १० पांव हाथ जांघ गोठण पीडीमें वायु भर खाली चढाती है.
जिह्वास्तंभ ११ जीभकी नसोंकूं वादी पकडके बोलनेकी गति बंध करै.
अर्दित १२ मुंका आधा भाग टेढाकर देता है, जीभका लोचा बंधता है करडा होता
पक्षाघात १३ आधे शरीरकी नशोंकूं सोषणकर गतीकू अटकाता है.
कोष्टुसीर्षक १४ गोडोंमें वादी खूनकूं पकडके कठन सूजन पैदा करती है.
मन्यास्तंभ १५ गरदनकी नसोंमें वायु कफकूं पकडके गरदन जकडाती है.
पंगु १६ कम्मर तथा जांघोमें वादी घुसके दोनुं पगोकूं निकम्मा कर देती है.
कलायखंज १७ चले तो शरीरमें कांपणी होकर पांव आंढेटेढे पडते हैं.
तूणी १८ पक्काशयमें चिणक पैदा होकर गुदा और उपस्थमें जाती है.
प्रतितूणी १९ तूणीकी पीडा नीचे ऊत्तर पीछी नाभीकी तरफ जाती है.
खज २० पांगला जैसा लक्षण लेकिन् एक पांवमें होता है लंगडा कहते है.
पादहर्ष २१ पांवमें खाली झणझणाट होय पांव सून्य सो जाता है.
गृध्रसी २२ कमरके नीचे जांघ और पांव वगेरे जकड जाते हैं.
विश्वाची २३ हथेली तथा अंगलियां जकड जाय हाथसें काम नही होय.
अबवाहुक २४ हाथकी नाडी जकडकर सब हाथ दुखते रहता है.
अपतानक २५ वादी हृदयमें जाकर दृष्टिकूं स्तब्ध करे ज्ञानभानका नाश करे औ कंठमेंसें विलक्षण तरेका आवाज निकले वो वायु हृदयसें अलग हटे तब होस आ ऐसें हिस्टीरीयाका जैसा चिन्ह वेर २ होय ओर मिट जाय सो अपतानक वा कहाती है.
व्रणायाम २६ चोट अथवा जखमसें भये व्रण घावमें वादी दरद करे.
वातकंटक २७ पांवमें तथा गिरिये घूंटणमें चलते दरद होय सो.
अपतंत्रक २८ पांवमें तथा शिरमें दर्द होय मोह होय गिरपडे वदन धनुपकबाणकी

स्वेदनाश ५९ वादी पसीनोके छेदोंकों रोक पसीना बंध करे सो.
दुर्बलत्व ६० वायुके कोपसें वदनकी ताकत जाती रहे सो.
बलक्षय ६१ वादीके कोपसें ताकतका बिलकुल नाश हो जाय सो.
शुक्रप्रवृत्ति ६२ वादीके कोपसें शुक्रवीर्य वहोत गिरा करे सो.
शुक्रकार्श्य ६३ वायु धातुमें मिलके धातूकूं सुकाय डाले सो.
शुक्रनाश ६४ वायुसें धातूका बिलकुल नास होजाय सो.
अनवस्थितचित्त ६५ वायु मगजमे जाकर चित्तकूं अस्थिर करे सो.
काठिन्य ६६ वायूके कोपसें वदन करडा होजाय सो.
विरसास्यता ६७ वायूके कोपसें मूंमें रसका स्वाद बिलकुल नहीं रहता.
कषायवक्रता ६८ वादीके कोपसें मूंका स्वाद कषायला रहे सो.
आध्मान ६९ वायुके कोपसें सूंटी धरणके नीचे आफरा चढे सो.
प्रत्याध्मान ७० हृदयके नीचे और सूंटीके उपर आफरा चढे सो.
शीतता ७१ वायूसें वदन ठंढा पड जाय सो.
रोमहर्ष ७२ वादीके कोपसे वदनके रूंखडे होय सो.
भीरुत्व ७३ वायुके कोपसे डर लगता रहे सो.
तोद ७४ वदनमें सूइयां चुभावे एसा लगे सो.
कडू ७५ वदनमें खाज आवे वादीसें सो.
रसाज्ञता ७६ रसोंका स्वाद मालम नहीं देवे सो.
शब्दाज्ञता ७७ कानोंसें सुणीजे नहीं सो वायु.
प्रसुप्ति ७८ स्पर्शकी खबर नहीं पडे सो वादी.
गंधाज्ञता ७९ गंधका ज्ञान खसबोकी मालम नहीं पडे सो.
दृष्टिक्षय ८० निजर (दृष्टिमें) वायु प्रवेशकर देखणेकी शक्ति कम करे.

वायूके कोपसें वदनमे इसमेके एक अथवा अनेक लक्षण दिखते है, इसपरसे निश्चय होसकता है, ये रोग वादीके है, खून और वादीका निकट संबंध है, वादी खूनमें मिलके केतनेक खूनके विकार पैदा करती है, ऐसे रोगोंमें खूनकी शुद्धि और वायूकी शांति करे एसा इलाज करणा.

पित्तप्रकोपका कारण.

वहोत गरम तीखा खट्टा लूखा दाहकारी चीजोंके खानपानसे दारूवगेरे नसोंका विसन उपवासवहोतकरणा क्रोध अतिमैथुन वहोतशोक वहोततप धूप अग्नि वगेरे इत्यादि आहार विहारसें पित्तका कोप होता है.

और भेंसका दूध वगेरे ठंढा और भारी पदार्थोंके वहोत खानेसे दिनकीनींद अजीर्णमें भोजन करना महनतका काम करे विगर वैठे रहणा ठंढकालेकी मोसममें वहोत ठंढा पाणी पीणा वसंतऋतुमें नया अनाज खाणा इत्यादि आहार विहारसें वदनमें कफ वढकर वहोतसे रोग पैदा होते हैं,

कफके २० रोग.

तंद्रा १ आंखमें मींट लगे. अतिनिद्रता २ वहोत नींद आवै.
गौरव ३ शरीर भारी होय. मुखमाधुर्य ४ मूं मीठा २ लगे.
मुखलेप ५ मूंसें चिकणास होय. प्रशेक ६ मूंमेसे लाल गिरे.
श्वेतावलोकन ७ सब वस्तु सुपेद दीखै. श्वेतविट्कत्व ८ दस्त सुपेद रंगका उतरे.
श्वेतमूत्रता ९ पैसाव सुपेद उतरे. श्वेतांगवर्णता १० वदनका रंग सुपेद होय.
उष्णेच्छा ११ गरमागरम खाणेकी इच्छा. तिक्तकामता १२ कडवी चीजकी इच्छा.
मलाधिक्य १३ दस्त जादा होय उतरे, शुक्रवाहुल्य १४ वीर्य बहुत संचय,
वहुमूत्रता १५ पेसाव वहोत आवै. आलस्य १६ आलस वहोत आवै.
मंदवुद्धित्व १७ वुद्धि मंद होय. तृप्ति १८ थोडा खानेसें तृप्ति होजावै.
घर्घरवाक्यता १९ अवाज खोखरा वोले. अचेतन्य २० चेतना भूल जावै.

वदनमें कफका कोप होणेसे इनोंमेंका एकरोग अथवा जादा हो जावे सर्व वस्तु सुपेद दीखे दस्त सुपेदंरगका होय इसका मतलव एसा है, तदन सुपेद रंगका दीखे एसा नहीं है, लेकिन् तनदुरस्ती हालतमें जेसारंग दिखणा चहिये उसकरके जादा सुपेद दिखाइ देवे.

किरण ३ तीसरी.

रोगपरीक्षाके प्रकार.

रोगकी परिक्षाके वहोत प्रकार है जेसें तीनतो निमित्त शास्त्रसे, रोगीकूं स्वप्न आवे तथा शकुनपरीक्षा वैद्यकूं दूत वुलाणे जावे उसकूं गरम सुकन मकानसें निकलते होणा सौम्य ठंढा होयतो अच्छा नही वैद्यके पास पोहचे वाद वैद्यस्वरोदय देखे सो भरीदिसमें दूत वैठके या खडा रहके प्रश्नकरे तो सजीवदिस समझै, अग्नितत्व उस वखत वैद्यके चलता होय तो पित्त गरमीका रोग समझे रोगीके, वायु वहता होयतो वादीका इत्यादि तत्वोका विचारकरे जो खाली दिसमें वैठके या सुखमना नाडी चलती स्वरोदयमें होय तो रोगी मरे, वैद्यकुं जस आकाशतत्वमें नहीं आवे इत्यादि विवरा देखणा होय तो हमारी छपाई सत्ज्ञान चिंतामणी स्वरोदय ग्रंथ देखणा वैद्यके चंद्रश्वर चलता होय उसमें फेर प्रथ्वी जल तत्वचले उस वखत रोगीके घर जावै निश्चेजसपावे दवादेतीवखत वैद्यके सूर्यश्वर होणा इसतरेफेर वैद्यकुं मकानसें निकलते ठंढे सौम्यशकुन होयतो अच्छा, गरमश-

मृत अच्छा नहीं हुआ है इत्यादि १ उत्तम २ और मध्यम ३ के तीनोंमें विचार [illegible]
हुये निदानज्ञानमें रोगी विषमा १ या वातादिक प्रकोप २ का ज्ञान होजाय
३ इत्यादिक वैद्य जान सकता है लेकिन इस ग्रन्थके सबब इतो नहीं लिखा
आगंतनिमित्त यथाये जानेकूं काम पडे सो काम है सब रोगपरिक्षाओंमें [illegible]
मुख्य है उसका विचार यहिंपे इसी [illegible] १ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible]
परीक्षा ४ प्रश्नपरिक्षा १) प्रकृतीपरिक्षा सो रोगकी प्रकृति वायु प्रधान है या पित्तप्र[illegible]
है या कफप्रधान है के द्वंद्व प्रधान है इस बातका निर्णय करलेवे [illegible]
लेवें आंगा २ स्पर्शपरिक्षा रोगीके शरीरका उष्ण २ पनेके नापके स्पर्शसें [illegible]
दुसरे साधनोंमें तपासकर देखनेकी परिक्षाका वर्णन करणेमें नाडिका स्पर्शपरिक्षा दा[illegible]
या थर्मामीटर (उष्णता मापक नली) में और स्टेथास्कोप (हृदय तथा [illegible]
क्रिया जाननेकी भुंगली) वगैर दुसरे साधनोंमें भी देखतेहैं, नाडी हृदय [illegible]
तथा चमडी ये स्पर्शपरिक्षाका अंग है ३ दर्शनपरिक्षा रोगीकावदन तथा उसके [illegible]
अवयव फक्त नजरमें देखके चमडीकी रंगका विनाश एक निगाह डालके इसपरिक्षा[illegible]
करीब दाखल आजाती है, रूप वर्तनका नजा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
मूत्र वगैरका रंग तथा उनोंके दुसरे चिन्होंमें रोगकी परिक्षा होसकती है ४ प्रश्न[illegible]
रीक्षा, रोगीकी हकीगतमें तथा पुछनेमें जो जो बातें जानकी होय उनकूं इस प्रश्न
परीक्षानाम दिया है.

प्रकृतीपरिक्षा.

आर्य वैद्यकशास्त्रका सिद्धांतसें वात पित्त कफ यही आधार रक्खा गया है नाडीपरि-
क्षामें भीयेही तीन है इसवास्ते इन तीनोंका विचार ज्यादी करणेमें आता है, नाडी वगैरे
परिक्षाके विषयपर आनें पहली एसा निश्चय करणा चाहिये के हरेक दोषवाली प्रकृ-
तीका स्वरूप कैसा होता है, सब आदम्योंकों अपणी २ नाडीमें वाकब होना जरूर है
अपणी प्रकृती शांत है, के तामसी है, ये बात तो सब आदमी आपभी जाणते हैं, औ
उनके सहवासी यार दोस्तभी जाणते हैं, वैद्यक शास्त्रके नियमानुसार वायकी पित्तकी य
कफकी अपणी प्रकृती है, या खूनकी है, या मिश्र मिली भई है, ये जाणे बाद खानपान
के पदार्थोंका सामान्य गुण दोष धर्म जब अछीतरे जाण लेता है, तो अपणी प्रकृतीकूं
अछीतरे तनदुरस्त रख सकता है, इलाजभी रोगोंका कर सकता है, इन तीनों प्रकृतीकी
परिक्षामें बहोतसी परिक्षा सामान्य तोर आजाती है, सब आदम्योंमें वाय पित्त कफ और
खून होताही है, लेकिन बराबर सब आदम्योंका देखणेमें नही आता है, इन तीनोंमेंसे
किसीके बदनमें एक प्रधान किसीके बदनमें दो, आदमीकूं उसी प्रकृतीसें पहचानते हैं, एक
चीज एक प्रकृतीवालेकूं माफगत आती है, दुसरेकूं नही आती इसका मूल मतलब इतनाही

है, के अदम्योंकी प्रकृती जूदी २ होती है, इसतरे वस्तुओंका स्वभावभी जूदा२ होता है, जब अदमी आप अपणी प्रकृतीकूं नहीं जाण सकता तब खानपानकी वस्तु प्रकृतीकी परिक्षा करणेमें मदतगार होसकती है, जेसें दवासें रोगकी परीक्षा होती है, जिस वखत दुसरी तरे रोगकी परीक्षा नहीं होसकती तब चतुर वैद्य डाकतर ठंडा या गरम इलाजसेती रोगका कितनाएक निर्णयकर सकते है, तेसें खानपानके पदार्थोसें प्रकृतीकी परिक्षा होसकती है, जेसें गरम वस्तु माफगत नहीं आवे तो समझणा तासीर पित्तकी है, ठंढी वस्तु माफगत नहीं आवै तो प्रकृती वायूकी या कफकी है, प्रकृती मुख्य चारतरेकी है, वातप्रधान प्रकृती १ पित्तप्रधान प्रकृती २ कफप्रधान प्रकृती ३ रक्तप्रधान प्रकृती ४ इन चारोंका सेलभेल होकर लक्षण होय सो मिश्रप्रकृती जांणनी अब इन चारोंका विवरण लिखते हैं.

वातप्रधानतासीरके अदमी.

शरीरके अवयव बडे लेकिन् विवस्था विगरके छोटे बडे बेडोल शिरसोशरीरसें छोटा या बडा. निलाड मूंसें छोटा, बदनसूका और लूखा बदनका रंग फीका झांखा और खून विगरका आंखगहरी काले रंगकी बाल जाडे काले और छोटे चमडीतेजविगरकी लूखी लेकिन् स्पर्शकाज्ञान जलदी करणेवाली, मांसके लोचे करडे, लेकिन् विखरे भये, चाल जलदी चंचल और कांपती, खूनका फिरणा बे प्रमाण, इसवास्ते कोईका शिर गरम तो हाथ पैर ठंढा, और कोइका शिर ठंडातो हाथ पैर गरम, काम करणेमें प्रबल लेकिन् मन चंचल अस्थिर, कामक्रोधादि वैरियोंकों जीतणेमें अशक्त, प्रीति अप्रीति तथा डर जलदी पैदा होय, न्याय अन्यायका विचार करणेमें सूक्ष्म दृष्टि होती है, लेकिन् अपणे इनसाफी विचारकूं अपणे अमलमें लाणा उसकुं मुसकल होता है, सब जिंदगी अस्थिर चंचल वृत्तिसें गुजारता है, सब कामोंमें जलदी करता है, उसके शरीरमें बेमारी बहोत जलदी आती है, उसका मिटणा भी मुसकिल बेमारीसह भी नहीं सकता कष्ट चोगुणा दिखा देता है दुसरी २ प्रकृतीवालेका शरीर और मन ज्यूं ज्यूं अवस्था आती जाती है, त्यों त्यों शिथिल और मंद पडता है, लेकिन् वायुप्रधानप्रकृतिवालेका उलटा ऊमर बढणेपर मन करडा और मजबूत होता जाता है, इस प्रकृतीवाले अदमीके अजीर्ण बंधकुष्ट दस्त पेकटकारोग शिरकादर्द बसका वातरक्त फेफसेकावरम क्षय उन्माद वगेरे रोगहोणा जादेसंभव है, फेर इसप्रकृतीवाले अदमीकी ऊमर ताकत धन थोडा होता है, इसप्रकृतीके अदमीकूं तीखा चमचमा गरमागरम तथा खारा पदार्थोपर जादा प्रीति होती है, खट्टा मीठा ठंडा पदार्थोपर अप्रीति अरुचि होती है.

२ पित्तप्रधान प्रकृतीके अदमी.

शरीरके अंग उपांग खपसूरत अछाबंधा, मांसके लोचे ढीले होते हैं, बदनका रंग पीलास-

लिये वायकोंसे करणे, गरमी सूरत होय, ऐसे बदनपर थोडी २ फुनसियां पडती है, भूख प्यास जल्दी लगे, धूपमें फिरनेसे वा गरमीमें दुःख होवे, बुद्धिमान्दी होय पांव पैगम तथा दस्तका रंग पीला होय, मानसिक उत्साही अच्छ कौशल करनेवाला महनेकी शक्ति ज्यादा, उनकी ताकत ज्यादा हुसर दगर लगा जान [illegible] होता है, इस प्रकृति वालेके शरीरमें दिन हुए थोडे रोग होना यादि संभव है, मीठा ठंडी चीज ऊपर ज्यादा प्रीति होती है, तीखा और चरपरा पर कम रुचि होती है.

३ कफप्रधान प्रकृतीके आदमी.

शरीरसुंदरता भराहुआ मजबूत भववरगसे बदनसुमारसे पुष्टहीसीना बालसुंवाले, [illegible] आंखें चिकनी सफेद तथा सुन्दर तरुणी, सीना पुष्ट, स्वभाव गंभीर, चाल तथा नींद ज्यादा, आहार थोडा, विचारशक्ति, धीरज, बोलनेकी शक्ति थोडी धारनशक्ति और विवेकबुद्धि ज्यादा, न्यायपूर्वक विचार, व्यवहार अच्छा, शरीरकी शक्तीमें मनकी शक्ति ज्यादा होती है, शरीरकी चाल मंद, लेकिन मजबूत विशेषकरके [illegible] और धनवान लंबी उमरवाला होता है, सामान्य कारणमें रोग होजाता है. कफके साथ रसकी वृद्धि होती है, शरीरभारी मेदवाला होता है, उसकाके भगति पडती है, बदन पसीन ज्यादा होता है, पेटकी हुई लटक पडती है, हाथ पदा मोटी पैर और जाड होते हैं, मांसके लोथे ढीले होते हैं, चहरा चिकना और फीका होता है, शरीर जैसा ज्यादा मोटा दिखता है, वैसी अंदर ताकत नहीं रहती, निर्बलता मोटा जडबुद्धि हाथी जैसे पांव वगैरे, इस प्रकृतीके मुख्य रोग है, तीखा खारा पदार्थोंपर ज्यादा प्रीति मीठे पदार्थोंपर कम रुचि होती है.

४ खूनप्रधान धातुके आदमी.

वात पित्त कफ ये तीन प्रकृतिसिवाय जिस आदमीमें खून ज्यादा होता है. उसके ये लक्षण है, शरीरमें सिरछोटा, मूंछपटा नोखूणा, निलाडाडा और किनोंका विलाडीमें ढलता, तथा छाती चौडी गंभीर और लंबी होती है, खडे रहणेसे मूंची पेटकी मर्यादासे संग मिल जाती है, बाहरया अंदर दिखती नही, चरबी थोडी, बदनपुष्ट खूनमेंभराभरा खपसूरत बालनरम पतले और आंटेदार चमडी करडी उसमेंमें मांसके लोथे दिखाई देते नाडीपूर्ण और ताकतवर दांतमजबूत पीलास पडते भये, पीनेकीचीजपर खुसपहोत, पाचनशक्ति प्रबल, महनत करनेकी शक्ति बहोत, मानसिक वृत्ति कोमल, बुद्धि स्वाभाविक सहनशील संतोषी लोकोंपर उपगार करनेवाला बोलणेमेंचतुर सरलभाषी हिम्मतवान खूनवालाअदमी हरदम कांममेंभी नहीं लगे रहता, और घरमें बैठके निकम्मा वखत भी नहीं गमाये चाहता, दाह, फेफसेकावरम, निजला, दाहज्वर खूनकागिरणा कलेजेकारोग, फेफसेका रोग होणा संभव है, धूप नहीं सहता, जुदी २ प्रकृतीकी पहचान

करणी मुसकिल है, बहुतोंकी मूल प्रकृती दोदो दोषोंकी मिली भई होती हैं, दोनोके लक्षण संग मिलेभये होते हैं, एक प्रकृतीके लक्षण जाणे पीछै दूसरीका जाणना सहज है, सूक्ष्म विचार अदमी जब करके देखता है, तो यहभी मालम होजाती है, के मेरी प्रकृतीमें फलाणा दोष कम हे, रोगकी परिक्षा, उसका उपाय, तथा पथ्यापथ्यका निर्णय प्रकृतीकी परिक्षा भयेबाद बण आती है, इसवास्ते वैद्य या डाकदरोने तथा सब अदम्योनें प्रकृतीकी परिक्षा हमारे लिखे ग्रंथानुसार पहली कर लेणा, रोगीकूं पूछणेसें परीक्षा वैद्य या डाकतरलोक कर सकते हैं, दोषके और प्रकृतीके कुछ संबंध है, या नहीं एसा एक जरूरीका प्रश्न है; वहोतकरके प्रकृतीमें जो दोष प्रधान होता है, वो दोषके कोपसें रोग होता है, एसा कहणेमें कुछ बाधा नहीं है, रोगीकी प्रकृती वायु प्रधान होय तो उसकूं बुखार वगेरे जो कोई रोग जतावे तो वो रोग वायूके दोष संग विशेष संबंध रखता है, एसा अनुमांनकर सकते हैं, एसाही पित्त कफादिकका समझ लेना अब स्याद्वादका दुसरा पक्ष दिखाते हैं, रोग हमेसा शरीरकी मूल प्रकृतीके अनुसार होता है, एसा एकांत निश्चय नहीं है, वहोतसी वखत एसा बणता है, रोगीकी मूल प्रकृती पित्तकी होती है, और रोगका कारण वायु होता है, प्रकृती वायूकी होती है, और रोगका कारण पित्त होता है, इसतरे वहोतसें रोग ऐसें हैं, सो प्रकृतीसें विलकुल तालूक नहीं रखते तोभी रोगीकी परिक्षा करनेमें और इलाज करनेमें रोगीकी प्रकृती तासीरका ज्ञान वहोत उपयोगी बण आता है.

२ स्पर्शपरिक्षा.

शरीरके कोईभी भागपर हाथसें अथवा दुसरे ओजारोसें दरियाप्त करणी याने शरीरमें गरमी या सरदी या खून श्वासोश्वासकी क्रिया कितने अंदाजन है, उसकूं इहां स्पर्श परिक्षा लिखा है, इस परिक्षामें (अ) नाडीपरिक्षा (व) त्वचा परिक्षा तैसें (क) थरमोमिटर अर्थात वदनकी गरमी मापनेकी नली, और स्टेथोस्कोप अर्थात छातीकी दरियाप्त करनेकी भूंगलीका समावेश होता है, स्पर्शपरिक्षाका सबसें पहले अछा साधन तो हाथ है, रोगकी परिक्षामें हाथ बहोत मदत करता है, वदन गरम है या ठंडा है, सुंहाला है, या खरखरा है, ये बात हाथसें तुरत खबर पडती है, वदनके अंदरका फलाणा भाग नरम है, पोला है, या कठण है, या अंदरके भागमें गांठ है, या सोजा है इत्यादिक नाडीकी परिक्षाभी हाथसेंई होती है, नाड देखकर वदनमें कितनी गरमी या सरदी है, जिसकी खबर हो सकती है, अनुभवी वैद्य और हकीम अपने अनुभवसें और मावरेसें वदनकी चोकस गरमी फकत नाडीपर अंगुलिया धरकर कह देता है, थरमोमिटर जितना काम करता है, लगभग इतना काम चालाक हाथ और अनुभवी अंगुलिया कर सकती है, सोधक खोजी लोकोंनें हाथका काम दुसरे साधनोंसें लेणा सरू करा है,

१४ से २१ वर्षतक	७५ सें ८५ तक
२१ से ५० वर्षतक	७० सें ७५ तक
बुढापेमें	७५ सें ८० तक

नाडी ग्यानमें समझनेवाली वातें.

हमारे शास्त्रोंमें आधुनिक ग्रंथोंमें नाडीका हिसाव पलोंपर लिखा है, उस हिसावसें इस हिसावमें थोडासा फरक है, ये हिसाव हमने जो लिखा है, सो विद्वान डाकतरोंका निश्चय किया भया हैं, वहोत प्राचीन ग्रंथोंमे नाडी परिक्षा देखणेमें नही आई ये परीक्षा पीछेसें देसी वैद्योंने बुद्धिद्वारा निकाली है, बाद यूरोपियोनें पूर्वोक्त हिसाव लगाया है, तोभी जुदी २ जाति और स्थितीकूं लेकर उसमेंभी फरक पडता है, ऊपरके कोठेमें तनदुरस्त वडे आदमीकी नाडीकी चाल एक मिनटमें ७० सें ७५ तक वताई है, लेकिन् इतनीही ऊमरकी तनदुरस्त औरतकी नाडीकी चाल धीमी होती है, पुरुषसें दसवारे चाल कम होती है २ अदमी खडा होता है, उसकरके वैठेकी चाल धीरी होती है, नींदमें इससेभी जादा धीरे चलती है, ३ फेर कसरत करते दोडते चलते खेचलका काम करते नाडीकी चाल वढ जाती है, ४ फेर नाडी दोनों हाथोंकी देखणी किसी वखत एक हाथकी धोरीनस अपणी हमेसकी जगे छोडके हाथके पीछाडीकी तरफसें अंगूठेके नीचेके सांधेके आगे जाती है, उसकरके नाडी देखणेवालेके हाथ नहीं लगती तव देखणेवाला घवराता है, लेकिन् जो वदनमें खून फिरता होगा तो उस हाथकी नाडी हाथ नहीं लगी तो दुसरे हाथकी जरूर हाथ लगेगी इसवास्ते दोनों हाथकी नाडी देखणी ५ हाथपर या हाथके पोंचेपर कोइ पट्टा या डोरी या वाजुवंध वंधाभया होय तो नाडीकी वरावर मालम नहीं पडती वांधणेसें धोरी नसमें खून वरावर आगे चल नहीं सकता इसवास्ते वंधन खोल फेर नाडी देखणी, हाथ सिर नीचे रखकर सूता होय तो हाथ निकालकर पीछे नाडी देखणी ६ डरोकड अदमी डरसें या डाकदरकूं देख डर जाता है, तव नाडी जलदी चलने लगती है, इसवास्ते ऐसे अदमीकूं दम दिलासासें दिल ठहराकर अथवा वातोंमें लगाकर फेर नाडी देखणेसें दुरस्त नाडी मालम देगी ७ नाडी अदमीकूं वैठाकर या सुलाकर देखणी, खेचल करे भयेकी, रस्ते चलके तुरत आयेभयेकी थोडी देर वैठणे देकर पीछे नाडी देखणी ८ वहोत खूनवाले अदमीकी नाडी वहोत जलदी और जोरसे चलती है, ९ फजरसें सांझकी नाडी धीमी चलती है, १० भोजन कियेवाद नाडीका जोर वढता है, तैसें सराप वा तमाखू वगेरे मादक और उत्तेजक वस्तु खाये पीछे नाडीकी चाल वढती है, इसतरे तनदुरस्त अदमियोंकी नाडीभी जुदी २ स्थितिमें और जुदी २ वखतमें फेरफार मालम पडता है, इसवास्ते वेमारोकी नाडीमें फेरफार होणा क्या ताजव है, ये नव वातोंकों ध्यानमें रखणा चाहिये

मूर्खताईकी है, डाकतर लोक नाडी देखते हैं, और उसपर कितनाक आधार रखते हैं, कितनेक तवीब नाडी परिक्षामें वहोत गहरे ऊतरते हैं, और नाडीपर वहोतसा आधार रख नाडीपरिक्षाके अनुभवसें कितनी एक वातें कहते हैं, सो मिल जाती है, देशी वैद्य नाडीके जुदे २ वेगोंकू वायकी पित्तकी कफकी इन तीनोसें मिलीभई नांम धर रखा है, इसतरेसें डाकदर जलदी धीमी भरी हलकी सखत अनिमियत अंतरिया ऐसे २ नाम दिये हैं, जुदे २ रोगमें जुदी २ नाडी चलती है, उसकी परिक्षाभी करते हैं, सो इसतरे (१ जलदी नाडी) तनदुरस्त स्थितिमें नाडीके वेगका प्रमाण आगेके कोठेमें लिखा है, तनदुरस्त अदमीकी पुखत ऊमरकी नाडीकी चाल ७५ सें ८५ तक होती है, लेकिन् बेमारीमें चोचाल वढकर १०० सें १५० तक वढजाती है, इसतरे नाडीका वेग वहोत वढता है, उसकूं जलद् नाडी कहते हैं, क्षयरोग लूलगणी और दुसरी वहोत निबलाईमें भी नाडी जलदी चलती है, झडपवाली नाडीकेसंग हृदयका धबकारा वहोत जोरसें चलता है, नाडीकी चाल हृदयके धबकारोंपर विशेष आधार रखती है, जैसें २ नाडीकी चाल जलदी २ होती जाती है, तैसे २ रोगका जोर वहोत वढते जाता है, रोगीका हाल विगडते जाता है, बुखारकी नाडी जलद् अंग गरम होता है, सादा बुखार अतरेवाला तैसें सन्निपातज्वर सखतसांधोंकादरद सखतखासी क्षय मगज फेफसा हृदय होजरी आंतरा वगेरे मर्मस्थानकासोजा सखतमरोडा कलेजेकापकणा आंख तथा कानकापकणा प्रमेह और सखत गरमीकी टांकी. इतने रोगोंमें चलती है २ धीमी नाडी) तनदुरस्त हालतमें जैसी नाडी चहिये उस करते मंद चालसे चलणेवाली नाडीकूं धीमी कहते हैं. जैसे ठंढ थकेला भूखेमरणेकारोग दिलगीरी उदासी मगजकी कितनीकबेमारी जैसेंके फेफरा (मिरगी) बेशुद्धि और तमाम रोगकी अंतकालकी दसामें नाडी वहोत धीमे चलती है, (३) भरी नाडी) नाडी परिक्षामें अंगलियोंकूं जैसें वेग याने चाल मालम देती है, तैसे नाडीका वजन अथवा कदभी मालम देता है, ये कद अथवा वजन चहिये जिससें जादा वढता है, तब उसकूं भरी नाडी अथवा बडी नाडी कहणेमें आती है, खूनके भरावमें तैसें ताकतवर अदमीके बुखार तथा वरममें नाडी भरी भई मालम देती है, भरी नाडीसें एसी हालत मालम देती है के, बदनमें खून पूरा और वहोत है, जैसें नदीमे जादा पाणी आणेसें पाणीका जोर वढता है, तैसे खूनके भरावसें नाडी भरीभई लगती है, ४ हलकी नाडी) थोडे खूनवाली नाडीकूं छोटी या हलकी कहते हैं, अंगलीके नीचे एसी नाडीका कद पतला याने हलका लगता है, कोईभी द्वारसें खून वहोत चला गया होय या जाता होय ऐसे रोगोंमें,तथा वहोतसे पुराणे रोगोंमे हेजेमें रोग गये-पीछे रही निवलाईमें नाडी पतलीसी मालम देती है, इस नाडीपरसें एसा मालम होजाता है के खून इसके कम है या वहोत कम होगया है, खूनके वजनपरसें नाडीके

गती है, एसी नाडीभी खूनका जो रवताती है, नाडीके बावत लोकोंका विचार फकत नाडी देखणेसें सब रोगोंकी संपूर्ण परीक्षा हो सकती है, एसा लोकोंके मनमें जो हद उपरांत विश्वास बैठगया है, उसमें वो लोक ठगाये जातेहैं क्योंके नाडीकी बावत झूटा फाफा मारणे वाले वैद्य और हकीम अज्ञान लोकोंकूं वचनजालमें फसाते हैं, वहोतसी वखत नाडी परिक्षाकी बावत अदभुत और असंभववातें सुणते हैं, एसी वातोंमें सच्च थोडा और झूट वहोत होताहै, इस ग्रंथमें जो जो नाडी परीक्षाका विवरण लिखा है सो नाडी ज्ञानके सच्चे अभ्यासियोंकों जरूर मिलसकता है, वहोत अभ्यास और अनुभवसें नाडीका वारीक विचार और रोगपरिक्षाकी कितनीक कूंचिया मिलसकती है लेकिन् ये वातें तदन झूठ हे के रोगी छ महीने पहली फलाणा साग खाया था इत्यादि तो नाडी परिक्षामें सब गप्पें चलती है, सो मानणे योग्य नहीं है कितनेक हकीमसाहिबोंने और वैद्योनें नाडीकी हदउपरांत महिमा बधाई है, और असंभवित अणघडगप्पोंकूं लोकोंके दिलमें जमा दियाहै, एसे भोले लोकोंका रोग मिटणामुसकिल है, अथवा देरी लगती है, तब एसें मूर्खलोक डाकटरोंपर अपणी बेकूबी धर देते है के डाकतरोंकूं नाडी परिक्षाका ज्ञान नही है, और पीछे देशी वैद्यके पास जाकर कहताहै के देखो हमारी नाडी हमारे बदनमें क्या रोगहे, वैद्य उसीकूंही हम समझते हें के जोकी नाडीसें रोग कहदे, तब सत्यवादी वैद्य तो सत्य कह देताहै के नाडी परसें तुमारी कितनीक प्रकृतीकी बात तो हम समझलेंगें लेकिन् तुम तुमारी अवलसें आखरी तक जो जो हकीगत वीती है, और हे सोकहो क्या कारणसे रोगभया कितने दिन भया क्या क्या दवाली क्या क्या पथ्य तुमने खाया पीया इस परसें हम परीक्षा रोगकी समझ सकेंगे विद्वान और चतुर वैद्य नाडी देखकर रोगीके शरीरकी स्थितिका कितना एक अनुमांन बांध सकताहै वो अनुमान विशेष कर सच्चाभी निकलताहै, लेकिन नाडी परिक्षापर अतिशय श्रद्धा रखणेवाले अज्ञान लोकोंके सामने अपणी परिक्षा देकर अपणी कीमत नहीं कराणे चाहते लेकिन धूर्त्त चालाक पाखंडीवैद्य जोहे सो नाडी देखकर वडा आडंबर रचकर दोय बात वायूकी दोय बात पित्तकी दोय बात कफकी करते भये इसतरे पांच पचीस बातोंकी गप्पें इधर उधर की हकालते हें, तब उसमेंकी थोडी वहोत बात रोगीके बीतक अहवालोसें मिलजाती है तब विचारे भोले अति यकीन लाणेवाले एसे ठगोरोसें ठगाते है, और मनमें जांणते हें वस संसारमें इनके जोडेका कोई हकीम नहीं है तब विद्वानवैद्य और डाकतरोंकों छोडके ढोंगी उंठ पटांग वैद्योंके जालमें फसजातेहें नाडी ये क्या चीज हे और कैसें पेदा भईहे, और उसके आधारसें कितनी वातों की खबर पडती है, इयबात तो हमने इस ग्रंथमे वहोतही विस्तारसें लिखीहै सो बांचणे वालोकी खातरी होगी, रोग पेटमेंहे, शिरमेंहे नाकमेंहे के कानमेंहे इत्यादि बेमारी

तीन चार गर्म किये जाते हैं, भरीभई मध्यम छोटी नाडी और बेमालम, खूनके सिवाय जोरसें भरीभई, मध्यम खूनमें मध्यम, और खूनमें छोटी नाडी, ऐसे रोगमें खून बिलकुल चला जाकर नाडी) आंगलीके नीचे मुश्किलसे मालम पडे उसकूंभी ये मालम नाडी कहते हैं, (५ सख्तके नरम नाडी) फेर नाडीके सख्त १ और नरम २ भेद होता है, जिस धोरी नसमें होकर खून बहता है, उस धोरी नसके अंदरके पडदेकी तांतोंमें संकोचानेकी शक्ति ज्यादा होती है, तो नाडी सख्त चलती है, और संकोचानेकी शक्ति कम होती है, तो नाडी नरम चलती है, उसकी परिक्षा इसतरें है, नाडीपर तीन आंगली धरकर उपरकी तीसरी आंगलीसे नाडीकूं दबावे तो बाकीके नीचेके दो आंगलीको धडका लगे तो समजणा कि नाडी सख्त है, और दोनो आंगलियोंको धडका नहीं लगे तो नाडी पोची नरम है, ऐसा समजणा (६) अनियमित नाडी) नाडीकी दमाम मुजब चालमें उसके दो ठणकेके बीचमें एक सरखा वखतका अंतरा रहा करे तो नियमित याने कायदेसर चलनेवाली नाडी जाणनी, लेकिन जिस वखत कोइ बेमारी होय तब नाडी बे कायदे चले एक ठणका जलदी आवे और दुसरा ज्यादा देर ठहरके आवे उस नाडीकू अनियमित समजणी, ऐसी नाडी चले तब इतने रोगोंकी शंका होती है, हिरदयका दरद फेफसेका रोग, मगजका रोग, सन्निपातज्वार, मुत्ररोग, गलेका मरज सहणा, और कोइभी बेमारीकी सखत भयंकर स्थिति (७) अंतरिया नाडी) नाडीके दो तीन ठणका होकर बीचमें एकाध ठणके जितनी नागा पडे याने ठणका लगेही नही फेर उपरापर दो तीन ठबका होकर फेर इसीतरे नाडी बंध पडे और चले सो अंतरिया नाडी कहलाती है, हिदयकी बेमारीमें जब खून बराबर फिरता नहीं तब नही धोरी नस चोटी हो जाती है, और मगजका कोइभी भाग बिगडता है, तब ऐसी नाडी चलती है, डाक्टरलोक नाडी परिक्षामें तीन बात ध्यानमें रखते हैं, १ नाडीकी चाल जल्दी या धीमी २ नाडीका कद बडा या छोटा ३ नाडी सखत है, या नरम, खूनवाले जोरावर अदमीके बुखारमें मगजके सोजेमें कलेजेके रोगमें और गंठिया बायु वगेरे रोगोमें जल्दी बहोत बडी और सखत नाडी देखणेमें आवेगी, ऐसी नाडी बहोत देर चले तो जानकू जोखम बढती जाती है, जो बुखारके रोगमें ऐसी नाडी बहोतदिन चले तो रोगीकी आसा थोडी रहती है, जो नाडीकी चाल धीरे २ कमपडे तो सुधरणेकी आशाहै फस्त खोलणेसें जोकलगाणे सें अथवा अपणे आपही खूनका रस्ताहोकर वधाभया खून निकल जाताहै तो नाडी सुधर जातीहै ताकत घर या अदमीकूं बुखार आताहै अथवा शरीरपर कोइभी जगे सूजन आती है तब जलदी या छोटी नरम नाडी चलतीहै क्योंके खून कम होताहे आंतरेमें सोजा होता- है, तथा पेटके पडदेपर सोजाहोता है, तब जलदी छोटी सखत नाडी चलतीहै ये नाडी छोटी महीन लेकिन् बहोत सखत होतीहै, आंगलीकूं तारजेसी महीन और करडी ल-

गती है, एसी नाडीभी खूनका जो रवताती है, नाडीके बावत लोकोंका विचार फकत नाडी देखणेसें सब रोगोंकी संपूर्ण परीक्षा हो सकती है, एसा लोकोंके मनमें जो हद उपरांत विश्वास बैठगया है, उसमें वो लोक ठगाये जातेहैं क्योंके नाडीकी बावत झूटा फाफा मारणे वाले वैद्य और हकीम अज्ञान लोकोंकूं वचनजालमें फसाते हैं, वहोतसी वखत नाडी परिक्षाकी बाबत अद्भुत और असंभववातें सुणते हैं, एसी बातोंमें सच्च थोडा और झूट वहोत होताहै, इस ग्रंथमें जो जो नाडी परीक्षाका विवरण लिखा है सो नाडी ज्ञानके सच्चे अभ्यासियोंकों जरूर मिलसकता है, वहोत अभ्यास और अनुभवसें नाडीका वारीक विचार और रोगपरिक्षाकी कितनीक कूंचिया मिलसकती है लेकिन् ये वातें तदन झूठ हे के रोगी छ महीने पहली फलाणा साग खाया था इत्यादि तो नाडी परिक्षामें सब गप्पें चलती है, सो मानणे योग्य नहीं है कितनेक हकीमसाहिबोंने और वैद्योनें नाडीकी हदउपरांत महिमा बधाई है, और असंभवित अणघडगप्योंकूं लोकोंके दिलमे जमा दियाहै, एसे भोले लोकोंका रोग मिटणामुसकिल है, अथवा देरी लगती है, तब एसें मूर्खलोक डाकटरोंपर अपणी बेकूवी धर देते है के डाकतरोंकूं नाडी परिक्षाका ज्ञान नही है, और पीछे देशी वैद्यके पास जाकर कहताहै के देखो हमारी नाडी हमारे वदनमें क्या रोगहे, वैद्य उसीकूंही हम समझते हें के जोकी नाडीसें रोग कहदे, तब सत्यवादी वैद्य तो सत्य कह देताहै के नाडी परसें तुमारी कितनीक प्रकृतीकी बात तो हम समझलेंगें लेकिन् तुम तुमारी अवलसें आखरी तक जो जो हकीगत वीती है, और हे सोकहो क्या कारणसे रोगभया कितने दिन भया क्या क्या दवाली क्या क्या पथ्य तुमने खाया पीया इस परसें हम परीक्षा रोगकी समझ सकेंगे विद्वान और चतुर वैद्य नाडी देखकर रोगीके शरीरकी स्थितिका कितना एक अनुमांन बांध सकताहै वो अनुमान विशेष कर सच्चाभी निकलताहै, लेकिन नाडी परिक्षापर अतिशय श्रद्धा रखणेवाले अज्ञान लोकोके सामने अपणी परिक्षा देकर अपणी कीमत नहीं कराणे चाहते लेकिन धूर्त्त चालाक पाखंडीवैद्य जोहे सो नाडी देखकर बडा आडंबर रचकर दोय बात वायूकी दोय बात पित्तकी दोय बात कफकी करते भये इसतरे पांच पचीस बातोंकी गप्पें इधर उधर की हकालते हें, तब उसमेंकी थोडी बहोत बात रोगीके वीतक अहवालोसें मिलजाती है तब विचारे भोले अति यकीन लाणेवाले एसे ठगोरोसें ठगाते है, और मनमें जांणते हें बस संसारमें इनके जोडेका कोई हकीम नहीं है तब विद्वानवैद्य और डाकतरोंकों छोडके ढोंगी उंठ पटांग वैद्योंके जालमें फसजातेहें नाडी ये क्या चीज हे और कैसें पैदा भईहे, और उसके आधारसें कितनी बातोंकी खबर पडती है, इयबात तो हमने इस ग्रंथमें बहोतही विस्तारसें लिखीहै सो बांचणे वालोंकी खातरी होगी, रोग पेटमेंहे, शिरमेंहे नाकमेंहै के कानमेंहे इत्यादि बेमारी

वायुके रोगवालेकी चमडी ठंढी, पित्त रोगवालेकी चमडी गरम होती है, और कफ रोगवालेकी चमडी भीगी होती है, लेकिन् सब जगे एसा निश्चय नहीं है, तोभी प्राये ए लक्षण होते हैं, (२ गरम चमडी) पित्त और तमाम तरेके बुखारमें चमडी गरम होती है, चमडीकी गरमाससेंभी बुखारकी गरमी मालम होजातीहै, लेकिन् अंतर वेगीज्वरमें बुखार अंदर होता है, बाहरकी चमडी बहोत गरम नहीं होती मध्यसर होती है, उस अवस्थामें चमडीकी परिक्षामे वैद्य ठगा जाता है, उसजगे नाडी परिक्षा या थरमोमीटर अंदरकी गरमीकू बता सकती है, बहोतसी वखत चमडी जलती बुखारजेसा मालम देता है, और अंदर बुखार नहीं होता (३ ठंढी चमडी) कितनेक रोगोंमे वदनकी चमडी ठंढी पड जाती है, बुखार ऊतर गयेबाद नाताकतीमें दुसरी बेमारीकी निबलाईमें हैजेमें बहोतसे पुराने रोगोमें चमडी ठंढी पड जाती है, सखत बेमारीमें वदन ठंढा पड जाय तो पूरी जोखम समझणा (४ सूकी चमडी) चमडीके छेदोमेंसे हमेसा पसीना निकलता है, उससें चमडी नरम रहती है, लेकिन् कितनेक रोगोंमें पसीना बंद होजाता है, तब चमडी सूकी और खरखरी होजाती है, बुखारकी सरुआतमें पसीना बंध होजाता है, इसवास्ते बुखारवालेकी तथा वादीके रोगवालेकी चमडी सूकी होजाती है, (५ भीगी चमडी) चहिये जिससें जादा पसीना आणेसें चमडी भीगी रहती है, वो भी रोगकी निशाणी है, कितनेक रोगोमें चमडी गरम और भीगी होती है, और कितनेक रोगोमें ठंढी और भीगी होती है इसमें रोगीकूं पूरा डर है, संधिवात (गंठिया) में चमडी गरम और भीगी होती है, और हैजेमे ठंढी और भीगी होती है, बहोत ठंढा और भीगा अंग निबलाईमें जोखम जताता है, रातकूं पसीना होय चमडी भीगी रहे, और नाताकती बढती जाय तो क्षयकी निशाणी समझ जलदी सावचेत होणा चहिये.

(क) थरमोमीटर.

वदनमें गरमी कितनी है, उसका चोकस माफ थरमोमीटरसें हो सकता है, थरमोमीटर काचकी नलीमें नीचै पारेकी भरा गोल पपोटा (काचका गोल वल्व) होता है, इस पारेवाले वल्वकूं मूंमें जीभ नीचै या बगलमें पांच मिनटतक रखकर पीछे बाहर निकालकर देखनेसे उसके अंदरका पारा वदनकी गरमीसें उपर चढता है, सरदीसे नीचे उतरता है, अछे तनदुरस्त अदमीके वदनकी गरमी ९८ सें १०० डिग्रीके बीचमें रहती है, बहुतोंके वदनमें मध्यम गरमी ९८. सें ९९ होती है. और बहारकी गरमी अथवा खेचलसें उसमें कुछइक वढोतरी होती है, तब १०० तक चढती है. नींदमें और संपूर्ण शांतिकी वखतमें एकाध डिग्री गरमी कम होती है रोगमें वदनकी गरमी विशेप चढा उतार होती है, और वदनकी स्वाभाविक गरमीसे पारा जादा उतर

रूप (ई) त्वचा चमडी (उ) मूत्र याने पैसाब (ऊ) दस्त मल इतनी परिक्षा ली गई है.

(अ) जीभपरीक्षा.

जीभकी हालतसें गलेकी होजरीकी और आंतरेके हालतकी खबर होती है, क्योंके जीभके ऊपरका बारीक पुडत गला होजरी और आंतरेके अंदरका बारीक पुडतके साथ जुडा भया और एक सदस मिला भया है, जीभपरसें इसके अलावाभी कितनेक रोगोंका विचार बांध सकते हैं, तनदुरस्त हालतमें जीभ भीजी अछी और अणी उपरसे जरा लाल होती है, गीलास, रंग, और जीभके ऊपरसें मैलपर, रोगकी परीक्षा हो सकती है. (१) गीली भीगी जीभ) अच्छी हालतमें जीभ थूकसेंभी भीजी रहती है, बुखारमें जीभ सूकणे लगती है, इसवास्ते जीभ भीजी होय तो समझणा बुखार नहीं है, कोईभी रोगमें जीभ सूककर फेर पीछी भीजणी सरू होय तो समझणा रोग अछा होनेपर है, जल पीनेसें एक वेर गीली होती है, लेकिन जो बुखार होता है तो तुरत फेर सूक जाती है (२) सूकी जीभ) कितनेक रोगोंमें वदनमें रस चहिये इतना पैदा नहीं होता उसही मुजब थूक थोडा पैदा होता है, इससेंही जीभ सूक जाती है, और रोगीकूं भी जीभ सूकी मालम देती है, तब सब मूं सूक गया एसा रोगी कहता है, एसी जीभपर अंगली लगाणेसें और करडी मालम देती है, बुखार शीतला औरी और दुसरे चेपी बुखारोमे होजरी तथा आंतरोके रोगमें और वहोत जोरके बुखारमें जीभ सूक जाती है, ज्यों बुखार जादा त्यों जीभ जादा सूकती है, करडी भई जीभभी मौतकी निशाणी है, (३) (लाल जीभ) जीभकी अणी तथा कोरपर हमेसांजरा लाल होती है, लेकिन जो सब जीभ लाल अथवा जादा भाग लाल होय तो शीतला सूंका पकणा मूं आणा पेटका सोजा और सोमलका जहर इतने रोगका अनुमान होता है, बुखारमे जीभ अणीपर तैसें दोनों तरफ कोरपर जादा लाल होती है, (४) फीकी जीभ) वदनमेसें वहोत खून निकले पीछे अथवा बुखार तिली और एसीही दुसरी वेमारीमे वदनमेंसे खूनके रक्तकण कम होणेसे जैसे चहरा तथा चमडी फीकी पडती है, तैसे जीभभी सुपेद और फीकी फलर पड जाती है, (५) मैली जीभ) रोगोमें जीभपर सुपेद थर आती है, उसकू मैली जीभ कहते है, वहोत सखत बुखारमें सखत संधिवातमें कलेजेके रोगमें और मगजके रोगमें दस्तकी कबजीमें जीभ मैली होती है, जीभकी अणी और दोनों तरफकी कोरसें जीभका मैल कम होणा सरू होय तो समझणा के रोग कम होणा सरू भया है, लेगिन जो जीभके पिछले भाग तरफसें मैलका थर कम होणा सरू होय तो जांणनाकी रोग धीरे २ घटेगा घटणा सरू भया है, जीभके ऊपरका थर जलदी साफ हो जाय और जीभका वो भाग लाल चिलकता और चीरा २

होवे तो समझना के आंतोमें [illegible] रंग गया है. या [illegible] भया है, ये जीभका फे-
रफार खराब निशाणी जाहिर करतीहै, बहोत दिनोंके तापमें जीभका [illegible]
तगारके रंगका होताहै. और जीभके ऊपर बीचमें [illegible]
री का निशाणहै जिनके रोगमें जीभपर पीला मैल जमताहै (६) कालीजीभ) कितनेक
रोगोंमें जीभ काली जामुनिया या काले रंगकी होती है जैसे ताप और फेफसेके साथ
संबंध रखनेवाले खासी वगैरे रोगोंमें [illegible] दस्तोंमें [illegible], तब खून ब-
राबर साफ होता नहीं इस करके जीभ काली झांखी अथवा आसमानी रंगकी होतीहै,
फेर कितनेक दूसरे रोगोंमें जब जीभ काले रंगकी होतीहै तब इसीके बचनेकी आशा
थोडी रहती है (७) धूजती जीभ) सन्निपातमें मगजके भयंकर रोगमें और दूसरेभी
कितनेक सख्त रोगोंमें जीभ धूजा करतीहै, रोगीके मुखमांसे नहीं रहती जो बाहर
निकलताहै, तब भी धूजतीहै, ऐसी धूजती जीभ भयंकर निशानी और इसही नि-
शाणीहै (८) सामान्य परीक्षा) बहोतमें रोगोंकी परीक्षा करणेमें जीभ देखतहैं.
जीभपर सुपेद मजबूत थर याने मैल जमा होय तो पाचनशक्तिमें गडबड समझणी जाडी
और सूजीभई और दांतोके नीचे आनेसें दांतोकी निशाणी पडीहै, ऐसी जीभ हो-
जरी तथा मगज तंतुओंमें दाह होय तब होतीहै, जीभपर जाडा पीले रंगका थर हो-
य तो पित्तविकार जांणना, काला झांखा और रंगका पुरन खराब बुखार होताहै तब
होता है, सुपेदथर साधारण बुखारकी निशाणी है, सूकी थरवाली काली और धूजती
जीभ इकवीस दिनोंका भयंकर ज्वर सन्निपातकी निशाणी है, एक तरफ लोना कर
ती जीभ आधी जीभमें वायी आणेकी निशाणी है, जब जीभ बहोत मुशकिलमें
नीठ २ बाहर निकले और रोगीके इच्छामुजब अंदर नहीं जावे तो समझणा
रोगी बहोत नाताकत और लिखाईजगया है, बहोत भारी रोग होय उसमें फेर जीभ
धूजणे लगेतो बडा डर समझणा, हेजा तथा होजरी और फेफसेकी बेमारीमें जब जी
भ सीसेके रंगजेसी झांखी दिखाइ देवे तो खराब चिन्ह समझणा, जरा आसमानी रंग-
की जीभ दिखाइ देवे तो समझणा के खूनकी चालमें कुछ अटकाव भयाहै, मूं पकजा
य और जीभ सीसाके रंग जेसी होजाय तो नजीक मृत्युकी निशाणीहै वायुके दोष-
वाली जीभ खरदरी फटी भई तथा पीली होतीहै पित्तके दोषवाली जीभ कुछ इक-
लाल और कालास पडती होतीहै, कफ के दोष वाली जीभ सुपेद भीजी और नरम-
होतीहै, त्रिदोषवाली जीभ कांटेवाली और सूकी होतीहै, मृत्युकालकी जीभ खरखरी
अंदरसें बधीभई फेणवाली लकडजेसी करडी और गतिरहित होजातीहै देशी वैद्यक
शास्त्रसें इस ग्रंथमें जादा जिह्वापरीक्षा लिखीहै.

(आ) नेत्रपरीक्षा.

रोगी की आंखोसें भी रोगकी परीक्षा होतीहै, वायूके दोषवाले नेत्र लूखे निस्तेज धूम्रवर्ण (धूयेके जेसें धूसरारंग) चंचलतथा दाह वाली होतीहै, पित्तके दोषवाले नेत्र पीले दाहवाले और चराकके तेजकू नहि सके ऐसे होतेहैं, कफके दोषवाले नेत्र भीगे सुपेद नरम मंद और तेज विनाकी होतीहै. तंद्रा याने मींटवाली आंखकाली और जड (टमकारीजती नही) एसी होतीहै त्रिदोष सन्निपातकी आंख भयंकर लाल जरा-काली और मिंचीभई होतीहै.

(इ) रूपपरीक्षा

चहरा देखणेसें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होसकतीहै, फजरमें रोगीका चहरा तेज रहित विचित्र और झांखा के काला दिखता होय तो वादीका रोग समझणा, जो चह-रा पीला मंद और सूजाभया दीखे तो पित्त रोग समझणा, जो चहरा मंद तेलिया ते-लके जेसा चिकणास वाला दीखेतो कफका रोग समझणा, कुदरती निरोगका चहरा शांत स्थिर और चैनवाला होताहै, रोगसें चेहरा फिर जाताहे तरे २ का स्वरूप दिखताहै रातदिनके अभ्यासी चहरेपरसें रोगपरखसकते हैं हर कोई नहीं परख सकता (१) फिकरवंदचहरा सखतवुखार वडे भयकर रोगोंकी सरुआतमें हिचकी तथा खेंचता णके रोगोंमें दम तथा श्वासके रोगमें कलेजे और फेफसेके रोगमें इत्यादि रोगोंमें चे हरा चींतातुर रहता है, (२) फीका चहरा) वहोत खून जाणेसें जीर्ण ज्वरसें ति-लीकी वेमारीसें वहोत निवलाईसें वहोत फिकरसें डरसें धास्तीसें इत्यादि कारणोंसें खूनके अंदरके लालरजकण कम होणेसें एसाचहराहो जाताहै औरतोंके ऋतुधर्ममें जादा खून जाणेसें अथवा जन्मसें नाताकत चधेकी औरतकूं वालक चूंग २ कर खून कम करदेताहै, पोपण पूरा मिलता नहीं एसी औरतोंका भी चहरा फीका होजाता है, (३) (लाल चहरा)सखत वुखारमें मगज के सोजेमें लूलगे तव आंखेंतो खून जेसीलाल गालपर गुलाबी रंग और उपसे भये मालम देतेहें वदनका चहरा लाल तव समझणाके खूनका शिरके तरफ तथा मगजमें जादा जोस चढा है, (४) फूलाभया चहरा) वहोत निवलाई जीर्णज्वर जलंदर वगेरे रोगोंमें चहरा फूलाभया याने थोथरवाला होता है, आंखकी ऊपरकी चमडी चढ जाती है, गालमें आंगलीसें दवानेसें खड्डा गिरता है, चहरा सूजा भया दिखता है, (५) अंदर खुड्डा वेठाभया चहरा) जैसे दरखतके डालीकेपत्ते तथा छिलका छीलेवाद डाली सूडी भई मालम देती है, इसतरे कितनेक भयंकर रोगोंकी आखरी अवस्थामें रोगीका चहरा एसा होजाता है, हैजेमें मरणेकी वखत जो सिकल वनती है, वो चहरा अथवा इस तरेका चहरा होता है, निलाडमें सल आंखके डोले अंदर घुसेभये आंखमें खड्डे पडे भये नाक अणीदार भयाभया कनपटी आगे खड्डे पडे

भये गाल बैठगये होवें [illegible] आसमानी [illegible] दिखाई देवे तो रोगीका जीना मुश्किल समझणा.

(२) चमडीपरीक्षा.

जैसे चमडीके स्पर्श करनेसें गरमी [illegible] परीक्षा हो सकती है, वैसे चमडीके उपरके रंगमें [illegible] निकलती है, [illegible] कितनाक रोगीका अनुमान होसकता है, [illegible] रोगोंमें [illegible] आता है, [illegible] समझते हैं, लेकिन चमडीका [illegible] इन रोगोंकी परिक्षा [illegible] सकती है, [illegible] देखना चाहिये [illegible] पित्तके बिगाडमें समझणा, जिसके चमडीका रंग काला पडता जाय उसके शरीरमें वायुका दोष समझणा जिसके चमडीका रंग पीला पडता जाय [illegible] दोष समझणा रोग सुपेद पडता जाय उसके शरीरमें कफका दोष समझणा जिसके शरीरके चमडीका रंग बिलकुल फीका होकर अंदरमें पीला सा दिखाई देवे तो समझना खून बिगड गया या तपागया है, लोक उसकू गरमी कहते हैं 'चमडीमें खून नहीं दीखता है' तब गरम तथा लूखी पड जाती है, चमडीका रंग तांबेके रंग जैसा तामडा होय तो समझणा रक्तपित्त तथा वातरक्तका रोग है, चमडीपर काले चंदे और चकता पडे तो समझणा [illegible] ताजा और अच्छा खुराक नहि मिला है, जिसमें खून बिगडा है, इसतेरे [illegible] चठा और निस्तेजक होय तो समझणाके उसकू गरमीका रोग है, हेजेकी दुष्ट बेमारीमें चमडीका तथा नखका रंग आसमानी काला पड जाता है, और वो मरणेकी निशाणी है, इसतेरे चमडीमें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होती है.

(३) मूत्रपरीक्षा.

तन दुरस्त अदमीके पेशाबकारंग बराबर सूके घासके रंग जेसा होताहै जेसें घाससूका हरा, नहीं पीला, नहीं लाल, नहीं काला, नहीं सुपेद, लेकिन् इन सब रंगोंकी छाया होताहै, वेसाही निरोग आदमी कापेसाब समझणा पेसाबमें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, पेसाब ये खूनमेंसें छुटा निकलाभया निरुपयोगी प्रवाहीहै खूनकूं शुद्धकरणेवास्ते मूत्राशय (किडनी) पेशाबकूं खूनमेंसें खींच लेतीहै, और उसकरके जो कोइ बेमारी भई होयतो खूनका कितनाक उपयोगी भागपेसाबमें जाताहै, इसवास्ते पेशाबसें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, चिंतामणी शास्त्रसें हमने अष्टविधपरिक्षा इहां लिखीहै, डाकतरी ग्रंथोसें डाकदरोंकी, विशेप बातें हमारे अनुभवीहै, (१) वादीके दोपवाला रोगीके मूत बहोत और बादलीके रंगजेसा होताहै, (२) पित्त दोपवाला रोगीका मूत लाल कसूंभेका रंग जेसा अथवा केसूलेके फूलके रंग जेसा

पीला गरम तेल जेसा तथा थोडा होताहै, (३) कफके रोगीका मूत ठंढा तलावके पाणी जेसा सपेद फेणवाला तथा चिकणा होताहै (४) मिलेभये दोपोंवाला पेसाव मिलेभये रंगका होताहै (५) सन्निपात रोगमें पेसाव झांखा काला होताहै, (६) खूनके कोपवाला मुत्र चिकणा गरम और लाल होताहै, (७) वातपित्तके दोप वाला गहरा लाल अथवा किरमची रंगका तथा गरम होताहै (८) वात कफदोप वालेका मूत सुपेद तथा बुदबुदाकारहोताहै (९) कफपित्तवाले रोगीका मूत्र लाल लेकिन् गुमला होताहै, (१०) अजीर्ण रोगीका मूत्र चावलोंके धोवणके जेसा होताहै (११) नये बुखारवालेका मूत्र किरमची रंगका तथा जादा होताहै, (१२) पेसाव करते लाल धार होय तो वडा रोग समझणा काली धार होय तो रोगी मरजावै पेसावमें वकरीके पेसावजेंसी गंध आवेतो अजीर्णका रोग समझणा (१३) (साध्यासाध्य परिक्षा) रोग साध्य याने सहजसें मिटे जेसाहे अथवा कष्टसाध्य याने मुस्किलसें मिटे जेसाहै, अथवा असाध्य याने नहीं मिटे जेसाहे, सो परिक्षा लिखते है, फजर चार घडीके तडके रोगीकूं ऊठाकर उसका पेसाव एक काचके सुपेद प्यालेमें लेणा जिसमें पहली और पिछली धार नहीं लेणी विचली धार लेणी पीछे उसकूं स्थिर रहणे देणा वाद सूर्यके धूपमें घंटाभर रखके पीछे एक घासके तिणखेसें धीरेसें-तेलकी वूंद डालनी जो वो बूंद डालतेही पेसावपर फेल जाय तो रोग साध्य समझणा जो वूंद वो फेले नहीं ऊपर थूंकी यूं वने रहे तो रोग कष्ट साध्य समझणा जो वो वूंद अंदर पेसावके तले बैठ जाय अथवा अंदरसें फेर पीछी ऊपर आकर कुंडालेकी तरे फिरणे लगे अथवा वूंदमें छेद २ पड जावे, अथवा तेलकी वूंद पेसावके संग मिल जाय तो रोग असाध्य जाणना फेर तलाव हंस छत्र चमर तोरण कमल हाथी इत्यादि चिन्ह दीखे तो रोगी वचे, तलवार दंड कवाण तीर इत्यादि शस्त्रोके चिन्ह वूंदके होजाय तो रोगी मरे, बुदबुदे उठे वूंदमें तो देवताका दोप जाणना, इत्यादि मूत्र परिक्षा योग चिंतामणी ग्रंथमें लिखी है, इसमें कितनीक वातें तो अनुभवसें सिद्ध है, क्योंके फकत ग्रंथ वांचनेसेंही परिक्षा नहीं हो सकती है, करता उस्ताद और अणकरता सागिडद होता है, ग्रंथके वांचणेसे फकत वायका पित्तका कफका खूनका तथा मिले भये दोपोंका इत्यादि परिक्षा पेसावकी देखनेसें हो सकती है विशेप पहचान अभ्याससे होसकती है, ॥ २ ॥ अंग्रेजी मतसे मूत्र परिक्षा लिखते है ॥ रसायणशास्त्रकी रीतसें मूत्र की परिक्षा डाकतरोनें करी है, इसवास्ते प्रमाण करणे लायक है, पेसावमें मुख्य दो चीज है, युरीआ और एसिड इसके सिवाय उसमें लूण, गंधकका तेजाव, चूना, फासफरीक एसिड, मेगनिशिया, पोटाश, और सोडा, इन सव वस्तुओंका थोडा २ तत्व होताहै घहोतसा भाग पाणीका होता है, पेसावमें जोजो पदार्थ है सो लिखते हैं.

भगे गाल बैठगये हाडोंपर मांस घटे और नखोंका रंग आसमानी तथा स्याम दिखाई देवे तो रोगीका जीना मुश्किल समझणा.

(५) त्वचापरीक्षा.

जैसें चमडीके स्पर्श करनेसें गरमी ठंडीकी परिक्षा हो सकती है, तैसें चमडीके उपरके रंगसें तैसे उसपर कितनेक चट्टे फोडे वगैरे निकलते है, उसपरसे बदनका कितनेक दोषोंका अनुमान होसकता है. जैसा कि चमडा वगैरे रोगोंमें पहले बुखार आता है, इसवास्ते उसके जानकार लोग उस बुखारकूं पहले माताका बुखार लोक समझते हैं, लेकिन चमडीका खयाल कर उस चमडीपर बारीक २ दाणे उन रोगोंकी परिक्षा बना सकती है. अर्थात् देखना चाहिये चमडीपर किसीभी जात कुछ होवतो पित्तके बिगाडमें समझणा, जिसके चमडीका रंग काला पडता जाय उसके शरीरमें वायूका दोष समझणा जिसके बदनका रंग पीला पडता जाय सो पित्तका दोष समझणा गोरा सुपेद पडता जाय उसके बदनमें कफका दोष समझणा जिसके शरीरके चमडीका रंग बिलकुल लूखा होकर अंदरमें नीला सा दिखाई देवे तो समझना खून बिगड गया या तपागया है, लोक उसकूं गरमी कहते हैं 'चमडीके खून जब नहीं पोहचता है, तब गरम तथा लूखी पड जाती है, चमडीका रंग तांबेके रंग जैसा तामडा होय तो समझणा रगतपित्त तथा वातरक्तका रोग है, चमडीपर काले चट्टे और भभ्भा पडे तो समझणा बदनकूं ताजा और अच्छा खुराक नहिं मिला है, जिससें खून बिगडा है, इसतरे फूटनेका चठा और विस्फोटक होय तो समझणाकि इसकू गरमीका रोग है. हैजेकी दुष्ट बेमारीमें चमडीका तथा नखका रंग आसमानी काला पड जाता है, और वो मरणेकी निशाणी है, इसतरे चमडीमें कितनेक रोगोंकी परिक्षा होती है.

(७) मूत्रपरीक्षा.

तन दुरस्त आदमीके पेशाबकारंग बराबर सूके घासके रंग जेसा होताहै जेसें घाससूका नहीं हरा, नहीं पीला, नहीं लाल, नहीं काला, नहीं सुपेद, लेकिन इन सब रंगोकी छाया वाला होताहै, वेसाही निरोग आदमी कापेसाब समझणा पेसाबसें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, पेसाब ये खूनमेंसें छुटा निकलाभया निरुपयोगी प्रवाहीहै खूनकूं शुद्धकरणेवास्ते मूत्राशय (किडनी) पेशाबकू खूनमेंसें खींच लेतीहै, और उसकरके जो कोइ बेमारी भई होयतो खूनका कितनाक उपयोगी भागपेसाबमें जाताहै, इसवास्ते पेशाबसें बहोत रोगोंकी परिक्षा होसकती है, चिंतामणी शास्त्रसें हमने अष्टविधपरिक्षा इहां लिखीहै, डाकतरी ग्रंथोसें डाकदरोंकी, विशेष वातें हमारे अनुभवीहै, (१) वादीके दोषवाला रोगीके मूत बहोत और बादलीके रंगजेसा होताहै, (२) पित्त दोषवाला रोगीका मूत लाल कसूंभेका रंग जेसा अथवा केसूलेके फूलके रंग जेसा

पीला गरम तेल जेसा तथा थोडा होताहै, (३) कफके रोगीका मूत ठंढा तलाव-के पाणी जेसा सपेद फेणवाला तथा चिकणा होताहै (४) मिलेभये दोपोंवाला पेसाव मिलेभये रंगका होताहै (५) सन्निपात रोगमें पेसाव झांखा काला होताहै, (६) खूनके कोपवाला मुत्र चिकणा गरम और लाल होताहै, (७) वातपित्तके दोप वाला गहरा लाल अथवा किरमची रंगका तथा गरम होताहै (८) वात कफदोष वालेका मूत सुपेद तथा बुदबुदाकारहोताहै (९) कफपित्तवाले रोगीका मूत्र लाल लेकिन् गुमला होताहै, (१०) अजीर्ण रोगीका मूत्र चावलोंके धोवणके जे-सा होताहै (११) नये बुखारवालेका मूत्र किरमची रंगका तथा जादा होताहै, (१२) पेसाव करते लाल धार होय तो वडा रोग समझणा काली धार होय तो रोगी मरजावै पेसावमें वकरीके पेसावजेंसी गंध आवेतो अजीर्णका रोग समझणा (१३) (साध्यासाध्य परिक्षा) रोग साध्य याने सहजसें मिटे जेसाहे अथवा कष्टसाध्य याने मु-स्किलसें मिटे जेसाहै, अथवा असाध्य याने नहीं मिटे जेसाहे, सो परिक्षा लिखते है, फजर चार घडीके तडके रोगीकूं ऊठाकर उसका पेसाव एक काचके सुपेद प्यालेमें लेणा जिसमें पहली और पिछली धार नहीं लेणी विचली धार लेणी पीछे उसकूं स्थिर रहणे देणा वाद सूर्यके धूपमें घंटाभर रखके पीछे एक घासके तिणखेसें धीरेसें-तेलकी वूंद डालनी जो वो वूंद डालतेही पेसावपर फेल जाय तो रोग साध्य समझणा जो वूंद वो फेले नहीं ऊपर थूंकी यूं वने रहे तो रोग कष्ट साध्य समझणा जो वो वूंद अंदर पेसावके तले वैठ जाय अथवा अंदरसें फेर पीछी ऊपर आकर कुंडालेकी तरे फिरणे लगे अथवा वूंदमें छेद २ पड जावै, अथवा तेलकी वूंद पेसावके संग मिल जाय तो रोग असाध्य जाणना फेर तलाव हंस छत्र चमर तोरण कमल हाथी इत्यादि चिन्ह दीखे तो रोगी वचे, तलवार दंड कवाण तीर इत्यादि शस्त्रोके चिन्ह वूंदके होजाय तो रोगी मरे, बुदबुदे उठे वूंदमें तो देवताका दोप जाणना, इत्यादि मूत्र परिक्षा योग चिंतामणी ग्रंथमें लिखी है, इसमें कितनीक वातें तो अनुभवसें सिद्ध है, क्योंके फकत ग्रंथ वांचनेसेंही परिक्षा नहीं हो सकती है, करता उस्ताद और अणकरता सा-गिडद होता है, ग्रंथके वांचणेसे फकत वायका पित्तका कफका खूनका तथा मिले भये दोपोंका इत्यादि परिक्षा पेसावकी देखनेसें हो सकती है विशेप पहचान अभ्याससे होसकती है, ॥ २ ॥ अंग्रेजी मतसे मूत्र परिक्षा लिखते है ॥ रसायणशास्त्रकी रीतसें मूत्र की परिक्षा डाकतरोनें करी है, इसवास्ते प्रमाण करणे लायक है, पेसावमें मुख्य दो चीज है, युरीआ और एसिड इसके सिवाय उसमें लूण, गंधकका तेजाव, चूना, फासफरीक एसिड, मेगनिशिया, पोटाश, और सोडा, इन सव वस्तुओंका थोडा २ तत्व होताहे वहोतसा भाग पाणीका होता है, पेसावमें जोजो पदार्थ है सो लिखते हैं.

पेशाबमेंके पदार्थ.	पेसावके १००० भागमें.
पाणी,	९५६॥। भाग.
शरीरके भागोंमें पैदा होती चीजें.	
युरीआ.	१४॥ ,,
युरिक एसिड.	०॥ ,,
चरबी चिकणाई वगेरे.	१० ,,
क्षार.	
लूण.	७। ,,
फासफरीक एसिड.	२ ,,
गंधकका तेजाब.	१॥। ,,
चूना.	०॥ ,,
मागनिशिया.	०। ,,
पोटास.	१॥। ,,
सोडा.	बहोत थोडा.

पेशाबमें ऊपर लिखे सो पदार्थ है, लेकिन् तनदुरस्त हालतमें पेसाबमें ऊपर लिखी चीजें हमेशां एक वजनमें होती नहीं खुराक और कसरत वगेरेपर उसका आधार है, पेशाबमेंकी चीजोंको पक्के रसायणी शास्त्री विगर दुसरे नहीं परख सकते और एसी परिक्षा होती है तभी पेशाबपरसें रोगोंकी पक्की परिक्षा हो सकती है, हमारे देशी पूर्वाचार्य इस रसायण विद्यामें बडे प्रवीण थे तभी तो वीस जातके प्रमेहमें सर्करा प्रमेह क्षार प्रमेहादिकी पहिचान करीहै इस मुजब तत्वके वेत्ता थे तभी तो उनोनें लिखा है, डाक्तरोकी करी परिक्षाकूं लोक नई समझ हैरतमें रहते है, लेकिन् नई नहीं है, पेसाबकूं फकत आंखोसें देखणेसें उसमेंके अनेक चीजोंका चोकस वधणा या घटणा मालम नहीं देता तोभी पेसाबके जथेपरसें पतलापणा या जाडेपणेपरसें कितनेक रोगोकी परिक्षा अछीतरे तपासणेंसें हो सकती है, निरोग अदमीकूं सब दिनमें याने २४ घंटेमें सरासरी २॥ रतल पेसाब होता है, जो कभी पतला पदार्थ कमती या वैसी खानेमे आवे तो वध घट होती है, ऋतुमुजबभी पेसाबके जथेमें फेर पडता है, ठंढकालेसें उष्ण कालमें पेसाब थोडा होता है, मूत्राशयका एक रोग जिसकूं अंग्रेजीमें (वाइटस डिझीझ) याने मूत्राशयका जलंदर कहते है, वो मूत्राशयमें विगाड होनेसें खूनमेंसें एक जरूरीका तत्व (आल्ब्युमेन) के रस्ते निकल जाणेसें होता है, पेशाबमें आल्ब्युमेन है या नहीं उसकी निगेदास्ती करनेसें इस रोगकी परिक्षा हो सकती है, इसीतरे पेसाबका महा भयंकर रोग मधुप्रमेह (डायाबीटिस) मीठा पेशाब होता है इसरस्ते पेसाबमें मीठेका

जादा हिस्सा जाता है, पेसावकूं आंखसे देखणेसें उसमें मीठा है, या नहीं उसकी मालम नहीं पडती लेकिन् अछीतरे परिक्षा करणेसें मीठा जाता है, जिसकी खबर हो जाती है, मीठे पेसावपर हजारो चिमटियां लग जाती है, पेशाबमे जुदा २ खार है, वो प्रमाणसें जादा या कम जाता है, तैसेही (खटास) याने एसिडका भाग पेसावमें जादा जाता है, तो उससेंभी अनेक रोग पैदा होता है, इन जाते भये पदार्थोंकी अछी तरे परिक्षा हो जाय तो रोगोंकीभी परिक्षा हो सकती है.

पेसावमें जाते भये पदार्थोंकी परिक्षा.

पेसावकी परिक्षा बहोत तरेसें करी जाती है, कितनीक बात तो पेसावकूं आंखसें देखणेसेंही मालम होती है, कितनीक चीजें रसायणिक प्रयोग करके देखणेसें मालम देती है, और कितनेक पदार्थ सूक्ष्म दर्शक यंत्रसें देखणेसें मालम पडती है, इसमेंकी थोडी परिक्षा इहां लिखते है, (१) आंखोंसें देखणेसें पेसावके जुदे २ रंगकी पहचानसें जुदे २ रोगोंका अनुमान बांध सकते हैं, निरोगी पेसाव पाणी जैसा साफ और जरा पीलासपर होता है, पैसावके संग खूनका भाग जाता होय तो पेसाव लाल अथवा काला दिखता है, कितनीक दवाओंके खानेसें पेसावका रंग बदल जाता है, वो बातभी ध्यानमें रखणी चाहिये पेसाव थोडी देर रखनेसें जो नीचे किसी किसमका जमाव होय तो समझणा खार खून पीप चरबी वगेरे कोईभी पदार्थ जाता है, आल्व्युमीन और सक्कर पेसावमें गया होय तो उसकी परिक्षा आंखोंके देखनेसें नही होती, खार पेसावके संग मिला भया होता है, तोभी वो जादा जब जाता है, तो पेसावकूं थोडी देर रहणे देनेसें वो खार पेसावके नीचे जमता है, पेसाव ऊपर रोगकी परिक्षा करते इतनी बातोंका ख्याल रखणा (१) पेसाव धूएके रंग जैसा होय तो उसमे खूनका संभव होता है, (२) पेसावका रंग लाल होय तो जानना उसमें खटास (एसिड) जाता है, (३) पेसावके ऊपरके फेण जलदी बैठे नहीं तो जानना उसमे आल्व्युमीन अथवा पित्त है, (४) पेसाव गहरे पीला रंगका जाता होय तो उसमें पित्त जाता है, एसा समझना (५) पेसाव गहरे भूरा या काला रंगका होय तो समझना रोग प्राणघातक है, (६) पेसाव पाणी जैसा बहोत होता होय तो मीठा पेसाव (डाया बीटिस) की शंका होती है, हिस्टीरियाके रोगमेंभी बहोत पेसाव होता है, बहोत आता है, तब पाणी जैसा होता है, पेसाव ऊपर हजारों चिमटिया लगे तो समझ लेणा मीठा पेसाव है, (७) जो पेसाव भैला और गुमला होय तो जाणना उसमें पीप जाता है, (८) पेसाव लाल रंगका और बहोत थोडा होय तो कलेजेका मगजका और बुखारके रोगकी शंका होती है, (९) पेसावमें खटास जादा जाती होय तो समझना पाचन क्रियामें हरकत पहुंची है, (१०) कामलेमें और पित्त प्रकोपमें पेसावमें बहोत पीलापणा और हरापणा होता

है, किसी वखत वो रंग एसा गहरा होजाता है, सो काले रंगकी शंका होती है, एसे पेसाबकूं हलाकर देखणेसें अथवा थोडा पाणी मिलाकर देखणेमें पेसाबकी पीलास मालम देगी (२) रसायण प्रयोगसें पेसाबमेंकी जुदी २ वस्तुओंकी परिक्षा करणेसें कितनीक धातोकी खबर होगी सो नीचे मुजब. (१) पित, पेसाबके रंग उपरसें पितका अनु-मान बांध सकते हैं, और रसायण रीतसें परिक्षा करणेसें विशेष खातरी होती है, पेसाबकी थोडी बूंद काचके प्यालेमें या रकेबीमें डालणा उसमें थोडा नाइट्रिक एसिड डालणा दोनो मिलणेसें हरा जायगी और पीछे लाल रंग होय तो पेसाबमें पित है एसा समझणा (२) युरिक एसिड वगेरे पेसाबका स्वाभाविक तत्व है, लेकिन वो जादा जाता होय तो उसकी परिक्षा इस मुजब है, पेसाबकूं एक रकेबीमें डालकर गरम करणा बाद नाइट्रिक् एसिडकी थोडी बूंद उसमें डालणी उसमें अगर पासे बंध जाय तो पेसाबमें युरिया जादा है एसा समजणा और पेसाब रकेबीमें डालकर उसमें नाइट्रिक एसिड डालकर तपाणेसें उसमेंसें पीले रंगका पदार्थ हो जाय तो जानना पेसाबमें युरिक एसिड जाता है, (३) आलब्युमीन) आलब्युमीन ये एक पौष्टिक तत्व है, जो वो पेसाबमें जानेलगे तो शरीर कम जोर होता है, पेसाबके परीक्षा करनेकी नली (ट्युब) आती है, उसमें दोतीन रुपेभर पेसाब लेणा उस नलीके नीचे डाक्टर लोक तो स्पीरिट (दारू) की चराक करते हैं, आर्य लोकोंने मोमबत्तीकी करणी उसमें पेसाबकूं गरम करणा पेसाब ऊकले तब उसके अंदर वो सोरेके तेजाबकी थोडी बूंद डालणी इसकी बूंदोसें पेसाब बद्दलोंकीतरे गुमला हो जायगा और गुमला भया पेसाब ठहरे पीछे अलब्युमीन नीचे बैठेगा और आंखोंसें दीखेगा लेकिन् पेसाब गरम करणेसें या गरम करकर उसमें सोरेकी तेजाबकी बूंदे नाखनेसें जो वो पेसाब गुमला नहीं होय अथवा गुमला होकर गुमलापणा मिट जाय तो समझनाके पेसाबमें आलब्युमीन नहीं जाता इस परिक्षासें गरम किया भया और नाइट्रिक एसिड मिला भया पेसाबमें जमा पदार्थ फोसफेट (क्षार) होयगा तो पीछा पेसाबमें मिल जायगा और आलब्युमीन होगा वो वैसाका वैसाही रहेगा. (४) स्युगर याने सक्कर—पेसाबमें जादा या कम पेसाबमें सक्कर जब जाती है, तब उस रोगकूं मीठे प्रमेहका भयंकर रोग कहणेमें आता है, पेसाब बहोत मीठा सुपेद पाणी जैसा होता है, उसमें सहत जैसी गंध आती है, तोभी रसायणिक रीतसें परिक्षा करणेसें सक्कर है, जिसकी बराबर खातरी होगी सक्करकी शंका होय तो पीछे पेसाबकूं गरमकर छाण लेणेसें जो उसमें आलब्युमीन होगा तो अलग हो जायगा. पेसाबकूं काचकी नलीमें लेकर उस पेसाबसें आधा लीकर पोटाश अथवा सोडा डालणा पीछे मोर थोथेके पाणीकी थोडी बूंदे डालणी वो नीलेथोथेकी बूंद बहोत हुसियारीसें एक बूंद पीछे दुसरी बुंद डालणी ओर नलीकूं हिलाते जाणा इसतरे करणेसें वो पेसाब आसमानी रंगका

आरपार दीखे जेसा होताहै पीछे उसकूं खूब उकालणा जो सक्कर होगी तो नलीके पींदे नीचे नारंगीके रंगजेसा लाल पीले पदार्थका जमाव होकर ठहरेगा और स्थिर भये वाद जरा लाल भूरे रंगका होगा जो एसा नहीं हो यतो समझणा पेसाबमें सक्कर नहीं जाती (५) खार और खटासकी परिक्षा (असिड और आल्कली) क्षार पेसाबमें) खारका भाग जितना जाणा चहिये उसमें जादा जाय तो रोग होताहैं, इस जादा खार जाणनेकी परिक्षा हलदीका पाणी करके उसमें सुपेद बलाटींग पेपर (स्याही चूसणेका कागज) भिजाणा डाकदर लोक हलदीका टींकचर लेते हें फेर उस कागजकूं सुकाकर उसमेंका एक टुकडा लेकर पेसाबमें भिजाणा जो पेसाबमें खारका भागजादा होगा तो इस पीले कागजका रंग बदलकर नारंगी अथवा विदामी रंग हो जायगा फेर इस कागजकूं पीछे कोईभी खटाईमें भिगाणेसें पीछा पीला रंग था जेसाका जेसा होजायगा इस पेसाबकी परिक्षा करणेकूं टरमेरिक पेपर इंगलससें आताहै. वो नहीं होय तो हलदीमे भिगाया भया पूर्वोक्त कागज लेणा अब खटाइ जादा जाती होय उसकी परिक्षा लिखते हैं ॥ इससेंभी रोग जादा होजाताहै, लीटमस पेपर तईयार आताहै अगर वों नहीं मिले तो बलोटिंग पेपर लेकर कोबिजके रसमे भिगाणा फेर सुकाणा तब उसका ब्ल्यू (आसमानी) रंग होगा उस कागजका टुकडा लेकर पेसाबमें भिगाणा जो खटास जादा भया तो उस कागदका रंग लाल होगा खटाईके जादा या कमपर कागदभी कमी वेसी लाल होगा.

(ऊ) मलपरिक्षा

मल याने दस्तपरसें भी कितनीक परिक्षा होसकतीं है और साध्य असाध्यकी भी परिक्षा होसकतीहै (१) वायुके दोषवालेका मल फेणवाला लूखा धुयेंके रंग जेसा और चोथा भाग पाणी जेसा होताहै. (२) पित्तके दोषवालेका मल हरा पीला गंधवाला ढीला तथा गरम होताहै, (३) कफदोषवालेका मल सुपेद कुछ सूका कुछभीजा तथा चिकणा होताहै (४) वातपित्तके दोषवालेका मल पीला और काला भीजा तथा अंदर गांठोवाला होता है (५) वातकफके दोष वाला मल भीजा काला तथा पपोटेवाला होताहै (६) पित्त कफके दोषवालेका मल पीला तथा सुपेद होताहै (७) त्रिदोषका मल सुपेद काला पीला ढीला तथा गांठोवाला होताहै (८) अजीर्णका दस्त दुरगंधवाला और ढीला होताहै (९) जलंदरवालेका दस्त बहोत दुरगंधवाला और सुपेद होताहै, (१०) मरणकी वखतका दस्त वहोत वद वो मारता लाल जरा सुपेद मांस जेसा तथा काला होताहै जिस रोगीका दस्त पाणीमें डूब जावे वोरोगी वचता नहीं पतला दस्त अपच्चेसें अथवा संग्रहणीके रोगसें पतले दस्त होतेहैं दस्तमें खुराकका कचा भाग दीखे तो समझणा बराबर पाचन भय

है, किसी वखत वो रंग एसा गहरा होजाता है, सो कांई रंगकी शंका होती है, ऐसे पेसाबकूं हलाकर देखणेसें अथवा थोडा पाणी मिलाकर देखणेसें पेसाबकी पीळाश मालम देगी (२) रसायण प्रयोगसें पेशाबमेंकी जुदी २ वस्तुवोंकी परिक्षा करणेसें कितनीक धातोकी खबर होगी सो नीचे मुजब. (१) पित्त, पेसाबके रंग उपरसें पित्तका अनुमांन बांध सकते हैं, और रसायण रीतसें परिक्षा करणेसें ठीक खातरी होती है, पेसाबकी थोडी बूंद काचके प्यालेमें या रकेबीमें डालणा उसमें थोडा नाइट्रिक एसिड डालणा दोनो मिलणेसें हरा जांबूली और पीछे लाल रंग होय तो पेसाबमें पित्त है एसा समझणा (२) युरिक एसिड वगेरे पेसाबका स्वाभाविक तत्व है, लेकिन वो जादा जाता होय तो उसकी परिक्षा इस मुजब है, पेसाबकूं एक रकेबीमें डालकर गरम करणा बाद नाइट्रिक् एसिडकी थोडी बूंद उसमें डालणी उसमें अगर पासे बंध जाय तो पेसाबमें युरिया जादा है एसा समझणा और पेसाब रकेबीमें डालकर उसमें नाइट्रिक एसिड डालकर तपाणेसें उसमेंसें पीले रंगका पदार्थ हो जाय तो जाणना पेसाबमें युरिक एसिड जाता है, (३) आलब्युमीन) आलब्युमीन ये एक पौष्टिक तत्व है, जो वो पेसाबमें जानेलगे तो शरीर कम जोर होता है, पेसाबके परीक्षा करनेकी नळी (ट्युब) आती है, उसमें दोतीन रुपेभर पेसाब लेणा उस नलीके नीचे डाक्टर लोक तो स्पीरिट (दारू) की चराक करते हैं, आर्य लोकोने गोमबत्तीकी करणी उसमें पेसाबकूं गरम करणा पेसाब ऊकले तब उसके अंदर वो सोरेके तेजाबकी थोडी बूंद डालणी इसकी बूंदोसें पेसाब बद्दलोंकीतरे गुमला हो जायगा और गुमला भया पेसाब ठहरे पीछे आलब्युमीन नीचे बैठेगा और आंखोंसें दीखेगा लेकिन् पेसाब गरम करणेसें या गरम करकर उसमें सोरेकी तेजाबकी बूंदे नाखनेसें जो वो पेसाब गुमला नहीं होय अथवा गुमला होकर गुमलापणा मिट जाय तो समझनाके पेसाबमें आलब्युमीन नहीं जाता इस परिक्षासें गरम किया भया और नाइट्रिक एसिड मिला भया पेसाबमें जमा पदार्थ फोसफेट (क्षार) होयगा तो पीछा पेसाबमें मिल जायगा और आलब्युमीन होगा वो वैसाका वैसाही रहेगा. (४) श्युगर याने सक्कर–पेसाबमें जादा या कम पेसाबमें सक्कर जब जाती है, तब उस रोगकूं मीठे प्रमेहका भयंकर रोग कहणेमें आता है, पेसाब बहोत मीठा सुपेद पाणी जैसा होता है, उसमें सहत जैसी गंध आती है, तोभी रसायणिक रीतसें परिक्षा करणेसें सक्कर है, जिसकी बराबर खातरी होगी सक्करकी शंका होय तो पीछे पेसाबकूं गरमकर छाण लेणेसें जो उसमें आलब्युमीन होगा तो अलग हो जायगा. पेसाबकूं काचकी नलीमें लेकर उस पेसाबसें आधा लीकर पोटाश अथवा सोडा डालणा पीछे मोर थोथेके पाणीकी थोडी बूंदे डालणी वो नीलेथोथेकी बूंद बहोत हुसियारीसें एक बूंद पीछे दुसरी बुंद डालणी ओर नलीकूं हिलाते जाणा इसतरे करणेसें वो पेसाब आसमानी रंगका

करणा जो होजरीकी हरकतसें होती होय तो उसहीका इलाज करणा इसवास्ते उलटीका कारण निश्चै करणेकूं वहोत पूछताछ करणेकी जरूरी है, इसतरे सब रोगोंकी निश्चे करणी बुखार अजीर्णसें आया होय और इलाज दुसरा करणेमें आवे तो जलदी आराम नही होता बुखार अजीर्णसें भया है, या और कोई कारणसें उसका निर्णय जैसें दुसरे लक्षणों वगेरेसें मालम देता है, तैसें रोगी दो तीन दिन पहले क्या किया क्या खाया वो पूछणेसें तुरत निर्णय हो जाती है, वहोतसें रोग चिंता भय क्रोध काम विकार वगेरे मनसंबंधी कारणोंमेंसें पैदा होता है, और वो शरीरके लक्षणोपरसें बराबर मालम नहीं देता इसमें पूछणेकी बहोत जरूरी है, शिर दुखणेके वहोत कारण है, जैसें के शिरमें गरमी दस्तकी कबजी धातूका जाणा प्रदर वगेरे वहोतसें रोग शिर दुखणेका कारण होता है, शिर दुखणेके इन कारणोकों तलास करणेमें नाडी परिक्षा कितनेक दरजे काम करती है, लेकिन् पक्का अनुभव होय तो बाकी परिक्षा कोईभी काम नहीं देती फकत रोगीकूं पूछणा काम देता है, तेरा शिर किसतरे कबसे दुखता है, इत्यादिक ऊपर लिखे कारणोंसें शिर दुखता होय तो अमोनिया सुंघाणेसें बिलकुल फायदा नहीं होता फेर दांतके या कानके रोगसेंभी शिर बेतरे दुखता है, ये बातभी विरले लोक समझते है, कान वहता होय उससें शिर दुखता है, ये बात रोगी स्वप्नेमेंभी नही जाणता कान दुखणेका हालभी रोगीकूं विगर पूछै क्या खबर पडै इत्यादि अभ्यंतर सरब हकीगत वैद्य पूछै या रोगी अपणे आपही वैद्यकूं अवलसें आखरीतक हकीगत कह देवै, ये सब हकीगत विगर कहे कभी खबर पडणीही नहीं है, केइ इक मूर्ख लोक वैद्यकी परीक्षा लेनेकूं हाथ लंबा करते हैं, आप देखो नाडीमें क्या रोग है, एसा नहीं करणा आप अपणी सर्व हकीगत कह देणी चाहिये और वैद्योकू चहिये सो नाडी देखणेका खाली आडंबर रचके रोगीकूं भरमाणा और डराणा नहिं चहिये उसकूं धीरजसें पूछ २ कर रोगकी असली पहिचान कर लेणी चहिये रोगकी परिक्षा पूरी कराणेकूं कोई नया या अजाण रोगी आवै तो उसकूं थोडी देर बैठ देणा वो स्वस्थ हो जाय बाद उसका चहरा आंख जीभ वगेरे देखना पीछे दोनों हाथोंकी नाडी देखणी पीछे उसके मूंसें हकीगत सुणनी पीछे उसके शरीरका जो जो भाग तपासणा होय सो देखणा फेर हकीगत पूछ अछीतरे निश्चयकर फेर रोगीकी जाती रुजगार रहणेका ठिकाणा ऊमर कोइ व्यसन होय सो अथवा पहली कोइ रोग भया होय, क्या क्या दवा कैसें २ ली क्या खाया पीया कैसें फायदा या नुकशान भया इस उपरांत रोगीके मावापका हाल शरीर संबंधी व्यवस्थासें वाकब होणा क्योंके वहोतसें रोग उनोके होय सो पुत्रोंके होता है, स्वरपरिक्षाभी रोगीके मरणे जीणे कष्ट रहणा गरम शरद वगेरे रोगोंकी परिक्षा है, सो इहां नहीं लिखा हे, स्वरोदय देखणा, साध्यासाध्यकी परिक्षा घल

, बहोतसें रोग चिंता भय क्रोध काम विकार वगेरे मनसंबंधी
और वो शरीरके लक्षणोपरसें बराबर मालम नहीं देता इसमें
, शिर दुखणेके बहोत कारण है, जैसें के शिरमें गरमी दस्तकी
र वगेरे बहोतसें रोग शिर दुखणेका कारण होता है, शिर
लास करणेमें नाडी परिक्षा कितनेक दरजे काम करती है,
तो बाकी परिक्षा कोईभी काम नही देती फकत रोगीकूं
शिर किसतरे कबसे दुखता है, इत्यादिक ऊपर लिखे कार
अमोनिया सुंघाणेसें बिलकुल फायदा नही होता फेर दांतके
बेतरे दुखता है, ये बातभी बिरले लोक समझते है, कान
दुखता है, ये बात रोगी स्वप्नेमेंभी नही जाणता कान दुखणेका
क्या खबर पडै इत्यादि अभ्यंतर सरब हकीगत वैद्य पूछे
द्यकूं अवलसें आखरीतक हकीगत कह देवै, ये सब हकीगत
पडणीही नहीं है, केइ इक मूर्ख लोक वैद्यकी परीक्षा
हैं, आप देखो नाडीमें क्या रोग है, एसा नहीं करणा आप
देणी चाहिये और वैद्योकूं चहिये सो नाडी देखणेका खाली
रमाणा और डराणा नहिं चहिये उसकूं धीरजसें पूछ २ कर
कर लेणी चहिये रोगकी परिक्षा पूरी कराणेकूं कोई नया या
उसकूं थोडी देर बैठ देणा वो स्वस्थ हो जाय बाद उसका
देखना पीछे दोनों हाथोंकी नाडी देखणी पीछे उसके मूंसें
उसके शरीरका जो जो भाग तपासणा होय सो देखणा
रे निश्चयकर फेर रोगीकी जाती रुजगार रहणेका ठिकाणा
सो अथवा पहली कोइ रोग भया होय, क्या क्या दवा
पीया कैसें फायदा या नुकशान भया इस उपरांत रोगीके
बंधी व्यवस्थासें वाकब होणा क्योंके बहोतसें रोग उनोंके होय
परिक्षाभी रोगीके मरणे जीणे कष्ट रहणा गरम शरद वगेरे
हां नहीं लिखा है, स्वरोदय देखणा, साध्यासाध्यकी परिक्षा बल

नहीं आंतरेमें पित्त वढणेसें भी दस्त पतला और गरम आताहै अतिसार और हैजेमें दस्त पाणी जैसा पतला आताहै क्षयके रोगमें जो बिगर कारण दस्त पतला आवे तो समझणाके रोगी बचणेका नहीं (करडा दस्त–हमेश करडे करडा दस्त आवे तो कबजियतकी निशाणी समझणी हरसके रोगीकूं हमेस साफ दस्त आता है उसमें मसानकी चमडी सफरेका भाग छिल जाणेसें उसमेंसे खून आताहै, पेटमें या आंतरेमें गांठ रहे तो उससें हमेस दस्तकी कबजी रहतीहै कलेजेमें पित्तकी क्रिया बराबर नहीं चले और चहिये जितना पित्त पैदा नहीं होय अथवा मलकूं आगे चलाणेवाले आंतरेमें तंग और ढीला होनेकी चहिये जितनी ताकत नहिं होनेसें दस्त करडा आता है, खूनवाला दस्त–दस्तकेसंग मिला भया खून अथवा आम (पीप) पडे तो समझनाके मरोडा भया है, हरसमें तथा रगतपित्तके रोगमें खून दस्तमें अलग गिरता है, याने दस्तके पहले या पीछे गिरता है, धार होकर, कलेजाका वरम (यकृतका पकणा) जिसमें खून दस्तके रस्ते बहोत गिरे और पीप एकदम आणे लगे तो समझणाके कलेजा पककर आंतरेमें फूटा है, जो दस्त धोयेभये मांसके पाणी जैसा आवे उसमें जरा खून होय या नहीं होय लेकिन काले छोतूं जैसा होय और बहोत बदबो गंध मारे तो समझणा आंतरा सडने लगा है, दस्तका रंग सुपेद होय तो समझना कलेजेमेंसें पित्त चहिये जितना आंतरेमें आता नहीं है, कामला पित्ताशय तथा कलेजेके रोगमें एसा दस्त आता है, हैजेमें तथा वडे अजीर्णमें दस्त सुपेद कांजी जैसा अथवा चावलोंके धोवण जैसा आता है. काला अथवा हरा दस्त आवे तो समझणा कलेजेमें रोग तथा पित्तका विकार है, आंवला गूगल तथा लोहकी बनावटकी दवाओं खानेसे दस्त काला आता है, ऐसे कारणोंको देखकर काले दस्तसें डरणा नहीं.

प्रश्नपरिक्षा ४.

रोगीकूं कितनीक हकीगत पूछनेसें रोगोंकी वाकबकारी होती है, एसी वाकबकारी पिछली लिखी परिक्षासेंभी नहिं हो सकती है, बहोतसी वखत एसा हाल बणता है, सो रोगीकूं पूछणेसेंभी रोगका यथार्थ हाल मालम नहीं देता अथवा एसी हालतपर बहोतसा यकीनभी नहीं रखना, तोभी दरदीकी अगली पिछली हकीगत जांननी जरूर चहिये कारण पूछनेसें कोइ २ नई हकीगतभी निकल आती है, उसमेसें रोगकी पैदासका कारण पता मिल सकता है वैद्योकों बहोतही फायदेबंद है, पूछ २ कर खूब निश्चय कर लेणा चहिये इस उपरांत बहोतसी वाते रोगीके पास रहणेवाले अथवा सहवासियोकों पूछके निश्चय करणा चाहिये जैसें रोगीकूं उलटी होती है, तो उलटी किस कारणसें भई वो कारणकूं पूछकर कारणकूं वंद करणा चहिये उलटीकूं वंध करणेकी जरूरी नहीं जो पित्तसें उलटी होती होय तो पित्तकूं दवाणा अजीर्णसें होती होय तो अजीर्णका इलाज

पांचमा प्रकाश ५

दवायोंका गुण तथा औगुण.

किरण १ पहली.

औषधीका प्रयोग देशी दवा.

यतः जन्मतोयस्यसञ्जाता युगेशान्तिः प्रभावतः सश्रीशांतिजिनाधीशः करोतुसुखम-क्षतं १ ग्रंथस्यनिर्विघ्नार्थमध्यमंगलंकृतं ॥

जंगलमें पैदाभई अनेक वनस्पति वजारमें विकती अनेक दवायें तथा फूंकी भई धातुओंकी भस्मी और इनोंसे वनती हजारों दवाइयां इनसबोंका नाम औषधी याने दवा है, इस ग्रंथमें जो जो वनस्पती या दवायोंका सग्रह है सो सव साधारण है जिस दवाकूं बनाते वहोत ज्ञान ओर चतुराई चहिये वहोत समय चहिये और वहोत धन चहिये एसी वडी दवा शास्त्रोक्तरसविद्याशाला (लेवोरेटरी) सिवाय दुसरी जगे यथास्थित वणसके ये असंभवित वात है इस वास्ते साधारण इलाजीतेसें घरगृहस्थी आप वनासके अथवा वजारमेंसें मंगाकर उपयोगमें लेसके एसी दवायोंका संग्रह इसमें किया गया है इसी तरे साधारण अंग्रेजी तथा होमियोपेथिक दवा जोकी सव जगे लोक वरतते हैं, उनोंकाभी संक्षेप उप-योग इस ग्रंथमें लिखा है.

(अरिष्ट-आसव) पाणी काढा अथवा पतले प्रवाही पदार्थमें औषध डालकर मद्दीकेवर तणमें भरके कपड मट्टीसें मू वंधकर एक दो पखवाडेतक धरे रहणे दे जव खंमीर पैदा होजाय तव अरिष्ट–आसव वनता है दवायोंकों विगर उकालेभी धरणेसें आसव तइयार होता है और जादातर तो लोकउकालकर दुसरी दवायें पीछै डालकर धरते है तव अरिष्ट तइयार होता है जहां वजन नही लिखा होय उहां इस प्रमाण लेते हैं अरिष्ट वास्ते उकालीकी दवा ५ सेर सहत ६। सेर गुड १२॥ सेर पाणी ३२ सेर आसववास्ते चूर्ण १। सेर, वाकी ऊपर मुजव, पीणेकी मात्रा दोनोंकी ४ तोला, यंत्र चढाकर अर्क टप-काते हैं, सो सराप (इसप्रीट) कहलाता है, दवायोंकू एक दिन भीगाकर जंत्र चढाके भभका खेंचते है, वो अर्क होता है, दयाधर्मवालेके अर्क पीणे योग्य भक्ष है, अरिष्ट आसव सराप अभक्ष है, रोगादि कारणे छछडी चार आगार है ॥ वावीस अभक्ष खाणेसे वचे उसकूं पूरा जैन समझणा.

(अवलेह) जिस वस्तुकी अवलेही वणाणी होय चाटी जाय सो अवलेही कहलाती है, उस वस्तुका निजरस लेणा अथवा काढावणाकर उसकू छाणलेणा पीछे उसपाणीकू धीरी आंचसें जाडा पडणे देणा फेर उसमें सहत गुड अथवा सक्कर मिश्री अथवा दुसरी दवा-भी मिलाते है चाटणेकी मात्रा० ॥ सें २ तोला.

परसेंभी होती है, मृत्युके चिन्ह संक्षेपसे काल आनेसें है, कानोंमें दोनों अंगुली देनेसें गरडाट नहीं होय तो प्राणी मर जाता है और मस्तकके अंदरमें पोले जब श्रीअग्नीका साक्षनका होता है, सो नहीं होवे और मस्तकके भीतरसें रंग २ का आकाशमें बरसता दिखता है, सो नहीं दीखे तो मृत्यु जाननी इत्यादिक ना छाया पुरुषमें अथवा काचमें देखणेसें मस्तक वगेरे नहिं दिखाइ देवे तो मृत्यु जाननी नेतसुद ४ कूं चंद्रश्वर नहीं चले प्रभात समे तो नो महीनेमें मृत्यु जाननी इत्यादि विस्तार ग्रंथ वढ जाय इसवास्ते इहां नहीं लिखा है, बाकी छठे प्रकाशके निदानमें सामान्य सूत्र परिक्षा लिखेंगे. इति श्रीमज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीते उपाध्यायश्रीरामऋद्धिसारगणि-विरचिते वैद्यदीपकग्रंथे अष्टविधरोगपरिक्षाविवरणे चतुर्थः प्रकाशः ॥

पांचमा प्रकाश ५

दवायोंका गुण तथा औगुण.

किरण १ पहली.

औषधीका प्रयोग देशी दवा.

यतः जन्मतोयस्यसञ्जाता युगेशान्तिः प्रभावतः सश्रीशांतिजिनाधीशः करोतुसुखम-क्षतं १ ग्रंथस्यनिर्विघ्नार्थमध्यमंगलंकृतं ॥

जंगलमें पैदाभई अनेक वनस्पति बजारमें विकती अनेक दवायें तथा फूंकी भई धातुओंकी भस्मी और इनोंसे बनती हजारों दवाइयां इनसबोंका नाम औषधी याने दवा है, इस ग्रंथमें जो जो वनस्पती या दवायोंका संग्रह है सो सब साधारण है जिस दवाकूं बनाते बहोत ज्ञान ओर चतुराई चहिये बहोत समय चहिये और बहोत धन चहिये एसी बडी दवा शास्त्रोक्तरसविद्याशाला (लेबोरेटरी) सिवाय दुसरी जगे यथास्थित बणसके ये असंभवित बात है इस वास्ते साधारण इलाजीतेसें घरगृहस्थी आप बनासके अथवा बजारमेसें मंगाकर उपयोगमें लेसके एसी दवायोंका संग्रह इसमें किया गया है इसी तरे साधारण अंग्रेजी तथा होमियोपेथिक दवा जोकी सब जगे लोक वरतते हैं, उनोंकाभी संक्षेप उप-योग इस ग्रंथमें लिखा है.

(अरिष्ट-आसव) पाणी काढा अथवा पतले प्रवाही पदार्थमें औषध डालकर मद्दीकेवर तणमें भरके कपड मद्दीसें मूं बंधकर एक दो पखवाडेतक धरे रहणे दे जब खंभीर पैदा होजाय तब अरिष्ट--आसव बनता है दवायोंकों विगर उकालेभी धरणेसें आसव तइयार होता है और जादातर तो लोकउकालकर दुसरी दवायें पीछे डालकर धरते हैं तब अरिष्ट तइयार होता है जहां वजन नहीं लिखा होय उहां इस प्रमाण लेते हैं अरिष्ट वास्ते उकालीकी दवा ५ सेर सहत ६। सेर गुड १२॥ सेर पाणी ३२ सेर आसववास्ते चूर्ण १। सेर, वाकी ऊपर मुजब, पीणेकी मात्रा दोनोंकी ४ तोला, यंत्र चढाकर अर्क टप-काते है, सो सराप (इसप्रीट) कहलाता है, दवायोंकूं एक दिन भीगाकर जंत्र चढाके भभका खेंचते है, वो अर्क होता है, दयाधर्मवालेके अर्क पीणे योग्य भक्ष है, अरिष्ट आसव सराप अभक्ष है, रोगादि कारणे छछडी चार आगार है ॥ बावीस अभक्ष खाणेसे बचे उसकूं पूरा जैन समझणा.

(अवलेह) जिस वस्तुकी अवलेही वणाणी होय चाटी जाय सो अवलेही कहलाती है, उस वस्तुका निजरस लेणा अथवा काढाबणाकर उसकूं छाणलेणा पीछे उसपाणीकूं धीरी आंचसें जाडा पडणे देणा फेर उसमें सहत गुड अथवा सक्कर मिश्री अथवा दुसरी दवा-भी मिलाते हैं चाटणेकी मात्रा० ॥ सें २ तोला.

परसेंभी होती है, मृत्युके चिन्ह संक्षेपमें काल ज्ञानमें है, कानोंमें दोनों अंगली देनेसे गरडाट नहीं होय तो प्राणी मर जाता है और मस्तकके अंदरमें खोले जब बीजलीका साक्षयका होता है, सो नहीं होवे और मस्तकके बीचमें रंग २ का आकाससें वरसता दिखता है, सो नहीं दीखे तो मृत्यु जाणनी इत्यादिक ना छाया पुरुषसें अथवा काचमें देखणेसें मस्तक वगेरे नहिं दिखाइ देवे तो मृत्यु जाननी चैतसुद ४ कूं चंद्रस्वर नहीं चले प्रभात समे तो नो महीनेमें मृत्यु जाणणी इत्यादि विवरण ग्रंथ वढ जाय इसवास्ते इहां नहीं लिखा है, बाकी छठे प्रकाशके निदानमें साध्यासाध्य खूब परिक्षा लिखेंगें. इति श्रीमज्जैनधर्माचार्यसंगृहीते उपाध्यायश्रीरामऋद्धिसारगणि-विरचिते वैद्यदीपकग्रंथे अष्टविधरोगपरिक्षाविवरणे चतुर्थः प्रकाशः ॥

परसेंभी होती है, मृत्युके चिन्ह संक्षेपसे कहते आगमें हैं, कानोंमें दोनों अंगुली देनेसे गरडाट नहीं होय तो प्राणी मर जाता है और मस्तकके ऊपर गोल जब बीजलीका साहायका होता है, सो नहीं होवे और मस्तकके भीतरसें रंग २ का आकाससें वरसता दिखता है, सो नहीं दीसे तो मृत्यु जांणनी इत्यादिक या छाया पुरुसें अथवा काचमें देखणेसें मस्तक वगेरे नहिं दिखाई देवे तो मृत्यु जानणी नेत्रपुर ४ कूं चंद्रस्वर नहीं चले प्रभात समे तो नो महीनेमें मृत्यु जाणणी इत्यादि विवरण ग्रंथ वढ जाय इसवास्ते इहां नहीं लिखा है, बाकी छट्ठे प्रकाशके निदानमें साध्यासाध्य खूब परिक्षा लिखेंगे. इति श्रीमज्जैनधर्माचार्यसंगृहीत उपाध्यायश्रीरामऋद्धिसारगणि- विरचिते वैद्यदीपकग्रंथे अष्टविधरोगपरिक्षाविवरणे चतुर्थः प्रकाशः ॥

पांचमा प्रकाश ५

दवायोंका गुण तथा औगुण.

किरण १ पहली.

औषधीका प्रयोग देशी दवा.

यतः जन्मतोयस्यसञ्जाता युगेशान्तिः प्रभावतः सश्रीशांतिजिनाधीशः करोतुसुखमक्षतं १ ग्रंथस्यनिर्विघ्नार्थमध्यमंगलंकृतं ॥

जंगलमें पैदाभई अनेक वनस्पति बजारमें विकती अनेक दवायें तथा फूंकी भई धातुओंकी भस्मी ओर इनोंसे बनती हजारों दवाइयां इनसबोंका नाम औषधी याने दवा है, इस ग्रंथमें जो जो वनस्पती या दवायोंका संग्रह है सो सब साधारण है जिस दवाकूं बनाते बहोत ज्ञान ओर चतुराई चहिये बहोत समय चहिये और बहोत धन चहिये एसी बडी दवा शास्त्रोक्तरसविद्याशाला (लेबोरेटरी) सिवाय दुसरी जगे यथास्थित बणसके ये असंभवित बात है इस वास्ते साधारण इलाजीतेसें घरगृहस्थी आप बनासके अथवा बजारमेंसें मंगाकर उपयोगमें लेसके एसी दवायोंका संग्रह इसमें किया गया है इसी तरे साधारण अंग्रेजी तथा होमियोपेथिक दवा जोकी सब जगे लोक वरतते हैं, उनोंकाभी संक्षेप उपयोग इस ग्रंथमें लिखा है.

(अरिष्ट-आसव) पाणी काढा अथवा पतले प्रवाही पदार्थमें औषध डालकर मटीकेबरतणमें भरके कपड मटीसें मूं बंधकर एक दो पखवाडेतक धरे रहणे दे जब खंभीर पैदा होजाय तब अरिष्ट–आसव बनता है दवायोंकों विगर उकालेभी धरणेसें आसव तइयार होता है और जादातर तो लोकउकालकर दुसरी दवायें पीछे डालकर धरते हैं तब अरिष्ट तइयार होता है जहां वजन नहीं लिखा होय उहां इस प्रमाण लेते है अरिष्ट वास्ते उकालीकी दवा ५ सेर सहत ६। सेर गुड १२॥ सेर पाणी ३२ सेर आसववास्ते चूर्ण १। सेर, बाकी ऊपर मुजब, पीणेकी मात्रा दोनोंकी ४ तोला, यंत्र चढाकर अर्क टपकाते हैं, सो सराप (इसप्रीट) कहलाता है, दवायोंकूं एक दिन भीगाकर जंत्र चढाके भमका खेंचते है, वो अर्क होता है, दयाधर्मवालेके अर्क पीणे योग्य भक्ष है, अरिष्ट आसव सराप अभक्ष है, रोगादि कारणे छछडी चार आगार है ॥ बावीस अभक्ष खाणेसे बचे उसकूं पूरा जैन समझणा.

(अवलेह) जिस वस्तुकी अवलेही वणाणी होय चाटी जाय सो अवलेही कहलाती है, उस वस्तुका निजरस लेणा अथवा काढावणाकर उसकूं छाणलेणा पीछे उसपाणीकूं धीरी आंचसें जाडा पडणे देणा फेर उसमें सहत गुड अथवा सक्कर मिश्री अथवा दुसरी दवाभी मिलाते हैं चाटणेकी मात्रा० ॥ सें २ तोला.

(कल्क) गीली वनस्पतीकूं शिलापर पीसकर अथवा सूकीकूं पाणी देके पीसणा लुग-दीकरणी जिसकूं गुसलगीन लऊक कहते है, इसकूं संस्कृतमें कल्क इसकी मात्रा खा-णेकी १ तोलेकी है.

(क्वाथ) उकालीभी कहते हैं, १ तोला औषधीमें १६ तोला पाणी उसकूं मट्टी या क-लीके पात्रमें उकालणा आठमें भागका पाणी रखणा और छाणलेणा यहांन करके उका-लणेकी औषधीका वजन एक वखतकी ४ तोलेकी है क्वाथ थोडानरमकरणा होय तो चोथा हिस्सा पाणी रखणा और एकवेर उकालेबाद कूचा पिछाडी छाणे बादरहे, उसका दुसरी वेर फेर सांझकूं उकाला इसी तरे किया जावे वो परक्वाथ कहलाता है, लेकिन सांझकूं उकाले भये क्वाथका कूचा दुसरे दिनवासी उपयोगमें लेणा नहीं फजरका सांझकूं लेणा नाताकतकूं क्वाथका जादा पाणी देणा नहीं, नये ज्वरमें पाचन क्वाथ अर्द्धानमें रखकर देणा, कुटकी आदिग्राग पदार्थकाक्वाथ ज्वरपके बाददेणा, इसकूं काढा जोसि-दाभी कहते है ॥

(कुरला) दवाकूं उकालकर पाणीका अथवा रातकूं भिगाये भये ठंढे हिमका फिट-कडी नीलाथोथा वगेरे यूंही सादे पाणीमें मिलाकर मुखपाक रोगमें कुरला करणेमे आवे उसकूं संस्कृतमें गंडूप कहते है, त्रिफला रांग तिलकंटा चंपेलीके पत्ते दूध घी सहतमें.

(गोली) कोईभी दवाकूं अथवा सत्वकूं (घन अथवा एकस्टाकट) सहत नींबूका रस आदेकारस पानकारस गुड अथवा गुगलकी चासणीमे डालकर गोलियां बनाई जाती है, छोटी, वडीकूं तो मोदक कहते हैं, गूगल त्रिफलाके क्वाथमे सुधता है शिलाजीतमीइसीमें.

(घी-तथा तैल) जिस जिसका घी अथवा तैल वणाणा होय उसका स्वरस अथवा दवायोंका पूर्वोक्त काढा याकल्क उससें चो गुणा घी अथवा तैल लेकर घी तेलसें चो-गुणा पाणी अथवा दूध गोमूत्र लेणा, सूकी औषधीकूं १६ गुणा पाणीमें उकालकर चतु-र्थांस रखणा, क्वाथसे चो गुणा घी तथा तेल लेणा, गीलीकी चटणी डालणी, सबकूं उकालते पाणी जलजाय औषधका भाग पक्कालाल होजाय घी अलग होजाय तब ऊतार ठंढा कर छाणलेणा, तैलमें तो झाग आते वंध होजाय तब तैल तइयार भया समझ झटनीचे उतार लेणा, घीमें झाग आतेही उतार लेणा ये परिक्षा है, बाकी घाणीमें १ पाताल यंत्रादिक २ सेभी वस्तुओंका तैल निकलता है, गुरुगम शास्त्र प्रमाण है, पीणेकी मात्रा ४ तोला.

(चूर्ण) सूकी दवाइयोंकों सामलकर कूट कपडछाण करै उस चूर्णकी मात्रा ०॥ सें १ तोला.

(धूआं–धूप) अंगारमें दवा सिलगाकर जेसें घरकूं धूप देकर हवा साफ करी जाती है, तेसें शरीरपर कितनेक रोगोंमें चमडीकूं दवाका धूआंदेणेमें आता है अंगारेपर दवा डाल उसपर खाट बिछाकर उसपर वैठकर मूंतो उघाडा रखणा और सब वदन

कपडेसें एसा खाट समेत चो तरफसे ढकणा सो धूआं बाहर नहीं निकलणे पावै अंगपर लेणा.

(धूम्रपान) जेसें दवाका धूंआं वदनपर लिया जाता है तेसें दवाकूं हुक्केमें भरकर मूसे यानाकसें पीते हैं, फिरंग रोगकी गठियापर.

(नस्य) नाकमें घी तेल के संग भूकी सूंघणी उसकूं नस्य कहते हैं.

(पान) कोईभी दवाकूं ३२ गुणा अथवा उससें भी जादा पाणीमें उकालकर आधा पाणीवाकी रखणेमें आवै उसकूं पिये सो पान कहलाता है, (पुटपाक) कोईभी हरी वनस्पतीकूं पीसकर गोलावणाकर उसकूं वडयाएरंडीके याजामूनके पांनमें लपेट ऊपर कपडमट्टीका थर देकर थेपडी छाणोके भूकेमें सिलगाकर धरदेणा गोलेकी मट्टी लाल होणेसे निकालकर मट्टी दूर कर रस निचोडलेणा वनस्पती सूकी होय तो जलमें पीस गोला करणा इस रसकूं पुटपाक कहते हैं, उसके पीणेकी मात्रा २ सें ४ तोलेतक

(पंचांग) मूलयाने जड पान फल फूल छाल इसकूं पंचांग कहते हैं

(फलवर्त्ती) योनि अथवा गुदाके अंदर जाडी बत्ती दवाकी देणीसो इसमें घी अथवा दवाका तेल थासाबुन वगैरे दिया जाता है.

(फांट) एक भाग दवाके चूर्णकूं आठ भाग गरम पाणीमें कितनेक घंटोंतक भिगाकर पीछे उस पाणीकूं दवा मुजब पीणा, ठंढे पाणीमे १२ घंटेतक भीजणेसें फांट तइयार होता है, इसकी मात्रा ५ सें १० तोलातक.

(वस्ति) पिचकारीमें प्रवाही दवा भरकर मलया मूत्रके ठिकाणे दवा चढाणी वो खाणेके दवामाफक फायदा करती है, इसवास्ते असर होणेवास्ते पिचकारी मारफत दूणी दवा चढाणी.

(भावना) दवाके चूर्णकूं दुसरा रस पिलाणा उसकूं भावना कहते हैं, एकवेर रसमें घोटकर सुकाणा तव एक भावना कहलाती है.

(वाफ) वाफ वहोत तरेलीजाती है, वहोतसे सेक और वांधणेकी दवाभी वफारेका काम देती है, एकेलापाणी अथवा कोइभी चीज डालके उकाला भयापाणी सांकडे मूंके वरतणसे लेणा विधि गरम पाणीमें पीछे लिखी है.

(वंधेरण) पान वैगेरे कोईभी वनस्पतीकूं गरम करके शरीरकी दुखती जगेपर वांधणा उसकूं वंधेरण कहते हैं.

(मुरब्बा) हरडे आमला वगैरे जिस चीजका मुरब्बा वणाणा होय उसकूं उवालकर करडी वस्तु होय तो फिटकडी वगैरे के ते जावसें नरमकर धोकर दुगणी या तिगुणी खांडया मिश्रीके चासणीमें डुवाकर रखणा मधुपक्क हरडे वैगेरे उसकुं मुरब्बा कहते हे.

(मोदक) वडी गोलीकूं मोदक लडू कहते हैं, वो मेथी सूंठपाक वगैरेका गुड खांड मिश्री वगैरेकी चासणीकर बांधणेमें आवे सो.

(मंथ) दवाके चूर्णकूं दवासें चोगुणे पाणीमें डालणा हिलाकर या मथकर छाणकर पीणा सो.

(यवागू–कांजी) अनाजके आटेकूं छगुणे पाणीमें उकालणा जाडा सो

(लेप) सूकी दवाके चूर्णकूं अथवा गीली वनस्पतीकूं पाणीमें पीस लेप करणेमें आवेसो, लेप दोपहरकूं करणा ठंढीवखत नहीं करणा रगतपित्तके सूजन तथा दाह खूनविकारकूं हर कोईभी वखत करणा.

(लूपरी पोटिस) गहूंकाआटा अलशी नींबकेपत्ते कांदा वगैरेकूं जलमें वाफकर अथवा गरम पाणीमें मिलाकर लुगदीकर सोजा तथा गडगूमडपर बांधे सो

(शेक) शेक वहोत तरेसें किये जाता है, कोरे कपडेके गोटेका रेतीका इंटका गरमपाणीका भरीकाचकीसीसी वगैरेका और गरम पाणीमें डुबाकर निचोये भये फलालीण उनूं कपडेका अथवा वाफ दिये कपडेका पाणीके वाफका सेक पहली लिखाभी है, तोभी लिखते हैं, तपेलीमें पाणी तथा अफीमकाडोडा वगैरे डाल पाणीकूं ऊकालणा तपेलीपरचालणी ढकणी चालणीपर फलालीणके कपडेका टुकडा धरणा उसपर दुसरा वरतण थाली वगैरे ढकदेणा चालणीके छेदोंमेंसें फलालीणकूं वाफ लगेगा उसकुं दुखते जगे सहे जाय ऐसा धरणा.

(स्वरस) कोईभी गीली वनस्पतीकूं पीसकर जरूर पडेतो थोडा जल मिलाकर रस निकालणा सो जो गीली वनस्पती नहीं मिले तो सूकी दवा अठगुणे पाणीमें उकालकर चोथा भाग रखणा अथवा २४ घंट पाणीमें भिगाकर रखणेसें पीछे मसलकर छाण लेणा, गीली वनस्पतीके स्वरसके पीणेकी मात्रा २ तोला सूकीदवाके स्वरसकी ४ तोला वालककूं ॥ तोला.

(हिम) औषधके चूर्णकूं छ गुणे जलमें रखकर रातभर भिजाणा फजरमें छाणलेणा उसकूं हिम कहते हैं.

(क्षार) जव वगैरे वनस्पतीमेंसें जवखार मूलीका क्वारपाठेका आंधी झाडेका इत्यादि वहोत चीजोंका खार करणेकी रीत इस मुजव है, वनस्पतीकूं मूलमेंसें निकालकर पंचांग जलाकर राखकर पीछे चोगुणे जलमें हिलाकर एक मट्टीके वरतणमें एकदिन रखकर ऊपरका नीतरा जल कपडेसें छाण लेणा उस जलकूं फेर हिलाणा आखरक्षार नीचे सूककर जम जायगा.

(सत) गिलोय वगैरेका गीलीकूं कूट जलमें मथकर एक पात्रमें जमणे देणा वाद ऊपरका जल धीरेसें निकाल डालणा पीछे नीचैजोसुपेदरहजाय सो, सूके वाद सत जमता है.

(सिरका) अंगूर जामून इक्षु वगैरेका रस निकाल थोडा नोसादर डाल धूपमें धरणा सडवडणेपर तीन दिनसे या सात दिनसें वोतल भर धरदेणा.

(गुलकंद) गुलाबके फूलकी पंखडिया या सेवतीके जिसमे मिश्री बुरकाकर थरपर थर देणा ढककर धरदेणा जब फूल गलके एक मेक हो जावे महीने दो महीनेसें वो गुलकंद होता है.

(जुलाब) पहिली तीन दिन तैलादिकका मर्दन कराणा वायुके कोठेवालेकूं दस्त नहीं लगता इसवास्ते ४ तोला घी या औषधीका बणाया घी तेल दिन ७ पिलाणा पित्त वालेकूंभी पिलाणा कफवालेकुं जादा मालस कराणा स्नेहभी पिलाणा बाद कोठा नरम करणेकूं सूंफ गुलकंद या मुनक्का जीरा सूंफ सोनामुखी निशोतकी छाल गुलाबकली दोदो रुपे भर लेकर ६ पुडीकर १६ तोला पाणीमें उकालकर आधारहै तब उतार ठंढाकर २ तोला बूराडालकर दोनुं वखत दिन तीन पिलाणा, ये मुंजस है, खीचडी या दालभात चंदलियेका सागविनामिरचका खाणा, चोथेदिन काली निशोतका चूर्ण तोलेभर चैत्रमहीनेमें सींधा निमक ५ मासे कफ तथा वायु रोगमेंभी निमक मिलाकर फक्की देणा, दिनकी बारे-बजे खीचडी पतली घीके संग खिलाणा, एक वखत, दिनकी नींद लेणी नहीं, बोझा उठाणे आदि कोइभी तरेकी खेचल करणी नहीं, आसोजकाती तथा पित्त और खून विकारमें बूरेके संगदेणा, दिनकूं च्यार पांच वजेकफरोगी टाल सूफ गुलकंद घोटकर या सूंफ १ भर उकाल पाणी छाण २ रुपे भर गुलकंद डाल ऊपरसें पी लेणा, मिरचाईके वीज १ भर लेणेसे ऊपर मुजब दस्त होता है, हेजा चलता होय तो दस्तकी दवा नहीं देणा कफके रोगीकूं जुलाफा विषमा १ तोलेभर सूंठ ३ मासा सींधा निमक ३ मासा नींबूके रसमे घोट फेर देणा, छव दिन जुलाबपर खीचडी दाल भात या दलिया ६ दिनतक खाणा इच्छाभेदीरस पूज्यपादगुटी नाराचरस छुरीक्षार रस सोनामुखी कपीला सांढकादूध अर्कदूग्ध थोहरका दूध इंद्रायण इत्यादि जुलाबकी अनेक दवाइयां हैं, रसोंके जुलाबपर दस्त होता जाय ज्यों ज्यों बूरेका सरवत पीणा आंमके संग दवा दस्तमें निकले बाद फेर दस्त नहीं होता, उलटीकी दवा पहली देकर फेर बाद दो या तीन दिनके पीछे जु-लाब देणा, आंम पचाणेकिरमालापंचक अच्छा होता है, मुसलमीन हकीमोंके उमदा जुलाब अमलतास याखीरकिस्त दूध, या कच्ची गुलाबकली भात संग रांधकर मिश्री मि-लाकर खिलाते हैं, तीन दिनमे ३० दस्तका उत्तम जुलाब २० का मध्यम १० का हलका, गरमी जुलाब बाद जादा मालम देतो सूंफ गुलकंद ६ दिन पिलाना विशेष विधि सायर हकीमोंकी टहल वंदगी और उनकी महरबानी है, मुसलमीनोकी तवारीकपे कंवराइमें लिखा हैं. अयपेकंबर मेरे कुदरतीका दावा दुनियापर नामी हकीम करसकते हैं, दुसरा कोइभी नहीं, आखर उस पेकंबरने ये बात हुकम खुदा मुजब हकीममें प्रत्यक्ष देखी है,

सीवजे भागवतमें शैव लोकोंके वैद्य धन्वंतरीकूं परमेश्वर लिखा है, अंग्रेजोंके सर्वोपरी हुकम डाक दरोका है, लेकिन् ये वात पूर्ण विद्वानोकेवास्ते है, अदमीका जुलाब और-तका जापा बिगडा भया महा कष्टकारी, होता है काष्ठादिक जुलाब लेकर निराहार ठंढा पाणी आदमी पीलेतो जलंदर हो जाता है, बहोत खयाल करके जुलाबपरवरतणा जुलाबसें ज्यादा दस्त होजाय तो शूल कफका दरद के खूनभी दस्तमें आने लगता है, वाईंटे हाथपैर ठंढे होते हैं, तब ठंढे जलसे हाथपैर धुलाणा आंखोपर छांटणा वेर २ चाव-लोकी भूनी भई खील और मिश्री जलमें मिलाकर पिलाणा, गुलाबका अतर या मिटिया ठंढा अतर सुंघाणा जुलाबकी दवाखाये पीछे जीमिचलावे तो पान बीडी चबाणा पित्त रो-गीकूं आमसें पैदा भये रोगोंमें पेटके रोगमें आफरेके रोगमें कोठा शुद्ध करणेकूं कोठ उदरस कृमि विसर्प वातरक्त कफ खास पांडू जहर दोष निकालणे इतनोंमें जरूर दस्त देणा, रोगीकी ताकत अवस्था विचारके, बालककूं बुढेकूं बहोत घी तेल पिये भयेकूं ज-खमवालेंकोक्षय उरक्षतरोगीकूं, डरे भयेकूं, थकेकूं, प्यासके रोगीकूं, बहोत जाडावदन मेद वृद्धिवालेकूं, गर्भणीकूं, चारेदिन पहले बुखारवालेकूं, जापेवालीकूं, मंदाग्नीवालेकूं, मदा-त्पई रोगीकूं, लूखे वदनवालेकूं, इतनोंकों जुलाब नहीं देणा, इति जुलाब विधि ॥

॥ अथ वमन वीधिः ॥

पहले यवका पतला दलिया घाट गलेतक भरकर पिलाणा, या दही या दूध पिलाणा। लेकिन् वमन कराणे वालेकूं घी तेल सात दिन पिलाय, मालस कराय, पसीना निकलवाके फेर दुसरेदिन ये चीजें फजरमें पिलाकर फेर वमन करणा कफके रोगीकूं वमन करणेकूं पी-पल आरीठा वच सींधा निमक, सहत मिलाकर, गरम जलसें पिलाणा, पित्तके रोगीकूं पटो-लमे खारापरवल या खारी तुराई या वृंदाल फल अरडूसा या नींबकी छाल उकालकर ठंढे जलसें पीणा कफवायूके रोगमें पहली दूध पिलाय मैणफल पिलाणा अजीर्णके रोगमें वच और गरम जल पिलाणा उकडू विठलाकर गलेमें एरंडपत्रकी पिछलीनाल डाल वमन कराणा फेर कफ रोगीकूं पींपल इंद्रजव वच अथवा मैणफलके चुर्णकूं गरम जलमें सहतडाल-कर पिलाणा और वमन कराणा जहर खाया भया निकालणेकूं खट्टी छाछमें निमक डाल पिलाणा अथवा मैणफल या नीलाथोथायाकपासकी मींजी या अफीम खाये भयेकूं श्वा-नविष्टाभी पिलाते हैं, इतने रोगोंमें वमन कराणासो लिखते हैं कास श्वास कफके रोगमें हिरदय रोगमें जहरपीडामें गलशुंडी रोगमें भ्रम रोगमें कोठ रोगमें वमन करणा चाहिये रस-कपूर खाणेसें गंठियाभई होय उसमेंभी वमन कराणा, बहोत उलटी होणेसें हिचकी होती है, गलेमे दरद वेहोसी होय प्यासभी होजाती है, तब आंवले खस चावलोंकी खील (लाई) चंदन इनसबोकों मथकर सहत मिश्रीके संग पिलाणा या पीस घी सहत मि-श्रीसें चटाणा वाद पथ्य मूंगकी दाल विना मिरचकी, या भात मिलाकर खिलाणा तीन दिनतक, वाद जुलाब देणा इति वमनविधिः ॥

दवाईकी चीजोंकी इंग्रेजी तथा हींदीमें नाम

१ इनफ्फुजन=चा	२ ऐकवा=पाणी
३ ऐकस्ट्राकट=सत्व–घन	४ ऐनिमा=पिचकारी–वस्ति
५ ओल्यम=तेल खाणेका	६ अंग्वेन्टम=मलम
७ कन्फेकशन=मुरब्बा–आचार	८ टिंकचर=अर्क
९ डिकोकशन=काढा–उकाली	१० पल्वीस=चूर्ण
११ पलास्टर=लेप	१२ पोल्टीस=लूपरी
१३ फोमेनटेशन=शेक	१४ बाथ=बाफ स्नान
१५ बिल्स्टर=फफोला उठाणा	१६ मिक्श्चर=मिलावणी
१७ लाइकर=प्रवाही	१८ लिनिमेन्ट=तेल लगाणेका
१९ लोशन=पोता–धोणेकीदवा	२० वाईन=आसव

देशी वजन=तोल

१ रत्ती=चिरमीभर	४ वाल=अंदाजन १ दोआनीभर
३ रत्ती= १ वाल	८ वाल= १ पावलीभर
३ वाल= १ मासा	१६ वाल= १ आठआनाभर
६ मासा= १ टंक	३२ वाल= १ रुपियाभर
२ टंक= १ तोला	४० रु० भर= १ शेर पाउंड रतल
कहांइटंक ४ मासेका है.	८० रु० भर= १ शेर साहजानी

अंग्रेजी तोल माप.

सूकीदवायोंका तोल	पतली दवायोंका माप
१ ग्रेन= १ गहूंभर	६० वूंद= मीनीम= १ ड्राम
२० ग्रेन= १ स्कुपल	८ ड्राम= १ औंस
३ स्कुपल= १ ड्राम	२० औंस= १ पीन्ट
८ ड्राम= १ औंस	८ पीन्ट= १ ग्यालन
१२ औंस= १ पाउन्ड	

२ ग्रेन= १ रत्ती   ६ ग्रेन= १ वाल   १ औंस= २॥ रुपियाभर

जो प्रवाही पतली दवायें जहरी अथवा वहोतते जनहीं होती ऐसी दवा साधारण रीतसें चमचा वगैरे भरकेभी पिलाते हैं, वो इस मुजब

१ टी० स्पूनफुल= १ ड्राम	१ टेबल स्पूनफुल= ४ ड्राम ½ औंस
१ डिजर्ट० स्पूनफुल= २ ड्राम	१ वाईनग्लासफुल= २ औंस

इंग्रेजीमें ऊमर मुजब दवादेणेकी देसी मात्रा.

पुख्त ऊमरके अदमीकूं पूरी मात्राका प्रमाण १ भाग गिणे तो.

१–३ महीनेके बालककूं पूरी मात्राका	१/३६	३–४ वर्षके बच्चेकूं पूरी	१/६ भाग
३–६	१/१८	४–७	१/४
६–१२	१/१२	७–१४	१/३
१–२ वर्षके	१/८	१४–२१ जवानकूं	२/३
२–३	१/६	२१–६० पुख्त ऊमरकूं पूर्णमात्रा	

एक महीनेके बच्चेकूं १ वाय विडंगके दाणेके वजन जितनी दवा देणी दो महीनेके बच्चेकूं दो दाणे जितनी, इसतरे दर महीनें एक २ वाय विडंग जितनी बढाणी इसवजे १२ महीनेके बच्चेकूं बारे वायविडंग जितनी दवा देणी जैसें बच्चेकी मात्रा ऊमरकी बढतीमें बढाकर देते हैं, तैसें साठवर्षकी ऊमर पीछे बुड्ढेकी मात्रा धीमें २ घटाणी चहिये अर्थात् ६० तक पूरी मात्रा और पीछे सात २ वर्षसें ऊपर लिखे क्रमसें कमती करते जाणी धातुकी भस्म तथा रसायण दवाकी मात्रा १ राईसें जादामें जादा १ वाल तकभी दी जाती है.

अंग्रेजी–मात्रा

ऊमर	जादामें जादावजन एक औंस	जादामें जादावजन एक ड्राम	जादामें जादावजन एक स्कुपल
१–६ महीने	२४ ग्रेन	३ ग्रेन	१ ग्रेन
१–१२	२ स्कुपल	५ ग्रेन	१॥ ग्रेन
१–२ वर्ष तक	१ ड्राम	८ ग्रेन	२॥ ग्रेन
२–३	१। ड्राम	९ ग्रेन	३ ग्रेन
३–५	१॥ ड्राम	१२ ग्रेन	३ ग्रेन
५–७	२ ड्राम	१५ ग्रेन	५ ग्रेन
७–१०	३ ड्राम	२० ग्रेन	७ ग्रेन
१०–१२	०॥ औंस	०॥ ड्राम	०॥ स्कुपल
१२–१५	५ ड्राम	४० ग्रेन	१४ ग्रेन
१५–२०	६ ड्राम	४५ ग्रेन	१६ ग्रेन
२०–२१	१ औंस	१ ड्राम	१ स्कुपल

विशेष सूचना.

(१) मात्रा शब्द जिस २ जगे लिखा होय उहां उसका अर्थ दवा देणेका एक टंकका वजन समझणा (२) ऊपर अवस्था मुजब दवाओंकी मात्राकावजन लिखा है,

लेकिन् उसमेंभी ताकतवर और नाताकतकी मात्रामें वध घट करणा चाहिये फेर औरत मरदकी जाती ऋतु रोगका प्रकार वगैरे बातोंका विचार करके दवाकी मात्रा देणी (३) बच्चेकूं जहरी दवा देणी नहीं अफीम मिली भई दवाभी चार महीनेके अंदरके बच्चेकूं देणी नहीं उसके सिवाय जो देणा होय तो कोई विद्वान वैद्य या डाक्तरकी सला लेकर पीछै देणा (४) चूर्ण याने फाकी रूप दवा जादामें जादा २ वाल के अंदरकी देणा और पतली दवा चार आनेभर अथवा एक छोटे चमचेभर देणा लेकिन् उसमें दवाईका गुण दोष तथा स्वभावका विचारकरणा जो दवा पुखत ऊमरके अदमीकूं जिस वजनसें दी जाय वो ऊपरके लिखे मुजब अवस्था मुजब भाग करके देणा (५) बच्चेकूं सूंठ मिरच पींपर लालमिरच जेसी तीक्ष्ण दवायें तेसें नसेवाली मादक दवायें कभी देणी नहीं (६) गर्भिणी स्त्री की जुदे २ रोगोंकी जो खास दवाई शास्त्रकारने लिखी है, वोही देणी चाहिये क्योंके बहोत गरम दवा तथा दस्तावर तीखे इलाज गर्भकूं नुकशान पहुंचाता है, (७) सब रोगोंमें सब दवाइया ताजी और नई देणी लेकिन् वायविडंग छोटीपींपर गुड धाणा सहत घी ये पदार्थ दवाके काम वास्ते एक वरसके पुराणे भये लेणा (८) गिलोय कूडाछाल अरडूसेके पत्ते भोंकोला (विदारीकंद) सतावर आसगंध विरयाली (सूंफ) वगेरे वनस्पतीकूं दवामें गीली लेणी लेकिन् दूणी लेणी नहीं (९) इनोके सिवाय दुसरी वनस्पतीयोंकूं सूकीलेणी सूकी नहीं मिले और गीली मिले तो लिखे वजनसे दूणी लेणी (१०) जो दरखत जाडा और बडा होय उसके जडकी छाल दवामें मिलाणी छोटे दरखतोंकी पतली जड होय सो लेणी (११) तमाम भस्म तमाम रसायण दवायें सब तरेके आसव ज्यों ज्यों पुराणे होते जाय त्यों त्यों गुणोंमें वढकर होता है, काष्ठादिक दवाकी गोली वर्षभर बाद हीनसत्व होजाती है, चूर्ण दो महीनेबाद हीनसत्व होजाता है, घी तैल दवाइयोंका चार महीने वाद हीनसत्व होजाता है, पारा गंधक हींगलू बछनाग वगेरे शुद्धडाले भये काष्ठादिकरस दवायोंका पुराणी होणे परभी गुण नहीं जाता है, (१२) क्काथ तथा चूर्ण वगेरेके बहोत दवायोंमेंसे एक दोय दवा नहीं मिले तो हरकत नहीं अथवा उसके जेसी गुणवाली दुसरी मिले तो मिला देणी नुकसेमें एक अथवा दो तीन दवायें रोगके विरुद्ध होय तो वो निकालकर उस रोगकूं मिटाणीवाली नहीं लिखी होय नुकसेमें तो भी मिला देणी (१३) गोली बांधणेकी चीज नहीं लिखी होय तो पाणीमें बांधणी (१४) जिस जगे नुकसेमें वजन नहीं लिखा होय उस जगे सब दवा बराबर लेणी (१५) चूर्णकी मात्रा नहीं लिखी होय उस जगे चूर्णकी मात्रा का प्रमाण पाव तोलासें लेकर १ तोले तक समझणा जहरी चीज टालके.

देशी दवाइयोंके सोधनकी विधि.

१ जमाल गोटेकूं छीलकर गोवर गाईमें ऊकालणा जलडाल जब नरम होय तब

इंग्रेजीमें ऊमर मुजब दवादेणेकी देसी मात्रा.

पुखत ऊमरके अदमीकूं पूरी मात्राका प्रमाण १ भाग गिणे तो.

१–३ महीनेके बालककूं पूरी मात्राका	१/१६	३–४ वर्षके बच्चेकूं पूरी	१/४ भाग
३–६	१/१४	४–७	१/३
६–१२	१/१२	७–१४	१/२
१–२ वर्षके	१/८	१४–२१ जवानकूं	२/३
२–३	१/६	२१–६० पुखत ऊमरकूं पूर्णमात्रा	

एक महीनेके बच्चेकूं १ वाय विडंगके दाणेके वजन जितनी दवा देणी दो महीनेके बच्चेकूं दो दाणे जितनी, इसतरे दर महीनें एक २ वाय विडंग जितनी वढाणी इसवजे १२ महीनेके बच्चेकूं बारे वायविडंग जितनी दवा देणी जैसें बच्चेकी मात्रा ऊमरकी वढतीमें वढाकर देते हैं, तैसें साठवर्षकी ऊमर पीछे वुढ्ढेकी मात्रा धीमें २ घटाणी चहिये अर्थात् ६० तक पूरी मात्रा और पीछे सात २ वर्षसें ऊपर लिखे क्रमसें कमती करते जाणी धातुकी भस्म तथा रसायण दवाकी मात्रा १ राईसें जादामें जादा १ वाल तकभी दी जाती है.

अंग्रेजी–मात्रा

ऊमर	जादामें जादावजन एक औंस	जादामें जादावजन एक ड्राम	जादामें जादावजन एक स्कुपल
१–६ महीने	२४ ग्रेन	३ ग्रेन	१ ग्रेन
१–१२	२ स्कुपल	५ ग्रेन	१॥ ग्रेन
१–२ वर्ष तक	१ ड्राम	८ ग्रेन	२॥ ग्रेन
२–३	१। ड्राम	९ ग्रेन	३ ग्रेन
३–५	१॥ ड्राम	१२ ग्रेन	३ ग्रेन
५–७	२ ड्राम	१५ ग्रेन	५ ग्रेन
७–१०	३ ड्राम	२० ग्रेन	७ ग्रेन
१०–१२	०॥ औंस	०॥ ड्राम	०॥ स्कुपल
१२–१५	५ ड्राम	४० ग्रेन	१४ ग्रेन
१५–२०	६ ड्राम	४५ ग्रेन	१६ ग्रेन
२०–२१	१ औंस	१ ड्राम	१ स्कुपल

विशेष सूचना.

(१) मात्रा शब्द जिस २ जगे लिखा होय वहां उसका अर्थ दवा देणेका एक टंकका वजन समझणा (२) ऊपर अवस्था मुजब दवाओंकी मात्राकावजन लिखा है,

लेकिन् उसमेंभी ताकतवर और नाताकतकी मात्रामें वध घट करणा चाहिये फेर औरत मरदकी जाती ऋतु रोगका प्रकार वगैरे वातोंका विचार करके दवाकी मात्रा देणी (३) बच्चेकूं जहरी दवा देणी नहीं अफीम मिली भई दवाभी चार महीनेके अंदरके बच्चेकूं देणी नहीं उसके सिवाय जो देणा होय तो कोई विद्वान वैद्य या डाक्‌दरकी सल्ला लेकर पीछै देणा (४) चूर्ण याने फाकी रूप दवा जादामें जादा २ वाल के अंदरकी देणा और पतली दवा चार आनेभर अथवा एक छोटे चमचेभर देणा लेकिन् उसमें दवाईका गुण दोष तथा स्वभावका विचारकरणा जो दवा पुखत ऊमरके अदमीकूं जिस वजनसें दी जाय वो ऊपरके लिखे मुजव अवस्था मुजव भाग करके देणा (५) बच्चेकूं सूंठ मिरच पींपर लालमिरच जेसी तीक्ष्ण दवायें तेसें नसेवाली मादक दवायें कभी देणी नहीं (६) गर्भिणी स्त्री की जुदे २ रोगोंकी जो खास दवाई शास्त्रकारने लिखी है, वोही देणी चाहिये क्योंके वहोत गरम दवा तथा दस्तावर तीखे इलाज गर्भकूं नुकशान पहुंचाता है, (७) सब रोगोंमें सब दवाइंया ताजी और नई देणी लेकिन् वायविडंग छोटीपींपर गुड धाणा सहत घी ये पदार्थ दवाके काम वास्ते एक वरसके पुराणे भये लेणा (८) गिलोय कूडाछाल अरडूसेके पत्ते भोंकोला (विदारीकंद) सतावर आसगंध विरयाली (सूंफ) वगेरे वनस्पतीकूं दवामें गीली लेणी लेकिन् दूणी लेणी नहीं (९) इनोके सिवाय दुसरी वनस्पतीयोंकूं सूकीलेणी सूकी नहीं मिले और गीली मिले तो लिखे वजनसे दूणी लेणी (१०) जो दरखत जाडा और वडा होय उसके जडकी छाल दवामें मिलाणी छोटे दरखतोंकी पतली जड होय सो लेणी (११) तमाम भस्म तमाम रसायण दवायें सब तरेके आसव ज्यों ज्यों पुराणे होते जाय त्यों त्यों गुणोंमें वढकर होता है, काष्टादिक दवाकी गोली वर्षभर वाद हीनसत्व होजाती है, चूर्ण दो महीनेवाद हीनसत्व होजाता है, घी तैल दवाइयोंका चार महीने वाद हीनसत्व होजाता है, पारा गंधक हींगलू वछनाग वगेरे शुद्धडाले भये काष्टादिकरस दवायोंका पुराणी होणे परभी गुण नहीं जाता है, (१२) क्वाथ तथा चूर्ण वगेरेके वहोत दवायोंमेंसे एक दोय दवा नहीं मिले तो हरकत नहीं अथवा उसके जेसी गुणवाली दुसरी मिले तो मिला देणी नुकसेमें एक अथवा दो तीन दवायें रोगके विरुद्ध होय तो वो निकालकर उस रोगकूं मिटाणीवाली नहीं लिखी होय नुकसेमें तो भी मिला देणी (१३) गोली वांधणेकी चीज नहीं लिखी होय तो पाणीमें वांधणी (१४) जिस जगे नुकसेमें वजन नहीं लिखा होय उस जगे सब दवा बरावर लेणी (१५) चूर्णकी मात्रा नहीं लिखी होय उस जगे चूर्णकी मात्रा का प्रमाण पाव तोलासें लेकर १ तोले तक समझणा जहरी चीज टालके.

देशी दवाइयोंके सोधनकी विधि.

१ जमाल गोटेकूं छीलकर गोवर गाईमें ऊकालणा जलडाल जब नरम होय तब

निकाल दो दो फाडकर विचकी जिली निकालकर फेर पाव चीजोंकूं सेर दूधमे मंद आंचसें सिजाकर जब दूध बहोत गाढा हो जाय तब निकाल गरम जलसें धो डालणा फेर पीस कोरेमट्टीके वरतणमें लगा २ कर इसका तेल सुका लेणा जब बुरादाविना तेलका होजाय तब फेर नींबूके रसमें खूब घोटणा वाद सूकाय किसीभी प्रयोगमें लेणा१ (२) जहर कूचीला पहली सात दिन घेल्हरेतमें पाणीसें तरबतर करके रखणा वाद इसका पाव वजन २ सेर दूधमें मंद आंचसें पकाणा वाद चक्कूसें इसके दो पुडतोंके बीचकी जहर जिलीं निकालकर छोटे २ नुकरे कतरकतर प्रयोगमें लेणा (३) वछनाग (कालासींगी मोहरा) पाव,हंडीमें दो सेर दूध डाल इसकी पोटली वांध दो आंगुल अधर ऊपर दूधके लटकाकर ढकणी देकर कपड मिट्टीसें मूं बंधकर मंद आंच जरा २ पोहरभर देणी वाद ठंढीकर पोटलीमेंके मोहरेमें नाजोरी खूई निकले तो सुद्ध समझणा दूसरी वृद्धसंप्रदाय सेठ । श्रीमगनमलजीकी वताई ॥ तोलेभर मोहरेकूं दो तोले काली मिरच-संग घोटकर प्रयोगमें लेते हैं ॥ (४) खुरासाणी अजवाण इसीतरे दूधमें सुधता है, इस-तरे वहोतसी जहरी चीजोंका सोधन दूध है, (५) अतीसकूं गोबर पाणीमें डालकर मंद आंचसें सिजाकर नरमभये वाद वरतणा (६) जायफलके ४ टुकडेकर गेहूंके आटेमें सेककर भोभरमें परिपककर फेर प्रयोगमें लेणा (७) लौंग पीपर भंग तवेपर ऊनारणा याने थोडे गरम करणा जलाणा नहीं जीरा दोनुंभी इसीतरे (८) गूगल शिला-जीत त्रिफलाके काढेमें सुधता है, (९) तेलिया सुहागीकूं पहली गोवरसें मसल धोकर फेर पात्रमें धर फुला लेणा फिटकडीयोंही फुला लेणी हींग घीमे तलकर फेर प्रयोगमे लेणी (१०) नख लिया जो धूपादिक सुगंधीमें प्रसिद्ध उसकूं भेंसके गोवरमें या इम-लीके पत्ते इनोके संग जल डालके औटावे ये नमिले तो फकत मिट्टीमें जल डालके ओटावे मट्टी चिकणी मुलतानी वगैरे लेणी फिर निकालके जलसें धोकर घीमें भूनकर फिर पीछे गुड और हरडेके जलमें भिगाके रखदेवे तो नख द्रव्य शुद्ध होय फेर खाणेकी दवामें उपयोग करे (११) हलदी और वचकी शुद्धि गोमूत्रमें या लजालूके काढेमें या पंच-पल्लवके काढेमें औटाय फिर किसी खसवोइदार जलकी वाफ दोला यंत्रसें देतो वच, ओर हलदी, शुद्ध हो (१२) नागरमोथेकी शुद्धि, कूट कर अधकिचरा कांजीमें भिगा देवे फिर पंच पल्लवके काढेमें या जलमें ओटाय धूपमें सुकावे फिर गुडके जलसें छिडकके आगसे भून चूर्ण लेवे फिर वकरीका मूत्र यासहजणेके छालके जलकी भाव-ना दे तो मोथा शुद्ध होय (१३) छड छवीलेकी शुद्धी, कांजीमें छडछवीलेकों ओटाय फिर भून लेवै फेर गुडके जल डवोयके फेर फूलोसें अधिवासित करे अर्थात् सुगंधित फूलोके संगरक्खे तो छडछवीला शुद्ध होय [१४] केशर घीमें पीसणेसें शुद्ध होय अगर केशरमें कलोंजी सहतमें तथा ने चावलोंके जलकी भावना देणेसें शुद्ध होय, कूठ

हिरणके सींग जेसी होती है लेकिन् उसमें कीडे नहीं होणा (१५) पारेकी सामान्य शुद्धि, पारेको तीनदिन इंटसें मर्दन करे फेर कुवारपठेसें फेर अमलतासके काढेसें फेर चित्रकके काढेसें तीन २ दिन तव पारा शुद्ध रसोंमे डालणेलायक होय (१६) गंधककी शुद्धी (आमलसार गंधक पाव पाव घीकूं गरमकर उसमें डाल फेर दूध दुसरे ठांम पात्रमें रखकर सेरभर उस पात्रके ऊपर वस्त्र वांधणा उसमें गला भया घीसमेत गंधक डाल देणा मैल वस्त्रमें रह जायगा फेर दूधमेंसें गंधक निकाल लेणा) इति गंधक शुद्धि (१७) मोती शंख कोडी मूंगे नीवूंके रसमें भिगाये शुद्ध होता है आठ पहर, धातु उपधातु रत्न उपरत्न विष उपविषोंका सोधन दूसरे भागमें लिखेगें.

देसीदवा. सामान्य अनुपान.

कोईभी चूर्ण गोली भस्मकी पुडी जिस चीजके संग खाणेका शास्त्र हुकम देता है, उसकूं अनुपान कहते हैं, इस शब्दका असली अर्थ तो एसा होता है, दवा खाकर उस-पर पीछेसें कुछ पीणा सो अनुपान, जहां कुछभी अनुपान नहीं लिखा होय उहां अनुपान पाणी समझणा देशी इलाजोंमें अनुपानकी माथा पच वहोत है, लेकिन् कितनेक अनुपान ऐसे हैं. सो वो दवा जितना काम गुजारते हैं, सहत तीक्ष्ण और भेदक होणेसें अनुपान तरीके वो वहुत उपयोगी है, सहत घी गुड मिश्री आदेका रस छाछ मखण हींग पींपर सूंठ सहजनेकी छाल ये सव सामान्य अनुपान है शास्त्रोंमें कितनेक मुख्य २ रोगोंमें खास अनुपान लिखे हैं, वो दवा उन२रोगोंमें इसही अनुपानसें देणा एसा तो कोई पक्का नियम वंधा नहीं है, तो भी ये अनुपान उन २ रोगोंकों दूर करणेवाले हैं इसवास्ते इलाज करती वखत ध्यानमें रखणा चाहिये वहोतसी वखत ये अनुपानोंकी दवाई उन २ रोगोंकों मिटाती है सो अव नीचे लिखते हैं.

(अजीर्णमें) नींद, हरडे, उपवास, नींवू,

(अतिसारमें) छाछ, कूडाछालरस, वकरीका दूध, दही, मोचरस,

(मिरगी) वच, अकलकरा, ब्राह्मी, सहत, पेठा, मालकांगणी,

(सन्निपात) आदेकारस, पानकारस कस्तूरी, अंवर,

(खासी) अरडूसेकारस, या रींगणीका,

(विषमज्वर) सहत, तथा पींपर, हरडे, अजमोद, या कुटकी चिरायता,

(संग्रहणीमें) छाछ, या पतले मीठे रसका आंम,

(जीर्ण ज्वरमे) सहत पींपर, या दूध संग, वर्द्धमान पीपर, या खपरिया शुद्ध, काली-मिरच मिला भया.

(कृमि) वायविडंग, हींग, कपीला, कोंचकेरू,

(अर्शमस्सा) भिलावा, चित्रकमूल, सूरण,

(पांडु) मंडूर, तीनवरसका गुड, पङ्कूष्ण, वायविडंग, नागरमोथेके संग छाछमें,
(क्षय) शिलाजीत, शितोपलादि चूर्ण, सोना,
(श्वास) भाडंगी, सूंठ,
(प्रमेह) हलदी त्रिफला.
(सुजाक) आंवला, तुलछीके पत्ते, गुलरके पत्ते, शिलाजीत,
(शूल) हींग, कुचीला, घी,
(आमवात) एरंडीया, गोमूत्र, लसण, गूगल, मेथीपाक, भिलावा,
(वातरोग) गूगल, लसण, घी, नयेकं कुचीला, पुराणेकूं सींगीमोहरा,
(वातरक्त) गिलोय, भिलावापाक तथा एरंडीका तेल,
(मंदरोग) सहतमिलापाणी, त्रिफला,
(अरुचि) बीजोरा, अनार, नींबू,
(व्रण) त्रिफला, गूगल, सोनामुखी,
(आम्लपित्त) मुनक्का, आंवला, पींपर, अद्रक, नारेलजल,
(उपदंस) आककी जड, तुंबेकी जड, विरेच, उलटीकी दवा देनी,
(नेत्ररोग) त्रिफला,
(उन्माद) पुराणा घी, मनशिल शुद्ध,
(मूत्रकृच्छ्र) शिलाजीत,

किरण २ दूसरी.

निघंट दवा गुण.

(१ अकलकरा-) गरम वायुहर थूक लाणेवाला दांतोंके रोगमें जीभके जडपणेमें मूं रखणेसें फायदा जादा करके और दवायोंके संग दिया जाता है (आकार करभादि चूर्ण, अकलकरा सूंठ शीतलमिरच केशर पीपर जायफल लौंग सुपेदचंनण ये आठों एकेक तोला अफीम चार तोला (गुण) स्तंभन धातूकों जाती होय तो बंधकरे (मात्रा-)१ रत्ती से २ रत्तीभर रातकूं सहतसें चाटणा (२ आंधीझाडा) कफघ्न उष्ण पेसाब लाणेवाल है इसका खार निकालणेंकी विधि देखो खारकी (अपामार्ग खार) खांसी कफ दम और श्वासमें फायदा करता है छातीका कफ जुदा करता है, तेसें पेटकी चूंक आफर वांईटेभी मिटता है कानमें इस क्षारमें तेल बनाया भया बूंदे डालणेसें कानकी शूल तथा फडफडाट मिटता है, तेल बणाणेकी विधि पीछे लिखी है, आंधी झाडेका खार सम वजन हरताल संग पीस लगाणेसें छोटे २ मस्से गिरजाते हैं, अपामार्गके फूल वि- छूके डंकपर मसलणेसें जहर उतरता है, इसके पंचांगकी राखकूं चोगुणे सहतमें चटा- णेसें कास दम तथा आम्लपित्त निर्बल हो जरीवालेकूं गर्भिणी स्त्रीकूं छाती तथा गलेमें

खटास चढकर जलता है, सो मिटता है, (३ अजवाण) उष्ण वातहर दीपन वायु आंटा आफरा पेटकी चूंक वगेरे पेटके रोगमें अछी असर करती है,(अजमोदादि चूर्ण) अजमोद सेंचल सींधानिमक जवखार हींग तथा हरडे सब समभाग ये चूर्ण पेटका आफरा तथा अजीर्णपर अछा है, (अजमोदादि गुटिका–) अजमोद हरडे खारक केशर एक २ भाग जायफल मोचरस अफीम ये तीनों आधा २ भाग जावंत्री लोंग तथा सहत ये तीनों दो दो भाग बाजरीके दाणे जितनी गोली करणी बालकोंकी उलटी दस्त नींद नहीं आवै अथवा नींदमेंसें झबक उठै इन सबोंमें बहोत अछा फायदा, करता है (मात्रा) गोली १ सें २ (४ अतीसकी कली) ज्वरहरे कृमिहरे दीपन ग्राही बहोतसे बुखारोंके काथमें डाली जाती है, बच्चोंकी तो खास दवा है, (अतिविष चूर्ण) फकत कलीका चूर्ण कर बच्चोंकों सहतमें चटाणेसें बुखार खासी उलटी मिटती है, (मात्रा) बाल०॥ सें १ बाल (चातुर्भद्रचूर्ण–) अतिविष मोथा काकडासींगी पींपर चूर्ण सहतमें चाटणेसें उलटी दस्त बुखार खासी वैगेरे बच्चोंके रोगोंपर बहोत फायदेवंद है (शृंग्यादि चूर्ण–) काकडासींगी अतीस पींपर इनोंका चूर्ण सहतमें देणेसें बच्चोंकी खासी बुखार उलटीकूं मिटाती है, मात्रा हरेक चूर्णकी १ बाल (५ अफीम–) ग्राही पीडाशामक नींदलाणेवाला स्वेदल स्तंभन दवा तरीके अफीम बहोत रोगोंपर फायदा करता है, मरोडा संग्रहणी अतिसार रक्तातिसार हैजा विना बुखारकी खासी दम अनिद्रा अंगपीडा उन्माद हिचकी मधुप्रमेह आंखके रोग तथा स्त्रियोंको अधूराजाणा और ऋतुधर्मके दोषमें अफीमकूं युक्तिसें तेसें दुसरी दवायोंके योगसें देणेसें जलदी असर करता है जहर है इसवास्ते बहोत साव चेतीसें उपयोग करणा (मात्रा० । सें ॥ रत्ती) (कुंकुमवटी) अफीम तथा केशर सम भाग सहतमें चावलके वजन जितनी गोली करणी सखत दस्तभी रुक जाता है, अजीर्ण अतिसार संग्रहणीकूं (मात्रा गो० १) (आमराक्षसी) अफीम जायफल लोंग शुद्ध हिंगलू और कपूर समभाग इनोंकी दो दो रत्ती भरकी गोली करणी उससे हैजेकाभी सखत झाडा बंध होता है बाइंटेभी बंध होते है, शरीर सतेज होता हैं, मात्रा २ रत्ती(अर्क अहिफेनादि गुटिका–) आकके सूके भये फूलोंका भूका दो तोला सींधा निमक २ तोला सेकाभया अफीम० ॥ तोला तीनोंकों मिलाकर एकेक बालकी गोली-करणी रगतपित्त अर्थात् शरीरके किसीभी रस्तेसें खूनगिरे सो तथा उरक्षत याने जिस क्षयनमें खूनमिले खंखार गिरे सो एसे रोगोंमें ये गोलियां बहोत फायदा करती है,(मात्रा २ रत्ती) (६ अरडूसा) कफघ्न रक्तस्तंभक ग्राही) अरडूसेका पान बहोत काढोंमें गिरता है, खासी क्षय श्वास दम वगेरे छातीके रोगोंमें बहोत फायदा करता है, रक्तस्तंभक और कफघ्न होणेसें कफकूं निकाल खूनकूं बंध करती है, और फेफसा सडताभया मिटता है, कफके बुखारमें तथा बच्चे सरदीसें जकडजाते हैं. गलेमें तांत बोलती

है, बुखार चढ जाता है, और श्वास चलता है, उसमें पानका रस जरा गरमकर पिलाणेसें तथा पानके कूचेकूं छातीपर रखकर ऊपरसें सेक करणेसें तुरत आराम होता है, (वासा स्वरस) अरडूसेके गीले पानोंका रस १ तोले रसमें १ तोला सहत पींपरका चूर्ण १ सें २ वाल भुरकाकर पिलाणेसे कफ निकल जाता है, छाती हलकी पडती है, (वासा पुटपाक) देखो पुटपाक बणाणेकी विधि, रसनिकाल सहतमिलाय पीणा (मात्रा १ सें दो तोला, इस पुटपाकसें क्षय अतिसार रक्तातिसार मिटता है (वासादि काथ) अरडूसेकापान गिलोय भोरींगणी जो हरडे दाख और पींपर समभाग काथ करणां (काथवणाणेकी क्रिया देखो) इससें खासी क्षय कफज्वर तथा दमकूं फायदा करता है (वासावलेह) अरडूसेके पत्तोंका रस३२तोला मिश्री८ तोला पींपर २ तोला ताजा घी २ तोला ये सर्वोकों उकाल जाडा करणा ठरेवाद इसमें १। रुपेभर सहत मिलाणा क्षय उरक्षत खासी दम श्वास वगेरे छातीके रोगोंमें वहोत फायदा करता है (वासाखंड पाक) अरडूसेके पत्ते सेर १। लेकर पाणीमें उकालणा चोथा भागका पाणी वाकीरहे तव पाणी छाण उस पाणीकूं फेर चूलेपर चढाकर उसमें हरडेका वारीक चूर्ण तोला १३० तथा बूरा तोला ५० डालकर पाक करणा उतार ठंढा भयेवाद सहत तोला ४ वासकपूर तो. २ पींपर तो. १ और तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये चारों दोदो वाल एकेक वस्तु डालकर मिलाणा ये रक्तपित्तके भयंकर रोगकों मिटाताहै (७अरणी) उष्ण वातहर सोथघ्न कफघ्न दसमूल तथा दुसरेभी कितनेक काढोंमें अरणी की जड काम देती है, इसके पत्ते सूजनपर वंधाते हैं (अग्निमंथादिलेप) अरणीकी जड काली जीरी कीडामारी शरपंखा सूंठ समवजन पाणीमें पीस जरा गरमकर सोजेपर लेप करणेसें भयंकर सोजन चलाजाता है सूवारोग संग्रहणी संधिवात दुसरीभी वादीमें सांधोंमें तथा दुसरी जगे सोजन आतीहै उण सर्वोकों ये लेप फायदा करता है (८ आरीठा) उष्ण वांतिकारक सांपके तथा अफीम वगेरेके जहरमें आरीठेका पाणी पिलाकर उसकूं उलटी कराणेमें आता है नाकमें पाणीकी बूंद नाखणेसें वेशुद्धि तथा आधासीसी मिटती है इसके पाणीसें दाह मिटती है (९ असालिया) उष्ण वातहर वाजीकर पौष्टिक असालियेकी खीर खाणेसें गुसचोट यकृत् (लिवर) तथा तिलीके खूनके जमावकूं तोडता है शूल तथा चोटलगे पर असालिया इकेला अथवा साजी खार हलदी मेदालकडीके साथ मिलाकर गरम कर लेप फायदा करता है (९ अलशी) शीतल मूत्रल फेफसा पेटके पडदेका रिदय वगेरे शरीरके कोइभी मर्मस्थानमें वरम होजावै उसमें खून चढताहै शूल चलतीहै और पकजाताहै तब अलसीकी पोटिस वेर २ वांधणेसें वहोत फायदा होताहै किसीभी दुखती जगे दरद होता होय तो सादेजलमें अथवा पोस्तके डोडेकूं उकालकर उस पाणीमें अलसीकी पोटिस वणाकर वांधणेसें दरद मिटताहै (लूपरी वणाणेकी विधि)

देखो) (११ आकडा) उष्ण शोधक स्वेदल वमनकारक कफघ्न क्षोभक वातहर (आकडेकीजड, फूल, पान, तथा उसका दूध, दवामें काम आता है, जडकी छाल सोधक है, उलटी करताहै,इसके सर्वगुण,एपीकाक्युऐन्हा नामकी अंग्रेजी दवाके गुणसें मिलता है, जडकी मात्रा एक बाल, (पान) बुखारमें पानकूं सेककर शिरकपालपर बांधणेसें पसीना आता है बुखार नरम पडताहै और बुखारमें शिरपर बांधणेसें मगज ठंढा रहता है पेटपर पत्ते बांधणेसें पेट नरम पडताहै पानके वाफे भये रसकी बूंदडालणेसें कानकी शूल मिटजाती है (अर्क तैल) तिलकातेल तोला १० आकका दूध तोला ४० हलदी तो २० मनसिलतोला २० तेल बणानेकी विधिसें तेलबणाणा इसके लगाणेसें खाज खुजली तथा हरसका मस्सा सूक जाता है (अर्कादिक्काथ– गजपीपर मिरच सूंठ और सींधा निमक सम भाग और चारोंके वजनसें वीसमा भाग आकके जडकी छाल तिल्ली और कलेजा और जलंदरमें अच्छाफायदा करताहै (आकके दूधका घी) आकका दूध तथा मखण समवजन मिलाकर तपाकर घीवणाना खुजलीखाज इसकी मालिससें चलीजाती है (१२ अद्रक) उष्ण दीपन पाचन वातहर रुचिकर अनुपानमें इसका रस बहोत फायदे बंदहे वदनकूं जागृति करणेका इसके रसमें गुण है (आर्द्रकस्वरस) आदेका रस सहतमें पीणेसें खासी कफ तथा पेटपर वोझा होय सो नरम पडता है आंडोंमें वादी आगई होय तो आदेका रस और सहत पीणा भ्रम चक्कर पित्तके रोगमें आदेका रस २ तोला गायका दूध ७ तोला दोनोंकों उकाल कर आधा दूध जले तब उतार उसमें मिश्री डालकर पिलाणा (१३ आमली) सारक पित्तशामक तथा रुचिकर है दवामुजब अंमलीकी राख अथवा उसका खार शंखवटी नामकी गोलीवणाणेमें काम आताहै पत्ते इसके आंखवगेरेके सोजेपर वाफकर बांधे जाता है भिलावा चढा होय तो उसपर अंवलीका पान पीसकर मसलणेसें जलण मिटती है वदनपर भिलावा थोहरका दूध अथवा जमालगोटा लगणेसें चमडी उपडे और जलण होजाय तो अमलीकी गिर पाणीमें मिलाकर चुपडणा थोहरका रस अथवा एसीही कोई दुसरी गरम चीज आंखमें पडगई होयतो उसमें अंवलीके गिरमें घी मिलाकर अंजन करणा जमालगोटेका या थोहरके दूधवगैरेका जुलाब लिया होय और बंध नहीं होता होयतो अंवलीके गिरका सरवत मिश्री घी मिलाकर पीणेसें जो कदास पेटमें नही ठहरे तो दो तीनवखत पीलाणेसे जरूर जुलावका दस्त बंध होजाता है गरमीकी मोसममें अंवलीका सरवत सोडावाटरका काम करता है और गरमीकी लू गरमी तथा पेसाबकी जलण मिटतीहै पित्तके बुखारमें इसका पाणी पिलाणेसें फायदा करताहै इन वातोंके सिवाय दुसरी तरे अंवली बहोत नुकशान करतीहै कचीअमली कभी खाणी नहीं पकी अमलीभी तासीरकूं माने तो गरमीकी मोसममें खाणी आंवलीसें दांत जकड जाते हैं. जवाडी झल जाती है, शिर पकडीज जाता है, किसी वखत इससें खासी सिसकणा तथा दम उठ

जाता है, बुखारवाला तथा ऋतुधर्ममें आई गई औरत अंमली खाती है, तो हिचकी उठणेका डर रहता है, (१४ आंवला) खट्टा शीतल पित्त शामक शोधक सारक आंख तथा वालोंकूं अच्छा है, आंवले वहोत उत्तम रसायण चीज है, गीले तेसें सूके आंवलोंसें वहोतसी उत्तम दवायें वणती है, सहजसें वणसके एसी थोडी दवायें इहां लिखी है, (त्रिफला चूर्ण—) आंवले बीज विगर४ रुपेभर वहेडेकी छाल २ भर हरडे अमरसरीकी छाल १ भर अथवा जव हरड, कितनेक तीनोंकों सम वजन लेते हैं, ये चूर्ण शीतवीर्य है और आंखका रोग मगजकी गरमी कामला तथा पित्त विकारमें अनेक तरेसें दिये जाते हैं. ऋषभ पुत्र आत्रेय राजाने इसके गुण अपणी वनाई संहितामें वहोत लिखे हैं. (धात्री स्वरस—) पित्त ज्वरकी उलटी बुखारकी उलटी तीक्ष्ण पित्तप्रकोप तृषा शोषदाह इन सर्वोकों गीले आंवलोंका स्वरस मिश्री सहत काली दाख मिलाकर पिलाणेसें दव जाता है,(रसायण चूर्ण)आंवला गोखरू गिलोय तीनोंसम भाग लेकर वारीक चूर्ण कपड छाणकर करणा अनुपान घी सक्कर पित्तके विगाडसें भये तमाम धातु दोषकूं सुधारताहै, वीर्य पतला पड गया होयतो जाता होयतो अथवा मरदमीका नाश होगया होयतो वहोत दिनोंतक सेवन करणेसें जरूर पीछा होजाता है, मूर्च्छाका भयंकर रोग तेसेंही मिरगी और उन्मादमें भी अच्छा असर करता है, धात्री चूर्णकूं— दूधके संग सांझकूं खाणेसें कंठ वैठ गया होय सो सुधरता है, (१५ आसगंध—) धातु पौष्टिक है पाकमें चूर्णमें क्वाथ वगैरेमें डाला जाता है, नाताकत और हीन सत्व छोकरोंकूं इसका चूर्ण दूधमें देणेसें वदनकूं ताकत देता है, आसगंध कालातिल घीमें तलकर चूर्णकर मिश्री मिलाय खाणेसें दुवलापणा मिटकर पुष्टता होती है, आसगंध तथा विरियालीका चूर्णकर टंक मे० ॥ भरचूर्ण दो दो तोला घी मिश्रीमें मिलाकर चाटणेसें सवतरेकी वायु सरण चमका कमर तथा सांधोंकी वायु मंदाग्नि निर्वलता मिटती है, स्तनोंमें दूध वढता है, सूतिका वायु मिटती है, मगज भर जाता है, धातु तथा ताकत वढती है, (१६ असों-दरा—) मूत्रल तथा शोधक है, आसोंदरेका काढा दूध मिलाकर पीणेसें हृदयरोग छा-तीका दुखणा शूल वगेरे मिट जाता है, (१७ इंद्रजव—) ग्राही दीपन पाचन ज्वरघ्न और कृमिघ्न है, दस्त हरस खूनका दस्त वच्चोंका मरोडा चूंक वगैरेकूं मिटाता है, लघु गंगाधर चूर्ण—) इंद्रजव मोथ कच्चीवीलगिरि लोद मोचरस ओर धावडीका फूल ये सव वरावर लेकर चूर्ण करणा इंद्रजवकी फकी— इंद्रजव तथा वायविडंग शेककर चूर्ण करणा ये चूर्णसें वच्चोंका दस्त मरोडा उलटी कृमि सव मिट जाती है, (१८ इंद्रा-यण—) रेचक कृमिघ्न तथा पित्तनाशक है, इसके फल तथा जड ली जाती है, इंद्रायण (तूंबेके) संग दुसरी वायु हरता दवायोंकों मिलाकर वापरणेसें फायदा करता है, इकेला नहीं दिये जाता जलंदर वगेरे पेटके रोगोंमें अच्छा है, (१९ अहिखरेका बीज—) मूत्रल

और धातु पौष्टिक है, अहिखरे (तालमखानेका) चूर्णकर दूधमें पीणेसें धातु पुष्टी होती है, पाकोंमें भी पडता है, (२० एरंड) रेचक शोधक तथा वायु हरता है, एरंडकी जड पांन तथा फलका तेल दवामें वापरते हैं, (जड—) बहोतसे वायु हर क्वाथमें पडती है, पान जरा गरम करके आंडोंके तथा आंखोंके सूजनपर तथा औरतोके स्तनके पकणेके ऊपर बांधणेसें सोजा नरम पडता है, अथवा पत्तोंकों पाणीमें उकालकर उस पाणीका सोजेपर सेककरणा (एरंडीका तेल—) जुलाबमें बहुत अच्छा है, बच्चोंकोंभी एरंडतेलका जुलाब निशंकपणे दिये जाता है, मरोडा तथा आंतरोंके शूलमें ये जुलाब वहोतही अच्छा है, मरोडेकी आंकसी दस्त होणेका कारण (आंतरोमें भराभया पदार्थ) दूर करके पीछे मरोडेको दस्तकूं बंध करता है, बिछोणेमें पडे रहणेसें पडी भई चांदी इस तेलका फोआधरणेसें तुरत आराम होता है, नारूके रोगमें सोजेपर नारू निकलेबाद उसकूं अच्छा करणेकूं एरंडीके तेलका फोआ धरणेसें अच्छा होता है, (मात्रा) सबसें जादा मात्रा २ रुपे भरसें ३ रुपेभर ऊमर मुजब १ भर० ॥ भर आखर दो वर्षके अंदरके बच्चेकूं दो आनीभर दूधके संग रोगों मुजब अनुपांनसें दिया जाता है, एरंडीका तेल उरुस्तंभ आमवात आंडोंमें दरद सोजन वगेरे रोगोंमें वहोत अच्छा है, (एलायची) ठंढी तेसें वायु हरता है, भोजन किये बाद पेटमें गडबडाट जीमिचलाणा चूंक आफरा वगेरेमें खाणेसें मिटता है, मुखवासमें अच्छी है, इलायची कबाबचीणी और मिश्री मूंमे रखणेसें मूंकी गरमी कम होती है, स्वर कंठ बैठा भया खुल जाता है, बाहर लगाणेके इलाजोंमें वहोत काम देती है, ठंढी होणेसें (एलच्यादि चूर्ण) इलायची गऊंला मोथ बोरकामगज पींपर चंदन कमोदचावल लौंग नागकेशर चूर्णकर सहतमें चाटणा (२२ एलिया—) रेचक तथा ऋतुलाणेवाला है, कारपठेके सुकाये भये रसकूं एलिया कहते हैं, (एलीयेकी गोली—) एलिया तो १ शुद्धकरा भया कुचीला दो आनीभर तजतो २ कलंभा तो १ कुटकी तो २ इन सबोंका चूर्णकर उसकूं बीजोरेके या नींबूके रसमे घोट दो दो बाल अंदाजन गोलीयांकरणी बंध कुष्टवालेके वास्ते ये अछी है एलिया और हींग येहिस्टीरीया (उन्मादके) तोफानकूं दबाता है एलिया तथाडीकामालीका लेप पेटपर करणेसें बच्चोंकें पेटका गोटा और चूंक मिटतीहै औरतोंके ऋतु धर्मके रोगमें एलिया अच्छा है गर्भवतीकूं एलियेकी दवा नहीं देणी और दुसरी बेमारीमें भी एलिया देते सावचेत रहणा वहोत देणेसें मरोडा होजाता है (२३ ओथमीजीरा) ईसबगुल कहतेहैं ठंढा ग्राही याने दस्तकूं रोकणेवाला इसकों पाणीमें भिगाकर लुआब निकाल मिश्री मिलाकर पीणेसें अतिसार रक्तातिसार पित्तातिसार तेसें आमातिसार याने पुराणी संग्रहणीकूंभी फायदा करता है उलटी और प्यासकूं मिटाताहै शेककर दहीमे डालकर पीणेसे दस्तबंध होताहै प्रदर चिणखिया पेसाबमें फायदा

करताहै दही ईसवगुल तेलिया सोहगी फुलाईभई १ वाल मिलाकर पीणेसें सखत मरोडा बंध होजाता है (२४ अंकोल) शोधक स्वेदल तथा उलटी लाता है, चूंअेके जहरमें अंकोल वहोत फायदा करता है ऊंदरवायुमें इसकी लकडी घसकर पिलाणी चूहेके जहरसें तेसें और भी किसी जहरसें वदनमें चीरे २ पडजाते हैं उसमें ये लकडा घसकर लगाणेसें मिटजाताहै (२५ अंबर) उष्ण पौष्टिक सुगंधी मछलीकी सुकाई भई हंगारहे सचा अंबर भाग्यसेंही मिलताहै वजारमें जो अंबर मिलता है सोनकली है, असल अंबर वहोत गरम इसवास्ते किसीभी रोगमें अशक्त वेमार ठंढा वदन पडगया होय दांतखीली बैठगई होय रोगी मरण दशातक पहुचा होय उसकूं अंबर तथा कस्तूरी जेसे वस्तु देणेसें जरा हुसियारी तो आती है धातूकों तथा मगजकों सतेज करता है, इसी वास्ते भाग्यवांन लोक धातु पुष्टि दवामें इसकुं मिलातेहैं (२६ कडवी तुराई) रेचक तथा उलटी लाणेवालीहै पीलियेकी वेमारीमें इसका रस याकडवी तूंबीकी रसकी बूंदे नाकमे सुंघाते हैं जादापाणी नाकसें गिरणेपर नाकमें घी सुंघाते हैं. पीलिया चला जाता है (२७ कडवीनई) शोधक तथा सोथघ्न है दवामें उसकी गांठ काम आतीहै दोय आनेसे चार आनेभर घसकर पीणेसें महींनज्वर ऊतरताहै हाथ पैरोंका दाह तथा निर्वलताके सोजेपर उसका लेप करणेमें आता है (२८ कूडाछाल) ग्राही ज्वरघ्न पित्तशामक तथा ठंडीहै दस्तोके रोगमें उसका काढा अवलेह चूर्ण तथा पुटपाक करके देतेहैं रक्तातिसार याने खूनके दस्तोंमे वहोत फायदा करती है और अेपीकाक्युआना अंग्रेजी दवाकी वरोवरी करती है (कूडेकी छालका पुटपाक) छालकूं पीस चावलोके धोवणमें गोलावणाय पहली लिखी पुटपाककी रीत मुजवरसनिचोड लेणा मरोडेमें रक्तातिसारमें ये पुटपाक वहोत फायदा करता है (कूडाछालका घन) कूडाछालतो २ वीलकी गिर २ तोला अनारकी छाल तो १ इनोंका घन मुजव घनकरणा दोदो आनीभर गोलियां करणी मात्रा १ अथवा २ गोली मरोडेके दस्तमें देणी (कुटजावलेह) कूडाछालका चूर्ण १० सेर जल २५सेर उकालकर चोथे भागका जल रहे तव ३ सेर गुडडालकर फेर उकाल फेर चाटणे जैसा होय तव उसमें रसोत मोचरस त्रिफला त्रिकटु रेसाखतमी चित्रककी जड कालीपाट कचा और कृमिघ्न अतिविष वायविडंग और नेतरवाला एकेक दवा चार चार तोलेका वारीक लघु गंगाधर चूर्ण ठरेवाद अधसेरघी अधसेर सहत मिलाणा चाटणेसें हरस तथा रक्त- ये सव वरावर लेकर बंधकर रोगोंकूं मिटाताहै (२९ कुटकी) सारकहै पाचक ज्वरघ्न चूर्ण करणा ये चूर्णसें वेका पाचन करणेका और दस्त साफ लाणेका गुण होणेसें बुखारके यण-) रेचक कृमिघ्न तथा ाले जाती है (कुटकी पाचन) कुटकी मोलेटी मुनका (तूंवेके) संग दुसरी वायु हरता कूटकर दोदो रुपेभर क्वाथ तीनपावपाणीमें उकाल चतु- नहीं दिये जाता जलंदर वगेरे पेखारपकताहै दस्तसाफ आता है बुखार उतरताहै (कडु-

भाजित) कुटकीकूं तवेपर सेककर चूर्णकरणा बच्चोंके सादेबुखारमें सहत अथवा गुडके संगमिलाके १ वालचूर्ण लेणेसें एकाधदस्त होकर पेट हलका पडता है बुखार उतरजाताहै (३० कपीला) कृमिघ्न तथा दस्तावर है चिपटे चूरणियाकूं मिटाताहै कपीला जादा लेणें में आवेतो दस्तके संगपेटमें चूंक पैदा करता हैं इसवास्ते दोयसें चार आनीभर गुडमें अथवा छाछमें पीणा अथवा वायविडंग सेंचल जवखार जवाहरड वगेरे दवायो कों समवजन मिलाके उसमेंसें आधे रुपेभर छाछमें पिलाणा (३१ कपूर) उष्ण पसी नालाणेवाला और स्नायुको ढीला करता है कपूर खाणेमे तैसें वाहर लगाणेकी वहोत दवायोंमें डाले जाताहै पुरुषकी गुह्येंद्रि वेर २ जाग्रत होकर धातू निकलपडे तव १ वाल- कपूर १ रत्ती अफीममिलाकर उसकी २ अथवा तीन गोलीकर दिनमें २ तीन वखत लेणी इस तरे कितने एक दिन लेणेसें नसोंका उत्पातनरम पडता है और धातु स्रावबंध होताहै, तैसें प्रमेहमें उस अवयवके दरदमें १ रत्ती अफीम २ रती कपू- रकी दो तीन गोलियांसे दरद मिटता है, कुचीलेका जहर कपूरसें ऊतरजाताहै फकत कपूर रती १ या १ वालतक देणा चाहिये वीच्छूके जहरमें पानमें और वच्छनाग (मोहरेके जहरमें) पाणीमें लेणेसें फायदा करता है, जिस घावमें जीव पडगयें होय उसमें कपूर भरणेसें कीडे नहीं रहते वडके दूधमें घसकर अंजन आंखमें करणेसें दो महीनेका फूला कट जाता है, (३२ किरायता) चिरायता ज्वरघ्न है, कडुआ पौष्टिक सारक तथा कृमिघ्न है, बुखारकी दवामें प्रसिद्ध है, बुखारके वहोतसें चूर्णोंमें काढेमें चिरायता पडता है, (लघुसुदर्शनचूर्ण) गिलोय पींपर पीपलामूल कुटकी हरडे सूंठ लोंग नींवकी अंतरछाल तज सुपेद चंनण इन सवोके वजनसें आधाचिरायता मिलाके चूर्ण- करणा साधारण सब बुखारमें अच्छा है, (लघुसुदर्शन नं० २) कुटकी चिरायता पित्त- पापडा इन तीनोंका चूर्ण सामान्य बुखारकूं पाचन करके मिटाता है, चिरायता बुखा- रकी कम जोरीकूं दूर करणेमें जितना फायदा करता है, एसा बुखारकूं मिटाणेमें गुण- कारी नहीं है, इसवास्ते उसके संग दुसरी ज्वर हर दवायें मिलाणी चहिये (३३ क- लंभा) कडवा पौष्टिक पाचक भेदक साधारण बुखार तथा बुखारकी नाताकतीकूं मिटाता है, गर्भवंती औरतकी उलटी मिटाता है, अशक्त अदमीकूं तथा बच्चोंकों फायदा करताहे, पाचन करता है, तथा कृमियोंकों मिटाता है. बुखारकी दवामें डाले जाता है, (३४ कों चके बीज) धातुपौष्टिकहे है, मरदमी देणेवाले पाकोंमे गिरता है, (आत्म गुप्तादि चूर्ण) कोंचबीज गोखरू सम वजन दोनोंके बरावर मिश्री दूधमें पीणेसें ताकत वढती है, (वृद्धदंड चूर्ण) कोंचबीज गोखरू सुपेद मूसली सुपेदसेमलकीजड आंवला गिलोयसत सबसम वजन सबके बराबर मिश्री दूधसें पीणा बुड्ढेकूं जेसें लकडी आधार देतीहै तेसेंना ताकत अदमीयोकूं ये चूर्ण ताकत देताहे, इसवास्ते वृद्ध दंड नाम दिया है, (३४ कु-

लथी) मधुर मूत्रल भेदक उष्ण पथरीकूं मिटाणेवाली पसीना हरणेवाली दालोंकी जात धान्य है, दक्षणमें वहोत पैदा होती है, काठियावाडवाले खाया करते हैं, दवामें कुलथी पैसावके रोगपर चलती है, पैसाव अटकके आता होय जलणसें बूंद २ ऊनरता होय या पथरीका रोग होय तो कुलथीकूं उकालकर उसमें नवटांक कुलथी चहिये काढा छाणकर शिलाजीत चंद्र प्रभागुगल अथवा सोराखार वगेरे पेसाव लाणेवाली दवायोंके संग एकवाल सींधा निमक मिलाकर पीणेसें पेसावकी पथरी कंकर निकल जाता है, ऐसे रोगीकों खाणेमेंभी कुलथीका उपयोग करणा सींधा निमक डाल इसकी दालखाणी कुलथीकूंशेक पीछे आटा करके वदनके मसलावेतो वहोतपसीना आता होय सो बंध होजाय (३६ कस्तूरी) वाजीकर उष्ण वीर्यस्तंभक आक्षेप वायूकों मिटाणेवाली कस्तूरीभी नकली वहोत आती है, अंबरकी तरे उपयोग होता है, कास कफ दम वगेरे रोगोंमे दुसरी दवायोंके संग दिये जाता है, (३७ कांकच) कृमिघ्न कडुई पौष्टिक ज्वरघ्न तथा पाचन है, बच्चोंके पेटकी कृमि दरद अजीर्ण आफरेमें कांकच के बीजोंकों सेकके उसका चूर्ण देणेसें फायदा करता है, विषमज्वर याने ठंढदेके बुखार अंतर देके बुखार आता है, जिसमें कितनेक दरजे क्वीनाईनके जितना काम करता है, इसवास्ते कांगसीके बीजोंकों काली मिरच मिलाके गरीब गांमोंके लोकोंने लेणा चहिये कांकचका बीज तीन भाग काली मिरच १ भाग चूर्णकी मात्रा ४ सें ६ वाल छ छ कलाकके अंतरसें लेणा विषमज्वर ठंढके सब बुखारों मिटाता है, (३८ काकडा सींगी) कफघ्न है, वहोतसें क्काथोंमें गिरता है, शृंगादि चूर्णमें लिखा है, (३९ काकडीके बीज) ठंढा तथा मूलत्र है, तरबूजका ककडीका खीरेका कदूका खरबूजेका पेठेका इत्यादिक सब पाणीमें घोट खीरेके बीजोंकों मिश्री मिलाय पीणेसें बंध भया पैसाव खुल जाता है, प्रमेह मूत्र कृच्छ्र गरम वायुपर अच्छा फायदेबंद है, इस बीजोके घोट पीणेसें सराप जादा पीणेसें जो मदात्यय रोग होता है, उसमें फायदा करता है, (४० कांचनार) शोधक पौष्टिक स्तंभन और रोपण है. गलेमें शरीरमें जुदी २ जगे गांठे उठ जाती है, उसकूं गंडमाल कहते हैं, कच नारकी छाल अथवा कचनार गूगल इस रोगके वास्ते सर्वोत्तमउपाय है गंडमालसें हाड सडता है एसे दुष्टरोगकूं मिटाता है (कचनारका चूर्ण) कचनारकी जडकी छालकाचूर्ण चावलके धोवणमें पीसकर अंदरथोडी सूंठडाल उसका वहोत दिनसेवन करणा गंडमालामें तथा कूब (पीठका हाडोमें सडणा घुसता है, उससें कूबनिकलतीहै एसे रोगोंमें इस चूर्णसें फायदा होताहै वचपणेमें निकलती कूब होतीहै सो मिटती है, वडीऊमरकी कूबका रोग असाध्यहै (कचनार गुगल) कचनारकी छाल ४०० तोछा वहेडा ८ तोला आंवला ८ तोला संठ मिरच पींपर तथा वायुवरणा एकेक चीज चार २ तोला तज एलायची तमालपत्र हरेकएकेक तोला. सबोंका

वारीक चूर्णकर चूर्ण बराबर शुद्ध गूगल मिलाकर गोलियां करणी चूर्णसें ये दवावहोत फायदे बंद है (४१ काथा) स्तंभन शीतल रोपण है पुराणे अतिसारमें अफीम वगैरे दुसरी दवाओंके संग देणेसें बहोत फायदा करता है, कितनेकठंढेमलमोंमें डाले जाता है चांदीकूं घावकूं रोपण क्रियाकर फायदा देताहै कत्थेकी मुख सुगंधकी गोलियां वणती है पांनवीडेमें खाते हैं (घाव चांदीका मल्लम) कथा मांजूफल वोदार इलायची इन चारोंका चूर्णकर पाणीमें पीसकर लगाणा (कायफल) उष्ण कफघ्न तथा वातहरहै, शरदी तथा शरदीका बुखार और कासमें बहोत फायदे बंद है (कट्फलादिचूर्ण) कायफल मोथ कुटकी कचूर काकडासींगी और पोकरमूल सम वजन ठंढ लगणेसें जो बुखार चढजाता है तथा छातीमें कफका जमाव होताहै दम गलेमें तांती बोले कफगिरे सहतमें चटाणेसें फायदा होताहै (४२ कालीजीरी) कृमिघ्न शोधक चमडीका दोपहरता तथा वायुहरताहै कालीजीरी खाणेमें तैसें लगाणेमें चमडीके दोषोंकों मिटातीहै बहोत दिनोंतक सेवनकरणेसें चमडीपरका कोढ ददोडे दाद पेटकागोला कृमि पेटकीचूंक अजीर्ण आफरे पर उसकी फक्की दोदो रुपेभर सातदिन लेणेसे ठंढका तपभी मिटजाता है अवस्था तासीर मुजबकममात्राभी है (कुष्टहरलेप) हरताल १ भागकाली जीरी ४ भाग त्रिफला एक भाग इन सबोंकों गोमूत्रमें पीसलेप करणेसें सुपेदकोढ चित्री कोढपर बहोत जलदी फायदा करता है, काली जीरीकीचा होती है, सोविलकुल कडवी नहीं लगती और येचा वायु प्रकृतिवालेकुं तथा ऊपरके रोगोमें फायदा करती है, नीवुके रसमें पीस लेप करणेसें जूंये मिट जाती है, निर्दोष दवा काली जीरी है, इसमें किसीभी तरेका डर नहीं है, (अवल गुंजादिलेप) कालीजीरी कासमर्द पंवाडिया हलदी तथा सेंचल इनोंका लेप सब चमडीके दोष सुपेद काला लाल सब कोढ सुधारता है, (४३ कालीपाठ) शोधक सोथ हरता ग्राही मूत्रल कडवी पौष्टिक बुखार तथा दस्तके काढोंमें बहुत वरते जाती है, सोजेपर कालीपाट काम देती है जलमें घसकर लेप किये जाता है, उसका रस पीणेसें सूजन ऊतर जाती है, (पाठादिक्काथ) कालीपाठ इंद्रजव चिरायता मोथा गिलोय सूंठ पित्तपापडा समवजन मिलाकर २ रुपियेभर ३२ तोला जलमें उकाल ८ रुपेभर पाणी पीणा इससें सादा नहीं उतरे सो तप गरमतप एकांतरिया तेजरा चोजरा बुखार जाता है, पित्तकी उलटी मिटती है, (४४ कीडामारी) कृमिघ्न ज्वरघ्न तथा शोथघ्न है, इंद्रजव वायविडंग कालीजीरी कीडामारी कांकच जेसीचीजों घरमें रखणेकी जरूरी है, वचोंके चेर २ वहोत कामकी है, वचोंकी उलटी उवाकी पेटमें चूरणीयेपर इसकूं अथवा इसके वीजोंकूं पीसके दिये जाता है, कीडामारी लिये पीछे ऊपरसें जुलाव लेणेसें चूरणिये कृमियां निकल पडती है, गधवाले गुमडे फोडेमें जीवपड जाता है, उसपर कीडामारीकी लुगदी वांधणेसें जीव मिट जाते हैं, कीडामारीकारस

वचेकूं ॥ आधे रुपेभर वडेकूं २ रुपेभरसें जादा देणी जहरी असर होकर दस्त उलटी होती है, (४५ कूकडवेल) सखत रेचक छींकलाणेवाली जहरका नाश करणेवाली हिड-कवाय तथा सांपके काटणेमें कूकडवेल देणेसें सखत उलटी होकर कितना एक जहर कम होजाता है, साधारण जुलावमें इसकूं वरतना नहीं वहोत नुकशान होता है, (४६ कुवाडिया) पमाडके वीज चमडीका दोपहर ज्वरघ्न दाद चमडीके सव दोप ऊपर लगा-णेसें अच्छा फायदा होता है, वीज और जड दोनूं काम आती है, वीजकूं थोहरके रसमें भिगाकर गोमूत्रमें महीनपीस लेप करणेसें आगड दोगड गांठभी मिटजाती है, वीजोकों नींवूके रसमें या छाछकी आछमें पीस लेपकरणेसें दाद मिट जाती है, (४७ कवार पाठा) रेचक शोधक पित्तशामक गोलेकों मिटाणेवाला वहोतसी दवाइयां वणाणेमें कुंवार पठेका रसकामदेता है, (कुमारिकासव) वहोत उपयोगी वस्तु वणती है, सो योगचिंतामणी वगैरे ग्रंथोमें लिखा है, सहजमें नहीं वणता है, इसवास्ते इहां नहीं लिखा है, पेटपर वांधणेमें तथा फोडा फुनसियोंके पकाणेवास्ते कुवारपठेकी फाड-पर ऊपरका छिलका दूरकर साजीखार हलदी वगैरे भरके अंगारमें सेक गरमकर गरम २ वांधे जाता है, पेटका रोग जेसें तिल्ली लीवर गोला मलका रुकणा वगेरेंपर कुमा-रिकासव वहोत गुण करता है, दस्त साफ लाता है, सोधक गुण है, इसवास्ते चमडीके रोगमेंभी फायदा करताहै, औरतोंके आर्त्तव दोप सुधारणेवाली दवाइयोंमें कुमारिकासव मुख्य दवा है, जिस २ रोगोंमें दस्तकी कवजी होय और पित्तका दोप वढ गया होय उन सव रोगोंमें कुंवार पठा फायदा करता है, (४८ केल) ठंढी भारी तथा अस्मरी योनिदोष तथा रक्तपित्तकूं मिटाणेवाला है, केलेके गाभेकारस पीणेसें संखिया सोमल वगेरेका जहर मिटता है, केलेके पत्तोंपर सोणेसें दाहकी शांति होती है, (४९ केला) शीतल भारी धातुवर्धक मांसवर्द्धक तथा कफ करता है, भस्मक रोगमें पके भये केला घीके संग खाणा प्रदर वदनका धुपणा मूत्रातिसार ओरतोंके वहुत पेसाव उतरे उसमें पक्का केला आमलेका रस अथवा सूके आंवलाका उकालारस और मिश्री मिलाकर चाटणा केलेका अजीर्ण होयतो इलायची खाणी पेसावमें धातु जाती होयतो और पाचन शक्ति अच्छी होय तो फजर और सांझ एक अथवा आधा केला घीके संग खावै ठंढा मालमदे तो अंदर सहत मिलाणा (५० केशर) शीतल स्तंभन वाजीकर और पौष्टिक है, इसवास्ते वहोतसी पौष्टिक दवायोंमें गिरती है, पाकोंमें वकरीका दूध उकालकर उसमें रत्तीसें १ ॥ रत्तीतक केशर डाल पीणेसें नाकमेंसें मूमेसें खासीमेंसें गिरता खून अटकाता है, नाकमें पीनसमें तथा आधाशीशीमें ताजे घीमे केशर घोट उसकी नाकमें नासलेणी गर्भणी ओरतकूं रक्तगिरणे लगे तव मखणके संग केशर देणा (मात्रा) १ रत्तीसें ३ तक (५१ कोला) शोधक पौष्टिक तथा पित्तशामक है, सुपेद भूरा पेठा पाक मुरब्बा वणता

है, दवायोंमें काम देता है, पित्तशामकपणेसें रक्तपित्त मगजकी गरमी औरतोके गर्भाशयके कितनेक विकारोंमें अच्छा फायदा करता है, वर्दनमें ताकत देता है (५२ कंकोल) उष्ण दीपन पाचन कफघ्न तेसें कृमिनाशक है, मिरचकंकोलके नांमसें बजारोंमें विकती है, काली मिरचसें कदमें दूणी होती है, मिरगी यानेवाई तथा हिस्टीरीयांमें उसका वहोत फायदा देखा है, इसके दो दो चार २ दाणे हमेस खाणेसें कितनेक दिनोंसें मिरगी बाई हिस्टीरीया उन्माद कम होणे लगता है, उसके आणेमें तफावत अंतर पडते जाता है, इस रोगमें कंकोलकी निश्चै अजमायस करणी बाकीभी काम आती है, लेकिन् अजमायी भई नहीं है, (५३ खडसलिया) जिसकूं पित्तपापडा कहते है, बुखारसे बहोत फायदेवंद है, (पर्पटादि हिम अथवा इकेलेकाहिम– पित्तपापडा मुनका दाख वाला धाणा गिलोय चिरायता समवजन कूट अढाईसेर जलमें भिगाके रखणा येहिम सादे बुखारमें गरम् बुखारमें पुराणे बुखारमें पित्तके बुखारमें इत्यादिमें बहोत फायदा करता है, इस इकेलेके हिममें मिश्री मिलाणेसें एक तरेका ठंढा पित्तशामक शरबत होजाता है, वो उलटी गरमवायु चिणखिया पेसाव तथा पित्तके बुखारकूं मिटाता है, (५४ खापरिया) खापरियेके काले और भूरे रंगके ठीकरे बजारमें मिलते है, सात दिन गोमूत्रमें रखणेसें कडवे नीमके रसमें घोटणेसें अथवा गोमूत्रमें तीन कलाक उकालणेसें शुद्ध होता है (खापरियेका अंजन) शुद्ध खापरियेकूं पाणीमें खूब घोटणा बहोत पाणी डालके हिलाय डालणा तब निकम्मा हिस्सा नीचेजमेगा नीतरे जलकूं दुसरे पात्रमें लेकर ऊकालणा उकालतेजो बाकी रहे उसकूं त्रिफलाके काढेके पाणीकी तीनभावना देणी सूकेबाद दशमें भागका कपूर डाल मिलाके शीशीमें भर रखणा आंखोकी जलण निर्वलता धूंधका जाला धुयें जेसा दिखाई देणा ताजाफूला सब इस अंजनसें अच्छा होता है, (वंसंत मालनी) एक भाग सुपेद मिरच दोय भाग खापरिया पीसकपड छाणकर गऊके मखणमें खरलकरणा चिकणास सूके जहांतक नींबूके रसमें खरल करके टिकियां बांधणी एकेक बाल वसंत छोटीं पींपल सहतके संग खाणा दूध भातका भोजन करणा पुराणा धातुगतज्वर प्रदर निर्वलता तथा क्षयमें बहोत फायदा करता है, खापरिया इकेला महीनपीसाभया जलेपर गिरणेसें चोटलगेपर घावपर खुजलीके पर छिडकणेसें सुकाय डालता ह (५५ गरमाला) किरमाला सारक है, थोडी मात्रासें दस्त साफ लाता है, बहोत देणेसें जुलाब लगाता है, कितनेक सन्निपात ज्वरके काढेमें किरमाला डाले जाता है, इसका दस्त सादा हलका और निडर है, इसवास्ते बचोंकोंभी दिये जाता है, ॥ रु० भर लेणेसें दस्त साफ आता है, एक भर लेणेसें जुलाब लगता है, बचोंकों ऊमर मुजब दो आनीसे चार आनीभर (५६ गाजबां) गलजीभी शोधक शीतल मूत्रल तथा

पित्तशामक है, गलजीभीकूं भोंपाथरीभी कहते हैं. खूनकूं साफ करणेवाली खुजाल दाह तथा चमडीके दुसरे रोगोंपर पीणेसे वहोत फायदा करती है, (गाजवांस्वरस) आधे-रुपेभर पत्तोंकों पाव जलमें पीसके रसकरणा मिश्री मिलाकर पीणा चमडी तेसें आंखोंकी जलण गरमी पित्तकाविगाड गरमवायु तणख खूनकातपणा पित्तकावुखार वातरक्त गरमीसें फूटकर निकलेभये गड गूंवड रूंतोड खुजाल लुखास सबमें फायदा करता है, (५७ गिलोय) शमन ज्वरघ्न पित्तशामक शीतल शोधक मूत्रल पौष्टक वहोत ऊमदा दवा है, वहोतसे काढे और चूर्णोमें गिरता है, पित्तका वुखार तेसें विषमज्वरमें तो वहोतही फायदेवंद जीर्णज्वर तथा धातुगत सब वुखारमें गिलोय वहोतही असर करती , और जो हाडगत पुराणा वुखार किसीभी दवाईसें जब शरीरकूं नहीं छोडता तो गिलोय छुडाय देती है, संस्कृतमें उसका नाम अमृता है, सो स्वादमें तो कडवी है, लेकिन् गुणमें तो साक्षात अमृता ही है, (अमृतास्वरस) गिलोयकूं कूटरस निकाल सहत डाल पीणेसें पीलिया मिट जाता है, मिरचडाल थोडे दिनपीणेसें जीर्णवुखार उतरता है, गरमवायु दाह जीर्णज्वर पित्त प्रकोप मगजकी गरमी आंखकी गरमी चमडीमेंसें तुरत फूटके निकले भये दोष वातरक्त पित्तकी उलटी रक्तपित्तकी उलटी रक्तपित्त नकसीर आधाशीशी वगेरे वहोतसे रोगोंका शमन करती है, (अमृताकाथ) वुखारमें गिलोयका काढा अच्छा फायदा देती है. चमडीकी गरमाईके पुराणे दोषोंमें गिलोयका क्वाथ दुसरी शोधक और सारक दवाओंके संग देणेसे वहोत अच्छा फायदा देती है, ये काढा विस्फोटक शीतला अछवडा जले वगेरेकूं मिटाता है, चमडीपर गरमीके चक्कर जेसे चठे होते हैं, उसकूं वातरक्त कहते हैं, उसकूं ये काढा एरंडीया तेल डालकर पिलाणेसें मिटता है, गिलोयसत्व जीर्णज्वर शिरकी गरमी निवलाई फीकास प्रदर वगेरेमें गिलोय सत्व अच्छा है, चांदी घावके आसपास जो फुनसियें उठा करती है, (शूकरोग) उसकूंभी गिलोयका काढा मिटा देती है, (अमृतामोदक) गिलोयका चूर्ण १६ तोला घी सहत और पुराणा गुड दरेक एकेक तोला इन सबोंकों घोटकर सवा पांच २ तोलेकामोदक करणा मोदक नहीं बंधे तो सहत जादा डालणा इस मोदकका वहोतदिन सेवन करणेसें पथ्य खुराक खाणेसे वहोत वर्षोंका पुराणा ज्वरचले जाता है, (५८ गूगल) वातहर शोधक शोधक सारक रोपण तथा पौष्टिक है, महाजोरकी वादी जो देशी याअंग्रेजी दवायोंसें अच्छी नहीं होय वोगूगलकी अनेक तरेकी वनावटीसें अच्छी होसकती है, गूगल एक दरखतकारस है, जेसलमेरकी धरतीमें इसकी पैदास है, इसमें धूल मट्टी बजारमें विकणेसे लग जातीं है, इस वास्ते शुद्ध करलेणा चाहिये पीली २ तेजगूंदजेसीडलीकण गूगली लेणीचाहिये केइ एक काले रंगका धूल मट्टी मिले गूगलको पाणीमे भिगाकर वस्त्रसें छानकर फेरउस जलकूं अंगारपर चढाकर जाडा करके काममें लेते हैं. त्रिफलाका

काढा होय उसमें छाण लेणा सबसें अच्छा है, वाकी तो गूगल अनेकतरे सुधता है, मुद्दे इसमेका कंकर फूस निकालणा चहिये खाणेमें तथा ऊपर लगाणेमें गूगल दोनोंतरे काम देता है, वादीके रोगपर मुख्य है, लेकिन् वो वायु मुख्यपणे दोय है, एकवादी तो शरीरमें स्नायुओंकी गतिमें जोर करके शरीरके अवयवोंमें खेंचाताणका तोफान करती है, (हिचकी वगेरे) और दुसरी तरेकी वादीमें स्नायुओंकी चाल वंध होजाती है, (गंठियावायु) संधिवायु वगेरोंमें ये गूगल नसोंकी चाल कम पडणेवाली वादीमें गुण करताहै, वादीकी वेमारी टाल दुसरेभी वहोतसे रोगोंपर दुसरी दवाइयोंके संग गूगलका उपयोग होता है, मूत्राशयके तथा खून विगाडके वहोतसे रोगोंमें गूगल फायदेवंद है, (गूगलकी न्यारी २ वनावटीकूं गूगलही नाम दिया गया है, सो थोडा लिखते हैं, (योगराजगूगल) सूंठ पींपर चव्य पीपलामूल चित्रककी जड सेकी हींग अजवाण सरसूं जीरा स्याह जीरा संभालूके वीज इंद्रजव कालीपाठ वायविडंग गजपीपर कुटकी अतीस भाडंगी वच मरोडफली ये वीस दवा चार २ आनीभर हरड वहेडा आवला ये तीनों मिलके १० तोलाभर इन सवोंके वरावर याने १५ रुपेभर शुद्ध गूगल इन सवोंकों मिलाकर घी देतेजाणा और कूटते जाणा ये योगराजगूगल औरभी केइ दवाइयोंमें २।४ तरेकाभी वणता है, धातू भस्मेंभी डाले जाती है, वगेश्वर रूपेश्वर चंद्रोदय नागेश्वर मंडूर लोहभस्म अभ्रक भस्म इन पूर्वोक्त योगराजमे डालणेसें महायोगराज कहलाता है, सर्व वादीके रोग सव तरेका कोढ चामडीका रोग वातरक्त श्वास शूल नेत्ररोग औरतोंके ऋतूधर्मका दोप वांझडीका दोष हाडोका सडणा दुष्टव्रण भगंदर मेद उदर वगेरे रोगोंमें देणा वादीके रोगमें रास्नादि क्काथमें कोढ रोगमें कडवे नीमके छालके काढेमें वातरक्तमें गिलोयके काढेमें पेटके रोगोंमें पुनर्नवादि क्काथमें आंखके रोगमें त्रिफलाके क्काथमें पांडूमें गोमूत्रमें वाकी सव रोगोमें घी सहतके संग देणा सव वेमारी जातीहै, हमने केइदके अनुभव करलियाहै, (किशोरगुग्गल) गिलोय हरड वहेडा आंवला सव ६४ तोला उनोंकों छ गुणे जलमें ऊकालकर आधा रहणेपर छाण लेणा उस जलमें ६४ तोला शुद्ध गूगल डालके मंद आंचसें उकालते जव जाडा होजाय तव इतनी चीजोंका महीन चूर्ण उसमें डालना हरड वहेडा आंवला दो दो तोला गिलोय ४ तोला सूंठ मिरच पींपर छ छ तोला वायविडंग दो तोला दंतीमूल तथा निसोतकी छाल एकेक तोला मिलाकर चार आनीभर २ की गोलियां करणी सवतरेका चमडीका रोग कोढ वातरक्त व्रण गुल्म प्रमेह पिटिका (प्रमेहके रोगमें फनसियां होजावे सो) वगेरे वहोतसे रोग अच्छे होते हैं, सर्व रोगोंमें मंजीष्ठादि क्काथमें देणा अच्छा है, अथवा रोगों मुजव अनुपानमें अथवा फकत पाणीमें दे सकते है, (त्रिफला गुग्गल) हरड वहेडा आवला तथा पीपर चार २ तोलेका वारीक चूर्ण तथा गूगल २० तोला सवोंकों जलसें पीस चार आनी भरकी गोलियां करणी

भगंदर तथा नासूरवालेकों कितनेक दिन देणेंसें फायदा करता है, (गोक्षरादि गूगल) गोखरू ११२ तोला छगुणे जलमें उकालणा आधाजले तब पाणीकूं छाणकर उसमें २८ तोला शुद्ध गूगल डालणा मंद आंचसें कुछ गाढा होणे लगे तब इतनी दवाइयें अंदर मिलाणी सूंठ मिरच पीपर हरडे बहेडा आंवला मोथ एकेक ४ चार तोला पीछे चार २ आनी भरकी गोलियां करणी प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदर मूत्राघात वीर्यदोप तथा पथरीके रोगमें अच्छा गुण देता है, इसके सिवाय कचनार गूगल सिंहनाद गूगल अमृता गूगल षडंगगूगल चंद्रप्रभा वगैरे दवायोंमें गूगल मिलाता है, वादीसें कमरमें पीठमें तथा सांधोंमें चसके और शूलचले उसपर गूगलका अथवा गूगलके संग वादी हरता दवायें मिलाकर लेप करणेसें फायदा होताहै, (५९ गूंदी) पत्तोंका स्वरस ४ रुपेभर उसमें सहत २ रुपेभर मिलाकर पिलाणेसें जलते पेसाववाला प्रमेह प्रदर उष्णवात उधरस कफ ये सब मिटता है, तजा गरमी मिटती है, खून सुधरता है, (६० गुलबास) धातुपौष्टिक है, उसके सांझकूं हमेसां फूल खिलता है, सुपेद लाल पीला और मिश्र रंगके फूलोवाली होती है, गडगूमडपर उसके पानोंकों गुडके संग पीसके लेप करणेमें आता है, उसकी जड धातुपुष्टी तथा धातू जाणेपर बहोत फायदा करता है, इसकी जडका चूर्ण दो दो तोला दूध तथा मिश्रीके संग लेणेसें बहोत दिनोंसें धातू जाती होय सो बंध होजाती है, ये गरम है, ९ इसपर दूध अच्छीतरे खाणा सुपेद फूलवालेकी जड बहोत फायदेबंद है, चोपचीनीभी इसही की जातीहै इसवास्ते इसके जेसाही फायदा करतीहै (६१ गुलाबके फूल) ठंढा रेचक तथा पित्तहर हे इसके फूलोंका जुलाब लिये जाताहै दो रुपियाभर गुलाबके फूलोंकी चाकरके अंदर सूंठ और बूरा डालकर पीतेहैं गुलकंदभी बणताहै गुलकंद पित्तकूं शमन करताहै औरी शीतला ओखा इत्यादि और भी पित्तके प्रकोपमें गुलकंद फायदा करताहै, बणाणेकी विधि पीछे लिखी है (६२ गुवारके पत्ते) गुवारके पत्तोंका साग घीमें रांधकर एक अठवाडे खाणेसें रातींधापणा मिटताहै, (६३ गेरू) ठंढा तथा रोपणहै चमडीके रोगमें अथवा मधुमखी टांटियां भ्रमरे अदिकी डंककी जलणकूं गेरूका लेप शांत करता हे (गेरूका उबेरा) गेरू ५ भाग फुलाया भया नीलाथोथा ३ भाग बराबर घोटकर लेपकरणेसें सादीटांकी तुरत मिटजाती है (६४ गोखरू) मूत्रल शीतल तथा धातुपौष्टिकहै, गोखरू धातुपुष्टिमें अछा है, छोटेगोखरूसें बडे दखणी गोखरू गुणमें बहोत अछे होतेहैं धातूका गिरणा हथरससें भईनाताकती गरमवाय मूत्रकृच्छ्र पेसाबकी रेती वगेरे रोगोंमें गोखरू बहोत फायदा देती है, (गोक्षरचूरण)गोखरू तथा तिल दोनों का चूरण करके बकरीके दूधमें तथा सहतमें मिलाकर खाणेसें हस्त क्रियासें भई नाताकती ईमें फायदा करती है गोखरूका (लुआब-गोखरू जडसमेत लाकर पीसकर जलमें लुआबबणाणा पेसाबकी दाह गरमवायु तथा पेसाबके रुकणेकों मिटाता है (६५गोमूत्र) उष्ण

पाचन कफघ्न वातहर तथा कुष्ठहर है धातुओंकों शोधणेमें तथा कितनेक विकारी पदार्थोंके शोधनकरणेमें कामदेताहै खुजाल कोढ शूल गोला सोजा खासी कृमि कामला तापतिल्ली वगैरे रोगोंमें फायदा करता है गोमूत्रसें स्नान करणेसें वदनकी खुजली मिटतीहै, इसवास्ते चमडीपर लगाणेके लेप अथवा सूकी दवाकूंभी गोमूत्रमें तइयार करणा चाहिये गोमूत्रकूं एकवेरवस्त्रसें छाणकर अंदर हलदी डालकर पीणेसें हमेस थोडे दिनोंमें पांडूका रोग उपद्रव युक्त मिटजाता है (६६ गंधक) शोधक सारक तथा कृमिघ्नहै गंधककी वहोत जात है लेकिन् पेटमें खाणेमें आमलसार जिसकी गोलडली होतीहै सो सोधकर खाणेमें काम आता है और लंबानलीवाला गंधक आता है सो वाहर लगाणेमें कामदेताहै गंधक शुद्ध करणेकी अच्छी विधि लिखते है एक कडाहीमें पावघी गरमकर गंधक डालदेणा आमलसारा १ सेर एक पात्रमें अधसेर तीन पाव दूध डाल उसपर ढीलासा कपडा वांध देकर झट गंधक गलतेही घीसमेत दूधवाले वस्त्रपर उंधादेणा ठरेवाद दूधमेंसें निकाललेणा येगंधक सब कार्यके लायकहे रसोंमें येहीकामिलहै केइयक दूधमें दाणेटपकातेहै. सोविधि वहोतोंकों मालूमहे जादा आंच लगणेसें लाल पडजाता है तो गुण कम होजाताहै दूधपात्रपर ढीला लटकता वस्त्र वांध उसमें गंधकपीस डालदेणा उसपर मट्टीकी पाल दो दोअंगल उंची लगाकर लोहके तवेपर झग २ ते अंगारेधर उसपात्रकी पालपर धरके पंखेसे झपटणा गंधकके मोती जैसे दाणे दूधमें गिरेगा इसमें गंधकके जलणेका डर नहीं है लेकिन् सोधणेमें देरी वहोत लगती है गंधकका मुख्य उपयोग हरसके रोगपर है दस्तकी कवजीपर अजीर्ण हेजे वगेरेमें और जादा करके चमडीके रोगमें खाणेसें तेसें चोपडणेसें फायदा करता है हरसमें गंधक दूधके संग लेणेसें फायदा होताहै और दस्तसाफ लाता है हरसके मस्सेमें सें खून गिरता होयतो गंधके संग एक दो वाल फिटकडी मिलाकर दूधमें लेणा खुजलीमें गंधक दूधमें पीणा वदनके गंधकका मालिस करणा अंदरके जंतुकाविकारमिटजाताहै इकेले गंधककी मात्रा २ सें ८ वालतक (गंधकवटी) शोधागंधक तीनभाग सींधानिमक लसण सूंठ मिरच पीपर सेकी हींग तथा जीरा ये सब एकेक भाग मिलाकर नींबूके रसमें याजलमें झाडवेर जितनी २ गोलियां करणी मात्रा २ सें चारवाल अजीर्ण अरुचि हेजा उलटी मौल शूल वगैरेमें फायदा देतीहै (गंधणका तेल) शुद्धगंधककूं दूधमें उकालणा पीछे उस दूधकूं जमाकर दहीकर विलोयेवादघी निकले वोही गंधकका तेल समझणा ये तेल चमडीपर मसलणेसें वहोत फायदा करता है (६७ घी) वातहर पित्तशामक विषहर रोपण स्निग्ध पौष्टिक तथा रसायण है उन्माद शूल गोला विषव्रण क्षयक्षीणता तथा क्षत वगेरेमें फायदा करता है महनत करणेवालोंके वास्ते अच्छा है, वायुके कोठेवाला हमेस नवटंक घी पीवेतो वदनमें गरमी वढकर कुव्वत आतीहै, सोमल वगेरे जहर खाया होय उसकूं घी पिलाणेसें जहरकी गरमी कम होतीहै दूसरा घी पिलाणेका और भी मत-

लब है जहरवालेकूं घी खूब पिलाकर उलटी कराणी या आपसेंही होयतो घीके चिकणास के संग जहरी पदार्थके परमाणू पकडी जकर बाहर निकलाहे, घी ठंढा हैं, इसवास्ते चमडीपर लगाणेसें दाह तथा जहरकी जलण कम होतीहै, अंगार तथा तेजावसें वदन जलगया होयतो घी लगाणेसें वदनमें शांति होतीहै पुराणा घी जादा गुण करता हैं, जादा पुराणा घी नहीं मिले तो सोवेर जलसें घीकूंमथ डालणा ज्यों जादा मथे त्यों अछा होताहै, (घीका उपयोग नीचे मुजब) (१) आधासीसी– गउका अछा ताजा घी सांझ सवेरे नाकमें सूंघणा (२) शिरकापित्त-- शिरपर ताजा घी मसलणा (३) हाथ पैरकी जलण (तलियोंपर रगडणा) (४) अत्यंतदाह-- जादा बुखार वगेरोसें वदनमें जलण लगगई होय तब सोवेरका धोया घी गऊका मसलणा (५) धतूरा तथा रसकपूर का जहर– गऊका जादा घी पीजाणा (६) दारूकानसा– गउका घी मिश्री खेलाणा (७) चोथिया बुखार उन्माद वाईयानें मृगी-- गऊका दही दूध तथा गोवरका रसमें गऊका घी सिद्धकरके पिलाणा (८) प्यासका रोग गऊका घी तथा दूध पीणा (९) विसर्प याने रक्तवायु– सो अथवा हजार वेर धोया भया गऊका घी वेर २ लगाणा (१०) बचेकी छातीका कफ– कफका जमाव जमगया होयतो गऊका घी छातीपर धीरै २ मसलणा (६८ घोडेकीलीद) पांचरुपेभर आसरे लीदमें पाचरुपा भर जल डालके मसलके जल छांण लेणा उसमें तलीभई हींगका भूका दो अढाई मासा डालकर पीणेसें भयंकर भी शूल मिटती है (६९) चीणीकवाव–मूत्रल ठंढी दीपन तथा पाचन हे प्रमेह गरमवादी तथा जलते पेसाबमें दीजातीहै, कवावचीणीका चूर्ण २ सें ४ वालचूर्णमें चंद-नके तेलकी पांचचार बूंद डालके पीणेसें पेसावकी जलण मिटती है (७० चिणेकाखार) दीपन तथा पित्तशामक है खेतमें ऊगेभये चणोके दरखतोंपर फजर झांझरके महीन वस्त्रो-ओसके जलपर फेरणेसें पाणी जो लगता है वो चणखार कहलाताहै अजीर्ण चूंक शूल-पेटके दुखणेमें इसखारमें जरासेकी हींग डालके पीणी उसमें अंग्रेजी दवा सल्फेट ओफ झिंकके जैसा गुणहै (७१ चणोठी) चिरमी शीतल वातहर रोपण तथा पौष्टिकहै, इसके पत्ते मूमें रखणेसें अबाज खुलती है। जडकूं पाणीमें धसके उसका पाणी आधाशीशी तरफके नसकोरे फुरणियोंमें सुंघाणेसें तीनचार दिनोमें आधाशीशी मिटती है (गुंजादि तैल– भांगरेका रस १ सेर लाल चिरमीका भूका २॥ रुपियाभर तथा तिलका तेल तोला १० इन सबोकों उकाल तेल करणा ये तेल टाटपर लगाणेसें बाल ऊगजाताहै, गिरते भयेवालोंकों मजबूत करता हे, सुपेद चिरमीका पाक वणता है वो पुष्ट होता है, लाल चिरमी उलटी करातीहै, और चमडी द्वारा शरीरमें दाखल होयतो जहरका असर करतीहै (७२ चित्रक) दीपन पाचन दंभक तथा दाहक है इसकी जडकी छालकूं छाछमें पीस लगाणेसें (वलस्टर) फफोला उठता है (चित्रकलेप) चित्रक टंकणखार हलदी

तथा गुड समभाग पीस लगाणेसें हरसके मस्से गिरपडते है. कितनीक दवायोंमें चित्रककी जडका उपयोग होताहै (७३ चीमेड) आंखके रोगमें अछी है(भरण) चीमेडके वीज भिगाकर वाद दांतोंसें फोंतरे उतारकर अदरके मींजीकूं महीन चावकर आंखमें आंजणा इस भरणेकूं अंवलीके अंदरके गिरके संग मिलाकर आंजणेसें आंखकी गरमी दुखती कडकती आंख जलदी आराम होतीहै (७४ चूना) दवामुजब चूनेका नितरा भया जल काम देता है पेट छाती तथा वादीकी सूजन और शूलपर चूना और सहत मिलाकर लेप करणेसें फायदा होताहै चूनेका नीतराजल उलटी मिटातीहै चूना और हरतालका लेप वालोंकों उडा देताहै, पत्थर शंख कोडी मूंगिया सीप इनसबोकी भस्मी चूना है मोतीत कात (७५ चोपचीणी) शोधक तथा पौष्टिक है, उपदंशयाने गरमी रोग जब शरीरमें पुराणा होकर फूटता है शीतलाजैसें चट्टे पडते हैं चमडी स्याह होजाती है सांधोमें दरद और पकडीज जाते हैं उसमें चोपचीणी अछीहै (चोपचीणीका पाक) चोपचीणीका चूर्ण तो ४८ बरावरसें जादा घी डालकर सेकणा पीछे ५६ रुपेभर बूरेकी चासणी करके वो चोपचीणी तथा पीपर पीपरामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लोंग इन सबोंकूं एकेक रुपिया भरलेके इसमें पीसकर मिलाकर लड्डुबांधणा ये पाक हमेस नवटांक खाणा (७६ छाछ) छाछकी जाति गुणदोप आगे लिखा है दवामे छाछके गुण इसमुजब है, (१) संग्रहणी—फकतछाछ पीके रहणेसें असाध्यसंग्रहणी मी साध्य होजाती है (२) बंधकुष्टमें सोवा तथा संचल डालकर छाछपीणी (३) हरसमें चित्रकके जडकी छाल पीसकर गऊकी छाछ या दही लेणा (७७ छाण) गऊका गोवर गरमकर कांचपर सेककर बांधणेसें निकली भई कांच अंदर घुसती है भेंसके गोवरकूं पाणीमें हिलाकर उसपाणींकूं छाण उसमें बूरा डालकर पीणेसें परमेंकी सखत जलण मिटजातीहै, (छाणेकी राख) शीतला निकलणेसें जो फफोले वदनपर चकचकते फूटजाते हें उसपर राखकूं कपडेसें छाणके दवाणेसें सूकजातेहैं (७८ जवखार) जवकी गीली डांखलियोंकों जलाकर राखकर खार निकालणेकी विधिसें खार निकालणा इससें उधरस कफ तथा बचोंकी छाती भराणीमें दुसरी दवायोंके संग अनुपानतरीके वापरते हैं, खासीमें १—२ रत्तीभर जवखार लेते हें जवखारमें बहोत भाग कारवोनेट ओफ पोटाशकाहै, (७५ जाई) रोपण है औरतों का योनिदाह व्रण खुजाल तथा फोडे फुनसियें जाईके पत्तोंकी लुगदी बांधणेसें अछे होतेहं (जात्यादि घृत) जाई पटोल तथा कडवा नींब इन तीनोंके पत्ते कुटकी हलदी दारूहलदी उपलेट मजीठ नीलाथोथा मेण जेठीमध करंजके बीज तथा बाला ये सब एकेकतोला चूर्ण किया भया घी ५१ रुपेभर पाणी २०४ भर विधिमुजब घी सिद्ध करणा (८० जामुन) गुणमे ग्राहीहै बीछूके डंकपर पत्तोंकी पोटिस गुण करतीहै, पथरीके रोगमें जामुन अछी है, मीठे पेसाब उतरे उसमें जामुनके बीज दियेजाते हे रक्तातिसारमें जामु-

नके छालकारस दूधमें पीसकर सहत डालकर पीणा मधुप्रमेहपर जामुन अच्छा फायदा देताहै (८१ जावंत्री)उष्ण तथा दीपन है गरम मसाले खुसबोईमें लीजाती है तथा उलटी अजीर्ण अरुचिपर जावंत्री देते हैं (८२ जीरा) दीपन पाचन ग्राही जरा उष्ण रुचिकारक गर्भाशयकूं सुधारणेवाला युक्तिसें उपयोग करणेसे वहोत फायदेवंद है शरीरके अंदरकी वुखारकी गरमी निकालणेमें जीरा फायदे वंद है जीराकी भूकी फजरमें पेसेभर वूराया मिश्रीया पुराणे गुडमें खाणी केइ यकदिन खाणेसें वुखार या वुखारकी गरमी वदनमेंसें निकल जाती है गायके दूधमें सिजाकर सुकाकर खाणेसेंभी एसाही फायदा करता है जीरा मिश्री चावलोंके धोवणमें पीणेसें औरतोंका प्रदर धोलेका लालका रोग मिटता है डाभकीजड उसमें जीरेकी भूकी मिश्री डाल पीसकर पीणेसें स्त्रियोंका धातु गिरता वंध होताहै (८३ जेठीमधु) मोलेठी शीतल कफघ्न तथा पौष्टिकहै सूंपकजावै कंठ वैठजावै खालीखासी आवै तव जेठीमधकी जड अथवा रवेसूस मूंमें रखणेसें फायदा होताहै चिरमी केजडमें मोलेठीजैसा गुण है उसके एवजीमें चिरमीकी जड वपरातीहै देशी ओषधोंमें कितनेक जीवनीय गणके उत्तम दवायें हैं, उसमें मोलेठीकूं भी गिणी है मोलेठी पुष्टभी है इसका चूर्ण घी तथा सहतमें चाट ऊपरसें दूध पीणेसें वीर्यकी वृद्धि होती है, औरतोंके प्रदर रोगमें लालपाणी गिरता होय उसमें जेठी मध १ तोला चावलोंके धोवणमें पीस ४ तोला मिश्रीडाल पीणेसें फायदा होताहै छातीमेंसें खून गिरताहोय एसे (उरक्षत रोगमें) जेठी मधुके काढेमें पीपर और भीमसेनी कपूरका चूर्णपीणा खूनकी उलटीमें मोलेठी तथा सुपेद चंनण दूधमें घसकर पिलाणा और स्वरभंग याने साद वैठ गया होय तो मोलेठीका चूर्ण मिश्रीडाल दूधमें पीणा (८४ जहर कुचीला) पौष्टिक वायुहरता तथा पाचक है, इसकूं वहोत सावधानीसें वरतणा कारण जहर है जादामें जादा १ चालसें जादा मात्रा लेणेसें इसका जहरी चिन्ह मालम देता है, इतनाहीनहीं वहोत दिनोंतक इसका सेवन करणेसें भी नुकशान होताहै, लेकिन् युक्तिसें इसका उपयोग होयतो वहोत फायदेवंदहै (कुचीलेकी काफी) कूचीलेकूं गोमूत्रमें उकालकर ऊपरका छिलका दूरकर घीमेंतल काफी [illegible] ये काफी अजीर्ण पेटचूंक तथा अग्निमांदमें लेणी अच्छीहैं, जुदी २ वादीका रोग [illegible]) कमरझलणी अर्द्धांग पक्षाघात अर्दित वगेरेवायु जीर्ण भये पीछे उसमें जहर [illegible] वहोत फायदा करता है इन रोगोंकी शरुआतमें उनोकी तीक्ष्णतामें जहर कुची लादिया जायतो फायदेके वदले नुकशान करता है पीठके वरडा जो हाडहै उसमें रोग होणेसें हाथपांवोंमें धूजणी होजातीहै, और कितनीक वखतलिखते २ हाथ धूजताहैं, और अंगलियेंासें कलम नहीं पकडे जाती एसे रोगोंमें कुचीलेका दोयच्यार महीना सेवन करणेसें फायदा होताहै धातूका गिरना तथा मरदमीकी नाताकतीमें वहोत फायदा करता है (समीर गजकेसरीरस) कुचीला अफीम तथा कालीमिरच सम वजन मिलाके रती २

की गोलियों वणाणी गंठिया कमरका भारीदरद अर्द्धांगवायु अर्दितवायु पक्षाघात वगेरे वादीके जीर्णरूपमें मात्रा १ रत्तीकी कुचीलेकूं जलमें घसकर लेप करणेसें सोजेकूं ऊतारताहै, (८५ टंकणखार) मूत्रल शीतल कफघ्न ऋतुलाणेवाला कष्टीकूं बच्चा जणाणेवाला खारहर तथा रोपण, टंकण सुहागेकी दो जात हैं पाटिया (तेलिया) दुसरा सुनारोंकें कामवाला दवामें दोनुं काम आतेहैं शुद्धकरणा अथवा अंग्रेजी दवा वेचणेवालोंके पास शुद्ध टंकण (वोराक्ष) मिलता है सोवरतणा पेसाबकी रेती तथा जलणमें ठंढे जलके संग पीणेसें अथवा गरमपाणीमें डाल पिचकारी मारणेसें पेसाब खुलास होकर आराम होताहै, मूंमें चांदी घाव गिरगया होय तो पावजलमें ४ वाल टंकण डाल कुरला करणा बच्चेके मूंके रोगमें टंकणकूं सहतमें मिलाकर अंगलीसें लगादेणा टंकण दांतोंकोंभी सफा करणेवाला है, इसवास्ते दंतमंजनमेंभी डालेजाताहै टंकणके जलसें मसलकर धोणेसें दाद खाज लूखास तथा शिरके वाल उडणा (उंदरी) दाद अछा होताहै (८६ डूंगली) कांदा उष्ण वातहर तथा वीर्यवर्द्धकहै, कांदेका रस सूंघणेसें जागृति तथा शुद्धी आतीहै, और हैजेमें शीतांग होताहै, उसमें कांदेकूं मसलणेसें वदनमें गरमी लाताहै, वेर २ उसकूं पिलाणेसें दस्त उलटी रुकजातीहै घरमें कादोंकों टांगदे तो हवाकी शुद्धि होतीहै, हेजामरीके जीवजंतु उस घरमें नहीं आते हैजेमें पिलाणेसें हैजा मिटताहै, शाक अथवा मुरब्बा वणाकर ताकतके वास्ते लोक खातेहैं. उनोंके कामेच्छा वढतीहै, कांदेकारस आदेकारस मिश्री सहत तथा घी हमेस फजरमें पीणेसें गईमरद मी पीछी आतीहै, वीर्यकी वृद्धि होतीहै कांदेका रस नाकसें पीणेसें वादीके असाध्य रोगमेंमी फायदा होता है रसमें एक रत्ती अफीम मिलाकर पीणेसें अतिसारका दस्त बंध होताहै अम्लपित्त जिसमें गले और छातीमें जलण होतीहै उसमें सुपेद कांदेका रस मीठा दही मिश्रीमिलाकर पीणा वद तथा दुसरीगांठ कठवेलपर कांदे सिजाकर उसमें घी हलदी डालकर फेर गरमकर गरमागरम पोटिस बांधणी येवडी ऊमदा पोटिसहै, (८७ डीकामाली) कृमिघ्न तथा वातहरहै बच्चोंके पेटकी चूंक गोटा कृमि उलटी वगेरे रोगमें दियेजातीहै, पेटपर सूकीभी मसले जातीहै, इंद्रजव कालीजीरीकी माफक समझवार औरतें निडरपणे ऊपर लिखे मुजब घरमें रखकर उपयोग किया करती है, (८८ तुकमरियां) शीतल है, तुकमवा लिंगाका लुआब तुकमरीआं १ रूपेभर मिश्रीका जल २ रुपेभर मिलाणेसें चिकणा लुआब होताहै वो पीणेसें पेसाबकी जलण गरम वायु लू तथा पेटकीदाहमें फायदा बंदहै (८९ तज) उष्ण दीपन वातहर तज खाणेसें अथवा उसकी उकाली पीणेसें उलटी तथा मूकी मोलग्लानी मिटतीहै शरदीसें शिरचढा होयतो तजकूं घस गरमकर लेप करणा शूलके संग मरोडेमें ४ वाल बीलका गिरतज १२ वाल ओर ४ वालगुड दहीमें मिलाकर पीणेमें फायदा होताहै (९० तमाखू) कफकूं शमाणेवाली रगोंकों ढीली करणेवाली तमाखू मादकहै. जादालेणेमें

नसा चढता है सूंघणा चावणा और पीणा एसें तीनकाममें लोक लेते हैं लेकिन् थोडे दिन लियाके झलजातीहै·दांतकारोग दम श्लेपम वगेरेमें दवातरीके तीनोंतरे उपयोग करणेसें कुछ एक फायदा देतीहै लेकिन् शोखसें जो वापरते हैं उसमें चडानुकशान है खून बराबर फिरता नहीं फेफसेकूं इजा पोहचतीहै, खालीउधरस पैदा होतीहै शरीर फीका और पीला पडताहै मगज तथा आंखकूं इजा पहुंचतीहै जादा वरतावेसें अदमी अंधा होजाताहै मधुमखी भमरी वगैरेके डंकपर तमाखू लेपकरणी सापके जहरमें उलटी कराणेकूं नव २ टांक पाणीमें मिलाकर दोचार वखत पिलाणी जूओंका इलाजभी ये पाणीहै फेर आरीठेके पाणीसे सिर धोडालणा (९१ तांदलजा) चंदलिया चोलाई सारक शोधक शीतल पित्तशामक खुराकमें उत्तम गुणकारी शागदवाका काम चंदलिया करताहै, ये तीनों दोपमें अछा है, जादातर पित्त शमनकरणेवालाहै इसवास्ते इसकूं जलमें वाफ· कर उसका जल पीणेसें कलेजेकी गांठ सोजा यकृत् तापतिल्ली नरम पडतीहै इसके रसमें पोटासका विशेप भाग होणेसें ये जहरका नाश करता है सापवीछु सोमल तथा गरमीके रोगकी जहरी असरकूं निकाल डालता है वाफकरके पेटपर तथा गांठपर बांधणेसें पेट नरम पडता है, पारा वगैरेका जहर वदनमें फूट गया होय रहा होय तो एकाध अठ· वाडियेतक पाव २ चंदलियेका रस घीमें पीणा चंदलियेकी जडपीस उसमें रसोत सहत चोगुणा चावलोका धोवणडाल थोडे दिन पीणेसें औरतोंका प्रदररोग मिटताहै, (९२ त्रि- फला) हरड बहेडा आंवला ये तीन फलसामिल मिलताहै तव त्रिफला कहलाताहै गुणमें ठंढा शोधक पित्तशामक तथा दाह शामक हैं तजागरमी खूनकी गरमीकूं वो फायदावंधहै (त्रिफलाचूर्ण) हरडे १ भाग बहेडा २ भाग आंवला ३ भाग इसका महीन चूर्ण शिरकी । वदनका तपणा पेसावकी जलण गरम वाय प्रदर चिणख कामला आंखकी गरमी झमर शीलस वगेरे रोगोंमें त्रिफलेका चूर्ण सक्करमें अगर जलमें लेणेसें अछा फायदा ८ मात्रा अढाइ मासेसें पांचमासा (त्रिफलाहिम) हिमके कुरले करणेसे मूंकी चांदी जखम गरमी मिटतीहै, आंखोपर छांटणेसें जलण शिरकी गरमी तेसें आंखोंके सामने धूंअेका गोटा दीखेसो झमर वगेरे सुधरता है आंखका तेज वढजाता है (त्रिफलाकी भस्मी) जलाकर राखकर थोडा कथा मिलाकर येगरमीकी टांकीपर भरणेसें जलदी आरा महोतीहै, (९३ तुलसी) कफघ्न तथा उष्ण है तुलसीके पत्ते वायूकूं दूरकर वदनमें गरमी लाती है, इसके पत्ते हिचकी शूल वगैरेमें अनुपान तरीके काम आता है पान तथा आदेके टुकडेके संग दांतके नीचे चावणेसें दांतोकी शूल मिटतीहै (तुलशीका स्वरस)तुलसीके पानोकों जलमें पीसकर रसनिकाल २ रुपियाभर उसमें कालीमिरच अढाई मासेडा लकर ठंढके बुखारमें आणेके २ घंटे पहले तीनचार पाली देणेसें विषमज्वर शीतज्वर मिटता है तुलछीके रसमें इलायची चूर्ण डालकर पीणेसें तीनों दोपोंकी उलटी बंध

होती है, बच्चेकी उलटीमें रसमें सहत मिलाकर देणा. (९४ तैल) तिल) चिकणा स्पर्शमें शीतल पचनेकी वखत तीखा और पित्तल व्रणशोधक मूत्रल कांतिकारक तिलोंकी सूकी लकडीकूं जलाकर खार निकालते हैं, वो खार मूत्रल तथा पेसावकी कंकरी तथा पथरीकूं निकाल डालता है, ये खार सहतमें मिलाकर चाटकर ऊपरसें गऊका दूध पिये तो अटकाभया पेसाब खुल जाता है, जलण मिटती है, अंगारसे जले भयेपर तेल और कली चूनेका नितरा भया जलकूं मथफुलमां वणाकर लगाणेसें पट्टी मारणेसें और ऊपरसें तेल सींचते जाणा जलणेका जखम मिटता है, तेलमें सींधानिमक मिलाकर कुरला करणेसें दांतका दरद मिटकर दांत मजबूत होता है, तिलोंकों दूधमें पीस अथवा तिल और वायविडंगको जलमें पीस शिरपर लेप करणेसें आधासीसी मिटती है, कुत्तेके जहरऊपर तेल खल और जरा आकका दूध अथवा जडकी छालका चूर्ण अथवा जडका चूर्ण गुड सबके समवजन मिलाके पीणेसें जहर उतरता है, धतूरेके जहरपर तिलका तेल गरम पाणी मिलाकर पिलाणा, हरसके मस्सेमेंसे पडता खून तिलोंकों मखणमें पीस चाटणेसें मिटता है, गर्भिणी तथा सूतिकाके खूनके गिरणेमें तिल जव तथा सक्कर सुपेद तीनोंका चूर्ण सहतमें चाटणा, शुक्राश्मरी अर्थात् गिरते भये वीर्यकू रोकणेसें वीर्यकी पथरी वंध जाती है, उसमें तिलोंके लकडोंकी राख सहतमें चटाणी औरतोका ऋतुवध होताहै, और पेडूमें (रक्तगुल्म) खूनका गोला चढता है, उसमें तिलका काढाकर उसके अंदर सूंठ मिरच पीपर हींग और भारंगमूल इन सबोंका चूर्ण अढाई मासा या पांच मासा डालकर पीणेसें ऋतु आता है, और गोला मिट जाता है, रक्तातिसार, खूनके दस्त लगणेसें कालेतिल १ भाग वूरा या मिश्री दो भाग वकरीका दूध ४ भाग सामिल करके पीणा, नारूपर तिलकी खल छाछमें पीसकर चांधणा (९५ थोर) उष्ण शोधक तथा स्नायुनसोंकों ढीला करता है, थोरकी वहोत जाति है, डडेवाली कंटेवाली पंजेवाली त्रिधारी चोधारी वगेरे दवाके काममें जादातर डडेवाली थोर कांमदेती है, और वो खुरसाणीके नामसें प्रसिद्ध है, डंडोंको वाफके रस निकाले जाता है, इसकी जलाई भई राख कांम देती है, इस रसकी दूसरी दवाओंकों भावना दीजाती है, राखकूं अरडूसेके रसमें देणेसें कफ नरमपड वाहर निकल जाता है, जलंदर वगेरे पेटके रोग-वास्ते जो जो वादी हरता दवाइयें है, उसकूं थोरके रसकी भावना देकर देणेसे वहोत फायदा करतीहै, इसका दूध है, सोजहरहै दूधकूं दरदकी जगे लगाणेसे फफोला उठता है, सांधोकी वादी तथा गरमी सुजाक दरदवालेकों केइ दिनोवाद गंठियावायु होजाती है, उसपर तीन २ चार २ दिनके फासलेसें तीनचार वखत इसका दूध लगा-णेसें फफोला उठता है, और दरद मिट जाता है, सूकी खुजलीपर दूध लगाणेसें एक वेरतो पक जाता है, लेकिन् पीछे मिट जाता है, मुलायमजगेजसें आंख भगइंद्रीपर

दूध थोहरका लगाणा नहीं, जो दूध लगाणेसें तकलीप होयतो घी लगाणा दूधकूं सुकाकर गूंद जेसा करकेरखे तो उन मान मुजब मात्रा देणी (९६ दही) दहीके गुण दोष तीसरे प्रकाशमें लिखा है, दवामें दही इस मुजब काम देता है, (१) सूर्यावर्त्त- दिन चढणेके संग शिर दुखणेलगे सो (सूर्यावर्त्त) शिरके रोगमें सूर्य ऊगणेके पहली दही मीठा और भात खाणा (२) तृष्णा- (प्यास) श्रीखंड वणाकर खिलाणा अथवा मीठादही १२८ तोला बूरा ६४ तोला घी ५ तोला सहत ३ तोला काली मिरचका चूर्ण २ तोला सूंठका चूर्ण २ तोला इलायची २ तोला सब मिलाकर काचके या कलीके वासणमें रखकर थोडा २ खाणा (३) अजीर्ण) दही अथवा वरावर जल मिली भई छाछ पीणी (४) हरस) चित्रकके जडके महीन चूर्णकूं पाणीमें पीस दही जमाणेके पात्रमें अंदर लेप करणा उसमें दही जमाकर अथवा छाछ करके पीणी अथवा भोजनमें लेणी (९७ दशमूल-) उष्ण वातहर त्रिदोपहर दशवनस्पतीकी जडसो दसमूल इनोमें बहुत मतभेदहै तोभी सुलभता लिखतेहै. जंगलीगांजा वहुफलीकी जड पसरकंटाली खडीकंटाली तथा गोखरूकी जड यहतो लघुपंचमूल और वीलकी जड अरणीकी जड अरडूसेकी जड क्रांकचकी मूल खाखरा पलासकी जड (ये वृहत्पंचमूल) जंगली गांजेके बदले कोइ समेरवा और कोई कासंदरीकी जड लेते हैं, और वहुफलीकी जगे पीलूकी जडभी लेते है वायु तथा कफका सन्निपातज्वर सूतिकावाली स्रीका सर्वरोग ऊरुस्तंभ शूल दम खासी मींट पसीना शीतांग वगेरेमें अछा फायदा देताहै (९८ दूध) दूधके गुण तीसरे प्रकाशमें लिखाहै इहां दवा मुजब उपयोग लिखतेहैं गऊके दूधका गुण सर्वोपरी है इहां उसकाही ग्रहण हैं (१) आधाशीशी-) दूधकी मलाई अथवा विदाम और बूरा डालकर दूधकी खीर खाणी (२) (धतूरेकाजहर-) सहज साधारण धतूरेका जहर दूध मिश्रीसें दूर होता है (३) सोमल-) नीलाथोथा-) वछनाग-) इन जहरोंपर उलटी होय जहांतक दूध पिलाणा कै वंद होय वादनहीं पिलाणा मिश्री डालकर पिलाणा लेकिन् जहर जादा खालिया होय तो इस साधारण सादे इलाजपर विश्वास रखकर निचिंत-नहीं वैठे रहणा दुसरा वडा इलाज करणा (४) गंधकका जहर, दूधमें घी डालकर पीणा (५) जीर्णज्वर-) दूधमें घी सूंठ खारक कालीदाख डालकर पीणेसें पुराणाज्वर मिटताहै (६) मूत्रकृच्छ्र-) दूधमें गुडडालके पीणा (७) रिदयरोग-) याने छातीके रोगमें-दूधमें भिलावेके तेलकी १० वूंद डालकर पीणा (८) रक्तपित्त-) दूधमें पांचगुणा जल डालके पाणी जलेवाद ठंढाकरकेपीणा (९) हाडोंका टूटना-) दूधमें बूरा डालकर गरमकर पीछे उसमें घी तथा लाखका महींन चूर्णडालकर ठंढाकरके पीणा (१०) श्लेषम-) शरदी, आधादूध आधाजल अढाई मासे या पांच मासे बूराडाल आधे रुपेभर सूंठकी भूकी चार पांच विदाम दोयचार केशरकी पांखडिया डाल पाणीजले तहांतक पीछे सूंठके टुकडे

निकाल दूधपीजाणा विदाम चावजाणा इसतरेका दूध तयार कर रातके सोंणेके वखत पीणा फेर जलपीणा नहीं दूधमें मिश्री और काली मिरचका भूका डालकर पीणेसे भी जुखाम मिटता है (११) महनत काथकेला– महनत करके थकाभया अदमी गरम किया भया दूध पिये तो थकेला उतर जाताहै और हुसियारी आतीहै, (१२) पुष्टि– (वीर्यवृद्धि–) गरम करेभये दूधमें घी तथा वूरामिलाकर पीणा इसके जेसा धातुपुष्टीका कोइ दुसरा इलाज नहीं (१३) इंद्रीजुलाव–) दूध तथा जल संगमे मिलाकर पीणेसें पेसाव बहोत आता है, (१४) बच्चेके (दूधकी उलटी–) चूंगणेसें या दूधपिलाणेसें जो बच्चाकै करके दूध निकाल डालता है उसकूं दूधके संग चूनेका नितरा भयाजल डालकर पिलाणेसें दूधपेटमें रहजाता है (९९ देवदारू–) खेदल कफघ्न तथा पेसाव लाणेवाला है (देवदार्वादिकाथ–) देवदारू वच पीपर सूंठ कायफल मोथ चिरायता कुटकी धाणा जोहरडे गजपींपर गोखरू कोंचबीज धमासा भोंरीगणी अतीस गिलोय काकडासींगी और स्याहजीरा सव चीजोंकों समवजन लेकर उसमेंसें २। रुपिया भरसे ३ रुपयेभर तककी पुडी वणाकर सोलेगुणे जलमें काढा करणा ये काढा प्यास औरतोंके सूआरोगमें बहोत फायदा करताहै, सूआरोगमें बुखार सोजा दस्त शूल हिचकी वगेरे डरावणे रोगोंमें फायदा करता है थोडादिन देणेसे जापेका रोग मिटजाताहै (१०० धतूरा–) नशोंकों ढीला करणेवाला तथा पीडाशामक धतूरा जहर है, इसवास्ते विद्वान वैद्यकी या डाकदरकी सल्ला विगर दवातरीके भी कभी नहीं वरतणा इसवास्ते इहां संक्षेप वर्णन कराहै शीतज्वरवालेकूं १० बूंद चढणेके डेढ कलाक पहले पत्तोंके रसकी आनेभर गऊके दहीमें देणेसें शीतज्वर मिटता है धतूरेके पत्तोंकी तथा डांखलियोंकी बीडी दमके जोरकों शांतकर देतीहै जो कभी इससें दमका रोग नहीं मिटे तोभी रोगीका दरद तथा घबराट कमहोकर वायु और कफ दबजाताहै तबदमभी बैठजाताहै लेकिन् वो बीडीपीती वखत बहोत संभाल रखणा चाहिये क्योंके शक्ति ऊपरांत पीणेसें तोफान करजाताहै, धतूरेके पत्तोंका लेप स्तनपकणा तथा स्तनोंमें दूध चढजाता है उसके सोजेकूं मिटाता है (१०१ धाणा–) दीपन तथा पित्तशामक है (धान्यादिहिम–धाणा तथा दाखका हिम येहिम आधाशीशी तथा गरमीसें शिर चढताहै, उसकूं मिटाता है धाणाकूं रातकूं मिश्रीके जलमें भिगाके रखणेसें फजर घोट पीणेसें हाथ पैरोंकी जलण मिटतीहै, (१०२ द्राख-) मुनक्का दीपन शीतल पित्तशामक तथा सारक याने दस्तावर है दाखोंकी बहोत जातिहै लेकिन् दवामें और वेमारकूं खिलाणेमें काली मुनक्का अच्छीहै (द्राक्षासव) इसकी दवा वणतीहै सो क्षयजेसें बेमारकूं सतेज रखकर शक्ति देती है दवा मुजब दाख इकेली कम चलती है (द्राक्षादिहिम–) मुनक्का पित्तपापडा तथाधाणा इस हिमसें पित्तका बुखार जलदी पकताहै सादा गरमीका तप इसहिमसें बुखारकूं कमकर देताहै शिरकी और

की गरमी शांत होतीहै उनालेकी सखत गरमी तथालूमें दाख वरियालीका हिम सरबत प्यास तथा बुखारकूं कमकर देती है दाख हरड बहेडा आंवला पींपर मिरच तथा खजूर ये सब सम वजन लेकर सहत घी मिलाकर गोली वणाणी सूकी खासी तथा अवाज बैठै जिसमें फायदा करती है (१०३ नगड-) संभालू-) वादीहर तथा सोजनहर है सूजन तथा गांठपर संभालूके पत्तोंकों वाफकर बांधतेहै अछा फायदा करता है, (१०४ नवसादर-) पित्तकूं श्रवाणेवाला ऋतूलाणेवाला शोधक तथा तीक्ष्णहै दुसरी दवाइयोंके संग खाणेमें दियेजाताहै शरीरके कोइभी भागमें खूनका जमाव होकर सोजन होगया होय तो नवसादरके पाणीका वस्त्र भिगाकर रखणेसें सूजन पकता बंधहोकर खूनविखर जाता है सुआवडपीछै तुरत औरतोंके स्तनमें दूध पैदा होते कितनीक वखत उनोंमें सोजा तथा दरद होताहै जो उस स्तनका जलदी इलाज नहीं किया जायतो स्तन पककर फूट जाताहै, और कठण गांठे बंध जातीहै नव सादरका भीगा कपडा फायदा करताहै अंडवृद्धिरोगमें आंतरे उतरते है उसमें जो आंडोपर नवसादरका भीगा कपडा धरणेसें आंडोंके सुकडतेही आंतरे उंचे चढजातेहैं और सोजा नरम पडताहै और उलटी वगैरे दुसरेभी चिन्ह होते होय सो बंध होजाताहै (१०५ नसोत-) दस्तावर झुलावमें अम्लपित्तरोगमें काम देतीहै निसोत ॥ भर आंवले ॥ रुपेभर पावजलमें उकाल आना जल रखके ठंढाकर छाण मिश्री सहत उनमान मुजब डालकर पीणेसें वहोत दिनोंका आम्लपित्त महीनाभर पीणेसें मिटजाता है (पथ्य) दूध भातमिश्री (त्रिवृतादि चूर्ण दस्तावर-) निशोत ४ भाग सूंठ १ भाग सींधा ॥ भाग मात्रा अढाईमासेसें ५ मासां (१०६ नागकेशर-) शीतल ग्राही दीपन नागकेशरका चूर्ण वूरा तथा मखणमिलाकर खाणेसें मस्सेमेंसें गिरता खून बंध होजाताहै, मात्रा २ आनीसें चार आनीभर औरतोके पाणी जेसा प्रदर वहताहै उसमें नागकेशर छाछमें पीस तीन दिनपीणा छाछभात भोजन करणा रक्तप्रदरपर चूर्ण घीमें देणा (१०७ नालियर-) शीतल तथा पेसाब लाणेवाला नालियेरका पाणी ठंढा तथा मूत्रल है, इसवास्ते पेसाबकी जलण मूत्रकृच्छ्र तथा प्यासपर देणेमें आता है टोपसीकूं जलाकर लगाणेसें अंगारसें जलेवाद जो जखम होजाता हें सो रुक जाताहै टोपसीकूं याखोपरा जलाकर लगाणेसें अंगारसें जले बाद जो जखम होजाताहै, सोरुकजाता है, टोपसीके भूकेका धूआंपीणेसें हिचकी बैठजातीहै इसकी जोटी जलाईराख रेसमकी राख मोरके चंदेकी राख जीराकोरेतवेपर भूनाभया पींपर लोंग तवेपर उनारा भया सहतमें या अनारके सरवतमेंकै उलटी होते ही दोतीनवखत चटादेवेतो उलटी हिचकी बंध होजाती है (शूलहर चूर्ण-) नालेरमें छेदकरके अंदर सेंचलनिमक भरणा पीछे छेदकूं बंधकरके कपडमिट्टीकरणा फेर छाणोके जगरेमें सिलगा देणा पीछै इसका चूर्ण पीपरके चूर्णके संग खाणेसे शूल मिटती है (१०८ पारा) शोधक तथा पौष्टिक शास्त्रोंमें पारेका अनंत

गुण लिखा है सो सच्च है जो पूरे संस्कारसें पारेका शोधन मूर्छित कर देणेमें आवेतो अद्भुत गुण दिखाताहै लेकिन् पारेके शोधनवास्ते तथा उससें वडे दरजेका रस वणाणेवास्ते जादा अनुभवकी जरूरी है पारेगंधकसें हजारो रस वणते हैं जिसमें चंद्रोदय मकरध्वज रससिंदूर सुवर्णपर्पटी पंचामृतपर्पटी चिंतामणिरस लोकनाथरस वन्हिरस त्रिविक्रम आदि मुख्य है पाराके वनावटकी चीजों अनुभवी वैद्योंसिवाय दुसरे पासलेणेमें जोखम है, भिलावा शुद्ध १ तोला पाराशुद्ध १ तोला अजमोद १ तोला अजवाण १ तोला १ खुरासाणी अजवाण दूधमें सुद्धकरी १ तोला जोड अजवाण १ तोला तिल १ तोला सवकूं ४ पहर खूव खरलकर झाडवेर २ जितनी गोली करणी गोली १ दहीकी मलाईमें लपेट प्रभात अधर निगलजाणी १ सांझकूं (पथ्य) अलूणी रोटी गहूंकी और घी दहीकी मलाई या मीठा दही दिन ७ दवालेणी १४ दिनपथ्य इससें सुजाक गरमी गरमीकी गंठिया वदन फूटा दिन ३० लेणेसें भगंदर नासूर कीडीनगरा प्रमुख सव मिटजाताहै, मरदमी आतीहै, भूखक्रांतिकामेछा वढतीहै केइयक लोककेरीके अचार तेलके वेंगण वडोंमें भीये पारे हींगलू रसकपूरकी गोली इस रोगपर देतेहैं अशुद्ध पारा वगैरेकी दवा मूर्ख अनाडीयोंसें बचके रहणा पारामल्लममें गिरताहै शुद्ध होयतो अछा नहीं तो जादा नुकशान सोवेर वस्त्र छाणेवाला नहीं करता (पारेकी कजली) गंधकपारा सम वजन लेकर ४ पहर घोटणेसें खरलमें स्याह कजली होतीहै गरमीकी चांदी इसके लगाणेसें मिटजातीहै (पारेका मल्लम--) पारा १ भाग सादा मल्लम तीनभाग मिलाणा ये वदवगेरे उठती गांठोंपर लगाणेसें वैठजातीहै (१०९ पटोल) ज्वरघ्न शोधक तथा रेचकहै पटोलकूं परवलभी कहते हैं (पटोलादिक्काथ--) संतत शतत आंतरेवाला विषम ज्वरमें फायदा करता है, पटोल इंद्रजव देवदारू हरडे वहेडा आंवला मुनक्का नागरमोथा मोलेठी गिलोय अरडूसेके पत्ते इन इग्यारे चीजोंका काढा करणा पीलियेमें पटोलका जुलाव फायदा करता है पटोलकी एवजीमें कितनेक कडवी तोरी लेते हैं. पटोल अथवा तोरीके रसकी वूंद नाकमें डालणेसें पाणी झरकर पीलियेका जहर निकल जाताहै, गरमी उपदंश जो वदनमें फूटकर वाहिर निकलतीहै उसमें पटोलाष्टक क्काथ अछा फायदा करता है, पटोल हरड वहेडा आंवला नींवकी छाल चिरायता खैरकी छाल और वीवूला जिसकूं कितनेक लोक भिलामा कहतेहैं, पेटमें पीणा इन आठोंका काढा करणा (११० पीपर--) उष्ण दीपन पाचन तथा वातहर है एकतो लींडीके सिकलवाली लींडी पीपर कहलाती है वडीसो घोडा पींपर कहलाती गजपीपलकी ओरही सिकलकी लकडी आतीहै, जहां पीपर लेणा लिखा होवे उहां लींडी पीपर लेणी पींपर वहोत दवाओंमें गिरती है इकेली पींपरभी युक्तिसे ताकतकूं पहचानके देणेमें आवे तो वहोत रोगोंकों मिटाती है पीपरका चूर्ण पुराणे गोलेके रोगमें अरुचि हृदयका रोग श्वास काश कामला मंदाग्नि जीर्णज्वर वगेरेमें फायदा देती

है सहतमें खाणेसें मेद कफ श्वास ज्वरमें फायदा करतीहै, छाछमें पींपर तथा सहत डालकर पीणेसें पेसाबकी रेती और पथरीमें फायदा करती है पेटके रोगमें गोमूत्रमें कितनेक दिन भिगाकर रखी भई पींपर फायदा देती है वर्द्धमानपीपलीका प्रयोग वहोत अछा है, गायका दूध तो ४ पाणी १६ तोला और २ या तीन पींपर पाणी जलेजहांतक उकालकर पीछे पींपर चावकर दूध पीजाणा दुसरी तरे इकेले दूधमें पींपर एकेक हमेस वढती और पीछे ऊतरती एसें २० दिनतक आधा दूध रहै तहांतक ऊकालणा वो दूधपींपर चावके पीजाणा इस वर्द्धमान पीपलके प्रयोगसें पेटके रोग मंदाग्नि जीर्णज्वर उध रस पांडू गुल्म हरस और वायुके दुसरेभी रोग चले जाते हैं एकसेर गऊका दूध मंद आंचसें उकालकर आधा जले तव उतार ठंढा भयां पीछे उसमें आधा तोला वूरा आधा तोला घी तथा इतनाही सहत और ॥ रुप भर १ भरतकपीपर डालकरके पीणा रिदयका रोग खास तथा जीर्णज्वरमें अछा फायदा देता है, सहत घी दूध पींपर और मिश्री पांचोकों मिलाकर पीणेसे दम खासी क्षय विपमज्वर तथा रिदयका रोग मिटता है इसकूं पंचसार कहते हैं (पींपर पाक-) ३२ तोला दूधमें ३।४ रुपेभर पींपरका चूर्ण उकालकर मावा (खोवा) करणा उसमें २ रुपेभर घी डालकर मधुरी आंचसे घोटकर कीटी वणाकर दाणा पाडणा पीछे आठ रुपेभर वूरेकी चासणी करके कीटीडाल देणी तज तमालपत्र नागकेशर तथा इलायची हरेक डेढ २ रुपेभरका चूर्ण डालकर एकेक तोलेकी गोली वांधणी ताकतमुजव एक दो गोली खाणी उससें धातुगत जीर्णज्वर खासी दम पांडू धातुक्षय और मंदाग्नि ऊपर अछा फायदा करतीहै, एसे रोगवालेकू ठंढकालेमें पींपरका पाक वणाकर खाणा (१११ पीपला मूल-) उष्ण दीपन पाचन तथा वातहर है पींपलामूल और पींपर ये दोनूं एकही दरखतके हैं जडतो पींपरामूलहै फलपींपर है, लकडियां चव्य है गुण मिलते भये है लेकिन् पींपर जादागरम ओर सखत है, मंदाग्नि अजीर्ण जीर्णज्वर पेटकीवायु शरदी दम शूल निर्वलता इन सवोमें पींपलामूलकी गांठों काम देतीहै सहतमें गुडमें इसकी रावडी वणाकर लीजाती है पींपलामूल वहोतसे पाकोंमें तथा दवाइयोंमें गिरता है (११२ पीपल वृक्ष-)व्रणकूं भरणेवाला इसवास्ते पंचवल्कलके काढेमें गिरताहै, उसके छालकी सुपेद भस्मी होतीहै वो भस्मी दोदो वाल सहतके संग देणी पित्ताजीर्णमें अर्थात् अजीर्णहोकर छाती तथा गलेमें झलझल जलण रहा करतीहै, जिसकूं गुजरातवाले गलधरी कहते हैं, वो मिटती है पींपर आंवली तथा आंवेकी छालकी राखमें भी यहीगुण है पीपलकी राखमें सोमल हरताल शुद्धकर हंडीके आधी राख नीचै आधी ऊपरदेके वीचमें रखकर मूं वंधकर वारेपहर मंद आंच दीपसिखासीदे तो निर्धूम शुद्ध भस्मी होतीहै, अंगारपर धरणेसें धूआं देतो अशुद्ध जाणनी पीपलकी लाख छातीमें जखम पडीभई खासीमें सहत घी मिलाकर चटावे तो वहोत फायदा करती है

(११३ पीलूडी— जाल मारवाडमें कहते हैं, सोजाकूं दूर करे पीलूडीका रस सोजेपर लेप किये जाता है, पत्तोंकी लुगदी वदपर बांधणेसें फायदा होताहै (११४ पपइया—) गरम है एरंडककडीका दूध कृमिदूर करणेवाली है पक्के पपइयेकूं चीर उसमें जीरा तथा बूरा सांझकूं भरके रख फजरमें खाणेसें पित्तका तथा खूनके हरसरोगमें वहोत फायदा करती है, (११५ फिटकडी—) रक्तस्तंभक तथा ग्राही है फिटकडीकूं फुलाकर धरणके दस्तमें तेसें गिरणेमें गुडसंग देणा मूंमेसें अथवा हरकोइ द्वारसें खून गिरता होय तो फिटकडी देणेसें वंध होताहै फिटकडी रातकूं भिगाकर कुरला करणेसें मूंके सब रोग अछे होते हैं फिटकडीके पाणीकी वूंद डालणेसें दुखती आंख मिटती है चढाभया खून उतरता है तथा जिस आंखमें पककर पीपपड गया होय एसी आंखकूं फिटकडीके जलसें धोकर अंदर वूंदे वेर २ डालणेसें पकी भई आंखभी अछी होती है, औरतोंके प्रदर वगैरे कितनेक गुह्य रोगमें फिटकडीकी पिचकारी तथा गर्भस्थानमेंसें खून गिरता होय तो भी फायदा करतीहै पिचकारीसें अगर वंध नहीं होय तो अंदर फिटकडीका टुकडा दवाणेसें नसों संकुडाकर खूनका गिरणा वंध होता है दुखते मस्सेपर फिटकडीका चूर्ण मसले तो खून और चिमचिमाट दरद वंध होजाता है वच्चोंकी कांच तथा औरतोंके योनिपर फिटकडीका पाणी छांटणेसें संकुडाकर मजवूत सकत होकर अंदर चलीजाती है धरणके मूंपर फिटकडीका टुकडा धरा होयतो हरगज पुरुषका वीर्य अंदर नहीं जासकता वीर्यकूं फाडके निकाल देती है खाणेकी मात्रा १ सें दो वाल (पिचकारी) १ रतलपाणीमें अढाई मासा या पांचमासा देसीपन्ने लिखणेसें स्याही फूटकर आरपार होती होय तो फिटकडीके जलमें भिगाकर सुकाकर घोटलेवे हरगिजनहीं फूटेगा (११६ फालसा) पित्तशामकहै, गरमीकी मोसममें इसका सरवत करके पीणा दाहकूं मिटाताहै (११७ फुदीना) पोदीना उष्ण तथा दीपन पाचन है हैजा चूंक उलटी अरुचि मंदाग्नि ऊपर पोदीनेका रस अथवा उसकीचा फायदा करतीहै, उसके सवगुण पेपरमींटके मिलता है, (११८ वदाम) ठढी तथा पौष्टिक है मगज तथा आंखके रोगमें वहुत फायदेचंद है, विदामका पाक सीरा कतली वणतीहै गायके घीमें विदामकूं सुंघणेसें नाकमें जमते भये छोडे नरम पडतेहैं मगजकी नाताकती दूर होकर आंखका तेज वढताहै विदाम तथा केसर गऊके घीमें घोटकर उसकी नास लेणेसें वदाम कपूर दूधमें घसकर शिरपर लेप करणेसें तेसें विदामकी दूधमें खीर रांधकर फजरमें खाणेसें शिरकी शूल दरद तथा आधाशीशी मिटती है मगज तरकरणेकूं शिरपर विदामका तेल रगडणा विदामकी मींजीशेक वूरेके संग खाणा एकघंटे वाद मखण मिश्री मिलाकर चाटणा (११९ वनफसा) शीतल स्वेदल तथा कफघ्न है बुखार तणख सलेपम तथा कफमें दीजातीहै, वनफसा मोलेटी अफीमके डोडे उकालकर उसके जलमें थोडा वूरा डालकर रावडी जेसी चासणी करके चाटणेसे

उधरस तथा कफकूं अछा फायदा करतीहै (१२० वहुफली) मूत्रल तथा पौष्टिक है पेसा-बके रोगोंमें फायदेबंदहै गरमवायु तणख तथा प्रमेहकी जलणमें वहुफलीका लुआव बूरा डाल पीणेसें फायदा करतीहै दूधके संग वहुफली पीणेसें धातुपुष्टि तथा नाताकती मिटतीहै,(१२०वांवल)बंबूल ग्राही शीतल तथापौष्टिकहै बंबूलकी फलियों जव पकणेपर आवै उसकूं जलमें पीस २॥ रुपियाभर रस बूरा मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणेसें प्रमेह जलण गरमवायु तजागरमी मिटतीहै बंबूलके छालका रस पीणेसें अतिसार बंध हो जाताहै बंबूलके कच्चेपानोंका रस आंखमें आंजणेसें आंखकी गरमी तथा जल गिरणा बंध होताहै छालकूं उकाल जलसें कुरला करणेसें मूंकी गरमी मिटतीहै (१२२ बील) ग्राही दीपन तथा पित्तशामक है दवातरीके विशेष करके बीलकी जड तथा कच्चे बील अथवा बीलगिर काम देतीहै संग्रहणी तथा अतिसारमें बहोत बरतते हैं बीलके पक्के फल जरा रेचकहै इसवास्ते बंधकोष्टमें कचेफल अथवा उसका मुरब्बा दस्तकूं रोकणेवाला है अतिसार तथा खूनके मरोडेमें बीलकी गिर अढाइमासे दहीमें पीस दिनमें दो तीन वखत पीणा (बिल्वादिचूर्ण) सूकी बीलगिर मोथ धावडीके फूल कालीपाट मोचरस ये सम वजन लेकर महीन चूर्ण करणा ये चूर्ण गुड तथा छाछमें पीणेसें सखत अतिसार मिटताहै (१२३ बकरीका दूध) गर्भिणीस्त्रीके विषमज्वरमे बकरीका दूध बहोत फायदेबंद है, अधसेर बकरीका दूध अधसेर जल मिलाकर उसमे थोडा दूध तथा सूंठकी किटकियां डाल जल जले उहांतक उकाल पीछे दूधकूं छाणके पीणेसें गर्भिणीका बुखार उतरेगा और ताकत आवेगी मिजाजकूं सूंठ गरम पडे तो मोलेठीके टुकडे डालणा छोटे बच्चोंका मूंपकताहै तब बकरीके दूधकी धार दिराणेसें फायदा होता है (१२४ बहेडा--) शीतल शोधक तथा पित्तशामक है बहेडेकी छाल त्रिफलामें आतीहै, मूंमें छालरखणेसें खाली खासी बंद होती है (बहेडा पुटपाक-) खासीमें बहोत फायदा करताहै (१२४ ब्राह्मी) शोधक तथा पौष्टिक है चित्तभ्रम मिरगी तथा जीर्ण उन्माद रोगमें ब्राह्मीके पानोका रस या चूर्ण घीके संग बहोत दिन सेवन करणेसें फायदा करता है, उन्मादके जोरमें ब्राह्मी देंणेसें उलटा नुकशांन करतीहै, उन्मादका जोर कम पडे पीछै ब्राह्मी देणी अछीहै, (ब्राह्मीघृत) ब्राह्मीका रस १ सेर घीसेर १ वच कूठ संखाहोलीकी जड इनोंका चूर्ण २० तोला ये डालकर उकालते रस जलजाय घी वाकी रहै तब ठंढा भये छाणलेणा खाणेकी मात्रा २सें ४ तोला (१२५ बोदार) रेचक तथा रोपणहै धूलमट्टी खाणेवाले बच्चोंकूं उसका जुलाब दिये जाताहै, एकदो बालबोदारमाके दूध या सादे दूध संगदेणेसें जुलाब लगकर पेटका भार निकल जाता है घीके संग मिलाकर लगाणेसें घाव भर जाता है, (१२६ भांग) पीडाशामक नींदलाणेवाली तथा नसोंकों ढीला करणेवाली भांगमें नसा है इसवास्ते दवाइमें बहोत सावचेतीके संग उपयोग करणा दूधमें उकालणेसें भांग शुद्ध होतीहै, शुद्ध भांगकूं

सेककर अथवा घीमें तलकर उसका चूर्ण रती १ से १ वालतक सहतमें चाटणेसें नींद लाता है भांग पीडाकारी रोगोंमें तेसें अनिद्रावाला मगजके रोगोंमें भांग देणेमें आती है, भांग वाजीकर होणेसें कितनेक पाक तथा आकूती माजमोंमें गिरतीहै,(१२७ भोंपाथरी) गलजीभी पिछाडी लिखी है वोही भोंपाथरीहै, मूत्रलहै, (१२८ भोरींगणी–कफघ्न तथा ज्वरघ्न है, भोरींगणीकी वहोत जातिहै, लेकिन् दवामें जादातर छोटी वैठी भोरींगणीका पंचाग वापरते हैं खासी दम श्वास तथा कफके बुखारमें वहोतही उपयोगीं चीजहै, भोरीं गणीका काढा अथवा पुटपाक कर उसके रसमें पीपल मिलाके देणेसें दम तथा कफमें फायदा करती है, (कंटकारी अवलेह–) लेणेसें दम तथा हिचकीकूं वैठाता है, छातीके कफकूं तोडताहै, (१२९ मजीठ–) शोधक शीतल तथा पित्तशामक है, (मंजीष्टादिकाथ-) मजीठ हरडे वहेडा आंवला कुटकी वच दारूहलदी गिलोय तथा कडवे नीमकी छाल सम वजन सव खूनकूं साफ करता है, वातरक्त विस्फोटक वगेरे चमडीके रोगोकों मिटा ताहै, (वृहत्मंजीष्टादि क्काथ–) जिसमें ४५ चीजों आती है वो जादा गुणकारी है, मजीठ मोलेठी तथा लोद इन तीनोंकों जलमें पीस छाण मिश्री डालकर पीणेसें गर्भणीका दस्त मिटता है (१३० मधु)(सहत–) कफशामक सारक पौष्टिक तथा रोपणहै, रोपण और भेदक गुणसें अनुपान तरीके उपयोग होताहै प्यासके रोगमे सहत और पाणी पीकरके उलटी करणेसें प्यास मिटती है, सहत पाणी पीणेसें चरवी वढा भया मोटा अदमी पतला होताहै, दवामें वहोत काम देती है (१) दाहमें– चावलोके धोये जलमें चंदन घसकर सहत मिश्री डालकर पीणी (२) कलेजेका सोजा–) कलीचूना तथा सहत सोजेकी जगापर लेपकर ऊपर रूदचादेणी (३) कानमें वुग्ग–) चलाजाय तो इकेली सहत अथवा तेल सहत सामल कर डालणा (४) मेदरोगमें–) फजरमें जलदी ऊठके ४ तोला गरम जलमें २ तोला सहत डालकर पीणा (५) मुखरोगमें–) मूंमें सहतका कुरला भरके कितनीक देर रखकर डालदेणेसें इसतरे कितने एक कुरलोंसें मूंके अंदरके व्रण घावचांदी गरमी जलण तथा प्यास दूर होकर मूं साफ होगा(६) रक्तपित्त–)सहत तथा मिश्री वकरीके दूधमें पीणेसें खूनका गिरणा वंध होताहै(७) तृष्णा–) ठंढा पाणी तथा सहत मिलाकर खूव पिलाकर उलटी कराणी (८) कुचीलेका जहर–) सहत घी मिश्री चटाणी (१३१ मिरी मिरच–) दीपन पाचन तथा सारक है मौल पेटचूंक साधारण अजीर्ण वगेरेमें काली मिरच चवातेहैं तंद्रा वेहोसीकूं दूर करतीहै, मिरचकी चाय मिश्री डाल पीणेसें सादा बुखार मिटातीहै, दस्त खुलास आताहै, ये चाय वचोंको चुगाणेसें माकूं अथवा वच्चेकूं पारगला रोग होजाता है सोभी मिटाती है वूरा तथा घीके संग मिरचका चूर्ण खाणेसें शिरकी भमल आंखकी गरमी हाथपांवोंकी जलण मिटती है आंखोंकी तेजी वढातीहै मिरचका चूर्ण गुड दहीमें डाल पीणेसें नाकका सलेखम तथा

पीनसरोग मिटता है (१३२ माया–) मांजूफल) ग्राहीहै, मूंका पकणा उसलणा चीरा वगेरेमें मांजूफल तथा फिटकडीके कुरलोंसें वहोत फायदा होताहै, इसका पाणी छांटणेसें कांचसंकुडाकर अंदर चलीजातीहै, हरसके मस्सेपर अफीम तथा मांजू फल लगाणे सें फायदा होताहै, (हरसका मल्लम)–अफीम तोला २ मांजूफलका चूर्ण तोला ५ सादा मल्लम तोला ३० (सादा मल्लम, मेण घीका आगेलि०) तीनोंको मिलाकर हरसपर लगाणेसें जलण खूनका गिरणा बंध होता है, मस्से सूकजातेहैं औरतोके० योनिसंकुडाणेकूं मांजूफल फिटकडीका चूर्णकी पोटली धरे जाती है, अथवा कपूर और मांजूफलकूं पीस अंदर लेपकरणेमें आता है, (१३३ मालकांकणी) उष्ण स्वेदल वातहर तथा बुद्धिवर्द्धक है, मगजके रोगोंमें मालकांकणीके बीज तथा तेल वहोत फायदा करताहै बीजोंमेंसें पीले रंगका तेल निकलताहै, यादशक्ति जादा इस तेलसें रह सकती है हमेसपांच या दस बूंद मिश्रीमे या दूधमें लेणा मूं साफ करणेकूं ऊपरसे इलायची खाणी तेल हाजर नहीं होयतो बीज वरतणा इसके संग मिरच जेसीं दुसरी वादी हरता दवाकी फाकी लेणेसें बेहोसी भ्रमवायु आंचकी वगेरे वादीके रोग मिटजातेहै तेल मसलणेसें हिचकणेके जाडा खुलतीहै और हैजेके वांईटे मिटते है मालकांगणीकी जड सांपके डंकपर लगाणेसें जहर उतरता है (१३४ मींढल) मेणफल) वांतिकराणेवाला जहर खाये भयेकूं उलटी कराणे मैणफल दिया जाता है दो एककूं पीसणा बीजनिकाल डालणा शक्ति और तासीर मुजब दो आनीसे चार आनी भरतक सींधा निमक मिलाकर जलके संग लेणा जादा उलटी करणी होयतो ऊपर गरम पाणी पीणा (१३५ मीण) मैण) व्रण रोपण तथा हाडोंकों सांधणेवाला मेणकामल्लम होताहै, (सादामल्लम) मेण १ भाग तेल १॥ भाग दोनोंकों एक वासणमें धरके मंद आंचदेणी एक रस होकर जमजावै तब उतारकर धर देणा (१३६ मूसली) धातुपौष्टिक तथा वाजीकरहै, मूसली काली तैसें धोली दोजातकी होतीहै सुपेद जादा गुण करतीहै इसका पाक धातुपुष्टी करताहै अथवा दूधमें उकाल कर पीणेमें आतीहै लेकिन् बहोत दिन पीणेसें फायदा दिखाती है (१३७ मेथी) वादीहर तथा पौष्टिकहै (मेथीमोदक) मेथीदाणोंकों दलके किया भया आटा घी तथा बूरा मिलाकर नव २ टंकको गोलियां करणी इसको दोनों टंक १४ दिनखाणेसें वायु सरण कमरका दुखणा संधिवात वगेरें रोगमें फायदा करता है (१३८ मेंहदी) ठंढीहै, उसके पत्ते पीस लेप करणेसें हाथपांवोकी जलण पांउकी व्यायु फटणी तथा हर किसी जगेकी दाह मिटतीहे चिकते घावकी खुजाल तथा जलणपर लुगदी धरणेसें मिटजातीहै, (१३९ मोचरस) शीतल ग्राही तथा स्तंभक है (वृद्धगंगाधर चूर्ण) नागरमोथा इंद्रजव अरडूसेकी जड सूंठ धावडीके फूल लोद वाला बीलगिर मोचरस कालीपाठ कूडेकी छाल आंबकी गुठली अतीस लजालू ये १४ चीजोंका चूर्ण सब तरेका अतिसार तथा मरोडामें

बहोत फायदाकारक है, मात्रा अढाइमासे सें ५ मासेतक (अनुपान) चावलोंका धोवण तथा सहत (१४० मोथ) देखो पिछाडी नागरमोथा (१४१ मोरथोथा) स्तंभन उलटी लाणेवाला और रोपण है, तांबेके खारकूं नीलाथोथा मोरथोथा कहते हैं शुद्धकरे विगर खाणेके कामका नहीं उलटीके कामसिवाय दुसरी तरे पेटमें नीलाथोथा अछा नही जहर खाया होय तो उलटी कराके निकाल देताहै गरम होताहै रोगी इसकी कराई उलटीसें नाताकत नहीं होता गरम जलमें १ वाल देणेसें कैलाताहै इसके अलावा संग्रह णी रक्तपित्त औरतोंका सुवारोग तथाहिस्टीरीया मिरगी उपदंश उपदंशकी गंठियापर दोतोले नीलेथोथेकूं सोंनीवूकेरसमें खरलकर झाडवेर जितनी गोलियां करणी दहीके संग गोली १ देणी दही भात खाणा अलूणा ये दवासें कितनोंकी गरमी चलीजाती है, केइयककेरीके आचारमे देकर दही वगेरे सब खिलाते हैं नीलाथोथा आककी जड अथ- वा कडवी तूंबीके जडकों गरमीपर चिलममें डालकर पिलातेहैं इसका जलाभया गुलपीस गरमीके घावपर घीमें मिलाकर लगाणेसें गरमी मिटती है ये दवाइयें मूं आणेकी नहींहै आंखके दरदमे मोरथोथा फायदेचंद है, आंख दुखणा शांतपडे पीछै आंखकी ललाई खीलों वगेरेमें इसके जलकी बूंदे फायदा करतीहै, आंखकी खील गुरांजणीपर नीलेथोथे काटुकडा दोतीनदिन एकवेर फिराणेसें खीलमिटतीहै (अंजनशलाका) मोरथोथा फिट- कडी तथा सोरा तीनोंकों सामलकर नीचे आंच देणा तव रस होगा उसके अंदर तीनोंके वजनसें ५० मे भागका कपूर डालणा वाद इसकी सलियां वणाणी भांफणेकूं उलटाकर येसली एकदोदफे हमेस फेरणेसें खीलघस जातीहै और पाणीका झरणा बंध होताहै, (मोरथोथेकीवूंद) २ तोला जलमें एक रत्ती नीला थोथा आंखकी मांसवृद्धि चेपलग- णेसें अथवा शीतला वगेरेसें गरमीसे दुखणी आई आंखकी सखत पीडा मिटेवाद मोरथो- थेकी वूंदे डालणी चमडीके रोगोंमें वाहिर लगाणेमें न्यारी रीतसें लगाये जाताहै जोजगे घावसें चिक २ ती होय उसकूं इसके जलसें धोणेसें जलदी सूकजातीहै दुष्टव्रण घावपर नीले थोथेका टुकडा लगाणेसें अथवा इसके जलसें धोणेसें उसका सडा भया भाग जल- जाताहै नीलाथोथा जुआरके दाणेजितना गुडमें गोलीकर तीन दिन निगलाणेसें नारू अंदर मरजाताहै ये दवा किसी अनुभवी पुरुषकी कही भईहै, हमनें अजमाया नहींहै, कहाके जहातक नारूमरेगानही उहांतक उलटी होयगी नहीं नारूमरे वाद उलटी होय गी ये निशानी हैं, इसवास्ते नारूसे दुखपाते भये रोगीने इस प्रयोगकी अजमायस करणी इसमें कोइ जोखम नहींहै इसीतरे हींगका प्रयोगभी सुणाहै माही सातमकूं माघमें मिश्री विनाजलपिये रातकूं चवाकर सुलादेणा तारे नहीं देखे, पावभर, इयप्रयोग अज- मायाभयाहै, नारूनहीं निकलता(१४३मोरका चंदवा)मोरके चंदवेकी राख और लींडींपीपर मिलाकर सहतमे चाटणेसें हिचकी तथा उलटीभी मिटजातीहै मोरकाचंदवा तमाखू संग

चिलममें पीणेसें सांपके जहरकूं उतार देताहै, (१४४ रतवेल) शीतल दाहशामक रतवेलकी नदीके किनारोंपर वेलों पसरतीहै गुजरातकी तरफ जादा है, रगतवायुके चठोंपर चोपडे जाताहै, (१४५ रतांजली) रगतचंदण शीतल तथा पित्तशामक है वहोतसे काढोंमें गिरताहै कितनेक ठंढे लेपमें गिरताहै रगतचंदण तथा नींवकूं जलमें घसकर मसलणेसें टपोरिया गरमीके गडगूमड और दाहकूं शांत करताहै, (१४६ राई) तीक्ष्ण क्षोभक वांतिकारकहै, राईतेमें आचारमें लेप करणेमें और उलटी कराणेमें काम देती है, राईकूं भरडके फोतरे निकालकर लोक इसकूं पीस आटा करतेहैं राईका लेप याने पलास्टर मारणेकूं जलमें मिलाकर अथवा सावित राईकों जलमें पीसकर कागजपर लगाकर दुखती जगापर चेपदेणा फेर कितनीकदेरसें वोजगे जलणी सरू होतीहै उससें डरणा नही आधी घंटे या घंटेभर रखणा दरदका जोर होयतो एसा पलास्टर दिनमें दोतीन वखत इसी जगे लगाणा पलास्टरकी जगे चमडी लाल होतीहै, लेकिन् फफोला उठेगा नहीं कोई वखत चमडी जरा उपस जातीहै पट्टी उखेडे पीछै चमडीपर जलण जादा होती होयतो घी लगाणा इससें दरद कम होजाताहै, होजरीपर राईका पलास्टर लगाणेसे उलटी और दस्तवंध होजाताहै, पेटपर मारणेसें पेटका दरद मिटता है, पेडूके दुखणेपर लगाणेसे मरोडा मिटताहै, पांवोंकी पींडियोंपर तेसें होजरी तथा हाथ पांवोंपर मारणेसें हैजेका जोर कमपडताहै, हाथपांवपर राईमसलणेसें गरमी आतीहै गरम पाणीमें राईका आटा डालकर पांव डुबाकर रखणेसें पसीना आकर बुखार उतरताहै वदनके कोईभी जगे शरण शूल चसका आंकसी वगेरेकूं राईका लेप मिटा देताहै राईतेमें अथवा मसालेमें राईखाणेसें रुचि तथा पाचन होताहै जादा गरम पाणीके संगपीणेसें कै होतीहै सहजनेकी छालका चूर्ण राई जेसा कांम करतीहै, (१४७ रास्ना) उष्ण तथा वातहरहै रासनाकी जड मारवाडमें राठ नांमसें प्रसिद्धहै पत्ते इसके सोनामुखी जैसे होतेहै. जादातर दवामें जडलीजातीहै, वजारमें कितनीक वखत रास्नाकी जडकी एवजीमें हरकोई जड पसारी पकडा देते हैं, इस वास्ते दवामें असली गुण जो रास्नाका है सो होता नहीं सब तरेकी वात व्याधिपर रास्ना वहोतं अछीहै, महारास्नादि रास्ना सप्तक रास्ना पंचक वगैरे जुदे २ काढेमें रास्ना मुक्षहै इनकाढोमें रास्ना दुसरी दवाइयोसें जादा फायदा करतीहै, (रास्नापंचक) रास्ना गिलोय देवदारू सूंठ एरंडकी जड सब समवजन लेकर काढा करणा इयइकेला अथवा गूगल अथवा योगराज गूगल मिलाकर पीणेसें अथवा लिखे भये और काढोंसें पीणेसें सब वादीमें फायदा करती है (१४८ रेवचीणीका सीरा) रेचक तथा कृमिघ्न है रेवचीणीका जुलाव करडालगता है इसवास्ते जलंधर जेसे रोगमें तथा सखत वंध कुष्टमें दिये जाता है जुलाबकी वावत इसका जादा वरताव नही करणा इससें पेटमें चूंक होती है मात्रा १ रत्तीसें

१ वाल (१४९ लवंग) उष्ण वातहर तथा दीपन है लोंग मुख खसवोईमें तथा गरम मसालोमें काम देता है अजीर्ण वगेरेमें चवाते हैं (लवंगादिवटी) लोंग मिरचकाली वहेडा और खैरसारका चूर्ण इनोंकों वांबूलके छालके काढेमें कितनेक दिनखरलकर मूंग प्रमाण गोलियें बांधणी येगोलियां खाली सूकी खासीमें वहोत फायदा करती है मूंमें रखकर चूसणा (१५० लसण) वादीहर तथा उष्ण है सांधोंकी वादी कमरका दुखणा हिचकी चमकणा चूंक वायुका गोला तथा हैजेमे दिया जाता है लसण आमके पाचन करणेमें सूंठ जेसा गुण धराता है इससें आमातिसार अजीर्ण हैजे वगेरेंमें तथा दस्तके रोगमें लसणका रस अथवा उससेंवणी कोईभी दवादस्त वंध करता है (लशनादि चूर्ण) लसण जीरा सेंचल सूंठ मीरच पीपर और हींग सव समवजन चूर्ण करणा अजीर्ण तथा हैजेके दस्तकूं मिटाता है खाज खुजलीपर लसणकी लुगदी धरणेसें जलण तो होती है लेकिन् खाजकी चमडी जलके लाल चमडी हो जाती है पीछै उसकूं कोइभी सादा मल्लम अछा कर सकता है चार तोले लसणके छिलके अलग कर हिंग जीरा सींधानिमक सेंचल सूंठ मिरच पीपर इन सवोंका तीन वाल चूर्ण मिलाकर गोली करणी इन गोलियोंकों ताकत पहचान करके एरंडीके जडके उकालेमें सव तरेकी वायुमें दीजाती है कुत्तेके काटे जहरपरभी लसणका लेप करणा लसण उकालके पीणा खुराकमेंभी लसण खाणा अर्दित वायु (मूटेढा होय सो) लसण पीस इस रोगमें तिलके तेलमें खाणा अथवा उडदके आटेमें लसण मिलाकर तिलके तेलमें वडे तलकर तेलमें फेर खाणा अथवा मक्खणके संग खाणा लसण घीमें खाणेसें शूल मिटती है (१५१ लीव) (नींव) ज्वरघ्न शोधक पित्तशामक पौष्टिक तथा कुष्ट हर है नींमके अंतर छालकाहिम सादा हमेसका एकांतरा तेसें चोथिया बुखारमें बुखारके पहिले देणेमें आवे तो बुखार वंध हो जाता है इस हिममें कुछ एक कोनाइन जेसा गुण है इतना इसमें जादा गुण है सो कोनाइनतो वदनमें बुखार होय तो दिये नहीं जाता और नींवकाहिम तो बुखार रहतेभी देणेसें गुण करता है पित्तके बुखारमें तेसें सादा अणउतार बुखारमें शीतला ओरी अछवडामें और पित्तके हरेक रोगमें ये हिम अछा है नीव पंचाग चूर्ण—नीमका पंचाग एक भाग जो हरडे पवाडके वीज चित्रककी जड भिलावा वाय विडंग आंवला हलदी सूंठ मिरच पीपर वावची किरमाला गोखरू तथा चूरा ये सव मिलकर पंचागकी वरावर इस चूर्णकूं वण सके तो खैरसारके काढेकी तथा भांगरेकी एक अथवा जादा भावना देणी इस चूर्णका वहोत दिन सेवन करणेसें वातरक्त अथवा रगतपित्त कोढ चमडीके सव रोग अछे हो जाते हैं नींवके पत्तोंको उकाल उससें स्नान करणेसें खसरा लूखास दाद वगेरेकी चलहलकी होती है जो घाव वहोत चिकता है जिसमें कीडे पडते हैं वो सव नींवके उकाले जलके धोणेसें

मिट जाते हैं पत्तोंकी लुगदी सहत मिलाकर घावपर बांधणी नींबका रस और आंवलेका रस पाव पाव तोला पीणेसें शीलस लुखस तथा खोटी गरमी दबती है नींबके पत्ते बकरीकी मींगणी दोनोंकों बाफके सांधोंके दुखणेपर तथा सोजेपर बांधणेसें हलका पडता है नींबके बाफे भये पत्तोंकी पोटिस गड गूंमडकूं पकाती है नींबोलीमेंसे तेल निकलता है वो तेल कान वहतेकूं बंध कर घावकूं भरता है मगज पकणेसें नाकके रस्ते खून गिरता होय अगर मगजमें कीडे पडणेका सक होय तो ये तेल नाकमें सुंघणेसें जंतु मिटते हैं खून बंध होता है सापके जहरमें नींबके पत्तोंका रस अथवा छिलकोंका रस-उसकूं खारा मालम दे जहांतक पिलाणा क्योंके जहरका जहांतक जोर होगा जहांतक नींब कडवा मालम देगा नहीं छालकूं ऊकाले जलमें धाणा तथा सुंठका चूर्ण डालकर पीणेसें सब विषम ठंडका आंतरेका वुखार सव मिटता है हैजा प्लेग वगेरे मरकीके वख, तमें कडवे नींबके पत्ते १ रुपिये भरमें रत्तीभर कपूर रत्तीभर हींग मिलाकर गोलीकर ये गोली आधे रुपेभर गुडके संग हमेस रातके खाणेसें इस रोगके जुलमसें वचता है, (१५२ लींबु) नींबु शीतल दीपन तथा पित्तशामक है जठराग्नि प्रदीप्त करता है इसवास्ते खुराककी चीजों संग इसका उपयोग करणा चाहिये तोभी देश काल प्रकृतीका विचार करके उपयोग करणा वहोतसी दवा गोलियों नींबूके रसमें बणती है नींबूका सरवत गरमीकूं पित्तकूं जलदी शांत करता है पित्तकी उलटीकूं जलदी मिटाता है दांतकी छेकडोंमेंसें मसूडोमेंसें खून गिरता होय वो नींबु चूसणेसें बंध होता है चूसणेमें खट्टे नींबुसें मीठे नींबू अछे होते हैं (१५३ लोबान) कफ शामक तथा रोपण है लोवान एक दरखतका रस है वो कफ शामक होणेसें २ से ४ वाल देणेसें सादी खासी बंध होती है लोबानके फूलमोल मिलते हैं वो उलटीकूं बंध करता है लोबान रोपण है इसवास्ते कितनेक मल्हमोंमें गिरता है (१५४ वखमा) वातहर ज्वरघ्न है कृमिघ्न है तथा कटु पौष्टिक है वखमा वछनागकी जाति है लेकिन् जहरी नहीं है अतीसभी इसी दरखतकी पैदाश है वखमा गुणमें तथा कीमतमें चढता है अजीर्ण गोटा पेटका दरद तथा अजीर्णका दस्त उलटीकूं वखमा तुरत मिटाता है पेटकी कृमिकूं भी मिटाता है जीर्णज्वरमें बहोत फायदा करता है (मात्रा) १ सें २ वाल) (१५५ वछनाग) ज्वरघ्न तथा वातहर है वछनाग बहोत रसादिक दवायोंमें गिरता है इसकूं मारवाडीमें संगी मोहरा कहते हैं सींग जेसा होता है इसवास्ते ॥ जहरी चीज है सावचेतीसें वरतना तीन दिन गोमूत्रमें भिजाये रक्खे तो शुद्ध होता है मोलेठी मासा भर वछनागरतीभर कपड छाण कर सुंघणेसें चाहे जैसा सिर दुखता मिटता है हमारा अजमाया है (आनंदभैरवरस) हिंगलू शुद्ध (शुद्ध करणेकी विधि) पहली गाडरके दूधमें खरलकर सुका देणा सातवेर वाद नींबूके रसमें सातवेर भावना देके सुकाणा एसा हींगलु शुद्ध

वछनाग मिरचकाली टंकन शुद्ध पींपर ये सब सम वजन लेकर चूर्ण करना या गोली बांधणी अतिसार ज्वर खासी मंदाग्नि वगेरे रोगोंमें फायदा करता है मात्रा १ सें दोय रती (१५६ वज) वातघ्न कफघ्न तथा उलटी लाणेवाली है वचकी मुख्य दोय जाति है एक तो दूधिया अथवा सुपेद वज दुसरा गंधीला घोडा वच वचमिरगी रोगमें हिस्टीरीया जेसा मगजके रोगमें फायदा करता है मात्रा दो आनी भर सहतमें मिलाय चटाना (१५७ वड) ग्राही तथा कफ शामकहे वडका दूध पौष्टिक है (पंचवल्कल) वड पींपल पीपलो पारसपीपल तथा गूलर ये पांच दरखतोंके छालकूं पंचवल्कल कहते हैं इसकी उकालीके पाणीसें फोडे घाव चांदी विस्फोटक वगेरे चमडीके सडे भये जगेकूं धोणेसें बहोत फायदा होता है चिकते भागपर इनोंका कपड छाण किया चूर्ण दवानेसें घाव जलदी भर आता है वड गूलर पीपर पीपला आंब तथा जांमूनकी जडकी छाल तथा भिलावा इन सबोंका काढा कर एक तोलेसें सरू कर चार तोलेतक चढते २ पीणेसें कफ प्रमेह अर्थात् नींदमें पेसाब हो जाता है सो मिटता है (१५८ बिरियाली) (सूंफ) दीपन तथा वातहर है बुखारकी उलटीकूं सूंफका हिम मिटाता है (१५९ वायविडंग) कृमिघ्न तथा वायु हरता है कृमि कैंचूये कृमिके सब विकारोंकों मिटाती है वायविडंगका चूर्ण सहतमें लेनेसें अथवा उकालीसहतडाल पीणेसें तमाम जंतु मिट जाते हैं मात्रा बचोंकूं १ सें २ वाल वडेकूं अढाई मासेसें पांच मासे तक (१६० वाला) ठंडा शोधक तथा पित्तशामक है ठंडे लेपमें सरबतमें तथा पित्तके बुखारके काढेमें गिरता है एक तो काला नेतरवाला कमलके तंतु दुसरा सुपेद खसवाला (१६१ वांस कपूर) शीतल कफशामक पौष्टिक और मरदमी देनेवाला है वंसलोचन लोक प्रसिद्ध नाम है (सीतोपलादि चूर्ण) मिश्री १६ भाग वंश लोचन८ भाग इलायची ४ भाग पीपर २ भाग तज १ भाग सबोंका चूर्ण करना पुराणी खासी दम तथा क्षयमें सीतोपलादि चूर्ण बहोत फायदा करता है सरू होते क्षयकूं मिटाता है बचोंके दम खास जीर्ण ज्वर तथा नाताकतीपर बहोत दिनोंतक ये चूर्ण खिलाना मात्रा दो आनी भरसें चार आनी भरतक अनुपान घी अथवा सहत अथवा तासीर मुजब फेरफार करना(१६२ विदारी कंद) पौष्टिक तथा वाजीकर है तथा मूत्रल है ये कंद मूकोला भू आंवलेके नामसें प्रसिद्ध है इस कंदके ऊपर बेल होतींहै, कंदजमीनमें बहोत गहरा होताहै जों पुराना होताहै, त्यों कंद बडा होताहै, ताजेविदारी कंदका रस काम देता है सूकेकूं उकालकर रस करणा कंदकारस ४ रुपेभर घी तथा सहतमें पुरुपातन तथा धातु बढाताहै मगज भरताहै, औरतोंके दूध बढता है मात्रा ५ मासा या रुपेभर घी मिश्रीमें (१६३ शतावरी) शीतल मूत्रल धातुपौष्टिक और ग्राहीहै, शतावरी धातुवर्द्धक और मगजकूं पुष्टी देणेवाली है, वो दूधमें डाल अथवा पाक बणाकर खाये जाताहै, औरतोके गर्भाशय

दोष धातु प्रदर वगैरेमें बहोत फायदेवंदहै औरतोके दूध वढाता है, चूर्ण स्वरस इसका काम देताहै, चूर्ण घीसकर सहत मिलाकर चाटणा (फलघृत) घी सेर १ सतावरका रस तथा गोमूत्र चार २ सेर जीवनीय गणमें मिले सो सब दवा एकेक तोला उनोंकों जलमें पीस कल्ककर उसके अंदर डालणा घी पकाणेकी विधिसें पकाणा उसमेंसे २ तोला घी पीणा ये घी वंध्यादोष दूरकरता है, औरतोका गुह्य दोष मिटाता है, ताकत देता है, (१६४ सरपंखा) पौष्टिक मूत्रल कफघ्न है जडके कांटेमें मिरच डाल पीणेसें प्रमेह मिटताहै, बीजोंके तेलसे खुजली मिटती है, चाहे उकालके तेल वणालेवे जड छाछके संग पीणेसें तिली मिटती है, इसके जड़का चूर्ण एक महीना लेणेसे अंडवृद्धिमें फायदा देताहै, जडकी छालका कल्क वणाकर सींधानिमक कुलथीके काढेसें पीणेसें पथरी रेती निकल जाती है, (१६५शिलाजीत–)पौष्टिक मूत्रल शोधकपेसावके सब रोगोंकूं मिटाताहै पेसावकूं ववारणा खुलासा लाणा ये उसका खासगुण है, प्रमेह मूत्रकृच्छ्र रेती पथरी गरमवायु चणख वगेरेमें फायदा करता है, चंद्रप्रभा नामकी गुटिका ये शिलाजीतकी खास बनावट है, सो ऊपर लिखे सरवरोग गरमी खून विगाड और चमडीके सब विकारोंमें बहोत अछी दवाहै, धातू गिरणा नाताकती और नपुंसकपणा इसमेंभी शिलाजीत अछा फायदा करताहै, दूधमें पीये जाती है, औरतोंका ऋतुदोष और वीर्यकूं सुधारतीहै,(१६६ शेवाल)पाणीपर शेवाल आता है, उसकूं गरमकर सहसके एसा पेडूपर वांधणेसें वंध भया पेसाव खुलजाता है, (१६७ शेलारस) पौष्टिक कफशामक ग्राही तथा वदनमे गांठोंके दोषोंकों दूर करणे-वाला इसका मुख्य उपयोग आंडोंके वढणेपर होताहै, सूजे भये आंडपर शिलारस लगाकर ऊपर तमाखूका पत्ता वांधणा सोजा ओर गांठ दरद कम होजाताहै, (१६८ शेसगूंद) एकेक दोदो वाल सहतमें दो तीन वखत चटाणेसें दिनमें कितनेक दिन चाटणेसें अंडवृद्धिमें फायदा करताहै, औरतोका ऋतुधर्म वंध होयतो लाताहै, शेसगूंदका गुण गूगल तथा बीजा बोल जैसाहै, (१६९ शंख) पाचक रोपण दंभक तथा वात हरहै, दवामे शंखकी भस्मी कामदेतीहै, शंखके टुकडोकूं नींवूके रसमें ४ घंटा रखकर पीछै एक संपुटमे रखकर जलाणेसे सुपेद भस्मी होतीहै शंख भस्म प्राये इकेली नहीं दीये जाती कितनीक दवायोंमें गिरतीहै, (शंखवटी) आंवलीकी छालकी राख ४ तोला पांचनिमक सींधा सेंचल विडलूंण खावेसो सेंभरसूंण कचसूण कोइ नहीं मिलेतो एवजीमें सींधा निमक जादा डालणा ४ तोला इन दोनोंकों खरलमें नींबूका रस निकाल भिजाणा पीछे शंखके टुकडे ४ तोला अंगारमें खूबलाल वंबकर २ के खरलमें रहा नींबुका रस उसमें वुझाते जाणा जब निजोरा पीसा जाय एसा भूका होजाय तबतक फेरसेकी हींग सूंठ मिरच पींपर ये हरेक एकेक तोला और शुद्धगंधक शुद्धवछनाग शुद्धपारा हिंगलूमेंका निकाला भया ये तीनों सवापांच २ तोला पहलें पारे गंधककी कजली करणी पीछे

कपड छाण सब चीजों मिलाणी नींबूके रसमें खूब घोट झाड बेर जितनी २ गोलियां करणी इससें अजीर्ण चूंक गोला हैजा उलटी दस्त मंदाग्नि वगेरे पेटके सब रोगोमें फायदा करती है (अग्निकुमार रस) शुद्ध टंकण शुद्ध पारा शुद्ध गंधक ये तीनों एकेक भाग कोडी भस्म शंख भस्म मिरच ४ भाग नींबूके रसमें चार पहर खरल कर बाल बालकी गोलियां करणी पेटकी चूंक मंदाग्नि अजीर्ण मोल उलटी वगेरेमें देना (१७० शखा होली) मगजकूं ताकत देनेवाली पौष्टिक तथा सारकहै शंखके आकारके फूलवाली होनेसें शंखपुष्पी इसका नाम है मगजकूं ताकत देनेवाली होनेसें उन्माद हिस्टीरीया मिरगी चित्तभ्रम मनकी नाताकतीकूं अछा फायदा करती है (शंखावली स्वरस) स्वरसमें सहत तथा कूठ मिलाकर देनेसें पागलपणा मिटाती है, शंखावलीका काढा—क्काथ कर उसके संग योगराज गूगल मिलाकर देनेसें चित्तभ्रम तथा मगजके दुसरे विकारोकूं मिटाकर बुद्धिकूं अछी करती है (१७१ समुद्रफेण) ठंडा स्तंभन तथा आंखोंकों हितकर है, समुद्र फेण ये एक जातकी मछलीका हाड है, आंखकी तेजी वढाती है, मिश्रीके संग आंखमें अंजन करनेसें रातींधापणा ललाई और खुजाल मिटती है, कानमें भूकी डालकर ऊपरसें नींबूका रस निचोडेतो कानका पीपवहणा बंध होता है, (१७२ सहजना) (सरगवा) मूत्रल दंभक तथा सोजन हरता है सहजनेकी फली का साग तथा दक्षणी लोक कढीमेंभी डालते हैं रुचिकर तथा पाचन है छालकी उकाली कर पीनेसें कलेजेका सोजा तिल्लीका सोजा नरम पडता है, छालकी उकालीमें जरा २ सेंचल औरसेकी हींग डालकर पीनेसें पेटमें ओर पेडूके अंदरमें सोजा होय सो मिटता है, (दोषघ्न लेप) सहजनेके जडकी छाल सरसूं सूंठ देवदारू तथा साटेकी जड इनोंकों छाछमें पीस जाडा २ लेप करनेसें जलण सिवाय तमाम सोजा सांधोंका सोजा गांठ तथा गुंमडके दोषकूं खेंच लेता है, पाठे जेसा भयंकर रोग व्रण तथा रसोली और अर्बुद जेसी करडी असाध्य गांठोंकूंभी ये लेप नरम करता है, उसके अंदरके दोषकूं धीमे २ खेंच लेता है, वायु तथा कफके सोजेमें तथा गांठोंमें ये लेप फायदा करता है, ये लेप नरम चमडीपर जरा जलण करता है, लेकिन् डरणा नहीं जलण कम करनेकूं अथवा वद वगेरे गरमीकी गांठोंपर लगानेकी जरूरत पडे तो अंदर जरा गहूंका आटा तथा नीमके पत्ते मिलाकर लेप करना (१७३ सरेस) शीतल तथा दाहशामक है, (दशांग लेप) सरेसकी छाल मोलेठी तगर इलायची रक्तचंनण जटामांसी लोद दारूहलदी कूठ तथा वाला इसकूं दशांग लेप कहते हैं, रक्त वायु गलगंड वगेरे गरमीका अथवा जलणवाले सूजनपर अथवा सोजे विनाके दाह ऊपर ये लेप भीजा या सूका चुपडणेसें तुरत आराम होता है, इस लेपकूं जरासा घी देकर करोना पीछे उसकूं ठंडे जलसे पीस चंदनकी तरे लेप करना सुकेके फेर लेप करना

(१७४ सरसुं) वादीहर उष्ण शोथघ्न दोपघ्न लेपमें सरसूं गिरती है, (१७५ सरसूंका तेल) सरसूंका तेल आचारमें तथा सागके वघार वगेरेमें वंगाली तथा गुजराती लेते हैं वो रुचिकर अग्निप्रदीपक और उष्ण है श्वास रोगपर सरसूंका तेल गुडमें दिया जाता है कानमें शूल चलती होय तो इसकी वूंदे डालणी वंग देशवाले वदनके भी यही मसलाते हैं (१७६ साजीखार) पाचन दीपन तथा वातहर है (अंग्रेजी कारवोनेट ओफ सोडा) उसके वहोतसे गुण जवखारके मिलता है अजीर्णमें वो वहोत फायदा करता है (सर्जिकादि लेप) साजी मेदा लकडी तथा आंवीहलदी इन तीनोंकों जलमें पीस गरम कर लेप करनेसें गुसचोट पछाट किचरागया जमा भया खून विखर जाता है ओर सोजा हलका पडता है (१७७ साटा) शोथघ्न शोधक सारक तथा मूत्रल है साटेकी जड दवामें काम देती है दोपघ्न लेपमें तथा कितनेक काढोंमें उपयोग होता है अंदरके तेसें वाहर सोजेमें फायदा करती है सूंठ तथा सुदर्शनका काढा पीणेसें जलंदर तेसें पेटके सोजेपर सव विकारोंकूं मिटाती है सोजेके संग बुखार होता है सो भी नरम पडता है जडकूं घीमे घसकर अंजन करनेसें आंखकी झांख फूला दाह पाणी खुजाल सव मिटती है (पुनर्नवादि काथ) पेटके अंदरके सोजेपर साटा गिलोय देवदारू हरडे सूंठ इनोंका काढा करके उसके अंदर गोमूत्र तथा गूगलमिलाकर पीणेसें अथवा विना डाले पीणेसें (शोफोदर) अर्थात् पेटके अंदर सोजा होता है सो सव मिटता है (पुनर्नवादि काथ) शरीरके ऊपरके सोजेपर) साटा दारूहलदी हलदी सूंठ गिलोय जवाहरड चित्रककी जड भाडंगमूल तथा देवदारू काढा करना इससें हाथ पांव पेट मूं वगेरेका सोजा उतरता है (१७८ सिंकोना) उत्तम ज्वरहर कटु पौष्टिक ये दरखत पहली अमेरिकामे होता था लेकिन् थोडेसे वर्षोंसें वो दरखत इस आर्यावर्त्तमें वोया गया अव उसकूं देशी वनस्पतीमें गिणनेमें कोई हर जाना नहीं है सिंकोनेकी छाल दवामें काम देती है उसकी तीन जात है लाल पीली और भूरी उसमें पीली सर्वोत्तम है उसमें कीनाईन सत्व जादा है ठंढका वुखार इस दवासें वहोत जलदी अछा होता है कीनाईनकीतरे ये दवा वुखार आनेके पहली लेणी चाहिये सींकोनेकी छाल २॥ रुपिये भरकूं वारीक कूट उसकूं ॥ सेर जलमें डालणा उसमें नींवूका रस १ रु० भर अथवा गंधकका तेजावकी १० या १५ वूंद डालकर उसका आठ हिस्सा कर वुखार उतर गये पीछै वुखार आनेके पहली दो दो घंटेसें आठ वखत देके पूरी करणी इसतरे देनेसें दो तीन पालीमें वुखार ऊतर जाता है जो वुखार अंतरदेके आता होय तो ये दवा वारीके दिन अथवा वुखार चढनेके वखत पहले वारे घंटेसे पहले देणी सरू करणी वुखारके वखततक दो दो घंटेसे चार ४ वखत पिलाणी चिरायतेकीतरे ये दवा अग्नि जाग्रत कर ताकत देती

है (१७९ सिंदूर) शोधक तथा रोपण है चमडीके रोगोंमें कितनेक मलमोंमें सिंदूर गिरता है खुजलीमें मिरच सिंदूर घीमें मिलाकर लगाये जाता है इससे खाज खुजली मिट जाती है (१८० सूंठ) उष्ण दीपन पाचन और वादी हरता है त्रिकटुमें सूंठ होती है अनेक दवायोंके योगमें सुंठ गिरती है जापेवाली ओरतोंके फायदेवंद है वादीका जोर वधे तो घटा देती है सौभाग्य सुंठमें मुख्य सुंठ होती है बुखारमें सुंठकूं पीस जरा गरम कर कपालमें भरकर ओढ कर सोनेंसें वहोत पसीना आकर बुखार उतर जाता है सुंठ मरोडा तथा दस्तके शूलकूं मिटाती है उसकूं घीमें तलकर देनेसें अथवा सुंठकी उकालीकर उसमें थोडा एरंडका तेल डाल पीणेसें वांइटे चूंक शूल वगेरे मिट जाता है एरंडीके जडकी उकाली कर हींग तथा सूंठ मिलाकर पीनेसे शूल मिटती है पाणीमें वहोत देर भीजे भयेकी ठंड मिटानेकूं सूंठ गुड घी मिलाकर चाटना गरमी लाकर फायदा करती है हैजे वगेरे रोगमें हाथ पांव ठंडा होता है तव सूंठका चूर्ण मसलनेसें गरमी ओर हुसियारी आती है गर्भणी ओरतकूं बुखार आता होय तो आधे रुपिये भरके छोटे २ टुकडे कर वकरीके दूधमें उकालकर अथवा पीसकर पीणी सूंठ आंवला ओर मिश्रीका वारीक चूर्ण फजरमें नित्यलेणेसें आम्लपित्तका रोग मिटता है सुंठ तज और मिश्रीकी उकाली पीनेसें सलेखम एकदम वैठ जाता है आम याने विगर परिपक हुआ मल पेटमें रह गया होय तो सूंठ विराली खसखस खारक सम भाग लेकर उसके दो भाग कर एक भाग घीमें तलना पीछे दोनुं भाग एकठा कर चूर्ण करना उसके वरावर बुरा मिलाकर फक्की लेणी सूंठ और वायविडंगकी फक्कीसें मंदाग्नि तथा पेटकी कृमि मिटती है (१८१ सूरण) शोधक तथा अर्शघ्न है सूरणका शाग होता है उसमें हरस मिटानेका गुण होनेसें मस्सेकी दवाईमें लोक वरतते हैं खुराकमें जुदी २ तरे लोक खाते हैं (सूरण मोदक) सुरण ८ तोला चित्रक जड ४ तोला सुंठ २ तोला मिरच १ तोला इन सवोंको १६ तोला गुडमें मिलाकर एकेक रुपे भरकी गोली करणी ओर हमेस फजर सांझ एकेक खाणी हरस रोगमें फायदा करती है (१८२ सोरा खार) मूत्रल स्वेदल तथा शीतल है इस गुणसें सोरा पेसावके जुलावमें तेसें वहोतसे बुखारमें पसीनालानेकूं अंग्रेजी दवायोंके प्रवाही मिक्श्चरोंमें काम देता है कामला रोगमें भी काम देता है (१८३ सोवा) वातहर दीपन पाचन सोवेके पत्तोंका साग होता है सोवेका दाणा सुवावडमें ओरतोंके उकालीमें काम देता है छोटे वच्चोंके पेटमें दरद होता है तव सोवेका दाणा चावकर ऊपरसें उकालीका १० पनरे वूंद पिलानेसें पेटका दरद मिट जाता है और वच्चा खेलनें लगता है (१८४ सोना गेरू) गेरूके गुण पीछे लिखा है, (१८५ सोमल) सोमलकूं शंखियाभी कहते है ये जहरी चीज है इसका वरतावा अनुभवी पूरे विद्वान विना करना नहीं वो ज्वरघ्न तथा शोधक है तथा पौष्टिक है और

युक्तिसें उपयोग करनेसें भयंकर रोगोंकों मिटा देता हे, सोमल १ तोला मारू १४ वें गणोंमें डाल कर कपड मिट्टी कर भोभरमें पकाना वाद मिरचकाली तोलेभर हींगलू सुद्ध तोला भर डाल खरल करना मोठ जितनी गोली ठंडका बुखार चढे तव डेढ घंटे पहले गहूंकी ताजी रोटी घी वूरा डाला भया झर २ ता चूरमांमे लेना जल नही पीना वारीटले वाद लूखी रोटी खाकर वाद जल पीना तीन दिनसें जादा देना नहीं ये पतवाणी दवा है चोकस रोगमें दरदीकी चोकस अवस्थामें सोमल देना वडा नुकशान करता है वादी कफकी प्रकृतीकूं माफगत क्रिया विधिसें कभी आता है पित्त प्रकृतीमें तथा पित्त रोगमें वडा नुकशान करता है फेर सोमलकी मात्रा जादा लेनेमें आ जाय तो हेरान करता है फेर सोमलका जहर जो एकठा हो जाय तो खरावी करता है (मात्रा १ रत्तीका शोलमा भाग) भी वहोतसी वखत सहन नही होता (१८६ सोनामुखी) सारक शोधक तथा चमडीका दोप हरती है सोनामुखीकूं गुजरातवाले मींढियावलभी कहते है सोनामुखी हलका ओर नरम जुलाव है छोटेसे वडे तककूंभी दिये जाता है वदनमें भरा भया विगाड पित्त तथा शिरकी गरमीकूं कम करती है चमडीके पुराणे विगाडमें सोनामुखी शोधक अछा असर करती है गलतकोढतककूं फायदा पोहचाती है पुराणे जहर दोपवालेकूं हलके जुलावकी जरूरी है और ये काम सोनामुखी अछा करती है वातरक्त रोगवालेने हमेस फक्की लेनी चहिये सुधार सकती है सो इस मुजव (पवित्र चूर्ण) सोनामुखीके पत्ते लेकर मट्टीके कोरे पात्रमें गोमूत्रमें भिगाके रखना फजरमें सुका देना फेर रातकूं भिजाणा एसें दस दिन कर फेर चूर्ण करना फेर रातकूं सोती वखत गरम पाणीसें हमेस लेना मात्रा १ सें २ तोला सोनामुखी गुलावकली जो हरडे सुंफ सम वजन ले चूर्ण करना वरावर मिश्री मिलाणी रातकूं फकी लेणेसें दस्त साफ आताहै, (१८७ सेंचल) दीपक पाचक तथा वातहर है लूणसादा और साजीकूं मिलाकर भठीमें मूंसकर ढालणेसें सेंचल वणता है, चूंक आफरा गोला वगेरे रोगोमें दुसरी दवायोंके संग दिये जाता है, (१८८ हरडे) सारक शोधक शीतल तथा रसायण है, आर्यदेशी वैद्योने हरडेका वहोतही गुण लिखा है, निश्चयमें येचीज लायक तारीफकेही है, लेकिन् वापरणेमें उसकूं जरूरीमें जादा नहीं लिखी हरडे ज्यों वजनमें जादा होय त्यों उसका गुण और कीमतमें जादा होतीहै, हरडे वुखार आंखके रोग कोढ चमडीके रोग वायुके रोग विपमज्वर अजीर्ण सग्रहणी हरस खासी कफ पांडू तिली गोला वगेरे वहोतसें रोगोंमें दीजाती है, हरडे वहोत तरेकी होतीहै मुख्य सात जाति हे, जो हरडे भी इसकी होतीहै, गुणमें दोनु हलकी होतीहै (वडीहरडे) वडी मात्रा लेणेसें जुलाव लगता हे, अपक्व दस्तकूं पकाके निकालतीहै, आमका पाचन करती है, वदनमें कुव्वत लातीहै, अजीर्ण हरस तथा चमडीके दोषका सोधन करणा दस्त साफ

लाणा अनाजकूं पचाणा क्षीणताकू मिटाकर ताकत देतीहै, ये हरडेका हितकारी स्वभावहै हरडे त्रिफला चूर्णमें क्काथ वगेरेमे पडतीहै, हरडे बदले जो हरडे काम देती है, २ तोले पीछे हरडे बडी जातमें गिणे जाती है, शिखर गिरिकी जादा गुण करता नहीं बद्रीनाथ हिमालियेकी हरडे गुणोंमें श्रेष्ठ होती है, जोकी पंजाब देश अमरसरसें आतीहै, जोहरडे सबसें छोटी होतीहै वो दस्तावर सारक है, जादा लेणेसें दो तीन दस्त लातीहै, घीमें तलकर रातकूं उसकी फकी लेणेसें या चाबजाणेसें फजरमें दस्त साफ लातीहै, हरसवाले रोगीकूं इसतरे हमेस लेणी चाहिये (हरीतकी अवलेह) पथ्यादिगुड) अभया मोदक अभयामलकी) अमृत हरीतकी) अभयादिक्काथ) मधुपक्क हरडे) इत्यादि हरडेके नाम गुणवाली दवाइयां बहोत उत्तम होती है, बहोतसे भयंकर रोगोंकूं मिटाकर ताकत लातीहै, (१८९ हरताल) शोधक कुष्ठहर ज्वरघ्न दंभक हरतालमें बहोतसे गुण सोमल जैसें हैं. उसमें सोमल ओर गंधकका तत्व मुख्य है, ज्वरहर तथा कुष्ठहर है लेकिन् जोखमकारी दवाहै, इसवास्ते सखतपरेज और पूरे चतुर वैद्यकी सल्लाविगर खाणी अछी नहीं है, (माणक्यरस शीतज्वरहर) शुद्धहरताल अभ्रकके पत्रेपर रखके ऊपरसें दुसरा पत्र देकर झग २ ते अंगारोंपर धरणा धूआं इसका लेणानही धूआं निकलकर जब लाल होजाय नीचै ऊतार लेणा (शुद्धकरणेकी विधि) कली चूनेका नितरे जलमें डोलायंत्रसें चारपहर आंचदेणा एसे चारपहर तिलोंके तेलमें वाफदेणा चारपहर सुपेद पेठेके रसमें पोटली बांध लटकाकर (हरतालका लेप) हरताल २ भाग मनशिल १ भाग बावची १ भाग पवाडके बीज २ भाग नीलाथोथा १ भाग टंकण १ भाग गंधक २ भाग कपूर १ भाग बारीक चूर्णकर नींबूके रसमें लेप करणा करोलिया चित्रीकोढ बाल उडजावे सो उंदरी रोग शिरका खोरा दाद वगेरेमें ये लेप बहोत अछा है (२९० हींग) उष्ण वातहर तथा कृमिघ्न है दालशागके बघारमें दीजातीहै, हिंगोडा दरखतका रस है, काबलमें होताहै, असल रसमें भेल करदिया करते हैं. सोनकली है, दांममे फरक पडता है, व्यंजनस्वाद होताहै, पेटमें वायु नहीं होणे देती पेटका दरद चूंक गोला अफरा शूल इसकूं मिटातीहै, घीमें तलकर गुडमें डाल निगलाणेसें पेटका दरद कृमिकूं वायु गोलेकूं तुरत मिटातीहै, दांतोमें रखणेसें पीडा शूल दांतोंकी मिटजातीहै, हिस्टीरीया वगेरेकी बदनकी खेंचा ताणमें उन्माद शूल श्वास दमवायु वगेरेमें अछा फायदा करती है, मात्रा दो दो घंटेसें चार २ वाल हींग छ छ घंटेसे देणा (हिंगाष्टक) तलीभई हींग सूंठ मिरच पीपर जीरा स्याहजीरा अजमाण सींधा निमक ये सम वजन लेकर चूर्ण करणा इससे अपचा मंदाग्नि आफरा चूंकगोले वगेरे सब मिटते हैं, हींगाष्टकमें १ रत्ती अफीम मिलाकर रातकूं लेणेसें मरोडेका सखत दरद बांईटे बैठ जाते है दस्त बंध होजाताहै, नींद आती है, (शिवाक्षार पाचन) हरडे हींगाष्टक तथा साजीखार सम भाग चूर्णकरणा फाकीलेणेसें अजीर्ण

दस्तकी कबजीयत आफरा चूंक अजीर्णका दस्त और हैजा मिटता है, चाहे कैसाही सखत अजीर्ण और हैजा होय तो सरू होतेही जोये चूर्ण ऊपरा ऊपरी लेणेमें आवे तो दस्त उलटी बंध होतीहै पेट आफरता नहीं और कचे मलकूं पकाकर दस्त उलटीके कारणकूं बंध करताहै, (१९१ हींगलू) पौष्टिक शोधक हिंगलू है, सो पाराहै, तब पारे जैसा गुण धारण करता है, शुद्धका उपयोग वहोत दवामें काम देता है फायदा करता है पारा रसकपूर हिंगलू बरतणेवाला पूरा विद्वानहोणा हींगलूयों पकाये जाताहै, ४ तोला हिंगलूकूं पात्रमें धरकर २ सेर नींबूका रस बूंद २ डालते जाणा नीचे आंचमंद२ देते जाणी बाद ५ सेर कांदेका रस इसीतरे सुसाणा फेर पांचसेर कांदेकूं कूट हांडीमें भर वीचमें हींगलू देकर मूं बंदकर मंद आंचसें पकाणा बाद सेर राई सेर मालकांगणी सेर कांदे सेर घी सेर सहत सेर कुचीला फेर मटकीभर बीचमें देकर ८ पहरमंद आंचसें पकाणा ये हींगलू बहोत गुण करता वादी कफके सब रोगोकूं मिटाता है हमारा अजमाया है, अनुपान जुदे २ है हींगलू १ भाग कथा ४ भाग पीसकर दबाणेसें चांदी घाव मिट जाता है (१९२ हीराकशी) पौष्टिक तथा स्तंभन है, हीराकसी लोहेका क्षार है, इस वास्ते उसमें लोह जैसा गुण है अंग्रेजीमें (सलफेट ओफ आयर्न) हीराकसीकूं कहते हैं, कलेजेका रोग तापतिली पांडू कष्ट साध्यतक विषमज्वर अतिसार संग्रहणी तथा रक्त पित्त वगैरे रोगोंमें फायदा करती है हीराकसीका पाणी छांटणेसें कांच अंदर चली जाती है उस जलसें धोणेसें जखम तथा व्रण जलदी भर जाताहै, कासी साद्य तेल— हीराकसी आसगंध लोद तथा गजपीपर हरेक ४ चार २ तोला तेल ६४ तोला जल २५६ तोला सर्वेकूं उकाल तेलवणाणा इस तेलके मालिससें स्तन तथा गुह्य अवयव कठण होजाते है, १०४ हीरा दखण) स्तंभन तथा शीतल है चमडीके रोग जैसें फटणा खुजली वगैरे ऊपर फायदा करती है, भूकी हीरादखण कत्था इलायची सम वजन तीनों कपूर थोडा मिलाकर चांदी घाव गरमी मूंका पकणा दांतका सडणा दांतकी शूल वगेरेमें वहोत फायदा देतीहै, घी अथवा सहतके संग मिलाकर लगाणा (१९४ हीरा बोल—) कफघ्न उष्ण ऋतुलाणेवाली रक्तस्तंभक तथा रोपण है औरतोंके ऋतु दोषमें वहोत फायदा देती है, हीराबोल हीराकसी और एलिया इनोंकों सामल करके वाल २ भरकी गोलियें बणाणी देणेसें ऋतु कम होय बंध होय अथवा दरद करके आता होय वो सब ऋतुदोषकूं मिटातीहै, हीरा बोल दांतके मंजनमें तेसें भगंदर नासुर तथा घाव वगेरेके मलमोंमें वो गिरतीहै, खूनकूं थांभती है जब कोइभी जखमका खून बंध नहीं होयतो हीराबोलका भूका दबाणेसे बंध जरूर होताहै.

गुणमुजब औषधोंका वर्ग.

(१अम्ल खट्टी दवायें—) इस दवायों में खट्टी दवायों आती है, वहोतसी खट्टी दवायें

शीतल अर्थात् ठंढी तेसें कितनीक दीपन पाचन होती है, पित्तकी शांति करेहै, लेकिन् कफकूं पैदा करती है,

(१) दीपन पाचन खट्टी) अंबली कवीठ चणेका खार नारंगी बीजोरा नींबु.

(२) दुसरी खट्टी दवाइयें) आंबले आंब जामुन अनार दाख (सामान्य उपयोग) इस तरेकी दवा पीणेसें या चूसणसें या शरबतकर पीणेसें पित्तकी उलटी दाह दांतमेंसें गिरता भया खून तथा मूं उसला होय सो सब मिटताहै, दीपन पाचन खट्टी दवाइयें जठराग्निकूं तेज करनेवाली होणेसें दाल शाग तथा मसालोंमें गिरती है इस वर्गकी सब दवा कफकारक है, इसवास्ते लेते सोवखत तासीर शरीरकी स्थिति तथा टेवका विचार करणा.

(१ अम्लविरुद्ध औषधें) इस वर्गकी दवायोंमें जादा करकें खारका समावेश होता है, जैसेंके साजीखार जवखार सेंधव सेंचल सादानिमक टंकण नोसादर आंधीझाडेका खार पापडखार शंखभस्म वगैरे सब खटाईके शत्रु है, (सामान्य उपयोग) होजरीमें खटासका जोर वढ गया होय खट्टीडकार यागुचलके आते होय दांत अंबीजगये होय और पेटमें पाचन क्रिया भये पीछे (वहोत करके जीमे बाद चार घंटेसें पाचन क्रिया पूर्ण होतीहै) पेटमे पवनका जोर पैदा होता होयतो और परिणामशूल जैसा अजीर्णका रोग रहता होय उसमें खार सेवन अछाहै, खायेबाद तुरत खारा पदार्थ कभी खाणा नहीं क्योंके जो खट्टारस खुराककूं पचाणेवाला है, उस रसका खार विरोधी है इसवास्ते जीमेबाद नारंगी अनार संतरे द्राक्ष वगेरे गीलामेवा खाणेकी रिवाज है वो वहोत फायदा करता है, लोक समझते हैं जैसा खार कुछ खुराककूं पचाणेवाला नहीं है लेकिन् पाचनक्रियामें कोई विकार भया होयतो उसकूं सुधारणेवाला है क्षारपदार्थ खूनकूं तेसें शरीरके दुसरे रसोंकों गलाता है और पतला करताहै और हद् उपरांत खाणेमें आजायतो बहुत नुकशांन करता हैं कफका चिकणास मिटाणेकूं उसमेंके कितनेक खार दवातरीके फायदेवंद है सांधा पकडे जाताहै जकड जाताहै येरोग खट्टारस खूनमें वढणेसें होताहै और क्षार ये अम्लरसकूं तोडता है.

(२ शीतल दवाये) खाणेसें या शरीरपर लगाणेसें ठंढक देकर अंदरकी तैसें बाहरकी दाहकूं मिटावे सो शीतल दवायोंमें ठंढताके संग दुसरी जुदे २ स्वभाववाली तासीरकूं गिणतीमें लेंतो उसके वहोत वर्ग होसके शीतल पौष्टिक शीतल रोपण शीतल पित्तशामक शीतल मूत्रल शीतल स्तंभन शीतल शारक शीतल दाहशामक.

(१) शीतल पौष्टिक-) आंवला गोखरू मोलेठी चिरमी बिदाम बंबूल वंगलोचन शतावर.

(२) शीतल रोपण-) कथा खेरसार गेरु मेंहदी हीरादखण.

(३) शीतल पित्तशामक) आंवला कूडाछाल गायजवां गिलोय गोखरू चंदन चंदलिया त्रिफला दारुहलदी धमासा नारंगी मजीठ रगतचंनण नींबू.

(४) शीतल मूत्रल) सोरा अलशी गाजवां कबाबचीणी चावल.

(५) शीतल स्तंभन) ईसबगुल कूडाछाल कत्था केशर जामुन बबूल मोचरस.

(६) शीतल सारक) आंवले गुलाबकाफूल हरडे.

(७) शीतल दाहशामक) इलायची केशर चंदन तुकमवालिंगा त्रिफला बहेडा सरेस.

(सामान्य उपयोग) ये दवायां दाह शमनवास्ते हिम शरबत लेप पोता घी तथा प्रक्षालन (धोणा) उसके रूपमें वापरते हैं गरमवायु प्रमेहकी जलण तथा होजरीमें दाह होताहै, और उलटी होतीहै तब इस वर्गकी दवाका हिम पानक अथवा शरबतकर पिये जाता है वातरक्त गरमीकी चांदी आंखके झमाले वगेरे दाहमें इस दवायोंका पाणी धोणेके काममें लेप तथा घी चुपडणेके काममें आता है (४ पित्तशामक दवायें) जो दवा वदनके अंदर कोपेभये पित्तकूं शांतकरे अथवा दस्तके रस्ते निकाल डाले वो पित्तशामक कहलातीहै बहोतसी दाहशामक दवाइयें पित्तशामक होतीहै इस वर्गकी दवायोंका कितनेक विभाग होसकतेहैं. कितनीक खास पित्तशामक है और कितनेक स्तंभक पित्तशामकहै.

(१) खास पित्तशामक) कोलापेठा पित्तपापडा गाजबां गिलोय चंदन धाणा नारंगी बहेडा भांगरा मजीठ रगतचंनण नींब नींबू बाला घी मखण वगेरे.

(२) सारक पित्तशामक—) नवसादर आंबली आंवला खारातूंबा कुवारपाठा चंदलिया त्रिफला दाख वगेरे.

(३) स्तंभक पित्तशामक) बील दारूहलदी अनार कूडाछाल आंब (सामान्य उपयोग) पित्तके बिगाडमें तथा पित्त प्रकृतिवालेकूं इस वर्गकी वस्तु जादा माफगत आती है बुखारकी प्यास उलटी दाह धूपकी लू खूनके विगाडमें भी पित्तशामक दवाओं फायदेबंद है, पित्तके बडे कोपमें पित्तकूं निकालणेकूं सारक पित्तशामक दवायें कामकी है, पित्त कोपणेसें जठरमें तथा आंतरेमें नहीं जाकर खूनमें मिलके कामला पैदा करता है, तब पित्तसारक दवायें पित्ताशयमें बधे पित्तकूं आंतरेमेसें दस्तके रस्ते खेंचकर निकाल देती है ॥

(५) उष्ण दवायें) शरीरमें जागृति चेतन तथा गरमी देणेवाली दवायोंको उष्ण दवायें कहनेमें आती है, इस दवायोंका मुख्य दो भाग हो सकता है ॥

(१) सब वदनमें गरमी लाणेवालीदवा— अजवाण अदरक सूंठ लोंग अंबर कस्तूरी कांदा पीपर भिलावा दशमूल आक वगैरे.

(शरीरके किसी भागमें गरमी लावे) हींग लसण मालकांकणी अकलकरा समुद्रफल हीराबोल जावंत्री तुलशी कायफल जवखार आंधीझाडा पीपरामूल कपूर रास्ना वगेरे (सामान्य उपयोग) उष्ण दवाये प्रथम मगजकूं असरकर ज्ञानतंतुओंकों जागृत करती है ये ज्ञानतंतुओं रिदयके ज्ञानतंतुओंकों जागृत करतीहै, जिससें खून जलदी २ फिरता है और खून नहीं पोंहचणेसें भई बेशुद्धी इससें दूर होतीहै शक्तिक्षीण होगई होय मर्मस्थान मंद पडगयें होय शरीर बहोत अशक्त और हुसियारी करके बिलकुल रहित होजाय इंद्रीयोंमें शून्यता आगई होय वदन ठंढा पडगया होय एसी स्थितिमें इसीवर्गकी दवा कांम देतीहै.

(६ दीपन पाचन–) जो दवा आमकूं पचावे और जठराग्निकूं प्रदीप्त करे वो दीपन और जिसकरके नहीं पचाभया खुराकका पाचन होय सो पाचन दवा कहलाती है, दीपनदवामें कच्चे खुराककूं पचाणेका और अग्निप्रदीप्त करणेका गुण है, कितनीक दवा दीपन है, कितनीक पाचन है और कितनीक दोनों गुणवाली है.

(१) दीपन वस्तुओ–) सूंफ बीजोरा नारंगी पीपलामूल धाणा तज जावंत्री जवखार चणेका खार अजवाण लूण जीरा स्याहजीरा सोवा वगेरे.

(२) पाचन वस्तुयें–) भीलामा कलंभा कुटकी नागकेशर कुचीला वगेरे.

(३) दीपनपाचन–) अद्रक सूंठ मिरच पींपर लोंग जावंत्री इलायची चित्रकमूल कबावचीणी इंद्रजव साजीखार छाछ. सामान्य उपयोग– अजीर्णमें पाचन अथवा पाचनके संग दीपन दवा दीजातीहै, पाचन दवा अनाजकूं पचातीहैं, दीपन दवायें अजीर्णके विकार जैसेंके चूंक पेटपीडा वायु आफरा वगेरेकूं मिटातीहै,

(७) वादीहरता–) वायुकों मिटाणेवाली दवाइयें वायुहर वातहर वातघ्न एसे कहलातीहै लेकिन् उसमें भेदहै, पेटपर असर करणेवाली दवायें शरीरमें शूल चसका वगेरे दरदकूं मिटाणेवाली दवायें और मगजका चित्तभ्रम वगेरे वायुकों मिटाणेवाली दवायें पहले प्रकारकीकूं वायुहर दुसरे प्रकारकीकूं वातहर तीसरे प्रकारकीकूं वातघ्न एसी तीन संज्ञा दीगई है.

(१) वायुहर) पेटकी वायुपर असर करणेवाली लूण साजीखार अजमाण आदा चित्रकमूल कुचीला तज पींपर मेथी लोंग लसण वायविडंग सूंठ सोवा हींग.

(२) वातहर) शूल चसका अंगके दरदपर अरणी आक एरंड करंज कायफल चिरमी कांदा दशमूल संभालू बछनाग लोंग सूंठ अफीम कपूर वगेरे.

(३) वातघ्न) मगजके संग संबंध रखणेवाले वातव्याधिकूं मिटाणेवाले गूगल भिलावा दशमूल लसण वच बछनाग रास्ना पीपलामूल कोंचबीज.

(८) कफघ्न दवा) कफकी चिकणाई तथा कफके जत्थेकूं बिखेरके पतलाकर बाहर

निकालणेवाली दवाकूं कफघ्न दवायें कहणेमें आती है, सो मुख्य २ लिखते हैं आंघीझाड़ अरडूसा अरणी आक आंबाहलदी काकडासींगी शेशगूंद कायफल जवखार मोलेठी तुलसी देवदारू भूरींगणी वच हीराबोल वगेरे इसमेंकी वहोतसी दवाई उष्ण वीर्य या गरम स्वभावकी है, थोडी एक शीत वीर्यभी है, मोलेठी हीराबोल वगेरे.

(सामान्य उपयोग) छातीके अंदरके कफकूं निकालणेवास्ते कफघ्न दवायोंका उपयोग करणा चाहिये इसमें समझणेकी बात एसीहै, अफीम वगेरे दवा कफकूं दवातीहै लेकिन् जिसवखत छातीमें कफ पूरे जोरका भरा होताहै, उसकूं अफीम वगैरे दवा उलटा नुकशान करताहै, कफघ्न दवा देकर कफकूं वहोतसा निकाले पीछे अफीम जैसी कफ शामक दवा देणी.

(९) कफशामक-) छातीमें थोडा कफ होय जिसकूं शमादेवे सो इसतरेकी दवा कासश्वास तथा हांफणी दमकूं भी दवातीहै, खेरसार वंशलोचन अफीम सहत लोबान तमाखू मनशिल धतूरा वगेरे.

[१०] ग्राही दवायें) जो दवा वदनके प्रवाही पदार्थोंका शोषण करके उसकूं घट्टकरे उसकूं ग्राही दवा कहते हैं जो दवापाणी जेसा दस्तकूं बांधे सो ग्राही कहलाती है, इस वर्गकी दवा इसमुजब है, अरडूसा आंब इंद्रजव ईसबगुल कूडाछाल कथा केशर जामुन जायफल अनार दारूहलदी नागकेशर बील बंबूल फिटकडी मांजूफल मेंडल मोचरस नीलाथोथा राल लोद वड शंखजीरा शतावर हीरादखण हीराबोल वगेरे.

(११) स्तंभन दवायें) जो दवा दस्तकूं पेसावकूं अथवा दुसरीभी वहणेवाली चीजोंकों थांभके रखे उसकूं स्तंभन दवा कहते हैं, तमाम ग्राही दवायोंमें कुछ इक स्तंभन गुण है तोभी जिस दवायोंमें जादा स्तंभन गुणहै, सो इसतरे अफीम मोचरस नीलाथोथा जायफल वगेरे.

(१२) रक्तस्तंभक दवाये) जो दवा खून गिरतेकूं बंधकरे वो रक्तस्तंभक कहलातीहै, इन दवायोंमें नाडी संकोचाणेका गुण होणेसें जहांसें खून गिरता होय उसजगे रक्तस्तंभक दवा पहोंचतेही उन नाडीयोंका मूं बंध होताहै, ग्राही और स्तंभक दवायें ऊपर लिखीहै. उनोंमें भी थोडा २ गुण खून थांभणेका है, खास रक्तस्तंभकमें अरडूसा हीराबोल तथा फिटकडी वगेरे मुख्य है, ग्राही तथा स्तंभक दवाओंका सामान्य उपयोग ऊपर लिखाहै, ग्राही दवाये स्तंभकहै तोभी उनोंसें पेट चढता नहीं और स्तंभक दवायें दस्तकूं रोकती है, लेकिन् उनोंमें दीपन पाचन गुण नहीं होणेसें पेट आफरणेका डरहै, इसवास्ते स्तंभक दवायोंके साथ वातहर गरम दवामिलाणी चाहिये प्रदर प्रमेह धातुका गिरणा कान तथा नाकका वहणा मूंसें नाकसें दस्तसें पेसावसें खून तथा कफ गिरता है, उसकूं तथा घाव फोडेमेंसें पककर पीप वहता है, उसकूं इस प्रकारकी दवा मिटाती है,

कोईमें तो खाणेसें कोईमें धोणेसें कोईमें पिचकारी मारणेसें ओर कोइमें लगाणेसे इन जुदे २ झरणेका अटकाव होताहै.

(१३ शोधक दवायें–) जो दवाइयां खूनके पित्तके वायुके तथा कफके विकारोंकों धीमे २ दवातीहै, वो शोधक कहलाती है, उसके विभाग वर्ग बहोत होसकता है.

(१) जीर्ण पित्तकूं शमन करणेवाली पौष्टिक शोधक) आसगंध, गूगल, ब्राम्ही.

(२) खूनकूं पुष्टि देणेवाला खुराक पौष्टिक शोधक–) शिलाजीत लोह माक्षी.

(३) उष्णवीर्य पौष्टिक शोधक–) सोमल, हरताल, हींगलु, पारा, तांबा.

(४) सारक शोधक–) गंधक, सोनामुखी, हरडे, पारा, आंबाहलदी, आंबला, आसोंदरा, एरंडीकी जड, तेल एरंडीका, अंकोल, कुंवार, चंदलिया, त्रिफला, जमालगोटा, साटा, कोला.

(५) खासरक्तशोधक–) अनंतमूल (उसवेकीजड) लालरोईडा मजीठ.

(६) खास उपदंश शोधक–) रसकपूर, पारा, चोपचीनी.

(७) खासपित्तशोधक–) नवसादर.

(स्वेदल दवायें–) पसीना लाणेवाली दवाकूं स्वेदल कहतेहैं सोरा अनंतमूल अफीम आक अंकोल कपूर देवदारु मोथ मालकांगणी गरमपाणी ये पसीनां लाणेवाली चीजोंहै सामान्य उपयोग– बुखार मर्मस्थानके अंदरका सोजा संधिवायु जलोदर चमडी सुकीभई लूखी रहाकरे एसे सबरोगोंमें पसीना लाणेवाली दवा अथवा पसीना आवै इसतरेया शेकया नास लेणेसें सब रोग मिटते हैं.

(१५ शोथघ्नदवायें–) खाणेसें अथवा बाहर लगाणेसें जो दवा सोजेकूं मिटावे सो शोथघ्न कहाती है, अरणी आंबला कडवीतोरी कालीपाट कीडामारी दशमूल साटा सहजणा वगेरे. सामान्य उपयोग– सोजा दोतरे ऊतरता है, सोजा उतरणेवाली रेचक दवा खाणेसें तेसें वायूका सोजा होयतो वातहर दवाके लेपसें पित्तका होयतो पित्तहर दवाके लेपसें मिटता है निवलाईकी सोजन ताकतवर दवा खाणेसें मिटता है.

(१६ मूत्रल दवा–) जो पदार्थ मूत्र पिंडऊपर असर करके पेसाबकूं जादा खुलासा लावे सो मूत्रल कहातीहै, मूत्रल वस्तुओंका दो विभाग किया जाय तो एक तो खास मूत्रल और दुसरा पौष्टिक मूत्रलहै.

(१) खासमूत्रल–) टंकणखार सोरा आंधीझाडा ककडीके बीज कालीपाट पलासगरणी (गायजवां) देवदारू मोथ नालियेर सहजणा साटा अलशी आसोंदरो कबावचीणी जवखार चलबीज बहुफली दूधपाणी तिल चावल वगेरे.

(२) पौष्टिक मूत्रल–) शीलाजीत तालमखाणा गोखरू विदारीकंद शतावरी वगेरे.

(सामान्य उपयोग–) खास मूत्रल दवायें पेशाबकूं खुलासा लातीहै और तीक्ष्ण-

रूप रोगमें जादा असर करतीहै, पौष्टिक मूत्रल दवायें पुराणे भये रोगपर जादा फायदा करती है वीर्यके दोषकूं सुधारतीहै वदनमें ताकत लातीहै, पेशावके दाहमें तेसें बुखारमें मूत्रल दवा जादा काम देतीहै, पांडू कामलेमें ज्यों सारक दवाकी जरूरी है तैसें खास मूत्रल दवाकी भी जरूरी है और ये दोनोंतरे खूनमें वढे पित्तकूं निकाल देतीहै.

(१७ रेचक दवायें–) जो दवाओं दस्तकूं जादा खुलासा लातीहै. उसकूं सामान्य तरे रेचक दवाओं कहणेमें आतीहै लेकिन् एसी दवा वहोत तरेकीहै कितनीक दवायें मलकूं पचाकर वंधे भये मलकूं नीचै उतारती है, जैसे जोहरडे त्रिफला कितनीक कचे पक्के दोनुं मलकूं नीचे खेंचके लेजाके दस्त लाती है, जैसें करमाला. कितनेक गंठेभये और सूकेभये मलकूं उखेडकर न्यारा कर निकालतीहै, जैसें कुटकी जमालगोटा और कितनीक कचा पक्का दोनूं मलकूं तथा पित्तकूं पाणी जैसा पतला दस्तकूं वाहर निकालती है, जैसें निशोत. कडवी तूंवी, सोनामुखी एरंडीका तेल वगेरे निश्चै विचारके देखे तो ये चारों दवा रेचक गिणे जातीहै.

(१८ उलटीकी दवा–) मेंणफल निमक राई आक आरीठेका जल नीला थोथा कडवी तोरी वंदालफल जिसकूं डूंगर फलभी कहते हैं.

(सामान्य उपयोग–) खायेभये जहरी पदार्थकूं निकालणेवास्ते तेसें कफपित्तकूं और जादा खाये भयेकूं निकालणा होय तव उलटी लेणेकी जरूरत पडतीहै; कितनीक दवा पेटमें पोहचतेही उलटी लातीहै, और कितनीक होजरीमें गये पीछै खूनमें मिलकर मोल लातीहै, फेर उलटी लातीहै,

(१९ कृमिनाशक दवायें–) कितनीक दवा आंतरोंके अंदरकी कृमीकूं मार डालती है और कितनीक वाहरके जंतुओंको कितनीक दवा एसी है सो जिसके सेवनसें पेटमे कृमि पडतीही नहीं इन सर्वोंकी तपशील.

(१) पेटकी कृमिनाशक–) कांकच कीडामारी अजमाण (खुरासाणी) पलास अनार वखमा वायविडंग कालीजीरी वगैरे.

(२) कृमिघ्न तथा रेचक–) कडवातूंवा कपीला रेवचीणीकाशीरा वगेरे.

(३) कृमिपैदा नहीं होवै) इंद्रजव चिरायता नींव वज डीकामाली अतीस.

(४) घावके जीवोंकी दवा–) कपूर कील गंधक नींव हींग पारा.

(सामान्य उपयोग) जो दवा कृमिकूं परास्त करती है वो पेदाभी नहीं होणेदेती. फरक इतनाही है कृमिकूं परास्त करणेवाली दवा पेटमें जाकर तुरत कृमीपर असर करके कृमिकूं परास्त करतीहै अथवा दवाती है कृमिका विशेष जोर होय तो कृमिघ्न दवाओंका कितनेक दिन सेवन करणेसें कृमि परास्त होती है, जो कृमिघ्न दवा रेचक नहीं है वो खाये पीछे दुसरे दिन एक जुलाव लेणा जिससें सव मलामत निकलपडे.

(२० ऋतुलाणेवाली दवा) वंध ऋतूकूं खोले टंकण नवसादर एलिया हीराचोल वगैरे इनोंकी गर्भाशयपर असर होतीहै.

(२१ छींकलाणेवाली दवा) नक छींकणी तमाखू नवसादर कलीचूना सामिल किया (आमोनिया) नाकके श्लेष्म पुडतपर जाके उसमेंसें रसकूं टपकाता है, और पाणी झरणेसें शरदी वगैरे शिरका दरद कम पडता है.

(२२०) स्नायुयोकूं ढीली करता) जो दवा शरीरके खिंचती नसोकूं और संकोचाये भये अवयवोंकूं ढीला करे वो दवा इस वर्गमें गिणे जातीहै, अफीम खुरासाणी अजवाण भांग ताम्रभस्म कपूर तमाखू धतूरा हींग कस्तूरी तथा दुसरीभी वातघ्न दवाये मिरगी दिवानापणा हिस्टीरीया हिचकी धनुर्वात दम तथा मगजके रोगोंमें ये दवायें दीजातीहै.

(२३० नींद लाणेवाली दवा) अफीम भांग रोगीसें नहीं सहीजाय एसी पीडामेंसें रोगीकूं आराम देणेवास्ते नींदलाणेवाली दवाकी जरूरत पडतीहै, अफीम ये अछा काम करताहै, अफीम नींद लाता है, दरदके ऊपरके ज्ञानतंतुओंकों वेशुद्ध वणाता है, भांगसें शांतिसें नींद नहीं आती वेमार मदमें पडा रहता है, इन दोनों दवाकी मगज पर असर रहती है, तहांतक वेमार नींदमें या मदमें पडा रहता है, उहांतक दरदकी खवर नहीं पडती.

(२४ कटुपौष्टिक दवा) इस तरेकी दवा कडवी ओर पौष्टिक होतीहै, अतीस अरडूसा चिरायता कलंभा क्रांकच वखमा कालीपाठ सिंकोना वगेरे.

(सामान्य उपयोग) शरीरमें मंद २ वुखार रहता होय जीर्ण वुखार होय निवलाई होय उसमे ये दवायें काम देती है, साधारण वुखार तथा वुखारकी नाताकतीकूं मिटाकर वदनमें ताकत लाती है, जठराग्निकूं सतेज करती है.

(२५ पौष्टिक दवायें) जो दवाये शरीरके धातुओंका पोषण कर शरीरकूं पुष्ट ओर ताकतदार करती है वो पौष्टिक दवायें कहलातीहै, उसके कितनेक विभाग होते हैं कितनीक दवाये मगजकूं पुष्टि देणेवाली है, कितनी एक दवा खूनकूं पुष्टि देणेवाली है और कितनीक दवायें जठराग्निकूं उत्तेजन देणेवाली है.

(१) मगजकूं पुष्टि देणेवाली) ब्राह्मी शंखावली शतावर विदारीकंद वंशलोचन दूध वदाम वलवीज अशालिया कोंचवीज केशर सुपेदपेठा उडद सोमल सोना रूपा शिलाजीत नीलाथोथा मोती ताम्रभस्म वंगभस्म जसतभस्म अभ्रकभस्म वगेरे.

(२) खूनकूं पुष्टि देणेवाली) आंवले कचनार हीराकसी गिलोय लोहभस्म सुवर्णमाक्षिक भस्म वगैरे.

(२) जठरकुं पुष्टि देनेवाली) तमाम कटु पौष्टिक दवाये जेसें चिरायता कलंवा नींव अतिविष क्रांकच कालीपाट वखमा वगेरे.

(२६ रसायण दवायें) जो उत्तम दवायें जरा याने वुढापा ओर रोगोंकूं मिटाती है ओर वदनके वाय पित्त कफ वगेरे दोषोंकूं समानतामे रखे है उसकूं रसायण दवा कहणेमें आती है जेसें वडी हरडे आवला गूगल गिलोय त्रिफला चित्रककीजड नीमका पंचांग वगेरे.

(सामान्य उपयोग) इन उत्तम दवायोंका वहोत मुदततक युक्तिसें साधन करनेसें शरीर निरोग होता है आयुष्य वढती है, वल वुद्धिकी वृद्धि होती है हमारे विद्याशाला-की अमृतवटी वसंतमालती योगराज गूगल चंद्रप्रभा आरोग्यवर्द्धनी ज्वरहर रसायन कामोद्दीपक चूर्ण क्रांतिवर्द्धक शिशुपाल गुटिका वगेरे तइयार रहती है ये दवायां निर्भय-पणे हरेक अदमी साधन करे तो वडा जवर फायदा दिखाती है.

(२७ धातुवर्द्धक दवायें) जो दवा वीर्यकी वृद्धि कर वीर्यकूं घट्ट वनावे उसकूं (वीर्यवर्द्धक दवा कहते हैं) शतावर आसगंध वलवीज गोखरू सालम सपेद मूसली ओटिंगणके वीज ऊडदकी दालके लड्डू कोचवीज भिलावा दूध मिश्री घी सहत चणेकी भिजाई भई दाल वगेरे.

(सामान्य उपयोग) इन दवायोंको दूध तथा मिश्रीके संग उकाल कर अथवा इनोंका पाक वणाकर खाये जाता है, जादा तर ठंडकालेमें अछीतरे पच सकती है और गुण भी जादा करती है, क्योंके इनमेंकी चीजें पौष्टिक और भारी होती है.

(२८ वाजीकरण दवायें) जिन दवायोंसें वदनमें ताकत आते कामोत्तेजक शक्ति वढे सो दूध कोंच आसगंध विदारीकंद पाक करके सालमपाक माषादि लड्डू वगेरे.

(सामान्य उपयोग) काम शक्तिकी वृद्धिकी इछा रखणेवालोनें जादातर इस वर्गकी दवा पाक वणाकर सेवन करणा चाहिये कितनेक अफीम सराप वगेरे दवा इस कामके वास्ते वापरते हैं, और उससें कामोत्तेजक शक्ति वढतीभी है लेकिन् ये दवायें ऊमरकूं कम करनेवाली है, ऊपर लिखी दवायें ऊमर वढानेवाली है.

(२९ कामोत्तेजक दवायें) जो दवायें वदनमें जागृती लाकर काम वृत्तिकूं उस्के-रता है वो कामोत्तेजक कहाती है, जायफल कस्तूरी भांग गांजा अफीम वगेरे.

(सामान्य उपयोग) ये दवायें जादा पुरुषोंके कामकी है, ओर कितनेक कामी पुरुष उसका वरतावा करते हैं, वहुत थोडी मात्रामें युक्तिसें ये दवायें इस तरेकी चेतन-ता वताकर शरीरमें कांटा रखती है, लेकिन् भांग अफीम गांजा वगेरे मादक वस्तुओंका मावरा पडणेसें फेर अदमी व्यसनी वन जाता है ओर वहोत खरावी होती है, इसवास्ते शरीरके आरोग्यताका विचार करके देखे तो कामोत्तेजक एसी नुकशानकारी चीजोंसें

दूर ही रहणा इसकी एवजीमें वाजीकरण ओर धातु पौष्टिक दवायोंका साधन करना.

(३० जीवनीयगणकी दवायें) १ काकोली २ क्षीरकाकोली ३ जीवक ४ ऋषभक ५ मेदा ६ महामेदा ७ जीवंती ८ मोलेठी ९ मुद्गपर्णी १० मापपर्णी इसके अंदरकी दवायें कितनीक पहचानमें नहीं आती इसवास्ते इसके वदलेकी नीचे लिखी मुजब दवायें इनके जेसा ही गुण लगभग देती है, काकोली क्षीरकाकोलीकी एवजीमें आसगंध जीवक तथा ऋषभकके एवजीमें विदारीकंद मेदा महामेदाकी एवजीमें सतावर जीवंती याने हरण वेल अथवा मीठी खरवोडी मोलेठी मुद्गपर्णी जंगली मूंग मापपर्णी याने जंगली उडद ये चारतो सजल जमीनमें मिलती है ।

(सामान्य उपयोग) ये दवायां जीवित देनेवाली है इसवास्ते हमारी अमृतवटीमें इसका योग मिलता है ये दवाया हमेस साधन करने लायक है इसमें वलवुद्धि पराक्रम दिन २ वढता है.

(३१ स्तनमें दूध वधाणेवाली दवायें) मेदा महामेदा आदि जीवनीयगणकी सब ओपधें ऊपर लिखे मुजब स्तनोंमें दूध वधाणेवाली है !

(देसी शुद्ध करनेकी दवायें)

कितनीक दवा शुद्ध करनेकी विधि आगे लिखी है, फेर दुसरी विधिसे या कितनेकका शोधन नहीं लिखा सोभी लिखते हैं, ये दवाये विगर सोधे वापरणेसे विकार करती है ।

(कुचीला) गोमूत्रमें वाफ कर ऊपरका छिलका तथा वीज निकाल घीमे तले तव शुद्ध (धतूरेका वीज) चारे घंटा गोमूत्रमें भिजाकर ऊपरका छिलका दूरकर मींजी लेणी (हिंगलूमेसें पारा) हींगलू पावभर नींबूके रसमें घोट दोय वरावर मुंजुडे एसी मटकिया लेकर विना छेदकीपकी फेर एकमें हींगलू तले विछा देना दोनोंका मुं मिलाय कपड मिट्टी कर देना सूके वाद चूले चढाणा एक भीगा कपडा ऊपरके मटकीपर चोपुडता रख देणा मंद २ आंच देणी ऊपरका कपडा हर वखत भीगा रहणा ऐसे चार पहर आंच १ पहर वाकी रहे तव खूव तेज आंच देणी वाद स्वांग शीतल होनेसे कपड मिट्टी खोल ऊपरकी मटकीमे कजलीमें पारा लगा भया उसकूं कपडेसें रगडणा पारा हंडीमें एकठा होगा कजली कपडेसे पूंछ २ कर या जलमें धोकर पारा अलग कर लेना ये पारा नामर्द शुद्ध है (मर्द करणेकी विधि) कांजी मटकीमें आधी भर एक जाडा कपडा जिसपर सूंठ मिरच पींपर पीपला मूल चित्रक सींधानिमक डाल नींवूके रसमें डाल घोटकर कपडेपर डाल लेपकर पारा उसके वीचमें वांध मटकीमें लटका देना सूंके ढकणा देकर कपड मिट्टी कर चार पहर आंच देणा डोलायंत्रसे स्वांग शीतल भये निकालणा फेर सव काममें लेणा ।

(भिलावा) गऊके गोवरमें उकालकर ठंडे जलसें धो डालणा ।

(मनशिल) वारीक २ टुकडे कर पोटली बांध डोला यंत्रसें बकरीके मूत्रमें तीन दिन पकाणा नींबूके रसमें या गोमूत्रमें घोटणेसें मनशिल शुद्ध होता है शुद्ध किया भया दवामें काम देता है ।

(नीलाथोथा) नीलेथोथेकूं घी तथा सहतमें मिलाकर एक कुलडीमें डाल अंगारमें जलाणा पीछे तीन दिन कांजीमें अथवा खट्टी छाछमें घोट धूपमें सुकाना.

(सोमल) छोटे २ टुकडे कर डोलायंत्रसें चंदलियेके रसमें एक १ पहर पचाणा.

उपयुक्त इलाजोंका संग्रह.

दवायोंके वणानेकी विधि आगे लिखते हैं, जो नुकसे मुख्य २ रोगोंपर चलता है, ओर मिटाता है उसका नाम ऊपरके तरफ लिखा है, इसके अलावा ओर भी जो जो रोग उन योगोसें मिटता है, जिनोंका नाम दवा वनावटीके नीचे लिखा है.

क्वाथ (उकाली) काढा.

सन्निपात ज्वरपर.

(१९५ अभयादि क्वाथ) जोहरडे नागरमोथ धाणा रगतचंनण पद्माक्ष अरडूसेके पत्ते इंद्रजव वाला गिलोय करमालेकी गिर कालीपाट सुंठ ओर कुटकी इन १३ वस्तुओंका पींपरका अनुपान त्रिदोष ज्वर दाह खासी प्रलाप दम तंद्रा दस्तबंध उलटी शोष अरुचि ।

सन्निपात ज्वरपर.

(१९६ भारंग्यादि क्वाथ) भाडंगीकी जड चिरायता नींबकी छाल मोथ कुटकी वच सूंठ मिरच पीपर अरडूसा तूंबेकी जड रास्ना धमासा पटोल देवदारू हलदी कालीपाट कुचीला ब्राह्मी दारूहलदी गिलोय नशोत अतिविष एरंडीकी जड त्रायमाण छोटी रींगणी वडी रींगणी इंद्रजव हरडे वहेडा आंवला कचूर ये ३२ दवायें इस क्वाथकूं शास्त्रमें द्वात्रिंशांग एसा नाम भी दिया है जिस सन्निपात ज्वरमें शूल दम कफ दस्त वगेरे भयंकर उपद्रव होय उसमें ये क्वाथ देणेकी जरूरी है.

विषम ज्वरपर.

(१९७ लघु भाडंग्यादि क्वाथ) भाडंगकी जड नागरमोथा पित्तपापडा धमासा सूंठ चिरायता कूठ पीपर भोरींगणी गिलोय ये दश चीजें विषमज्वर त्रिदोषज्वर तथा उपद्रव.

सब साधारण ज्वरपर.

(१९८ गुडूच्यादि क्वाथ) गिलोय धाणा कडवे नींबकी अंतर छाल रगतचंनण ओर पदमकाष्ट यें ५ चीजें जठराग्नि प्रदीप्त कर दाह प्यास उलटी तथा अरुचिकूं भी मिटाता है.

सब साधारण ज्वरपर.

(१९९ नागरादिक्काथ) सूंठ देवदारू धाणा छोटी भूरींगणी वडी भूरींगणी ये ५ चीजों बुखारकूं पकाकर तीनो दोषकूं बुखारकूं उतारे है.

वातज्वरपर.

(२०० गडूच्यादि क्काथ) गिलोय पीपर सूंठ तीन चीजों.

पित्तज्वर.

(२०१ पर्पटादिक्काथ) पित्तपापडा गिलोय तथा हरडे तीन चीजों.

कफज्वर.

(२०२ भूर्निंबादि क्काथ) चिरायता नींबकी छाल पींपर कचूर सूंठ शतावर गिलोय वडी भूरींगणी ८ वस्तु.

खासीसंग बुखार.

(२०३ कट्फलादि क्काथ) कायफल नागरमोथा भाडंगी धाणा चिरायता पित्तपापडा वच हरडे काकडासींगी देवदारू सूंठ११चीजों खासी बुखार श्वास कफ वगेरेमें अच्छाहै.

जीर्णज्वर.

(२०४ गडूच्यादि क्काथ) गिलोयका क्काथ, अनुपान पीपरका चूर्ण.

सर्व शीतज्वर.

(२०५ क्षुद्रादि क्काथ) भूरींगणी धाणा सूंठ गिलोय मोथ पद्माख रक्तचंनण चिरायता कडवा परवल अरडूसा पोकरमूल (उसकी एवजीमें एरंडकी जड) कुटकी इंद्रजव नींबकी छाल भाडंगी पित्तपापडा १६ चीजों.

हमेसका विषमज्वर.

(२०६ पटोलादि क्काथ) कडवे परवल हरडे बहेडा आंवला नींबकी छाल मुनक्का करमाला अरडूसा ८ चीजों, अनुपान मिश्री सहत.

संततादिक सब विषमज्वर.

(२०७ पटोलादि क्काथ) पटोल इंद्रजव देवदारू हरडे बहेडा आंवला मोथ मुनक्का मोलेठी गिलोय अरडूसा ११ चीजों, अनुपान सहत संतत याने ७,१० या १२ दिनतक हमेस रहणेवाला अण उतार बुखार सतत याने रात दिनमें दो वखत आनेवाला बुखार चोथिया तेजरा तथा प्रथम दाहके संग आणेवाला इन सर्वोंपर.

ज्वरअतीसार.

(२०८ नागरादि क्काथ) सूंठ कूडा छाल नागर मोथा गिलोय अतीस ५ चीजों.

अतिसारसंग्रहणी.

(२०९ ह्रीबेरादि क्काथ) नेतरवाला धावडीके फूल लोद काळीपाट रेसा खतमी

डे । छाल धाणा अतीस मोथ गिलोय बीलगिर सूंठ १२ वस्तु बहोत दिनोंका अति-सार संग्रहणी अरुचि आम शूलज्वर.

(२१० त्रिफलादि क्काथ) हरडे वहेडा आंवला देवदारु मोथ मूसाकर्णी सहजनेकी छाल ७ चीजों अनुपान पींपर तथा वायविडंगका चूर्ण पेटकी कृमि तथा उसके सर्व विकार मिटे.

पांडूकामला.

(२११ त्रिफलादि क्काथ) हरडे वहेडा आंवला गिलोय कुटकी नींबकी छाल चि-रायता अरडूसेके पत्ते ८ चीजों, अनुपान सहत.

रक्तपित्त.

(२१२ वासादि क्काथ) अरडूसेके पत्ते मुनका दाख जो हरडे तीन चीजों, अनुपान सहत मिश्री अथवा इकेला अरडूसेका काढाकर सहत मिलाकर पीणा, रक्तपित्तयाने मूंसें दस्त ओर पेसाबसें नाक या कानमेंसें खून गिरे सो रोग खासी श्वास.

श्वास कास.

(२१३ क्षुद्रादि क्काथ) भूरीगणी कुलथी अरडूसा सूंठ ४ वस्तुयें, अनुपान पोकर मूल वो नहीं मिले तो एरंड जडका चूर्ण दम या श्वास चढे सो रोग मिटता है.

वादी रोग.

(२१४ रास्नादि क्काथ) (रास्नापंचक) रास्ना गिलोय देवदारू सूंठ एरंडीकी जड ५ चीजों सब तरेकी बादीपर दीजाती है.

सब वादीपर.

(२१५ रास्नादिक्काथ) (महारास्नादि) रास्ना दूणी अथवा जादा लेणी ४ मासा चिकणेकी जड एरंडकी जड देवदारू कचूर वच अरडूसा सूंठ हरडे चव्य मोथ साटेकी जड गिलोय वधायरा वरियाली गोखरू आसगंध अतीस करमाला शतावर पींपर ऊंठकंटाला-धाणा छोटी रींगणी वडी रींगणी २६ चीजों अनुपान सूंठका चूर्ण योगराज गूगल अजमोदादि चूर्ण अथवा एरंडीका तेल इसमेंकी कोइ एक चीज अनुपांन रोग ओर प्रकृतीमुजब देणी सर्वांगवायु हिस्टीरीया आमवायु अंत्रवृद्धि (जिसकूं गोसा उतरणा कहते हैं) वांझडीपणा पेटकी वायु वगेरे.

सब प्रमेहपर.

(२१६ फलत्रिकादि क्काथ) हरडे वहेडा आंवला मोथ दारूहलदी कडवा तूंवा .६ चीजों अनुपान हलदीका चूर्ण.

प्रदर शरीर धुपणा.

(२१७ दार्व्यादि क्काथ) दारूहलदी रसोत मोथ भिलावा बीलगिर अरडूसा

चिरायता ७ चीजों अनुपान सहत,शूल चलकर गिरणेवाला लाल पीला सपेद ओरतोंका प्रदर सब मिटता है.

सूवा रोग.

(२१८ देवदार्व्यादि क्वाथ) देवदारू वच कूठ पीपर सूंठ कायफल मोथ चिरायता कुटकी धाणा जो हरडे गजपीपर छोटी रींगणी गोखरू धमासा वडी रींगणी अतीस गिलोय काकडासींगी साहजीरा २० चीजों सूवा रोगवाली ओरतकी पेटकी शूल खासी बुखार श्वास मूर्च्छा कंपवायु शिरकी शूल दस्त ये सब मिटता है.

सोजेपर.

(२१९ पुनर्नवादि क्वाथ) साटा दारूहलदी हलदी सूंठ जो हरडे गिलोय चित्रक भाडंगी देवदारू ९ चीजों हाथ पैर पेट तथा मूंके सोजेपर फायदा करती है.

वृषणसोथ.

(२२० त्रिफलादिकाथ–) हरडे वहेडा आंवला ३ वीलगिर अनुपान गोमूत्र आं-डोकी सूजन उतरती है.

वातरक्त उपदंसपर.

(२२१ मंजिष्ठादिकाथ–) मजीठ हरडे वहेडा आंवला कुटकी वच दारूहलदी गिलोय कडवेनींवकी छाल ९ चीजों.

चूर्ण–फकी–

वच्चोंका वुखारदस्त.

(२२२ कृष्णादिचूर्ण) पींपर अतीस नागरमोथ काकडासींगी ४ चीजों, अनुपान सहत वच्चोंका वुखार दस्त दम खासी उलटी.

वच्चेकी खासी दस्त उलटी.

(२२३ शृंग्यादिचूर्ण) काकडासींगी अतीस पींपर ३ चीज, अनुपान सहत अथवा इकेला अतीसका चूर्ण सहतमें.

अतिसार पतला झाडा.

(२२४ लघुगंगाधरचूर्ण) नागरमोथ इंद्रजव वीलगिर लोद मोचरस धावडीके फूल ६ चीजों अनुपांन छाछ तथा गुड रक्तातिसार पित्तातिसारका अनुपांन चावलोका धोवण तथा सहत.

अतीसार.

(२२५ वृद्धगंगाधरचूर्ण) नागरमोथा टेंदू सूंठ धावडीके फूल लोध वाला वील-गिर मोचरस कालीपाट इंद्रजव कूडाछाल आंवकी गुठली अतीम लजालू १४ चीजों । अनुपान चावलोका धोवण तथा सहत्त.

अतीसार.

(२२६ अजमोदादिचूर्ण) अजमोद मोचरस अदरख धावडीका फूल ४ चीजों अनुपान दहींमें मिलाकर पीजाणा.

कास क्षय.

(२२७ सितोपलादिचूर्ण) मिश्री १६ भाग वंशलोचन ८ भाग पींपर ४ भाग इलायची ४ भाग तज १ भाग ५ चीज अनुपान सहत तथा घी श्वास खासी क्षय हाथपांवका दाह मंदाग्नि अरुचि ज्वर रक्तपित्त.

उलटीपर.

(२२८ एलादिचूर्ण) इलायची जटामांसी सूंठ मोथ पींपर सुपेद चंदण धाणा खारक तमालपत्र मोलेठी खस वाला नेतरवाला लोंग अनारका छिलका १४ चीज, अनुपान सहत.

(२२९ नींवपंचांगचूर्ण) बणाणेकी विधि नं० १५१ देखो, चमडीके सब रोगोंपर बहोत फायदेबंदहे.

(२३० आकरकरभादिचूर्ण) अकलकरा सूंठ कंकोल केशर पीपर जायफल जावंत्री चंदण सुपेद ये ८ एकेक भाग अफीम ४ भाग अनुपांन सहत मात्रा एक मासा रातकूं चाटणा वीर्यका स्तंभन होय रतिसुखमें आनंद पावे.

(२३१ नारासिंह चूर्ण) भिलामा सूंठ मिरच पीपर हरडे वहेडा आंवला तिल मिश्री ९ चीज अनुपांन घी तथा मध मंदाग्नि वायु और जलंदर वगैरे उदररोगमें भी फायदाबंद हे अनुपांन दूध पथ्य भी दूध.

उदररोग.

(२३२) पवित्र चूर्ण) पंचलूणतोला ५ त्रिकटु तोला २॥ त्रिफलातो २॥ अजवाण तो २॥ अजमोद तो २॥ चित्रककी जड तोला २॥ गंधक तो १० हरडे तो १० सेंधव तो २० सुंठ तोला ४० पांचो निमककूं कडवे तूंबेमें भरणा उसके कपड मिट्टीकर भोभरसें पकाणा पीछे निमक अंदरसें निकाललेणा उसमें निमकके संग सब चीजे मिलाणी एकवखत नींबूके रसकी भावना देणी इससे तापतिल्ली जलंदर पेटका सोजा वगेरे सब तरेके उदररोगमें दीये जाताहै । मात्रा अढाइ मासेसें पांच मासा.

अतिसार.

(२३३ विल्वादीचूर्ण) पकी बीलगिर मोथ धावडीके फूल कालीपाट मोचरस पांच चीजों अनुपान गुड तथा छाछ.

धातुवर्द्धक.

(२३४ रसायण चूर्ण) गिलोय आंवला गोखरू ३ चीज घी तथा मिश्रीका अनु-

पान सब तरेका धातु दोष नाताकती नपुंसकपणा मगजकी बेमारी जेसेके मिरगी पागलपणा हिष्टिरीया.

उपदंश.

(२३५ चोपचीणी चूर्ण) चोपचीणी तो १० सक्कर तो ४ पींपर तो. १ पीपलामूल तो. १ मिरच तो १ लोंग १ अकलकरा १ खुरासाणी अजवाण. तो १ सुंठ तो. १ वायविडंग तो. १ तज तो. १। गरमजलमें लेणेसें प्रमेह उपदंश, तांतो जेंसा धातूका गिरणा क्षीणता तथा गरमीकी गंठिया.

दाहपित्त मूत्रकृच्छ्र.

(२३६ चंदनादिचूर्ण) अगर तगर चंदन वंशलोचन तथा वाला ५ चीजों सम वजन मिश्री बरावर अनुपान दूध.

पाचन.

(२३७ हिंगाष्टक चूर्ण) तली हींग सूंठ मिरच पीपर अजवाण जीरा स्याहजीरा सींधानिमक ८ चीजों अनुपान घी.

संग्रहणी अतिसार.

(२३८ लाहीचूर्ण) गंधक टंक २ पारां टंक २ सूंठ मा २० मिरच टां १ पीपर मासा १० पांचखार मासा १० शेकी अजमोद टांक ५ शेकाजीरा टांक ५ शेकी हींग टांक ५ टंकण फुलाया भया टंक ५ शेकी भांग तो ८ ये १५ चीजों पारेकी गंधककी कजलींके संग मिलाकर दो दिन घोटणा मात्रा २ मासे सें ४ मासेतक अनुपान गउकी छाछ संग्रहणी मंदाग्नि अतिसार हरस पेटकी कृमि.

गुल्म उदर.

(२३९ वज्रक्षारचूर्ण) सादानिमक सींधानिमक कचनिमक जवखार संचल टंकणखार साजीखार इन सर्वोंकों पीस एक दिन थोरके दूधमें भिगाणा धूपमें सुकाणा तीन दिन आकके दूधमें भिगाणा धूपमें सुकाणा पीछे आकके पानमें लपेट पालसियेमें संपुटकर गजपुटमें फूंके पीछे निकाल सूंठ मिरच पीपर त्रिफला अजवाण जीरा चित्रकमूल ये सब खारके बराबर वजनसे मिलाणी मात्रा टांक २ अनुपान गरमपाणी अथवा गोमूत्र गोला शूल अजीर्ण सोजा उदरके रोग मंदाग्नि आफरा मिटता है.

(२४० शतावर्यादि चूर्ण) शतावर गोखरू कोंचबीज नागबला बलबीज तालमखाना ये ६ अथवा नागबला नहीं मिले तो पांचोंहीका चूर्ण अनुपान गायका दूध रातका खाणा.

(२४२ मुसल्यादि चूर्ण) सुपेद मूसली गिलोयसत्त कोंच गोखरू शेमलकी जड मिश्री आंवला ७ चीजों सम भाग चूर्ण अनुपांन गउका घी.

(२४२ नाराच चूर्ण) पीपर तो २ निशोत तोला ४ मिश्री तो ४ ये तीनोंका चूर्ण मात्रा २ तोला अनुपान सहत इस चूर्णसें पेटका चढणा मलबंध उदररोग कफ तथा पित्तकी शूल मिटती है.

(२४३ पाचक चूर्ण चित्रककी जड तो २ अजमोद०॥ भर साजीखार०॥ भर सींधा निमक एक तोला १ सादा निमक १ तोला सूंठ १ पींपर १ मिरच १ चव्य १ जवखार० ॥ सें चल० ॥ सांभरनिमक ॥ इन सर्वोके चूर्णकूं पहले बीजोरेके रसकी वो नहीं मिले तो नींबूके रसकी भावना देणी पीछै अनारके रसकी भावना देणी.

(२४४ मलशुद्धिका चूर्ण) हरडे वडी २ तोला सोनामुखी २ तोला रेवचीणी०॥ मिरच० ॥ सूंठ १ तोला सेंचल० ॥ तोला सींधानिमक १ तोला इन सर्वोका चूर्ण रातकूं गरम पाणीसें लेणा.

गुटिका–गोली मोदक.

(२४५ संजीवनी) वायविडंग सूंठ पींपर जो हरडे आंवले बहेडा वज गिलोय भिलावा शुद्ध वच्छनाग १० चीजों समवजन गोमूत्रमें घोट चिरमी २ जितनी गोलिये करणी अनुपांन आदेकारस अजीर्ण तथा गोलेमें १ गोली हेजेमें २ सापके जहरपर ३ सन्निपातमें ४ हैजेमें तूटी नाडीकूं पीछी लाती है, एसा एक वैद्यने अनुभव करा है, हैजेमें २ गोली कही भई है लेकिन् जहांतक दस्त उलटी लगती होय उहांतक दो दो घंटेसे १ एक २ गोली देते रहणा.

प्रमेहवगेरे.

(२४६ चंद्रप्रभा) कचूर वच मोथ चिरायता गिलोय देवदारू हलदी अतीस दारु हलदी पींपला मूल चित्रकजड धाणा हरडे बहेडा आंवला चव्य वायविडंग गजपींपर सूंठ मिरच पीपर सुवर्णमाक्षिक भस्म जवखार साजीखार सींधा निमक सेंचल बीडलूण ये २७ चीजों अढाइ २ मासा सवा पांच तोला निशोत, दंतीमूल तमालपत्र तज इलायची वंशलोचन ये सब एकेक तोला लोहभस्म २ तोला मिश्री ४ तोला शिलाजीत आठ तोला गूगल ८ तोला सबकूं एकठी मिलाकर जलमें गोलियां वणाणी प्रमेह मूत्रकृच्छ मूत्रघात पथरी पांडू प्रमेह पिडिका (फुनसियां) कामला अंडवृद्धि दाह पित्त नेत्ररोग ओरतोंका ऋतुदोष पुरुषोंका धातुदोष ये दवा रसायणरूप है, युक्तिसें उपयोग करणेसें तीनों दोषोंकूं जीतती है.

क्षय जीर्णज्वर.

(२४७ वसंतमालती) वणाणेकी विधि नं० ५४ देखो क्षय जीर्णज्वर प्रदर मात्रा रत्तीसें मासेतक अनुपान घी सहत मिश्री.

बच्चोंका दस्त उलटी अनिद्रा.

(२४८ अजमोदादि गुटिका) अजवाण हरडे खारक केशर ये चार एकेक भाग

जायफल मोचरस अफीम ये तीन आधा २ भाग जावंत्री लोंग तथा सहत ये तीन दो दो भाग इन १० की गोलियां वाजरीके दाणे जितनी २ करणी.

खासी.

(२४९ कस्तूर्यादि गुटिका) कस्तूरी तथा कपूर एकेक भाग लोंग दोयभाग मिरच पीपर वहेडा तथा कुलिंजन आधा २ भाग अनारकी छाल ४ भाग ये ८ चीजों काथेके रसमें या जलमें पीस मूंग जितनी गोली.

खासी.

(२५० लवंगादि गुटिका) लोंग वहेडा काली मिरच खेरसार ४ चीजों समभाग बंबूलके छालकी उकालीमें केई दिनोंतक घोटणा चणेप्रमाण गोलियां करणी.

अतिसार.

(२५१ अनारवटी) वनाणेकी विधि देखो अनारके गुणोंमें.

मलशुद्धी.

(२५२ द्राक्षादि गुटिका) मुनका दाख सेर० ॥ सोनामुखी तो ४ हरडे वडी तो ४ मिश्री तो ४ जावंत्रीमा ६ केशरमा ३ इन सबोंका चूर्णकर दाखमे एकेक तोलेकी गोली बांधणी मलकी सफाई मलके आसरे रही वादी आम्लपित्त पित्तवायु वगेरे रोग मिटताहे.

खासी.

(२५३ मरीचादि गुटिका) मिरच तो १ पीपर तो १ जवखार तो० ॥ अनारकी छाल तो ४–ये ४ चीजों चूर्णकर आठ तोले गुडमें गोलिये करणी मात्रा ३ मासा सब तरेकी खासीकूं मिटाती है.

पीनस.

(२५४ व्योषादि गुटिका) सूंठ मिरच पींपर अम्लवेतस चव्य तालीसपत्र चित्रक जीरा अंचली ये सब एकेक तोला तज तमालपत्र इलायची ये तीन तीन २ मासा इन चारोंका चूर्ण और २० तोला गुड गोली मात्रा पांच मासा या १ तोला आम पीनस दम खासी.

(२५५ योगराज गुग्गल) बनानेकी विधि देखो नं० ५८ में.

२५६ किशोर गुग्गल—नं० ५८ | २५७ त्रिफला गुगल—नं० ५८
२५८ गोक्षुरादि गुगल—नं० ५८ | २५९ कांचनार गुगल—नं० ५८

जीर्ण धातुगतज्वर.

(२६० अमृतामोदक) वणाणेकी विधि देखो नं० ५७ में चाहे जेसा पुराणा विषम ज्वर जीर्णज्वर धातुगत ज्वर बहोत दिन सेवणेसें चलाजाताहे फेर ये बुखार पीछा उखडता नहीं. मात्रा तीन मासे सें १ तोला अनुपान दूध.

धातुपुष्टि.

(२६१ माषादि मोदक) छिलका विगर की उडद की दालका आटा, गहूंका रव छडेभये जवका आटा, चावलोंका आटा, पीपरका चूर्ण, ये पांच चीजे ४ चार २ तोला उसमें पावघी डालके, कडाहीमेसे कणा, पीछै सबके बराबर सक्करखांड, सक्करसें दूणा पाणी, उसकी मंद आंचसें चासणीकर, शेका आटाचासणीमें डाल चार २ तोलेका लड्डू बणाणा.

हरसमस्सा.

(२६२ बृहत्सूरणादि वटक) सूरण सुकाया भया भाग १६ वधायरा भाग १६ मूसली ८ भाग चित्रक ८ भाग हरडे बहेडा आंवला वायविडंग सूंठ पीपर भिलावा पींपला मूल तथा तालीसपत्र ये सब चार २ भाग इनके चूर्ण में दूणा गूड मिलाकर बडी गोली करणी मात्रा ५ मासे सें तोलेतक अग्नि प्रदीप्त होकर हरस तेसें वायु तथा कफसें भई संग्रहणी श्वास कास क्षय हाथी जेसे पांव सोजा हिचकी प्रमेह भगंदर वगैरे रोग अछा होताहे ये रसायणरूप सर्व रोग हरदवा हे.

अवलेह–चाटण–पाक.

कास श्वास हिचकी.

(२६३ कंटकारी अवलेह–खडी भूरींगणीका पंचांगदशसेर सूका अधकिचराकूट २५ सेर जलमें उकालणा चतुर्थांस बाकी रहे तब छाणकर मिश्री सेर २ घी तोला ३२ तेल तोला ३२ गिलोय चव्य चित्रक मोथ काकडासींगी सूंठ मिरच पीपर धमासा भाडंगी की जड रासना कचूर ये १२ चीजोंका चार २ तोलेका चूर्ण डाल फेर उकालते चाटणे जेसा पाक जब होजाय तबी नीचै उतार ठरेबाद ३२ तोला सहत वंशलोचन पींपरका चूर्ण १६ सोले तोला ये तीन चीजों मिलाकर मट्टीके चिकणे पात्रमें धर रखणा हिचकी दम खासी मिटतीहै.

हरसपर.

(२६४ कुटजावलेह) कूडेकी छालसेर १० अधकिचरी कूट २५ सेर जलमें उकालकर चतुर्थांसरहे तब उतार छाण तीनसेर गुड डाल फेर चूलेपर चढाकर पाक चाटणे जेसावणाणा पीछे ये कपडछाण चूर्ण डालणा रसोत मोचरस सूंठ मिरच पींपर हरडे बहेडा आंवला लजालूकी जड चित्रक पहाडमूल बीलगिर इंद्रजव वच भिलावा अतीस वायविडंग तथा वाला ये अठारे चीज चार २ तोला घी ३२ तोला ठंढा पडे पीछै सहत ३२ तोला डालणा इससें हरसके सब रोग अतिसार अरोचक संग्रहणी पांडू रगतपित्त कामला अम्लपित्त सोजन दुबलापणा वगेरे रोगमें दिये जाताहे अनुपान छाछ दूध दहीं घी पाणी इसमेंसें रोगानुसार देणा.

क्षय खास.

(२६५ हरीतकी अवलेह) २५६ तोला जव ८० तोला दशमूल १०० वडी हरडे चित्रकमूल पीपलामूल आंधीझाडा कचूर कोंच शंखावली भाडंगी गजपींपर चिकणामूल पोकरमूल ये एकेक आठ २ तोला इनोंकों सव दवाके वजनसें अठगुणे जलमें उकालणा तथा हरडे सो जव वाफीजजावै उनोंकों जलमेसें निकाल कूट कर उसका कपड छाण सत सव निकाललेणा पीछे उकालेके पाणीकूं फेर चूले चढाणा उसमें वो हरडेका सर्वस्वसत गुड सेर १० घी ३२ तोला तेल ३२ तोला डालकर पाक तइयार करणा ठंढाभये वाद तोला १६ सहत पींपरका चूर्ण १६ तोला डालणा अगस्तावलेह क्षय खासी बुखार दम हिचकी हरस अरुचि पीनसरोग संग्रहणी वगेरे रोगोंकूं मिटाताहे उत्तम रसायण है.

रक्तपित्त आम्लपित्त.

(२६६ द्राक्षावलेह) कालीमुनका दाखकूं दूधमें उकाल घीमे तलणी पीछे मिश्रीकी चासणीकर उसमें डालणी पीछै विदाम घीमें तलकर कूट कर चूर्ण करणा कीटी पकी करणी जायफल लोंग जावंत्री इलायची वंशलोचन तज तमालपत्र नागकेशर कमलगटा इन सर्वोका चूर्ण उस चासणीमें मिलादेणा पीछै आम्लपित्त रगतपित्त क्षय पांडू कामला तथा अशक्ति दूर होतीहै.

दाहभ्रम.

(२६७ कूष्मांडावलेह) पके सपेद पेठेका जलनिकाल गिरकूं नीचो डकार घीमें तलणा पीछै द्राक्षावलेहकी सव चीजों अंदर मिलाणी और सव चीजोंके वजन वरावर वूरेकी चासणीकर पाक तइयार करणा आम्लपित्त दाह भ्रम शोप क्षीणता मंदाग्नि.

कासश्वासपर.

(२६८ आर्द्रखंडावलेह) पाव आदेकूं छीलकर उसका टुकडा करणा पीछै उसकू थोडे घीमें सेकणा पीछै सेरगुड या वूरेकी चासणी करके उसमें घीमें सेकाभया आदा ओर इस चीजोंका चूर्ण करडालणा तज तमालपत्र इलायची नागकेशर लोंग जो हरडे भाडंगी अरडूसा नीमकी छाल देवदारू आसगंध जावंत्री जायफल अगर मुनका एकेक दो दो तोला कास श्वास क्षय मंदाग्नि हृदयरोगवगेरोंकी शांति होती है.

वीर्यस्तंभन.

(२६९ आकूती माजम) भांग तो २० कूं खूव जलसें मसल २ कर धोणा जिससें हरा रंगका पाणी निकल जाय पीछै उसकी पोटली वांध ४ सेर दूधमें डाल उस दूधकूं अछीतरे उकालणा पीछे दही जमाणा उसका विलोयकर घी निकालणा फेर उस घीमें विदाम तो २० पिस्ता तो २० खोवेकी कीटी तो २० मुनका तो २० चिरोंजी तो

२० इनोकूं तल लेणा पीछै एक सेर सक्करकी चासणीकर ये चीजें सब मिलाणी जायफल जावंत्री इलायची समुद्रशोषके बीज अफीम केशर रूमी मस्तंगी कंकोल ये एकेक तोला सालम सुपेदमूसली आसगंध सतावर कोंच गोखरू तालमखाना ये दरेक दो दो तोला तथा अकलकरा सूंठ मिरच पीपर ओर पीपलामूल ये चार एकेक तोला भांगका घी तलेवाद वचे सो पाकमें डाल देणा चाटणे जेसा पाक करणा मात्रा छ मासेसें तोला तक इससें वीर्यस्तंभन तथा वीर्यवृद्धि अच्छी तरे होती है, भांगमें नसाहै इसवास्ते जिसकू लेणेका मावरा नहीं होय उसकूं विचारके लेणा भांग चढ जाय तो नींबू चूसणा अथवा छाछ ओर भात खाणा दस्तकी कबजीयतवालोंनें आकोती खाणी नहीं.

वीर्यवृद्धि पुष्टि.

(२७० विदामपाक) बदामकी कुली २० तोला कीटी १० तोला बेदाणा ४ तोला लवंग जायफल जावंत्री केशर वंशलोचन कमलगट्टा ये एकेक आधा २ तोला इलायची तज तमालपत्र नागकेशर ये दरेक एकेक तोला सक्कर अढाई सेर घी २० तोला चासणीकर सब चीजोंका चूर्ण मिलाणा तीन मासा अभ्रक भस्म मिलाणा तीन मासा वंग सुवर्णमाक्षिक भस्म पूण तोला प्रवाल भस्म ॥ तोला जो ये चीजों नहीं मिले तो एसा ही लेणा वीर्यवृद्धी पुष्टि तथा बुखारसें भई नाताकतीमें ये पाक बहोत फायदेवंध है.

नामर्दाई.

(२७१ कंदर्पपाक) सपेद कांदा तो २० दूध सेर २ घी सेर १ सहत तोला १० बूरा सेर २ तज तथा जायफल एकेक तोला लोंग केशर आधा २ तोला शुद्ध ताम्र भस्म मिले तो ॥ तोला कीटी १० तोला इन सबोंका विधिसें पाक तइयार करणा ये नपुंसकपणा दूर करता है.

प्रदर रक्तपित्त.

(२७२ जीरापाक) जीरा सेर १ चूर्णकर चार सेर दूधमें पकाकर खोवावणा कर फेर घी डाल, कीटी वणाणी पीछै२सेर बूरेकी चासणीकर तज तमालपत्र इलायची नागकेशर पींपर सूंठजीरा नागमोथा वाला अनारकीछाल रसोत धाणा हलदी सालम वंशलोचन तवखीर ये दरेक दोदो तोला ये सब चीजें चासणीमें मिलाकर पाक वणाणा प्रदर रक्तपित्त मूंकारोग प्रमेह पथरी जीर्णज्वर दाह पीनस हरस ये सब रोग मिटजाता है.

आमवात सब वादी.

(२७३ मेथीपाक) मेथी दाणा तो१०सूंठ तो १० इन दोनोंका चूर्णकर५सेर दूधमें रांधणा खोवा भयेवाद उसमें घी डालते जाणा ओर कीटी करणी ठंढा भये वाद दो सेर बूरेकी चासणीकर सूंठ पींपर पीपलामूल चित्रककी जड अजमोद धाणा जीरा सूंफ

जायफल कचूर तज तमालपत्र मोथ ये हरेक चार २ तोलेका चूर्ण डालना लड्डू वणाणा आमवात सब वादीके रोग ओरतोंका सूआरोग वायुरोगमें ये पाक वहोत अछा है.

धातुगतज्वर.

(२७४ पीपरपाक) पीपरका चूर्ण ६४ तोला चो गुणे दूधमें उकालकर खोवा करणा उसमें घी रुपिया २५६ भर डालकर मंद आंचसें कीटी करणी पीछे २५६ तोले वूरेकी चासणीकर पाक तयार होणेसें तज तमालपत्र नागकेशर इलायची हरेक चार २ तोलेका वारीक चूर्ण तेसें विदाम ओर ऊपरसें घी दिल चाहे जितना डालणा मात्रा १ लड्डूसें २ गरमीमालम देतो अनुपान दूध धातुगत जीर्णज्वर उधरस दम पांडु धातुक्षय और मंदाग्निपर फायदेवंद है.

खासी क्षय.

(२७५ अरडूसेकी अवलेही) अरडूसेके पत्तोंकों वाफके वस्त्रमें रस निचोड लेणा पीछे उसमें मिश्री मिलाकर चाटणे जेसा पाक वणाणा पीछे उसमें वहेडा हलदीका चूर्ण डालणा खासी कफ श्वास क्षय तथा रक्तपित्त मिटता है.

मंदाग्नि.

(२७६ आदेकी अवलेह) आदेका रस १० तोला जल १० तोला मिश्री २० तोला अग्निपर पाक वणाणा पीछै केशर इलायची जायफल जावंत्री लौंग दरेक एकेक तोलेका वारीक चूर्ण मिलाणा इससे मंदाग्नि खासी श्वास अरुचि मिटती है.

सूवारोग.

(२७७ सौभाग्य सूंठीपाक) अच्छी सूंठ तोला ३२ जिसकूं ३२ तोला गऊके घीमें मकरोय आठ सेर गउके दूधमें डाल खोवा करणा पीछे उसमें ओर घी डालते जाणा मंद आंचसे हिला कर कीटी करणी पीछै ८ सेर वूरेकी चासणी करके उसमें धाणा तीन मासा सूंफ सवा तोला वायविडंग सूंठ नागकेशर मिरच पीपर ओर मोथ हरेक चार २ तोला मनमुजव विदाम पिस्ता चिरोंजी ऊपरसें घी डालके पाक करणा.

पौष्टिक.

(२७८ सालमपाक) सालम लसणकी कुलीजेसी तो २० ऊपरके पाक मुजव साढी चौदे सेर दूधमें उकाल खोआकर घी डाल कीटीकर सवाई या डेढी वजनकी कीटीसें वूरेकी चासणी करणी उन मान मुजव केशर विदाम पिस्ता चिरोंजी तज तमालपत्र नागकेशर इलायची वगैरे डालणा.

वाजीकर वीर्यवृद्धि.

(२७९ कामवर्द्धक मोदक) तालमखाना गोखरू वलवीज सुपेदमुसली कौंच वीज आसगंध मोलेठी शतावर ये सम वजनसव मिलके २ सेर अठगुणे दूधमें उकाल की-

टी करणी घी डालकर कीटीमें दूणी सक्करकी चासणी कर नच २ टांकके लड्डू बणाणा इच्छा होय तो तज तमालपत्र इलायची नागकेशर विदाम चिरोंजी थोडी २ डालणी और दवा कोइभी डालणी नहीं.

उपदंशसे भया चमडीरोग.

(२८० चोपचीणीपाक) चोपचीणीका चूर्ण) तो ४८ बहोत घीमें सेकणा ५६ तो बूरेकी चासणी करणी उसमें पीपर पीपलामूल सूंठ मिरच तज अकलकरा लोंग एकेक तोलेका चूर्ण कर सब मिलाणा विदाम चिरोंजीभी थोडी डालकर गोली बांधणी गरमी फूटे सांधोंमें गंठिया होजाय उसमें ये फायदा करताहै.

आम्लपित्त.

(२८१ कूष्मांड खंडपाक) सपेद पेठेका रस ४०० तोला गऊका दूध ४०० तोला आंवलेका चूर्ण ३२ तोला इन तीनोंको मंदाग्निसे पकाकर पीछे उसमें ७२ तोला बूरा डालकर पाक तइयार करणा.

रक्तपित्त.

(२८२ खंड कुष्मांडपाक) ३२ तोला भूरे कोलेका गिर लेकर उसकूं ६४ तोला जलमें उकालणा आधा पाणी जले जब कपडेसें नीचोकर पाणी छाण लेणा वो पाणी रहणे देणा ओर गिरिकूं २० रुपेभर घीमें सेकणा पीछे ६४ तोला बूरेकी कोलेके पाणीमें चासणी करणा उसमे सेकाभया पेठा डालणा पीछे इन चीजोंका चूर्ण डालणा मोथ आंवला वंशलोचन भाडंगी तज तमालपत्र इलायची ये तीनों एकेक तीन २ मासा सूंठ धाणा काली मिरच ये हरेक एकेक तोला लींडीपीपर ४ तोला.

आसव.

क्षतक्षयपर.

(२८३ द्राक्षासव) काली दाख सेर ५ उसमें पक्का सवामण जल डालकर उकालणा आधा पाणी जले तब उतारकर उसमें गुड सेर २० तथा तज तमालपत्र इलायची नागकेशर पीपर मिरच कंकोल दरेक ४ चार २ तोला कूटकर ओर धावडीका फूल तोला ५० सावत डालणा इन सबोंकों घीके चिकणे पात्रमें भर मूं बंधकर मटकीकूं एक महीनेतक धूपमें धरणा फेर उस आसवकूं अनारज लोक काममें लेते हैं. इससें छातीका क्षय क्षत खास श्वास मंदाग्नि पेटकी वायु चूंक दस्तकी कबजी खून विगाड वगेरे रोगोंमें फायदा करता है.

रक्तपित्त.

(२८४ उसीरासव) वाला नेतरवाला लालकमल कालाकमल गहूंला (गहूंमें पेदा होता है) पद्मकाष्ठ लोद मजीठ ४ मासा कालीपाट चिरायता कुटकी वडकी छाल

गूलरकी छाल कचूर पित्तपापडा सपेदकमल पटोल कचनारकी छाल जामुनकी छाल शेमलकी छाल ये सब चार २ तोला लेकर चूर्ण करणा दाख ८० तोला धावडीका फूल ६४ तोला पाणी २०४८ तोला बूरा सेर १० सहत सेर १० इन सवोंकूं एक मटकीमें भरकर मूं बंधकर एक महीना रखणा रक्तपित्त पांडु कोढ प्रमेह हरस कृमि शोष मिटता है.

पांडुरोग.

(२८५ लोहासव) लोहभस्म सूंठ मिरच पीपर हरडे वहेडा आंवला अजमोद वायविडंग नागरमोथ चित्रकमूल ये एकेक चीज सोले २ तोला धावडीका फूल २० तोला तमाम चीजोंका चूर्णकर उसमें २५६ तोला सहत ४०० तोला गुड ओर २०४८ तोला पाणी सब ऊपर लिखे मुजब मटके आदिमे भरणा इससें जठराग्नि प्रदीप्त होती है, पांडु सोजा गोला उदररोग हरस कोढ चमडीके विकार तिल्ली खुजाल खांसी दम भगंदर अरुचि संग्रहणी उदररोग मिटता है.

रक्तगोला.

(२८६ कुमारिकासव) कवारपठेका रस याने गिर २०४८ तोला गुड ४०० तोला भांग १०० तोला पाणी १०२४ तोला इन सवोंका क्वाथ करणा चोथा भागका जल वाकी रहणेसें छाण लेणा उसमें सहत २५६ तोला धावडीका फूल ६४ तोला जायफल मिरच कंकोल कवावचीणी जटामांसी चव्य चित्रक जावंत्री काकडासींगी वहेडा पोकरमूल ये दरेक चार २ तोला ताम्र तथा लोहभस्म तो २ अगली तरे मटकेमें भरणा मूं बंधकर २० दिन जमीनमें अथवा अनाजके ढिगलेमें रखणेसें आसव होता है, लेणेसें औरतोंका रक्तगुल्म पांचतरेकी खासी श्वास क्षय उदररोग हरस वादीके रोग मिरगी वगेरे रोग मिटता है, जठराग्नि प्रवल होती है, ओर पेटकी शूल तथा गुल्म रोग मिटता है.

घृत–घी.

कलेजारोग तिल्लीपर.

(२८७ क्षीरघृत) पीपर पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठ सेंधव ये सब चार २ तोला उसकूं जलमें पीस चटणी करणी पीछे ६४ तोला गऊका घी घीसे चोगुणा गऊका दूध उसमें चटणी डाल घी वाकी रहे जहांतक उकालणा पीछे घीकू कपडेसें छाण लेणा इस घीकूं भोजनके संग खाणेसें पेटकी तिल्ली गलती है, विषमज्वर तथा मंदाग्नि मिटती है.

वातरक्त कोढपर.

(२८८ अमृताघृत) गिलोयकूं कूट चोगुणे जलमें उकाल चतुर्थांस रखणा छाणकर उकालीके जलसे चतुर्थांस घी घीसें चतुर्थांस गिलोयकी जलमें पीसी भई चटणी

तीनोंकों मंद आंचसें पकाकर घी बाकी रहें तब उतार छाण लेणा वातरक्त कोढ चमडीके सब रोग मिटते हैं.

नेत्ररोगपर.

(२८९ त्रिफलाघृत) हरडे बहेडा आंवला इनोंका स्वरस सूका मिलें तो अठगुणे जलमें उकाल चतुर्थांस रखणा बोदरेकका जल ६४ तोला अरडूसेका रस ६४ तोला भांगरेका रस ६४ तोला बकरीका दूध ६४ तोला गऊका घी ६४ तोला तयारकर पीछे हरडे बहेडा आंवला पीपर दाख सपेदचंनण सींधानिमक चित्रकमूल आसगंध दूणी मोलेठी मिरच सूंठ बूरा सफेदकमल नीलकमल साटा हलदी दारूहलदी फेर मोलेठी ये उगणीस चीजों तोला २ भर लेकर चटणी करणी इन सब चीजोंको एक पात्रमें डाल आंचपर घी तइयार करणा इस घीसें रातींधापणा आंखमें जल वहणा खुजली जाला मोतियाबिंद शिरका रोग वगेरे मिटता है.

वंध्यादोष.

(२९० फलघृत) हरडे बहेडा आंवला मोलेठी उपलेट हलदी दारूहलदी कुटकी वायविडंग पीपर मोथ कडवा तूंबा कायफल वच मेदा महामेदाके बदले दूणी सतावर काकोली क्षीरकाकोलीकी एवजीमें दूणी आसगंध सपेद उपलसरी काली उपलसरी गहूंला सूंफ हिंग रास्ना सुपेद चंनण लाल चंदण जाईके फूल वांस कपूर कमल बूरा अजमोद दांतीमूल ३० चीजोंकी चटणी करणी पीछे बाछडेवाली इकरंगी गऊका घी ६४ तोला घीसे आधा गऊका दूध दूध जितना पाणी मिलाकर घी तइयार करणा ये घी पुरुष ओर औरत दोनोंके लेणे लायक है मरदमी आती है, ओरतोंका बांझडीपणा दूर होकर पुत्र पैदा होता है जिसकी ओलाद जीवे नहीं वो इस घीसें केइयक दिन सेवन करणेसे उसका अमर होताहै रोग रहता नहीं.

वंध्यादोष.

(२९१ फलघृत दुसरा) घी चार सेर शतावरका रस १६ सेर गोमूत्र १६ सेर जीवनीयगणकी दवा एकेक तोला घी सिद्ध करणा ऊपर मुजब. फायदा ऊपर लिखे मुजब.

वंध्यादोष.

(२९२ लघुफलघृत) ऊंठकंटाशला पीलेया काले फूलका हरडे बहेडा आंवला गिलोय साटा अरडूसा हलदी दारूहलदी रास्ना मेदा सतावर इनोंकी चटणी करणी घी तो ६४ गऊका दूध २५६ तोला पाणी २५६ तोला इन सबोंको उकालकर घी उतार लेणा औरतोंका गुह्यरोग शूल दरद योनीका रस्ता चोंडा होंजाणा अंग बाहिर निकलणा स्थानभ्रष्ट होणा गर्भ नहीं रहणा वगेरे सब योनिदोष गर्भाशयके दोष मिटता है.

अपस्मार उन्माद.

(२९३ ब्राह्मीघृत) ब्राह्मीके पत्तोंकारस ३२ तोला घी १६ तोला सूंठ मिरच पीपर हलदी निशोत दंतीमूल शंखावली करमाला वायविडंग ये दरेक पाव २ तोला इन सर्वोंकी चटणीकर इन तीनोंकों पकाकर घी वणाणा.

तेल.

(२९४ अर्क तेल) तिलका तेल १ सेर आकका दूध चार तोला हलदी० ॥ सेर मनशिल० ॥ सेर आकके दूधमें हलदी तथा मनशिलको घोट थोडा पाणी डाल चटणी करणी पीछै चटणीकूं तेलमें डाल तेल उकालणा पीछै छाण लेणा इस तेलसें खाज खुजली खाजका घाव मिटता है.

(२९५ बिल्वादि तेल) कच्चा बीलफल गोमूत्रमें पीस चटणी करणी उसमें चोगुणा तिलका तेल मिलाणा उसमें चोगुणा बकरीका दूध ओर दूध जितना पाणी इन सर्वोंकों उकाल तेल बाकी रहे उहांतक उकालणा ये तेल कानमें डालणेसें बहरापणा दूर होताहै.

(२९६ वज्रतेल) डंडेवाली थोरका दूध आकका दूध धतूरेका रस चित्रकमूलका रस अथवा काढा भेंसके गोबरका रस ये सब समवजन पीछै पकाकर तेल वणाणा पीछे फेर उसमें तेलसें चोगुणा गोमूत्र डाल पकाणा छाणलेका ६४ तोला सिद्ध भये तेलमें इन चीजोंका बारीक चूर्ण मिलाणा गंधक चित्रक मनशिल हरताल वायविडंग अतिविष बछनाग कडवी डोडी उपलेट बच जटामांसी सूंठ मिरच पींपर दारूहलदी मोलेठी साजीखार जीरा देवदारू १९ चीजों ये तेल मसलणेसें चमडीके ऊपरके सब विकार मिटते हैं.

विषमज्वर क्षय.

(२९७ लाक्षादि तेल) बोरकी अथवा पीपलकी लाख २५६ तोला लाखसें चोगुणा पाणी उकालकर चोथाहिसारहे तब छाण लेणा उसमें ६४ तोला तेल गउका घोलिया दही २५६ तोला सूंफ आसगंध हलदी देवदारू कुटकी संभालूके बीज मरोडफली कूठ मोलेठी सुपेद्चंदण नागरमोथा रास्ना इन सर्वोंका चूर्ण डाल तेल तइयार करणा इसकी मालिससें सब तरेका विषमज्वर श्वास कास कमर तथा पीठकी शूल वादी पित्त मिरगी उन्माद क्षय खुजाल दुर्गंधि चमडीका फटणा इन सब रोगोंमें ये तेल बहोत फायदा करता है.

हरस मस्सा.

(२९८ कासीसादि तेल) हीराकसी लांगली कूठ सूंठ पींपर सींधानिमक मनशिल कणेरकी जड वायविडंग चित्रकमूल अरडूसा दंतीमूल कडवी तुराइके बीज दारूडी हरताल १५ चीजोंकी चटणी करणी उसमें तेल ६४ तोला थोरका दूध ८ तोला

आकका दूध ८ तोला तेलसें चोगुना गोमूत्र उकालकर तेल वणाणा हरसके मस्सेवास्ते ये अछा इलाज है.

व्रण.

२९९ जात्यादि तेल) जाईके पत्ते तो ५ कडवानींब करंज कडवा परवल इन दरेकके पत्ते दो दो तोला करंजके बीज मोलेठी मेण कोष्ट हलदी दारूहलदी कुटकी मजीठ पद्मकाष्ठ लोद हरडे कमल नीलाथोथा उपलसिरी ये दरेक दो दो तोला इनोंकी चटणी करणी चटणीसें चोगुणा तेल तेलसें चोगुणा पाणी डाल तेल सिद्ध करणा ये तेल कानमें या नाकमें डालणेसें पीप बंध होय घाव भर जाता है.

कोढ चमडीके रोग.

(३०० मरिचादि तेल) मिरच हरताल नसोत रगतचंदण नागरमोथ मनशिल जटांमासी हलदी देवदारू दारूहलदी कडबे तूंबेकी जड कणेरकी जड कूठ आकका दूध गऊके गोबरकारस ये सब एकेक तोला शुद्ध वछनाग २ तोला चटणीकर इसमें सरसूंका तेल ६४ तोला तेलसें दूणा गोमूत्र गोमूत्र जितना जल तेल तयार करणा इसके मालिससें चमडीके वहोतसे रोग चमडी फटणी खुजली चित्रोंकोढ लालकोढ चेल फुटणा वगेरे मिटता है.

शिरकी टाट.

(३०१ करंजादि तेल) करंजकी छाल चित्रकमूल जाईके पत्ते कणेरकी जड इनोंकी चटणी करणी चटणीसें चोगुणा तिलका तेल तेलसें चोगुणा पाणी तेल आंच पर तइयार करणा इससें शिरमें टाट जो पडती है, सो मिटकर फेर बाल ऊग जाताहै.

पीनस.

(३०२ पाठादि तेल) कालीपाट हलदी दारूहलदी मरोडफली अथवा तज पींपर जाईके पत्ते दंतीमूल इनोंकी चटणी करणी इनोंसे चोगुणा तेल तेलसें चोगुणा पाणी उकालकर तेल तयार करणा नाकमें बूंदे डालणेसे दुष्ट पीनस मिटता है.

मल्लम लेप उबेरा.

व्रण.

(३०३ जात्यादिघृत) (घृत मल्लम) जाईके पत्ते नींब कडवेके पत्ते पटोल दारूहलदी हलदी कुटकी मजीठ मोलेठी मेण करंजके बीज वाला उपलसिरि नीलाथोथा ये दरेक एकेक तोला लेकर चटणी करणी इसके वजनसें चोगुणा घी डालकर पकाणा ओषधियोंसें तिरके जुदारहे तब पकाभया समझ उतारके घी छाणलेणा नासूर पीप वहणेवाला बडे बडे घाव होय एसा गंभीर ओर दुष्ट व्रण इस लेपसे अछा हो सकता है.

खाज खुजली

(३०४ कासीसादि घृत) (मलम) हीराकसी हलदी दारूहलदी मोथ हरताल मनशिल कपीला गंधक वायविडंग गुगल मोम मिरच कुटकी नीलाथोथा सरसूं रसोत सींदूर सुगंधी वच रगतचंदण खेरसार कडवे नीमके पत्ते करंजबीज उपलसिरी वच मजीठ मोलेठी जटामांसी शिरेस लोद पदमाख जो हरडे पवाडके बीज ये ३२ दवा एकेक तोला इसका महीन चूर्ण घीसेर ३ इन सबोंको तांबेके वरतनमें मिलाकर ७ दिन-तक धूपमें रखणा पीछे घी कांममें लेणा खाज खुजली दाद कोढ फोडा गडगूंमड खुजली सबपर.

खाज खुजली.

(३०५ पारदादि मलम) पारागंधक मनशिल सिंदूर मिरच हलदी दारूहलदी जीरा शंखजीरा पहली कजली करणी बाकीका महीन चूर्ण मिलाणा पुराणे घीमें अथवा धोये घीमें मिलाणा इससे खुजली गडगूमड शिरके चिकते चीरे मिटता है.

हरसका मस्सा.

(३०६ अफीम तथा मांजूका मलम) अफीम तो २ माजू फलका चूर्ण तोला ५ सादा मलम तो ५ तीनोंकों मिलाके उसका लेप मस्सेपर करणेसें मस्सेकी जलण ओर खून बंध होताहै, ओर मस्से सूक जाते हैं.

घाव चांदी.

(३०७ बोदारका मलम) बोदार तो २० राल तो २० कपूर तो १० मोम तो १० घी तो १० मोम घीकूं मंद आंचसें गरमकर पीछे तीनोंचीज मिलाणी ये मलम गरमी तथा खुजालवाला घाव चांदीपर फायदा करता है.

खुजली.

(३०८ बोदारका मलम २) बोदार १ भाग अलशीका तेल ५ भाग एकठाकर मलम बणाणा.

चांदी घाव.

(३०९ बोदारका मलम ३) बोदार तो ५ राल तो ५ कपूर तो २॥ चहिये इतने घी तथा मोममें मलमकर पट्टी मारणी.

गरमीकी चांदी.

(३१० हीरा दखणका मलम) हीरा दख्खण इलायची तथा काथा एकेक तोला कपूर ३ मासा महीन पीस घीमें मिलाय मलम करणा इस मलमसे पीप वहणेवाला गर-मीका घाव अच्छा होता है.

ब्याउफटे.

(३११ रालका मल्हम) राल सींधानिमक गुड मोम सहत गुगल गेरू घी ये सब सम भाग लेण घी सहत गुड गूगल इन तीन चीजोंको अनुक्रमसें मिलाणा अंगारपर पिघलेबाद वारीक चूर्णका मलमकर मिलाणा पाददारी ब्याउ पांवोंमें फटती है ओर गरमीपर फायदा करता है, गडगूमड मिटाता है.

गांठ.

(३१२ दोषघ्न लेप) सहजणेके जडकी छाल सूंठ सरसूं साटेकी जड देवदारू इनको छांछमे पीस लेप करणा इससें तमाम गांठों तथा सोजा उतरता है,

गरमी.

(३१३ दशांग लेप) सरेसकी छाल मोलेठी तगर रगतचंनण जटामांसी लोद दारूहलदी कूठ वालो इलायची वारीक पीसणा समवजन पाणीमें लेप करणा इस लेपसें गरमीके घावका सोजा विस्फोटक जहरी जानवरके डंककी जलण जलणकी गांठो तथा सोजा मिटता है.

कोढ.

(३१४ अवलगूं जादिलेप) कालीजीरी पवाडिया हलदीसेंचल निमक समचीजों सम वजन पीसके लेप करणा चमडीके सब विकार मिटता है, सपेद कोढ झांखा पडताहै.

वातरक्त.

(३१५ गेरूका लेप) गेरू रसोत मजीठ मोलेठी वाला रगतचंनण पद्मकाष्ट कपड छाण चूर्णकरणा पाणीमे पीस लेप करणा इस लेपसें रगतवायु काखोलाई गरमीका सोजा तथा दाह शांत होता है.

गरमीकी चांदी.

(३१६ शंखजीरेका लेप) शंखजीरा ५ भाग कत्थो १ भाग दोनोंकों वारीक पीस घीमें लेप करणेसें गरमीका घाव भर जाता है.

चमडीका रोग.

(३१७ हरतालका लेप) हरताल गंधक तथा पवाडके बीज दो दो भाग मनशिल बावची नीला थोथा टंकण तथा कपूर ये एकेक भाग वारीक चूर्ण नींबूके रसमें लेप करणा इस लेपसे गंज चीतरी फुनसियां शिरका खोरा कीड वगेरे मिटते हैं.

कोढपर.

(३१८ काली जीरीका लेप) कालीजीरी ४ भाग हरताल १ भाग त्रिफला १ भाग गोमूत्रमें पीस लेप करणेसें चित्री कोढ जलदी मिटता है, सपेद कोढ झांखा पडता है.

गुप्त चोट हाड सांधणेपर.

(३१९ अस्थि संधानक लेप) गुजर ९ भाग जद्वार १ भाग एलिया १६ भागफटकडी ८ भाग मेदालकडी ४ भाग डामर ४ भाग ईसस (कोतरूगूंद लंद) ७ भाग आंबाहलदी ७ भाग रेवचीनीका शीरा १२ भाग इनोंकों पाणीसे खूब पीस लेपकर ऊपर रुई दवाणेसें गुप्तचोट गिरणेकी चोट वगेरेसे खूनका जमाव भया होय वो विखर जाता है, हड्डी तूटी होय किचर गया होय उसपर कितनेक दिन ये लेपकरणेसें तूटे अवयवकूं टेका साहरा देकर स्थिर रखणेसें लेप चूसकर हाड पीछा मजबूत होता है, उसपर सोजन दरद दूर होताहै.

कलेजेकी गांठ.

(३२० कलेजा यकृतकी गांठका लेप) तिल पवाडके बीज उपलेट हलदी तथा राई ये सब सम वजन सरसूंके तेलमें पीस कलेजेपर लेप करणेसें खूनका जमाव विखर जाता है.

सपेद कोढ.

(३२१ सुपेद कोढका लेप) पीले फूलोंकी कणेर हीराकसी वायविडंग मनसिल गोरोचन सींधा निमक गोमूत्रमें पीसके लेप करणा.

गंजपर वाल पैदा होय.

(३२२ इंद्रलुप्त [टाटका] लेप) (१) पटोलकारस निकाल लेप करणा (२) वडी भोरींगणीकारस निकाल सहत मिलाय लेप करणा (३) चिरमीकी जड तथा फल सहत मिलाकर लेप करणा (४) भिलावेकी दरखतके छालकारस निकाल सहत मिलाय लेप करणा ये चारों लेपवाल नहीं आतें होय उगे जिस जगे वाल पैदा करते हैं.

आंखका रोग.

(३२३ नेत्र रोगका लेप) (विलाडक लेप) हरडे सींधानिमक गेरू रसोत इनोंकों जलमें पीस लेप करणेसें आंखके आस पास तव नेत्रके कितनेक रोगोंमें फायदा करता है.

३२४ आंजणीका लेप–रसोत सूंठ मिरच पीपर जलमें पीसगोली करणी वोगोलीकूं जलमे घस कोयेमें अंजन करणा.

खाज खुजली.

(३२५ खसका लेप) पीले फूलकी दारूडी वायविडंग हींगलू गंधक पवाडिये उपलेट सिंदूर समवजन लेकर चूर्णकर धतूरेके पत्तोके रसमें नींबके पत्तोके रसमें नागर वेलके पत्तोंके रसमें एकेक दिन मर्दनकर लेप तइयार करणा इससे खाज खुजली दाद पांवोंकी व्याउ फटणी वगेरे चमडीके रोग जलदी मिटते हैं.

शीत पित्त.

(३२६ पित्तीका लेप) सपेद सरसूं हलदी उपलेट पवाडिये तिल ये पांच वस्तु

सम वजन लेकर चूर्ण करणा सरसूंके तेलमें लेप करणेसें शीत पित्तके चठे निकलते है, सो मिटते हैं.

घावके कीडे.

(३२७ कृमिघ्न लेप) करंज कडवे नींव नगोड (संभालू) इन तीनोंके पत्ते पीस जिस घावमें कीडे पडे होय उसमे भरणेसें कीडे मिटते हैं २ अथवा लसण पीसके लेप करणा ३ अथवा हींग नीमके पत्तोंका लेप करणा पीस करके.

राग सिरका.

रक्त वृद्धिकूं.

(३२८ नालियरका सिरका) ५० नालेरके अंदरका जल लेणा उसकूं मंद आंचसें कढाहीमें जाडा पडे जहांतक ऊकालणा पीछे उसमें केशर ६ मासा लोंगका चूर्ण १ तोला मिला देणा.

पित्त खासी.

(३२९ अनारका सिरका) पक्की २० अनारकारस उसकूं उकाल सेर वूरा डालणा जाडा होणेपर नीचे उतार छ मासा केशर तोला १ इलायचीका चूर्ण डाल सीसेमे भर रख छोडणा.

पित्त रक्तपित्त.

(३३० नींवूका सिरका) ऊपर मुजब.

श्वास खास मंदाग्निपर.

(३३१ आदेका सिरका) आदेकारस निकाल उसमें आधा जल मिलाणा वूरा डालकर पाक करणा पीछे केशर इलायची जायफल जावंत्री लोंग रस मुजब मिलाणा शीसीभर राखणी श्वास खास मंदाग्नि अरुचि वगेरेमें ये शिरका अछा है,

रस.

दस्त अजीर्ण.

(३३२ आनंद भैरवरस) हिंगलू वछनाग सूंठ मिरच पींपर गंधक टंकण समवजन नींवूके रसमें १२ घंटा खरलकर मटर २ जितनी गोलियां करणी मात्रा १ रत्तीसें २ रत्तीतक (अनुपांन) रोग मुजव जुदा २ अनुपांनसें वहोत रोगोंपर चलताहै, खास श्वास दस्त अजीर्ण सर्पकाडंक विछूके डंकपर.

वादीपर.

(३३३ वातारिरस) साफ अफीम कुचीला तथा मिरच जलमें पीस गोलियां वणाणी कितनेक तरेकी वादी सोजा हिस्टीरीया मिरगी वगेरेमें फायदा करती है.

वादीपर.

[३३४ वातगजांकुश) पारा ८ भाग कुचीला ८ भाग गंधक ८ भाग सूंठ मिरच पीपर १२ भाग सवकूं मिलाणा मात्रा १ रत्ती सव वादीके रोगोंपर चलती है.

(३३५ लघु मृगांकरस) पारा १ भाग सोनेका वरक २ भाग मोती १ भाग गंधक १ भाग टंकण पाव भाग इन सवोंकूं कांजीमें या छाछमें या नींवूके रसमें एकदिन खरल करणी पीछे वडे सरावेमें संपुटकर लूणके पात्रमें उपर नीचे निमक देकर अग्नि देणी ठंढा भयेवाद खरलकर शीशीमें भरणा मात्रा १ वाल अनुपान सहत पीपर अथवा घी पीपर.

श्वास.

(३३६ श्वास कुठार) पारा वछनाग मिरच टंकणखार मनशिल गंधक ये एकेक तोला त्रिकटु छव तोला सवकूं खरलकर छोटा गजपुट देणा निकाल पीस शीसीमें रख छोडणा मात्रा १ से २ रत्ती अनुपान पान घी वगेरे श्वासकाश मंदाग्नि कफकोप सन्निपात मिरगी वगेरेमें देणा.

क्षय जीर्णज्वर नाताकती.

(३३७ सुवर्णमालिनी वसंत) सोनेका वर्क तो १ मोती तो २ हिंगलू तो ३ सपेद मिरच तो ४ खापरिया तो ८ सवोंकों मिलाकर महीन खरलकर उसमें गऊका मख्खण तो २॥ इन सवोंकों मिलाकर एक दिन खरल करणी पीछे ४२ दिन नींवूके रसमें खरल करणी पीछे टिकिया वांधणी मात्रा १ सें तीन चिरमीभर (अनुपांन) सहत तथा लींडी पींपर अथवा रोग और प्रकृती मुजव अनुपांन देणा चाहिये इससें पुष्टि होती है, क्षय जीर्णज्वर खास श्वास शीतवायु गोला धातु गतज्वर रक्त विकार दुवलापणा वालरोग वृद्धरोग गर्भणीरोग सूतिकारोग अच्छे होते हैं, पथ्य दूध भातका.

संग्रहणी.

(३३८ गृह्णीकपाटरस) सूंठ मिरच पींपर गंधक टंकणखार पारा कोडीकी भस्म वछनाग ए सम भाग नींवूके रसमें खरलकर गोलियां वणाणी मात्रा १ से ३ रत्ती (अनुपांन) घी मिरच मिश्री तीनों मिलाकर देणा.

अजीर्ण अग्निमंद.

(३३९ अग्निकुमाररस) पारा १ गंधक १ टंकण १ वछनाग २ कोडीभस्म २ शंखभस्म ८ भाग मिरच ८ भाग नींवूके रसमें घोटणा रती २ की गोलियां करणी अजीर्ण अग्निमंद शूल शीत अनुपांन आदेका रस अथवा सहत अथवा नागरवेलके पान.

कामवर्द्धक.

(३४० मदन कामेश्वर रस) पारा १ गंधक १ अफीम १ इन तीनोंकों नागर-

वेलके पत्तोंके रसमें बाल २ की गोलियां करणी १ गोली सांझकूं साकरके संग लेणी गोली लिये पीछै रातकू जीमणा नही लेकिन् भेंसका दूध पीणा.

जुलाब.

(३४१ इछाभेदीरस) पारा १ टंकण १ मिरच १ गंधक १ सूंठ १ जमालगोटा १ सबकूं नींबूके रसमें खरल करणा मात्रा १ वाल इच्छा मुजब जितनी वखत सरवत चूरेका गुटका पीवै इतना दस्त होय ज्वर वगेरेमें ये जुलाब बहोत फायदे बंद है सुजाक गरमीकी चांदी ७ दिनमें मिटती है.

पेटकीकृमि.

(३४२ कृमिकुठाररस) कपूर तो ८ कूडाछाल इंद्रजव त्रायमाण अजवाण वायविडंग हींगलू केशर वछनाग पलास पापडा एकेक तोला सबका चूर्णकर ब्राह्मी तथा भांगरेके रसकी भावना देणी मात्रा १ वाल अनुपांन सहत.

अजीर्ण हेजा.

(३४३ लघुक्रव्याद रस) शुद्ध गंधक तो २ शुद्ध पारा तो १ लोहभस्म तीन-मासा सेंचल तो १ टंकण तो १ मिरच तो १ पीपर तो २ पीपलामूल तो २ चित्रक मूल तो. २ सूंठ तो. २ लोंग तो. २ नींबुके रसकी ७ भावना देणी मात्रा १ सें ४ वाल अनुपांन पाणी छाछ अथवा छाछ सींधानिमक शेकाभया जीरा हींग इससे सखत हेजा अजीर्ण अतिसार मंदाग्नि अरुचि पेटके वायु वगेरे उदर रोगमें अछा फायदा देता है,

कासश्वास.

(३४४ अग्निरस) शुद्ध पारा तो. १ गंधक तो. २ गजवेल तो. ३ इन तीनोंकों खरलमें खूब घोटकर कजली करणी पीछे उसमें कुंवारपठेका रस डाल खरलकर गोला करणा उस गोलेकूं एरंडियेके पत्तोंमें लपेट आठदिन रख छोडणा पीछै उसमें पींपर तो. २ हरडे तो. ४ बहेडा तो ५ अरडूसेके पत्ते तो ६ इनोंका चूर्ण मिलाणा पीछै इन सर्वोकूं बंबूलके छालके काढेकी २१ भावना देणी इससें खासीक्षय श्वास वगेरे कफरोगमें बहोत फायदे बंद है.

वखतपर ठंढ बुखारपर.

(३४५ स्वल्पज्वरांकुश—) पारा वछनाग गंधक सूंठ मिरच पींपर छ१ तोला छउंकूं मिलाकर धतूरेके बीज तो. २ चूर्णकर नींबुके रसमें खरलकर दोदो रत्तीकी गोली बांधणी मात्रा गोली १। अथवा २ अनुपांन आदेका रस तथा सूंठका पाणी एकांतरा दिनरातमें दो वखत आनेवाला तेजरा चोथीया वगेरे जो बुखार ठंढ ल[illegible] टेमोटेम आता है, उसके पहले दो घंटा पहली लेणेसें रोक देता है, वदनमें सि[illegible] गोर्[illegible] बिलकुल बुखार नहीं होय ठंढ लगणेके पहली ये दवा लेलेनी.

किरण ३ री.

अंग्रेजी दवायें.

(३४६ एरगाट–) गर्भकूं बाहिर लाणेवाला रक्त थांबनेवाला स्नायुओंकों संकुडानेवाला गर्भाशयके नसोकुं संकुडाता है, इसवास्ते बालक अंदरसे जलदी निकल जाता है, औरतोंके रक्तगिरणेकूं बंध करता है, आमलकूं बाहर निकालता है ऋतु ओरतोके दोषपर बहोत फायदा करता है, दवामें इसका अर्क तथा एक स्ट्राक्ट वापरते हैं, मात्रा अर्ककी १० सें ६० बूंद लिक्विड एक स्ट्रक्टकी १० से ६० बूंद मात्रा बढती है, तब जहरका असर करती है.

(३४७ आयर्न हीराकसी) इसका मुख्य उपयोग शरीरमें फीकासकेसंग जब नाताकती होती है, मुख्यपणे ओरतोकुं और जवान छोकरियोंकूं ये बेमारी होती है, तब बदनमेंसें लाल रजकण खूनमेंसें कम होता है, तब आयर्न देणा चाहिये ओरतोंके ऋतूधर्मके रोगमें महीनेके महीने गिरनेमें ज्यादा या कम होय तब लोहका उपयोग होता है, क्विनाइनके संग आयर्न ज्यादे फायदा करता है, आयर्न याने लोह देनेके पहली रोगीका पेट दस्त देके साफ करणेकी हमेसां जरूरी है, आयर्नकी बहोतसी. बनावटी दवा बणती है, उसमेंकी थोडी एक इहां लिखते हैं.

(१) सल्फेट ओफ आयर्न–रक्तशोधक पौष्टीग्राहिक पांडू तिल्ली ज्वर अतिसार तथा प्रदर ऊपर उसका उपयोग होता है, पिचकारी तथा लोशनऊपर उसका उपयोग होता है, खानेकी मात्रा १ सें ५ ग्रेन.

(२) शिरप फेरी फोसफेटिस एट क्विनिन कंमस्टिकन्या देखो इस्टन्ससीरप.

(३) फोसफेट ओफ आयर्न–मात्रा ३ सें १० ग्रेन उसके साइरपकी मात्रा १ ड्राम नाताकती मगजका रोग आंखोंकी नाताकतीमें दिये जाती है.

(४) केमिकलफुड–अथवा कम्पाउन्ड साइरप पौष्टिक स्कोफयुला जीर्णज्वर तथा नाताकतीमें दीये जाती है, मात्रा १ सें २ ड्राम बालककूं ५ सें २० बूंद.

(५) टिंकचर ओफ परक्लोराइड ओफ आयर्न–पौष्टिक रक्तशोधक रक्तस्तंभक ग्राही मुत्राशयके रोग जलोदर प्रदर नष्टार्त्तव रक्तपित्त दस्तपेसाब मूंकेरस्ते खून गिरता होय उसपर फायदेबंद है, क्षय रक्तवात रक्ताशयका रोग हिस्टीरीया पांडु तिल्ली दस्त नाताकती वगेरोंपर बहुत दिये जाता है, मात्रा १० सें ३० बूंद.

(६) कम्पाउन्ड मिक्श्चर ओफ आयर्न–हीराकसी २५ ग्रेन कारबोनेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन हीराबोल ६० ग्रेन बूरा ६० ग्रेन जायफलका स्पिरिट ४ ड्राम गुलाबजल

९½ औंस सबकूं मिलाणा ओरतोकी नाताकती नष्टार्त्तव प्रदर क्षय पांडु वगेरेमें गुण करता है, मात्रा १ सें २ औंस.

(७) साइरप फेरी आयोडाईड-क्षय पांडू कंठवेल नष्टार्त्तव यकृत् प्लीह उपदंश वगेरेमें दिये जाता है, मात्रा० ॥ सें १ ड्राम.

(८) रिड्युस्ड आयर्न-(लोहभस्म) पौष्टिक पांडु क्षय क्षीणता मात्रा २ सें ६ ग्रेन.

(९) परओक्षाईड ओफ आयर्न-गुण लोहभस्म मुजब मात्रा ५ सें १० ग्रेन.

(१०) टार्टरेटड ओफ आयर्न-पौष्टिक उपदंश क्षय पांडुरोगमें दिये जाता है, मात्रा ५ सें १० ग्रेन.

(३४८ आयोडो फार्म-रोपण उग्र तथा दुर्गंध नाशक है, सडा बदबो घावकूं मिटानेकूं ये दवा निहायत ऊमदा है, खराब चांदी जखम पीली भुरकी चिलकती भरे जाती है उसकूं तिलके तेलमें अथवा ग्रिसरीनमें और ब्रांडीमें मिलाय घोटनेसें मलम होता है, १ भाग आयोडोफोर्म ३ भाग कोकमका तेल गरमकर उसमें मिला देना पीछे उसकी वट्टी बणा लेनी.

३५० आर्सेनिक-(शोमल) पौष्टिक ज्वरघ्न रक्तशोधक उग्रविष ठंढके बुखारमें उपयोग होता है, पुराणे चमडीके रोग जैसें शीतपित्तके ददोडे कोढ विस्फोटक खुजली तैसें नामर्दाईमें सोमलका उपयोग होता है, $\frac{१}{६०}$ मात्रासे $\frac{१}{१२}$ ग्रेन सोमलका सोल्युशन और हाइड्रोकलोरिक सोल्युशन होता है, दोनोंकी मात्रा २ से ८ बूंद.

(३५० ईथर) स्पिरिट ओफ नाइट्रीक-मूत्रल स्वेदल कफघ्न खासी बुखार श्वास वगेरे रोगोंमें दिये जाता है, पसीना तथा पेसाबकूं बढाता है, शरदी बुखार दाह वगेरेमें चमडी सूकी रहती होय तथा पेसाब कम आता होय उसमें ईथर फायदा करता है, मात्रा ३० सें ६० बूंद एक वर्षके बच्चेकूं ६ सें ८ बूंद.

(३५१ ईपीकाक्युआन्हापाउडर-(ईपीकाक्युआन्हा नामके दरखतकी जडका चूर्ण उलटी लानेवाला है स्वेदल शोधक तथा कफघ्न है, इस चूर्णका रंग जरा भूरा होता उवाकी लावे एसी उसकी खसबो होतीं है, जादा मात्रा लेनेसें उलटी लाती है बुखार तथा खासीमें उलटी लाणेवास्ते दीये जाता है जादे मात्रा मरोडेपर दिये जाता है थोडी मात्रामें कफ श्वास नली और फेफसेके सोजनपर दिये जाता है, मात्रा-उलटीकेवास्ते १५ सें ३० ग्रेन बडी ऊमरवालेकूं और २ सें ३ ग्रेन एकवरसके बच्चेकूं कफ निकालनेकूं १ ग्रेण बडी ऊमरमें ओर $\frac{२}{२१}$ ग्रेण बच्चेकूं मरोडेमें इस दवाकूं देनेसें फेर उलटी नहीं होसके इसवास्ते इसकेसंग लाडेनम मिलाते है, पेटपरराईका पलासटर मारते है, और दवा पिलाये पीछै थोडी देरतक कोइभी पतला पदार्थ पीनेकी मनाई करते है, नहीं तो उलटी हो जाती है.

(३५२ ईपीकाक्यु आन्हावाईन–शेरीवाईनमें ईपीकाक्युआन्हाकी जडकूं मिलानेंसे ये दवा तइयार होती है, देखणेमें उसका रंग शेरीवाईन जैसा होता है, गुणपाउडर मुजब वाईन प्रवाही होनेसें बचोकूं देनेमें सुगम पडता हैं, मात्रा उलटी वास्ते वडी ऊमरमें ६ सें ८ ड्राम ४ ओंस गरम पाणीमें मिलाकर देते हैं, एक वरसके बच्चेकू १ ड्राम कफ निकालने तथा पसीना लानेकूं वडी ऊमरमें १० सें ६० बूंद.

(३५३ इसटन्ससीरप–(साइरप फेरी फोसफेटीस कम क्विना इन एटस्ट्रिकनीआ) इसटन्ससीरपमें फोसफेट ओफ आयर्न, फोसफेट ओफ क्विनाईन, और फोसफेट ओफ स्ट्रिकन्या मिलती है, १ ड्राम जितनी दवामें पहली दवाका वजन दोनोंका दो ग्रेन है, तीसरीका वजन ३ ग्रेन है, नाताकती पांडु तथा जीर्णज्वरमें ये दवा देते हैं, मात्रा १ ड्राम.

(३५४ एकोनाईट–देशी नाम वछनाग वातहर तथा ज्वरहर है, उसका टिंकचर बुखारमें तैसें संधिवायमें शूल वगेरेमें दिये जाता है, मात्रा २ सें १० बुंद अर्क वनानेकी रीत २॥ ओंस वच्छनागके चूर्णकूं २० ओंस रेकटीफाईड स्पिरिटमें दो दिन भिगाये रखणा फेर छाण लेणा (वछनागका तेल) वच्छनागका चूर्ण २० ओंस कपूर १ ओंस रेक्टिफाईड स्पिरिट ३० ओंस वच्छनागकूं स्पिरिटमें ७ दिनतक भिगाकर पीछे छाणकर कपूर मिलाणा.

(३५५ एन्टिपाइरीन–ज्वरहर है बुखार उतारणेमें वहुत उपयोगी मालम दी है, मात्रा ५ सें २० ग्रेण बुखार तीक्ष्णसंधिवात कलेजेका सोजा फेफसेका सोजा टाइफोइड फीवर वगेरे रोगोंमें बुखारकी गरमी बढ जाती है उसकूं कम करणेमें ये दवा दुसरी दवायोंसें जादा नामी निकली है देनेकी विधि–बुखार आवे और झट उसी वखत ५ ग्रेन देते है, और पीछेभी दोदो घंटासें दोतीन वखत ये मात्रा देनी एक वेर बुखारको उतार देती हैं, और ६ से २४ घंटेतक उतरा रहता है, ये इस दवाका मुख्य गुण है, लेकिन् इस दवासे नाताकती आणेका पूरा डर है, इसवास्ते बहोत हुसियारीसें देणा एसी दवा विद्वान् डाकटरकी सलाविगर लेनी नहीं अच्छे नामी डाकटर विशेषकर ये दवा एका एक देते नहीं क्योंके जो दवा एक तरेका फायदा दिखाकर दुसरीतरे शरीरकूं नुकशान पहुचावे एसी दवा बिलकुल देनेलायक नहीं देशी इलाजोंमें रत्नगिरि नामकी दवा बुखार उतारणे वास्ते बहोतही अकशीर है, और उस दवासें नाताकती नहीं आकर उलटी ताकत लाती है, अच्छीतरे पसीना लाकर बुखारकूं रगोरगमेंसें निकाल देती है.

(३५६ एन्टिफेब्रिन–ज्वरहर है, ये दवाभी एन्टिपाइरीनकी तरे बुखारकूं निकालणेकूं नई निकली है, मात्रा ४ सें १० ग्रेण अज्ञान लोकोंकूं चमत्कार घताणेकूं ये दवा

अकसीर है, अनाडी वैद्योका अजड उपायों जेसा ये इलाज है, और लेभागु डाकटर भी इस चीजकूं देते हैं, सरकारी होस्पिटलोंमें एसी दवा भाग्ययोगही देते हैं.

(३५७ एन्टीमनी-(१) टार्टरेट ओफ एन्टीमनी अथवा टार्टरएमेटिक-पसीना लानेवाली कफघ्न पित्तवर्द्धक उलटी तथा दस्त लानेवाली है, ये दवा जादा वजनमें सोमल जैसी जहरी असर करती है, प्रमाणमुजब दीजाय तो बुखारमें पसीना लाती है, उधरस तथा दमकूं मिटाती है, (मात्रा) पसीना लानेकूं $\frac{1}{16}$ सें $\frac{1}{6}$ ग्रेन उलटी करानेकूं १ से ३ ग्रेन (२) एन्टिमोनियल पाउडर अथवा जेम्स पाउडर (बणावट) ओकसाइड ओफ एन्टीमनी १ औंस फोसफेट-ओफलाइम २ औंस दोनोंकों एक जगे करणा कफघ्न स्वेदल मात्रा ३ सें ६ ग्रेन (३) एन्टीमोनियल वाइन-बनावट-टार्टर एमेटिक ४० ग्रेन शेरी-वाइन २० औंस दोनों मिलाणा बुखार कलेजा फेफसेका दरद सन्निपातज्वर दम हांफणी वगेरे रोगोंमें, रोगी ताकतवर होय तो ये दवा दी जाती है २ ग्रेन टार्टर एमेटिक और थोडी बूंदें गरम पाणी दोनों संग मिलाकर उसमें १ औंस शेरी मिलाणा बच्चोंकी कुकडिया बडी खासी तथा छातीके रोगोंमे सावचेती रखकर उपयोग करणेसें ये मिलावट अछी कामदेती है, मात्रा २ सें ५ बूंद.

(३५८ ओनीसी-ओइल ओफ यानिसी) वातहर पेटकीवायु चूंक मिटाती है, मात्रा १ सें ५ बूंद.

(३५९ एप्सम सोल्ट-(विलायती निमक) सल्फेट ओफमेग्निशिया एसा नांमसेंभी प्रसिद्ध है, मूत्रल तथा रेचक है, बुखारकी सरुआतमें इलाज करते किनाइनके थोडे एक डोझमें इस निमकका मिलाणा फायदेबन्द है, पित्तप्रकृतीवाले अदमीका मूं फजरमें कडवा रहता होय और पेटमें दरद रहता होय वो थोडेदिनतक फजर २ में एक २ ड्राम निमक ले तो बुखारके हुमलेसे बचता है, स्वाद उसका अच्छा करणा होय तो पीपर-गेन्ट अथवा डाइल्युट सल्फ्युरीक एसिडकी थोडी बूंदे मिलाते हैं, निमक पिये पीछे चा पीते हैं, बुखार अजीर्ण पित्तकी रुकावटसें भई दस्तकी कबजी जलोदर वगेरे रोगोंमें इसका साधारण जुलाव दिया जाता है, कलेजेके रोगमें अच्छा फायदा करता है, मात्रा १ ड्रामसे १ औंस.

(३६० एप्सम सोल्ट-साइट्रेट ओफ मेगनीशिया, बनावट-कारबोनेट ओफ मेग्नि-शिया-बाइ कारबोनेट ओफ पोटाश, नींबूका शरबत और सीट्रीकएसिड इन सबोंकी मिलावट. (मात्रा-(१) २ सें ४ ड्राम) अथवा जादा मेग्नीशिया एक प्याले जलमें मिलाकर पीनेसें एक अच्छा हलका जुलाव लगता है.

(२) २ औंस पाणीमें १ ड्राम मेग्नीशिया पीनेसें खटासकूं दूरकर ठंडक करता है.

(३) ०॥ द्राम मेग्नीशिया तथा २० बूंद स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथरका १॥ औंस पाणीमें डाल पीनेसें बुखारकी गरमीमें ठंढक तथा पसीना लाता है.

(३६१ एमोनिया-(लायकर) अम्लविरोधी (खटासकूं दूर करता) उलटी करानेवाला स्वेदल उष्ण वादीहर उत्तेजक कफघ्न (कफकूं निकालनेवाला) और चमडीपर फफोला उठानेवाला आमोनिया वदनमें गरमी और प्रकाश देता है, हिस्टीरीया शिरका दर्द मज्जातंतुओंकी नाताकती मूर्च्छा अतिक्षीणता अजीर्ण आम्लपित्त छातीका धडका ओर ओरतोंके गर्भाशयके रोगोंमें दिये जाता है, (मात्रा-द्राम ॥ सें १ इससें जादा लेनेसें शिरमे दर्द तथा सुस्ती आती है, उलटी होती है अधिकमात्रासें जहरी असर करती है, मुख्य बनावट-(१) एरोमेटिक स्पिरिट ओफ आमोनिया-अथवा साल वोले-टाईल, गुण) उष्ण वातहर हिस्टीरीया मूर्च्छा निबलाई अजीर्ण पेट चूंक वगैरे रोगोंमें दिये जाता है, मात्रा २ से १० बूंद (२) कलोराईड ओफ एमोनिया अथवा साल एमोन्याक (देशी नाम नोसादर) गुण) यकृतशोधक वातहर ग्रंथीशामक तथा कफघ्न है, कलेजा तथा तिल्लीका शिरका चमका संधिवात पुराणी खासी तथा कामलेके रोगमें वापरते हैं, औरतोके स्तन पकते हैं वो तथा दुसरे सोजेपर और वद वगैरे गांठोपर उसके पाणी लोसनमें कपडा भिगाके धरा जाता है, पीणेकी मात्रा ५ सें ३० ग्रेन (३) कारबोनेट ओफ आमोनिया-उष्ण स्वेदल कफघ्न वामक उग्र नवसादर और चूना मिलाकर फूल उडानेसें ये दवा बणती है, शिरका दर्द हिस्टीरीया मूर्च्छा वगेरे रोगोंमें सुंघाणेसें जागृती आती है, आम्लपित्त श्वास खासी क्षय वगेरेमें दिया जाता है, मात्रा २ सें १० ग्रेन (४) लायकर आमोनिया एसेटेटिस-स्वेदल मूत्रल तथा शीतल है, कारबोनेट ओफ आमोनिया ३॥ औंस और एसेटिक एसिड १० औंस पाणी ५० औंस पहली दवाके भूकेपर दुसरी दवा धीमे २ डालनेसे ऊफण आती है, पीछे उसपर पाणी डालणा फुलप्रवाही ६० औंस होय इतना पाणी डालणा बुखारमें पसीना लाने-वास्ते डाया फोरेटिक मिक्श्चरमें इस दवाका उपयोग करनेमें आता है, (मात्रा १ से २ द्राम) डायाफोरेटिक मिक्श्चर-लाईकर अमोनिया एसेटेटीस २ द्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथर २० बुंद और एकवा क्यांफर (कपूरका पाणी) १ औंस तीनोकों मिलाकर मिक्श्चर करणा (५) लिनिमेन्ट ओफ आमोनिया-लायकर आमोनिया (स्टोंग सोल्युशन ओफ आमोनिया २० औंस अच्छा पाणी ४० औंस) १ औंस अलशीका तेल २ औंस येदवा दोनों एकजगे मिलाणा अलशीके तेल वदले तिलका तेलभी काम देता है, उष्ण है, संधिवात तथा जकड गया अवयवोंपर मसलनेसें फायदा करता है.

(३६२ एलम-फिटकडी) स्तंभक सारक वामक तथा जंतुनाशक है, रसवाहिनी नसोकूं संकोच रसका शोषण करणा ये यालमका खास गुण है, बडी मात्रामें वो दस्त

तथा उलटी लाती है, खाणेकी मात्रा ५ सें १० ग्रेन है, फोडा तथा सोजेपर उसके जलका भीगा वस्त्र धरा जाता है, दुखती आंखोंमें उसकी बुंदे डालणीमें आती है, घाव तथा स्तन पाक धोनेवास्ते यालमकी जलकी पिचकारी मारते हैं, और मूंमे छाले होजाते हैं, तब इसके पानीसें कुरला कराते हैं, पोता तथा पिचकारीका लोसन--पाणी १ रतल और यालम तीनमासेसे ॥ तोला कुरला--पाणी १ औंस यालम ८ ग्रेन आंखकी बूंद पाणी १ औंस यालम ५ ग्रेन एक ग्यालन गुडले जलमें थोडे ग्रेन एलम डालणेसें जल साफ होजाता है.

(३६३ एलोझ--देशी नाम एलिया) रेचक ऋतुदोपहर गर्भवंती औरतकूं तथा मस्सेवालेकूं देना नहीं एकस्ट्राकट टिंकचर और जुदी २ जातकी पिल्स वापरते हैं, जैसेंके पिल ओफ यालोझ एट यासाफीटीडा पिल ओफ यालोझ एन्ड आयर्न पिल ओफ यालोझ एटमहर वगेरे एकस्ट्राक्टकी मात्रा २ सें ६ ग्रेन टिंकचरकी मात्रा १ सें २ ड्राम और गोलीकी मात्रा ५ सें १० ग्रेन.

(३६४ एसिड--(अम्ल) एसिड बहोत तरेका होता है, थोडोंका नाम इहां लिखताहुं (१) एसेटिक एसिड (२) कारबोलिक एसिड (३) टार्टरिक एसिड (४) टेनिक एसिड (५) गेलिक एसिड (६) बोरेसिक एसिड (७) नाइट्रिक एसिड (८) फोसफोरीक एसिड (९) ल्याकटीक एसिड (१०) सलफ्युरिक एसिड (११) साइट्रीक एसिड (१०) हाइड्रोक्लोरिक एसिड (१२) हाइडोस्यानिक एसिड (१४) क्राइसोफेनिक एसिड (१५) बेनझोइकि एसिड इस हरेकका वर्णन उस २ तरेके एसिडमें करनेमें आया है.

(३६५ एसेटिक एसिड--शीतल अम्ल टाटगंज दाद मस्सा वगेरे ऊपर लगाणेमें काम देता है, उससें लाल दाद जलदी अच्छा होता है, दाद वगेरे पर लगाणा होय तो उससें चोगुणा जल मिलाणा.

(३६६ आइन्टमेंट--(मल्हम) अंग्रेजी इलाजोंका मुख्य २ मल्हम लिखते हैं.

(१) सादा मल्हम--२ औंस सपेद मोम ३ औंस चरबी या घी तीन औंस विदामका तेल गरम पाणी ऊपर डाल छाणके मिलाना.

(२) टरपेन्टाइनका मल्हम--टरपेन्टाईन १ औंस रालका भूका ५४ ग्रेन लार्ड ॥ औंस मोम ॥ औंस गरमकर मिलाना.

(३) क्यान्थारीडीसका मल्हम--क्यानथारीडीस १ औंस अलशीका तेल ६ औंस पीला मोम १ औंस पहली दो चीज १२ कलाकतक सांमल रखकर पावकलाक गरम पाणीपर गरमकर मर्द्दीन कपडेसें निचोयकर गरम करेभये मोमकेसंग मिला देना.

(४) क्रियासोटका मल्लम–क्रियासोट १ ड्राम सादा मल्लम १ औंस अफीम ३२ ग्रेन मिलाना.

(५) मांजूफल अफीमका मल्लम–मांजूका मल्लम १ औंस अफीम बत्तीसग्रेन मिलाना.

(६) मांजूका मल्लम–माजूफलका चूर्ण ८० ग्रेन बन्झो येटलार्ड १ औंस मिलाना.

(७) श्युगर लेडका मल्लम–श्युगरलेड १२ ग्रेन सादा मल्लम १ औंस मिलाना.

(८) रालका मल्लम–रालका चूर्ण ८ औंस पीलामोम ४ औंस बिदामका तेल २ औंस सादा मल्लम १६ औंस.

(९) गंधकका मल्लम–गंधक १ औंस बेन्झो एटेड लार्ड ४ औंस दोनोंकों मिलाना.

(१०) पारेका मल्लम–पारा रतल १ लार्ड १ रतल स्वेट १ औंस मिलाकर पारा दिखता बंध होजाय उहांतक घोटणा.

(११) (कम्पाउन्ड) पारेका मल्लम ६ औंस पीलामोम २ औंस ओलीवतेल ३ औंस कपूरकाचूर्ण १॥ औंस मोमकूं गरमकर उसमें डालणा बोठरे तब उसमें भूका तथा पारेका मल्लम मिला देणा.

(१२) रेडआयोडाइड ओफ मर्क्युरीका मलम–१६ ग्रेन उसकूं १ औंस सादा मल्लममें मिला देणा.

(३६७ ओपीयम–अफीम) उष्ण पीडाशामक शूलहर वातहर ग्राही मूत्रल स्वेदल खूनके वेगकूं दबानेवाला नींद तथा नसा लानेवाला और मरदमी देनेवाला है, दवा मुजब अफीमका उपयोग बहोत होता है, बहोततरे बरते जाता है, मगजके बहोतसे रोगोंमें सराप पीनेसें भये उन्मादमें सूवा रोगके उन्मादमें धनुरवादी हिचका चसका खास श्वास कफ दम मरोडा अतिसार हैजा चूंक उलटी होजरीका घाव मर्मस्थानसें खूनका गिरणा सूवा रोग संधिवात दरद अनिद्रा वगेरे असंख्य रोगोंमें अफीम चमत्कारी काम करता है, मधुप्रमेहपर अफीम बहोतही फायदे बंद देखणेमें आया है, इपीका क्युआना, केलोमेल वगेरे कितने एक अंग्रेजी दवायोकेसंग अफीम बहोतही अकसीर है, अंग्रेजी दवायोंमें अफीमकी बहुतही दवाइयां बणती हैं, टिकचर ओपीयम (लाडेनम) एकस्ट्राकट ओफ ओपियम हाइड्रोकलोरेट ओफ मोर्फिन (और अफीमका लेप) अफीमका तेल वगेरे) केम्फोरेटेड टिंकचर ओफ ओपीयम अथवा जिसकूं प्यारे गारीकभी कहते है, वो कफ हांफणी खुलखुलिया बच्चेकी खासी और छातीके दरदोमें बहुत उपयोगी है, इस अर्कमें एक ओंसमें २ ग्रेन अफीम आता है, (मात्रा ३० सें ६० बूंद) एकस्ट्राकट(सत्व)की ॥ सें० २ ग्रेन मोरफिनकी $\frac{1}{8}$ सें $\frac{1}{3}$ ग्रेन अफीम जहरी होनेसें बहोत संभालकर देणा चहिये फेफसेके रोगमें श्वास रुकके आता होय तो उसमें अफीम कभी देना नहीं.

(३६८ ओरेन्ज) (नारंगी) दीपन रुचिकर इन्फ्युझन टिंकचर तथा सीरपके रूपमें दवातरीके वापरते हैं, (मात्रा—चाकी १ से २ औंस टिंकचरकी १ सें २ ड्राम और शरबतकी १ ड्राम.

(३६९ ओलाइव—ओलीव्हओइल वोस्पालड ओईल एसे नामसें पहचाणे जाती है, चमडीके खुजालवाला दरद अंगारसें जलेपर लगाये जाता है, उसमें अलसीके तेल जैसा गुण है.

(३७० ओलियम—(तेल) अंग्रेजी चलते इलाजोंमें तेलरूपसें वपराती मुख्य २ दवायोंके नाम.

(१) ओलियम एनिसी—(अलशीका तेल) गुण—वातहर पेटकी वायु तथा चूंकपर दीजाती है, मात्रा १ सें ४ बुंद.

(२) ओलियम ओलीव—(स्पालड ओईल) ये तेल बहोतसे मलम तथा चुपडणेका तेल (लीनीमेन्ट) बनानेमें वापरते हैं, जलगयेपर जलण खुजालपर लगाये जाता है, इस तेलकी एवजीमें अलसीका तेलभी काम आता है.

(३) ओलियम क्याजुपुटी—इसके तेलका गुण वादी हरता उष्ण मात्रा १ सें ४ बुंद

(४) क्रोटन ओइल—जमाल गोटेका तेल नेपालेके बीजोंमेंसें निकलता है, घाणीद्वारा, देशी वैद्य शुद्धकर दवा बणाते हें, डाकटरलोक तेल वापरते हैं, ये तेल बहोत तेज होता है, जलोदर वगेरे सखत कबजियतमें दिये जाता है, मात्रा १ सें २ बुंद.

(५) ओलियमजूनीयर—इसकाभी तेल गुण वातहर तथा मूत्रल है, मात्रा १ सें ४ बुंद पेटकी वायु चूंक सोजा जलोदर वगेरेमें दिये जाता है.

(६) टरपेनटाइन तेल—गुण) मूत्रल ग्राही रक्तस्थंभक कृमिघ्न रेचक वातहर तथा रोपण है, मात्रा १० बुंदोंसें ४ ड्रामतक दीजाती है मूत्रल तथा ग्राहीगुण है इसवास्ते ५ सें ३०टीपा कृमिघ्न और रेचक गुण है इसवास्ते १ सें ४ ड्राम टाइफस और टाईफोइड नामके बुखारमें उसकूं आफरा चढता है, ऐसे रोगोंमें दिया जाता है, रक्तपित्तका जाता भया खून इससे बंध होता है, कृमि चूंक जलोदर और दस्तकी कबजियतमेंभी फायदा करता है, छाती तथा पेटके सोजेपर उसका सेक करनेसें फायदा करता है, अंगारके जलणेसें भये घाव चांदीपर तिलके तेलमें इतनाही टरपेन्टाइन लगानेसें अच्छा होता है.

(७) ओलियमथियोब्रोमी—कोकमका तेल कोकमके बीजोंकूं पीलके ये तेल निकाले जाता है, इस तेलकूं जमाकर गुजरात वगेरेमें बजारमें, गोला, तईयार विकता है, ये तेलके लगानेसें हाथ पांवोकी व्याऊफटी मिटती हैं.

(८) ओलियम फोस्फोरेटम—[फासफोरसवाला तेल] बिदामके तेलकूं तीनसें डिग्री जितनी आंच देकर पीछे उसकूं छाण लेना ठंढाभयेबाद ४ औंस बिदामके तेलमें

१२ ग्रेन फासफोरस मिलाना पीछे एक सो अस्सी डिग्री गरम पाणीमें उसकी शीशी धर देनी और हिलाणी जब फासफोरस गलके मिल जाय गुण पौष्टिक मात्रा ५ सें १० बुंद.

(९) पीपरमींटका तेल-(ओल्यम मेन्थी पीपरीटी) उष्ण वातहर मात्रा १ से ४ वूंद पेटकी वायुमें तथा योगवाही दवामुजब दुसरी दवायोंके संग वापरते हैं.

(१०) कोडलिवर ओइल-क्षय कंठवेल नाताकती तैसें चमडीके रोगमें फायदा करता है, जादा वर्णन कोडलिवर ओईलमें करनेमें आया है, गुण-पौष्टिक मात्रा १ सें ८ ड्राम आर्य लोकोंके नही खानेयोग्य है.

(११) केस्टरओइल-एरंडीका तेल रेचक मात्रा १ ड्रामसें १ औंस.

(३७१ कलंबा-कलंभाका टिंकचर २½ औंस कलंभा २० औंस प्रुफस्पिरिट पहली १५ औंस स्पिरिटमें कलंभेके चूर्णकूं चोवीस घंटे रखकर हिलाना पीछे छाणकर बाकीका ५ औंस स्पिरिट डालणा मात्रा ½ से २ ड्राम दीपन पाचन मंदाग्नि नाताकती उलटी अजीर्ण वगेरे रोगोंमें वापरते हैं मंद जठराग्निसें जिसका वदन फीका पडगया होय वेर २ दस्त होता होय और अजीर्णके दुसरे चिन्ह मालुम पडतें होय तब कलंभा तथा टींकचर फेरीका उपयोग बहोत फायदेबंद है, कलंभेके टिकचर सिवाय इन्फयुझन (चा) एक-स्ट्राकट (घन) और चूर्णभी इसका वापरते हैं.

(३७२ क्राइसोफेनिक एसिड-ये एसिड दादकेवास्ते उत्तम इलाज है, उसका ओइंटमेंट (मलम) होता है, क्राइसोफेनिक एसिड५ ग्रेन एसेटिक एसिड १ वूंद टींकचर आयोडीन १ वूंद ओइंटमेंट ओफ आयोडिड ओफ मर्क्युरी एक ग्रेन और वैसे लाइन १ औंस तमाम दादोकूं ये मल्लम मिटाता है.

(३७३ क्याटेकू-कत्था) टिंकचर तथा चूर्णभी काम देता है. टींकचरकी बनावट २½ औंस कत्थेका भूका २० औंस प्रुफस्पिरिट १ औंस तजका चूर्ण सातदिन भीगे रखणा छाण लेना मात्रा ३ सें २ ड्राम गुण ग्राही स्तंभक शीतल अतिसार रक्तातिसार वगेरेमें वापरते हैं.

(३७४ क्यालोमेल-(हाइड्रारजीरी सब कलोरीडम्) रेचक तथा शोधक है, थोडी मात्रामें वो पित्त वगेरे रसका शोधनकर शरीरकी बिगडी दशाकूं धीमें २ सुधारता है, मात्रा) शोधक गुण है, इसवास्ते २ सें १ ग्रेन रेचकगुण है, इसवास्ते २ से ६ ग्रेन रेचकतरीके इकेला क्यालोमेलका उपयोग करणा अच्छा नहीं है, शोधक गुणवास्तेभी बहोत दिनोंतक जारी रखणा नहीं क्योके इससें मूं आजाता है, बचोंका बुखार क्रमि मगज तथा छातीके रोगोंमें वापरते हैं, बुढे अदमीके बुखारमें किनाइन वगेरे दवा सरू करते केलोमेल और एन्टीमोनियल पाउडर एकेक तीनग्रेन २ देनेसें फायदा होता है, (ब्ल्याकवांस) चूनेका पाणी १० औंस क्यालोमेल ३० ग्रेण दोनोंकू मिलाणेसे कालापाणी होता है उसका पोता गरमीका जखम मिटता है और सोजा होता है, सोभी उतरता है (बफारा) अंगारपर चार पांच ग्रेन क्यालोमेल डालकर उसका

धूंआ लेना धूआं लेते वखत गलेसें ऊपरका भाग खुला रखकर बाकी सब बदन कपडेसें ढक लेना बहोत दिन इसका बफारा लिये जाय तो मूं आजाता है, इससें विस्फोटक वगेरे फूटकर बदनकूं सडानेवाली गरमी अच्छी होती है, लेकिन् पारे की कोईभी दवा खाकर अथवा धूंआ लेकर जादा मुंआणा इससें फायदेके बदले नुकशांन बहोत है, जरासा मूं आवै थोडा मसूडे फुले तब तुरत दवा बंधकर देनी.

(३७५ क्युबेब–कबाबचीणी–मूत्रल तथा शीतल है, प्रमेह् तथा हरसमें उसका बहोत फायदा देखा है, खास गुण पुराणा प्रमेहपर बहोत अच्छा है, चूर्ण तेल अथवा इसका अर्क फायदेबंद है, चूर्णकी मात्रा २० ग्रेनसें २ ड्राम दूध अथवा जलसें देणा तेलकी मात्रा ५ सें २ बुंद टींकचरकी मात्रा ½ सें २ ड्राम ७ कबाबचीणीका चूर्ण ॥ भर फिटकडी २ वाल और कत्था २ रतीभर दिनमें तीन वखत दोतीन दिन हमेस लेनेसें प्रमेह् तथा प्रदर गिरता बंद होता है, कबाबचीणी मस्सेके खूनकूं बंध करता है, हरस रोगमें माखण मिश्रीकेसंग इसका चूर्ण लेना.

(३७६ कलोरल–(क्लोरलहाईड्रेट) उसके सुपेद चिलकते पासें अथवा छोटे २ टुकडे होते हैं, पाणीमें डालणेसें पिगल जाता है, नींद लाणेकूं खासतरीके दिये जाता है. क्लोरल अफीमकीतरे नींद लाता है, लेकिन् दस्त कबज नहीं करता जुस्सा नहीं लाता चसका संधिवाय आंकसी धनुर्वात सन्निपात हिचका चित्तभ्रम और बेचेनी तथा अनिद्रा वाले रोगोंमें ये दवा बहोत फायदा करती है, धनकिया वादी कुचीलेका जहर चढनेसें अदमीका वदन खेंचीज जाता है, उसकूं एकदम आराम करता है, अफीमकीतरे बहोत दिनोतक लेनेसें उसकी टेव (मावरा) पड जाता है, जादा मात्रा लेनेसें जहरी चीज है, मात्रा–खेचा तान हिचका वगेरे मिटाणेकूं ५ से १० ग्रेन नींद लानेकूं १५ से ४० ग्रेन लेकिन वीस ग्रेणसें जादा देते बहोत हुसियारी रखणी चहिये मिश्रीके जल में गालकर क्लोरल देना जादे अच्छा है; केमीष्टके उहां इसका शरबत (सीरप ओफ क्लोरल) तयार मिलता है, उसमें १ ड्राम शरबतमें १० ग्रेन क्लोरल होता है, वो वापरणा सुगम पडता है.

(३७७ क्लोराडाइन–ग्राही पीडाशामक दीपन पाचन और आंकसी तथा शूलकूं मिटानेवाला है, क्लोरोडाइन कालेरंगका जाडा प्रवाही होता है, वो मोरफीया कलोरोफोर्म इन्डियन हेम्पहाइड्रो स्पानिक एसीड पेपरमिन्ट और स्पिरिटका वणता है, स्वादमें अच्छा होता है, पेटकी आंकसी अतिसार खासी दम वगेरे रोगोंमें वापरनेमें बहोत लोक घरमें रखते हैं, इसकूं देती वखत ऊमर तथा रोगका बराबर विचार करणा चाहिये मात्रा स्वेदल तथा पीडा शामकतरीके ५ से १० वूंद कफ शरदी ईन्फल्युएन्झा तथा एगु जातके बुखारमें दिये जाता है, आंकसी मिटाणेकूं १० सें २५ वूंद दम खासी वगेरेमें

इतनी मात्रा दी जाती है, ग्राहीपणेकूं १५ सें ३० वूंद हैजा अतिसार मरोडेमें ये मात्रा देणा चहिये बच्चोंकूं एकाएक देना नहीं जो कभी देना पडे तो बहुत सावचेतीसें उमरका विचार करके देणा चहियें एक वर्षके बच्चेकूं १ वूंद १-२ वरसके बच्चेकूं २ सें ४ वूंद इस क्रमसें ८-१६ वर्षवालेकूं ८ सें २० वूंद देणा, अनुपान-पाणी शरबत अलशीकी चा अथवा खांडमें वूंदे मिलाकर देणा क्लोरोडाइनकी बाटलीकूं मजवूत बंध रखणी और हिलायकर लेनी.

(३७८ क्लोरोफोर्म-वातहर मादक शामक खेंचाताणकूं बंध करता बेहोस करनेवाला है, जरूरपणे इसका उपयोग शरीरकूं काटणे बाढणेकी वखत बेशुद्ध करनेका है, लेकिन् वो उपयोग अनुभवी डाकतरोका है, इसके अलावा हैजा अतीसार चूंक वगेरे रोगोंमें वो दिये जाता है, मात्रा-१ सें ५ वूंद बच्चोंकों ये दवा पीनेकूं देना नहीं, १ सें ५ वूंद खांडमे मिलाकर देनेसें उलटी एकदम बंद होजाती है, दम तथा हैजेमें गुंदके पाणीमे ३ से ५ वूंद मिलाकर देना, बनावट (१) कमपाउन्ड टिंकचर ओफ क्लोरोफोर्म-क्लोरोफोर्म २ औंस रेकटीफाइड स्पिरिट ८ औंस इलायचीका अर्क १० औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा-२० से ६० वूंद (२) स्पिरिट ओफ क्लोरोफोर्म-क्लोरोफोर्म १ औंस रक्टिफाइड स्पिरिट १९ औंस दोनोंकों मिलाणा मात्रा २० से ६० वूंद (३) लिनिमेन्ट ओफ क्लोरोफोर्म-क्लोरोफोर्म २ औंस लिनिमेन्ट केम्फर २ औंस दोनोंकों मिलानेसें लिनिमेंट याने तेल बणता है, वो बदनके किसीभी जगेका दरद जलण तथा खुजालपर लगाणेसें मिट जाता है.

(३७९ क्वाश्या-दीपन पाचन ज्वरघ्न बुखार मंदाग्नि तथा कृमिपर चा घन तैसें अर्क दिये जाता है, तांतू जैसें कृमियोंकों बिलकुल मिटाता है, पीछे जुलाब देकर निकाल देते है.

३८० क्विनाईन-(सलफेट ओफ क्विनाइन) ज्वरहर पौष्टिक पाणीमें बराबर मिलता नहीं सल्फ्युरिक एसिड १० वूंद और क्विनाइन १० ग्रेन इय मिल जाता है, (अच्छे क्विनाइनकी परिक्षा)-एक चकूके पाणपर क्विनाइन धरकर उस चकूकूं स्पिरिट लेम्पर धरणा चकूका पाना लाल जब होगा तो क्विनाइन तो उड जायगा उस चकूपर फकत काला दाग रह जायगा अगर पिछाडी चकूपर कुछ पडा रह जाय तो समझणा के क्विनाइनमें किसी चीजका भेल है, क्विनाइन शरीरमें क्या क्रिया करता है, वो डाकटरोके अभीतक पूरा समझमें नहीं आया है, लेकिन निरोगी खूनमें क्विनाइके मिलता कोइ पदार्थ देखनेमें आया है, एसा रसायणी विद्वानोका कहणा है, उसकू इसवास्ते क्विनाइन खूनमेके उसपदार्थकूं पुष्टि देता है बुखारमें खूनमेका इसतरेका पदार्थ कम होजाता है क्विनाइन पीछा घणा देता है. इसवास्तेही क्विनाइन सब बुखारमें अकसीर उपाय ठहरा है, जादातर मेलेरियल

फीवरमें और विषम ज्वरमें जादाही अकसीर है, वदनकी गरमीकूं कम करता है, उसके संग ज्ञानतंतुओंकोंभी मंद करता है, मेलेरिया बुखारमें खून में सपेद रजकण बढते हैं, क्विनाइन उसकों रोकता है, क्विनाइन जहरी कीडोंकों मिटाता है, उससें वदनके सडते भागकूं रोकता है, चसका तैसें संधिवाय जैसे रोग सो वहोतसी वखत दिखाइ देता है, और पीछै मिट जाता है, उसमेंभी क्विनाइन अच्छा फायदा करता है, इसका उपयोग करते एक दो वात ध्यानमें रखनेकी है, बुखारमे क्विनाइन सरू करती वखत एक दोय दस्त आवै पेट साफ होय एसा परगेटिवले लेना चहिये दुसरी वात इय हैके वदनमें ठंढ अथवा बुखार (गरमीका) जोर होय तव क्विनाइन नहीं लेणा दस्तका खुलासा होय पसीना आनेलगे तव क्विनाइन लेना डाकटरकी सलाह नहीं होय तव क्विनाइन लेना होय तव बुखार नरम पडे और पसीना आये पीछै अथवा चमडी भीजीसी होजावे तव लेना वडे बुखारमें जव शिर दुखता होय नाडी जोरमें होय और चमडी सूकी होय तव क्विनाइन विना डाकतरके हुकम विगर कभी लेना नहीं कितनी वेर एसाभी बणता है, शरीरमें क्षारकी व्याप्ति भये पीछेही क्विनाइनका पूरा असर होता है, इसवास्ते क्विनाइनकेसंग क्षार गुणकी दवाइयें जरूर मिलाकर देणा चहिये क्विनाइन जुदे २ शरीरमें जुदी २ असर करती है, कोईकूंवडी मात्रामेंभी चहिये एसा असर नहीं करता और कोईकूं थोडी मात्रामें शिरमें तथा कानमें अवाज तथा बहिरापणा लाता है, चमडीपर दाग उठ जाता है, मात्र एक ग्रेन क्विनाइनसें एसा अहवाल बणनेका किसी २ जगे दाखला बण आता है, जब एसा अहवाल बने तब मात्रा कम करणी अथवा बंधकर देणा क्विनाइनका वडा डोझ शिरमें अवाज कानोंमें बहरापणा आंखोमें अंधेरा लाता है, चहरा और आंखे लाल चोल होजाती है, ये असर थोडी २ कम होकर बंध होती है, लेकिन किसी २ वखत कानकी अवाज वगेरे निशानि या हमेसांकेवास्ते रह जाती है (मात्रा ३ से १० ग्रेन) अथवा वेर २ नहीं देना होय तो इससेभी जादा मात्रा दी जाती है, अनुपान- सामान्यतरे पाणीकेसंग लिये जाता है, लेकिन अच्छा अनुपान नींबुका रस है, अथवा सल्फ्युरिक एसिड है, कडवा बहोत होता है, अगर लिया नहीं जाय तो गूंदके पाणीमें अथवा ग्लिसेराइनसें गोलियां वांध लेनी बुखार सिवाय पाचन क्रियापरभी अच्छी असर करती है, और उससें डिस्पेपस्या नामके अजीर्णमें फायदा करती है, नाताकती दूर करनेवास्ते क्विनाइन ऊपर लिखी मात्रासें आधे वजनमे लेना मेलेरियावाली हवामें हमेस एकाध ग्रेन क्विनाइन लेणेसें मेलेरियाकी जहरी असरसे वचता है.

(३८१ काजुपुटी ओईल-पेटकी चूंकपर दीजाती है, मात्रा १ सें २ वूंद अथवा ऊपर चुपडे जाती है.

(३८२ कायनो-हीरादक्खन-ग्राही रक्तस्तंभक शीतल-अर्क तथा चूंर्ण वापरते हैं,

टिंकचर—हीरादखनका चूर्ण २ औंस रेकिट फाइड स्पिरिट २० औंस ७ दिन भिगाकर छान लेना और स्पिरिट २० औंसमेंसे कम होय इतना फेर डालकर २० औंस पूरा करना मात्रा १ सें २ ड्राम-कम्पाउन्डपल्वीस—३॥। औंस हीरादक्खण .।. औंस अफीम १ औंस तजका चूर्ण इन तीनोंका महीन चूर्ण मात्रा ५ से १० ग्रेन दस्त खून गिरणा तथा उलटीमें देते है.

(३८३ कार्डेमम—इलायची दीपन पाचन रुचिकर टिंकचर कोर्डेमम दुसरी दवायोंके संग दिये जाती है मात्रा $\frac{1}{2}$ सें २ ड्राम.

(३८४ कारबोलिक एसिड—दाहक रोपण जंतु तथा दुर्गंध नाशक बुखारकूंभी मिटाता है, उलटी ज्वर रक्तदोषमें खाणेमें देते हैं, ग्लिसेराइन ४ औंस कारबोलिक एसिड १ औंस मिलाणा मात्रा ५ सें १० बूंद मुख्य उपयोग जखम घाव भरणेमें काम देता है, कारबोलिकका प्रवाही-१ भाग कारबोलिक एसिड और ४० भाग पाणी सांमल करणा जखम उपदंशकी चांदी दुर्गंधी घाव हाड गंभीर नासूर भगंदर वगेरे रोगोमें धोनेवास्ते तथा पिचकारीवास्ते बहोत उपयोगी है, कारबोलिक तेल-१ भाग एसिड २० भाग मीठातेल मिलाना ऊपर लिखे तमाम चमडीके रोगोंमें इस तेलकी पट्टी मारणेसें बहोत जलदी भराव लाता है, जो घाव चिक २ तें होय ऐसे घावपर पहली आयोडोफोर्म भुरकाकर पीछे कारबोलिक तेलका कपडा भिगाके धरणा साबूमें तथा बहुतसे मलमोंमे कारबोलिक एसिड मिलानेसें चमडीके रोगोंमें बहुत फायदाबंध होता है, खानेमें उसकी मात्रा $\frac{1}{2}$ से २ ग्रेन है, जादा लेनेमें आवे तो जहरके चिन्ह बताता है, मरभी जाता है.

(३८५ क्रियासोट—उलटी तथा दस्तकूं रोकता है, दुर्गंधका नाश करता है, दांतके दुखणेकूं बंध करता है, उसका मलम दाद खुजली खाजपर काम आता है, मात्रा १ सें ३ बूंद क्रियासोट मिक्श्चर १ सें २ औंस.

(३८६ क्रीम ओफ टार्टर—दुसरा नाम एसिड टार्टरेट ओफ पोटास-बाईटार्टरेट ओफ पोटाश सारक शीतल मूत्राशयपर उसकी असर अच्छी होती है, बुखार हरस जलोदर तथा दस्तकी कबजीमें दिये जाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन (रेचक) मात्रा १ से ४ ड्राम गंधकके संग मिलाकर हरसमें दिये जाता हे, गंधक ३ ड्राम और क्रीम ओफ टार्टर १ ड्राम दोनों मिलेभये मात्रा १ ड्राम अनुपान सहत अथवा शरबत.

(३८७ केम्फर—कपूर जंतुनाशक निद्रानाशक ज्वरघ्न स्वेदल कफघ्न मूत्रल चमडीकी क्रिया और पसीनेकूं वधाता हे, जादा मात्रा देनेसें वो खूनके वेगकूं नरमकर आंकडी तथा शूलकूं मिटाता है, हिस्टीरिया दम संधिवाय खुलखुलिया खासी छातीका धडका वगेरे रोगोंमें देते हैं, जलणकूं मिटाता हे, नींदकूं उत्तेजन देता है. शिरके दरदकूं कम

करता है, और शरदीमें फायदा करता है, मात्रा–२ सें ४ ग्रेन (बनावट) १ केम्फरवाटर डिस्टील्ड बोटरसें भरी शीशीमें थोडा कपूर डाल थोडे घंटाओं तक केम्फरका जल खुसबोदार होता है, येजल इकेला दवातरीके दिये नहीं जाता लेकिन डाया फोरेटिक मिकश्चर जैसी बनावटोंमें उसका सादे जलके ठिकाने उपयोग होता है, (२) स्पिरिट क्याम्फर–१ औंस और १ ड्राम रेक्टीफाइड स्पिरिटमें १ ड्राम कपूर डालनेसें स्पिरिट क्याम्फर बणता है, शरीरके अंदर गरमी लानेवास्ते हिस्टीरीया वगेरे ऊपर लिखे रोगोंपर पीनेमें तैसें बाहर जलके संग (३) कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ क्याम्फर अथवा पेरी गोरिक एलीक्सीर अफीम ४० ग्रेन लोबानका फूल ४० ग्रेन कपूर ३० ग्रेन एनिसी ओइल । ड्राम प्रुफस्पिरिट २० औंस ये पांच चीजोंकों एक बाटलीमें ७ दिन रख छोडनी और बाटलीकूं बखतो बखत हिलाना पीछै छाण लेना इस दवासें हैजा अतिसार वगेरे रोगोमें दिये जाता है, मात्रा १५ सें ६० वूंद अर्थात १ ड्राम बच्चेकूं ३।५ बूंद थोडी मिश्री ऊपर भुरकाकर देणेसें कफकूं बहोत फायदा करता है, खुलखुलिये खासीमें बुखार होय तो उसकूं इपीकाक्यु आन्हावाइन अथवा ओन्टीमोनियल वाइनकेसंग दिये जाता है.

(३८८ केशकारासे ग्रेडा–रेचक तैसें पौष्टिक है, बंधकुष्ट तथा उससें भये हरस रोगमें ये दवा देनेसें दस्तका खुलासाकर सफरेकूं साफ करता है, लिक्किड एकस्ट्राकट ओफकास्कारासे ग्रेडा दवामें दिये जाता है, उसकी मात्रा १ ड्रामकी है.

(३८९ केस्टर ओइल–एरंडीका तेल ताजा पेटमें चूंक जलण पैदा करता नहीं और दस्त अच्छीतरे लाता है, इसवास्ते नाजुक मिजाजवालेकूं ये जुलाब अच्छा है, साधारण कबजियतमेंभी दस्त साफ लानेकूं ये दिया जाता है, बेर २ देनेमें आवे तो मात्रा कम करणी चाहिये दुसरी वखत जुलाब देनेसें कम असर करता है, इसवास्ते मात्रा वधाणा पडता है, लेकिन ये बात एरंडीके तेलमे नहीं है, इसकूं तो बलके कमही देना चहिये एरंडीके तेलमें फकत बकवो आया करती है, ये एक एब है, इसवास्ते मूंमें पहली नीं ूके रसकी वूंदे डाल पीछे इसकूं पीवै अथवा पेपरमींटके पाणीमें डालकर पीणा अथवा तेल जितनाहीं ग्लीसराइन मिलाकर तजके अर्कसें वूंदोंसे सुवासित करणेसें उसकी खराब गंध मिट जाती है, जो क्यास्टर ओइल ताजा और अच्छा नहीं होय तो पेटमें गरमी आंकडी और मरोडा पैदा करता है.

(३९० क्रोटन ओइल–जमाल गोटेका तेल अतिरेचक तथा दाहक है, इससे पेटमें जलण होती है, जादाबंध कुष्टमे तथा जलोदरमें मिश्रीमें गोली बांधकर देते हैं.

(३९१ कोडलीवर ओइल–कोड नामकी मछलीके कलेजेका ये तेल बणता है, डाकतरलोक इसकुं पौष्टिक कहते हैं, क्षय नाताकती छातीके दरदमें बहोत देते हैं,

मात्रा १ से ८ द्राम ये तेल पचनेमें भारी है, और कितनोंको अजीर्ण होकर दस्त होने लगता है, दूधकेसंग अथवा चिरायतेके चासंग अथवा पेपरमेंटके जल संग देते हैं, जीमे बाद तुरत पीनेसे खुराककेसंग वो पच जाता है, बुखारमें तथा दस्तकी बेमारीमें देनेसें नुकशांन करता है, कोडलीवर ओइल विथ मालटाइन नामकी दुसरी बनावट इसकी होती है, वो स्वाद और गुणमें जादा वो लोक कहते हैं, इस वखत माल टाइन जादा वापरते हैं.

(३९२ कोपर) (सल्फेट ओफ कोपर) नीलाथोथा वामक ग्राही दाहक विप आसमानी रंगका टुकडा पासदार मिलता है, मात्रा ग्राही गुणवास्ते $\frac{1}{4}$ से २ ग्रेन वमनवास्ते ५ सें १० ग्रेण पेटमें कोइ २ जगे संग्रहणी तथा अतीसार में दिये जाता है, लेकिन उसका मुख्य उपयोग बाहर लगाणेमें आता है, आंखका लोसन-१ औंस पाणी १-२ ग्रेन नीलाथोथा जलमें डालनेसें आसमानी रंगका पाणी होजाता है, आंखकी खीलपर दुसरे २ दिन नीलेथोथेका कटका फेरणा ऊपरसे लोसनकी बूंदे डालणी प्रमेह सुजाकमें इसकी पिचकारी दिये जाती है, झींक जब हाजर नहीं होय तब जहर खायेको नीलेथोथेकी उलटी देणेमें आती है.

(३९३ कोपेवा-इस नामका दरखत होता है, उसमेंसे तेल जैसा निकलता है, उसकूं बालसम कहते है, ये रस मूत्रल तथा वस्तिशोधक है, प्रमेह सुजाकपर मुख्य चलता है, प्रमेहकी जलण कम होय तब सरू करणा प्रमेह प्रदरके पुराने मरजपर बडा फायदेवंद है, मात्रा ५ से २० बूंद.

(३९४ कोलशीकम-वातहर तथा रेचक है, मात्रा २ सें ८ ग्रेन गाउट तथा संधिवायपर उसका उपयोग साधारण है, यकृत् तथा मलकी कबजी और अजीर्णपरभी वापरते है, उसका एक स्ट्राकटभी वापरते है, मात्रा $\frac{1}{2}$ सें २ ग्रेन.

(३९५ कोलोसिथ-देशी नाम कडवा तूंबा गुण रेचक है, जलोदर मलावरोध तथा अजीर्णमें जुलाब दिये जाता है, उसके एकस्ट्राकटकी मात्रा ३ से १० ग्रेन.

(३९६ गम-देशी नाम गूंद मूत्राशयका वरम अथवा दाहमें तैसें बच्चोंके धातु गिरणेमें दिये जाता है, कफकेवास्ते मूमे रखकर चूसकर रस ऊतारणा अच्छा है २० औंस जबका पाणी और १ औंस गम मात्रा ६ औंस.

(३९७ ग्लिसराइन-चमडीका रोग ऊपर लगानेमें विशेपकरके वापरते हैं, ग्लिसराइन पेटकी खुजालपरभी कुछ इक असर करता है, चमडीका दाह स्तनपाक जीभ तथा मूका जखम गलेका पकणा वगेरे रोगोंपर ग्लिसराइन अकेला अथवा टेनिक एसिड टंकण फिटकडी कारबोलिक एसिड वगेरे दवायोमें कोइभी एकाधकेसंग मिलाकर लगाये जाता है, जिससें चमडीकी जलण मिटती है, इस मिलावटमें ग्लिसराइन ४ भाग और

तब डोवर्स पाउडरकेसंग कीनाइन देते हैं, फायदा करता है, मात्रा-डोवर्स पाउडर ८ ग्रेन कीनाइन २ ग्रेन डोवर्स पाउडर लीयां पीछै थोडी देरतक पतला पदार्थ पीणा नहीं, नहीं तो उलटी होती है, क्यूंके इपीकाक्युआन्हामें उलटीका गुण है.

(४१२ थाइमोल-अजमेका फूल उष्ण वातहर रोपण तथा दुर्गंधनाशक है, मात्रा ॥ से ३ ग्रेन १ भाग फूलकूं एक हजार गुणे जलमें मिलाकर वापरणा.

(४१३ नक्सवोमिका-देशी नाम कुचीला वातहर पौष्टिक कृमिघ्न मात्रा १ से ५ ग्रेन एकस्ट्राकटकी मात्रा ॥ से २ ग्रेन अर्ककी मात्रा १० से २० बूंद.

(४१४ नाइटर आफ पोटाश देशी नाम सोराखार उसकी नाइट्रीक एसिड नाइट्रो-म्युरियाटिक दवाओं बणती है, बजारमेंका सोरेखारकूं साफ करनेकूं गरम पाणीमें पिगलाकर छाणकर ठरणेदेना तब उसके पासे नीचे बंध जाते हैं, ऊपरका पाणी फेंक देना ये बडा ठंढा खार है, मूत्राशय तथा चमडीपर उसका खास असर है, इसगुणसें बुखारमें कामलेमें संधिवायुमें जलोदरमें तथा वरममें वापरते हैं, बुखारकी गरमी मिटाणे सोरा २ ड्राम दो नींबूका रस पाणी ४० औंस तथा थोडी खांड इन सबोंकों मिलाकर उसमेंका थोडा २ पाणी पीणा मात्रा ५ से २० ग्रेन सोरा बडी मात्रामें जहरी असर करता है, दम बेठानेकूं इसतरे उपयोग करणा १ भाग सोरा ८ भाग जलमें उकालना इस जलमें देसी कागजकूं दोतीन मिनटतक भिगाकर सुका डालना इस कागदकी वीडी सिलगाकर पीणी इससें दम चढा भया वैठ जाता है, नाइटर सिवाय स्ट्रोंग तथा डाइल्युटनाइट्रीक एसिड वापरते हैं.

(४१५ नाइट्रीक एसिड-(स्ट्रोंग) सोरेका तेजाब गुणमे अतिदाहक है, गंधाते भये घावोंकों जलाणेमें काम आता है. सापकाटे उसके डंकपर लगाणेसें उसका जहर नहीं चढता.

(४१६ नाइट्रीक एसिड-(डाइल्युट) १ औंस स्ट्रोंग नाइट्रीक एसिड और ४ औंस जल मिलानेसें डाइल्युट नाइट्रीक एसिड होता है, पाचन पौष्टिक तथा खून सुधारणेवाला है, मात्रा १० से ३० बूंद (अनुपान) १ औंस पाणी, आठ गुणा जल डालकर पिचकारी देनेसें मूत्राशयकी पथरी पिगलकर बाहिर आती है.

(४१७ नाइट्रेट ओफ सिल्वर-(अर्जेन्टीनाइट्स) अच्छे रूपेकूं सोरा खारके तेजावमें पिघलाणेसें ये दवा तइयार होती है, उसके पासादार टुकडे अथवा गोलसलियां आती है, अजीर्ण उलटी गोला होजरीका घाव संग्रहणी अतिसार वगेरेमें उसका उपयोग होता है, ये दवा जलानेवाली है, इसवास्ते पेटमें लेनेकरके जितना फायदा है, तिसकरके बाहर लगानेमें जादा फायदेवंद है, उपदंशकी चांदी तथा मस्सेकूं जलानेमें वापरते हैं, विसर्पके सोजेके तथा वात रक्तके सोजेके आसपास कास्टीककीलकीर लगाणेसें फैलता

बंध होता है, आंखका लोशन १ औंस वरसादका पाणी अथवा हंसोदक और १ से ४ ग्रेन कास्टीक मिलाकर बूंदे डालनेसें दुखती आंख मिटती है, सिराज (पिचकारी) प्रदर तथा प्रमेहवास्ते १ औंस पाणी और १ सें २ ग्रेन कास्टिक.

(४१८ नाइट्रो हाइड्रो क्लोरिक एसिड)–अथवा नाइट्रोम्युरियाटिक अेसिड (डिल्युट) वनावट ३ औंस नाइट्रिक एसिड ४ औंस हाइड्रो क्लोरिक एसिड २५ औंस जल मिलाकर देते हैं, मात्रा ५ से १० बूंद एक औंस जलमें अथवा चिरायतेकी चामें तावसे भई मंदाग्नि कलेजा तथा कमलेके रोगकूं मिटाकर खूनकूं शुद्ध करता है.

(४१९ पलास्टर–(लेप) अंग्रेजी उपचारोमें मुख्य लेप नीचै प्रमाणे (१) अफीमका लेप–अफीम १ औंस रालका लेप ९ औंस गरम पाणीसे मिलाणा (२) वोदारका लेप–मुरदासंग ४ रतल ओलिव तेल १ ग्यालन पाणी ६५ औंस वाफसे गरम कर लेप करना.

(३) वेलाडोणेका लेप–तयार विकता है.

(४) राईका पलास्टर–राई २॥ औंस अलशी २॥ औंस ऊकलता जल ८ औंस पाणी २ औंस अलशीकूं गरम पाणीमें और राईकूं ठंढे जलमें मिलाकर दोनोंकों मिलाना.

(४२० पेपरमिंट–(एसेन्स ओफ पेपरमिन्ट) उष्ण वातहर शूलहर पेटकी वायु आंकसी और चूंककूं बैठाती है, पेपरमिन्टके १ औंस तेलमें रेकटी फाइड इस्परिट ४ औंस मिलानेसें एसेन्स होता है, मात्रा १० से २० बूंद पेपरमिंटका जल वनानेवास्ते $\frac{1}{12}$ ड्राम पेपरमिंटका एसेन्स और २० औंस पाणी एक वडी वोतलमें डालकर हिलाना मात्रा १ से ३ ड्राम.

(४२१ पेपसिन पाचक–मंदाग्नि तथा अजीर्णमें वापरते है, मात्रा २ से ५ ग्रेन जीमे वाद पेपसीन वाइन आती है, वोभी एसा गुण करती है, उसकी मात्रा १ से ४ ड्राम.

(४२२ पोटाश–पोटाशकी वहोत जात है.

(१) कास्टिक पोटाश–दाहक है, अर्बुद चांदी तथा मस्सेके जलानेमें काम देता है

(२) लाइकर पोटास–सोल्युशन ओफ पोटाश अम्ल (खट्टेका) विरोधी मूत्रल तथा शोधक है, पथरीका रोग उष्ण वाय प्रमेह अम्लपित्त संधिवाय मेद और अजीर्ण वगेरेमें देते हैं, मात्रा १० से ४० बूंद.

(३) आयोडाइड ओफ पोटासीयम–शोधक रक्तशोधक उपदंश स्क्रोफयुला तथा दमके दरदकेवास्ते अछा इलाज है, तैसें संधिवात गाउट हड्डी तथा चमडीके सडनेका रोग यकृत् प्लीह शिरका दरद शूल तथा पक्षाघातपर दिये जाता है, मात्रा २ से २० ग्रेन.

(४) एसेटेट ओफ पोटाश–मूत्रल तथा रेचक है, जलोदर तथा सोजा मूत्रपिंडके रोगोंपर दिये जाता है, मात्रा मूत्रल १० सें ६० ग्रेन रेचक २ से ३ ड्राम.

(५) क्लोरेट ओफ पोटाश–शीतल तथा मूत्रल है, शोधक मात्रा ५ से ३० ग्रेन.

(६) टार्टरेट ओफ पोटाश–मूत्रल रेचक जलंदर मलावरोध तथा उष्ण वायु वगेरे रोगोंमें दिये जाता है, मात्रा १ से ४ ड्राम.

(७) एसीड टार्टरेट ओफ पोटाश–देखो क्रीम ओफ टार्टर.

(८) नाइट्रेट ओफ पोटाश–देखो, नाइट्रर.

(९) परम्यांगनेट ओफ पोटाश–विषघ्न दुर्गंध नाशक सांप काटेपर इसकी पिचकारी मारे जाती है, नष्टार्तव तथा अजीर्णपर दी जाती है, मात्रा .१ सें ५ ग्रेन.

(१०) कार्बोनेट ओफ पोटास–अम्लविरोधी है, लायकर पोटास जैसा गुण है, तीक्ष्ण संधिवायकूं मिटाता है, पथरी चमडीके रोग गाऊट तथा आम्लपित्त ऊपर दिये जाता है, मात्रा १० से ३० ग्रेन.

(११) बईकार्बोनेट ओफ पोटाश–गुण तथा फायदा कार्बोनेट ओफ पोटाश मुजब

(१२) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम–नींद लाणेवाला मगजके रोगकूं मिटानेवाला मिरगीके रोगमें बहुतही फायदेबंद हिस्ट्रीया खेचाताण अनिद्रा उन्माद बच्चेकी हिचकी बडी खासी शिरकी शूल वगेरे रोगोंपर उसकी बहुत अछीं असर होती है, मात्रा ५ से ३० ग्रेन.

(१३) सल्फेट ओफ पोटाश–रेचक मात्रा १५ से ६० ग्रेन.

(१४) साइट्रेट ओफ पोटाश–शीतल तथा मूत्रल है, पथरी तथा बुखारमें फायदेवंद है, मात्रा २० से साठ ग्रेन.

(४२२ पोडो फीलीन)–ये अमेरिकामें पैदा होता दरखतका चूर्ण है, उसका रंग झांखा नीला भूरा है, गुण रेचक है, और खास तौर लिवरपर असर करता है, उससें कबजियत तथा कलेजेका पुराणे रोगमें फायदा है, मात्रा अच्छे जुलाबवास्ते १ से २ ग्रेन मध्यम जुलाबवास्ते $\frac{1}{3}$ से $\frac{1}{2}$ ग्रेन इसका जुलाब बच्चेकूं देणा नहीं इकेला लेनेसें पेटमें आंटा चलता है, और दस्तभी बेसुमार आते हैं, इसवास्ते बेलाडोनाकेसंग लेनेसें आंटा नहीं आता और रुबार्ब कोलोसीन्थ एलोझ (एलिया) अथवा ब्लुपिलकेसंग लेनेसें प्रमाणसर दस्त आता है.

(४२३ पोमिग्रेनेट) (देशी नाम अनार) अनारके जडकी छाल तथा फलकी सूकी छाल दवामें काम देती है, टेपवर्म नामके जीवकृमिकूं मिटाने तैसें अतिसार और मरोडा मिटानेकूं जडकी छाल काम देती है, उकालीकर कुरला करनेसें मूंके घाव मिटते हैं २ औंस मूलकी छाल ४० औंस पाणीकूं उकालना आधार है, तब छाण कुरला

करणा टेपवर्म कृमिवास्ते २ औंस जल निराहार पेट पीणा आधी २ घंटासे छ वखत पीणा पीछै दस्त लगे एसी दवा लेनी इस दवासे उकारी होय तोभी ये दवा ऊपरा ऊपरी पांच छ वखत पीणी अतिसारमें एकेक औंस काढा दिनमें तीन वखत पीणा.

(४२४ पापी हेडस–पापीक्यापसुल्स) देशी नाम अफीमका डोडा शेक करनेके काममें वहुत उपयोगी है, उसके शेकसें शरीरके कोइ चोकस भागकूं रोगकूं पीडाकूं मिटाता है, २ सेर पाणीमें ५ रुपेभर डोडोंकूं कूटकर उकालना.

(४२५ फोसफरस)–ये एक चीज एसी है, सो हवामें रखनेसें तुरत सिलग उठती है इसवास्ते उसकूं पाणीमें रखते हैं, देखणेमें मीम जैसा होता है, दीयासली वनानेमें काम देता है, पेटमें लेनेसें पौष्टिक है, मगजकी नाताकतीमें खास करके दी जाती है, गोली तैसें तेलरूप वापरते हैं, फासफोरिसकी गोलियां तइयार विकती हैं, गोलियोंकी मात्रा २ से ४ ग्रेन तेल–विदामका तेल ४ औंस गरमकर छाण ठंढाभये पीछै काचके वुच-वाली वाटलीमे डाल उसमें १६ ग्रेन फासफरिस डालकर गरम पाणीमें शीशी धरकर वाद हिलाणी फासफोरिस उस तेलमें मिल जायगा.

(४२६ ब्रांडी)–जंतुनाशक उष्ण मादक तथा पौष्टिक है, मात्रा ॥ से १ औंस उत्तेजक मादक जादा मात्रासें जहरी है, पीणेमें दवा तरीके डाकटर उसका विरले जगे उपयोग करते हैं, वदन विलकुल ठंढा पड गया होय तो गरमी लानेकूं देते हैं, वहोंत सखत नहीं पडे इसवास्ते इसमें थोडा पाणी डाल देते हैं, निद्रा लानेवास्तेभी कोइ वखत उपयोग करते हैं, किचर गया गुप्त चोट पछाट वगेरेमें वाहर लगानेमें काम देती है, सुआवडमें वच्चा भये पीछै औरत जादा क्षीण तथा ठंढी पड जाती है, उसकू कांटा तथा गरम करणेकूं थोडी २ देनेकी डाकदरोंकी सम्मती दवा मुजव ब्रांडी थोडी कारण योगमें फायदा दिखलाती है, लेकिन आर्यदयावंतोके आचरने योग्य नहीं जो लोक शोख और व्यसनसें ब्रांडीके चक्करमें आते हैं, उनोंका ब्रांडी नाश करती है, जैनतत्वादर्श ग्रंथमे ५२ औगुण प्रगट दिखलाया है, ब्रह्माजी इसकू पीकरके वेहाल वण वेटीसें कुकर्म कर लिया भागवतके दुसरे स्कंदमें लिखा है, इसवास्ते वुद्धिवंतोकी वुद्धि विगाड देती है, ताकतका नाश करती है, और वडे २ रोग लग जाते हैं, कीडोंका रस इसमें सामिल होजाता है.

(४२७ वीसमथ)–ग्राही अजीर्ण कै मरोडा अतिसार तथा आम्लपित्तके रोगमें उसकी जुदी २ वनावट वणती है, जैसेके साइट्रेट ओफविसमथ एन्ड एमोनिया मात्रा २ से ५ ग्रेन कारवोनेट ऑफ विसमथ मात्रा ५ से २० ग्रेन सव नाइट्रेट ओफ विसमथ मात्रा ५ से २० ग्रेण साइट्रेट ओफ विसमथ मात्रा २ से ५ ग्रेन.

(४२८ वेनझोइन–देशी नाम लोवान कफघ्न उष्ण स्तंभक मात्रा १० से ३० ग्रेन वेनझोइन एसिड–लोवानके फूल १० से १५ ग्रेन उलटी खांसी दम वगेरेमें दिये जाता है.

(४२९ बेलाडोना)–बेलाडोणाके पत्ते जड उसमेंसे बहोतसी दवायें बणती है, तैसें बाहर लगानेमेंभी काम देती है.

(१) टींकचर ओफ बेलाडोना मात्रा ५ से २० बूंद.
(२) एकस्ट्रकट ओफ बेलाडोना मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन.
(३) बेलाडोनापलास्टर–बेलाडोनेका लेप.
(४) लीनीमेन्ट ओफ़ बेलाडोना.
(५) आट्रोपीन–बेलाडोनेका खास सत्व है, मल्लम वट्टी वगेरेभी होती है.
(६) सल्फेट ओफ आट्रोपिया.

(गुण) पीडा शामक उष्ण स्वेदल स्नायुशैथिल्यकृत् दूध तथा थूक शुद्धकरता आंखकी कीकीकूं चोडी करनेवाला खासी धनुर्वात चस्का शिरकी आंखकी तथा कानकी शूल वगेरे रोगोंमें पीनेमें तथा ऊपर लगाणेमें काम देता है, आंखकी कीकी चोडी करनेकूं आट्रोपीन अथवा उसकी कोइभी बणी दवा आंखमें आंजते हैं, आंखकी कनीनीका सोजा फूला मोतियाबिंद वगेरेभी उससे अच्छा होता है, आट्रोपीन १ ग्रेन पाणी १ औंस पेसाबकी गांठ मलकी कबजी पेसाबके अतीसारके रोगमें अंदर लेनेवास्ते तैसें औरतोके ऋतुधर्म संबंधी तथा गर्भस्थानके रोगमें उसकी सोगठी बणाकर गुह्य अवयवमें धरते हैं, बदनमें रसकी बढोतरी होती भईकूं रोककर पसीनेकूं तथा स्तनके जादा दूधकूं तथा जादा थूक आता होय तो बंध करता है.

(४३० बोर्याकस–(देशी नाम टंकण) मूत्रल तथा शीतल पेसाबकी वृद्धि करता है, उसमें खटासकूं दूर करनेका थोडा खार गुण है, ऋतु लानेवाला है, जादा मात्रासें गर्भ गिरा देता है, मों तथा जुवानका जखम मूं आणा वगेरेमें कुरला कराते हैं, और बच्चोकों सहतमें मिलाकर मूंमे लगाये जाता है, खानेकी मात्रा ५ से ४० ग्रेन कुरला १ औंस बोर्याकस ८ औंस पाणी दुसरी बनावटे (१) मेलबोर्यासीस टंकण ६० ग्रेन ग्लीसेरिन ॥ द्राम और सहत १ औंस (२) ग्लीसेरीन ओफ बोर्याकस–टंकण १ औंस ग्लीसेरीन ४ आसैं पाणी २ औंस तीनोंकों घोटकर मिलाना ये दोनों मिलावटी दवा मुखपाक शिरका खोरा और मैलऊपर लगानेसे बहोत फायदा करता है, गरम पाणीमें टंकण डालके न्हाणेसें चमडी की खाजपर मसलणेसें फायदा करती है.

(४३१ मरक्युरी पारा) पारेका बहोतसा खानेकूं तथा लगानेकूं दवामें उपयोग होता है, पारेका अच्छीतरे सोधन तथा परेज कियेविगर पारेकूं खाणा अच्छा नहीं अंग्रेजी इलाजोमें पारेकी कितनी बनाइ भई चीज खानेवास्ते धुंयेवास्ते लेपवास्ते वापरते है, उसकी मुख्य असर शोधक है, इसीवास्ते उपदंसपर इसका मुख्य उपयोग होता है, लेकिन ये दवा देनेके पहली रोगीकी शक्ति प्रकृतीका बहोत बारीक विचार

करणा चाहिये क्युंके पारा तासीरकूं नमाने अथवा वजनसें जादा खानेमें आवे तो वदनकूं बिगाड देता है, उसके बिगाडके ऐसे लक्षण होते है, मूं आजाता हैं, जीभ गीली होकर घाव पडै दांत ढीले पडै चमडीपर फूट निकले और गति तंतुओंमें पारेकी खराव असर पोहचतेही हाथ पांवोंकी गतिमें बिगाड होकर धूजणे लगता है, इसवास्ते पारेसंवंधी कोइभी दवा खाते वहुत सावधान रहना चतुर वैद्य डाकदरोकी सलासेंही लेना अच्छा है.

(४३२ मसटर्ड—देसी नाम राई) मुख्यपणे उलटी कराणा तथा पलास्टरके काममें आता है, उलटीकी मात्रा १ से ४ द्राम राईका पलास्टर (पोल्टीस) २½ औंस राई २½ औंस अलशी ८ औंस ऊकलता पाणी २ औंस ठंढा पाणी २ औंसमें राईकूं मिला देना और अलशीके चूर्णको ऊकलते जलमें मिलाना पीछै दोनोंकों एकठा करणा मसटर्डकूं ठंढे पाणीमें पीसकरके पलाष्टर मारणेमें आता है.

(४३३ मेनथोल—पेपरमिनटके तेलमेंसे निकलता है, (गुण) पीडा शामक मात्रा ½ से २ ग्रेन मेनथोल घसणेसें तथा पीलानेसें शिरकी शूल तथा चसक मिटती है.

(४३४ मेलफर्न)—लिक्विड एकट्राकट ओफ मेलफर्न-कृमिघ्न है, पेटके अंदरकी लंवा चिपटा क्रुमियोंपर ये दवा फायदा करती है, रोगीकूं एक दस्त देकर कितनीक देरतक भूखा रखणा पीछै दवा देनी और फेर १ जुलाव देणा इसतरे करणेसें क्रुमि बाहर निकल जाती है, मात्रा ३० से ६० बूंद.

(४३५ रुबार्व)—दीपन रेचक ग्राही अजीर्ण कवजियत चूंक दस्त वगेरे रोगोंमें दिये जाता है, अच्छा हलका जुलाव होजाता है, इसवास्ते वचोकूं अच्छा समझ दिये जाता है, उसके जडका चूर्ण हलदी जैसा पीला भूका होता है, मात्रा ५ से २० ग्रेन चायकी मात्रा १ सें २ औंस एकस्ट्राकट याने घनकी मात्रा ५ से २० ग्रेन अर्ककी मात्रा १ से २ द्राम जुलाव वास्ते ४ सें ८ द्राम ग्रेगरी पाउडर रुबार्वका चूर्ण २ औंस हलका मेगनिस्या ६ औंस सूंठ १ औंस इन तीनोंका बारीक चूर्ण मात्रा १० से ६० ग्रेन उसके गोलीकी मात्रा ५ से १० ग्रेन.

(४३६ रेझीन)—देशी नाम राल. ग्राही रोपण तथा उत्तेजक है, इसका मुख्य उपयोग मलमतरीके होता है, रालका मलम ८ औंस राल ४ औंस पीलामोम १६ औंस सादा मलम दो औंस विदामका तेल गरमकर मिलाके मलम करना घाव फोडेपर पट्टी मारे जाती है.

(४३७ लाइम)—देशी नांम कलीचूना अम्लविरोधी ग्राही तथा दाहक है, दवाके वास्ते १ रत्तल चूनेके पत्थरपर आसरे १० औंस पाणी धीमें २ डालना जब वराल वाफ निकल चूके ठंढाभये बाद छाणकर हवा न लागे इसतरे सीसीमें रखणा दवामें

उसका पाणी काम देता है, जिसकूं लाइम वाटर कहते हैं—कलीचूना १ औंस अच्छा पाणी ५ रत्तल मिलाकर नीतरणे देणा ऊपरका नितरा भया साफ जल लीले रंगकी मजबूत बुचवाली शीशीयोंमें भरके राखणा पित्तसे अजीर्ण होकर उलटी होती है, उसकूं ये पाणी मिटाता है, बच्चोके पेटमें पिया भया दूध टिकता नहीं तब उसकेसंग लाइमवाटर मिलाकर देणा तो पचता है, मात्रा वडेकूं १ ड्राम लाइमवाटर दूध अथवा कांजीमें बच्चेकूं १०-१५ बूंद दरवखत दूधकेसंग.

(४३८ लाक्टिक एसीड) मूत्रपिंडके रोगमें ए एसिड दिये जाता है, हाफणी कंठका रोग और गला बैठ जाता है, तब अठ गुणे पाणीमे डाल उसकी पींछी फिराणी.

(४३९ लाडेनम) अफीमका अर्क देखो ओपियम.

(४४० लीनसीड) देशी नाम अलशी-स्निग्ध तथा शोथहर है, पेशावके रोगोंपर दिये जाता है, दाह तथा चणखकूं शांत करता है, शरीरके जुदे २ भागका सोजा तथा गाठे गडगूमडपर उसकी पोटिस बांधे जाती है, इसके तेलकूं सालीनसीड ओइल कहते है.

(४४१ लीनीमेन्ट) इस बहार लगानेका तेल) प्रवाही लिनिमेन्ट बहोतसी दवाइयोंका बणता है, मुख्य २ लिनिमेन्ट इसमुजब होता है.

(१) लिनिमेन्ट ओफ एमोनिया) लायकर अमोनिया १ औंस अलशीका तेल ३ औंस.

(२) आयोडीन) आयोडीन १। औंस ग्लीसेराईन । औंस पोटास आयोडीड औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट १० औंस.

(३) एकोनाईट) बच्छनाग चूर्ण १० औंस कपूर १ औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट ३० औंस चूर्णकूं स्पिरिटमें ७ दिन भिगाकर पीछै छाण लेना पीछे कपूर मिलाना.

(४) ओपियम) अफीमका अर्क २ औंस लिनिमेन्ट ओफ सोप.

(५) टरपेन्टाइन) साबू २ औंस पाणी २ औंस कपूर १ औंस टरपेन्टाइन १६ औंस

(६) केम्फर) कपूर १ औंस अलशीका तेल ४ औंस.

(७) केम्फर (कम्पाउन्ड) कपूर २॥ औंस लवंडर १ ड्राम स्ट्रोंग सोल्युशन ओफ एमोनिया ५ औंस रेक्टी फाइड स्पिरिट १५ औंस.

(८) लीनीमेन्ट ओफ लाइम) चूनेका जल सालीड ओइल समवजन.

(९) क्लोरोफोर्म) २ औंस कपूरका लिनिमेन्ट २ औंस मिलाणा.

(१०) सोप) साबूका लीनीमेन्ट.

(११) मरक्युरी-१ औंस पारेका मलम १ औंस आमोनियाका सोल्युशन १ औंस कपूरकातेल गरमकर उसमें पारेका मलम मिलाणा पीछै आमोनिया मिलाणा

(४४२ लेमन)-देशी नाम नींबू) शीतल तथा खट्टा हे नींबू योगवाही हे. दवामें

इकेला नींबूका रस नहीं दिये चाहता उसका शरवत अर्क तेल वगेरे वापरते हैं, स्कर्वी (रक्तपित्तमें नींवु खानेसें फायदा होता है. (शरवत) नींबूकी छाल २ औंस नींबूका रस २० औंस वूरा २। सेर पहली नींबूका रस उकालना पीछै एक पात्रमें नीवूकी छाल धर उस-पर नींबूका उकाला भया रस डालना ठरे जहांतक रहणे देणा पीछे छाणकर वूरा मिला-कर धीमी आंचसें चासणी करणी.

(४४३ वेलेरियन) उष्ण वातहर तथा शूलहर है, हिस्टीरीया औरभी वायुके दुसरे चिन्होंमें दिये जाता है, मगजके रोगोंपर तथा चित्त भ्रम ऊपर इसकी अछी असर होती है, मात्रा टिंकचरकी १ से २ ड्राम.

(४४४ श्युगरलेड) (एसेरेट ओफलेड) इसके सुपेद टुकडे भया करते है, गुणमें ग्राही तथा शोथघ्न है मात्रा १ से ५ ग्रेन अतिसार मरोडा हैजा फेफसा होजरी मूत्रपिंड अथवा गर्भाशयमेंसे खून गिरता होय उसमें अछा फायदा करता है, दूखती आंख तथा खील गुरेजणीमें उसकी वूंदे डाली जाती है, उसका मलम खुजली जखमपर काम देता है.

(४४५ सल्फर) गंधक शुद्ध कियाभया अथवा गंधकके फूल दवामें काम देता है, चमडीके रोगोंमें उसका उपयोग होता है, दस्त साफ लाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन वचेकी मात्रा २ से ५ ग्रेन खुजलीके मलममें गंधक गिरता है, (सल्प्युरिक एसिड) (ओइल ओफ व्रिटिओल) शीतल पौष्टिक और ग्राही वुखार नाताकतीमें होता भया पसीना अतिसार वगेरे रोगोंमे चलता है, मात्रा २ से ३० वूंद ११ औंस अच्छा पाणी १ औंस सल्प्युरिक एसिड मिलानेसें डाइल्युट सलप्युरिक एसिड होता है वुखारमें इस एसिडका ५ से १० वूंद और क्किनाइन ३ से ६ ग्रेन मिलाकर देना अतिसारमें इसकी २० वूंद और लाडेन मना ५ से १० वूंद ४-५ रुपेभर जलमें मिलाकर पिलाना.

(४४६ स्ट्रीकनिया) कुचीलेका निखालस सत्व निकालते हैं, जिसमें पहोत जहरका असर होता है, गुण कुचीले मुजव मात्रा $\frac{1}{36}$ से $\frac{1}{12}$ ग्रेण.

(४४७ स्पिरिट दारू) आल्कोहोल याने ब्रांडी ये दारूका सत्व है, आल्कोहोलमें ८४ भागमें १६ भाग जलके मिलाणेसें रेक्टिफाइड स्पीरिट होता है, और ५ भाग रेक्टिफाईड स्पिरिटमें ३ भाग जलके मिलानेसे कृफ स्पिरिट वणता है, गिरणेसें लगी जो चोट छिलगया किचरके सूजगया होय तव जलकेसंग मिलाकर लगाना चाहिये वदनपर पत्थर गिरता है, तथा औरतोंके स्तनके वीट लियोंपर चीरे पडते हैं, उसपर जलके संग भीगा भया वस्त्र धराजाता है टींकचर वगेरे वणानेमें रेक्टिफाइड तथा कृफस्पिरिट इन दोनोंका उपयोग होता है, ये स्पिरिट मिश्री वगेरे पदार्थोंमेंसें यंत्रोंसें खेंचकर निकाले जाता है.

उसका पाणी काम देता है, जिसकूं लाइम वाटर कहते हैं-कलीचूना १ औंस अच्छा पाणी ५ रत्तल मिलाकर नीतरणे देणा ऊपरका नितरा भया साफ जल लीले रंगकी मजबूत बुचवाली शीशीयोंमें भरके राखणा पित्तसे अजीर्ण होकर उलटी होती है, उसकूं ये पाणी मिटाता है, बच्चोके पेटमें पिया भया दूध टिकता नहीं तब उसकेसंग लाइमवाटर मिलाकर देणा तो पचता है, मात्रा वडेकूं १ द्राम लाइमवाटर दूध अथवा कांजीमें बचेकूं १०-१५ बूंद दरवखत दूधकेसंग.

(४३८ लाक्टिक एसीड) मूत्रपिंडके रोगमें ए एसिड दिये जाता है, हाफणी कंठका रोग और गला बैठ जाता है, तब अठ गुणे पाणीमे डाल उसकी पींछी फिराणी.

(४३९ लाडेनम) अफीमका अर्क देखो ओपियम.

(४४० लीनसीड) देशी नाम अलशी स्निग्ध तथा शोथहर है, पेशाबके रोगोंपर दिये जाता है, दाह तथा चणखकूं शांत करता है, शरीरके जुदे २ भागका सोजा तथा गाठे गडगूमडपर उसकी पोटिस बांधे जाती है, इसके तेलकूं सालीनसीड ओइल कहते है.

(४४१ लीनीमेन्ट) इस बहार लगानेका तेल) प्रवाही लिनिमेन्ट बहोतसी दवाइयोंका बणता है, मुख्य २ लिनिमेन्ट इसमुजब होता है.

(१) लिनिमेन्ट ओफ एमोनिया) लायकर अमोनिया १ औंस अलशीका तेल ३ औंस.

(२) आयोडीन) आयोडीन १। औंस ग्लीसेराईन । औंस पोटास आयोडीड औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट १० औंस.

(३) एकोनाईट) बच्छनाग चूर्ण १० औंस कपूर १ औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट ३० औंस चूर्णकूं स्पिरिटमें ७ दिन भिगाकर पीछे छाण लेना पीछे कपूर मिलाना.

(४) ओपियम) अफीमका अर्क २ औंस लिनिमेन्ट ओफ सोप.

(५) टरपेन्टाइन) साबू २ औंस पाणी २ औंस कपूर १ औंस टरपेन्टाइन १६ औंस

(६) केम्फर) कपूर १ औंस अलशीका तेल ४ औंस.

(७) केम्फर (कम्पाउन्ड) कपूर २॥ औंस लवंडर १ द्राम स्ट्रोंग सोल्युशन ओफ एमोनिया ५ औंस रेक्टी फाइड स्पिरिट १५ औंस.

(८) लीनीमेन्ट ओफ लाइम) चूनेका जल सालीड ओइल समवजन.

(९) क्लोरोफोर्म) २ औंस कपूरका लिनिमेन्ट २ औंस मिलाणा.

(१०) सोप) साबूका लीनीमेन्ट.

(११) मरक्युरी-१ औंस पारेका मल्लम १ औंस आमोनियाका सोल्युशन १ औंस कपूरकातेल गरमकर उसमें पारेका मल्लम मिलाणा पीछै आमोनिया मिलाणा

(४४२ लेमन)-देशी नाम नींबू) शीतल तथा खट्टा हे नींबू योगवाही हे. दवामें

इकेला नींबूका रस नहीं दिये चाहता उसका शरबत अर्क तेल वगेरे वापरते हैं, स्कर्वी (रक्तपित्तमें नींबु खानेसें फायदा होता है. (शरबत) नींबूकी छाल २ औंस नींबूका रस २० औंस बूरा २। सेर पहली नींबूका रस उकालना पीछै एक पात्रमें नींबूकी छाल धर उसपर नींबूका उकाला भया रस डालना ठरे जहांतक रहणे देणा पीछे छाणकर बूरा मिलाकर धीमी आंचसें चासणी करणी.

(४४३ वेलेरियन) उष्ण वातहर तथा शूलहर है, हिस्टीरीया औरभी वायुके दुसरे चिन्होंमें दिये जाता है, मगजके रोगोंपर तथा चित्त भ्रम ऊपर इसकी अछी असर होती है, मात्रा टिंकचरकी १ से २ ड्राम.

(४४४ श्युगरलेड) (एसेरेट ओफलेड) इसके सुपेद टुकडे भया करते है, गुणमें ग्राही तथा शोथघ्न है मात्रा १ से ५ ग्रेन अतिसार मरोडा हैजा फेफसा होजरी मूत्रपिंड अथवा गर्भाशयमेंसे खून गिरता होय उसमें अछा फायदा करता है, दूखती आंख तथा खील गुरेजणीमें उसकी बूंदे डाली जाती है, उसका मलम खुजली जखमपर काम देता है.

(४४५ सल्फर) गंधक शुद्ध कियाभया अथवा गंधकके फूल दवामें काम देता है, चमडीके रोगोंमें उसका उपयोग होता है, दस्त साफ लाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन बच्चेकी मात्रा २ से ५ ग्रेन खुजलीके मलममें गंधक गिरता है, (सल्फ्युरिक एसिड) (ओइल ओफ व्रिटिओल) शीतल पौष्टिक और ग्राही बुखार नाताकतीमें होता भया पसीना अतिसार वगेरे रोगोंमे चलता है, मात्रा २ से ३० बूंद ११ औंस अच्छा पाणी १ औंस सल्फ्युरिक एसिड मिलानेसें डाइल्युट सलफ्युरिक एसिड होता है बुखारमें इस एसिडका ५ से १० बूंद और किनाइन ३ से ६ ग्रेन मिलाकर देना अतिसारमें इसकी २० बूंद और लाडेन मना ५ से १० बूंद ४-५ रुपेभर जलमें मिलाकर पिलाना.

(४४६ स्ट्रीकनिया) कुचीलेका निखालस सत्व निकालते हैं, जिसमें बहोत जहरका असर होता है, गुण कुचीले मुजब मात्रा $\frac{1}{36}$ से $\frac{1}{12}$ ग्रेण.

(४४७ स्पिरिट दारू) आल्कोहोल याने ब्रांडी ये दारूका सत्व है, आल्कोहोलमें ८४ भागमें १६ भाग जलके मिलाणेसें रेक्टिफाइड स्पीरिट होता है, और ५ भाग रेक्टिफाईड स्पिरिटमें ३ भाग जलके मिलानेसे क्रूफ स्पिरिट बणता है, गिरणेसें लगी जो चोट छिलगया किचरके सूजगया होय तब जलकेसंग मिलाकर लगाना चाहिये बदनपर पत्थर गिरता है, तथा औरतोंके स्तनके वीट लियोंपर चीरे पडते हैं, उसपर जलके संग भीगा भया वस्त्र धराजाता है टींकचर वगेरे बणानेमें रेक्टिफाइड तथा क्रूफस्पिरिट इन दोनोंका उपयोग होता है, ये स्पिरिट मिश्री वगेरे पदार्थोंमेंसें यंत्रोसें खेंचकर निकाले जाता है.

उसका पाणी काम देता है, जिसकूं लाइम वाटर कहते हैं—कलीचूना १ औंस अच्छा पाणी ५ रत्तल मिलाकर नीतरणे देणा ऊपरका नितरा भया साफ जल लीले रंगकी मजबूत बुचवाली शीशीयोंमें भरके राखणा पित्तसे अजीर्ण होकर उलटी होती है, उसकूं ये पाणी मिटाता है, बच्चोंके पेटमें पिया भया दूध टिकता नहीं तब उसकेसंग लाइमवाटर मिलाकर देणा तो पचता है, मात्रा वडेकूं १ ड्राम लाइमवाटर दूध अथवा कांजीमें बच्चेकूं १०-१५ वूंद दरवखत दूधकेसंग.

(४३८ लाक्टिक एसीड) मूत्रपिंडके रोगमें ए एसिड दिये जाता है, हाफणी कंठका रोग और गला बैठ जाता है, तब अठ गुणे पाणीमे डाल उसकी पींछी फिराणी.

(४३९ लाडेनम) अफीमका अर्क देखो ओपियम.

(४४० लीनसीड) देशी नाम अलशी-स्निग्ध तथा शोथहर है, पेशावके रोगोंपर दिये जाता है, दाह तथा चणखकूं शांत करता है, शरीरके जुदे २ भागका सोजा तथा गाठे गडगूमडपर उसकी पोटिस बांधे जाती है, इसके तेलकूं सालीनसीड ओइल कहते है.

(४४१ लीनीमेन्ट) इस बहार लगानेका तेल) प्रवाही लिनिमेन्ट बहोतसी दवाइयोंका वणता है, मुख्य २ लिनिमेन्ट इसमुजब होता है.

(१) लिनिमेन्ट ओफ एमोनिया) लायकर अमोनिया १ औंस अलशीका तेल ३ औंस.

(२) आयोडीन) आयोडीन १। औंस ग्लीसेराईन। औंस पोटास आयोडीड औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट १० औंस.

(३) एकोनाईट) वच्छनाग चूर्ण १० औंस कपूर १ औंस रेक्टीफाइड स्पिरिट ३० औंस चूर्णकूं स्पिरिटमें ७ दिन भिगाकर पीछे छाण लेना पीछे कपूर मिलाना.

(४) ओपियम) अफीमका अर्क २ औंस लिनिमेन्ट ओफ सोप.

(५) टरपेन्टाइन) साबू २ औंस पाणी २ औंस कपूर १ औंस टरपेन्टाइन १६ औंस

(६) केम्फर) कपूर १ औंस अलशीका तेल ४ औंस.

(७) केम्फर (कम्पाउन्ड) कपूर २॥ औंस लवंडर १ ड्राम स्ट्रोंग सोल्युशन ओफ एमोनिया ५ औंस रेक्टी फाइड स्पिरिट १५ औंस.

(८) लीनीमेन्ट ओफ लाइम) चूनेका जल सालीड ओइल समवजन.

(९) क्लोरोफोर्म) २ औंस कपूरका लिनिमेन्ट २ औंस मिलाणा.

(१०) सोप) साबूका लीनीमेन्ट.

(११) मरक्युरी-१ औंस पारेका मल्लम १ औंस आमोनियाका सोल्युशन १ औंस कपूरकातेल गरमकर उसमें पारेका मल्लम मिलाणा पीछे आमोनिया मिलाणा

(४४२ लेमन)-देशी नाम नींबू) शीतल तथा खट्टा है नींबू योगवाही है. दवामें

इकेला नींबूका रस नहीं दिये चाहता उसका शरवत अर्क तेल वगेरे वापरते हैं, स्कर्वी (रक्तपित्तमें नींबु खानेसें फायदा होता है. (शरवत) नींबूकी छाल २ औंस नींबूका रस २० औंस वूरा २। सेर पहली नींबूका रस उकालना पीछै एक पात्रमें नींबूकी छाल धर उसपर नींबूका उकाला भया रस डालना ठरे जहांतक रहणे देणा पीछे छाणकर वूरा मिलाकर धीमी आंचसें चासणी करणी.

(४४३ वेलेरियन) उष्ण वातहर तथा शूलहर है, हिस्टीरीया औरभी वायुके दुसरे चिन्होंमें दिये जाता है, मगजके रोगोंपर तथा चित्त भ्रम ऊपर इसकी अछी असर होती है, मात्रा टिंकचरकी १ से २ ड्राम.

(४४४ श्युगरलेड) (एसेरेट ओफलेड) इसके सुपेद टुकडे भया करते है, गुणमें ग्राही तथा शोथघ्न है मात्रा १ से ५ ग्रेन अतिसार मरोडा हैजा फेफसा होजरी मूत्रपिंड अथवा गर्भाशयमेंसे खून गिरता होय उसमें अछा फायदा करता है, दूखती आंख तथा खील गुरेजणीमें उसकी बूंदे डाली जाती है, उसका मल्लम खुजली जखमपर काम देता है.

(४४५ सल्फर) गंधक शुद्ध कियाभया अथवा गंधकके फूल दवामें काम देता है, चमडीके रोगोंमें उसका उपयोग होता है, दस्त साफ लाता है, मात्रा २० से ६० ग्रेन वच्चेकी मात्रा २ से ५ ग्रेन खुजलीके मल्लममें गंधक गिरता है, (सल्प्युरिक एसिड) (ओइल ओफ व्रिटिओल) शीतल पौष्टिक और ग्राही वुखार नाताकतीमें होता भया पसीना अतिसार वगेरे रोगोंमे चलता है, मात्रा २ से ३० वूद ११ औंस अच्छा पाणी १ औंस सल्प्युरिक एसिड मिलानेसें डाइल्युट सलप्युरिक एसिड होता है वुखारमें इस एसिडका ५ से १० वूंद और क्विनाइन ३ से ६ ग्रेन मिलाकर देना अतिसारमें इसकी २० वूंद और लाडेन मना ५ से १० वूंद ४-५ रुपेभर जलमें मिलाकर पिलाना.

(४४६ स्ट्रीकनिया) कुचीलेका निखालस सत्व निकालते हैं, जिसमें घहोत जहरका असर होता है, गुण कुचीले मुजव मात्रा $\frac{1}{36}$ से $\frac{1}{12}$ ग्रेण.

(४४७ स्पिरिट दारू) आल्कोहोल याने ब्रांडी ये दारूका सत्व है, आल्कोहोलमें ८४ भागमें १६ भाग जलके मिलाणेसें रेक्टिफाइड स्पीरिट होता है, और ५ भाग रेक्टिफाईड स्पिरिटमें ३ भाग जलके मिलानेसे क्रूफ स्पिरिट वणता है, गिरणेसें लगी जो चोट छिलगया किचरके सूजगया होय तव जलकेसंग मिलाकर लगाना चाहिये वदनपर पत्थर गिरता है, तथा औरतोंके स्तनके वीट लियोंपर चीरे पडते हैं, उसपर जलके संग भीगा भया वस्त्र धराजाता है टींकचर वगेरे वणानेमें रेक्टिफाइड तथा क्रूफस्पिरिट इन दोनोंका उपयोग होता है, ये स्पिरिट मिश्री वगेरे पदार्थोमेंसें यन्त्रोंसें खेंचकर निकाले जाता है.

(४४८ साइट्रीक एसिड) ये एसिड नींबूके रससें बणता है, गुण शीतल अम्ल बुखार उलटी तृषा पित्त और उष्ण वायुपर दिये जाता है, क्षारके योगमें वापरते हैं, साइट्रीक एसिडके एवजीमें नींबू काम दे सकता है.

(४४९ सालसापरिला) एकतरेके दरख्तकी जडकी छाल है, वो अमेरिकामेंसें आती है. अपणे देशमें अनंत मूल अथवा सारिवा उसबे नामकी दवामें जो गुण है, वो गुण इसमे हैं गुणमें शोधक स्वेदल पाचक पौष्टिक है उपदंश खून बिगाड संधिवायु तथा नाताकतीमें बापरते हैं. उसका एकस्ट्राकट तथा डिकोकशन (क्वाथ) दवा तरीके उपयोगमें लेते हैं, मात्रा २ से १० औंस.

(४५० साल एमोन्याक) (क्लोराइड ओफ एमोनिया) देशी नाम नो सादर देखो अेमोनिया.

(४५१ साल वोलेटाईल) (एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनियां) देखो एमोनिया.

(४५२ सिंकोना) सिंकोना पहली अमेरिकासे आताथा अब इहां पैदा होणेलगा इसवास्ते देशी दवामें लिखा है, पीछाडी देखो चाकाथ पतला घन टिंकचर वगेरे रूपसें वापरते हैं, मात्रा–टिंकचर की०॥ से २ ड्राम प्रवाही घनकी १ से २ औंस.

(४५३ सिडलिज पाउडर) सोडा तथा दुसरी कितनीक मिलावटसे ये चूर्ण वणता है, टार्ट रेटेड सोडा २ ड्राम और सोडा बाइ कार्बोनस ४० ग्रेन दोनोंकों मिलाणा और टार्टरिक एसिड ३० ग्रेणकी पुडी जुदी रखणी दोनोंकों जुदे २ जलमें गालकर पीछै दोनोंको एक जगे मिलाणेसे उफाण आवै सो झट पी जाणा.

(४५४ सीला) (स्कवील) एक तरेका कंद हे कफघ्न मूत्रल चूर्ण टिकचर तथा शरवत रूपसें वापरते है, मात्रा चूर्णकी १ से ३ ग्रेन टिंकचरकी १० से ३० बूंद शरवत की० ॥ से २ ड्राम.

(४५५ सेन्टोनीन) एक तरेके दरख्तके फूलमेसें रुसियामें वणती है, मुख्य गुण कृमिघ्न है, मात्रा २ से ६ ग्रेण बूरेके संग मिलाकर देतेहैं अथवा उसकी जुदी २ टिकडिया वणकर आती है सो खिलातेहैं सेन्टो नाइनसें पेटमें कृमी नहीं रहती लेकिन् उनोंकों पेटसें बाहर निकालणेकूं दुसरे दिन दस्तकी दवा देणी गोल चूरणियोंका पूरा इलाज है, सेन्टोनाइन लोझेन्जीस नामकी टिकडियां वजारमें विकती है ऊमर मुजब १ से ६ दिये जाती है, इसमें केलोमेलकी मिली भईभी टिकडिया आती है उससे दूसरे जुलाबकी जरूरी नहीं रहती इस दवासें कृमिया मिट तो जाती है लेकिन् आइंदेसे पैदा होती बंध नही होती कृमिका क्वाथ वगेरे कितनीक देशी कृमिहर दवायों ये काम करती है उसका फायदा बहुत है, लेकिन् वो लेती वखत मुस्किलहै ओर ये टिकडियां बूरेकी वनावट होणेसें बच्चे सहजमें खा सकते हैं.

(४५७ सेना) देशीनाम सोनामुखी) सोनामुखी रेचक है, इसका जुलाब सादा और निडर होणेंसें बच्चे वुड्ढे गर्भणी स्त्री और नाजुक प्रकृतिवालेकूं अछा है सोनामुखी-की चा—१ औंस सोनामुखीके पत्ते और ३० ग्रेन सूंठ दोनोंकों १० औंस ऊकलते जलमें डाल एक घंटाभर भिगाकर छाणकर लेणा मात्रा—१ से २ औंस इस चामे दूध मिलाकर पीणेसें सोनामुखीकी मकवो नही आती बच्चेकूं देणेवास्ते एक छोटा चमचा अथवा १ ड्राम सोनायके पत्ते ऊकलता पाणी ४ औंस दस मिनट ऊकालकर एक प्यालेमें निकाल जरा वूरा मिलाकर बच्चेकूं भूखे पेट फजरमे देणा ये जुलाब तीन वर्षकी ऊमर वाद देणा.

(४५७ सोडा) सोडेकी बहुत बनावट है सो थोडी नीचे लिखते हैं.

(१) कारबोनेट ओफ सोडा) (साजीखार) अम्लविरोधी शोधक अस्मरीघ्न आम्लपित्त अजीर्ण गोला पैसाबकी पथरी चूंक उलटी संधिवाय तथा चमडीके रोगोंमें फायदा करता है, मात्रा १० से ३० ग्रेण.

(२) वाई कारबोनेट ओफ सोडा) गुण ऊपर मुजब मात्रा १० से ६० ग्रेण.

(३) सोल्युशन ओफ सोडा) गुण उपर मु० मात्रा० ॥ से १ ड्राम.

(४) सोडावाटर) शीतल मूत्रल पाचक सारक सोडा तथा अेसिड टार्टरिककी मिलावटसे वणती है प्रमाण $\frac{1}{2}$ ड्राम और २५ ग्रेण अनुक्रमे देते हैं.

(५) सल्फेट ओफ सोडा) रेचक आम्ल विरोधी और थोडा मूत्रल मात्रा १ से ८ ड्राम ७ एपसम सोल्टके जैसा उसका फायदा है जादातर जुलाबवास्ते देते हैं, लेकिन् एपसम सोल्टसे ये दवा मंद रेचक होनेसें नाताकत मिजाजवालोंकों जादा माफगत आता है.

(६) फासफेट ओफ सोडा) रेचक मात्रा । से १ औंस.

(७) हाइपो फोसफेट ओफ सोडा) पौष्टिक तथा शोधक क्षय अशक्ति वादी मिरगी हांफणी दम श्वास वगैरेमें मात्रा ५ से १० ग्रेन

(८) क्लोराइड ओफ सोडा) (निमक) रेचक तथा कृमिघ्न है दुसरी दवायें वणाणेमें काम देती हैं.

(४५८) हाइड्रोक्लोरिक एसिड) म्पुरीयाटिक एसिड) निमकका तेजाब निमकसें वणता है दाहक तथा वहोत जहरी है उसमें तिगुणा पानी मिलानेसें म्युरियाटिक एसिड डिल्युट होता है ये प्रवाही पौष्टिक तथा खून शोधक है अजीर्ण नाताकतीपर देते हैं, मात्रा १० से ३० बूंद.

(४५९ हाइड्रोस्पानिक अेसिड (डिल्युट) हालाहल जहर है एक मिन्टमें मारताहै अजीर्ण उलटी आम्लपित्त खांसी वगेरेपर देते हैं मात्रा १० से ३० बूंद.

(४६० हाइपो फोसफेट ओफ लाईम) शोधक तथा पौष्टक है, खासी क्षय कफ और नाताकती वगैरे दरदोंपर ये दवा वहोत अछी निकली है और शरबतके जेसा स्वाद होणेसें पीणास० मात्रा ५ से १० ग्रेण.

रेचक तथा सारक.

४६१ पोडोफाइलम ½ ग्रेण कम्पाउन्डरुबार्बपिल २॥ ग्रेण हायोस्पामसका अेकस्ट्राकट १॥ ग्रेण अछीतरे मिलाकर १ गोली करणी रातकू लेणी जो साफ दस्त नहीं लगे तो फजरमें लेणी अथवा दस्तके खुलासा वास्ते नं० ४६३ की दवा अथवा साइट्रेट ओफ मेगनीशीया या सिडलीक पाउडर लेते हैं.

जुलावकी एसी एकभी दवा अभीतक नहीं निकली है सो सब अदम्योंकें उपयोगकी होय ऊपर लिखी गोली अछा जुलाव है सबकूं अछी है एसा नहीं है लेकिन् दस्तके खुलासा वास्ते ये गोली अछीहै एसा कह सकते हैं.

(४६२) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर २० वूंद डिस्टील्ड वोटर २ औंस मिलाकर एक वखत पीणा इससे दस्त साफ आता है, रातकूं लेकर फजरमें फेर लेणेसें मदत करती है जलदी दस्त लाणा होय तो ४ घंटेसे फेर लेणा सल्फेट ओफ सोडेकूं कमवेशी कर सकते हैं.

(४६३) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम क्विनाइन २० ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न १५ ग्रेण पाणी ८ ओंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा १ औंस दर ४ चार घंटे वदनमें ताकत रखकर दस्त लाती है तिल्ली तथा ऋतु बंधके रोगवाली स्त्रीकूं अछी है.

(४६३) सल्फेट ओफ सोडा ६ ड्राम डिल्युट सल्प्युरिक अेसिड १ ड्राम गुलाबके फूलकी चा ८ औंस मिलाकर मात्रा १ औंस दर ४ घंटे ग्राही शीतल शारक गर्भ गिरणा ऋतूका जादा खून गिरणा वहोत खून गिरणेके रोगोमें फायदेवंद है.

(४६५) सल्फेट ओफ मेग्निस्पा ६ ड्राम टिंकचर ओफ डिजी टेलिस ८ वूंद केम्फोर मिकश्चर २ औंस मिलाकर एक वखतमें पीणा दस्त साफ लाताहै खून गिरणेकूं बंध करता है दस्तकी कबजीका दम मगजपर खून चढणेके रोगमें अछा है.

(४६६) वाइ कारवोनेट ओफ मेग्निस्पा १० ग्रेण वाइ कारवोनेट ओफ सोडा ८ ग्रेण केम्पाउन्ड सेनामिकश्चर १ औंस एक वखत पीणा अम्लविरोधी सारक है अजीर्ण लिवरके रोगमें फायदेवंद है.

(४६७) पोडो फाइलम पाउडर ४ ग्रेण डिल्पुटना इट्रिक अेसिड २ ड्राम पाणी ३॥ औंस मिलाकर मिकश्चर वणाणा मात्रा १ वाइन ग्लास पाणीमें १ ड्राम मिकश्चर दिनमें तीन वेर लेणा लीवरमें फायदेवंद है.

(४६८) ल्युपील ५ ग्रेन केलोमेल ५ ग्रेन मिलाकर २ गोलियां करणी सख्त दस्त लाता है.

(४६९) व्ल्युपील ५ ग्रेन कम्पाउन्ड अेकस्ट्राक ट ओफ कोलोसिन्थ ५ ग्रेण मिलाकर दो गोलियां करणी मध्यम जुलाव लगाता है.

(४७०) कम्पाउन्ड अेकस्ट्राकट ओफ कोलोसिन्थ ५ ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्बपिल ५ ग्रेण मिलाकर दो गोलियां करणी हलका जुलाव होता है.

(४७१) केलोमेल ५ ग्रेण कम्पाउन्ड जालप पाउडर १ ड्राम मिलाकर फाकी करणी सख्त जुलाघ पाणी जेसा दस्त लाता है.

(४७२) पोडो फाइलम चूर्ण ३ ग्रेण कम्पाउन्ड एकस्ट्राकट कोलोसिन्थ ३० ग्रेण आइ पीकाक्यू आन्हा पाउडर ४ ग्रेण गूंदके जलमें घोट १२ गोलियां करणी एकेक गोली दिनमें दो वेर कलेजेके रोगमें कबजियतमें दस्त खुलास लाता है.

(४७३) पिलएलोझ अेन्ड मई ३ ग्रेण व्ल्युपील १ ग्रेण अेकस्ट्राकट टाराक साकम २ ग्रेण अेकस्ट्राकट ट्रेमोनियम (धतूरा) ½ ग्रेण अछीतरे मिलाकर दो गोली करणी ये गोलियां दमके रोगमें फायदेबंद है.

(४७४) सल्फेट ओफ आयर्न १ स्कुपल अेलियेका सत्व १५ ग्रेण रुवार्वका चूर्ण १ स्कुपल अछीतरे मिलाकर १२ गोलियें करणी मात्रा २ दो गोली नाताकत और कबजियतमें दस्त साफ लाणेवाली है.

(४७५) रुवार्व चूर्ण १ औंस सूंठका चूर्ण ½ औंस कारबोनेट ओफमेग्निस्या ३ औंस अछीतरे मिलाकर फकी करणी इसकूं ग्रेगरी पाउडर कहते हैं, मात्रा ½ ड्रामसें २ ड्राम पेपरमिंटके पाणीसें देणा.

अजीर्ण और होजरीके खटासमें होजरीके खुलासावास्ते ये चूर्ण अछा है, दो तीन वरसके बच्चोंकोंभी १० से १२ ग्रेन देनेसें हलका जुलाव.

वदनमें ताकत देनेवाली.

जो दवा वदनमें कौवत तथा जोर लावै उसकूं टोनिक कहते हैं इसतरेकी मिलावटी दवायें वदनमें क्षीणता लाणेवाले रोगोमें और कमजोरीमें दिये जाती है स्टिम्युलंट दवायें जिसमें इथर और आल्को होलका मुख्यतत्व होता है उससे टोनिक दवायें जुदीही समझणी.

(४७६) क्विनाइन २४ ग्रेन शेरीवाइन २ औंस डिस्टीलड वोटर ८ औंस मिकश्चर करणा मात्रा—दिनमें तीन वखत लेना एकेक औंस.

(४७७) क्विनाइन २४ ग्रेन नींबूकारस २ ड्राम डिस्टीलड वोटर ८ औंस मिलाकर मिकश्चर तैयार करणा मात्रा दर वखत एकेक औंस दिनमें तीन वखत.

(४७८) आइसींग्लास २ ड्राम मिश्री ब्रांडी १ औंस शेरी २ औंस जायफल १ चिपटी ऊकलता जल ४ औंस मिलाकर एक वखत पीजाणा अतिसारके दस्तमें फायदा देता है.

(४७९) क्विनाइन २० ग्रेन डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर ½ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिकश्चर बणाणा मात्रा दर तीन २ चार २ कलाकसें एकेक औंस.

(४८०) साइट्रेट ओफ आर्यर्न एन्ड क्विनाइन रस्कुपल डिस्टीलड वोटर ८ औंस दर तीन २ चार २ घंटेसें एकेक औंस दवा पीणी फेर मूं धोकर साफ करना.

(४८१) टिंकचर ओफ आयर्न [स्टीलवाइन] २ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस पांडु तथा नाताकतीवास्ते मात्रा दर तीन घंटेसें एकेक औंस दवा पीकर मूं धोणा.

टिंकचर ओफ आयर्नका स्वाद नहिं अछा लगे तो उसकी एवजीमें कारबोनेट ओफ आयर्न लेना मात्रा ५ से १० ग्रेन पाणीमें पीये अथवा बूरेकेसंग फक्कीभी लीजाती है.

(४८२) डाइल्युट नाइट्रिक एसिड २ ड्राम आदेका अर्क १ ड्राम पाणी अथवा नारंगीको छालकी चा ८ औंस मिकश्चर करणा दिनमें तीनवेर एकेक औंस लेणा मरोडा बुखारके पीछेकी नाताकतीमें टोनिक तरीके वापरणा.

(४८३) सल्फेट ओफ आयर्न ९ ग्रेन सल्फेट ओफ क्विनाइन १२ ग्रेन डाइल्युट-सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम सल्फेट ओफ सोडा १ औंस मिश्री २ ड्राम डिस्टील्ड वोटर १२ औंस मिकश्चर करणा दिनमें दो तीनवेर एकेक औंस पीणा कलेजा तथा स्पलीन (तिली) के रोगमें दस्त साफ लाकर ताकत बढाता है.

(४८४) सीरप आयोडाइड ओफ आयर्न १ औंस २ औंस जलमें त्रीस बूंद डालकर हमेस तीन वखत पीणा.

कफकूं तोडणेवाली श्वासनलीकूं फायदेवंद.

जो दवायों फेफसेमें जानेवाली श्वासनलीके अंदरके अस्तरपर तैसें कितनेक दरजे वदनके सामान्य चंधेजपर असर करके कफ श्लेपम खासी हाफणी और दमके रोगोंमें फेफसेमें जाणेवाली नलियों और फेफसेमें जानेवाला रसका रस्ता खुला करता है, उसकूं एक्सपेक्टोरन्ट कहते है, वो दो जातकी है, स्टिम्युलेटींग और डिप्रेसींग अर्थात् जुस्सेकूं चंधाने वाली, जुस्सेकू कम करनेवाली पहिले प्रकारकी दवामें एमोनिया ईथर स्क्विलस ओपीयम वगेरे है, और दुसरी दवामें टारटर एमेटिक और आइपिकाक्युआन्हा है, पहिले प्रकारकी दवायें मुख्यपणे करके वडी ऊमरके रोगीयोंके श्वासनलीके रोगोंपर और दुसरे प्रकारकी दवायें छोटी ऊमरके रोगियोंकूं दी जाती है.

(४८५) एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक

इथर ४ ड्राम टिंक्चर ओफ जींजर १ ड्राम पाणी ५॥ औंस मिकश्चर करणा उसमेंसें दर दो तीन घंटेसें एकेक औंस पीणा दमके जोरमें पुराणी हांफणीमें.

(४८६) पेरेगोरिक ३ ड्राम आइपीकाक्यु आन्हा वाईन २ ड्राम स्पिरिट नाइट्रिक इथर ३ ड्राम पाणी ७ औंस मात्रा १ औंस दर तीन या चार घंटेके फासलेसें कफ श्वास-नली और फेफसेमें फायदा करता है बच्चोंका कफ खास हांपणी फेफसेका वरम वायु नलीके सोजेके सरुआतमें वो थोडी मात्रा देते हैं, एक वर्षके बच्चेकूं १ ड्राम दो वर्षकूं १॥ ड्राम देते हैं.

(४८७) केम्फोर (कपूर) १ ग्रेण आइपीकाक्यु आन्हा चूर्ण ३ ग्रेन जरा गूंदके पाणीसें छोटी १ गोली करणी दमके रोगमें दर दो दो घंटेसे लेणा.

(४८८) टार्टर एमेटिक १ ग्रेण पेरोगोरिक २ ड्राम डिस्टीलकरा ऊकलता पाणी १२ औंस मिलाकर ठरणे देणा दर दो या तीन घंटेसे एकेक औंस पीणा हांफणी फेफ-सेका सोजा फेफसेके पुडका सोजा कंठ नलीके सोजेमें फायदा करता है.

(४८९) पेरोगोरिक ३ ड्राम आइपीकाक्युआन्हावाइन २ ड्राम टिंकचर शीला बाइकारबोनेट ओफ सोडा २ स्क्रुपल पाणी ८ औंस इन सबोंकूं मिलाकर दर दो या तीन घंटेसें एकेक औंस पीणा श्लेष्म हांफणी और खासकरके उसकेसंग जब अजीर्ण और होजरीमें खट्टापणा बढे तब ये बहोत फायदा करती है, बच्चोंकों भी ये फायदा करती है.

(४९०) कारबोनेट ओफ मेगनिस्या २५ ग्रेन पेपरमिंटका तेल २ बूंद डिस्टील्ड वोटर १ औंस मात्रा १ ड्राम दिनमें तीन या चार वखत खुलखुलिया खासीमे १ सें २ वर्षके बच्चेकूं दवा निकालती वखत सीसी हलानी.

(४९१) सल्फेट ओफ झींक २ ग्रेन पेरेगोरिक ६० बूंद पाणी १॥ औंस मात्रा एकसे दो वरसके बच्चेकूं खुलखुलिये खासीमें १ ड्राम दर चार २ घंटेसें.

(४९२) एकस्ट्राकट ओफ कोनायम ३ ग्रेन डिस्टील्ड वोटर १॥ औंस ऊपर मुजब देना.

धीरे २ फायदा करनेवाली.

जो दवायें खूनकी स्थितिमें फेरफार करनेवास्ते अथवा कलेजा और आंतरडोके रसोंकी स्थिती बदलनेवास्ते जादा या कम मात्रामें बहोत मुदततक देनेमें आती है, वो ओल्टरेटिव्स कहाती है, नीचै लिखते हैं.

(४९३) डोवर्स पाउडर १० ग्रेन क्विनाइन ३ ग्रेन आइपीकाक्यु आन्हापाउडर १ ग्रेन फक्की बनानी सोते वखत लेनी दस्त मरोडा कलेजेके रोगोंमें दिये जाता है, जो उलटी अथवा बेचेनी होय तो तीसरी दवा निकाल फकत दोयही देनी.

(४९४) डोवर्स पाउडर ४ ग्रेन क्विनाइन ३ ग्रेन ये चूर्ण तीन बखत दिनमें देना
। ऊपर मुजब.

(४९५) आइपीकाक्युआन्हा १ ग्रेन डोवर्स पाउडर २ ग्रेन कीनाइन १ ग्रेण
वर्षके बच्चेकों फजर सांझ लिखे मुजब मात्रा देनी एक वर्षके बच्चेकूं आधी मात्रा
महीने वालेकूं चोथा हिस्सा बुखार दस्तमें.

(४९६) लाइमवोटर २ क्वोटर्स पाणीमें एक औंस कली चूना धरना थोडे घंटे
कर ऊपर नीतरा साफ जल होय उसकूं लाइम वाटर कहते हैं, मात्रा १ से ३
स बच्चेके दांत आते अतीसार मरोडा अपच्चा हेजेमें देते हैं. बच्चेकूं हमेस खुराकके
। बहोत वेर देते हैं.

(४९७) बाइकारबोनेट ओफमेगनिस्या १५ ग्रेन एनीसिड ओइल २ बूंद डिस्टी-
वोटर १॥ औंस चरबी अथवा वादीवाले बच्चेकुं ६ से १२ महीनेकी ऊमरतक १
म ६ महीनेसें छोटे बच्चोंकूं ॥ ड्राम गर्भनीके बेमारीमें एक वखत सब देनी.

(४९८) केलोमेल २ ग्रेण अफीमका सत्व ⅛ ग्रेण दोनों मिलाकर एक गोली क-
ी मात्रा तीन चार घंटेके फासलेसें एकेक गोली सखत सोजेका रोग होय जब वदनमें
रेकी जरूरत पडे तव थे गोली देते हैं, इससें मूं आता है.

(४९९) ब्ल्यु पिल्स २ ग्रेण एक स्ट्राकट ओपियम आइपीकाक्यु आन्हा पाउडर
ग्रेण मिलाकर इसकी गोली वणाणी एसी १ गोली दर तीन ३ घंटेसे देणी मरोडेमें
ा सखूत अतिसारमें फायदे वंद है.

(५००) आयोडाइट ओफ पोटाशीयम १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस उपदंशके
गमें दिनकों तीन वखत हर वखत १ औंस.

(५०१) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम १ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस हिचकी तथा
इमें दी जाती है मात्रा १ औंस दिनमें तीनवेर ऊपरकी दो यादीमें दो पोटाश आयो-
ईड और ब्रोमाइड लिखाहै, दोनोकूं कैइयकदिन कितनेक अठवाडियेतक बहोतसा
में लेणेंसें शिरमें शरदी पैदा होती है गला आजाता है. और वदनपर छोटी २ फुन-
ये फूटकर निकलती है एसी हालत वणे तव दवा वंधकर देणी.

(५०२) रुवार्वका चूर्ण १ स्कुपल सल्फेट ओफ सोडा १ स्कुपल एरोमेटिक स्पिरिट
फ एमोनिया ½ ड्राम पेपरमेंट ओइल १ बूंद पाणी २ औंस इन सर्वोकों मिलाकर
कही वखत ले लेणा होजरीमें खटास भया होय अथवा गर्भावस्थामें उलटी होयतो देतेहैं.

(५०३) सोल्युशन ओफ पोटाश १ ड्राम टिंकचर हायोस्पामस २ ड्राम टिंकचर
कोना २ ड्राम इन्फयुझन बुकु ६ औंस मूत्राशयके पुराणे मरजमें देते हैं. मात्रा एकेक
ंस दिनमें तीन वखत.

(५०४) टार्टरिक (साइट्रिक) एसिड २ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिलाकर उफाण आवै उसकूं वैठणे देणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीनवेर रक्तपित्तके रोगमें देणा.

(५०५) वाइकारवोनेट ओफ सोडा २ ड्राम कोलचीकमवाईन २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ ड्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा एकेक औंस दिनमे तीन वखत पीणा नजला तथा संधिवायुमें देतें हैं.

(५०६) वाईकारवोनेट ओफ सोडा २ ड्राम टींकचर रुवार्व ०॥ औंस टिंकचर जींजर १ ड्राम स्पिरिट क्लोरो फोर्म १ ड्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा मात्रा दिनमें तीन वखत एकेक औंस कामला रोगमें देणा.

(५०७) एकस्ट्राकट ओफ टारकसाकम २ ड्राम डाइल्युट म्पुरी आटि एसिड १ ड्राम ईन्फयुझन ओफ जनश्यन ८ औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत सीसी हिलाकर दवा निकालणी पांडू तथा लीवरके दुसरे विकारमें उपयोगी है.

(५०८) डाईल्युट नाइट्रिक एसिड १ ड्राम डाईल्युटम्पुरी एटिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कलेजेके रोगमें उपयोगी है ये दवा पीकर मूं धोडालणा.

(५०९) वाईकारवोनेट ओफ पोटाश १ ड्राम नाइट्रेट ओफ पोटास ०॥ ड्राम टिंकर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टीलडवोटर ८ औंस एकेक औंस दिनमें तीन वखत ये मिलावट चमडीके रोगमें वाहर लोशन तरीके लगाणेमें वापरते है.

(५१०) वाइकारवोनेट ओफ पोटास १ ड्राम नाइटेट ओफ पोटाश ०॥ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अपचा तथा संधिवायुमें जव पैसाव वहोत थोडा उतरे तथा वहोत लाल उतरे तव ये उपयोगी है.

(५११) वाइकारवोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण साइट्रीक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस पाणीमें पहली दवाकूं मिलाकर पीछे पीते वखत दुसरी दवा मिलाकर पीजाणा होजरीका खटास मिटाती है.

(५१२) वाईकारवोनेट ओफ सोडा १७ ग्रेण साइट्रिक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस सोडावाटर उपयोग ऊपर मुजव.

(५१३) वाईकारवोनेट ओफ सोडा २ ड्राम टार्टरिक एसिड १ ड्राम पाणी ८ औंस जलमे २ ड्राम सोडेकूं पिघलाकर शीशीमें भरके रखणा ४ औंस जलमें १ ड्राम एसिड मिलाकर दुसरी शीशीमें भरडालणा मात्रा एक औंस सोडा मिकश्चर और ०॥ औंस एसिड मिकश्चर दोनोंकों मिलाकर पीणा चुखार तथा गर्भणीके उलटी वगेरे रोगोंमे फायदेवंद है.

(४९४) डोवर्स पाउडर ४ ग्रेन किनाइन ३ ग्रेन ये चूर्ण तीन वखत दिनमें देना गुण ऊपर मुजब.

(४९५) आइपीकाक्युआन्हा १ ग्रेन डोवर्स पाउडर २ ग्रेन कीनाइन १ ग्रेण दो वर्षके बच्चेकों फजर सांझ लिखे मुजब मात्रा देनी एक वर्षके बच्चेकूं आधी मात्रा ६ महीने वालेकूं चोथा हिस्सा बुखार दस्तमें.

(४९६) लाइमवोटर २ कोटर्स पाणीमें एक औंस कली चूना धरना थोडे घंटे रखकर ऊपर नीतरा साफ जल होय उसकूं लाइम वाटर कहते हैं, मात्रा १ से ३ औंस बच्चेके दांत आते अतीसार मरोडा अपच्चा हेजेमें देते हैं. बच्चेकूं हमेस खुराकके संग बहोत वेर देते हैं.

(४९७) बाइकारबोनेट ओफमेगनिस्या १५ ग्रेन एनीसिड ओइल २ बूंद डिस्टी-ल्डबोटर १॥ औंस चरबी अथवा वादीवाले बच्चेकुं ६ से १२ महीनेकी ऊमरतक १ द्राम ६ महीनेसें छोटे बच्चोंकूं ॥ द्राम गर्भनीके बेमारीमें एक वखत सब देनी.

(४९८) केलोमेल २ ग्रेण अफीमका सत्व १/४ ग्रेण दोनों मिलाकर एक गोली क-रणी मात्रा तीन चार घंटेके फासलेसें एकेक गोली सखत सोजेका रोग होय जब वदनमें पारेकी जरूरत पडे तब थे गोली देते हैं, इससें मूं आता है.

(४९९) ब्ल्यु पिल्स २ ग्रेण एक स्ट्राकट ओपियम आइपीकाक्यु आन्हा पाउडर १/४ ग्रेण मिलाकर इसकी गोली वणाणी एसी १ गोली दर तीन ३ घंटेसे देणी मरोडेमें तथा सख्त अतिसारमें फायदे बंद है.

(५००) आयोडाइट ओफ पोटाशीयम १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस उपदंशके रोगमें दिनकों तीन वखत हर वखत १ औंस.

(५०१) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम १ द्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस हिचकी तथा वाइमें दी जाती है मात्रा १ औंस दिनमें तीनवेर ऊपरकी दो यादीमें दो पोटाश आयो-डाईड और ब्रोमाइड लिखाहै, दोनोकूं कैइयकदिन कितनेक अठवाडियेतक बहोतसा पेटमें लेणेंसें शिरमें शरदी पैदा होती है गला आजाता है. और वदनपर छोटी २ फुन-सिये फूटकर निकलती है एसी हालत वणे तब दवा बंधकर देणी.

(५०२) रुवार्चका चूर्ण १ स्कुपल सल्फेट ओफ सोडा १ स्कुपल एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १/२ द्राम पेपरमेंट ओइल १ बूंद पाणी २ औंस इन सबोंकों मिलाकर एकही वखत ले लेणा होजरीमें खटास भया होय अथवा गर्भावस्थामें उलटी होयतो देतेहैं.

(५०३) सोलपुशन ओफ पोटाश १ द्राम टिंकचर हायोस्पामस २ द्राम टिंकचर सींकोना २ द्राम इन्फयुझन वुकु ६ औंस मूत्राशयके पुराणे मरजमें देते हैं. मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत.

(५०४) टार्टरिक (साइट्रिक) एसिड २ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस मिलाकर उफाण आवै उसकूं वैठणे देणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीनवेर रक्तपित्तके रोगमें देणा.

(५०५) वाइकारवोनेट ओफ सोडा २ ड्राम कोलचीकमवाईन २ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ ड्राम डिस्टील्डवोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा एकेक औंस दिनमे तीन वखत पीणा नजला तथा संधिवायुमें देतें हैं.

(५०६) वाईकारवोनेट ओफ सोडा २ ड्राम टींकचर रुवार्व ०॥ औंस टिंकचर जींजर १ ड्राम स्पिरिट क्लोरो फोर्म १ ड्राम डिस्टील्डचोटर ६ औंस मिकश्चर तइयार करणा मात्रा दिनमें तीन वखत एकेक औंस कामला रोगमें देणा.

(५०७) एकस्ट्राकट ओफ टारकसाकम २ ड्राम डाइल्युट म्पुरी आटि एसिड १ ड्राम ईन्फयुझन ओफ जनश्यन ८ औंस तीनोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत सीसी हिलाकर दवा निकालणी पांडू तथा लीवरके दुसरे विकारमें उपयोगी है.

(५०८) डाईल्युट नाइट्रिक एसिड १ ड्राम डाईल्युटम्पुरी एटिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मिलाकर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कलेजेके रोगमें उपयोगी है ये दवा पीकर मूं धोडालणा.

(५०९) वाईकारवोनेट ओफ पोटाश १ ड्राम नाइटेट ओफ पोटास ०॥ ड्राम टिंकर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डचोटर ८ औंस एकेक औंस दिनमें तीन वखत ये मिलावट चमडीके रोगमें वाहर लोशन तरीके लगाणेमें वापरते हैं.

(५१०) वाइकारवोनेट ओफ पोटास १ ड्राम नाइटेट ओफ पोटाश ०॥ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अपचा तथा संधिवायुमें जव पैसाव वहोत थोडा उतरे तथा वहोत लाल उतरे तव ये उपयोगी है.

(५११) वाइकारवोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण साइट्रीक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस पाणीमें पहली दवाकूं मिलाकर पीछे पीते वखत दुसरी दवा मिलाकर पीजाणा होजरीका खटास मिटाती है.

(५१२) वाईकारवोनेट ओफ सोडा १७ ग्रेण साइट्रिक एसिड १४ ग्रेण पाणी २ औंस सोडावाटर उपयोग ऊपर मुजव.

(५१३) वाईकारवोनेट ओफ सोडा २ ड्राम टार्टरिक एसिड १ ड्राम पाणी ८ औंस जलमे २ ड्राम सोडेकूं पिघलाकर शीशीमें भरके रखणा ४ औंस जलमें १ ड्राम एसिड मिलाकर दुसरी शीशीमें भरडालणा मात्रा एक औंस सोडा मिकश्चर और ०॥ औंस एसिड मिकश्चर दोनोंकों मिलाकर पीणा वुखार तथा गर्भणीके उलटी वगेरे रोगोंमे फायदेवंद है.

(५१४) सोडामिकश्चर १ औंस क्लोरो फोर्म २० बूंद ऊपर लिखे मुजब तइयार किया भया सोडा मिकश्चरमें क्लोरा फोर्म मिलाणा इसकूं पीते वखत हिलाणा गर्भणीके रोगमें बदहजमीमे और दरियावकी मुसाफरीमें उलटी होती है उसमें बहुत उपयोगी है.

स्तंभनदवायें.

जो दवाये शरीरके जुदे २ भागोपर असर करके रसोत्पादक क्रियाकूं कम करती है तथा खून वहणेवाली नसोके मूंकूं संकोच खूनके प्रवाहकूं बंध करती है वोजातकी एस्ट्रीन्‌जन्टस कहते हैं आयर्न एलम लेड गेलिक एसिड चोक ओपीयम ये सब इस वर्गकी दवायों है.

(५१५) एलम (फिटकडी) का भूका १ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस पाणीमे फिटकडीकूं मिलाकर उसमेंसें दर ४ घंटेसें एकेक औंस पीणा गर्भगिरता और फेफसेके रक्त गिरणेमें उपयोगी है रक्त प्रदर पुराणे मरोडेमें फायदेवंद है.

(५१६) डाइल्युटसल्पयुरिक एसिड १॥ ड्राम टिंकचर ओफ जींजर १ ड्राम पाणी ८ औंस मिलाकर दर चार २ घंटेसे एकेक औंस पीणा गर्भश्राव फेफसेका खून गिरणा में फायदेवंद है पीकर मूं साफ धोडालणा.

(५१७) एसटेड ओफ लेड ३ ग्रेण टिंकचर ओपियम ५ बूंद डिस्टील्डवोटर १॥ औंस मिलाकर एक वखत पीणा इतने प्रमाण तीन २ घंटेसें लेणा फेफसेमेंसे खून गिरे उसमें देते हैं.

(५१८) डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड २५ बूंद टिंकचर ओपियम ८ बूंद पाणी १ औंस हरवखत इस वजनसें दिनमें तीन वेर पीणा फेफसेमेंसें तथा होजरीमेंसें खून गिरता होय मरोडेके खून गिरणेमें देते हैं १ वर्षके बच्चेकूं इस मिलावटमेंसे १ ड्राम देणा.

(५१९) गेलिक ऑसिड ५ ग्रेण पाणी २ औंस दरवखत इस वजन मुजब दिनमे तीनवखत लेणा फेफसेका खून गिरणा होजरीका खून गिरणा रक्तपित्त अतिसार और मरोडेमें फायदेवंद है.

(५२०) एसेटेट ओफ लेड ३ ग्रेण एकस्ट्राकट ओपियम $\frac{1}{4}$ ग्रेण मिलाकर एक गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमें तीन वखत लेणी कोईभी तेरेसें खून गिरणेमें अतिसार तथा मरोडेमें फायदेवंद है.

(५२१) पल्वीसक्रीटा एरोमेटिकक्रम ओपियम ५ ग्रेण बाइकारवोनेट ओफ सोडा १ ग्रेण एलम (फिटकडी) का भूका $\frac{1}{3}$ ग्रेण तीनोकी १ पुडी करणी बचोके अतिसार तथा मरोडेमें फायदेवंद है मात्रा १॥ सें २ वरसके बच्चेकूं ७ ग्रेण १ व रसवालेकूं ३॥ ग्रेण ६ महीनेकूं १॥ ग्रेण.

(५२२) अफीमका सत्व ॥ ग्रेण चोक २४ ग्रेण मिश्री २४ ग्रेण और ६ महीने-तक $\frac{1}{8}$ पुडी दर एक पुडी अछीतरे मिलाकर १२ पुडी करणी मात्रा १ वरसके वच्चेकूं एक २ पुडी चार २ घंटेसे एक वरसके अंदर $\frac{1}{3}$ पुडीमें $\frac{1}{24}$ ग्रेण अफीम आता है वच्चोंका मरोडा तथा अतीसारमें फायदेवंद है.

उत्तेजक तथा शांत दवायोंका योग.

जिस दवायोंके योगसें शरीरमें जाग्रती होकर रोग शांतपडे एसी दवायोंका ऊपर लिखासो नाम है, जिस रोगके शरीरकी पीडाके संग मूर्छाके अथवा नाताकती मालमपडे उस रोगमें ये दवायें दी जाती है, एसे रोगोंमे अतिसार हैजा आंकसी दरदके संग ऋतु धर्म आणा और अजीर्ण (डिस्पेपस्पा) के कितनेकोंका समावेश होता है.

(५२३) क्लोरोफोर्म १ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रीक इथर १ ड्राम ब्रांडी १ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा १ प्याले जलमें १ ड्राम मिली दवा लेकर पीणी छ महीनेके वच्चोंकू ३ से ४ वूंद १ वरस वालेकूं ६ से ७ वूंद २ वर्षके वच्चेकूं १० से १२ वूंद थोडे जलके संग अतिसार तथा मरोडा इस दवाकूं मजवूत वुचकी शीशीमें भरके रखणी और लेती वखत शीशीकूं हिलाणी.

(५२४ क्लोरोफोर्म १ ड्राम एरोमेटिक स्पिरिट ओफ एमोनिया १ ड्राम क्लोरोडाइन २ ड्राम ब्रांडी १ औंस मात्रा एकेक चिमचाभर दवा चहिये जितने पाणीमें पीते वहोत सखतपणा नहीं मालम पडे इतना पाणी डालणा उपयोग ऊपरकी मिलावटमुजव.

(५२५) चोक १ ड्राम एरोमेटिक् स्पिरिट ओफ एमोनिया २ ड्राम टिंकचर ओपि-यम ४० वूंद केम्फर मिकश्चर ८ औंस मिलाकर मिकश्चर तइयार करणा मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत अजीर्ण तथा अतिसारमें उपयोगी है.

(५२६) वेन्झोइक एसिड १ ड्राम कारवोनेट ओफ एमोनिया १ ड्राम पाणी ८ औंस मात्रा एकेक औंस दिनमें तीन वखत कितनीक तरेके संधिवात मूत्राशयके कित-नेक विकारोंमें उपयोगी है.

(५२७) एकस्ट्राकट कोनायम ३ ग्रेण एकस्ट्राकट हेम्प (गांजा) $\frac{1}{8}$ ग्रेण के-म्फर (कपूर) १ ग्रेण इन तीनोंकी गोली करणी एकेक गोली दिनमें तीन वखत लेणी दम तथा आंकसीके संग हांफणीमे देते हैं.

पिसाव लाणेवाली मिलावटी दवा.

जो मिलावटी दवायें मूत्राशय और मूत्रके रस्तेपर असर करके पेसावके जत्थेकूं व-ढाती हे, वो डायुरेटिक्स कहाती है, जुदे २ जलोदरमें ये दवायें वहुत उपयोगी है, वुखार संधिवाय नजला और अजीर्ण जिसमें पेशाव थोटा और लाल ऊतरता है. एसे

रोगोंमेंभी फायदेबंद है, इस किसमकी दवायोंमें नाइट्रेट ओफ पोटाश स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर कोलशीकम वगेरे मुख्य है.

(५२८) नाइट्रेट ओफ पोटाश १ ड्राम स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर २ ड्राम वाईन ओफ कोलशीका २ ड्राम पाणी ८ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा–एकेक औंस दिनमें तीन वखत है, संधिवायुमें उपयोगी है.

(५२९) नाइट्रेट ओफ पोटाश १० ग्रेण बाइकारबोनेट ओफ पोटाश १ स्कुपल मिश्री २ ड्राम इनोंकी १ पुडी करणी एसी एकेक पुडी दिनमें तीन वेर जवके पाणीके संग लेणा.

(५३०) नाइट्रेट ओफ पोटाश २ स्कुपल स्पिरिट ओफ नाइट्रेक इथर २ ड्राम टिंकचर ओफ केन्थारीडीस २ ड्राम पाणी ८ औंस चारोंकों मिलाणा मात्रा एकेक औंस दवा दिनमें तीन वखत हैजेमें जब पेसाब बंध होय तब ये दवा देणी.

नींद लाणेवाली दवा.

जो दवायें रोगकी पीडाकूं कम करके नींद लाती है, उसकूं हीपनोटिकस कहते हैं, एसी दवायोंमें मुख्य ओपियम मोफर्या क्लोरल वगेरे है जादा मात्रामें ये सब दवाये जहरहै इसवास्ते सावचेतीसें वरतणा.

(५३१) क्लोरल २० ग्रेण पाणी १॥ औंस इस वजनमुजब एक अथवा जादा वखत देणी.

कितनेक रोगोंमें अफीमके एवजीमें क्लोरल दिये जाता है, जो क्लोरलके २० ग्रेण नींद लाणेकूं पूरी नहीं होय तो दरेक वखतमें पांच २ ग्रेणकुं वढा २ कर आखर ४० ग्रेणतक मात्रा वढ शकती है, ५।१० ग्रेन जितनी मात्रामें क्लोरल नशोंकों शांत करताहै, वो मिश्री तथा पाणीके संग दिये जाता है.

(५३२) हाइड्रोक्लोरेट ओफ मोफर्या ½ ग्रेण रेक्टीफाइड स्पिरिट ओफ वाइन १० बूंद पाणी १ औंस तीनोंकों मिलाकर एक वखत पीणा नींद लाणेकों सख्त दवाकी जरूरत पडे तब ये दवा देणी जब आंतरेमें कोइ हरकत होय अथवा धनुप वायके जोरमें.

उलटी कराणेवाली.

होजरीकूं संकुडाकर उछाला तथा उलटीकूं पेदाकर होजरीमेंकी चीजकूं गलेसें बाहिर निकाले एसी दवाकूं इमेटिक्स कहते हैं, साधारण वरतणेमें उलटीकी दवा आइपीकाक्युआन्हा टार्टर इमेटिक और सल्फेट ओफ झिंकहै उलटीकी क्रियाका जोर वढाणेकूं गरम पाणी दिये जाता है, उलटीकी दवा लियेवाद उलटी खुलास नहीं होयतो गलेमें पींछी फेरणी तब जोरसे कै होती है, राइ और और निमकसें भी उलटी हो जाती है, वेर २ देणेसें दुसरी दवा नहीं मिले तब इसमेंकी जो चीज हाजर होय

उसकूं उलटी लाणे वास्तै उपयोग करणा एक क्वोर्ट गरम जलमें अंदाजन १॥ औंस निमक मिलाकर पीजाणा उलटीकी दवा मुख्य करके जहर खायेकूं और गलेके रोगमें दी जातीहै किसी २ वखत बुखारमें पित्तकूं निकालणेवास्तेभी उलटी दी जाती है टार्टरइ-मेटिककी उलटी लेणेसें रोगी गभराज जाता है और मूर्छा आ जाती है इस वास्ते वहुत छोटी उमरमें वहुत वृद्धावस्थामें और वहुत ना ताकतमें इसका उपयोग बिलकुल नही करणा.

(५३३) राइका आटा टेवलस्पून फूलयाने ॥ औंस सादा निमक १ टीस्पूनफुलयाने १ द्राम गरम पाणी १० सें १२ औंस एक वखतमें पीजाणेसें पांच मिनटमें उलटी होगी-

स्थानिक इलाज.

स्थानिक इलाजोमें गरम पाणीकी वाफ पोल्टास ठंढे जलका भीगा कपडा दरद दवाणेका उपचार उत्तेजक उपचारस्तंभक उपचार फफोला उठाणेवाला इलाज पिचकारीका समावेश हो सकता है.

गरम उपचार.

(५३४ थूलीकी पोल्टीस)-शण अथवा फुलालीनकी कोथली वणाणी और आधी थूलीसें भरणी पीछै थूली भीज जाय इतना उकलता पाणी कोथलीपर डालणा थेलीका भीगासवाला भाग चूस लेणेकूं उसकूं जाडे कपडेके रुमालपर धरणी पीछे दुखती जगेपर उसकी पोटली गरम २ धर देणी उसपर सूका रुमाल लपेटना.

(५३५) रोटकी पोल्टीस-एक बासणमें १० औंस गरमकल २ ता पाणी डालणा पाणीमें मिले इतना रोटीका टुकडा डालणा और पांच मिनट भिगाये रखणा पीछे पाणीकूं छाण लेणा भीगे टुकडोकों शणके टुकडोपर धरके दरदकी जगेपर धरणा वहोतसे लोक इसके वदले गेहूंके आटेकूं वाफ करके उसकी पोल्टीस करते है वोभी एसाही गुण करती है.

(५३६ अलशीकी पोल्टीस)-कूटीभई अलशी अथवा उसके आटेकूं उकलते जलमें वाफकर उसकूं गरमपाणीमें निकालकर कपडेके बीचमें देकर गरमागरम दुखते भागपर बांध देणा.

(५३७ भीगाशेक-फुलालीनको एक कपडेका दो चार घडी कर उसकूं गरम पाणीमें भिगाकर वाहिर निकाल न चोडकर वो कपडा रोगीसे सहाजाय एसा गरमागरम दुखती जगेपर धरणा और उसपर रुमाल लपेटणा दुसरा फुलालीनका टुकडा गरम पाणीका भिजाया तइयार रखणा अगला ठंडा पडाके तुरत निकालकर दुसरा कपडा उसपर गरम अगली तरे लगा देणा इसतेर शेक करते जाणा दरद जादा होयतो सादे पाणीकी जगे अफीमके डोडेकूं उकाल उसके पाणीमें भिगाकर शेक करणा.

(५३८ सूका शेक)—भीगे सेकके बदले कितनीक जगे सूका शेक करणेकी जरूरत पडती है फलालेणमें रेती इंट थूली इसमेकी कोइभी एक चीज वांधकर उसकी दो कोथली अंगारेपर उंची धरकर गरम करके दरदकी जगे बारे फिरती शेक किया जाता है गरम करी भई इंट अथवा गरम पाणीसें भरी शीशी फलालेनके कपडेमें लपेट उसकाभी शेक किये जाता है इन्डिया रबर ब्याग याने रबरकी थेलीमें गरम पाणी भरके उसका शेक करणेंमें आता है ये थेली तइयार मिलती है भीगाया सूका गरम शेक नुकशान करता नहीं. शेकसें शरीरका कोइभी भागमें खून कफ पित्तया वायुका जमाव भया होय तो वो विखर जाता है.

ठंढा इलाज.

ठिकाणेके दरदमें पीप होणा सरू होय उसके पहली ठंढा इलाज फायदा करता है क्योंके वो पीप होणे नहीं देता लेकिन चोकस रोगमें पीप होणा सरू भयाया नहीं इस वातकूं नक्की करणा चाहिये लेकिन इस वातका नक्की करणा मुस्कल है ठंढा भीगा वस्त्र धरणेसें जो रोगीकूं ठंढकी कंपाणके संग वेचेनी मालम पडे तो समझणा के ठंडा उपचार नुकसान करेगा तब ठंढा पोता नहीं धरणा ठंढा उपचार नीचैमुजब करणा.

(५३९) सोराखार (नाइट्रेट ओफ पोटाश ½ औंस नवसार हाइड्रोक्लोरेट ओफ आमोनिया ½ औंस सादा निमक ½ औंस पाणी १२ औंस ठंढे उपचारकी जरूर पडे तब इस मिलावटका उपयोग करणायाने शणका कपडा भिगाकर धरणा जो जादा ठंडककी जरूरत पडे तो पाणी वहोत थोडा लेणा लोशन कोरा पडे तब चोफेर जलमें भिगाकर धरणा अथवा ऊपरसें पाणी सींचणा.

एसेटेट ओफ लेड १ ड्राम रेक्टिफाइड स्पिरिट ओफ वाइन १ औंस पाणी १२ औंस प्रवाहीवणाणा और ऊपर लिखे प्रमाणे भीगा कपडा धरणा.

शांतिकारक इलाज.

(५४० पाणीका इलाज) शण अथवा लींटके कपडेकूं दोलडाकर पाणीमें डूबाकर उसकूं वोटरड्रेसिंग कहते हैं उसपर पाणी प्रवेश नहीं करे एसा तेलवाला रेशमी कपडा (गटापरचावाला) कपडा वांधना इस ड्रेसिंगकूं दिनमें दो वखत वदलाणा दाह करणेवाला भरता भया घावपर ए इलाज वहुत अछा है पाणीमें कितनीक दवा डालकेभी ड्रेसिंग करणेमें आता है ड्रेसिंग गरम तेसें ठंढा दोनुं तरेके पाणीका हो सकता है.

(५४१ सादा मलम) चरवी २ भाग आलिव्ह ओइल १ भाग पीला मोम ½ भाग एक तवेपर सब चीजोंको पिघलाकर एकत्र करणा मलम ठढा पडे तहांतक हिलाणा ए मलम वहोत तरेसे वापरणेसें और पीछैसें उसमें दुसरीभी कीतनीक दवायें मिलाकर लगाणेसे घावकूं भरता है.

(५४२) अलशीका तेल और लोइम वाटर (चूणेका पाणी) समभाग मिलाकर

खूब हलाणा (एक गेलन पाणीमें ॥ सेर कलीचूना डालनेसें लाइमवोटर वणता है ए तेल जले भागकूं अछा करणेमें वहुत फायदेवंद है.

(५४३ क्यालोमेल ३० ग्रेण व्ल्याकाश–लाइमवोटर १० औंस शीशीमें भरकर हलाणेसें मिलकर लोशन वणता है. गुप्त इन्द्रियका क्षत घावपर वहुत उपयोगी है उसका भीगा कपडा धरणा.

(५४४) टिंकचर ओपियम १ ड्राम टिकचरएकोनाइट १ ड्राम क्लोरोफोर्म १ ड्राम सोपलीनीमेन्ट १॥ औंस इनोकों मिलाकर तेल लिनिमेन्ट वणाणा और उसपर झहर एसा नाम लिखणा चसकेके दरदपर ए लिनिमेन्ट लींट अथवा वादलीके टुकडेसें रगडणेसें दरदशांत होता है चमडीपर कोइ घाव या इजा होय तो मूंमे अथवा वचोंके दरदमें इसका उपयोग करणा नहीं.

एक छोटी शीशीके दो भागमें कपूरका भूका भरणा और खाली रखा भया भागमें रेक्टिफाइड स्पिरिट ओफ वाइन अथवा सल्फ्युरिकइथरसेभर देणा एक लकडीके नाके लींट अथवा वादलीका टुकडा वांध उससें इस प्रवाहीकुं दुखते भागपर रगडणा एक मिंटमे दरद वंध होता है ए जादा देर असर रहता नहीं.

भेदक असर करणेवाला इलाज

मल्लम

(५४५) गंधकका चूरा १ औंस नाइट्रेट ओफ पोटाश ॥ ड्राम सावू अथवा ग्रिसराइन १ ड्राम चरवी ४ औंस अंगारपर चरवीकूं पिघलाकर एक खरलमें वरावर मिलाणा ए मलम खुजलीका पक्का इलाज है.

(५४६) टिंकचर ओपियम २ ड्राम कारवोलिक एसिड २० ग्रेन चरवी १ औंस आलिव्ह ओइल १ औंस अंगारपर पिघलाकर सव एकत्र करणा और ठंढा पडे जहांतक हिलाणा जखम (अल्सर्स) के वास्ते अछा इलाज है.

(५४७) रेडआयोडाइड ओफ मर्क्युरी १६ ग्रेन चरवी ॥ औंस आलीव्ह ओइल ॥ औंस चरवी तथा तेलकूं पिघलाकर एकत्र करणा पीछे आयोडाइड ओफ मर्क्युरी डाल खरलमें घोट मिलाणा वधी भइ तापतिल्ली रसकी गांठ (गल्पाड) पर रगडणेसें अछा फायदा करती है.

(५४८) मांजूफलका भूका ८० ग्रेन एकस्ट्राकट ओपियम ३० ग्रेन सादा मलम १ औंस एक खरलमें वरावर घोट मिला देणा हरसका मस्सा तथा खून गिरणेका अछा इलाज है.

(५४९) एसेटेट ओफ लेड ३० ग्रेन सादा मलम १ औंस खरलमें वरावर मिलाणा रक्त पित्तके अलसरके वास्ते अछा मलम है.

(५५०) फिटकडीका भूका २० ग्रेण डिस्टील्ड बोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन बणाणा आंख तथा कानके पकणेमें तथा जड भये घाव (अलसर) में उपयोगी है.

(५५१) सल्फेड ओफ झिंक ८ ग्रेण डिस्टील्ड बोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन बणाना आंख तथा कानके दरदमें बहुत उपयोगी हैं.

(५५२) बाइकारबोनेट ओफ सोडा १ ड्राम डिस्टील्ड बोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन बणाना खुजली तथा चमडीके दुसरे रोगोंमें उपयोगी है.

स्तंभक और रोपण कुरले.

(५५३) फिटकडी १ ड्राम डिस्टील्ड बोटर ८ औंस कुरले करणेकूं चोरिये गलापकणा मूंका जखम रक्तपित्त वगेरेमें कुरला करणा तथा पिचकारीके काममें आती है.

(५५४) जींजरका अर्क (स्ट्रॉंग) १ ड्राम डिस्टील्ड बोटर ८ औंस कुरले करणेकुं ढीले पडे घांटेमें उसके कुरले घांटेकूं उत्तेजन देता है.

(५५५) गेलिक एसिड १ स्कुपल ब्रांडी ४ ड्राम डिस्टील्ड बोटर ५ औंस कुरले करणेकूं थूक लाल मूंकी चांदी(स्कर्वि) रगतपित्तकेमें उपयोगी है.

(५५६) सल्फेट ओफ झिंक ३० ग्रेण डिस्टील्ड बोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर कुरले वास्ते उपयोगमें लेणा ए और ऊपरके तीन इलाज मूंकी चांदी थुक चोंरिया गलेका सोजा वगेरोमें एक नहीं तो दुसरा फायदा करता है.

पिचकारी (वस्ति).

(५५७) स्टार्च अथवा साबू २ ड्राम गरम पाणी १० औंस दोनोंकों मिलाकर पिचकारी तरीके जरूर पडे तब उपयोग करणा.

(५५८) एसे फोटीडा (हिंग) १ ड्राम साबू १ ड्राम केस्टर ओइल (एरंडी तेल) १ औंस गरम पाणी ८ औंस चारों चीजों अछीतरे मिलाकर देवे उत्तेजक वस्ती (पिचकारी)

(५५९) एरंडी तेल $\frac{1}{2}$ औंस टरपेन्टाइन १ औंस जमालगोटेका तेल २ बूंद साबू ३० ग्रेण गरमपाणी ८ औंस अछीतरे मिलाणा रेचकवस्ति मगजमें खून चढे तब फायदेवंद है.

(५६०) सल्फेट ओफ झिंक २० ग्रेण टिंकचर ओपियम ३० बूंद गरम पाणी ८ औंस स्तंभनवस्ती श्वेत प्रदर तथा गर्भस्थानमें दुसरे विकारोंमें उपयोगी है.

चमडीपर दाह ललाई तथा फफोला उठाणेवाला इलाज.

(५६१) टरपेन्टाइनके पोते– लींट अथवा फलालेनका टुकडा टरपेन्टाईन स्पिरिटमें भिगाणा और सरीरके दरदकी जगे उसका पोता धरकर उसपर तैलवाला चमडा अथवा सूका कपडा धरणा आसरे एक घंटा अथवा वहोत दरद करे तो उहांतक रखकर पीछे निकाल लेणा इस पोतेसें चमडी लाल होगी लेकिन् फफोला उठेगा नहीं.

(५६२ राईका पल्स्टर) राईका आटा (अंग्रेजी दवा वेचणेवालोंके इहां तइयार मिलता है, या घरमें पीसाकर तइयार करणा) लेकर उसमें जरा गरमपाणी मिलाकर सणके टुकडेपर वो हाजर नहीं होय तो हर कोइ कपडेपर या कागजपर विछाकर वो पलास्टर दरदकी जगेपर धरणा उहां उसकूं २० से ३० मिन्ट रहणे देणा वचोंसें सख्त पलास्टर सहा नहीं जाय वास्ते राईका पलास्टर और चमडीके वीचमें मुल २ का महीन कपडा धरकर पलास्टर धरणा ये पलास्टर वहोत सख्त पडजाय तो फफोला उठता है, घाव पडता है.

(५६३ व्लीस्टर) स्टिकिंग पलास्टर के टुकडे पर केन्थारीडिस पलास्टर थोडा २ विछाकर लगाणेमें आता है, उससे विलस्टर (फफोला) आसरे दो घंटेमें उठणा सरू होता है, छ अथवा आठ घंटे पीछे वो पलास्टर उठा लेणा चहिये फफोलेकी उठी चमडीकूं फोड डालणा महीन कतरणीसें और पाणी निकलणे देणा लेकिन् फफोलेकी सव चमडी कतरणी नहीं पीछे उसपर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा छवया आठ घंटेसें ड्रेसिंगकभी अलग कर लेणा वहोतसी वखत दुसरी वेरभी फफोला भर जायतो अगली तरे पाणी निकाल डालणा पीछे दिनमें दो वेर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा किसी २ वखत विल्स्टरके पासकी चमडीपर गुमडे हो जाते है, तो उहां सेक करणा और पोटिस वांधणी.

छोकरोके विल्स्टर लगाते वहोत सावचेती रखणी जो कभी विलस्टर मारणेकी जरूरी ही होय तो चमडीपर महीन कपडा देकर फेर लगाणा जिस्सें जादा असर नहीं हो सके तीन घंटेसें जादा रहणे नहीं देणा.

चोट लगणेपर वाहिरका इलाज.

(५६४) स्टार्च वेन्डेज-(सरेसकापाटा) सरेसकी अथवा गहूंके आटेकी घट्ट लेइ वणाकर उसमें पाटेका कपडा भिगाणा और इजाकी जगेंपर ऊपरा ऊपरी लपेटा देकर पट्टा वांधणा पीछे वो पाटा सूककर करडा होयगा तव चोटवाली जगेकू मजवूत आधार भूत हो जायगा इस पट्टेकूं जरा मजवूतीसे वांधणा लेकिन् वहोत खेचके नहीं वांधणा टूटा भया अथवा खिसे भये हाडपर वांधणेमें आये जो कमचिया वेंत वांसकी उसकूं निकाले वाद ये वेन्डेज वहुत फायदेवंद है.

(५६५ लेधर प्लाष्टर) चमडीपर रालका प्लस्टर लगाणेमें आता है, उसकू लेधर पलास्टर कहते हैं, इस पलास्टरका उपयोगभी ऊपर लिखे वेन्डेज मुजव होता है.

गरम पाणीमें वैठणा.

(५६६) गरम वाफ वहोतसे रोगोंमें उपयोगी इलाज है, इस वाफका वरावर उपयोग नहीं करणेमें आवे तो किसी वखत वहोत नुकशान कर जाता है, गरम वाफमें

(५५०) फिटकडीका भूका २० ग्रेण डिस्टील्ड बोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाणा आंख तथा कानके पकणेमें तथा जड भये घाव (अलसर) में उपयोगी है.

(५५१) सल्फेड ओफ झिंक ८ ग्रेण डिस्टील्ड बोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाना आंख तथा कानके दरदमें बहुत उपयोगी हैं.

(५५२) वाइकारबोनेट ओफ सोडा १ द्राम डिस्टील्ड बोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर लोशन वणाना खुजली तथा चमडीके दुसरे रोगोंमें उपयोगी है.

स्तंभक और रोपण कुरले.

(५५३) फिटकडी १ द्राम डिस्टील्ड बोटर ८ औंस कुरले करणेकूं चोरिये गलापकणा मूंका जखम रक्तपित्त वगेरेमें कुरला करणा तथा पिचकारीके काममें आती है.

(५५४) जींजरका अर्क (स्ट्रोंग) १ द्राम डिस्टील्ड बोटर ८ औंस कुरले करणेकुं ढीले पडे घांटेमें उसके कुरले घांटेकूं उत्तेजन देता है.

(५५५) गेलिक एसिड १ स्कुपल ब्रांडी ४ द्राम डिस्टील्ड बोटर ५ औंस कुरले करणेकूं थूक लाल मूंकी चांदी(स्कर्वि) रगतपित्तकेमें उपयोगी है.

(५५६) सल्फेट ओफ झिंक ३० ग्रेण डिस्टील्ड बोटर ८ औंस अछीतरे मिलाकर कुरले वास्ते उपयोगमें लेणा ए और ऊपरके तीन इलाज मूंकी चांदी थुक चोंरिया गलेका सोजा वगेरोमें एक नहीं तो दुसरा फायदा करता है.

पिचकारी (वस्ति).

(५५७) स्टार्च अथवा साबू २ द्राम गरम पाणी १० औंस दोनोंकों मिलाकर पिचकारी तरीके जरूर पडे तव उपयोग करणा.

(५५८) एसे फोटीडा (हिंग) १ द्राम साबू १ द्राम केस्टर ओइल (एरंडी तेल) १ औंस गरम पाणी ८ औंस चारों चीजों अछीतरे मिलाकर देवे उत्तेजक वस्ती (पिचकारी)

(५५९) एरंडी तेल $\frac{1}{2}$ औंस टरपेन्टाइन १ औंस जमालगोटेका तेल २ बूंद साबू ३० ग्रेण गरमपाणी ८ औंस अछीतरे मिलाणा रेचकवस्ति मगजमें खून चढे तव फायदेवंद है.

(५६०) सल्फेट ओफ झिंक २० ग्रेण टिंकचर ओपियम ३० बूंद गरम पाणी ८ औंस स्तंभनवस्ती श्वेत प्रदर तथा गर्भस्थानमें दुसरे विकारोंमें उपयोगी है.

चमडीपर दाह ललाई तथा फफोला उठाणेवाला इलाज.

(५६१) टरपेन्टाइनके पोते— लींट अथवा फलालेनका टुकडा टरपेन्टाईन सिरिटमें भिगाणा और सरीरके दरदकी जगे उसका पोता धरकर उसपर तैलवाला चमडा अथवा सूका कपडा धरणा आसरे एक घंटा अथवा वहोत दरद करे तो उहांतक रखकर पीछे निकाल लेणा इस पोतेसें चमडी लाल होगी लेकिन् फफोला उठेगा नहीं.

(५६२ राईका पल्स्टर) राईका आटा (अंग्रेजी दवा वेचणेवालोंके इहां तइयार मिलता है, या घरमें पीसाकर तइयार करणा) लेकर उसमें जरा गरमपाणी मिलाकर सणके टुकडेपर वो हाजर नहीं होय तो हर कोइ कपडेपर या कागजपर विछाकर वो पलास्टर दरदकी जगेपर धरणा उहां उसकूं २० से ३० मिन्ट रहणे देणा वच्चोंसें सख्त पलास्टर सहा नहीं जाय वास्ते राईका पलास्टर और चमडीके वीचमें मुल २ का महीन कपडा धरकर पलास्टर धरणा ये पलास्टर वहोत सख्त पडजाय तो फफोला उठता है, घाव पडता है.

(५६३ ब्लीस्टर) स्टिकिंग पलास्टर के टुकडे पर केन्थारीडिस पलास्टर थोडा २ विछाकर लगाणेमें आता है, उससे विलस्टर (फफोला) आसरे दो घंटेमें उठणा सरू होता है, छ अथवा आठ घंटे पीछै वो पलास्टर उठा लेणा चहिये फफोलेकी उठी चमडीकूं फोड डालणा महीन कतरणीसें और पाणी निकलणे देणा लेकिन् फफोलेकी सव चमडी कतरणी नहीं पीछै उसपर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा छवया आठ घंटेसें ड्रेसिंगकभी अलग कर लेणा वहोतसी वखत दुसरी वेरभी फफोला भर जायतो अगली तरे पाणी निकाल डालणा पीछै दिनमें दो वेर सादे मलमका ड्रेसिंग करणा किसी २ वखत विल्स्टरके पासकी चमडीपर गुमडे हो जाते हैं, तो उहां सेक करणा और पोटिस वांधणी.

छोकरोके विल्स्टर लगाते वहोत सावचेती रखणी जो कभी विलस्टर मारणेकी जरूरी ही होय तो चमडीपर महीन कपडा देकर फेर लगाणा जिस्सें जादा असर नहीं हो सके तीन घंटेसें जादा रहणे नहीं देणा.

चोट लगणेपर वाहिरका इलाज.

(५६४) स्टार्च वेन्डेज—(सरेसकापाटा) सरेसकी अथवा गहूंके आटेकी घट्ट लेइ वणाकर उसमें पाटेका कपडा भिगाणा और इजाकी जगेंपर ऊपरा ऊपरी लपेटा देकर पट्टा वांधणा पीछै वो पाटा सूकक्र करडा होयगा तव चोटवाली जगेकूं मजवूत आधार भूत हो जायगा इस पट्टेकूं जरा मजवूतीसे वांधणा लेकिन् वहोत खेचके नहीं वांधणा टूटा भया अथवा खिसे भये हाडपर वांधणेमें आये जो कमचिया वेंत वांसकी उसकूं निकाले वाद ये वेन्डेज वहुत फायदेवंद है.

(५६५ लेधर प्लाष्टर) चमडीपर रालका प्लस्टर लगाणेमें आता है, उसकूं लेधर पलास्टर कहते हैं, इस पलास्टरका उपयोगभी ऊपर लिखे वेन्डेज गुजव होता है.

गरम पाणीमें वैठणा.

(५६६) गरम घाफ वहोतसे रोगोंमें उपयोगी इलाज है, इस वाफका वरावर उपयोग नहीं करणेमें आंव तो किसी वखत वहोत नुकशान कर जाता है, गरम घाफसें

रीरके स्नायुओ ढीले पडते हैं, रिदय (हार्ट) की वधी भई क्रियाका जोर नरम पडता , उससें वधी भई नाडीका वेग भी हलका पडता है, और उससें अशक्ति और मूर्छा ाती है, इसवास्ते गरम पाणीमें बैठाये भये अदमीकी शरीरकी स्थितिपर निगे रखकर ौर उसका शिर छाती तरफ नहीं झुकणे देणा पीठके तरफ झुकाये भये रखणा गरम ाणीमें रोगीकूं कितनी एक देर रखणा उसका निर्णय उसपर गरम वाफकी असर होणे- र आधार रखता है, जो असर जलदी होय और रोगीकूं मूर्छा आणे लगे तो उसकूं लदी वाहिर निकालणा पाणीमेंसें निकालकर रोगीकूं पूंछकर कोरा करणा विछोणेमें ुलाणा जो मूर्छा आई होयतो एसीही हालतमें सुलाकर पोंछकर सूका वदन करणा च्चोंकी चमडीपर वाहरकी गरमी या ठंढी जादा जलदी असर करती है, वास्ते उनोकों रम पाणीमें विठलाते या गरम शेक करते वहोत संभाल रखणी वहोतसे वच्चे जादा रम वाफसें जलकर मरणेके दाखले वणते हैं, वच्चोंके वास्ते गरम वाफकी गरमी ९६ ९८ डिग्रीसें जादा नहीं होणी चहिये.

वडी ऊमरके अदम्योंके आंकसीके संग वहोत दरद पेसाबमें रेतीका जाणा मूत्राघात ाधारण गांठ आंतरोंका रुकणा और संधिवायुमें गरम पाणीमें वैठाणेमें आता है, और च्चोंकों मुख्य पणे करके खेंचाताण हिचकी वायु नलीका वरम आंतरेमें दरद दांत आते खतकी वेचैनी और वदनपर चरवी अथवा मेद वायुका चढणा वगेरे दरदोंमें गरम ाणीमें वैठाणा वहोत फायदाकारक होजाता है.

वदनके चमडीकूं गरमी देणेकी दुसरी निर्भय और सहजरीत एसी हे के एक ऊनकी ावली अथवा कंवलीकूं गरमपाणीमें डुवाकर निचोडकर वो गरम २ वदनके लपट लेण और उसपर सूकी कामली लपेटणी इसतरे २० मिनटतक ढके रखणा पीछे कंवली दूर र गरम टुवालसें वदन पूंछ विछोणेमें सुला देणा.

(५६७) गरम पाणीमें दवायें डाल उसका वाफ लेणेमें आता है, जिससें दवाका असर चम- डीके छेदोंके रस्ते अंदर पहुंचता है, इस किसमकी दवायोंमे सादा निमक एसीडस सोडा सलफर वगेरे मुख्य है, नाइट्रो म्युरीयाटिक एसिड वाथ इसतरे लेते हैं, म्युरियाटिक एसिड ३ भाग नाइट्रिक एसिड २ भाग इय दोनों एसिडकुं संभालकर धीमे २ एकत्र करणा पीछे डिस्टीलट वोटर ५ भाग धीमे २ मिलाणा इसतरे मिलाणेसें उसमेंसें पेदाभई गरमीका ऊफाण वैठजाय तव उस प्रवाहीकों शीशीमें भरके रखणा दरएक वाथके वास्ते इस प्रवाहीमेंसें ६ औंस एसिड लेकर गरम पाणीमें डालणा इस वाथकी गरमी ९६ डिग्री होणी चहिये रोगीकूं इस वाथमें १५ मिनटतक रखणा और पाणीकी गरमी कायम राखणेकूं जेसें २ पाणी ठंढा पडता जावे तेसें २ दुसरा गरमपाणी डालते जाणा, रोगीकूं वाथमेंसें वाहर निकालकर जाडे टुवालसें पूंछकर वदन सूका करणा इस वाथका

मुख्य उपयोग कलेजेके और तिलीके पुराणे रोगमें उपयोग करणेमें आता है, म्युरिया-टिक अथवा हाइड्रोक्लोरिक एसिड और नाइट्रिक एसिड वहोत सख्त है, और कोइभी चीज इनके स्पर्श (कोन्टेकट) में आती है. उसकूं जला देती है, इसवास्ते इसका उपयोग करते हुसियारी रखणी.

कपिंग (प्याला धरणेकी क्रिया).

(५६८) कपिंग धरणेकी पेटी विलायती तइयार आती है, उसमें कितनेक चढते उतरते कदके काचके प्याले कपिंग ग्लास होती है, फेर उस पेटीमें कितनेक धारवाले छुरी जैसे शस्त्र होते हैं, कपिंग दो तरे धरे जाते हैं, प्रथम चमडीपर चपका धरकर पीछे कपिंग ग्लाससे खून खेंचके निकालणेमें आता है, इसतरे मोइस्ट कपिंग कहाताहै, कमर पीठ बोची वगेरे जगोमेंसें इसतरे खून निकालणेमें आता है, कपिंगलगाणेकी ये रीत प्रचारमें नही है, चपका लगाये विगर लोक ग्लास लगाते हैं, वोड्राई कपिंग कहाती है, वो इसतरेसे हैं कपिंग ग्लासके अंदर स्पिरिट वाइन चुपडके उसकूं सिल-गाई भई दिया सलाई दिखाणी जिससे वो जलणे लगेगी तव झट वो ग्लास चमडीपर उलटी धर देणी तव वो जलता भया स्पिरिट बुझ जायगा और जेसें २ उसके अंदरका वाफ नरम पडता जायगा तेसें २ चमडी अंदरसे खिचके उपस आवेगी और ग्लास मजबूत चपक जायगी थोडी देर इसतरे रहणे देणी पीछे ग्लासकू एक वाजूसें खेंचकर चमडीसे दूर करणा कपिंग ग्लासमें स्पिरिट जरासाही लगाणा जिससें उसकी फकत वाफ प्यालेमें पैदा होकर प्याला चमडीपर चिपट जावै स्पिरिट वाइन प्यालेमें छांटे विगर फक्त स्पिरिट लेम्प थोडे मिनटतक रहणे देकर पीछे तुरत चमडीपर धर देणेसें भी वो चिपट मजबूत वैठती है, इसतरे एकके पीछे एक कितनेक ग्लास लगाये जातीहै, और इसतरे करणेसें चमडीके नीचेका खून उपसके ऊपर आता है, कपिंग्लास नहीं मिले तो सादे प्यालेसें काम निकल सकता है, प्यालेकूं एसा गरम करणा नहीं चाहिये के जिस्सें चमडी जल उठे प्यालेकूं चमडीपरसें उतारणेका काम छुरीके वदले अंगलीका नख कर सकता है,

गंदकी दूरकरणेवाली चीजों.

(५६९) कितनीक चीजोंमें एसा गुण होता है, सो उसकूं वदवोकी जगेमें डालणेमें आवे तो वोखरावबोकूं मारती है, एसी चीजोंकूं डिस इन्फेक्टंटस कहते है, उडता रोग जेसेके हैजा शीतला ओरी व्युवोनिक प्लेग वगेरे रोगमें एसी चीजों वहुत उपयोगी होती है, एसी वखतमें एसी चीजों वापरणेसें हवा साफ होती है, और हवामें फेलते भये रोगोके परमाणू वहोत फल नहीं सकते ये चीज चेपी ओर उडते रोगोंका मरज चलता है, तभी ही वापरणा एसा नहीं है, हर किसीभी वखत जिस ठिकाणेमें

शरीरके स्नायुओ ढीले पडते हैं, रिदय (हार्ट) की वधी भई क्रियाका जोर नरम पडता है, उससें वधी भई नाडीका वेग भी हलका पडता है, और उससें अशक्ति और मूर्छा आती है, इसवास्ते गरम पाणीमें वैठाये भये अदमीकी शरीरकी स्थितिपर निगे रखकर और उसका शिर छाती तरफ नहीं झुकणे देणा पीठके तरफ झुकाये भये रखणा गरम पाणीमें रोगीकूं कितनी एक देर रखणा उसका निर्णय उसपर गरम वाफकी असर होणेपर आधार रखता है, जो असर जलदी होय और रोगीकूं मूर्छा आणे लगे तो उसकूं जलदी वाहिर निकालणा पाणीमेंसें निकालकर रोगीकूं पूंछकर कोरा करणा विछोणेमें सुलाणा जो मूर्छा आई होयतो एसीही हालतमें सुलाकर पोंछकर सूका वदन करणा वच्चोंकी चमडीपर वाहरकी गरमी या ठंढी जादा जलदी असर करती है, वास्ते उनोकों गरम पाणीमें विठलाते या गरम शेक करते वहोत संभाल रखणी वहोतसे वच्चे जादा गरम वाफसें जलकर मरणेके दाखले वणते हैं, वच्चोंके वास्ते गरम वाफकी गरमी ९६ से ९८ डिग्रीसें जादा नहीं होणी चहिये.

वडी ऊमरके अदम्योंके आंकसीके संग वहोत दरद पेसावमें रेतीका जाणा मूत्राघात साधारण गांठ आंतरोंका रुकणा और संधिवायुमें गरम पाणीमें वैठाणेमें आता है, और वच्चोंकों मुख्य पणे करके खेंचाताण हिचकी वायु नलीका वरम आंतरेमें दरद दांत आते वखतकी वेचैनी और वदनपर चरवी अथवा मेद वायुका चढणा वगेरे दरदोंमें गरम पाणीमें वैठाणा वहोत फायदाकारक होजाता है.

वदनके चमडीकूं गरमी देणेकी दुसरी निर्भय और सहजरीत एसी हे के एक ऊनकी धावली अथवा कंवलीकूं गरमपाणीमें डुवाकर निचोडकर वो गरम २ वदनके लपेट लेण और उसपर सूकी कामली लपेटणी इसतरे २० मिनटतक ढके रखणा पीछे कंवली दूर कर गरम टुवालसें वदन पूंछ विछोणेमें सुला देणा.

(५६७) गरम पाणीमें दवायें डाल उसका वाफ लेणेमें आता है, जिससें दवाका असर चमडीके छेदोंके रस्ते अंदर पहुंचता है, इस किसमकी दवायोंमे सादा निमक एसीडस सोडा सल्फर वगेरे मुख्य है, नाइट्रो म्युरीयाटिक एसिड वाथ इसतरे लेते हैं, म्युरियाटिक एसिड ३ भाग नाइट्रिक एसिड २ भाग इय दोनों एसिडकुं संभालकर धीमे २ एकत्र करणा पीछे डिस्डील्ट वोटर ५ भाग धीमे २ मिलाणा इसतरे मिलाणेसें उसमेंसें पेदाभई गरमीका ऊफाण वेठजाय तव उस प्रवाहीकों शीशीमें भरके रखणा दरएक वाथके वास्ते इस प्रवाहीमेंसें ६ औंस एसिड लेकर गरम पाणीमें डालणा इस वाथकी गरमी ९६ डिग्री होणी चहिये रोगीकूं इस वाथमें १५ मिनटतक रखणा और पाणीकी गरमी कायम राखणेकूं जेसें २ पाणी ठंढा पडता जावे तेसें २ दुसरा गरमपाणी डालते जाणा, रोगीकूं वाथमेंसें वाहर निकालकर जाडे टुवालसें पूंछकर वदन सूका करणा इस वाथका

चाके संग पिलाणा अथवा मिश्रीकी चासणीमें मिलाकर चटाणा ये दवाभी बुखार चढेमें दी जाती है,

ठंढके बुखार

(५७२) वाइकारवोनेट ओफ सोडा ३० ग्रेण टार्टरिक एसिड २६ ग्रेण पाणी २ औंस मात्रा २ औंस दर तीन घंटेसें.

ठंढका बुखार

(५७३) सालवोलेटाइल ३० वूंद पाणी २ औंस १ वखत देणा.

(५७४) क्विनाइन २४ ग्रेण पाणी ८ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० वूंद मिलाकर मात्रा १ औंस.

(५७५) क्विनाइन २४ ग्रेण कारवोलिक एसिड १८ वूंद एक्स्ट्राकट जनस्पन चहिये जितना पहिली ऊपर दुसरी दवा डाल उसकें संग जनस्यन वरावर मिलाकर २४ गोली वणाणी मात्रा ३ सें ६ गोली हमेस.

विषमज्वर

(५७६) डाइल्युट नाइट्रो म्युरियाटिक एसिड १५ वूंद चिरायतेकी चा ४॥ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणा.

(५७७) एकस्ट्राकट सारसापरिला २ ड्राम टींकचर नक्षवोमिका १५ वूंद टिकचरकालिंवा १॥ ड्राम चिरायतेकीचा ४॥ औंस मिलाकरके उसका तीन भाग करके दिनमें तीन वेर पीणा.

पित्त ज्वरमें उलटी

(५७८) क्रीम ओफ टार्टर १ औंस नीवूका रस १ औंस मीश्री २ औंस पाणी २० औंस मिलाकर उसमेंसें थोडी २ देणी उलटीकूं मिटाती है.

पित्तज्वर

(५७९) लाइकर एमोनीएसेटेट १२ ड्राम एन्टीमोनियल वाईन १ ड्राम टिंकचर एकोनाइट २० वूंद साइट्रेट ओफ पोटाश १२० ग्रेण केम्फर वोटर ६ औंस एन्टीपाइरीन १ ड्राम मिलाकरके उसमेंसें चार घंटेसे एकेक औंस दवा पिलाणी.

पित्तज्वर.

(५८०) एन्टिमोनियल पाउडर १२ ग्रेण कपूर सादा ३ ग्रेण इन दोनो दवाकी गुलकंदमें ६ गोलीयें करणी दोदों गोली तीन २ घंटेसे देणी.

(५८१) क्विनाइन १५ ग्रेण पाणी ४॥ औंस क्लोरेट ओफ पोटाश ३० ग्रेण डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड २० वूंद मिलाकर बुखार कम पडे पीछे उसका तीन हिस्साकर तीन २ घंटेसे देणा.

खराव वदवो आती होय उस जगेमें एसी चीजों छांटणी या डालणी वो इस मुजव चीजोंहै,

(कोन्डीस फलुइड) अथवा केन्डिस सोल्युशन इस नामका लालपाणी आता है, वो हर किस्मकी गंदकी तथा वदवोकूं जलदी दूर करती है, ये चीज वापरती वखत उसके एक भागमें ३० से ५० भागतक सादा जल मिलाणा पीछै उपयोग करणा दस्त करणेके पात्रमें वाडेमें जाजरूके चूलोंमें मोरियोंमें और हरकोई खराव दुर्गंधवाली जगोंमें ये पाणी छांटणा उडता रोगवाला वेमारका कपडा वदले पीछै अथवा हैजेमें दस्त उलटीसें विगाडा होयतो वेसे कपडेकूं धोणा पहिले कोनडिस फलुइड थोडा डालकर पीछै सादे पाणीसें धोणा इसीतरे गंदकीकी जगामें पहली ये पाणी डालकर पीछै (गंदकी दूर करणी) (कली चूना) कोन्डिस फलुइड हाजर नहीं होयतो कली चूणा छिडकणा जो आसपास हैजेका रोग चलता होय तो घरमें कली चूना पोताणा और जाजरू मोरी वगेरेमे दिनमें दो तीन वखत चूना तथा चूनेका पाणी डालते रहणा इससे आसपासके चेपी हवाके तत्व कभी घरमे आता है, तो उसकूं ये डिसइन फेक्टंटस निकालकर साफ कर देता है.

(कोयला) दुसरी चीज नहीं मिले तव गामठी कोयलेके भूकेका उपयोग करणा खराव वदवोकों कोयला मिटाता है.

(गंधकका तेजाव) ०॥ सेर सादापाणी काचके वासणमें लेकर उसमें ०॥ रतल गंधकका तेजाव डालणा पीछै चीणाइ चौडी रकेवीमें अथवा मट्टीके चोडे वरतणमें । सेर सादा निमक डालणा उसपर ऊपर लिखासो तइयार किया भया गंधकके तेजाव वाले पाणीमेंसें ॥ रतल डालणा पीछै इस रकेवीकूं ॥ से १ घंटेतक कोठेमें धरदेणा इसयोगसें म्युरि क्याटिक एसिडगेस नामकी हवा निमकमेंसें निकलती है, वोहवाकी सव गंधकीकूं दूर करती है, जिस कमरेमें उडते चेपी रोगवालेका विछाणा होय उस कमरेकी हवा विगडणेका संभव है, इसवास्ते एसे रोगीके कमरेमें एक अथवा जादा रकेवीयां ओटेमोटेम रखकर हवाकूं साफ करणा चाहिये रखती वखत कमरेके जाली झरोखे दरवज्जे खोल देणा चहिये और रकेवीके विलकुल पासमें कोइ मूं नहीं रखणा चाहिये.

दुसरे उपयोगी मिक्श्चर.

सादा वुखार.

(५७०) लाइकर एमोनी एसेटेटिस १॥ औंस सोराखार ३० ग्रेण स्पिरिट ओफ नाइट्रिक इथर १॥ ड्राम कपूरका पाणी ३ औंस टिंकचर एको नाइट १५ वूंद मात्रा १॥ औंस दिनमे ३ वेर वुखार भरा होय उहांतक पिलाणेसें इस मिक्श्चरसें पसीना आता है.

(५७१) टार्टरइमेटिक १ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर १२ ग्रेण दोनों दवाकूं अछीतरे मिलाकर उसकी ६ पुडी करणी एकेक पुडी दर तीन २ घंटेसें पाणी अथवा

चाके संग पिलाणा अथवा मिश्रीकी चासणीमें मिलाकर चटाणा ये दवाभी बुखार चढेमें दी जाती है,

ठंढके बुखार

(५७२) बाइकारबोनेट ओफ सोडा ३० ग्रेण टार्टरिक एसिड २६ ग्रेण पाणी २ औंस मात्रा २ औंस दर तीन घंटेसें.

ठंढका बुखार

(५७३) सालचोलेटाइल ३० बूंद पाणी २ औंस १ वखत देणा.

(५७४) क्विनाइन २४ ग्रेण पाणी ८ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद मिलाकर मात्रा १ औंस.

(५७५) क्विनाइन २४ ग्रेण कारबोलिक एसिड १८ बूंद एकस्ट्राकट जनस्पन चहिये जितना पहिली ऊपर दुसरी दवा डाल उसकें संग जनस्यन बराबर मिलाकर २४ गोली बणाणी मात्रा ३ सें ६ गोली हमेस.

विषमज्वर

(५७६) डाइल्युट नाइट्रो म्युरियाटिक एसिड १५ बूंद चिरायतेकी चा ४॥ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पीणा.

(५७७) एकस्ट्राकट सारसापरिला २ ड्राम टींकचर नक्षवोमिका १५ बूंद टिकचरकार्लिवा १॥ ड्राम चिरायतेकीचा ४॥ औंस मिलाकरके उसका तीन भाग करके दिनमें तीन वेर पीणा.

पित्त ज्वरमें उलटी

(५७८) क्रीम ओफ टार्टर १ औंस नींबूका रस १ औंस मीश्री २ औंस पाणी २० औंस मिलाकर उसमेंसें थोडी २ देणी उलटीकूं मिटाती है.

पित्तज्वर

(५७९) लाइकर एमोनीएसेटेट १२ ड्राम एन्टीमोनियल वाईन १ ड्राम टिंकचर एकोनाइट २० बूंद साइट्रेट ओफ पोटाश १२० ग्रेण केम्फर वोटर ६ औंस एन्टीपाइरीन १ ड्राम मिलाकरके उसमेंसें चार घंटेसें एकेक औंस दवा पिलाणी.

पित्तज्वर.

(५८०) एन्टिमोनियल पाउडर १२ ग्रेण कपूर सादा ३ ग्रेण इन दोनों दवाकी गुलकंदमें ६ गोलीयें करणी दोदों गोली तीन २ घंटेसे देणी.

(५८१) क्विनाइन १५ ग्रेण पाणी ४॥ औंस क्लोरेट ओफ पोटाश ३० ग्रेण डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड २० बूंद मिलाकर बुखार कम पडे पीछे उसका तीन हिस्साकर तीन २ घंटेसे देणा.

(५८२) क्विनाइन १२ ग्रेण पाणी ६ औंस डाइल्युटसल्फ्युरिक एसिड १५ बूंद मिलाकर तीन २ घंटेसे दोदो औंस दुसरा बुखार चढे जहांतक देणा.

तीक्ष्ण संधिवायु.

(५८३) बाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ ड्राम आयोडाइड ओफ पोटास्यम ३० ग्रेण वाइन ओफ कोलचीकम ३० बूंद पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

(५८४) गंधककाफूल २ ड्राम डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण सोरा १ ड्राम चार पुडी करणी तीन २ घंटेसें देणा.

(५८५) नाइट्रेट ओफ पोटाश १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण उसकी तीन पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग दर तीन घंटेसे देणा.

(५८६) केलोमेल १२ ग्रेण टार्टर एमेटिक २ ग्रेण ग्वायाकमरेजीव २४ ग्रेण डोवर्स पाउडर २४ ग्रेण गूंदके पाणीमें १२ गोलियां करणी मात्रा १ गोली दिनमें ३या४बेर.

संधि वायु तीक्ष्ण नरम पडे पीछे इलाज.

(५८७) कारबोनेट ओफ आमोनिया १५ ग्रेण कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ बार्क १॥ ड्राम पीरुबीयन बार्कका उकाला ६ औंस मिलाकर दिनमें ३ बेर मात्रा २ औंस.

संधि वायु पुराणा इलाज.

(५८८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १५ ग्रेण टिंकचर ओ[illegible] १॥ ड्राम चिरायतेकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें ३ बेर देणी.

(५८९) कोडलीवर ओइल ६ ड्राम [illegible] पोटासी ४५ बूंद पोटाश्यम ९ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर [illegible] वखत मात्रा

नजला [गाउ

[illegible]) टिंकचर ओफ हेनबेन १ [illegible]
वखत देणा वेदनाका रोग कम करणेकूं ये [illegible]

(५९१) एलोझ १ ग्रेण ब्ल्युपील १ [illegible]
ओफ कोलचीकम १ ग्रेण मिलाकर १ गोली [illegible]

(५९२) वाइन ओफ कोलचीकम ४५ [illegible]
पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें ३ [illegible]

पांडू [illegible]

(५९३) ति[illegible]र क्लोरीड ४५ बूंद
टेलिस २० बूंद [illegible] ३ औंस

५९४) क्लोरेट

४ औंस मिश्री–२ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मिलाकर तीन चार वखत देणा मात्रा ॥ औंस.

जलोदर (कलेजेका इलाज.

(५९५) क्विनाइन ५ ग्रेण टिंकचर ओफ स्टील ४० बूंद नाइटोम्युरीयाटिक एसिड १५ बूद कलंभाकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणी मात्रा १ औंस.

जलोदर (कलेजेका) इलाज.

(५९६) फोसफेट ओफ आयर्न ६ ग्रेन एकस्ट्राकट नक्सवोमिका १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितना मिलाकर उसकी दो गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली देणी.

जलोदर इलाज.

(५९७) एलिया ४ ग्रेण ब्ल्युपील ४ ग्रेण रेवचीनीका सीरा ४ ग्रेण ज्युनिपरका तेज ४ बूंद मिलाकर ४ गोलियें करणी उसमेंसें २ गोली फजरमें देणी.

जलोदर (गुरदेका) इलाज.

(५९८) लाइकरएमोनी एसेटेटीस १ औंस एन्टीमोनियल वाईन ४० बूंद एप्सम सोल्ट ३ ड्राम केम्फर वोटर ३० औंस.

जलोदर (नाताकती)

(५९९) टिकचरओफ स्टील ३० बूंद डाइल्युट एसेटिक एसिड २० बूंद एसेटेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा मात्रा २ औंस.

मुखपाक इलाज.

(६००) ओप्समसोल्ट ४ ड्राम क्लोरेट ओफ पोटाश ४० ग्रेण लिकरआमोनी एसेटेटीस १ औंस पाणी २ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

अजीर्ण डेस्पेपस्या इलाज.

(६०१) रिडयुस्ड आयर्न २४ ग्रेण एकस्ट्राकटनक्स वोमिका ६ ग्रेण पेपसीन३६ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितनी मिलाकर २४ गोलियें करणी उसमेंसें एकेक गोली जीमते वखत लेणी.

अजीर्ण इलाज.

(६०२) सालवोल टाइल ९० बूंद सवनाइट्रेट ओफ विसमथ ४५ ग्रेण हाइड्रोस्पानिक एसिड १५ बूंद कारवोनेट ओफ मेगनीश्या ३० ग्रेण पेपरमींटका पाणी ३ औंस कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कारडेमम २ ड्राम मिलाकर एकेक औंस . तीन वखत देणी.

(५८२) क्विनाइन १२ ग्रेण पाणी ६ औंस डाइल्युटसलफ्युरिक एसिड १५ बूंद मिलाकर तीन २ घंटेसें दोदो औंस दुसरा बुखार चढे जहांतक देणा.

तीक्ष्ण संधिवायु.

(५८३) वाईकारबोनेट ओफ पोटाश १ ड्राम आयोडाइड ओफ पोटास्यम ३० ग्रेण वाइन ओफ कोलचीकम ३० बूंद पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा-

(५८४) गंधककाफूल २ ड्राम डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण सोरा १ ड्राम चार पुडी करणी तीन २ घंटेसें देणा.

(५८५) नाइट्रेट ओफ पोटाश १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर १५ ग्रेण उसकी तीन पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग दर तीन घंटेसे देणा.

(५८६) केलोमेल १२ ग्रेण टार्टर एमेटिक २ ग्रेण ग्वायाकमरेजीव २४ ग्रेण डोवर्स पाउडर २४ ग्रेण गूंदके पाणीमें १२ गोलियां करणी मात्रा १ गोली दिनमें ३या४वेर.

संधि वायु तीक्ष्ण नरम पडे पीछे इलाज.

(५८७) कारबोनेट ओफ आमोनिया १५ ग्रेण कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ वार्क १॥ ड्राम पीरुवीयन वार्कका उकाला ६ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर मात्रा २ औंस.

संधि वायु पुराणा इलाज.

(५८८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १५ ग्रेण टिंकचर ओफ हायोसाइम १॥ ड्राम चिरायतेकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर देणी.

(५८९) कोडलीवर ओइल ६ ड्राम लाइकर पोटासी ४५ बूंद आयोडाइड ओफ ९ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत मात्रा दो औंस.

नजला [गाउट] इलाज.

(५९०) टिंकचर ओफ हेनवेन १ ड्राम पाणी १ औंस दोनोंकों मिलाकर सोंते वखत देणा वेदनाका रोग कम करणेकूं ये दवा देणी.

(५९१) एलोझ १ ग्रेण व्ल्युपील १ ग्रेण एपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राक्ट ओफ कोलचीकम १ ग्रेण मिलाकर १ गोली करणी एसी एकेक गोली दिनमें चार वेर देणी.

(५९२) वाइन ओफ कोलचीकम ४५ बूंद वाइकारबोनेट ओफ पोटाश २० ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें ३ वखत पिलाणी.

पांडू इलाज.

(५९३) लिकरफेरीपर क्लोरीड ४५ बूंद लिकरस्ट्रीक्न्या १५ बूंद टिंकचर डिजीटेलिस २० बूंद कास्याकी चा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

रक्तपित्त [स्कर्वी] इलाज.

५९४) क्लोरेट ओफ पोटाश १ ड्राम टिंकचर सिंकोना कम्पाउन्ट ४ ड्राम नींबूका रस

४ औंस मिश्री–२ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मिलाकर तीन चार वखत देणा मात्रा ॥ औंस.

जलोदर (कलेजेका इलाज.

(५९५) क्विनाइन ५ ग्रेण टिंकचर ओफ स्टील ४० वूंद नाइटोम्युरीयाटिक एसिड १५ वूद कलंभाकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणी मात्रा १ औंस.

जलोदर (कलेजेका) इलाज.

(५९६) फोसफेट ओफ आयर्न ६,ग्रेन एकस्ट्राकट नक्सवोमिका १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितना मिलाकर उसकी दो गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली देणी.

जलोदर इलाज.

(५९७) एलिया ४ ग्रेण व्ल्युपील ४ ग्रेण रेवचीनीका सीरा ४ ग्रेण ज्युनिपरका तेज ४ वूंद मिलाकर ४ गोलियें करणी उसमेंसें २ गोली फजरमें देणी.

जलोदर (गुरदेका) इलाज.

(५९८) लाइकरएमोनी एसेटेटीस १ औंस एन्टीमोनियल वाईन ४० वूंद एप्सम सोल्ट ३ ड्राम केम्फर वोटर ३० औंस.

जलोदर (नाताकती)

(५९९) टिंकचरओफ स्टील ३० वूंद डाइल्युट एसेटिक एसिड २० वूंद एसेटेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेण पाणी ६ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा मात्रा २ औंस.

मुखपाक इलाज.

(६००) ओप्समसोल्ट ४ ड्राम क्लोरेट ओफ पोटाश ४० ग्रेण लिकरआमोनी एसेटेटीस १ औंस पाणी २ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वखत पिलाणा.

अजीर्ण डेस्पेपस्या इलाज.

(६०१) रिडयुस्ड आयर्न २४ ग्रेण एकस्ट्राकटनक्स वोमिका ६ ग्रेण वेपसीन३६ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन चहिये जितनी मिलाकर २४ गोलियें करणी उसमेंसें एकेक गोली जीमते वखत लेणी.

अजीर्ण इलाज.

(६०२) सालवोले टाइल ९० वूंद सवनाइट्रेट ओफ विसमथ ४५ ग्रेण हाइड्रोस्पानिक एसिड १५ वूंद कारवोनेट ओफ मेगनीश्या ३० ग्रेण पेपरमींटका पाणी ३ औंस कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कारडेमम २ ड्राम मिलाकर एकेक औंस दिनमें तीन वखत देणी.

अजीर्ण.

(६०३) लाइकर पोटासी ३० वूंद चूनेका पाणी १ औंस मिलाकर उसके दो भाग फजर सांझ ताजे दूधमें मिलाकर देणा.

अजीर्ण तुरतका इलाज.

(६०४) कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ कार्डामम ६० वूंद कारबोनेट ओफ सोडा २० ग्रेण पाणी २ औंस.

कबजीयत जीर्ण इलाज.

(६०५) रेसीन ओफ पोडो फाइल ½ से १ ग्रेण क्यालोमेल २ ग्रेण एकस्ट्राकट ओफ हायोसाइम ४ ग्रेण मिलाकर १ गोली चणाणी रातकूं सोते बखत लेणी जलो दर सोजा मगज तथा कलेजेके दरदमें उपयोगी है.

कबजीयत जीर्ण इलाज.

(६०६) कम्पाउन्डरुबार्बपील ४८ ग्रेण व्ल्युपील २४ ग्रेण मिलाकर इसकी १२ गोली करणी एकेक गोली एक दिनके आंतरे रातकूं लेणी.

कबजीयत.

(६०७) पाउडर अेपीका क्युआन्हा ३ ग्रेण हाइड्राजींराईकमक्रीटा ६ ग्रेण दो पुडी करके फजर सांझ पाणीके संग पीणी-

कबजीयत.

(६०८) एकस्ट्राकटनक्सवोमिका ४ ग्रेण एलोझ २० ग्रेण क्वीनाइन ९ ग्रेण क-रुड पील २४ ग्रेण चारोकों मिलाकर १२ गोलिये करणी और रातकूं सूती व-खत एकेक लेणी.

अतीसार मरोडा इलाज.

(६०९) टिकचर ओफ केटेक्यु (कथा) १ ड्राम पेपरमिटका तेल १ वूंद एरो-मेटिक सल्फ्युरिक असिड १५ वूंद इन्फ्युझन ओफ केटेक्यु १ औंस मिलाकर दिनमें दो तीन वखत पीणा.

(६१०) टिंकचर ओफ केटेक्यु ॥ ड्राम वीलका प्रवाही सत्व २ ड्राम स्पिरिट क्लोरोफोर्म १ ड्राम तजका पाणी १ ड्राम.

(६११) क्लोगे डाइन २० वूंद पाणी १ औंस दर तीन घंटेसें दस्तवंध होय जहांतक देणा.

अतिसार इलाज.

(६१२) ग्यालिक एसिड १५ ग्रेण डोवर्स पाउडर ५ ग्रेन दोनोंकों मिलाकर एक पुडी करणी एसी एक पुडी दर चार घंटेसें देणा.

(६१३) रुवार्ब पाउडर १२ ग्रेण इपीकाक्यु आन्हा पाउडर ३ ग्रेण सूंठका भूका ६ ग्रेण तीन भाग कर तीन वखत देणा.

मरोडा इलाज.

(६१४) स्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण सहतमें मिलाकर तीन गोली करणी दिनमें तीन वखत देणी स्युगरलेडके वदले नीला थोथा १ ग्रेण लेणा.

पुराणा मरोडा इलाज.

(६१५) नीलाथोथा १ ग्रेण क्विनाइन ४ ग्रेण अफीम १ ग्रेण एकस्ट्राकट जनश्यन ४ ग्रेण मिलाकर इसकी ४ गोलियें करणी दिनमें तीन चार वखत एकेक लेणी.

चूंक इलाज.

(६१६) एरंडीका तेल १ औंस लाडेनम १० वूंद पीपरमिंनटका अर्क १० वूंद पाणी २ औंस मिलाकर एक वेर पीजाणा.

चूंक इलाज.

(६१७) स्पिरिट ओफ इथर ४० वूंद टिंकचर ओफ जींजर ३० वूंद एप्समसोल्ट २ ड्राम पीपरमेन्टका पाणी १ औंस मिलाकर एक वखतमें पिला देणा.

उलटी इलाज.

(६१८) सोडा वाइकार्व १५ ग्रेण साइट्रिक एसिड १० ग्रेण अथवा सोडा वोटर

हिचकी इलाज.

(६१९) क्लोरोफोर्म २ वूंद इथर सल्फ्युरिक १० वूंद तजका तेल २ वूंद क्रियासोट २ वूंद हाइड्रोस्पानिक एसिड डिल्युट ५ वूंद सालवोले टाइल ३० वूंद ब्रांडी २ ड्राम टिंकचर ओफ वेलेरीयन ॥ ड्राम पाणी १ औंस सबोंकों मिलाकर दर दोदो घंटेसें पिलाणी.

हैजामरी

(६२०) सालवोले टाइल २० वूंद पीपरमिन्टका अर्क १५ वूंद लाडेनम (अफीमका अर्क) २० वूंद ब्रांडी अथवा कांदेका रस ॥ औंस मिलाकर उसमें बराबरका पाणी डाल दर दोदो तीन २ घंटेसे इस प्रमाणसे देणा.

हेजा केदस्त इलाज.

(६२१) सल्फ्युरिक एसिड डिल्युट १० वूंद कार्वोलिक एसिड १ वूंद टिंकचर ओफ आयोडीन २ वूंद किनाइन ५ ग्रेन कपूरका पाणी १ औंस मिलाकर तीन वखत पीणा.

तीक्ष्ण कलेजेका दरद इलाज.

(६२२) नवसादर ४० ग्रेण करमाला १ तोला सोराखार २० ग्रेण चिरायतेका काढा ३ औंस मिलाकर उसका दो भागकर फजर सांझ देणा.

कलेजेका दरद अमूंझणी मूंधोरा इलाज.

(६२३) नवसादर ३० ग्रेण स्पिरिट नाइट्रिक इथर १॥ द्राम ६ औंस पाणीमें मिलाकर दोदो औंस दर तीन घंटेसें पिलाणा.

पुराणा कलेजेका दरद इलाज.

(६२४) कारबोनेट ओफ एमोनिया १५ ग्रेन टिंकचर ओफ शीला ३० बूंद टिंकचर केम्फरकम्पाउन्ड १॥ द्राम कपूरका पाणी २ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाणा.

कलेजेका पकणा इलाज.

(६२५) क्विनाइन ६ ग्रेण पाणी २ औंस डाइल्युट सल्फ्युरिक एसिड १५ बूंद एकेक औंस तीन वेर लेणी.

कामला इलाज.

(६२६) पोडोफाइलम ६ ग्रेण रुबार्ब १८ ग्रेन एकस्ट्राकट हायोस्यामस ४० ग्रेन मिलाकर १२ गोली करणी फजर सांझ एकेक गोली लेणी.

कामला पांडू इलाज.

(६२७) एप्सम सोल्ट ४ द्राम एसेटेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन सोराखार १५ ग्रेण नवसादर ३० ग्रेन ज्युस ओफ टाराक्षकम २ द्राम चिरायतेका काढा ३ औंस मिलाकर तीन वेर पीणा.

कामला

(६२८) एप्समसोल्ट १ द्राम कारबोनेट ओफ मेगनिस्या १२ ग्रेण सालवोले टाइल ३० बूंद पाणी ४ औंस मिलाकर दोदो औंस दिनमें दो वखत देणा.

तिलीइलाज

(६२९) पोटाश ब्रोमाइड ३० ग्रेन हीराकशी ६ ग्रेन एप्सम सोल्ट ३ द्राम कास्याकीचा ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वखत देणा.

रिदयरोग [हार्टडीसीझ] इलाज.

(६३०) सालवोले टाइल ३ द्राम कार्बोनेट ओफ एमोनिया ३० ग्रेन सिंकोनाका क्वाथ ८ औंस मिलाकर दोदो रुपे भर दर तीन घंटेसें.

रिदय रोग.

(६३१) टिंकचर डिजीटेलिस १५ बूंद टिंकचर ओफ स्टील ३० बूंद एसेटेट ओफ पोटाश ६० ग्रेन पाणी २ औंस.

श्लेष्म इलाज.

(६३२) हाइड्रो क्लोरेट ओफ मोर्फया २ ग्रेन सबनाइट्रेट ओफ विसमथ ६ द्राम गूंदकी बारीक भुकणी २ द्राम मिलाकर तमाखूकी तरे सूंघणी.

श्वासकास हांफणी [ब्रोनकाइटीस]

(६३३) वाइन ओफ एन्टीमनी ४० बूंद स्पिरिटनाइट्रिकइथर २ ड्राम टिंकच ओफ डीजीटेलीस २० बूंद टिकचर एकोनाइट २० बूंद पाणी ४ औंस ४ भाग क दिनमें ४ वेर पीणा.

श्वासकास हांफणी.

(६३४) लाइकर एमोनी एसेटेटीस १ औंस ईपीकाक्यु आन्हावाईन १ ड्राम टिंकचर एकोनाईट २० बूंद टिंकचर केम्फर कम्पाउन्ड २ ड्राम टिंकचर शीला १ ड्राम पाणी ३ औंस मिलाकर उसके ४ भाग कर हरेक भाग दर तीन घंटेसे देणा छोटे च चोंकों मात्रा १ सें ३ ड्राम ऊपरमुजब.

पुराणा श्वासकास इलाज.

(६३५) सीरपसीला ४ ड्राम डिल्युट नाइट्रिक एसिड ३० बूंद टिकचर हायो स्पाम २ ड्राम टिकचर डिजीटेलिस २० बूंद स्पिरिट ओफ क्लोरोफोर्म २ ड्राम सिंकोना की चा ६ औंस मिलाकर हमेस चोथे भागकी दवा फजर सांझ पिलाणी.

श्वासकास.

(६३६) लिक्विड एकस्ट्राकट ओफ सारसापरिला ४ ड्राम एपीकाक्यु आन्हा ६० बूंद टिंकचर सीला ४० बूंद मोलेठीकी चा ६ औंस मिलाकर इसके ४ भाग कर एकेक भाग फजर सांझ देना.

श्वासकास कफके संग.

(६३७) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर २० ग्रेण सालवोलेटाइल १ ड्राम एक औंस पाणीमें मिलाकर पिलानेसें कफ अलग होकर निकलता है.

फेफसेका सोजा.

(६३८) एन्टीमोनियलवाईन ५ बूंद टिंकचर एकोनाइट २ बूंद पाणी ४ ड्राम मिलाकर दिनमें ४ वेर पिलाणी.

फेफसेका सोजा न्युमोन्या.

(६३९) सालवोले टाइल ३ ड्राम स्पिरिट नाइट्रिक इथर ३ ड्राम एपीकाक्यु आन्हा वाईन १ ड्राम टिंकचर सीला १ ड्राम टिंकचर सेनीगा २ ड्राम केम्फर घोटा ४ औंस सबोंकों मिलाकर दिनमें ४ वेर पीना.

दमका इलाज.

(६४०) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ३ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ६ ग्रेण केम्फर (कपूर) ४ ग्रेण एकस्ट्राकट हायोस्पागस ९ ग्रेण मिलाकर इसकी ६ गोलिये बणाणी दो दो घंटेसे दो दो गोली देणी.

(६४१) सल्फेट ओफ क्विनाइन ९ ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न १२ ग्रेण एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ६ ग्रेण अफीम १ ग्रेण मिलाकर गूंदके पाणीमें ६ गोलियें करणी, एकेक गोली दिनमें २ वखत.

(६४२) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ५ ग्रेण टिंकचर बेलाडोना ५ बूंद पाणी १ औंस मिलाकरके दिनमें तीन वखत या दो वखत पीणा.

बडी खासी बच्चोंकी खुलखुलिया इलाज.

(६४३) सालवोलेटाइल ४० बूंद स्पिरीट ओफ क्लोरोफोर्म २० बूंद डील्युट हाइड्रोस्पानिक एसिड १० बूंद लीकरमोफर्या १२ बूंद कपूरका पाणी १६ द्राम मिलाकर उसमेंसें ८ मा भाग तीन २ घंटेसें देणा.

खासी सूकी इलाज.

(६४४) एन्टीमोनियल वाइन ४० बूंद स्पिरिट नाइट्रिक इथर १ द्राम म्युसीलेज ओफ गम एकेश्या ४ द्राम कपूरका पाणी २॥ औंस मिलाकर उसमेंसें तीन भाग कर दिनमें तीन वखत देणा.

(६४५) एपीकाक्यु आन्हा पाउडर ६ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ९ ग्रेण मोलेठीका चूर्ण १२ ग्रेण मिलाकर तीन पुडी करणी चाटे जाय जितने सहतमें तीन वखत देणा.

खासी कफका इलाज.

(६४६) एपीकाक्यु आन्हा वाइन ४५ बूंद एलिकझर पेरीगोरिक ३० बूंद एमोनाएक मिकश्चर ३ औंस तीन हिस्सा कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६४७) कारवोनेट ओफ एमोनिया १० ग्रेण एपीकाक्यु आन्हा पाउडर १५ग्रेण कम्पाउन्डस्पिरिट ओफ लवंडर २० बूंद पाणी २ औंस मिलाकर सब दवा एक बेरमें पीणी थोडी देर पीछे ऊपरसे चा पीणी.

क्षय इलाज.

(६४८) लिकर पोटाश ३० बूंद टिंकचर सिंकोनाक पाउन्ड ९० बूंद कम्पाउन्ड केम्फर टिंकचर ९० बूंद टिंकचर सीला ३० बूंद पाणी ३ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६४९) सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न ३० बूंद डाइल्युटसल्फ्युरिक १० बूंद क्विनाइन ६ ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर उसमेंसें तीन वेर दिनमें देणा.

शिरके रोगका इलाज.

(६५०) पोटाश आयोडाइड १० ग्रेण चिरायतेके चा संग दिनमें तीन वेर देणा.

शिरका रोग.

(६५१) पोटाश ब्रोमाइड १ ड्राम चिरायतेकी चा ३ औंस मिलाकर इसमेंसें एकेक औंस दिनमें तीन वेर देणी.

शिरका रोग इलाज.

(६५२) नवसादर १ ड्राम चिरायतेकी चा ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दवा दिनमें तीन वखत देणी.

पित्तसे शिर दुखनेका इलाज.

(६५३) एप्समसोल्ट ४ ड्राम सोडावाइ कारबोनास ४० ग्रेण पाणी २ औंस मिश्री २ ड्राम टार्टरिक एसिड ½ ड्राम नींबूका शरबत ४ ड्राम पाणी ४ औंस नं० १ की दवा तथा नं० २ की दवा जुदी २ मिलाकर पीछे दोनुं प्रवाही मिलानेसें सोडावाटरकी तरे उफाण आनेसे उसकू पी जाणा.

रक्तपित्त होजरी तथा फेफसेका इलाज.

(६५४) एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १॥ ड्राम एलिकझर पेरिगोरिक ४ ड्राम सीनेमनवोटर ५॥ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

रक्तपित्तका इलाज २.

(६५५) श्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण गुलकंद ५ ग्रेण ४ गोलियें करणी तीन २ घंटेसे एकेक देणी.

(६५६) गेलिडएसिड ४० ग्रेण एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ सीनेमन ४ ड्राम डिस्टील्डवोटर ८ औंस मिलाकर दो दो औंस दवा चार २ घंटेसें देणी.

मूंमेंसे रक्तपित्त खून गिरे इलाज.

(६५७) सल्फेट ओफ झींक ३० ग्रेण सहत १॥ औंस गुलाब जल १२ औंस कुरले करना.

(६५८) फुलाइ भई फिटकडी २० ग्रेण टिंकचर ओफ मर्ह २ ड्राम आठ औंस पाणीमें मिलाकर उसका कुरला करना.

इलाज मिरगीका.

(६५९) पोटाश ब्रोमाइड ४५ ग्रेण टिंकचर हायासाइम १ ड्राम सालवोलेटाइल १ ड्राम टिंकचर बेलाडोना २० बूंद पाणी ३ औंस मिलाकर तीन वखत देना बच्चेकी मात्रा १ चमचा.

(६६०) पोटाश्यम ब्रोमाइड ओफ १ ड्राम आयोडाइड ओफ पोटाश्यम १२ ग्रेण कारबोनेट ओफ पोटास ४० ग्रेण टिंकचर ओफ ओरेन्ज ६ ड्राम पाणी ५॥ औंस दो दो औंस फजर सांझ.

खेंचाताणका इलाज.

(६६१) पोटाश ब्रोमाइड १२ ग्रेण क्लोरलहाइड्रेट ५ ग्रेण पाणी १ औंस शरबत २ ड्राम मिलाकर तीन २ वखत देनी तीन घंटेसें.

(६६२) क्यालोमेल ४ ग्रेण सांटोनीन २ ग्रेण मिश्री १० ग्रेण सहत तथा पाणीके संग ५ वर्षके बच्चेकुं देनेसें जुलाब होगा हिचकना मिटता है.

हिस्टीरीयेका इलाज.

(६६३) लाइकर मोफर्या १ ड्राम क्यालोरलहाइड्रेट ॥ ड्राम पोटाश ब्रोमाइड १ ड्राम शरबत ८ ड्राम दो औंस पाणीमें मिलाकर तीन भाग दिनमें तीन वेर देना.

(६६४) ब्रोमाइड ओफ पोटाश्यम ३० ग्रेण चिरायतेकी चा ६ औंस आमोनीएटेड टिंकचर ओफ वेलेरीयन १ ड्राम मिलाकर दिनमें तीन वेर दो औंस दवा पिलानी.

(६६५) फलावर्स ओफ सलफर २ औंस क्रीम ओफ टार्टर ४ ड्राम नारंगीका शरबत अथवा सहत २ मात्रा १ ड्राम दिनमें २।३ वेर.

बवासीरक इलाज.

(६६६) क्लोरलहाइड्रेट १० ग्रेण ब्रोमाइड पोटाश्यम १५ ग्रेण मिश्रीका पाणी १ औंस मिलाकर दर तीन या चार घंटेसे देनी.

धनुर्वातका इलाज.

(६६७) सिरप ओफ आयोडाइड ओफ आयर्न ६० बूंद आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेण पाणी ३ औंस मिलाकर एकेक औंस दिनमें तीन वेर पीना.

(६६८) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम २ ग्रेण रस कपूरका प्रवाही ९ बूंद चिरायतेकी चा ३॥ औंस मिलाकर दिनमें ३ वेर देणी.

सिफिलीस उपदंसका इलाज.

(६६९) पोटाश आयोडाइड १ ड्राम लिकर हाइड्रापर क्लोरीड ६ ड्राम एकस्ट्राक्ट सारसापरीला १२ ड्राम टिंकचर चीरेटा ६ ड्राम पाणी १० औंस मिलाकर ½ भाग दिनमें तीन वेर देना.

(६७०) लीकर आर्सेनिक १ ड्राम पोटाश आयोडाइड १ ड्राम सीरप ओरेंसपाई ८ ड्राम टिंकचर आयोडाइड १ ड्राम पाणी ८ औंस मात्रा ½ दिनमें दो वखत जीमके लेना.

(६७१) केलोमेल २४ ग्रेण अफीम ३ ग्रेण बारे गोली बणाकर दिनमें तीन वेर देनी जोरके बेमारकूं देनी.

(६७२) ब्ल्युपील १८ ग्रेण सल्फेट ओफ आयर्न ६ ग्रेण अफीम २ ग्रेण ६ गोली बणाकर फजर सांझ लेनी एकेक.

(६७३) हाइड्रार्जीराइ कमक्रीटा १८ ग्रेण सल्फेट ओफ किनाइन १२ ग्रेण अफीम २ ग्रेण ६ गोली बणाकर फजर सांझ एकेक.

(६७४) लाईकर एमोनी एसेटेटीस २ औंस एसेटेट ओफ पोटाश ९० ग्रेण गूंदका पाणी १ औंस कपूरका पाणी ३ औंस.

प्रमेह सुजाकका इलाज.

(६७५) लाइकर पोटाश ६० बूंद टिंकचर हायोस्पामस २ ड्राम सोराखार १ ड्राम चूनेका पाणी ४ औंस मिलाकर इसका ४ भाग कर दिनमें ४ वखत पिलाणी.

(६७६) वालसमकोपेवा ओफ ४५ बूंद टिंकचर हायो साईम ९० बूंद पाणी ३ औंस लाइकर पोटास ४५ बूंद गूंदका पाणी १ औंस तीन भाग कर दिनमें तीन वेर देणा.

(६७७) चंदनकातेल ४० बूंद कवावचीनीका चूर्ण । तोला सोनागेरु । तोला गोखरूका चूर्ण । तोला मिलाकर इसके दोभाग करणा फजर सांझ सहतमें चाटणा.

(६७८) लाइकर पोटासी ४५ बूंद लाडेनम १५ बूंद केम्फर वोटर ३ औंस मात्रा १ लीकर ग्लास तीन वेर.

(६७९) सल्फेट ओफ झिंक १२ ग्रेन केम्फर ६ ग्रेन कम्पाउन्डकायनो पाउडर २० ग्रेन १२ गोलीकरके दोदो गोली दिनमें ३ वेर.

पुराणे प्रमेहका इलाज.

(६८०) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेन साइट्रेट ओफ आयर्न एन्डकवाइन्या १५ ग्रेन चिरायतेकी चा ३ औंस मात्रा १ लीकर ग्लास दिनमें तीन वेर पिलाणा.

(६८१) टिंकचर ओफ स्टील २० बूंद टिंकचर ओफ केन्थारीडीस ५ बूंद टर-पेन्टाईन १० बूंद पाणी १ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाना.

(६८२) वाइकारवोनेट ओफ पोटाश ४० ग्रेन पाणी ४ औंस मिलाकर इसके ४ भागकर दिनमें चार वखत देणा.

पेसावमें पथरीका इलाज.

(६८३) वाइकारवोनेट ओफ पोटाश ३० ग्रेन सोराखार १० ग्रेन साइट्रिक एसि-ड १५ ग्रेन पाणी ४० तोला मिलाकर एक दिनमें सव दवा पीजाणी.

(६८४) साइट्रेट ओफ पोटाश ४५ ग्रेन पाणी ३ औंस मिलाकर तीन हिस्साकर दिनमें तीन वेर पीणा.

(६८५) एकस्ट्राकट जनश्यन १ ग्रेन मर्ह २ ग्रेन एलिया १ ग्रेन केशर १ ग्रेन मिलाकर एक गोली करणी ऐसी एकेक गोली दिनमें तीन वेर लेणी.

नष्टार्त्तव [दस्तानका] इलाज.

(६८६) गेलिक एसिड ४५ ग्रेन लिकीड एकस्ट्राकट ओफ अर्गट १॥ ड्राम डिल्यु-टसलफ्युरिक एसिड ४५ बूंद तजका पाणी३औंस मिलाकर तीन भाग कर दिनमें ३ वेर लेणा.

लाल प्रदरका इलाज

(६८७) डिल्युटसल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद फिटकडी ३० ग्रेन हीराकसी ६ ग्रेन तजका पाणी ४॥ औंस.

ऋतुधर्म बहोत खून गिरणा.

(६८८) गेलिक एसिड ४० ग्रेन एरोमेटिक सल्फ्युरिक एसिड १ ड्राम टिंकचर ओफ सीनेमम ४ ड्राम डिस्टील्ड वोटर ८ औंस.

(६८९) ओकसाइड ओफ झिंक २४ ग्रेन कम्पाउन्ड सीनेमन पाउडर १ ग्रेन वार्क पाउडर १ ड्राम १२ पुडीकर दिनमें तीन बेर देणा.

दरद करके ऋतू धर्म होणा इलाज.

(६९०) लिकर हाइड्रार्जीरीपर क्लोराइड १॥ ड्राम कम्पाउन्ड टिंकचर ओफ सिं-कोन १॥ ड्राम कम्पाउन्ड डिकोकसन ओफ सारिसापरिला ३ औंस.

गर्भाशय प्रदर इलाज.

(६९१) आयोडाइड ओफ पोटाश्यम ६ ग्रेन कोडलिवर ओइल ६ ड्राम चिराय-तेकी चा ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीन बेर देणा.

हकीमी यूनानी नुसके.

हमेसका बुखार इलाज.

(६९२) सूंफ कासनी मोलेठी वनफसा ए दरेक तीन २ तोला पाणी २ रतल द-वाकों कूट पाणीमें ऊकाल आधा पाणी रहेतव छाण उसका तीन भागकर दिनमें तीन बेर देणा दवाके पिलाते दरवक्त एकेक तोला गुलकंद अथवा मिश्री मिलाणी.

आंतरेका बुखार इलाज.

(६९३) कासनी तोला १॥ कुलफेके बीज तोला ॥ पाणी रतल ।॥ इस दवायों-कों जो कूटकर पाणीमें तीन घंटे भिगाणा पीछे छाण तोला २ मिश्री मिलाकर इसका तीन भाग करणा और एक भाग दर तीन २ घंटेसे पिलाणा दस्त साफ नहीं होय तो मिश्रीके मावजेमें खीरकिस्त अथवा मांजू तोला १ पहली वेरमें डालकर पीनेसें पेट साफ होजायगा.

तीक्ष्णसंधि वायुका इलाज.

(६९४) सिपस्तान ६ दाणा उनाव १० दाणा कासणी तोला १ वनफसा ।॥तोला ।॥ सेर पाणीमें दो घंटे भिगाकर पीछे उसका नीतरा पाणी छाण कर तीनहिस्साकर दिनमें तीन वेर पिलाणा जो पेट कबज होय तो उसमें मांजू फल तोला १ तथा करमाला तोला १ डालणा.

(६९५) हरडेकी छाल तोला ।॥ निशोत तोला । विसफायज तोला ।॥ सातग तोला ।॥ सुरीजन तोला । कासणी तोला १ गुलाबका फूल तोला १ इन सबोंकूं १॥

सेर पाणीमें उकाल आधा पाणी रहे तब छाण दिनमें तीन वखत पीणा दस्त वहोत होय तो पहली तीन दवा निकाल डालणी.

(६९६) केशर गहूंभर अफीम १० गहूंभर उसकूं एक औंस पाणीमें मिलाकर सांधेके दरदपर लेप करणा पाणी गरम चाहिये.

(६९७) एकली लुलमुल्क वावूना गुलखेरु जव खुवाजी दरेक एकेक तोला पीस पाणीमे सांधोंपर लेप करणा.

तिलीका इलाज.

(६९८) छोटी जो हरडे सातरा करफसके बीज वेखेकेवर ए हरेक ॥ तोला सूंफ १ तोला अनीसुन १ तोला अजखर । तोला इन सब दवाकूं जरा जो कूटकर १ सेर पाणीमें उकाल आधा रहे तव छाणकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा कूचा रहे सो पाणीमें भिगा रखणा औंर सांझकूं छाणकर उस पाणीमें मिश्री मिलाकर फेर पीणा दुसरे दिन ए नुसका दुसरा तइयार करणा.

तिली इलाज.

(६९९) उसक तोला १ गूगल तोला १ जायफल तोला १ ए तीन चीजोंकों पीस उसमें वाइन (दारू)का थोडा सिरका सहत जेसा जाडा लेप होजाय इतना डाल णा ए दवा ताप तिलीपर दिनमें दो वखत लगाणी.

सन्निपातज्वर इलाज.

(७००) कासणी तोला २ कुलफेके बीज खोखरे करे भये तोला २ आलुवुखारे २० इन दवायोंकों ।॥ सेर जलमें दो कलाक भिगाणा पीछे पाणी छाण लेणा उसमें मिश्री २।३ तोला डालकर तीन वखत तीन २ घंटेसे पीणी.

हेजाके दस्त इलाज.

(७०१) अनीसुन तोला १ अगर तोला १ मस्तगी तोला ॥ साहजीरा तोला ॥ इन दवायोंकों जो कूटकर १ सेर पाणीमें उकाल आधारख छाण लेणा ठंढा भये वाद घडा चमचाभर एक घंटेसे मिलाणा.

मरोडा आम खूनका इलाज.

(७०२) ईसवगुल तुखमरेहान (तुलशीके बीज) तुखमें मरो तुखमें वारतंग ए एकेक बीज एकेक तोला उसकी फकीकर उसमेंसें ॥ तोलाकी फकी दर ४ घंटेसें पाणी सें लेणा इसकूं चार तुखम कहते हैं.

पुराणा मरोडा इलाज.

(७०३) अनारकी सूकी छाल १ तोला मांजूफल ॥ तोला हब्बूल आस ५ तोला तथा सीपाकका सोडा १ तोला महीन चूर्ण कर उसमेंसें आधा तोलेकी ३ पुडी करणी दिनमें तीन वेर गूंदके पाणीमें पीणा.

चूंक शूल इलाज.

(७०४) सूंठ पीपर सेलारस केशर ए चार दोदो ग्रेन और अफीम तथा जुंदवेस्तर एकेक ग्रेन सबोंका बारीक चूर्णकर उसकूं गूंदके जलमें मिलाकर ४ गोली बनाणी एक २ गोली तीन २ घंटेसें देणी.

चूंक शूल पेट कबज इलाज.

(७०५) सकमोनिया (इस्केमोनी) १ तोला कालीमिरच १ तोला सूंठ १ तोला सताव सूका ॥ तोला टंकणखार ॥ तोला कुलफा ॥ तोला पानकी जड ॥ तोला इन सबोंकों कूट कपडछांनकर इसमेंसें १० से १५ ग्रेन दवा सहतमें मिलाकर देणा जरूर पडेतो दिनमें दो वेर देणी इससै दस्त साफ आता है.

कलेजेका सख्त सोजा इलाज.

(७०६) कासनी तोला ॥ पीचोरी बीज ॥ तोला दोनुं दवाकूं जो कूटकर ॥ सेर पाणीमें आधी घंटा भिगाकर नीतराजल लेकर उसमे मीठी अनारका रस तथा सिकंजबीन १॥ तोला डालकर सब पाणी फजरमें पीणा सांझमें फेर इसी मुजब ताजा बनाकर पीणा.

पीलिया बुखार प्यास इलाज.

(७०७) पीचोरीका बीज कासणी तथा सूंफ हरेक आधा २ तोला लेकर ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भीगाकर उसका नितरा पाणी लेकर ॥ तोला मिश्री डालकर पिलाणा एकेक वखतमें ताजी दवा बणाणी सो पीणी दस्त साफ नहीं आवेतो उसमें किरमालेकी गिर १ तोला डालणा.

पीलिया कामला इलाज.

(७०८) गुलेगाफेज अफसनतीन परेशी आवशान हरेक आधा २ तोला और रुवार्ब २० ग्रेन इन सबोंकों ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भिगाकर उसका नीतरा भया जल लेकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा दस्त जादा होयतो रुवार्ब थोडा डालणा अथवा बिलकुल नहीं डालणा इसतरे दर टेमोटेम दवा बणाणी थोडे दिन पीनेसें बुखारका पीलियाकामला मिटता है.

मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा इलाज.

(७०९) बेदाणा तोला । तुखमे खतमी तोला ॥ ईसबगोल तोला । इन तीनोंकों थोडे पाणीमें ॥ घंटे भिगाकर नितरा पाणी चीकणा लुआब जेसा उसमें थोडा सादा पाणी डाल पीणा दो चार दिन दोदो टंक पीणेसें मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा दाह आवात मिटता है.

(७१०) उनाबदाणा १० सीपस्तान दाणा ६ आलुबुखारा दाणा ६ बनफसा तोला ॥ कासनी तोला । पीचोरीके बीज तोला ॥ हरडे तोला ॥ इन सब दवायोंकूं १ सेर पाणीमें उकाल आधा पाणी बाकी रहे तब छाण फजर सांझ पीणा अथवा इकेला बनफसाका शरबत फजर सांझ दोदो तोला पीणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७११) हरडकी छाल सातेरा अफसनतीन गुलेगाफेज ए दरेक आधा तोला कासनी ॥। तोला और कालीछड ॥ तोला इन सर्वोंकूं १ सेर पाणीमें उकालकर पाणी छान लेणा उसके दोहिस्सेकर फजर सांझ पीणा.

(७१२)रुवार्व ग्रेन ३० गूगल ग्रेन १५ गारेकुन ग्रेन ३० निसोत ग्रेण ३० गोलजरावंद ग्रेन १० अनीसुन ग्रेन १० उटींगण ड्राम १ इन सर्वोंकों १ सेर पाणीमें ॥ घंटे उकालकर पाणी छाण फजर सांझ आधा २ पीजाणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७१३) अनीसुन तथा सूंफ दरेक आधा२ तोला जो कूटकर अधसेर पाणी उकलता उस दवायोंपर डालणा इनोकीचा करणी इसमें सोराखार २ ड्राम डालकर पीछै शीशीमें भरणा फेर दोदो औंस दिनमें तीन वेर पीणा.

श्लेष्म जुकाम नाकमेंसें पाणी गिरना गलादुखणा जरा बुखार इलाज.

(७१४) उनाब दाणा ७ सीपस्तान दाणा ७ वनफसा तोला ॥। खस २ तोला इनोंकों कूट एक पात्रमें रख ऊकलता जल ॥ सेर इसपर डाल थोडी देर भीगाये रखणा पीछे छाण दोहिस्सेकर फजर सांझ जरा मिश्री मिलाकर पीणा दोचारदिन इस मुजब ताजी २ दवा पीणेसें सलेपम मिटता है दस्तबंध होय तो खीर किस्त अथवा मांजू तो० १ डालकर पीणा.

श्लेष्म जुखाममें पका कफ पडे तब इलाज.

(७१५) जूफा तोला ॥ मोलेठी छीली भई तोला ॥। सूके अंजीर तोला ४ इन तीन चीजोंकूं फजर सांझ दोनूं वखत० ॥। सेर पाणीमें उकाल छाणकर पीतेवखत दरवखत तुरंज बीन तोला २ मिलाकर छाणकर पिलादेणा.

सूकी खासी इलाज.

(७१६) बेंदाणा तोला । उसका थोडा पाणीमें लुआब निकाल उसमें जरा मिश्री पिलाय पीणा.

सूकाखास इलाज.

(७१७) बनफसा तोला ॥ मोलेठी तोला ॥ तुखमे खतमी तोला । उनाबदाणा पांच कदूके बीजका मगज तोला । इन दवाओंकूं ॥। सेर पाणीमें उकाल आधापाणी बाकीर है, तब छाण जरामिश्री मिलाकर पीणासांझकूं इसके कूचे उकालकर पीणा.

(७१८) जूफा तोला ॥ परेशीयावशान तोला ॥ वेखे सोसन तोला । मोलेठी तोला ॥। अलसीका बीज तोला । करफसकी जड तोला । सूका अंजीर दाणा ४ इन

चूंक शूल इलाज.

(७०४) सूंठ पीपर सेलारस केशर ए चार दोदो ग्रेन औंर अफीम तथा जुंदबेस्तर एकेक ग्रेन सवोंका वारीक चूर्णकर उसकूं गूंदके जलमें मिलाकर ४ गोली बनाणी एक २ गोली तीन २ घंटेसें देणी.

चूंक शूल पेट कवज इलाज.

(७०५) सकमोनिया (इस्केमोनी) १ तोला कालीमिरच १ तोला सूंठ १ तोला सताव सूका ॥ तोला टंकणखार ॥ तोला कुलफा ॥ तोला पानकी जड ॥ तोला इन सर्वोकों कूट कपडछांनकर इसमेंसें १० से १५ ग्रेन दवा सहतमें मिलाकर देणा जरूर पडेतो दिनमें दो वेर देणी इससै दस्त साफ आता है.

कलेजेका सख्त सोजा इलाज.

(७०६) कासनी तोला ॥ पीचोरी वीज ॥ तोला दोनुं दवाकूं जो कूटकर ॥ सेर पाणीमें आधी घंटा भिगाकर नीतराजल लेकर उसमे मीठी अनारका रस तथा सिकंजवीन १॥ तोला डालकर सब पाणी फजरमें पीणा सांझमें फेर इसी मुजव ताजा बनाकर पीणा.

पीलिया बुखार प्यास इलाज.

(७०७) पीचोरीका वीज कासणी तथा सूंफ हरेक आधा २ तोला लेकर ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भीगाकर उसका नितरा पाणी लेकर ॥ तोला मिश्री डालकर पिलाणा एकेक वखतमें ताजी दवा वणाणी सो पीणी दस्त साफ नहीं आवेतो उसमें किरमालेकी गिर १ तोला डालणा.

पीलिया कामला इलाज.

(७०८) गुलेगाफेज अफसनतीन परेशी आवशान हरेक आधा २ तोला और रुबार्ब २० ग्रेन इन सर्वोकों ॥ सेर पाणीमें १ घंटे भिगाकर उसका नीतरा भया जल लेकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीणा दस्त जादा होयतो रुबार्ब थोडा डालणा अथवा बिलकुल नहीं डालणा इसतरे दर टेमोटेम दवा वणाणी थोडे दिन पीनेसें बुखारका पीलियाकामला मिटता है.

मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा इलाज.

(७०९) बेदाणा तोला । तुखमे खतमी तोला ॥ ईसबगोल तोला । इन तीनोंकों थोडे पाणीमें ॥ घंटे भिगाकर नितरा पाणी चीकणा लुआब जेसा उसमें थोडा सादा पाणी डाल पीणा दो चार दिन दोदो टंक पीणेसें मूत्राशयका तीक्ष्ण सोजा दाह आघात मिटता है.

(७१०) उनावदाणा १० सीपस्तान दाणा ६ आलुबुखारा दाणा ६ वनफसा तोला ॥ कासनी तोला । पीचोरीके वीज तोला ॥ हरडे तोला ॥ इन सब दवायोंकूं १ सेर पाणीमें उकाल आधा पाणी बाकी रहे तब छाण फजर सांझ पीणा अथवा इकेला वनफसाका शरबत फजर सांझ दोदो तोला पीणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७११) हरडकी छाल सातेरा अफसनतीन गुलेगाफेज ए दरेक आधा तोला कासनी ॥। तोला और कालीछड ॥ तोला इन सबोंकूं १ सेर पाणीमें उकालकर पाणी छान लेणा उसके दोहिस्सेकर फजर सांझ पीणा.

(७१२)रुवार्व ग्रेन ३० गूगल ग्रेन १५ गारेकुन ग्रेन ३० निसोत ग्रेण ३० गोलजरावंद ग्रेन १० अनीसुन ग्रेन १० उटींगण द्राम १ इन सबोंकों १ सेर पाणीमें ॥ घंटे उकालकर पाणी छाण फजर सांझ आधा २ पीजाणा.

जलोदर कलेजेका इलाज.

(७१३) अनीसुन तथा सूंफ दरेक आधा२ तोला जो कूटकर अधसेर पाणी उकलता उस दवायोंपर डालणा इनोकीचा करणी इसमें सोराखार २ द्राम डालकर पीछे शीशीमें भरणा फेर दोदो औंस दिनमें तीन वेर पीणा.

श्लेष्म जुकाम नाकमेंसें पाणी गिरना गलादुखणा जरा बुखार इलाज.

(७१४) उनाव दाणा ७ सीपस्तान दाणा ७ वनफसा तोला ॥। खस २ तोला इनोंकों कूट एक पात्रमें रख ऊकलता जल ॥ सेर इसपर डाल थोडी देर भीगाये रखणा पीछे छाण दोहिस्सेकर फजर सांझ जरा मिश्री मिलाकर पीणा दोचारदिन इस मुजब ताजी २ दवा पीणेसें सलेपम मिटता है दस्तबंध होय तो खीर किस्त अथवा मांजू तो० १ डालकर पीणा.

श्लेष्म जुखाममें पक्का कफ पडे तब इलाज.

(७१५) जूफा तोला ॥ मोलेठी छीली भई तोला ॥। सूके अंजीर तोला ४ इन तीन चीजोंकूं फजर सांझ दोनूं वखत० ॥। सेर पाणीमें उकाल छाणकर पीतेवखत दरवखत तुरंज बीन तोला २ मिलाकर छाणकर पिलादेणा.

सूकी खासी इलाज.

(७१६) बेदाणा तोला । उसका थोडा पाणीमें लुआब निकाल उसमें जरा मिश्री पिलाय पीणा.

सूकाखास इलाज.

(७१७) बनफसा तोला ॥ मोलेठी तोला ॥ तुखमे खतमी तोला । उनाबदाणा पांच कदूके बीजका मगज तोला। इन दवाओंकूं॥। सेर पाणीमें उकाल आधापाणी बाकीर है, तब छाण जरामिश्री मिलाकर पीणासांझकूं इसके कूचे उकालकर पीणा.

(७१८) जूफा तोला ॥ परेशीयावशान तोला ॥ वेखे सोसन तोला । मोलेठी तोला ॥। अलसीका बीज तोला । करफसकी जड तोला । सूका अंजीर दाणा ४ इन

सर्वोंकूं फजर सांझ पोणसेर पाणीमें उकाल आधापाणी रखकर छाण थोडी मिश्री मिलाकर दिनमे दोवखत पीणा.

(७१९) शरबते जूफा तोला १ फजर सांझ अथवा मीठे विदामका तेल अथवा कद्दूके बीजोंका तेल छोटा चमचाभर दिनमें दोतीन वेर पीणेसें सूकी खासी मिटती है गलेमें खरखराट होय और गलासूका मालमदेतो तेल देते वखत रव्वेसूस तीनमासा पाणीमें घसकर तेलमें मिलादेणा और मूमें बी रव्वेसूस चूसणेकूं रखणा.

कफकी खासीका इलाज.

(७२०) कर फसकी जड तोला ३ सूंफकी जड तोला ३ वेखेकेबर तोला ३ जूफा तोला ४ इनदवायोंकों तीनसेर जलमें धीमी आंचसें उकाल आधा रहे तब छाणलेणा उसमें २० तोला मिश्री मिलाकर फेर उकालणा जब शरबत बणजावे उसकूं रख छोडणा उसमेंसे २।३ तोला फजर सांझ पीणा.

श्वास हांफणी दम इलाज.

(७२१) अंजीर सूकादाणा ५ उनाबदाणा ७ सीपस्तानदाणा ७ वनफसा तोला ॥ गायजुवान तोला ॥ इण सर्वोंकों १ सेर पाणीमे उकाल० ॥ सेर पाणी बाकी रहे तब छाण उसमें जरा मिश्री मिलाकर दोहिस्से कर फजर सांझ पीणा.

(७२२) अंजीर सूका तोला २ मेथी सूंफ ओसा [वजारमें तगर कहतें हैं] जूफा ये दरेक एकेक तोला इनसर्वोंकों रातकूं १॥ सेर पाणीमें भिगाकर फजरमें धीमी आंचसें उकाल आधा रहणेसें छाण उसमें १५ तोला सहत डाल फेर पीछै धीमी आंचसें उकालणा और पतला सरबत करणा पीछै उसमें इस्कीलकी भूकी अथवा जंगली कांदेकी भूकी ३० ग्रेण तथा केशर ५ ग्रेण डालकर अछीतरे मिलाकर एक काच तथा चीणीके पात्रमें रख छोडणा फजर सांझ एकेक तोला देणा.

(७२३) अफ तीमून तोला ॥ उसकूं ॥ सेर पाणीमें उकालणा आधा पाणी बाकी रहे उसमें जरामिश्री मिलाकर दिनमें दोवखत पीणा.

(७२४) मोलेठी छीली भई तोला १० परेशीयावसान तोला ३॥ खस २ तोला ३॥तोला जूफा तुखमे खतमी सूंफ अनीसुन येचार चीजों दरेक एकेक तोला उनाबदाणा ५० सीपस्तानदाणा ५० तीनसेर पाणीमें रातकूं भिगाकर पीछै धीमे आंचसें फजरमें उकाल आधा जल रहे तब छाण मिश्री १॥ सेर डाल फेर धीरे आंचसें उकाल पतले सहत जेसा शरबत बणाणा मात्रा १ तोलेसें २ तोले दिनमें तीनवेर.

क्षयका इलाज.

(७२५) गुलाबके फूलकी सूकी कली डंखली विगरकी १॥ तोला बांबलका गूंद तोला १॥ गेहूंका सत्व तोला ॥। रव्वेसूस तोला ॥। कडाया गूंद तोला ॥। काठी

तथा सपेद खसखस एकेक तोला तवासीर सुफेद तोला १॥ केशर तीनमासा अलग २ कूट एकठी करणी और पाणीमें घोट ॥ तोलेकी टिकडियां या गोलीयों बांधकर सूकाणी मात्रा एकेक टिकडी फजर सांझ अथवा तीन वेर टिकडीका भूकाकर १ चमचा खस-खसके शरबतके संग पीणा.

फेफसेमेसें रक्तपित्तका खून गिरे सो इलाज.

(७२६) फिटकडीकी भूकी ग्रेण ३० बांचलके गूंदकी भूकी ग्रेण ४० मिश्रीकी भूकी ग्रेण ४० सबोंकों मिलाकर ४ पुडी करणी एकेक पुडी ठंढे पाणीके संग चार २ घंटेसे देणा.

(७२७) हीरादखन ॥ ड्राम (कमरकस) अफीम १ ग्रेण इसकी ४ पुडी करणी तीन २ घंटेसे एकेक पुडी देणी.

रिदयरोग (पाल्पीटेशन ऑफ धीहार्ट इलाज)

(७२८) गुलेगाय जबान तथा गिले अरमनी दरेक तोला ॥ तवाशीर धाणेका मगज गुलावका फूलसूका मिश्री ये चार चीज एकेक तोला जुदी २ कूट छांणलेणा पीछे सब संग मिलाकर उसमेसें फजर सांझ । से ॥ तोला फाकणा.

कफकी खासी इलाज.

(७२९) मोलेठीका चूरा २४ ग्रेण लींडीं पीपरका चूर्ण २४ ग्रेन बीजाबोल २४ ग्रेन कडवे विदाम छीले भये ग्रेन ३६ इन सबोंकों पीस गूंदके पाणीमें २४ गोली बांधणी उसमेंसें तीनचार गोली फजर इसी मुजब सांझकूं देणी.

(७३०) सेला रस ग्रेन १५ सहरी लोबान ग्रेन १५ बीजाबोल ग्रेन १२ अफीम ग्रेन २ इन दवाओंकुं पीस गुंदके पाणीमें १२ गोलियां बांधणी मात्रा गोली २ फजर २ सांझ.

(७३१) उसके ग्रेन २४ इस्कील अथवा जंगली कांदेका भूका ग्रेन १२ विरोजा अथवा खैर जव ग्रेन २४ उसकी १२ गोलियें करणी मात्रा गोली २.

रिदय रोग (हार्टडिझ) इलाज.

(७३२) दरूजे अकरबी नर्कचूर बमने सुपेद तथा बमने सुरख दरेक एकेक तोला लोंग कालीछड मस्तंगी और तमाल पत्र ए दरेक । तोला इन एकक चीजोंकों अलग २ कूट पीछे एकत्र करणी उसमेसे दोदो आनी भर सहतमें चाटणी.

मिरगी (वाइ फेफरा) इलाज.

(७३३) एलिया ४ ग्रेण कालीछड १ ड्राम गारेकुन १ ड्राम मस्तंगी २० ग्रेण तूंबेकी गिर ३० ग्रेण सकमोनिया ६ ग्रेण इनोंकों कूट २४ गोली बणाणी फजर सांझ दोदो तीन २ गोली लेनी दस्त जादा होय तो अंतकी दो चीजें निकाल डालणी.

(७३४) अनीसुन ॥ तोला सूंफ तोला ॥ बादरंजबोया १ तोला अंजीर सूका-

दाणा ४ इनदवायोंकूं १ सेर पाणीमें ऊकाल आधापाणी बाकी रहे तब छाण दो हिस्साकर फजर सांझ १ तोला गुलकंद दरवखत या मिश्री मिला पीणा.

(७३५) उस्ते खुदुस अफतीमुन सूंफ अनीसुन बनफसा बीसफायेज गुलाबके फूल हरडेदल बडीहरडाका दल ये दरेक आधा २ तोला निशोत। तोला एक बरतनमें रखकर ऊपरसे ऊकलता पाणी पून सेरडाल आधी घंटे भिगा रखणा फेर छाण दो हिस्साकर फजर सांझ थोडी मिश्री डालकर पीणा कितनेकदिन पीणेसें फायदा करता है जो दस्त बहोत होता होय तो आखरीकी चार दवा कम करणी अथवा निकाल डालणी.

लकवा (अर्धांग) का इलाज.

(७३६) कासणी तोला ॥ उनाबदाणा ७ ये दोय चीजोंकों खल २ ते अधसेर पाणीमें आधी घंटे भिगा रखणा इसकी चा तइयार करणी तीन हिस्सेकर दिनमें तीनवेर पीणा.

(७३७) कासनी तोला ॥ काली मुनक्का तोला ॥। बनफसा उनाब तथा गुलाबके फूल ये तीन एकेक आधा आधा तोला इनोपर ऊकलता ॥ सेर पाणीडाल आधी घंटा भिगाकर जरा मिश्री डाल दिनमें दोवेर पीणा दस्त साफ लाणेकूं किसी २ वखत सोनामुखी ॥ तोला किरमालेका गिर तथा खीरकिस्त १ तोला डालणा चाहिये.

(७३८) अनीसुन तोला ॥। सोआ अजवाण कीर्दमान तुखमेकरफस सूंफकी जड अजखर मोलेठी वेखेकेवर ये दरेक । तोला इनोंको १ सेर पाणीमें उकाल आधा रहे तब छान उसमें १ तोला गुलकंद डाल सब पाणी फजरमें पीजाना इसतेरे हमेस फजरमें ताजी दवा बणाकर पीणा.

(७३९) एलिया १२ ग्रेन तूंबे कडवेकी गिर २४ ग्रेण फरफ्यून ६ ग्रेन गूगल २४ ग्रेन इनोंकों मिलाकर १२ गोलिये करणी और दिनमें दोवखत १ अथवा दो गोली खानी.

(७४०) सर कचूरो दरुज्जे अकरवी बहमनसुरख बहमनसुपेद कालीछड इलायची लोंग तमालपत्र दरेक ॥ तोला जुंदबेदस्तर पीपर सूंठ कस्तूरी ये दरेक । तोला १५ तोला सहत सेर पाणीमें धीमी आंचसें गरमकर इसका काथ याने शरबत तइयार करणा इसमें ऊपरकी चीजोंका महींन चूर्ण मिलाकर धीमे २ हिलाकर अवलेही तइयार करणा मात्रा १ सें १॥ ड्राम दिनमें २ वेर.

पुराने लकवेका इलाज.

(७४१) कुचीला तो २ गुलेगाजुबान सरकचूर उस्ते खुदुस करियागूंदसकाकुल ये दरेक एकेक तोला चंदनका बुरादा । तोला लोंग । तोला सूके आंवले १॥। तोले खोपरा छीला भया तथा चलगुजेका मगज एकेक तोला ४० तोला सहत लेकर सेर

पाणीमें मिला धीमी आंचसे शरबतकर उसमें ऊपरकी तमाम चीजों युक्तिसे मिलादेणा चाटण तइयार करणा मात्रा ॥ द्रामसें १ द्रामतक.

दरदके संग ऋतुधर्म.

(७४२) अजखर तुखमकरफस खस २ केडोडे ये तीनों आधा २ तोला अनीसुन १ तोला इनसवोंकों १॥ सेर पानीमें धीमे आंचसे उकाल आधापानी बाकी रहे बोछानकर दिनमें तीनवेर थोडी मिश्री मिलाकर दरदके वखत पिलाना.

हिस्टीरीया.

(७४३) हींग ९ ग्रेन हीरावोल १२ ग्रेन गंदावेरोजा १२ ग्रेन इनोंकी गूंदके या क पानीमें १२ गोलियां करनी मात्रा एकेक गोली तीनवेर.

हिस्टीरीया.

(७४४) कालीछड (जटामासी) तोला १ तथा जूंदबे दस्तर तोला । इनोंकी क भुकनीकर गूंदके पानीमें २४ गोलिये बनानी मात्रा २ गोली दोवखत.

बच्चेका कृमि रोग.

(७४५) वायविडंगका मगज २१ ग्रेन छीली भइ निशोतकी भूकी ४ ग्रेन कपीला इन सर्वोंकों २॥ रुपयेभर ऊकलते जलमें पाव घंटे भिगाकर उसका निताराभया उपयोगमें लेना बच्चेकी मात्रा छोटे चमचेभर दिनमें ४ वेर.

बुखारके संगकृमि रोग.

(७४६) कासणी १५ ग्रेन कुलफेकाबीज १० ग्रेन अनारके जडकी छाल अथवा रकीछाल ५ ग्रेन धानाका मगज १५ ग्रेन २॥ रुपेभर ठंढे पाणीमें घोटकर इसके का निताराभया पाणी छानलेना मात्रादोच मचा दर तीन घंटेसें.

पित्तसे शिर दूखना.

७४७) हरडेदल तोला ॥ वडी हरडकादल तोला ॥ आलुबुखारा दाना १० दाना १० सिपस्तानदाना ७ सवासेरपाणीमें मंद आंचसें उकाल आधापाणी रहे न फजर सांझ दोवखत मिश्री थोडीसी मिलाकर पीणा.

प्रमेह सुजाक.

४८) कबावचीनी ३ तोला फटकडी पाव तोला कथा ।।। तोला महीन चूर्णकर दिनमें तीनवेर पानीसे लेनी.

खुजली.

४९) उनाबदाना ७ सीपस्तानदाना ७ सातेरा तोला ॥ परेशीयावसान तोला ॥ उकाल उसका नितरा पाणी लेकर मिश्री मिलाकर फजर सांझ पीणा.

रोगमें हरकोई एकही दवा दिये जाती है, फेर होमियोपथी इलाजमें जुलाव उलटी खून निकलवाणा वगेरे बलाष्टर मारफफोला उठाणा वगेरे तकलीप देनेके इलाज और रोगीकूं अशक्त करनेवाले इलाज विलकुल भाग्य योगही स्यात् करते होयगें और तुरतही रोगपर असरकरे एसी दवा करनेकी चाल है, इत्यादि कारणोसें कितनेक रोगियोंकूं होमियोपथीक इलाज जादा अच्छा लगता है, रोग मिटाणेकी चिकित्सा पद्धतीमें एक तरफ एलोपथी ओर दुसरी तरफ होमियोपथी इसमेसें कोणसा इलाज अच्छा है, इसवास्ते अभिप्राय देना यह काम अभी तो मुस्किल है, रोगरूपी शत्रूओंका नाश करनेकूं ये सब युक्तियों विद्वानोने शास्त्र तथा बुद्धि बलसें सोधके निकाली है, और जहांपर जो युक्ति सहजसें जलदी हुक्म उठावै रोग मिटावै उसका आसरा लेना ये इस वखत चतुर बुद्धिवानोंका काम है, होमियोपथीक चिकित्सामें होमियोपथीक डाकटर तथा होमियोपथीक चिकित्सा पद्धतीकूं जाननेवाले रोगी जो दवा इस वखतमें वापरते हैं, उसमेके मुख्य २ दवायोंका उपयोग इस ग्रंथके छठे प्रकाशमें दाखिल किया है.

होमियोपथिक दवाये मुख्य करके दो तरेकी होती है, एक तो अर्क दुसरी गोलियां-की मात्रा सामान्य तोर २ बूंदकी है, और वडी छोटी गोलीकी सामान्य मात्रा २ और ४ है, गोलियां अर्क करते जलदी विगडती है, अर्थात् गुण रहित हो जाती है, इसवास्ते जिसकूं ये दवा वापरणी होय तो अर्कही दुरस्त वहोत दिनोंतक विगडता नहीं.

मूल दवाके प्रवाही अर्क (टिंकचर) के संग पाणी या स्पिरिट ओफ वाईन मिलाणेसें दवा जादा और कम जोरवाली होती है, मूल दवा Q निशाणीसें पहचाणे जाती है और दवाईके नामके संग वो निशाणी रखते हैं, मूल अर्कमें नव गुणा पाणी डालके जो प्रवाही वणानेमें आता है, उसके संग IXनिशाणी रखनेमें आती है,इसतरे IX सें उतरते आखरी 1000 X तक वढती घटतीकी शक्ति वाली दवा वण शकती है, और इस मुजब उसपर strength ऐसे चढते IX) 2x 3x एसे चढते २ ।००० X तक निशाणी रखनेमें आती है, वहोत करके रोग नया और तीक्ष्ण रूपमें ३०x की अंदरकी शक्तिवाली दवा जादे फायदे वंध होती है, और रोगके पुराणी हालतमें 30X पीछेके अंकवाली दवा फायदेवंध होती है, कितना स्ट्रेनूग थवाली दवा देणी ये विशेप करके तो अनुभव और अभ्याससें समझ सकते हैं, लेकिन् इतना ध्यानमें रखणा के तीक्ष्ण रोगोमें 3x 6x वाली दवा जादा फायदा करती है, इपीकाक्यु आन्हा, चाइना, जेल्सीमीयम, और एसिट फोसफोरिकम ये दवाये IX रूपमें अच्छा फायदा करती है, हिपार सल्फ सीलीसीया एन्टीमनी कूड वगेरे 5x अथवा 6x के प्रमाणमें वापरते हैं, पुराणे रोगोंमें ये दवायें 30x के प्रमाणमें दिये जाती है.

होमियोपथीक दवा दिनमें थोडी वखत अथवा जादा वखत देना इस वातका खुलाशा तो रोगकी जाति और उसके लक्षणोंपरसें हो सकता है, वुखारमें ये दवा एकेक दो दो घंटेसें दिये जाती है, और कैदस्तकी वेमारीमें दश या पनरे मिन्टके फासलेसें देते हैं, नाडी तूट जाय तो पांच २ मिन्टसेभी दिये जाती है, पुराणे रोगोंमें दवा दिनमें मात्र एका ध वखतही देणी चाहिये और कितनेक रोग ऐसे भी है, सो एक दिनके फासलेसें अथवा दो तीन दिनके फासलेसें एक वेर ही दवा दिये जाती है, रोग ज्यूं जादा भयंकर होय उसके चिन्हमें जूं जोखम दिखाइ देवे तव दवा जलदी २ वहोत वखत देना चहिये वाहरके इलाजवास्ते होमियपैथिक दवाये अपने मूल रूपमें वापरते हैं, और ० निशाणीसें पहचाने जाती है.

देशी इलाजोंमें पथ्य पालनेकी वेर २ आज्ञा देनेमें आती है, तैसें होमियोपथिक दवाइमें भी पथ्य पालणेकी विशेप जरूरत है, होमियोपैथिक दवा लेनेवालेनें और रोगके चिन्ह सख्त होय ऐसे रोगीकूं तो जरूरही पथ्य करना दुसरी कोईभी दवा दवाके गुणवाला पदार्थ नसेवाला मादक पदार्थ उत्तेजक पदार्थ जेसेके चा काफी दारू सख्त खसवो स्वादवाली कोइभी चीज जेसेके आदा आंवली राई कपूर हींग लोंग जायफल अथवा जो चीजों गरम मसालेमें आती है, ऐसी सव चीजोंका त्याग करना.

वहोतसे कुटंववाले लोक होमियोपथिक दवाकी संदूक रखते हैं, और पेटीके संग तथा दवाओंकी शीशीयोंपर छापी भई सूचनामुजव उस दवाइयोंका उपयोग करनेमें आता है, मतलव होमियोपेथिक दवायें वैद्यदीपक मुजव साधारण दवा मुजव वहोतसे कूटंवोमें इस वखत चलणे लगा है इसवास्ते ऊपर लिखी थोडी सूचनाके संग इस पुस्तकमें होमियोपैथिक दवाओंका किसी २ जगे उपयोग दीया है.

क्रोमो पथी.

रंगसे रोग मिटाणा इस चिकित्साक्रमकूं क्रोमोपथी एशा दुसरे विलायतवालोंने नाम धरा है, उसका सिद्धांत एसा है के शरीरमेंसे चोकस रंग कम होणेसें रोग होता है और वोरंग फेर लाणेसें रोग कष्टसाध्य तक दूर हो जाता है, मुख्य रंग लाल, आसमानी [व्ल्यु] और पीला है वाकी हरा और सुपेद है रोग मिटाणेके पहले इस वातका निश्चय कर लेणा चाहियेकी वदनमेंसे कोणसा रंग कम होगया है, और पीछे एसा विचार पूरा होणा चाहिये के किसतरे वोरंग पूरा करणा वदनमें कोनसा रंग कम पड गया इस वातकी परिक्षा करणेकूं जोजो वात जाणणेकी जरूरी है उसमेंकी मुख्य २ नीचे मुजव इस परिक्षामें मूल चार जगे देखणेकी जरूरी है, आंखके डोलोंका रंग नसोंका रंग पेशावका रंग और दस्तका रंग ४ लालरग जिसके वदनमे कम पड गया होगा उसके

रोगमें हरकोई एकही दवा दिये जाती है, फेर होमियोपथी इलाजमें जुलाब उलटी खून निकलवाणा वगेरे चलाष्टर मारफफोला उठाणा वगेरे तकलीप देनेके इलाज और रोगीकूं अशक्त करनेवाले इलाज बिलकुल भाग्य योगही स्यात् करते होयगें और तुरतही रोगपर असरकरे एसी दवा करनेकी चाल है, इत्यादि कारणोसें कितनेक रोगियोंकूं होमियोपथीक इलाज जादा अच्छा लगता है, रोग मिटाणेकी चिकित्सा पद्धतीमें एक तरफ एलोपथी ओर दुसरी तरफ होमियोपथी इसमेसें कोणसा इलाज अच्छा है, इसवास्ते अभिप्राय देना यह काम अभी तो मुस्किल है, रोगरूपी शत्रूओंका नाश करनेकूं ये सब युक्तियों विद्वानोने शास्त्र तथा बुद्धि बलसें सोधके निकाली है, और जहांपर जो युक्ति सहजसें जलदी हुक्म उठावे रोग मिटावे उसका आसरा लेना ये इस वखत चतुर बुद्धिवानोंका काम है, होमियोपथीक चिकित्सामें होमियोपथीक डाकटर तथा होमियोपथीक चिकित्सा पद्धतीकूं जाननेवाले रोगी जो दवा इस वखतमें वापरते हैं, उसमेके मुख्य २ दवायोंका उपयोग इस ग्रंथके छठे प्रकाशमें दाखिल किया है.

होमियोपथिक दवाये मुख्य करके दो तरेकी होती है, एक तो अर्क दुसरी गोलियांकी मात्रा सामान्य तोर २ बूंदकी है, और वडी छोटी गोलीकी सामान्य मात्रा २ और ४ है, गोलियां अर्क करते जलदी विगडती है, अर्थात् गुण रहित हो जाती है, इसवास्ते जिसकूं ये दवा वापरणी होय तो अर्कही दुरस्त वहोत दिनोंतक विगडता नहीं.

मूल दवाके प्रवाही अर्क (टिंकचर) के संग पाणी या स्पिरिट ओफ वाईन मिलाणेसें दवा जादा और कम जोरवाली होती है, मूल दवा Q निशाणीसें पहचाणे जाती है और दवाईके नामके संग वो निशाणी रखते हैं, मूल अर्कमें नव गुणा पाणी डालके जो प्रवाही वणानेमें आता है, उसके संग IXनिशाणी रखनेमें आती है,इसतरे IX सें उतरते आखरी 1000 X तक वढती घटतीकी शक्ति वाली दवा वण शकती है, और इस मुजब उसपर strength ऐसे चढते IX) 2x 3x एसे चढते २।००० X तक निशाणी रखनेमें आती है, वहोत करके रोग नया और तीक्ष्ण रूपमें ३०x की अंदरकी शक्तिवाली दवा जादे फायदे वंध होती है, और रोगके पुराणी हालतमें 30X पीछेके अंकवाली दवा फायदेवंध होती है, कितना स्ट्रेन्ग्ग थवाली दवा देणी ये विशेप करके तो अनुभव और अभ्याससें समझ सकते हैं, लेकिन् इतना ध्यानमें रखणा के तीक्ष्ण रोगोंमें 3x 6x वाली दवा जादा फायदा करती है, इपीकाक्यु आन्दा, चाइना, जेल्सीमीयम, और एसिट फोसफोरिकम ये दवाये IX रूपमें अच्छा फायदा करती है, हिपार सल्फ सीलीशीया एन्टीमनी क्रूड वगेरे 5x अथवा 6x के प्रमाणमें वापरते हैं, पुराणे रोगोंमें ये दवायें 30x के प्रमाणमें दिये जाती हैं.

ब्राह्मी पुत्रीकूं सिखलाई फेर पूर्वोक्त पंचपरमेष्टीका आदि अक्षर एकेक लेकर जैनेंद्रव्याकरण बणाकर उसके सूत्रोंसें ॐ एसा प्रणव बीज सिद्धकूं साधकर बतलाया वो सिद्धांत चंद्रिकाके सूत्रोंसें हम साधकर दिखलाते हैं अरिहंतका अकार सिद्ध अशरीरीका अकार आचार्यका आकार उपाध्यायका उकार मुनिःका म्‌कार अ अ आ उ म् सवर्णे दीर्घः सह यह सूत्रसे दोनों अकार मिटकर आउम् रहा उओ इस सूत्रसे आ और उ मिलके ओम् भया मोनुस्वार सूत्रसें ॐ भया फेर विद्वज्जन विचारके देखेगें जिसके बदनमें लाल रंग कम पडा होवे उसकूं गट्टेमेंसें सिद्ध परमात्माकी मूर्त्ति जो लाल रंगकी है, इसपर एकांतमें बैठकानोसे दुसरेका शब्द सुणाइ नहीं देवे एसी जगे मुखकी श्वासकूंरोकनाकसें श्वास लेता ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं मनमें जपता भया दोनुं नेत्र सिद्धमूर्त्तिपर रख्के लाल रंग बराबर होजायगा रोग निश्चे मिटेगा आसमानी रंग कम पडा होयतो साधूपदकी मूर्त्ति जो गट्टेमे स्याम रंगकी है, उसपर पूर्वोक्त विधिकरे मनके अंदर ॐ ह्रीं नमो लोएसव्वसाहूणं जपे पीला रंग कम पडा होयतो आचार्य पदकी मूर्त्ति पीले रंग सुनेरी है, उसपर पूर्वोक्त विधिकरे मनमें ॐ ह्रीं णमो आयरिआणं एसा जाप जपे वीर्य रस कफ स्वेत रंग कम पडा होयतो अर्हंतकी मूर्त्तिपर पूर्वोक्त विधिकरे ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं जाप जपे हरा रंग कम होणेपर या वायुके विकारोंमें उपाध्यायकी मूर्त्ति हरे रंगपर एकाग्रता करे ओं ह्रीं णमो उवज्ञायाणं एसा जाप करे इस विधिसें सर्व रोग मिटते हैं. इसकी विस्तार विधि बृहत्‌नमस्कार कल्पमे हैं, ये विधि सर्वज्ञ परमेश्वरकी बताई है, अब मनुष्यकृत इसका भेदांतर जो चला है सो लिखते हैं क्रोमोपथीका इलाज लेन्सीस याने काच करके बदनमे रंग देकर करणेका है उसके वास्ते खास जुदे २ रंगोंके काच चस्मे तथा दुरबीनके जेसा बाहरसें तेसें अंदरसें उपसे भये तइयार आते हैं लेकिन् एसा काच हरकोई अदमीकूं मिल सके एसा मुस्किल है, इसवास्ते क्रोमोपथीका इलाज हर कोइभी सहजसें करसके उसकेवास्ते एक सुलभ रीती सोधकर निकाले गई है, इस सुगम रीतके दो प्रकार है, १ जुदे २ रंगकी सीसीयों २ जुदे २ रंगके काच प्रथम शीशीयोंका इलाज जुदे रंगकी शीशीयों खाली एकठीकर उसकूं अछीतरे साफ करणा उसमें कूवेका पाणी अथवा वाफ रूप निकाला भया डिस्टील्ड पाणी अथवा वरसादका झेला भया पाणी भरणा और मजबूत बुचसे बंध करणा पीछै उस सीसीयोंकूं सूरजका सख्त धूपमें कमसे कम दो घंटेतक रखणा दोघंटेसे जादा धूपमे रखणेसें बाटलीका पाणी जादा गुणकारी होता है इसमुजब धूपमें रखा भया शीशीका पाणी दवा मुजब गुण करता है, और जुदे २ रंगकी बाटलीमें तइयार किया भया पाणी जुदे २ रोगोंपर असर करता है, शीशीयोंको दर तीसरे दिन बहोत अछीतरे धोकर साफ पारदर्शक करणी चाहिये नहीं तो उसमें धूपका तइयार किया भया पाणी अछीतरे असर करेगा नहीं. इन शीशीयोंका

जल रोगोंपर बाहिर लगाणेमें तथा अंदर पीणेमें दोनोंतरे फायदा करता है, इस पाणीकी मात्रा वडी ऊमरवालेकूं२॥ रुपिये भरकी है ऊमरके वधघटमुजब इस पाणीकी मात्रा कम वेसी करी जाती है, पुराणे रोगोंपर ये पाणी दिनमें कम देणा चाहिये और ऊपर लगाणेमें ये पाणी चाहे जितना लगाया जाता है कोइ किसमका डर नहीं है, खांड अथवा खांडकी गोलियां चोमासेमें काम देती है कारण चोमासेमें सख्त धूप गिरता नहीं. तव एसा पाणी तइयार होसकता नहीं और एक वखत शीशीमें तइयार किया भया पाणी एकाध दिनसे जादा गुणवाला रह सकता नहीं इसवास्ते एसी ऋतूकेवास्ते सिद्ध चक्रके गट्टेके रंगका अथवा यंत्रके स्नानका जल अथवा क्रोमोपथीके रंगका इलाज करणेवास्ते शीशीयोंमें मिश्री अथवा होमियोपैथियोकी वनाई भई खांडकी गोलियां जुदे २ रंगकी शीशीयोंमें भरके एक पखवाडेतक हमेस सूर्यके धूपमें धरणा चाहिये पीछे इस मिश्रीका या गोलियों का रोगोंपर अनेक प्रमाणमें वरतावा करणा.

(**काचका इलाज**) जुदे २ रंगके काचका याने काचमेसें पसरी भई रोसणीका दवामुजव रातका तेसें दिनका उपयोग हो सकता है, दिनकूं ओरेमें उजाला आणेका सव रस्ता वंधकर रंगीन काचवाली वंध करी भई काचकी रोसनी रोगीके शरीरपर लेणेसें वो रोसनी दवाका काम करती है, और जिस तरेके रंगकी जरूरी होय वोही रंगकी काचकी रोसनीका उपयोग करणा. वदनके जिस जगे रोग होय उसही जगे उस रंगके काचकी छाया पडे एसा होणा चाहिये जो धूपकी सख्त रोसनी नहीं सही जाय एसा होय तो उजाला होय एसी धूप विगरकी याने छायावाली जगामें ये इलाज अजमाणा रातकूं काचके रंगका उपयोग करणेकूं लालटेन रंगीलका उपयोगकरणा चारोंतरफ चार रंगका काच लगवाणा लाल आसमानी हरा पीला पीछे जिसरंगकी रोसणी रोगीके वदनपर अथवा रोगकी जगे देणा होय उस भागपर वेसे काचकी रोसणी अंदर धरी चराकसें गिरती है.

रंगोंकी वदनपर असर–१ ब्ल्यु (असमानी) गहरा काला लाल पीला वगेरे रंग जुदे २ वदनपर कैसा असर करता है उसकी सामान्य समझ नीचेमुजव.

ब्ल्यु–आसमानीरंग–आसमानी लाल पीला इन मुख्य स्वाभाविक रंगोंमें आसमानी रंग जादा जरूरीका है. सृष्टिका दरेक प्राणी आसमानीरंगके भानमे जीते हैं. याने आकाश तथा सर्व साधुपदकी थापनाका आसमानी रंग है. इसवास्ते दुनियां अवाद रहती है ये ब्ल्यु रंग ठंढा शांति देणेवाला स्तंभक (दस्त तथा खूनके प्रवाहकूं अटकाणेवाला) वदनकी गरमी तथा उष्णताकूं मिटाणेवाला है. एसाही शांतदांतके दातार अशुभ कर्मोकेवश अधोगतीमें जाणेवाले जीवोंके स्तंभक क्रोधादि कषायकी उष्णताकं मिटाणेवाले पट्कायाके पालक आकाश जैमें सुपेत वद्लोंकों धारणकर सर्व तरेका रम

पैदा करनेवाला मेघ वरसता है, तैसे जती साधु श्वेत वस्त्र धारणकर अनेक स्याद्वादनय. वादकी धाररूप झडीसें वाणी अमृतरूप मेघ वरसाते नव रसोंका स्वरूप प्रकट करते हैं, इस रंगका पाणी अथवा प्रकाश इतने रोगोंमें जादा फायदे वंद है.

(१) गरमीके रोग.	(२) चमडीके रोग.
(३) हैजामरी.	(४) व्युवोनिक प्लेग.
(५) हडकवायु.	(६) मरोडा.

गहराव्ल्युरंग—इस रंगमें नीलका रंग अथवा जामूनी रंगका समावेश होता है, इस रंगमें लाल रंगका अंश होता है, कितनेक रोगोंमें व्ल्यु रंगके संग लाल रंगकी भी जरूरी पडती है, उस जगे ये रंग फायदा करता है, जिनरोगोंमें खुल्ला आसमानी रंग वापरणा कहा है, और जो रोग वुड्ढे तथा नाताकत अदमीकूं भया होय उहां खुल्ला आसमानी रंगकी एवजीमें गहरा आसमानी रंग वापरणा—फेफसेका वरम (न्यूमोनिया) श्वास-नलीका सोजा खालीठसका और वच्चेकी कुकडिया खासी वगेरे रोगोंमें गहरे व्ल्यु रंगका पाणी पीणेकूं देणेमें आता है, वहोत दिनोंकी वदहजमी पेटका रसविकार जिसमें अंगार सीजले तथा उलटी होय और दस्तमें गहरा व्ल्यु रंग फायदा करता है.

पीलारंग—शुद्ध पीले रंगकी शीशियों मिलणी मुस्किल है, जो वजारमें पीले रंगकी शीशियों मिलती है, उसमें लाल रंगका जरा अंस होता है, इसकूं फीका नारंगीके रंगके नामसें लोक कहते हैं, जिस रोगमें लाल रंग फायदा करता है, उसरोगोंमें वीश वरसके अंदरके दरदियोंपर पीला रंग वापरणेसें जादा फायदा करता है पीले रंगकी वाटलियोंके पाणीका उपयोग इनरोगोंमें करणा (१) पेटकी कवजी (२) वदहजमी (३) रक्तपित्त जिस रुजगारवालोंकूं वहोत देरतक वैठे रहणा पडता होय जैसेंके दुकानदार वेपारी और कोर्टोंमें वैठके काम करणेवालोंकूं ये रंग वहोत फायदा करता है.

लाल रंग—गरमी देता है, नसोंकूं ढीलीकर श्रावकूं वढाता है, और वदनकी सुस्तीकूं मिटाय वदनमें तेज लाता है, जादा आसमानी रंगसें वदनके जो भाग सुकड गये होय उसकूं लाल रंग खुल्लाकर देता है, इस रंगसे लकवा वगेरे वायुके रोग अच्छा होणा संभव है.

इतिश्रीमज्जैनधर्माचार्यसंग्रहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः विरचिते
वैद्यदीपक ग्रंथे औषध्यादि निघंटवर्णनो नाम पंचमः प्रकाशः ॥

प्रकाश ६ छठा.

परिक्षा इलाज पथ्य.

इस छठ्ठेप्रकाशमें नीचे लिखे विषयोंकों किरणोंद्वारा प्रकट किया है.

किरण पहली १

ज्वर–बुखार.

(बुखारका संक्षेपवर्णन)–बुखारका मरज जेसा सामान्य है, तैसे वडासख्त भी है, सब रोगोंमें वो मुख्य होणेसें वो रोगोंका राजा कहलाता है बुखारोके कितनेही भेद है, लेकिन् ये सब तरेका बुखार किस मूल कारणसें पैदा होता है, तथा किसतरे चढता है, और उतरता है, इन सब बातोंका संतोष करनेवाला समाधान करनेकूं विद्वान लोक अभीतक कोईभी शक्तिवान् नहीं भया है, किसीभी ग्रंथमें ज्वरकी बावत समाधान पूरा खुलासेके संग किया भया नहीं है, बुखारका विषय बहोत गहन है, इसवास्ते ऐसे ग्रंथोंसें बुखारका फकत सामान्य स्वरूप और उसकी सामान्य चिकित्सा जाणनेमें आवे इतनाही बस है, एसा विचार कर इसजगे मुख्य २ बुखारका कारण लक्षण और उपाय बताणेमें आया है.

वदन गरम होकर तपना अथवा वदनमें जो स्वाभाविक उष्णता होणी चहिये उससें जादा गरम होना ये बुखारका चिन्ह है, लेकिन् इसतरे शरीर तपनेका क्या कारण है, और वो क्रिया किसतरे होती है, ये बाबत बहोत सूक्ष्म है, देशी वैद्यकशास्त्र बुखारका खुलासा इसतरे किया है, वात पित्त कफ ये तीनों दोष अयोग्य आहार विहारसें जठरमें जाकर रसकूं दूपितकर कोठेकी अग्निकी उष्णताकूं बाहर निकाल ज्वरकूं पैदा करता है, इस बाबतकूं विचारते एसा सिद्ध भया के वाय पित्त कफ इन तीनोंकी समानता यही आरोग्यताका चिन्ह है, और विषमता अथवा कम बेसीपणा येही रोगका चिन्ह है, ये समानता अथवा विषमता आहार विहारपर आधार रखता है, इस क्रमके देखणेसें यहभी

सिद्ध भयाके जैसें वदनमें वायुका वढणा और रोगोंकों पैदा करता है, तैसें वातज्वरकूंभी पैदा करता है: इसीतरे पित्तकी अधिकता पित्तज्वरकूं कफकी अधिकता कफज्वरकूं पैदा करता है, इसमेंके दोदो दोपोंकी अधिकता दोदो दोषोंके लक्षणवाले ज्वरकूं पैदा करता है, और तीनों दोप विगडता है, तव तीनों दोपोंके लक्षणवाला त्रिदोष सन्निपात ज्वरकूं पैदा करता है.

(बुखारका भेद) बुखारके भेद किसतरे करणा ये तो वडी कठिन वात है, क्योंके बुखार वहोत कारणोंसे पैदा होता है, ये कारण दो प्रकारका है, आंतर याने शरीरके अंदरसे पैदा होनेवाला वाहिर याने वाहिरसे पैदा होनेवाला आंतर कारनोंका तीन भेद है, आहार विहारसें रश विगडकर बुखार आता है, उसमें सर्व साधारण बुखार जैसेंके तीन तो अलग २ दोपवाला दोदो दोपवाला तीनों दोपवाला विषमज्वर वगेरे ज्वरोंका समावेश होता है, और वदनके अंदर सोजा तथा गांठके होनेसें बुखार आता है, और जिसकूं अंग्रेजी वैद्यकमें बुखारके प्रकरणमें गिणनेमें नहीं आया लेकिन देशी वैद्यकमें जिसकूं बुखारके भेदोमें गिणा है, वो अंतर कारणसें आनेवाला बुखारका दुसरा भेद गिणा है, वाहिर कारणोंके ज्वरमें सर्व आगंतुकज्वर (जिनोंकी वावत पीछे लिखणेमें आवेगा) तथा हवामें उडते चेपी बुखारोंका समावेश होता है.

देशी वैद्यकशास्त्रमुजव बुखारका भेद— नीचेमुजव

(१) वातज्वर,	(६) कफपित्तज्वर,
(२) पित्तज्वर,	(७) सन्निपातज्वर,
(३) कफज्वर,	(८) आगंतुकज्वर,
(४) वातपित्तज्वर,	(९) विपमज्वर,
(५) कफवातज्वर,	(१०) जीर्णज्वर.

अंग्रेजी वैद्यकशास्त्रमुजव बुखारका भेद—नीचेमुजव.

(१) जारी बुखार उसके भेद नीचे मुजव.

(१) सादा तप (२) टाइफस (३) टाईफोइड (४) फिरफिर आनेवाला आंतरका भेद (१) हमेशका ठंड देके आनेवाला.

(२) एकांतर. देशी वैद्यकमुजव विपमज्वरके भेद.

(३) तेजरा (४) चोथिया.

(३) रिमिटंट फीवर—देशी वैद्यकमुजव विपमज्वरका एक भेद संतत.

(४) फूटकर निकलनेवाला बुखारका भेद नीचेमुजव

देशी वैद्यकमें मसुरिका क्षुद्ररोग तथा मूंधोरा नामसें लिखा है.

(१) शीतला, (७) हेजामरीका तप,

(२) ओरी, (८) इन्फल्युएनझा,
(३) अचपडा, (९) मोतीज्वरा,
(४) लालबुखार, (१०) पाणीज्वरा,
(५) रंगीला बुखार, (११) थोथीज्वरा,
(६) रगतवायुविसर्प, (१२) काला मूंधोरा.

(बुखारके सामान्य कारण) अयोग्य आहार और अयोग्य विहार ये बुखारका मान्य कारण है, इस कारणोंसे वदनका धातुविकार पाकर बुखारकूं पैदा करता है, ोग्य आहार विहारमें वहोतसी वातोंका समावेश होता है, वहोत गरम तथा बहोत ा खुराक वहोत भारी खुराक विगडा भया और वासी खुराक तासीरके विरुद्ध खुराक तु विरुद्ध खुराक वहोत महनत बहोत गरमी लेना अति ठंढ वहोत भूख बहोत विलास राव पाणी खराव हवा ये सब बुखारके तरे २ के कारण है.

(बुखारके सामान्य लक्षण)— बुखार बहार दिखाणेके पहले थकेला ात्तकी वेचेनी मूंसें विरसपणा आंखोंमें पाणी आणा जंभाई ठंढ हवा तथा ्की वेर २ इच्छा और भूखका अभाव अंगोंका टूटणा वदनमें भारीपणा रूखडे ़णा खुराककी अरुचि इत्यादिकलक्षण सरू होते हैं, ज्वरभरे पीछे चमडी गरम मालम णा ये बुखारका प्रगट चिन्ह है, बुखारमें पित्त अथवा गरमीका मुख्य उपद्रव होता है, खार प्रगट भया पीछे वदनमें उष्णता भरणेके संगऊपर लिखे सब चिन्ह जारी रहते हैं.

वातज्वर.

(कारण) विरुद्ध आहार विहारसें कोपपाया भया वायु होजरीमें जाकर होजरीका स (आम)कूं दूपितकर ज्वरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उसकरके वातज्वर दा होता है.

(लक्षण) जंभाई आणा ये वातज्वरका मुख्य चिन्ह है, सिवाय बुखारका वेग ्मती वेसी होणा गला होठ तथा मूंका सूकणा निद्राका नाश छीकका बंध होणा ... में लूखापणा अवयवोंका दूखणा दस्तकी कवजी इत्यादिक दुसरे भी चिन्ह ग...डते हैं, ये बुखार जादातर वायुप्रकृतीवालेकूं तथा वायु प्रकोपकी मोशमवर्षा ...न होता है.

वातज्वरमें एकाधटक लांघनकर पीछे तासीर तथा दोषके अनुसार हलका खुराक लेणा ऊपर लिखासो बुखारका उत्तम पथ्य है, पथ्य यथार्थकरणेसें दवा नहीं लेणी पडती (२) लघुसुदर्शन चूर्ण (नं० ३२ में दिया भया है, उसकी फक्की अथवा फांटचा अथवा हिमकरके पीणा इसतरे लंघन तथा सादे इलाजसें बुखार नहीं जायतो सब बुखारवालोंकों तीनदिन बाद देवदारु तोला २ धाणा तोला २ सूंठ. तोला २ रिंगणी तोला २ वडी कंटाली तोला० २ देवदारू तोला २ इन सर्वोकों कूट १ तोलेभरका काढा पाव पाणीका डेढ आना पाणी रखके देणा ज्वर पाचन होकर उतर जायगा अथवा सातमें दिन दोषकूं पकाणेकूं नं० २०० वाला (गुडुच्यादि काथ) गिलोय सूंठ पीपरामूलका काढा शरू करणा उस करके बुखारका पाचन होकर ऊतर जायगा.

पित्तज्वर.

(कारण) पित्तकूं वधाणेवाले अहार विहारसें बिगडाभया पित्त होजरीमें जाकर होजरीके रसकूं दूषितकर जठरकी गरमीकूं बाहर निकालता है, एक दोष कोपणेसें दुसरे दोषोंकों विगाडता है, एसानियम है, इसवास्ते जठरमें गया दूषित पित्त जठरकी वायूकूं कोपाता है, और कोपी भई वायु अपणे स्वभाव मुजब जठरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उस करके पित्तज्वर पैदा होता है.

(लक्षण)–आंखोमे दाह जलण होणी ये पित्तज्वरका मुख्य लक्षण है, बुखार बहोत जोरका दस्त उलटी पसीना बकणा दाह प्यास कंठ होठ मूंकापकणा मल मूत्र नेत्र पीला होणा और भ्रम ये पित्तज्वरके दुसरे लक्षण है, जादातर पित्त प्रकृतीवालेकूं तेसें पित्तके कोपकी शरद तथा ग्रीष्मऋतूमें इस बुखारका विशेष उपद्रव होता है.

(इलाज) (१) लंघन, दोषके जोर मुजब एकटंक अथवा एकदिन अथवा भूख लगणेकी खबरपडे जहांतक लंघण कराणा अथवा मूंगके दालका पाणी भात अथवा साबूदाणे पीणा डाकदर दूध पिलाते हैं, पाचन देकर (२) पित्त पापडा अथवा घासिया पित्त पापडेका उकाला फांट अथवा हिम पीणा (३) पर्पटादि काथ (नं० २०१) उसका फांट याहिम करके पीणा (४) दाख हरडे मोथ कुटकी किरमालेकी गिर और पित्तपापडा इनका काढा पीणेसें पित्तज्वर शोष दाह भ्रम मूर्छा वगेरे उपद्रव मिटकर दस्तसाफ आता है, (५) पित्तपापडा रगतचंनण सुपेद तथा काला दोनोंवाला इनोका उकाला फांट हिम पित्तज्वरकूं मिटाता है, (६) रातकूं ठंढे पाणीमें भिजाया भया धाणोका हिम अथवा गिलोयका हिम पीणेसें पित्तज्वरका दाह शांत होता है (७) पित्तज्वरके संग बहोत दाह होता होय तो कच्चे चावलोंके धोवणमें थोडा चंदन तथा सूंठकूं घसकर चावलोके धोवणमें मिलाकर थोडा सहत तथा मिश्रीडालकर पिलाणा.

(२) ओरी,	(८) इन्फल्युएनझा,
(३) अचपडा,	(९) मोतीज्वरा,
(४) लालबुखार,	(१०) पाणीज्वरा,
(५) रंगीला बुखार,	(११) थोथीज्वरा,
(६) रगतवायुविसर्प,	(१२) काला मूंधोरा.

(बुखारके सामान्य कारण) अयोग्य आहार और अयोग्य विहार ये बुखारका सामान्य कारण है, इस कारणोंसे वदनका धातुविकार पाकर बुखारकूं पैदा करता है, अयोग्य आहार विहारमें बहोतसी बातोंका समावेश होता है, बहोत गरम तथा बहोत ठंढा खुराक बहोत भारी खुराक बिगडा भया और बासी खुराक तासीरके विरुद्ध खुराक ऋतु विरुद्ध खुराक बहोत महनत बहोत गरमी लेना अति ठंढ बहोत भूख बहोत विलाश खराब पाणी खराब हवा ये सब बुखारके तरे २ के कारण है.

(बुखारके सामान्य लक्षण)— बुखार बहार दिखाणेके पहले थकेला चित्तकी बेचेनी मूंमें विरसपणा आंखोंमें पाणी आणा जंभाई ठंढ हवा तथा धूपकी बेर २ इच्छा और भूखका अभाव अंगोंका टूटणा वदनमें भारीपणा रूंखडे होणा खुराककी अरुचि इत्यादिकलक्षण सरू होते हैं, ज्वरभरे पीछे चमडी गरम मालम होणा ये बुखारका प्रगट चिन्ह है, बुखारमें पित्त अथवा गरमीका मुख्य उपद्रव होता है, बुखार प्रगट भया पीछे वदनमें उष्णता भरणेके संगऊपर लिखे सब चिन्ह जारी रहते हैं.

वातज्वर.

(कारण) विरुद्ध आहार विहारसें कोपपाया भया वायु होजरीमें जाकर होजरीका रस (आम)कूं दूपितकर ज्वरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उसकरके वातज्वर पैदा होता है.

(लक्षण) जंभाई आणा ये वातज्वरका मुख्य चिन्ह है, सिवाय बुखारका वेग कमती वेसी होणा गला होठ तथा मूंका सूकणा निद्राका नाश छीकका बंध होणा वदनमें लूखापणा अवयवोंका दूखणा दस्तकी कबजी इत्यादिक दुसरे भी चिन्ह ९ पेडते हैं, ये बुखार जादातर वायुप्रकृतीवालेकूं तथा वायु प्रकोपकी मोसमवर्षा ऋतुमें पैदा होता है.

इलाज (१) लंघन सब बुखारोंमें लंघन हितकारक है, तोभी दोप तासीर बालक वृद्ध शरीरकी स्थितिका विचारकर लंघन कराणा वातज्वर प्रबलमें तीन लंघन कराणा लेकिन् शरीर ताकतवाला होय तो शक्ति मुजब १ से ६ तक लंघनकराणा लंघणकरणा याने मुद्दल नहीं खाणा एसा लंघनका अर्थ नहीं है, थोडाखाणा हलकादलिया या भात या मूंगकी अरहडकी दालपीणा ये भी लंघनही कहलाता है, साधारण

वातज्वरमें एकाधटक लांघनकर पीछे तासीर तथा दोषके अनुसार हलका खुराक लेणा ऊपर लिखासो बुखारका उत्तम पथ्य है, पथ्य यथार्थकरणेसें दवा नहीं लेणी पडती (२) लघुसुदर्शन चूर्ण (नं० ३२ में दिया भया है, उसकी फक्की अथवा फांटचा अथवा हिमकरके पीणा इसतरे लंघन तथा सादे इलाजसें बुखार नहीं जायतो सब बुखारवा-लोंकों तीनदिन बाद देवदारु तोला २ धाणा तोला २ सूंठ. तोला २ रिंगणी तोला २ वडी कंटाली तोला० २ देवदारू तोला २ इन सबोंकों कूट १ तोलेभरका काढा पाव पाणीका डेढ आना पाणी रखके देणा ज्वर पाचन होकर उतर जायगा अथवा सातमें दिन दोषकूं पकाणेकूं नं० २०० वाला (गुडुच्यादि क्वाथ) गिलोय सूंठ पीपरामूलका काढा शरू करणा उस करके बुखारका पाचन होकर ऊतर जायगा.

पित्तज्वर.

(कारण) पित्तकूं वधाणेवाले अहार विहारसें बिगडाभया पित्त होजरीमें जाकर होजरीके रसकूं दूषितकर जठरकी गरमीकूं बाहर निकालता है, एक दोष कोपणेसें दुसरे दोषोंकों विगाडता है, एसानियम है, इसवास्ते जठरमें गया दूषित पित्त जठरकी वायूकूं कोपाता है, और कोपी भई वायु अपणे स्वभाव मुजब जठरकी गरमीकूं बाहर निकालती है, उस करके पित्तज्वर पैदा होता है.

(लक्षण)—आंखोमे दाह जलण होणी ये पित्तज्वरका मुख्य लक्षण है, बुखार बहोत जोरका दस्त उलटी पसीना बकणा दाह प्यास कंठ होठ मूंकापकणा मल मूत्र नेत्र पीला होणा और भ्रम ये पित्तज्वरके दुसरे लक्षण है, जादातर पित्त प्रकृतीवालेकूं तेसें पित्तके कोपकी शरद तथा ग्रीष्मऋतूमें इस बुखारका विशेष उपद्रव होता है.

(इलाज) (१) लंघन, दोषके जोर मुजब एकटंक अथवा एकदिन अथवा भूख लगणेकी खबरपडे जहांतक लंघण कराणा अथवा मूंगके दालका पाणी भात अथवा साबूदाणे पीणा डाकदर दूध पिलाते हैं, पाचन देकर (२) पित्त पापडा अथवा घासिया पित्त पापडेका उकाला फांट अथवा हिम पीणा (३) पर्पटादि क्वाथ (नं० २०१) उसका फांट याहिम करके पीणा (४) दाख हरडे मोथ कुटकी किरमालेकी गिर और पित्तपापडा इनका काढा पीणेसें पित्तज्वर शोष दाह भ्रम मूर्छा वगेरे उपद्रव मिटकर दस्तसाफ आता है, (५) पित्तपापडा रगतचंनण सुपेद तथा काला दोनोवाला इनोका उकाला फांट हिम पित्तज्वरकूं मिटाता है, (६) रातकूं ठंडे पाणीमें भिजाया भया धाणेका हिम अथवा गिलोयका हिम पीणेसें पित्तज्वरका दाह शांत होता है (७) पित्तज्वरके संग बहोत दाह होता होय तो कच्चे चावलोंके धोवणमें थोडा चंदन तथा सूंठकूं घसकर चावलोके धोवणमें मिलाकर थोडा सहत तथा मिश्रीडालकर पिलाणा.

कफज्वर.

(कारण) कफ करणेवाले पदार्थ अहार विहारसें दूषितभया कफ जठरमें जाकर जठरके रसकों दूपितकर उसकी उष्णताकूं बाहर निकालता है, कफकोपपाकर वायूकों कोपाता है, कोपी भई वायु उष्णताकूं बाहर लाती है.

(लक्षण)—अन्नपर अरुचि ये कफज्वरका मुख्य लक्षण है, शिवाय अंगोमें भीगापणा बुखारका जोर मंद आलस मूंमे मीठास मलमूत्र नेत्रका रंग सुपेद अवयव अकड जाणा वदनमें भारीपणा ठंढ श्लेष्म बहोत नींद उबाकी छातीमे कफ मंदाग्निवगेरे दुसरे चिन्हभी होते हैं, ये बुखार विशेप करके कफ प्रकृतीवालेकूं तथा कफके कोपकी ऋतू वसंतमें होता हैं.

इलाज (१) लंघन कफज्वरके रोगीकूं लंघन विशेष सहन होता है, और योग्य लंघनसें दूपित भया दोपका पाचन होता है, इसवास्ते रोगीकूं जहांतक पक्की भूख नहीं लगे उहांतक खाना नहीं अथवा मूंगकी दालका ओसामण पीणा (२) गिलोयका क्काथ फांट अथवा हिमसहत डालकर पीणा (३) भुनिंबादि क्काथ (नं० २०२) (४) लींडी पींपर हरडे बहेडा आंवलोंकूं समभाग लेकर चूर्णकर उसमेंसें पाव २ तोला लेकर सहतमें चाटणेसें कफज्वर तथा उसके संगकी खासी श्वास कफ दूर होता है. (५) अरडूसेका पत्ता भूरींगणी तथा गिलोय इनोंका उकाला सहत डालके पीना.

दोदो दोप मिलातप.

दोदो दोप मिले तपमें दोदो दोपोंके लक्षण मिले होते हैं, और अनुभवी सूक्ष्म दृष्टिवाले वैद्यही पहचान सकते हैं, इस बुखारकूं द्वंद्वज और मिश्र कहतें है.

(वातपित्तज्वर) (१) लंघन (२) किरातादि क्काथ) चिरायता गिलोय दाख आंवला और कचूर इसकी उकालीमें गुड तीनवर्पका डालके पीणा (३) पंचभद्र क्क गिलोय पित्तपापडा मोथ चिरायता तथा सूंठका काढा.

(कफवातज्वर) (१) लंघन (२) लघुक्षुद्रादि क्काथ—पसरकंटाली सूंठ गिले एरंडीकी जड इनोका काढा (३) आरग्वधादि क्काथ—किरमालेकी गिर पीपलामूल मो कुटकी जो हरडे इनोंकी उकाली (४) इकेली लींडी पीपरकी उकाली.

कफपित्तज्वर (१) लंघन पाचन (२) लोहितचंदनादि क्काथ—रगतचंदन पदमाधाणा गिलोय और नींबकी अंतर छाल उकाली देनी (३) कुटकी आधा रुपियेभर जलमें पीस मिश्री मिलाकर पीणीया फाकणी इतनी गरम जलसें (४) अरडूसे पत्तोंका रस (२ रु० भर) उसमें २॥ मासा मिश्री २॥ मासा सहत डालकर पीणा.

सादा जारी बुखार.

(कारण तथा लक्षण) अनिमियत खानपांन अजीर्ण एकाएक थनि ठंडीया गर्म

लगणी उजागरा और अतिश्रम विशेष करके एसा सादा बुखार ऋतूके बदलनेसें हो जाता है, और उसकी मुख्य ऋतु मार्च अप्रेल अथवा वसंत तथा सप्टेंबर अक्टोंबर अथवा शरद है, शरदमें पित्तका बुखार होता है, वसंतमें कफका होता है, और जुलाइ महीनेमेंभी वरसादकी वातप्रकृतीवाली ऋतुमें वायुके उपद्रव समेत बुखार चढ आता है, ऊपर जो जुदे २ दोषका बुखार वर्णन किया है, उन सवोंकी सादे जारी बुखारमें गिणती हो सकती है, ये बुखार अंतरिया बुखारकीतरे चढा उतार नहीं रहता लेकिन एक दोदिन जारी बुखार आयकर तुरत उतर जाता है.

(इलाज) सादा जारी बुखारके ऊपर तीनों न्यारे २ दोष वाले इलाज लिखे हैं, इसके सिवाय सामान्य इलाज लिखते हैं, वो सब जारी बुखारपर चल सकते हैं, जहां-तक बुखारमें किसी एक दोषका निश्चय नहीं होवे उहां इस इलाजोंकों चलाणा सादे जारी बुखारमें विशेष दवाकी जरूरी नहीं रहती एकाध टंक लंघन करनेसें आराम लेनेसें हलका खुराक खानेसें और दस्तकी कबजी होय तो उसका खुलासा करनेसें बुखार उतरजाता है, शरुआतमें गरम पाणीमें पांव डुबाणा उससे पसीना आके आराम होता है, बुखारमें गरम किया तीन उकालेका ठंढा किया भया पाणी मांगे जब पीणेकूं देणा आंखमें सूठ काली मिरच पीपरकूं घस अंजण कराणा वहोत हवा खुलेछत सोने नहीं देना खानेकूं थलीदेशमें बाजरीका दलिया, पूरबवालेकूं, भातकी कांजी मांड, मध्यमारवा-डमें मूंगका ओसामण भात, दक्षिणमें तूरकी दाल पतलीका पाणी अथवा भात मिलाकर, ये बुखार दोतीन दिन रहता है, लेकिन मिटकर वाजे वखत पीछा आजाता है, इसवास्ते बुखार गयेबादभी पथ्य रखना जहांतक ताकत नहिं आवे उहांतक भारी अनाज खाणा नहीं और महनतका काम करणा नहीं, (१) गडूच्यादि क्वाथ (नं० १९८) (२) नागरादिपाचन) पिछाडी लिखा है, पांच चीजोंका सो (३) क्षुद्रादि क्वाथ, भूरींगणी चिरायताकुटकी सूंठ गिलोय एरंडीकी जड (४) दाख धमासा अरडूसेका पत्ता (५) चिरायता वाला कुटकी गिलोय और नागरमोथ इनोंमेंका कोइभी काढा क्वाथकी विधि-मुजब तइयारकर थोडे दिन दोनुं टंक पीणा इससे बुखार पाचन शमन होकर उतरजाता है (६) लघुसुदर्शन चूर्ण (नं० ३२ उसकी फक्की हिम अथवा चा करके पीनेसें सादा जारी तप उतर जाता है, जोरवाले सादे बुखारमेंभी ये चूर्ण वहोत फायदा करता है, इस चूर्णसे पसीना आता है, बुखारभी अटक जाता है बुखार उतरेबादभी किनाइनकीतरे ये चूर्ण थोडे दिन देनेसें बुखार उथलके नहीं आता और ताकत आजाती है.

(अंग्रेजी इलाज) (७) प्रथम दस्त साफ लानेकूं सिडलिझ पाउडर (नं०४५३) का देणा उलटी होतीभी बंध होगी प्यास कम पडेगी अथवा पसीना लानेकूं पहली खुराकृ एप्सम सोल्ट रोगीके कोठेकी स्थितिमुजब २ से ४ ड्राम डालकर देना.

(८) नं० ५७०) वाला मिक्श्चर पहली खुराकमें पसीना लाणे वास्ते दिनमें तीनवखत देणा पसीना आके बुखार बंध होणेसें मिक्श्चर बंध करणा.

(९) पसीना लाणेकूं इकेले गरम पाणीमें अथवा निमकया राईका आटा डाले भये पाणीमें थोडे मिनटतक रोगीके पांवडु बाणा पीछै पूंछकर ओढायकर बिछोणेमें सुलाणेसें पसीना आता है.

(१० नं० ५७१) वाली मिलावटकी पुडी देणेसें भी पसीना आता है, और बुखार उतर जाता है, इसमें टार्टर एमेटिक उलटीकूं लाणेवाली है, उससे उलटी जो जादा होय तो वो नहीं डालकर एन्टीमोनियल पाउडर फक्त.

(११) बुखारके संग उलटी होती होय तो ऊपर (नं० १०) के नुसखेवाली दवा पेटमें नहीं टिके तो (नं० ५७८) वाला मिक्श्चर देणा अथवा वो दवा हाजर नहीं होय तो साजीखार ३० ग्रेण खट्टे नींबूका रस २ ड्राम और पाणी ६ औंस इन तीनोंकों मिलाकर पिलाणेसें उलटी बुखार प्यास नरम पडेगा.

(१२) बुखार उतरगये पीछै नाताकती मिटाणेकूं बुखार पीछा नहीं आवै इसवास्ते इकेला क्विनाइन रोगीकी शक्ति तथा प्रकृतीके अनुसार दर टंकमें २ ग्रेनसें ५ तक देणा अथवा (१३) नं० ५७४) वाला क्विनाइन मिक्श्चर देणा.

(१४ होमियोपथी इलाज)-(एकोनाईट) खूनमें जहरका असर नहीं होय तो ये दवा देणेसें नाडी धीरी पडकर पसीनेके संग बुखार उतर जाता है, मात्रा दर दोदो तीन २ घंटेसें दोदो बूंद एक तोला पाणीके संग पीना सख्त बुखार होय तो आधे २ कलाकसें पीना.

(१५ जेलिसमियम) ऊपरकी दवासें बुखार नहीं उतरे और रोगी सुस्त होगया होय तो ये दवा ऊपरकी दवा मुजबही देना.

(१६) इसके सिवाय पाचनशक्तिकी गडबड होय तो बेप्टिसिया जो रोगी बेहोस होकर पडा होय तो आर्सेनिक और मींट तथा शिर बहोत दुखता होय तो बेलाडोना देणा चहिये.

सन्निपातज्वर.

(समझ) तीनों दोषोंका कोपणा उसकूं सन्निपात त्रिदोष कहते हैं, और एसे हाल सबरोगोंके आखरीदशामें भया करता है, बुखारमें एसा होय तब बुखारका सन्निपात समझणा शास्त्रोंमें एक दोष प्रबल दो दोष कम कहां इदो दोष प्रबल एक दोष कम एसें एकोल्बणादि ५२ भेदभी दिखलाया है, तेरे दुसरे नाम धरकरके भी सन्निपात लिखे हैं, लेकिन् हम जो आगे चौदे सन्निपातका स्वरूप लिखते हैं, इनोंमें प्राये सब आजाते हैं, सन्निपात बिगर मौत नहीं चाहे बोलना चलता खाता पीता क्यों नहो पण

निदान अनुभव और कालज्ञानवाला पहचान सकता है, वा जे मूर्ख अंत दशातक नहीं पिछान सकते.

(सामान्य लक्षण)–जिस बुखारमें वाय पित्त कफ तीनों दोषोंका कोप भया होता है, वो सन्निपातज्वर क्षणमें दाह क्षणमें ठंढ हड्डी और जोडोंमें दरद शिरमे दर्द आंखोंमें आंसू कानोंमे अवाज गलेमें कांटे नसा मोह मींट वक वाद खास श्वास अरुचि हांफणी जीभटेढी काली अंगढीला शिर हिलाना नींदका नाश दस्त पैशावका वहोत देरसे थोडा उतरना गलेमें अवाज गूंगापना पेटका आफरना वदनपर चठे दाफड अथवा गोल चकते इनोंमेंके थोडे लक्षण कष्ट साध्यमें, पूरे लक्षण असाध्य सन्निपातमें होते हैं.

(सन्निपातके भेद)–सन्निपातमें जुदे २ दोष मुजब लक्षणों करके विद्वानोंने अनुभवकर सवोंके लक्षणपर उपाय ग्रंथोमें लिखे हैं, वडे भयंकर सन्निपातोंमें फूंकी भई रसमात्रा ओं वहोत कामदेती है, इस जगे तो सुलभ सामान्य इलाज लिखते हैं, इनोंसें भी फायदा होता है, सन्निपातज्वर १३ तथा १४ प्रकारका है, + संधिक १ अंतक २ रुग्दाह ३ चित्तविभ्रम ४ शीतांग ५ तंद्रक ६ कंठकुब्ज ७ कर्णक ८ भुग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ हारिद्रक १४.

(१ संधिकके लक्षण)–सांध २ मेदरद शूल प्यास चित्तकूं संताप निद्राका नाश नाताकती कफ संबंधी पीडा और ज्वर पसलियोंमें दरद इसकी मुद्दत सातदिनोकी है, मारे चाहे जीये. ७ वर्षभी है.

(संधिकका इलाज)–रास्ना सूंठ गिलोय कांटाशेलिया नागरमोथ शतावर हरडे देवदारू कुटकी कचूर अरडूसेके पत्ते एरंडकी जड तथा दशमूल इनसबोंकी उकाली.

(२ अंतकका लक्षण) दाहकरे संतापकूं वढावे मोहरोणेलगे शिर हिलायाकरे हिचकी होय और खासी होय ये त्यागने योग्य असाध्य है, इसकी मुद्दत १० दिनोंकी है, वकवाद वेशुद्ध श्वास नसा येभी होता है.

(अंतकका इलाज)–हरडे अरडूसा करमाला देवदारू कुटकी रास्ना गिलोय कुलिंजन.

(३ रुग्दाहका लक्षण)–वकवादकरे संताप अतिमोह दाह वेहोसी वहोत प्यास श्वास काश हिचकी शिथलपणा चक्कर भ्रांति गलाहिडकी ठोड़ी गरदनमें दरद इसकी मुद्दत २० दिनकी है येभी असाध्य है.

+ सन्निपातका १३ भेद प्रथकारोंने लिखे हैं. आयुर्वेदनिर्णयमें हेमाचार्यने १४ माहारिद्रक सन्निपात लिखा है, सो हमने केइवखत मनुष्योंके देखाभी लिया है, इसमें आयेवाद वचणा मुसकिल है, योगचिंतामणीमें जैनाचार्यने इसके इलाज भी लिखे है, इनदोदेमें मलपाकी होय तो वचना है, धातुपाकी निश्चे मरता है, इन दोनोके होणेमें आयुकर्म परमुदार है, सधिक १ तद्रिक २ चित्तभ्रम ३ कर्णक ४ जिह्वक ५ कठकुब्जये छय कष्टसाध्य है, बाकी ८ असाध्य है, लेकिन् इलाज लिखा है, कैम्यात् कोइ एकभी वचजावे कटगत प्राणतक दवा देणा ये चिकित्साकी प्रणाली है, बाकी वचना मुश्किल है, कइ मात्रा तो हमने खुदकरी बनाये है

(रुग्दाहका इलाज) वाला रगतचंनण नेतरवाला दाख आंवला पित्तपापडा उकालीकर पिलाना.

(४) चित्तविभ्रम लक्षण) चित्तभ्रमित बने धतूराखाने जैसी अवस्था हो संताप व्याकुलपणा आंखोंमें विकलपणा रोनेलगे हसनेलगे गावे नाचै और बकवाद करे इसकी मुदत २४ दिनकी है बाजेकूं वर्षोंतक रहता है.

(चित्तविभ्रमका इलाज) मोलेठी नखला शेमल पीपर अर्जुन वृक्ष (सादड) हरडे जटामासी रगतचंनणका काढा.

(५) शीतांगका लक्षण वदन वरफ जैसा ठंढा पड जाणा कांपणा श्वास हिचकी सब अंग शिथिल शोप मनकूं संताप खासी दस्त उलटी अवाज खोखरी इसकी मुदत १५ दिनोंकी है असाध्य है.

(शीतांगका इलाज) आककी जड जीरा सूंठ मिरच । पींपर भारंगी भूरींगणी काकडासींगी पोकर मूल नहीं तो एरंडीकी जड गोमूत्रमे उकाली करणी.

(६) तंद्रिकका लक्षण–मींटरहै. आंख कम खोले बुखार कफ प्यास जुवान काली जाडी और कांटोसें व्याप्त दस्त श्वास दाह कानोमें बहरास गलेमे सोजा सो जाड़ाबोले निद्रा वगेरे मुदत २५ दिनोंकी कष्ट साध्य है.

(तंद्रिकका इलाज) भारंगमूल गिलोय मोथ भूरींगणी हरडे पोकरमूल इसकी उकाली.

(७) कंठकुब्जका लक्षण–शिरमे दर्द गलेमें कांटे दाह वेशुद्धि कंप बुखार बकवाद वातरक्तकी पीडा मूर्छा मुदत १३ दिनकी कष्टसाध्य है.

(कंठकुब्जका इलाज) काकडाशींगी चित्रक हरडे अरडूसा कचूर चिरयता भाडंगी भूरींगणी पोकरमूल नागरमोथ कूडा छाल कुटकी हलदी आमले देवदारू वहेडा वच सूंठ पींपर कायफल इसकी उकाली.

(८) कर्णकके लक्षण–कानकी जडमें सोजा बहोत वेदना बहरापण हाफणी बकवाद संताप ज्वरवगेरे ज्वर आतेही उठे तो असाध्य, ज्वरके मध्यमें उठे तो कष्टसाध्य अंतमे उठे तो साध्य मुदत तीन महेनेकी है कष्टसाध्य.

(९) कर्णकका इलाज–बहोत मूं सूजगया होय पका नहीं होय तब घी पिलाणा ४ दिन बादशक्ति मुजब कानके नीचे जोक लगाकर खून निकलवाणा अथवा ये लेप करणा रास्ना सूंठ बीजोरेकी जड चित्रक दारू हलदी अरणी इससें सूजन उतर जाती है साधारण कानके नीचे बच्चोंके सोजन आजाती है, जिसपर मुलतानी मट्टी राख निमकका लेप करणा रास्ना आसगंव नागरमोथ दोनोंजातकी भूरींगणी भाडंगी काकडासींगी हरडे वच पोकरमूल कुटकीकी उकाली देनी.

(९) भुग्ननेत्रका लक्षण–आंख टेढी श्वास खासी नसा वकणा कंप बहेरापणा मोह सोजा वगेरे मुद्दत ८ दिनकी है असाध्य है.

(भुग्न नेत्रका इलाज) दारू हलदी पटोल नागरमोथ भूरींगणी कुटकी हलदी नींवकी छाल त्रिफला इनोंकी उकाली.

(१०) रक्तष्टीवीके लक्षण–मूंमेसें खून आणा बुखार उलटी प्यास मूर्छा शूल दस्त यामरोडा हिचकी पेटपर आफरा भमल जीभकाली अथवा लाल होणी आंख लाल जीभ पर चकत्ते मुदत १० दिनकी वेहोस असाध्य है.

(रक्तष्टीवीके इलाज) मोथ पद्मकाष्ट पित्तपापडा रगतचंनण मोलेठी वाला शतावर कृष्णागर कडवे नींवकी छाल इनोकी उकाली.

(११) प्रलापकका लक्षण–वकवाद कंप संताप शिरमे दर्द वडी २ वातें करणी स्वच्छतापर प्रीति दुसरेका फिकर बुद्धिकेनाशसे भई गभराट इसकी मुद्दत १४ दिनकी है असाध्य है.

(प्रलापकका इलाज) नागरमोथ वाला सूंठ पित्तपापडा रक्तचंनण अरडूसा इनोंकी उकाली.

(१२) जिव्हकका लक्षण–जुवानपर कांटे गूंगापणा बहरापणा ताकतका नाश खांसी संताप वगेरे मुदत १६ दिनकी हे कष्टसाध्य है.

(जिव्हकका इलाज) वच भूरींगणी धमासा रास्ना गिलोय मोथ सूंठ कुटकी काकडासींगी पोकरमूल ब्राह्मी भाडंगी चिरायता अरडूसा कचूरकी उकाली.

(अभिन्यासका लक्षण) बोलचाल बंध होकर अचेत होजाणा वेचेनी वडे कष्टसे एकाध दफे बोलणा शक्ति जाते रहणी श्वास मूंपर चिकणास तेजी नींद मुदत १६ दिनोंकी है असाध्य है.

(अभिन्यासका इलाज–काकडासींगी लाल धमासा पोकरमूल भाडंगी कचूर भूरींगणी इनोकी उकाली.

(१४) हारिद्रकके लक्षण—अंग नख नेत्र हाथ पाव वगेरेका रंग हलदी जैसा होजाय बुखार खांसी दस्त पेशावभी हलदी जैसा ये सन्निपात कचित् २ देखणेमें आता है असाध्य है मुदत इकीस दिनोंकी है.

(हारिद्रकका इलाज) विशेष असाध्य है तोभी वृहत् भारंग्यादि क्काथ देणा.

सर्व सन्निपातज्वरका सामान्य इलाज.

सन्निपात अथवा त्रिदोषके साधारण लक्षण विद्वान वैद्य और डाकदर सहजसें जाण- सकते हैं मुसलमीनी इलाजोमें दोयही भेद सन्निपातोंके माने हैं, सरसाम १ बोहरान २ रातदिनके अभ्यासी, विगर पढे भी मृत्युके निशाण वहोतसी बखत बता देते हैं, मतलब

मूं काला पडजाय सुइचुभाणे कैसी पीडा होय अन्नपर अरुचि प्यास मूर्छा होती स्थावर विषमें दस्त होता है, क्योंके जहर नीचेकों गती करता है, उलटीभी होती

७।८ ।

(२) औषधी गंधजन्यज्वर–किसी तेज खराब बदबोवाली वनस्पतीकी खसबो चढेज्वरमें मूर्छा शिरमे दर्द तथा कैहोती है.

(३) कामज्वर–इच्छित स्त्री अथवा पुरुषकी प्राप्ति नहीं होनेसें जो ज्वर पैदा हो है, उसकूं कामज्वर कहते हैं, इसमे चित्तविभ्रम मींट आलस छातीमें दरद अरुचि क डके मोडणे गलहत्था देकर फिकर करना किसीकी कही बात अछी नहीं लगणी औ वदनका सूकणा मूंपर पसीना निसासे डालने आदि चिन्ह होते हैं.

(४) भयज्वर–डरसें बुखार चढे उसमें बकवाद बहोत करता है.

(५) क्रोधज्वर–गुस्सा आणेसे चढे ज्वरमें कांपणी मूं कडवा होता है.

(६) भूताभिषंगज्वर–में उद्वेग हसे गावे नाचै कांपे तथा अचिंत्यशक्ती इसवे शिवाय (क्षतज्वर) वदनमें घाव पडनेसें चढे बुखार, दाहज्वर, थकेलेका ज्वर, वदनक कोइभाग कटणेसें चढे सो छेदज्वर, वगेरे आगंतुकज्वरमें, बहोत कारणोंका समावेश होता है, नीचे मुजब इलाज करणा.

(१) जहरका, तथा औषधीगंधकेज्वरमे, पित्तशमन होय एसा इलाज करणा, तज तमालपत्र इलायची नागकेशर कबाबचीणी अगर केशर लोंग इत्यादि सब थोडे सुगंधी पदार्थ लेकर क्वाथ करके देणा.

(२) कामसें भये ज्वरमे, वाला कमल, चंदन नेत्रवाला तज धाणा जटामासी वगेरे ठंढे पदार्थोकी उकाली ठंढा लेप तथा इच्छित वस्तुकी प्राप्ती.

(३) क्रोध, भय, शोक, वगेरे मानसिक विकारोके बुखारोंमें, उसके कारण दूर करणा, दिलासा देना इच्छितवस्तु मिलणा, पित्तकूं शमाणेवाले शांत उपचार, आहार, तेसें बाहर उपचार करनेसें मिटता है.

(४) चोट, श्रम, रस्ते चलनेका थकेला गिरजाणा वगेरेके बुखारमें पहली दूधभात खाने देना, रस्ते चलणेके ज्वरमें तेलका मालिस, और नींद लेने देना.

(५) आगंतुकज्वरवालेकूं लंघन करणा नहीं, चिकणा तरावटवाला पित्तशामक ठंढा भोजन कराणा मनकूं शांतकरवाणा इन बातोंसें बुखार नरम पडता है.

विषमज्वर.

(कारण) एकवखत आयेमये बुखारके दोषोंका शास्त्रकी रीतविगरसें निवारण किये पीछे दवा जैसें किनाइन वगेरेमें बुखारकूं दवा देणेसें उसकी लिंगस नहीं जाती तब बुखार धातुओंमें छिपकर रहता है तब अहित आहार विहारसें दोष कोप पाकर बुखारकूं

पीछे प्रगट करता हैं, और वो विषमज्वर कहलाता है, खराब हवा वगेरे दुसरे कारणोंसें भी सरुआतमें विषमज्वरकी पैदास है.

(लक्षण) विषमज्वरका कोई मुकरर वखतनहीं है, उसमे ठंडी गरमीकाभी नियम नहीं है, उसके वेगकाभी तादाद नहीं है, किसी वखत थोडा किसी वखत जादा रहता है, उसमे ठंड किसी वखत गरमी लगके चढता है, किसी वखत जादा जोरसें किसी वखत कमजोरसें इस बुखारमें जादा तर पित्तका कोप होता है.

(भेद) विषमज्वरका पांच भेद है, १ संतत २ सतत ३ अन्येद्युष्क एकांतर, तेजरा ४ चोथिया ५.

(१) कितनेक दिनोंतक अणउतार एक सदृश रहणेवाला बुखारकूं संतत कहते हैं, वात ७ दिन पित्त १० दिन कफ १२ दिन दोषके ताकत मुजब रहकर पीछे उतरकर फेर बहोत दिनोंतक आते रहता है, ये बुखार बदनके रस धातूमें रहता है, एसी शास्त्रकी आज्ञा है.

(२) सतत–१२ घंटेके अंतरसे आणेवाला तैसें दिनमें और रातमें दोवखत बुखार आवे वो सतत कहलाता है, इस बुखारका दोष खून धातूमें रहता है.

(३) एकांतरा–(हमेसांका) २४ घंटेके अंतरसे आता है, दररोज एक वेर बुखार चढे और ऊतरे, ये बुखार मांस धातूमें रहता है.

(४) आर्सेनि४८ घटेके अंतरसें आता है, बिचमें एकदिन नहीं आता इसकूं तेजरा कहते दवा उ एकांतर कहते हैं, ये मेद धातूमें दोष रहता है.

(५) णेकूं कि–७२ घंटेसे ये बुखार आता है, बिचमें दो दिन नहीं आता पीछे तीसरे दिन च असर पहिले दिनकी अपेक्षा चोथिया कहलाता है, इसका दोष हाड धातूमें रह आईपीक्य मज्जा धातूमें रहता है, दोषजुदे २ धातूका आश्रय लेकर रहणेसें रसगत र ये दवा देण नामोंसे वैद्य कहते हैं. इस अनुक्रमसें हाड तथा मज्जामें गया भया चो नक ादा भयंकर है, अगर जो दोष वीर्यमें पोहचता है, तो जरूर प्राणी मर जात, अब विषमज्वरोंका सामान्य जुदे २ इलाज लिखते हैं.

देशी इलाज.

(१) संततज्वर–पटोल इंद्रजव देवदारु गिलोय नींबकी छाल.

(२) सततज्वर–त्रायमाण कुटकी धमासा उपलसिरी.

(३) एकांतर–दाख पटोल कडवानींब मोथ इंद्रजव त्रिफला.

(४) तेजरा–वाला रगतचंनण मोथगिलोय धाणा सूठ सहतमिश्री.

(५) चोथिया–अरडूसा आंवला सालवण देवदारु जोहरड संठ सहत और मिश्री मिलाकर.

सामान्यइलाज (६) दोजातकी रींगणी सूंठ धाणा देवदारू ये क्काथ पाचन है, इसवास्ते विषम तथा सबतरेके ज्वरोंमें पहिली देणा चहिये.

(७) पटोलादि क्काथ (नं० २०७) सबतरेकें विषमज्वर तेसें दाहज्वर तेसें नवीनज्वर वगेरे तमाममें अच्छा फायदा करता है.

(८) भारंग्यादि क्काथ (नं० १९६) सबतरेके विषमज्वरकूं फायदा बंद है.

(९) मुस्तादि क्काथ–मोथ भुरींगणी गिलोय सूंठ आंवला इन पांचोंकी उकाली ठंढीकर सहत पींपरका चूर्ण डालकर पिलाणा.

(१०) ज्वरांकुश–बुखार आतेकूं रोकणे वास्ते तथा ठंढ लगतीकूं मिटाणे वास्ते छोटा ज्वरांकुश (शुद्धपारा गंधक बछनाग सूंठ मिरच पीपर ये सब एकेक भाग शुद्ध किये धतूरेके बीज दोभाग इनोंमे प्रथम पारे गंधकी कजलीकर बाकी ४ कूं कपडछांणकर सबोंकों मिलाकर नींबूके रसमें खूब खरलकर (२) दोरत्तीकी गोलियें बणाणी ये गोली १ तथा (२) पाणीमें या आदेके रशमें या सूंठकें पाणीमें बुखार ठंढ लगणेके पहिले देणी बुखार या ठंढतो बिलकुल बंध होजाता है, ठंढके बुखारमें ये गोली क्किनाइनसें भी जादे फायदेबंद है.

(११) अमृतामोदक (नं० ६७) बेर २ उलटकर आणेवाले धातुगत जीर्णज्वर विषमज्वर जब कोई भी दवासें शरीरकूं छोडता नहीं तब इस मोदकका सेवन वखतसर करणेसें निश्चे जाता है.

इत्यादि

(१२) छुटकर इलाज–चोथिया तथा तेजरे बुखारमें अगस्तके रस अथवा सूकेपत्ते पीस कपड छाणकर सुंघाणा अथवा पुराणे घीमें हींग पि[illegible]णा जटा धाणा सब विषमज्वरोंमें नीचे लिखे उपाय सब अच्छे हैं, खपाटकी जड [illegible] काढा एक रुपेभर काला जीरीकूं जरा सेककर एक रुपियेभर गुडमिलाकर खा[illegible] उसके [illegible]रच तुलशीकेपत्ते घोटकर पीणा कालीजीरी तथा गुडमें थोडी कालीमिर[illegible]त उपचार, [illegible]वाना सूंठ जीरा तथा गुड गरमपाणीमें अथवा पुराणे सहतमें अथवा जाडी [illegible] से ठंढका बुखार उतरजाता है, अथवा कांकचियाके बीज शेके भये दोभाग और मिर[illegible] पहली एकभाग इसका चूर्णकर टंकमें तीनमासा चूर्ण पाणीसें फाकणा, इकेली नींबकी अंतरछाल, गिलोय, अथवा चिरायतेका पत्ता, रातकूं भिगाकर फजरमें थोडी मिश्रीमिलाय, कालीमिरच डाल पीणेसें, ठंढके बुखारमें वहोत फायदा करता है, (नं० ६९२) ६९३) वाले हकीमीनुसके ठंढके बुखारपर वहोत फायदे मंद है.

(देशी इलाजोमें) वनस्पतीके क्काथ देणेमें सबतरेका निडररस्ता है, तथा साधन और धर्मरक्षणता है. क्योंके सबतरेके काढे बुखार होय चाहे नहींभी होय तोभी हरवखत देसक्ते हैं, फेर उसमें मलका पाचन होय दस्तभी आता है, इसवास्ते दस्तके खुलासा

वास्ते अलग जुलाब देणेकी जरूरी नहीं रहती धर्मरक्षा तो प्रगटही है, लिखणेकी जरूरी क्या है.

(अंग्रेजी इलाज)–विमज्वर ऊपर लिखे मुजबका होय अंग्रेजीदवा खाणेवालोंनें अजमाणा चाहिये.

(१) बुखार चढा होय तब देणेका इलाज (नं० ५७०) ५७१ की मिलावटकी योग्यलगे उसका उपयोग करणा.

(२) पसीना आयगये पीछै देणेके मिक्श्चरो नं० ६७४–७५ मेंसें योग्य लगे सो.

(३) पित्तका जोर जादा होय उलटी होती होय तो नं० ६७८ का मिक्श्चर देणा.

(४) बुखारकी वारी आणेके पहिली अटकाणेकूं क्विनाइन सबसे उत्तम मांनते है, लेकिन् जहांतक बणे इसकीमात्रा बहोत कमही देणी क्योंके ये जादा मात्रासें बुखारकूं तो उतारता है, लेकिन् दुसरी बहोत खराबियां करता है, दाह धातुजाणा पांडू भ्रमआदि अनेक रोगोंका कारण बणजाता है, बहोतसे डाकटरलोक हठमें आकर क्विनाइन धकेलते इजाते हैं, लेकिन् उसका परिणाम एकंदर ठीक नही आता.

होमियोपथिक इलाज एकंतरादि ठंढके बुखार ऊपर इस मुजब.

(१) एकोनाइट–सख्त बुखारकी गरमी कम करणेकूं इसके जैसी एकभी दवा नहीं है, दर दोदो घंटेसे देणा.

(१) आर्सेनिक–जब ठंढविगर बुखार आवे अथवा पसीना आयेविगर ऊतर जावे तब ये दवा उपयोगी है, बुखार नहीं होय उसवखत तथा फेर बुखार नहीं आवै उसकूं रोकणेकूं क्विनाइन सर्वोत्तम इलाज है, लेकिन बुखार जब पुराणा होय और क्विनाइन जब असर नहीं करे तब ये देणा मात्रा ०॥ वाल दिनमें चार वखत.

(२) आईपीक्याक–बुखारकेसंग मोल उलटी श्वास पाणी जैसे दस्त वगेरे उपद्रव होय तब ये दवा देणी मात्रा दोदो बूंद पाणीमें डाल चारवेर देना.

(३) नकसवोमिका–दस्तकवज होय और क्विनाइन दिये पीछेभी फायदा नहीं होय तो ये दवा देनी मात्रा दो बूंद थोडे पाणीकेसंग दिनमें ४ वखत.

संततज्वर-रिमिटंट फीवर.

(कारण) विपमज्वरका कारण ये संततज्वरही है, पहली संक्षेपसें उसके लक्षण तथा उपाय लिखा है, वो मेलेरियाकी जहरी हवामेंसे पैदा होता है. और विपमज्वर दुसरे भेदोंसे ये बुखार बहोत सख्त होता है.

(लक्षण) ७।१० या १२ दिनोंतक एक सरीखा आया करता है, कोईभी वखत उतरता नहीं ये तीनों दोपोंके कोपणेसें आता है, इस बुखारकी शरुआतमें पाचनक्रियाकी

अव्यवस्था बेचेनी खिन्नता तथा शिरमे दर्द वगेरे लक्षण मालम देते हैं, ठंढकी चमकारी इतनी तो थोडी आती है, सो ठंढ चढणेकी खबरतक नहीं पडती और एकदम गरमी जाती है, चमडीमें दाह उलटी शिरमे दर्द नींद नहीं आणा मींटभी होजाती है, अंतरिया बुखारमें बुखारका चढणा उतरणा प्रगट मालम देता और इसमें मालम नहीं देता क्योंके पहिले प्रकारका तप तो बिलकुल ऊतर जाता है, और इसमें उतरता नहीं लेकिन् कुछएक कम होय अथवा वहोत थोडा कम होणेसें इतनी खबर नहीं पडतीके कब जादाभया और कब कमभया वो समझ जाहिरमें थरमोमिटर ठीक देती है, इस बुखारकी स्थिती हैं, पहली स्थितिमें थोडे २ अंतरसें ऊपरा ऊपरी बुखारकी चढ ऊतार होती है, और पीछे दुसरी स्थितीमें बुखारकी भरती आसरे आठ२घंटेतक रहती है, उसवखत चमडी वहोत गरम रहती है, नाडी वहोत जलदी चलती है, श्वासोश्वास बहोत जोरसें चलता है, और मनकूं चैन नहीं होता बुखारकी गरमी (१०४) उससेभी आगे किसी वखत १०५, १०६ और १०७ तकभी बढ जाती है, आठदशघंटे पीछे कुछ नरम पडता है, थोडा पसीना आता है, बुखारकी गरमी वहोत होणेसें इसकेसंग खासी लीवरका वरम पाचन क्रियाकी गडवड अतीसार मरोडा होजाता है, और वहोत करके ७ में १० में दिन मींट अथवा सन्निपातका लक्षण दिखणेलगता है, अच्छीतरे इलाज नहीं होणेके सबब २१ दिनतक ये बुखार चलता है.

(इलाज) संतत अथवा रिमिटंटफीवर वहोत भयंकर बुखार होता है, इसवास्ते आप घरतरीके अच्छीतरे नहीं समझ सके तो कुशल वैद्य या डाकटरका इलाज करवाणा सख्त और भयंकर बुखारमें रोगी ७ सें १२ दिनके अंदर मरजाता है, और जादादिन ठहरता है, तो गंभीर स्वरूप पकडता है, इस बुखारका मुख्य इलाज ये है, बुखारकी टेम्परेचर (गरमी) जैसें वणें तैसें कमती रखणी नहीं तो एकदम खूनका जोस चढके मगजमें सोजा आता है, तंद्रा और त्रिदोष होजाता है, देशी इलाज तो पहिले लिखाहीहै.

(अंगरेजी इलाज) (१) उलटीका उछाला होय तो इपीकाक्यु आन्हाचूर्ण ग्रेन (२०) एक औंस पाणीमें देणा पाव घंटे पीछे गरम जल पिलाणा उससें उलटी होकर पित्त निकल जायगा बुखार कम पडेगा होजरीपर राईका पलाष्टर मारणेसेंभी के होती है.

(२) बुखारमें प्यास इसमें वहोत लगती है, सोडावोटर लेमोनेड वगेरे देणा वरफ चूसाणा अथवा वरफ डालाभया पाणी या दूध देते हैं.

(३) एन्टीपाईरीन एन्टीफीब्रीन और फीनासी टीन ये दवाये बुखारकूं एकदम ऊतार देती है, लेकिन् वो देते वखत वहोत सावधान रहणा क्योंके शक्ति उपरांत दिये जाय तो ह्रिदयका काम अटककर प्राणी मरजाता है, इसवास्ते एसी दवा पूरे अनुभव विगर वरतणेकी परवानगी नहीं दिये जाती इसकी एवजीमें रत्नगीरी नामकी दवा

उत्तम कीमती दवा है, उसमे कोइकिस्मका डर नहीं मिले तो इसका उपयोग करणा रत्नगिरी एकदम बुखारकूं उतारती है, पसीना लाती है.

(४) शिरपर (नं० ३१२) वाले लेपमें कपडा भिगाकर कपालपर धरणा बरफ धरते हैं, अथवा एसा कोईभी ठंढा दुसरा इलाज करणा जिससें शिरमें गरमी चढे नहीं.

(५) बुखारकी गरमी जादा होय तो और पसीना नहीं आता होय तो गरम पाणीमें कपडा भिगाकर वदनपर लगाणा गरम जलमे पांव डुबाणा अथवा खूब गरम पाणीमें गरम ऊनकी धावली डुबाकर निचोड वदनपर लपेटना और रोगीकूं सुला देणा और उसपर दुसरी धावली ओढाणी.

(६) पसीना लानेकूं (नं० ५७०) वालामिक्श्चर सरू रखणा इकेला टिंकचर एकोनाईट दोदो बूंद पाणीकेसंग देणेसें बुखारकूं नरम करता है.

(७) बुखार नरम पडे पीछै (नं० ५७४ वाला) क्विनाइनमिक्श्चर देणा बुखार में क्विनाइन देणा अच्छा नहीं है, तोभी बुखार उतरे पीछै थोडी २ मात्रा क्विनाइन देनेसें नुकशान नहीं है.

(९) इसबुखामें जो कलेजेमें खूनका जमाव भया होय एसा मालम देतो क्या-लोमेल ग्रेन ५ तथा कम्पाउन्ड जालप ग्रेन ४० देणेसें अच्छादस्त लगता है, दरदी शक्तिवान् होय तो जोकलगाणा कलेजेका तेसें फेफसेके वरममें राईका पलाष्टर तथा शेक फायदा करता है.

(होमियोपथीक इलाज)-विषमज्वरमें दिया है वोही इसमें जाणना.

जीर्णज्वर.

(कारण)-जीर्णज्वर ये कोई खास कारणका नया बुखार नहीं है, नया बुखार नरम पडे पीछै जो कितनेक दिनोंवाद अर्थात् २१ दिनोंवाद जो मंदवेगसें बुखार वदनमें रहजाता है, उसकूं जीर्णज्वर कहते हैं, ये बुखार ज्योंज्यों पुराणा होता है, त्यों त्यों मंदवेगवाला होता है, हाडज्वर भी इसे कहते हैं.

(लक्षण) बुखारका वेग मंद वदनमें लूखापणा चमडीपर सूजन थोथर अंगोमें जकडपणा तथा कफ ये क्रम २ से लक्षण वढते २ जीर्णज्वर कष्टसाध्य होजाता है.

(इलाज (१) गिलोयका काढाकर उसमें लींडीपींपरका चूर्ण अथवा सहत मिला कितनेकदिन पीनेसें जीर्णज्वर मिटता है.

(२) खासी श्वास पीनसरोग तथा अरुचिके संग जीर्णज्वरमें गिलोयके संग भूरींगणी तथा सूंठडाल इसका काढा पींपरका चूर्ण मिलाकर पीणेसें फायदा करता है.

(३) अमृतामोदक (नं० ५७) उसका घहोतदिन सेवनकरणेसें हाडतक पोहचा भया कष्टसाध्य और असाध्य जीर्णज्वरभी मिटजाता है.

(४) हरीगिलोयकूं पाणीमें पीस उसका रस निचोडकर पींपर छोटी तथा सहत मिलाय पीनेसे जीर्णज्वर कफ खासी तिली और अरुचि मिटती है.

(५) दोभाग गुड और एक भाग लींडीपीपरका चूर्ण मिलाकर इसकी गोलीकर खाणेसें अजीर्ण अरुचि अग्निमंदता खासी श्वास पांडु तथा शभीके संगका जीर्णज्वर मिटता है, इसीतरे लींडीपींपरकूं सहतमें चाटणेसे तथा २।३।५।७। शक्ति और तासीर मुजब रातकूं जलमें या दूधमें भिगाकर दूधमें उकालकर अथवा पीसकर गोलीपर गरमकर ठंढा दूध पीणेसे नित्त इस मुजब वढाकर पीणेसें वो जीर्णज्वरादि अनेक रोग मिटाता है.

(६) आमलक्यादि चूर्ण—आंवला चित्रक हरडे पींपर सींधानिमक इस चूर्णसें बुखार कफ अरुचि जाती है, दस्तसाफ आता है, अग्निदीप्त होती है.

(७) लाक्षादि तेल (नं० २९६) में लिखा है, इससें जीर्णज्वर मसलाणेसें मिटता है, इससिवाय नारायण तैल चंदनादि तैल भी मसलानेसे बहोत फायदा है.

(८) हमारी बनाई अमृतवटी दूधके और शितोपलादि चूर्णके संग लेणेसें जीर्णज्वर खासी अरुचि मंदाग्नि नाताकती धातुक्षीणता छाती दरद वगेरे सब मिटता है, या स्वर्णवशंतमालनी चोसठपहरी पींपरसंग अथवा सादे पीपर सहतसंग अथवा पींपर दूधसंग अथवा शितोपला दूधसंग देणा.

बुखारमें दुसरे उपद्रवोंका इलाज.

(कासज्वर)—कायफल मोथ भाडंगी धाणा चिरायता पित्तपापडा वच हरडे काकडासींगी देवदारु सूंठ इन ११ चीजोंकी उकालीसें खासी कफसमेत बुखार जाता है, (२) पीपर पीपरामूल इंद्रजव पित्तपापडा सूंठ इनोंका चूर्ण सहतमें.

(ज्वरातिसार) –(१) लंघन (२) सूंठ कूडाछाल मोथ गिलोय अतीसकीकली इनोंकी उकाली (३) कालीपाठ गिलोय पित्तपापडा मोथ सूंठ चिरायता इंद्रजव इनोंकी उकाली.

(दुर्जलज्वर)—खराब गंदा शिखरगिरि वद्रीनाथ आसाम अडंग वगेरेका पाणीके लगणेसें होय सो बुखार (१) हरडे नींबके पत्ते सूंठ सांधानिमक तथाचित्रक इनोका चूर्णकर बहोतदिनोंतक सेवनकरणेसें ये बुखार मिटता है,(२) पटोल अथवा कडवीतुराई मोथ गिलोय अरडूसा सूंठ धाणा चिरायता इनोका क्राथ सहतडालकर पीणा(३) चिरायता निशोत खसनाला पींपर वायविडंग सूंठ कुटकी इनसबोंका चूर्णसहतमें चाटणा (४) सूंठ जीरा तथा हरडे इनोंकी चटणीकर भोजनके पहली चटणी खाणी (५) बछनाग दोभाग जलाइ कोडी पांच भाग और मिरच ९ भाग कूट आदे केरसमें घोट मूंग जितनी गोलियोंकर फजर सांझ दोदो गोली पाणीसें लेनी आमज्वर खराब पाणीकाज्वर अजीर्ण बाफरा मलबंध शूल श्वास खास वगेरे सब उपद्रव ऊपर ये गोली देणेसें फायदा होता है.

(बुखारमें प्यास) चांदीकी गोली मूंमें चूसाणी आलूबुखारा खजूरकी गुठली चुसाणी सहतपाणीके कुरले कराणा अथवा जहरी नारेलकी गिर रुद्राछ लोंगसेकाभया सोना, मोती अवींध खरड, मूंगिया, मिले तो फालसेकी जड, और संख, इनोंको घस सींपणीमें धररखणा जुबानके घंटा २ से लगाणा पहरभर बाद दुसरा घसणा इससें पाणी झरा मोती झरेकीप्यास त्रिदोषकी प्यास कांटे जीभकी स्याही उलटीतक कष्टसाध्यकी मिटजाती है खुराक जितना रोगीकूं साहरा और ताकत देती है हमारी पतवाणी भई है.

(बुखारमें हिचकीका इलाज) मोरका चंदवा चार जलाकर पींपर भूणी भई जीरा सेका भया नारेलकी जोटी जलाई भई रेसमका कूचा या कपडा या अच रेसम, रेसमके कीडोंका पिछला भाग रहासो जलाया भया, पोदीना, कमलगट्टेके अंदरकी हरियाई इन सर्वोको पीस सहतमें या अनारके शरवतमें नहीं तो मिश्रीकी चासणीमें उलटी होतेइ चटाणा चटाये बाद फेर घंटा २ से चटाणा इससें उलटी छर्दि त्रिदोषकीभी बंध हो जाती है (२) अथवा मखीका हंगार सहतमें चटाणा ३ भुजाकी दोनो नस खेंचके बांधणी ४ (धूम्रपान) नारेलकी चोटी हलदी काली मिरच उडद मोरके चंदेका कराणा ५ नीलेथोथेकी भस्मी या ताम्रभस्म पींपरसंग चटाणा.

(बुखारमें श्वास) दोनों भूरींगणी धमासा कडवीतोरी, अथवा पटोल काकडासींगी भाडंगी कुटकी कचूर इंद्रजव इनोंकी उकाली (२) लींडी पीपर कायफल काकडासींगी इन तीनोंका चूर्ण सहतमें चाटणा.

(बुखारमें मूर्छा) (१) आदेका रस सुंघाणा (२) सहत सींधानिमक मनशिल और काली मिरचकूं महीन पीस उसका आंखमें अंजन करणा (३ ठंढा पाणी आंखपर छांटणा (४) सुगंध धूप देणा पंखेकी हवा देणी.

(बुखारमें अरुचि) (१) आदेका रस जरा गरमकर उसमें सींधानिमक डाल थोडा चाटणा (२) बीजोरेके फलके अंदरकी कलियां सींधा निमक मिला मूंमें रखणा.

(बुखारमें उलटी) (१) गिलोयका काथ ठंढा कर मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (२) पित्तपापडेका हिम मिश्री डालकर पीणा (३) आंवला दाख तथा मिश्रीका पाणी (४) दाख चंदन वाला मोथ मोलेठी तथा धाणा ये सब चीजों अथवा इनमेंकी जो मिले उसकूं भीगाकर पीसकर उसका पाणी पीणा (५) नींबकी अंतर छालका पाणी मिश्रीडाल पीणा.

(बुखारमें दाह) (१) उलटीके कितने एक इलाज दाहकूं फायदा करणेवाला है अंदर दाह होता होय तो (२) कचे चावलोंके धोवणमें चंदन घसा भया एकवाल सूंठ घसा भया १ रत्ती उसमें जरा सहत मिलाकर चाटणा अगर पाणीमें मिलाकर पीणा बाहर दाह होता होय तो (३) चंदन सूंठ वाला तथा निमक इसका लेप करणा

दशांग लेप (नं० ३१२) पाणीमे पीस लेप करणा अथवा इस लेपकूं मट्टीमें मिलाकर उस मट्टीका खरड करणा तेसें मगजपर मुलतानी मट्टीका थर भरणा.

(क्षयका बुखार) क्षय तथा फेफसा और यकृत् (लीवर) के वरममें.

(सोजेका बुखार) जो बुखार आता है, उसका इलाज उन २ रोगोंमें लिखणेमें आवेगा.

बुखारवालेकूं हितकारी सूचना.

(१) महनतका काम लंघण (याने उपवास) और वायुसे चढे बुखारमें दूध उसके संग भात हितकारक है कफके बुखारमें मूंगकी दालका पाणी तथा भात पथ्य है, ऐसाइ पित्तवालेकुं समझणा लेकिन् उसकूं ठंढाकर जरा मिश्री मिलाकर देणा दो दो तीन २ दोष सामल होय तो उसमें फक्त मूंगकी दालका पाणी पथ्य है.

(२) मूंगका पाणी भात अथवा साबूदाणा ये सब सामान्य बुखारका निडर खुराक है, और जहां दूध पथ्य लिखा है, उस जगे साबूदाणा दूध देणा या जलमें सिजाकर दूध मिलाकर देणा.

(३) लंघन ये वहोतसे बुखारोंमें प्रथम इलाज हितकारक है खास करके कफ तथा आमके बुखारमें पित्तके बुखारमें दो दो तीन २ दोष सामल होय उसमें लंघन अच्छा है, एक टंक हलका आहार करना अथवा फक्त मूंगका पाणी पीणा ये सब लंघन तुल्य है, फकत वादीका बुखार जीर्ण ज्वर आगंतुक ज्वर क्षयका तथा यकृत्के वरमका ज्वर इतनोंमें लंघन करनेसें उलटा नुकशाण है.

(४) दूध तथा घी तरुण ज्वर १२ बारे दिन तकमें जहर समान है, लेकिन् क्षय सोस राजरोग उरक्षतके बुखारमें यकृतके ज्वरमें जीर्ण ज्वरमें आगंतुक ज्वरमें दूध हितकारक है, जिसमेंभी जीर्ण ज्वरमें कफ क्षीण भये पीछे २१ दिनों बाद दूध अमृत समान है.

(५) जो बुखारवाला रोगी बदनमें दुर्बल होय जिसके बदनका कफ कम पडगया होय जीर्णज्वरकी तकलीप होय दस्तका बंध कुष्ट होय वदन लूखा होय पित्त या वायूका बुखार होय प्यास तथा दाहकी तकलीप होय उसकूंभी दूध बुखारमें पथ्य है.

(६) बुखार सरू होते लंघन, मध्यमें पाचन दवा, अंतमें कडवी कषायली दवा, आखरी दोष निकालनेकूं जुलाब, ये चिकित्साका उत्तम क्रम है.

(७) बुखारका दोष कम होय तो लंघनसेंही जाते रहता है जो दोष मध्यम होयतो लंघन पाचन दोनोंसें जाता है, बहोत बढे दोषका शोधन इलाज करणा.

(सात) दिनके लंघनसे वायुका दोष पकता है, १० दिनसें पित्तका १२ दिनमें कफका और दोषोंका जादा कोप भया होयतो दुणी मुदततक देर लगे.

(८) जिस बुखारमें दोषोंके अंशांशकी खबर न पडे तबतक सामान्य इलाज करणा.

(९) बुखारके रोगीकूं वायु विगरके मकानमें रखणा पंखेकी हवा डालणी भारी तथा गरम कपडे पहराणा तेसें ओढाणा और मोसमके अनुसार पका भया पाणी पिलाणा.

(१०) बुखारवालेकुं कच्चा पाणी पिलाना नहीं तेसे बेर २ बहोत पाणी पिलाणा नहीं लेकिन् बहोत गरमी तथा पित्तके बुखारमें प्यास तथा दाह होता होय उस बखत पाणी रोकणा नहीं बाकीके बुखारमें खयालकर थोडा २ पाणी देणा क्योंके बुखारकी प्यासमें जल प्राणरक्षक है.

(११) बुखारवालेकूं खाणेकी रुचि नहीं होय तोभी उसकूं हितकारक पथ्य दवातरीके थोडा जरूर खिलाणा.

(१२) बुखारवालेके तेसें बुखारमेंसें छूटे भयेकेवास्ते (नुकसान करनेवाला आहारविहार) स्नान लेप मालस चिकणा पदार्थ जुलाब दिनकी नींद रातका उजागरा मैथुन कसरत ठंढे पाणीका बहोत पीणा बहोत हवाकी जगे अतिभोजन भारी आहार तासीरकूं नहीं माने एसा भोजन क्रोध बहुत फिरणा तथा परिश्रम इन सब बातोंका त्याग करणा जो बुखारमें अथवा बुखार उतरे पीछे तुरत एसा कोइ विरुद्ध वर्त्तन करणेमें आवें तब बुखार चढता है अथवा गया भया पीछा आता है.

(पथ्य) साठी चावल लाल जाडे चावल मूंग तथा तूरके दालका पाणी चंदलियेका सोवेका तथा मेथीका शाग घीयातोरी परवल तोरी वगेरेका शाग घीमे वघारा भया दाख अनार सफरजंद.

(कुपथ्य) दाह करणेवाला कठोल जेसेके उडद चवले तेल दही और खट्टे पदार्थ बहोत पाणी, नागर वेलके पत्ते, घी दारू वगेरे.

टाइफस, टाइफोईड, तथा उलटता बुखार, कचित् २ देखणेमें आता है, इसवास्ते इसतरेके बुखारकी निसबत जादा इस ग्रंथमे लिखा नहीं पहिले दो तरेके बुखार गटर वगेरे दुरगंधी हवामेंसें पैदा होता है और उलटता बुखार कैदशाली (दुष्काल) तथा भूख मरणेवाले स्नान नहीं करणेवाले मेले वस्त्र रखणेवाले भिक्षुकोंके संगसें पैदा होता है, तथा दुकालकी बखतमें पैदा होता है, इसीवास्ते वीतरागसंजमी बाहिर जंगलमें साफ हवामें सहरके बाहिर उतरा करतेथे जिससे हवामें परमाणूकोसों दूर उडजाते व्याख्यानादि सुणनेकूं आणेवालोंकूं कोइ तकलीप नहीं होतीथी बेठणेवाले नाति दूरे नाति सन्ने तिष्ठति, जबसें पंचमकालमें मुनियोंने नगरमें वास किया तबसें सूत्रकारनें बकुस तथा कुशील ये दोयनि ग्रंथही पंचमकालमें रहेगें एसा लिखा हे, और बकुशके पांच भेदोमें वस्त्र तथा वदन सुंदर साफ रखणेकी व्यवस्था भेद दिखलाया अपणे पंथमें

झुकाणेकूं उपदेश देणा लावणी वगेरे रागगाणा चेला वगेरोंका समुदाय वणाणा इत्यादिक वर्त्तमान चलती व्यवस्थासें मुनियोंमें प्रायेसरागसंजमही देखणेमें आता है, ये श्रावग हमारा है, अथवा किसीतरे हो जावै उसकेवास्ते अनेक विवस्था करणी मनकल्पित मत चलाणा केवल मलमलीन गात्र और मेले वस्त्र रखणेसें रातकुं पाणी नही रखणेसें रातकुं दिशा जंगल जाणा पडे तो पेसाचसें गुदा धोणेसे, पात्रमेंही पेसाव करणेसे, वोही पात्रमें गृहस्थके घरसें आहार पाणीलाके खाणेसे, ऋतुवती स्त्रीकी छूत नहीं रखणेसे जन्ममरणका सूतकवाले घरका आहार पाणी खाणेसे, वासी रोटी खाणेसे, छाछ खीचडा संग खाणेसे, इत्यादिक धर्मविरुद्ध लोकविरुद्धता करणेसैं वीतरागसंजमी जैनमुनि कभी नहीं हो सकते, इस मलीन अचरणासे आपकूं और परजीवोंकूं रोगाग्रस्त करके सर्वज्ञकी आज्ञा खंडन करणा रूप महा पाप है, और नही रंगणा, नहीं धोणा, वस्त्रोंकूं ये सूत्र आचारांगका हुकम वज्र ऋषभ नाराच शरीरवाले चोथे अरेके वनवासी वीतरागी संजमियोंके वास्ते है, पांचमोरेके सरागसंजमी वस्तीमें रहणेवाले, छे वर्त्त सरीरवालोंकूं भगवतीके २५ में शतकमें देह वकुश उपगरण व कुशकी जो मर्यादा वो मर्यादा समझणी, जूंवस्त्रोमें पडे उनमुन्योंनें कत्थेसें लोदसे या पद्मचूर्णसे वस्त्रकूं पास देणा एसा निशीत सूत्रमे हुक्म है, अपवाद मार्गमें, सूत्रोंकी शैली, यथाख्यात चारित्रवालोंकी पहली है, सो पंचमकालमें विच्छेद है, दुसरी कलम सामायक च्छेदोपस्थापनी चारित्रवालोंकी है, सो विद्यमान है वृथा कष्ट लोकोंकों दिखाणा अंतर आत्मा शून्य इसमे क्या सिद्धि है, जो तुम लोकोंकी करणी पूरे त्यागकी है, तो पंचमकालमें भरतक्षेत्रसें मुक्ति क्यों नही पधारते वस सच वकजाल है, उदरनिमित्तं वहुकृत भेपा इत्यलं ॥

फूटकर निकलणेवाले बुखार.

इस बुखारकुं देशी वैद्यकशास्त्रवालोनें बुखारके प्रकारणमें नहीं लिखा है, मसूरिका तथा जैनयोगचिंतामणीकारने मूं धोरा नाम करके पाणी झरेकूं लिखा है, मरुस्थल देशमें निकाला, सोलापुर दक्षण देशके मराठे लोक भाव कहते है, इत्यादि देश प्रसिद्ध अनेक नाम है, संस्कृतमे इसका नाम मंथरज्वर है, पित्तज्वरके लक्षण इसमें प्राये होते है, मारवाडमें मूर्खरंडाओंकों मूर्खलोकोने इसका अधिकार दे रखा है, वो लोक प्राये पित्तविरोधी इसका इलाज अत्यंत गरम लोंग सूंठ ब्राम्ही दिलाते हैं, इस इलाजसें सोमें नव्वे अदमी प्राये गरमीके दिनोंमें मरते हैं हमने देखा है, दश वचते है, वोभी कष्ट पाय करके, इन रोगोमें मसूरके दाणे जेसे तथा मोती अथवा सरसूंके दाणे जेसे वदनपर फुनमियां निकलती है, तथापि इसमें मुख्यपणे बुखारका उपद्रव होणेसें इहा बुखारके प्रकरणमें दाखिल करा है.

(प्रकार) फूटके निकलणेवाले बुखारके वहोत प्रकार है, उसमें शीतला ओरी

अच पडा वगेरे मुख्य है, इसके सिवाय रंगीला विसर्प, हे जा, प्लेग मोती झरा वगेरे सर्व भयंकर बुखारोंका समावेश होता है.

(कारण) नाना प्रकारके बुखारोंका कारण संबंध वदनके संग जितना रखता है, उससें विशेष बाहरकी हवासें रखता है एसे फूटकर नीकलते रोग कहांइ तो एकदम फूटकर निकलता है, एक तरेका जहर ये उसका (Poison) मुख्य कारण है, ये विषचेपी है, इसवास्ते फैलता हैं, बहोतसे अदम्योंके वदनमें घुसके बडा नुकशान करता है, कितनेक अदमियोंके वदनकूं ए रोग लगता है, कितनेकों नहीं लगता उसके कारणोंका निर्णय पूरे दरजे अभी कुछ नहीं भया है, लेकिन् अनुमान एसा है के फलाणे २ शरीरोंका बंधेज तथा आहारविहारसें प्राप्त भये स्थिति करके उनोके शरीरके दोष है सो एसाचेपी रोगोंके परमाणुओंकों तुरत ग्रहण करलेता है, और फलाणे शरीरके तत्त्वोंपर एसे चेपी तत्व असर नहीं करसकता क्योंके एकही जगे एकही घरमें किसीकों ये रोग लग जाता है, और किसीकों लगता नहीं उसका येही कारण है, अनुमान होता है.

(लक्षण) फूटकर निकालता बुखार ये विशेष करके शीतला आदि तो बच्चोंका रोग है, किसी २ बडेकूं भी निकलता है, एसा देखणेमें आया है, दुसरी ये खुबी है, थोडे अपवाद शिवाय जिसके शरीरकूं ये रोग एकवेर निकलजाता है, उसकूं फेर ये रोग प्राये नहीं होता तीसरी खासियत इय हेकी जिस बच्चेकूं शीतलाका चेप दाखल किया भया होय अर्थात् शीतला खोदाय डाली होय उसकूं प्रायें ये रोग होता नहीं और होता है तों थोडा और बहोत नरम होता है, शीतला नहिं खोदाये भये बच्चोंमेंसें इस रोगसें सोमें ४० मरते हैं, और खुदाये भयेमें सोमें ६ मरते हैं, इसतरेका जहर वदनमें प्रवेश किये पीछे चोकसदिन प्रथम बुखारके रूपमें दिखाई देता है, और पीछे वदनपर दाणा फूटकर निकलता है, ये विशेष उसका खातरीलायक चिन्ह है.

शील-शीतला-माता-स्मॉल पॉक्स.

(प्रकार) शीतला दो तरेकी है, एकतरेका दाणा थोडा और दूर २ और दुसरे प्रकारकी शीतला सब वदनपर फूटकर निकलती है दाणे आपसमें मिलजाते हैं तिलभर जगा खाली नहीं रैती ये दुसरी शीतला बहोत कष्टकारी भयंकर होती है.

(लक्षण) शीतलाके विषका वदनमें प्रवेश भया पीछे १२, या १४ दिनमें शीतलाका बुखार सादे बुखारकी तरे ठंढका लगणा गरमी शिरमें दर्द पीठमें दरद तथा उलटीके संग आता है, फेर उसके संग गलेमें सोजा थूकका जादापणा आंखोंके पलकोंपर सोजा और श्वासमें खराब बदबो आती है किसी २ वखत जुवान छोकरोंकूं शीतलाके बुखार सरु होते मींट और छोटे बच्चोंकूं खेंचाताण हिचकी होती है, (दाणे) बुखार चडे पीछे तीसरे दिन पहली मूं तथा गर्दनमें पीछे शिरमें कपाल छाती अगिर पांवपर दिखाई

देता है दाणे दिखणेके पहली बुखार शीतलाका है या सादा है इसकी पूरीखातरी नहीं हो सकती लेकिन् अनुभव तथा चमडीका खासरंग ये बुखारकी तुरत पहिचाण दे देती है शीतलाके दाणे बाहिर दिखाई दिये पीछै बुखार नरम पडता है लेकिन् दाणे जब पकके भराव खाते हैं तब फेर बुखार जोर देता है, दाणा आसरे दशमें दिन फूट-कर खरूंट जमणा सरू होता है बहोत करके चौदमे दिन खरा पडता है दाणेके लाल चठे होजाते हैं उस वखत जाते अदश्य होता है सख्त हमलेमें जब शीतलाका दाणा अंदरकी पक्की चमडीमें घुसता है तब शीतलाके, दागका निशान मिटता नहीं खड्डे रहते हैं और सख्त उपद्रवमें अच्छा इलाज नहीं वणे तो आंखकानकी इंद्री जाते रहती है.

(इलाज) पहले तो खोदाय डालणा ये तो सर्वोपरी इलाज है, और दुनियाके बालक लोक इस सोधके वास्ते इंग्लंडके प्रसिद्ध डाकटर जे नरका तथा दयावंत अंग्रेज सरकारका हमेशोकेवास्ते पायबंद आभारी भये हैं, डाकतर जे नर जो शोधकरके ऐसा निकाल होकर बाद लाखोबच्चे इस रोगके भयंकर दरदमेंसे और मौतसे बचणे लगे हैं, कहांतक इस उपगारकी हम तारीफ करें धन्य २ महाराज तुमारे राज्य शाशनकी विद्वताका परोपकारपणा ये रोग प्रगट भये बाद उसकूं रोकणेका या कम करणेका इलाज कीसीभी शास्त्रमें तो नहीं देखा लेकिन् हमने उपाध्याय श्रीदेवचंद्रजी गणिकूं बीकानेरमें पहले साल उगणीससै २७ में देखा सो अबींध मोती २१ दिनोंतक इस मंत्रसे मंत्रके २१ खिलाया ओं ऋषभ अर्हंत मादित्य वर्णंतमसपुरस्तात् २१ वेर मं-त्रकर पवित्रतापणेसें हमने प्रत्यक्ष उसकूं देखा है अभीतक ये रोग उसके नही भया है, महिमा मोतीकी है यामंत्रकी सो पतवाणके देखणा और खान पांन वगेरेके साधनसें तथा शीतलाके भयंकर बुखारकी वखत योग्य इलाज करणेसें रोग कम होता है, बहोतसी वखत मरणका डर होता है, इस देशमें बहोतसें आर्य लोकोमें और जादा करके अज्ञान स्त्री जातिमें एसा वेहम धस गया है, के ये रोग कोइ देवीके कोपसें प्रगट होता है, इसवास्ते इसकी दवा करणेसें वो देवी और जादे गुस्से होती है, इस-वास्ते शीतला ओरीमें कोइ दवा करणी नहीं करणी तो लौंग सूंठ किसमिस वगेरे ॥ छमककर कुलि ये में देणा चोभी देवीके नामकी आस्ता रखकर एसे खोटे और झूठे वहमसें दवा नहीं करणेसें हजारों बच्चे दुखपाकरके सडके मरते हैं अज्ञान मावापोंकी मूर्खता और वहेम दूर होय तो विगर इलाज इस वखत जितने बच्चे मरते हैं, उस-मेंसें सोमेंसें ९० बालक निश्चै बच सकते हैं पाखंडी उपदेशकोनें अपणे पेटभरणेवास्ते बिचले जमानेमें लोकोमें अविद्या देख नाना प्रकारके वृथा देवी देवतोंका ढोंग खडाकर दिया है जिसकूं अभीतक लोक सच्च मानते चले जाते हैं, औषधी तो प्रत्यक्ष फल दि-

खाती है जो देवी जन्यदोष ये रोग होता तो प्राचीन आयुर्वेद याने (आयुज्ञान) के उत्पादक श्रीऋषभ परमात्मा आदि अनेक पूर्वऋषि तथा आचार्य इस रोगकेवास्ते इलाज क्यों लिखते इस अविद्यांध प्रसारमें स्वार्थ तत्परोंने शीतलाष्टकभी थोडा अरसा भय बना डाला है, हां अधिष्टायक तो सर्वरोग तथा औषधी आदि पदार्थोंके होंयगे एस सर्वज्ञ वाक्य तथा अनुमान किसी २ जगे भया है, इस रोगकूं लोकीकमें माता कहते हैं हमारा अनुमांन है के पून्नगर्भमें पडणे वाद और तों का ऋतूधर्मवंध हो जाता है वे रक्त परिपक्व होय स्तनोंमें दूध वणता है, वो प्रथम जन्मसेही वच्चा पीता है वोही गरमी कारण पाकर फूटकर निकलती है, क्योंके ऋतुधर्म आणेसें औरतकी गरमी वहोंतछंट जाती है, उस ऋतूधर्मके समय कोइ मैथुन करे तो गरमी सुजाक शिरमें दर्द नामर्द आदि रोग प्राणीके होता है इसवास्ते वो गरमी माताके दूधकी होणेसे स्यातूलोक इसे माता कहते होंगे तव तो लोकोंके वाक्य सचे हैं परमार्थ नहीं जाणते हैं, (इलाज).

(२) नींवकी अंतर छाल पित्तपापडा कालीपाठ पटोल चंदन रगत चंनण खसवाला कुटकी आंवला अरडूसा लालधमासा ये सव थोडे २ लेकर पीस उसमें मिश्री मिलाकर उसका पाणी करके रखणा उसमेंसें थोडा २ पिलाणा इससें दाह वुखार वगेरे शांत होता है, और मसूरिका मिटजाती है, (२) मजीठ वडकी छाल पीपरकी छाल सरेसकी छाल और गुलरकी छाल पीसकर दाणोंपर लेपकरणा (३) दाणा वाहर नीकलकर पीछा अंदर घुसते मालम देतो कचनारके दरखतकी छालका क्राथकर उसमें सोनामुखीका थोडा चूर्ण मिलाकर पिलाणेसें दाणा पीछा वाहर आता है, (४) मूंमें तथा गलेमें व्रण जखम होयतो आंवला तथा मोलेठीका क्राथकर सहतडालकर कुरला कराणा (५) थेगी नामके दाणे होते हैं, वो तथा मोलेठीकूं पीस उसका पाणीकर आंखोंपर सींचणेसें आंखोंका वचाव होता है, (६) मोलेठी त्रिफला पीलूडी दारुहलदी कमल वाला लोद तथा मजीठ इनोंको पीस आंखोपर लेप करणेमे आवे या उसके पाणीकी वूंदें आंखमें डालणेमें आवे तो आखोंके व्रण मिटजाते हैं, और इजा नहीं होती गूंदीकी छालकूं पीस ऊपर जाडा लेप करणेमें आंखकू फायदा होता है, (७) दाणे फूट किचकिचाकर उसमेसें पीप तथा दुर्गंध निकलती है, तव पंचवल्कलका कपडछाण चूर्णकर उसपर दवाणा देशमारवाडमें कायफलका चूर्ण दवाते हैं, रसीकूं धोडालणेवास्ते भी पंचवल्कलका उकाला भया पाणी अच्छा है, (८) कारेलीके पत्तोंका क्राथकर उसमें हलदीका चूर्ण डाल पिलाणेसे चमडीमें घुसे भये अंदर व्रण वुखार दाहकी शांति होती है, (९) दस्त होते होय तो वंधकी दवा देणी दस्तवंध होयतो हलका जुलाव देणा नाताकती मालम देतो खुराक उपरांत द्राक्षा सव पोर्ट वाईन योग्य मात्रा प्रमाण डाकटर देते हैं, (१०) फफोले फूटे पीछे खरूंट आये

ठसका होणे लगे तब ये दवा देणी मात्रा दो बूंद थोडे जलसंग (५) एन्टीमनीटार्ट श्वास नलीके सोजेमें मात्रा १ रत्ती दर तीन घंटेसें (६) सल्फर, बच्चाओरीसें अच्छा भयां पीछै थोडा दिन ये दवा देणी अच्छी है, (मात्रा) अर्कका दो बूंद थोडे पाणीके संग दिनमें तीनवेर (विशेष सूचना) तथा खुराक शीतलामे लिखे मुजब.

(अछ पडा)

(चीकन पॉक्स)

ये रोग छोटे बच्चोंको होता है, ये बहोत हलका मरज है, पहले दिन जरा २ बुखार आकर दुसरे दिन छाती पीठ तथा खंधेपर छोटे २ लाल २ दाणे होते हैं, दिनमें वो दाणे बडे होकर उसमें पाणी भरके मोतीके दाणे जेसा होता है, लगबग शीतलाके दाणे जितना होता है, लेकिन् बहोत थोडे और दूर २ होते हैं, बुखार थोडा होता है, दाणोंमें पीप नहीं होता इस रोगमें कुछ डर नहीं है, कितनेक बखत बच्चोंके खेलते २ निकलजाता हैं, इस रोगमें इलाजकी कुछ जरूरी नहीं है,

(रतवायु विसर्प)

(इरीसी पेलास)

(प्रकार) देशी वैद्यक शास्त्र मुजब जुदा २ तेसें मिश्रदोषके संबंधसें विसर्प याने रतवायू सात प्रकारका है, मुख्य दो प्रकारका है १ दोष जन्य विसर्प और २ आगंतुक विसर्प विरुद्ध आहारसें शरीरका दोष तथा खून विगडकर जो रतवायु होती है, वो दोषजन्य और जखम शस्त्र जहर अथवा जहरी जांनवरके, नख दांतसें भया जखम और जखमपर रतवायूके चेपका स्पर्श वगेरे कारणोंसे जो रतवायू होता है, वो आगंतुक विसर्प कहाता है.

(कारण) प्रकृति विरुद्ध आहार चेप खराब जहरी हवा जखम मधुप्रमेह वगेरे रोग जहरी जानवर या उनोंकाडंक इत्यादि रतवायुके बहोत कारण है, जैनियोके श्रावकाचार ग्रंथोंमें, ब्राह्मणोंके बनाये चरक ग्रंथमें एसा लिखा है के ये रोग कितनेक हरेशागके बहोत बिनामोसम बिनातपासे अथवा बहोत खाणेका माबरा रखणेसें ये रोग होता है, इन सब कारणोमेंसें कोईभी कारणसें बदनका रस तथा खूनमें जहरी जांनवर पैदा होते हैं और रतवायू फेलता है.

(लक्षण) रतवायु ये चमडीका वरम है, वो एक जगेसें दुसरी जगे फिरता है फेलता है, इसवास्ते वायू ऐसा नाम धरा है, इस रोगमें बुखार आता है और [illegible] लाल होकर सूज जाती है, हाथ लगाणेसें रतवायुकी जगे गरम मालम देती है, और अंदर चिणक मारती है, प्रथम ठंडसें कांपणी बुखारका जोर मंदाग्नि प्यास और बुखार ये उसके पहले लक्षण है, पैमाब लाल उतरता है, नाडी जल्दचलती है, उसके

संग किसीजगे उलटी और भ्रम होता है, उससे रोगी बकता है, तोफानभी करता है, एसें चिन्ह भये पीछै दुसरे या तीसरे दिन शरीरके किसीभी भागमें रतवायू दिखाई देती है, दाह और लाल सूजन होती है, आगंतुक रतवायू कुलथीके दाणे जेसा होकर फफोलोंसें सरू होता है, उसके संग कालाखून सोजा बुखार और दाह वहोत होता है, ऊपरकी चमडीमें भया होय तो ऊपरके इलाजसें थोडा दिनोंमें शांत होता है, लेकिन् उसका विष जो गहरा चला गया होय तो विसर्प वहोत भयंकर होता है, वोपकता है, फफोला होकर फूटता है, सोजा वहोत होता है, दरद वेहद होता है. रोगीकी शक्ति कम होती है, एक जगे अथवा अनेक जगे मूं करके फूटता है, उसमेंसें मांसके टुकडे निकला करते हैं, अंदरका मांस सडते जाता है, आखर हाडोंतक पहुचता है, तब रोगी बचणा मुस्कल है, गलेमें भये विसर्पमें जादा डर है.

(इलाज) (१) वदनमें दाह नहीं करे एसा जुलाब उलटी लेप और सींचणेके इलाज और जरूर पडे तो जोकलगाणी.

(२) दशांगलेप (नं० ३१२) ठंढे पाणीमें या मखणमें या गुलाब जलमें पीस उसका गीलालेप वेर २ करणा (३) जात्यादि घृत (नं० ३०२) रतवायू फूटे पीछे घाव भरणेकू ये मलम अच्छा है (४) रतवेलिया काला हंसराज हैमकंद कबावचीणी सोनागेरू वाला चंदन वगेरे ठंढे पदार्थोंका लेप करणेसें रतवायूकी दाह तथा शोजा शांत पडता है, (५) पंचवल्कल (नं० १५७) अथवा चंदन अथवा पदमकाष्ट वाला मोलेठी इनोंकों पीस याउकालकर ठढाकर धारदेणेसें फूटे वादभी इस जलसें धोणा (६) चिरायता अरडूसा कुटकी पटोल त्रिफला रगतचंदण नींबकी अंतर छाल क्वाथ करके पीणा बुखार उलटी दाह सोजा खुजली विस्फोटक वगेरे सब मिटजाता है.

(अंग्रेजी इलाज) (१) रतवायु फैलणे नहीं पावे इसवास्ते रतवायू सोजेके आसपास नाइट्रेट ओफ सिल्वरकी लकीर खेंच देणी (२) वेलाडोना और ग्लिसराइन मिलाकर चुपडणा (३) ओकुसाईड ओफ झिंक भुरकाणा (४) टिंकचर ओफ स्टील (२०) (३०) बूंद और पाणी १ औंस दोनोंकों मिलाकर दर तीन २ घंटेसे देते रहणा (५) अफीमके डोडेडाल उकालकर गरम पाणीका शेक करणा, सोजेपर चणख अथवा अंगार जेसी जलण होय तो जोकलगाणी सोजा पककर पीपभये वाद नस्तर दिलाकर पीपका निकाशकर देणा (६) रोगी अशक्त मालम पडे तो कारबोनेट ओफ आमोनिया ५ ग्रेन लाडेनम ६ मिनिम सिंकोनाकी छालका उकाला १॥ औंस सब मिलाकर दिनमें तीन वरे देणा.

होमियो पैथिक इलाज.

१ बुखारकूं शांत करणे एकोनाइट (२) इस रोगवास्ते वेलाडोना अच्छा इलाज है,

ये रतवायूमें ललाई सोजा और दरद होय तब देणा (३) खराब भयंकर रतवायूमें र्‌हसटॉक्स नामकी दवा प्रबल मालम दीहे (४) रतवायूका जखम चकचके और सडे तब आर्सेनिक देणा अच्छा है, (५) सन्निपात और तंद्रामें स्ट्रेमोनियम देणा.

(विशेष सूचना) खुराक अच्छा देणा दूध तथा दूध डालकर पकाई भई कांजी चावलोंकी उत्तम पथ्य है, रोगी अशक्त मालम देतो द्राक्षा सब या पोर्टवाइन देतेंहैं रोगीके आसपास जाणे देणा नहीं रतवायूके इलाज करणेवाले वैद्य या डाकतकी मारफत इस रोगका चेप दुसरे दरदियोंके खास करके जखमवाले रोगियोंके बदनमें प्रवेश करता है, इसवास्ते रतवायूवालेके स्पर्शमें आणेवाले डाकटरोने बहोत सफाई रखणी चाहिये.

(गठिया बुखार) अग्निरोहिणी.

(ब्यबोनिक प्लेग).

ये विलक्षण तरेका मरज बहोत अरसा भया चल रहा है, अनादि है, तोभी ये रोग सुणते है, विक्रम संवत् सोलेसेमें अकब्बरके बखतमें भी, चलाथा जिसका फेर अब गुंबइसें चला है, वर्ष दस होगया अब तो प्राये दक्षण पूरब उत्तरादि देशोंमें फेलगया है, लोकोंकों ये रोग नया मालम देता है, रोगकी उत्पत्तीका कारण तथा इसका इलाज सोधनेकूं सरकार तथा प्रजा बहोत प्रयास कररही है, लेकिन् दिलकूं पुरीत सली होय एसा निर्णय अभी भया नहीं है, इस बाबतमें न्यारे २ अभिप्राय है, हमारे समझसेंतो विस्फोटक रोगकी आठ जातिमेंसे है, एक देशी वैद्य अग्निरोहणी जो क्षुद्र रोगमेंका एक भेद है, सो बतलाते हैं, असाध्य विस्फोटक और अग्निरोहिणी एक सद्दशही है, ये तो मारही डालती है; लेकिन कोइ २ बच जाता है, इस अपेक्षा विस्फोटक एकदोषी द्विदोषी सिद्ध होता है, अग्निरोहिणीवाला कभी बचता नहीं (विदारीका) के भी लक्षण क्षुद्ररोगमेंका मिलता है, हरतरे हेजेकीतरे चेपी और भयंकर है, तोभी बखतपर इलाज हो जाय तो हेजेकीतरे कष्टसाध्यतक रोगी बच सकता है, इस बुखारका मुख्य चिन्ह यह हेकी रोगीके गलेमें कांखमे या जांघकी जडमें बदके जेसी गांठ निकलती है, और जादा करके सन्निपातके चिन्होवाला बुखार आता है, एसे रोगोंका इलाज अनुभवी चतुर वैद्य शास्त्राधार बुद्धिकी तर्कसें इलाज और देखरेख और सल्ला करता रहे वो निर्भय रस्ता समझणा इस ग्रंथमें जो इलाज हम लिखते हैं, सो पतवाके देखणा यथार्थ है, (१) नीमका पंचागका क्वाथ सूंठ मासाभर भुरकाकर (२) अभयादि क्वाथ (नं० १९४) उसके संग चंद्रप्रभा (नं० ३४५) नामकी गोली मिलाकर दिनमें तीन बखत पिलाणा बेमार अशक्त और लिवरीज गया होय तो थोडा २ द्राक्षासव देतेंहैं इकेला अभयादि क्वाथभी अच्छा है, (२) त्रिसर्पमें बताये भये इलाजभी इस बेमारीपर चलना है,

(३) दशांगलेप (नं० ३१२) अथवा दोषघ्नलेप (नं० ३११) के संग नींमकेपत्ते छाछमें पीस उसका जाडाथर गांठ अथवा सोजेपर बांधणा (४) त्रिदोषज्वरका तथा त्रिदोष ग्रंथि विस्फोटकका इलाज करणा उसके संग उलटी दस्त वगेरे जोजो उपद्रव होय उसके दवाणेका प्रयत्न करणा (५) वहोत सफाई रखणी डिसइन्फेक्टंट्स (नं० ५६९) का उपयोग करणा रोगीकूं अलग रखणा इसके बिछोणेके आसपास खसवोईदार सुगंध अगरबत्ती धूप उखेवणा उसके कपडोंकोंभी खसवोदार रखणा रोगीके श्वास तथा मलमूत्रसे जेसें वने तेसें दूर रहणा उसके सोणेके कमरेमें अलग जरूरीके अदमीटाल जादा अदमी जाणा नहीं उस कमरेमें हवा तथा उजाला रहे एसा खुलासा रखणा और विशेष खुलासावास्ते छपरेके कवेलु नलियेभी निकाल देणा लेकिन वरसात पडे तो नहीं निकालणा रोगी अच्छाभये पीछे अगर मरगये पीछे उसका विछोना वगेरे सब चीजों जला देणी कमरेकूं कितनेकदिन खुल्ला रखणा और जहांतक उसकी हवा साफ नहीं होय उहांतक कोइभी उस कमरेमें जाणा नहीं आखर कमरेकूं डिसइनफेक्ट करके तथा कलीचूनेसें पोताकर उपयोगमें लेणा.

(विसूचिका हैजा कैदस्त कोलेरा)

(कॉलेरा)

(विवेचन) ऊपर लिखा जो फूटकर निकलणेवाले बुखार तथा हैजा वगेरे फाडकर निकलणेवाले मरजोंके संबंधमें यूरोपी विद्वान अभीतककोई संतोषकारक निर्णय नही करसके हैं, तो फेर इलाज का तो कहणा ही क्या फाडकर निकलते मरजोंका मूलकारण जहरी हवा है, एसा अनुमान होता है, लेकिन् वो जहरी हवा कैसी हालतमे कैसे अदम्योके वदनमें असर करती है, उसका कुछ निर्णय नही भया है, अनुभवसें विद्वानोंने समझाहे के जिस करके शरीरका जीवन अथवा जीवनशक्ति घटती है, वो कारण एसे रोगोंकों रस्ता देता है, (जीवन शक्तिकूं कम करणेवाला कारण इस मुजब है,) नसेवाले मादक पदार्थोंके विसनसें मगजके तंतु नाताकत हो जाणे लंबी और बहोत महनतवाली मुसाफरी उसके सबबसें वदन नाताकत हो जाणेसें वहोत अदम्योंके गरदीमे सोणेसें गीलासपणा गंदीवाडा अपूर्ण आहार दुकालमें भूख मरणेसें ये सब कारण फाडकर निकलणेवाले रोगोंकूं बूलाता है, हरतरेकी महामारीमें इतनी बातें सिद्ध हो चूकी है, के जो प्रदेश आरोग्यताकूं नुकसान करणेवाले हैं, उसमेंभी मुख्य करके जिसजगे खानपांनके पदार्थ वहोत खराब मिलते हैं, अथवा खुराककी तंगीसें जो अदमी नाताकत और निरमायल भये होते हैं, एसी जगे एसे अदम्योंको एसा मरज संहार करता है.

देशी संस्कृत शास्त्रमें इस रोगका नाम विसूचिका है वदनमें सुई चुभाणे कीसी वेदना होती है, इसवास्ते विसूचिका नाम धरा है, जिस २ रोगोंसें वहोत वहोत अदमी मरते हैं,

ये रतवायूमें ललाई सोजा और दरद होय तब देणा (३) खराब भयंकर रतवायूमें न्हसटॉक्स नामकी दवा प्रबल मालम दीहे (४) रतवायूका जखम चकचके और सडे तब आर्सेनिक देणा अच्छा है, (५) सन्निपात और तंद्रामें स्ट्रेमोनियम देणा.

(विशेष सूचना) खुराक अच्छा देणा दूध तथा दूध डालकर पकाई भई कांजी चावलोंकी उत्तम पथ्य है, रोगी अशक्त मालम देतो द्राक्षा सब या पोर्टवाइन देतेंहैं रोगीके आसपास जाणे देणा नहीं रतवायूके इलाज करणेवाले वैद्य या डाकतकी मारफत इस रोगका चेप दुसरे दरदियोंके खास करके जखमवाले रोगियोंके बदनमें प्रवेश करता है, इसवास्ते रतवायूवालेके स्पर्शमें आणेवाले डाकटरोने वहोत सफाई रखणी चाहिये.

(गठिया बुखार) अग्निरोहिणी.

(ब्यबोनिक प्लेग).

ये विलक्षण तरेका मरज वहोत अरसा भया चल रहा है, अनादि है, तोभी ये रोग सुणते है, विक्रम संवत् सोलेसेमें अकब्बरके वखतमें भी, चलाथा जिसका फेर अब मुंबइसें चला है, वर्ष दस होगया अब तो प्राये दक्षण पूरब उत्तरादि देशोंमें फेलगया है, लोकोंकों ये रोग नया मालम देता है, रोगकी उत्पत्तीका कारण तथा इसका इलाज सोधनेकूं सरकार तथा प्रजा वहोत प्रयास कररही है, लेकिन् दिलकूं पुरीत सली होय एसा निर्णय अभी भया नहीं है, इस बाबतमें न्यारे २ अभिप्राय है, हमारे समझसेंतो विस्फोटक रोगकी आठ जातिमेंसे है, एक देशी वैद्य अग्निरोहणी जो क्षुद्र रोगमेंका एक भेद है, सो बतलाते हैं, असाध्य विस्फोटक और अग्निरोहिणी एक सदृशही है, ये तो मारही डालती है; लेकिन कोइ २ बच जाता है, इस अपेक्षा विस्फोटक एकदोषी द्विदोषी सिद्ध होता है, अग्निरोहिणीवाला कभी बचता नहीं (विदारीका) के भी लक्षण क्षुद्ररोगमेंका मिलता है, हरतरे हैजेकीतरे चेपी और भयंकर है, तोभी वखतपर इलाज हो जाय तो हैजेकीतरे कष्टसाध्यतक रोगी बच सकता है, इस बुखारका मुख्य चिन्ह यह हैकी रोगीके गलेमें काखमे या जांघकी जडमें बदके जेसी गांठ निकलती है, और जादा करके सन्निपातके चिन्होवाला बुखार आता है, एसे रोगोंका इलाज अनुभवी चतुर वैद्य शास्त्राधार बुद्धिकी तर्कसें इलाज और देखरेख और सल्ला करता रहै वो निर्भय रस्ता समझना इस ग्रंथमें जो इलाज हम लिखते हैं, सो पतवाके देखणा यथार्थ है, (१) नींमका पंचागका क्वाथ सूंठ मासामर भुरकाकर (२) अभयादि क्वाथ (नं० १९४) उसके संग चंद्रप्रभा (नं० ३४५) नामकी गोली मिलाकर दिनमें तीन वखत पिलाना बेमार बचक और लिदरीज गया होय तो थोडा २ द्राक्षासव देतेंहैं इकेला अभयादि क्वाथभी अच्छा है. (२) विसर्पमें बताये भये इलाजभी इस बेमारीपर चलता है,

गोलियांकर तीन २ घंटेसे एकेक गोली देणी अथवा कत्था तनीचाल हिरादखण २ वाल और अफीमअध रत्ती इनोंकूं मिलाकर इसका ४ भाग कर दर भाग तीन कलाकसे पाणीमें देणा अफीम तथा अफीमवाली दवाओं देणेसें पेट नहीं आफर जाय, इसकी संभाल रखणी कपूरका अर्क अथवा कपूर पेपरमीन्ट टरपेन्टाईन तिल्लीका तेल लाल मिरच लसण कांदे अनार्योंकूं डाकटर ब्राडी देते हैं, पेइनकिलर ये सब चीजों अजीर्ण तथा हेजेमें फायदा करणेवाली है, इसमेंकी एकाद जो हाजर होय उसका युक्तिसें उपयोग करणा (२) हिंगाष्टक चूर्ण (नं० १९०) हरडेका चूर्ण तथा साजीखार ये तीन चीज समभाग मिलाकर देणा अजीर्ण तथा हैजेमें बहोत अकसीर दवा है, क्रम २ से दस्त उलटीकूं बंध करतीहै, अजीर्णकूं पचाता है, पाचनशक्ति चढाता है, इसवास्ते दस्त उलटी बंध होय जहांतक इसकी फकी एकेक दोदो घंटेसें देते जाणा जो उलटीमें निकलजाय तो तुरतही फेर दे देणी मात्रा चार आनेभर अनुपान पाणी (२) गंधकवटी (नं० ६६ (गंधकके पेटेमें लिखे मुजब तइयार करणा (४) क्रव्यादरश नामकी देशी दवा अजीर्ण तथा हैजेपर बहोत फायदा करती है, दस्तके वेगको एकदम थंभ देती है, किसी प्रसिद्ध वैद्यके पास मिले तो लेणी मात्रा १ से ३ वाल अनुपान दही अथवा छाछमें शेकाभया जीरा तलीभई हींग तथा सींधा निमक मिलाकर पिलाणा (५) संजीवनी (नं०२४४) ये गोलियां हैजेकेवास्ते बहोत अच्छा इलाज है, हैजेकी भयंकर हालतमें नाडी तूटजाती उसकूं ये गोली देणेसें धीरे २ पीछे नाडी हाथ लगती है, रोगी बच जाता है.

(अंग्रेजी इलाज) दस्त बंध करणेकूं (१) एरोमेटिक पाउडर ओफ चोक (नं० ४०१) देणा मात्रा १० ग्रेणका एक डोझ दिये पीछे दस्तबंध नहीं होय तो दर दोदो घंटेसें दश २ ग्रेण दवा पाणीके संग देणा सरू रखणा (२) अथवा नीचे लिखी ७ वस्तुओंका चूर्णकर १० १५ ग्रेणतक दर तीनघंटेसे दस्तबंध होय जहांतक देणा.

चोक ४४ ग्रेण. तज १६ ग्रेण. जायफल १२ ग्रेण. केशर १२ ग्रेण. लोंग ६ ग्रेण इलायची ६ ग्रेण.

मिश्री २ ड्राम महीन चूर्ण करके उसमेंसें दर २-३ घंटेसे १० से १५ ग्रेण मात्रातक पाणीके संग देणा इससें दस्तबंध नहीं होयतो उसके एक खुराकमें लाडेनमनां १० बूंद और अफीम० । ग्रेण मिलाकर देणा.

(३) क्लोरोडाईन बूंद २० एक ग्लास पाणीमें मिलाकर देणा और फेर दो घंटे पीछे दुसरी वेर इसीतरे देणा (४) शुगरलेड ८ ग्रेण तथा अफीम १ ग्रेन इसकी ४ गोली गूदके पाणीमें बणाकर दस्तके जोर मुजब दर ३। ४। घंटेसें एकेक गोली देणी नाताकती चढजायया अंग ठंडा पडे चहरा लिवरीज जायतो पीछे दस्तबंध करणेकूं अफीम या लाडेनम जेसी दवाओं देणी नहीं लेकिन नीचे मुजब शरीरमें गरमीलाणेवाला उपाय

उसकूं प्राचीन लोकोंनें महामारी एसा नाम धरा है, अंग्रेजीमें कोलेरा यहभी एक महामारी है, देशी शास्त्रकारोंने इसकूं जठराग्निके विकारोंमें एक तरेके अजीर्णके रोगोंमें गिणा है, निश्चयमें देखणेसें यही वात सच्ची है, सर्वज्ञके वचनसें क्योंके इसके सव लक्षण और इलाज अजीर्णके संग मिलता भया चलता है, लेकिन् सामान्य कारणोंसे जो अजीर्ण होता है, उससें ये अजीर्ण विशेप और विलक्षण कारणोसे होता है, ये अजीर्णका रोग साधारण अजीर्णसें नहीं होता लेकिन जहरी चेपी हवासें ये रोग एका एक फाडकर नीकलता है, और इसीवास्ते इस रोगकूं फाडकर निकलणेवाले रोगोंकी पंक्तिमें दाखल करा है.

(कारण) इस रोगका कारण वाहरकी कोइ जहरी वस्तु है, ये जहरी वस्तु हवाके संग तेसें पाणीकी मारफत वदनमें घुसकर अजीर्णकूं पैदा करती है, और दुसरे फाडकर निकलणेवाले रोगोंकीतरे जिस अदमीका वदन इस जहरी और चेपी रोगके तत्वोंकों ग्रहण करणे लायक भया होता है, उसकूं विशेपकर ये रोग लगता है, ये रोग जव चलता है, उस वखत जिसके जठरमें अजीर्णका विकार होता है, उसपर इस रोगका हमला होणा जादा संभव है.

(लक्षण) दस्त तथा कै ये इसरोगका खास लक्षण है, दस्त पतला पाणी जेसा तथा चावलोंके धोवण जेसा सुपेद होता है, दस्त उलटीके संग वदनमें वांइटे आतांमें आंकसी प्यास पेटमे दाह पेसाव थोडा ये विशेप लक्षण है, रोगका जोर जादा होता है, तव आखरकूं पेसाव वंध होता है, वदन ठंढा पडता है, वदनका रंग वदलकर झांखा पडता है, आंखोंमें खड़ा पडता है, नाडी क्षीण पडजाती है, अगर जो इलाज नहीं लगे तो रोगी मरजाता है, जव रोगी सुधारेपर आता है, तव पेसाव खुलाश आता है, प्यास और दाह कम होजाती है, उलटी दस्त वंध होजाता है, दस्तका रंग वदलता है, नाडीमें तेज आता है, और अवाज साफ होती है.

(इलाज) कोईभी अदमीकूं दस्त उलटी होणे लगे वो चाहे अजीर्ण होय चाहे हेजा लेकिन् उसकूं वंध करणेका इलाज सरू करणा उसके इलाज इसतरे करणा (मा इम मुजव) अफीम एक मासा लोंग १ मासा जायफल १ मासा पुडिया ५ करणी वचेकेवास्ते थोडी मात्रा देणी तज इलायची सूंठ इनोंकों पीस करके फाकणेकूं देणा मूंठ मिरच पीपर जीरा शाहजीरा तली हींग सीधानिमक लाल मिरच लसण कांदेका रस वगेरे चीजोंमेंमें जो मिले उसकूं कपड छाणकर पाणीमें देणा कांदेका रस पिलाणा गोटीनेकूं उकाल उसमें कांदेका रस तथा कोडियालोवान अथवा इलायची मिलाके पिलाणा दस्त उलटी सरू होणेके पहली तुरतमें कुछ खाया भया होय तो उसकूं गरम जल पिलाकर उलटी करा देणी कोइ दवा हाजर नहीं होय तो १ रत्ती अफीमकी ४

ा (५) सालव्होलेटाइल वूंद ४० एक प्याले पाणीमें मिलाकर देणा और पीछै दर
घंटेसें अथवा नाडी वहोत धीमे चलती होय तो दरघंटे देते रहणा (६) कस्तूरी
ण तथा कपूर ९ ग्रेण इन दोनोंकों १॥ चमचा ब्रांडी डाकतर मिलाकर
के तीन हिस्सेकर हरेक भागमें एक चमचा पाणी मिलाकर घंटे घंटेमे देते हैं,
वा इन दोनों दवाकी ३ गोलियाकर घंटे २ सें तीन वेर देणी ब्रांडी तथा आसवके
ीकूं आदेका अथवा कांदेका रस या सूंठके जलमें देणा.

(७) कस्तूरीका अर्क ३० बूंद
सालव्होलेटाइल २० बूंद
पाणी २ तोला
मिरच लालका अर्क २० बूंद
आदेका रस १ तोला
टरपेन्टाईन तेल १० बूंद.

(८) नं० ५२४) ५२५) ६२०) तथा ६२२ के मिक्क्षर फायदेवंद है.

(होमियोपथिक इलाज) (१) केम्फर (कपूर) वहोत अच्छा इलाज है, हैजेकी
रु आतमें वहोत अच्छा असर करती है, मात्रा ५ बूंद अनुपान मिश्री रोगके जोर
जव दससे तीस मिनटके फासलेसे देणा पांच छ वखत देणेसें दस्त उलटी वंध नहीं
ाय तो ये दवा वंधकर दुसरा इलाज करणा (२) आर्सेनिक पेटमें वहोत दाह प्यास
चेनी चीकणा ठंढा पसीना नाडी वहोत धीमी जीभ सूकी काली और फटी इत्यादिक
स्त उलटी समेत लक्षण होय तव ये दवा देणी मात्रा २ वूंद पाणीके संग दरएक या
ाधी घंटेसें (३) कारवो व्हेज रोगी जव ठंढा गार होकर मरणेकी दशामें पडा होय
तव ये दवा देणी इसके सिवायकोलोसिन्थ व्हिरेट्रम आल्व कुप्रम वगैरे दवायें भी
कोलेरामें दिये जाती है.

(हैजेकी उलटी) हैजेमें के वहोत होती होयतो सोडावोटर घंटे २ सें देणा नाडी
तेज होय तो उसमें लाडेनमना १० वूंद मिलाणा अगर जो नाडी विलकुल मंद और
क्षीण मालम देतो घंटे २ से एक वाइन ग्लास सेम्पेन नामका ब्रांडी दिलाते हैं, पेटपर
राईका लेप करते हैं, अथवा लाडेनम और क्लोरोफोर्म पेटपर लगाणा लाडेनमना ६०
वूंद पाव पतली कांजीमें मिलाकर उस कांजीकी गुदामें पिचकारी मारणा हिचकी वहोत
होय तो दो कडवी विदामके मगजकूं पीस चमचे पाणीमें पिलाकर वो पिला देणा
अथवा दुसरी पीणेकी दवा संग वो पाणी मिलाकर पिलाणा (हैजेमें प्यास) सोडावोटर
तथा वरफ, चाः प्यासका इलाज करणा दस्त उलटीसे वदनमेसें पाणीका प्रमाण
वहोत कम होते जाता है, वो पूरा करणेवास्ते थोडा २ पाणी पिलाणा चाहिये पाणी
वंध करणेसें नुकशान है, (हैजेमें पेसाव वंध होणा) पेसाव खोलणेकूं वदनमें गरमी
आवे तब गरम इलाज वंधकर देणा मूत्राशयपर राईका लेप करणा केसूलेके फूल वाफ
कर पेडूपर बांधणा रोगीकूं गरम जलमें कमर बूड वैठाणा पाणी तथा सोरा खार पिलाणा

हैजेकी दवाविधि.

इलायची शिलाजीत पाणीके संग पिलाणा सोडा तथा टार्टरिड एसिड पिलाणा (नं० ५३०) मिकश्चर पिलाणा (हैजेमें पेट आफरणा) दस्तवंध होकर पेट आफर जाय तो दस्त आणेका इलाज करणा हरडे साजीखार तथा हिंगाष्टकवाली फकी देणी ब्लुपील २ ग्रेण और कपूर १ ग्रेण इन दोनोंकों मिलाकर १ गोली वणाकर देणा २ घंटेमें दस्त नहीं आवे तो फेर एसी ही गोली देणी.

(हैजेमें वदन ठंढा पडणा) हैजेमें वदन ठंढा पडे तो गरम किये कवेलू याने खपरेल अथवा ईंट अथवा निमककी तथा वेलूकी पोटली तथा गरम पाणी भरी वोतल इसके अंदर किसीकाभी सेक करणा धावली वगेरे गरम कपडेसें वदन ढाककर रखणा शेक करते वदनकूं उघाडा रखणा नहीं लेकिन् ओढे भये कपडेपर शेक करणा वदन वहोत ठंढा पडे तो पगोंकी पीडीपर राईका पलाष्टर मारणा वदनपर कांदेका रस मसलणा सूंठ तथा अजवाणका खरड करणा वाईंटे आते हैं, जिसपरभी येही इलाज मसलणेमें फायदेवंद है, (खुराक) इस रोगमें कुछभी खाणेकूं देणा अच्छा नहीं है, जहां तक उसके भयानक चिन्ह शांत नहीं होय, वाद मूंगकी दालका पाणी रोगके सर्व लक्षण मिटे वादभी चावलोंकी कांजी याने दलिया मूंगका ओसामणसिवाय भारी और करडा खुराक देणा नहीं जो खाणेकी संभाल नहीं रखणेमें आयगी तो रोग उथलामारकर मौतकी निशाणीपर डालता है, अच्छीतरे आराम भये वाद रोटी वगेरे करडी खुराक देणा.

(विशेष सूचना) हैजेके रोगमें इलाज करणेकी ढील करणी नहीं शरु होतेही जैसा इलाज लगता है, तैसा कुछ एक देर भये वाद लग नहीं सकता दुसरे आसपासकी हवाकूं शुद्ध करणेकाभी उपाय करणा रोगीका हवासें वचाव करणा दिलासा और हिम्मत देणी इलाज जो डाकतर या वैद्य करे वोभी रोगीकू दिलासा देणा तू जलदी आराम हो जायगा घभरा मत इसवातसे उसकी हिम्मत वणी रहती है, क्योंके इसरोगके होतेही धसका पडजाता है के मरजाउगा इसवास्ते दिलासाभी दवा है.

(हैजेकू रोकणा) हैजेकी वेमारी चलती होय उसवखत जेसें घर कपडे वगेरे वाहरकी चीजों साफ रखणी तैसें पेटभी साफ अजीर्ण नहीं होय एसी तजवीज रखणी जराभी अजीर्ण मालम देतो तुरत उसका इलाज करणा जब इस मरजकी हवा चलती होय उहांतक साजे निरोगी अदमीने नीचे लिखी दवामेंसें एक दवाका सेवन रखणा तो इस हमलेमेंसें वचणेका सरस इलाज है, (१) सजीवनी (नं० २४४) वाली गोलियां नित्य दो गोली फजर सांझ पाणीके संग लेणा (२) सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद कार्बोलिक एसिड २ बूंद पाणी २ औंस मिलाकर एकेक औंस फजर सांझ पीणा. (३) होमियोपैथिक केम्फर पिल्स अथवा रुवीनीका केम्फर १ बूंद फजर सांझ मि-

श्रीके संग लेणा (४) कपूर वगेरे सुगंधी पदार्थ धारण करणा तिलीका तेल वदनके लगाकर हमेसां स्नान फायदा करता है.

वातव्याधि.

(प्रकार) वातव्याधिका मुख्य दो प्रकार है. एकतरेकी वातव्याधिमें वदनकी नाडियोंमें वेहद जोर चपलता आकर खैचाताण होता है, जेसें हिचकी हिस्टीरीया वा ईंटे वगेरे दुसरी तरेकी वातव्याधिमें सांधोंकी गति बंध होती है, और सांधे झिल जाते हैं, संधिवात पक्षाघात (लकवा) गृद्धसी (नीचेका तंग रह जाणा) इस वजे के जुदे २ अवयव झिलणेसें देशी शास्त्रमें उसके वहोत भेद आदि कारण नाम जैन शास्त्रमें लिखे हैं, एसें ८० या ८४ भेद मुख्य लिखे हैं, उसके नाम तथा संक्षेपसें पहिचाण इस ग्रंथके पृष्ठ दोयसै सताईस प्रकाश ४ में लिखा है, वायुके ८० प्रकारोंमें वायुवात, वादी एसा नाम है, अर्थात् इन सब रोगोंमें वादीही मुख्य है, इनसबोंका जुदा २ इलाज तेसें सबोंका सामान्य इलाज लिखा है, अंग्रेजी ग्रंथोंमें इन रोगोंका क्रम और ही है, जैसें वायुके कितनेक रोगोंकूं वदनके सामान्य रोगोंमें और कितने एकोंकूं मज्जा तंतुओंके रोगोंमें गिणा है, इस ग्रंथमें रोगोंका क्रम शरीरके अवयव प्रमाणमें लिखा गया है, इसवास्ते वायूके जो जो रोग है, सो शरीरके सामान्य स्थितीके संग संबंध रखता है, उसका इस जगे वर्णन करते हैं, और दुसरे कितनेक वादीके रोग जो मगजके साथ संबंध रखते हैं, उसका विवरण आगे करेंगें.

कारण—सूकालूखा हलका थोडा और ठंढा एसा अन्न खाणेसें वहोत स्त्री सेवन करणेसें वहोत ओजागरा करणेसें विरुद्ध दवा खाणेसें वहोत मिहनत कूदणा जलमें तिरणा रस्ते चलणा वगेरे वहोत खेचल करणेसें खून मलमूत्र कफ पित्त वगेरे कोई भी धातू वदनमेंसें जादा निकलकर वदन खाली पडणेसें वहोत फिकर करणेसें मलमूत्रकी हाजत रोकणेसें जड पदार्थोंका वदनपर चोट लगणेसें उपवासादिक वहोत लंघनकर शरीरके रसकूं सुकाय देणेसें और रिदयके मर्म स्थानपर चोट लगणेसें इत्यादि वहोत कारणोंसें कोपा भया वायू वदनके गति तंतुओंकों तथा दुसरे अवयवोंकूं जडकर देता है, अथवा जादा चपलगति वणाता है, इस करके वदनके सर्व अंगमें अथवा कोईभी एकाध अंगमें वादी आजाती है, अंग्रेजी अभिप्राय मुजब खूनमें फेरफार होता है, अर्थात् एसिड (खटास) वधणेसें और क्षार घटणेसें खून जादा घट होता है, और सांधोंकों पकडता है.

लक्षण—पिछाडी ८० प्रकार वादीका विवरण पृष्ठ २२७ में देखो.

इलाज—वायूकूं जीतणा इलाजका मुख्य मतलब इतनाही है, वादी वदनमें और नसोंमें लूखापणा लाती है, इसवास्ते उनोंकूं चिकणा याने नरम करणेकी जरूर

है, चिकणी और गरम तेसें पसीना लाणेवाली सारक जो जो चीजें है, वो वादीके वेमारीमें अच्छी है, जुदे २ वादीके रोगोंके जेसें खास जुदे २ इलाज होते है, तेसें कोइ यक एसे भी इलाज हे के जो समस्त वादीके रोगोंमें सामान्यतरे उपयोगी हैं, सो लिखते हैं.

(१) वादीकूं जीतणेवाली दवाये (पृष्ठ) ३१३ पसीना लाणेवाली दवायें (पृष्ठ) ३१५सारक दवायें (पृष्ठ)३१५ मगजकूं पुष्ठी देणेवाली दवायें (पृष्ठ)३१७(२) गूगल— पुराणे वादीके रोगमें अर्थात् खेंचाताण वाइंटे हिचकी विगरकी वादीमें गूगल वहोत उत्तम इलाज है, अनेक तरेसें गूगल वणता है, जिसमें योगराज सिंहनाद वगेरे गूगल वादीकी वेमारीमें वहोत फायदेवंद है, योगराजका अनुपान घी अथवा घी और सहत (३) वच्छनाग—पुराणी वादीके रोगमें फायदावंद है. तीक्ष्ण और नयी वादीके रोगमें वच्छनागका उपयोग नुकशान करता है, वच्छनागका तेल पुराणी वादीमें मसलणेसे फायदावंद है, (४) कुचीला—वाइंटे और खेंचाताणवाले वादीके रोगमें अच्छा है, पुराणे वादीके रोगमें उलटा नुकशांन करता है.

(५) हींग—खेंचाताणवाली वादीमें हींग फायदेवंद है, रगोंके खेचताणकूं मिटाती है, (६) मालकांगणी—वादीका श्रेष्ठ इलाज है, वादीकूं मिटाणेवाली दवाइयां जेसेके अकलकरा मिरच लोंग गूगल अथवा योगराज वगेरे गूगलके संग देणेसें वहोत फायदावंद है, मालकांकणीका तेल मसलणेसें पेंटमें देणेसे फायदावंद है, (७) लसण—वादीके हरणेमें मुख्य है, वो वहोत तरेसें खाये जाता है, १ लसणकी कलियोंकूं पीस उसमें तिलका तेल मिलाकर सींधानिमक मिलाकर देते हैं, २ लसणका कल्क (चटणी) दूधके संग तेलके संग घीके संग भातके संग अथवा चिकणे गरम औरभी पदार्थ संग देते हैं, (२) सेंचल अजवाण सेकी हींग सींधानिमक सूंठ मिरच पीपर इनोंके चूर्णमें इससें पांचगुणा लसण और लसणके चोथा भाग जितना तेल इन सबोंको मिलाकर उसमेंसें फजरमें हमेश १ रुपेभर चाटणा उसपर एरंडकी जडका क्राथ पीणा. (८) उडद (माप) वादी हरता है, उडदकी दाल उडदके वडे वगेरे पदार्थ तेल घीमें चिकणे खाणा इसके सिवाय मापवलादि क्राथ, एरंडकी जड कौंचवीज अहिखर तालमखाणा रास्ना आसगध (मापतैल) उडद सींधानिमक कांसकी दशमूल हिंग वज शतावर सूंठ इस पदार्थोंमें तिलका तेल वणाणा और मसलणा (९) रास्ना अच्छा इलाज है, वजारमें जो रास्नाकी अंगली जेसी लकडियां मिलती है, वो रास्ना अच्छी नहीं है, रास्नाकी जूडीयां मुंवई भावनगर वगेरे वंदरोंमें वजारमें विकती हैं, स्यात् हकीम लोक इसकूं उसवा कहते हैं, एसी रास्ना फायदेवंद है, रास्नादि क्राथ वहोत तरेका होता है, उसमें महारास्नादि क्राथ (नं० २१४) वहोतही फायदेवंद है, ये

सूंठ धमासा हरडे अतीस नागरमोथा शतावर अरडूसेके पत्तोंका काढा पीणा (७) अजवाण पीपर सूंफ नागरमोथा मिरच सींधा ये सब एकेक भाग हरडे ६ भाग सूंठ १० भाग वधारा १० भाग भाडंगी ३६ भाग इन सबोंका चूर्ण गुडकी चासणीकर मिलाकर गोली वणाणी गरम पाणीसें लेणी (८) सूंठ हरडे लींडीपीपर निशोत संचल इनोंका चूर्ण थोडा दिन खाणा (९) शुद्ध गंधक हमेश चार आणीभर दूधके संग पीणा (१०) हरडे सूंठ देवदारू ये तीनों समभाग गूगल तीनोंसें दूणा इन चारोंको कूट एरंडीके तेलमें घोटकै वेर २ जितनी गोलियांकर एकेक लेणा (११) लसणपाक आगे लिखा है, वो तथा एरंडपाक, १६ तोला एरंडीके वीज अठगुणे दूधमें उकालणा आधा दूध जले पीछै उसमें ८ तोला घी ३२ तोला मिश्री और लसणपाकमें लिखीभई सब दवाइयां प्रत्येक चार २ आनाभर महीन पीस डालकर पाक तइयार करणा ये दोनों पाक पुराणे संधिवायूमें वहोत फायदेचंद है, (१२) गरमी तथा सुजाक (फिरंगसें) संधिवायू भई होय तो महारास्नादि क्वाथ अथवा महामंजिष्ठादि क्वाथ (नं० २१५ २२१) योगराज गूगल अथवा किशोर गूगल (नं० २५५ ५६) मिलाकर कितनेक दिन पीणा चोपचीणीका चूर्ण तथा चोपचीणीका पाक (नं० २८०) उपदंशके जीर्ण संधिवादीमें वहोत फायदा करता है—अंग्रेजी इलाज—तीक्ष्ण तथा पुराणी संधिवादीमें इस मुजब करणा—तीक्ष्णसंधिवादीमें (१३) साधारण संधिवादीमें रोगीकूं आराम देणा और दुखते सांधेपर ये लोसन धरणा--कारबोनेट ओफ सोडा अथवा कारबोनेट ओफ पोटाश ½ पाउन्ड उसकूं १ क्वार्ट गरम पाणीमें मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर सांधोंऊपर लपेटणा और उसपर तेलमें डुबाया भया रेसमी कपडा लपेटणा जो चलते हिलते वहोत दरद नहीं होता होय तो उसपर गरम वाफ हमेस देणा. वाफ देते वखत गरम पाणीमें कारबोनेट ओफ सोडा एकाध सेर डालकर वाफ देणा. (१४) जो दस्त खुलास नहीं आता होय तो उस वखत दस्तावर दवा नं० ४६१ ४६२ की मिलावट दवा देणी और नींद नहीं आवे तो डोवर्स पाउडरका १० से १५ ग्रेनका एक खुराक देणा रातकू (१५) तीक्ष्णसंधि वायूमें अव्वलसें आखरतकके इलाजोंमें रोगीकूं हलका खुराक देणा और उत्तेजक तथा मादक सराप वगेरे अत्यंतपणेकर त्याग देणा (१६) इसके सिवाय तीक्ष्ण संधिवायूमें नं० ५२८ ५८३ ५८५ ५८६ वाले अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ६९४ ६९५ ६९६ तथा ६९७ के हकीमी ऊसके उनोंका उपयोग करणा (१७) जो संधिवायूके चिन्ह रक्ताशय ऊपर मालम पडे तो दरदकी जगे ब्लिस्टर मारणा और नं० ४०८ वाला मिक्शचर तीन२ कलाकसे देणा सक खाणा और कलेजेका भागकोरसूजी भई मालम दे तो तब दवा बंधकर देणा (पुराणी संधिवायू-( ) वदनमें उपदंश वगेरे गरमीका कारण होय तो उसकूं दूर करणेका इलाज

करवाणा भी जी भई गीली सरदीकी जगे गीलीदिवाल पूरा कपडा नहीं पहरणा वगेरे संधिवायूकूं मदत देणेवाली अडचलोंकों दूर करणा और पूरा पोषण कारक अच्छा खुराक खिलाणा गरम कपडे फुलालीन वगेरेके पहराणा गरम दवा गरम खुराक रातकूं डोवर्स पाउडर और दरदकी जगे ग्रासन तेलका मालिस ये सव काम संधिवायूके वास्ते अच्छा है, (१९) नं० ५०५ तथा ५२८ का मिक्श्चर अनुक्रमसे अजमाणा और नं० ५९४ वाला लिनिमेन्ट उपयोगमे लेणा (२०) इसके सिवाय नीचेका मिक्श्चर जरूर पडे तो ऐकके पीछै एक अजमाके देखणा नं० ५८७ ५८८ ५८९ वगेरे होमियोपैथिक इलाज—एकोनाइट तथा ब्रायोनिया ये दोनों चीजों तीक्ष्ण सधिवायूके वास्ते सर्वोत्तम इलाज है, संधिवायूके तीक्ष्णरूपमें रिदयमें विकार युमोनिया (फेफसेका वरम) तथा फेफसेके पुडका वरम वगेरे भयंकर रोग वढ जाणेका भय रहता है, तीक्ष्णसंधि-वायूमें ये दो दवायें दो दो तीन २ घंटेके अंतरसे वारी फिरत देणा इससे वुखार तथा दरद नरम पडे इतनाही नहीं लेकिन इससे सधिवायूका दरदभी मिटता है, ब्रायोनिया लिनिमेन्ट करके तेल होता है, वो वाहर लगाणेके काममें लिये जाता है, ये दवा दोनोंसें फायदा नही होय तो हृसटोक्स अर्निका वेलाडोना पल्सेटिला वगेरे दवायोंका उपयोग करणा (पुराणे संधिवायूमें) नीचेकी दवा दी जाती है, ब्रायोनिया सांधोमें उष्णता और सोजन और चलते दरद होता है, तव ये दवा जादा उपयोगी हैं, होंडे न्ड्रॉन सांधोमे फटणे माफक दरद होय तथा गोडेमें सोजा तथा ललाई होय तो ये दवा अच्छी है, हृसटोक्स सांधे अकड जाय चलणेकी सरुआ-तमें वहोत दरद करे और कुछ यक चले पीछै दरद कम होय एसे दरदमें ये दवा फायदे वंद है, पलसेटिला धुंटणे गिरिये वगेरे सांधोमें वादी आई होय और रातकू दरद वढता होय, औरतोंके, ऋतुधर्मकामरज होय तव ये दवा उपयोगी है. सधिवादी-का उपचार वाहिरका (२१) संभालू (निर्गुंडीके) पत्तोंको वाफकर सांधोपर वांधणा (२२) दश मूलके उकालीमें तेल डालकर उसकूं फेर उकाल तइयार किया भया तेल मसलणा (२३) मालकांकणी कडवी जी भी अजवाण मेथी तथा तिल इनोंकों पीलके तेल निकालणा (२४) नारायणतेल ऊपर लिखा है, वो वहोत अच्छा इलाजहै (२५) वंवूलकी तथा सहजणेकी छाल पीस उसका लेप करणा (२६) सहत तथा कली चूनेकू हथेलीमें मथकर दरदकी जगे लगाकर ऊपर रूई चपकाणी (२७) गूगल तथा गूजरका लेप (२८) सोवा देवदारू कूठ और सींधानिमककू पीस आकके दूधमें मिलाकर लेप करणा (२९) लीनीमेन्ट और टिंकचर आयोडीन पांससे लगाणा (३०) नं० ४४१ के पेटेमें लिखे भये लिनिमेन्ट वापरणा (३१)

सूंठ धमासा हरडे अतीस नागरमोथा शतावर अरडूसेके पत्तोंका काढा पीणा (७) अजवाण पीपर सूंफ नागरमोथा मिरच सींधा ये सब एकेक भाग हरडे ६ भाग सूंठ १० भाग वधारा १० भाग भाडंगी २६ भाग इन सबोंका चूर्ण गुडकी चासणीकर मिलाकर गोली बणाणी गरम पाणीसें लेणी (८) सूंठ हरडे लींडीपीपर निशोत सेंचल इनोंका चूर्ण थोडा दिन खाणा (९) शुद्ध गंधक हमेश चार आणीभर दूधके संग पीणा (१०) हरडे सूंठ देवदारू ये तीनों समभाग गूगल तीनोंसें दूणा इन चारोंको कूट एरंडीके तेलमें घोटके बेर २ जितनी गोलियांकर एकेक लेणा (११) लसणपाक आगे लिखा है, वो तथा एरंडपाक, १६ तोला एरंडीके बीज अठगुणे दूधमें उकालणा आधा दूध जले पीछे उसमें ८ तोला घी ३२ तोला मिश्री और लसणपाकमें लिखीभई सब दवाइयां प्रत्येक चार २ आनाभर महीन पीस डालकर पाक तइयार करणा ये दोनों पाक पुराणे संधिवायूमें बहोत फायदेबंद है, (१२) गरमी तथा सुजाक (फिरंगसें) संधिवायू भई होय तो महारास्नादि क्वाथ अथवा महामंजिष्ठादि क्वाथ (नं० २१५ २२१) योगराज गूगल अथवा किशोर गूगल (नं० २५५ ५६) मिलाकर कितनेक दिन पीणा चोपचीणीका चूर्ण तथा चोपचीणीका पाक (नं० २८०) उपदंशके जीर्ण संधिवादीमें बहोत फायदा करता है—अंग्रेजी इलाज—तीक्ष्ण तथा पुराणी संधिवादीमें इस मुजब करणा—तीक्ष्णसंधिवादीमें (१३) साधारण संधिवादीमें रोगीकूं आराम देणा और दुखते सांधेपर ये लोसन धरणा- कारबोनेट ओफ सोडा अथवा कारबोनेट ओफ पोटाश $\frac{1}{2}$ पाउन्ड उसकूं १ कार्ट गरम पाणीमें मिलाकर उसमें कपडा [illegible] सांधोंऊपर लपेटणा और उसपर तेलमें डुबाया भया रेसमी कपडा लपेटणा चलते हिलते बहोत दरद नहीं होता होय तो उसपर गरम बाफ हमेस देणा. बाफ देते बखत गरम पाणीमें कारबोनेट ओफ सोडा एकाध सेर डालकर बाफ देणा. (१४) जो दस्त खुलाम नहीं आता होय तो उस वखत दस्तावर दवा नं० ४६१ ४६२ की मिलावट दवा देणी और नींद नहीं आवे तो डोवर्स पाउडरका १० से १५ ग्रेनका एक खुराक देणा रातकू (१५) तीक्ष्णसंधि वायूमें अव्वलसें आखरतकके इलाजोंमें रोगीकू हलका खुराक देणा और उत्तेजक तथा मादक सराप वगेरे अत्यंतपणेकर त्याग देणा (१६) इसके सिवाय तीक्ष्ण संधिवायूमें नं० ५२८ ५८३ ५८५ ५८६ वाले अंग्रेजी मिक्चर तथा नं० ६९४ ६९५ ६९६ तथा ६९७ के हकीमी ऊसके उनोंका उपयोग करणा (१७) जो संधिवायूके चिन्ह रक्ताशय ऊपर मालम पडे तो दरदकी जगे ब्लिस्टर मारणा और नं० ४९८ वाला मिक्श्चर तीन २ कलाकमें देणा मक रखाणा और कलेजेका भागकोग्मूजी भई मालम दे तो तब दवा बधकर देणा (पुराणी संधिवायू- (१८) बदनमें उपदंश वगेरे गर्मीका कारण होय तो उसकूं दूर करणेका इलाज

करवाणा भी जी भई गीली सरदीकी जगे गीलीदिवाल पूरा कपडा नहीं पहरणा वगेरे संधिवायूकूं मदत देणेवाली अडचलोंकों दूर करणा और पूरा पोषण कारक अच्छा खुराक खिलाणा गरम कपडे फुलालीन वगेरेके पहराणा गरम दवा गरम खुराक रातकूं डोवर्स पाउडर और दरदकी जगे ग्रासन तेलका मालिस ये सब काम संधिवायूके वास्ते अच्छा है, (१९) नं० ५०५ तथा ५२८ का मिक्श्चर अनुक्रमसे अजमाणा और नं० ५९४ वाला लिनिमेन्ट उपयोगमे लेणा (२०) इसके सिवाय नीचेका मिक्श्चर जरूर पडे तो ऐकके पीछे एक अजमाके देखणा नं० ५८७ ५८८ ५८९ वगेरे होमियोपैथिक इलाज—एकोनाइट तथा ब्रायोनिया ये दोनों चीजों तीक्ष्ण सधिवायूके वास्ते सर्वोत्तम इलाज है, संधिवायूके तीक्ष्णरूपमें रिदयमें विकार युमोनिया (फेफसेका वरम) तथा फेफसेके पुडका वरम वगेरे भयंकर रोग वढ जाणेका भय रहता है, तीक्ष्णसंधि-वायूमें ये दो दवायें दो दो तीन २ घंटेके अंतरसे वारी फिरत देणा इससे वुखार तथा दरद नरम पडे इतनाही नहीं लेकिन इससे संधिवायूका दरदभी मिटता है, ब्रायोनिया लिनिमेन्ट करके तेल होता है, वो वाहर लगाणेके काममें लिये जाता है, ये दवा दोनोंसें फायदा नहीं होय तो हसटोक्स अर्निका वेलाडोना पल्सेटिला वगेरे दवायोंका उपयोग करणा (पुराणे संधिवायूमें) नीचेकी दवा दी जाती है, ब्रायोनिया सांधोंमें उष्णता और सोजन और चलते दरद होता है, तब ये दवा जादा उपयोगी हैं, होडे न्ड्रॉन सांधोंमे फटणे माफक दरद होय तथा गोडेमें सोजा तथा ललाई होय तो ये दवा अच्छी है, हसटोक्स सांधे अकड जाय चलणेकी सरुआ-तमें वहोत दरद करे और कुछ यक चले पीछै दरद कम होय एसे दरदमें ये दवा फायदे वंद हैं, पलसेटिला घुंटणे गिरिये वगेरे सांधोंमें वादी आई होय और रातकूं दरद वढता होय, औरतोंके, ऋतुधर्मकामरज होय तब ये दवा उपयोगी है. सधिवादी-का उपचार वाहिरका (२१) संभालू (निर्गुंडीके) पत्तोंको वाफकर सांधोपर वांधणा (२२) दश मूलके उकालीमें तेल डालकर उसकूं फेर उकाल तइयार किया भया तेल मसलणा (२३) मालकांकणी कडवी जी भी अजवाण मेथी तथा तिल इनोंको पीलके तेल निकालणा (२४) नारायणतेल ऊपर लिखा है, वो वहोत अच्छा इलाजहै (२५) वंबूलकी तथा सहजणेकी छाल पीस उसका लेप करणा (२६) सहत तथा कली चूनेकूं हथेलीमें मथकर दरदकी जगे लगाकर ऊपर रूई चपकाणी (२७) गूगल तथा गूजरका लेप (२८) सोवा देवदारू कूठ और सींधानिमककूं पीस आकके दूधमें मिलाकर लेप करणा (२९) लीनीमेन्ट और टिकचर आयोडीन पांखसे लगाणा (३०) नं० ४४१ के पेटेमें लिखे भये लिनिमेन्ट वापरणा (३१)

नं० ३११ ३१८ का लेप संधिवायूपर फायदा करता है, एकही सांधोंमे दरद होय तो (केन्थारीडीस पलास्टर मारणेसें तुरत फायदा होता है.

(विशेप सूचना) ये सब बाहरके इलाज दरदकूं कम करता है, लेकिन् दरदकी जड खून सुधारणेवाली दवापीये विगर जाती नहीं और एक वेर मिटे पीछै फेर होजाता है, इसवास्ते संधिवायू मिटाणेकू कितनेक दिनोंतक खून सुधारणेकी दवाओंका सेवन करणा चाहिये तीक्ष्णसंधिवायूवाले रोगीने बुखारके रोगी. जितनी संभाल रखणी पवनमें तथा शरद हवामें फिरणा नहीं. ठंढे पाणीसे नाहणा नहीं. बहोत गरम बहोत ठंढा तथा लूखा पदार्थ खाणा नहीं. ठंढा यानेवासी अन्न खाणा नहीं सूकी और गरम हवावाले प्रदेशमें रहणा. खुराक पोपण कारक लेणा लेकिन हलका लेणा पथ्य–दूध घी तेल मधुररस तिल गहूं उडद एकवर्पके पुराणे चावल कुलथी परबल सहजणा लसण अनार केरी और चिकणा तथा गरम पदार्थ फायदा करता है, अपथ्य–चिंता उजागरा दस्त पेशावकूं रोकणा अथवा कबजी उलटी करणी महनत लंघन चणा मटर कांग चवला जागुन सुपारी वाल करेले पत्तोंका शाग ठंढा अनाज ठंढा पाणी बहोत क्षार तुरा (खट्टा) कडवा तथा तीखा पदार्थ गरम मशाला सराप वगेरे नसेके पदार्थ उत्तेजक पदार्थ और मैथुन तथा घोडे वगेरोकी असवारी इतनी वाते नुकशान करती है, पुराणे संधिवायुवालेने शक्तिमुजब खुली साफ हवामें चलणे फिरनेकी कसरत करणी. तीक्ष्ण संधिवायुमेंसे दुसरे रोग पैदा होते सो-रक्ताशयका घट्ट होणा तथा बंध होणा फेफसेका रोग (न्युमोनिया) प्ल्युरीसी वगेरे (कोरीआ बचोकामरज जिसमें बच्चोंके हाथ पांवके तथा वदनके कितनेक स्नायु इच्छा विगर हमेश चलते रहता है, आंखके भांफणीका बरम याने पुडतपर सूजन आंडोंका सोजा तथा गंठियावायु वगेरे बहोतसे उपद्रव होजाता है, उसमेंभी जब रक्ताशय वगेरे मर्मके ठिकाने संधिवायूका विकार प्रवेश करजाता है, तब ये रोग बहोत भयानक होजाता है, फेर तो थोडेही बचते हैं.

आमवात.

वर्णन—जिन २ रोगोंमें वायूका प्रकोप होता है, अथवा वायू दुसरी धातूकूं प्रेरणा करती है, उन सब रोगोंकू आर्य वैद्यक शास्त्र कारोनेवादीके रोगोंमें गिणा है, अगर उसकेसाथ वात एसा शब्द लगाया है ये दुसरे प्रकारमें आमवात वातरक्त वगेरोंका समावेश होता है, अंग्रेजीमें आगे लिखे मुजब ज्ञान तथा गति तंतुओंके और मगजके रोगोंमें जुदा गिनाया है, जिस रोगकूं आर्यवैद्यकशास्त्र आमवात लिखता है, उसका अंग्रेजीमें संधिवायू अथवा गंठिया वायूमें समावेश होगया मालम देता है, क्योंके आमवातमेंभी सांधोंमें सोजन आता है, और दुसरे कितनेक लक्षण तैसे इलाजभी संधिवायूके रोगमें ऊपर लिखा उस मुजब है.

आमवात इलाज.

कारण—प्रकृति विरुद्ध आहार विहार करनेवाले मंद अग्निवाले कसरत याने चहिये जितना मेहनत नहीं करणेवाले ऐसे अदम्योंका आम (जठरका कच्चारस) वायूसे चलाय मान होकर कफके ठिकाणोमें जाता है, उहां कफके संवधसें जादा विगडकर वदनमें आमकूं फेलाणेवाली धोरी रगमें घुसता है, तव ये अन्नरस वायूपित्त तथा कफसें विगडके सवनसोंमें भरजाता है, ये आम अनेक रगका चीकणा और तेलिया होता है, इस आमयुक्त वायू तथा कफ एकही समय कुपित होकर कमरमें प्रवेश कर वदनकूं जड वनाता है, भारी और चिकणापदार्थ खाकर तुरत महनत करणेसें भी ये रोग होता है.

लक्षण—ये रोग वहोत दुखदायक तथा भयानक है, इस रोगमें संधिवायू तथा अजीर्णके मिले लक्षण होते हैं, हाथ पांव गिरिये कमर गोडे और जांघोंकी सांधोंमें दरद करता भया सोजन होता है, जठराग्नि मंद पडती है, मूमेसें फेणवाला पाणी छूटता है, जिस २ जगे आंम पोहचता है, उस जगे विच्छूके डंक जेसी वेदना होती है, अन्नपर अरुचि होती है, वदन भारी होता है, सोजनमें जलण होती है, पेशाव वहोत होता है, शूल चभका होता है, दिनकूं नींद आती है, रातकूं नहीं आती प्यास उलटी उकारी भ्रम मूर्च्छा छातीमे दरद शूल दस्तकी कवजी शरीर जड जकडा भया होता है, इत्यादिक आम वातके लक्षण है, तीनू दोषवाला और जिसमें सव वदनमें सोजन आई भई होती है, वो आमवात असाध्य है.

इलाज—ऊपर संधिवायूके इलाज लिखे हैं, वो वहोतसे आमवातकूं मिटाते हैं, इसके सिवाय नीचेके इलाज अजमाणा.

(१) सूंठ तथा गिलोयका काढा पीणा कितनेक दिनोंतक (२) सूंठ तथा गोखरूका क्वाथ आमवात कमरकी शूल तथा पीठकी शूल मिटाता है, (३) रास्ना देवदारू भिलावा सूंठ मिरच पीपर एरंडीकी जड साटेकी जड गिलोय इसके उकालेमें सूंठका कल्क अथवा सूंठका चूर्ण अथवा एरंडीका तेल डालकर पिलाणा (४) इकेली सूंठका उकालाकर उसमे एरंडी तेल डालकर देणा (५) दशमूलके उकालेमें एरंडी तेल (६) एरंडीके जडके रसमें सूंठ मिलाकर उसके गोलेका पुटपाककर उसमें सहत डालकर पीणा (७) सूंठ पींपर पींपलामूल चित्रक चव्यका क्वाथ देणा (८) साटेकी जडके क्वाथमें सूंठ तथा कचूर मिलाकर पीणा (९) रास्ना गिलोय एरंडीकी जड देवदारू और सूंठका काथ (१०) लसण सूंठ और निर्गुंडी (सभालूके वीज) इनोंका काथ (११) सूंठ हरडे तथा अजवाण इनोंका चूर्ण खटी छाछमें अथवा गरम पाणीमें पीणा (१२) साटेकी जड भूरगणी एरंडीकी जड मरवा जाल और सहजणा इन सर्वोका पंचाग लेकर उसका काथ करके पिलाणा (१३) सरसूंके तेलमें फिर

मालेके पत्ते सेककर सांझकू खाणा और पीछै व्यालु करणा (१४) हरडे १२ भाग सूंठ ४ भाग अजमोद ४ भाग खुरासाणी अजवाण दो भाग सींधानिमक २ भाग वारीक चूर्ण खट्टी छाछके संग या गरम पाणीके संग पिलाणा (१५) सूंठ २४ भर धाणा ८ भर इनोंका कल्ककर उसमें ६४ तोला घी तथा २५६ तोला पाणीमें डाल घी बाकी रहे उहांतक पकाणा इयघी आमवात मंदाग्नि वायू तथा कफकूं दूर करता है, (१६) सूंठका कल्क ५ रुपेभर सूंठका क्वाथ २५६ भर घी ६४ भर इन सबोंकों उकाल घी तइयार करणा ये घी कफ वायू मंदाग्नि तथा आमवातकूं मिटाता है, (२७) सुंठका पुटपाक, अजमोदादि चूर्ण—अजमोद वायविडंग सींधा निमक देवदारू चित्रक पींपलामूल पींपर सोवा मिरच ये देरेक एकेक तोला हरडे ५ तोला वरधारा दश तोला सुंठ दश तोला इन सबोंका चूर्ण गरम पाणीमें अथवा दूने गुडमें मिलाकर देणा (१८) रास्नादि क्वाथ (नं० २१४ १५ १९) योगराज गूगल (नं० ५८) (२०) खंडशुंठी—सूंठ ३२ तोला घी ८० तोला दूध १२८ तोला खांड २०५ तोला इनोका पाक करके इसमें सूंठ मिरच पींपर तज तमालपत्र और इलायची एकेक चार तोला ले चूर्णकर मिलाकर पाक खाणा (२१) गोमूत्रके संग गूगल पीणा ('२२) सूंठके संग हरडे चाटणी (२३) तिल तथा सूंठ पीसकर उसकी चटणी खाणी (२४) सुंठ हरडे तथा गिलोयके क्वाथमें गूगल डालकर गरम गरम पीणा (२५) लसणका रस तथा गउका घी एकेक तोला पीणा.

पथ्य—विशेप सूचना—लंघण शेक रेच बाफे भये जवका जल बाफे भये बेंगण कडवे फल लसण मोरवेल साटेके पत्तोंका शाग परवल करेला, जव पुराणे, लाल चावल, कुलथीका मटरका तथा चणोका ओसामण सब लूखा अन्न छाछ लसण कडवा तथा तीखा पदार्थ—कुपथ्य—दही गुड खारवाले पदार्थ उडद मलमूत्रका अटकाव ओजागरा जड और कफकारक पदार्थ चिकणा और भारी पदार्थ जेसें घी मख्खण मलाई मेदेका पदार्थ पिसा अन्न.

वातरक्त—

ले प्रसी.

लोक इस बेमारीकूं रक्तपित्त कहते हैं, सो नहीं वातरक्त और रक्तपित्त अलग रोग है, रक्तपित्तका स्वरूप आगे लिखेंगे.

कारन—आरोग्यताके नियमसें विरुद्ध प्रकृति विरुद्ध तथा स्वभावसें विरुद्ध एवं खानपान संग खाणे पीणेसें ये रोग पैदा होता है, इस रोगके पैदा होणेका खास या [illegible] कारण अभीतक डाक्टरोंकों मिला नहीं है, अभीके सोधकोने एसा सिद्ध किया [illegible] रोग [illegible] सूक्ष्मकीडेसें पैदा होता है, वातरक्तका भयंकर रोगचेपी है, यातें

उपदंशकी तरे स्पर्शसें ये फेलता है, फेर वो ओलादमेंभी ऊतरता है, इसवास्ते वातरक्त-वाला रोगीका संसर्ग करणा नहीं एसे रोगीके संग व्याह करणा नहीं गरीव भिक्षारी लोक जो खराव विगडा भया अन्न खाणेवाले हैं, उनोमें ये रोग जादा देखणेमें आता है, खराव खानपानसें वायू तथा खून विगडता है, दूषित भये वायूकेसग खून मिला भया होता है, इसवास्ते इसका नाम वातरक्त है.

लक्षण—वातरक्तके पूर्वरूपमें प्रथम चिन्हतरीके वदनपर अत्यंत पसीना आता है, अथवा विलकुल आता नहीं स्पर्शका ज्ञान कम होता है, सांधे ढीले होते हैं, अंग जड होता है, वदनमें सुई चुभाणे जेसी वेदना होती है, मेद भारीपणा तथा ग्लानी होती है, खुजली तथा जलण होती है, और वदनपर चकर २ होते हैं, रोग वढे वाद इसके चिन्ह प्रगट मालम देते हैं, उंदरिया वायूकी तरे वदनपर गांठे तथा चकते उठकर सव वदनपर विशेष करके कपाल वगेरे मूके अवयवोपर सोजा चमडीपर तग तगाट और ललाई हाथ पांवोंकी अंगलिया टेढी होणी नख खिर जाणा जलण चमडी फूटणी पाणी झरणा मांस गिरपडणा ये सव आखरीके चिन्ह हैं, इस रोगकी मुख्य दो खासियत है, गंठिया वातरक्त तथा शून्य वातरक्त कितनेक आदमियोके वदनपर गांठे २ हो जाती है, और कितनोंके वदनपर चमडी शुन वहरी याने स्पर्शका ज्ञान विगरकी हो जाती है, और वहुतोंके दोनों रूपसें दिखाई देता है, कितनेएकोंके अलग २ भी होजाता है, (गंठिया वातरक्त–गंठिया गलत कोढ दो तरे सरू होता है, वुखारके संग लाल चमडीपर चट्टे होजाते हैं, अथवा वुखार विनाभी सरू होजाता है, पहली चट्टे लाल भूरे रंगके होते है, पीछै सुजकर उसमें गांठेवंध जाती है, मूं गाल नाक कान वगेरे अवयवोंकी चमडी जाडी सूजी भई तथा तगतगती दिखती है, और पीछै वदनके दुसरे भागोमें भी एसा फेरफार होता है, इस रोगके सरु भये पीछै प्रगट चिन्ह देखाते २ किसी २ वखत वहोत मुद्दतवीत जाती है, चाठोंसे गांठे होती है, वो गाठे वढकर वडी होणेसें उसमेंसें फूटकर पीप वहता है, नाककी हड्डी सडकर नाक चपटा होता है, वदनके ऊपरके छेडेपर एसा फेरफार होजाता है, तव दुसरी तरफसें नीचेके छेडेपर पांवोंकी अंगुलिया सूज जाती है, पाणी झरता है, तथा गलके गिर पडती है, हाथ पेर ठढा होता है,या हाथ पेरमें अगारसी जलती है, और पीछेसे शून्य होकर निकामी होती है, शून्य वातरक्त–हाथ पेर अथवा वदनका कोईभी भाग शून्य पडता है, चमडीकी ये शून्यता अकस्मात रोगी नहीं समझसके इसतरे आती है, रोगीकू अचंभा होकर शून्य वहरी पीछै मालम देती है, किसी २ वखत वदनपर फफोला उठता है. पीछे ये फफोला फूटकर पीछा भरीजकर इस जगे सुपेद दाग पडता है, फेर दुसरी जगे फफोला उठता है, प्रथम सरु आत हाथ पैरसें होता है, वदनपर चट्टे होते हैं, उसकी चमडी सूकी

और शून्य वहरी होती है, ये चठे फैलते जाते हैं, इय इहांतक शून्य होते हैं, सो इस भागकूं जलावे या काटे तोभी रोगीकूं मालम पडती नहीं इस गलत कोढ रोगमें अंगुलिया सडके नही पडती फक्त अंदर सकुडाकर ठूंठा होजाती है,

इलाज–वातरक्तका अकसीर इलाज युरोपि लोकोंके अभीतक कुछ हाथ नहीं लगा है, तोभी ये रोग सरु होतेही जो दवाई देते हैं, सो लिखते हैं, (१) शोधक दवाये (पृष्ट ३१५) सारक शोधक दवायें (पृष्ट ३१५) तथा रोपण दवाये (पृष्ट३११) (२) गिलोय उत्तम इलाज है, इस वास्ते गिलोयके क्वाथमें एरंडीका तेल अथवा गूगल डालकर वहोत दिनोंतक सेवन करणा अथवा गिलोयका रस कल्क चूर्ण कर उसका सेवन करणा (३) गिलोय तथा गूगलकी त्रिफलाके क्वाथमें गोलियां करके उसका सेवन करणा (४) अरडूसेका पत्ता गिलोय तथा अमल तास इनोंकी उकालीकर एरंडीका तेल डालकर पीणा (५) तीनसे पांच हरडेकी छालका चूर्णकर गुडमें मिलाकर हमेश खाणेमें आवै उसपर गिलोयका काढा पीणा इससे भयंकर वातरक्त मिटता है, (६) दूधके संग एरंडीका तेल हमेश पीणा दस्त लगकर एरंड तेल पच गये पीछे दूधभातका भोजन करणा इसतरे वहोत दिनोंतक सेवन करणेमें आवै तो वहोत दोषोंका गलत कुष्ठ मिटता है, (७) गिलोयके क्वाथमें गिलोयका क्वाथ तथा कल्क डालकर चोगणा दूधमें सिद्ध करा भया घी खाणेसें वहोत फायदा होता है, अथवा गिलोयका क्वाथ या स्वरसमें गिलोयके कल्कसे पकाया भया घी, सरु होता अथवा पुराणा भी वातरक्त मिटता है, (८) आकडेकी जडका वहोत दिनोंतक सेवन करणा (९) सोनामुखीका पवित्र चूर्ण (नं० १८६) वहोत दिनोंतक सेवन करता जाय तो वातरक्तकूं फायदा करती है, (१०) मोगरेकी छालका तेल १० से ३० बूंद चूनेके नितरे भये जलमें हमेस दिनमें दो तीन वखत देणा (११) उंदर कर्णीका रस पीणा उसके पत्ते पीस लेप करणा (१२) असालियेकी जड तथा छालका क्वाथ मिरचके दाणे डाल चार छ मासा फेर पीणा (१३) काली जीरी त्रिफलाके क्वाथमें पीणा (१४) गलजी भी याने गाय जवां वातरक्तकी जलण मिटाती है, इसके सिवाय वडे इलाज वण सके तो नीचे मुजब करणा आचारांग सूत्रके टीकाकार श्रीशीलांगाचार्य लिखते है, की साधूकू ये रोग होजाय और कोई भी दवासे शांत नहीं होय तो वैद्यके हुक्म मुजब मच्छीके मांशसें या और विना हड्डीके गरम मांससे कइ दिनोंतक इसके व्रणकूं सेके तो आराम होय इसकूं लूतिका विष रोग करके लिखा है, ये हुक्म महा कारण पडणेमें वाहरके इलाजके वास्ते साधुओंको सूत्रकारनें हुक्म दिया है, उहां शोभा एसी क्रिया बाह्य परिभोगार्थं नतु अशनार्थं इस लेखकों बुद्धिवानोंने सामान्य नहिं समझणा अवश्य तथा सामान्य साधुये कर्त्तव्य नहीं आचेर सूत्रका आशय गंभीर है, गीतार्थोंको गम्य है, तुच्छ बुद्धिये कलंकारोपण करेंगे इति.

(१५) अमृताद्य घृत–गिलोय मोलेठी दाख त्रिफला सूंठ खपाट अरडूसा अमलतास सपेद साटेकी जड देवदारू गोखरू कुटकी मजीठ पीपर रास्ना एरंडीकी जड वरधारा मोथ कमल इनोका कल्क करणा ६४ तोला आंवलेका रस ६४ तोला घी और १९२ भर पाणी सवकूं एकठा मिलाकर पकाकर तइयार करणा इस घीकूं दवा तरीके तेसें भोजनमें लेणेसें इस रोगमें बहुत फायदा करता है, (१६) गडूची तेल–गिलो तोला ४०० भर उसकूं १०२४ तोला पाणीमें उकाल चोथा भागका पाणी रखके छाण लेणा उसमें १०२४ तोला दूध तथा मोलेठी मजीठ जीवनीय गणके मिले इतनी दवा कूठ इलायची अगर दाख जटामांसी नखल्या संभालूका बीज गोरख मुंडी सूंठ मिरच पीपर सोवा काकडासींगी उपलसिरी तज तमालपत्र अरणी समेरवा भू अंवली तगर नागकेशर वाला पद्मकाष्ट कमल रगतचंनण इनोमेंसें जितनी मिले इतनी दवायें एकेक तोला लेकर चटणी करणी तथा २५६ तोला तेल इन सवोंकों धीमें तापसें पकाकर तेल सिद्ध करणा ये तेल वातरक्तके रोगीके पीणेकूं देणा वदनपर मसलणा पिचकारी मारणी इससें वातरक्तके सर्व विकार मिटते हैं, (१७) मधुक तेल–चार तोले मोलेठी का कल्क करणा ६४ तोलाभर तेल २५६ तोला दूध तीनोंकों मिलाकर मंद आंचसें तेल तइयार करणा इसतरे तइयार किये तेलकूं फेर इसीतरे १०० वेर अथवा १००० वेर पकाणा एसे तेलसें वातरक्त वगेरे वहोतसे रोग मिटकर धातू पुष्ट होता है, तथा ऊमर वढती है.

(१८) मंजीष्टादि क्वाथ–(नं० २२०) त्रिफला गूगलके संग अथवा किशोर गूगलके संग वहोत दिनोंतक सेवन करणा (१९) चद्रप्रभा गुटिका– (नं० २४६) अनुपान–पाणी दूध छाछ दरटंक २॥ मासेसें १ तोलेतक गोलीका सेवन करणा (२०) किशोर गूगल त्रिफला गूगल तथा गोक्षुरादि गूगल नं० ५८ अमृता क्वाथ (नं०५७) वासादि क्वाथ नं० २१२ अमृता घृत (नं० २८८) जो गलत रोग अंदर वहोत नहीं घुसा होय तो उसपर लेप मालिस सींचणा तथा ऊपर दवा वांधणी अगर जो दोप अंदर घुस गया होय तो जुलाव पिचकारी तथा स्नेहपान घी तेल पिलाणा वाद योग्य दवायोंका सेवन करणा वाहारके इलाज इस मुजव (२१) वकरीके घीमें अथवा दूधमें गहूका आटा मिलाकर लेप करणा (२२) तिलकूं शेककर पीसणा उसकी चटणी दूधमें उकाल उसका लेप करणा (२३) अलशीकूं दूधमे पीस लेप करणा (२४) एरंडीके बीजोंकों पाणीमें या दूधमें पीसकर लेप करणा (२५) भेंसका मक्खण गंधक गोमूत्र दूध और सींधानिमक इन सवोंको एकठाकर धीमें तापसें अग्निपर गरमकर वदनपर मसलणेसें वदनका फटणा तथा चिणक मिटती है, (२६) सो वेर अथवा हजार वेर पाणीसें धोया गया घी और राल मिलाकर लेप करणा तो

खूनके विगाडका वातरक्त मिटता है, (२७) दशांग लेप नं० ३१२ असालिया और तिलका लेप करणा (२८) सरसूं नींवके पत्ते आक जटामासी जवखार और तिलकूं पीस लेप करणा (२९) मसूरकी दालकूं मखणमें पीस अथवा सहजणेके फलीके बीज पीस लेप करणा (३०) गरजनका तेल १ भाग और सालिड ओइल ४ भाग मिलाकर फजर सांझ वदनके मसलणा अथवा बावचीका तेल या चिरोंजीका तेल अथवा कारबोलिक तेल (१) भाग कारबोलिक एसिड और १०–१५ भाग तिलका तेल वदनके मसलणा अभयामोदक पतवाणी दवाहै.

विशेष सूचना–वातरक्तका रोग वहोत भयंकर है, इस वास्ते इस रोगमें दवाका साधन वहोत महीनोंतक करणेसे फायदा होता है, इस रोगीकूं कुटंबसें अलग रखणा अदमीसें स्पर्शतक नहीं होणा चहिये अच्छा पथ्य खुराक स्वच्छ हवा सफाई रखणी चाहिये पथ्य–पुराणे जव पुराणे चावल पुराणे गहुं साठी चावल तूर मूंगकी दाल अथवा ओसावण कुलथी चवलाई (चंदलिया) ये दवाका काम कर सकती हे, दूधी (कडूलवा) तोराई दूध घी सींधानिमक वगेरे–कुपथ्य–कसरत स्त्री सेवन क्रोध उष्ण पदार्थ खट्टा तथा खारा पदार्थ दिनकी नींद शरद तथा भारी पदार्थका त्याग करणा.

रक्तपित्त.

स्कर्वि.

कारण–तीक्ष्ण क्षार उष्ण तथा लवण पदार्थका अति सेवन अतिताप वहोत कसरत वहोत रस्ते चलणा वहोत शोक वहोत मैथुन इत्यादिक आहार विहारसें पित्त विगडकर खूनकूं विगाडता है, और ये विगडा भया खून रक्तके वहणेवाली नसोसे निकलकर उंचेके द्वारसें अथवा नीचेके द्वारसें पडता है, अभीके यूरोपी विद्वानोने एसा सिद्ध किया है, की ताजी वनस्पति शाग तरकारी नहीं खाणेसें रक्तपित्तका रोग होता है, इस वास्ते ही आनंदगाथा पतीने उपाशक दशा सूत्रमें सब वनसपती छोडके एक खीराम्ळ फल मोकळा रक्खा है, के स्यात् रक्तपित्त न होजावे बाकीके सब साधन जो जो उसने मोकळे रखे हैं, वो सब आरोग्यताके हेतुभूत है, तेसें और भी अयोग्य आहार विहारसें ये रोग होता है, एसा देखणेमें आता है, रक्त याने खून और पित्त दोनों अथवा रक्त याने लाल रंगका पित्त होकर वहणे लगता है, इस वास्ते इस रोगका नाम रक्तपित्त एसा धरा है.

लक्षण–नाक कान आंख मूं योनी तथा गुदा तेसें वदनके महीन छेदोमेंसें लाल रंगका पित्त अथवा खून गिरता है, वदनमें दुर्बलपणा फीकापणा उदासीपणा श्वास काम ज्वर उल्टी दाह शिरमें परिताप आळस मूंमें खराब वो अरुचि मदाग्नि वगेरे इस रोगके उपद्रव है, इस रोगवाळेके मसूंडे सूजकर खून और पीप गिरता है, मसूंडे काले होजाते है,

रक्तपित्तका इलाज.

इसके सिवाय पांवपर और दुसरी जगे भी जामुनके रंग जेसें चट्ठे होते है, चांदी(घाव) गिरता है, उसमेंसें खून गिरता है, पांवपर सूजन होता है, जखम रुककर फेर फूट जाता है, भूख लगती नही दस्तकी कवजी होती है अथवा जादा दस्त मरोडा रक्तातिसार होजाता है.

प्रकार–देशी वैद्यकशास्त्र मुजब रक्तपित्तका मुख्य दोप्रकार है, १ उर्द्धगत तथा २ अधोगत, उर्द्धगत ऊपरके छेद नाक कान आंख मूंके रस्ते वहणेवाला और अधोगत याने नीचेके छेदोमेंसें योनी गुदामेंसें वहणेवाला ऊर्ध्वगत रक्तपित्त साध्य होता है, अधोगत कष्टसाध्य होता है, तथा दोनों संग होय और रोगी वृद्ध होय और अशक्त होय तो असाध्य होता है.

इलाज–कमया जादा दोप मुजब छोटे वडे उपाय नीचे मुजब (१) अरडूसा अछा इलाज है, उसकी वनावट–वासास्वरस–वासा पुटपाक वासादिकाथ–वासावलेह वासाखंड पाक देखो (नं० ६) अरडूसेका चाटण (नं० २६८) (२) कोला-उसकी वनावट–खंड कुष्मांडपाक (नं० २८२) कुष्मांडावलेह (नं० २६६) (३) दाख द्राक्षावलेह (नं० २६५) (४) जीरा–जीरापाक (नं० २७२) (५) वाला–उसीरा सव (नं० २८२) (६) वकरीका दूध सहत मिश्रीमिलाकर पीणा (७) मोलेठी धाणा रगतचंनण अरडूसा तथा वाला इनोका काथ सहत मिलाकर पीणा (८) शंखजीरा घी मिश्री (९) दाख वेदाणा तथा धाणा इनोकी उकाली (१०) जव कूसेक आटा करके पाणी घी मिलाकर पीना (११) आमकी छाल जामुनकी छाल अर्जुन वृक्षकी छाल इनोंकों महीन पीस रातकूं मट्टीके पात्रमें २४ तोला जलमे भिगाकर फजरमें छाणकर सहत डालकर पीणा (१२) धाणा आंवले अरडूसेके पत्ते दाख पित्त-पापडा इनोका हिम करके पीणा (१३) कमलके तंतु मजीठ कचावचीणी वलबीज कपूर वाला मोथ रगतचनण और पद्माख ये दरेक एकेक तोला लेकर इनोंका कल्क करणा पीछे ६४ तोला चावलोका धोवण ६४ भर वकरीका दूध ६४ भर वकरीका घी उसमे वो कल्क मिलाकर पकाकर घी वनाना वैद्यकशास्त्रमें इस घीकूं दुर्वाध घृत कहते हैं, मूंमेंसें खूनकी उलटी होती होय उसकूं ये घी पिलाणा नाकमेंसें गिरता होयतो इसकी नासदेणी कानमेंसें वहता होयतो डालणा आंखमेंसे जाता होयतो आंखमें डालणा गुदा तथा पेशाबके रस्ते जाता होयतो इस घीकी पिचकारी मारणी रुंरुमेंसे निकलता होयतो मालिस करवाणा (१४) दाख चंदन लोदगहूला ये चारोका चूर्णकर अरडूसेके पत्तोंके रसमें तथा सहतमें पीणेसें तमाम जगेका खून झरता वंध होता है (१५) आंवलेके चूर्णकूं घीमें सेक पीछे पाणी मिलाकर सिरपर लेप करणेसें नकसीर वंध होती है, (१६) नकसीरवालेकू मिश्रीका सरवत पीणा नाकसे दूध पीना दूधमें दाखका रस मिलाकर पीना अथवा मिश्रीके संग इक्षुका रस सुंघानेसें नकसीर वध होती है (१८) अमृतवटी

चंद्रकला रस हमारे दवाखाणाकी दवाइ बहोत श्रेष्ठ इलाज है, (१९) नींबूका रस ४ औंस कलोरेट ओफ पोटास १ द्राम टिकचर सीकोना कम्पाउन्डर ४ द्राम मिश्री २ औंस ब्रांडी २ औंस पाणी ४ औंस मात्रा ½ औंस दिनमें तीनवेर पिलातेहैं (२०) टिंकचर फेरीपर क्लोराइड १ द्राम क्वीनाइन ६ ग्रेन क्लोरेट आफ पोटाश ०॥ द्राम पाणी ३ औंस तीन भागकर दिनमें तीनवेर पीणा (२१) नं० ७२६-८२७ केहकीमीनुसखे (२२) नींबू अनार जामुन अंबली आंवले वगेरेका शरबत पीणा तथा फल खाना.

विशेष सूचना-ताकतवर और खूनवाले अदमीका कोई भी जगेसें एकदम खून पडे तो विशेपकारन विगर उसकूं रोकणेका इलाज नहीं करणा क्योंके बहोतसी वखत कुदरती आपहीसे बधे भये खूनकूं इसतरे रस्ताकरके अदमीकूं रोगमेंसें बचाय देता है, बुढ्ढा दुबला और कम खूनवाले आदमीके बदनमेंसें खूनगिरे तो जलदी रोकणेका इलाज करना-पथ्य-चावल, साठी चावल, जब, कांग, कोद्रव सामा मूंग मोठ तूर मसूर चणा परवल मीठानींबू चंदलिया वड तथा पींपलकी कूंपल दूध घी केला भूराकोला (पेठा) तरबूज इक्षु मिश्री अनार आंवले बगीचे तह खाना ठंढी हवा इत्यादि पित्तशामक चीजे कुपथ्य-कसरत रस्ते चलना गरमी धूप मलमूत्रकूं रोकना घोडेकी सवारी अग्नि धूम्रपान (हुका चिलम) स्त्रीसेवन कुलथी गुड तिल उडद दहीं खारापदार्थ पानसुपारी लसण बासी अनाज कडवा खट्टापदार्थ ये सब खराब है.

कंठवेल-गंडमाल-ग्रंथी.

स्क्रोफयुला-टयुबरकल.

कारन-१ इसरोगमें बदनमें गलेमें गांठें होजाती है, तोभी वो एक शारीरक रोग है, खूनका बिगडना ये इसरोगका मुख्य कारण है, खराब खुराक खानेवाले और शरदीवाली नीची जगोंमें बसणेवाले लोकोंके ये रोगविशेप देखणेमें आता है, अशुद्ध पारा खाया होय गरमी सूजाककी बेमारी भई होय तो भी खून विगडके ये रोग होता है, आहार विहार कसरत हवा पाणी वगेरेमें विपरीत याने प्रकृती विरुद्ध आचरणसें खून बिगडता है, उससें बदनका सब भागोंकूं यथास्थित पोपण नहि देनेसें दोष गांठके रूपसें बाहर आता है, ये रोगभी ओलादमें उतरता है, इसीवास्ते ये रोग बच्चोंके जादा देखणेमें आता है, २ अभीके नये सोधकोंके प्रमाणमें इसकी पैदाशके दुसरे कारण कहनेमें आते [illegible] मत एसा है, के ये रोग चेपी है, दुसरे एसा कहते हैं, (टयुबरकल [illegible] नामके जंतुसे ए रोग हयातीमें आता है, (३) बापके ये रोग होय अथवा [illegible] मातांके अंदर रोग होय तोभी किसी २ कूं ये रोग होता है.

[illegible] इसरोगके लक्षण अथवा चिन्ह शारीरक तेसें इस्थानिक इसतरे दो प्रकारसे उपजते हैं, इस शारीरक चिन्ह-शरीर नाताकत नाजुक बहोत मंदाग्नि नाडी जग जल्द

वदन गरम और थोडा २ बुखार (स्थानिकचिन्ह—गलेमें काखोंमें खंधेमें काछोंमें और जांघोमें गांठे होती है, इतनाहीं नही लेकिन् चमडी पेट मगज फेफसा रसपिड सांधे हाड और आंखके अंदरके भागके साथ इस रोगका संवंध होता है, चमडीपर वडे दुरगंध-वाले जखम सडे भये जखम होते हैं, जादा करके पैरोंपर तेसें हाथ छाती पीठ गरदन वगेरे भागोंपर होते हैं, वहोत मुदत तक भरता नहीं फैलता है, औरको रखरखोदरी ... जेसी होती है, पेटमें ये दोष भरजाता है, तव वच्चेका पेट घडे जेसा होता है, ...तकी कवजी रहती है. उससे जलंदर भी होजाता है, इसीतरे मगजके वीच रस ...डमें इस दोषका जमाव होकर सोजा होता है, और सखत बुखार आता है, मगजका ये ...ोप पांच वर्पके अंदरके वच्चेके होता है, वालक वेचैन वेहोस होजाता है, दांत पीसता है, चीस मारताहै आंख मुंची रखता है, उलटी होती है, दस्तकवूज शिर गरम और आंखकी कीकी सकुडाय जाती है, फेफसेमें इस दोपका जमाव होणेसे उहां सोजा होकर पकता है, और क्षयकी वेमारी होजाती है, रसपिडमें ये दोपका संचय होता है, और गरदन वगल और पेटके अंदरका रस पिंड वडा होता है, गलेमें इस दोपका संचय होकर गांठ होती है, गलेके दोनों तरफ एसी गांठे होती है, और पीछेसे वंधकर हारके मुजव गांठोकी श्रेणी होती है, इसवास्ते इसकूं कंठमाल कहते हैं, इय गांठ छोटी नारगी जेसी होती है, किसी २ के वढकर नालियेर जितनी भी होती है, इस गांठोमें वहोत दरद नहीं होता लेकिन् जो उसका इलाज नहीं होय तो दोप अंदर घुस वढकर श्वासनली और अन्ननलीके ऊपर दवाव होणेसें जिंदगीकूं जोखम पहुंचती है, वहोत वखत हांसकी हड्डी भी सड जाती है, और वदनके दुसरे भागमें भी ये दोप भरजाता है, जव हाडोंतक पहुचता है, तव अस्थिव्रण होजाता है, आंखमें ये दोप आता है, तव आखोमें फूला पडता है, पाणी झरता है, सूर्यका प्रकाश सहा नहीं जाता स्क्रोफ्युलाका दोपवाले वच्चेके वद-...में गांठे चांदी कान वहणा सांधा और खाजखुजली जेसे चांदी खासी आखर क्षय जेसी स्थिति होती है.

इलाज (१) देशी वैधक शास्त्रमें कंठवेल वगेरे ग्रंथी गांठोंके रोगमें कचनार नाम वृक्षका वहोत गुण लिखा है, उसकी छालका उकाला चूर्ण अथवा नं० ४० में लिखा भया कचनार गुगलका सेवन करणा इसके सिवाय खूनकूं शुद्ध करणेवाली सब दवाइयां जेसेंके चंद्रप्रभा किशोर गुगल त्रिफला गूगळ मंजिष्ठादि क्वाथ वगेरे इस रोगमें फायदा करता है, (२) अंग्रेजी दवाओमें कोडलीवर लोह पोटास आयोडाईड सिर पफेरी आयोडाईड हाईपोफोस्फेट ओफ लाइम सोडा वगेरे असरकरता है. (३) होमियापेथिक दवायोमें आयोडाईन सीलीशिया हियारसल्फ वेलाडोना फोसफारस वगेरे—वाहरका इलाज—(१) सरसूं, सहजणे की फली सणके वीज अलसी

है, मगजमेंभी किसी वखत पाणी भरजाता है, और इस करके एसे रोगवाले बच्चोंका शिर वडा होता है, आंडोंकी गोलीमें पाणी भरजाता है, उसकूं अंडवृद्धि एसा रोग कहते हैं, त्वचाके नीचे पाणी भरजाता है, उसकूं लोक थोथर तथा सूजन कहतेहैं सूजन आती है, तब उसकूं पक्का जलंदर गिणणेमें आता है.

कारण—मिथ्या आहार विहार ये इस रोगकूं पैदा करणेका कारण है, मिथ्या आहार विहारसें वदनमें खून फिरणेमें एक तरेका अटकाव होता है, तैसें खून बिगडणेसें भी किसी २ जगे ये बेमारी होती है, जब खून बराबर फिरता नहीं तब साफ होता नहीं और जब एक जगे खूनके प्रवाहका अटकाव होता है, तब दुसरी जगे उसका जमाव होता है, और जमाव भये खूनमेंसे खूनके अंदरका पाणी महीन खूनकी नलियोंमेंसे जम २ के एकठ्ठा होता है, वदनके सर्व भागमें बारीक रक्त नलियोंमेसें हमेस प्रवाही रस झरते रहता है, उसकरके शरीरके भागोंका पोषण होता है, और बचा भया रस सूकजाता है, लेकिन् ऊपरके कारणसे जब कोईभी भागमें खूनमेंसें झरता ये रस जब बढजाता है, अथवा शोषणक्रिया कम होजाती है, तब वो रस अथवा पाणीका उस जगे संग्रह होता है, जलोदर ये फक्त जलका संग्रह है, रक्ताशय फेफसा मूत्राशय यकृत् तिल्ली इण अवयवोंके विकारसें जलोदर पैदा होता है, पांडुरोगसें बहोत खून जाणेसें और बहोत नाताकतीसें भी जलंदर पैदा होता है.

लक्षण—जलोदरका रोग स्वतंत्र नहीं है दुसरे रोगका फक्त एक लक्षण है, जलोदर जैसें उदर रोगकी एक जात है, तैसें कितनेक विद्वानोंके मतमुजब जलोदर ये यकृतोदर ह्लीहोदर वगेरे उदर रोगका आगे बढा भया स्वरूप है, अर्थात् ये रोग जब बढता है, तब आखर उसके अंदरका दोष प्रवाही रूप बणता है, जुदे २ कारणमुजब उसके चिन्ह जुदे २ होते हैं, पांडु रोगसें अथवा नाताकतीसें जलंदर होता है. तब पहली सूजन चढती है, पीछे जांघ इद्री और पेट इस क्रमसें सोजन चढती है, ऊपरके भागमें सूजन थोडा होता है, पांडुरोगके बहोत लक्षण होते हैं, रक्ताशय रोगसें जो जलंदर होता है, उसमें रक्ताशयके लक्षण मालूम पडते हैं, पहली पांवके पोंचेपर अथवा आंखके पोपचेपर थोथर आती है, फेर पीछे पांव तथा पेटपर सोजन आती है, किसी २ वखत पेटका जलंदर नहीं होता कलेजेके रोगसें जो जलदर होता है, उसमें पहले पेट बढता है, और पीछे दुसरे भागपर किसी २ जगे सोजा आता है और किसी जगे नहीं आता कलेजेके दरदमें प्रथम रोगी दुबला बनकर पेट बडा तुंबे जैसा होता है वदन सूकाभया फीका कामला उलटी दस्तकी कबजी और कलेजेमें दरद होता है ये रोग ज्यादातर सराप पीणेवालेकूं होता है—मूत्राशयके रोगसें जो जलंदर होता है उसकी जड मूत्रपिंडके रोगमें होती है, विशेष करके बहोतसे जलदरवालेकी जड गुरदेके

जलोदरका इलाज.

दरदमें होता है, मूत्राशयके रोगके चिन्होंके साथ पहली आंखके पोपचे सूजजाते हैं, पीछै चहरा तथा हाथ पांवपर सोजन आता है, आखर पेट वढता है, मूत्राशयके जलंदरमें किसी २ वखत हाथ पांव चहरा तथा पेट वहुत सूज जाता है, जिस करके रोगी वडे मुस्किलसें वैठकर ऊठ सकता हे आंख मिच जाती है हाथ पांव तथा वृषण इतने सब तंग होकर फूलता है किसी वखत फूटकर उसमेंसें पाणी झरता है.

इलाज–वहोत करके उदररोगोंका तथा सोजेका इलाज जलंदर रोगकू फायदा करता है उदर रोगके पेटेमें जलोदरका इलाज लिखेगें अथवा थोडे इलाज नीचै लिखते हैं.

(१) दूध सव खुराक तथा पाणी वंध करके इकेले दूधपर रखणा तथा दूधके संग योग्य दवा देणी जेसे नारसिंह आरोग्यवर्द्धनी विजयवटी दुग्धवटी नारसिंह वगेरे साधारण वैद्योंकेपास दवा मिलेगी नहीनवण सकती है प्रख्यात वैद्योकेपास मिलेगी हमारे दवाशालामें मिलसकती है. (२) गोमूत्र इकेला अथवा दुसरी दवाके संग पीणेसें फायदा होता है (३) त्रिकटू पांचों निमक चित्रक जवाखार टकणखार इनोंका चूर्ण त्रिफलाके क्वाथमें लेणा (४) सूंठ मिरच टंकण साजीखार गंधक– सम भाग शुद्ध किया भया जमालगोटा दो भाग इनोंकी दो २ रत्तीकी गोलियो करणी मात्रा १ गोली (रोगीकी शक्ति देख वहोत हुसियारीसे देणी. एसी जमालगोटेकी दवा दरहमेस नहीं देणी.)

अंग्रेजी इलाज– पांडू नाताकती तथा तिल्लीका जलंदर भया होयतो (४) लोह भस्म मंडूर भस्म क्वीनाइन और एसी दुसरीभी पौष्टिक दवायें तथा दूध वगेरे खुराक देणा (६) नं०५९५–५९६ तथा न०६९९ वाली मेलवणिये उपयोगमें लेणा और दस्तकी कब्जी होयतो एरंडी तेल एलिया सोनामुखी वगेरेका उपयोग करणा.

रक्ताशयका जलंदर–मुस्कलसें मिटसकाता है इसमें पेशाव तथा दस्त खुलासा लाणेवाली दवा देणी नीचेका मिक्श्चर इस कामकेवास्ते अच्छा है (७) क्रीम ओफ टार्टर १ ड्राम टिंकचर ओफ स्कील २० बूंद स्पिरिट नाइट्रिकइथर १॥ ड्राम केम्फर वोटर ४ औंस मिलाकर उसके तीन हिस्से हमेस तीन वखत देणी इसके सिवाय पेशाव साफ लाणेवास्ते (८) सोरा अलसीकीचा तथा मूलेका रस पिलाणा और सोनामुखी तथा विलायती निमक देकर दस्त साफ लाणा नं० ७१३ का उसका–कलेजेके जलंदरगं– पेशाववास्ते ऊपर लिखी दवा देणी इसके सिवाय (न० ७११ तथा ७१२ का हकीमी नुसके देणा मूत्राशयके जलदरमें तीक्ष्णरूपमें पेशाव वधाणेकी दवा देणी नहीं तीक्ष्ण सूजन होयतो गरम पाणीका शेक करणा राईका पलास्टर मारणा पोटिस वांधणी (१०) नं० ५९८ की मिलावट देणी तथा वुखार नहीं होयतो और रोग पुराणा पडगया

होयतो जवकीचा सोराखार तथा एपीकाक्युआन्हा वाइन मिलाकर वेर २ देणा अथवा इकेला लीकर आमोनी एसेटेटीस २ औंसमें ४ औंस पाणी मिलाकर चार छ वखत देणा, (होमियोपथिक इलाज).

सव शरीरका जलंदर–एपोसाइनम, आर्सेनिकम. ब्रायोनिया वगेरे (मूत्राशयका जलंदर) केन्थेरीस टेरेबिन्थ आर्सेनिक.

(पेटका जलंदर) एपोसाइनम आर्सेनिकम वगेरे.

(यकृतका जलंदर) पोडोफाइलम पल्सेटीला चाईना आर्सेनिकम कालीकार्व वगेरे.

(रक्ताशयका जलंदर) डीजीटेलीस आर्सेनिकम वगेरे.

(गर्भाशयका जलंदर) आर्सेनिकम आयोडाइन सेनिसीया.

उदररोग.

(कारण) जठराग्नि मंद पडणेसें जेसें दुसरे रोग होते हैं तेसें उदर रोगभी होता है अजीर्णसें अति दोष करणेवाला अन्नपानसें दोष तथा मलकी अत्यंत बढोतरीसें उदररोग होता है संचय भया दोष पसीना तथा जलकुं वहणेवाले रस्तोंकूं रोक जठराग्निकूं प्राण-वायूकूं तथा अपानवायूकूं दूपितकर उदरके रोगोंकूं पैदा करता है.

(प्रकार) उदररोग आठ प्रकारका है वायूसे १ वातोदर, पित्तसे (२) पित्तोदर-कफसें (३) कफोदर तीन दोषसें (४) सन्निपातोदर प्लीह तिल्ली वढणेसें प्लीहोदर गुदाका रस्ता रुकणेसें (६) बद्धगुदोदर आंतमें जखम पडणेसें (७) क्षतोदर और पेटमें पाणीका जमाव होणेसें (८) दकोदर याने जलोदर पैदा होता है, एसें उदरके आठ रोग होते हैं.

लक्षण–पेट ढमढोल चलणेकी अशक्ति वदन दुबला जठराग्नि मंद सूजन ग्लानी अपान वायू (पाद) तथा दस्तका रुकना जलण आलस नींद वगेरे लक्षण सब उदररोगोंमें होता है.

(१) वातोदर–हाथ पांव नाभि तथा पेटमें सोजा पेटके दोनों पांसोंमें मध्यमें कमरमें तथा पीठमें दरद सांधाओंमें फूटणी सूकीखासी अंगमें भारीपणा मलका संचय चमडीपर कालापणा दरदका कमवेशीपणा पेटमें सुइ-चुभाणेकेसीपीडा पेटपर बजानेमें धमन जेसा अवाज होना ये और भी केइयक वातोदरके लक्षण होते हैं, (२) पित्तोदर–बुखार मूर्छा प्यास चक्कर दस्त चमडी आंख तथा नाखूनमें पीलापना पेटके अंदर उष्णता बाहरदाह पसीना पेटपर हरापणा लाल पीलेरंगकी रगें ऊगसआना आहारका पाचन जल्दी होय और बहोत दुखे (३) कफोदर–सूजन भारीपणा ग्लानी नींद जादा जादा सर्दीका ज्ञान नहीं रहे अरुची चमडीका रंग फीका सुपेद पेट करडा और सुपेदरगें दिखाईदे बडा और बहोत मुद्दतमें बढणेवाला सजड स्पर्शमें ठंढा बोझवाला

और अवाज विगरका होता है (४) सन्निपातोदर—खराव दुष्ट पदार्थ खाणेसें जहर खाणेसें सडे जलके पीणेसें इत्यादि कारणसें रक्त तथा वातादिक दोप वहोतही दुष्ट होकर इस दुष्ट उदररोगकूं पैदा करता है, इसवास्ते कोइ २ ग्रंथकार इसरोगकूं दुष्योदर भी कहते हैं, वेर २ मूर्छा वदनका रंग सुपेद अति दुवलापणा और शोप होता है, (५) प्लीहोदर—तिल्लीके वढणेसें जो चिन्ह होते हैं, वो सव प्लीहोदरका समझना सूक्ष्मवुखार मंदाग्नि रंगसुपेद इसीतरे दहिने तरफ यकृत वढता है, उसकूं यकृतोदर कहते हैं, (६) क्षतोदर—अन्नकेसंग अथवा दुसरीतरे पेटमे खाणेमें आयाभया कांटाकंकर वगेरोसें आंतरेमें छिद्र पडके उसमेंसें निकलता भया पाणी जेसागुदाके रस्ते निकले और सूंटीके नीचेके भागमें पेट वधे सूइ चुभाणे जेसी तथा चीरणे जेसा दरद होय (७) वद्धगुदोदर—अन्न शागवगेरे चिपटके रहनेवाला पदार्थ रेती तथा और कचरेसें आंतरेके नलमें मल जमा होजाय गुदाका मल रुकजाय और कष्टसें थोडा २ दस्त उतरे और रिदय तथा नाभिके वीचमें पेट वधे (८) जलोदर—घी तेल जेसा चिकणा पदार्थ पिये पीछे चिकणी दवा खाये पीछे उलटी भयां पीछे जुलावलियां पीछै जो तुरत ठंढा जल पीनेमें आवे तो वो रस वाहनी नलियों तुरत विगडकर वो नलियो तेल जेसें चिकणे पदार्थोसे लिपायजाकर जलोदर पैदा होता है, पेट वधणा सरू होता है, तव नाभीके आगेसें उपसा भया लगता है, औरतोंके वच्चे जणते वखत जेसी पीडा होती है, एसी पीडा होती है, और पाणीकी पखालकी तरे लचक २ और डव २ कर हलता है, तथा वजता है.

(इलाज)—उदरके सवरोग कष्टसाध्य याने मुस्कलसें मिटे जेसा है, जव उदररोग मिटता नहीं तव आखर २ पाणी भरनेसें जलोदर होजाता है, और जलोदरके दशहज्जार रोगीयोमेंसें एक रोगी वचता है, एसा वैद्यकशास्त्रमें परमात्मा ऋपभ अरिहंतका वचन है, (श्लोक) शतेपु जीवते कुष्टी, सहस्रेपु जलोदरी, मेही शतसहस्रेपु, राजरोगी नजीवति१ तोभी परमात्माने एसा उत्तम प्रयोग लिखा है, सो उसका युक्तिसें आसरा लेणेसे वहोतसे उपद्रव अच्छा होसकते हैं, उदरका और सोजेका इलाज मिलतेसे होते हैं,और इस इला-जोंमें दस्तकी दवा विरेच मुख्य है, लेकिन् वो जुलाव एसा होणा चाहीये रोगीकी ताकतकूं कायम रखकर दोपकूं दस्तके रस्ते या पेसावके रस्ते निकालदेवे उदररोगकी [illegible]ग हालतमें नीचे लिखे सो साधारण इलाज करणा लेकिन् वध गये पीछे इन इला-[illegible] कोईभी असर होगा नहीं रोग वढगये पीछे चतुर वैद्य और डाक्तरोंका आश्रय

(१) एरंडीका तेल दसमूल और गोमूत्र ये तीनो चीज गुणकरती है, (२) उपलेट [illegible]लगोटा जवखार, दुगण संठ, मिरच पींपर सांचानिमक संभरनिमक संचल नच जीरा [illegible]वाण तली भई हींग सज्जीखार चव्यचित्रक इनोंका चूर्ण जलसें पीणा (३) तूचा-[illegible]रा जिसमें अजवाण भरणा फेर धूपमें धरना वाद सुकाके कूटना उसमें सूठ काली-

मिरच पींपर चित्रक चव्य पींपलामूल वायविडंग हरडेकी छाल बहेडाकी छाल आवला तज तमालपत्र बडी इलायची छोटी इलायची नागकेशर दोनूं जीरा अजमोद सोरा नोसादर साजीखार जवखार पापडखार इत्यादिक जो जो खार मिले सो सब जेसें अमलीका आंधी झाडेका कुवारपठेका पलासका इत्यादि मिलादेना सोनामुखी निशोतकी छाल कपीला कुटकी चिरायता नीमके सूकेपत्ते दारूहलदी एरंडीकी जड नागरमोथा इंद्रजव ये सब चीज एकेक तोला ले कूटकर मिलाणा बाद कवारपठेके रसकी सातभावना सात अमलीके रसकी सात तूंबेके रसकी देकर रख छोडना बचेकुं २ मासातक देना वडेकु पांच मासातक पथ्य दूधभात मिश्री इससे सर्व उदररोग जाय ये चीज हमने कई जगे पतवाई है, पाणी थोडा सोडा डालके पिलाना या तीन उकालेका ठारके पिलाना बाद खीचडी दालभात चंद लियेका साग देणा (४) मारवाडमें चूइ होती है, उसकी जड कूटकर २।३ मासा जलसें फकी देना इससें दस्त लगकर साफ होता है, पथ्य दूधभात (५) लसन १०० तोला जल २५६ तोलाभर इसका क्वाथ करना पीछे उसमें सूठ मिरच पींपर हरडे बहेडा आंवला जमालगोटा हींग सींधानिमक चित्रक देवदारू वच उपलेट सहजना साटेकी जड संचल वायविडंग अजवान तथा गजपींपर ये हरेक ४ चार २ तोला और निसोतकी छाल २४ तोला इन सबोंकों पीस चटनी करनी और उसमें क्वाथ बराबर तेल डाल तेलपकाना ये तेल उदरके सबरोग तथा वायुके सबरोग मिटाता है, (६) पीपर तथा सींधानिमक डाली भई खट्टी छाछ पीणी (७) त्रिफलेका चूर्ण गोमूत्रमें पीणा–(पित्तोदर)–निशोतकाकल्क एरंडकी जडका क्वाथ और दूध इससें जुलाब लेना (२) मिश्री तथा मिरचका चूर्ण मिलाकर ताजी मीठी छाछपीणी (३) निशोत तथा त्रिफलाके उकालीमें सिद्ध किया भया घी पीणा–(कफोदर)–(१) निशोतका चूर्ण सांड (ऊंटनीके) दूधमें पीणा (२) सोवासींधानिमक जीरा सूंठ मिरच पींपर इनोका चूर्ण मिलाके छाछ पीणा (३) गरम जलसें वेर २ पेटपर शेक करना (४) कुलथीके क्वाथमें त्रिकटुका चूर्ण डाल पीना दूधमें एरंडीतेल पीणा–सन्निपातोदर–(१) जो हरडे निर्गुडीका रस गोमुत्रमें पीणा (२) त्रिकटु जवखार सींधालून छाछमें पीणा (३) चंद्रियेकी जड जलमें पीस इसमें चोगुणा घी और घीसे चोगुणा दूध डाल उकालकर घी तइयार करणा इस घीसे सब जहरोंका नास होता है, (प्लीहोदर)–यकृतोदर–(१) निगोडकारस २ तोला और गोमूत्र २ तोला (२) लालरोहीडा और हरडेका कल्ककर गोमूत्रमें अथवा भेंसके मूत्रमें पीणा (३) लसण पीपलामूल हरडे जोहरडे पीस गोमूत्रमें पीना (४) मदनफेकी छालके रसमें सींधानिमक चित्रक पीपर तथा खाखरेका जवखार डालके पीणा (५) कवारपठेका रस हलदी डालकर पीणा (६) पीपर और महत डालकर छाछ पीणी (७) जो हरडे तथा लालरोहीडेकी छालका क्वाथकर उसमें अ

जलोदरका इलाज.

खार तथा छोटी पीपरका चूर्ण डालकर प्रभातसमें पीणा (८) कवारपठेके रसमें हलदीं डालकर पीणेसें तापतिल्ली मिटती है (९) मिलावा ३ भाग जोहरडे तीन भाग वायविडंग ३ भाग स्याहजीरा १ भाग इनोकी गोलीकर सातदिन खाणी (१०) सहजणेकी छालके उकालेमें शंखभस्म देणी (११) नींवूके रसमें शंखभस्म देणी (सोथोदर)–पेट जब चढता है, तब अंगपर सवमें सूजन आती है, उसकूं सोफोदर कहते हैं (१) पुनर्नवादि क्वाथ कहते हैं, क्वाथ अछा है, साटेकीजड गिलोय देवदारू हरडे सूंठ इसकू पुनर्नवादि क्वाथ कहते हैं, इसमें गूगल तथा गोमूत्र डाल पीणेसें सोजेवाला पेट मिटता है, (२) पुनर्नवादि क्वाथ दुसरा, साटेकीजड जोहरडे, कडवे नींवकी छाल, दारूहलदी कुटकी पटोल गिलोय सूंठ इसका क्वाथ गोमूत्रडाल पीणा (३) पीपर तथा सूंठका चूर्ण गुडमें मिलाकर देणा (४) त्रिफला गोमूत्रमें पीकर दूधभात ३ घंटेवाद पथ्य लेणा–(जलोदर)–(१) मिलावादेणा पथ्य दूधभात (२) त्रिकटू तथा निमक छाछमें पीणा (३) सहजणेका क्वाथ देणा (४) ऊंठनीका दूध पीणा (५) अर्कादि क्वाथ–गजपींपर सूंठ मिरच पीपर तथा सींधानिमक सम वजन और आककी छाल सवके वजनसे वीसमा भाग इसका क्वाथ पीणा (६) जमालगोटा अथवा दंतीमूल नेपालेकूं सोध उसमें दुगणा कथा मिलाकर रती २ की गोलियां करणी दस्तलगे वाद पथ्य दूधभात (७) दंतीमूल ५ सेर निशोत ५ सेर हरडे वडी नग २५ इन सवोकू २॥ मण पाणीमें उकाल अष्टमांस वाकी रहे तव ऊतारकर पाणी छाणकर हरडोकूं सावूत निकालकर तेलमें तलणी पीछे ५ सेर गुडकी चासनीकर उसमें हरडे तथा नीचे लिखी चीजोंका चूर्णडाल पाक वणाना–निशोत छाल ३२ तोला छोटी पींपर सूंठ आठ २ तोला सहत ३२ तोला तज तमालपत्र इलायची नागकेशर ये एकेक आठ २ तोला (८) पेशाव लानेवाली पसीना लानेवाली और दस्तावर दवा देनी (सव उदररोगोका सामान्य इलाज)–(१) रेचन, पाचन, फस्तखोलण,(२)दूध अथवा गोमूत्रमे, एरंडी तेल वेर २ पीणा (३) पीपर वर्द्धमान खानी (४) चव्य चित्रक सूंठ देवदारू इसका क्वाथ निशोतका चूर्ण गोमूत्र मिलाकर पीणा(५)इच्छाभेदीरस(न० ३४१) (उदररोगका पथ्य)–रेच लघण मूंग लालसाठी चावल, पुराणी कुलथी, कांजी मघ सींधानिमक उडद छाछ लसण, एरंडी तेल, अद्रक परवल सहजणेकीफली इलायची नागरवेलके पान वकरी भेंस तथा गऊका दूध तथा मूत्र हलका तीखा और अग्निदीपक अनाज ये सव हितकारक है–(कुपथ्य)–घी वगेरे चिकणे पदार्थोंका सेहपान धूम्रपान उलटी वहोत रस्ते चलना दिनकी नींद आटेमेंसे वनाया पदार्थ जडकरडा अनाज जलके जीवोंका मांस भाजीपाला तिल दाहकरनेवाला अन्न निमक फलीका अनाज खराव जल दस्त कवजकरे एसा अन्नपान ये सव उदररोगकूं हानि करता है.

किरण दूसरी २.

श्वासोच्छ्वासकी क्रियाके रोग.

छातीके अंदर श्वासनली फेफसा रक्ताशय वगेरे बहोतसे जरूरीके मर्मस्थान आये भये है, ये मर्मोके ठिकाणे आपसमें संबंध रखे है, तेसें रक्ताशयके भी संबंध है, तोभी श्वासोच्छासकी क्रिया और खुन फिरनेकी क्रियाके स्थल अलग २ है, और उस २ मर्मस्थानोंके रोगभी जुदे २ है, इसवास्ते इस किरणमें श्वासनलीके रोगोंकी परिक्षा इलाज लिखते हैं, तीसरी किरणमें रक्ताशयके रोग लिखेगें श्वासोश्वासकी क्रियामें श्लेपम कंठनलीका सोजा हांफणी खासी फेफसेका वरम दम क्षय उरक्षत वगेरे रोगोंका समावेश होता है.

(श्लेष्म, सलेपम, शरदी, जुखाम)

(कोराईझा)

(कारण)–जादा करके हवाके फेरफारसें सलेपम होता है, एकही स्थलमें हवाके याने ऋतूकी फेरफारसें जेसें सलेपम होता है, तेसें अदमी एकजगेंसें मुसाफरीकर दुसरी जगें जब जाता है, उसकरके हवाका फेरफार होणेसें कफ बिगडजाता है, सलेपम शरदीसे होता है, और पालर पाणीसें नया अनाज खाणेसें बहोत शरदी हवामें रहणेसें भीजी जमीनपर चूनागचीके अंगणपर सोंनेसें इत्यादिकारणोंसें सलेपम होजाता है, कितनेएकको ये रोग बेर २ होजाता है, और मिट जाता है, इसरोगमें ऊपर लिखे कारणोंसें नाकके अदरके पुडपर सूजन होता है.

(लक्षण)–एसें थोडेही अदमी होयगें सोजिनोंकों सलेपमका अनुभव नही होयगा सरुहोते बलगमके बदनमें बेचेनी हाथपांवोंमे टूटणा शिरमें भारीपणा कमरमें दरद नाकमें सूकापणा छींक दमलेते अडचल और प्रगटलक्षणोंमें गलेमें जलन दाह नाकमें जलन नाक आंखमेंमें पाणी झरे गला बैठजाय जीभपर सुपेद थर थोडासा बुखार भूख मद दस्तकब्ज होय.

(इलाज)--जुखामके रोगमें वैद्य डाक्तरके पाश विरले जाते हैं, लेकिन् इतना याद रखणा चाहिये किसी २ वखत इस निकामें छोटे रोगसें बडे २ असाध्यरोग होणा संभव है, जेमेके पीनस नाककारोग कफकारोग खासी और क्षय जेसा भयकर रोग होजाता है, इसवास्ते छोटासा मरज जांणके छोडना नहीं चाहिये.

(१) रोगीकू घरमें रहना कांजी दलिया दालभात चाह वगेरे हलका और गरमागरम खुराक लेना पांवोंकू गरमपाणीसें झरना पीछे पांव मोजापहराना दूध और पाणी गरमकर या चा करके गरमागरम पिलाना और हलका जुलाब लेणा (२) बलगमका जोर जादा होय ऊपर लिखाइल्याजमें शांत नही पडे तो अरडूसेका स्वरस सहत डालके पिलाना सितोपलादि चूर्ण (न० २२७) सहतमें चाटना अथवा कोरा फाकना सूठ उकाल

चाह डाल पीणा दूध पाणीका अथवा चाका वफारा या नासमे लेणा पोस्तके डोडेका भीगा शेक करना तज लोंग सूंठ वगेरे गरम दवाओंका ललाटपर लेप करना (नं० ६३२) वाली बुकनी अथवा त्रिकटुकी बुकणी सूंघकर कफकूं छुटाना रातकूं एन्टिमोनियल-पाउडर ।३।४। ग्रेन फाककर ऊपर चाह पीनी अथवा डोवर्सपाउडर दस ग्रेन, सोते वखत लेकर फजरमें दस्त साफ लानेकुं एक हलका जुलाव लेना हरडेकी फकी सिडली-झपाउडर अथवा एप्समसोल्टका जुलाव लेना (नं० ८१५) तथा ८१६ काहकीमी उसका देना (३) जुखाम शरदी पुरानी होकर झरे वाद दूध और पाणी सम वजन मिला-कर उसमें सूंठके टुकडे आठ आनेभर मिश्री आठ आनेभर केशर १ रत्ती विदामके गोटे ५ डालकर जलजले जहांतक उकाल दूध छानलेना और विदाम चवाकर दूध पीजाना और जल पियेविगर सूजाना ये प्रयोग सोतेवखत करना अकलकरा पींपलामूल पींपर सुपेद मिरच ये चारों सम वजन मिलाकर इनोंकी थोडी फकी पानमें धरकर चावलेना (नं० ३६५, ३६८, ३६९, ३७०) में लिखे भये दवायोंका वहोतदिनोंतक सेवन करना

(कंठनलीका सोजा)

(लारीन्जाइटीस)

(कारण)–ठंढ और शरदीसें कंठकी नलीमें सोजन होजाता है, नुकशान करनेवाला धूआं अथवा धूडगलेमें जाणेसें अथवा गरमागरम पाणी पीजानेसें तैसें उपदंससे भी ये रोग होता है.

(लक्षण)–विशेषकरके ये रोग वचोंके होता है, श्वास तथा नाडी जलदी चलती है, श्वास लेते गलेमेंसें तीक्ष्ण अवाज निकलता है, छाती तथा वायुनली उछलती है, गला वैठ जाताहै, वेचेनी वहोत रहती है, और १ दिनसें ५ दिनके अंदर गलेकी सूजनसें रोगी मरता है, अथवा अछा होजाता है.

(इलाज)–तीक्ष्ण सोजा वहोत भयंकर होता है रोगी तकदीरसेंही वचता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजव तो मुखरोगीकुं दूध कुपथ्य है, मूंगकी दाल वगेरे हलका सादा और पतला पदार्थ देणा चाहिये, दाक्तरलोक दूध चावलोका दलिया पतला पथ्य दिलाते इस रोगीकूं गरम और तेज खुराक कभी देणा नहीं वायूनलीपर गरमपाणीका सेक करणा विलस्टर अथवा जोक लगणा और सोजन नरम करणेकू रोगीका गूंगाट और घभराट मिटाणेकूं उलटीकी दवा देणी मेणफल अथवा इपीका क्युअनाकी भूकी पिलाकर उलटी कराणी अरडूसेका पुटपाक अथवा स्वरस सहत डालकर पीणा और छाती तथा गलेपर अरडूसेके पत्ते वाफकर वांधना नं० ६३३ का मिक्चर देणा अथवा इस्केला इपीका क्यु अन्हावाइन उन मान मुजव जलमें मिलाकर पिलाणा.

किरण दूसरी २.

श्वासोच्छ्वासकी क्रियाके रोग.

छातीके अंदर श्वासनली फेफसा रक्ताशय वगेरे वहोतसे जरूरीके मर्मस्थान आये भये है, ये मर्मोके ठिकाणे आपसमें संबंध रखे है, तेसें रक्ताशयके भी संबंध है, तोभी श्वासोच्छ्वासकी क्रिया और खुन फिरनेकी क्रियाके स्थल अलग २ है, और उस २ मर्मस्थानोंके रोगभी जुदे २ है, इसवास्ते इस किरणमें श्वासनलीके रोगोंकी परिक्षा इलाज लिखते हैं, तीसरी किरणमें रक्ताशयके रोग लिखेगें श्वासोश्वासकी क्रियामें श्लेपम कंठनलीका सोजा हांफणी खासी फेफसेका वरम दम क्षय उरक्षत वगेरे रोगोंका समावेश होता है.

(श्लेष्म, सलेपम, शरदी, जुखाम)

(कोराईझा)

(कारण)--जादा करके हवाके फेरफारसें सलेपम होता है, एकही स्थलमें हवाके याने ऋतूकी फेरफारसें जेसें सलेपम होता है, तेसें अदमी एकजगेंसें मुसाफरीकर दुसरी जगें जब जाता है, उसकरके हवाका फेरफार होणेसें कफ विगडजाता है, सलेपम शरदीसे होता है, और पालर पाणीसें नया अनाज खाणेसें वहोत शरदी हवामें रहणेसें भीजी जमीनपर चूनागचीके अंगणपर सोंनेसें इत्यादिकारणोंसें सलेपम होजाता है, कितनेएकको ये रोग वेर २ होजाता है, और मिट जाता है, इसरोगमें ऊपर लिखे कारणोंसें नाकके अंदरके पुडपर सूजन होता है.

(लक्षण)--एसे थोडेही अदमी होयगें सोजिनोंको सलेपमका अनुभव नहीं होयगा सरुहोते वलगमके वदनमें वेचेनी हाथपांवोंमे टूटणा शिरमें भारीपणा कमरमें दरद नाकमें सूकापणा छींक दमलेते अडचल और प्रगटलक्षणोंमें गलेमें जलन दाह नाकमें जलन नाक आंखमेंसें पाणी झरे गला वेठजाय जीभपर सुपेद थर थोडासा बुखार भूख मंद दस्तक ब्ज होय.

(इलाज)--जुखामके रोगमें वैद्य डाक्तरके पाश विरले जाते हैं, लेकिन् इतना या दरखणा चाहिये किसी २ वखत इस निकामे छोटे रोगसें वडे २ असाध्यरोग होणा संभव है, जेसेके पीनस नाककारोग कफकारोग खासी और क्षय जेसा भयंकर रोग होजाता है, इसवास्ते छोटासा मरज जांणके छोडना नहीं चाहिये.

(१) रोगीकूं घरमें रहना कांजी दलिया दालभात चाह वगेरे हलका और गरमागरम खुराक लेना पांवोंकूं गरमपाणीसें झरना पीछे पांव मोजापहराना दूध और पाणी गरम कर या चा करके गरमागरम पिलाना और हलका जुलाब लेणा (२) वलगमका जोर जादा होय ऊपर लिखाइलाजसें शांत नहीं पडे तो-अरडूसेका स्वरस महत डालके पिलाना सितोपलादि चूर्ण (नं० २२७) महतमें चाटना अथवा कोरा फाकना सूंठ उकाल

उदररोग इलाज.

...ाह डाल पीणा दूध पाणीका अथवा चाका चफारा या नासमे लेणा पोस्तके डोडेका भीगा
...शेक करना तज लोंग सूंठ वगेरे गरम दवायोंका ललाटपर लेप करना (नं० ६३२)
वाली बुकनी अथवा त्रिकटुकी बुकणी सूघकर कफकूं छुटाना रातकूं एन्टिमोनियल-
पाउडर ।३।४। ग्रेन फाककर ऊपर चाह पीनी अथवा डोवर्सपाउडर दस ग्रेन, सोते
वखत लेकर फजरमें दस्त साफ लानेकुं एक हलका जुलाव लेना हरडेकी फकी सिडली-
झपाउडर अथवा एप्समसोल्टका जुलाव लेना (नं० ८१५) तथा ८१६ काहकीमी
उसका देना (२) जुखाम शरदी पुरानी होकर झरे बाद दूध और पाणी सम वजन मिला-
कर उसमें सूंठके टुकडे आठ आनेभर मिश्री आठ आनेभर केशर १ रत्ती बिदामके गोटे
५ डालकर जलजले जहांतक उकाल दूध छानलेना और बिदाम चबाकर दूध पीजाना
और जल पियेविगर सूजाना ये प्रयोग सोतेवखत करना अकलकरा पींपलामूल पींपर
सुपेद मिरच ये चारों सम वजन मिलाकर इनोंकी थोडी फकी पानमें धरकर चावलेना
(नं० ३६५, ३६८, ३६९, ३७०) में लिखे भये दवायोंका बहोतदिनोतक सेवन करना

(कंठनलीका सोजा)

(लारीन्जाइटीस)

(कारण)—ठंढ और शरदीसें कंठकी नलीमें सोजन होजाता है, नुकशान करनेवाला धूआं अथवा धूडगलेमें जाणेसें अथवा गरमागरम पाणी पीजानेसें तैसें उपदंससे भी ये रोग होता है.

(लक्षण)—विशेषकरके ये रोग बच्चोंके होता है, श्वास तथा नाडी जलदी चलती है, श्वास लेते गलेमेंसें तीक्ष्ण अवाज निकलता है, छाती तथा वायुनली उछलती है, गला बैठ जाताहै, बेचेनी बहोत रहती है, और १ दिनसें ५ दिनके अंदर गलेकी सूजनसें रोगी मरता है, अथवा अछा होजाता है.

(इलाज)—तीक्ष्ण सोजा बहोत भयंकर होता है रोगी तकदीरसेंही बचता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजब तो गुखरोगीकुं दूध कुपथ्य है, मूगकी दाल वगेरे हलका सादा और पतला पदार्थ देणा चाहिये, दाक्तरलोक दूध चावलोका दलिया पतला पथ्य दिलाते इस रोगीकू गरम और तेज खुराक कभी देणा नहीं वायूनलीपर गरमपाणीका सेक करणा बिलस्टर अथवा जोक लगणाा और सोजन नरम करणेकू रोगीका गूंगाट और घभराट मिटाणेकू उलटीकी दवा देणी मेणफल अथवा इपीका क्युअनाकी भूकी पिलाकर उलटी कराणी अरडूसेका पुटपाक अथवा स्वरस सहत डालकर पीणा और छाती तथा गलेपर अरडूसेके पत्ते बाफकर बांधना नं० ६३३ का मिक्श्चर देणा अथवा इकेला इपीका क्यु... ...उन मान मुजब जलमें मिलाकर पिलाणा.

(कासश्वास, दम)
(ब्रोनकाईटिझ)

(कारण)–काशश्वास अथवा हांफणीका रोग होणेका वहोतसे कारण है, शरदी उसका मुख्य कारण है, शरदी करणेवाले आहार विहारसे हांफणीका रोग होजाता है, वायूनलीके दरदोमें काशश्वासका दरद होजाता है, जेसेके अर्बुद वगेरे गांठोके लिये तेसें वायूनलीमें धूल धातू तेसें हवामें उडते भये रजकण अंदर जाणेसें वरम होकर दमका रोग होता है, फेफसेका दरद रक्ताशयका रोग बुखार नाताकती संधिवायू वगेरे रोगोंसे भी दमका रोग होजाता है, नलीमे सोजन होणेसे अंदरका सलेपम पुडत सूजकर लाल होजाता है, पहली वो पुडकोराहोता है, और पीछे उसमेंसें कफ गिरता है, पहले झाग जेसा कफ गिरता है, पीछेसें पका भया पीला अथवा पीप जेसा कफ निकलता है, नलियोंके दोनों तरफका वरम पुडत आपसमें मिलाजाता है, इस सोजेके सवव अंदर कफ भरजाणेसें हवाकूं आने जानेकूं चहिये इतना रस्ता नही मिलणेसें। खासीके संग श्वास चढता है.

(लक्षण)–दमके रोगमें जादा करके हमेसां बुखार आता है, तव नाडी जलद चलती है, पेशाव लाल उतरता है, छातीमे दरद होता है, श्वास रुकजाता है, कफ गिरता है, कितनेक रोगमें पहली सलेपम होकर पीछे ये रोग होता है, उसमें गला आजाता है, कंठमे घरघराट वोलता है, ठंढ देके बुखार चढ आता है, भूख मंद होती है, दस्त कब्ज होता है, जीभपर सुपेद थर जमती है, पीठ अथवा छातीकी हड्डीमें दरद होता है, खासी आती है, श्वास जलदी चलता है, छाती भीडाती है, हांफणी वोलती है, सोणेसे खासी जादा चलती है, जो वरम महीन नलियोंमें भया होता है, तो छातीमें दरद होता नहीं लेकिन् खासीसे पसलियां दुखती है, श्वास जोरसें चलता है, कफ वोलता है, दमके जोरसे सोणे नहीं पाता खासी वहोत जोरसें वेर २ आती है, चिकणा कफ वहोत मुस्किलसें निकलता है, बुखार जादा चढता है, और जो फायदा नहीं होय तो नाताकती वढकर कफ निकल नहीं सकता और वदन ठंढा पडणे लगता है. इस रोगवालेकी छाती उपसीभई तथा वडी मालम देती है पांसली तथा पेट उछलता है. और छाती ठोककर वजाणेमे पोकल आवाज आती है, और श्वासका अवाज मोटा और उंचा सुणाई देता है, कफका जोर जादा होता है, तो छाती ठोकणेका अवाज भदा मालम देता है.

(इलाज)–(१) दमके रोगमें श्वासनलीमें सोजा होतेजाता है इसवास्ते उस सोजेकूं मिटानेका इलाज करणा रोगीकूं मकानके अंदर विछोणेमें रखणा गरमकपडे पहराना तथा ओडाना शरदीके संग हांफणी भई होयतो खूबपसीना आवे ऐसा इलाज करना

श्वासरोग इलाज.

सो इसतरे, पाणीमें राई डालकर गरमकर पांवोंपर झारना छातीपर राई पीसकर धरणा पाणीमें छुगदीकर तथा फुलालेण वगेरे गरम कपडा बांधणा श्वासके संग गरम पाणीका वफारा लेना छातीपर गरम पाणीका शेककरणा अथवा अलसीकी पोटिस वेर २ गरमा-गरम धरणा आखर जरूरी पडे तों डाक्टरके पास विलस्टरभी धरवाणा (२) सरुआतमें (नं० २२३) का शृंग्यादि चूर्ण सहतमें देणा अथवा डोवर्सपाउडर देणा (३) क्षुद्रादि काथ (नं० २१३) अथवा इकेली मूरींगणीका चूर्ण अथवा उकाला सहत डालकर देणेसें भी श्वास नरम पडता है (४) सुदर्शन चूर्ण (नं० ३२) में अथवा महासुदर्शन चूर्ण नांमी वैद्योके पासही खरा मिलता है, उसकूं अरडूसेके स्वरसमें सहत मिलाकर पिलाणा (५) बच्चोंके वास्ते पहली लिखा जो शृंग्यादि चूर्ण सहतमें चटाणेसे बच्चोंकी हाफनी मिटाती है, सितावके पत्तोंकूं पीस एक दोय, कालीमिरचके संग पिलाना तेसें छातीपर गरमकर पीसे भया बांधणा (६) कफका जोर होयतो उलटीकी दवा देकर कफकूं निकाल डालना उसकी विधि सलेष्म प्रकरणमें लिखाही है, (७) श्वास कास अथवा हांफणीका रोग भये पीछे ये देशी इलाज देकरके पतवाना इन दवायोकूं युक्ति मुजब वहोत दिनोंतक सेवनकरणेसें ताकत आकर रोग मिटजाता है.

(१) शितोपलादि चूर्ण (नं० २२७) अनुपान घी सहत मात्रा ३ मासा.
(२) अग्निरश (नं० ३४४) अनुपान घी सहत वुखार नहीं होयतो देणा.
(३) आनंदभैरव रस (नं० ३३२) अनुपान नागरवेलके पान अथवा जल.
(४) सुवर्णमालनी वसंत (नं० ३३७) अनुपान सहत पीपर सहत अथवा शितो-पलादि घी तथा सहत (५) लघुमृगांक रश (नं० ३३५) अनुपानसहत (६) कट-कारी अवलेह (नं० २६२) श्वास हिचकीके संग हांफणी मिटावे (७) हरीतकी अवलेह (नं० २६४) श्वासकाशका वहोत आछा इलाज है, ऊपरलिखी दवाइयां पुराणा श्वासकासके ऊपर अछी फायदेमद है, उसमें भी १, ४ और ७ के अंकवाली दवायोसे वहोत वरसका पुराणा श्वासकासयाने हांफनीका रोग अछे भये हमारे अनुभवी इलाज है, इसवास्ते पूर्णविद्वान वैद्यके पाससे एसी दवा मंगाकरके वापरणा एसी हमारी शिक्षा है, (अंग्रेजी इलाज)-(नं० ४८४, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७) मिक्श्चर अवस्था तथा हांफणीकी चलाचल जाति विचा-रके उपयोगमें लेना (विशेप पथ्य सूचना)-रोगीकूं अछा खुराक वकरीका दूध अथवा चावलोंके दलिये घाटमे वकरीका दूध मुख्य खुराकदेणा तेल मिरच खटाई वगेरे सर्व तेज और दाहक और मादक पदार्थोका त्याग करना वहोत वुखार होय तो ऊपर लिखे इलाजोके संग ज्वरहरदवाई तथा क्निाइन देणा नाताकती जादा होयतो अंग्रेजीवाले

ब्रांडी देते है. देशी द्राक्षासव, आर्यलोंकोने कस्तूरी अंबर केशर दूधमे उकालकर गरीबने लोबानके फूलपानके रसमे या दूधमें गरमी कायम रखणी और ताकत.

खासी—उधरस—काश.

(शिक्षा)—श्वास तथा शरदीके संगकी खासी इनोका इलाज पहली लिखदिया है, ये सबमें फायदेमंद है, तोभी खासीका विशेष इलाज लिखते हैं, देशीशास्त्रमें खासी पांचप्रकारकी है, वायूकी १ पित्तकी २ कफकी ३ क्षत छातीमें जखम पडणेकी ४ और क्षयकी ५ इसमें पिछली दो असाध्य है, वृद्धअवस्था और मांसक्षीणकी भी खासी असाध्य है, आखरीका इलाज क्षत और क्षयका जाणलेना तीनों खासीका इलाज लिखते हैं.

कारण तथा लक्षण पहली जो कासश्वासमें लिखा है, वोही है.

(वादीके कासका इलाज)—(१) सूंठ धमासा काकडासींगी मुनका कचूर मिश्री इनोका चूर्ण तेलमें चाटणा (२) सूंठ भाडंगीजड पीपर कायफल कचूर इनोका चूर्ण तेलमें चाटणा मिश्रीभी मिलादेणी.

(पित्तकी खासी)—(३) अरडूसेके पत्ते गिलोय भूरींगणीका काथ सहतडालकर पीणा (४) दाख आंवला खजूर पीपर मिरच चूर्ण सहत तथा घीमें चाटणा (५) कचूर वाला रींगणी सूंठ तथा मिश्रीका काथकर पीणा (६) सूंठ दशमूल पींपर तथा दाखके काथमें उकाला भया दूध मिश्री डालकर पीणा (७) खजूर पींपर दाख मिश्री जव धाणीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटणा (८) भेंस बकरी तथा गऊके दूधमें इतनाहीं कचे आवलेका रश अथवा सूके आंवलेका उकाला मिलाकर उसमें घी पकाकर खाणा (९) दाख आंवला खजूर पींपर मिरच चूर्ण सहत तथा घीमें चाटना.

(कफजन्यखास) (१०) नागरमोथा तथा पींपरका चूर्ण सहत तथा घीमें चाटणा (११) बहेडेका चूर्ण घीमें मिलाय पत्तोंसे लपेट पुटपाककर मूंमें रखणा(१२) अरडूसेके पत्तेके रशमें सहत डालकर पीणा (१३) सूंठ पीपर तथा कुलथीका काथ (१४) कचूर अतीस मोथ काकडाशींगी हरडे सूंठ इनोंका चूर्ण हींग तथा सींधा निमक मिलाकर छाछ पीणी.

(खासीका सामान्य इलाज) (१५) आदेका रस सहत गरमकर (१६) मिरच काढीका चूर्ण सहत मिश्रीमें (१७) त्रिकटूका चूर्ण सहत तथा घीमें (१८) पारा गंधक जवखार संचल ४ मिरच ५ इस भाग मुजब एकत्रकर आदेके रशमें खरलकर गोली करके देणी (१९) बहेडेकी छाल २ पींपलामूल १ भाग सहतमें चाटणा (२०) पींपर पीपरामूल सूंठ और बहेडेकी छाल चूर्ण सहतमें देणा (२१) लोंग मिरच बहेडा सम भाग सबोंके बराबर खेरसार अथवा कत्था मिलाकर बबूलके छालके काथमें गोली करके चूसाणी (२२) बकरीका मूत्रमें बहेडाकी छालकू बाफकर सहतमें

चटाणा (२३) पारा १ गधक २ पींपर ३ बहेडेकी छाल ५ हरडेकी छाल ४ काकडासींगी ६ पीसकर बंबूलके छालमें कितनेक दिन घोटकर गोली करके देणी (२४) काली मिरच १ पींपर १ अनार विलायती छाल ५ जवखार ॥ इसके बराबर गुड मिलाकर गोली करणी (२५) लोंग १ पींपर १ जायफल १ काली मिरच २ भाग सूंठ ३२ भाग और सबोंकी बराबर मिश्री जलसें फक्की (२६) भीमसेनी कपूर १ भाग कसतूरी १ लोंग १ मिरच २ पींपर २ बहेडेकी छाल २ उपलेट २ दाडमकी छाल १ सबके बराबर खैर सार अथवा कत्था जलमें घोट गोलियें करणी (२७) रींगणी गिलोय सूंठ एरंडीकी जड अरडूसा इनोका क्वाथ (२८) आकका फूल उसके सम वजन मिरच अथवा लोंग पीस गोली करके खाणी (२९) आदा सेर ५ गुडसेर ५ धाणेके पत्ते (कोथमरी) सूंफ लोहचूर तज तमालपत्र इलायची मोथ इनसबोंकी अवलेही बणाय चाटणी इससे अर्श खासी ज्वर पीनस शरदी गोली क्षय इन सबोंपर ये अवलेही फायदेवंद है, (२८) बकरीका मूत्र १०० तोला उसकूं मंद अग्निमें जाड़ाकर उसमें बहेडाकी चूर्ण ८ तोला डालणा तथा पींपर पींपलामूल लोहभस्म चार २ तोला भूरींगणीके फूलकी भूकी आठ तोला डालणी इसकूं दो मासेसें तोलाभरतक सहतमें चाटणा अथवा गरम जलसे पीणा इससे असाध्यची खासी मिटती है. (३१) लोबान ४ कपूर १ भाग अफीम ॥ और नवसादर २ भाग सहतमें वाल २ की गोलिया करणी हमेस तीन टंक तीन गोली लेणी (३२) लोबानका फूल १ रत्ती अफीम पाव रत्ती कपूर पाव रती सहतमें एक गोली इस उनमानकी वणाणी हमेस दो तीन गोली खाणी.

इसके सिवाय इस ग्रथमें आगे हांफणीके रोगमें लिखे भये सबदेशी और अंग्रेजी इलाज खास रोगके प्रसिद्ध है, बडे रोगमें वो खासीके इलाज बहोत फायदेवंद है.

(विशेष सूचना पथ्य) खासीका इलाज नहीं करणेसें क्षय होजाता है, इसवास्ते जलदी इलाज करणा ठंडी शरदी और भीजी जगासे दूर रहणा जमीनपर सोणा नहीं ठंढा तथा कफ करणेवाला पदार्थ खाणा नहीं दिनका सोणा नहीं तेल मिरच खटाईका त्याग करणा रातकूं दही कभी खाणा नहीं पुराणे चावल घी सींधानिकम दरियावका निमक कुलथी तूरकी दाल मूंगकी दाल सोवा चंदलिया वगेरे पदार्थ खासीवालेकों पथ्य है.

दम श्वास हांफणी.

(कारण) श्वासोच्छासकी क्रिया चहिये जिससे जादा चले उसकूं दमका रोग कहते हैं, श्वास जलदी चलणेका वहोतसे कारण है, दुसरे रोगकी निशानी तरीके ये रोग बहोतसे दरदोमें दिखाई देता है, जेसेके खासी फेफसेका सोजा क्षय रक्ताशयका रोग

वगेरे रोगोमें श्वासकी हयाती देखणेमें आती है, लेकिन् इसके अलावा दमके मरज दूसरे स्वतंत्र कारणभी होता है, फेफसेमें हवा जाणेको छोटे छेदोंमें खेंच होणेसें हो है, खेंचताणके लिये ये छेद संकोचाते हैं, उसकरके जितनी चहिये हवा फेफसे दाखल नहीं होसकती तब उसकी एवजी पूरी करणेकूं दम जलदी २ चलता है दमका रोग होणेका मुख्य कारण इसतरेसे है, (१ फेफसेमें हवा जाणेकी रुकावट स्वर नली अथवा वायु नलीका संकोच अथवा कुछ दरद २ फेफसेमें दरद जेसें फेफसेका सोजा फेफसेका खाईज जाणा उसके पुडका सोजा वगेरे ३ रक्ताशयका रो जिसकर फेफसेमें चहिये जिससें जादा या कम खून जावै तेसें खून जादा निकलजाणे फेफसेका पोषण कम होय जेसेके पांडू रोग रक्तपित्त वगेरे मगजकी नाताकती मनक विकार हिस्टीरीया सांकडी और नाताकती छाती एसे रोगवालोंकों जरा ठंढीके हवाक फेरफार दमकूं पैदा करता है, ५ कितनीक खराब चीजोंकी दुरगंधी बदपरेजी अजीर्ण वगेरे कारणभी श्वासकूं पैदा करता है, ६ ये रोग ओलादमें भी उतरता है.

(लक्षण) श्वास जादा जोरसे चले ये श्वास रोगका प्रत्यक्ष चिन्ह है, पेटमें प्रथम बादी दस्तकी कबजी पेशाब जादा तेसें धीरे २ उतरता है, बहोत रोगोमें दम चढणेके दुसरे कोईभी चिन्ह अगाऊसे नही दिखता दमका जोर पिछली रातकूं चढता है, बहोत घभराट होता है दम जोरसे चलता है, तब दूर तक सुणाई देता है, रोगीका स्वरूप भयंकर दिखता है, जिसने आगे कभी श्वासके रोगीकूं नहीं देखा है, वो तो यही जाणता है की ये अभी थोडी देरमेंही मरजायगा बदनपरसे पसीनेकी बूंदे गिरती है, नाडी जलदी चलती है, मूं खुला रहता है, सो नहीं सकता चैन नहीं पडता एसा दमका जोर दो चार घटेसें वो एक दो दिनतक जारी रहकर पीछे कम पडता है, खासीके संग थोडा कफ गिरता है, श्वासबेठे पीछे थका भया रोगी नींदमें गिरता है, वायुनलीके संकुडाणेसें दम चढता है, और हवा अंदर जाती वखत तांती बोलती है, वो कानसें अथवा कर्ण नलीसें सुणाई देती है, दमके रोगमें अंदर श्वास ओछा होता है, बाहर श्वास लंबा चलता है, विना मुदत फेर दम उठ आता है, किसीकूं हमेश चढ जाता है, किसीकूं महीनेमें एक वखत किसीकूं वर्षमें एक वखत और किसीकूं बहोत वर्षोंमें.

(इलाज) (१) बेहेडेकी छालकूं बकरीके पेशाबमें पकाकर उसका चूर्ण सहतमें चाटना (२) बडी दाख हरडेकी छाल नागरमोथा काकडासींगी तथा धमासा इनोका घी बनाकर सहतमें चाटणा (३) सरसूंका तेल गुडके संग २१ दिनोंतक चाटना (४) सूंठ तथा भाडंगीका क्वाथ पीणा (५) भाडंगी तथा मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटना (६) सूंठ मिरच पींपर हरडेका चूर्ण फाकणा (७) हलदी मिरच

दमका इलाज.

दाख पींपर राखा सूंठ गुड इनसबोकों नीबोलीके तेलमें चाटणा (८) आदेके रशमें भाडंगी तथा मांजूफल चाटणा (९) भूरींगणी हलदी अरडूसा गिलोय सूंठ पींपर भाडगी मोथ इनोका क्काथ मिरच पीपरका चूर्ण डालकर पीणा (१०) मिश्री दाख पीपर इनोका चूर्ण नींबके तेलमें पकाकर खाणा (११) त्रिफला ३ भाग सोहागी १ भाग नागरवेलके रशमें घोट चिरमी जितनी २ गोलियां करके खाणी (१२) आककी जड लींडी पीपर सहतमे घोट झाड वेर २ जितनी गोलियां करणा (१३) गांजेकी राख सहतमे चाटणी (१४) आंधी झाडेका खार सहतमें (१५) अरडूसेका रश और पीपर (१६) कस्तूरी और मोलेठीका सीरा इसके सिवाय पीछे (नं० २६२) ४६६) २६७) ३३६) ३४४) ७२१) ७२२) ७२३) ७२४) का देशी तेसें हकीमी नुसके श्वासके रोगमें प्रसिद्ध है.

(अमृतवटी) हमारे विद्याशालाकी श्वासकासमें अकसीर दवा है.

(अग्रेजी इलाज) (१) इपीकाक्यु आन्हा टार्टर इमेटीक वेलाडोना धतूरा अफीम गांजा इथर कलोरल हाईड्रेट पोटास आयोडाईट वगेरे मुख्य है. (२) नं० ४८४ ४८७ (६४०) ६४१ (६४२) वाली दवाइयां दमके रोगमें प्रसिद्ध है, पिचकारीकेवास्ते एरंडी तेल अच्छा है, रोगीके पांव गरम जलमें रखणा छातीमे दरद होय तो टरपेन्टाइन तथा गरम पाणीका शेक करणा छातीपर राई मारणी(४)रोगी दमसें वहोत व्याकुल होय तो उसकूं आराम देणेके वास्ते डाकटरके पास रखकर क्लोरोफोर्म इथर अथवा दोनोसंग सुघाकर वेहोसकरके सुवाणा (५) रोगीके कमरेकू वंधकर धतूरा वेलाडोना सोरा नवसादर गांजा वगेरे दवायें सलगाणा इनोंके धूंएसे रोगीके श्वासमें जाणेसें फायदा होता है. (६) वीडी अथवा चिलममें कितनीक दवाइयें पीणेसें दममें फायदा होता है, धतूरा वेलाडोना मोफर्या तमाखू गांजा सोराखार वगेरे लेकिन् इसमेंकी कितनीक दवाइयां तेज और जहरी है, इस वास्ते थोडी २ पीणी कारण इसमें एक औरभी है, ये दवाइयां किसी २ कूं फायदा और किसी २ कूं नुकशान करती है, किसी २ कुं फक्त तमाखूकी वीडी पीणेसेंही फायदा होता है, और किसीकू काफी पीणेसेंही फायदा होता है, और किसीकू धतूरेके पत्ते सिलगाकर उसका धूंआ श्वासमें लेणेसें फायदा होता है.

होमियो पथिक इलाज (१) एकोनाइट) खंफ अथवा सूकी शरद हवासें उठे दममें फायदा करता है, (२) आइपीकाक्यु आन्हा-दमका कारण मिल सके नहीं और कफ तथा हांफणका जोर होय तव जादा उपयोगी है, (३) कुप्रम) मानसिक नाताकतीसें दम उठे तव अच्छा है, (४) आर्सेनिक) वहोत वेचेनी धमणेकू

वगैरे रोगोमें श्वासकी हयाती देखणेमें आती है, लेकिन् इसके अलावा दमके मरजका दूसरे स्वतंत्र कारणभी होता है, फेफसेमें हवा जाणेको छोटे छेदोंमें खेंच होणेसें होता है, खेंचताणके लिये ये छेद संकोचाते हैं, उसकरके जितनी चहिये हवा फेफसेमें दाखल नहीं होसकती तब उसकी एवजी पूरी करणेकूं दम जलदी २ चलता है, दमका रोग होणेका मुख्य कारण इसतरेसे है, (१ फेफसेमें हवा जाणेकी रुकावट) स्वर नली अथवा वायु नलीका संकोच अथवा कुछ दरद २ फेफसेमें दरद जेसेके फेफसेका सोजा फेफसेका खाईज जाणा उसके पुडका सोजा वगैरे ३ रक्ताशयका रोग जिसकर फेफसेमें चहिये जिससें जादा या कम खून जावै तेसें खून जादा निकलजाणेसें फेफसेका पोषण कम होय जेसेके पांडू रोग रक्तपित्त वगैरे मगजकी नाताकती मनका विकार हिस्टीरीया सांकडी और नाताकती छाती एसे रोगवालोंकों जरा ठंढीके हवाका फेरफार दमकूं पैदा करता है, ५ कितनीक खराब चीजोंकी दुरगंधी बदपरेजी अजीर्ण वगैरे कारणभी श्वासकूं पैदा करता है, ६ ये रोग ओलादमें भी उतरता है.

(लक्षण) श्वास जादा जोरसे चले ये श्वास रोगका प्रत्यक्ष चिन्ह है, पेटमें प्रथम वादी दस्तकी कबजी पेशाब जादा तेसें धीरे २ उतरता है, बहोत रोगोमें दम चढणेके दुसरे कोईभी चिन्ह अगाऊसे नहीं दिखता दमका जोर पिछली रातकूं चढता है, बहोत घभराट होता है दम जोरसे चलता है, तब दूर तक सुणाई देता है, रोगीका स्वरूप भयंकर दिखता है, जिसने आगे कभी श्वासके रोगीकूं नहीं देखा है, वो तो यही जाणता है की ये अभी थोडी देरमेंही मरजायगा वदनपरसे पसीनेकी बूंदे गिरती है, नाडी जलदी चलती है, मूं खुला रहता है, सो नहीं सकता चैन नहीं पडता एसा दमका जोर दो चार घंटेसें वो एक दो दिनतक जारी रहकर पीछे कम पडता है, खासीके संग थोडा कफ गिरता है, श्वासबेठे पीछे थका भया रोगी नींदमें गिरता है, वायुनलीके संकुडाणेसें दम चढता है, और हवा अंदर जाती वखत तांती बोलती है, वो कानमें अथवा कर्ण नलीसें सुणाई देती है, दमके रोगमें अंदर श्वास ओछा होता है, बाहर श्वास ऊंचा चलता है, विना मुदत फेर दम उठ आता है, किसीकूं हमेश चढ जाता है, किसीकूं महीनेमें एक वखत किसीकूं वर्षमें एक वखत और किसीकू बहोत वर्षोंसें.

(इलाज) (१) बेहेडेकी छालकूं बकरीके पेशाबमें पकाकर उसका चूर्ण सहतमें चाटणा (२) बडी दाख हरडेकी छाल नागरमोथा काकडासींगी तथा धमासा इनोका घी बनाकर सहतमें चाटणा (३) सरसूंका तेल गुडके संग २१ दिनोंतक चाटणा (४) सूंठ तथा भाडंगीका काथ पीणा (५) भाडंगी तथा मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहतमें चाटना (६) सूंठ मिरच पीपर हरडेका चूर्ण फाकणा (७) हलदी मिरा

स्थानके वरमके लियें इस ग्रंथमें जो रोगोंका हिस्सा छांटा है, उसतरीकेपर इस रोगकूं छातीके दरदोंकी गिणतीमें धरा है.

(कारण) कफज्वरका कारण और सलेषमका कारण वोही इस न्यूमोनियाका कारण है.

(लक्षण) फेफसेका थोडा अथवा वहोत भाग सूजकर अंदर दाह होता है, सरूमें सलेषम होता है, अथवा थोडा बुखार आकर वेचनी होतीहै एकाध दिन रहकर ठंढके सग जोरसे बुखार चढ आता है, इसकेसंग थोडी खासी और कफ होता है, छातीमे दरद होता है, श्वास जलदी नाडी तेज अरुचि शिरदर्द पेसाव थोडा तथा लाल दस्तकी कवजी वहोत नाताकती भ्रम वकवाद किसी २ वखत छातीमें श्वासकेसंग कफ वोलता है, पहली५।७दिन बुखार १०४ १०५ डिग्रीतक वढजाता है, पसीना नहीं आता दरदका जोर कम भये पीछे अथवा दरद लंवाण पडे पीछै पसीना आणे लगता है, तोभी बुखार उतरता नहीं जीभपर सुपेद थर और रोगके जोर मुजव सूकी पडके फटती है, तथा कांटा २ पडता है, भूख विलकुल लगती नहीं इसवास्ते खुराक मुजव देणा पडता है, खासी किसीकूं कम किसीकूं जादा होती है, कफ पहली तो थोडा लेकिन् पीछेसें वढता है, वरमकी जगेपर दरद होता है, शूल होती है, सूनहीं सकता श्वासोच्छास ३० से ४० तक चलता है, नाडी १२० सें १४० तक वढ जाती है, पीछेसें कम जोर पडजाती है, बुखार पहली एक अठवाडे सख्त आकर नरम पडता है, लेकिन् रोगी नाताकत होजाताहै, जो वच-णेका होता है, तो वेहोसीसें सावचेत होजाता है, बुखार उतार खाकर सव वदनमें पसीना आता है, दस्त पेशाव खुलाश आता है, जो रोग वढता है, तो त्रिदोषके सव लक्षण दिखाइ देता है, रोगी वेहोस गाफल होता है, नाडी क्षीण पडती है, गलेमें अवाज चलता है, मरजाता है.

(मुद्दत) इस रोगकी अवधी १२ सें ३० दिनकी है, जो रोग साधारण होय तो एक अठवाडेमें अछा होजाता है, मध्य होय तो २४ दिन जोर होय तो एक महीनेमें अच्छा होय या मरजाता है.

इलाज—कफज्वरका तथा सन्निपात ज्वरका उपाय करणा भाडंग्यादि (न०१९६) वृहत्भारग्यादि (१९७) अभयादि (१९५) वगेरे क्वाथकी योजना अच्छी है, न० ६३८ तथा ६३९ का मिक्ष्चर देणा छाती अथवा पीठपर जहां सोजन भया होय उस जगे अथवा पसलीमे शूल निकलती होय उस जगे अलसीकी पोटिस वेर २ वांधणी अथवा टरपेनटाइन लगाकर गरम पाणीका सेक जारी रखणा दरदवाले भाग-पर राईका पलाष्टर आधी घटे तक रखणा ताकत कायम रखणेकू खुराक हलका लेकिन् अच्छा रखणा आमोनिया वाली कोईभी दवासे वदनमें कांटा आता है, नाताकती वहोत वढजाय तो अनार्य लोक तो ¼ से ½ औंस ब्रांडी वरतते हैं, द्राक्षासव - ग

जेसा अवाज कफ–तव छातीके वीचमें आर्सेनिक देणा (५) दमका जोर शांत पडे पीछे फेर दमकु अटकाणेकुं नक्सवोमिका आर्सेनिकम आयोडाइन वगेरे.

(विशेष सूचना पथ्य) दमका रोग अजीर्ण और दस्तकी कबजीसें वेर २ उठजाता है, इसवास्ते खुराक खाणेकी वहोत सावचेती रखणी हजम नहीं होय एसा खुराक कभी खाणा नहीं हलका खुराक भी जादा पेटभर खाणा नहीं अच्छी हवा पाणीकी जगे फायदा करती है, इसवास्ते हवा बदल देणी चाहिये कुपथ्य–दालकी जात ठंढा पदार्थ दाहकरे एसा गरम पदार्थ लूखा पदार्थ वासी अन्न दही खांड खटाई वगेरे पदार्थोंकों त्यागणा–कितनेक मूर्ख लोक दम बेठाणेकूं वहोत गरम दवाइयां तथा गरम मसाले खिलाते हैं, उसमें उलटा नुकशांन होता है, खास श्वासरोगका जो पथ्य वोही दमके रोगका पथ्य समझणा.

उरक्षत–छातीका जखम–

(कारण) वहोत महनत करणेसें वहोत भार उठाणेसें उंची जगासें पडणेसें वहोत उंचे श्वरसें पढणेसें बोलणेसें वहोत दोडणेसें औरतोंमें वहोत आसकी रखणेसें और वहोत थोडा और लूखा खाणेसें छातीमें जखम पडता है. (लक्षण) क्षयके वहोतसे लक्षण देखाई देते हैं, क्योंकी उरक्षत रोगभी क्षयरोगका एक भेद है, छातीमें दरद होता है, चीरीजती है, पसवाडे सूकते हैं, अदमी धूजता है, वीर्य ताकत रंग क्रांतिका धीरे २ क्रमसे नाश होते जाता है, बुखार पीडा मनकी दीनता चिंता दस्त अग्निका नाश खासीमें खराव काला दुर्गंधवाला पीला गुंथा भया और वहोत खून मिला भया कफ वेर २ थूकता है.

(इलाज) खासी तथा क्षयका कितनाएक इलाज उरक्षतके भी कामिल है. जखमकूं भरे और खूनकूं रोके एसें स्तंभक इलाज करणा (१) अरडूसा) रश पुटपाक वगेरे खून बंधकर जखम मिटाता है, (२) अमृतवटी) इस रोगका सर्वोत्कृष्ट इलाज है, (३) इक्षुके रशमें घी उकालकर पीणा, (४) वेरकी अथवा पीपलकी लाख पुराणे केके रशमें पीस उसमेंसें २ तोला कल्कमें चोगुणा कोलेका रस डाल पीणा, (५) कुष्मांडावलेह (नं० २५६) तथा द्राक्षासव नं० २८६,

(६) रक्तस्तंभक दवाइयां पृष्ट ३१४ देखो) स्तंभन दवाइया (पृष्ट ३१२ देखो) रक्तपित्त रोगमें लिखीभई दवाइयां उरक्षतमें फायदा करती है, पथ्यापथ्य–खासी तथा रक्तपित्तके रोगमें लिखे मुजब.

न्यूमोनिया–फेफसेका वरम–

विचार–छातीके फेफसेमें सूजन होणेसें भयंकर बुखार कफका त्रिदोप अथवा सन्निपात ज्वर होता है, देशी वैद्यकशास्त्र मुजब ये एकतरेका त्रिदोप ज्वर है, लेकिन मर्म

स्थानके वरमके लिये इस ग्रंथमें जो रोगोंका हिस्सा छांटा है, उसतरीकेपर इस रोगकूं छातीके दरदोंकी गिणतीमें धरा है.

(कारण) कफज्वरका कारण और सलेषमका कारण वोही इस न्यूमोनियाका कारण है.

(लक्षण) फेफसेका थोडा अथवा वहोत भाग सूजकर अंदर दाह होता है, सरूमें सलेषम होता है, अथवा थोडा बुखार आकर वेचनी होतीहै एकाध दिन रहकर ठंढके संग जोरसे बुखार चढ आता है, इसकेसंग थोडी खासी और कफ होता है, छातीमे दरद होता है, श्वास जलदी नाडी तेज अरुचि शिरदर्द पेसाव थोडा तथा लाल दस्तकी कबजी वहोत नाताकती भ्रम वकवाद किसी २ वखत छातीमें श्वासकेसंग कफ बोलता है, पहली५।७दिन बुखार १०४ १०५ डिग्रीतक वढजाता है, पसीना नहीं आता दरदका जोर कम भये पीछे अथवा दरद लंघाण पडे पीछे पसीना आणे लगता है, तोभी बुखार उतरता नहीं जीभपर सुपेद थर और रोगके जोर मुजब सूकी पडके फटती है, तथा कांटा २ पडता है, भूख बिलकुल लगती नहीं इसवास्ते खुराक मुजब देणा पडता है, खासी किसीकूं कम किसीकूं जादा होती है, कफ पहली तो थोडा लेकिन् पीछेसें वढता है, वरमकी जगेपर दरद होता है, शूल होती है, सूनहीं सकता श्वासोच्छास ३० से ४० तक चलता है, नाडी १२० सें १४० तक चढ जाती है, पीछेसें कम जोर पडजाती है, बुखार पहली एक अठवाडे सख्त आकर नरम पडता है, लेकिन् रोगी नाताकत होजाताहै, जो बच-णेका होता है, तो वेहोसीसें सावचेत होजाता है, बुखार उतार खाकर सब वदनमें पसीना आता है, दस्त पेशाब खुलाश आता है, जो रोग वढता है, तो त्रिदोषके सब लक्षण दिखाइ देता है, रोगी वेहोस गाफल होता है, नाडी क्षीण पडती है, गलेमें अवाज चलता है, मरजाता है.

(मुद्दत) इस रोगकी अवधी १२ सें ३० दिनकी है, जो रोग साधारण होय तो एक अठवाडेमें अछा होजाता है, मध्य होय तो २४ दिन जोर होय तो एक महीनेमें अच्छा होय या मरजाता है.

इलाज–कफज्वरका तथा सन्निपात ज्वरका उपाय करणा भाडंग्यादि (नं०१९६) वृहत्भारंग्यादि (१९७) अभयादि (१९५) वगेरे काथकी योजना अच्छी है, न० ६३८ तथा ६३९ का मिक्षचर देणा छाती अथवा पीठपर जहां सोजन भया होय उस जगे अथवा पंसलीमे शुल निकलती होय उस जगे अलसीकी पोटिस घेर २ चांपणी अथवा टरपेनटाइन लगाकर गरम पाणीका सेक जारी रखणा दरदवाले भाग-पर राईका पलाष्टर आधी घंटे तक रखणा ताकत कायम रखणेकूं खुराक हलका लेकिन् अच्छा रखणा आमोनिया वाली कोईभी दवासे वदनमें कांटा आता है, नाताकती वहोत चढजाय तो अनार्य लोक तो ½ से १ औंस ब्रांडी वरतते है, द्राक्षासव अथवा

पोर्टवाइन दिनमें तीन चार वखत देते हैं–(होमियोपथिक इलाजोमें) एकोनाइट ठंढ तथा बुखारके रोगमें देणा अच्छा है) ब्रायोनिया और फोसफॉरस इस रोगकी अकसीर दवा है, दोनों दवायें दो दो घंटेके फासलेसें वारे फिरती देणी.

(विशेप सूचना) भयंकर बुखारकी जितनी सार संभाल रखणी इतनी ही न्यूमो-नियाकी रखणी चाहिये.

फेफसेके पुडका वरम–प्ल्युरिसि) होता है, इसका इलाज फेफसेके वरमके लगभग जेसा ऊपर मुजब करणा.

क्षय–धातुक्षय–राजयक्ष्मा–खैण–
(कन्‌झपशन)

(कारण) मलमूत्रादि वेगोकोंरोकणेसें अतिस्त्री सेवनसें वहोत भूखा रहणेंसे वहोत इर्षा तथा फिकर वहोत महनत वहोत अथवा प्रमाणसे कम वेटेम खानपान वहोत अभ्यास छोटी ऊमरमें धातूका क्षय गरमी सुजाककी वेमारी छाती नाताकत होय और वहोत वोलणा शरदीकी जगेमें रहणा हांफणी फेफसेका सोजा ये सब क्षय रोगकूं पेदा करणेके कारण है, ये रोग ओलादमें भी ऊतरता है, और जादा करके १८ सें ३० वर्षकी अवस्थामें जो क्षय होता है, वो पक्का और भयंकर होता है, उसमें वचणा मुस्कल है.

(लक्षण) पसवाडे तथा खवोंमें पीडा हाथपेरोमें जलण सब बदनमें ज्वर ये तीन क्षय रोगके मुख्य लक्षण है, (यदाहुनाभिमनु पौत्रात्रेय) अन्नपर द्वेष ज्वर श्वास खासी खासीमें खून गिरणा और स्वर विगडणा (आयु ज्ञानार्णवमें) क्षयरोगकी तीन स्थिति जिसमें पहली स्थिति इस मुजब–ये नाशकारक रोगकी शरुआत वहोतसी वखत एसी वे मालूम जडरुप जाती है, सो जहांतक साधारण हालतमें इन रोगवाला होता है, उस वखत सादे वैद्यभी देखे तो भी उसकूं इस रोगकी खबर नहीं पडती महूमें खासी होती है, वो जादा करके फजरमें होती है, और विचमें खासी मिटकर पीछे वढती है, उसकेसग सुपेद झाग जेसा और चिकणा कफ गिरता है, किसी वखत गलेमें खरखराट अवाज खोखरा होता है, वहोत दिन खासी कायम रहकर रोगीका दम उठ जाता है, थोडी महनत करणेसें श्वास चढ जाता है, आगे खासी वढणेके साथ नाताकती वढती है, रोगी लिवरीज जाता है. नाडी सब दिन तेज चले सांझकूं और ओमिनाद जादा जउद चले सांझकू हाथपेरोमें दाह होकर बुखार चढ जाता है, फेफसेमें एक तरेका पदार्थ पैदा होता है, जिस करके फेफसेकी मूल पोलार स्थिती वदलकर नक्कर कठा होजाता है, ये पदार्थ पहली फेफसेके ऊपरके पिछले भागमें घर करता है, गलेके हांसके ऊपरके तथा नीचेके भागपर वजाणेसें पेले अवाजके वदले थोदा अवाज होता है, स्टेथोस्कोपमें

तपासणेंसे श्वास छोडणेका स्वाभाविक काल लंबा भया २ मालम देता है, श्वासकी ध्वनि स्वभावसें नरम होणेके वदले करडा मालम देता है, अथवा नलीमेंसे हवा जारही है, एसा मालम देता है, वचनका अवाज उंचा सुणीजता है.

(दुसरी स्थिति) करड़ा भया २ फेफसेके आसपासका भाग सूज जाता है, करडा पडाभया भाग नरम पडकर उसमें पीप खासी कफ होकर वाहर गिरता है, इस सोजेकी हालतमें रोगीका वुखार प्रगट होता है, छातीकूं तपासते अवाज वोदा होगा कान धरकर सुणणेसे अंदर पपोटे जेसा अवाज सुणाइ देगा किसी वखत तांती वोलेगा हांसके आसपासका भाग जरा वैठा भया मालम पडेगा.

(तीसरी स्थिति) कितनीक मुदतसें कफ वाहर निकलकर छाती पोली होती है, और वो भाग जाहिर वैठा भया मालम देता है, पांसलीके वीचकी जगेमें खड्डा मालम देता है, और दरदवाली छातीकी वाजू जादा वैठी तथा चिपटी मालम देती है' इस तरे फेफसा खवाते जाता है, उसके संग शरीरकाभी क्षय होते जाता है, फेफसा सडणेसें खुन साफ होता नहीं खुराक खाईजता नहीं कफ दस्त तथा वुखार रातकूं वेहद पसीना वदनके सव धातुओंकूं सुकाता है, आखर हड्डी और चमडी वाकी रहती है.

(क्षय होतेकूं अटकाणेका इलाज) जिसके मा वापकूं क्षय रोग भया होय उस वीर्यसे पैदा भये वचेकी वहोत खानपानकी संभाल रखणी निज स्वजनमें लग्न करणा नहीं जैन (आर्य शास्त्रभी मना करता है,) गर्भ धारण करती वखत माकूं एसा कोई रोग भया होय तो उसकूं वहोत संभालसें रहणा अच्छा खुराक ताकतकी दवा देणा वचा भये पीछे वचेकूं वहोत हिफाजतके साथ रखणा गरम कपडा पहिराणा और शरद हवासे विलकुल वचाये रखणा खुली, हवामे फिरणा रोगी स्त्री गऊ वकरीका दूध पीलाणा नहीं वडा भये वाद कसरत कराणी वालपणेमें सादी करणा नहीं अति मैथुन अति महनत फिकर और वहोत अभ्यास इसका त्याग करणा जादा करके गरमी (उपदंश) और कंठमाल जेसे खराव रोगोसें पीडित औरत मर्दसें जो वचा होता है, एसी ओलादकूं क्षय जेसा रोग लगणा जादा संभव है. (कठमाल रोग देखो) पिछाडी लिखा है, एसे रोगी वचोंके शरीरमेंसे एसे दुष्ट रोगका निकाश करणेवाले वहोत सावधानी रखणेकी जरूरी है, एसे वचेका खून सुधारे एसी दवा कोडलीवर अमृतवटी वसतमालनी वगेरेका वहोत मुदततक सेवन कराणा और इससेभी जादा जरूरीकी वात ये ध्यानमें रखणेकी है, के खुली हवामें फिराणा हमेश जेसे वणे तेसें सादा और अच्छा खुराक देणा क्योंके देशी खुराक रोगकी वृद्धिका हेतु है, इसवास्ते वहोतसी वेमारियां वहोतसी वखत अपणे खानपानसें होती है, एसा देखते हैं, निरोगी अन्नपान वावत इस ग्रंथका पथ्यापथ्य पदार्थोंका वर्णन पृष्ठ १७८ देखो.

(क्षयरोग भये पीछेका इलाज) (देशी इलाज)

(१) अरडूसा—खासी तथा क्षयरोगकेवास्ते वहोतही उत्तम इलाज है, (पृष्ठ २४१) लिखा भया वासा स्वरस वासा पुटपाक वासादि क्वाथ वसावलेह वगेरे सब बनावेट क्षय क्षत तथा खासीका अकसीर इलाज है. (२) सीतोपलादि चूर्ण (नं० ?२७) घी तथा सहतमें अथवा इस चूर्णमें सोनेका वर्क घोट घी अथवा सहतमें चाटणा) सुवर्ण मालनी वसंत-(नं० ३३७)सहत तथा पींपरमें अथवा सितोपलादि चूर्ण मिलाकर सहतमें(४)वसंत मालती(नं० ५४) सीतोपलादि तथा मोलेठीके चूर्णसंग घी तथा सहतमें चाट थोडा बकरीका दूध पीणा.(५)(अमृतवटी)दूधके पथ्यमें वहोत अच्छा फायदा करती है, बदनके सब धातुओंकों वढाती है, और फेफसेमें नया खून प्रासकर जखम भी भरदेती है, (६) इसग्रंथके (नं० २६५, २८२, ३३५) वाला इलाज फायदावंद है, (अंग्रेजी इलाज)—(१) कोडलिवर क्षयका मुख्य इलाज है, लेकिन् आर्यलोक इससे बचणा अनार्यलोक सरुआतमें आधे रुपेभरसे रुपेभरतक दोनों बखत जीमें बाद लेते हैं, और जब पचणे लगता है, तो ४ रुपेभर वढाते २ लेते हैं, साफ कोडलीवर ओइल स्वादसें वहोत नफरण लानेवाला है, इसवास्ते (२) माल्टाइन जीमे बाद दूधके संग लेते हैं, कोडलीवर और माल्टाइनके संग कीनाइन लोह फोसफरस वगेरे दवाओं मिला-कर भी देते हैं, वुखार तथा दस्त लगता होयतो कोडलीवर देणा नहीं (३) हाइपो फोस्फेट ओफलाइम—मात्रा ॥ से एक औंस हमेस दोतीन वखत दूधके संग और कोड-लीवरके संग भी देते हैं, (४) पेपसीन लॅक्टो पेपसीन पांक्रीयाटिक ईमल्सन त्रिसथ नक्षवोमिका तथा कीनाइन और चिरायता इसमेंकी कोइभी एकाधदवा सरू रखनी पाचन क्रियाकू मदत देणी (५) लोहवाली दवायें जेसेंके सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न आमोन्या साइट्रेट ओफ आयर्न टिंकचर ओफ स्टील फोस्फेट ओफ आयर्न वगेरे अच्छा फायदा करती है.

(विशेष सूचना)—क्षयका रोग असाध्य है, पक्काक्षय कभी मिटता नहीं खासीमेंसे क्षयकी पकी पहिचान करणी ये पूरे अनुभवका काम है, इसकी निश्चय होगये पीछे इलाजभी वहोत निगे दास्तीसे करणा तभी चतुरपणा सिद्ध होता है, असाध्य जांण नि-राश होना नहीं अछे योग्य इलाजोंमें रोगीकूं आराम मिलता है, जींदगी वढती है क्षयवाले रोगी संवनसकेतो वस्ती छोडकर जंगलकी उंची और खुली हवामें जाके रहे, सूकी खुली और अछी हवा क्षय रोगका सर्वोत्तम इलाज है, सब तरेके गरम उत्तेजक तथा नसेवाले खानपानका त्याग करना सादा अछा और पोषणकारक खुराक खिलाना जो लोहयुक्त दवायें और दूधमें ज्यादा पोषण करना खुराक रुचिप्रमाने खाना चावल दाल गहूं चवलाई ताजे और उत्तम पके फल दूध मलाई घी परवल उत्तम शाग तरकारी

रक्ताशय रोगका लक्षण.

सब पथ्य है. लेकिन् वहोत चीजों मिलाकर संग खाना ये नुकशांन करता है. बक-
रा दूध बकरियोमे रहना बकरेके वालका बिछोना बकरेकीं लींडीका तप बहोत
शंसनीक है.

किरण ३ री.

रक्ताशयसंबंधी रोग.

रिदय रोग हार्टडिझीझ.

देशी वैद्यकशास्त्रमें रिदयरोग इसनामकी व्याधि नीचै रक्ताशयके रोगोंका वर्णन किया है. उसमें रक्ताशयका रोग छ प्रकारका लिखा है. १ उरोग्रह २ वायूका ३ पित्तका ४ कफका ५ तीनों दोषका ६ कृमिजन्य याने चूरनिये पडनेसें.

(कारण) वहोतगरम भारी खट्टा तुरा और कडवे पदार्थोंका सेवन करणेसें वहोत खेचलसें चोट लगनेसें भोजनपर भोजन करनेसें डरसें दस्त पेशावके वेगकूं रोकनेसें इत्यादि कारणोंसें रिदयरोग होता है, इसके सिवाय शरदी ठढ मूत्राशयका रोग और संधिवायू होय तोभी रिदयरोग होजाता है.

(लक्षण)-(१) उरोग्रह-खून मांस तिल्ली और यकृत् वढता है, और रिदय विस्तार पाता है, (२) वायूका-रक्ताशय पीडासें जाणे फैलता है, सूर्योसे चुभाते होय एसा दरद होता है, (३) पित्ताशय संबंधी-प्यास संताप वदनमें जाणे अगार लगायदी है, कोइ चूसे एसी पीडा गभराट कंठमेंसे धूआं निकलणा मूर्छा दुरगंधवाला पसीना और मूंका सूकना (४) कफसंबंधी-रक्ताशयमें भारीपना कफका गिरना अरुचि मूंमे गीलासपना और जठराग्नि जाणे जलसे भीजाभया एसा मालम देता है, (५) तीनोंदोष संबंधी तीनोदोषोंके लक्षण मिले भये होते हैं (६) रिदयमें कृमि उत्पन्न होती हे, तब उलटी मोल होती है, वेर २ थूकना पडता है, सुई चुभाने जेसा दरद शूल आंखमें अंधेरी अरुचि आखोंमें कालास पडता है, उससे क्षयरोग भी होजाता है.

रिदयरोगका इलाज-(१) गऊका दूध ९६ तोला मद आंचसे आधाजले तब ठढाकर उसमे मिश्री घी तथा सहत दोदो तोला और तीन मासा पीपरका चूर्ण मिलाकर रोगीकी शक्ति मुजब देना (२) पोकर मूल अथवा एरंडीके जडका चूर्ण सहतमें चाटना (३) कुटकी तथा मोलेठीका चूर्ण गरम पाणीमें पीणा (४) वकुलवृक्षके पुष्पोंका हार पहरना (५) पारा गंधक अभ्रक इनोकी भस्मी सम वजन लेकर इसकू असालियेके छालके रसकी अथवा कांदेके रसकी २१ भावना देनी पीछे वो चूर्ण सहतमें चाटना मात्रा १ मासा (६) कृमिजन्य रिदयरोगमें प्रथम लंघन तथा दस्त कराकर पीछे कृमिरोगमें लिखे इलाजकरणा (७) वायविडग उपलेट इसका चूर्ण गोमूत्रमें देना.

(क्षयरोग भये पीछेका इलाज) (देशी इलाज)

(१) अरडूसा–खासी तथा क्षयरोगकेवास्ते वहोतही उत्तम इलाज है, (पृष्ठ २४१) लिखा भया वासा स्वरस वासा पुटपाक वासादि क्वाथ वसावलेह वगेरे सब बनावटे क्षय क्षत तथा खासीका अकसीर इलाज है. (२) सीतोपलादि चूर्ण (नं० २२७) घी तथा सहतमें अथवा इस चूर्णमें सोनेका वर्क घोट घी अथवा सहतमें चाटणा (३) सुवर्ण मालनी वसंत-(नं०३२७)सहत तथा पींपरमें अथवा सितोपलादि चूर्ण मिलाकर घी सहतमें(४)वसंत मालती(नं० ५४) सीतोपलादि तथा मोलेठीके चूर्णसंग घी तथा सहतमें चाट थोडा बकरीका दूध पीणा.(५)(अमृतवटी)दूधके पथ्यमें वहोत अच्छा फायदा करती है, बदनके सब धातुओंकों बढाती है, और फेफसेमें नया खून प्रासकर जखम भी भरदेती है, (६) इसग्रंथके (नं० २६५, २८२, ३२५) वाला इलाज फायदावंद है, (अंग्रेजी इलाज)–(१) कोडलिवर क्षयका मुख्य इलाज है, लेकिन् आर्यलोक इससे बचणा अनार्यलोक सरुआतमें आधे रुपेभरसे रुपेभरतक दोनों वखत जीमें बाद लेते हैं, और जब पचणे लगता है, तो ४ रुपेभर चढाते २ लेते हैं, साफ कोडलीवर ओइल स्वादसें वहोत नफरण लानेवाला है, इसवास्ते (२) माल्टाइन जीमे बाद दूधके संग लेते हैं, कोडलीवर और माल्टाइनके संग कीनाइन लोह फोसफरस वगेरे दवाओं मिलाकर भी देते हैं, बुखार तथा दस्त लगता होयतो कोडलीवर देणा नहीं (३) हाइपो फोस्फेट ओफलाइम–मात्रा ॥ से एक औंस हमेस दोतीन वखत दूधके संग और कोडलीवरके संग भी देने हैं, (४) पेपसीन लॅक्टो पेपसीन पांक्रीयाटिक ईमलसन बिसमथ नक्षवोमिका तथा कीनाइन और चिरायता इसमेंकी कोइभी एकाधदवा सरू रखनी पाचन कियाकूं मदत देणी (५) लोहवाली दवायें जेसेंके सिरप ओफ आयोडाईड ओफ आयर्न आमोन्या साइट्रेट ओफ आयर्न टिंकचर ओफ स्टील फोस्फेट ओफ आयर्न वगेरे अच्छा फायदा करती है.

(विशेष सूचना)–क्षयका रोग असाध्य है, पक्काक्षय कभी मिटता नहीं खासीमेंसे क्षयकी पक्की पहिचान करणी ये पूरे अनुभवका काम है, इसकी निश्चय होणेय पीछे इलाजभी बहोत निगे दास्तीसे करणा तभी चतुरपणा सिद्ध होता है, असाध्य जांण निराश होना नहीं अछे योग्य इलाजोसें रोगीकूं आराम मिलता है, जींदगी बढती है क्षयवाळे रोगी संपतमेंहो वस्ती छोडकर जंगलकी उची और खुली हवामें जाके रहे, सूकी शुद्ध और अछी हवा क्षय रोगका सर्वोत्तम इलाज है, सब तरेके गरम उत्तेजक तथा नसेवाले खानपानका त्याग करना सादा अछा और पोषणकारक खुराक खिलाना नीरनीरकिसमकी दवायें और दूधमें जादा पोषण करना खुराक रुचिप्रमाने खाना चावल दाल गहूं चंदलाई ताजे और उत्तम पके फळ दूध मलाई घी परवळ उत्तम शाग तरकारी

(लक्षण) धडका ये रक्ताशयके एक वडे रोगका लक्षण है, वोजव पैदा होता है, तो वडी धैसत वताता है, ये रोग वेर २ उठता है, वेर २ वैठता है, छातीमें कुछ उछलता है, गलेमें गोला चढता होय एसा रोगीकूं मालम देता है गभराट मूर्छा श्वास कानमें अवाज शिरमे दर्द चक्कर आंखमे अंधेरी पसीना जादा वगेरे–(इलाज) रोगीकूं शांत पडे रहणे देणा कस्तूरी हींग अफीम डिजीटेलिस ब्रांडी पोटास ब्रोमाइड वगेरे दवा देकर देखणी हाथ पैर सेकणा तथा छातीपर राई धरणी अथवा सेक करणा.

(हृदयशूल) कारण–पुख्त ऊमरके अदमीके ये रोग होता है, श्रम शरदी ठंडी अजीर्ण भारी खुराक वहोत दाटके खाणेसे इत्यादि कारणसे हृदयशूल पैदा होती है, लक्षण–वांये तरफ अकस्मात् शूल होती है, वायुकें हृदय रोगके लक्षण होते है, छाती जाणे वांधली होय और श्वास वंध भया होय एसा वाहरसे मालम देता है, लेकिन् पक्वायतमें अंदर श्वास चलते रहता है, दरदी दिखणेमें भयंकर चहरा फीका नाडी ना ताकत पसीना और मरणेका डर रोगीसें वोला नहीं जाता तोभी अंदरसे सावचेत रहता है, वहोत देरतक शूल चलता है, तो किसी वखत आंचकीयाने वांइटे चलणे लगते हैं, इलाज–जल्दीके इलाज तरीके छातीपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइन लगाकर शेक करणा कस्तूरी हींग क्लोरलहाइड्रेट सालवोलेटाइल डिजीटेलीस वेलाडोना ब्रांडी वगेरे दवाओंमेंसें जो हाजर होय वो पिलाकर और आमोन्या इथर वगेरे दवा सुंघाणी.

(विशेष सूचना)–हृदय रोगमें ये शारीरक चिन्होंका तात्कालिक इलाज उपरांत जादा इलाज पहली लिखा है, सो करणा रक्ताशयका रोग वहोत विचारवाला जादा करके असाध्य अथवा कष्ट साध्य होता है, इसवास्ते पूरे इल्मीसे परिक्षा कराके इलाज कराणा ये सीख है ।

किरण ४ थी.

पक्वाशयसंबंधी रोग.

इस रोगमे होजरी तथा आंतरोंके तमाम रोग तथा उस अवयवोकी विकृतीके संग संवंध रखणेवाले दुसरे भी कितनेक रोगोंका समावेश इसमें किया है, पाचन क्रियाके रोगसें जो जो रोग होता है, उन सवोंका इस किरणमें वयान है, दाखला जेसेके मसेका दरद (हरस) जाहरमें तो गुदाके संग संवंध रखता है, लेकिन् उसकी असली वुन्यादसोचेतो पाचन क्रियाके विकारमेंसेहीं हरसका जन्म है, इसीतरं आम्लपित्त और मूका दरद भी पाचन शक्तिका विकार है ।

मूंका रोग.

मूंके वहोतसे रोग जादा करके अजीर्ण और विगडी भई होजरीसे होता है, (जीभका

(८) असालियेका स्वरस तथा कल्कसे पका या घी (९) असालियेकी छालका उकाला तथा दूध (१०) असालियेकी छालका चूर्ण घीके संग दूधके संग अथवा गुडके पाणीके संग (११) हिरणके सींगकी भस्म करके गायके घीमे चाटनी (१२) दशमूलका क्वाथ (नं० ९७)-(१३)-(नं० ७३२) तथा (नं० ६३०)६३१) का इलाज (१४) अमृतवटी रिदयरोगपर सर्वोपरी इलाज है, दूध चावलका पथ्य रिदयरोग मिटाकर वदनमें अमृत जेसा गुण दिखाती है, (१५) द्राक्षासव (नं० २८३)

रिदयरोगके दुसरे शारीरकचिन्ह-रोग.

(रक्ताशयका सोजा)-(कारण)-शरदीसें मूत्राशयके रोगसें अथवा जखमसें छातीमें सूजन आती है, (लक्षण) बुखार छातीका धडका, श्वास जलद, चहरा फिकरवंद गभराट वांकर वटसो नहीं सकता-(इलाज)-गरमपाणीका छातीपर शेक करना अलसीकी पोटिस बांधनी अथवा दोपघ्न लेप बांधना दस्तके खुलशा वास्ते हरडेका चूर्ण अथवा एप्समसॉल्ट देना.

(रक्ताशयका फैलाव)-रक्ताशय जब वढता है, तब उसके पडदे जाडे पड़ते हैं, अथवा थेली विस्तार खाती है, (कारण)-खूनके फिरणेमें अडचल होणेसें खून वढजाणेसें जादा महनत करणेसें सखत धूपसें और फेफसा मूत्र पिंड वगेरे दुसरे रोगोंमें जब रक्ताशयकूं जादा जोर पडता है, तब उसका कद वढता है, (लक्षण) रक्ताशयमें जादा खून रहणेसें वो जादा धडकता है, महनतसें दम चढता है, नींद नहीं आती नाडी वे प्रमाण और छातीमें दरद होता है,) (मूर्च्छा) (कारण) किसीभी दुसरे कारणसे रिदयमें खून जाता अटके कम हो जाय अथवा खराब खून जावे तब मूर्च्छा आती है, मरणा त्रास तमाखू वछनाग जादा नाताकती और कितनेक रोगोंमें भी मूर्च्छा आती है-(लक्षण वेहोसी आंखमे अंधेरी चक्कर जी मचलाणा उलटी चहरा फीका कांपणी ठंढ शीतांग नाडी धीरी और वे प्रमाण श्वास जलद गभराट वे चैनी विलकुल फेम नहीं आंखकी की की फैल जाती है, नाडी नाताकत धीरी थोडी नसोंकी रोंच ताणभी होजाती है,-(इलाज) अमोनिया नाकमें सुंघाणी मूंपर पाणी छांटणा हवा डालणी.

(धडका) (फडकणा) रक्ताशयके ऊपर हाथ धरणेसें छाती जादा जोरमें धड २ करती है, उसको (पाल्पिटेशन) कहते हैं. कारण-खुनहीके फीरणेकी चालमें कुछ अडचल होती है, तब उसके वदलेमें चाल वढती है, पेटमें हवा अथवा पाणीका भराव जादा खुराक रक्ताशयपर कुछ दबाव मनका चंचलपणा वहोत स्त्री सेवन मगजकी नाताकती तमाखू अथवा दारूका विशन तथा औरभी पांडू वगेरे केइयक रोग धडका पैदा करता है.

(लक्षण) धडका ये रक्ताशयके एक वडे रोगका लक्षण है, वोजव पैदा होता है, तो वडी धैसत वताता है, ये रोग वैर २ उठता है, वेर २ वैठता है, छातीमें कुछ उछलता है, गलेमें गोला चढता होय एसा रोगीकूं मालम देता है गभराट मूर्छा श्वास कानमें अवाज शिरमे दर्द चक्कर आंखमे अंधेरी पसीना जादा वगेरे-(इलाज) रोगीकूं शांत पडे रहणे देणा कस्तूरी हींग अफीम डिजीटेलिस ब्रांडी पोटास ब्रोमाइड वगेरे दवा देकर देखणी हाथ पैर सेकणा तथा छातीपर राई धरणी अथवा सेक करणा.

(हृदयशूल) कारण-पुख्त ऊमरके अदमीके ये रोग होता है, श्रम शरदी ठंढी अजीर्ण भारी खुराक वहोत दाटके खाणेसे इत्यादि कारणसे हृदयशूल पैदा होती है, लक्षण-वांये तरफ अकस्मात् शूल होती है, वायुके हृदय रोगके लक्षण होते है, छाती जाणे वांधली होय और श्वास वंध भया होय एसा वाहरसे मालम देता है, लेकिन् पक्कायतमें अंदर श्वास चलते रहता है, दरदी दिखणेमें भयंकर चहरा फीका नाडी ना ताकत पसीना और मरणेका डर रोगीसें वोला नहीं जाता तोभी अंदरसे सावचेत रहता है, वहोत देरतक शूल चलता है, तो किसी वखत आंचकीयाने वांइटे चलणे लगते हैं, इलाज-जल्दीके इलाज तरीके छातीपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइन लगाकर शेक करणा कस्तूरी हींग क्लोरलहाइड्रेट सालवोलेटाइल डिजीटेलीस वेलाडोना ब्रांडी वगेरे दवाओंमेंसें जो हाजर होय वो पिलाकर और आमोन्या इथर वगेरे दवा सुंघाणी.

(विशेष सूचना)-हृदय रोगमें ये शारीरक चिन्होंका तात्कालिक इलाज उपरांत जादा इलाज पहली लिखा है, सो करणा रक्ताशयका रोग वहोत विचारवाला जादा करके असाध्य अथवा कष्ट साध्य होता है, इसवास्ते पूरे इल्मीसे परिक्षा कराके इलाज कराणा ये सीख है ।

किरण ४ थी.

पक्काशयसंवंधी रोग.

इस रोगमे होजरी तथा आंतरोंके तमाम रोग तथा उस अवयवोकी विकृतीके संग संवंध रखणेवाले दुसरे भी कितनेक रोगोंका समावेश इसमें किया है, पाचन क्रियाके रोगसें जो जो रोग होता है, उन सबोका इस किरणमें वयान है, दाखला जेसेके मसेका दरद (हरस) जाहरमें तो गुदाके संग संवंध रखता है, लेकिन् उसकी असली वुन्यादसोचेतो पाचन क्रियाके विकारमेंसेही हरसका जन्म है, इसीतर आम्लपित्त और मूंका दरद भी पाचन शक्तिका विकार है ।

मूंका रोग.

मूंके वहोतसे रोग जादा करके अजीर्ण और विगडी भई होजरीसे होता है, (जीभका

गरम)–जीभ सूजकर लाल हो जाती है, तथा जलण होती है, थूक गिरता है, और बोलणेमें तथा खाणे पीणेमें अडचल होती है, सूजन बहोत होती है, तो रोगीकी जुवान बाहिर निकल आती है, और रोगी मर जाता है, जीभ अलासक असाध्य रोगसे अंदरसे कटकर प्राणी मरता है, पारेकी दवा देकर जो मूं लाते हैं, तब बहोतसी वखत एसी खराबियां होती है, अजीर्णके सिवाय शरदी मोसमका फेरफार जखम और पारेसंबंधी दवा खाणेसे इत्यादि कारणोसें भी जीभ परदाह हो जाता है। (इलाज)–जुलाबकी दवा देकर होजरीकूं साफ करणा कथा इलायची कबाबचीणी हीराकसी वगेरे ठंढी दवायें मूंमे रखणी अथवा जुवानपर घसणा त्रिफलाकी राख करके सहतमे मिलाकर जीभपर घसणा अथवा सहतका कुरला कितनी एक देर मूंमे रखकर थूक देणा बरफ मूंमे रखणा पंचवल्कल (नं० १५७) अथवा इनोंमेसे मिले इतनी छालोकूं उकाल ठंढा पाणी कर उसका कुरला जीभ पर छलाछेद शस्त्रसें कराकर खून निकलवा डालना–(मूंमे जखम) पेटके अंदरका अजीर्ण तथा विगाडसे अथवा लाल मिरच पानसुपारी वगेरे गरम चीजें खाणेसें मूंमें घाव पडता है, साधारण छाले दवा विगरही आराम हो जाता है, पाणी कम पीणेमें आवे तो या गरमी तासीरवाला दिनका सो जाणेसें छाले जखम पडते हैं। (इलाज) अजीर्ण अथवा दस्तकी कब्जी होय तो उसका इलाज दस्तावर करणा गरम खानपान गरिष्ट पदार्थका त्याग करणा घावपर कथेकी भुकणी लगाणी जुईका पान अथवा मेंहदीके पानकी लुगदीकर मूंमे रखणा जुईका पत्ता दारूहलदी तथा त्रिफलाके पाणीका कुरला करणा बंबूलके पत्ते चावणा तथा बंबूलकी छालका या पंचवल्कलकूं उकाल कुरले करणा घाव बडे होय और आराम नहीं होता होय तो नीलाथोथा लगाणा टंकणखार तथा सहत चोपडणा टंकणखार और सिसेराईन मिलाकर मूंमे लेप करणा शरीरमें गरमी याने उपदंशके विकारसे जो मूंमें घाव पडता होय तो खून सुधारणेवाली दवा खाकर गरमी मिटाणी नहीं तो घाव किसीभी तरे मिटणेका नहीं।

(गलेका सोजा चोरिया)–अजीर्ण कब्जीयत और शरदीसे गलेमें सोजन आकर चोरिया होता है, गलेकी बारी लाल होती है, और चोरिया सूजकर बुखार आता है, कनपटीके पिछले खूणे नीचे गांठे होती है, जीभपर सुपेदथर आती है, गलेमें थूक चीकणा होता है, और नीकलता नहीं जिस करके एसा मालम देता है जाणे गलेमें कुछ भरा पडा है, खुराक तथा पाणी गलेमें उतरते दरद करता है, चोरिया किसी २ वखत पककर फूटता है। इलाज–गरम पाणीका शेक करणा अलसीकी पोटिस बांधणी फिटकडीका थोडा २ कुरला करणा एक अच्छा जुलाब देणा बाहिर गांठो पर दोषघ्नलेप अथवा बेलाडोना लगाना नं ५१३ तथा ५५६ कामिकश्वरसे कुरला करणा बरफके पाणीका कुरला करणा फायदा होता है।

गालपचोरिया–थूक पैदा करणेवाले पिंड सूज जाते है, उससे खाणेमें अडचल होती है, गाल पचोरेमें थोडा बुखार आता है, ये रोग चेपी है, कानके नीचेका और गलेका भाग सूज जाता है इस रोगका भर तीन चार दिन रहता है और एक अठवाडेमें मिट जाता है। इलाज–हलका जुलाव ले लेणा गरम पाणीका शेक करणा दूधमें निमक डाल पका कर बांधणा बुखारकेवास्ते पसीना आवै एसी दवा देंणी.

(मूंकासाल)–ये रोग वहोत भयंकर है ओरी वगेरे मरज हो गया पीछै किसी २ ना ताकत वच्चोके ये रोग होता है दांतोके पारोंके धारपर धारे (लकीरें पडती है) तेसें होठ और गालके अंदरके पुडपर जखम पडता है गालके अंदरका भाग सड जाता है मरामांस दिखता है मूंमे वहोत वदवो आती है और अंदरसें लाल तथा पीप वहता है बुखार आता है जखम गहरा पडता है तो गालके आरपार छेद पडता है कोइ २ वखत होठ तथा मसूंढे सडकर जवाडीकी हड्डी और दांत जाते रहते हैं इस रोगसे प्राये प्राणी मर जाता है (इलाज)–पौष्टिक और गरम खुराक देकर वच्चेमें ताकत लाणी चाहिये जखमका इलाज करणा खुराक पतला देणा मूंकी वदवो दूर करणेकु परमागनेट ओफ पुटाश अथवा कलोरीनेटेड सोडा वगेरेका कुरला करणा तिलकु पीस उसका पाणी करणा वो पाणी दूध घी ये एकेक अथवा तीनो संग मिलाकर कुरले करणा तिल काला कमल घी मिश्री दूध इन सबोंकों पीस उसमें सहत मिलाकर कुरले करणा इकेली सहतका अथवा त्रिफलाकी राखमें सहत मिलाकर कुरले करणा दारू हलदी गिलोय त्रिफला मुनका जाईके पत्ते धमासा इनोका काथ ठंडाकर उसमे· छठे हिस्सेका सहत मिलाकर कुरला करणा त्रिफलाके काथमें सहत मिलाकर कुरले करना अथवा जलमें सहत डाल कुरले करना सहतका सेवन गलेका सव रोग मिटाता है।

(होजरीका रोग) (होजरीका सोजा) (दाह) (कारण)–सराप ताडी मिरच गरम मसाला वगेरे गरमी और दाह करणेवाली चीजें जादा खानेसें वासी और विगडा भया खुराक और सडी भई मछी खानेसें नहीं पीणा एसी वखतपर ठंढा पाणी या वरफ पीणेसे और शरद हवासे ये रोग होता है सोमल खानेसें तथा विगर कली लगे पीतल तांवेके वरतणमे पकाया भया अनाज खानेसें अथवा नीलाथोथा अथवा जलद तेजाववाली चीजो खानेमें आणेसे ये रोग होता है। (लक्षण)–पीपडी (कोडीके सामने) दरद तथा दाह होता है, उछाला उलटी बुखार सव जीभ अथवा जीभकी कोर लाल होय नाडी छोटी जलदी प्यास कची चहरा फिकर चद (इलाज)–(१) साजी खार खट्टे नींवूका रस और जल तीनोंको मिलाकर दिनमें दो तीन वखत पिलानेसे उलटी वध होगी और बुखार भी नरम पडेगा (२) सोडाटारटेरिक एसिड और जल इन तीनोंको मिलाकर पीणेसें एसाही फायदा होता है अथवा वरफका टुकडा चूमणा (३)

वनपसाका अथवा नीलोफरका सरबत तोला १ उसमें आना भर पाणी डाल कर पीणा (४) कासणीकानित राजल पीणा (५) ईसब गुल अथवा वेदाणे कालुआब दो दो घंटेसें चमचा २ भर पिलाणा (६) प्यास वहोत लगेतो अनारका रस चमचा भरके पिलाणा आंवलेका शरबत भी फायदा करता है (७) दस्त कबज होय तो एरंडीयेकी पिचकारी गुदामें मारणी अथवा सीडलीझ पाउडर कालुआब देणा (खुराक) चावलोंकी कांजी अथवा फकत दूध सिवाय कुछ देणा नहीं उलटीमें वहोत कम खुराक देणेसे पेटमें ठहरता है इसवास्ते उलटीका वहोत जोर होय तो रोगीकूं सुलाकर कांजीया दूध चमचेसें पिलाणा.

(होजरीका पुराणा सोजा)—होजरीका तेजसोजा नरम पडे पीछे वहोतसी वखत थोडा दरद रह जाता है, और वहोतसी वखत तीक्ष्ण दरद भये विगरभी ये दरदधीमें २ पैदा होता है, इस रोगमें खाये पीछे वेचेनी किसी वखत उलटी क्षुधा मंद शिरमें दर्द हाथ पांवोंमें कलतर और पीछे छातीनीचे कोडी ऊपर दरद होता है, ये दरद हाथसे दाबकर देखणेसें याजीमें वाद वढता है, खट्टीडकार पेटका फूलणा छातीमें दाह वगेरे पुराणे अजीर्णका चिन्ह मालम देता है, (इलाज)—कोडीकी जगे पलाष्टर मारणा और फफोला उठे उसकुं नं० ५६३, मे लिखे मुजब ड्रेसिंग करणा अथवा नं० ५६२ मे लिखा भया पलाष्टर मारणा (२) पेटकब्ज होय तो हरडे सूंठ और बूरेकी फकी देणी अथवा सीडलीझ पाउडर याकम्पाउन्डस वार्वेका जुलाव देणा एरंड तेलकी पिचकारी मारणी (३) नं० २२७,२२८,२३६, का चूर्ण (४) अमृतवटी दूध चावलोंका पथ्य (खुराक)—इसमें खुराक सादा लेणा गरम मसाले तेज नसेवाला खानपानका त्याग करणा दाल भात शाग तरकारी गरिष्ट पदार्थका परेज रखणा खाना फक्त दूध या चावलोंकी घाट दूध मिलाकर अथवा साबूदाणे दूध देणा.

(होजरीका घाव)—जेसें बाहर चमडीपर जखम पडता है, तेसें होजरीमें भी सूजन भयां पीछे जखम पडता है, ये जखम मटरके दाणेसें ले करके अठन्नी जितनाकद होता है, जिस कारणसें होजरीमें वरम होता है, उसी कारणसें जखम पडता है, (लक्षण)—होजरीके वरममें इस रोगके विशेष लक्षण ऐसेहैं कोडीकी जगे दुखते भागका सामने के भागके पीठके हड्डीमें दरद होता है, खाये पीछे तुरत उलटी हो जाणा खाया भया सब निकल जाना है, किसी वखत उलटीमें खून आता है, रोगी दिन २ दुबला होते जाता है, ए सब निसाणीयां होजरीके जखमकी है, (इलाज)—(१) रोगीके शरीरकूं तमें होजरीकूं आराम देणा बिछोणेमें पडे रहणे देणा करडा और जड खुराक खाना नहीं, हलका और पतला खुराक भी थोडा २ देणा उलटीमें खुराक टिके नहीं तो दोय भाग दूधमें एक भाग चूनेका निनरा भया जल डालकर पिलाणा (२) कोडीपर अल्सीके

पोटिस वांधते जाणा अथवा राई मारणी (३) दरद वहोत होता होय तो होजरीपर
ग्राइन लगाकर फुलेनलका शेक करना दरद मिटे पीछेभी कितनीक मुदततक सराप
मसाला वगेरे कोइभी गरम चीज खाणी नहीं होजरीके पुराणे सोजेका सव इलाज
ता (४) फक्त अमृतवटी और दूधका सेवन करनेसें होजरीकी सव फरियाद मि-
ा है (५) खूनकी उलटी होती होय तो रोगीकूं सुलाये रखणा पेटपर वरफ धरणा
फ चूसाणा दर घंटेसे ग्यालिक एसिड १५ ग्रेण पाणीमे डालके देणा अथवा टिकचर
ओफ स्टील देणा.

पाचनक्रियाके लगते दुसरे दर्द.

अजीर्ण-इन्डाइजेश्चन.

अजीर्णका रोग जेसें वहोत साधारण है, तेसे इस रोगसे शरीरमें दुसरे वहोतसे रो-
गोंकी जडभीरुप जाती है, इसवास्ते ये रोग वहोत लक्ष देणे लायक है, और शरीरमें
जरा भी अजीर्ण मालम दे तो उसका तुरत इलाज कर मिटाणा वदनका वंधेज खुराक-
पर है, लेकिन् वो खुराक जव अछीतरे पचता नहीं तव वोही खुराक मजवूती करनेके
वदले उलटा वदन ढीला करता है।

(कारण)—अजीर्ण होनेका कारण किसीसें छिपा नहीं है, अपणी पाचन शक्तिसे
जादा और अयोग्य खुराक खानेसें अजीर्ण होता है, एक वखतमें जादा खाय लेणा
कच्चा खाणा वेप्रमाण खाणा अगला पचे पहले खाणा वरावर चावे विगर खाणा खान
पानके पदार्थोंका मिथ्या योग करना ये सव अजीर्ण होनेका कारण है इसके सिवाय
कितनेक व्यसन जेसेके दारू भंग गांजा तमाखू आलस वीर्यका जादा खरच और क्षय
जेसें तनकूं और मनकुं वहोत महनत चिंता वगेरे वहोत कारणोंसे अजीर्णकी जड
रुप जाती है.

(लक्षण)—अजीर्ण छोटेमें छोटा और वडे २ में वडा रोग है, अजीर्ण पेटमें दो
क्रिया करता है यातो दस्त लाता है या दस्त वंध करता है दस्त होकर नहीं पचा
भया भाग निकल जाता है जो नहीं निकले तो जादा खरावी करता है दस्त कब्ज होकर
पेट फूलता है खट्टी डकार आती है जीमि चलाणा उछाला के जीभपर सुपेदथर गलेंग
छातीमें होजरीमें दाह शिरमें दर्द किसी वखत पेटमें चूक नींदमें स्वप्न वगेरे अजीर्णके
अनेक चिन्ह मालम देते हैं।

(सक्षा)—देशी वैद्यक शास्त्रमें अजीर्ण (याने जठराग्निके) विकारोंका वहोत
सूक्ष्म विचार लिखा है इन सवोका विस्तार इस जगे ग्रंथ वढनेके डरसे नहीं करते हैं
तोभी सवोका सारांस संक्षेप करके लिखताहूं जठराग्निके कमवेसी समविपम प्रभाव गुनन
उसका चार प्रकार है, १ मंदाग्नि २ तीक्ष्ण अग्नि ३ विपम अग्नि ४ समअग्नि ५ अनि

तीक्ष्ण अग्नि जिसकूं भस्मक रोग कहते हैं मंद अग्निवाला थोडा पचा सकता है जरा जादा खाता है तो अपचा होता है तीक्ष्ण अग्निवाला जादा भी खाता है तो पचासकता है, विषम अग्निवाला कभी तो जादा पचाता है कोई वखत थोडा भी नहीं पचता है, और अग्निका वल अनिमित होनेसें वहोत रोगकूं पैदा करता है सम अग्निवालेकूं वरावर पचता है और वदन निरोग रहता है भस्मक अग्निवाला जो खाता है सो भस्म हो जाता है, जो उस भूखकूं रोके तो वदनके धातूओंकों खा जाती है अव अजीर्णकी जाति इस मुजव है (१) आमाजीर्ण कफसें होता है अंगमें भारीपणा औकारी आंखके पोपचो· परथेथर और खट्टी डकार आती है, २ (विदग्धाजीर्ण)–पित्तसें होता है भ्रम होणा, प्यास, मूर्छा, संताप, दाह, खट्टी डकार, पसीना वगेरे होता है, ३ (विष्टब्धाजीर्ण)–वादीसे होता है शूल, आफरा, चूंक, मल, तथा अधोवायूका रुकणा अंगोका जकडणा और दरद होता है (४) रशशेपाजीर्ण) खाये पीछे पेटमें पके भये अनाज का साररूप जो रश (पतला) भाग होता है वो पतला भाग भी पकते २ कच्चा रह जाता है, उसका नाम रशशेपाजीर्ण छाती साफ नहीं होनेसें तथा वदनमें रसकी वढोतरीसें अन्नपर अरुचि होती है, (अजीर्णके दुसरे उपद्रव) अजीर्णमेंसे विसूचि (हेजा) अलशक तथा विलंविका नामका रोग होता है हेजेका वयान पहली लिख दिया है, (अलसक) आहार नीचै जाय नहीं उंचाभी जाय नहीं पकताभी नहीं लेकिन् पेटमें एक जगे पडा रहता है आफरा तथा वहोत दरदवाले अजीर्णके भेदकुं अलसक कहते हैं, (विलंविका)–खराव भया पेटका अन्न कफ तथा वायूके लिये ऊपरके अथवा नीचेके द्वारमें निकले नहीं उसकूं विलंविका कहते हैं। (अजीर्णका सामान्य इलाज) (१) आमाजीर्ण होय तो गरम पाणी पीणा विदग्धा जीर्ण होय तो ठंढा पाणी पीणा तथा जुलाव लेना विष्टब्धाजीर्णमें पेटपर सेक करना और रश शेपाजीर्णमें सोजाणा। (२) लघन अजीर्णका अछा और सस्ता इलाज है लेकिन् मारवाडी भाइ मरणा कबूल करते हैं लेकिन लघनके नाममें कोसों दूर भागते हैं जिसमें भी भाग्यवानोकी तो कहणाही क्या (३) सींधा निमक सूंठ तथा मिरचकी फकी छाछमें या जलमें (४) चित्रककी जडका चूर्ण गुडमें (५) जवा हरडे सूंठ तथा सींधा निमककी फाकी जलमें या गुडमें (६) सूंठ छोटी पीपर तथा हरडेका चूर्ण गुडके संग लेणेमें आमाजीर्ण मिटै और दस्त तथा कबजी मिटै (७) चित्रक थोडी अजमोद सेंधव सूंठ मिरच छाछमें पीना दस्त तथा पांडुमें फायदा करता है (८) धाणा तथा सूंठका काथ पीणे से आमाजीर्ण तथा शूल मिटती है (९) अजवाण तथा सूंठकी फकी अजीर्ण तथा आफरा मिटाती है (१०) कालीजीरी २ से ४ वाल निमकके संग चवाणी अथवा कोरा नागौ (शीतलनागौ) चार आनी भर फाकणा (११) नीम तले भये कुवारके

फक्की १ रत्तीसे १ वाल (१२) पीपला मूल २ से ४ वालतक खाणा (१३) लसण जीरा सेंचल सेंधा हीग नीबु कुचीला कांकचके वीज वगेरे दवाओं अग्निकुं प्रदीप्त करते है, इनोमेंसे जो मिले उसका उपयोग करणा (१४) नं० २४३,२४५,३४०,३४३, की दवाये तथा नं० १६९ की शंखवटी और १९०, का हिंगाष्टक अजीर्णका अछा इलाज है (१५) नं० ६०२,६०३,६०४, के अंग्रेजी मिकश्चर.

(होमियोपाथीक इलाज)—एन्टीमनी क्रूड आर्सेनिक ब्रायोनिया कार्वोव्हेज चाईना ही पारसल्फ नक्सवोमिका वगेरे ।

(विशेष सूचना)—अजीर्णके रोगीने खाणेका संभाल रखणा एक वेरका भया अजीर्ण एक लंघणकर हलका खुराक दुसरे दिन खाणा और ऊपर लिखी साधारण दवायोंसे भी जलदी मिट जाता है लेकिन् जो गफलत होती है तो इसका असर वहोत दिनोंतक रहता है तब अजीर्ण पुराण पडके वदनमें घर करता है और मिटणाभी मुस्कल होता है वहोत अदम्योंकूं जथा वंध अजीर्ण रहता है लेकिन् ये वात उनोके समझमें नही आती तब तरे २ के रोगोंकी फरियादी करते फाफा मारते मूर्खोंके पास फिरते हैं लेकिन् कारण समझे विगर इलाज नहीं होता इसवास्ते मंदाग्निवालेनें और अजीर्णकी शंकावालेने सादा और वहोत हलका खुराक खाणा चहिये चावल दलिया दालका पाणी वगेरे ।

पुराणे-अजीर्ण वदहजमी.

(डिस्पेपस्या)

अजीर्णका रोग वडे सहरोंके सुधरे भये समाजमें हरेक घरका खास मरज वण गया है तरे २ के मन माने भोजन करनेके शोखमें पडे भये और गदी तकियोंमें पडे रहणे वाले मोतव्वर लोकोके ऊपर ये रोग वेर २ हमला करता है जो लोक खाणे पीणेका स्वाद और मौज शोपसे वचकर और रातकूं नाच तमासा और नाटिक देखणे की लतसे वचकर साधारण जिंदगी भोगते हैं वो अदमी प्राय इस रोगसे वचे भये हैं मुंवइ हेदरावाद वीकानेर अहम्मदावाद सूरत जेसे सोखीन सहरोंमें इस रोगका जादा फैलाव है वहोतसे दोलतवानोके पास सुखके सर्व साधन होकरके भी कुटंवमें हमेसवादी और वदहजमी शरीर और मनकी नाताकतीकी फरियादी ये सब कारण वदहजमीका है.

(लक्षण)—भूख तथा रुचिका नाश छातीमें दाह खट्टीडकार उछाला उलटी होजरीमें दरद वायुकब्जी मरोडा धडक श्वासका रुकणा शिरमे दर्द मदज्वर अनिद्रा खप्ता उदासी और खोटे खयाल ये वदहजमीका लक्षण है, अन्न नजरोसे देखे नहीं सुहाता खाया पचता नहीं कभी तो जादा भूख लगी एसा मालमदे खाये वादभी भूख मालम दे अंग गलता जाय रोगीकूं एसा दुख मालमदे के आपघात करके मरजाय एसे वुरे खयाल किसी वख्त होणे लगे.

बराबर लगे नहीं पेटमें भार मालम दे पेट चढारहे और अजीर्णके लक्षण मालमदे उस्कूं कब्जी कहते हैं.

(कारण)–वेर २ जुलाब लेनेकी टेमसे कब्जीका रोग होता है, कारण ये कुदरती नियम है, जादा महनत किये पीछे जादा मुदततक विश्राम लेना पडता है, इसवास्ते जादा जुलाबसे आंतरोंकूं अपणी शक्तिके उपरांत काम करणा पडता है, तब वो जादा वखततक अपणा काम करणेमें पीछे सुस्त रहते हैं जुलाबसें एक वेर तो पेट साफ होकर बदन हलका पडता है, लेकिन् पीछे थोडेही मुद्दतमें कब्जी और भराव होजाता है, और दारूके व्यसन जेसा डोल बणता है, जेसें दारू पीणेवालेकों दारूबिना चलता नहीं तेसें जुलाबकी टेव पडणेसें उलटी खरावी होती है. (२) दस्त तथा पेशाब तथा अपान वायूकूं रोकनेसे भी कब्जीका रोग होता है, बहोतसे अदमीकूं एसी आदत पडजाती है, सो कामके लिये दस्तकूं रोकते हैं, लेकिन् वख्त वीते पीछे दस्त आता नहीं (३) आंतरोका कोईभी भाग संकुडाणेसें अथवा किसीभी गांठका उसपर दबाव होनेसें दस्त साफ नहीं आता जेसे तिल्लीके रोगसें औरतोके गर्भके भारसें इत्यादि. (४) वृद्ध अवस्थाके लिये अथवा दुसरे कारणसे नाताकती होणेसें पेटकी नसें नाताकती बणती है, इससे मलकूं नीचे उत्तरतेमें जो जोर मिलणा चहिये वो नहीं मिलता है, तब मल अंदर भरे रहता है, इससे मलकी गांठे आंतरोंमें भरे रहति है, और आफरा होजाता है. (५) सफरा मंद पडजाणेसे उसमें मल भरके रहता है, (६) कलेजा पंक्रियाझ तथा तिल्ली जो पाचन क्रियाकूं मदत करणेवाला है, उनोंमें कोई विकार होता है, तब वो अवयव चहिये जितने प्रमाणमें आंतरोकी क्रियाकूं मदत नहीं देसकते उससे भी दस्तकी कब्जी होती है. (७) जो सुखी लोक खापीकर एकजगे बेठे रहते हैं, उनोके भी कब्जी होता है. (८) बुखार हरस मगजके और दुसरे भी कितनेक रोग कब्जीका कारण होता है. (९) नहीं पचे एसा खुराक खानेकी खराब आदत. (१०) सराप तथा तमाखू वहोत पीनेकी आदत.

(लक्षण)–दस्तकी रुकावट पेटमें भार हवा आफरा बेचेनी आलस मंदाग्नि चूंक (आंकनी) अपचा, कांच निकलनी, बवासीर शिरमे दर्द भमल चक्कर हिस्टीरीया थोडा बुखार श्वास लेते अडचल अनिद्रा मनकी खिन्नता.

(इलाज)–जिसकारणमें दस्त कब्ज भया होय वो दूरकरनेका इलाज करणा जो कारण मान पहले लिखा है, दस्तकी कब्जी मिटाणेकूं सख्त जुलाब कभी लेणा नहीं (१) एक दो दिनकी कब्जीमें हरडे जोहरडे सोनामुखी, विलायती नमक, एरंडी तेल [illegible] गिर, नसोतकी छाल, गुलाफा, खमीरे वगेरेका जुलाब ले लेणा, पीछे थोडी [illegible] खुराक देणा (२) बहोतदिनकी कब्जीके वास्ते हरडे १ भाग काली दाख १

भाग मिलाकर छ मासेसें एक तोलेभर प्रमाण गोली बणाकर प्रभात खाकर ऊपर पाव जल पीणा (३) ईस पूगल एकेकरुपियेभर दिनमें तीनवेर फाकणा (४) नीचे लिखे रोगोमें दस्तकी कब्जी होय तो रेचदेणा—जीर्णज्वर जहरका दोष वातरक्त भगंदर ववासीर पांडू उदररोग ग्रंथी हृद्रोग अरुचि योनिरोग प्रमेह गोला तिल्ली व्रण विद्रधी उलटी विस्फोटक हेजा कोठ कर्णरोग यकृत्कारोग सोजा नेत्ररोग कृमिरोग क्षारका विकार वायूका रोग शूल मूत्राघात वगेरे (५) इण नीचे लिखे रोगोमे जुलाव देणा नही वालक वृद्ध घी तेल वगेरे स्नेहपान करके वहोत स्निग्ध भया भया छातीके अंदर जखमसें क्षीण पडाभया डराभया महनतसे थकाभया प्यासका रोगी शरीरका जाडा गर्भणी स्त्री नयाबुखार तुरत पसीना निकाला भया मंदाग्निवाला सराप पीणेसे भया रोग वदनसे लूखानिस्तेज इतनोकों जुलाव देणा नहीं (६) दस्तकी कब्जी मिटाणे दस्त लाणेकी दवा देते कितना एक विचार रखणा चहिये पित्तके कोठेवालेकूं हलका जुलाव कफ कोठेवालेकूं मध्यम जुलाव वादीके कोठेवालेकुं सख्त जुलाव देणा.

(नरम कोठेवालेकूं जुलाव)—मुनक्का दूध एरंडीतेल सीडलीझपाउडर एप्सम सोल्ट (विलायती निमक) सोनामुखी गुलावका फूल हरडे जोहरडे अमलतास (मध्यम कोठेवालेकुं रेच)—निशोत कुटकी किरमाला (सख्त कोठावालेकूं रेच)—जमालगोटासे शुद्ध वणा रस (७) पित्तके कोठेवालेकुं जुलाव कोप पित्तका होय तो—कालीदाख तथा सूंफकी उकालीकर उससे निसोतका चूर्णदेणा—कफके प्रकोपमे—त्रिफलाका क्काथ गोमूत्र तथा त्रिकटु मिलाकर—वायुके कोपमें—निसोत सूंठ सींधानिमक इनोका चूर्ण नींबूका रस मिलाकर देणा (८) हमेसकी कब्जी वालोने हमेस सख्त जुलाव लेणा नहीं लेकिन् जब जरूरी पडे तव एप्सम सोल्ट खीरखेस्त और सोनामुखीकी चा तीनोंकों मिलाकर अथवा एक तोला अमलतासमें १ तोला खीर किस्तमिलाकर पीणा एक दो दस्त आजाय तो दुसरेदिन फेर लेणा नहीं (९) घीमें सेकी भई जो हरडेकी भूकी आधे रुपेभर और सैंचल अढाई मासा इसकी फक्की देणेसे हलका जुलाव लगता है. (१०) नाताकत आंतरोके लिये दस्तकी कब्जी रहती होयतो आतरोंकों मजबूती मिले और दस्त साफ आवे एसा इलाज करणा—कुचीलेका सत्व ४ ग्रेण एलिया २० ग्रेण कीनाइन १० ग्रेण कम्पाउन्डरुवार्वपील २४ ग्रेण इनोकी १२ गोलियांकर फजर सांझ एकेक लेणा इसके सिवाय नं० २, ४, २५२, तथा नं० ४६१ से ४७५ तकका रेचक तथा सारक उपायोमेंसे जो अनुकूल होय सो करणा (११) रातकूं पेटपर ठंडा पाणीमें भिगाया कपडा रखकर उसपर गरम फुलालीनका कपडा लपेटकर सूणा रातकूं सोते सोवखत एकेक प्याला ठंडा जल पीणा पेटकूं यथाशक्ति दवाणा मसलाणा तथा हाथफिराना इन तीन क्रियासे भी दस्त साफ आता है (१२) पिचकारी बैठकमें देणेसें कब्जी मिटती है, परंतु भी नहीं

रखणा होता और पेटमें दरदभी नहीं होता दस्त करडा गांठोंदार आता होय तब तो पिचकारी वहोतही फायदे वंद है, जरा गरमकरे भये पाणीसे अथवा पाणीके संग एक दो औंस एरंडीका तेल मिलाकर पिचकारी भरके बैठकमें पिचकारीकी अगली टूंटी देकर पिचकारी मारणी ओर आसरे आधे घंटेतक रखणा जलदी दस्त साफ आयगा पिचकारीकुं देशीशास्त्रमे वस्तीकर्म कहते हैं, देसी चमडेकी तथा जस्तकी वण तीथी इसवखत विलायती पिचकारी यंत्रके साथ लेणेकी आती है, ये पिचकारी अपने हाथसे हरकोइ अदमी लेसक्ता है.

(विशेष वाकवी)—कब्जीके रोगीने खानपानका यत्न रखणा दालोंकी जात जेसी कब्जी करणेवाले पदार्थ खाणा नहीं वहोत चावल भी खाना नहीं मेदेकी तथा महींन आटेकी रोटी नहीं खाणी थूलीवाले आटेकी रोटी खाणी उससें भी हवाका जोर रहे तो वो भी नहीं खाणी दूध पचे जिस मुजब खाणा चा काफी वहोत सख्त वहोत गरम या वहोत जथावंध पीणा नहीं हलका सादा खुराक लेणा टेमोटेम फरागत जाणा खुली हवामें फिरणे जाणा दस्त लाणेवास्ते वहोत चिंता करणा नहीं.

उदावर्त्त—अनाह—आफरा—नलवंधवायु—

(टिम्पेनाइटिझ.)

(कारण) पाद दस्त पेसाव जंभाई आंसु छींक डकार उलटी वीर्य भूख प्यास श्वास ये सव स्वभाव (कुदरती) वेग है, इनोके रोकणेसें वायू उंची चढती है, इससे पेट फूल जाता है, ऊपरके हरेक वेगकूं रोकणेसें जुदे २ उपद्रव होते हैं, वो सव उपद्रव दुसरेप्रकाशमें देखणा इहां उनोका मुख्य उपद्रव जो पेटके आफरणेका है, सोही लिखा है, पेट फूल जावे अंदरसे जाणे जकड गया होय एसा मालमदे गडगडाट करे श्वासरुके डकार आवे और जिसमें वहोतसी वखत खराब स्वाद और गंध आवे पेटमें दरद होय और वायुसरे तब थोडा चैन पडे ये सब आध्मान रोगके लक्षण है.

(इलाज)—अजीर्ण तथा चूंकमें लिखे इलाज करणा पेटपर राई मारणी गरमपाणीका सेक करणा पेटपर हींग अथवा टरपेन्टाइन चोपडणा हिंगकापाणी टरपेन्टाइन तथा गरम पाणीकी वस्तिलेणी गुदामें वाट रखणी मैणफल पीपर कूठ वज और सुपेद सरसूं इन सबोंको [illegible] पीस तथा दूधमें पीस इनोकी वत्तीकर गुदामें रखणी चार तोला चूरखांड एक तोला निशोत एक तोला पीपर इकठाकर इसमेंसे १ तोला चूर्ण सहतके संग मिलाकर [illegible] खाणा सूंठ मिरच पीपर पीपरामूल चित्रक जमालगोटा तथा निशोत इन सबोंका समभाग चूर्ण गुडमें मिलाकर शक्ति मुजब लेणेमें आफराभिटता है, २ भाग निशोत ४ भाग पीपर और ५ भाग हरडे सबकी बराबर गुड इनोकी गोलीकर खाणेमें

शूलका इलाज.

तेज आफरेका रोग भी मिटजाता है, पींपरमिंटके दसेक चूंद जलमें डालकर पीणा युरोपि-
ब्रांडी देते हैं, कब्जी होय तो एरंडी तेलका जुलाव देणा अथवा इसकी पिचकारी.

चूंक–आंकसी–शूल–

कोलिक.

ऊपर लिखा सव वयान लगवग एकही अर्थ और एकही रोगकूं पहचाणणे वाला है, पेटमें चूंक आवै शूलमारे आंकसी अथवा वांइटे होकर पेटमें दरद होय उसरोगके पहली लिखे सोंनाम है.

(कारण)–(१) वहोत वायुकारी अथवा कच्चा खुराक नहीं पचणेसें पेटमे वायु जोर करती है (२) दस्त वहोतदिनोंतक कब्ज रहणेसें मलके भरावसें पेटमें दरद पैदा करता है (३) ठंढीहवा लगणेसें ठंढी चीज खाणेसें अथवा ठंढे पाणीमें वहोत देर भीजणेसें भी दरद होता है (४) नरम मिजाजवाले अदमी और जादा करके हिस्टीरीया वाली औरतोंके ये रोग होता है. (५) सीसेके रजकण सपेदा और भी कइतरेके दुसरी जहरी रंगके रजकण पेटमे जाणेसे दरद उठता है.

(लक्षण)–सूंटीके आगे अथवा सव पेटमें पीड चूंक शूल दस्तकी कब्जी वहोतसी वखत उलटी होय रोगी दरदसे पछाडा मारे गभरा उठे पेटपर दावणेसें या मसलणेसें अछा लगे आंतमें सूजन होणेसें तथा पेटके दुसरे दरदोंके लिये भी पेटमें दरद होता है लेकिन् वो इस पेट पीडासे जुदा होता है, उसकी पहचाण एसी है, के उसपर दवाणेसें अथवा मसलणेसे जादा दरद वढता है, और बुखार होता है, नाडी जलद चलती, है.

(इलाज)–(१) शेक–साधारणचूंक अथवा शूल शेक करनेसे मिटजाती है, गरम पाणी डाल शीशीया टरपेनटाइनका शेक करणा (२) दस्त वंध होय तो वादीहर रेचक दवायें देणी एरंडीतेल तथा उसमें लाडेनमना १० वूंद देणेसें तुरत खुलासा होता है, सूंठका क्वाथ एरंडी तेल सेकीभई हींग तथा सेंचल डालकर पिलाणा इलायची हींग जवखार तथा सींधानिमक इनोंके क्वाथमें एरंडी तेल देणेसें पेट नाभि पीठ शिर कान आंख इन सव जगेकी शूलकूं मिटाता है. (३) हींग १ वहेडा २ सूंठ ३ कां कचिया ४ भाग इनोका चूर्ण पाणीमे पिलाणा (४) जोहरडे त्रिकटु कुचीला शुद्ध गंधक हींग शुद्ध सींधानिमक इनोको नींवूके रशमें देणा (५) घीके सग तलीभई हींग निगलादेणी अथवा लसणकी कुली निगलादेणी जिससें वादी निकलकर पेट पीडा मिटेगा (६) पेट ठसाठस भरा होयतो उलटी करणेके इलाजोसे उलटी करणी (७) हींग कांकचिया अजवाण तथा निमकका टुकडा लेणा (८) टरपेन्टाइन हींग तथा पाणीकी गुदाद्वारसे पिचकारी देणी उससे वायूका जोर मिटता है. (९) पांच निमक अद्रकके रशमें (१०) त्रिफला कुटकी तथा अमलतासका काढा. (११) अरोमेटिक पाउडर ग्रेन ५,

से १० सहतमें चटाणा. (१२) सूंठ संचल जोहरडे पीपर तथा निशोत सम वजन फक्की तोला। इसके सिवाय नं० ६१६ ५१७ का अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ७०४ ७०५ कैहकी मीनुसके इस रोगके प्रसिद्ध इलाज है.

देशी वैद्यकशास्त्र चूंक शूल रोगके दोष मुजब बहोत प्रकार बतलाता है, लेकिन् इसमें समझणेकी बात इतनीही है, के शूल दो तरेकी है, एकतो खास पेटके साथ संबध रखती है, जिसका मुख्य आधार आहार विहार और पाचन क्रिया ऊपर रहा भया है, ओर दुसरी शूल यानेचसका ज्ञानतंतुओंके साथ संबंध रखता है, ये दुसरी तरेकी शूलका छठी किरणमें खुलासा लिखेंगें वैद्यकशास्त्र मुजब शूलरोगका भेद इस मुजब है, वातशूल २ पित्तशूल ३ कफशूल ४ सन्निपातशूल ५ आमशूल ६ द्वंद्वजशूल ७ परिणामशूल ८ अन्नद्रवशूल.

(वायुशूल)–मुख्य दोषवायु नाभि पसवाडे पीठ पेडू इनोमे वेर २ शूल होय और मिटजावै दस्त पेशाब रुके सुईचुभाणे जेसी और फाटणे जेशी शूल शेकसे दबाणेसे तथा चिकणे और गरम अन्नपानसे शांति होय (इलाज)–एरंडके जडका क्काथ हींग तथा संचल डालकर पीणा (२) जोहरडे अतीस हींग संचलवज तथा इंद्रजव इनोका चूर्ण पाणीमें (पित्तशूल)–मुख्यठिकाणा नाभि तृषा मोह दाह दरद पसीना मूर्छा भ्रम होता है, आधीरातकूं अन्नके विदाहकालमें और शरदऋतूमें वधे और शीतकालमे शमन होय इलाज–(१) पहली तो उलटी करणी पीछे जुलाब देणा (२) आंवलेका चूर्ण सहतमें चाटणा (३) जोहरडेका चूर्ण गुड तथा सहतमें घीमे खाणा (४) त्रिफला अमलतासके गूदेका क्काथ मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (कफशूल)–मुख्य दोष कफ ठिकाणा होजरी खासी अरुचि ग्लानी मूंमेसे लार गिरणी गलेमें भार कोठेमे भारीपणा इलाज–(१) लंघन जरूर करणा (२) जोहरडे चित्रक कुटकी वज इनोका चूर्ण गोमूत्रमें (३) संधानिमक विडनिमक वंगडखार हींग पींपर पीपरामूल चव्य चित्रक तथा सूंठका चूर्ण जरा गरम पाणीमें पीणा (सन्निपातशूल)–तीनों दोषका लक्षणवाला असाध्य है, इलाज नहीं है, (आमशूल)–पेटमें गुडगुड अवाज उलटी शरीरमें तडफना मंदपणा पेटका फूलणा तथा कफके सर्व लक्षण होय–इलाज–(१) कफशूलका इलाज करना (२) नागरमोथ सींधानिमक जोहरडे तथा सूंठका चूर्ण (द्वंद्वजशूल) दोदो दोष सामल होय ठिकाणा कफवादीमें पेडु हृदय कंठ और पसवाडेमें शूल कफपित्त मिले दोषमें कूख हृदय नाभी तथा पसवाडेमे शूल वातपित्त मिलेमें दाह तथा ज्वर मुजब होता है (इलाज)–(१) लसनका कल्क फजरमें सहतमें खाणेमें वातकफकी शूलमिटे (२) दारू तथा अरडूसेका क्काथ पीणेमें कफपित्तकी शूलमिटे–(परिणामशूल)–खाया हुवा अन्न पचे पीछे उठे जो शूल उसका ठिकाना आंतरा–इलाज (१)

प्रथमलंघन पीछे उलटी रेच (२) सूंठ तिल तथा गुलकूं पीस गऊके दूधमें पीणा (३) शंखभस्म पाणीमें पीणा (४) मैणफल तथा कुटकी कूं जलमें पीस सूंडीपर लेप करणा (५) सेके भये कांकचि ये सवतरेके शूलकूं मिटाता है–अन्न द्रव शूल–खाया भया अन्न पचणेसें भी शूल मिटे नहीं तो जहांतक तीखा पीला खट्टा और पतला उलटीमें निकले नहीं उहांतक रोगीकूं चैन पडे नही इसवास्ते पित्त पडे जहांतक वमन देना और कफ पडे जहांतक जुलाव देणा एसी मर्यादा है, इलाज (१) आंवलेमें अथवा मोलेठीमें लोहभस्म (सार) सहत मिलाकर देणा–बाहरका इलाज–अफीमका लेप गूगलका लेप राईका लेप लसनका तेल वछनागका तेल हींगका लेप वेलाडोणेका लेप इत्यादिक कितनेक लेप शूलको शांत करता है.

(विशेष सूचना)–पथ्य–उलटी पसीना शेक लंघन नींद जुलाव पाचन पुराणी डांगर गरम किया भया दूध परवल खार सहजणेकी फली करेला निमक हींग लसण एरंडी तेल गोमूत्र नींवु गंधक त्रिकटु वगेरे दीपन पाचन–कुपथ्य–विरुद्ध अन्नपान उजागरा लूखा तुरा ठंढा जड महनत मैथुन मद्य सवतरेकी दाल चवला मटर तीखापदार्थ वेगोकों रोकना शोक क्रोध वगेरे त्याग करना.

गुल्म–गोला.

अजीर्णके विकारोमें चूंक आंकसी शूल और गोलेका भी समावेश होसक्ता है, पहला तीन विकार तो ऊपर लिखा है, अब गोलेका विकार लिखते हैं, अंग्रेजी वैद्यक मुजब तो गुलमका कोइ जुदा रोग नही हैं, लेकिन् अजीर्णका एक निशान है, देशी वैद्यकशास्त्रोमें गुलमका रोग खास जुदा निदानमें लिखा है, गोलेका रोग पांचप्रकारका है, वायुगुल्म पित्तगुल्म कफगुल्म त्रिदोषगुल्म रक्तगुल्म पांचोप्रकारोमें मुख्य देखे तो वायुप्रधान है.

(वातगोलेका कारण)–लूखा और विषम अन्नपान दस्त वगेरे वेगोकों रोकना शोकसें हृदयमें चोट लगना जुलावोंसे मलका क्षय करना और उपवासादिकोंका करणा ये वात गुलमका कारण है.

(लक्षण)–जुदे २ ठिकाणे दरद दस्त पेसावका तथा वायुका रुकणा गलेमें शोष वदनपर कालापणा तथा ललाई ठंड देके बुखार अन्नपचे पीछे दरदका शमन (इलाज) एरंडीका तेल दूधके संग अथवा हरडे दूधके संग अथवा गूगल गोमूत्रके संग (पित्तगोलेका कारण)–तीखा खट्टा तीक्ष्ण उष्ण और दाह करणेवाले पदार्थ गुस्सा मदिरापीणा ताप विदग्धाजीर्ण तथा खून विगाड (लक्षण)–बुखार प्यास ग्लानी वदनपर ललाई पाचनक्रियाकी वख्त भारी शूल पसीना तथा दाह होता है (इलाज)–जोहरडे गुड तथा मुनकाके संग खाणा २ त्रिफला चूर्ण मिश्रीसे ३ आंवलेके उकालीमें घी डालकर सिद्ध कियाभया घी चाटणा ४ कपीलेका चूर्ण सहतमें (कफगोलेका कारण)–ठंडा

से १० सहतमें चटाणा. (१२) सूंठ संचल जोहरडे पीपर तथा निशोत सम वजन फकी तोला । इसके सिवाय नं० ६१६ ५१७ का अंग्रेजी मिक्श्चर तथा नं० ७०४ ७०५ केहकी मीनुसके इस रोगके प्रसिद्ध इलाज है.

देशी वैद्यकशास्त्र चूंक शूल रोगके दोष मुजब बहोत प्रकार बतलाता है, लेकिन् इसमें समझणेकी बात इतनीही है, के शूल दो तरेकी है, एकतो खास पेटके साथ संबध रखती है, जिसका मुख्य आधार आहार विहार और पाचन क्रिया ऊपर रहा भया है, और दुसरी शूल यानेचसका ज्ञानतंतुओंके साथ संबंध रखता है, ये दुसरी तरेकी शूलका छठी किरणमें खुलासा लिखेंगें वैद्यकशास्त्र मुजब शूलरोगका भेद इस मुजब है, वातशूल २ पित्तशूल ३ कफशूल ४ सन्निपातशूल ५ आमशूल ६ द्वंद्वजशूल ७ परिणामशूल ८ अन्नद्रवशूल.

(वायुशूल)-मुख्य दोषवायु नाभि पसवाडे पीठ पेडू इनोमे वेर २ शूल होय और मिटजावे दस्त पेशाब रुके सुईचुभाणे जेसी और फाटणे जेशी शूल शेकसे दबाणेसे तथा चिकणे और गरम अन्नपानसे शांति होय (इलाज)-एरंडके जडका क्वाथ हींग तथा संचल डालकर पीणा (२) जोहरडे अतीस हींग संचलवज तथा इंद्रजव इनोका चूर्ण पाणीमें (पित्तशूल)-मुख्यठिकाणा नाभि तृषा मोह दाह दरद पसीना मूर्छा भ्रम होता है, आधीरातकूं अन्नके विदाहकालमें और शरदऋतूमें वधे और शीतकालमे शमन होय इलाज-(१) पहली तो उलटी करणी पीछे जुलाब देणा (२) आंवलेका चूर्ण सहतमें चाटणा (३) जोहरडेका चूर्ण गुड तथा सहतमें धीमे खाणा (४) त्रिफला अमलतासके गूदेका क्वाथ मिश्री तथा सहत डालकर पीणा (कफशूल)-मुख्य दोष कफ ठिकाणा होजरी खासी अरुचि ग्लानी मूंमेसे लार गिरणी गलेमें भार कोठमे भारीपणा इलाज-(१) लंघन जरूर करणा (२) जोहरडे चित्रक कुटकी वज इनोका चूर्ण गोमूत्रमें (३) सेंधानिमक विडनिमक जवखार हींग पींपर पीपरामूल चव्य चित्रक तथा सूंठका चूर्ण जरा गरम पाणीमें पीणा (सन्निपातशूल)-तीनों दोषका लक्षणवाला ये असाध्य है, इलाज नहीं है, (आमशूल)-पेटमें गुडगुड अवाज उलटी शरीरमें जडपणा मंदपणा पेटका फूलणा तथा कफके सर्व लक्षण होय-इलाज-(१) कफशूलका इलाज करना (२) अजवाण सींधानिमक जोहरडे तथा सूंठका चूर्ण (द्वंद्वजशूल) दोदो दोष सामल होय ठिकाणा कफवादीमें पेडु हृदय कंठ और पसवाडेमें शूल कफपित्त मिले दोषमें कूख हिदय नाभी तथा पसवाडेमे शूल वातपित्त मिलेमें दाह तथा मल्ल बुखार आता है (इलाज)-(१) लसनका कल्क फजरमें सहतमें खाणेसें वायकफकी शूलमिटे (२) दाख तथा अरडूसेका क्वाथ पीणेसें कफपित्तकी शूलमिटे-(परिणामशूल)-खाया भया अन्न पचे पीछे उठे जो शूल उसका ठिकाना आंतरा-इलाज (१)

भेद समझकर जो इलाज करनेमें आवे तो दवाका वहोत जलदी असर होता है, पीछै कितनेक सामान्य इलाज भी एसा है, सो सवतरेके दस्तोंपर फायदा पोहचाता है, तो भी वायूके दस्तका इलाज अगर पित्तके दस्तपर करे जो की गरम दवाये देनेमें आवे तो दस्त नहीं रुककर उलटा वढता है, और रक्तातिसार होजाता है, अजीर्णका दस्त झांखा और सुपेद होता है, और जोवो अजीर्ण सख्त होता है, तो हैजेके जेसे चिन्ह मालम पडते हैं, (इलाज)–दस्तका इलाज करनेके पहली दस्तकी परिक्षा करनी दस्तके दो विभाग करना आमातिसार अथवा कच्चा दस्त और पका अतिसार अथवा पका दस्त जलमें डालणेसे दस्त डूब जाय तो आमका अपक दस्त समझना और पाणी ऊपर तरे तो पका दस्त समझना दस्त कच्चा और आममिला होय तो उसकूं एकदम वंघ करनेकी दवा देनी नहीं क्योंके कच्चे दस्तकूं एकदम वंधकर देतो उससे और केइतरेके विकारोंकी उत्पत्ती होती है, जेसेके आफरा सग्रहणी मसा भगंदर सोजा पांडू तिल्ली गोला प्रमेह पेटका रोग तथा ज्वर लेकिन् उसके संग ये वात भी याद रखणी चाहिये जो रोगी वालक वुढा या नाताकत होकर जादा दस्तोंकों नही सहसकता होय तो आमके दस्तकों भी एकदम रोक देना चाहिये (१) दस्तका श्रेष्ठ इलाज लंघन है, पित्तातिसार रक्तातिसारमे लंघन नही कराणा चाहिये औरोमें अछा लंघनकरनेसें रोगीकू प्यास वहोत लगती है, उसकू मिटाने धाणा तथा वालेकुं उकाल वो पाणी ठंढाकर पिलाना अथवा धाणा और सूंठका मोथ और पित्तपापडेका और वालेका जल पिलाणा (२) अजीर्ण तथा आमका दस्त होय तो लंघन कराकर पीछै उसकूं प्रवाही हलका भोजन देना आर आमकूं पचावै एसा दीपन पाचन और स्तंभन इलाज करना (४)–(वायुकादस्त)–१ लाही चूर्ण (नं० २३७, २) वृद्ध गंगाधर चूर्ण (नं० २२४) अनुपान छाछ अथवा चावलोंका धोवण (३)–आनंदभैरवरस (नं० ३४२, ४) शेकी भई भांगका चूर्ण रात्रका सहतमें लेना (५) अफीम तथा केशर चावलभर सहतमें देना पथ्य दही चावल (पित्तका दस्त)–(१) वीलका गिर इंद्रजव मोथवाला और अतिविष इनोकी उकाली पित्त तथा आमके दस्तकूं मिटाता है, (२) अतीस कूडा छाल तथा इंद्रजवका चूर्ण चावलोके धोवनमे सहत डालकर देणा (३)–विल्वादि चूर्ण (नं० २३२) (कफका दस्त)–(१) लंघन तथा पाचनक्रिया (२)–हरडे दारुहलदी वज मोथ सूठ तथा अतीस इनोका काढा (३) हिंगाष्टक चूर्ण (नं० २३७) मे हरडे तथा साजीखार मिलाकर फकी लेणी (७) अमातिसार–(१) लंघन मरोडेका इलाज करना (२) एरडीका तेल पीलाकर कचे आमकुं निकाल डालना (३) गरम पाणीमें घी डालकर पीणा (४) सूठ सूंफ खसखस तथा मिश्रीका चूर्ण (५) सूंठके चूर्णकुं पुटपाककी तरे पकाकर मिश्री डालकर खिलाना (८) रक्तातिसार–(१) पित्तके अतीसार

भारी चिकणा अन्नपान आलस दिनका नींद लेनी (लक्षण)—वदन भीजे जेसा ठंढके संग बुखार ग्लानी मोल उधरस अरुचि शरीरमें भार अग्निमंद दरद थोडा (इलाज) १ अजवाण बिडलूंण छाछमें २ तिल एरंडी तथा अलसीके बीज तथा सरसूं पीस पेटपर लेप करणा और उसपर आकके पत्तोंका शेक करणा ३ वात गुलमके इलाज करणा (रक्तगुल्म)—और तोंका ये खास रोग होणेसें स्त्री चिकित्साप्रकरणमें लिखेंगें (गुल्मका सामान्य इलाज)—१ अढाई मासा चोवासाजी अढाइ मासा गुड २ पलास थोर आंधीझाडा अंबली आक तिल सेरा जव ये आठ चीजोंका खार गोलेकूं मिटाता है, ३ अढाई मासा सोराखार और अढाइ मासा आदा मिलाकर खिलाना ४ कुंवारपठेकी गिरी छ मासा गऊका घी तथा सूंठ मिरच पीपर हरडे सींधानिमक मिलाकर खाणा ५ सींपजलाईभईका चूर्ण अढाइ मासा गुड अढाइ मासा इनोकी गोलीकर खाणी ६ तली भई हींग घीमे खाणी ७ शंखभस्म नींबूके संग खाणी.

अतिसार—(दस्त)

डायरीया.

(कारण)—दस्त होणेके वहोत कारण है, अजीर्ण और अतिसारके वहोतसे कारण एकसे हैं, अतिशय और योग्यखुराक कच्चा फल तेसे कच्चा अन्न वासी तथा भारी अनाज इत्यादि खाणेसे भी दस्त होता है, खराब पाणी खराब हवा मोसमका बदलना शरदी डर विगर विचारी आफत् ये सब बातोंसे अतीसार पैदा होजाता है.

(लक्षण)—वेर २ पतला दस्त होणा ये मुख्य चिन्ह है, मोल अरुचि जीभपर सुपेद अथवा पीली छारी पेटमें वायु हवाका गडगडाट चूंक वायु के अथवा खटी डकार वगेरे ये अतीसारके लक्षण है, अतिसारके दस्तोमें तथा मरोडेमें वहोत फरक होता है, ये बात ध्यानमें रखनी अतिसारमें पतला दस्त छूटा चला जाता है, और मरोडेमें आंतरे कचरेसे भरे भये होते हैं, उससे खुलासा दस्त नहीं होकर आंकसी चल २ कर थोडा २ दस्त आकर ऊपरसे आंतरोंमेंसें आंव जलमसपीव तथा खून गिरता है, अतीसारके दस्तमें खून गिरे सोया तो मसेके अंदरसे कोईभी खूनकी रक्तनली फूटणेमें अथवा आंतरोंमें या होजरीमें जखम (घाव) गिरणेमे गिरता है.

(अतिसारका भेद)—देशी वैद्यकशास्त्रमें अतिसारके वहोत भेद भेदांतर लिखे है जिस अतिसारमें जिस दोषकी अधिकता होती है, उस मुजब नाम देणेमें आता है जैसे० वातातिसार पित्तातिसार कफातिसार सन्निपातातिसार शोकातिसार आमातिसार रक्तातिसार वगेरे दस्तके रंगमें तेसे दुसरे लक्षणोमें तफावत होता है, वायुका दस्त झागा भूरंग होता है, पित्तका पीला तथा ललाट लिये होता है, कफका तथा आमका दस्त सुपेद तथा चिकणा होता है, रक्तातिसारमें खून गिरता है, दस्तोंका एसा मुर्

भेद समझकर जो इलाज करनेमें आवे तो दवाका वहोत जलदी असर होता है, पीछे कितनेक सामान्य इलाज भी एसा है, सो सवतरेके दस्तोंपर फायदा पोहचाता है, तो भी वायूके दस्तका इलाज अगर पित्तके दस्तपर करे जो की गरम दवाये देनेमें आवे तो दस्त नहीं रुककर उलटा वढता है, और रक्तातिसार होजाता है, अजीर्णका दस्त झांखा और सुपेद होता है, और जोवो अजीर्ण सख्त होता है, तो हैजेके जेसे चिन्ह मालम पडते हैं, (इलाज)–दस्तका इलाज करनेके पहली दस्तकी परिक्षा करनी दस्तके दो विभाग करना आमातिसार अथवा कच्चा दस्त और पक्का अतिसार अथवा पक्का दस्त जलमें डालणेसे दस्त डूब जाय तो आमका अपक्व दस्त समझना और पाणी ऊपर तरे तो पक्का दस्त समझना दस्त कच्चा और आममिला होय तो उसकूं एकदम वंध करनेकी दवा देनी नहीं क्योके कच्चे दस्तकूं एकदम वंधकर देतो उससे और केइतरेके विकारोंकी उत्पत्ती होती है, जेसेके आफरा सग्रहणी मसा भगंदर सोजा पांडू तिली गोला प्रमेह पेटका रोग तथा ज्वर लेकिन् उसके संग ये वात भी याद रखणी चाहिये जो रोगी वालक वुढा या नाताकत होकर जादा दस्तोंकों नही सहसकता होय तो आमके दस्तकों भी एकदम रोक देना चाहिये (१) दस्तका श्रेष्ठ इलाज लंघन है, पित्तातिसार रक्तातिसारमे लंघन नही कराणा चाहिये औरोमें अछा लंघनकरनेसें रोगीकूं प्यास वहोत लगती है, उसकूं मिटाने धाणा तथा वालेकुं उकाल वो पाणी ठंढाकर पिलाना अथवा धाणा और सूंठका मोथ और पित्तपापडेका और वालेका जल पिलाणा (२) अजीर्ण तथा आमका दस्त होय तो लंघन कराकर पीछे उसकूं प्रवाही हलका भोजन देना आर आमकूं पचावे एसा दीपन पाचन और स्तभन इलाज करना (४)–(वायुकादस्त)–१ लाही चूर्ण (न० २३७, २) वृद्ध गंगाधर चूर्ण (नं० २२४) अनुपान छाछ अथवा चावलोंका धोवण (३)–आनंदभैरवरस (नं० ३४३, ४) शेकी भई भांगका चूर्ण रात्रका सहतमें लेना (५) अफीम तथा केशर चावलभर सहतमें देना पथ्य दही चावल (पित्तका दस्त)–(१) वीलका गिर इंद्रजव मोथवाला और अतिविप इनोकी उकाली पित्त तथा आमके दस्तकूं मिटाता है, (२) अतीस कूडा छाल तथा इद्रजवका चूर्ण चावलोके धोवनमें सहत डालकर देणा (३)–विल्वादि चूर्ण (न० २३२) (कफका दस्त)–(१) लंघन तथा पाचनक्रिया (२)–हरडे दारुहलदी वज मोथ सूंठ तथा अतीस इनोका काढा (३) हिंगाष्टक चूर्ण (नं० २३७) मे हरडे तथा साजीखार मिलाकर फक्की लेणी (७) अमातिसार–(१) लंघन मरोडेका इलाज करना (२) एरडीका तेल पीलाकर कच्चे आमकुं निकाल डालना (३) गरम पाणीमें घी डालकर पीणा (४) सूठ सूंफ खसखस तथा मिश्रीका चूर्ण (५) सूंठके चूर्णकु पुटपाककरी तरे पकाकर मिश्री डालकर खिलाना (८) रक्तातिसार–(१) पित्तके अतीसार

भारी चिकणा अन्नपान आलस दिनका नींद लेनी (लक्षण)–वदन भीजे जेसा ठंडके संग बुखार ग्लानी मोल उधरस अरुचि शरीरमें भार अग्निमंद दरद थोडा (इलाज) १ अजवाण बिडलूंण छाछमें २ तिल एरंडी तथा अलसीके बीज तथा सरसूं पीस पेटपर लेप करणा और उसपर आकके पत्तोंका शेक करणा ३ वात गुल्मके इलाज करणा (रक्तगुल्म)–औरतोंका ये खास रोग होणेसें स्त्री चिकित्साप्रकरणमें लिखेंगें (गुल्मका सामान्य इलाज)–१ अढाई मासा चोवासाजी अढाइ मासा गुड २ पलास थोर आंधीझाडा अंघली आक तिल सेरा जव ये आठ चीजोंका खार गोलेकूं मिटाता है, ३ अढाई मासा सोराखार और अढाइ मासा आदा मिलाकर खिलाना ४ कुंवारपठेकी गिरी छ मासा गऊका घी तथा सूंठ मिरच पीपर हरडे सींधानिमक मिलाकर खाणा ५ सींपजलाईभईका चूर्ण अढाइ मासा गुड अढाइ मासा इनोकी गोलीकर खाणी ६ तली भई हींग घीमे खाणी ७ शंखभस्म नीबूके संग खाणी.

अतिसार–(दस्त)

डायरीया.

(कारण)–दस्त होणेके वहोत कारण है, अजीर्ण और अतिसारके वहोतसे कारण एकसे हैं, अतिशय और योग्यखुराक कचा फल तेसे कचा अन्न वासी तथा भारी अनाज इत्यादि खाणेसे भी दस्त होता है, खराव पाणी खराव हवा मोसमका वदलना शरदी डर विगर विचारी आफत् ये सव वातोंसे अतीसार पैदा होजाता है.

(लक्षण)–वेर २ पतला दस्त होणा ये मुख्य चिन्ह है, मोल अरुचि जीभार सुपेद अथवा पीली छारी पेटमें वायु हवाका गडगडाट चूंक वायु के अथवा खटी डकार वगेरे ये अतीसारके लक्षण है, अतिसारके दस्तोमें तथा मरोडेमें वहोत फरक होता है, ये बात ध्यानमें रखनी अतिसारमें पतला दस्त छूटा चला जाता है, और मरोडेमें आंतर कचरेसे भरे भये होते हैं, उससे खुलासा दस्त नहीं होकर आंकसी चल २ कर थोडा २ दस्त आकर ऊपरसे आंतरोंमेंसें आंव जलमसपीप तथा खून गिरता है, अतीसारके दस्तमें खून गिरे सोया तो मसेके अंदरसे कोईभी खूनकी रक्तनली फूटणेसें अथवा आंतरोंमें या होजरीमें जखम (घाव) गिरणेसे गिरता है.

(अतिसारका भेद)–देशी वैद्यकशास्त्रमें अतिसारके वहोत भेद भेदांतर किये हैं जिन अतिसारमें जिस दोषकी अधिकता होती है, उस मुजव नांम देणेमें आया है जेसेकि वातातिसार पित्तातिसार कफातिसार सन्निपातातिसार शोकातिसार आमातिसार रक्तातिसार वगेरे दस्तके रंगमें तेसे दुसरे लक्षणोमें तफावत होता है, वायुका दस्त झागवाला चुलवला होता है, पित्तका पीला तथा ललाई लिये होता है, कफका तथा आमका दस्त सुपेद तथा चिकणा होता है, रक्तातिसारमें खून गिरता है, दस्तोंका एसा सूक्ष्म

भेद समझकर जो इलाज करनेमें आवे तो दवाका वहोत जलदी असर होता है, पीछै कितनेक सामान्य इलाज भी एसा है, सो सवतरेके दस्तोंपर फायदा पोहचाता है, तो भी वायूके दस्तका इलाज अगर पित्तके दस्तपर करे जो की गरम दवाये देनेमें आवे तो दस्त नही रुककर उलटा वढता है, और रक्तातिसार होजाता है, अजीर्णका दस्त झांखा और सुपेद होता है, और जोवो अजीर्ण सख्त होता है, तो हैजेके जेसे चिन्ह मालम पडते हैं, (इलाज)–दस्तका इलाज करनेके पहली दस्तकी परिक्षा करनी दस्तके दो विभाग करना आमातिसार अथवा कच्चा दस्त और पक्का अतिसार अथवा पक्का दस्त जलमें डालणेसे दस्त डूब जाय तो आमका अपक्व दस्त समझना और पाणी ऊपर तरे तो पक्का दस्त समझना दस्त कच्चा और आममिला होय तो उसकूं एकदम वंध करनेकी दवा देनी नहीं क्योंके कच्चे दस्तकूं एकदम वंधकर देतो उससे और केइतरेके विकारोंकी उत्पत्ती होती है, जेसेके आफरा सग्रहणी मसा भगंदर सोजा पांडू तिली गोला प्रमेह पेटका रोग तथा ज्वर लेकिन् उसके संग ये वात भी याद रखणी चाहिये जो रोगी वालक वुढा या नाताकत होकर जादा दस्तोंकों नही सहसकता होय तो आमके दस्तकों भी एकदम रोक देना चाहिये (१) दस्तका श्रेष्ठ इलाज लघन है, पित्तातिसार रक्तातिसारमे लंघन नहीं कराणा चाहिये औरोमें अछा लंघनकरनेसें रोगीकूं प्यास वहोत लगती है, उसकूं मिटाने धाणा तथा वालेकुं उकाल वो पाणी ठंढाकर पिलाना अथवा धाणा और सूंठका मोथ और पित्तपापडेका और वालेका जल पिलाणा (२) अजीर्ण तथा आमका दस्त होय तो लंघन कराकर पीछे उसकूं प्रवाही हलका भोजन देना आर आमकूं पचावै एसा दीपन पाचन और स्तंभन इलाज करना (४)–(वायुकादस्त)–१ लाही चूर्ण (नं० २३७, २) वृद्ध गंगाधर चूर्ण (नं० २२४) अनुपान छाछ अथवा चावलोंका धोवण (३)–आनंदभैरवरस (नं० ३४३, ४) शेकी भई भांगका चूर्ण रात्रका सहतमें लेना (५) अफीम तथा केशर चावलभर सहतमें देना पथ्य दही चावल (पित्तका दस्त)–(१) वीलका गिर इंद्रजव मोथवाला और अतिविप इनोकी उकाली पित्त तथा आमके दस्तकू मिटाता है, (२) अतीस कूडा छाल तथा इंद्रजवका चूर्ण चावलोंके धोवनमें सहत डालकर देणा (३)–विल्वादि चूर्ण (नं० २३२) (कफका दस्त)–(१) लंघन तथा पाचनक्रिया (२)–हरडे दारुहलदी वज मोथ सूठ तथा अतीस इनोका काढा (३) हिंगाष्टक चूर्ण (नं० २३७) मे हरडे तथा साजीखार मिलाकर फक्की लेणी (७) अमातिसार–(१) लंघन मरोडेका इलाज करना (२) एरडीका तेल पीलाकर कच्चे आमकुं निकाल डालना (३) गरम पाणीमें घी डालकर पीणा (४) सूठ सूंफ खसखस तथा मिश्रीका चूर्ण (५) संठके चूर्णकु पुटपाककरी तरे पकाकर मिश्री डालकर खिलाना (८) रक्तातिसार–(१) पित्तके अतीसारका

इलाज करना (२) चावलोके धोवणमें सुपेद चंदनकुं घस उसमें सहत मिश्री डालकर पिलाना (३)–आंबकी गुठली छाछमें अथवा चावलोके धोवणमें पीसकर देना (४) कच्चा बीलगिर गुडमे देना (५) जामुन आंब तथा अंबलीके कच्चे पत्ते पीस रस निकाल उसमें सहत घी तथा दूध मिलाकर पीणा (अतिसारका सामान्य इलाज)–१ आंबके गुठलीका मगज बीलकी गिर इनोके चूर्ण अथवा क्वाथमें सहत तथा मिश्री डालकर देना (२)–अफीम तथा केशरकी आधीचिरमी जितनी गोली सहतमे लेणी (३)–जायफल अफीम तथा खारककूं नागरवेलके पानके रसमें घोटकर वाल प्रमाणकी गोली छाछमें देनी (४) जीरा भांग बीलगिर तथा अफीम दहीमें घोट वाल एककी गोली देनी इसके अलावा इस ग्रंथमे दिये भये (नं० २०९, २२४, २२५, २२६, २३३, २३८, २४५, ३३२, ३३९, ३४३, का इलाज सब अछे है.)–(अंग्रेजी इलाज)–१ हलका दस्त भया होय तो मिरचकाली थोडी उकालकर पेपरमीन्ट तज इलायची कालीमिरच जावत्री इसमेंसे किसीभी दवाका अर्क या चूर्ण जलके संग लेणेसे दस्त बंध होकर पाचनक्रिया साफ होजायगी (२) लेकिन् जोवादी होकर दस्त थोडा २ आता होय तो एरंडी तेल पीणा अगर जो पेटमें दरद होता होय तो एरंडी तेलमें आठ दस बूंद लाडेनमनाके डालना (३) अथवा कम्पाउन्ड रुबार्ब पाउडर ग्रेन २० पाणीमें देणा (४) एरोमेटिकपाउडर ऑफ ऑक (नं० ४०१,) (५) (नं० ४९३, ४९४, ४९९, ५१९, ५२०, ६०९, ६१०, ६११, ६१२) वगेरेमें बताये भये इलाज योग्य अयोग्यका विचारकर उपयोगमे लेना.

(होमियो पॅथिक इलाज)–(१)–एलोझ–अटकने नही सके एसा पीलापाणी जेसा दस्त होय होनरीमें अवाज (२)–आर्सेनिक–दस्त झांखा अथवा पाणी जेसा प्यास लेपेनी होनरीमें दाह होय तब देणा (३)–ब्रायोनिया)–ग्रीष्मऋतूमें ठंढा शरबत पीनेमे भया जो दस्त–वो पतला फीण जेसा बादीका तथा दुरगंधिवाला उलटी और मुर्छा होय उपर देना ४–कार्बोव्हेज–अंत अवस्था आखरी हालतमें हाथ पांव ठंढा तब देना ५–(कोलोसिन्थ)–पीले पाणी जेसा और आंकसी चले एसे दस्तमें देना.

(एरण–पेचोटी)–दस्त होता है, तब कितनेक लोक एसा मांनते हैं, के सूटी नाभिके नाडेकी कोई गांठ खिसगई है, उससे दस्त होता है एसा समझ बहोतसी मूर्ख लोगोमें पेट मसलाते हैं, लेकिन् धरण अथवा पेचोटी एसा कोइनांमका अवयव शरीरमें है, नहीं. और नही किसीभी पुस्तकमें एसा नांम मिलता है, इसवास्ते एसा झुठा ख्याल करना नही सिपरशोनें. वायु अन्न, व्यसन होती है.

(विशेष सूचना)–दस्तोंके रोगमें खानपानकी बहोत सावधानता रखनी एकाद दिनका पूरा उपवास करदेना रोग बहोतदिन चले तो पीछे दाह नहीं करे एसा सुगम

संग्रहणीका इलाज.

थोडा २ देणा जेसें चावल साबूदाणा इनोकी कूटी भई घाट दहीं चावल पथ्य उलटी लंघन नींद पुराणे लाल चावल मसूर तूर सहत तिल वकरी तथा गऊका दूध दही छाछ गऊका घी ताजा वीलफल जामुन कवीठ वेर अनार सव तुरापदार्थ हलका भोजन कुपथ्य—स्नान मर्दन करडा तथा चिकणा अन्न कसरत शेक नया अनाज गरमचीज स्त्रीसंग चिंता ओजागरा वीडीका पीणा गउं उडद केरी पूरणपोली कोला ऊख सराप गुड खराव-जल कस्तूरी सव पत्तोंके साग ककडी खट्टापदार्थ ये पदार्थ अतिसारमे नुकशान करते हैं.

मरोडा आमातिसार—संग्रहणी—

डिसेन्टरी.

मरोडा आमातिसार और संग्रहणी ये तीनोनाम लगवग एकही रोगके अहवाल जताते हैं, वैद्यकशास्त्रमें जिसकुं आमातिसार कहते हैं, उसकूं लोक मरोडा कहते हैं, अतीसार और आमातिसार जव पुराणे होजाते हैं, तो उसकूं संग्रहणी कहते हैं, वो इस जगे दाखल करते है, वहोत करके ये रोग सर्व वर्गके लोकोकू लगता है, जिसतरे चोकस प्रकारकी जहरी हवासे चोकस जातके रोग फूटकर निकलते हैं, तेसें मरोडेकी भी चोकस हवा और ऋतू होती है, क्योंके मरोडाका रोग किसी २ कुं विरलेकू होता है, लेकिन् किसी २ वख्त ये रोग वहोत फैलता है, वशत और वर्षाऋतूमें उसका वहोत जोर होता है, (कारण)—मरोडा होनेका मुख्यकारण दोय है, एक किसमकी शरदी हवा तथा खुराक हवाका असर वहोत करके एक जगेके रहनेवाले सव लोकोपर एक जेसा करता है, तोभी नाताकत पडे भये और पाचनक्रियाके गडवडवाले अदमीपर उस हवाकी जलदी असर होती है, कच्चा और भारी अनाज मिरचां और गरम मसाले शाग तरकारी खानेसे वादी तथा मरोडा होता है, दस्त कब्ज रहनेसे मल आंतरोंमें भरकर रहता है, और आंतरोंके अंदरके पुडतकूं घसता है, उससे मरोडा होता है, गरम खुराक खानेसे अथवा गरमीकी मोसममें सख्त जुलाव लेनेसे भी किसीवखत मरोडेका रोग होजाता है.

(लक्षण)—मरोडेकी सरुआत दोतरेसे होती है, सख्त मरोडा होकर पहली अतिसार जेसा दस्त होता है, अथवा पेट कब्ज होकर सख्त दस्त टुकडा २ जेसा आता है, सरुआतके इस लक्षण विगर वाकी सव लक्षण दोनोप्रकारमे एकसरखा होता है, दस्तकी शंका वेर २ होती है, और पेटमे आंकडी आयकर दम २ में थोडा २ दस्त आता है, हाजत २ होती है, करांजके दस्त आता है, वेठाही रहूं एसा मन होता है, खून और पीप [illegible]रता है, थोडा वहोत किसी २ कुं बुखार भी होता है, नाडी जलद चलती है, जीभ-[illegible]र सुपेद थर होती है, रोग वहोतद्दिन चलता है, तेसे खून पीप जादा २ गिरता है, और आंकसीका दरद वढता है, मरोडेमें वडे आंतरेके पुडमें सोजा होता है, उससे जो पुड लाल होता है, पीछे उसमें लने और गोल जखम गिरता है, उसमेंसे पहली रसी

और पीछे पीप गिरता है, ये तीक्ष्ण मरोडा तीन चार अठवाडेतक जो जारी रहजाय तब पुराना गिणजाता है, पुराणा मरोडा वरसोंतक चलता है, अछा योग्य इलाज मिले तोही आराम होता है, इसीकुं संग्रहणी कहते हैं, पूरे पथ्य और दवा विगर हजारों अदमी मरते हैं, (इलाज) पहली तो पेट देखणा के आंतरोंमें सूजन है, के नहीं दबानेसें जिस जगे दुखणा मालम पडे उस जगे राईका पलाष्टर मारणा और रोगी सहसके एसा होय तो उसपर (१–२) डझन जोकलगवाणी और पीछै गरम पाणीसे सेक करना तथा अलसीकी पोटिस मारणी स्नान करना नहीं शरदीकी हवामे जाणा नहीं बिछोनेमे सोते रहणा आंतरोंमें मलका भराभया कचरा निकालणेकूं छ मासा जोहरडे अथवा सूंठके उकालीमें एरंडी तेलका जुलाब देणा वहोतसी वखत तो सरु होता मरोडा एसे जुलाबसे ही मिटजाता है, कचरा मल नीकलजाता है, दस्त साफ आता है, आंकसी तथा दस्तकी हाजत बंध होजाती है, मरोडेवालेने एरंडी तेलविना दुसरा भारी जुलाब कभी लेणा नहीं एरंडीके तेलमे तली भई जोहरडे दोभर सूंठ पांचमासा सूंफ १ भर सोनामुखी १ भर तथा मिश्री ५ भर लगवग एरंडीतेलका काम सारती है, मरोडावालेकूं दूध चावल पतली घाट अथवा दालके सादे पाणी सिवाय दुसरा खुराक देना नहीं सरु होतेही इय इलाज करे बाद जरूरी होय तो नीचै लिखते हैं, सो इलाज करना (१ अफीम)–मरोडाका रामबाण इलाज है, लेकिन् युक्तिसें लेना चहिये हिंगाष्टक चूर्णके संग गऊंभर अफीम मिलाकर रातकूं सूतीवखत लेणा अथवा अफीमके संग आधे रुपेभर सोवेकुं जरासेक कर पाणीके संग पीसकर पीणा मरोडा तथा दस्तकूं रोकने वास्ते अफीम अछा है, लेकिन् एरंडी तेल लेकर पेटमेंसे कचरा निकाले विगर पेस्तर अफीम लेणा अछा नहीं है, क्योंके मल विगडे भयेकुं अंदर रोकदेता है, दस्त बंधकर देता है, (२) ईस पूगल अथवा सुपेद जीरा मरोडेमें अछा फायदा करता है, दहीके संग आधे २ रुपियेभर जीरा अथवा ईस पूगळ दिनमें तीनवेर लेणा ये दवा दस्तकी कब्जी करे विगर मरोडेकूं मिटाता है (३) एरंडीतेल एक वेर देणेपर मरोडा नहीं मिटे तो एक दोदिन टहरके फेर एरंडीतेलही देणा वो सूंठके उकालेमें पेपरमीटके पाणीमें आदेके रसमें ३० टींचर ओपीयम यानें अफीमके अर्कमें देणा जिस्सें पेटमेकी वायूकूं दूरकर दस्तकूं रुजू करे (४) बीळ–मरोडेके मरजमें बीळ अकसीर इलाज है, बीलकी गिर गुड दहीमें मिलाकर देणेसे मरोडा मिटजाता है, (५) एपीकाक्युआन्हा–या अंग्रेजी बूटी भी मरोडेमें बहोत उपयोगी है, उसमें एक अवगुण है, के उलटी लाती है, और पेटमें टिकती नहीं पेटमें रहे तो बहोत जल्दी असर करती है, पेटमें टिके एसा करनेवास्ते प्रथम पेट पर दो घंटे तक राईका पलाष्टर मारणा और १५–२० बूंद अफीमके अर्कका दिलाना अथवा स्नान कर पीछे ईपीकाक्युआनेकी ३० ग्रेन बूटी मदतमें चटाय देना

इसपर जल पिलाणा नहीं और थोडी देरपडे रहने देणा एसा करणेसें उलटी होगी नहीं दोय तीन दिन एसे करनेसे अछा फायदा होगा और कभी उलटी होगी तो भी उसका असर जरूर होगा अब एपीकाक्युआन्हाकूं पचानेकी दुसरी तरकीब लिखते हैं, ६ रत्ती या भूकी ३ रत्ती अफीम उसकी १२ गोली करणी और तीन २ घंटेसे चार २ गोलिये लेणी (६) इतने इलाजोसें जो फायदा नहीं पडे तो दस्त पतला पाणी जेसा आता है, बुखार नब्ज जलद चलती है, और दुखणा जारी रहे तो समझणाके आंतरोमें अभी सोजन है, और अंदर जखम है, एसी हालतमें नं० २०९ का क्काथ पृष्ट २९२ की लिखी भई स्तंभन दवाइयें तथा नं० ७०२, ७०३, ६१४, ७१५ की दवाइयां अछी फायदेवंद है.

(संग्रहणी)–पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणीका निदान आयुर्ज्ञानार्णव प्रसिद्ध ग्रंथमें एसा लिखा है के कोठेमें अग्निके रहणेका जो ठिकाणा है, सो अन्नकूं ग्रहण करता है, इसवास्ते इस जगेकुं ग्रहणी कहते हैं, ये ग्रहणी आंत कच्चे अन्नकूं ग्रहण करके रखती है, और पक्के अन्नकूं गुदाके रस्ते निकाल देती है, इस ग्रहणीमे अग्नि है, वो भी ग्रहणी कहलाती है, अग्नि खराब होकर मंद पडती है, तब उसका ठिकाणा ग्रहणी आंत भी खराब होती है, वैद्यकशास्त्रमें ग्रहणी और संग्रहणीमे कुछयक भेद लिखा है, आमवायूकूं संग्रह करे सो संग्रहणी ये रोग ग्रहणीसे जादा डरानेवाला है, इस जगे दोनोकों मिटावे एसा सामान्य इलाज लिखेगें और दोनोंका भेंदातर नहीं रखेगें.

(कारण)–तेज मरोडा जिस कारणसे होता है, उसीकारणसे संग्रहणी होती है, अथवा तेज मरोडा मिटे पीछे शांतपडे पीछे मंद अग्निवालेके तथा कुपथ्य आहार विहारके करनेवालेके पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणी रोग होजाता है.

(लक्षण)–संग्रहणी कच्चा अन्न ग्रहण करती है और पक्के अन्नकुं निकालती है, तब पेट छूट कच्चादस्त होजाता है, दस्तकी तादाद नहीं रहती थोडे दिन दस्त बंध रहता है, और पीछा होता है, किसीवखत एकाध दस्त होता है, और किसीवखत जादा दस्त होता है, मरोडेकी तरे पेटमें आंटा आमवायु पेटका कटणा वेर २ दस्त होय और पीछा बंध होय खायाभया अन्न पचाभया होय या पचता होय उस वखत आफरा होय और भोजन करणेसें शांति होती है, वादीके गोटेकी छातीके दरदकी और तिल्लीके रोगकी शकाभया करती है, वहोतसी वखत पतला सूका कच्चा और अवाज तथा झागोंवाला दस्त होता है, वदन सूकते जाता है, खून उडजाता है आखरकों सोजन आती है,आखिरकों बोलते२ अदमी मरजाता है, संग्रहणीके दस्तमे खून पीप रंग २ का गिरता है,. वहोतसी वखत.

(इलाज)–पुराणी संग्रहणी वहोत कष्टसाध्य है और साधारण इलाजसें मिटभी

और पीछे पीप गिरता है, ये तीक्ष्ण मरोडा तीन चार अठवा डेतक जो जारी रहजाय तब पुराना गिणेजाता है, पुराणा मरोडा वरसोंतक चलता है, अछा योग्य इलाज मिले तोही आराम होता है, इसीकुं संग्रहणी कहते हैं, पूरे पथ्य और दवा विगर हजारों अदमी मरते हैं, (इलाज) पहली तो पेट देखणा के आंतरोंमें सूजन है, के नहीं दबानेसें जिस जगे दुखणा मालम पडे उस जगे राईका पलाष्टर मारणा और रोगी सहसके एसा होय तो उसपर (१–२) डझन जोकलगवाणी और पीछै गरम पाणीसे सेक करना तथा अलसीकी पोटिस मारणी स्नान करना नहीं शरदीकी हवामे जाणा नहीं बिछोनेमे सोते रहणा आंतरोंमें मलका भराभया कचरा निकालणेकूं छ मासा जोहरडे अथवा सूंठके उकालीमें एरंडी तेलका जुलाब देणा वहोतसी वखत तो सरु होता मरोडा एसे जुलाबसे ही मिटजाता है, कचरा मल नीकलजाता है, दस्त साफ आता है, आंकसी तथा दस्तकी हाजत बंध होजाती है, मरोडेवालेने एरंडी तेलविना दुसरा भारी जुलाब कभी लेणा नहीं एरंडीके तेलमे तली भई जोहरडे दोभर सूंठ पांचमासा सूंफ १ भर सोनामुखी १ भर तथा मिश्री ५ भर लगवग एरंडीतेलका काम सारती है, मरोडावालेकूं दूध चावल पतली घाट अथवा दालके सादे पाणी सिवाय दुसरा खुराक देना नहीं सरु होतेही इय इलाज करे बाद जरूरी होय तो नीचै लिखते हैं, सो इलाज करना (१ अफीम)–मरोडाका रामबाण इलाज है, लेकिन् युक्तिसें लेना चहिये हिंगाष्टक चूर्णके संग गऊभर अफीम मिलाकर रातकूं सूतीवखत लेणा अथवा अफीमके संग आधे रुपेभर सोवेकुं जरासेक कर पाणीके संग पीसकर पीणा मरोडा तथा दस्तकूं रोकने वास्ते अफीम अछा है, लेकिन् एरंडी तेल लेकर पेटमेंसे कचरा निकाले विगर पेस्तर अफीम लेणा अछा नहीं है, क्योंके मल विगडे भयेकुं अंदर रोकदेता है, दस्त बंधकर देता है, (२) ईस पूगल अथवा सुपेद जीरा मरोडेमें अछा फायदा करता है, दहीके संग आधे २ रुपियेभर जीरा अथवा ईस पूगल दिनमें तीनवेर लेणा ये दवा दस्तकी कब्जी करे विगर मरोडेकूं मिटाता है (३) एरंडीतेल एक वेर देणेपर मरोडा नहीं मिटे तो एक दोदिन ठहरके फेर एरंडीतेलही देणा वो सूंठके उकालेमें पेपरमींटके पाणीमें आदेके रसमें अथवा लाडेनम याने अफीमके अर्कमें देणा जिस्सें पेटमेंकी वायूकूं दूरकर दस्तकूं रसाकरे (४) बीलु–मरोडेके मरजमें बील अकसीर इलाज है, बीलकी गिर गुड दहीमें मिलाकर देणेमें मरोडा मिटजाता है, (५) एपीकाक्युआन्हा–या अंग्रेजी भूकी भी मरोडेमें वहोत उपयोगी है, उसमें एक अवगुण है, के उलटी लाती है, और पेटमें टिकती नहीं पेटमें रहे तो वहोत जल्दी असर करती है, पेटमें टिके एसा करनेवास्ते प्रथम पेटपर डूंटीके ऊपर राईका पलाष्टर मारणा और १५–२० बूंद अफीमके अर्कका पिलाना रहना स्थानहर पीछे ईपीकाक्युआनकी ३० ग्रेन भूकी मदतमें चटाय देना

इसपर जल पिलाणा नहीं और थोडी देरपडे रहने देणा एसा करणेसें उलटी होगी नहीं दोय तीन दिन एसे करनेसे अछा फायदा होगा और कभी उलटी होगी तो भी उसका असर जरूर होगा अव एपीकाक्युआन्हाकूं पचानेकी दुसरी तरकीव लिखते हैं, ६ रत्ती या भूकी ३ रत्ती अफीम उसकी १२ गोली करणी और तीन २ घंटेसे चार २ गोलिये लेणी (६) इतने इलाजोसें जो फायदा नहीं पडे तो दस्त पतला पाणी जेसा आता है, वुखार नव्ज जलद चलती है, और दुखणा जारी रहे तो समझणाके आंतरोमें अभी सोजन है, और अंदर जखम है, एसी हालतमें नं० २०९ का क्राथ पृष्ट २९२ की लिखी भई स्तंभन दवाइयें तथा नं० ७०२, ७०३, ६१४, ७१५ की दवाइयां अछी फायदेवंद है.

(संग्रहणी)–पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणीका निदान आयुर्ज्ञानार्णव प्रसिद्ध ग्रंथमें एसा लिखा है के कोठेमें अग्निके रहणेका जो ठिकाणा है, सो अन्नकूं ग्रहण करता है, इसवास्ते इस जगेकुं ग्रहणी कहते हैं, ये ग्रहणी आंत कचे अन्नकूं ग्रहण करके रखती है, और पक्के अन्नकूं गुदाके रस्ते निकाल देती है, इस ग्रहणीमे अग्नि है, वो भी ग्रहणी कहलाती है, अग्नि खराव होकर मंद पडती है, तव उसका ठिकाणा ग्रहणी आंत भी खराव होती है, वैद्यकशास्त्रमें ग्रहणी और संग्रहणीमे कुछयक भेद लिखा है, आमवायूकुं संग्रह करे सो संग्रहणी ये रोग ग्रहणीसे जादा डरानेवाला है, इस जगे दोनोकों मिटावे एसा सामान्य इलाज लिखेगें और दोनोंका भेंदातर नहीं रखेगें.

(कारण)–तेज मरोडा जिस कारणसे होता है, उसीकारणसे संग्रहणी होती है, अथवा तेज मरोडा मिटे पीछे शांतपडे पीछे मद अग्निवालेके तथा कुपथ्य आहार विहारके करनेवालेके पुराणा मरोडा अथवा संग्रहणी रोग होजाता है.

(लक्षण)–संग्रहणी कचा अन्न ग्रहण करती है और पक्के अन्नकुं निकालती है, तव पेट छूट कचादस्त होजाता है, दस्तकी तादाद नहीं रहती थोडे दिन दस्त वंध रहता है, और पीछा होता है, किसीवखत एकाध दस्त होता है, और किसीवखत जादा दस्त होता है, मरोडेकी तरे पेटमें आंटा आमवायु पेटका कटणा वेर २ दस्त होय और पीछा वंध होय खायाभया अन्न पचाभया होय या पचता होय उस वखत आफरा होय और भोजन करणेसें शांति होती है, वादीके गोटेकी छातीके दरदकी और तिलीके रोगकी शंकाभया करती है, वहोतसी वखत पतला सूका कचा और अवाज तथा झागोवाला दस्त होता है, वदन सूकते जाता है, खून उडजाता है आखरकों सोजन आती है, आंखिरको बोलते२ अदमी मरजाता है, संग्रहणीके दस्तमें खून पीप रंग २ का गिरता है,. वहोतसी वखत.

(इलाज)–पुराणी संग्रहणी वहोत कष्टसाध्य है और साधारण इलाजमें मिटभी

नहीं सकती * संग्रहणी रोगमें रोगीकी जठराग्नि एसी खराब होती है, सो उसकी होजरी कोइ किसीभी किसमके खुराककुं लेकर पाचन नहीं करसकती होजरी छोटे बचे कीसेभी बडी नाताकत होजाती है, इसवास्ते उसके खिलाणेकुं हलकेसे हलका खुराक देणा (१) (छाछ)–संग्रहणी रोगकी सर्वोत्तम खुराक है, दवा और पथ्य दोनोंका काम सारती है, दोषोंकी निगेदास्तीकर तली हींग तथा जीरा और सींधानिमक डालकर तक्र दहीमेंसे थर निकाल उसमें चोथाहिस्सा पाणी डाल विलोई भई जाडी छाछ इस रोगमे बहोत फायदावंद है, संग्रहणीवालेकूं इकेली छाछ पोषणकर जठराग्नि प्रबलकरती है, किसी पूर्ण विद्वान वैद्यकी सलासे सबकां मकरणा अछा है, पीछै भात वगेरे हलका खुराक देणा सरू करणा मरणके मूंपर पडेभये हाडमात्र रहेभये विद्वानोंकी सलाहसे अमृतरूप छाछ जिलाती है, लेकिन् धीरज रखकर महीनोके महीनोंतक इकेली छाछ पीकर रोगीकूं रहणा चहिये इसके सिवाय साधन संग्रहणी रोग मिटणेका एसा ग्रंथोंमे विरला होगा एसा तक्र गुणानुवाद जैनाचार्य रचितयोग चिंतामणी ग्रंथ तथा हमारा प्रत्यक्ष अनुभव पथ्य और दवारूप हमने पतवाणा है, (२) अमृतवटी–गऊका दूध और योग्य अनुपानके संग संग्रहणीकूं मिटाती है, हम जादा क्या लिखे के जो प्राणी अपणी कष्टसाध्य संग्रहणी मिटाये चाहे सो व्यर्थ औरोके पास गोते क्यों खाकर धन और तनकूं बरबाद करते फिर रामबाण लगतेही संग्रहणी प्रलय होतेही नजर आती है, रामबाण जभी नहीं चलता के जब उसकू फेर जन्म लेणा होता है, (३) पडूष्ण–मूंगकी दालका पाणी धाणा जीरा सींधानिमक सूंठ डालकर छाछ पीणा (४) लाही चूर्ण–नं० २३८ छाछमें अथवा बीलकी गिर छाछके संग पीणी मात्रा अढाई मासा अनुपान और खुराक छाछ (५) दुग्धवटी–वछनाग शुद्ध अफीम चार २ चाल लोहभस्म ५ रत्ती अभ्रक मासा १ दूधमें पीस दोदो रत्तीकी गोलियें करणी संग्रहणी तथा सूजनका बहोत अछा इलाज है, ये दुग्धवटी खाणी जहांतक दूध सिवाय दुसरा खुराक खाणा नहीं (६ हीबेरादि क्वाथ नं० २०९) अतिसार तेसें संग्रहणी दोनोंमें फायदेवंद है, इसपर भी दूध चावलसिवाय दुसरा खुराक खाणा नहीं तो दवा कुछभी फायदा नहीं करेगी (७) पंचामृतपर्पटी–ये दवा पूर्ण वैद्य रसोंके बणाणेवालों पास मिलती है, अनुपान छाछ जीरा हींग सींधा पथ्य और छाछ.

(विशेष सूचना)–पथ्यापथ्य अतीसारमे लिखेमुजब संग्रहणीके रोगीने जादा ध्यान करना नहीं जादा जल पीणा नहीं चिकणाईवाला जादा खानपान लेना नहीं औ जागरण करना नहीं मइनत करणी नहीं हवा अछी बदलणी दरियावकी हवा दरियावकी मुसाफरी जादा फायदेवंद है.

[illegible]

अरुचि-अन्नद्वेष-

एनोरेक्स्या.

खाणेका दिल होय नहीं अथवा अन्न देखकर दिलकुं रुचै नहीं वो रोग अरोचक कहलाता है.

(कारण)-ये कोइ अलग रोग नहीं है, कितनेक रोगोंमें खाणेमें अरुचि होजाया करती है, जादा करके अजीर्णमें बुखारमें तथा कलेजेके और मगजके रोगोंमें अरुचि होती है, शोकसे डरसे दरदसें क्रोधसे मनकूं आंखकूं तथा नाककूं अछा नहि लगे एसे पदार्थोंके देखणेसे अरुचि पैदा होती है, (इलाज)-१ जिस कारणसें अरुचि भई होयसो कारण दूर करणा दिलकुं रुचे और तासीरकूं माने एसा खानपान मिलणेसे खाणेपर रुचि पैदा होती है, तेज चमचमा मीठा और खट्टा और खारा पदार्थ खाणेमे रुचि पैदा करता है, इसवास्ते एसे चीजोंका उपयोग करणा अरुचि वादीसे भई होय तो वादीकरणेवाली चीजें खाणी नहीं इसतरे पित्त कफका समझ लेणा क्योंके एसी चीजोंपर स्वभावसे रुचि नहीं पैदा होती (२) बीजोरा नींबुकी पांखडिये घीमें सेक उसमें जरा सींधानिमक मिलाकर खाणेसें रुचि पैदा होती है, (३) शरबत-पकी अंबलीकूं ठंढे जलमे घोल उसमें चहिये जितना कंद या मिश्री तथा इलायची लोंग मिरच तथा कपूर भुरकाकर थोडा भोजनके वखत पीणा पित्तकी अरुचि इससे मिटती है, नींबु तेसें अनारका शरबत उपयोगी है, (४) द्राक्षवटी-दाख अनारका सार सींधानिमक पींपर जरासेकी हींग तज वगेरेकी नींबूके रसमें बनाई भई गोलियां मूमे रखणी (५) छाछ-रुचि करणेवाली है, राई जीरा हींग तथा सूंठ ये चार सेके भये पांचमा सींधानिमक इन सबोंके चूर्णकूं गऊके दहीमें अछी तरे मिलाकर दहीकूं कपडेमें छाण उसमें खट्टी छाछ डालणी ये छाछ रुचि पैदा करती है, (६) श्रीखंड-इलायची लोंग मिरच और थोडासा भीमसेनी कपूर डालकर किया भया सिखरण रुचिकारक है, (७) अद्रक-भोजनकी वखत पहली सींधानिमक लगाकर आदेके टुकडे खाणेसें रुचि वढाता है, आदेके रशमें सहत मिला चाटते हैं.

छर्दि-उलटी-ओकारी-

वॉमिटिंग.

उलटी दुसरे कितनेक रोगोंका चिन्ह है, तोभी उसकूं बंध करणेके जुदे २ इलाज है, इसवास्ते इस रोगकूं जुदा गिणकर इसके इलाज लिखे हैं.

(कारण)-अति पतला पदार्थ पीणेसे बहोत चिकणा पदार्थ खानेसे मनकुं नहि रुचे एसे अन्नपानसे बहोत खाणेसे अहित खानपानसे आमसे अजीर्णसे कृमिसे गर्भसे विगडे भये वातपित्त कफमे नफरण आवे एसे चीजोंके देखणेसें सुपणेसें

खाणेसे इत्यादि बहोत कारणोसे उलटी होती है, जादा करके अजीर्ण और पित्तके प्रकोपसे वेर २ के होती है, इसके सिवाय गोसा उतरना आंतरेका वरम होजरीका क्षत कलेजेका रोग हेजा पथरी वगेरे रोगभी उलटीका कारण है.

(इलाज)–कारणकूं पहचान उलटीका इलाज करणा कितनीक बखत उलटी होणी फायदेके वास्ते होती है, वो होणे देणी रोकणी नहीं बहोत खाणेसे बिगाड जो होता है, वो उलटीके रस्ते निकल जाता है, उससे फायदा है, जो एसा नहीं होय तो पेटका दुसरा रोग होणा ताजब नहीं.

(सामान्य इलाज)–१ नींबूका शरबत इकेला अथवा सोडावाटर संग पीणा २ लोबानके फूल अथवा लोबानका पाणी ३ नींबूका रस सहत बीसमथ सोडा वगेरे देणा ४ सुपेद चंनणकुं घस उसके पाणीमें आंवलेका चूर्ण और सहत डालकर पिलाणा ५ पित्तपापडेके हिममें या काथमें मिश्री और सहत डालकर पीणा ६ मोलेठी तथा सुपेद चंनणकूं दूधमें घसकर पीणेसे खूनकी उलटी भी बंध होती है ७ तुलछीके रसमें इलायचीका चूर्णडालकर पीणा ८ जाईके पत्तोंके रसमें पींपर मिरचमिश्री तथा सहत डाल पीणेसे बहोत दिनोंकी भी उलटी बंध होती है, ९ हरडेका चूर्ण सहतमें चाटणा तब दोष दस्तके रस्ते निकालकर उलटी बंध होती है, १० गिलोयके रसमें या हिममें या काथमें सहत डालकर पीणेसे त्रिदोषकी उलटी बंध होती है, ११ जामुन आंब तथा बडके नरम कोंपत्तोंकी उकाली पीणेसें १२ रेसम और मोरपंखकी भस्मीकर सहतमें चटाणा १३ दाख तथा आंवले जलमें थोरी देर भिगाकर मसलकर उसके जलमें मिश्री सहत मिलाकर बुखार तथा पित्तकी उलटी मिटजाती है, १४ सोडा १५ ग्रेन साइट्रिक एसिड १० ग्रेन मिलाकर पीणा १५ मोफर्या बिस्मथ तथा हाइड्रोस्यानिक एसिडका मिक्चर देणा १६ दूध तथा चूनेका नीतराभया जलसामिल पीणेसे उलटी बंध होकर पेटमें टिकणा १७ नं० २२८, ५०२, ५६९, तथा ६०९ की दवाये १८ गर्भणीकी उलटी–भाणा तथा [illegible] पाणी नं० ५०२, ५१३ का मिक्चर (कलंभा) बाहरका इलाज–१९ पेटपर राईका पलास्टर मारणा २० लाडेनम तथा कलोरो फॉर्म सम वजन एक रुमालपर छिडक वो रुमाल होजरीपर रखके उसपर दुसरा कपडा ढकणा (होमियोपथिक इलाज)–१ [illegible])–बहोत खाणेसे या बहोत सराप पीणेसे होय जो उलटी उसमें देणा. २ आर्सेनिक [illegible] पडे और बहोत बेचेनी होय उसमें देणा. ३ ईपिका [illegible] [illegible] और गंदे पाणीवाली वेर २ उलटी उबाकीमें देणा ४ पल्सटिला–[illegible] [illegible] होनेवाली उलटीमें देणा. ५ टार्टरइमेटिक–उलटीकवास्ते बहोत उबाका और [illegible] देणा अच्छा है.

अम्लपित्त–खट्टापित्त–

खुराक बराबर पचे नहीं उलटी होय या दस्त होय उसमें कडवा और हरे रंगका पित्त पडे इस रोगकूं आम्लपित्त कहते हैं.

कारण–वदनमें पहली अपणे कारणसे एकठा भया पित्त विरुद्ध आहार विहारसे याने विगडा भया खट्टा दाह करणेवाला और पित्तकूं वधाणेवाले पदार्थोंके सेवन करणेसें प्रकोप पाकर इस रोगकूं पैदा करता है इस रोगका मूल कारण अजीर्ण है इस कारण जो अजीर्णका कारण है, उससे ये रोग पैदा होता है.

लक्षण–पहली जरा शिर दूखे हाथ पांवोमें नाताकती मालम दे पीछे कलेजेकी जगे-पर उस वखत दरद होजावै अजीर्णकी निशाणी मालम दे आखिर उलटी होय किसी २ वखत इस रोगसें बुखार और कामला पीलिया होजाता है, तव मृत्युभी होजाती है.

इलाज–आम्लपित्तका रस्ता दो तरफसें होता है, मुंसे या दस्तसे उलटीवालेकूं उलटीकी दवा देणी दस्त होता होय तो जुलाव देणा २–चावलोंकी या जौ धाणी मिश्री तथा सहत मिलाकर खिलाणी ३ कडवा परवल अथवा पटोल कुटकी नीमकी छाल तथा मैणफल इनोके क्वाथमें सहत मिलाकर देणा जिससे उलटी होती है पथ्य मूंगकी पतली दाल अलूणी मीश्री डालकर–४ त्रिफलाके क्वाथमें निशोतका चूर्ण तथा सहत डालकर पिलाणा दस्त होगा ५ वडी दाख तथा जो हरडे सम वजन इनके वरावर मिश्री इनोकी दोदो तीन २ तोले-की गोलिया करके खिलाणी इससे आम्लपित्त रिदय तथा गलेकी जलण प्यास मूर्छा भ्रम मंदाग्नि और आमवात इन सवोकूं मिटाता है, ६ भूंरीगणी गिलोय अरडूसेके पत्ते इनोकी उकाली सहत डालकर पिलाणा इससे दम खासी उलटी तथा वुखारके संग आ-म्लपित्त मिटता है, ७ आंवलेका चूर्ण केलेके कंदके रशमें देणा ८ पटोल अरडूसेके पत्ते गिलोय पित्तपापडा तथा जल भांगरा इनोका क्वाथ सहत डालकर पीणा ९–ब्ल्युपिल ६ ग्रेण इपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राक्ट डान्डेलीयन ६ ग्रेण इनोकी ४ गोली कर रा-तकूं सोते वखत दोदो गोली लेणी १० चूनेका नितरा भया जल एक औंस उसमें थोडा दूध मिलाकर पीणा १२ अमृतवटी दवा खाणेमें दूध और चावल इसका सेवन दो मही-ने तक करे तो असाध्य आम्लपित्त अजीर्ण उलटी वगेरे रोग मिटकर होजरी तथा आं-तरोंकी पाचनक्रिया खूब सुधर रोगी वलवान होता है.

(विशेपसूचना)–इस रोगमें उलटी और दस्तकूं बंध करणेवाली दवा नहीं देणी लेकिन् वढे भये पित्तकू और अजीर्णकूं शांति करणेका इलाज करणा कोईभी गरम दाहक और तेज पदार्थ नुकशान करता है, इस रोगमें वहोत सादा हलका पित्त शामक खुराक देणा (पथ्य)–जव गहू मूंग लाल चावल तीन उकाला देकर ठंडा किया भया पाणी मिश्री वूरा सहत कवीठ अनार (कुपथ्य)–उलटीकूं रोकणा तेल खट्टा खारा तीखा

खाणेसे इत्यादि बहोत कारणोसे उलटी होती है, जादा करके अजीर्ण और पित्तके प्रकोपसे बेर २ के होती है, इसके सिवाय गोसा उतरना आंतरेका वरम होजरीक क्षत कलेजेका रोग हैजा पथरी वगेरे रोगभी उलटीका कारण है.

(इलाज)—कारणकूं पहचान उलटीका इलाज करणा कितनीक वखत उलटी होणी फायदेके वास्ते होती है, वो होणे देणी रोकणी नहीं बहोत खाणेसे बिगाड जो होता है, वो उलटीके रस्ते निकल जाता है, उससे फायदा है, जो एसा नहीं होय तो पेटका दुसरा रोग होणा ताजब नहीं.

(सामान्य इलाज)—१ नींबूका शरबत इकेला अथवा सोडावाटर संग पीणा २ लोबानके फूल अथवा लोबानका पाणी ३ नींबूका रस सहत बीसमथ सोडा वगेरे देणा ४ सुपेद चंनणकुं घस उसके पाणीमें आंवलेका चूर्ण और सहत डालकर पिलाणा ५ पित्तपापडेके हिममें या क्राथमें मिश्री और सहत डालकर पीणा ६ गोलेठी तथा सुपेद चंनणकूं दूधमें घसकर पीणेसे खूनकी उलटी भी बंध होती है ७ तुलछीके रसमें इलायचीका चूर्णडालकर पीणा८जाईके पत्तोंके रसमें पींपर मिरचमिश्री तथा सहत डाल पीणेसे बहोत दिनोंकी भी उलटी बंध होती है, ९ हरडेका चूर्ण सहतमें चाटणा तब दोष दस्तके रस्ते निकालकर उलटी बंध होती है, १० गिलोयके रसमें या हिममें या क्राथमें सहत डालकर पीणेसे त्रिदोषकी उलटी बंध होती है, ११ जामुन आंब तथा बडके नरम कोंपे पत्तोंकी उकाली पीणेमें १२ रेसम और मोरपखकी भसमीकर सहतमें चटाणा १३ दाख तथा आंवले जलमें थोरी देर भिगाकर मसलकर उसके जलमें मिश्री सहत मिलाकर बुखार तथा पित्तकी उलटी मिटजाती है, १४ सोडा १५ ग्रेन साइट्रिक एसिड १० ग्रेन मिलाकर पीणा १५ मोर्फया बिसमथ तथा हाइड्रोस्यानिक एसिडका मिक्चर देणा १६ दूध तथा चूनेका नीतरा भया जलसामिल पीणेसे उलटी बंध होकर पेटमें टिकता १७ न० २२८, ५०२, ५६९, तथा ६०९ की दवायें १८ गर्भणीकी उलटी—[illegible] तथा [illegible] पाणी न० ५०२, ५१३ का मिक्चर (कलंभा) बाहरका इलाज—१९ पेटपर राईका पलास्टर मारणा २० लाडेनम तथा क्लोरो फॉर्म सम वजन एक रुमालपर छिडक के रुमाल होजरीपर रखके उसपर दुसरा कपडा ढकणा (होमियोपथिक इलाज)—१ (इपीकॅक)—बहोत खाणेसे या बहोत सराप पीणेसे होय जो उलटी उसमें देणा. २ आर्सेनिक [illegible] पडे और बहोत बेचेनी होय उसमें देणा. ३ ईपिका क्युआन्हा [illegible] और मुंह पाणीसाथी बेर २ उलटी उबाकीमें देणा ४ पल्सटिला-[illegible] होनेवाली उलटीमें देणा. ५ टार्टरएमेटिक-उलटीकसाथ बहोत उबाका और [illegible] देणा अच्छा है.

अम्लपित्त–खट्टापित्त–

खुराक बराबर पचे नहीं उलटी होय या दस्त होय उसमें कडवा और हरे रंगका पित्त पडे इस रोगकूं आम्लपित्त कहते हैं.

कारण–वदनमें पहली अपणे कारणसे एकठा भया पित्त विरुद्ध आहार विहारसे याने विगडा भया खट्टा दाह करणेवाला और पित्तकूं बधाणेवाले पदार्थोंके सेवन करणेसें प्रकोप पाकर इस रोगकूं पैदा करता है इस रोगका मूल कारण अजीर्ण है इस कारण जो अजीर्णका कारण है, उससे ये रोग पैदा होता है.

लक्षण–पहली जरा शिर दूखे हाथ पांवोमें नाताकती मालम दे पीछे कलेजैकी जगे-पर उस वखत दरद होजावे अजीर्णकी निशाणी मालम दे आखिर उलटी होय किसी २ वखत इस रोगसें बुखार और कामला पीलिया होजाता है, तब मृत्युभी होजाती है.

इलाज–आम्लपित्तका रस्ता दो तरफसें होता है, मुंसे या दस्तसे उलटीवालेकूं उलटीकी दवा देणी दस्त होता होय तो जुलाब देणा २–चावलोंकी या जौ धाणी मिश्री तथा सहत मिलाकर खिलाणी ३ कडवा परवल अथवा पटोल कुटकी नीमकी छाल तथा मैणफल इनोके काथमें सहत मिलाकर देणा जिससे उलटी होती है पथ्य मूंगकी पतली दाल अलूणी मीश्री डालकर–४ त्रिफलाके काथमें निशोतका चूर्ण तथा सहत डालकर पिलाणा दस्त होगा ५ बडी दाख तथा जो हरडे सम वजन इनके बराबर मिश्री इनोकी दोदो तीन २ तोले-की गोलिया करके खिलाणी इससे आम्लपित्त रिदय तथा गलेकी जलण प्यास मूर्छा भ्रम मंदाग्नि और आमवात इन सबोकूं मिटाता है, ६ भूरींगणी गिलोय अरडूसेके पत्ते इनोकी उकाली सहत डालकर पिलाणा इससे दम खासी उलटी तथा बुखारके संग आ-म्लपित्त मिटता है, ७ आंवलेका चूर्ण केलेके कंदके रशमें देणा ८ पटोल अरडूसेके पत्ते गिलोय पित्तपापडा तथा जल भांगरा इनोका काथ सहत डालकर पीणा ९–ब्ल्युपिल ६ ग्रेण इपीकाक्युआन्हा १ ग्रेण एकस्ट्राकट डान्डेलीयन ६ ग्रेण इनोकी ४ गोली कर रा-तकूं सोते वखत दोदो गोली लेणी १० चूनेका नितरा भया जल एक औंस उसमें थोडा दूध मिलाकर पीणा १२ अमृतवटी दवा खाणेमें दूध और चावल इसका सेवन दो मही-ने तक करे तो असाध्य आम्लपित्त अजीर्ण उलटी वगेरे रोग मिटकर होजरी तथा आं-तरोंकी पाचनक्रिया खूब सुधर रोगी बलवान होता है.

(विशेपसूचना)–इस रोगमें उलटी और दस्तकूं बंध करणेवाली दवा नहीं देणी लेकिन् बढे भये पित्तकूं और अजीर्णकूं शांति करणेका इलाज करणा कोईभी गरम दाहक और तेज पदार्थ नुकशान करता है, इस रोगमें बहोत सादा हलका पित्त शामक खुराक देणा (पथ्य)–जव गहूं मूंग लाल चावल तीन उकाला देकर ठंडा किया भया पाणी मिश्री बूरा सहत कवीठ अनार (कुपथ्य)–उलटीकूं रोकणा तेल खट्टा खारा ती–

कुलथी तिल उडद निमक दही नसा करडा अनाज ठंडी हवा रातकूं जागणा दिनकूं सोणा ये बात सब नुकशान करती है, करेले परवल पथ्य है.

यकृत्–कलेजेका रोग.

डिझीसीश ओफ लिव्हर.

आगे उदररोगमें यकृतोदर इस नामका रोग संक्षेपसे लिखा है लेकिन् यकृत् याने कलेजेपर पाचन क्रियाका • बडा आधार होणेसे उसके कितनेक विकारो विषे कुछइक जादा जाणणेकी जरूरी है, यकृत् ये शरीरमें बडा कामिल मर्म स्थान है. उसमें भया कोईभी तरेका विकार वो सब बदनकूं तकलीप देणेवाला होजाता है रोगके सबब कलेजा छोटा और बडाभी होजाता है, कलेजेका मुख्यकाम पित्त पैदा करणेका है उस पित्तपर आंतरोंके पाचन क्रियाका बडा आधार है कलेजेमें विकार होणेसें इतने रोग होते हैं.

१ कलेजेमें खूनका जमाव होता है.
२ कलेजेमें सोजा होजाता है.
३ कलेजा पकता है.
४ कलेजेमें पित्तका जमाव होता है.
५ कलेजा संकुडा जाता है.
६ पित्तकी पथरी अथवा कांकरी.
७ कामला पीलिया होजाता है.

(कारण)--कलेजेके रोगके सामान्य कारण इस तरसे हैं बहोत तेज मसालादार खुराक सगप गरमी और एस आराम पारा नवसादर वगेरोंमेंसे पित्त बढता है.

(कलेजेमें खूनका जमणा)–कलेजेके अंदरसे खून फिरकर जिस नसोंके रस्ते बाहर आता है उस नसोंमें कोई तरेकी खराबी और अटक होणेसें खून कलेजेमें भरकर रहता है, तब खूनका संग्रह होणेसे कलेजेका कद बढता है, रक्ताशय तथा फेफसेकाभी यही हाल होता है बहोत दिन बुखार आणेसे जैसें तिल्लीकी गांठ बढती है तैसें यकृत्भी बढता है भोजन कर दोडणेसें या मैथुनसे या बहोत कसरत करणेसे कलेजेमें शूल मालूम होता है तोभी खूनके भरावमेंही हाल होता है, गरमीमें रहणेसें तेज मसालोंसेंभी कलेजा बढ जाता है, लक्षण–कलेजा बढता है अंगुली धरकर ठोककर देखणेसे उसका स्वाभाविक [illegible] जगासे बदलकर [illegible] अथवा बडा [illegible] मालूम देता है, अजीर्णके लक्षण मालूम होते है. पेटभारी तथा बडा भया मालूम देता है, दस्त कब्ज रहता है, उवाकी तथा उलटी होती है-(इलाज)–पतला दस्त लाणेकूं निशोत अथवा एपसमसोल्ट देणा जुलाब लेणेसें कलेजेका जमाव खून कम होजाता है, पीठि नं० ४६१–४६२ की रेचक दवाओ देणी [illegible] दोयतीन चार दिनोतक देणा [illegible] कलेजेपर राईका प्लास्टर धरणा [illegible] गरम पाणीकी पोटिस [illegible] तथा [illegible] दवाणा [illegible] नहीं मिटे तो जोंके लगवाणी.

([illegible])–बुखारके संग कलेजेके तेज [illegible] मुआफकी गांठ

कहते हैं, (कारण)– गरम देशमें जादा होता है, सराप पीणेवालोंकूं इस रोगका जादा संभव है, वहोत गरमी वहोत ठंढी सन्निपात ज्वर और चोट लगणेसेंभी होता है, (लक्षण)–खूनके जमावका आगे वढा भया रूप सोजन है, कलेजा वढता है बुखार सख्त आता है दहणी तरफ शूल कलेजेके ऊपर तरफ दरद और श्वास कास तथा छींक लेते दरद वढता है, वांये तरफ सोये नही जाता बुखारके संग कपाल तथा शिर दूखे पेशाव थोडा और लाल आंख थोडी वहोत पीली सूकी खासी हिचकी तथा उलटी दहणें खंभेमें दुखणा वगेरे (इलाज) रोगी मजबूत होयतो कलेजेपर जोक लगाणी दस्तकब्ज और जीभपर सुपेद छारी होय तो ब्ल्युपील ६ ग्रेण और ऐपीकाक्युआन्हा २ ग्रेण इनोकी गोली देणी और तीन चार घंटे पीछे सोनामुखीके काथमें ऐप्समसाल्टका जुलाब देणा अथवा नं० ४६१ वाली गोली लिये पीछे चार घंटेसे नं० ४६२ वाला मिक्श्चर लेणा जो दस्त कब्ज होय तो येही दवा हमेस या एकंतरे लेणा जारी रखणा जो मरोडाका कोइभी लक्षण मालम दे तो नं० ४९३ वाली दवा लेणी हमेस राई लगाणी गरम पाणीका सेक करणा पेटपर गरम कपडा लपेटे रखणा वेर २ गरमागरम पोल्टीस मारणी आटेकी अथवा अलसीकी नहीं, आराम होय तो नं० ५६३ का विल्स्टर मारणा–(यकृत्का-पकणा)– यकृतके वरमसे यकृत पक जाता है, जब वरम मिटता नही तव जमा भया खून पकता है और फोडेकी तरे इलाजसे बैठभी जाता है या फूटता है, ये यकृत्का पकणा जेसें तेज सोजेसें होता है, तेसें धीरे २ भये सूजनसेंभी पकता है, ए रोग दारू पीणेवालेके बुखार तथा मरोडेके रोगसेंभी ए मरज होता है,–(लक्षण)– वरमका बुखार होय या उतर गया होय तोभी कलेजेके पकणेपर एकाएक ठंड देके बुखार चढ आता है वधता है और पसीना होता है, इसतरे दम २ में होणे लगे तव समझणाके कलेजेमें पीप होणा सरू होगया है अजीर्णके चिन्ह मालम दे भूख लगे नहीं नाडी जलद चलती है और चहरा घभरा जावे दुसरे सव चिन्ह वरमके होते हैं, पसलीके नीचे तेसें छातीके तरफ दरद चढता है पीपके पडनेसे अंदरसें चभका मारता है पीप वढते जाता तेसें कलेजा वढते जाता आखरके एक दिन या महीना या वरस पीछे मूंहोकर पीप निकलता है ए जब फूटता है तव छातीपर दहने तरफ अथवा पीठपर पसलियोंके बीचमें पसलीके नीचे पेटपर या पीठपर मूंकरके फूटता है जो अंदर फूटता है तो छातीके अंदर फेफसेमें अथवा पेटमें फूटता है आंतरेमें या पित्ताशयमें गू करता है तो पीप दस्तमें निकलता है, होजरीमें फूटता है तो उलटीमें पीप निकलता है अगर जो पेटमें छूटा फूटकर पीप फैले और उसकूं निकलणेकूं रस्ता नहीं मिले अदमी मरजाता है, (इलाज)– जेसें बाहिरके फोडेकूं पकाकर पीप निकाल घाव भरते हैं, तेसें इसकाभी इलाज करणा सख्त जुलाब या सख्त दवा देणी नहीं ताकत देवे एसा अच्छा खुराक देणा जिस जगे फोडेका जोर

कुलथी तिल उडद निमक दही नसा करडा अनाज ठंडी हवा रातकूं जागणा दिनकूं सोणा ये बात सब नुकशान करती है, करेले परवल पथ्य है.

यकृत्–कलेजेका रोग.

डिझीसीझ ओफ लिव्हर.

आगे उदररोगमें यकृतोदर इस नामका रोग संक्षेपसे लिखा है लेकिन् यकृत् याने कलेजेपर पाचन क्रियाका बडा आधार होणेसे उसके कितनेक विकारो विषे कुछइक जादा जाणणेकी जरूरी है, यकृत् ये शरीरमें बडा कामिल मर्म स्थान है. उसमें भया कोईभी तरेका विकार वो सब बदनकूं तकलीप देणेवाला होजाता है रोगके सबब कलेजा छोटा और बडाभी होजाता है, कलेजेका मुख्यकाम पित्त पैदा करणेका है उस पित्तपर आंतरोंके पाचन क्रियाका बडा आधार है कलेजेमें विकार होणेसें इतने रोग होते हैं.

१ कलेजेमें खूनका जमाव होता है.
२ कलेजेमें सोजा होजाता है.
३ कलेजा पकता है.
४ कलेजेमें पित्तका जमाव होता है.
५ कलेजा संकुडा जाता है.
६ पित्तकी पथरी अथवा कांकरी.
७ कामला पीलिया होजाता है.

(कारण)—कलेजेके रोगके सामान्य कारण इस तरसे हैं बहोत तेज मसालादार खुराक सराप गरमी और एस आराम पारा नवसादर वगेरोंमेंसे पित्त बढता है.

(कलेजेमें खूनका जमणा)—कलेजेके अंदरसे खून फिरकर जिस नसोंके रस्ते बाहर जाता है उस नसोंमें कोई तरेकी खराबी और अटक होणेसें खून कलेजेमें भरकर रहता है, तब खूनका संग्रह होणेसे कलेजेका कद बढता है, रक्ताशय तथा फेफसेकाभी यही हाल होता है बहोत दिन बुखार आणेसे जैसें तिल्लीकी गांठ बढती है तैसें यकृतभी बढता है भोजन कर दौडणेसें या मैथुनसें या बहोत कसरत करणेसे कलेजेमें शूल मारती है ओभी खूनके भरावसेंही हाल होता है, गरमीमें रहणेसें तेज मसालोंसेंभी कलेजा बढ जाता है, लक्षण—कलेजा बढता है अंगुली धरकर ठोकफर देखणेसे उसका स्वाभाविक [illegible] आवाज बदलकर सघन अथवा बडा अवाज मालूम देता है, अजीर्णके लक्षण मालूम होते है, पेटभरा तथा बडा भया मालूम देता है, दस्त कब्ज रहता है, उलटी तथा [illegible] होती है—(इलाज)—पतला दस्त लाणेकूं निशोत अथवा एपसमसोल्ट देणा बुखार [illegible] कलेजेका जमावखून कम होजाता है, पाने नं० ४६१—४६२ की रेचक दवाओं देणी और जरूर होवेतो थोडे दिनोतक देणा सकू रखणा कलेजेपर राइका पलास्टर [illegible] [illegible] पोटिस भारती [illegible] चूना तथा सहतका लेपकर रुई दबाणा [illegible] [illegible] जरूर होय दरद नहीं मिटे तो जोंके लगाणी.

(कलेजेका तेज सोजन)—बुखारके संग कलेजेके तेज सोजकूं लोक बुखारकी गांठ

कहते हैं, (कारण)– गरम देशमें जादा होता है, सराप पीणेवालोंकूं इस रोगका जादा संभव है, बहोत गरमी बहोत ठंढी सन्निपात ज्वर और चोट लगणेसेंभी होता है, (लक्षण)–खूनके जमावका आगे बढा भया रूप सोजन है, कलेजा बढता है बुखार सख्त आता है दहणी तरफ शूल कलेजेके ऊपर तरफ दरद और श्वास कास तथा छींक लेते दरद बढता है, बांये तरफ सोये नही जाता बुखारके संग कपाल तथा शिर दूखे पेशाब थोडा और लाल आंख थोडी बहोत पीली सूकी खासी हिचकी तथा उलटी दहणें खभेमें दुखणा वगेरे (इलाज) रोगी मजबूत होयतो कलेजेपर जोक लगाणी दस्तकब्ज और जीभपर सुपेद छारी होय तो ब्ल्युपील ६ ग्रेण और ऐपीकाक्युआन्हा २ ग्रेण इनोकी गोली देणी और तीन चार घंटे पीछे सोनामुखीके क्वाथमें ऐप्समसाल्टका जुलाब देणा अथवा नं० ४६१ वाली गोली लिये पीछे चार घंटेसे नं० ४६२ वाला मिक्श्चर लेणा जो दस्त कब्ज होय तो येही दवा हमेस या एकंतरे लेणा जारी रखणा जो मरोडाका कोइभी लक्षण मालम दे तो नं० ४९३ वाली दवा लेणी हमेस राई लगाणी गरम पाणीका सेक करणा पेटपर गरम कपडा लपेटे रखणा वेर २ गरमागरम पोल्टीस मारणी आटेकी अथवा अलसीकी नहीं, आराम होय तो नं० ५६३ का बिल्स्टर मारणा–(यकृत्का-पकणा)– यकृतके वरमसे यकृत पक जाता है, जब वरम मिटता नहीं तब जमा भया खून पकता है और फोडेकी तरे इलाजसे बैठभी जाता है या फूटता है, ये यकृत्का पकणा जेसें तेज सोजेसें होता है, तेसें धीरे २ भये सूजनसेंभी पकता है, ए रोग दारूपीणेवालेके बुखार तथा मरोडेके रोगसेंभी ए मरज होता है,–(लक्षण)– वरमका बुखार होय या उतर गया होय तोभी कलेजेके पकणेपर एकाएक ठंढ देके बुखार चढ आता है बधता है और पसीना होता है, इसतरे दम २ में होणे लगे तब समझणाके कलेजेमें पीप होणा सरू होगया है अजीर्णके चिन्ह मालम दे भूख लगे नहीं नाडी जलद चलती है और चहरा घभरा जावे दुसरे सब चिन्ह वरमके होते हैं, पसलीके नीचे तेसें छातीके तरफ दरद बढता है पीपके पडनेसे अंदरसें चभका मारता है पीप बढते जाता तेसें कलेजा बढते जाता आखरके एक दिन या महीना या वरस पीछे मूंहोकर पीप निकलता है ए जब फूटता है तब छातीपर दहने तरफ अथवा पीठपर पसलियोंके बीचमें पसलीके नीचे पेटपर या पीठपर मूंकरके फूटता है जो अंदर फूटता है तो छातीके अंदर फेफसेमें अथवा पेटमें फूटता है आंतरेमें या पित्ताशयमें मूं करता है तो पीप दस्तमें निकलता है, होजरीमें फूटता है तो उलटीमें पीप निकलता है अगर जो पेटमें छूटा फूटकर पीप फैले और उसकू निकलणेकूं रस्ता नहीं मिले अदमी मरजाता है, (इलाज)– जेसें बाहिरके फोडेकू पकाकर पीप निकाल घाव भरते हैं, तेसें इसकाभी इलाज करणा सख्त जुलाब या सख्त दवा देणी नहीं ताकत देवे एसा अच्छा खुराक देणा जिस जगे फोडेका जोर

होय और मूं होना मालम पडे उसजगे पोल्टिस मार जलदी फूटे ऐसा इलाज करणा रोगीकी ताकत बने रखणी यही मुख्य इलाज है, पारेकी कोईभी दवा पेटमें लेणेकी या ऊपर लगाणेकी सर्वथा काममें लेना नहीं बुखारके जोर मुजब बुखारका इलाज करणा दस्तकी कब्जी होय तो सोते वखत कम्पाउन्डरुबार्ब पील ५ से ६ ग्रेनकी गोली देनी अथवा फजरमें सीडलीश पाउडरका जुलाब देना (लोशन)- नाइट्रिक एसिड १ ड्राम म्युरियाटिक एसिड याने निमकका तेजाब १॥ ड्राम और पाणी १० से १२ औंस मिलाकर इसमें कपडा अथवा बदली डुबाकर कलेजेके दरदपर चुपडणा अथवा महीन कपडा धरकर केलेका पत्ता तथा कपडेका पट्टा बांधना (पित्तका उछाला)- कोईभी दाह करणेवाली चीज होजरीमें जाणेसें अथवा विचाररहीतपणेसे कितनेक मुदततक खाया भया कुपथ्यसे होजरी तथा यकृत् व्यवस्थारहित होनेसे पित्तका उछाला आता है, उछाला और मूर्छा ए उसके लक्षण है, उलटी होती है, तब पहली होजरीमेंका पदार्थ निकलता है पीछे खट्टा पित्त निकलता है, और आंतरेमें दरद होता है, (इलाज)-उलटी रोगमें लिखे इलाज करणा राई तथा पाणी पिलाकर उलटी करानी उलटीकूं पैदा करणेवाली वस्तू बाहिर निकाल देना पीछे जुलाब देना सोडावोटर पिलाना दरद बहोत होता होय तो कलेजेकी पीपडीपर राईकी पोल्टिस मारनी दस्त कब्ज होय तो उसका इलाज करना)-यकृत्का संकुडाणा-बहोतसी वखत यकृत् बढे पीछे संकोचाता है, इसमें छोटा होता है इस रोगके संग जलंदर जरूर होता है पांवपर सोजा पीलिया अजीर्ण अथवा दस्त आखर मोत)- जलंदर होनेके पहली कलेजेपर आयोडाइनका टिंचर लगाना अथवा ऊपर यकृत्के पकनेपर लोशन लिखा है, उसका वरताव करणा देशी लोक कलेजेपर गुल देते हैं, वोभी फायदेमंद है जलंदर भये बाद जलंदरका इलाज करणा (पित्तकी पथरी)- पित्तके रहनेके ठिकाणेकूं पित्ताशय कहते हैं, इस पित्ताशयमें पित्त एकट्ठा होकर आंतरोंमें जाता है लेकिन् जब पित्त कुछ बिगडता है तब उसमें क्षार वगैरे पदार्थ घट्ट होकर करडी पथरी जैसी बंध जाती है ए पथरी एकया जादा गोल चिपटी खुणेवाली होती है, कदमें चिरमीसें इंडे जितनी बडी होती है ए कांकरी पित्ताशयमें पडी रहती है अथवा आंतरोंके रस्ते दस्तमें निकल जाती है, पित्तकी नलीमेंसें निकलती वो बहोत दरद करती है, कलेजेमें शूल जैसी पीडा होती है, रोगी तडफडता और पुकारता है, टहरटहर दरद उठता है, उलटी होती है, दस्तकब्ज रहता है, पथरी पीछे पित्ताशयमें जाय अथवा आंतरोंमें जाय तो दरद नरम पडता है अगर जो नलीमें अटककर रहे तो आखिर पित्ताशयमें पित्तका भराव होकर कामला होता है, और रोगी मरजाता है (इलाज)- गरम पाणीका सेक अलसीकी पोल्टिस अफीम तथा बेलाडोना मिलाकर लगाना दरद बहोत होय तो [illegible] अथवा क्लोरोफार्म सुंघाना गरम [illegible] पिलाकर उलटी करानी आंतरोंमें गये पीछे जुलाब देकर दस्तके रस्ते निकालदेनी

(कामला)-पित्ताशयका पित्त आंतरोंमें नही जाता है, पीछा खूनमें दाखल होता है तब कामला होता है, अथवा पित्त पैदा करनेकी क्रियाका अटकाव होनेसें खूनमें पित्त बढता है कलेजाके आगे कहे रोगोमें कमला होता है पित्त जादा पैदा होनेसें और मलकी कब्जीसेंभी कामला होता है इसके सिवाय चिंता डर दिलगीरी फेफसा मगज तथा रक्ताशयके रोग अजीर्ण बुखार सापका डंक तथा दुसरे जहर ए सब कामला (पीलिया)का कारणरूप है खूनमें पित्तका बढना उसका नाम पीलिया रोग है, (लक्षण)–बदनमें पीलापना ए कामलाका प्रगट लक्षण है ये पीलापणा पहली आंखमें पेशाबमें नखमें और पीछे चामडीमें दिखाई देता है सुस्ती आलस बेचेनी कलतर शिरका दुखणा दस्तकी कब्जी और खुजली ए उसके दुसरे चिन्ह हैं कमला बहोत बढ जाता है तो सब बदन हलदी जेसा हो जाता है रोगी स्त्रीका दूध तथा आंसूभी पीला होता है, कपडेके पीला दाग लगता है, पेशाब पीला केसर जेसा लाल कालाभी होता है दस्तसुपेद कब्ज वायू डकार अपचा अरुचि और किसी २ वख्त दस्त उलटीमें या नाकमेंसें खूनभी गिरता है.

(इलाज)– १ दस्त खुलास आवै एसा इलाज करणा पहली दूध या घी पिलाकर दस्त देना २ त्रिफलाके उकालामें सहत डालकर पीना ३ गोमूत्रमें शिलाजीत अथवा सोराखार लेना ४ कडवे नींबकी छालका उकाला सहत डालकर पिलाना ५ त्रिफला दारुहलदी कडवानींब तथा गिलोय इसमेंके किसीभी दवाका अंगरस सहत डालकर पीना ६ कुटकी सर्वोत्तम इलाज है, इसका क्वाथ नवसादर तथा विलायती निमक डाल पीना ७ नवसादरभी कामलेका सर्वोत्तम इलाज है, नं० (६२६) (६२७) तथा ६२८ का मिक्श्चर कामल है, ९ तेसे नं० (७०७) तथा ७०८ का हकीमीनुसके फायदेबंद है १० त्रिफलादि क्वाथ नं० २११ अच्छा फायदा करता है.

(होमियोपथिक इलाज)–१ एकोनाइट–बुखारके संग पीलियेका अच्छा इलाज है, २ आर्सेनिकम आंख पीली दस्त अपचा बेचेनी प्यास ३ केलकेरियाकार्ब (यकृत्की बढोतरी) उसमें दरद दस्त मट्टी जेसा पेशाब काला तथा पीलाईलियेशांखा ४ आयोडाईन–चहरा पीला दस्त सुपेद पेशाब काला तथा पीलाईलिये पुराना कामलेमें ५ पोडोफाइलम) पित्तकी कांकरी अटकी भई पीलियेका इलाज–(विशेष सूचना)– भारी छाछ टाल-और खटाई और चीकना खुराक घी तेल वगेरे चरबीवाला पदार्थ और नशेका परहेज रखणा पांडू रोगमुजब पथ्यापथ्य रखणा कामलामें लोक दूध खानेकी मनाइ करते हैं. लेकिन् उसका कोइ कारण नही पाया गया गाफकसर थोडा दूध खानेमें कोइ तकलीफ नहींहै (यकृत्के तमाम रोगोंका सामान्य इलाज) यकृत्के सब रोगोंमें दस्तकी कब्जी होती है, इसवास्ते दस्तका खुलासा रहे एसा इलाज सरू करणा दस्तकी कब्जी नही

होय और मूं होना मालम पडे उसजगे पोल्टिस मार जलदी फूटे ऐसा इलाज करणा रोगीकी ताकत बने रखणी यही मुख्य इलाज है, पारेकी कोईभी दवा पेटमें लेणेकी या ऊपर लगाणेकी सर्वथा काममें लेना नहीं बुखारके जोर मुजब बुखारका इलाज करणा दस्तकी कब्जी होय तो सोते वखत कम्पाउन्डरुबार्ब पील ५ से ६ ग्रेनकी गोली देनी अथवा फजरमें सीडलीझ पाउडरका जुलाब देना (लोशन)— नाइट्रिक एसिड १ ड्राम म्युरियाटिक एसिड याने निमकका तेजाब १॥ ड्राम और पाणी १० से १२ औंस मि-लाकर इसमें कपडा अथवा बदली डुबाकर कलेजेके दरदपर चुपडणा अथवा महीन कपडा धरकर केलेका पत्ता तथा कपडेका पट्टा बांधना (पित्तका उछाला)— कोईभी दाह करणेवाली चीज होजरीमें जाणेसें अथवा विचाररहीतपणेसे कितनेक मुदततक खाया भया कुपथ्यसे होजरी तथा यकृत् व्यवस्थारहित होनेसे पित्तका उछाला आता है, उछाला और मूर्छा ए उसके लक्षण है, उलटी होती है, तब पहली होजरीमेंका पदार्थ निकलता है पीछे खट्टा पित्त निकलता है, और आंतरेमें दरद होता है, (इलाज)—उलटी रोगमें लिखे इलाज करणा राई तथा पाणी पिलाकर उलटी करानी उलटीकूं पैदा करणेवाली वस्तू बाहिर निकाल देना पीछे जुलाब देना सोडावोटर पिलाना दरद बहोत होता होय तो कलेजेकी पीपडीपर राईकी पोल्टिस मारनी दस्त कब्ज होय तो उसका इलाज करना)—यकृत्का संकुडाणा—वहोतसी वखत यकृत् बढे पीछे संकोचाता है, इसमें छोटा होता है इस रोगके संग जलंदर जरूर होता है पांवपर सोजा पीलिया अजीर्ण अथवा दस्त आखर मोत)— जलदर होनेके पहली कलेजेपर आयोडाइनका टिंचर लगाना अथवा ऊपर यकृत्के पकनेपर लोशन लिखा है, उसका वरताव करणा देशी लोक कलेजेपर गुल देते हैं, वोभी फायदेमंद है जलंदर भये बाद जलंदरका इलाज करणा (पित्तकी पथरी)— पित्तके रहनेके ठिकाणेकूं पित्ताशय. कहते हैं, इस पित्ताशयमें पित्त एकठा होकर आंतरोंमें जाता है लेकिन् जब पित्त कुछ निगडता है तब उसमें क्षार वगेरे पदार्थ घट्ट होकर कारडी पथरी जैसी बंध जाती है ए पथरी एकया जादा गोल तिरछी रबूणेवाली होती है, कदमें चिरमीसें इंडे जितनी बडी होती है ए कांकरी पित्ता-शयमें पडी रहती है अथवा आंतरोंके रस्ते दस्तमें निकल जाती है, पित्तकी नलीमें नि-कलती तो बहोत दरद करती है, कलेजेमें शूल जैसी पीडा होती है, रोगी तडफडता और पुकारता है, ? ठहरठहरकर दरद उठता है, उलटी होती है, दस्तकब्ज रहता है, प-थरी पीछे पित्ताशयमें जाय अथवा आंतरोंमें जाय तो दरद नरम पडता है अगर जो न-लीमें अटककर रहे तो आखिर पित्ताशयमें पित्तका भराव होकर कामला होता है, और रोगी मरजाता है (इलाज)— गरम पाणीका सेक अलसीकी पोल्टिस अफीम तथा बे-लाडोना मिलाकर लगाना दरद बहोत होय तो ईथर अथवा क्लोरोफार्म सुंघाना गरम पाणी पिलाकर उलटी करानी आंतरोंमें गये पीछे जुलाब देकर दस्तके रस्ते निकालदेनी

(कामला)-पित्ताशयका पित्त आंतरोंमें नही जाता है, पीछा खूनमें दाखल होता है तब कामला होता है, अथवा पित्त पैदा करनेकी क्रियाका अटकाव होनेसें खूनमें पित्त वढता है कलेजाके आगे कहे रोगोमें कमला होता है पित्त जादा पैदा होनेसें और मलकी कब्जीसेंभी कामला होता है इसके सिवाय चिंता डर दिलगीरी फेफसा मगज तथा रक्ताशयके रोग अजीर्ण बुखार सापका डंक तथा दुसरे जहर ए सब कामला (पीलिया)का कारणरूप है खूनमें पित्तका वढना उसका नाम पीलिया रोग है,

(लक्षण)—वदनमें पीलापना ए कामलाका प्रगट लक्षण है ये पीलापणा पहली आंखमें पेशाबमें नखमें और पीछे चामडीमें दिखाई देता है सुस्ती आलस वेचेनी कलतर शिरका दुखणा दस्तकी कब्जी और खुजली ए उसके दुसरे चिन्ह हैं कमला बहोत वढ जाता है तो सब वदन हलदी जेसा हो जाता है रोगी स्त्रीका दूध तथा आंसूभी पीला होता है, कपडेके पीला दाग लगता है, पेशाब पीला केसर जेसा लाल कालाभी होता है दस्तसुपेद कब्ज वायू डकार अपचा अरुचि और किसी २ वख्त दस्त उलटीमें या नाकमेंसे खूनभी गिरता है.

(इलाज)— १ दस्त खुलास आवै एसा इलाज करणा पहली दूध या घी पिलाकर दस्त देना २ त्रिफलाके उकालामें सहत डालकर पीना ३ गोमूत्रमें शिलाजीत अथवा सोराखार लेना ४ कडवे नींबकी छालका उकाला सहत डालकर पिलाना ५ त्रिफला दारुहलदी कडवानींब तथा गिलोय इसमेंके किसीभी दवाका अंगरस सहत डालकर पीना ६ कुटकी सर्वोत्तम इलाज है, इसका क्वाथ नवसादर तथा विलायती निमक डाल पीना ७ नवसादरभी कामलेका सर्वोत्तम इलाज है, नं० (६२६) (६२७) तथा ६२८ का मिक्ष्चर कामल है, ९ तेसे नं० (७०७) तथा ७०८ का हकीमीनुसके फायदेवंद है १० त्रिफलादि क्वाथ नं० २११ अच्छा फायदा करता है.

(होमियोपथिक इलाज)—१ एकोनाइट—बुखारके संग पीलियेका अच्छा इलाज है, २ आर्सेनिकम आंख पीली दस्त अपचा वेचेनी प्यास ३ केलकेरियाकार्ब (यकृत्की वढोतरी) उसमें दरद दस्त मट्टी जेसा पेशाब काला तथा पीलाईलियेझांखा ४ आयोडाईन—चहरा पीला दस्त सुपेद पेशाब काला तथा पीलाईलिये पुराना कामलेमें ५ पोडोफाइलम) पित्तकी कांकरी अटकी भई पीलियेका इलाज—(विशेप सूचना)— भारी दाल टालऔर खटाई और चीकना खुराक घी तेल वगेरे चरवीवाला पदार्थ और नमेका परहेज रखणा पांडू रोगमुजब पथ्यापथ्य रखणा कामलामें लोक दूध खानेकी मनाइ करते हैं. लेकिन् उसका कोइ कारण नहीं पाया गया माफकसर थोडा दूध खानेमें कोइ तकलीफ नहींहै (यकृत्के तमाम रोगोंका सामान्य इलाज) यकृत्के सब रोगोंमें दस्तकी कब्जी होती है, इसवास्ते दस्तका खुलासा रहै एसा इलाज सरू करणा दस्तकी कब्जी नहीं

होय तोभी आणेकी दवा देनी २ निसोतकूं उकाल उसमें एरंडीका तेल तथा दूध मि-
लाय पिलाना अथवा इकेली निशोत पाणीमें पीस दूधमें पिलाना अथवा फकत एरंड
दूधमें पिलाना ३ करमालाके गिरमें दूध डाल उकालकर पिलाना ४ कुवारका रस
हलदीका चूर्ण मिलाकर पिलाना ५ जौ हरडे तथा लाल रोहीडेका क्वाथ जवखार तथा
पीपरका चूर्ण डालकर फजरमें पीना.

कृमि–चूरणिये–गिंडोले–वर्मस.

(विवेचन) कृमियोंके गिरनेसे बदनमें जोजो विकार होते हैं, उसका बयान बडा भयंकर है, लेकिन् लोक इस बेमारीकू साधारन समझते हैं, देशी शास्त्रमें और डाक्टरीमें इस रोगका बहोत निर्णय किया है सो बहोतसी सूक्ष्म बाते समझने जेसी है, लेकिन् इस जगे संक्षेपसे उसका बयान करते हैं (प्रकार) कृमिकी मुख्य दो जात है याने बाहरकी जूं लीख चमजू वगेरे (और अभ्यंतर कृमि) याने बदनके अंदरकी तांतू जेसे गोल चपटे कृमि २० से ३० फीटतक लंबी होती है, इसमें कितने तो कफमें कितनेक खूनमें और कितनेक मलमें पैदा होती है (कारण)–बहारकी कृमि बदन तथा कपडेके मेल मलीचपनेमें होती है और अंदरकी कृमि अजीर्णमें खानेवालेकूं मीठा तथा खट्टा पदार्थ खानेवालेकू पतला पदार्थ खानेवालेकूं आटा गुड मीठा मिले पदार्थ खानेवालेकू दिनमें नींद लेनेवालेकू विरुद्ध अन्नपान बहोत वनस्पतीकी खुराक बहोत मेवा इत्यादिसें रोग प्रगट होता है बहोतसी वखत कृमियोंके इंडे खुराकके संग पेटमें चले जाते हैं और आंतरोंमें उनका पोषन होनेसें उनोंकी वढोतरी होती है लक्षण–बाहरकी जूं तथा लीख प्रत्यक्ष दिखती है, और चमडीदरद दोडे फोडे खुजली फुनसी गडगूमड ए उसके प्रत्यक्ष चिन्ह है.

(किस्म) पैदा भये कृमिमें कितनेक तो चमडेकी वडी डोरी जेसें कितनेक अनाजके अंकुर जेसे कितनेक बारीक और लंबे कितनेक छोटे होते हैं, कितनेक सुपेद और [illegible] होते हैं. उसकी ७ जात है उससे गोल मूंमेसे लाल अथवा [illegible] उनकी [illegible] आकृत [illegible] श्लेष्म ए, उसके लक्षण हैं, खूनमें होनेवाले दे प्रकारकी कृमि खूनमें होती है, और सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देख सकते हैं, उनोंसे कुष्ट [illegible] होता है, विष्टामें यान दस्तमें होनेवाली कृमि गोल महीन तथा [illegible] सुपेद [illegible] तथा बहोत [illegible] होती है, उसकी पांच जात है [illegible] कृमि [illegible] मालुम जाती है. [illegible] मल्का [illegible] बदनमें दुबलापणा [illegible] [illegible] मंदाग्नि [illegible] खुजाल होती है, कृमि [illegible] होती है. उनोंकी कृमिसें [illegible] जाती रहती है, अथवा [illegible] पानीकी प्यास [illegible] पेटमें दरद [illegible]

चैनी अनिद्रा गुदामें काटै दस्त पतला आवै उसमें कृमियें गिरे किसी वखत मूंमेसे थोडा बुखार वकना वच्चा नीदमें दांत पीसै झचक उठै और हिचकी खेंचातानभी होवै इ रोगके ऐसे २ लक्षण होते हैं, सो वाजे वखत वैद्यया डाक्तरभी निश्चै नही कर स हैजा मिरगी और दिवानापना इत्यादि रोगभी कृमिसें पैदा होजाते है–

(इलाज)– गोलकृमि–१ सेन्टोनाईन सादा और अच्छा इलाज है, ऊपर मुजब से ५ ग्रेन दवा मिश्रीके संग रातकूं देनी और फजरमें थोडा एरंडी तेल पिलाना तब द स्तमें कृमियां निकल जायगें पेटमें जादा कृमियोंकी शंका रहे तो एक दो दिन वाद फे रभी इसीतरे करनेसें सब कृमियें निकल जाते हैं, बच्चोके दो तीन दिनमें ९० से १०० तक कृमियें निकल जाते हैं, कितनेक लोक एसा मानते हैं के कृमिकी कोथली निकल जाती है, तो वच्चा मरजाता है, लेकिन् ये वात वहमकी है, सेन्टोनाइनके वदले वजारमें लोझेन्जीस याने गोल चिपटी टिकडियें विकती है, उसमें सेन्टोनाइनके संग वूरा तेसें क्यालोमेलभी मिलाया भया होता है, उसकूं बच्चे मिठाइ समझ खा जाते है, वो देना. (२ क्यालोमेल)–इकेला अथवा इसके संग सेन्टोनाइन तथा सोडा मिलाकर देना ३ स्केमनी–जालप रुवार्व एरंडी तेल निशोत–ए सव जुलाव आनेवाली चीजोके संग कृमिकूंभी वाहिर निकालती है, पहली जालप वगेरे तीन दवा सामिलकरकेभी दीजाती है, ४ टरपेन्टाईन–कृमिकूं गिराती है, मात्रा ४ द्राम उसके संग एरंडी तेल ४ द्राम गूंदका पाणी ४ द्राम और सोवेका पाणी १ औंस मिलाणा ५ अनारके जडकी छाल १ तोला चूर्णकर आधा फजर आधा सांझकूं वूरेके संग फाकना दुसरे दिन विलायती निमकका जुलाव लेना ६ वायविडग–कृमिका अछा इलाज है, वायविडग २ वाल निशोतके छालकी भूकी१वाल कपीला१वाल इनोकों१औंस ऊकलते जलमें पाव घंटे भिगाकर इसका नितरा भया पाणी दोदो चमचे तीन २ घंटेसे दो तीन वखत देना इससे कृमि निकल जाती है, बुखारमें ए दवा नहीं देनी–चपटी कृमि–७पहली जुलाव देना पीछे क्यालोमेल देना फेर जुलाव देना ८ मेलफरका तेल आता है, उसकी ३० या ४० वूद सटके जलमें देना और ४ घंटे पीछै एरडी तेल अथवा जालपका जुलाव देना–तांतूजेसी कृमि–९ क्यालोमेल तथा सेन्टोनाइन देनेसे निकल जाती है, लेकिन् फेर २ होजाती है, इसवास्ते निमकके पाणीकी कपासियोके पाणीकी अथवा लोहेका अर्ककी और पाणी मिलाकर उसकी गुदामें पिचकारी मारणेसें कृमि धुपकर निकल जाती है, १० निमक ॥ से १ द्राम मीठे जलमें ३।४ औंसमें गुदामें पिचकारी मारनी इससे कृमि सब निकल जाती है ११–पिचकारीकेवास्ते इसके सिवाय चूनेका पाणी टिंक्चर ओफ स्टील अथवा इसके वदले सितावके पत्ते वाफकर या पीसकर किया भया पाणी इसकी पिचकारीभी फायदा करती है, हमेस पिचकारी मारनी और ३।४ दिनसे जुलाव देना–(दुसरे इलाज) १२ पलासपापडेकी भूकी । तोला वायविडंग । तोला छाछमें मिलाकर दुसरे दिन जुलाव देना

१३ कौच फलीके रू दूधमें धोकर पिलाना और दुसरे दिन जुलाब देना १४ पलासपापडा तथा काली जीरी १५ डीकामाली (कीडामारी) पाणीमें पीसकर पिलानी १६ वायविडंगके क्राथमें वायविडंगका चूर्ण डालकर पिलाना अथवा सहतमें चटाना १७ पलासपापडेकू जलमें पीस सहत डालकर पिलाना १८ कपीला आधे रुपेभर तथा गुड १९ वायविडंग इंद्रजव उसकूं शेकके किया भया चूर्ण २० नींबके पत्तोंकों वाफा भया रस सहत मिलाकर पिलाना २१ त्रिफलादि क्राथ नं २१० कृमि तथा कृमिसे भये सब विकारोंको मिटाता है, कृमिसें खून विगडकर वदनपर गडगूमड तथा पककर फूट जाता है और रोगी भयंकर स्थितिमें आ जाता है, इस क्राथका बहोत दिनोंतक सेवन करनेसे रोग जडसे जाते रहता है, २२ कृमि निकल गये पीछे बचेकी तनदुरस्ती सुधारनेकूं टिंकचर ओफ स्टील बूंद १० एक ओंस जलमें कितनेक दिनोंतक पीना.

(विशेष सूचना)-(पथ्य) तिलका तेल तीखा और कडवा पदार्थ निमक गोमूत्र सहत हींग अजवाण नीबू लसन कफनाशक तथा रक्त शोधक पदार्थ अछा है,-(कुपथ्य) दूध मांस घी दही पत्तोंकाशाक खट्टा तथा मीठा रस और आटेका पदार्थ ए कृमिकूं बनानेवाले हैं, कृमिवाले बचेकूं रोटी देना होय तो निमक डाल तेलसे तवेपर तलके देनी बहोत अछी है, क्योंके तेल और करडा पदार्थ फायदेमंद है, इसवास्ते कृमियोंके इंडे ज्यादा करके पत्तोंके शाग तथा फलोंपर लगे रहते हैं, इसीवास्ते पत्तोंका शाग विना तपासे खानेमें जैनाचार्य मांस खानेका दोष कहते हैं, मूल कारण यही है, और फलादिक [illegible] खानेमेंभी दोष दिसा और रोगकाही सिद्धप्रमान है, क्योंके देशीलोक [illegible] शाग फल लाकर विगर धोये देखे विगर काममे लेते हैं, लेकिन् उसमें कितना नुकशान है सो नहीं जानते जीवोंके इंडे तथा जीव प्रथम तो पेटमें आंतरोंमें जाता है, दुसरे [illegible] जीव [illegible] मुसाफरी करने निकलते हैं, तब एक वदनसे दुसरेके वदनमेंभी [illegible] [illegible] घुस जाते हैं इस जानकी मादा बडी मुसाफरण होती है सो इंडाभी दुसरेके वदनमें [illegible] देती है इसीवास्ते संग सोना और संग भोजन करना उसमें एक तो सफाई दुसरी [illegible] [illegible] अनेक जरुरी कारनसे आये भये हैं, जैनशास्त्रकार जूं चमजूं [illegible] इंद्री और [illegible] [illegible] [illegible] जनुओंको दो इंद्रीवाला जीव मानते हैं, इसवास्ते नपुसक [illegible] [illegible] नहीं होना लेकिन् इन जीवोंका सामान तो ऊपर लिखमुजब [illegible] [illegible] [illegible] जीवो [illegible] है, बिछोनेपर सोना और संगखाणा संग सोना [illegible] [illegible] इसीवास्ते बहोत फायदेकेवास्ते मना करना है, इस अपेक्षाआश्री जैनके मुनि [illegible] [illegible] [illegible] अन्यका वस्त्रादिकका नियम करे और [illegible] [illegible] [illegible] मना करते है, उन जीवोंके वचोंमें और फूलके दुर्गंधके परमाणू तथा [illegible] [illegible] [illegible] करते हैं, और [illegible] परमाणु उड जाते हैं, इस बातोंको बहोतसे मुरदे [illegible] [illegible] [illegible] समझ ही क्या.

अर्श हरस मस्सा ववासीर.

पाइल्स.

(वैठक गुदा)के आसपास कोरपर अथवा सफरेके अंदर महींनशिराओंका जाल फूलकर वधणेसे जो मस्सा होता है, वो हरस ६ प्रकारका है न्यारे २ तीनों दोषोंका तीनो दोष सामलका खूनका और औलादमें उतरणेवाला हरसकी मुख्य जाति २ दोय है, वाह्यार्स याने वाहरका अर्स जिसके मस्से आंखोसे दिखाइ देते और हाथ लगाणेसे भी मालम दे और अंतरार्स याने सफरेके अंदरका मस्सा उसमेंसे खून गिरता है, वाहिरके मस्सेमेंसे खून नहीं गिरता किसी २ के अंदरके मस्सेसेभी खून नहीं गिरता कफके मस्सेमेसें चिकणासा पाणी गिरता खून नहीं गिरता ।

(कारण) सव दिन वैठै रहणा थोडी महनतकर वहोत खुराक खाणा वहोत मसाला वापरणा तेज दारू पीणा वहोत गरम या वहोत ठंढा पदार्थ खाणा हमेसकी कब्जी वेर २ सख्त जुलावका लेणा औरतोंकै गर्भका दवाव कलेजा तिली गांठ संग्रहणी वगेरे रोग ये सव मस्सेके कारण है थोडेमें समझणाके जठराग्नि मंद पड जाणेसें अथवा पाचन क्रिया विगडणेसे जो जो रोग होते हैं वो सव रोग मस्सेके कारण है ।

(लक्षण) वाहरका हरस–मलद्वारकी कोरपर होता है पहली चमडी सामिल होकर फेर वढकर मस्से जेसे होते हैं, सिकलविलीके स्तन जैसा कदमें छोटे और वडे भी होते हैं छोटे होते हैं तव जादा दरद नहीं करते जरा खुजली तथा गरमी मालम देती है, वडे होणेपर दरद करते हैं वैठक सव दुखती है ये पकके फूटते हैं अथवा खून जमकर मस्से पके पडे वाद शांत पडते हैं–(अंदरका हरस)–गुदामें खाज खुजली चटपटी लगे आगवले दरद होय दस्तजातेकरांजे दस्तकब्ज वंधा भया आवे उस वखत पुकारे इतना दरद होय सफरा घसणेसे मस्सेमेंसे खून गिरे दस्तमें करांजणेसे सफरेका रस पुडतखें चीज कर वाहर आता है और किसी वखत सव रश पुडत याने कांच निकल आती है अथवा नसोंके न्यारे २ गुछै वाहर आतै हैं सफरेके दरदसें कमरमें पेडूमें और जांघमे वेचेनी कलतर होती है, खून गिरे पीछे मस्से नरम होते हैं, और रोगीकू चैन पडता है अगर खून वेर २ और जादा पडे तो रोगी एकदम सिटा जाता है, चेहरा फीका पडता है, और चक्कर आता है, हरसका खून लाल किरमची रगका होता है, वूंद २ अथवा धारसीर छुटती है । (इलाज)–जिस कारणसे हरसकी उत्पत्ति भई होय वो कारण रोकणेका इलाज करणा और दुसरा इलाज हरसके मिटाणेका करणा दस्त नरम पतला तथा साफ आवे एसा इलाज करणा ।

(२ छाछ)–मस्सेका वहोत अछा इलाज है, खट्टी छाछमें सींधा निमक मिलाकर वो खुराकके संग लेणा उससे वादी तथा मलकूं रस्ते लाती है, ताकत रग और अग्नि

बढाती है (३ सूरण)—मस्सेका एसा ही पक्का इलाज सूरण कंद है सूरणकूं युक्तिसे सेवन करे तो हरसकी जड जाते रहती है, सूरणका शाग सूरणकी पुडी सूरणके लडू शीरा वगेरे वणसकता है, लघुसूरण मोदक तथा वृहत्सूरण मोदकमें मुख्य भाग सूरणका आता है (४ नाग केशर)—खून गिरता होय तो उसकूं रोकणेमें अछा है, नाग केशरका चूर्ण मिश्री मक्खनमें चटाणेसें खून बंध हो जाता है (५ भीलावा)—मस्सेके रोगमें वहोत फायदे वंद है लेकिन् प्रकृति मोशम और पथ्यापथ्यका विचार करके देणा चाहिये तिल भिलावा हरडे और गुड समवजन लेकर लाडू करणा शक्ति मुजब देणा (६ हरडे)—जो हरडे और हरडेका सेवन वहोत फायदेवंद है दस्त साफ आता है, गुडके संग या छाछके संग देणा ७ (मस्सेके रोगपर करणे लायक शांत इलाज) रगतचंनण चिरायता लाल धमासा मोथ दारू हलदी तज वाला और नीमकी छाल इनोका क्वाथ खूनकूं बंध करता है ८ मक्खण और तिलखाणेका अभ्यास रखणा अथवा थर विगरका दही खाणा इससे भी खून बंध होता है, ९ छोटी इलायची दाणा तज तमालपत्र नाग केशर मिरच पीपर सूंठ ये वृद्धि भागसे लेणा जेसे इलायची एक भाग तज २ भाग इनोके सम वजन मिश्री खानेसे हरस मंदाग्नि गोला आफरा अरुचि श्वास गलेका और छातीका रोग मिटता है (१० गंधकके फूल २ औंस क्रिमओफटार्टर ४ ड्राम महत और नारंगीका शरबत २ औंस मिलाकर उसमेसे दरटंक १ ड्राम चाटणा) ११ कबाबचीणी २ तोला मिरच ।. तोला सहत २ तोला सोवा १ तोला मात्रा आंनेभर १२ मिश्री तोला १५ सूरण ५ तोला सुपेद चिरमी तोला १ सोवा तोला १ इनोका चूर्ण सहत अथवा मक्खणमें मात्रा १ ड्राम ।

(बादरका इलाज) १४ ठंडा पाणी अथवा ठंडे पाणीका पोता रखणा १५ निफ-लाके उकालेमें कपडा भिगाकर पोता भरणा १६ मांजू १ तोला अफीम ॥ तोला मक्खण और मादा मलम २॥ तोला इनोका मलम अंदर और बाहिर लगाणा १७ हीराकसी १२ रत्ती और ३ तोला पाणी उसकी रातकू पिचकारी मारणी १८ फिटकडी अथवा मांजू फल २ रत्ती पाणी १ औंस इसकी पिचकारी लगाणी १९ टिंकचर ओफस्टील २० बूंद पाणी २ तोला पिचकारी लगाणी इन इलाजोंसे मस्सेका खून बंध होता है और मस्सेमें मल भर गया होय तो बोभी निकल साफ हो जाता है २० नं० २०७ इसमें कई [illegible] करना—होमियो पथिक इलाज—१ इस्कुलसहीप—सूके मस्सेमें बहोत फायदेवंद है २ आर्सेनिकम—जलनेवाला और चटकवाला मस्सेमें उपयोगी है ३ बेलाडोना—खून गिरनेवाले मस्सेमें अच्छा है, इसके सिवाय कोलिन्सोनिया टेमामेलीस [illegible] [illegible] और [illegible] मस्सेमें फायदेवंद है ।

(विशेषसूचना)—खून गया बाद करणेवाला पुरुष मागा नहीं इसकी कमी कं

एसा खुराक और दवा खाणा नहीं दस्त साफ आवै एसी दवा और अग्नि प्रदीप्त करणे वाला खुराक तथा दवा लेणी मस्से काटणेका इलाज अणघड ले भग्गू फिरणेवालोंके फंदेमे आके खराब होणा नहीं क्योके मूरखोंके काटणेसें हमने वहोतोंके नुकशान भया देखा है ।

(हितशिक्षा)–रोगोंकी संख्या और कारण वांचे पीछै समझमें आ जायगीके पाचन क्रियाके विकारसे जितना रोग होता है इतना दुसरे किसीभी कारणसें होता नहीं शरीरकी आरोग्यता पाचन क्रियाके आधीन है और पाचन क्रियामें केसे २ विकार होते हैं वो सब इस प्रकरणमें रोगोंका नाम तरे २ के कारण लिखा है सो वांचणेवाले अछी तरे समझेंगे कुदरती हवा और स्वभावसे मोशमका वदलणा इसपरभी कितनेक रोगोका आधार है उसकूं अलग याने वाद कीये जाय तो पाचन क्रियाकी जादा खरावी आहार विहार संबंधी इसमें पुरुषोंकी अज्ञानता मूर्खता और गफलतके लिये रोग होता हैं सो हमने इस ग्रथकी दुसरी किरणमें अछीतरे समझाया है और फेर इहांभी लिखते है के मनुष्यके शरीरमें मूंसे गुदातक एक लंवा नल है इस नलकूं अपणे पाचन क्रियाका संचा कह सकते हैं क्योंके मूंकी वारीमेंसे खुराक दाखल होकर गुदाकी वारीमेंसें वाहिर निकलता है लेकिन् वाहिर आणेके पहली उस खुराकपर वहोतसी क्रियायें गुजरती है इन सव क्रियायोंका आखरी नतीजा खून और शरीरका पोषण है जव पाचन क्रिया वरावर होती है तव खून वरावर साफ पैदा होकर वदनकू अछा पोषण करता है जो उसमें कुछ विकार होता है तो खूनमेंभी विकार होता है खून कम या जादा नाताकत या ताकतवर विगडणा या शुद्ध होणा ये सव काम पाचन क्रियाके तालुक है लेकिन् आहार विहारके वावत जो आगे नियम लिखा है उस मुजव नहीं चलणेसे पाचन क्रियाका ये संचा विगडता है तव उस संचेमें पैदा होणेवाला शरीरका जीवनरूप खून कम होता है अथवा विगडता है खान पान विपरीत होणेसें पित्त विगडता है पित्तका काम पाचन करणेका है इसवास्ते पाचन दुरस्त होता नहीं तव वायु जोर करती है अजीर्ण होता है दस्तकी कब्जी होती है और आंतरोमें मलका भराव होकर संचा ठसोठस भर जाता है अज्ञान लोक इस वातोंसे नावाकिफ खुराक तो हमेस धके लेइ जाते हैं वहोतसे लोक येही कहते हैं जहांतक खाता पीता है कभी नहीं मरेगा जो जी माने सो खाणा लेकिन् ये खुराकका आगे क्या हाल होता है इस वातकूं वो लोक कुछ नहीं जाणते पाचनक्रियाका संचा मलसे भर जाणेसे और अग्नि वुझ जाणेसे खुराक वरावर नहीं पचणेसे जव नीचेके वडे आंतरेमें भर जाणेसे उसका संग्रह होता है तव एसा हाल होता है छोटे आंतरोमें जोके खून चढणेकी क्रिया होती है उसमेंसे मल अथवा वेकार मल कूचोकू वडे आंतरोमें उतरणेकी जगा चहिये इतनी जगा नहीं मिलणेसें छोटे

आंतरेमेंभी मल भर जाता है जो निरुपयोगी पदार्थ शरीरके बाहर निकल जाणा चहिये एसें विकारी पदार्थभी अंदरही भरके रहता है तब उसमेंसे सडणा सरू होता है तब उस सडेमें कीडे और कृमियोंकी पैदास होती है उसमेंसे कृमिजन्य अनेक रोग पेट और सब बदनमे हो जाते हैं आंतरे मलसे पूरे भर जाणेसें उसमेंसे सूजन होती है पीछे सडते हैं और उसमें जखम पडता है होजरी सह नही सकै एसा भारी खुराक अथवा दाह करणेवाला खान पान उसमें पडणेसे वोभी विकारकूं प्राप्त होते हैं और विकार पाया भया होजरीका रश छोटे आंतरोमें गये पीछे उसका जो खून होता है वो भी विकारवालाही होता है होजरीमें खटास अथवा पित्त वढता है तो उस जगेभी वरम होता है जखम गिरता है उलटी होती है इसतरे पाचनक्रियाका सब संचा विगडता है तब सुधारणेके वास्ते विचारा अज्ञान लोक वैद्य डाकतर और उनोंकी दवा पर भरोसा रखते हैं, लेकिन् जहांतक वो लोक इस संचेकी क्रियाके अजाण है तहांतक वैद्य या डाकतरोंकी दवा कभीभी उस रोगकूं मिटा नहीं सकती इसवास्ते जिस कारणसे संचा विगडता है उस कारणोंकों पहली रोकणा चाहिये जितना कुपथ्य संबंधी इंद्रियोंने मजा और स्वाद लिया होय उतनाही निग्रह (याने तप) ज्ञानसे किया जाय सो तो सकाम निर्जरा और अज्ञानपणे पांचो इंद्रियोंके स्वादसे वचणा जेसें वैद्यके कहे मुजब घरवाले खाणे पीणे कुपथ्य नहिं देवे सो परवशतापणे कर निग्रह याने अकामनिर्जरा, कर्मपूर्व वद्धकूं जीव दो तरे खपाता है जिसमें अकाम निर्जरासे कर्म खपाणेसें अज्ञानपणेकर फेर जीव समय २ कर्म बांध लेता है और ज्ञान तपसे नहीं बांधता है इसवास्ते कर्मोंके कडवे फल समझके पूर्वकृत दुष्कर्म वेदनाकूं मिटाणे ज्ञान संयुक्त पथ्य याने तप आचरे इच्छाकू रोकणा उसका नाम तप है वस्तु हाजर रहते उसका उपभोग नहीं करणा उसका नाम तप कहो पर्याय नामसे पथ्य भी हो सकता है रोग जरूर मिटता है वीर प्रभूने तपके (पथ्य) के अनेक भेद दिखलाये हैं इस तपसे याने इंद्रियोंके विषयोंको रोकणेसे निश्चे असंख्य रोग मिटता है।

किरण ५ मी.

मूत्राशयसंबंधी रोग.

मूत्राशयमें फक्त गुर्दा और बस्ति आया भया है इस किरणमें मूत्राशयके तमाम रोगोंका समावेश किया भया है विशेष करके मूत्राशयका रोग शारीरक है और मूत्र नलीका रोग आगंतुक याने कोईभी बाहरके दुष्ट स्पर्शके चेपसें प्राप्त भये होते हैं।

धातुस्राव.

स्पर्मेटोरीआ.

[illegible] धातु [illegible] है ये रोग आजकल ज्यादा देखणेमें आता है इसकी पेशी [illegible]

है धातु और वीर्य शिवाय दुसरी चीजोंभी पेशावमें जाती है उनोंकों भी लोक धातु और वीर्यही कहते हैं पेशावमें जाते जुदे २ पदार्थोंके नाम इस मुजब है १ प्रमेहके पदार्थोंमें जो सुपेद पदार्थ जाता है वो धातु नहीं लेकिन् पीप है अंदर जखम पडणेसें पीप वहकर वाहिर आता है इसवास्ते धातुस्रावसे जुदा रोग गिणना २ पथरीके रोगमें मूत्राशयके अंदरका श्लेष्म पदार्थ मूत्रके संग वाहिर जाता है वो पथरीके रोगके साथ संवंध रखता है लेकिन् धातू नहीं होता ३ पेशावमें चरवी जाती है वोभी प्रमेहकी एक जाति है जिसकूं वसामेह कहते हैं लेकिन् वोभी धातूका जाणा नहीं, ४ डाकतरोंने रसायणिक प्रयोगसे निश्चै किया है के इसके अलावा पेशावमें एक सुपेद पदार्थ और भी जाता है वो फोस्फेट नामका एक क्षार पदार्थ है ५ धातू जो वीर्य गिरता है पेशावके आगे या पीछै या स्वप्नेमें और भीके इतरे धातू जाया करता है ऊपर लिखे पांचो पदार्थ पेशावमें जाता है उसकूं लोक धातू जाणा कहते हैं लेकिन् वो जुदे २ पदार्थ है और उनोका इलाजभी लोक प्रायें धातूस्रावकाही करते हैं जो कभी अछी तरे परीक्षा कर इलाज करणेमें आवै तो तुरत इलाज हो सके लेकिन् इसमें कितनीक सूक्ष्म वातोंकी परिक्षा करणी होती है, जो इतनी वारीकीका विचार नहीं वण सके तो इन सव विकारोंपर सामान्य इलाज कितनेक दरजे चलसकते हैं.

(कारण) विषयमें वहोत चित्त रखणेसे वांचणेसे या सुणनेसे वहोत गरम खानपानसे और वीस वर्षकी ऊमर वाद वीर्यका स्वभाविक वेगकूं रस्ता नहिं मिलणेसे धातू पेशावके आगे पीछै स्वप्नेमें दस्त पेशावकी वखत करांजणेसे हथ रस वगेरेके कुटेवसे वीर्यकी नसों ढीली हो जाणेसें कितने एकोंके धातू झरणे लगजाता है.

(लक्षण) पेशावमें अथवा स्वप्नेमें जव धातू जाता है, तव नाताकती आती है, मन फिकर वंद रहता है, हाथपांवोमें कलतर (फूटणी) होती है. यादशक्ति कम पडती है. छातीमें धडका चलता है, भूक मद पडती है शिर दुखता है चक्कर आता है शरीर गलते जाता है, क्षय मिरगी वाईटे अथवा दिवानापणा वगेरे डरावणे रोग धातूके जाणेसें वहोतसी वखत पैदा होते हैं नामरदी संतानका अभाव भी होता है.

(इलाज) १ जिस कारणोंसे धातू जाणा सरु भया होय वो कारणोंको वध करणा २ दस्तका खुलासा धातू गिरणेकू वंध करता है इसवास्ते हरडेका चूर्ण अपनी तासीर तथा दोषोंके जोर मुजव हमेस लेणा तेसें सोनामुखी त्रिफला कोलोसिंथ रुवार्व वगेरे दवा भी दस्तके खुलासा वास्ते लिये जा सकता है ३ ठंडे जलसे सिनान अथवा कमरतक ठंडे पाणीमें थोडे मिंटोतक वैठणा शिरपर ठंडा जल जरूर डालणा छेया सात घटेसे रातकू जादा नींद लेणी नहीं सादी किये मरदकू अपणी औरतके पास रहणा इससेभी वीर्यका गिरणे वंद होता है, ४ फोस फारस लोह और कुचीलेकी वनावटी गोलीमेंसे किसीभी

आंतरेमेंभी मल भर जाता है जो निरुपयोगी पदार्थ शरीरके बाहर निकल जाणा चहिये एसे विकारी पदार्थभी अंदरही भरके रहता है तब उसमेंसे सडणा सरू होता है तब उस सडेमें कीडे और कृमियोंकी पैदास होती है उसमेंसे कृमिजन्य अनेक रोग पेट और सब बदनमे हो जाते हैं आंतरे मलसे पूरे भर जाणेसें उसमेंसे सूजन होती हे पीछे सडते हैं और उसमें जखम पडता हे होजरी सह नही सके एसा भारी खुराक अथवा दाह करणेवाला खान पान उसमें पडणेसे वोभी विकारकूं प्राप्त होते हैं और विकार पाया भया होजरीका रश छोटे आंतरोमें गये पीछे उसका जो खून होता है वो भी विकारवालाही होता है होजरीमें खटास अथवा पित्त वढता है तो उस जगेभी वरम होता है जखम गिरता है उलटी होती है इसतरे पाचनक्रियाका सब संचा विगडता है तब सुधारणेके वास्ते विचारा अज्ञान लोक वैद्य डाकतर और उनोंकी दवा पर भरोसा रखते हैं, लेकिन् जहांतक वो लोक इस संचेकी क्रियाके अजाण हे तहांतक वैद्य या डाकतरोंकी दवा कभीभी उस रोगकूं मिटा नहीं सकती इसवास्ते जिस कारणसे संचा विगडता है उस कारणोंकों पहली रोकणा चाहिये जितना कुपथ्य संबंधी इंद्रियोंने मजा और स्वाद लिया होय उतनाही निग्रह (याने तप) ज्ञानसे किया जाय सो तो सकाम निर्जरा और अज्ञानपणे पांचो इंद्रियोंके स्वादसे वचणा जेसें वैद्यके कहे मुजब घरवाले खाणे पीणे कुपथ्य नहि देवे सो परवशतापणे कर निग्रह याने अकामनिर्जरा, कर्मपूर्व बद्धकी जीव दो तरे खपाता है जिसमें अकाम निर्जरासे कर्म खपाणेसें अज्ञानपणेकर फेर जीव समय २ कर्म बांध लेता है और ज्ञान तपसे नहीं बांधता है इसवास्ते कर्मोके कडवे फल समझके पूर्वकृत दुष्कर्म वेदनाकूं मिटाणे ज्ञान संयुक्त पथ्य याने तप आचरे इच्छाकूं रोकना उसका नाम तप है वस्तु हाजर रहते उसका उपभोग नहीं करणा उसका नाम तप कहो पर्याय नामसे पथ्य भी हो सकता है रोग जरूर मिटता है वीर प्रभूने तपके (पथ्य) के अनेक भेद दिखलाये हैं इस तपसे याने इंद्रियोंके विषयोंकों रोकणेसे निश्चे अरेतानंत रोग मिटता है।

किरण ५ मी.

मूत्राशयसंबंधी रोग.

मूत्राशयमें फक्त गुर्दा और बस्ति आया भया है इस किरणमें मूत्राशयके तमाम रोगोंका समावेश किया भया है विशेष करके मूत्राशयका रोग शारीरक है और मूत्र मार्गका रोग आगन्तुक याने कोईभी बाहरके दुष्ट स्पर्शके चेपसें प्राप्त भये होते हैं।

धातुस्राव.

स्पर्मेटोरिआ.

वैद्यकमें धातु आता है ये बात आजकल ज्यादा देखणेमें आता है दुसरी वैसी बा

है धातु और वीर्य शिवाय दुसरी चीजोंभी पेशावमें जाती है उनोंकों भी लोक धातु और वीर्यही कहते हैं पेशावमें जाते जुदे २ पदार्थोंके नाम इस मुजब है १ प्रमेहके पदार्थोंमें जो सुपेद पदार्थ जाता है वो धातु नहीं लेकिन् पीप है अंदर जखम पडणेसें पीप वहकर बाहिर आता है इसवास्ते धातुस्रावसे जुदा रोग गिणना २ पथरीके रोगमें मूत्राशयके अंदरका श्लेष्म पदार्थ मूत्रके संग बाहिर जाता है वो पथरीके रोगके साथ संबंध रखता है लेकिन् धातू नहीं होता ३ पेशावमें चरबी जाती है वोभी प्रमेहकी एक जाति है जिसकूं वसामेह कहते हैं लेकिन् वोभी धातूका जाणा नहीं, ४ डाकतरोंने रसायणिक प्रयोगसे निश्चै किया है के इसके अलावा पेशावमें एक सुपेद पदार्थ और भी जाता है वो फोस्फेट नामका एक क्षार पदार्थ है ५ धातू जो वीर्य गिरता है पेशावके आगे या पीछै या स्वप्नेमें और भीके इतरे धातू जाया करता है ऊपर लिखे पांचो पदार्थ पेशावमें जाता है उसकूं लोक धातू जाणा कहते हैं लेकिन् वो जुदे २ पदार्थ है और उनोका इलाजभी लोक प्रायें धातूस्रावकाही करते हैं जो कभी अछी तरे परीक्षा कर इलाज करणेमें आवै तो तुरत इलाज हो सके लेकिन् इसमें कितनीक सूक्ष्म वातोंकी परिक्षा करणी होती है, जो इतनी वारीकीका विचार नहीं वण सके तो इन सव विकारोंपर सामान्य इलाज कितनेक दरजे चलसकते हैं.

(कारण) विषयमें वहोत चित्त रखणेसे वांचणेसे या सुणनेसे वहोत गरम खानपानसे और वीस वर्षकी ऊमर वाद वीर्यका स्वभाविक वेगकूं रस्ता नहिं मिलणेसे धातू पेशावके आगे पीछै स्वप्नेमें दस्त पेशावकी वखत करांजणेसे हथ रस वगेरेके कुटेवसे वीर्यकी नसों ढीली हो जाणेसें कितने एकोंके धातू झरणे लगजाता है.

(लक्षण) पेशावमें अथवा स्वप्नेमें जव धातू जाता है, तव नाताकती आती है, मन फिकर वंद रहता है, हाथपांवोमें कलतर (फूटणी) होती है. यादशक्ति कम पडती है. छातीमें धडका चलता है, भूक मंद पडती है शिर दुखता है चक्कर आता है शरीर गलते जाता है, क्षय मिरगी वाईटे अथवा दिवानापणा वगेरे डरावणे रोग धातूके जाणेसें वहोतसी वखत पैदा होते हैं नामरदी संतानका अभाव भी होता है.

(इलाज) १ जिस कारणोसे धातू जाणा सरु भया होय वो कारणोंको वध करणा २ दस्तका खुलासा धातू गिरणेकूं वंध करता है इसवास्ते हरडेका चूर्ण अपनी तासीर तथा दोषोंके जोर मुजव हमेस लेणा तेसें सोनामुखी त्रिफला कोलोसिंथ रुनार्ब वगेरे दवा भी दस्तके खुलासा वास्ते लिये जा सकता है ३ ठंडे जलसे सिनान अथवा कमरतक ठंडे पाणीमें थोडे मिटोतक वेठणा शिरपर ठंढा जल जरूर डालणा छेया सात घंटेसे रातकूं जादा नींद लेणी नहीं सादी किये मरदकूं अपणी औरतके पास रहणा इससेभी वीर्यका गिरणे वंद होता है, ४ फोस फारस लोह और कुचीलेकी वनावटी गोलीमेंसे किसीभी

ताकतवर दवाका सेवन करणा ५ आंवले आसगंध शतावर मुशली कौंचबीज तालमखाना मोलेठी गोखरू ये सब अथवा इनोंमेसें एक दो दवाका पौष्टिक चूर्ण दूध मिश्रीके संग पीणा अथवा पाक बणाकर खाणा खट्टा खारा वगेरे खानपान त्यागणा आंवले गोखरू गिलोय इन तीन चीजोंका चूर्ण घी तथा सक्करके संग चाटणा ७ शिलाजीत दूध डालकर पीणा ८ गऊका दूध उकाल उसमें गऊका दधि तथा बूरा डालकर पीणा ९ अफीम केशर जायफल वगेरे स्तंभन दवायें धातू जातेकूं बंध करता है, लेकिन् नसे नाली ओर मलस्तंभक होणेसें इसवास्ते हमेश लेणा अच्छा नहीं १० बहु फली अथवा गोखरू चमनस इनोकालुआब बूरा डालकर अथवा उंटीगणोंके बीजोंको कूटकर दूधमें भिजाकर मिश्री डाल चाटणा ११ आकारकरभादि चूर्ण (नं० ४२९) १२ मूसल्यादि चूर्ण (नं० २४१) आकोती (नं० २८१) १४ सालम पाक (नं० २७७) १५ ईसपूगल तथा गूदभी वीर्यके गिरणेकूं बंध करता है, (१६ अमृतवटी) धातूका गिरणा क्षीणता तथा नाताकती सबोंका श्रेष्ठ इलाज है, दूधके संग.

(अंग्रेजी इलाज)

(१७) डाइल्युटेड फोसफोरिक एसिड ४५ बूंद टिंकचर ओफनक्सवोमिका ३० बूंद
कम्पाउन्डटिंकचर ओफ सिंकोना १॥ ड्राम पेपरमिंटवाटर ३ औंस
एक लिकर ग्लास भरके दिनमें तीन बेर पिलाणा.

(१८) फासफेट आफझिंक २० ग्रेण डाइल्युटेड फोसफोरिक एसिड १॥ ड्राम
टिंकचर ओफ स्टील १॥ ड्राम पेपरमिन्टवाटर ६ औंस
एक लिकरग्लास दिनमें तीन बेर अछीतरे मिलाकरके देणा.

(१९) फासफेट आफझिंक २० ग्रेण एकस्ट्राकटनक्सवोमिका ६ ग्रेण
हीराकसी २४ ग्रेण पीलरुबार्बकम्पाउन्ड ६० ग्रेण
मिलाकर गोलियेंकर एक एक गोली हमेस दोतीन बेर भोजनकर उपरसे देणी

(२०) पीलफासफारस ३० ग्रेण एक्स्ट्राक्टनक्सवोमिका ३ ग्रेण
रिड्युस्डआयर्न ३० ग्रेण कीनाइन ६ ग्रेण
मिलाकर १२ गोलियेंकर दर टंक भोजनकर एक एक दो दो देणी.

(होमियोपेथिक इलाज) २१ पेशाबमें आल्ब्युमेन जाता होय तो एकोनाइट, आर्सेनिक, कांटेरीडिस और प्लोमाइनम वगेरे दवायें अजमाणी २२ जो पेशाबमें का [illegible] खाने जैसा जाता होय तो एसिड फोसफोरिकम अच्छा इलाज है, उससे फायदा नहीं होय तो फेरमफोस्फोरिकम और आर्सेनिकका इलाज करणा.

(विशेष सूचना) धातुके जाणेमें कितनेक लोक अफीम भांग माजम धतूरा [illegible] इलाज और कितनेक नुकसान करनेवाली दवाओंका सेवन करते हैं ज्यादा करके कहीं

जोगी सामी भगवें कपडे वाले एसी दवाओं देते हैं, और विचारे अज्ञान भोले लोक एसे धूर्तोंके जोगी, फक्र डोके, फदेमें फसकर तन और धनसें बरबाद होकर बुरे हवालेसे मरते हैं, वहोत लोकोंकी खराबी एसे लोकोंकी दवासे देखणेमें आई है और बावाजी आधीरातकूं ते ती सामनाते हैं, इसवास्ते विगर जाण पहचाण पैठ प्रतीति विगर भटकणेवाले बेवकूवोंका कभी विश्वास करणा नहीं फाफा मारकर अणघड लोकोंकी दवा तथा सल्ला लेणी नहीं किसी २ के उनोंकी दवासे फायदा भी हो जाता है, लेकिन् एसा देखकरके भी मूर्खोंकी दवा और सल्ला नही लेणी कारण वो आयुज्ञानके अजाण होणेसें फक्त दवा मात्रही जाणते हैं, निदान शारीर निघंट पथ्यापथ्य नही जाणणेसे अंधेका तीर समझणा किसी २ के भाग्य योगसे लग जाता है, इसवास्ते निर्दोष और साधारण दवा और अपणा वर्ताव खानपान खूबही साफ निर्दोष रखणा अपणी समझसें, इस ग्रंथ मुजब, पूर्ण वैद्य या डाकतरोंकी सल्ला और दवा जो कुछकहे, सो सब करणा.

गुरदेका वरम.

गुडदा याने किडणीमें सोजन हो जाता है, ये वरम दो तरेका है. (१ तीक्ष्ण वरम) २ जीर्ण वरम) शरदी ठंढी दारूका व्यशन गुप्त चोट बुखार हेजा वगेरे उसके कारण है, जलंदर तथा आल्व्युमीनका संबंध गुरदेके वरमके संग है, ये रोग अंग्रेजीमें पहले डाकतर ब्राइटने निश्चय किया है, इसवास्ते अबी भी उसी डाकतरके नामसे अंग्रेजीमें प्रसिद्ध है, लोकीकवाले नलोंका भरणा कहते हैं, लेकिन् ये रोग कमरके पास हड्डीके दोनों पसवाडे होता है, हमारा अनुमान है, सुजाक या गरमीका रोग जिस अदमीके होगया हो दस्त साफ नहीं लगे मैथुनकर तुरत जल पीलेवे दस्त पेसावकी संका रहते मैथुन करै चार घडी पिछली रात पीछे मैथुन करै कमरपर बोझा बांधे पांव उंचा नीचा गिरे इत्यादि औरभी केइयक कारणोंसे इद्री चेतन भये बाद वीर्य रोकणेसें ये रोग प्राये होणा संभव हैं, देशी शास्त्रमें इस रोगकूं अंडवृद्धिके अंतर्गत लिखा है, औरतोके प्राये ये रोग जादा होता है, प्रदर (स्वेत प्रवाहसें वहोत मैथुनसें) (तीक्ष्ण (तेज) गुरदेका वरम) (लक्षण) कमरमें दरद इस करके रोगी टेढा नहीं हो सके ठंढ लगकर बुखार चढ आवै जीमिचलाणा उलटी बेचेनी पसवाडोमें तथा गुडदेके पीछे पीठपर दरद वृपण (अंडकोषोमें दरद) प्यास दस्तकी कब्जी पेशाबकी हाजत वहोत लेकिन् वहोत थोडा और लाल रंगका और पेडू फटणे लगे बुखारमें बदन गरम नाडी जलद शिरमे दरद जीभपर वहोत सुपेद थर चहरा फिकरमंद भूख लगे नहीं डकारेंबेतरे आवे रसायणिक प्रयोगसे निश्चेकर देखा जाय तो पेशाबमें (अल्बुमीन) (राजा) मालम देगा सोजन तथा जलदर ये भी गुरदेके वरमका एक चिन्ह

बुखार नाडी पतली और वदन धुप २ के हाड पिंजर रहजाता है, इस रोगसें क्षय चम
का रोग पांडू और किसी वखत आंखोंमें मोतिया बिंदू सोजन हिचकी बेहोसी अ
मृत्यु–(इलाज) इय रोग बडा और बहोतदरजे असाध्य है, आहारविहाररूप
चलणेवाले रोगीकी उमर लंबी होती है, नहीं तो जलदी मरता है, इसका इ
चतुरोंसे कराणा चाहिये अफीम वंगभस्म लोह सोमल भांग किनाइन बेलाडे
अरगट आयोडाइन पोटासब्रोमाइड वगेरे दवाइयां इस रोगमें फायदाबंद है.

(पथ्य) दूध मलाइ मखण घी तूरकी दाल चणा मूंग पत्तोंका साग मूलेके
कद्दू गरम कपडे फजर सांझ डोलणा फिरणा (कुपथ्य) गुड सकर मिश्री सहत
मिठास लिये चीज आलू, सक्कर टेटी, सक्कर कंद, चावल साबूदाणे गऊंका मदा आदि
सत्ववाली चीजें बिलकुल वापरणी नहीं जो पेशाबमें सक्कर नहीं जाय तो वरता व कर

मूत्रकृच्छ्र–मूत्रगांठ,

इस रोगमें मूत्राशय और मूत्रनलीके कितनेक विकारोंका समावेश हो सकता
पेशाब अटक २ वडी मुस्कलसे आवे उसकूं मूत्रकृच्छ्र कहते हैं–(कारण) पेशा
बाहिर आणेका रस्ता है, उसका कोइभी भाग संकुडा जाता है उसका कारण बहोत
मूत्रमार्गका स्नायु संकुडाणेसे रगपुड सूज जाणेसे वरमसे तथा जखमसे रस्ता सं
हो जाता है, और पेशाबकूं बंध करता है. गरम खाणा पीणा ठंड शरदी साडे प
गरमीमें फिरणा ये उसके मूल कारण है, पथरी आडी आणेसे भी पेशाब अटकता है.

(इलाज) १ एलायची पाषाणभेद शिलाजीत गोखरु ककडीके बीज सींधानिम
तथा केशर इनोंका चूर्ण चावलोंके धोवणमें देणा २ ककडीके बीज मोलेठी दारूहल
इनमुजब चूर्ण ऊपरमुजब देणा ३ गोमूत्र सहत केलेका रस इनोंमेंसे हर कोई
रसके संग इलायचीका चूर्ण देणा ४ जवखार ५ मासा मिश्रीके संग ५ गुड मिला
जल गरम कर पीणा ६ गोखरूके काथमें जवाखार ७ आंवलाके काथमें गुड १ तो
डालकर पीणा ८ कुलथीका काथ सींधानिमक डालकर पीणा ९ शिलाजीत तथा मध
अथवा शिलाजीत दूध मिश्री १० दूध सक्कर घी ११ हरडे गोखरू पाखाणभेद अम
[illegible] इनोंका काथ सहत डालकर पीणा १२ डाभ कांस डांगर (दूब) [illegible]
तथा ऊखके जडका काथ अथवा खार १३ भूंइआंवलाका रस तोला १६ सहत डालकर
पिलाना १४ नारियलके जडका काथ १५ मुनक्का तथा दही सक्कर चाटणा १६ [illegible]
अथवा पेशाब जल्दी पीनेसे दस्त साफ रखणा (१७ मूत्रशलाका) हुसियार [illegible]
इसके पास डालकर पेशाब साफ करवाणा देशी वैद्य इस क्रियाकूं कम जाणते है, [illegible]
[illegible] नहीं होवे तो आगे इसका इलाज सकता है १८ [illegible] तथा [illegible]
[illegible] सिकाना.

मूत्राघात मूत्रका रुकणा.

(कारण) मूत्रकी गांठ पडजाणेसे अथवा पथरी आडी आणेसें पेशाब बंध होता है, मूत्रका रुकणा दो तरे होता है, एक तो पेशाबकी उत्पत्ति होती अटकती है, जेसेकै हैजेमें और दुसरी रीत यह है, कै मूत्राशय चैतना रहित होणेसें पेडू भर जाता है, लेकिन् पेशाब अटकता है, जेसेकै ऊरुस्तंभरोगमें पेशाब बंध होजाता है, मूत्रकृच्छ्र मूत्राघातरोगमें इतना फरक है, मूत्रकृच्छ्रमें तो मूत्रमार्ग संकडा हो जाता है, और मूत्राघातमें मूत्राशय चैतन्यरहित झूठा पड जाता है, अथवा पेशाबकी उत्पत्ति बंध हो जाती है.

(इलाज) १ ऊरुस्तंभ और हैजेसें पेशाब बंध होगया होय तो उण रोगोंका इलाज करणा २ गरम पाणीमें अफीमका डोडा उकाल पेडूपर शेक करणा तथा डोवर्स पाउडर ग्रेण १० पाणीमें पिलाणा ४ लाडेनमना ६० बूंद चावलोंके आटेमें मिलाकर गोली बणाकर गुदामें रखणा ५ सोडा कारबोनेट ओफ पोटाश सोराखार जवका पाणी इसके अंदरका कोइभी पेशाब लाणेवाला पदार्थ पाणीके संग पिलाणा ६ सहा जाय एसे गरम पाणीमें रोगीकूं कमरतक आधे घटे बैठाणा मूत्रकृच्छ्रके इलाजसब मूत्राघातमें भी चलता है–(पथ्य) सालि चावल गऊका छाछ गऊका दूध मूंगका ओसावण मिश्री पुराणा कोला परवल आदा गोखरू ककडी खजूर नालियर चंदलिया छोटी इलायची तथा ठंढा अन्नपान ये सब हितकारक है–(कुपथ्य) सराप महनत मैथुन घोडेकी सवारी विरुद्ध अन्नपान नागरवेलके पान उडद निमक हींग तिल मूत्रके वेगकों रोकणा खटाई गरम तीखा दाहकारक तथा लूखा पदार्थ.

अश्मरी–पथरी–कंकरी.

(कारण) पेशाबमें स्वभाविक खार होता है, वो वढजाणेसें अथवा दुसरा खार पैदा होकर उसकी धीरे २ पथरी बंध जाती है, और पीछे बडी होती जाती हैं, लीवरकी अव्यवस्थित क्रियाके सबब किसी किसमका पदार्थ गुरदेमें पडता है, और उस जगे पथरी बंध जाती है,

(लक्षण) पथरी जब बधणी सरू होती है, तब मूत्राशय फूल जाता है, तथा अंदर बहोत दरद होता है, पेशाबमें बकरें जेसी बदबो आती है, पेशाब बंध होता है, बुखार आता है, बडे कष्टके संग बूंद २ पेशाब आता है, रोगी धूजता है, दांत पीसता है, सूंटीकूं दबाता हैं, इंद्रीकूं मसलता है कणते रहता है ये पथरी गुरदेमेंसें पेडूमें याने मूत्राशयमे जाते और पेडूमेंसे पेशाबकी नलीके रस्ते बाहर आते दरद करता है. इस पथरीका कद रेतीके कणसे मटर जितना होता है, और पीछे बढकर बहोत बडी हो जाती है, रेती बहोत करके तो पेशाबके रस्ते बाहर निकल पडती है, लेकिन बडी कंकरी या

पथरी मूत्राशयमें अटकके रहती है, और उसजगे कदमें बढजाती है, तब काटके निकालणेसिवाय इलाज नहीं.

(इलाज) मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघातका सर्व पेशाब लाणेवाले इलाज पथरीमेंभीका मऊ है, क्योंकी मूत्रल दवासे रेतीकूं पेशाबमे निकालणा अथवा वडी पथरीकूं तोड फोडकर अथवा धोय धोकर पेशाबके रस्ते बाहर निकालणा इस दवायोंका ये मूल काम है.

(१ सूंठ वरणा गोखरू पाषाणभेद ब्राह्मी इनोंके काथमें गुड तथा जवखार डालकर पीणा २ गोखरूका चूर्ण सहतमें मिलाकर सात दिन बकरीके दूधमें पीणा ३ सहजणेकी जडका काथ जरा गरम २ पीणा ४ अद्रक जवखार हरडे तथा दारूहलदीका चूर्ण दहीके मठेमें पीणा ५ वरणेके छालकी राख ३२ तोला जवखार १६ तोला और गुड ८ तोला मिलाकर एक तोला खिलाकर ऊपरसे गरम पाणी पिलाणा ६ वरणेके छालके उकालेमें कुलथी सींधानिमक वायविडंग मिश्री जवखार कोलेके बीज गोखरू पमफाट वगेरे जो मिले उनोंकी चटणी पीस उसमें घी पकाणा इस घीके खाणेसे पथरी मिटती है, ७ वीर्यकी पथरी बंध जाती है, उसकूं शुक्राश्मरी कहते हैं, इसके इलाजभी ऊपरमुजनही करणा ८ दरदकूं कम करणा ये प्रथम इलाज है, गरम जलमें बैठणा और २५ ग्रेण क्लोरल देणा दरद फेरभी रहे तो ८ घंटे बाद फेरभी देणा ९ ड्राइक पिग (नं० ५६८ कमरपर धरणा दस्त कब्ज होय तो जुलाब देणा, जवका पाणी, अलशीका पाणी, अथवा हलदीकी चा, खूब पिलाणा, १० बाइकारबोनेट ओफ पोटाश, तथा पाणी, ११ अथवा इसी दवाके संग सोराखार और साईट्रिक एसिड डालकर सेर पाणीमें मिलाकर दिनमें पिला देणा.

(विशेष सूचना) पीछे लिखे दोनों रोगोंमुजब पथ्य पालणा बाहरकी हवा तथा दलका गुराक इस रोगकूं मिटाणेमें मददकार है खाणे पीणेके पदार्थोंमें पथर कंकर रेती नहीं नामेक इस बातका खयाल रखवाणा.

प्रमेह-सुजाक-फिरंग-

गोनोरीया.

(मूत्रवाहक) याने गुरदा और बस्तिके रोग कलेजेके अवयवोंके विकारके संग होता रहता है, तब मूत्र मार्गके रोग बहोत करके बाहरकी आचरणाके संग संबंध रखता है, उसमें सुजाक और गरमी (टांकी) ये दोय मुख्य रोगमें लिंग योनिका संबंध है.

(कारण) दुष्ट गोनोरीवाली रोगवाली और रजस्वला इनोंसे भोग करणेसे सुजाक प्रमेह होता है.

(लक्षण) पेशावके रस्तेसे पीप निकलणा ये प्रमेहका प्रत्यक्ष लक्षण. है, लेकिन् किसी २ वखत हथ रससें गरम गुड हींग मिरच वगेरे खानपानसे ओर बचोके कृमिरोगसे पेशावके रस्ते पीप गिरता है, लेकिन् एसे रोगकूं नये वैद्य (डाकटर लोक) प्रमेह नहीं कहते, क्योंके सुजाकका पीप तो चेपी होता है, वो तो फक्त दुष्ट रोगीली स्त्रीके संबंधसेही होता है, परमा सरू होणेके पहले कितनेक चिन्ह पहली दिखाइ देते हैं, पीछे दुसरे दिन अथवा पांच चार दिन पीछे निशानिया मालम देती है, और सुजाककी ४ चार जाति मुकरर करी जावै तो १ पहली जातिमें पेशावका पदार्थ सुपेद दूध या छाछ जैसा निकलता है, २ दुसरी हालतमें पीप जादा वहोतही जाता है, उसका रंग पीलापणा, लिये, हरास लिये किसी २ वखत उसके संग खून जाता है. मूत्र नलीमें दरद होता है, उसमें सूजन आजाती है, ३ तिसरी हालतमें सोजा और जलण कम पडता है, पीप कम आता है, दरद भी कम लेकिन् तीसरी हालतमे सूजाक जब मिटता नहीं तो पेशाव करते थोडीसी जलण और सलसलाट होता है, ४ चोथी हालतमें पीप पाणी जेसा और बूंद २ आता है, इस हालतकूं अंग्रेजीमे ग्लीट कहते हैं, प्रमेह होता है, तब इंद्रीके किसीभी ठिकाणे सोजा होता है, ये सोजा इंद्रीके अगले भाग तरफ होय तो पीप थोडा आता है, और ज्यों ज्यों अंदरके तरफ सोजन होय त्यों त्यों पीप जादा आता है, पहली अग्रभागपर खुजाल आती है, पेशाव नलीका मूं सूजकर लाल होजाता है, और चौडा कुछ जादा होजाता है, उसकूं दवाणेसे अंदरसे पीप निकलता है, पेशावकी हाजत वेर २ होती है, और उसकी धार पतली होतीहै, जलण वहोत होती है, चणख मारती है, दरद जादा होय तो बुखारभी आजाता है, पेशाव नलीभरी भई करडी डोरी जेसी होजाती है, और जब जोरमें आती है, तब वांकी तिरछी करते उसमें जादा दरद होता है, एकाध अठवाडिये पीछै प्रमेह शांत पडता है, तब जलण कम पडती है, रसी सुपेद रंगकी आती है, अथवा बंध होती है, तो किसीके पोतेमें दरद किसीके वद होजाती है, और पीछै प्रमेह पुराणा गिणे जाता है, पुराणा भये बाद वेर २ जोर करता है, अगर जो रोगी मनोमती होकर बे परवा रहे तो उससे मूत्रकृच्छ्र तथा मस्सेका रोग और इंद्री तथा वदनपर छोटी २ फुनसियें होती है, जिसकूं प्रमेह पीडिका कहते हैं,-(इलाज) सोजन तथा दरद होय तो गरम पाणीका सेक करणा अथवा कमरतक गरम जलमें बिठलाणा जुलावकी दवा देणी पेशावमें दाह होय तो पेशावकी खटासकूं तोडे एसा खार तथा पोटाश सोडा वगेरे पीणा अलशीकी चा पीणी जवकू उकाल उसका पाणी पीणा दूध पाणी मिलाकर पीणा सोडावोटर गोखरू ईसवगुल तुकमरीया बहुफली बेदाणा ये पेशाव लाणेवाली दवायोंका लुआव पीणा पेशाव खुलाश आवे एसा इलाज करणा (२) फलत्रिकादि क्वाथ (न० २१६ हलदीका चूर्ण डालकर पीणा (३) पाषाण-

भेद धाणा धमासा गोखरू करमाला आधा २ तोला सेर पाणीमें रातकूं भिगाकर दुसरे दिन २।४ वखतमें निराहार सब पाणी पी जाणा (४ चंद्रप्रभा) (नं० २४५) सर्वोत्तम इलाज है, पाणीके संग लेणा (५) बहुफलीका लुआब सोडा डालकर पीणा, गोखरूका मिश्री डालकर पीणा, (त्रिफलाका काथ सहत डालकर अथवा त्रिफला के सूला, मुनका काली, चावलोंके धोवणमें तीन घंटा भिगाकर वो जल पीणा ७ आंवले तथा गिलोयका पाणी सहत तथा हलदी डालकर पीणा ८ गोखरू कोनरूगूंद तथा सोडा डालकर पीणा दरेक ॥ तोला १ सेर जलमें भिगाकर वो जल तीन वेर पीणा नं० ६७४ तथा ७४८ वाली दवायें एसी दवायोंसे जब प्रमेहके सख्त लक्षण दब जाय तब नीचे लिखी दवाइयें तथा पिचकारीका उपयोग करणा-(९ नं० ६७५) (६७६) ६७७ के मिक्श्चरोंमेंसे कोई भी देणा एकसे फायदा नहीं होय तो दूसरा अजमाणा १० दवा पिचकारीकी पाणीका वजन २॥ रुपेभर १ त्रिफला अथवा पंच वल्कका काथ नं० १५७ का करके उसकी पिचकारी देणी २ लेडवोटर ३० से ४० बूंद १ औंस पाणीमें मिलाकर पिचकारी लेणी ३ शुगरलेड १ से ४ ग्रेण जसतके फूल १ से ४ ग्रेण ५ फिटकडी १ से ४ ग्रेण ६ नीला थोथा १ से ३ ग्रेण नाइट्रेट ओफ सिल्वर ॥ से १ ग्रेण ये दवायें अनुक्रमसे एक दुसरे सख्त है, इसवास्ते पहलीसे फायदा नहीं होय तो पीछे जादा मस्तकी पिचकारी लेणी पुराणे सोजनमें ये पिचकारी कामकी है, ११ प्रमेह जळणके संग पेशाबकी नलीमें दरद होता है, तब कपूर तथा अफीमकी गोली खाणेमें फायदा होता है, कपूर ६ ग्रेण अफीम १ ग्रेण और मिल सके तो उसमें बेला-डोना ॥ ग्रेण मिलाकर दो गोळी कर फजर सांझ लेणी १२ औरतोंको सुजाक प्रमेह होता है, लेकिन् मूत्र मार्ग जादा चोडा होणेके सबब पुरुष जितना दरद नहीं होता कथ पिचकारीके दवासे फायदा होता है, १३ पुराणे भये प्रमेहमें (नं० ६७९, ६८०, ६८१) की मिलावट अच्छी है, (१४ मूत्राश्मरी भई होय तो) (६८२, ६८३, तथा ६८४) इस नंबरका इलाज करणा.

(विशेष सूचना) प्रमेहके रोगीने खाणेका जितना परेज रखणा उसमें जादा विहारमें सावचतना रखणी. प्रमेह होणा ये खोटे कर्ममें प्रवीण अदमियोंकेवास्ते एक दण्ड ही मना है, जो मूर्ख नादान अदमी स्त्रीके विषयमें मग्न बुद्धिकू रोक नहीं सकता तो फिर जिसनी नगनी सुजाकवाले रोगीकी होती है, एसी किसी विरले रोगमें होती होगी इसमें औरत मर्द दोनोंकी जिंदगानी बिगड जाती है, बाद जो संतान पैदा होती है, तो उसकेभी ये रोग पीछा पैदा होता है, एक वेर ये रोग हुवा पीछे पथ्य नहीं रखनेवालेकी कमाई और सदाचारी धोखेसा अदमी इस रोगमें सबीतका हुई

होते हैं, एसा ये दुष्ट रोग अनेक रोगोंकी जड है–(प्रमेहके दुसरे उपद्रव) संक्षेपसे लिखते हैं.

(मूत्रकृच्छ्र) इंद्रीमें सूजन होणेसे पेशाव अटक २ बूंद २ आता है.

(२ खूनका गिरणा) किसी २ वखत पेशावसे गिरता है.

(३ वदका होणा) गरमीसे जेसे वद होती है तेसे प्रमेहसे भी होती है.

(४ आंडोंका चढणा) गोलीका सूजणा ५ आंख दुखणी ६ संधिवायु ७ नासूर ८ भगंदर ९ इत्यादि खून वीर्य और मल तीनोंको विगाडता है,

(देशी वैधक शास्त्रमुजब प्रमेहके नाम और इलाज) अंग्रेजीवाले कहते हैं, खाणे पीणेसें ये रोग नहीं होता ये दुष्ट मर्द दुष्ट स्त्रीके संसर्गसे होता है, टाकीभी इसीतरे होती है, एसा कहते हैं, लेकिन देशी वैधक शास्त्र एसा कहता है, वैठे रहणेसे वहोत नींदसे दही मांस खाणेवालोंकूं दूध नया अन्न नया पाणी गुड याने सब कफकारी वहोत पदार्थोंके जादा सेवनसे प्रमेह पैदा होता है, इस जगे जो कारण लिखे हैं, उसमें कफ दोषकूं प्रधानता दी है, याने कफका कोप होणेसे वदनमेंका रश खून मज्जा मेद वसा (चरवी) जल वगेरे प्रवाही पदार्थोंको विगाड वाहर निकालता है, इसीतरे कफके क्षय होणेसे पित्त और वायुकूं विगाड प्रमेहकूं पैदा करता है, इस अभिप्रायसे तो एसा मालम देता है, के शरीरमेंसे रस खून जल चरवी मेद वगेरे धातुओं विगडकर पेशावके रस्ते झरता है, और झरणा एसा अर्थ मेह शब्दका होता है. प्रका अर्थ वहोत करके, मेह याने झरणा ...पसे जो प्रमेह होता है, उसमें अंदरका एसा कोईकारण होता नहीं चेपके सबब मूत्र ...लीमें सोजा होता है, पीछे उसमें जखम पडके पीप निकलता है, देशी शास्त्र इसतरे ...हकी २० जाति गिणाता है,

(१ उदकप्रमेह) अच्छा वहोत ठढा पाणी जेसा कुछ मेला चिकणा पेशाव उतरे.

(२ इक्षुप्रमेह)–गन्नेके रस जेसा मीठा और वहोत पेशाव आता है ।

(३ सांद्रप्रमेह)–पेशाव रातवासी रखणेसे फजरमें जाडा पडजाय ।

(४ सुरामेह)–सराप जैसा और रातवाशी रखणेसे ऊपर पतला नीचे जाडा ।

(५ पिष्टमेह)–आटेके धोवण जेसा वहोत सुपेद पेशाव करते रूंखडे हो ।

(६ शुक्रमेह)–वीर्य जैसा अथवा वीर्य मिला पेशाव उतरे ।

(७ सिक्तामेह)–रेती जैसी महीन ओर अलग २ कणे पेशावमें पडे ।

(८ शीतमेह)–वेर २ ठढा मीठा पेशाव उतरे ।

(९ शनेमेह)–धीरे २ मद वेगसे पेशाव उतरे ।

(१० लालामेह)–तंतू जैसे और चीकणा पेशाव उतरे ।

(११ क्षारमेह)–खारे जल जैसा रग रसवो खाद और स्पर्शवाला ।

(१२ नीलमेह)—नीलके जैसा पेशाब उतरे ।
(१३ कालमेह)—सुरमे जैसा काला पेशाब ऊतरता है ।
(१४ हारिद्रमेह)—हलदी जैसा जलता भया और तेज पेशाब उतरे ।
(१५ मांजिष्टमेह)—कच्चे पदार्थका गंधवाला मजीठ जैसा लाल पेशाब ।
(१६ रक्तमेह)—कचे पदार्थ जैसा गंधवाला गरम खारा खून जैसा पेशाब ।
(१७ वसामेह)—चरबी जैसा रंग चरबी मिला पेशाब उतरे ।
(१८ मज्जामेह)—मज्जा मिला वैसाही रंग पेशाब उतरे ।
(१९ हस्तिमेह)—हाथीके मद जैसा विना वेगका पेशाब उतरे ।
(२० क्षौद्रमेह)—तुरा मीठा रूखा पेशाब उतरे सो (मधुमेह) ।

इण वीसोंमेंसें पहिले लिखे १० तरेके प्रमेह कफसे पैदा भये होते हैं उसके बाद ६ छव पित्तसे पैदा भये आ खिरके ४ वादीका है, (कफ प्रमेह साध्य) पित्तजन्य कष्ट साध्य (मुश्किलसे) मिटणेवाला वादीका असाध्य है ।

(इलाज)—सामान्य इलाज इहां लिखते हैं—(१ कफ प्रमेहमें)—हरडे कायफल मोथ लोद इनोंका काथ सहत डालकर २ हलदी दारूहलदी तगर वायविडंग सहत डालकर ३ देवदारू कूठ अगर चंदन सहत डालकर ४ दारू हलदी इरणी हरडे बहेडा आंवला वच सहत डालकर ५ वच खसवाला नेत्रवाला हरडे गिलोय काथ सहत डाल- कर (६ पित्त प्रमेहका इलाज)—वाला लोद आसोंदरो तथा चंदनका काथ सहत डालकर ७ वाला मोथ हरडे आंवले सहत डालकर ८ पटोल नींब गिलोय आंवले सहत डालकर ९ लोद, आंबेकी छाल, दारूहलदी, धावडीके फूल, काथ सहत डालकर १० पीपल बड दरख्तकी छाल काली पाट चांवल नेतरवालेका काथ सहत डालकर ११ [illegible] [illegible] आसोंदरा काथ सहत डाल (सर्व प्रमेहोंपर)—आंवले तथा गिलोय अ- थवा उकालीमें सहत डालकर और हलदीका चूर्ण डालकर पिलाणा १२ त्रिफलाके काथमें सहत डालकर शिलाजीत वो नहीं होय तो सोरा डालकर पीणा १३ फल गि- लोयका रस सहत डालकर पीणा १४ आंवलेका रस हलदीका चूर्ण सहत डालकर १५ [illegible] निकाले [illegible] गेहूं [illegible] पीस इसमें थोडी मिश्री डालकर पीणा १६ [illegible] के [illegible] मिश्री डालकर पीणा १७ वायविडंग हलदी मोलेठी सूंठ गोखरूका काथ सहत डाल १८ शुद्ध गंधक गुड मिलाकर खिलाणा उपर दूध पीणा १९ [illegible] [illegible] पीस घी डालकर पीना २० निर्मलीके बीज छाछमें पीस सहत डाल- कर पीना—(पथ्य) [illegible] लंघन वमन जुलाब [illegible] जव [illegible] चावल मोठ [illegible] [illegible] [illegible] पुराणा सहत परवल [illegible] [illegible] [illegible] तथा [illegible] पदार्थ [illegible] पथ्य है—(कुपथ्य)

पेशावकूं रोकणा बीडी पीणी पसीना निकालणा दिनकी नींद नया अन्न दही वरसातका पाणी मिष्टान्न मैथुन नयासराप तेल दूध घी गुड ऊख पुष्ट पदार्थ सडे खारा खट्टा ये सब पदार्थ कुपथ्य है ।

गरमी टाकी उपदंश.

(सेन्कर-सीफीलीस.)

टाकी येभी प्रमेहकी एक वडी वहिन है और पापकृत्यकी वलाय और बुरे कर्मकी प्रत्यक्ष सजा है, ये वडा दुखदाई नाश करणेवाला दुनियामें इज्जत खोणेवाला महादुष्ट रोग है, इस रोगके मूत्राशयसे कुछ तालूक नहीं है, तोभी मूत्र मार्गके ऊपर संबंध रखणेवाला होणेसे इस किरणमें ये रोग दाखल किया है, निश्चै करके देखा जाय तो जैसे ये रोग चमडीका है तेसें ये रोग शरीरके सब संधोंपर उसका असर पहोंचता है, इस वास्ते शरीरके सामान्य रोगोके साथ जादा संवंध रखता है, ये रोग चेपी है, इसका जहर एसा खराब है, सो एक छोटीसी टाकीसे फैलाव करके सब बदनमें फेलाव करता है, एक वेर खूनमें प्रवेश करे पीछे जड जाणी वहोतही मुस्कल है ।

(कारण)–दुष्ट औरत मर्दोंके संवंधसे आपसमें लगा भया चेप ये गरमीके रोगका मुख्य कारण है, मरदकी औरतकूं औरतकी मरदकूं गरमी लगती है (शिक्षाचारकल्पशास्त्र जैन) स्त्री पुरुषोकी पवित्रता और सदाचारमें वहोतसी तारीफ कर उसका वहोत अछा फल दोनो भव आश्री लिखा है, और कुशील सेवणेपर वडा भारी दोष और अपवाद लिखा है, सो सब सच्च है, इसीवास्ते अनादि व्यवहारभी एसाही चलता आया सो युगलिक लोकोंका स्त्री मर्दका जोडा उसीसें मैथुन सेवणा और देखतेभी हैं, एक औरत मर्द संतोषवृत्तिसें जो संसर्ग करते हैं, उनोंके ये दुष्ट रोग कभी नहीं होता फेर एसाभी है पती एक और स्त्री अनेक है लेकिन् वो जब स्त्रियां एक पती टालके अन्य पुरुषसे गमन नही करती उनोका पती उन औरतोकेटाल अन्यसे गमन नहीं करता तोभी रोग नहीं होता राजा लोकोंकीतरे, इसीवास्ते जैन शास्त्रोंमें जगे २ ग्रहस्थीकूं स्वदारा संतोषी लिखा है, लेकिन् वहोत स्त्रियों रखणेवाले कृष्ण माहाराजकीतरे वेपरवा होते है, वेसा अनुराग और प्रेमशशार सुखकू कम साधणेवाला और कदाग्रहरूप फास होता है, एक स्त्रीका प्रेम और सुख मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम रघुवर जेसा होता है बुद्धिवान समझेंगे, अब जो स्वच्छंदी लोक धर्मशास्त्रका हुकम और नीति मर्यादामें नहीं रहते उनोकों तो पहली इहांपर एसी सजा मिलती है, सो इहांतकके, मावापोके गरमी होती है, तो उनके बचेभी गरमी रोगका असर लेके जन्म लेते हैं, वहोतसे तो मरही जाते हैं, अगर बचेकूं दूध पिलाणेवाली धायके ये रोग होता है तो बचेके गरमीका असर लग जाता है, कहांतक लिखे योनिलिंग गुदा इनोमें मेल जमणेसेभी टाकी जखम हो जाता

(१२ नीलमेह)—नीलके जैसा पेशाब उतरे ।

(१३ कालमेह)—सुरमे जैसा काला पेशाब ऊतरता है ।

(१४ हारिद्रमेह)—हलदी जैसा जलता भया और तेज पेशाब उतरे ।

(१५ मांजिष्टमेह)—कच्चे पदार्थका गंधवाला मजीठ जैसा लाल पेशाब ।

(१६ रक्तमेह)—कच्चे पदार्थ जैसा गंधवाला गरम खारा खून जैसा पेशाब ।

(१७ वसामेह)—चरबी जैसा रंग चरबी मिला पेशाब उतरे ।

(१८ मज्जामेह)—मज्जा मिला वेसाही रंग पेशाब उतरे ।

(१९ हस्तिमेह)—हाथीके मद जैसा विना वेगका पेशाब उतरे ।

(२० क्षौद्रमेह)—तुरा मीठा रूखा पेशाब उतरे सो (मधुमेह) ।

इण वीसोंमेंसें पहिले लिखे १० तरेके प्रमेह कफसे पैदा भये होते हैं उसके बाद ६ छ्न पित्तसे पैदा भये आखिरके ४ वादीका है, (कफ प्रमेह साध्य) पित्तजन्य कष्ट-साध्य (मुस्किलसे) मिटणेवाला वादीका असाध्य है ।

(इलाज)—सामान्य इलाज इहां लिखते हैं—(१ कफ प्रमेहमें)—हरडे कायफल मोथ लोद इनोंका काथ सहत डालकर २ हलदी दारूहलदी तगर वायविडंग सहत डालकर ३ देवदारू कूठ अगर चंदन सहत डालकर ४ दारू हलदी इरणी हरडे बहेडा आंवला वच सहत डालकर ५ वच खसवाला नेत्रवाला हरडे गिलोय काथ सहत डाल-कर (६ पित्त प्रमेहका इलाज)—वाला लोद आसोंदरो तथा चंदनका काथ सहत डालकर ७ वाला मोथ हरडे आंवले सहत डालकर ८ पटोल नींब गिलोय आंवले सहत डालकर ९ लोद, आंबेकी छाल, दारूहलदी, धावडीके फूल, काथ सहत डालकर १० पीपल वड दरख्तकी छाल काली पाट चांवल नेतरवालेका काथ सहत डालकर ११ सोंन धावा आसोंदरा काथ सहत डाल (सर्व प्रमेहोंपर)—आंवले तथा गिलोय अ-थवा उकालीमें सहत डालकर और हलदीका चूर्ण डालकर पिलाणा १२ त्रिफलाके काथमें सहत डालकर शिलाजीत वो नहीं होय तो सोरा डालकर पीणा १३ फक्त गि-लोयका रस सहत डालकर पीणा १४ आंवलेका रस हलदीका चूर्ण सहत डालकर १५ [illegible] भिगोके [illegible] फजरमें पीस इसमें थोडी मिश्री डालकर पीणा १६ [illegible] के [illegible] मिश्री डालकर पीणा १७ वायविडंग हलदी मोलेठी सूंठ [illegible]का काथ सहत डाल १८ शुद्ध [illegible] गुड मिलाकर खिलाणा ऊपर दूध पीणा १९ नींबके [illegible] पीस घी डालकर पीणा २० निर्मलीके बीज काथमें पीस सहत डाल-कर [illegible]—(पथ्य) पुराणे [illegible] वमन जुलाब [illegible] साठी चावल [illegible] [illegible] सहत परवल [illegible] [illegible] तथा [illegible] पदार्थ [illegible] पथ्य है—([illegible])

(स्थानिक चांदीका बाहरका इलाज इसमुजब करणा.)

(१ प्रक्षालन)–धोणेका इलाज १ पंच वल्कल (नं० १५७) का उकाला कर उस पाणीसे जखम वेर २ धोणा २ त्रिफलेका क्वाथ कर उससे या जल भांगरेके रससे टाकीकूं धोणा ३ रस कपूरका पाणी करके धोणा, (लेप) मलम–१ गोपीचंदन नीलाथोथा जलमें पीस कपडेपर लगाकर पट्टी लगाणी २ रस कपूर, सुपेद कथा, मुरदारसींग शंखजीरा मांजूफल तथा सोपारीकी राख अथवा त्रिफलाकी राखकूं घीमे खरलकर वो मलम चांदीपर चुपडणा ३ वावची १ गंधा विरोजा १ गूगल १ राल १ नीलाथोथा १ हींगलू १ पारा १ घी ९ और तिलका तेल ९ इन सर्वोंकों खरलमें डाल कडवे नीमके जाडे लक्कडसे वारे घंटेतक घोटणा ये मलमका अच्छा इलाज है, ४ फिटकडी सोनागेरू नीलाथोथा हीराकसी, सींधा निमक, लोद रशोत हरताल मनसिल तथा इलायची इनोका चूर्ण सहतमें मिलाकर लेप करणा ५ हरडे वहेडा आंवलाकी राख करके सींधानिमक सहतमें मिलाकर लेप करणा ६ रशोत इकेली अथवा हरडेका चूर्ण सहतमे मिलाकर लेप करणा ७ कणेरकी जड पीस लेप करणा ८ दशांग लेप पाणीमें अथवा घीमें मिलाकर लेप करणा हींगलू नीलाथोथा गूगल एकेक तोला वावची मस्तगी गूंद दो दो तोला राल ४ तोला तेल ७ तोला मलम करणा, भुकणी १ नीलेथोथेका चूर्ण अथवा इसके संग कथा मिलाकर दावणा २ कत्था तथा शंखजीरेकी भुकणी दवाणी ३ पंच वल्कलकी महीन भुकणी दवाणी ४ त्रिफलेकी राख नीलाथोथा मिलाकर दवाणा, (अंग्रेजी इलाज) टांकी मिटाणे अंग्रेजी क्रम वहोत अछा है, चांदीकूं जलाणेवांस्ते पहली १ नाइट्रिक एसिडके दो वूंद सिरप चांदीपरही लगाणा अथवा एसिडमें काडीसे रूईलपेट भिगाकर लगाणा ये एसिड सादी चमडीपर नहीं लगणे पावे उसकी संभाल रखणी जलण होय तो उस पर पाणीकी धार देणी जादा एसिड धुप जाता है, एसिड नहीं होय तो कास्टिक लगाणा उससे टाकी जव जल जाय तो उसपर पोल्टिस मारकर मुरदार मांश निकाल डालणा तव चांदी साफ होती है, लाल जमीन जव दिखणे लगे तव टेनिक एसिड अथवा झींक्सल्फास कम्पाउन्ड टींकचर लवंडर तथा पाणी उनमान मुजव मिलाकर पोता धरणा २ दुसरा इलाज, दो तीन दिन नीलाथोथा दावणा पीछे चांदीकूं साफ कर सादे मलमकी चत्ती लगाणी, अथवा व्लेकवोश नं० ५४३ मे लींट अथवा नरम कपडा भिगाकर चांदीपर पोता धरणा, ३ चांदीके ऊपरका पीप जैसा, सुपेद थर निकले विगर जखम भरी जता नहीं (४ आयडोफोर्म)–चांदीका सडा निकालकर चांदीकूं भर देती है, ऊपरकी चमडीके नीचे टांकी ढक गई होय तो व्लेकलोशनकी पिचकारी लगाणी नीलाथोथा और झिककी पिचकारी मारणी ।

(लक्षण) पुरुष तथा औरतोंका योनिलिंग छिल जाणेसें और चेप लग जाणेसें इस जगे फुनसियें होती है, और वो फुटकर जखम गिरता है, ये फुनसियें संयोग भये पीछे जलदी अथवा केइदिनोंबाद दिखाई देती है, जखमका जहर बदनमें फैलता है, तब उपदंशका रूप जाहिर होता है, तब लोक गरमी फूट निकली एसा कहते हैं, उससे अनेक विकार होता है, विस्फोटक बद जखम चीरे २ गांठे संधिवाय फिरंगवाय हिस्टीरिआ उन्माद वगेरे) इस टाकीकी बोतजात है, सो लिखते हैं ।

(१ नरम चांदी)–छिल जाणेसें तथा चेप लगणेसे होती है, ये जखम जादा करके इंद्रीके पिछले तरफ अथवा ऊपरके तरफ अथवा घुंगटेकी चमडीमें पडती है, टाकी दालके दाणे जेसी गोल होती है, और दाबकर देखणेसे उसकी कोर नरम मालम होती है, एक टाकीके चेपसे दुसरी टाकी पडती है, किसी वखत नलीके अंदर जखम पडता है, जिसका घुंघटा सुपारीपर चढा रहता है, और जखम पडके सोजन आती है तो घूंघटा ऊपर नहीं चढ सकता अर्थात नीचे नहीं उतरता तब अंदर रोज साफ नहीं होनेसे जखम बढते जाता है, बदभी हो जाती है, (२ करडी चांदी) ये जखम चेप लगे पीछे लगभग तीन अठवाडे पीछे सरू होता है, पहली फुनसी अथवा चमडीपर छोटा चीरा पडता है, वो बढकर गोल जखम होता है, उसमेंसे पतला पीप आता है, पीछे थोडी मुद्दतमें टाकीके नीचे सख्त कंकर जमता है, और दो अंगलीसे दाबकर देखणेमें नरम हड्डी जेसी करडी मालम देती है, टांकीकी कोर उपसी भई मालम और जाडी हो जाती है, जिससे चांदी दिखणेमें छोटे प्याले जैसी होती है, जांघकी जडमें बद होती है, वो बद दबाणेसे दुखती नहीं और आपसे पकतीभी नहीं इस जातकी चांदीमें बहोत करके एकही होती है, और उसका पीप किसीसाजे आदमीके बदनमें दाखिल होय तो उसकेभी ये रोग हो जाता है, इसकूं चेपी जखम कहते हैं ([illegible] चांदी) जखमकी कोर एकसदृश गोल नहीं होती लेकिन [illegible] [illegible] टेडी होती है, बदबोवाला पतला पीप आसपासकी चमडी छिलते जाय [illegible] तो [illegible] फूटे हुए दरद बुखार नींद नहीं आवे [illegible] बढती जाय बद [illegible] पकती है, अंदर बहुत थोडा पडता है ।

([illegible] जखम)–पहली चमडी सूजकर लाल होती है, बाद वो लाल चमडी [illegible] है, [illegible] चमडीका भाग मुरदार होकर अलग गिरता है, रोगीको [illegible] [illegible] इस जखममें बद नहीं होती [illegible] [illegible] पहली हालत नाम स्थापन करी और इस [illegible] [illegible] जो विकार होते हैं वो दूसरी हालत अथवा [illegible] [illegible] ।

(स्थानिक चांदीका बाहरका इलाज इसमुजब करणा.)

(१ प्रक्षालन)—धोणेका इलाज १ पंच वल्कल (नं० १५७) का उकाला कर उस पाणीसे जखम वेर २ धोणा २ त्रिफलेका काथ कर उससे या जल भांगरेके रससे टाकीकूं धोणा ३ रस कपूरका पाणी करके धोणा, (लेप) मलम—१ गोपीचंदन नीलाथोथा जलमें पीस कपडेपर लगाकर पट्टी लगाणी २ रस कपूर, सुपेद कथा, मुरदारसींग शंखजीरा मांजूफल तथा सोपारीकी राख अथवा त्रिफलाकी राखकूं घीमे खरलकर वो मलम चांदीपर चुपडणा ३ वावची १ गंधा विरोजा १ गूगल १ राल १ नीलाथोथा १ हींगलू १ पारा १ घी ९ और तिलका तेल ९ इन सवोंकों खरलमें डाल कडवे नीमके जाडे लक्कडसे बारे घंटेतक घोटणा ये मलमका अच्छा इलाज है, ४ फिटकडी सोनागेरू नीलाथोथा हीराकसी, सींधा निमक, लोद रशोत हरताल मनसिल तथा इलायची इनोका चूर्ण सहतमें मिलाकर लेप करणा ५ हरहे बहेडा आंवलाकी राख करके सींधानिमक सहतमें मिलाकर लेप करणा ६ रशोत इकेली अथवा हरडेका चूर्ण सहतमे मिलाकर लेप करणा ७ कणेरकी जड पीस लेप करणा ८ दशांग लेप पाणीमें अथवा घीमें मिलाकर लेप करणा हींगलू नीलाथोथा गूगल एकेक तोला वावची मस्तगी गूद दो दो तोला राल ४ तोला तेल ७ तोला मलम करणा, भुकणी १ नीलेथोथेका चूर्ण अथवा इसके संग कथा मिलाकर दावणा २ कत्था तथा शंखजीरेकी भुकणी दवाणी ३ पंच वल्कलकी महीन भुकणी दवाणी ४ त्रिफलेकी राख नीलाथोथा मिलाकर दवाणा, (अंग्रेजी इलाज) टांकी मिटाणे अंग्रेजी क्रम वहोत अछा है, चांदीकूं जलाणेवास्ते पहली १ नाइट्रिक एसिडके दो बूंद सिरप चांदीपरही लगाणा अथवा एसिडमें काडीसे रूईलपेट भिगाकर लगाणा ये एसिड सादी चमडीपर नहीं लगणे पावे उसकी संभाल रखणी जलण होय तो उस पर पाणीकी धार देणी जादा एसिड धुप जाता है, एसिड नही होय तो कास्टिक लगाणा उससे टाकी जब जल जाय तो उसपर पोल्टिस मारकर मुरदार मांश निकाल डालणा तब चांदी साफ होती है, लाल जमीन जब दिखणे लगे तब टेनिक एसिड अथवा झींक्सल्फास कम्पाउन्ड टीकचर लवडर तथा पाणी उनमान मुजब मिलाकर पोता धरणा २ दुसरा इलाज, दो तीन दिन नीलाथोथा दाबणा पीछे चांदीकूं साफ कर सादे मलमकी चत्ती लगाणी, अथवा ब्लेकवोश नं० ५४३ मे लींट अथवा नरम कपडा भिगाकर चांदीपर पोता धरणा, ३ चांदीके ऊपरका पीप जैसा, सुपेद थर निकले विगर जखम भरी जता नही (४ आयडोफोर्म)—चांदीका सडा निकालकर चांदीकूं भर देती है, ऊपरकी चमडीके नीचे टांकी ढक गई होय तो ब्लेकलोशनकी पिचकारी लगाणी नीलाथोथा ओर झिककी पिचकारी मारणी ।

शारीरक उपदंश गरमीकी दुसरी हालत ।

टांकीकी ऊपर जुदी २ जात लिखी है, इलाजभी लिखे हैं, ये टांकी तथा जादा
करके करडी टांकी शरीरमें एकतरेका जहर करदेती है, वो कितनेक दिनोंसे पुराणे रूपसे
दिखाई देती है, जसमकी पहली हालत शरीरके एकही ठिकाणेसे संबंध रखती है, और
दुसरी हालत सब शरीरसे संबंध रखती है, पहली पडी भई चांदी जादा तर भरीज
जाती है, और रोगी जाणता है में आराम होगया लेकिन एसा नहीं जाणताके दुस्मन
रोग गुप्तपणे अंदर घर करके रहाभया है, जब रोगी गाफल होकर खाणा पीणे आदि
इंद्रियोंके स्वादमें लयलीन होता है, तो अकस्मात् सब शरीरमें ये दुस्मन दिखाई देता
है, गलेमें सांधोंमे नाकमें और हड्डियोंमें किसीकूं एकतरेसे किसीकुं दुसरीतरेसें एसे तरे
२ के चैन करता है, पहली टांकीके जोर मुजब ये पिछली गरमी कमती या जादा जोर
करती है, शरीरके सुंआले भागोमें जादा करके गलेकी बारी तथा नाककूं जलदी पक-
डती है, गलेमें सोजा मूंमे गरमी तालवेमें छेद पडे नाककी हड्डी सडे और वो चपटा
होकर बेठ जाय अथवा टेढा होजाय नाकके अंदर छोड़े तथा पीप गिरे सब बदनमें
फोडे फुटकर निकले सांधे पकडे जाय मांसमें गांठे पडजाय ये गांठे फूटकर उसमें
छेद तथा चीरे २ पडे भगंदरका भारी रोग होजाय किसी २ कूं वातरक्तका भी
रोग होजाय.

(उपदंशकी दुसरी हालतका सामान्य इलाज लिखते हैं.)

(१ पारा शुद्ध ये गरमीका सर्वोपर इलाज है,) क्योंके अनंत गुण पारेमें शाम
हार कहते हैं, लेकिन ये पारा अनुभवी विद्वान विचक्षण और निर्लोभी वैद्यके हाथ [illegible]
दुसरे [illegible] मूर्खोंके हाथमे खाणेमे वहोतही नुकशान करता है, क्योंके पारेकूं और
नेके आठ संस्कार दवामें [illegible] बाचत है, उसमें वहोत युक्ति हुसियारी और अनुभ
और [illegible] पडता है, तब वो निडरपणे बरते जासकता है, रसकपूर हींगळु
पारेकी मुख्य चीजों है, और चंद्रोदय रससिंदूर पर्पटी वगेरे अनेक उत्तम दवायें पारेमें
बनती है. वो के बुढापेका और मृत्युका दावा नहीं लगणे देती अंग्रेजीमेंभी [illegible]
[illegible] अनेक सब पारेकी कुदरतमें बनाये गये हैं. क्यालोमेल वगेरे पारेकी दवायों
[illegible] लेकिन कितनेक डाक्टर विद्वान इसपे डरते हैं. क्योंके ये दवा बिलकुल निर
नहीं है. इसलिये २ अंग्रेजीमें दुसरे नंबरकी दवा पोटाश आयोडाइड है. वो गरमीकूं
[illegible] है. अंग्रेजीमें गरमीवालोंको ये एकही दवा अच्छी है,) ३ [illegible]
[illegible] नं० २९२) इसमें गूगल अथवा गूगलकी बनावटो कोई [illegible]
[illegible] सुधारा करता है, (४ चोपचीनी) गरमीकी पुरा
[illegible] है, वो चूर्ण नं० २३५ तथा पाक नं० २५९ में लिख

जाता है, (५ गिलोय) शोधक है, इसवास्ते गरमीमें वहोत फायदेवंद है, उकाली गिलोयकी करके एरंडी तेल मिलाकर देणेसें दोपका शोधन होजाता है, (६ गूगल) शोधक दवा है, इसकी सर्व वनावटै खूनकूं शुद्ध करती है, त्रिफला, गूगल, किशोर, सिहनाद गूगल, मंजिष्ठादि क्वाथ संग या गिलोयके क्वाथ संग लेणेसे ७ (नं० ६६७ से ६७३ तकका अंग्रेजी इलाजभी अच्छा है.

(वदका इलाज) १ नींवके पत्ते थोडे पाणीमें पीस उसमें हलदी तथा घी डाल गरम करके पोटिस वांधणी २ दोषघ्न लेप (नं० ३११) वांधणा ३ गूलरका दूध कपडेके लगाकर पट्टी चपकाणा या सीसेकी वट्टी वांधणेसे अंदरकी अंदर विखर जाती है, ४ पुराणे गुडका पाणीकर अंगारपर चढाणा उसमे भंगकूं पीस चुरका तेजाणा जव गाढा होजाय तो वांध देणा ५ लसण मिलावा सहजणेकी छाल जलमे पीस वट्टी धरणी ६ पारेका मलम उसकी पट्टी मारणी ७ जोका लगाणी ८ गरम पाणीका शेक करणा ९ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो वखत चोपडणा.

(विशेष सूचना) गरमीके रोगमें आहार विहारकी सावधानीपर रोग मिटणेपर आधार है, गरमीका रोग वेर २ उथला मारता है, खाणेपीणेकी जरा गफलत होणेसे फोरन दिखाई देता है, ये रोगका एसा दुष्ट जहर है, सो जड जाणाही मुस्कल है, लेकिन् परेजमें चलणेवाला इस रोगकूं कितनेक दरजे जडसे निकाल सकता है, ऊपर लिखी सव दवायें तुरत फायदा नहीं करसकती वहोत दिनोंतक सेवन करणेसे धीरज रखणेसें परेजके साथ एकवर्ष भरके साधनसे आराम होता है, अंग्रेजी विद्वानोंके मतसे अनंतमूलका अर्क (परेलासालसा) उसवा दो महीना दूधके साथ गेहू चावल वूरा सीरा खाणेसे आराम होता है, निमक मिरच खट्टे खारेसे वचणा यूनानीवाले उसवेका अर्क इसी परेजसे दिलाते हैं, एक वर्ष लेणेसे सव रोग मिटकर वदन लाल वूंद होजाता है, देशीमे चोपचीणी या गूगलका साधन करणेसे ये रोग निर्मूल होजाता है, वसत शरदमें जुलाव लेणा ठढ कालेमें सतावर सुपेद मूसली सालम वगेरेका पाक खाणा निरोगी एक स्त्रीसे संवंध रखणा) इस ग्रथका पथ्यापथ्य आहारविहारके प्रकरणमें दिया भया हितकारक आहारविहार पथ्य है, वाकी सव कुपथ्य है.

किरण ६ ठी.

मगजके साथ संवंध रखणेके रोग.

एपीलेप्सी.

मगजके ततुओंके साथ संवंध रखणेवाले रोगोंका इस किरणमे समावेश किया भया है, लकवा पक्षाघात ऊरुस्तभ धनुर्वात आक्षेपवायु ये प्रगट रोग है, और गार्यवधक

शारीरक उपदंश गरमीकी दुसरी हालत ।

टांकीकी ऊपर जुदी २ जात लिखी है, इलाजभी लिखे हैं, ये टांकी तथा जादा करके करडी टांकी शरीरमें एकतरेका जहर करदेती है, वो कितनेक दिनोंसे पुराणे रूपसे दिखाई देती है, जखमकी पहली हालत शरीरके एकही ठिकाणेसे संबंध रखती है, ओर दुसरी हालत सब शरीरसे संबंध रखती है, पहली पडी गई चांदी जादा तर भरीज जाती है, ओर रोगी जाणता है में आराम होगया लेकिन एसा नहीं जाणताके दुसमन रोग गुप्तपणे अंदर घर करके रहाभया है, जब रोगी गाफल होकर खाणा पीणे आदि इंद्रियोंके स्वादमें लयलीन होता है, तो अकस्मात् सब शरीरमें ये दुसमन दिखाई देता है, गलेमें सांधोंमे नाकमें ओर हड्डियोंमें किसीकूं एकतरेसे किसीकुं दुसरीतरेसें एसे तरे २ के चैन करता है, पहली टांकीके जोर मुजब ये पिछली गरमी कमती या जादा जोर करती है, शरीरके सुंआले भागोमें जादा करके गलेकी वारी तथा नाककूं जलदी पकडती है, गलेमें सोजा मूंमे गरमी तालवेमें छेद पडे नाककी हड्डी सडे ओर वो चपटा होकर बैठ जाय अथवा टेढा होजाय नाकके अंदर छोड़े तथा पीप गिरें सब बदनमें फोडे फुटकर निकले सांधे पकडे जाय मांसमें गांठे पडजाय ये गांठे फूटकर उसमें छेद तथा चीरे २ पडे भगंदरका भारी रोग होजाय किसी २ कूं वातरक्तका भी रोग होजाय.

(उपदंशकी दुसरी हालतका सामान्य इलाज लिखते हैं.)

(१ पारा शुद्ध ये गरमीका सर्वोपर इलाज है,) क्योंके अनंत गुण पारेमें शास्त्रकार कहते हैं, लेकिन ये पारा अनुभवी विद्वान विचक्षण ओर निर्लोभी वैद्यके हाथ विगर दुसरे लोभग्रस्त मूर्खोंके हाथसे खाणेसे बहोतही नुकशान करता है, क्योंके पारेकूं शोधनके आठ संस्कार दवाओंसे करणे आवत है, उसमें बहोत युक्ति हुसियारी ओर अनुभव ओर [illegible] पडता है, तब वो निडरपणे वरते जासकता है, रसकपूर हींगलु [illegible] मुख्य चीजों है, ओर चंद्रोदय रससिंदूर पर्पटी वगेरे अनेक उत्तम दवाओं पारेसे बनती है, जो के पुष्टीका ओर मृत्युका दाता नहीं लगणे देती अंग्रेजोंमेभी पारेसे [illegible] वगेरे अनेक ये पारेकी कुदरतसे बणाये गये हैं. क्यालोमल वगेरे पारेकी दवाओं [illegible] है. लेकिन कितनेक डाक्तर विद्वान इसमें डरते हैं. क्योंकि ये दवा बिलकुल [illegible] नहीं है. इसवास्ते २ अंग्रेजोंमें दुसरे नंबरकी दवा पोटास आयोडाइड है जो गरमीके [illegible] करती है. अंग्रेजोंने गरमीकेवास्ते ये एकही दवा अच्छी है,) ३ शुद्धगंधकआदि [illegible] (पु० २२१) उसमें गुगल अथवा गुगलकी बनावटी कई किसमकी दवा [illegible] करणेसे [illegible] फायदा करती है, (४ चोपचीनी) गरमीकी पुरानी [illegible] प्रसिद्ध है, जो चूर्ण नं० २३५ तथा पाक नं० २०१ में लिखे

जाता है, (५ गिलोय) शोधक है, इसवास्ते गरमीमें वहोत फायदेवंद है, उकाली गिलोयकी करके एरंडी तेल मिलाकर देणेसें दोषका शोधन होजाता है, (६ गूगल) शोधक दवा है, इसकी सर्व वनावटै खूनकूं शुद्ध करती है, त्रिफला, गूगल, किशोर, सिंहनाद गूगल, मंजिष्ठादि क्वाथ संग या गिलोयके क्वाथ संग लेणेसे ७ (नं० ६६७ से ६७२ तकका अंग्रेजी इलाजभी अच्छा है.

(वदका इलाज) १ नींवके पत्ते थोडे पाणीमें पीस उसमें हलदी तथा घी डाल गरम करके पोटिस वांधणी २ दोषघ्न लेप (न० ३११) वांधणा ३ गूलरका दूध कपडेके लगाकर पट्टी चपकाणा या सीसेकी वट्टी वांधणेसे अंदरकी अदर विखर जाती है, ४ पुराणे गुडका पाणीकर अंगारपर चढाणा उसमे भंगकूं पीस वुरका तेजाणा जव गाढा होजाय तो वांध देणा ५ लसण मिलावा सहजणेकी छाल जलमे पीस वट्टी धरणी ६ पारेका मल्हम उसकी पट्टी मारणी ७ जोका लगाणी ८ गरम पाणीका शेक करणा ९ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो वखत चोपडणा.

(विशेष सूचना) गरमीके रोगमें आहार विहारकी सावधानीपर रोग मिटणेपर आधार है, गरमीका रोग वेर २ उथला मारता है, खाणेपीणेकी जरा गफलत होणेसे फोरन दिखाई देता है, ये रोगका एसा दुष्ट जहर है, सो जड जाणाही मुस्कल है, लेकिन् परेजमें चलणेवाला इस रोगकूं कितनेक दरजे जडसे निकाल सकता है, ऊपर लिखी सव दवायें तुरत फायदा नहीं करसकती वहोत दिनोंतक सेवन करणेसे धीरज रखणेसें परेजके साथ एकवर्ष भरके साधनसे आराम होता है, अंग्रेजी विद्वानोंके मतसे अनंतमूलका अर्क (परेलासालसा) उसवा दो महीना दूधके साथ गेहूं चावल वूरा सीरा खाणेसे आराम होता है, निमक मिरच खट्टे खारेसे वचणा यूनानीवाले उसवेका अर्क इसी परेजसे दिलाते हैं, एक वर्ष लेणेसे सव रोग मिटकर वदन लाल वूंद होजाता है, देशीमे चोपचीणी या गूगलका साधन करणेसे ये रोग निर्मूल होजाता है, वसंत शरदमें जुलाव लेणा ठढ कालेमें सतावर सुपेद मूसली सालम वगेरेका पाक खाणा निरोगी एक स्त्रीसे संवंध रखणा) इस ग्रंथका पथ्यापथ्य आहारविहारके प्रकरणमें दिया भया हितकारक आहारविहार पथ्य है, वाकी सव कुपथ्य है.

किरण ६ ठी.

मगजके साथ संवंध रखणेके रोग.

एपोप्लेक्षी.

मगजके तंतुओके साथ संवंध रखणेवाले रोगोंका इस किरणमें समावेश किया भया है, लकवा पक्षाघात ऊरुस्तंभ धनुर्वात आक्षेपवायु ये प्रगट रोग हैं, और आर्दित

धिमें इन रोगोंकू वातव्याधिमें समावेश किया है, लेकिन् ये सब रोग मगजके थ संबंध धराते हैं इसवास्ते इस किरणमें दाखिल किया है, वादीके संग नहीं ा गया.

(कारण) मगजपर एकाएक खून चढ जाणेसे ये रोग होता है. खून चढणेके तन कारण है,) जादा सराप पीणा बहुत कफ बहोत आलस बहोत पुष्टिदार खुराक ोत गरमी बहोत ठंड जादा गुस्सा रिदय तथा गुरदेका दरद.

(लक्षण) ये रोग तीन तरेसे होता है, १ एकाएक जाणे कोइ घाव लगा होय ा बेमालम रोगी नीचे गिरजाता है, २ पहली शिरमे दर्द बेचेनी मूर्छा आकर रोगी पडता है, ३ एकाएक शरीरका एक अंग अथवा एक पांव रह जाणेसे रोगी बेहोस ाता है, दुसरे एसे लक्षण होते हैं, मूंमें झाग चहरेपर तेज आंखोंकी कीकीचोडी भई एक चोडी अथवा एक संकडी मूं एक तरफसे टेढा करडा पडा भया दस्त पेशाब इच्छा- ा जाय हाथ पाव ठंडा चमडीपर पसीना और बडे श्वासके संग मृत्यु किसी वखत ाएक होजाती है, लकवा भया होय तो जिधरका अंग शिलगया होय वो अंगपेंचीजे भके लोचे पडे सरु होता ये रोग चाहे किसी भीतरे होय लेकिन पीछे बेहोसीके संग ना या जोरका या फुंफाडा मारता भया श्वास ये उसकी खास निशाणी है, किसीकू नभी रहता है, लेकिन जुबान बंध होजाती है) दारू तथा नसेवाला जहरी चीजोंके े पीणेसें जो बेहोसी जाती है, तो उसबातकी पहली पहचाण कर लेणी चाहिये ोंकी परिक्षा इसतरे करणी १ हकीगत ऊपरले लोकोंसे पूछणी २ मूंकी वासनो लेणी पीया भया होगा तो मूंमें बदबो आयगी ३ आंखें देखणी दारू वगेरे पदार्थोंसे आं- की कीकी बराबर होती है, और मगजमें खून चढा होयगा तो एक कीकी चोडी एक संकडी होयगी ४ सराप पिया भया अदमी जागता है, या बड २ करता है मगजपर खून चढणेवाला जागता नहीं ५ अफीमके नसेवाला अदमीके दोनो पग- डेमें खून [illegible] किया होती नजर आती है, और एपोप्लेक्सीमें एकही तर्फ) मृगी (एपीलेप्सी) और लकवा (एपोप्लेक्सी) में इतना फरक है के मिरगीमें टेढा मारना [illegible] नहीं होता और लकवेमें एसा श्वास होता है, मिरगीवाला [illegible] है, [illegible] मुंहमें सुपेद झाग फक्त दिखता है, और मिरगी जादा [illegible] है, लकवेमें एसा हाल नहीं होता.

(इलाज) [illegible] दवा [illegible] सिरऊपर ठंडा पाणी छांटना [illegible] गरम पाणीमें [illegible] पीडीयोंपर [illegible] लगाणी [illegible] अदमियोंकी भीड [illegible] [illegible]

पाणीमें डालकर पिलाणा उससे दस्त होगा जवरन पिलाणा नहीं दुसरी वेर वहोत खाये पीछै तुरत ये रोग होजाय तो उलटी होय उसकूं रोकणेकी एवजीमे मूंमें अंगलीया पांख (पीछ) डालकर जादा उलटी कराणी (नं० ५५० मे लिखे भये पिचकारी वहोत फायदा करती है, इसवास्ते वो जलदीं देणा जुलावकी दवा रोगीके गलेमें नहीं उतरसके तो जीभपर (क्रोटन ऑइल) जमाल गोटेका तेल दो तीन बूंद लगाणा और जलदी दस्त आवै एसा करणा गरदनपर विलाष्टर मारणा ये रोग वडा डरावणा है, इसवास्ते पूरे वैद्य या डाकदरकी राहसे इलाज होणा चाहिये कभी इसरोगसे रोगी वचभी जाता है, तोभी सावचेती आये वादभी उनका एक हाथ एक पाव अथवा एक पसवाडा झूठा सून्य भया होता है, जुवान वध चेहरैकी नसें विकार पाये मालम देते हैं,

पक्षाघात–हेमिप्लीज्या–

मगजके साथ संवंध रखणेवाली ज्ञानतंतु तथा गतितंतुओंकी क्रियाओं वध पडणेसे जो रोग होता है, उसकूं मुसलमीनीमें लकवा अंग्रेजीमें पेरेसीस अथवा पाल्सी कहते हैं, इस वादीमें एकतरफका अंग रहजाता है, याने शून्य होजाता है, उसकू देशीमें अर्द्धांग या पक्षाघात कहते हैं, कमरके नीचेका भाग सुन्न पडता है, उसकुं उरुस्तंभ कहते हैं, और जीभ तथा मूंके टेढा होणेवाले लकवेकूं अर्दित कहते हैं,

(कारण) मगजपर खून चढणेसें एकाएक लकवा होता है, और मगजके दुसरे विगाडसे धीमे २ होता है, गिरजाणेसे अथवा दुसरे कारणसे मगजकी खोपरीकुं नुकशान पहोंचता है, उससेभी ये रोग होजाता है, इसकेसिवाय मिरगी हिस्टीरीया वांइंटे और आंतरे तथा मूत्रपिंडके रोगसे भी लकवा होजाता है, वृद्ध ऊमरमे मगजकूं वरावर पोषण नहीं मिलणेसे इस ऊमरमें ये रोग जादा होजाता है, इसवास्ते वुड्ढेके और वच्चेके ये रोगभये पीछे मिटणा मुस्कल है.

(इलाज) ये रोग तकदीरसेही अच्छा होता है, अंग्रेजी इलाजसे इस रोगमें देशी इलाज जादा फायदा करता है, जेसें वडा योगराज गूगल रास्नादि काथ माल कांकणी इसका तेल नारायण तेल प्रशारणी तेल मगजकु पुष्टी देणेवाली दवायें देणा मसलणा फायदेवंद है,

(पथ्य) तेलका मालिस स्नेहपान पसीने निकालणा गरम जलका स्नान घी तेल मीठा खट्टा तथा खारा पदार्थ गऊं उडद कुलथी परवल सहजणेकी फली लसण अनार वेर दाख नारगी गोखरू एरंडी तेल गोमूत्र खांड पान आंवले चिकणा घी तेलका गरमागरम भोजन उडद सवसे जादा पथ्य है, (कुपथ्य) चिंता ओजागरा मलमूत्रकू रोकणा उलटी महनत उपवास वटाणा चवला वाल मूग गुड तलाव तथा नदी काजल ५.

सुपारी ठंडा जल क्षार खट्टा तीखा तथा कडवा पदार्थ स्त्री संग घोडेपर चढणा फिरणा दिनमें नींद खराब जलसे स्नान करणा इत्यादि कुपथ्य है.

ऊरुस्तंभ.

पाराप्लीज्या.

जैसे पक्षाघातमें वदनका, बांया दहना एक आधा अंग शून्य पडता है, तैसे ऊरुस्तंभमें, कम्मरके नीचेका आधा अंग रहजाता है, पांवकू हिला नहीं सकता जादा करके उसमें स्पर्सका ज्ञानभी नहीं रहता और दस्त तथा पेशाब बे खबर बिछोणेमें होजाताहै, पसवाडाभी दुसरा अदमी फिराता है.

(कारण) करोडरज्जूके नीचले भागमें रोग होणेसे याने करोड रज्जुमें सोजन होणेसे अथवा वो जादा नरम या जादा करडा पडजाणेसे अथवा वो किसी चीजके भारमें दब जाणेसें जांघ झिल जाणेका रोग होता है. पीठपर मार पडणेसे गिर पडणेसे किसी भीतर पीठकी हड्डीकूं इजा पोहचणेसें भी रोग होजाता है—

(इलाज) पीठकी हड्डीपर जरब पहोचणेसें कोइ दरद भया होय तो उस अंगको लगाणा जो उसजगे सोजन होय तो ठंडी दवा लगाणी लेकिन दवा गरम लगेगी गिरजाणेसे अथवा चोट लगणेसे ऊरुस्तंभ भया होय तो रोगीकूं पूरा आराम देणा जो रुलगाणी तथा पिलाष्टर मारणा दरदकी जगेपर बेलाडोना तथा अफीमका लेप करणा अथवा दोपहर लेप बांधणा पेशाब बंध होय जिसकूं सलाइ डालकर बाहिर निकालणा जादा देर पेशाब बंध रहे तो मूत्राशय पेडूमें वरम आजाता है, (१ इरंडी तेल देणा २ ([illegible] (नं० २१४) ३ महारास्नादि क्वाथ नं० २१५) रास्ना गोखरू [illegible] जड देवदारू [illegible] जड गिलोय किरमालेकी गिर इनोकी उकाली सूंठका चूर्ण डालकर पीणा ४ योगराज (गूगल नं० २५४) मिलावेका चतुर्थांश क्वाथ मिश्री भी [illegible] मिला डालकर देणा (६ क्विनाइन २० ग्रेण लाईकर स्ट्रिक्निया १५ [illegible] आफ स्टील १० बूंद और पाणी २ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाणा ७ [illegible] पाणीका स्नान उत्तम है.

अर्दित—फेशियल्पाल्सी—

(कारण) ये दरदभी मगजके रोगोंमेंसे जन्म लेता है, किसी २ वखत पक्षाघात [illegible] अर्दित संग होता है, अर्दित वायुसे जोखम नहीं है, ठंडी हवा कान तथा दांतका दरद [illegible] गर्मीका रोगभी इस रोगका कारण है.

(लक्षण) [illegible] मुंहके [illegible] एक तरफका मूंहा नीचे झुकता [illegible], [illegible] पडता है, आंखसे २ [illegible] गिरजाती है, पाणी पीने [illegible] नहीं आती—(इलाज) कारण जानकर उसका इलाज

करणा पहली एक जुलाब देणा एरंडी तेलका अच्छा है, पीछे योगराज गूगल अथवा पोटाश आयोडाइड देणा उडदके वडे तेलमें तले वहोत फायदेवंद है, रास्रादि क्वाथ अच्छा है. शिलाजीत गूगलके संग देणा.

धनुपवात—टिटेनस—

ये वहोत जुलमगार आक्षेप वायू है, जिसमें सब सरीर कवाणकी तरे वांका होता है, पहली जवाडे सख्त होते है, वो थोडे घंटोसे या थोडे दिनोंपीछे वंध होता है, रोग जब जोर करता है, तब अदमी कवाणकी तरे होजाता है, ये होणा कभी पीठसे और किसी २ वखत पसवाडोसे भी कवाण करदेता है, सब वदनकूं बेसुमार जोर देता है, और ये दोरा थोडी २ मिन्टोसे होता है, दरम्यान नसें सखत रहती है, अगर जो रोगीकू नींद नहीं आवे तो श्वास वंध होकर मरजाता है.

(लक्षण) सब ऊपर लिखे हैं, कवाणकी तरे वदन होता है, इसवास्ते इस रोगका नाम धनुप लिखा है, कारण इस रोगका अभीतक पूरा ध्यानमे नहीं आया है, लेकिन् किसी वखतकी शरदी या जखम वगेरे कारणसे ये रोग होता है, हडक वायु और धनुर्वायुके लक्षण आपसमें लग भग मिलतेसे है, लेकिन् जरा २ फरक है, सोनीचे लिखते हैं, जिससे अलग २ परख सकते हैं.

(हडक वायु) पाणीकूं देखतेही ये रोग जोर करता है, रोगी कुत्तेकी तरे पुकारता है, तथा थूकता है, आक्षेपका जोर कम पडे पीछै नसें ढीली होकर पूरा शांत होता है, हडक वायुमें कुत्तेके काटणेकी निशाणियां होती है.

(धनुर) धनुप वायुमें इस लक्षणोमेंका एकभी होता नहीं.

(इलाज) स्नायु शैथिल्य कृत दवायें (अफीम) अच्छा इलाज है, खुरासाणी अजवाण तथा क्लोरोफोर्म और क्लोरोडाइन अथवा इकेला क्लोरलभी अच्छा है, वरफकी कोथली भरके पीठके हड्डीपर धरणा जादा सख्त धनुरवातमें क्लोरोफार्मका ५ वूंद और टिकचर ओपियमका २० वूंद एक औंस जलमें देणा आखर नं० ५३२ वाला मोर्फियाका मिकश्चर देणा और चार २ घंटेसे देणा जारी रखणा.

शिरोरोग—हेड एक—

(कारण) तथा लक्षण) शिरमे दरद होणेका अनेक कारण होता है, और वो हरेक कारण समझे विगर पहचाणे विगर शिरके दरदका पूरा इलाज फायदेवंद होसकता नहीं शिरके दरदका संवध इतनी जगेसे होता है, अन्नाशय (होजरी) यकृत् (लीवर) पकाशय (आंतरे) मज्जातंतु या भवांरे अथवा आधा सीसी मगज (ब्रेन) और संधिवायु.

(होजरी संवंधी शिरमे दर्द) वहोत करके कपालमें अथवा एक आंखपर या आं-

सुपारी ठंडा जल क्षार खट्टा तीखा तथा कडवा पदार्थ स्त्री संग घोडेपर चढणा फिरणा दिनमें नींद खराब जलसे स्नान करणा इत्यादि कुपथ्य है.

ऊरुस्तंभ.

पाराप्लीज्या.

जैसे पक्षाघातमें बदनका, वांया दहना एक आधा अंग शून्य पडता है, तैसे ऊरुस्तंभमें, कम्मरके नीचेका आधा अंग रहजाता है, पांवकू हिला नहीं सकता जादा करके उसमें फरसका ज्ञानभी नहीं रहता और दस्त तथा पेशाब वे खबर बिछोणेमें होजाताहै, पसवाडाभी दुसरा अदमी फिराता है.

(कारण) करोडरज्जूके नीचले भागमें रोग होणेसे याने करोड रज्जुमें सोजन होणेसे अथवा वो जादा नरम या जादा करडा पडजाणेसे अथवा वो किसी चीजके भारसे दब जाणेसें जांघ शिल जाणेका रोग होता है. पीठपर मार पडणेसे गिर पडणेसे किसी भीतरे पीठकी हड्डीकूं इजा पोहचणेसें भी रोग होजाता है–

(इलाज) पीठकी हड्डीपर जरब पहोचणेसें कोइ दरद भया होय तो उस जगे जोक लगाणा जो उसजगे सोजन होय तो ठंढी दवा लगाणी लेकिन दवा गरम लगेगी गिरजाणेसे अथवा चोट लगणेसें ऊरुस्तंभ भया होय तो रोगीकूं पूरा आराम देणा जो लगाणी तथा जिलाप्टर मारणा दरदकी जगेपर बेलाडोना तथा अफीमका लेप करणा अथवा दोपहर लेप बांधणा पेशाब बंध होय जिसकूं सलाइ डालकर बाहिर निकालणा जादा देर पेशाब बंध रहे तो मूत्राशय पेडूमें वरम आजाता है, (इरंडी तेल देणा २ (रसायनिक (नं० २१४) ३ महारास्नादि काथ नं० २१५) रास्ना गोखरू एरंडीकी जड देवदारू सांटेकी जड गिलोय किरमालेकी गिर इनोकी उकाली सूंठका चूर्ण डालकर पीना ४ योगराज (गूगल नं० २५४) मिलावेका चतुर्थांश काथ मिश्री की मदद [illegible] डालकर देणा (६ क्विनाइन २० ग्रेण लाईकर स्ट्रिकिया २५ बूंद टींक्चर आफ [illegible] १० बूंद और पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पिलाणा ७ दरियावके पाणीका स्नान उत्तम है.

अर्दित–फेशियलपाल्सी–

(कारण) ये दरदभी मगजके रोगोमेंसें जन्म लेता है, किसी २ वखत पक्षाघात और अर्दित साथ होता है. अर्दित वायुमें [illegible] नहीं है, ठंडी हवा कान तथा दाढका दरद [illegible] तथा गरमीका रोगभी इस रोगका कारण है.

(लक्षण) एक तरफका बदन रहजाय मूंह [illegible] एक तरफका मूंआ [illegible] [illegible] है, [illegible] पडता है. [illegible] २ थूक या लाल गिरजाती है, पाणी पीने [illegible] गिर [illegible] है, [illegible] नहीं आती–(इलाज) कारण जाणकर उसका [illegible]

करणा पहली एक जुलाब देणा एरंडी तेलका अच्छा है, पीछे योगराज गूगल अथवा पोटाश आयोडाइड देणा उडदके वडे तेलमें तले वहोत फायदेवंद है, रास्नादि क्वाथ अच्छा है. शिलाजीत गूगलके संग देणा.

धनुषवात–टिटेनस–

ये वहोत जुलमगार आक्षेप वायू है, जिसमें सव सरीर कवाणकी तरे वांका होता है, पहली जवाडे सख्त होते है, वो थोडे घंटोसे या थोडे दिनोंपीछे वंध होता है, रोग जव जोर करता है, तव अदमी कवाणकी तरे होजाता है, ये होणा कभी पीठसे और किसी २ वखत पसवाडोसे भी कवाण करदेता है, सव वदनकूं वेसुमार जोर देता है, और ये दोरा थोडी २ मिन्टोसे होता है, दरम्यान नसें सखत रहती है, अगर जो रोगीकूं नींद नहीं आवे तो श्वास वंध होकर मरजाता है.

(लक्षण) सव ऊपर लिखे हैं, कवाणकी तरे वदन होता है, इसवास्ते इस रोगका नाम धनुष लिखा है, कारण इस रोगका अभीतक पूरा ध्यानमें नही आया है, लेकिन् किसी वखतकी शरदी या जखम वगेरे कारणसे ये रोग होता है, हडक वायु और धनुर्वायुके लक्षण आपसमें लग भग मिलतेसे है, लेकिन् जरा २ फरक है, सोनीचे लिखते हैं, जिससे अलग २ परख सकते हैं.

(हडक वायु) पाणीकूं देखतेही ये रोग जोर करता है, रोगी कुत्तेकी तरे पुकारता है, तथा थूकता है, आक्षेपका जोर कम पडे पीछे नसें ढीली होकर पूरा शांत होता है, हडक वायुमें कुत्तेके काटणेकी निशाणियां होती है.

(धनुर) धनुष वायुमें इस लक्षणोमेंका एकभी होता नहीं.

(इलाज) स्नायु शैथिल्य कृत दवायें (अफीम) अच्छा इलाज है, खुरासाणी अजवाण तथा क्लोरोफोर्म और क्लोरोडाइन अथवा इकेला क्लोरलभी अच्छा है, वरफकी कोथली भरके पीठके हड्डीपर धरणा जादा सख्त धनुरवातमें क्लोरोफार्मका ५ वूंद और टिंकचर ओपियमका २० वूंद एक औंस जलमें देणा आखर नं० ५३२ वाला मोर्फयाका मिकश्चर देणा और चार २ घंटेसे देणा जारी रखणा.

शिरोरोग–हेड एक–

(कारण) तथा लक्षण) शिरमे दरद होणेका अनेक कारण होता है. और वो हरेक कारण समझे विगर पहचाणे विगर शिरके दरदका पूरा इलाज फायदेवंद होसकता नहीं शिरके दरदका संवध इतनी जगेसे होता है, अन्नाशय (होजरी) यकृत् (लीवर) पक्वाशय (आंतरे) मज्जातंतु या भवांरे अथवा आधा सीसी मगज (ब्रेन) और सधिवायु.

(होजरी संवंधी शिरमे दर्द) वहोत करके कपालमें अथवा एक आंखपर या भां-

सके आसपास दरद होता है, उससे प्यास तपत और उवाकी होती है, ये दरद थोडी मिन्ट या थोडा कलाक रहता है, और बहोत करके भोजन किये बाद अथवा प्रभात समें चढता है, इस दरदमे अजीर्ण मिटणेका इलाज करणा चाहिये सो लोक भूलसे मेलेरियाका इलाज करते हैं. ये दरद हमेस बैठे रहणेवाले जुवान अदमियोंके बहोत होता है, खाणे पीणेके अति योगसे और खराब सराप नहीं हजम होय एसा खुराक खानेसें ये दरद होता है.

(इलाज) भोजन किये बाद शिर चढता होय तो राई और गरम पाणी पीकर उल्टी कराडालणी सालवोलेटाइल २० बूंद साइट्रेट आफमेगनिस्या और तेज चा काफी पीना आराम और नींदभी पथ्य है.

(नज्जुल् मेननी शिरका दर्द) कपालके आरपार खेंचे जैसा दरद मालम दे और नभराव एसा दरद होय एक तरफ दरद जादा एक तरफ कम और पेटकी कोडीपर टकोरा मारणेसे एकदम शिरका दर्द जाता रहे.

(इलाज) सोडावोटर जादा पीना ३ बूंद क्लोरोफोर्म और साइट्रेट आफ-मेगनिस्या मिलाकर पीणा जादा दिन जारी दरद रहे तो (नं० ४६१ तथा ४६२ की रेचक दवायें देणी.)

(आंतरेमें भया शिरका दर्द) पेटमें अजीर्ण बधणेसे अथवा कब्जीयतसे दरद होता है, बहोत करके इस कारणका दर्द सब शिरमें होता है, और कारण दूर होणेसे मिटता है.

(मज्जा तांतुओंमे भया शिरका दर्द) मनके विचारसे या गुस्सेमें नाताकत अद-मियोंके ये दरद होता है, हिस्टीरियावाली औरतें इस रोगके आधीन होती है, ये मेहनतकी जादा हरकत होनेसे तथा हृदयमें किसी किसमका विकार होता है, लेकिन [illegible] इस [illegible] नहीं जानता इसमें [illegible] नहीं खाता जो लोक सराप नहीं [illegible] पदार्थ नहीं जानते लेकिन जो लोक जो कभी या काफी जादा पीते तो [illegible] शिरका दर्द होता है, टेम मुजब और उनमान मुजब नहीं खाणेवालेके बाद की [illegible] नहीं [illegible] तमाखुका [illegible] ([illegible]) (इलाज) आराम तथा नींद-[illegible] [illegible] जो आदतें उसका गुमान करणा [illegible] [illegible] आराम [illegible] उद्यम नहीं करणा [illegible] [illegible] व्यसनका त्याग करणा [illegible] [illegible] त्याग करना सादा और पथ्य भोजन करणा.

([illegible]) [illegible] दरद मेलेरियाका नहीं [illegible] शिरमें [illegible] खुराकी

तरे टेमोटेम दरद सुरू होता है सब दिन अथवा थोडी देरसे अच्छा होता है, किसी २ वखत दरद जादा होता है, अजीर्णसेभी आधासीसीका रोग होता है, वेर २ गर्भ रहणेसे वहोत दिनों तक वच्चेकूं चुंघाणेसें वहोत ऋतु धर्ममें खून जाणेसे नाताकत औरतोंकूंभी ये रोग होजाता है, इस रोगमें औरभी कष्ट देणेवाले अहवाल होते हैं, रोगी फजरसे ही शिरका दर्द लेकर उठता है, खाये जाता नहीं शिर धडकता है, बोलणा चालणा अच्छा नहीं लगता चहरा फीका आंखकी कीकी सुकुडाती है शिर गरम होता है, ठंडा उपचार सें शांति होति है रोगीकूं दुसरी गडवड अच्छी नहीं लगती.

(इलाज) इस रोगका मुख्य कारण मेलेरिया याने जहरी हवा है, इसवास्ते क्विनाइन अच्छी है,तीन २ घंटेसे ५ ग्रेण देणा और दस्तकब्जी होय तो जरूरीपर जुलाव लेणा होजरी लीवर तथा आंतरोंका विकार होय तो दस्तकूं साफ कर पौष्टिक दवा देणी औरतोकै रोगमें मुख्य करके प्रदर रोग होता है, वो मिटाणा लिंटके टुकडेपर क्लोरो- फार्म छांटकर दरदकी जगेपर धरणा उसपर घडियालका काच धरणा अथवा कनपट्टीपर छोटी सी राईकी पट्टी मारणी गरम सेकसेंभी फायदा होता है, लेकिन् जादा करके ठंडा इलाज वहोत फायदा करता है, वरफ धरणा दशांग लेपका शिरपर मालिस करणा लवंडर अथवा कोलनवोटरमें दोभाग पाणी मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर शिरपर धरणा गुलाबजल अथवा गुलाबजलके संग चंदण घसकर अथवा सांभरका सींग घस कर लगाणा नवसादर चूना अमोनिया सूंघणा पांवोंकूं गरम जलमें रखणा शिर दवाणा घीके संग १ ग्रेण ओफर्या मिलाकर सुंघणा भमांरे पर दो जोकलगाणी नकछींकणी सूंघणी सूरज उगणेसे पहली तुलछी तथा धतूरेके पत्तोंका रस सुंघणा ताजी जलेबी या ताजा खोवा खाणा नींवगिलोयका हिम पीणा अमृतवटी दूधके संग सुवे पीणी ए सव इलाजभी करणेमें आवै अगर जो दस्तकी कब्जी होयगी अथवा पाचन क्रियामें कुछ विगाड होगा तो दरद मिटणेका नही इसवास्ते दुसरे सव इलाजोंके संग दस्त साफ आणेकी दवा देते रहणा.

(मगज संवंधी शिरका दर्द) आगे लिखे शिरके दरदके प्रकारोंसे ये प्रकार विलकुल जुदा है, जादावडी ऊमरके आदमियोंके शिरमें खूनका जोस चढणेसे होता है, सख्त दुखणेमें शिरमें सटके चलते हैं, आंखें लाल होती है. चहरा तेजी भरा होता है, शिरके आरपार खिंचता होय एसा मालम देता है, वेर २ श्वास तथा वुखारभी आजाता है–इलाज–जुलाव गरम खानपानसे वचणा पथ्य और उन मानमुजव खाणा सूरजकी धूपसे दूर रहणा थोडी कसरत मगजकूं महनत नहीं देणा ये सव जरूरका इलाज है, सख्त दरद होय तो शिरपर ठंडा इलाज करणा (नं० ५३९ का लोशन) कानके पिछली तरफ आठदश जोकलगाणी देशी वैद्यक शास्त्रमें शिरके रोगका वहोत भेद किया

रे टेमोटेम दरद सुरू होता है सब दिन अथवा थोडी देरसे अच्छा होता है, किसी २ खत दरद जादा होता है, अजीर्णसेभी आधासीसीका रोग होता है, वेर २ गर्भ रहणेसे वहोत दिनों तक वच्चेकूं चुंघाणेसें वहोत ऋतु धर्ममें खून जाणेसे नाताकत औरतोंकूभी ये रोग होजाता है, इस रोगमें औरभी कष्ट देणेवाले अहवाल होते है, रोगी फजरसे ही शिरका दर्द लेकर उठता है, खाये जाता नहीं शिर धडकता है, वोलणा चालणा अच्छा नहीं लगता चहरा फीका आंखकी कीकी सुकुडाती है शिर गरम होता है, ठंडा उपचार सें शांति होति है रोगीकूं दुसरी गडवड अच्छी नहीं लगती.

(इलाज) इस रोगका मुख्य कारण मेलेरिया याने जहरी हवा है, इसवास्ते क्विनाइन अच्छी है,तीन २ घंटेसे ५ ग्रेण देणा और दस्तकब्जी होय तो जरूरीपर जुलाव लेणा होजरी लीवर तथा आंतरोंका विकार होय तो दस्तकूं साफ कर पौष्टिक दवा देणी औरतोके रोगमें मुख्य करके प्रदर रोग होता है, वो मिटाणा लिंटके टुकडेपर क्लोरो-फार्म छांटकर दरदकी जगेपर धरणा उसपर घडियालका काच धरणा अथवा कनपट्टीपर छोटी सी राईकी पट्टी मारणी गरम सेकसेंभी फायदा होता है, लेकिन् जादा करके ठंडा इलाज वहोत फायदा करता है, वरफ धरणा दशांग लेपका शिरपर मालिस करणा लवंडर अथवा कोलनवोटरमें दोभाग पाणी मिलाकर उसमें कपडा भिगाकर शिरपर धरणा गुलावजल अथवा गुलावजलके संग चंदण घसकर अथवा सांभरका सींग घस कर लगाणा नवसादर चूना अमोनिया सूंघणा पांवोंकूं गरम जलमें रखणा शिर दवाणा घीके संग १ ग्रेण ओफर्या मिलाकर सुंघणा भमांरे पर दो जोकलगाणी नकछीकणी सूंघणी सूरज उगणेसे पहली तुलछी तथा धतूरेके पत्तोंका रस सुंघणा ताजी जलेबी या ताजा खोवा खाणा नींवगिलोयका हिम पीणा अमृतवटी दूधके संग सुबे पीणी ए सब इलाजभी करणेमें आवे अगर जो दस्तकी कब्जी होयगी अथवा पाचन क्रियामें कुछ विगाड होगा तो दरद मिटणेका नही इसवास्ते दुसरे सब इलाजोंके संग दस्त साफ आणेकी दवा देते रहणा.

(मगज संवंधी शिरका दर्द) आगे लिखे शिरके दरदके प्रकारोंसे ये प्रकार बिलकुल जुदा है, जादावडी ऊमरके आदमियोंके शिरमें खूनका जोस चढणेसे होता है, सख्त दुखणेमें शिरमें सटके चलते हैं, आंखें लाल होती है. चहरा तेजी भरा होता है, शिरके आरपार खिंचता होय एसा मालम देता है, वेर २ श्वास तथा बुखारभी आजाता है–इलाज–जुलाव गरम खानपानसे वचणा पथ्य और उन मानमुजब खाणा सूरजकी धूपसे दूर रहणा थोडी कसरत मगजकूं महनत नहीं देणा ये सब जरूरका इलाज है, सख्त दरद होय तो शिरपर ठंडा इलाज करणा (नं० ५३९ का लोशन) कानके पिछली तरफ आठदश जोकलगाणी देशी वैयक शास्त्रमें शिरके रोगका वहोत भेद किया

है—वायु, पित्त, कफ, सन्निपात, खूनका, रशक्षयका, कृमियोंका, सूर्यावर्त्त, (सूर्य चढणेके साथ शिर दूखेसो) अनंतवात, (त्रिदोषका शिरोरोग) (शंखक कनफटीका भयंकर शिरोरोग) अर्धाव भेदक, (आधा शिर पकडेसो)

(शिरके दर्दका इलाज) कितनेक तो पीछे लिखे हैं अब औरभी लिखते हैं, सोभी फायदे मंद है, मोसंरका धोया घी शिरपर भरणेसे अथवा केशर मिश्री बकरीके दूधके साथ नदन घम नास देणेसें पित्तका शिर मिटता है, २ सूंठ मिरच पींपर करंज और सहजणेकी छाल उसकु बकरीके मूतमें पीस नाकसे सूंघणा अथवा नींबोलीका तेल सुंघणा उससे कृमि पडणेसे भया शिरोरोग मिटता है, ३ भांगरेका रस और बकरीका दूध सम वजन मिलाकर धूपमें गरम कर नाकमें सुंघणेसें सूर्यावर्त्त रोग मिटता है, ४ आधाशीशीके रोगमें पहली घी पीणा बाफ पाणीकी अथवा नास लेकर पसीना लाना पीछे जुलाब लेणा सुगंध धूप लेणा और घीका गरमा गरम पदार्थ खाणा वायविडंग और काला तिल सम वजन दूधमें पीस लेप करणा उसहीकी नास देणी ५ दारू हलदी हलदी मजीठ नीमकी छाल वाला और पदमाखका लेप करणा ठंढे पाणीसे ठंढे दूधसे [illegible] और [illegible] दूधवाला झाडके छाल वगेरेका लेप करणेसे कनपटीका शिरोरोग [illegible] है, ६ ४ वाल जेठी मध और १ वाल वछनाग इनोका महीन चूर्ण [illegible] दाणे जितना सुंघाणेसे सब शिरका दर्द मिटता है, ७ आकके पत्ते [illegible] [illegible] फूलोंका लेप, [illegible] लेप, चंदनका लेप, लोंगका लेप, सूंठका लेप [illegible] पीना दशांग लेप, जायफलका लेप, गुलाब जलका पोता अगरका लेप करना [illegible] तमाखु कायफल आदेका रस अगस्तियाका रस इत्यादिकोंकी नास [illegible] (८ नं० ६५०) ६५१) ६५२ तथा ६५३ का इलाज करणा (९ [illegible] [illegible] रोगमें शिरका दर्द होय तो उसका इलाज करणा) १० धातुका गिरणा [illegible] शिरमें दर्द होय तो वो रोग मिटाणेसे शिरका दर्द मिटेगा.

शूल-चसका-चमक.

न्युरेल्जिया.

[illegible] रोग [illegible] साथ संबंध रखता है, [illegible] है, [illegible] रोग [illegible] दांतमें और [illegible] होता है, रोग [illegible] है, [illegible] इस शूलकु [illegible] गिणना.

(कारण) [illegible] इस रोगकी पैदास होती है, [illegible] रोगकी पैदास होती है, [illegible] प्रमाण [illegible] होता है, [illegible] होता है.

[illegible]

(इलाज) कारणकूं पहचाण इलाज करणा, शिरके दर्दका कारण या तो जहरी हवा या वदहजमी अथवा दांतका दरद अथवा औरतोंके गर्भका विकार इत्यादिकही होता है, इसवास्ते कोणसा कारण है, सो निश्चय करणा, जो दांत सडा हो यतो निकलवा डालणा, अथवा अछा करणा, जो अजीर्णसे चसके चलते होय तो जुलाव लेकर खाणेपीणेसें पाचन क्रियाकूं सुधारणी, जो ओरतोंके ऋतुधर्मके रोगसे शूल होय तो स्त्रियोंके प्रकरणमें लिखा सो इलाज करणा, जो मेलेरियासे होय तो किनाइन और लोहकीं दवाइ कर मिटाणा, गरम शेक करणा, राईका पलाष्टर मारणा (क्लोरोफार्ममें लींटका कपडा भिगाकर दरदकी जगेपर धरणा) (होमियोपथिकइलाज)–(चहरेके अलग २ जगेके शूलपर) एकोनाइट आर्सेनिकम वेलाडोना कोस्टीकम कोलोसीन्थ हायोसवामस लाईकोपोडियम नक्सवोमिका फोसफरस जांघ तथा पगके चसकेमे–एकोनाइट कोलोसिन्थ नक्सवोमिका पलशेटिला वगेरे वांसा तथा कमरके चभकेमे व्रायोनिया कोस्टीकम लाइकोपोडियम नक्सवोमिका सल्फर छाती तथा पशलीके चसकेमे आर्निका व्रायोनिया पल्सेटिला आर्सेनिक्र वगेरे.

अपस्मार–मिरगी–फेफरा.

एपीलेप्सी.

कारण ये रोग औलादमें ऊतरता है, २ वहोत दारू नसेकी चीजें, ३ वहोत विषयाशक्तपणा उससे भया धातूका क्षय, ४ हथरश (माश्टर वेशन) से वीर्य पटकणेसे, ५ मगजकी व्याधि कृमिरोग गर्भाशयका रोग पेशाव पथरीका रोग वचोंके दांत फूटणेसें होता रोग धास्ती गुस्सा वगेरे कितनेक औरभी रोग इस रोगकू मदतगार है.

(लक्षण) साधारण मृगीमें थोडी देर वे शुद्धी (वेहोसी) आकर रोगी जिस हालतमें वैठा होय उसही हालतमें स्थिर हो जाता है, वो थोडीसी देरमें सावचेत होता है, किसी २ वखत वेहोसीके सग मू तथा हाथ पांवोकी नसें थोडी खेंची जती है, सावचेतीमें आये वादभी रोगी जरा मुरझा कर पीछे सुस्थ होता है, और पहले जो हालवीते हैं उसका उसकूं खयाल विलकूल नहीं होता सख्त मिरगीमें रोगी जोरसे चीस मारकर वेहोस होकर जमीनपर गिरजाता है, हाथ पांव खिचते हैं, तणीजणेके सवव हाथपांव तथा सव वदन जोरसे तडफडता है, हाथकी अंगलिया टेढी होजाय श्वास घरड २ करता चले चहरा लाल होजाय वहोतसी वखत मूं टेढा होजाय मूंमेंसे झाग आवे आंखके डोले चढजाय आंख लाल होय दांत खीली जोरसे वैठ जाय वीचमें जीभ आणेसे कट जाय दस्त पेशावभी किसी वखत अंदर होजाय किसीकू थोडी देरसे किसीकूं कइ घटोसे पडे रहे वाद हाथ पांवका तणाव नरम पडे तव रोगी भर नींदकी तरे

उन्माद–पागल–दिवाना.

इन्सेनिटी–मेनिया.

मनका चंचलपणा बुद्धि अकल या ज्ञानका थोडा या बहोत नाश होना उसकूं उन्माद कहते हैं जिसमें मनका भ्रम होता है, (प्रकार)–उन्माद रोगका मुख्य तीन प्रकार है (१ चित्त भ्रम)–इसतरेके उन्मादमें अदमीकी बिलकुल अकल जाती रहती है मनमें तरंग उठती है बकता है तोफान करता है, जुदे२ सन्निपातमें रोगीका जैसा अहवाल होता है ऐसे हाल चित्त भ्रममें होते हैं, अथवा चित्तभ्रम है सो सन्निपात है, रोता है कोइ गाता है कोइ नाचता है कोइ मारणे दोडता है, नींद नहीं आती खाणेकी पीनेकी दस्त या पेशाबका खयाल नहीं रहता (२ उदासीपणा)–इस उन्मादमें अदमी बिलकुल पागल नहीं होता लेकिन् किसी कारणसे चित्त भ्रमित होता है, संसार परसे दिल उठजाता है, और बैराग आता है तब जोगी फकडसाधी सरडेकी गप्पोसें मुक्ति चाहता है लेकिन् अकलमें भ्रम होनेसे इतना विचार नहीं रहता के मुक्ति क्या न[illegible] कहां है अथवा इन बेवकूफोंकी अज्ञान कष्ट क्रियासे दोनों भवबिगाडणा है तब वे विचारसे उसकू जीणा व्यर्थ मालम देता है मनमें ऐसा विचार किसी २ वखत किया करता है के मैंने बडे २ अघोर पाप किये हैं इसवास्ते वो अपघात करनेका उद्यम करता है कोइ धर्म दिवाना होता है कोइ आपअपणेकों राजा समझता है, कोइ बहोत दौलतवान जैसा कोइ हलालखोर होकर भटकता है कोइ बेफिकरा भटकता है कोई फिकरमें गरकाब होता है, कोइ बोलताही नहीं. ऐसे अनेक लक्षण है.

(३ बुद्धिका नाश) इस तरेके उन्मादमें बुद्धि नाताकत हो जाती है जो कभी विचार कर सकता नहीं बिनाकारण बकता है गाता है बहोत चलता है हरकोइ काम नहीं करनेका हमेशा याद कुछ नहीं रहता सुख दुःख हर्ष शोक प्रीति अप्रीतिका होस नहीं रहता बुढापेमेंभी बुद्धिका नाश होता है ये ऐसा उन्माद नहीं मिटता.

(कारण)–उन्माद रोग होनेके बहोतसे हैं २ पागलकी औलाद पागल होय २ अ[illegible] जोबनमें अथवा मनचिंतामें विवाद करलेणा ३ बहोत शराब पीणेका व्यसन ४ बहोत [illegible] संग [illegible] ५ बहोत भोग करणेसे अथवा इस रस्ते से बडा नुकसान होता और बच्चोंका मरणा पैसाकी नुकसानी शोग फिकर ६ बहोत एकाएक ज्यादा [illegible] नहीं मिलना ७ मगजकू बहोत मेहनत या मगजमें कोई किस्मका रोग ये आदि अनेक कारण उन्मादके है.

(इलाज) उन्मादके रोगमें अदमी एक पहलेभी ज्यादा [illegible] हालतमें [illegible] है [illegible] दिवाना अदमी दूसरेका नुकसान करता है इसवास्ते [illegible] उनके रहनेवास्ते हस्पिटालमें बडी इमारतें बनाई है उस जगे पागलोंकी

रोककर रखते हैं सोतो अच्छा है लेकिन् जैसें इनोंका तोफान रोकते हैं, तैसें इनोंका इलाज करके अच्छाभी करणा चाहिये लेकिन् अपसोसकी वात है के उस जगे वो के दियोंसेभी जादा वुरी हालतमें जिंदगी गुजारतेहैं उनोंके लायक इलाज करणेमें आता होय एसा मालम तो नहीं पडाके जिससे वो अच्छे होजाय वोविचारे)–मैड हाउसमें कंगालों-कीतरे जिंदगी पूरी करते हैं सरकार कहेगी उनोकूं अच्छे करणेकी कोइ दवा नहीं है सच्च है अंग्रेजीमें एसी दवा नहीं होगी लेकिन् आयुज्ञानार्णवमें उनोंके वास्ते वहोत असरकारक इलाज मोजूद है, फक्त अंग्रेजी वैद्यकका आधार रखके सरकार आयुज्ञाना-र्णव जैसा उत्तम इलाजोंके संग्रहकूं भूल नहीं जाणा चहिये वहोतसे डाकटर लोक देशी इलाजोंके तरफ अभाव नजर रखते हैं, लेकिन् एसे करणेसें वो लोक ज्ञानकी वढोतरी पर एक तरेका पडदा डालणे जैसा करते हैं,), उन्मादरोगका सावारण इलाजोंमें नसोंको ढीली करे एसी दवा अच्छी है इस इलाजसे जोर कम पडता है और नींद आती है वो दवा अफीम भंग क्लोरल हाइड्रेट पोटाश ब्रोमाइड कोनायम क्लोरोफार्म डिजीटे-लिस और सल्फोनलमुख है) २ मिरगी तथा वांइटेके रोगमें लिखी दवायें उन्मादमें फायदेवंद है) ३ मगजकूं ताकत देणेवाली सव दवायें इस रोगकूं अच्छी है एसी दवा देशी वैद्यक शास्त्रमें अनेक और वहोत अच्छी२ है, लेकिन् प्रतीति और युक्तिसें देणेकी कसर है, (४ सोना)–उन्मादकेवास्ते अच्छा है सोनेकी भस्मी, वर्क, सोनेका उकाला पाणी दवा है मगजकूं फायदा पोहचाता है सुवर्णवशंतमालती जिसमें सोना होता है वो चित्त भ्रममें मगजकूं शोधन पोपण करती है) ५ ब्राम्ही भूराकोला शंखा-हुली, गूगल मोलेठी शतावर वच आंवले ये सव मगजके रोगमें अच्छा फायदा करती है उनोकी अलग २ वनावटें प्रसिद्ध है वज एक साधारण चीज है मगर मगजकूं अद्भुत ताकत देती है इय वातकूं वहोत नहीं जाणते हैं. (६ अमृतवटी)–वुद्धि और मगजकूं सुधारती है खिसेभये मगजकूं ठिकाणे लाती है, ७ आहार विहार और उत्तम दवा इनोसें विगडा भया चित्त ठिकाणे आता है जैसे गांजा सराप भंग वुद्धिकूं भ्रष्ट करती है तेसें उपर लिखी दवायें वुद्धिकूं सुधारती है इसमें आश्चर्यही क्या है, इस उन्माद रोगका संपूर्ण व्याख्यान करे तो संसारके वहोतसे लोक उन्मादी है, वुद्धिका विपमपणा चचल-पणा अस्थिरपणा और वुद्धिका हीन मिथ्या या अतियोगसे होते भये सर्व नुकशान-कारक कार्योंमें वुद्धिका उन्माद प्रत्यक्ष मालम देता है, वुद्धिका सर्वांसम शुद्धपणा और समानपणा थोडेही भाग्यवान आदमियोमें मालम पडेगा वाकी सव थोडे या वहोत असे उन्मादी है और अयोग्य खान पान वुद्धिकूं भ्रष्ट करणेवाले व्यशन वुद्धिकूं नाश करणे-वाली दवा एसे २ अनेक विरुद्ध आचरणसे उन्मादी वहोत वढ गये हैं जो लोक सादा-ईसे रहै सादा खानपान लेवे व्यसनोसे दूर रहै उत्तम और शांत गुणोंकी दवाई लेवे

महनत छातीका जडपणा खासी हिचकी श्वास अनिद्रा उलटी दस्त उवाकी भ्रम चकणा भयंकर दिखाव और खराव स्वप्ना (२ परमद)-कफका क्षय अंगोमें भार मूंमे वे स्वाद दस्त पेशावकी कब्जी मींट प्यास अरुचि शिरमें दर्द सांधोमें हड फूटणी (३ पाना-जीर्ण)-मद्यका अजीर्ण होय तव आफरा उलटी डकार दाह तथा पित्तके प्रकोपका सव लक्षण होय (४ पानविभ्रम)-रिदय तथा दुसरे अवयवोमें दरद कफ कंठमें धूआं मूर्छा उलटी शिरमें दर्द मूंमें कफ भूख नहीं लगे-(असाध्य लक्षण)-ऊपरका होठ छोटा होजाय वहोत ठंढ वहोत दाह, जाडी तेल जैसी चकचकती जीभ, होठ और दांत काला आंखें पीली तथा लाल रंगकी होय हिचकी बुखार उलटी कांपणी पशवाडोंमें शूल खासी और भ्रम.

(इलाज)-किसी २ वखत जुलाव पहली दैणा चहिये चहरा लाल रंग होय जीभ मैली होय खराव, वदवोवाला, श्वास होय तो और वहोत खाया पीया भया होय उसकूं जुलाव जरूर दैणा जो ये चिन्ह नहीं होय तो पोषणकारक और अच्छे पतले खानपानसे रोगीकूं रखणेकी जरूरी है इस मदिरासे भये रोगमें जैसा पथ्यसें फायदा होता है वैसा दवासे फायदा नही होता इसकूं वैर २ थोडा २ खुराक दैणा जो रोगी वहोत लिवरी-जगया होय नाडी विलकुल नाताकत मालम दै तो उसकूं थोडा द्राक्षासव अथवा डाक-तर लोक दूधमें ब्रांडी देते हैं मदिरासे भये रोगमें मदिरा कुछ फायदा और ताकत देती है सही लेकिन् असली फायदा नहीं देती इसवास्ते ताकत लाणेकूं दूध विदाम गूंदकीरई इत्यादिक अच्छी पुष्टीदार चीजें देणी. २ तृप्तिकारकरस जैसें खजूर फालसा अनार वगेरे मीठे पदार्थोंका रस मिश्री तथा सहतडालकर पिलाणा अनार तथा आंवलेके रशमें दूध मिलाकर पिलाणा मीठा डाल रांधे भये चावलोमें दूध डाल खिलाणा मिश्री सहत वगेरे मीठे रश दूध मखण मलाई दूधपाक श्रीखड शरवत तथा सव शीतल और तृप्ति करणे-वाले इलाज करणा.

किरण ७ मी.

आंख-कान-नाक-दांतके रोग.

आंख कान तथा नाकके अवयव वहोत वारीक और अद्भुत नाम कर्मकी रचना-वाला होणेसे उसमें अनेक रोग होते हैं (आंखके रोग)-आंखके रक्षा करणेका प्रयत्न थोडा लिखते हैं (उजाला)-आंखपर सीधी लकीरपर आणेवाला ये उजाला आंखकूं नुकशान करता है, जादा प्रकाशके तरफ ताककर देखणेसे आंखोंको ताण २ के वांचणेसे या लिखणा वगेरे काम करणेसे आखे नाताकत होती है, सूर्यके धूपमें कभी वैठणा नहीं मूंके सामने चराक परकर कभी वांचणा लिखणा नहीं, (चस्मा)-शोखसें चस्मा लगाणेका प्रचार वढ गया है इससे, नजर नाताकत होती है

दरदके जोरमुजब ऊपर लिखी दवाइयोंमें कमवेशी कर सकते हैं पाणीमें जादा दवा डालणेसे जादा असर करती है लेकिन् साधारण दुखणेमें सख्त दवा उलटी नुकशान करती है, शेक-१४ शेक जादा करके दिनकुं करणा दरद जादा होय तो रातकूंभी करणा ताकतदारकूं गुलाव जल वगेरे ठंढे पाणीका शेक करणा और नाताकतकूं पोस्तकेडोडे उकाले भये पाणीका शेक करणा अथवा रोगीसे सहा जाय एसा सेक करणा १५ आंख वहोत दुखती होय और पीप निकलता होय और पोपचे सूज गये होय तो पोशकेडो-डेका शेक करके पीछे सील्वर नाइट्रेटके बूंदे डालणी सिल्वर नाइट्रेट १ से ३ ग्रेण और पाणी १ औंस १६ (पिचकारी) वहोत पीपके पडणेसे आंखके पोपचे मिलकर चिप गये होय तो गरम पाणीका या फिटकडीके पाणीकी अथवा जस्तके पाणीकी पिचकारी लगाणी अथवा रसकपूर १ ग्रेण नवसादर ६ ग्रेण पाणी ६ औंस इससें आंखोकों कपडेसें धोणी १७ (मल्लम) आंखकी भांपणी चिप नहीं जाय वास्ते रातकू भांणीपके कोरपर घी अथवा सादा मल्लम अथवा सालिडका तेल वेसेलीन अथवा एरंडीका तेल लगाणा (खील)-(टपोरिया) भांफणेके अंदर साबूदाणे जैसा छोटा २ सुपेद दाणा होता है उसकूं खील कहते हैं भांफणेकूं उथल कर देखणेसें वहोतसी वखत खील जैसे लाल दाणे दिखते हैं उनोकूं भूलसे टपोरिया कहते हैं भापणेकी खरदरीसे एसे दाणे दिखते हैं खील अथवा टपोरिया हमेस सुपेद होता है ये वात यादमें रखणी-(लक्षण) खील मेंभी आंख आणेके कितने लक्षण होते हैं आंख लाल होकर सूज जाती है पाणी झरता है उजाला सहा नही जाता आंखमें ककर जैसा चुभता है और खटका होता है खील पुराणी होकर पीछे वेर २ आंख दुखणी आती है खील डोलेके संग वेर २ घसणेसे डोला झांका पडता है नजर मद पडती है भांपण अदर झुक जाती है झांका वढजाता है और आंख चूंची होती है (इलाज) आंख दुखणेके सव इलाज खीलमेंभी फायदे-वंद है, खीलके सख्त चिन्होमें (१ आट्रोपिन अच्छा है) वो १ से ४ ग्रेण और पाणी १ औंस इनोंकी बूंद थोडे दिन डालणी २-वेलाडोना १५ ग्रेण पाणी १ औंस ३ वाइट प्रेसीपीटेट ५ ग्रेण सादा मलम १ ड्राम इनोका मलम लगाणा ४ कास्टीकके बूंदे ५ नीलेथोथे कालीसा टुकडा खीलपर घसणा अच्छा इलाज है अथवा बूंदे डालणी ६ टेनिक एसिडकी भूकी खीलपर दवाणी पुराणी. खीलमें-७ धूंवेसे तथा उजालेसे वचणा आसमानी रंगका चस्मा पहरणा-८ कास्टिककी बूंदेडाल थोडे दिन वाद वध करणा पीछें गोरथोथा लगाकर उसपर एरंडी तेल चोपडणा टपोरिये वडे और वहोत होय तो स्युगरलेड अथवा टेनिक एसिडकी महीन बुकणी ऊपरकी भांफणी उथलकर अजन करणा इसकूं वहोत दिनोतक आंज सकते हैं ९ कांसीके पात्रमें मथन याने रगडा भया घी वहोत फायदा अंजन करणेसे करता है.

और आंखके रोग होते हैं, आंखका कोइ रोग या कमनजर होय तब चस्मा लगाना चाहिये तोभी आंखके डाक्टरकी सल्ला लेकर आंखकी शक्तिमुजब लगाना, (अंजन)- जेसें फ्रान्स देशमें शोभाके वास्ते आंखोंकी कीकीयें बडी करणेकूं बेलाडोना वापरणेका कुचाल पडा है तेसें इस देशमें शोभाके वास्ते सुरमा तथा काजल डालणेका नुकशानी-कारक चाल पडा भया है नरोंकेभी डालते हैं काजल सुरमेसे आंख अच्छी तो दिखती है लेकिन् ज्यादा फायदा होता नहीं दिखता जिसकूं जुलाब देणेकी जरूरी नहीं उसकुं जुलाब देणेमें शरीरकुं जितना नुकशान होता है इतना नुकशान साजी अच्छी आंखमें हमेश सुरमा डालणेसें होता है वैद्यक शास्त्रके हुकम मुजब बनाये गये काजल सुरमे तथा अंजन आंखके दरदमें अच्छा फायदा करती है लेकिन् अच्छी आंखमें सिणगारके वास्ते अंजन करणा बिलकुल अच्छा नहीं इस देशके अदम्योंकी चालीस वर्ष पीछे आंख बिलकुल नाताकत हो जाती है इसके सब एसेही कारण है इसवास्ते कुटुंबमें जो बडे होवे उनोंकों चाहिये एसे खोटे रिवाजोंकों बंधकर देना नहीतो आखर अवस्थामें जरूर नुकशान होगा (मगजकी रक्षा)-आंखोंके सुधारेका बहोतसा आधार मगजपर है, मगजकुं हमेशा ठंडा रखना जो मगजमें जराभी गरमी मालम दे तो उसकूं ठंडा करणा शिरपर गरम पाणी कभी डालणा नहीं स्नान करते तेमें फजर सांझ शिरपर ठंडा पाणी छांटणा डालना (धातुकी रक्षा)-हवरस और बहोत विषय सेवणासे दोनों एक आंखोंकों बहोत नाताकत पहुंचाते है लडकोंकी छोटी ऊमरमें आंखें नाताकत पडती है उसका सबब [illegible] और [illegible] दो कारण हैं धातुका बचाव तीस वर्षकी ऊमरतक होणा चाहिये [illegible] वर्षकी कन्यामें ब्रह्मचर्यमुजब दूध और पुष्ट पदार्थका हमेशा खान करणा तथा शक्ति मुजब कसरत करणा (आंखके रोगोंका इलाज)-(आंख दुखणी)- आंखमें कीडा या [illegible] मालम आती है तो उसकुं आंख आई कहते हैं आंख बहोत [illegible] दुखे अथवा पीप निकले और उसका जल्दी इलाज नहीं करे तो उसमें फूल [illegible] फूट जाते हैं (पोता)-साधारण आंख दुखे तो नीचेके पोते [illegible] हो जाता है, १ [illegible] निचोया गया काढा २ दूध अथवा दूध और [illegible] ३ [illegible] ८ तोला पाणी २ तोला मिलाकर पोता करणा ([illegible])-तीन [illegible] [illegible] ५ त्रिफलाके [illegible] [illegible] ७ [illegible] ४ [illegible] पाणी १ तोला ८ [illegible] २ [illegible] [illegible] २ ड्राम पाणी ३ ड्राम १० [illegible] [illegible] ११ [illegible] पाणी १ तोला १२ [illegible] [illegible] पाणीके [illegible] [illegible] अच्छा होता है.

दरदके जोरमुजब ऊपर लिखी दवाइयोंमें कमवेशी कर सकते हैं पाणीमें जादा दवा डालणेसे जादा असर करती है लेकिन् साधारण दुखणेमें सख्त दवा उलटी नुकशान करती है, शेक-१४ शेक जादा करके दिनकुं करणा दरद जादा होय तो रातकूंभी करणा ताकतदारकूं गुलाव जल वगेरे ठंढे पाणीका शेक करणा और नाताकतकूं पोस्तकेडोडे उकाले भये पाणीका शेक करणा अथवा रोगीसे सहा जाय एसा सेक करणा १५ आंख वहोत दुखती होय और पीप निकलता होय और पोपचे सूज गये होय तो पोशकेडो-डेका शेक करके पीछे सील्वर नाइट्रेटके बूंदे डालणी सिल्वर नाइट्रेट १ से ३ ग्रेण और पाणी १ औंस १६ (पिचकारी) वहोत पीपके पडणेसे आंखके पोपचे मिलकर चिप गये होय तो गरम पाणीका या फिटकडीके पाणीकी अथवा जस्तके पाणीकी पिचकारी लगाणी अथवा रसकपूर १ ग्रेण नवसादर ६ ग्रेण पाणी ६ औंस इससें आंखोकों कपडेसें धोणी १७ (मल्लम) आंखकी भांपणी चिप नहीं जाय वास्ते रातकूं भांणीपके कोरपर घी अथवा सादा मल्लम अथवा सालिडका तेल वेसेलीन अथवा एरंडीका तेल लगाणा (खील)-(टपोरिया) भांफणेके अंदर सावूदाणे जैसा छोटा २ सुपेद दाणा होता है उसकूं खील कहते हैं भांफणेकूं उथल कर देखणेसें वहोतसी वखत खील जैसे लाल दाणे दिखते हैं उनोकूं भूलसे टपोरिया कहते हैं भापणेकी खरदरीसे एसे दाणे दिखते हैं खील अथवा टपोरिया हमेस सुपेद होता है ये वात यादमें रखणी-(लक्षण) खील मेंभी आंख आणेके कितने लक्षण होते हैं आंख लाल होकर सूज जाती है पाणी झरता है उजाला सहा नहीं जाता आंखमें कंकर जैसा चुभता है और खटका होता है खील पुराणी होकर पीछे वेर २ आंख दुखणी आती है खील डोलेके संग वेर २ घसणेसे डोला झांका पडता है नजर मंद पडती है भांपण अंदर झुक जाती है झांका वढजाता है और आंख चूंची होती है (इलाज) आंख दुखणेके सव इलाज खीलमेंभी फायदे-वंद है, खीलके सख्त चिन्होमें (१ आट्रोपिन अच्छा हैं) वो १ से ४ ग्रेण और पाणी १ औंस इनोंकी वूंद थोडे दिन डालणी २-वेलाडोना १५ ग्रेण पाणी १ औंस ३ वाइट प्रेसीपीटेट ५ ग्रेण सादा मलम १ ड्राम इनोका मलम लगाणा ४ कास्टीकके चूंदे ५ नीलेथोथे कालीसा टुकडा खीलपर घसणा अच्छा इलाज है अथवा वूंदे डालणी ६ टेनिक एसिडकी भूकी खीलपर दवाणी पुराणी. खीलमें-७ धूंअेसे तथा उजालेसे वचणा आसमानी रंगका चस्मा पहरणा-८ कास्टिककी वूंदेडाल थोडे दिन वाद वंध करणा पीछे मोरथोथा लगाकर उसपर एरंडी तेल चोपडणा टपोरिये वडे और वहोत होय तो स्युगरलेड अथवा टेनिक एसिडकी महीन भुकणी ऊपरकी भांफणी उथलकर अंजन करणा इसकू वहोत दिनोंतक आंज सकते हैं ९ कांसीके पात्रमें मथन याने रगडा भया घी वहोत फायदा अंजन करणेसे करता है.

(फूला) आंखके काले माणसियेमें सोजा होणेसे सुपेद या पीला दाग पड जाता है काले डोलेकी चांदी मिटे पीछे तैसे वो जखम पडे पीछे सुपेद दाग रह जाता है इन तीनोंको फूला कहते हैं लेकिन् चांदी मिटे पीछे जो सुपेद दाग रह जाता है उसकू खरा सचा फूला कहते हैं आंख दुखे पीछे अथवा शीतलामें फूला पडता है (इलाज), चांदी होय तो गरम पाणीका शेक करणा तथा आंखपर पट्टा बंधे रखणा २ दरद जादा होय तो आंखके आसपास वेलाडोना लगाणा ३ आट्रोपीन १ से ४ ग्रेन पाणी १ औंस बूंदे डालणी सोजेके लक्षण मिटे पीछे वेलाडोनेकी बूंदे डालणी ४ कैलोमेल आयोडोफार्म बोरासिक एसिड (टंकण) इनोंमेसे एककी बुकणी डालणी अथवा, एक औंस वेसेलीन के संग ३० ग्रेण मिलाकर हरेकका मलमकर अंजन करणा.

(गये फूलेका इलाज) नया होय तो मिटता है १ क्यालोमेल ३० ग्रेण वेसेलीन १ औंस इनोंका मलमकर अंजन करणा २ यलो आक्साइड आफ मर्क्युरी ५ ग्रेण वेसे- लीन १ औंस इनोका मलम कर अंजन करणा ३ पोटाश आयोडाईड ६ ग्रेण पोटाश बाईकार्बोनास ३ ग्रेण वेसेलीन १ ड्राम ४ नीलाथोथा २ ग्रेण पाणी १ औंस इनकी बूंदे डालणी ५ आयोडाइड ओफ पोटाश १० से ३० ग्रेण पाणी १ औंस ६ वडके दूधमें कपूर डालकर अंजन करणा ७ पीपर समुद्रके झाग तथा सगजन सींधानिमक इनमें सहत मिलाकर कांसीकी थालीमें कांसीकी कटोरीसे घोट मलम अंजन करणा ८ सोनामखी अथवा बहेडा अथवा सींधानिमक इनमेंसे हरएक पाणीमें या औरतके दूधमें या सहतमें घीस अंजन करणा (वालला) काले डोलेकी कोरपर छोटी राई जैसी फुनसी सुपेद पीले रंगकी होती है उसकू वालला कहते हैं पहली आंख दुखणे जैसी [illegible] होती है आंसू पडता है ये फुनसी सुपेद पीलेरंगकी होती है और किसी २ के काले डोलेमें होती है, [illegible] थोडे दिनोंमें फूटकर मिट जाता है और किसीके बेर २ होता है इसवास्ते [illegible] रोग [illegible] होता है (इलाज) आंखोंको [illegible] सेक करणा [illegible] दरद जादा होय तो (१ आट्रो- पीन [illegible] करणा २ यलो आक्साइड ओफ मर्क्युरी ग्रेन १ से २० वेसेलीन १ औंस मलमकर अंजन करणा

[illegible]

[illegible]

१ आंवला रसोत तथा सहत घोटकर अंजन करणा २ सहजणेके पत्तोंका रश सहत मिलाकर बूंदे डालणी ३ चिरमीकी जड वकरेके पेशावमें पीस अथवा मोथकूं पाणीमें पीस अंजन करणा ४ दारूहलदी त्रिफला तथा मोलेठी सम वजन दो तोला उसकूं अधसेर नालेरके जलमें उकाल आठमा हिस्सा जल रहै उसकूं छाण फेर गरम कर जाडा करणा उसमें कपूर सींधा तथा सहत जरा २ मिलाकर अंजन करना ५ खापरिया शंख चीजाघोल तथा मोरथोथा सम भाग चूर्ण करना और नीवूके रशमें घोटवत्ती करणी वो अंजन करना इस अंजनसे झांखा मिटता है आंखकी खुजाल मांसवृद्धि मोतिया पटल फूला वगैरे दरदोमें फायदा चंद है (आंखके दुसरे सामान्य इलाज) सव नेत्ररोगोमें फायदेवंद है १ लोहके वरतणमें नींवूका रश डाल लोहके वत्तेसे घोट आंखपर लेप करणा २ मोलेठी गेरू सींधानिमक दारूहलदी और रसोत पाणीमें पीस आंखके आस-पास लेप करणा ३ सहत तथा घीमें सींधा तथा लोदकूं गरम कर पीस इसका लेप तथा अंजन करणा ४ कडवा नींच गूलरकी छाल एरंडकी जड मोलेठी, रगतचनण,पाणीमेंपीस वट्टी आंखपर बांधणी ५ तुलसी तथा वीलके पत्ते इनोंका रश दोनुरसोंके वरावर कांसीके पात्रमें औरतका दूध और गजपींपरका चूर्ण डाल कांसीकी कटोरीसे घोट डच्ची-में रखना अंजन करणा ६ निर्मलीके वीज सहतमें पीस उसमें थोडा कपूर डाल अंजन करणा ७ ताजी गीलीगिलोयका रश १ तोलासहत सींधव हरेक १ मासा अंजन करणा ८ नीलाथोथा सोनामखी सेंधव मिश्री शंख मनशिल गेरु समुद्रका झाग मिरचकाली स-हतमें घोटकर अंजन करना आंखके रोगोंके वास्ते शास्त्रोमें खानेकी दवायें लिखी है वोभी किसी २ वखत अच्छा फायदा दिखाती है सो थोडे इहां लिखते हैं ९ वाला ४ तोला पाणी २० तोला क्काथ कर उसमें पींपर २ मासा सींधा २ मासा सहत १० मासा घी १ तोलो मिलाकर वर्षात तथा ठंडी मोसममें खाना इससे झांखेका रोग मिटता है १० त्रिफला ४ तोला पाणी ४० तोला अष्टमांश काथ करना उसमें इत-नांही दूध तथा घी डाल मंदाग्निसे घी वाकी रहै तहांतक उकाल रातकूं ४ तोला वो घी पीणा तिमर रोग मिटे ११ भांगरेका रश ७४ तोला तेल १६ तोला मोलेठी १६ तोला दूध ६४ तोला तेल वाकी रहे तहांतक उकाल ॥ तोला खाना इससें झांखा मिटता है, लोहके वासणमें त्रिफलेका क्काथ ५ तोला घी १ तोला रख देणा सांझकूं नीमेंवाद पीणा १२ त्रिफलेका क्काथ भांगरेका रश अरडूशेके पत्तोंका रश सतावरका रश या क्काथ वकरीका दूध गिलोयका क्काथ और घी ये हरेक ६४ तोला पींपरमिश्री दारुत्रिफला नीलाकमल मोलेठी सुपेद तूंवा भूरींगणी दरेक दश २ तोला लेकर उनोंकी चटणी करनी सबकूं घी वाकी रहे तहांतक उकालना मात्रा २ तोला आंखके सब रोग मिटता है, १४ मोलेठी त्रिफला इनोंका चूर्ण तीन मासा लोहभस्म १ रत्ती सहत तथा घीमें चाट-

कर ऊपर दूध पीणा १५ त्रिफला तज लोहभस्म मोलेठी महुवेका फूल इनोंका चूर्ण माशा ३ मासा (अनुपान घी तथा सहत)-(शिरकी मगजकी शक्ति वधाणेका इलाज) इस करके मगज पुष्ट होता है,१६ बिदामकी मींजी १ तोला रातकूं भिगा फजरमें छिलके दूर कर उसमें छोटी इलायची दाणे ३ मासे और मिश्री १ तोला गऊका ताजा घी २ तोला इन सबोंकूं कलाईके पात्रमें धर रातकूं छतपर रख फजर तथा सांझकूं चाटणा दो हफ्ते तक ताजा २ खाणेसे मगजकी गरमी दूर होकर आंखोंकी गरमी दूर होती है, १७ बिदामकी मींजी तोला १० इलायची तोला ५ पीस्ता तोला ५ खसर तोला ५ दाग तोला ५ सबकूं पीस अथवा गऊके दूधमें उकाल उसका गोला करना उसमें गऊके दूधका खोवा १ सेर अच्छा बूरा १ सेर मिलाकर इसमेंसे फजर सांझतो ५ खाणा इसमें मगज भरतर होकर आंखोंमें तेज आता है १८ गऊका मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा १ मासा इस प्रमाणसे फजर सांझ १४ दिन चाटना आंखके सब रोगोंमें अच्छा है, १९ गऊका ताजा २ तोला घी खोवा १ तोला मिश्री बिदाम दोनुं ॥ तोला शीतल मिरच सहत इलायची दाणा हरेक । तोला सब एकत्र कर सांझ और फजर खाणा ३ इस खाणेसे हाथपांवकी जलण और आंखके विकार मिटते हैं २० गऊका ताजा मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा ६ मासा नागकेशर ४ मासा इसप्रमाण नित्य प्रातसमें खाना ३ अठवाडिये खानेसें आंखोंकी गरमी ललाई वगैरे सब विकार मिटते हैं.

कानके रोग—

कानके अनेक रोग होते हैं उसके मुख्य ३ भाग किये जाय तो १ कानका सोजा २ कानका पकना ३ बहरापणा इनोंका इलाज नीचेंमुजब करना.

(कानका सोजा) कानके बाहिरका भाग और बहोतसी वखत अंदरका भाग पडदा [illegible] जाता है तब दरद बुखार इत्यादि बरमके सब लक्षण होते हैं, शिरमें दरद कानमें [illegible] बुखार [illegible] नाडी जल्द ये उपद्रव होते हैं पकणेसें पीप होता है (कारण) [illegible] हवा [illegible] गरम हवा [illegible] कानकूं कुचरणेसें सख्त मैल कानमें जमणेसें [illegible] चोट लगनेसें सोजन आती है बिगडे बाद खूनके [illegible] ये रोग [illegible] होता है ऐसा देखनेमें आता है, (इलाज) कानमें थोडासी दरद होयके गरम पाणी [illegible] उकाल बाद गरम पाणीका सेक करणा कानके अंदर ठंडी हवा नहीं [illegible] इसवास्ते रुई [illegible] (इसीवास्ते जैनके मुनि लोक) [illegible] (कानोंमें रुई देते हैं, ऐसा जैन धर्मोंकि [illegible] आज्ञा है,) बाहिर [illegible] [illegible] दोनोंसे थोडा फायदा है कानका मैल बाहेर [illegible] ठंडी [illegible] गरम हवा [illegible] नहीं सकते, कानमें मैल [illegible]

तो निकालणेका इलाज करणा, एक जुलाब लेना, हलका खुराक लेना, ठंढी हवामें फिरना नही बुखार होय तो पसीना लानेकी दवा देणी, दरद वहोत होय तो वेर२ सेक करना जो क लगवाणी कानके पिछाडी पलाष्टर मारना, रोगीकूं एकांतमे शांतपणे गुपचुप सुलाये रखणा नाताकतकूं ताकतकी दवा देणी, (कानका मैल) वहोतसी वखत कानमें मैल चढ जाता है, तव कानमें वहोत दरद होता है, कानका रस्ताभर जाणेसे वरावर सुणी जता नही छमछमें वजे ऐसा कानमें सुणांई देता है, मूं फाडकर देखणेंसे कानमें कट२ एसा अवाज होता है, कानकूं उंचाकर देखणेंसे मैलका डूचा मालम देता है, किसी२के कानमें मैल जमतेही रहता है (इलाज) मैल निकालनेकूं रातकूं सूतीदफे कानमें मीठा तेल वदामका तेल ग्रीसराईन अथवा सालीडके तेलकी बूंदे नाखणी और फजरमें जरा गरम पाणीकी पिचकारी मारणी गरम पाणीमें साबूका फेण निकालकर उस पाणीकी पिचकारी ८।१० वखत मारणेसे मैल सव निकल जायगा कान कुचरणेसे वहोत नुकशान है, इसवास्ते कुचरकर मैल निकालणा नहीं कानमें कोइ चीज या जानवर जाणेसे दरद होय तो उसकूं निकालनेकूं सली या हथियार डाल कानकूं छेडणा नहीं ऊपर लिखे मुजव पिचकारी मारणी या तेलकी बूंदे डालणी जीव गया होय तो तेल या कडवी विदामका तेल कानमें डालना अथवा लाडेनमके ४।५ बूंदे डालते हैं उससे अंदरका जीव मर जाता है पीछे पिचकारी मारणेसे पाणीके संग धुपकर वाहिर निकलता है, ये डाकतरोंकी शिक्षा है.

(कानका पकणा) कानका अगला हिस्सा अथवा आखिरीका अंदरका पाक होता है उसमेंसे पीप निकलता है जाडा, किसी वखत कानके अदरकी नरम हड्डी सडती है, तो पीपके संग खूनभी निकलता है, सरू होते कानमें सोजन होता है और पीप सरू भये वाद दरद कम पडता है—कारण—ये रोगभी कानके सोजेमें लिखे कारणोंसेही होता है, नाताकत और फोडे फुनसीवाले वचोंके ये रोग वेर२ होता है और तनदुरस्त होणेंसे मिटता है, कानकी नाडी पकती है उसकूं नाडीव्रण कहते हैं ये वेर २ भरता है और वेर २ रुकता है (इलाज) १ फुलालीन पोस्तके डोडाका अथवा नींवका पत्ता बांधकर शेक करना २ सरुआतमें पीप वंध करणेकू सख्त दवा डालणी नहीं नरम कपडेकी वत्तीकर कानकूं साफ करना गरम पाणीकी पिचकारी देकर दिनमें दो तीन वरवत कानकूं धोना कानकू फेर सूका कर देणा कानमें चुलवुलाट या खुजाल होय तो सालिड तेल ग्लीसेरीन या तिलके तेलकी बूंदे डालणी इतने इलाजोंसे पीप बंध नहीं होय तो ३ लाल गुलाबके फूलके क्वाथके पाणीकी पिचकारी मारणी ४ फिटकडीके पाणीकी पिचकारी मारणी ५ त्रिफलाके उकालीकी पिचकारी मारणी ६ पंचवल्कलके उकालीकी पिचकारी वहोत फायदा करती है, ७ पिचकारी मारकर कानकू सुका टालणा पीछे जात्यादि तेल

कर ऊपर दूध पीना १५ त्रिफला तज लोहभस्म मोलेठी महुवेका फूल इनोंका चूर्ण माशा ३ मासा (अनुपान घी तथा सहत)—(शिरकी मगजकी शक्ति वधाणेका इलाज) इस करके मगज पुष्ट होता है,१६ बिदामकी मींजी १ तोला रातकूं भिगा फजरमें छिलके दूर कर उसमें छोटी इलायची दाणे ३ मासे और मिश्री १ तोला गऊका ताजा घी २ तोला इन सबोंकू कलाईके पात्रमें धर रातकूं छतपर रख फजर तथा सांझकूं चाटणा दो दफे तक ताजा २ खाणेसे मगजकी गरमी दूर होकर आंखोंकी गरमी दूर होती है, १७ बिदामकी मींजी तोला १० इलायची तोला ५ पीस्ता तोला ५ खसर तोला ५ दाख तोला ५ सबकूं पीस अथवा गऊके दूधमें उकाल उसका गोला करना उसमें गऊके दूधका खोवा १ सेर अच्छा बूरा १ सेर मिलाकर इसमेंसे फजर सांझतो ५ खाणा इससे मगज भरतर होकर आंखोंमें तेज आता है १८ गऊका मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा १ मासा इस प्रमाणसे फजर सांझ १४ दिन चाटना आंखके सब रोगोंमें अच्छा है, १९ गऊका ताजा २ तोला घी खोवा १ तोला मिश्री बिदाम दोनुं ॥ तोला शीतल मिरच सहत इलायची दाणा हरेक । तोला सब एकत्र कर सांझ और फजर खाणा २ दफे खाणेसे हाथपांवकी जलण और आंखके विकार मिटते हैं २० गऊका ताजा मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा ६ मासा नागकेशर ४ मासा इसप्रमाण नित्य प्रातसमें खाना ३ अठवाडिये खानेसें आंखोंकी गरमी ललाई वगैरे सब विकार मिटते हैं.

कानके रोग—

कानके बहोत रोग होते हैं उसके मुख्य ३ भाग किये जाय तो १ कानका सोजा २ कानका बहना ३ बहरापणा इनोंका इलाज नीचेंमुजब करना.

(कानका सोजा) कानके बाहिरका भाग और बहोतसी वखत अंदरका भाग पकजा [illegible] जाता है [illegible] दरद बुखार इत्यादि वरमके सब लक्षण होते हैं, शिरमें दरद कानमें [illegible] बुखार [illegible] नाडी जल्द ये उपद्रव होते हैं पकणेमें पीप होता है (कारण) [illegible] हवा कानमें गरम हवा डालणेमें कानकूं कुचरणेमें सख्त मैल कानमें जमणेमें [illegible] कानपर चोट लगणेसे सोजन आती है बिगडे भये खूनके बखतसे ये रोग [illegible] होता है [illegible] जाता है, (इलाज) कानमें थोडासी दरद होय के गरम पाणी [illegible] गरम पाणीका सेक करणा कानके अंदर ठंडी हवा नहीं जाने [illegible] नहीं लगाणी ([illegible] जैनके मुनि लोगकूं) [illegible] कानोंमें रुई देते हैं, ऐसा [illegible] अभिमान आता है,) बाहिर [illegible] ऐसा [illegible] दोनोंमें [illegible] फायदा है कानका मैल [illegible] कानमें मैल होय

तो निकालणेका इलाज करणा, एक जुलाब लेना, हलका खुराक लेना, ठंढी हवामें फिरना नही बुखार होय तो पसीना लानेकी दवा दैणी, दरद वहोत होय तो वेर२ सेक करना जो क लगवाणी कानके पिछाडी पलाष्टर मारना, रोगीकूं एकांतमे शांतपणे गुपचुप सुलाये रखणा नाताकतकूं ताकतकी दवा दैणी, (कानका मैल) वहोतसी वखत कानमें मैल वढ जाता है, तब कानमें वहोत दरद होता है, कानका रस्ताभर जाणेसे वरावर सुणी ज़ता नहीं छमछमें वजे ऐसा कानमें सुणांई देता है, मूं फाडकर देखणेंसे कानमें कट२ एसा अवाज होता है, कानकूं उंचाकर देखणेंसे मैलका डूचा मालम देता है, किसी२के कानमें मैल जमतेही रहता है (इलाज) मैल निकालनेकूं रातकूं सूतीदफे कानमें मीठा तेल वदामका तेल ग्रीसराईन अथवा सालीडके तेलकी वूंदे नाखणी और फजरमें जरा गरम पाणीकी पिचकारी मारणी गरम पाणीमें साबूका फेण निकालकर उस पाणीकी पिचकारी ८।१० वखत मारणेसे मैल सब निकल जायगा कान कुचरणेसे वहोत नुकशान है, इसवास्ते कुचरकर मैल निकालणा नहीं कानमें कोइ चीज या जानवर जाणेसे दरद होय तो उसकूं निकालनेकूं सली या हथियार डाल कानकूं छेडणा नहीं ऊपर लिखे मुजब पिचकारी मारणी या तेलकी वूंदे डालणी जीव गया होय तो तेल या कडवी विदामका तेल कानमें डालना अथवा लाडेनमके ४।५ वूंदे डालते है उससे अंदरका जीव मर जाता है पीछे पिचकारी मारणेसे पाणीके संग धुपकर वाहिर निकलता है, ये डाकतरोंकी शिक्षा है.

(कानका पकणा) कानका अगला हिस्सा अथवा आखिरीका अंदरका पाक होता है उसमेंसे पीप निकलता है जाडा, किसी वखत कानके अंदरकी नरम हड्डी सडती है, तो पीपके संग खूनभी निकलता है, सरू होते कानमें सोजन होता है और पीप सरू भये वाद दरद कम पडता है—कारण—ये रोगभी कानके सोजेमें लिखे कारणोंसेही होता है, नाताकत और फोडे फुनसीवाले वचोंके ये रोग वेर२ होता है और तनदुरस्त होणेसें मिटता है, कानकी नाडी पकती है उसकूं नाडीव्रण कहते हैं ये वेर २ भरता है और वेर २ रुकता है (इलाज) १ फुलालीन पोस्तके डोडाका अथवा नींवका पत्ता वांधकर शेक करना २ सरुआतमें पीप वंध करणेकूं सख्त दवा डालणी नहीं नरम कपडेकी वत्तीकर कानकूं साफ करना गरम पाणीकी पिचकारी देकर दिनमें दो तीन वखत कानकूं धोना कानकूं फेर सूका कर दैणा कानमें चुलचुलाट या खुजाल होय तो सालिड तेल ग्लीसेरीन या तिलके तेलकी वूंदे डालणी इतने इलाजोंसे पीप वंध नहीं होय तो ३ लाल गुलावके फूलके काथके पाणीकी पिचकारी मारणी ४ फिटकडीके पाणीकी पिचकारी मारणी ५ त्रिफलाके उकालीकी पिचकारी मारणी ६ पचवल्कलके उकालीकी पिचकारी वहोत फायदा करती है, ७ पिचकारी मारकर कानकूं सुका डालणा पीछे जात्यादि तेल

कर ऊपर दूध पीना १५ त्रिफला तज लोहभस्म मोलेठी महुवेका फूल- इनोंका चूर्ण मात्रा ३ मासा (अनुपान घी तथा सहत)-(शिरकी मगजकी शक्ति वधाणेका इलाज) इस करके मगज पुष्ट होता है,१६ बिदामकी मींजी १ तोला रातकूं भिगा फजरमें छिलके दूर कर उसमें छोटी इलायची दाणे ३ मासे और मिश्री १ तोला गऊका ताजा घी २ तोला इन सबोंकू कलाईके पात्रमें धर रातकूं छतपर रख फजर तथा सांझकूं चाटणा दो ऐसे तरह ताजा २ खाणेसे मगजकी गरमी दूर होकर आंखोंकी गरमी दूर होती है, १७ बिदामकी मींजी तोला १० इलायची तोला ५ पीस्ता तोला ५ खसर तोला ५ दाख तोला ५ सबकूं पीस अथवा गऊके दूधमें उकाल उसका गोला करना उसमें गऊके दूधका खोवा १ सेर अच्छा बूरा १ सेर मिलाकर इसमेंसे फजर सांझतो ५ खाणा इससे मगज भरतर होकर आंखोंमें तेज आता है १८ गऊका मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा १ मासा इस प्रमाणसे फजर सांझ १४ दिन चाटना आंखके सब रोगोंमें अच्छा है, १९ गऊका ताजा २ तोला घी खोवा १ तोला मिश्री बिदाम दोनं ॥ तोला शीतल मिरच सहत इलायची दाणा हरेक । तोला सब एकत्र कर सांझ और फजर खाणा ३ ऐसे खाणेसे हाथपांवकी जलण और आंखके विकार मिटते हैं २० गऊका ताजा मखण २ तोला मिश्री १ तोला इलायची दाणा ६ मासा नागकेशर ४ मासा इसप्रमाण नित्य प्रातसमें खाना ३ अठवाडिये खानेसें आंखोंकी गरमी ललाई वगेरे सब विकार मिटते हैं.

कानके रोग–

कानके बहोत रोग होते हैं उसके मुख्य ३ भाग किये जाय तो १ कानका सोजा २ कानका पकना ३ बहरापणा इनोंका इलाज नीचेमुजब करना.

(कानका सोजा) कानके बाहिरका भाग और बहोतसी वखत अंदरका भाग पडदा सूज जाता है तब दरद बुखार इत्यादि वरमके सब लक्षण होते हैं, शिरमें दरद कानमें [illegible] नाडी बन्द व उपद्रव होते हैं पकणेसे पीप होता है (कारण) ठंडी हवा कानमें लगना [illegible] कानकूं कुचरणेसें सख्त मैल कानमें जमजाय [illegible] सोजन आती है बिगडे [illegible] ये रोग [illegible] (इलाज) कानमें थोडासी दरद होयके गरम पाणी [illegible] गरम पाणीका सेक करणा कानके अंदर ठंडी हवा नहीं जाने [illegible] ([illegible] मुनि रातकू) [illegible]) बाहिर [illegible] कानमें [illegible] आधी फायदा है कानका मैल [illegible] ठंडी वा गरम हवा [illegible] नहीं मलना, कानमें मैल [illegible]

तो निकालणेका इलाज करणा, एक जुलाव लेना, हलका खुराक लेना, ठंढी हवामें फिरना नहीं बुखार होय तो पसीना लानेकी दवा दैणी, दरद वहोत होय तो वेर२ सेक करना जो क लगवाणी कानके पिछाडी पलाष्टर मारना, रोगीकूं एकांतमे शांतपणे गुपचुप सुलाये रखणा नाताकतकूं ताकतकी दवा दैणी, (कानका मैल) वहोतसी वखत कानमें मैल वढ जाता है, तव कानमें वहोत दरद होता है, कानका रस्ताभर जाणेसे वरावर सुणी जता नहीं छमछमें वजै ऐसा कानमें सुणांई देता है, मूं फाडकर देखणेंसे कानमें कट२ एसा अवाज होता है, कानकूं उंचाकर देखणेसे मैलका डूचा मालम देता है, किसी२के कानमें मैल जमतेही रहता है (इलाज) मैल निकालनेकूं रातकू सूतीदफे कानमें मीठा तेल वदामका तेल ग्रीसराईन अथवा सालीडके तेलकी वूंदे नाखणी और फजरमें जरा गरम पाणीकी पिचकारी मारणी गरम पाणीमें सावूका फेण निकालकर उस पाणीकी पिचकारी ८।१० वखत मारणेसे मैल सव निकल जायगा कान कुचरणेसे वहोत नुकशान है, इसवास्ते कुचरकर मैल निकालणा नहीं कानमें कोइ चीज या जानवर जाणेसे दरद होय तो उसकूं निकालनेकूं सली या हथियार डाल कानकूं छेडणा नही ऊपर लिखे मुजव पिचकारी मारणी या तेलकी वूंदे डालणी जीव गया होय तो तेल या कडवी विदामका तेल कानमें डालना अथवा लाडेनमके ४।५ वूंदे डालते हैं उससे अंदरका जीव मर जाता है पीछे पिचकारी मारणेसे पाणीके संग धुपकर वाहिर निकलता है, ये डाकतरोंकी शिक्षा है.

(कानका पकणा) कानका अगला हिस्सा अथवा आखिरीका अंदरका पाक होता है उसमेंसे पीप निकलता है जाडा, किसी वखत कानके अदरकी नरम हड्डी सडती है, तो पीपके संग खूनभी निकलता है, सरू होते कानमें सोजन होता है और पीप सरू भये वाद दरद कम पडता है—कारण—ये रोगभी कानके सोजेमें लिखे कारणोंसेही होता है, नाताकत और फोडे फुनसीवाले वचोंके ये रोग वेर२ होता है और तनदुरस्त होणेंसे मिटता है, कानकी नाडी पकती है उसकूं नाडीव्रण कहते हैं ये वेर २ भरता है और वेर २ रुकता है (इलाज) १ फुलालीन पोस्तके डोडाका अथवा नींवका पत्ता वांधकर शेक करना २ सरुआतमें पीप वध करणेकू सख्त दवा डालणी नहीं नरम कपडेकी वत्तीकर कानकूं साफ करना गरम पाणीकी पिचकारी देकर दिनमें दो तीन वखत कानकूं धोना कानकूं फेर सूका कर देणा कानमे चुलचुलाट या खुजाल होय तो सालिड तेल ग्लीसेरीन या तिलके तेलकी वूंदे डालणी इतने इलाजोंसे पीप वंध नहीं होय तो ३ लाल गुलावके फूलके काथके पाणीकी पिचकारी मारणी ४ फिटकडीके पाणीकी पिचकारी मारणी ५ त्रिफलाके उकालीकी पिचकारी मारणी ६ पंचवल्कलके उकालीकी पिचकारी वहोत फायदा करती है, ७ पिचकारी मारकर कानकूं सुका डालणा पीछे जात्यादि तेल

(नं० २११) वाला डालणा अथवा ७ नींबोलीका तेल डालणा ८ कोईभी तरेका तेल नहीं मिले तो तिल्लीका तेलभी अच्छा है ९ आंब जामुन महुआ वड इनोंके नरम पत्ते पीस उसमें चोगुणा तेल तेलसे चोगुणा पाणी डाल उकाला भया तेलकी बूंदे डालणी.

(बहरापणा)–कानमें सोजन होणेसें कान पकणेसें या मैल भरणेसें बहिरापणा आता है कान फुनरणा पाणीका जाणा ठंढी हवा लगणी भीजी जमीनपर सोणेसें कानमें सोजा होनेसेंभी ये रोग होता है, सुणणेकी तंतुओ नाताकत पडणेसेंभी रोग होता है, (इलाज)–बहरापणाके वास्ते लोक कितनेक सख्त इलाज करके कानकुं उलटा नुकसान करते हैं, कानके अंदरका पडदा एसा बारीक ओर पतला है, सो गरम ओर दाहकारक स्पर्शकुं सह नहीं सकता बहरापणा समझके मात्र गरम दवायें डालते जाणा इसमें बडा नुकसान है, जो सोजा होय तो सोजेका इलाज करणा मैल होय तो निकालणेका इलाज करणा गळेके दरदसेभी कानमें बहिरापणा होजाता है, कानपका होय तो पीप निकालणेका इलाज करणा लसण कांदे दारू वगेरे गरमागरम पदार्थ डालणेका रिवाज बहोत नुकसानकारी चल रहा है, बहिरापणेका कोई कारण मालम नहीं पडे तो तिलीका तेल सरसुंका तेल ग्लीसेरीन सालिड तेल वाइन ओफ ओपियम सल्फ्युरिकइथर वगेरे दवायोंके पांचसात बुंद हमेश रातकुं सोते वखत डालणा २ आंधी झाडेकी राखका नीतरा पाणी तोला २० तेल तोला ५ और आंधी झाडेका खार तोला १। पीछे तेल बाकी रहे जहांतक उकाल तयार कर वो तेल कानमें डालणा.

नाकके रोग.

(इलाज) नाकमेंभी अनेक रोग होते हैं, जेसें सुगंध दुर्गंध परखणेकी शक्तिका नाश पामना रहेतो नाकका पकना उसमेंसें मूतमिश्र पीप वहणा बडी अजायबीक संग छींके जलण गरम हवा नाक सूकना नामका रोग प्रतिश्याय याने श्लेष्मपीनस नकसीर फूटणी नाकके अंदर नाकके मस्से रोग (इलाज)–नाकके बहोत रोगोंका मगजके साथ संबंध है, जैसे सिरका रक्त नाकमें उतरता है, जेसें मगजका खून नकसीरहो कर नाकके रस्ते बाहर आता है, बहोतसा इलाज करनेमें एसे रोग मिटते हैं नाकमें मस्सा बंधता है, उसके इलाज ना करने कानमें लिखा है, सर्दी होनेमें सिरका कफ बिगड नाक तथा गलेके रस्ते [illegible] मरजोंकु [illegible] रोग समझ इलाज नहीं करने तो नाक [illegible] रोग पैदा हो जाते हैं, (इलाज)–१ कायफल [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] नाकमें डालना उसमें नाकका दुर्गंधवाला भाग [illegible]

है, ३ मोम तथा गूगलकूं इकठेकर उसका युक्तिपूर्वक नाकमें धूआं लेणेसें वडी अवाजवाली छींके तथा विगडा भया कफ निकलता वंध होता है, ४ मिरच दही गुड इन तीनोंकों मिलाकर खाणेसे नाकके तमाम रोगमें फायदा होता है, इसवास्ते शरदी या पीनस रोगमें दैणा (५ नस्य)—तुलशीके पत्ते नकछींकणी वगेरे छींक लाणेवाली पदार्थोंकी नाश लेणेसे पीनस तथा शरदीका कफ झरके निकल जाता है (६ नकसीर छूटणी)—(एपीस्टेकसीस) ठंढा जल शिरपर तथा नाकपर वहोत डालणा अथवा कपडा भिगाकर शिरपर धरणा पीली मुलतानी मट्टी ठंढे जलमे मिला तालवेपर धरना ठढे पाणीकी पिचकारी मारणी नाकमें फटकडी या मांजू फलकी महीन बुकणी नाकमें दाबणी कांदेका रस या हरडे वडी जलमें घसकर या अनारके फूलका रश या दोचका रशकी नास दैणी या इस पूगलकूं जरा जलमें मकरोय शिरपर लगाणा जल थोडा २ छांटणा जसतके फूलके पाणीमें रू भिगाकर उस रुईसे नाक वंध करणा टिंकचर ओफ स्टीलमें रू भिगाकर नाकमें दावणा जो कोइ दवा नहीं होय तो रुईकूं ठंढे पाणीमें भिगाकर नाकमें दावणा नीलेथोथेके पाणी की पिचकारीभी खूनकूं वंध करती है, (७ पीनस)—(ओझीना) सलेपममेंसे वेर२ ये रोग होता है, इस सिवाय नाकमें कोइ पदार्थ जाणेसें सोजा होकर पीप होता है, नाकमें मस्सा होकर पीप निकलता है, तैसे अंदर हड्डी सडणेसें पीप निकलता है, गरमी सुजाकके रोगसेंभी पीनस होता है, और नाक सडके गिर जाता है मर्मेकूं कटा डालणा पिचकारी लगाकर नाक हमेश धोडालणा एक औंस पाणीमें एक दो ग्रेण फिटकडी अथवा जसतके फूल अथवा क्लोराईड ओफ झिंक डालणा जात्पादि तेलकी वूंदें डालणी, १ द्राम विस्मथ, और १ औंस मिश्री मिलाकर सुंघाणा, कारवोलिक एसिड १ भाग ताजा घी ८ भाग मिलाकर सुंघणा इसके शिवाय तनदुरस्ती सुधारणेवाली दवाइयां जैसेके मंजिष्टादि क्वाथ किशोर गूगल योगराज गूगल लोहके वनावटकी दुसरी दवाइयां सारसापरेला पोटाश आयोडाइड वगेरे दवाओंकूं देणा (नाकमें जीव)—जिसके नाकमें जीव पड जाता है,उसका नाक चपटा फीडा होजाता है उसमें नींवोलीका तेल नाकमें डालणा पांच रुपेभर पाणी गरममें टरपेन्टाइन २ द्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी सोल्युसन ओफस्टील ४ द्राम पाणी ३ औंस टरपेन्टाइन १ द्राम मिलाकर पिचकारी लगाणी टरपेन्टाइन तथा कपूर मिलाकर उसमें रु भिगाकर नाकमें सूंघणा और रखणा ९ नाकका मस्सा (पोलीपस) नासार्श)टेनिक एसिडकी भूकी सुंघणी धूएकी धूंमस (मेश) पीपर देवदारू दूधकरंज सींधानिमक और आंधे झाडेके वीज इसमें पकाया भया तेल डालणा मस्सा वडा होय तो चिमटेसे चलदेकर खेंचकर निकालणा अथवा कतरणीसे काट डालणा.

दांतके रोग.

दांतकी जडमें या मसूढोमें या दांतके ऊपरके भागमें सोजा या सडणेसें दांतका

(दांतके कोतर भरणेकी रीत)-पहली दांतकूं महीन हथियारसें कोरके साफ करणा और पीछै अंदर भरनेकी दवा धरणी कितनीक चीजें थोडा दिन रहके निकल जाती है, और कितनीक हमेश रह सकती है, सो लिखते हैं १ मस्तंगी अथवा चंद्ररस जो मिले उसकूं सल्फ्युरिकइथर आल्कोहोलमें पिघलाकर गुड जैसी गोली करणी वो लुगदी दांतका खड्डा भरीजै इतना रूमें लपेट दाव दैणा २ गटापरचा दांतका खड्डा भरणेकूं तयार मिलता है, वो जादा टिकता है उसका एक छोटा टुकडा लेकर स्पीरीटलैंपसे अथवा दुसरी गरमीं देकर पिघलाकर नरम करना पीछै दांतके खड्डेकूं कपडेसें पूछकर गटापर-चेकूं थोडा २ तिणखेसें दांतके कोचरेमें दावणा ३ (ओकसाइड ओफझिंक)-इयभी जादा वखत दांतमें टिकता है इसकूं सोल्युसन ओफ झिंकमें मिलाकर गुड जैसा नरम कर दांतके खड्डेमें दाव दैणा ये दवा छसात महीनेतक अंदर रह सकती है, ४ वहोत मुदतके टिकाववास्ते)-पारा तथा चांदीकूं अरगतीसे रगडकर भूकाकर उसकूं पारेके संग हथेलीमें मसलणा जब लुगदी होय उसकूं दबाणेसे जादा पारा होयगा सो निकल जायगा और मिली भई लुगदीकू कोचरेमें भर दैणा इकेले चांदीकी एवजीमें १ भाग सोना २ भाग रूपा और २ भाग कलाई एक जगे गालकर उसकूं अरगतीसे रगड अगली तरे पारा मिला दवाना ये वहोत अच्छा है, इस मुजब कोचर भरनेसें थोडी देर दांतमे दरद होय तो स्पिरिटकेम्फर अथवा मस्तंगी गुंदका पाणी दांतपर लगाना.

(दांतके मंजन)-दांतके दरदमुजब मंजनोमें दवा मिलाणी दांतके कलतरमें कपूर वीजाबोल मस्तंगी वगेरे मिलाणी मसूढोंकी मजबूतीवास्ते कथा मांजूफल सिंकोना वार्क वगेरे चीजें वापरणी मूंकी वदवो दूर करणेकूं कोयला मस्तगी गूंद कपूरका उपयोग करना वलचिंग पाउडर वगेरे तयार मिलती दवायें वापरणी-(१ पृष्ठ ४०६) नंबर ७५० स ७५३ तकके सब मंजन अच्छे है, धोया भया चाक तो ५ कपूर पाव तोला दांत कुलणेपर ये मंजन अच्छा है, कपूर जादा डालना नहीं ३ हीरावीजाबोल तो १ कपूर छ मासा चाक ५ तोला दांत साफ होते हैं, कुलते मिटते हैं, ४ हीराबोल कथा मांजू एकेक भाग वार्क २ तोला दांत खाईजते होय तो मिटते हैं ५ मस्तगी गोचरश हीराकसी अनारके सूके फूल जो हरडे आंवले कत्था सम वजन महीन चूर्ण मसलणा (मूंके खराब वदवोका इलाज)-जिस कारणसें दांत सडते हैं, उसी कारणसे मूंमे वदबो आती है, भोजनवाद दोनों वखत दांतकूं कुरले कर २ साफ धोना दांतमें रहे अन्नके कनोको निकालणेकू लोक दांत कुचरणी रखते हैं, या तिणखोंसे कुचरते हैं. इनसे और दात चोडे होकर अन्नके कणे भरी जते हैं, इससे जादा नुकशान है, दांतकू साफ करणेका पूरा इलाज ब्रूश है, गरम पाणीके कुरलोंमेंभी साफ होजाता है, दांतोपर नीलप पुडपुडे जमते हैं वो निकाल डलवाणा चहिये वहोत वरसोंका जमाभया मेल दांतोका

डाक्टर साफ कर देते हैं. और छोटे चकूके धारसें धीरे२ घसणेसेंभी छील निकल सकती है. ऊपर दांतोंके मंजन लिखे हैं, उसमेंसे नं० ३१४ वाला मंजनमें कोयलेका भूका डालकर उससें दांतण करणा नं० ५६९ में लिखे भये कोनडिस सोल्युसन ड्राम १ में नवसेर पाणी डाल कुरला करना.

(दांत साफ रखणेके नियम)–१ दांतकूं बांवलके दांतणसे या ब्रूससे हमेश घसणा लेकिन् दांतोंकों जोरसे घसणा नहीं २ कोयलेका भूका लूण चाक और कपूर साधारण मंजन हमेस दांतोंकों लगउणा ३ दांतोंके छेकडोमें नाज भर जावे उसकूं कुरले या ब्रूससे निकाल डालना जो अंदर रहा तो बहोत नुकशान है, इसीवास्ते जैनके साधू भोजन कर दांतोंकों साफ नहीं करे तो व्रतभंगका दोषण मानते हैं, और दांत साफ करते हैं, दिगंबर जैन दांत साफ करणेमें व्रतभंग मानते हैं, श्वेतांबर साधुओंकी साफ करणेकी मर्यादा है, लेकिन् भोजन किये बाद पहले नहीं ४ रातकूं बिलकुल दांतोंमें अन्नका कणा नहीं रहना चाहिये ५ छील होय तो छीलके निकाल डालनी मंजन ऊपर लिखे सो लगाउना सो फेर छील जमेही नहीं ६ बहोत मीठे और खट्टे पदार्थ हमेस खाणा नहीं ७ सुपारी दांतोंकों बिगाडती है सो खाणी नहीं सुपारीकी राख दांतोंके मसलणी ८ तमाखू लगाउणेसें दांत तो साफ होता है, लेकिन् शरीरपर उसका असर बुरा होता है, इसवास्ते तमाखूका बिलकुल इस्तमाल करणा नहीं ९ दस्तकी कब्जी होणे देणी नहीं १० सुजाक [illegible] जहरीले रोग होय तो फोरन इलाज करना ११ पेटका खुलासा औरपाचनशक्ति [illegible] रोगोंका मूल है.

चमडीके रोग–

किरण ८ मी.

चमडीपर अनेक तरेके रोग होते हैं, कितनेक तो रक्त बिगडणेसे कितनेक एक [illegible] कितनेक एक प्राणियोंका अंदर घुसे भये दोषोंसे पैदा होते हैं, कितनेक रोग [illegible] होते हैं और कितनेक अंदरके दोषसे होते हैं, अंदरके दोषसे भी२ [illegible] रोग [illegible] फूटकर निकलते हैं, इसवास्ते [illegible] होता है, इसवास्ते अनेक रोगोंके [illegible] रोगोंका इलाज और लक्षण लिखते हैं.

[illegible]

करणा ६ गोमूत्र मसलके स्नान करणा ७ दाहशामक दवायोंका लेप पृष्ठ ३१२) ८ चंदनका लेप ९ गंधकका लेप १० सोहागीका जल मसलणा ११ चंदनका तेल लगाणा १२ तिलका तेल मसलणा १३ लोशन कार्वोलिक एसिड १ द्राम ग्लीसरीन १ औंस पाणी ३ औंस रेक्टिफाईड सिपरिट २ औंस १४ लोशन–कपूर ॥ द्राम क्लोरल हाइड्रेट ॥ द्राम ग्लीसरीन १ द्राम गुलाब जल ५ औंस १५ गंधकका सावू (सल्फर सोप) वदनके मसलके नाहणा १६ कारवोलिक सोप १७ चंदलाईके पत्ते उकालके पीणा १८ गिलोयका रस पीणा १९ गाजुवांका रश पीणा २० नं० २९५ ३१३ ३१७ ३२४ ३२६ का इलाज है सो करणा.

(फुनसी–लाईकेन) चमडीपर महीन २ फुणसियें होती है, गरमीकी मोसममें वहोत होती है, अदमीकुं वहोत तकलीप देती है,–इलाज–१ चंदनका लेप करणा २ वाला शंखजीरा तथा कपूरकाचरीका लेप ३ गेरूका लेप करणा ४ हरडेका जुलाव देणा ५ मासा तथा पोस्तके डोडोके जलसे नाहणा.

(लूखापणा)–(प्रुराईगो) सब वदनपर वहोत खुजली आती है, तथा महीन २ फुनसियें होती है, अदमी खुजालते २ खूनतक निकाल लेता है तैसें २ जलण और खुजाल वढती है, चमडी लूखी और खरदरी होती है,–इलाज–ऊपर लिखे सब खुजलीका इलाज करणा १४ मासेके जलसे स्नान कराणा २ चंदनका लेप करणा ३ चीरोंजीका लेप करणा ४ गंधक १ द्राम ग्लिसरीन १ द्राम धोयाभयाघी १ औंस इनोकों मथकर वदनके लगाणा ५ रस कापूरका पाणी लगाणा ६ गंधक २ द्राम ग्लीसरीन तथा वेसेलीन एकेक औंस मिलाकर मसलणा ७ चंदलियेका रस नींवके पत्तोंका रस गाजुवानका रस इनोमेंसें कोईभी दवा थोडा दिन पीणा ८ आंवला अथवा त्रिफलाका जल पीणा ९ गुलावकलीका जुलाव अथवा सोनामुखीकी चायाफकी लेणी १० आंवलेका मुरब्बा या कोला पाक अमृतवटी मंजीष्टादिकाथ वगैरेका वहोत दिनोंतक सेवन करणेसे लूखास मिटती है.

(खस)–(ईच)–खसके रोगकू सब जाणते हैं, ये एक तरेका सडणा है, गंधे छोकरोंके वहोत होता है, उसमें जीव छोटे कीडे होते हैं, उसका चेप फैलता है– (इलाज)–१ गधकका लेप अथवा मलम (न०५४५) २ कासीसादिघृत (नं० ३०३) ३ पारेका मलम (न० ३०४) ४ खसका लेप (नं० ३२४) ५ (नं० ५४९) वाला मलम ६ अर्कतेल (न० २९३) ७ लीले थोथेका तेज पाणी चुपडणा ८ नींवके पत्तोंको उकाल उससे स्नान करणा या गोमूत्रसे.

(खरज)–(व्योंची)–(एकझीमा)–ये चमडीका वडा रोग है, ये ज्यादा करके हाथ पांव शिरमें कानकी कोरपर वगैरे भागोपर होती है, पहली चमडी लाल होकर सूज

चमडीके रोगोंका इलाज.

वखत साफ करवाणा पपडी उखडकर शिरकी जमीन साफ निकल आवे एसा इलाज करणा नीला थोथा १५ ग्रेण चार औंस पाणीमें मिलाकर कपडा भिगाकर थोडे दिनोंतक शिरपर लपेटणा पीछे एरंडी तेलमें कपडा भिगाकर उसपर लपेटना इस तरे दो चार दिन करनेसें पपडे नरम पडते हैं, और अलग हो जाते हैं, वाद एरंडीका तेल लगाणा अथवा घावभरी जै एसा रोपन मलम लगाना २ भूरींगनीके रशमें सहत डालकर लेप करना ३ चिरमीकी जड तथा फल पीसकर लेप करना ४ चिरमीकु जलमें पीस उसमें भांगरेका रश तथा तेल डालके सिद्धकरा भया तेल चुपडना (ये अवल गुंजादि तैल.)

(खोरा)–(स्कर्फ) शिरमें होता है उसमेंसें सुपेद फोंतरा ऊडता है, तथा वाल गिर पडता है खोरा एक तरेका जीवका विकार है–(इलाज)–१ गुंजादितेल चिरमीका ऊपर लिखा सो २ नींबोलीका तैल ३ हरतालका लेप ४ टकन तोला -।- एकसेर जलमें मिलाकर उसजलसे हमेस शिर धोना अथवा सालिडका तेल चोपडना.

(टाटका पडना)–(ऐलोपेश्या)–शिरके वाल उडजाते हैं उसकूं टाट कहते हैं वहोतसी वखत मूंछ तथा भवांरेके वालभी उड जाते हैं, उंदरी कीडा अथवा उपदंशकी गरमी ये वाल गिरनेका मुख्य कारन है, इसवास्ते खून सुधारनेका यत्न करना–(इलाज)–१ चिरमीका वूका पीस लेप करना भांगरेके रशमें सिद्धकरा भया तेल चुपडना ३ कडवे परवलके पत्तोंका रश तीन दिन लेप करना ४ भूरींगनीका रश सहत मिला लेप करना.

(खील)–(आकनी)–चमडीके पिंडमे एक तरेका चिकना पदार्थ भर रहा है जब वो बाहर नहीं निकलता तब खील होकर बाहिर फुटती है जादा जुवानीमें चहेरे पर फुटती है–(इलाज)–फजर सांझ गरम जलसें धोना गरम जलका वफारा दैना २ रसोतका लेप करना ३ टंकणखार गुलाव जलमें लगाणा ४ गंधकका मलम (गंधक १ भाग वेन्झोयेटेडलार्ड ४ भाग) ५ गूगल लोह काडलीवर वगेरे दवाओं देणी ६ गोरोचन काली मिरचका लेप ७ लोद धाणा तथा वचका लेप ९ शेमलके कांटाओंकू दूधमें पीस लेप करना.

(करोलिया)–(सोरायासीस) चमडीपर सुपेद चट्टे होते हैं, ऊपरकी चमडी उतरती जाती है और नीचै सुपेद चठे निकलते जाते हैं, इसकूं सिध्मा वभूती या भित्री कोढभी कहते हैं, ये रोग जादा करके मूं, छाती, पीठ कभी २ सब वदनपर होता है, (इलाज) १ कुष्टहर लेप (नं० ३२१) गंधकका तेल (नं० ६६) ३ हरतालका लेप (नं० १८९) ४ ठंढे पाणीमें भिगाई भई चद्दर वदनपर लपेट उपर गरम धावला ओढाकर दो चार घंटे सुला दैना और दोचार वखत सूत्र जल पिलाणा जिससे पसीना आकर फायदा होता है. ५ टार, झींक, ओक्साइड और विदामका तेल सम वजन मिलाकर करोलियेपर घसकर लगाना, ६ पवांडके बीज तथा वावचीका लेप इमतंर दि-

वगेरे घसणा ६ दशांग लेप नं० ३१२।७ जुलाव एरंडीका तेल गुलावका फूल अथवा सोनामुखी वगेरे दैणा मंजिष्ठादिकाथ अथवा चूर्ण.

कालादाग–चमडीपर काला दाग पडता है, किसी रोगसे या वुढापेसें या विलास्टर मारे पीछे चमडीपर काले दाग रह जाते हैं, (इलाज) शरीरसंवंधी कोइ रोगका कारण होय तो उसका इलाज करणेसे दाग अदृश्य होगा जैसेके गरमीके रोगसे हथेलीमें भये दाग रसकपुरका पाणी मसलणा २ व्हाइट प्रेसीपीपटका मलम (सादा मलम १ औंस आयोनाटेट मर्क्युरी १ ड्राम मिलाकर मलम करना ४ आल्कोहोल १ औंस कपूरका पाणी उसमें रू भिगाकर दागवाले भागपर धरणेसें चमडी लाल होगी अथवा विलाष्टर उठकर नई चमडी आयगी.

(झामरा)–(पेमफीगस) चमडीपर एक वडा फफोला उठता हैं, उसमें पहले पाणी होता है पीछै पीप होता है सख्त दरद तथा जलण होती है, (इलाज) १ अफीमका लेप करना अथवा पोस्तके डोडेका सेक करना २ तुकमरिया पीसके वांधणा, ३ सुईसे फोडकर सादे मलमकी पट्टी मारणी ४ धोया भया घी अथवा मख्कण अथवा झिंक ओइन्टमेन्ट लगाना ५ चमडी अलग पडे पीछै घाव भरणेकूं आइडोफोर्म कारवोलिक तेल अथवा वोरासिक एसिडका मलम लगाणा.

(कखवायु)–(ऊसरणी)–(हर्पिझ) काखके नीचे छातीकी वाजूमें चमडी लाल होकर उसपर मोतीका दाणा जैसा फुणसियें होती है, किसी२ वखत और जगेभी होती है नाताकतीसे होता है, वुखार उतरे पीछै एसे दाणे होठपर होते हैं, उसकूं लोक चूरामूत गया एसा कहते हैं, उसमें दाह होता है वुखारभी आजाता है, (इलाज) १ गेरूका लेप, (२ दशांग लेप नं० ३१२), ३ स्युगरलेडका मलम, ४ झिंक लगाना, ५ लेड लोशन, ६ ग्लिसरीन मेटेनिक एसिड मिलाकर चोपडणा,

(विस्फोटक)–(एकथीमा)–(इम्पीटाइगो)–चमडीपर छोटे या वडे, पीलेपीपवाला पफोला होता है, उसकूं विस्फोटक कहते हैं, ये फफोले उठकर जखम पडता है, खरूंट जमते हैं, और अंदरसे चिकता है, (इलाज) पंचवल्कलका उकालकर उससे हमेश धोणा, २ धमासा अथवा पोस्तके छिलके उकाल पाणीसे दोतीन वेर स्नान करना ३ जाईके पत्तोंके हिमसे स्नान करना, ४ खरूं टोपर पोटाश वांधकर अथवा तेल लगाकर उखेड उसपर सादा मलम अथवा जखम भरे एसी दवा लगाणी, ५ नींवोलीका तेल लगाणा, ६ पंचवल्कलकूं कूट उसका महीन चूर्ण दावणा अथवा जलमें पीस लेप करना ७ कारवोलिक और वोरासिकका मलम लगाणा, ८ गिलोयके उकालीमें एरंडीका तेल डाल दोचार दिन पीणा, ९ मंजीष्टादि काथ, गाजुवाका रस सालसापरीलाके उालका उकाला, तेसें काडलीवर कीनाइन, लोह वगेरे दवायोंका सेवन उकलर करवाते हैं.

नमें दो वखत दवा लगाणी, गरम पाणी और साबूसें धो डालना, कोरे रुमालसे साफ पोंछ डालना, फेर दवा मसलके लगाणा.

(कोढ)-(ल्युकोडर्मा) चमडीका कुदरती रंग बदलकर उसपर सुपेद काले लाल वगेरे बहोत तरेके चट्टे निकलते हैं, साधारण लोक सुपेद चट्ठोंकों कोढ समझते हैं, लैकिन् वो १८ जातिमेंकी एक जाति है, दाद, चित्री, करोलिया, बिचर्चिका, पांव वगेरेभी कोढ रोगका हलका विकार है, दुसरे दुष्ट कोढ रोगका दोष धातूमें प्रवेश कर अंदर ऊतरता है, विरुद्ध अन्नपानका सेवन ये कोढ रोगका कारण है, (इलाज)-(कुष्टहर लेप) तथा अवल गुंजादि लेप (नं० ४२) (नं० ३१३) (वज्री तैल नं० २९५) मरिचादि तैल (नं० ३००) काली जीरीका लेप (नं० ३१७)५ सुपेद कोढका लेप (नं० ३२१) ६ अवल गुंजादि क्वाथ (आंवला तथा खैर सारका क्वाथ) उसमें वावचीका चूर्ण डालकर पीणा)-(खानेकी दवायें) मंजीष्ठादि क्वाथ (निंबपंचाग चूर्ण (नं० २२९) अमृताघृत (नं० २८७) १० किशोर गूगल(तथा योगराज गूगल)(पृष्ठ २५३) पथ्य आहारके संग एसी कुष्टहर दवा देणेमें आवै तो चमडीका रोग आराम होता है.

(शीतपित्त)-(उदर्द)-(कोठ)-(उत्कोठ)- (आर्टिकेरिया)-वदनपर चट्ठे उठ जाते हैं, ये ददोडे छोटे वडे लाल तैसें सपेद रंगके होते हैं, चमडी सूजी भई तथा, उपसीभई वहोत खुजली तथा दाह होता है, पित्ती एकदम अंदर घुस जाती है, किसी२कूं ये रोग वेर२ होता है, अजीर्ण अथवा उसका विगाड खट्टा अथवा नारूकी वेमारी ये सव पित्ती अथवा पित्ती जैसा चट्टेका कारण है, कोइ जहरी जांनवर काटै (मकडी) मसलसणेसे या खानेमें आवे औरभी तो पित्ती निकल जाती है. इलाज-सरसूंके तेलका मालिस २ गरम पाणीका शरीरपर सींचना ३ सरसूंका दाणा हलदी पमाडके बीज तथा तिल इनोंकूं सरसूंके तेलमें मिलाकर लेप करना ४ लेडलोशन कारवोलिक लोशन कपूरका अर्क वगेरे लगाना ५ गरम कपडे पहराणा पुराणी वेमारीमें नींवके पत्तेका रस पीणा ६ सोनामुखी तथा दस्तावर दवा (दैणी पृष्ठ. ३१६) ७ कालीजीरीकी चाकरके पीणी ८ त्रिफला गूगल तथा पींपरका चूर्ण देना ९ अद्रकके रशमें पुराना गुड पिलाणा १० त्रिकटुका चूर्ण और मिश्री ११ त्रिकटु तथा अजमोद १२ जुलाव लेना किरमाला पंचक (कुटकि देवदारू मोथ अतीश किरमालेकी गिर अथवा विलायती निमक इसमेंका जुलाव देना) १३ काली मिरच घीमें मिलाकर चाटणा तैसें ऊपर लगाणा.

चकाचा-इरीथीमा-चमडी लाल होजाती है, इलाज-ठंढा इलाज करना १ कली चूनेका नितरा भया जल और तेल मथकर लगाना २ गुलाव जल तथा ग्लिसरीन ३ जात्यादि घृत ४ झिंक ओइन्टमेन्ट नं० ३०२।५ ओक्साइड ओफ झिंक तवखीर

वगेरे घसणा ६ दशांग लेप नं० ३१२।७ जुलाव एरंडीका तेल गुलाबका फूल अथवा सोनामुखी वगेरे देणा मंजिष्ठादिक्काथ अथवा चूर्ण.

कालादाग-चमडीपर काला दाग पडता है, किसी रोगसे या बुढापेसें या विलास्टर मारे पीछे चमडीपर काले दाग रह जाते हैं, (इलाज) शरीरसंबंधी कोइ रोगका कारण होय तो उसका इलाज करणेसे दाग अदृश्य होगा जैसेके गरमीके रोगसे हथेलीमें भये दाग रसकपुरका पाणी मसलणा २ व्हाइट प्रेसीपीपटका मलम (सादा मलम १ औंस आयोनाटेट मर्क्युरी १ ड्राम मिलाकर मलम करना ४ आल्कोहोल १ औंस कपूरका पाणी उसमें रू भिगाकर दागवाले भागपर धरणेसें चमडी लाल होगी अथवा विलाष्टर उठकर नई चमडी आयगी.

(झामरा)-(पेमफीगस) चमडीपर एक वडा फफोला उठता हैं, उसमें पहले पाणी होता है पीछे पीप होता है सख्त दरद तथा जलण होती है, (इलाज) १ अफी-मका लेप करना अथवा पोस्तके डोडेका सेक करना २ तुकमरिया पीसके बांधणा, ३ सुईसे फोडकर सादे मलमकी पट्टी मारणी ४ धोया भया घी अथवा मख्कण अथवा झिंक ओइन्टमेन्ट लगाना ५ चमडी अलग पडे पीछे घाव भरणेकूं आइडोफोर्म कारवो-लिक तेल अथवा बोरासिक एसिडका मलम लगाणा.

(कखवायु)-(ऊसरणी)-(हर्पिझ) काखके नीचे छातीकी बाजूमें चमडी लाल होकर उसपर मोतीका दाणा जैसा फुणसियें होती है, किसी२ वखत और जगेभी होती है नाताकतीसे होता है, बुखार उतरे पीछे एसे दाणे होठपर होते हैं, उसकूं लोक बूरामूत गया एसा कहते हैं, उसमें दाह होता है बुखारभी आजाता है, (इलाज) १ गेरूका लेप, (२ दशांग लेप नं० ३१२), ३ स्युगरलेडका मलम, ४ झिंक लगाना, ५ लेड लोशन, ६ ग्लिसरीन मेटेनिक एसिड मिलाकर चोपडणा,

(विस्फोटक)-(एकथीमा)-(इम्पीटाइगो)-चमडीपर छोटे या वडे, पीलेपीप-वाला पफोला होता है, उसकू विस्फोटक कहते हैं, ये फफोले उठकर जखम पडता है, खरूंट जमते हैं, और अंदरसे चिकता है, (इलाज) पंचवल्कलका उकालकर उससें हमेश धोणा, २ धमासा अथवा पोस्तके छिलके उकाल पाणीसे दोतीन वेर स्नान करना ३ जाईके पत्तोंके हिमसे स्नान करना, ४ खरूं टोपर पोटाश बांधकर अथवा तेल लगाकर उखेड उसपर सादा मलम अथवा जखम भरे एसी दवा लगाणी, ५ नींबोलीका तेल लगाणा, ६ पंचवल्कलकूं कूट उसका महीन चूर्ण दाबणा अथवा जलमें पीस लेप करना ७ कारवोलिक और बोरासिकका मलम लगाणा, ८ गिलोयके उकालीमें एरंडीका तेल डाल दोचार दिन पीणा, ९ मंजीष्टादि क्वाथ, गाजुवाका रस सालसापरीलाके छालका उकाला, तेसें काडलीवर कीनाइन, लोह वगेरे दवायोंका सेवन उपकार करनेवाले हैं.

(मस्सा)-(वार्ट) शिरपर तैसें शरीरपर किसीभी जगे छोटे वडे चमडीके अंकूरे फूटते हैं, वहुतोंके जीभ होठ नाक कान मलद्वार वगेरे गुप्त जगोंपरभी होते हैं, (इलाज) छोटे मस्से, कासटिक अथवा खारसे जलके गिरजाता है, वडे मस्सेकूं डाकतर कतरणीसे काट कासटिकसे वो जगे जलाकर मल्लम लगाते हैं, २ आंधी झाडेका क्षार लगाणा, ३ अर्क तेल (नं० २९३) ४ कलीचूना लगाना, ५ घोडेका वाल वांधकर हमेश जरा २ खेंचणेसें कितनेक दिनोंमें मस्सा गिर जाता है.

(कपासिये)-(कॉर्न) कपासियेकूं आंठणभी कहते हैं, वो हाथ पैरपर होता है, चमडी जाडी होती है, किसीके दरदभी होता है, किसीके सख्त पडणेसें दरद नहीं होता, (इलाज) कटाकर कानका मैल भरणा दुसरा इलाज देखणे सुणनेमें नहीं आया है, कांटा अंदर रहजाकर पुराणी हालतमें कपासिये वंध जाते हैं.

(जूं)-(लीख)-(लानुस) गलीच अदम्योंके कपडेमें तथा वालोंमें जूंलीख पडती है, कपडोंकी सुपेद और वालोंकी जूं काली होती है, (इलाज) स्नान और कपडे साफ रखणा, २ नींवूके रशमें कालीजीरी पीस वालोमें लगाना, ३ नींवोलीका तेल लगाना ४ धतूरोंके डोडोंकूं तेलमें उकाल वालोमें वो तेल लगाणा, ५ पारेकूं नीमके रसमें घोट या मूलीके पत्तोंके रशमें घोट लगाणा, या पारेका मल्लम लगाणा, ६ रसकपूर दो ग्रेण एक औंस जलमें मिलाय वो पाणी शिरमें लगाणा, ७ कारवोलिक एसिड तथा तेल, ८ सिरका और नवसादर, ९ गंधक या गंधक तेल, १० नींवूका रस और खांड.

(वाला)-(नारू)-(गीनीवर्म)-चमडीमेंसे सुपेद रंगका सवा हाथ एक तार जैसा दो इंद्रियवाला जीव निकलता है, जैनोके सूत्रमें, हरसमें, कंठमालामें और नारूमें दो इंद्रीवाला जीव कहते हैं, वोही वात इस वखत पश्चिमी विद्वानोंने सिद्ध किया है, व्राम्हणोंके वनाये शास्त्रमें मांस सूककर नारू होता है, एसा लिखा है, लेकिन् प्रमाणसें सिद्ध नहीं होता, ऊपर जो लिखा है सो यथार्थ है, इससे महीन इंडे पाणीमें रहते हैं, जो विगर छाणे पाणीसे स्नान पानादि करते हैं, उनोके ये रोग जरूर होता है, श्रीधरजी पंडित अमृतसागरके नोटमें लिखा है एक अंगरेज गंधे जलमें पहरभर सिकारके वास्ते खडा रहा, सो मेरे सामने रामजी गणो डाकटरने दोनों पेरोंमेंसे पचास नारू निकाले, इसीवास्ते जैन धर्मवालोंका सिद्धांत हुकम है की पाणी दिनमें दो वखत छाणना और रातकूं जल पीणा नहीं, इस हुकमकी तामील करणेवालोंकों नारू कभी नहीं निकलता, वारीक इंडे चमडीमें प्रवेश कर अंदर वढता है पीछे वाहर आता है, वाला निकलणेकी सरुआत दो तीन तरेसें होती है, किसी २ के तांतका गुंचला चमडीमें जाहिरा मालम देता है, किसी२ के सोजा तथा दरद होकर पककर फूटता है, तांत वाहर आती है, किसी २ कूं पित्ती निकलती है, वहोत तकलीप होती है, (इलाज) जो दिखता मालम

दे तो निकलवा डालणा शस्त्रसे चमडी काटके और, स्वतः तांत बाहिर आवे तो उस तांतकुं बांध देणा क्योंकी जिससे अंदर पीछा नही जासके जो खेंचणेसें तूट जावे तो वहोत तकलीप होती है, (इलाज) एक नारू सहस दारू है, लेकिन् मुख्य पतवाणे भये इलाज लिखते हैं) मूंकरे वाद छाणे भये पाणीके होदमें वेठणेसे निकल जाता है पहरभरमें) हींग अफीमका लेप वहोत दिनोंतक करणेसे, मूं करणेके पहली, अंदर साफ होता देखा है, माह सुदि सत्तमीकूं निराहार मिश्रीचावै तो नारू होताही नही, एसी वृद्ध संप्रदायसे सुणी है, लेकिन् सांझ पडे वाद घरसे वाहर उस रातकुं न निकले तारे नहीं देखे, जो भूखा नहीं रहसके तो सांझकूं पाव मिश्री चावै कृत्य ऊपर मुजव)–३ नारू जव वहोत जोर करे या तूट जावै या तोडपड जावै तो पहले काले तिलोंकों एक कडाईमें एसा सेके सो जलणे जैसा हो जावै, वाद उनोंको पीस सव सूजनपर लेप कर देवे मू खुला रहणे दै, वाद क वार पट्ठेकी गिरतो ४ उसकूं एक मट्टी पात्रमें डाल उसमें तेल १ रुपेभर एक रुपेभर ईसपूगल मासाभर सिंदूर रत्ती सुहागा रत्ती अफीम रत्ती नोसादर डालके अंगारपर सिजावै, वाद एक आक पत्ते पर लेके नारूके मूंपर धरे और वाकी आकके पत्तोंपर तिलीका तेल लगाकर दो पत्ते आपसमें जोड अंगारपर जरा गरम कर तिलोंका जहां २ लेप है, उसपर धरके कपडेसे वांध देवे तीसरे दिन पट्टा खोले, एसे तीन ४ पट्टे वांधणेसे सव दरद और नारू गलके निकल पडेगा, घाव भरणेकूं गाभणिया फोहा वांधाकरे, या किसी मल्लमकी चत्ती लगावे, ४ नीलाथोथा जलमें उकाल नारू पर झारा करे, सुहावते जलका और गाभणिया फोआ वांधे आराम होता है, ५ आकके पत्ते एरंडके पत्ते एरंडी तेलका पोता अफीम धतूरेका पत्ता नीवके उवाले भये पत्ते, हींग कारवोलिक तेल, सांबू, कांदे दोनो मिलाके,पकाये भयेका पट्टा इत्यादिसे नारू मिटता है, साफ नही होय जहांतक हलणा चलणा नहीं, नहीं तो तोड पडता है, प्रभातसमे वीकानेरकी मिश्री देसी खांडकी चाव पाणी नहीं पीवे तो नारू अंदर साफ होजाता है.

(व्याउफटणी)–(विपादिका)–(चिल्वलेन)–हाथ पैरोंमें जरा सोजन दाह खुजली आकर उसमें फटणा होता है, ये एक हलके तरेका कुष्ट रोग है, और वो भीगी जगा तथा शरदी हवाके कारण होता है, (इलाज) कोढमें लिखे सव इलाज करणा, कोकम जो गुजरातमें खटाई होती है उसका तेल मंहदीके पत्तोका लेप, रालका लेप, वडके दूधका लेप वगेरे फुलमा तथा मोम लगाकर जलती धत्तीसे सेकणेसे दरद फोरन मिटता है, शरदी और भीजी जगेसे वचके रहणा ठंडे जलसे धोणा नहीं पांवोमें मोजे रखणा.

(विचर्चिका)–(लेप्रा)ये–एक कोढ और करोलियेकी जातका रोगहै करोलियेके रोगमें चक्कर वदनमें हर किसी जगे होकर फोंतरे उडने हैं,जिसकूं विभूती कहते हैं, और ज्योंची

हाथ पैरो के तलेमें तेसें जांघ और गोडोंके तथा पैरोंके ऊपर गिरियेके पास चीरे पडते हैं, खुजली आती है, और खरूंट जमते हैं (इलाज) तनदुरुस्ती सुधरे एसी दवायों देणी कोढके सब इलाज इसपर चलते हैं बाहरके इलाजमें गंधक तथा पारेकी मिलावटका मलम अच्छा है खस खुजलीका सब मलम अच्छा है २ रसोत कोकमका तेल मेंहदीके पत्तोंका लेप रालका मलम वडके दूधका लेप वगैरे फायदे बंद है, ३ दाहकूं मिटाणेवाली दवायें जेसके आंवलेका चूर्ण त्रिफला चूर्ण गुलकंद आंवलेका मुरब्बा वगेरे, बद हजमी और बध कुष्ट होणे देणा नहीं.

(चित्री)–(व्हाइटलेप्रा)–येभी करोलियेकी जातका चमडीका रोग है चमडीपर खुजली आती है और खुजालणेसें चमडी परकी फोतरी ऊतर जाती है सुपेद चट्ठ पडते हैं चित्री मूपर और पीठपर जादा होती है–(इलाज)–काली जीरी खिलाणी कालीजीरीका लेप २ गधकका लेप ३ तिलका मालिस ४ बावची पाणीमें पीस उसका लेप करणा ५ हरतालका लेप गोमूत्रमें पीसकर करणा हरताल १ भाग त्रिफला १ भाग कालीजीरी ४ भाग ६ नील थोथेके पाणीमें तेल मिलाकर मसलणेसें चित्री जल्दी आराम होता है.

किरण ९ मी.

छुटकर रोग. एकाएक होणेवाले.

बाकीरहे जो रोग तथा अकस्मात पैदा होणे वाले शरीर और मन संबंधी इजाओंका वर्णन इस किरणमें प्रकास करते हैं.

(आंगुलियोंकीवादी)–अंगुलियोंमें वादी आणेसें लिखते आंगलियें धूजती है–(इलाज) सुद्ध कुचलेका प्रमाण मुजब कितनेएक दिनों तक सेवन कराणा.

(कमरका झिलणा)–(लम्बेगो)–कम्मरमें वादी आणेसें कमर झिल जाती है–(इलाज) कुचलेकी फक्की, वछनाग. वडी हरडेका सेवन, एरंडीकी जडकाचूर्ण, योगराज गूगल, २ गईकी पट्टियें मारणी, वंशीकी शिकलवाली, फलालीनकी कोथली करके, उसमें गंधकका भूका भरके, वो कोथली कमरपर बंधी रखणी, टरपेन्टाइन, तथा सालिड तेल लगाणा, १ भाग आमोनिया, तीन भाग तेल मिलाकर, कमरपर मसलणा, आयोडाइन-पेइन्ट. ओपियमलीनींमेन्ट.

(कमरका दुखणा)–औरतोंके बेर २ कमरमें दरद हो जाता है, रजोदर्शन याने ऋतुधर्मकी वखतमें, सहजसा दुखता है, लेकिन जो ऋतुधर्म संबंधी कोइ रोग होता है तो दरद बढता है, कुसुआवड (अधूरजाणा) प्रदर वगैरे, कमर दुखणेके कारण है–(इलाज)–जिस कारणसे दरद भया होय उसका इलाज करणा, स्त्रीयोंके रोगके किरणमें आगे लिखा है, योगराज गूगल अथवा सादा गूगल, अछा इलाज है.

(पसीना)-(परस्पीरेशन)-हरेक अदमीके वदनके छेदोमेंसे पसीना हमेस आया करता है, हवा और कपडोंके स्पर्शसे सूककर, दिखाई नहीं देता, लेकिन् किसी २ वखत वदनके प्रसिद्ध जगोंमें, अथवा दिनके चोकस वखतमें, पसीना आता है रातकूं पसीना आता है, तव वुखारकी शंका पैदा होती है, नाताकती, तथा जीर्णज्वरमें, रातकूं पसीना आता है, क्षयरोगमें तथा उरक्षतमें, जव मर्मस्थानमें जखम पडता है, तवभी रातकूं पसीना आता है, इस वुखारकूं प्रलेपकज्वर कहते हैं, अंग्रेजीमें हेक्टीक फीवर कहते हैं-(इलाज)-(वशंतमालती नं० ५४) वुखार सिवाय दुसरे कारणोसे, शिर, कपाल, वगल वगेरे, अवयवोमें, वहुत पसीना आया करता है, उसकेवास्ते गरम दवायें खाणी, कुलथीका आटा मसलणा.

(थूक)-(वहोत थूकका आणा)-(सलावेशन)-(कारण)-दांतोंके मसूंढे और मूंके वरमसें ठंढ नाताकती अजीर्ण दांतोका आणा और पारे संवंधी दवाखाणेसे मूंमें वहोत थूक आता है-(इलाज) १ फिटकडीके कुरले करणा ये सवसे अच्छा इलाज है, स्तंभक दवायें, जैसेकै, कचनारकी छाल वेरकी छाल, खैरकी छाल, वांवूलकी छाल, पंचवल्कल तथा सुहागेका कुरला करणा, जिसकारणसे, थुक आता होय वो कारण वध करणा.

(स्वरभंग)-(सादवैठजाणा)-गलेके मर्मस्थानमें कोइ दरद होणेसे गरम चीजों खाणेसें तेसें शरदी लगणेसें साद वैठ जाता है-(इलाज)-१ आंवलेका चूर्ण सांझकूं दूधके संग पीणा, कत्था, इलायची, खैरसार, कवावचीणी वगैरे ठंढी दवायें कठकूं खोलती है, वंवूलके पत्ते वेहडेकी छाल, नागकेशर, चिरमीके पत्ते, मोलेठीका सत वगेरे अवाजकूं सुधारती है, २ फिटकडीके कुरले करणा, अथवा पोर्ट वाइन, पाणी मिलाकर उसके कुरले करणा ३ वहुत वोलणेसें या वहोत गाणेसें अवाज वैठगई होय तव कंठकूं आराम दैणा मौन रखणा या गरम दूध घी डाल पिलाणा हरडे वटियाकी छाल छमासा आने भरपाणीमें उकाल सुहावता हरडे-समेत पीणेसें स्वरभग मिटता है गाणे-वालेकूं इतनी चीजें अच्छी है (दुहा) सूंठ कुलिंजन मिरमिरी राई पींपर पान इतना लेवे मिलायके कठकोकिला जाण (१) इतनी चीजें विद्या पढणे वालेकू और गाणेवालेकू त्यागणा चहिये (दुहा) खट्टा खारा खोपरा, सोपारी अरुतेल, जो विद्या गाना चहै, इतना दूरां मेल (१)

(हिचकी)-(हिक्कप)-करडा और लूखा और दस्तवंध करणे वाले पदार्थ ठंडापाणी ठंडाअन्न धूआं धूल नाकमें जाणा गरमी तथा हवा वहोत खाणी उपवाश ये सव हिचकीकू पैदा करणेवाले सामान्य कारण है-(इलाज)-मोर पखकी भस्म तथा लीडीपीपर सहत मिलाकर वेर २ चाटणा २ मोलेठीका चूर्ण सहतमें चाटणा ३ धमासेके क्वाथमें

सहत मिलाकर देणा ४ आंवला पींपर तथा सूंठका क्वाथ मिलाकर पीणा ५ रढाभया दू पीणा ६ उडद तथा हलदीके चूर्णकी बीडी पीणी ७ संभालूका क्वाथ पीणा ८ लस घीमें तलके खाणा.

(कफकाजाला)–वहोतसी वखत छातीमें कफका जाला जमता है, उसकुं मिटा कफकूं नाश करणेवाली दवायोंका उपयोग करणा–(इलाज)–आंधी झाडेका खार अरडूसेका रस सहत मिलाकर पीणा २ आकके जडका चूर्ण अथवा एपीका क्युआन्ह पाउडरसे, उलटी कराकर कफकूं निकलवा देणा ४ कोनरूगूंद टंकणखार नवसादर दरयेक चीज कफके चिकणे व लगमकूं तोडता है.

(वाल निकालणेका इलाज)–हरताल ॥ द्राम चूना ४ द्राम गहूंका आटा १ द्राम जलमें मिलाकर उसकी पोटिस लगाणी थोडी देर रखकर निकाल डालणी और तिलका तैल लगाणा इससे वाल गिर जाते हैं, २ हरताल ॥ तोला शंखका चूर्ण अथवा शंख-भस्मी १॥ तोला पलासपापडेका खार ॥ तोला इनोंकों केलेके थडके रशमें अथवा आकके पत्तोंके रशमें घोट लेप करणा ३ हरताल १ भाग शंखचूर्ण २ भाग मनशिल ॥ भाग साजीखार १ भाग इनोका लेप करणा पहली उस्तरेसे वाल निकाल डालणा पीछे सात दिन हमेस लेप करणेसे फेर वाल ऊगेगा नहीं.

(वाल रंगणेका इलाज)–(कल्य) (खेजाब)–(केनाईटीस)–बुढापेमें वाल सुपेद हो जाते हैं, मगजकी नाताकती फिकर और मा बापके होय तो बच्चेके जुवानीमेंभी वाल सुपेद हो जाते हैं सुपेदी होणेसे लोक बुड्ढा कहा करते हैं चंद्रवदनियां बाबाजी कहकर हसती है इसवास्ते वहोतसे लोक काले वाल किये चाहते हैं १ मंहदीके पान पीस एक घंटे वालोंके लगाये रखणा उससे वाल लाल होगा पीछे नीलके पत्ते पीस थोडे घंटे बांध रखणेसें वाल काले होंगे २ त्रिफला नीलके पत्ते लोहका बुरादा भांगरा इनोंकों बकरीके पेशावमें पीस लेप करणा ३ आंवला ३ वहेडा १ हरडे २ आंबेकी गुठलीके अंदरका मगज ५ भाग लोहका बुरादा १ भाग इस वजनसे लेकर महीनपीस लोहकी कढाईमें धर रखणा दुसरेदिन लेप करणा ४ हाइपोसल्फेट ओफ सोडा १ द्राम पाणी संगमिलाकर दो चार दिन वालोंपर लगाणा ५ नाइट्रेट ओफ सिल्वर ३० पाणी १ औंस ये पाणी लगाणेसे वाल काले होयगें लेकिन् चमडीपर दाग गिरता है, दाग निमक अथवा साइनाईड ओफ पोटाशके पाणीसे निकल जाता है.

(हडकवायू)–(हाईड्रोफोबीआ)–हिडकियाकुत्ता वरु स्याल वगेरे जानवरोंके काटणेसें अदमीकूं हडक वायूका रोग होता है शरीर खिचता है गलेमें अवाज होता है मूंमेंसे लाले झरती है पाणी पीणेसें, या देखणेसें, वायुका जोर उठता है पाणीमें ये रोगी डरता है हडकवायु उठेबाद रोगी दो तीन दिनमें मर जाता है–(इलाज)–जिस जगेका-

टा होय उस जगेकुं तुरत काट डालकर जला देणा ये हडकवायु उठे वाद फेर मिटाणेका इलाज फायदेवंद अभीतक कोइ मिला नहीं है, पहलीके तो इलाज और मंत्र करके अजमायाभी है सो हडकवायु विलकुल उठा नही आराम होगया रोगीकूं अंधारी कोठडीमें रखणा नशोंकों ढीली करे एसी दवा देणी जैसेके अफीम भंग वेलाडोना वगेरे दवा देणी २ कूकडवेल देणेसें सख्त उलटी होकर जहरी जानवर निकल जाते हैं, तेज उलटीकी दवासे रोगी वचता है योगचितामणीमें इस रोगकी दवा लिखी है सो देख लेणा.

(लू लगणी)–(सन्स्ट्रोक)–धूपमें फिरणेसें लूलगती है वच्चोंकों धूपका असर जल्दी मालम देता है, दाह प्यास शिरमें चक्कर भ्रमण आखर वेहोश तक होणा ये उसके चिन्ह है, (इलाज) खट्टी तथा पित्त शामक दवायें देणी, २ वहुफली तेसें तुकमरियांका लुआव पिलाणा, ३करमाला पिलाणा, ४गेरू तेसें चंदनका लेप करणा, ५ शिरपर तेसें छातीपर ठंढा पाणी डालणा अथवा वरफ धरणा पोंचीपर विलष्टर मारणा पेरोंकी पींडीयोंपर राईका लेप करणा, ६ वदन वहोत गरम होय तो साधारण गरम पाणीमें रोगीकू वैठाणा जुलाव देणा वुखार मिटाणेकी दवा देणी धूपमें फिरणेकी जरूर पडे तो शिरपर गीला कपडा रखणा शिरपर आकके पत्ते वांधणा दारू वगेरे जल्द पतला पदार्थ पीणा नहीं लेकिन् चा सोडावोटर और ठंढा शरवत पीणा और पसीना होणे देणा एसा करणेसे फेरभी लूलगेतो छायामें जा सोणा और शिरपर ठंढा पाणी डालणा.

(अनिद्रा)–नींद नहीं आणा ये दिवाना होणेका पूर्वरूप है कितनेक रोगोमें वहोत दरद होणेसें तैसें चिता डर वगेरे कारणसें निद्रा जाते रहती है–इलाज–जो कारण होय उसकूं रोकणा मगजमें जादा गरमी होणेसें अनिद्राका रोग भया होय तो मगजकूं शांत करे एसा ठंढा इलाज करणा जैसेंके पेठा पाक, दूधी (कद्दूका पाक) अथवा हलवा १ रातकू गरम पाणीसें स्नान करणा और रातकू शिरपर ठंढा पाणी डालकर सोणा सोते वखत गरम किया दूध पीणा पग चंपी कराणी पेरोंके तजवे घीसे मसलाणा २ गुडमें पींपला मूलका चूर्ण खाणा ४ पीलू (जालकी जडका क्वाथ) गुड डालकर पीणा ५ दूध सहत दही तेलका मालिस शिरमें कानमें आंखोमे तेल डालणा ६ शाक दाल घी तेसें दूधमें कादेका रश देणा ६ अफीम तथा भांग फजूल नींद कृत्रिम लाती है, दुखकूं भुलाणेके वास्ते ये कैफी चीजें कामकी है लेकिन् जहांतक साधारण इलाज नींदके वास्ते वण आवे तहांतक एसे नसेका इलाज करणा नहीं.

(मूर्च्छा)–(फेइन्टिंग)–ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियोंमें दोष प्रवेश करता है तव मूर्च्छा आती है थोडी देर वाद वेहोस रह कर फेर होसमें आणा उसकूं मूर्छा कहते हैं मूर्च्छा ये विशेष करके मन संवंधी विकार और मनका धक्का लगणा है–(इलाज)–मूर्च्छावाले अदमीकूं शिर नीचे करके वैठाणा मूंपर ठंढा पाणी छिडकणा ठंढा पाणी तेसें

हत मिलाकर दैणा ४ आंवला पींपर तथा सूंठका क्राथ मिलाकर पीणा ५ रढाभया दूध ोणा ६ उडद तथा हलदीके चूर्णकी बीडी पीणी ७ संभालूका क्राथ पीणा ८ लसण ोमें तलके खाणा.

(कफकाजाला)–वहोतसी वखत छातीमें कफका जाला जमता है, उसकुं मिटाणे फकूं नाश करणेवाली दवायोंका उपयोग करणा–(इलाज)–आंधी झाडेका खार २ रडूसेका रस सहत मिलाकर पीणा ३ आकके जडका चूर्ण अथवा एपीका क्युआन्हा ाउडरसे, उलटी कराकर कफकूं निकलवा दैणा ४ कोनरूगूंद टंकणखार नवसादर ये रयेक चीज कफके चिकणे व लगमकूं तोडता है.

(वाल निकालणेका इलाज)–हरताल ॥ ड्राम चूना ४ ड्राम गहूंका आटा १ ड्राम ालमें मिलाकर उसकी पोटिस लगाणी थोडी देर रखकर निकाल डालणी और तिलका ल लगाणा इससे वाल गिर जाते हैं, २ हरताल ॥ तोला शंखका चूर्ण अथवा शंख- स्मी १॥ तोला पलासपापडेका खार ॥ तोला इनोंकों केलेके थडके रशमें अथवा ाकके पत्तोंके रशमें घोट लेप करणा ३ हरताल १ भाग शंखचूर्ण २ भाग मनशिल ॥ ाग साजीखार १ भाग इनोका लेप करणा पहली उस्तरेसे वाल निकाल डालणा पीछे ात दिन हमेस लेप करणेसे फेर वाल ऊगेगा नहीं.

(वाल रंगणेका इलाज)–(कल्य) (खेजाव)–(केनाईटीस)–बुढापेमें वाल सुपेद हो ाते हैं, मगजकी नाताकती फिकर और मा बापके होय तो बच्चेके जुवानीमेंभी वाल ुपेद हो जाते हैं सुपेदी होणेसे लोक बुढ्ढा कहा करते हैं चंद्रवदनियां बाबाजी कहकर सती है इसवास्ते वहोतसे लोक काले वाल किये चाहते हैं १ मंहदीके पान पीस एक टे वालोंके लगाये रखणा उससे वाल लाल होगा पीछे नीलके पत्ते पीस थोडे घंटे ांध रखणेसें वाल काले होंगे २ त्रिफला नीलके पत्ते लोहका बुरादा भांगरा इनोकों करीके पेशाबमें पीस लेप करणा ३ आंवला ३ वहेडा १ हरडे २ आंबेकी गुठलीके ादरका मगज ५ भाग लोहका बुरादा १ भाग इस वजनसे लेकर महीनपीस लोहकी ाहीमें धर रखणा दुसरेदिन लेप करणा ४ हाइपोसल्फेट ओफ सोडा १ ड्राम पाणी " संगमिलाकर दो चार दिन बालोंपर लगाणा ५ नाइट्रेट ओफ सिल्वर ३० पाणी १ औंस ये पाणी लगाणेसे वाल काले होयगें लेकिन् चमडीपर दाग गिरता है, दाग निमक अथवा साइनाईड ओफ पोटाशके पाणीसे निकल जाता है.

(हडकवायू)–(हाईड्रोफोबीआ)–हिडकियाकुत्ता वरु स्याल वगैरे जानवरोंके काटणेसें ादमीकूं हडक वायूका रोग होता है शरीर खिंचता है गलेमें अवाज होता है मूंमेंसे ाले झरती है पाणी पीणेसें, या देखणेसें, वायुका जोर उठता है पाणीसे ये रोगी डरता हडकवायु उठेबाद रोगी दो तीन दिनमें मर जाता है–(इलाज)–जिस जगेका-

टा होय उस जगेकुं तुरत काट डालकर जला देणा ये हडकवायु उठे वाद फेर मिटाणेका इलाज फायदेवंद अभीतक कोइ मिला नहीं है, पहलीके तो इलाज और मंत्र करके अजमायाभी है सो हडकवायु विलकुल उठा नहीं आराम होगया रोगीकूं अंधारी कोठडीमें रखणा नशोंकों ढीली करे एसी दवा देणी जैसेके अफीम भंग वेलाडोना वगेरे दवा देणी ३ कूकडवेल देणेसें सख्त उलटी होकर जहरी जानवर निकल जाते हैं, तेज उलटीकी दवासे रोगी वचता है योगचिंतामणीमें इस रोगकी दवा लिखी है सो देख लेणा.

(लू लगणी)–(सन्स्ट्रोक)–धूपमें फिरणेसें लूलगती है वचोंकों धूपका असर जल्दी मालम देता है, दाह प्यास शिरमें चक्कर भ्रमण आखर वेहोश तक होणा ये उसके चिन्ह है, (इलाज) खट्टी तथा पित्त शामक दवायें देणी, २ वहुफली तेसें तुकमरियांका लुआव पिलाणा, ३करमाला पिलाणा, ४गेरू तैसें चंदनका लेप करणा, ५ शिरपर तेसें छातीपर ठंढा पाणी डालणा अथवा वरफ धरणा पोंचीपर विलष्टर मारणा पैरोंकी पींडीयोंपर राईका लेप करणा, ६ वदन वहोत गरम होय तो साधारण गरम पाणीमें रोगीकूं वैठाणा जुलाव देणा वुखार मिटाणेकी दवा देणी धूपमें फिरणेकी जरूर पडे तो शिरपर गीला कपडा रखणा शिरपर आकके पत्ते वांधणा दारू वगेरे जल्द पतला पदार्थ पीणा नहीं लेकिन् चा सोडावोटर और ठंढा शरवत पीणा और पसीना होणे देणा एसा करणेसे फेरभी लूलगेतो छायामें जा सोणा और शिरपर ठंढा पाणी डालणा.

(अनिद्रा)–नींद नहीं आणा ये दिवाना होणेका पूर्वरूप है कितनेक रोगोमें वहोत दरद होणेसें तैसें चिंता डर वगेरे कारणसें निद्रा जाते रहती है–इलाज–जो कारण होय उसकूं रोकणा मगजमें जादा गरमी होणेसें अनिद्राका रोग भया होय तो मगजकूं शांत करे एसा ठंढा इलाज करणा जैसेके पेठा पाक, दूधी (कद्दूका पाक) अथवा हलवा १ रातकूं गरम पाणीसें स्नान करणा और रातकूं शिरपर ठंढा पाणी डालकर सोणा सोते वखत गरम किया दूध पीणा पग चंपी कराणी पेरोंके तजवे घीसे मसलाणा २ गुडमें पींपला मूलका चूर्ण खाणा ४ पीलू (जालकी जडका क्वाथ) गुड डालकर पीणा ५ दूध सहत दही तेलका मालिस शिरमें कानमें आंखोमे तेल डालणा ६ शाक दाल घी तेसें दूधमें कांदेका रश देणा ६ अफीम तथा भांग फजूल नींद कृत्रिम लाती है, दुखकूं भुलाणेके वास्ते ये कैफी चीजें कामकी हैं लेकिन् जहांतक साधारण इलाज नींदके वास्ते वण आवे तहांतक एसे नसेका इलाज करणा नहीं.

(मूर्च्छा)–(फेइन्टिग)–ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियोमें दोप प्रवेश करता है तव मूर्च्छा आती है थोडी देर वाद वेहोस रह कर फेर होसमें आणा उसकूं मूर्छा कहते हैं मूर्च्छा ये विशेप करके मन संवंधी विकार और मनका धक्का लगणा है–(इलाज)–मूर्च्छावाले अदमीकूं शिर नीचे करके वैठाणा मूंपर ठंढा पाणी छिडकणा ठंढा पाणी तेसें

हवा डालणी सोणेके कमरेमें ठंढी हवा आणे देणी खुली हवामें रोगीकूं लेजाणा २ साव-चेत करणेवाली दवाकी नाश सुंघाणी हाथ पैर अच्छीतरे मसलणा.

(वेहोसी)-(कोमा)-खोपरीकूं इजा मगजका रोग मूर्च्छा सापका डसणा अफीम तथा दारू वगेरेका जहर वहोत ठंडी वहोत गरमी भूख वाई (मिरगी) हिस्टीरीया वांइटे वगेरे वेहोसीका कारण है, (इलाज)-१ जिस कारणसें वेहोसी आई होय वो दूर करणेका इलाज करणा आंखपर शिरपर ठंढा पाणी छिडकणा, २ तीखी नाश देणी जैसेके अकलकरा कपूर कांदेका रस तज नकछींकणी पींपर वगेरे ३ आमोनिया सुंघणा ४ छातीपर राई मारणी और वेहोसी जादा वखत रहे तो दस्त पेशावका कोईभी रस्तेसें खुलासा करणा.

(तंद्रा)-(मींट)-ये सन्निपात ज्वरका अथवा भयंकर किसीभी रोगका लक्षण है, इस रोगमें वायु प्रधान होणेसे रोगी आंख मूंचकर पडे रहता है, (इलाज)-सन्निपातकी मींटमे सन्निपातका इलाज करणा और तेज अंजन करणा (भारंग्यादि काथ नं० १९६) १९७ अच्छा है २ जो रोगीके मर्मस्थानोंमें कुछ चैतन्य होय तो शरीरमें जाग्रती लाणेवाली दवा देणेसे होंस आता है. कस्तूरी अकलकरा तुलशी लींडी पींपर वच्छनाग सूंठ ये हरेक वस्तु जागृती लाती है ३ मींट दूर करणेकूं तज पींपर त्रिकटु वगेरेका अंजन किये जाता है.

(चक्कर)-(भमल)-(गीडीनेस)-रोगी वाहरकी चीजोंकों फिरती देखता है अथवा अपणा वदन और शिर फिरता मालम देता है मगजकूं कुछ तकलीफ पहोचणेसें तमाखू सराप वगेरे नसेकी चीजोंसें क्विनाइन जैसी दवायोंसें पांडू नाताकती फिकर चिंता तथा महनतसे खराव वदवोसें वुखार तथा हींडोलेके हींडणेसें चक्कर आता है, वहोत उंचा चढके नींचा देणखेसें पित्तका विगाड ये भमलका मुख्य कारण है, इस-वास्ते कारण जाणके इलाज करणा, (इलाज)-सोंफ काली मिरच मुनक्का घोटकर पीणेसें पित्तका चक्कर मिटता हैं, नसेका चक्कर ठंढा जल आंखोंपर छांटणेसें मिटता है, ... मींठ विदाम और मिश्री घोट पीणेसें मगज संवंधी चक्कर मिटता है सूंठ घीमें ... चूरा मिलाय खाणेसे सवतरेका चक्कर मिटता है, धमासा रुपेभर उकाल घी डालके पीणा फेर दोपानुसार इलाज करणा.

(सोजा)-(ड्रोप्सी)-सोजा सव वदनमें होता है किसी एक ठिकाणेभी होता है उसकूं अंग्रेजीमें (इन्फलेमेशन) सें जुदाही रोग गिणते हैं दुसरे कितनेक रोग सोजेका कारण होता है, तोभी वो रोग दवकर शोथ रोग मुख्य रोग होजाता है, इसवास्ते देशी वैद्यक शास्त्रमें उसकुं जुदा रोग गिणा है, (इलाज)-(१ पुनर्नवादिकाथ नं० २१९) २ पवित्र चूर्ण (नं० २२२) ३ नारसिंह चूर्ण (नं० २३१) ४ सूंठके उका-

लेमें दूध डालकर पीणा ५ त्रिफलाके क्राथमें भेंसका घी डालके पीणा ६ गुड, तीन वर्षका लींडीपीपर तथा सूंठका चूर्ण खाणा ७ त्रिफला दारूहलदी पटोलपत्र देवदारू नीमगिलोय नींमकी छाल मकोय इनोकुं सम वजन लेके क्राथकर ठंढा होणेपर सहत डालकर पिलाणा पथ्यमें पुराणे चावल या मूंगकी दाल निमक नहीं देणा ८ धतूरेके बीज शुद्ध तो. १ हींगूल शुद्ध तो. १ काली मिरच तो. २ दूधमें खरलकर रत्ती २ दो नो वखत विना मीठे गउके दूध संग देणा, पथ्य खाली दूध या चावल मिलाकर ९ इसीतरे वसंत मालतीभी इस अनुपांनसे सोजा उतारती है १० संग्रहणी रोगमें दस्तके थांभणेकी दवा देणेसें जो सूजन आई होय तो हमारी बनाई अमृतवटी या ग्रहणी जीप करश तक्र और जीरे सूंठके संग देणा (११ बाहरका इलाज)–साटेकी जड सूंठ तथा वछनागका लेप १२ कांकच आक तथा एरंडीकी जड इन तीनोंकें पत्ते पीस गरम कर लेप करणा ९ दोपघ्न लेप नं० ३११.

(दाह)–जलण दोतरेसे होती है एक तो किसीभी जगे, दुसरी सब वदनमें, जखममें, भिलावा वगेरे दाहक चीजोंके स्पर्शवाले भागमें, और हाथ पैरोंमें दाह होती हैं, वो तो स्थानिक दाह कहलाती है बुखार वगेरे कितनेक रोगोमें सब वदनमें दाह होती है, (इलाज)–दाह मिटाणेकुं ठंढा इलाज करणा एक ठिकाणेके दाहमें लेप वगेरे बाहरका इलाज और सब वदनके दाहमें पेटमें दवा खाणेकूं देणा २ दशांग लेप चंदन तथा वाला मख्खण अरीठेका जल नवसादरके जलमें भीगाया भया कपडा गुलाब जल लवंडर तथा कोलनवोटर ३ शरीरक दाहमें पीणेकी दवा पित्त शामक दवाये (पृष्ठ २८०) गुलकद गाजुवांका रश गिलोयका रश तुकमरियाका लुआब वहुफली गोखरू त्रिफला अनार दाख धाणा पित्तपापडा बीलका शरवत चंदलियेका शाग जवका पाणी कली चूनेका पाणी चंदन तथा सूंठकूं घसा भया पाणी चावलोंका धोवण चंदन मिश्री और सहत.

(पकणा)–(सप्युरेशन)–किसीभी जगे या मर्मकी जगे पकणा तीक्ष्ण दाहसे जितना रोग हो जाता है उससे वदनमें किसीभी जगे पकणा होता है. फेफसा आंतरा यकृत् मगज ये उसकी मुख्य जगे है खूनका जमाव सोजा दाह तथा बुखार ये उसके मुख्य लक्षण है (इलाज)–पोस्तके डोडोके जलका शेक २ अलशीकी पोटिस ३ नवसादरके जलका पोता.

(हड्डीका सोजा तथा सडणा)–इसका मुख्य कारण उपदंश होता है गरमी सुजाकका आगे वढा भया दोष हड्डीमें दाखल होकर उसमें सोजा तथा सडा पैदा करता है, (इलाज).१ योगराज गूगल २ शुद्ध पारेसे वणा भया और पारेकी सोना भया रस

कपूर हिंगूल वगेरे दवाभी इस रोगमें फायदेचंद है चतुर वैद्यकी राहसें लेणा जो दवासे नहीं सुधरे तो आखर शस्त्रसे सडा भया भाग निकलवा डालणा.

(ग्रंथी)-(गांठे)-(ट्युमर्स)-रसोली अर्बुद विद्रधी गलगंड कंठमाला वगेरे वहोत तरेकी गांठे होती है, ये गांठे शरीरकी विगडी हालतकूं कहती है अर्थात् वदनमें खून वगेरे धातू विगडणेसें एसी गांठे निकलती है इसवास्ते बाहरका इलाजकरनेसे अंदरका इलाजकीवहोत जरूरी है, (इलाज)-खून सुधारणेवाली दवा जैसें कोडलीवर आयर्न वगेरे डाकतर देते हैं (देशी दवा) कचनार ग्रंथी रोगपर वहोत तारीफ करणे लायक लिखी है कचनार दरखतकी छालका क्वाथ अथवा (कचनार गूगल नं० ४०) बाहरके इलाजोंमें ३ दोपघ्न लेप वहोत प्रसिद्ध है और उसका वहोत दिनोंतक जाडा लेप हमेश ताजा ताजा बांधणेसें दोपकूं खेंचता है ४ टिंकचर आयोडाइन हमेस दो तीन वखत लगाणा इसके सिवाय पोल्टीस शेक वगेरे पकाणेका इलाज करणा.

(रसोली)-(मोलस्कम)-एक तरेकी वहणेवाली गांठकूं रसोली कहते हैं वो दावणेसें नरम गहुंके कणक जैसी मालम देती है, चीरणेसें उसमें एक थेली मालम देती है उसमेंसें चिकणा रस अथवा गहुके कणक जैसा डूचा निकलता है उसका पीप खराव वदवो मारता है (इलाज)-गुल देणेसे तथा विखरणेकी दवा लगाणेसें मिटती है, २ आयोडीनपेन्ट, जो मेदकी गांठ तकलीप नहीं देवे उसकूं छेडणा नहीं अडचल देणेवाली रसोली जो उपर लिखे इलाजसें अच्छी नहीं होय तो शस्त्रसे निकलवा डालणी.

(तिल्ली)-(स्पलीन)-पेटके वांई तरफ पांसलीके नीचे तिल्ली विपम ज्वर और मेलेरियाके ठंढ देके वुखारमें पैदा होती है जव ये वहोत वढती है तव सव पेटमें भर जाती है ठंढके तपके हुमलेमें तिल्ली खूनमें भर जाती और उसमें खून जमजाता है, इसी सवचसें तिलीवालेका चहरा खून विगरका फीका लगता है, (इलाज)-१ तिल्ली-पर ऊमर मुजव २५ जोके लगाणी २ जो इस रोगमें दस्त नहीं लगता होय तो दस्त लाणेकी दवा देणी जैसेके हरडे अथवा सल्फेट ओफ सोडा कीनाइन और आयर्न देणा स्वतः दस्त लगता होय तो सोडा नहीं देणा ३ बुखार संग होय तो बुखारकी देणी ४ जो बुखार विगर तिल्ली कुछभी दरद करे विगर वढती होय तो कीनाइन और लोहकी वणी दवा देणी ५ ऊपरकी चमडी गीली होय तहांतक पौष्टिक दवायें तिल्लीपर हमेस टिंकचर आयोडीन लगाणा ६ आयोडाइड ओफ मर्क्युरीका मलम लगाणा ७ कुमारिकासव लोहासव, मंडूर भस्म, चंद्रप्रभा सहजणा सरपखा इसकी छालका चूर्ण अथवा क्वाथ पीणा.

(कान्वलाई)-(एवसेस)-काखके अंदरका फोडा)-(इलाज)-इसपर ग्रंथीका उपाय करणा २ अफीमके डोडोंका गरम पाणीका सेक करणा अलशीकी पोल्टिस

अथवा गहूंकी पोल्टिस बांधणी पके पीछै उसकूं फोडणी दवा लगाकर या शस्त्रसें पीछे भरणेका इलाज करणा.

(वद)–(ब्यूबो)–वदकी गांठ आजकल वहुतोंके होती है वो वदफेली सुजाक और गरमीसें होती है, (इलाज)–दोपघ्न लेप अलशीकी पोल्टिस २ नवसादरका पोता ४ वडके दूधकी या गूलरके दूधकी या कोनरू गूदका लेप करणा या पट्टी मारणी ५ पारेका मलम ६ सीसेकी वट्टी या गुड चूनेका लेप कर रुई चपकाणा ७ या गुडकूं पाणीमें डाल उकालते जाणा और भंग पीस बुरकाते जाणा जाडा भये वाद लुपरी बांधणी दुसरे दिन फेर इसीतरे वहोत दिन करणेसें बैठ जाती है, पकणेसें चीरा दिलाणा या दवा लगाके फोडणा पोल्टिस बांध पीप निकाल भरणेका इलाज करणा.

(पाठा)–(कार्वकल)–(उसके लक्षण)–चमडी लाल तथा करडी जलण तथा दरद होता है, थोडे वखत पीछै सूजन दिखाई देती है, और काछवेकी पीठ जैसा उपसा भया गोल करडा फफोला उठता है सोजा वढणेके संग जलण तथा दरद वढे बुखारके लक्षण होय थोडे दिनोंमें पाठेका रग काला पडता है और सूजनके चोतरफ छोटे२ दाणे जैसी फुणसियां होती है वो फूटणेसें पाठेमें छेद पड जाता हैं, उनोंमेंसें पीप झरता रहता है, तोभी पथर जैसा करडा होता है थोडेही दिनोंमें रोगी नाताकत होकर घभरा जाता है आगे वढणेसें सव छेदके आसपासकी चमडी सडकर निकल जाती है, और उस जगे वडा खड्डा पड जाता है, उसमेंसें वदवो मारता पीप तथा मांसका छींछडा निकलते रहता है, पाठा जादा करके एकही होता है, लेकिन् कितनी एक वखत एक मीटे पीछे पासहीमें दुसरा दुसरा मिट कर तीसरा अथवा संगही पांच सात पाठे होता है, पाठा वहोत करके पीठकी करोडपर गरदनपर खंधेपर चूतडोंकी विचली दर्जी-पर कभी २ हाथ पेर होठ छाती पेट वगेरे ठिकाणोमेंभी होता है, (इलाज)–१ जुलाव लेकर पेट साफ करे पीछे बुखारकी दवा लेणी २ जलण तथा दुख मिटाणेकूं दशांग लेप गुलावजलका या कपूरके पाणीका या चंदनके पाणीका कपडा धरणा ओपियम और वेलाडोणेका लेप अथवा विलाष्टर मारणा ३ सवसें अच्छा इलाज गहूके आटेकी या अलसीकी पोटिस है, इस पोटिससें पाठा फूटे तो चीरके निकलवाणा नहीं कारण पाठेके रोगसे भई नाताकतीसे रोगी शस्त्रसह नहीं सकता फूटे पीछे व्रणका इलाज करणा गरम पाणीसें हमेस धोणा छींछडे निकाल डालणा ४ टरपेन्टाइन तथा सालिडका तेल अथवा जात्यादि तेलमें रेसेवाला कपडा या लींटकू भिगाकर पाठेकी पोलारमें दवाकर ऊपरसे पोटिस मारणी ५ कारवोलिक एसिड १ ड्राम उसकू २ औंस पाणीमें मिलाकर उसका लोशन पाठेपर धरणा और पाठेकी जमीन जहांतक दीखे तहांतक सादे मलमकी पट्टी मारणी ६ जात्यादि घृत पाठेमें भरणेसें और उसपर दोपघ्न लेपका जाडा थर लगाणेसें

पाठा जलदी आराम होता है ७ पाठेके रोगमें खून साफ करणेवाली तथा दवा ताकत वर पेटमें जरूर लेणा चाहिये.

(भगंदर)–(नवासीर)–(फिश्चुलाइनएनो)–गुदा चक्रके आसपास एक वडा-गंभीर व्रण होता है उसकूं भगंदर कहते हैं भगंदर पुराणा भये बाद वहोत वढता है तव वैठकमें दुसरा मूं करता है उस करके भगंदरमेंसें पीपके संग दस्तभी आता है एसा भगंदर मिटता नहीं (इलाज)–गुदा चक्रके आसपास फुणसिंये होय तव लंघन जुलाव वगेरे करणा त्रिफला गूगलका सेवन करणा, पथ्य प्रमेह तथा हरस मुजव करणा रातका भिजाया भया अन्न कच्चा करडा ठंढा अन्न गरम पदार्थ उंठ घोडेकी सवारी मैथुन ऊकडु वैठणा दिनकूं सोणा तथा कृमि पैदा करणेवाले पदार्थ गुड तैल वैंगण हींग जादा मिरच भगंदरवाला आराम भये वादभी वर्षभर पीछै नहीं करै भगंदर पांच ५.१ होता है, हर किस्ममें फुणसियें फोडे और जखम होते हैं इसके होणेका मूल कारण गरमी सूजाक या अशुद्ध पारेकी दवा खाणा वा जे वखत कृमिरोगसेभी ये हो-जाता है, इस रोगमें दस्तकी दवा लेते रहणा त्रिफला सनाय वगेरे २ फूटे पीछै इसकूं चतुर डाकतरसें चीराणा अथवा आकका दूध इस घावमें भरणा अथवा कोइभी नीला-थोथेका सोरेका गंधकका तेजाव या साजीखार वगेरेसें घावकूं जलाणा या गुल देणा पीछे आइडोफारम वगेरे भरके व्रण भरणेका इलाज करणा ३ निसोत तिल जमालगोटा मजीठ और सींधानिमक घी तथा सहत इन सवोंकों पीस भगंदरपर खूब मसलकर पीछै लेप कर देणा ४ हरडे वहेडा आंवला के रशमें विल्लीकी हड्डी पीस इसीतरे लेप करणा ५ थोहर तथा आकके दूधमें दारूहलदीकूं पीस उसकी वत्ती भगंदरके छेदमें देणा ६ त्रिफला भेंसा गूगल तथा वायविडंगका काढा पीणा ७ वायविडंग त्रिफला और २ भाग पीपर इनोंका चूर्ण सहत तथा तेलमें चाटणा ८ त्रिफला १८ तोला शिलाजीत शुद्ध १८ तोला पीपर १८ तोला इलायची १८ तोला वंशलोचन १८ तोला वायविडंग १८ तोला [illegible] ९ तोला समवजन वीकानेरकी मिश्री मिलाय दूध तुरतका दुहा भया उसमें डाल तोले दोयकी फकी दोनों वखत लेणी और पूर्वोक्त पथ्य करे कसरत क्रोध नहीं भारी अन्न खाय नहीं भगंदर निश्चै मिटे.

(नासूर)–(नाडीव्रण)–जखम जव रगोमें प्रवेश करता है, तव नासूर होजाता है नासूरका मूं मांकडा जखम गहरा होता है तथा उसमेंसें पाणी तथा पीप झरते रहता है, (इलाज)–१ त्रिफला गूगल आंवला योगराज गूगल हवा वदलणी (अच्छा पथ्य खुराक) तथा चोफलिया चीरा दिलाणा सल्फेट ओफ झिंक ३ से ५ ग्रेन पाणी १ औंस पिचकारी लगाणी कास्टिक २ से ३ ग्रेन डिस्टील्ड वोटर १ औंस दोनोंकों मिला पिचकारी देणी ५ टिंकचर आयोडिन १ ड्राम पाणी १ औंस पिचकारी मारणी

५ नासूरका छेद वडा होय तो कास्टीककी अणी नासूरके मूंमे देणी ६ रूपेकी सली सोरेके तेजावमें डवोकर नासूरके छेदमे फेरणेसे किसी वखत नासूर मिट जाता है.

(गूमडा)–(छोटीगांठे)–(वोइल्स)–जादा करके चहरेपर थोडे दरदवाली गांठे संख्यावंध होती है उसकूं गुमडे कहते है वो करडी मटर जैसी जरा आसमानी रंगकी तथा लाल रंगकी होती है, उसमें पीप धीरे २ होता है, और कितनीक जातके गुमडोमें पीप नहीं होकर धीमें २ वैठ जाता है, उसमेंसे जो पीप निकलता है वो विगडा भया होता है, वहोत पित्त प्रकृतिमें तथा पित्तकारक और अवगुणवाला खुराक खाणेसें खून गरम होकर विगड जाता है, तव एसा गडगूमड निकलता है, गरमीकी मोसममें ये जादा निकला करता है, (इलाज)–पित्तशामक दवाइयोंसें खूनकी शांति करणी जैसेके मंजीष्टादिक्वाथ चंद्रप्रभा आंवलोंकी वनावटे अमृतवटी वगेरे २ त्रिफला गूगल ३ कंचनार गूगल ४ खैरसार तथा त्रिफलाका क्वाथ ५ नींवकी छालका क्वाथ वाहरका इलाज ६ वडी गांठोंका इलाज इस छोटी गांठोपरभी चलता है जैसेंके शेक पोटिश नस्तर मल्लम पट्टी ७ कोनरूगुंद रसोत रक्तचंदन कपूरकाचरी खापरिया वगेरे रोपण दवायोंका लेप करणा.

(खील)–(व्हिटलो)–अंगलियोंके पेरवेमें कांटे जैसी कोइ वारीक चीज रह जाणेसें वो पक जाती है. और वहोत दरद करती है, (इलाज)–खारेतूवेका फल सिजाकर वांधणा ग्रंथी तथा व्रणका इलाज करणा एक कपडेके मख्खण लगाकर उसपर नोसादर कपूर भुरका कर वांधणा और पाणीकी भीगी पट्टी हरदम रखणेसें फायदा करती है.

(आंजणी)–(स्टाई)–ये दरद जाहिर है, गरम पाणीका शेक करणा सिंदूर लगाणा अथवा सिंदूरवाला लेप चोपडणा सुईकी अणीसे आंजणीकूं फोड डालणी आंजणी का दरद खूनके विगाडसे होता है,वो वेर २ मिटता है, और फेर होजाता है, इसवास्ते खून सुधारणेकी दवा देणी मारवाडमें आंखमें होती जिसकूं गुंरांजणी कहते है.

(व्रण)–(चांदी)–(जखम)–(अलसर्स)–जखमसें अथवा दुसरे कारणसें कोईभी जगे पककर फूटता है उसमें जखम अथवा चीरे पडणेसे वो जगे गीली होजाती है उसमेंसें पाणी और पीप झरता है कुष्ट रोग गलत कोढ उपदंश और खुजली वगेरे दरदोंमेंभी चीरे पडते है व्रणकी वहोत जाति है मुख्य २ इस मुजव (१ नाडीव्रण)-नाडीके संग संवंध रखणेवाला व्रण.

(२ सादाव्रण)–तनदुरस्त अदमीके भया २ जखम.

(३ नाताकत जखम)–जखमका अकूर वडा फीका और उंचा होता है, कोर नीची होती है, पीप पतला पाणी जैसा और जखम धीरे २ रुकता है.

(४ दुष्ट जखम)–विगडा भया वदवो मारता पीप निकलता है सपाटीपर मराहुआ मांसका सडा भया भाग सुपेद या काले रंगका होता है, ये जखम फैलता है.

(५ दाहक व्रण)–जखमके आसपास सूजन अंदर दरद होता है.

(इलाज १)–पहली सोजेका इलाज करणा इसपर लेप पोल्टीस गरम पाणीकी वाफ वगैरे इलाज होता है, पित्तके जलणवाले जखममें दशांग लेप गीला या सूका लगाणा अथवा एसीही दुसरी ठंढी चीजोंका लेप करणा वादी तथा कफके जखममें सोजेमें दोपघ्न लेप छाछमें पीसकर करणा अलशीकी गहूंकी थूली या आटेकी या कांदेकी गरम पोल्टिस बांधणी पोस्तके डोडोंके गरम पाणीका शेक करणा वेर २ इसतरे व्रणकूं पकायां पीछे उसकू फोडणेका इलाज करणा शस्त्रका इलाज सबसे अच्छा है क्योंकी इससें विगडा भया दोप जल्दी निकलता है, जो पका व्रण जल्दी नही फूटे तो अंदरका पीप विकार करके खरावी करता है, शस्त्रका पूरा वैद्य नहीं मिले तो फोडणेकी दवा लगाणी जमाल गोटेकी जड चित्रककी जड थोर तथा आकका दुध गुड भिलावा हिराकशी सींधा निमक इनोकों पाणीमें पीस पके भये व्रणपर लेप करणेसें व्रण जल्दी फूट जाता है, हाथीदांतके भूकेकूं पीसके पके भये फोडेपर बूंद डालणी साजीखार जवखार वगेरे खार लगाणेसेंभी तैसे (जालका) दारूडीका लेप करणेसें फोडा फूट जाता है.

३ पीछे उसकूं शोधन करणेकी जरूरी है, इसवास्ते फेर फोडेपर शेक तथा पोल्टिस बांधकर पीपकूं वाहर निकाल डालणा तिल मोलेठी नींवके पत्ते दारूहलदी हलदी निशोतकी छाल सींधानिमक पाणीमें पीस घी मिलाकर फूटे व्रणपर लेप करणा अथवा पहली लिखी चार चीजोंका लेप करणा ४ दुष्ट व्रणकूं सुधारणेवास्ते कडवे नींवके पत्ते तिल जमालगोटेकी जड निशोत तथा सींधानिमक इनोंका चूर्ण सहतमें मिलाकर फोडेपर बांधणा उपलसिरीका लेप करणा फकत नींवके पत्ते पीस चिकते फोडेपर बांधणेसें दोपका शोधन होता है, नीलेथोथेके पाणीसे फोडेकूं धोणा अथवा नीलेथोथेकी डली फोडेपर

चार दिन लगाणेसें उसकी दुष्टता दुर होती है, कोनरूगूंदकी गंधे विरोजेकी वत्ती । ी ५ व्रणमें जीव पडे होय तो करंज कडवा नींव तथा संभालूके पत्ते पीस लेप करणा इसमें जरा कपूर मिलाणा लसण पीसके लेप करणा कडवे नींवके पत्ते तथा हिंग पीसके लेप करना कील चुपडणा इन दवायोंसेंफोडेके कीडे निकल जाते हैं, डीकामा लीसेंभी उड जाते हैं, (घावकूं भरणेका इलाज) रसोत दवाणा गेरू दवाणा वोदार (मुरदासंग) घीमें मिलाकर दावणा नीलाथोथा गोपीचंदन तथा गेरू दावणा कत्था तथा शंखजीरा पीसकर दावणा कत्था ४ भाग हींग १ भाग पीसकर दावणा तिलकी चटणी पीस सहत मिलाकर फूटे घाव पर लेप करणा सहत तथा सराप लेप करणा छोटी इलायचीके पत्तोंका लेप करणा काली तुलशीके पत्तोंका लेप करणा पंच वल्कलके

महीन चूर्णकूं पाणीमें पीस लेप करणा जात्यादिघृत तथा जात्यादि तैल (नं० २०२) (२९९) इसकी वत्ती वणाकर घावमें भरणेसें तथा पिचकारी मारणेसें गहरा अंदर गयाभी व्रण भर जाता है, अथवा नाइट्रिक एसिड लगाकर पीछे पोटिस वांधणा जिससे विगडा भया मांस अलग होकर घाव अच्छा होकर जव ठहरता है, तव घाव भरणेकी दवा लगाणेसें भर जाता है आइडोफोर्म कारवोलिक तैल एसिडका मलम अथवा नाइट्रिक एसिड ४ वूंद पाणी १ औंस २ क्लोरलहाइड्रेट १० ग्रेण पाणी १ औंस ३ सल्फेट ओफ झिंक २ ग्रेण पाणी १ औंस (७ व्रणकूं धोणेकी दवा)–दारू हलदीका क्काथ४मासेका क्काथ पंचवल्कलका, उकाला नींवका पाणी, त्रिफलोंका पाणी, स्तंभन दवायें, रोपण दवायें कारवोलिक लोशन (नं० ५५०) ५५१ तथा ५५२ का लोशन कोन्डिसफलुइड (नं० ५६९) ८ पेटमें खून साफ करणेकी दवा खाणी चहिये जव घाव नहीं भरे तव गूगल और गूगलकी सव वणावटें अकसीर इलाज है, गूगल व्रण शोधक है, त्रिफला गूगल किशोर गूगल तथा कचनार गूगल ये सव अच्छे है देखो गूगलका वयान.

(गंभीर व्रण)–जो जखम वहोतही गहरा और हड्डीतक पहुंचा होय और भरता नहीं होय उस व्रणमें हड्डी सडी भई प्रायें होती है, (१ इलाज)–गूगल इसपर सर्वोत्तम इलाज हैं, योगराज वगेरे वहोत दिनोंतक साधन कराणा दुष्ट व्रणका एक एसाभी इलाज फायदेवंद सुणा है, पुराणा सो वर्षका दिवालका चूना महीन पीस घीमें मिलाय गंभीरव्रण में भरे तो घाव अच्छा होय २ खैरसारकी उकालीसें इस व्रणकूं धोणा.

(पथर)–(भाठा)–(वेडसोर्स)–वहोत दिन वेमारी रहणेसें रोगीकी पीठमें पत्थर जैसें होते हैं पहली लाल चांदी गिरती है और पीछेसे वो भाग सडकर गलता है, (इलाज)–कोयलेके भूकेकी पोटिस मारकर भाठेका सडा भया भाग अलग करणा एरंडीका तेल लगाणा अथवा इसका पोता धरणा २ वोटरड्रेसिंग (नं० ५४०) ३ कारवोलिक लोशन १ भाग कारवोलिक एसिड और ४० भाग पाणीसे धोणा उसपर आयडोफोर्म भुरका कर कारवोलिक तेल धरणा एक तरफ विछोनेमें वहोत दिन पडे रहणेसें शरीरका जो जो भाग दवे रहता है, उसमेंसें स्पर्शज्ञान कम होता है, उस करके भाठा पडता है, उहांतक तो वेमारकूं मालम नहीं पडता इसवास्ते एसे वेमारकी हरवखत दरियाप्त करणी फेर एसे दवे भये घसाते भये भागोंकू हमेस दो वखत फिटकडीके पाणीसे धोणा जिससें चमडी करडी होजावे.

(गुदभ्रंस)–(कांच)–(प्रोलेप्ससईनएनी)–गुदाके अंदरका भाग वाहिर निकलता है, नाताकत अदमियोंके नाताकत वच्चोंके कांच निकलती है, दस्तोंकी वेमारीमें वेरर कराजणेसे आमण निकलती है, (इलाज)–कांच वहोत करके आपहीसें अंदर चली जाती है, अथवा वेमार आपही दावकर अंदर दाखल कर सकता है, कांचपर

तेल लगाकर उसपर एक कपडेका टुकडा धरकर अंगुठेसे दबाकर अंदर डाल देणी हरस
पथरी मूत्रग्रंथी वगेरे जो कारण होय उसका इलाज करणा २ गऊका गौबर गरम कर
उसका सेक करणा ३ खट्टी वस्तुओंसें सिद्ध करा भया घी चुपडणा ४ भंगकी लुगदी
बांधणी ५ हीराकसी १ से २ रत्ती तीन तोला जलमें मिलाकर उसकी पिचकारी लेणी
अथवा उससे कांच धोणी तब सुकड कर बैठ जाती है, ६ गहूंके आटेमें अच्छीतरे घीका
मोण देकर उसका शेक करणा ७ जामुनकी छालकी उकाली छांटणा.

(कूब)-(हम्प)-करोडकी हड्डी वांकी होती है, उसकूं कूब कहते हैं, ये तीन
तरेकी है अगली १ पिछली २ बाजूकी ३, (इलाज)-योगराज गूगल.

(अंत्रवृद्धि)-(सारण)-(हर्निया)-पेटके पडदेके छेदोके रस्ते आंतरा जांघकी
जडमें ऊतर आवे इसके सिवाय आंतरे वृषणकी कोथलीमें उतरता है, तैसेंइ नाभिके
छेदके रस्ते पेटके ऊपर चढ आता है, उसकूंभी कितनेक सारण कहते है, निश्चै देखणेसें
वृषणके आंतरोकों अंतर्गल और नाभिपर चढे भये आंतरोंकों ढूंडा एसी जुदी२ संज्ञासे
पहिचानते हैं, (इलाज)-आंतरे नीचे नहीं उतरे इसवास्ते कमर पट्टा आता हैं वो
बांधणा २ आंत उतरे तो नवसादरका पोता धरणा तो संकुडा कर चढता है.

(अंडवृद्धि)-(हाइड्रोसील)-(कारण)-सोजेसे जल भरणेसें खूनके भरणेसें
गांठ होणेसें नस फूलणेसें कोथलीकी चमडी जाडी होणेसें आंतरा उतरणा वगेरे बहोतसे
कारणोसें आंड वढकर वडे होते हैं देशी वैद्यकमें इन सब रोगोंकूं वृद्धि कहते हैं अंग्रे-
जीमे इन सबोंका नाम जुदा२ है, सो लिखते हैं,

(आंडोंकावरम)-(ओरकाईटीस)-वृषणवडे उसमें बहोत दरद थोडा बुखार
उलटी (इलाज)-१ कोथलीकूं गद्दीके आसरेसें अथवा पट्टेसें अधर रखणी गरम पाणी-
का सेक और बेलाडोनाका लेप २ रेचक तथा पसीनेवाली दवा देणी दोपघ्न लेप जल्दी
उतारता है,५ जीर्णवरममें पारेका मलम लगाणा ६ सेलारस तथा तमाखूका पत्ता बांधणा
रालके लेपकी आडी खडी पट्टी मार उसपर लंगोटी मारणी.

(जलवृद्धि)-(हाइड्रोसील)-वृषणकी कोथलीके आसपासके रस पुडतमें पाणी
भर जाता है, इस तरे पाणी भरणेसें वढते हैं छोटे बचोंके जो नल वढते हैं, उसमेंभी
यही कारण है (इलाज) एरांडी तेलके जुलाबसे साधारण नलवृद्धि मिटती है
२ डाकतर लोक पाणी नस्तरसें निकालकर पिचकारी फेर एसीभी देते हैं सोफेर पाणी
नहीं भरता ३ एसा सुणा है की पंजेवाली थोरके कांटे छीलके उसकूं गरम जलमें सीज
कर बांधणेसें चमडीमेंसें पाणी झर२ निकल जाता है, फेर कपडेपर मखण लगाव
नोसादर भुरका कर पट्टी बांधणी फेर फिटकडी या मांजूफल हरडे इत्यादि भुरका
जिससे घाव सूक जाता है, काली तमाखूके पत्ते बांधणेसें उलटी होकर कम पडजाता

(रक्तजन्यवृद्धि)-(हिमोटोसील)-रस पुडतमें खून भर जाता है, वृषणमें कुछभी तकलीप पोहचणेसें एकाएक नल नारंगी जितना होजाता है, अंदर खून झरणेसेंभी रक्त-वृद्धि होती है, ये वृद्धि पाणीकी वृद्धिसेंभी जादा कष्टदायक होती है, (इलाज)-१ ठंढे पाणीका या नवसादरका पोता धरणा २ जुलाबकी दवा देणी ३ खून जम जाय तो कोथली चीराकर निकलाणा.

(शिरावृद्धि)-(वेरीकोशील)-शिरा याने रगें फूलणेसें वृषणका कद वडा होता है-वृषणकी शिकल आंडोंकी तरफ तो वडा और पेटकी तरफ संकडा होता है-थेलीमें क्रमियां भरी होय एसा मालम देता है, सूणेसें तथा दावणेसें कदमेंकम होता है, और खडे रहणेसे फेर भर जाता है हवा भरणेसे ये रोग होता है लंगोट या काछिया वांधणा.

(वृषणकी गांठ)-(सारकोसील)-गरमी सुजाक वगेरे शारीरक वेमारीसे नलोंकी गांठ वधकर नींबू जैसी करडी होती है, गरमी सुजाक भये पीछे वहोत दिन पीछे नलोमें गांठ होती है इसवास्ते सुजाक गरमी मिटै एसा इलाज करणा राजलका लेप लगाणा दोपघ्न लेप लगाणा वहोत मुदत भये पीछे इलाज लगेगा नहीं.

(कोथलीकी वृद्धि)-(एलीफन्टायासीस)-इस वेमारीमें गोलीकूं कुछ इजा नहीं होती लेकिन् कोथली जाडी होती है, और उसमें वरम होकर वधते २कितनीएक वखत इहांतक वढती है, सो खडे रहे अदमीकी कोथली जमीनतक पहुंचती है, और वजनमें ५० से सो रतल तककी होती है, (वृद्धिका सामान्य इलाज)-१ एरंडीका तेल सवसे अच्छा इलाज है दूधमें मिलाकर एक महीनेतक पीणा २ एरडी तेल गूगल गोमूत्रका सेवन करणेसें वहोत दिनोंतक, तो नल वढणा मिटता है, ३ ठंढा लेप और जोक लगाणेसें पित्त और खून भरणेका नल वढता मिटता है, तीखे तथा गरम लेपोसें सेक तथा वांधणेसें रसवृद्धि तथा मेदवृद्धिका नल मिटता है, ४ रास्नादि क्वाथ और योग-राज गूगलका साधन अंत्रवृद्धि तथा वायु संबंधी नलका रोग मिटाता है,५कडवे तूंबकी जडके क्वाथमें एरंडी तेल तथा दूध डाल पीणेसें सब तरेका नलवृद्धिका रोग मिटता है, ६ वच तथा सरसूका लेप करणा अथवा सहजणेकी छाल और सरसूंका लेप करणा, ७ दोपघ्न लेप सबमें फायदेवंद है.

(जलणा)-(वर्न्सएन्डस्कोल्डस)-(दाझणा)-दाझणेकी और जलणेकी वदन-पर जखमकी तरे असर होती है, १ जलाणेवाली गरम चीजके थोडे स्पर्शसें चमडी लाल होती है, और जलती है, २ जादा जलणेसें फफोला उठता है, ३ और सखत जलणेसें ऊपरकी चमडी तैसें अंदरके पुडतकाभी नाश होजाता है चमडी विलकुल स्याह होजाती है, (इलाज)-कपडे जलणे लगे तब दोडणेके बदले जमीनपर सोकरके शरीरकूं जमीनके संग अथवा पासमें पडी चीजके संग घसणा जिससें भडका बंध होगा जलेगा नहीं

तेल लगाकर उसपर एक कपडेका टुकडा धरकर अंगुठेसे दबाकर अंदर डाल देणी हरस
पथरी मूत्रग्रंथी वगेरे जो कारण होय उसका इलाज करणा २ गऊका गौबर गरम कर
उसका सेक करणा ३ खट्टी वस्तुओंसें सिद्ध करा भया घी चुपडणा ४ भंगकी लुगदी
बांधणी ५ हीराकसी १ से २ रत्ती तीन तोला जलमें मिलाकर उसकी पिचकारी लेणी
अथवा उससे कांच धोणी तब सुकड कर बैठ जाती है, ६ गहूंके आटेमें अच्छीतरे घीका
मोण देकर उसका शेक करणा ७ जामुनकी छालकी उकाली छांटणा.

(कूब)-(हम्प)-करोडकी हड्डी वांकी होती है, उसकूं कूब कहते हैं, ये तीन
तरेकी है अगली १ पिछली २ बाजूकी ३, (इलाज)-योगराज गूगल.

(अंत्रवृद्धि)-(सारण)-(हर्निया)-पेटके पडदेके छेदोके रस्ते आंतरा जांघकी
जडमें ऊतर आवे इसके सिवाय आंतरे वृषणकी कोथलीमें उतरता है, तैसेंइ नाभिके
छेदके रस्ते पेटके ऊपर चढ आता है, उसकूंभी कितनेक सारण कहते है, निश्चै देखणेसें
वृषणके आंतरोकों अंतर्गल और नाभिपर चढे भये आंतरोंकों ढूंडा एसी जुदी२ संज्ञासे
पहिचानते हैं, (इलाज)-आंतरे नीचे नहीं उतरे इसवास्ते कमर पट्टा आता हैं वो
बांधणा २ आंत उतरे तो नवसादरका पोता धरणा तो संकुडा कर चढता है.

(अंडवृद्धि)-(हाइड्रोसील)-(कारण)-सोजेसे जल भरणेसें खूनके भरणेसें
गांठ होणेसें नस फूलणेसें कोथलीकी चमडी जाडी होणेसें आंतरा उतरणा वगेरे बहोतसे
कारणोसें आंड वढकर वडे होते हैं देशी वैद्यकमें इन सब रोगोंकूं वृद्धि कहते हैं अंग्रे-
जीमे इन सबोंका नाम जुदा२ है, सो लिखते हैं,

(आंडोंकावरम)-(ओरकाईटीस)-वृषणवडे उसमें बहोत दरद थोडा बुखार
उलटी (इलाज)-१ कोथलीकूं गद्दीके आसरेसें अथवा पट्टेसें अधर रखणी गरम पाणी-
का सेक और बेलाडोनाका लेप २ रेचक तथा पसीनेवाली दवा देणी दोपग्न लेप जल्दी
उतारता है,५ जीर्णवरममें पारेका मलम लगाणा ६ सेलारस तथा तमाखूका पत्ता बांधणा
रालके लेपकी आडी खडी पट्टी मार उसपर लंगोटी मारणी.

(जलवृद्धि)-(हाइड्रोसील)-वृषणकी कोथलीके आसपासके रस पुडतमें पाणी
भर जाता है, इस तरे पाणी भरणेसें वढते हैं छोटे बच्चोंके जो नल वढते हैं, उसमेंभी
यही कारण है (इलाज) एरांडी तेलके जुलाबसे साधारण नलवृद्धि मिटती है
२ डाकतर लोक पाणी नस्तरसें निकालकर पिचकारी फेर एसीभी देते हैं सोफेर पाणी
नहीं भरता ३ एसा सुणा है की पंजेवाली थोरके कांटे छीलके उसकूं गरम जलमें सीजा
कर बांधणेसें चमडीमेंसें पाणी झर२ निकल जाता है, फेर कपडेपर मखण लगाके
नोसादर सुरका कर पट्टी बांधणी फेर फिटकडी या मांजूफल हरडे इत्यादि भुरका
जिसमें वात मूक जाता है, काली तमाखूके पत्ते बांधणेसें उलटी होकर कम पडजाता है

(रक्तजन्यवृद्धि)-(हिमोटोसील)-रस पुडतमें खून भर जाता है, वृषणमें कुछभी तकलीप पोहचणेसें एकाएक नल नारंगी जितना होजाता है, अंदर खून झरणेसेंभी रक्तवृद्धि होती है, ये वृद्धि पाणीकी वृद्धिसेंभी जादा कष्टदायक होती है, (इलाज)-१ ठंढे पाणीका या नवसादरका पोता धरणा २ जुलाबकी दवा देणी ३ खून जम जाय तो कोथली चीराकर निकलाणा.

(शिरावृद्धि)-(वेरीकोशील)-शिरा याने रगें फूलणेसें वृषणका कद वडा होता है-वृषणकी शिकल आंडोंकी तरफ तो वडा और पेटकी तरफ संकडा होता है-थेलीमें कृमियां भरी होय एसा मालम देता है, सूणेसें तथा दावणेसें कदमेंकम होता है, और खडे रहणेसे फेर भर जाता है हवा भरणेसे ये रोग होता है लंगोट या काछिया बांधणा.

(वृषणकी गांठ)-(सारकोसील)-गरमी सुजाक वगेरे शारीरक वेमारीसे नलोंकी गांठ वधकर नींबू जैसी करडी होती है, गरमी सुजाक भये पीछे वहोत दिन पीछे नलोंमें गांठ होती है इसवास्ते सुजाक गरमी मिटै एसा इलाज करणा राजलका लेप लगाणा दोपघ्न लेप लगाणा वहोत मुदत भये पीछे इलाज लगेगा नहीं.

(कोथलीकी वृद्धि)-(एलीफन्टायासीस)-इस वेमारीमें गोलीकूं कुछ इजा नहीं होती लेकिन् कोथली जाडी होती है, और उसमें वरम होकर वधते २कितनीएक वखत इहांतक वढती है, सो खडे रहे अदमीकी कोथली जमीनतक पहुंचती है, और वजनमें ५० से सो रतल तककी होती है, (वृद्धिका सामान्य इलाज)-१ एरंडीका तेल सबसे अच्छा इलाज है दूधमें मिलाकर एक महीनेतक पीणा २ एरडी तेल गूगल गोमूत्रका सेवन करणेसें वहोत दिनोंतक, तो नल वढणा मिटता है, ३ ठंढा लेप और जोक लगाणेसें पित्त और खून भरणेका नल वढता मिटता है, तीखे तथा गरम लेपोंसें सेक तथा बांधणेसें रसवृद्धि तथा मेदवृद्धिका नल मिटता है, ४ रास्नादि काथ और योगराज गूगलका साधन अंत्रवृद्धि तथा वायु संबंधी नलका रोग मिटाता है,५कडवे तूंबकी जडके काथमें एरंडी तेल तथा दूध डाल पीणेसें सब तरेका नलवृद्धिका रोग मिटता है, ६ वच तथा सरसूका लेप करणा अथवा सहजणेकी छाल और सरसूंका लेप करणा, ७ दोपघ्न लेप सबमें फायदेमंद है.

(जलणा)-(वर्न्सएन्डस्कोल्डस)-(दाझणा)-दाझणेकी और जलणेकी वदनपर जखमकी तरे असर होती है, १ जलाणेवाली गरम चीजके थोडे स्पर्शसें चमडी लाल होती है, और जलती है, २ जादा जलणेसे फफोला उठता है, ३ और सख्त जलणेसें ऊपरकी चमडी तैसें अंदरके पुडतकाभी नाश होजाता है चमडी बिलकुल स्याह होजाती है, (इलाज)-कपडे जलणे लगै तब दोडणेके बदले जमीनपर सोकरके शरीरकूं जमीनके संग अथवा पासमें पडी चीजके संग घसणा जिससें भडका बंध होगा जलेगा नहीं

और मल्हम पट्टीकेवास्ते मगरूरी रखते होय तो वेलाशक रखै लेकिन् उसमें मुख्य कारी-
ारी निर्माण नाम कर्म कुदरतकी है, अदमीकी हाथ चलाकी और चतुराई फकत हड्डीकूं
ठेकाणेपर बैठा देणेमें काम देती है, और पीछै हड्डी सांधणेका काम कुदरतसे याने
स्वभाव वगेरे सववायोंसें आपही होजाता है, इसमें पुरुषकृत उद्यम समवाय इतना
काम जरूर देता है, हड्डीके टूटे भये दो टुकडे जोडे पीछै रोगीने इतनी सावधानी
रखणीके जहांतक टूटा भया अवयव संधी जे उहांतक जराभी हिलाणा नही इस टूटे
भयेकूं सांध मिलाणेमें पट्टा प्रमुख वांधणेसें इसवातका अनुभवी वैद्य डाकदरोंकी सला
लेणी उनोंसेही वंधाणा, (इलाज)-(१ न० ३१८) वाला लेप २ सोवेरके धोये
भये घीमें चावलोंका आटा मिलाकर उसका लेप करणा ३ मैदा लकडीका चूर्ण या
ादडकूं दूधमें पीणा ४ लसण सहत और पीपलकी लाख घी सक्करसे चाटणा ५ गहूंके
ाटेका घी गुड मिला हलवा हमेश खाणा.

(लचक)-(किचरीजणा)-(स्फईन)-शरीरका कोईभी भागकूं कुछ इजा
होती है, तव उस जगे खून जमणेसें सोजन तथा दरद होता है, (इलाज)-अशा-
लियेका लेप २ आंवा हलदी साजीखार तथा मैदा लकडीका लेप ३ वांवूलके पत्ते वा-
टकर वांधणा ४ ब्रांडी स्पिरिट वगेरेका भीगा कपडा धरणा ५ ईस सयाने कोनरू गूंदका
लेप ६ डाकदर लोक मुरगीके इंडोके छिलकोंका लेप कराया करते हैं, ७ नूगलका लेप
८ ओपियम लीनीमेन्ट लचकवाले सांधेकूं मजवूत पट्टेमें लपेटणा ९ लचक पुराणा भये
पीछै उसपर तेल लगाकर अच्छीतरे सेक करणा १० टिंकचर आयोडीन लगाणा.

(चोट)-(कन्टयुशन)-चमडीपर जखम पडे विगर शरीरका कोइभी भाग
किचरीजै अथवा पछाडीजै अथवा मार पडै तव उसपर ठंढा लोशन लगाणा १ भाग
स्पिरिट ८ भाग पाणी उसका पोता धरणा २ सोजन तथा दरद होय तो सेक करणा
लचकका सव इलाज इसपर करणा सूजी भई जगा पकती मालम दे तो पकाणेका इलाज
कर फूटे वाद घाव भरणेका इलाज करणा.

(धोरीरगका कटणा)-जखम होणेसें हर शस्त्रसें जव धोरीनस कट जाती है, तव
उसमेंसें चिरमी जैसा लाल खूनकी धार शीर फूटती है इस धार अथवा शीरका जल्दी
अटकणा नहीं होय तो रोगीका चेहरा फीका होते जाता है, नाडी नाताकत पडते जाती
है, चक्कर आता है, और आखर वेहोस होकर मर जाता है, (इलाज)-छोटी नस होय
तो फक्त ठंढा पाणी डालणेसें वंध होजाती हैं अथवा ठंढा पाणीमें भिगाया भया कपडा
जखमपर धरणा जो पाणीसे वंध नहीं होय तो फिटकडी अथवा मांजू फलका पाणी या
बुकणी जखमपर दवाणा ३ टिंकचर ओफ स्टीलमें कपडा भिगाकर कटीभई नसपर धरणा
अथवा कास्टिककी अणी नसके मूंपर लगाणी खून तुरत वंध होगा ४ नसपर दाबणेसें

अगर जो पास जल होय तो ऊपर डालणा, २ पीछे बेमारकूं बिछोणेमें सुलाणा और
बहोत इजा भई होय तो उसकूं सतेज करणेवास्ते गरम काफी अथवा पाणी पिलाणा
डाकतर लोक ब्रांडी पिलाते हैं, ३ जले भये भागके ऊपरका कपडा फाडकर निकाल
डालणा लेकिन् जली भई चमडीकूं अलग करणी नहीं ४ पीछे टरपेन्टाइन अथवा
स्पीरिट वाइन अथवा केरोसीन (घासलेड) अथवा ब्रांडी और सम वजन पाणी अल-
शीका तेल घी अथवा तिलीका तेल और चूनेका नितरा भया पाणी इनोके अंदरका कोई
भी पतला पदार्थमें महीन कपडा भिगाकर दाझे भये भागपर धरणा और कपडा तर
रखणेकूं वोही पतला पदार्थ सींचते जाणा ५ ये चीजों तुरत नहीं मिल सके तो जले
भये भागपर चावलका या गहूंका महीन आटा जखम ढक जाय तहांतक जाडा थर
करके दाबणा इस आटेका पापडा जमकर आपही खरूंट लेकर उतरता है, लेकिन् जो
कभी पीप पड जाय तो पापडा उतार धीरेसे जखमकू धोकर सादे मलमकी पट्टी मारणी
फफोले उठें होय तो सुईसें फोड पाणी निकाल डालणा लेकिन् चमडी उखेलणी नहीं
इस जलणे या दाझणेपर इतना खयाल जरूर रखणा सो ठंढा पाणी या ठंढा इलाज
कभी करणा नहीं नुकशान करता है, इहांतककी बाहरकी हवाभी उसके अंदर नहीं
घुसणे पावे उस जली भई जगाकूं थोडी देरभी खुला रखणा नहीं.

(जखम)-(वुन्ड)-तलवार छुरी वगेरे कोईभी हथियार लगणेसे चमडीका
कोईभी भाग कट जाता है, (इलाज)-पहली तो वहते खूनकूं बंध करणा इसकी जरूरी
है, रक्त स्तंभक दवा पृष्ठ (२९२) का पाणी डालणा अथवा उनोंका चूर्ण दाबणा
३ निमकके पाणीका पट्टा बांधणा, ४ इकेला पाणी डालणेसे खूनकी नली दाबणेसे
अथवा बांधणेसें जखमका खून बंध होता है, वडे जखमोंके शस्त्रवैद्य हैं सो टांके देकर
सांधते हैं, वडे जखमकी दोनुं कोरें जब एकठी मिलती है तभी उसमें भराव आता है,
१ पट्टा बांधणेसे जखम मिल जाता है, ५ रालके पलाष्टरकी पट्टी मारकर जखमके
नाके एक जगे करणा एक वेर धोकर साफ करे पीछे जखमपर वेर२पाणी डालणा
६ भराव लाणेकूं तेलका पट्टा बांधणा और तेलही सींचते जाणा ७ कारबोलिक
दशगुणा तिलीका तेल मिलाकर उसकी पट्टियें लगाणी दो दो दिनसें बदलणा
७ बोरासिक एसिड एक द्राममें एक औंस सादा मलम मिलाकर पट्टी लगाणी जल्दी
भरणेके वास्ते उसमें आयडोफोर्म मिलाणा (पका भया जखम)-९ पोटिस बांधणा
हमेस एक दफ कारबोलिक लोशनसें धोणा एक भाग कारबोलिक एसिड धोणवालेमें
४० गुणा जल मिलाणा.

(हड्डीका टूटणा)-(फ्रेक्चर)-हड्डी सांधणेका कुदरती काम जैसा अंदरकी शक्ति
करती है एसा आदमी नहीं कर सकता हड्डी जोडणेवाले वैद्य जर्रर और डाक्टर ठी

और मल्लम पट्टीकेवास्ते मगरूरी रखते होय तो वेलाशक रखै लेकिन् उसमें मुख्य कारीगरी निर्माण नाम कर्म कुदरतकी है, अदमीकी हाथ चलाकी और चतुराई फकत हड्डीकूं ठिकाणेपर बैठा देणेमें काम देती है, और पीछै हड्डी सांधणेका काम कुदरतसे याने स्वभाव वगेरे सववायोंसें आपही होजाता है, इसमें पुरुषकृत उद्यम समवाय इतना काम जरूर देता है, हड्डीके टूटे भये दो टुकडे जोडे पीछै रोगीने इतनी सावधानी रखणीके जहांतक टूटा भया अवयव संधी जे उहांतक जराभी हिलाणा नही इस टूटे भयेकूं सांध मिलाणेमें पट्टा प्रमुख वांधणेसें इसवातका अनुभवी वैद्य डाकदरोंकी सला लेणी उनोंसेही वंधाणा, (इलाज)-(१ नं० ३१८) वाला लेप २ सोवेरके धोये भये घीमे चावलोंका आटा मिलाकर उसका लेप करणा ३ मैदा लकडीका चूर्ण या सादडकूं दूधमें पीणा ४ लसण सहत और पीपलकी लाख घी सक्करसे चाटणा ५ गहूंके आटेका घी गुड मिला हलवा हमेश खाणा.

(लचक)-(किचरीजणा)-(स्फईन)-शरीरका कोईभी भागकूं कुछ इजा होती है, तब उस जगे खून जमणेसें सोजन तथा दरद होता है, (इलाज)-अशालियेका लेप २ आंबा हलदी साजीखार तथा मैदा लकडीका लेप ३ वांबूलके पत्ते बाफकर वांधणा ४ ब्रांडी स्पिरिट वगेरेका भीगा कपडा धरणा ५ ईस सयाने कोनरू गूंदका लेप ६ डाकदर लोक मुरगीके इंडोके छिलकोंका लेप कराया करते हैं, ७ गूगलका लेप ८ ओपियम लीनीमेन्ट लचकवाले सांधेकूं मजबूत पट्टेमें लपेटणा ९ लचक पुराणा भये पीछै उसपर तेल लगाकर अच्छीतरे सेक करणा १० टिंकचर आयोडीन लगाणा.

(चोट)-(कन्टयुशन)-चमडीपर जखम पडे विगर शरीरका कोइभी भाग किचरीजै अथवा पछाडीजै अथवा मार पडे तब उसपर ठंढा लोशन लगाणा १ भाग स्पिरिट ८ भाग पाणी उसका पोता धरणा २ सोजन तथा दरद होय तो सेक करणा लचकका सब इलाज इसपर करणा सूजी भई जगा पकती मालम दे तो पकाणेका इलाज कर फूटे बाद घाव भरणेका इलाज करणा.

(धोरीरगका कटणा)-जखम होणेसें हर शखसें जब धोरीनस कट जाती है, तब उसमेंसें चिरमी जैसा लाल खूनकी धार शीर फूटती है इस धार अथवा शीरका जल्दी अटकणा नहीं होय तो रोगीका चेहरा फीका होते जाता है, नाडी नाताकत पडते जाती है, चक्कर आता है, और आखर वेहोस होकर मर जाता है, (इलाज)-छोटी नस होय तो फक्त ठंढा पाणी डालणेसें वंध होजाती हैं अथवा ठंढा पाणीमें भिगाया भया कपडा जखमपर धरणा जो पाणीसे वंध नहीं होय तो फिटकडी अथवा मांजू फलका पाणी या बुकणी जखमपर दबाणा ३ टिंकचर ओफ स्टीलमें कपडा भिगाकर कटीभई नसपर धरणा अथवा कास्टिककी अणी नसके मूंपर लगाणी खून तुरत वंध होगा ४ नसपर दावणेसें

अथवा जहां कटा होय उसके ऊपरके भागमें कसके डोरी बांधणेसेंभी खून बंध होजाता है, ५ धोरीरग वडी होय और ऊपरके इलाजोसें खून बंध नहीं होता होय तो डाकदर जहांतक आकर नहीं पहुंचे तहांतक ऊपर लिखे इलाज करणा नसपर बांधणा और दवाणा इस वातोंकों भूलणा नहीं कटी भई नसपर सखत गद्दी धरकर जोरसें पट्टा बांधणेसें जल्दीके वास्ते खून बंध हो जायगा, ६ योग्य इलाज होणेके पहली खून बहोत निकल गया होय उस करके अदमी बहोत नाताकत होकर बेहोस होगया होय तथा नाडी हाथ नहीं लगती होय तब डाकतर लोक ब्रांडी पाणीमें मिलाकर देते हैं, अथवा पोर्टवाइन या द्राक्षासव देतें हैं, साल बोलेटाल बूंद ४० सें ६० तक थोडे जलमें मिलाकर पिलाणा इस करके नाडी अगर तेज नहीं होय तो फेर पिलाणा ७ शीरा दूध मिली चावलोंकी कांजी वगेरे अच्छा पौष्टिक खुराक और सूता रखणा.

(पाणीमें डूबणा)-(डाउनिंग)-पाणीमें डूबणेसें गलेमें फासी खाणेसें और प्राणवायु विगरकी खराब हवा श्वासमें लेणेसे श्वास रुककर अदमी गुंगलाकर मरता है, एसे अकस्मातोंमें कृत्रिम श्वासोश्वासकी क्रिया चलती करणेकूं विलकुल देरी करणी नहीं पाणीमें डूबे भये अदमीके भीगे कपडे निकाल उसका शरीर पूंछणेका काम किसी दुसरे अदमीकूं सोंप पासमें खडे भये चालाक अदमीनें डूबे भये अदमीका श्वासोश्वास चलता करणेकी क्रिया सरू कर देणी जलदी डाकतरकूं बोलाणा तथा कंबल और सूके कपडे मंगाणे अदमियोंकों दोडाणा डूबे भये अदमीके इलाज करणेमें दो बातका खयाल जरूर रखणा. पहली तो श्वासोश्वास शरू कर देणा और श्वासोश्वास सरू भयाके बदनमें गरमी लाणी तथा खून फिरणेकी क्रिया सरू कर देणी.

(श्वासोश्वासकी क्रिया चलती करणेकी विधि)-१ श्वास नलीमें हवा आणे देणेकूं मूं तथा नसकोरे साफ करणा मूं खुल्ला करणा जीभकूं बाहर खेंचणा जीभ तथा हेडबीचमें चिपिया अथवा चीकणी पट्टी लगाकर जीभकूं बाहर रखणी छाती तथा [illegible] तंग कपडा दूर करणा २ बेमारकूं अच्छी तरे सुलाणेकेवास्ते सीधी जमीनपर चित्ता सुलाणा और छातीके तरफका जरा भाग उंचा रखणा शिर तथा खंभोंके नीचे कपडा या गूदडेका वीटा देणा ३ श्वासकी क्रिया चलाणेकूं क्रिया करणेवालेनें शिरके आगे बैठके बेमारके हाथ कोणीके ऊपरसे पकडणा और धीमेसें लेकिन चालाकीसे उचककर शिरतक लाणा फक्त दो सेकंडेतक गिणती होय तहांतक रखकर पीछा वो हाथ छातीकी तरफ लाकर बेमारके छातीके संग धीमेसें और मजबूतीसें दाबणा इस तरे डूबे भयेके हाथ छातीसे शिरके संग और शिरसे छातीके संग बेर२ लेणा वो एसा जलदीसें के ये क्रिया १ मिंटमें १६ वखत होय और बेमार स्वाभाविक रीतसें श्वास लेता

मालम पडे तब ये कृत्रिम क्रिया छोड देकर उसके शरीरमें गरमी लाणेकी क्रिया नीचेमुजब करणी.

(गरमी लाणी तथा खूनका फिराणा)–बेमारकूं धाबलेमें या कंबलमें लपेटणा और उसका हाथ पैर नीचेसे दबाणा गरम फलालीन गरम पाणीकी शीशीका शेक गरम पाणीका कपडेका शेक गरम इंटोंका शेक इनके अंदरसे जो मिले उससे कोडीपर खंधे जांघ और पेरोकै तलियोंपर शेक करणा श्वास सरू भये पीछै गरम जल और सराप ब्रांडी तथा पाणी डाकदर लोक देते हैं, काफीका एक चमचा पिलाणा बेमारकूं नींद आवै तो लेणे देणा श्वासोश्वास फेर बंध होता मालम दे तो छातीपर और बगलके नीचे राईका पलाष्टर मारणा.

(मोतके निशाण)–पाणीमें डूबा भया आदमी मर गया होगा तो उसमें श्वास अथवा रक्ताशयकी क्रिया बंध मालम दैगा आंखोंके पडदे आधे मिच जाते हैं, आंखोंकी कीकी चोडी होती है, जबाडे करडे और टेढे होजाते हैं, अंगलियें आधी परधी छोटी पड जाती है.

(रक्तश्राव)–(ब्लीडींग)–शरीरके जुदे२ भागमेंसे खून गिरता है, उसकूं रक्त-पित्त देशी वैद्यकमें लिखा है, (देखो पृष्ठ ४५२) १ नाकमेंसें खून गिरणा देखो पृष्ट (६००) २ जोकके डंकमेंसें खून गिरणा उसकूं बंध करणा चहिये, (इलाज)–ठंढा जल अंगली धरकर दबाणा फिटकडीका बूका दबाणा स्पिरिट वाइनमें डुबा भया कपडा डंकपर दबाके धरणा कास्टिकके अणीका डंकपर स्पर्श करणा (३ दांतमेंसें खून गिरणा)–दांत निकलवाणेसेंगिरणेसे चोट लगणेसें बहुत खून गिरता हैं, (इलाज)–लींटका अथवा नरम कपडेका एक गोटा दांतमें रखकर दांत भीड देणा शिर तथा दाढीकूं एक बंधनसें जकड देणा जिस करके मूं खुल नहीं सके इसतरे कितनेक घंटोंतक दोनों दांतोंके बीचमें वो कपडा दबा रहणेसें खून गिरते बंध होजाता है, (४ अंदरका खून गिरणा)–अंदरके खून नलियोंको इजा पहुंचणेसें या दरद होणेसं शरीरके अंदरके मर्म स्थानोमेंसें खून झरता है, जैसें कफके संग खून पडे तब समझणाके फेफसेमें रक्तश्राव भया है, इसीतरे उलटीमें खून पडणेसें होजरीमें रक्तश्राव जाणना दस्तमें खून गिरे तो आंतरोंमें जाणना और पेशाबमें खून पडे तो मूत्राशयमें रक्तश्राव जाणना शिरकी खोप-रीमें और मगजमेंभी रक्तश्राव होता है, इस सब तरेके खूनके झरणेमें रक्त पित्त रोगमें लिखे इलाज करणा.

(फफोला)–(बिलस्टर्स)–चमडीके ऊपरके नीचेके पुडतके बीचमें पाणी भरके फफोला उठता है, उसकूं ब्लिस्टर कहते हैं,)–जोकोंके डंकसे अथवा दाहकारक जहरी वस्तूका लेप मारणेसें बिलसटर उठता है, बहोत छोटे फफोले इलाज करे बिगरभी सूक

जाते हैं, वडे फफोले हथियारकी अणीसें या सूईसे फोड जल निकाल डालणा लेकिन फफोलेकी सुपेद चमडीकूं निकालणी नहीं उसपर हमेस मलम पट्टी लगाणी और उसपर कोइ इजा या दवाव होणे नहीं देणा.

(वाहरका पदार्थ अंदर चले जाणा)–(फोरेलवोडीझ)–नाक आंख कान वगेरेमें किसी२ वखत वाहरकी केइएक वस्तु अकस्मात् भर जाती है, तव अदमी वहोत दोडादोडी करते हैं विचारते हैं अव ये चीज डाक्टर विगर किसीतरे नहीं निकलेगी सो निकालणेकी तजवीज लिखते हैं–(१ नाकमें गई चीज)–छोटे वच्चे खेलते२ नाकमें वाल चिरमी चिणे स्लेट पेनका कपडा पत्थरका टुकडा चोअन्नी पाई वगेरे वस्तु नाकके नसकोरोंमें डाल देते हैं. अथवा उडता जीव घुस जाता है, (इलाज)–एक नसकोरेकूं दवाकर दुसरे नसकोरेकूं जोरसे सिणकणा २ छींक लाणेकूं तमाखू वगेरेकी नास देणी ३ गरम पाणीसें नाकमें पिचकारी लगाणी ४ इस इलाजोंसें नहीं निकले तो राई तथा गरम पाणी पिलाकर उलटी कराणी और उलटी होते वखत मूंकूं हाथसे वंध करणा याने उलटीका वेग मूंसे निकलणेवाला नाकसे निकालती वखत नाकमें गये चीजकों वाहिर निकाल डालती है, ५ ये सव इलाज निष्फल जाय तो आखर वालका नाका अंकोडेकी तरे नाकमें गई चीजके ऊपर चढाकर खेंचणेसें निकल जाती है, अथवा छोटे चिमटेसें पकडकर निकाल डालणा लेकिन इस आखरीके इलाजसे अंदरकी चीज ऊपर नहीं चढजाय इसकी निगे रखणी.

(२ कानमें गई चीजका इलाज)–१ पिचकारी २ चींपिया ३ आंकोडा टेढा किया भया ४ तेल अथवा निमककूं जलमें डाल वो कानमें डालणेसें अंदर घुसा जीव निकल जाता है, अथवा अदमीकूं तकलीप कुछ नहीं देगा २ महीन और नरम वालकूं दोलटा करके कानमें उतारणा पीछे वीमेसें उसकूं वाहर निकालणा जिस करके अंदरकी चीज वालके वीचमें होकर निकल जायगा इसतरे कानकी चीज निकाले पीछे रुई-का फोआ दावणा नहीं तो कानमें सोजा या पकणेका डर है.

(३ आंखमें गई गई चीजका इलाज)–ऊपरकी भांपणी ऊंची करके नीचेकी भांपणीपर चढाणी पीछे दोनोंकों अलग२ कर देणा २ नाक वहोत जोरसे सिणकणा ३ आंख उघाडके रुमालकी कोर अथवा महीन व्रस आंखमें फेरणा ४ ऊपरकी भांपणी निपलेमें या पेनशिलमें उथला कर अंदर रही चीजकों जीभसें उठा लेणा.

४ होजरीमें गई चीजका इलाज–पैसा पाई काच वटन वगेरे वस्तु किसी२ वखत गलेमें उतर होजरीमें चली जाती है, उसकूं निकालणेका इलाज–पतला खुराक खाणा नहीं तव करडे दस्तके साथ होजरीमेंसें आंतरमें उहांसें गुदारस्ते वाहर निकलती है,

गलणेवाली चीज पैसा वगेरे धातू होय तो खटाई विलकुल खाणी नहीं नहींतो धातू उगटकर जहर पैदा करता है.

५ चमडीमें घुसी भई चीज–कांटा फांस सुई वगेरे वारीक चीज चमडीमें घुस जाता है, इलाज–१ चिपियेमें आयसके तो खेंचके निकाल डालणा नहीं तो सुइयेसें कुचर कर निकालणा २ एक दो दिन उसपर पोटिस वांधणा पीछे चमडी नरम पडणेसें नखसे या चींपडीसे खेंचलेणा.

औरतोंका रोग.

किरण १० मी.

इस किरणमें औरतोंके खास रोगोंके इलाज लिखे हैं, वेहोस इलाज सरू करणेके पहली संसारमें वदफैली और कुचालाजो नाजुक औरत जातकी शरीरकू विगाडता है, उस तरफ ध्यान वांचणेवालोंकों पहली देणा चाहिये सवसे वडा कुचाला तो छोटेप-णमें जो व्याह करणा सोहे, सोले वर्ष पहले जो स्त्री मैथुनसे वेगी उसके प्रदरादिक अनेक रोग होणा संभव है, आगेभी ऋपियोके वाक्य है की ऋतु दान किया मतलव ऋतु आये वादही पुरुपका गमन होणा शंशार विधि सुधारक है. योगशास्त्रमेंभी एसा लिखा है समान कुल होणा याने गोत्री न होणा और द्रव्यमें वलमें सम होणा कन्यासे डेढी ऊमरका वर समान गिणा जाता है, कन्यासे अवस्थामें त्रिगुण जादा होय याने शोलेकी कन्या अडतालीस वर्पका मरद विपम रति होणेसें देणा निपेध है ये तो सामान्य नयवाद है, विशेप नयवाद एसा हैकी निरोग होय द्रव्यवान होय पूर्णवैद्यके आज्ञानु-सार वर्त्तणेवाला उदार चित्तसे वाजीकरणादिक औपधीमें द्रव्य लगाकर खाणेवाला एसा पुरुप तिगुणेवर्पवाला पूर्वोक्त कन्याके योग्यवर माना जाता है, लडका वीस वर्प पहिले मैथुन करेगा तो रोगी जन्मभर रहेगा किसी कवीने कहा है, (दुहा)–तिरिया जोवन ती सलग, वलध व हे दश साख, पुरसां जोवन सो लगे, सुखशंपत खुराक १ सव लोकोको मेरा उपदेश है के वाललग्नमें वहोत२ नुकशांन समझके लोकरूटीकों छोडणा अच्छा है किंवहुना.

(गर्भाधान)–(कन्सेप्शन).

पुरुप जो औरतकों ऋतुदान देता है, उसकू गर्भाधान कहते हैं, इसकी क्रिया वैद्यकशास्त्रमे तैसेंइ जैन सूत्रतंदूल वेयालीमें लिखा है, योग्य रीतिसे योग्य पतीनें अच्छा वालक पैदा करणा ये उसका हेतु है, इस विधिके लोक अजाण इसवास्ते शंतान पैदा करणेमें पतित होरहे हैं, इसवातकू उपयोगी समजके पहले वडे२ ऋपियोंने तथा श्रमण प्रभूनें आत्रेय पुत्रकू जो विधि सिखलाई सो इस जगे लिखताहूं इस वातकू देखके हमारे

जैनाभास परमार्थ शून्य वैराग्यके आडंबरी लोकिक लौकोत्तर शास्त्रोंके अजाण उपहास्य करेंगे लेकिन् इतना ज़रूर विचारणा चहिये की प्रथम तो जैसा पूर्वोक्त आत्रेय तथा ज्ञानार्णवोंमें लिखा देखा दुसरे विषय सेवणेकी आज्ञा धर्मशास्त्र देता नहीं औरन सम्यक् ज्ञानवंत जीव विषयमें प्रवृत्ति कराता यह तो अनादिकालसें जीवके विषय सकर्मीपणेसें सहचारी है, इसकी जयणा करणा ये शास्त्रका उद्देश है, ये वात छोटी मनुस्मृति जो की भृगुजीने वनाई उसमेंभी लिखा है, (यतः) न मांसभक्षणे दोषो, न च मद्ये न मैथुने, प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला. १ परमार्थ इसका एसा है के न मांस भक्षणमें दोष है, न मदिरामें न मैथुनमें क्योंकी सब जीवोंकी ये प्रवृत्ति है, लेकिन् छोडणेमें फल है, १ अब इसके परमार्थमें हम सम्मती नहीं देते कारण जिसके करणेसे दोष नहीं उसके छोडणेसें फल कैसें हो सकता लेकिन् फक्त इसका तीसरा पद जो है सो यथार्थ दिखता है कारण अज्ञान कर्मोंके वश जीवोंकी प्रवृत्ति इस कामोंमें है सो तो प्रत्यक्ष दीखभी रही है, मातापिता वा वो आप जो व्याह करते कराते हैं, उनका फल फकत शंतान उत्पत्तीका है अगर इस कर्त्तव्यकों छोडे तो अमरपद पावें ये चोथा पद अतीव श्रेष्ठ है किंबहुना.

शंसारी जीवोंका ये कर्त्तव्य है, दोनों पवित्र और प्रसन्नतासें वैद्यक शास्त्रके लिखे-मुजब सदाचारमुजब परदाराका त्यागी होकर पुत्र पैदा करे वो सुंदर सुघड और ताक-तवर मुक्ति मार्गका साधक एसें पैदा करणा मनुष्यके आधीनताकी वात है, लेकिन् दुराचारी जोडा अज्ञान कर्त्तव्यसें महादुष्ट प्रजाकूं उपद्रव करणेवाला नरकादि गतीमें जाणेवाला शंतान पैदा करता है, इस अच्छी शंतान पैदा करणेमें लोक तदन अज्ञान है लेकिन् हम इस जगे संक्षेपसें लिखेंगे, पहले ब्रह्मचर्यका पालणा, जादा विषय सेवणेवालेके शंतान अच्छा नहीं होता ये वात दोनोंकों चहिये दुसरे ताकतवर औषधी जो हम आगे सातमें प्रकाशमें लिखेंगे उसका साधन दूधका साधन थोडे पानवीडे भीमसेनी कपूर कस्तूरी अंबर डाला भया सुगंध चंदनादि तेलका मालिस कराकर सुखोष्ण गरम जलसें स्नान पुष्पमालाका धारन ऋतुमुजब अतरादिक लगाया भया ऋतूका सातमा दिन या ७५ इग्यारमा एसें एकीके दिन पुत्रीकेवास्ते, बेकीके पुत्रकेवास्ते, अच्छा मुहूर्त्त बलवान पुत्रकेवास्ते सूर्यस्वर, चंद्रस्वर पुत्रीकेवास्ते विशेष विस्तार पूर्वोक्त ग्रंथादिकसें देख लेणा.

(गर्भिणी स्त्रीनें इस मुजब नियम पालणा)—महनत पुरुषसमागम बोझा उठाणा दिनका सोणा रातका जागणा शोक करणा असवारी करणी डर डेढा झुकणा दस्त वगेरे वेगोंकों रोकणा इतनोंका त्याग करणा अच्छा सादा खुराक लेणा साफ हवामें रहणा आनंदमें रहणा अच्छी चाल चलणवाली औरतोंकों पास रखणा साफ सुंदर

वढिया कपडे और गहणे पहरणा अच्छे२ उत्तम पुरुषोंकी तसवीर मूर्तिके हमेश दर्शन करणा उत्तम पुरुषोंके चरित्र तथा दानशील तपभावना जिन२ पुरुषोनें आचरण किया एसोंकी कथा वार्ता सुणनी और उसनेभी ये काम यथाशक्ति जरूर करणा मतलव गर्भावस्थामें जिस२ वस्तुका दर्शन स्त्री करती है, और जैसे२ पुरुषोंकी कथा सुणती है तैसा२ स्वभाव गर्भगत वच्चेका होता है, (प्रश्न)-तुम तो कर्मकूं प्रधान मानते हो फेर इत्यादि क्रिया करणे क्यों लिखी (उत्तर)-कर्म तो प्रधान हैही क्योंकी गर्भगत जीवका जैसा कर्म होगा वेसी वुद्धि और वेसाही कर्त्तव्य सव मातापिताके वण आता है लेकिन हमारा स्याद्वाद पक्ष है, हम सव कामोंमें पांच समवाय संवंध मानते हैं, देखो दुसरा प्रकाश एकांत कर्मके भरोसे अगर रहे तो रोगादिकोंपर दवा अथवा और संसारिक कृत्य कुछभी करणा सिद्ध न होगा और होता प्रगट देखते हैं, किया जाय सो कर्म, तव तो अच्छी रीत मुजव करणा तव तो अच्छा शंतानादिक कृत्य होता अशुभ कर्मसें अशुभ शंतानादिक कृत्य कर्मका पक्ष किसी तरे हट नही सकता उद्यमकर्म व्यवहार नयसें दो दिखता है,निश्चय नयसें विचारो तो एकही है पहले जो निकाचित वंध जाते है वो शुभ वा अशुभ भोगणेसें छूटता है,प्रदेशादिक वंध शुभ कर्मके योगसें टूट जाते हैं निकाचित-भी तप कर्मसें जल जाते हैं इसका जादा विस्तार नयवाद ग्रंथोमें है, इहां ग्रंथ वढजाय इसवास्ते नहीं लिखते अच्छा शंतान जव पैदा होता है, दोनोंकी पक्की उमर वदन दोनोंका निरोग योग्य मोसम योग्य दिन और वखत दोनोंकी खुस वखती जिस करके मन प्रशन्न रहे एसे मकान सेज वगेरे सव सामग्री-(गर्भधारणेलायक पुरुषका वीर्य) फटिक जैसा साफ पतला चिकणासवाला मीठा सहत जैसा खुसवोवाला वीर्य शुद्ध गिणा जाता है वीर्य दुरगधवाला गांठोवाला और पीप जैसा होय तो अशुद्ध जाणना (गर्भके धारणे योग्य स्त्रीका रज)-खरगोसके खूनमाफक लाल लाखके रंग जेसा कपडेपर धोणेसे दाग नहीं रहेवो शुद्ध जाणना, मैलाफीका गांठोवाला और वदवो मारता एसे वीर्यसे गर्भधारण होय नहीं या रोगी पैदा होय या मर जाता है,)-(गर्भस्थानके वारीक नसों-मेंसे दर महीने निकलणेवाले खूनकूं ऋतु कहते हैं तनदुरस्त हालतमें ये खून पतला होता है, रोगी हालतमें वंधकर टुकडा२ होजाता है और गिरता है, गर्भ रहता है तव ऋतु वंध होजाता है, और वो ऋतुका खून गर्भाशयमें जाके गर्भकूं पोषण करता है, जव पोषणकी जरूरी नहीं रहती तव स्वभावसे वाहिर गिरता है.

(गर्भ किसतरे रहता है)-पुरुष स्त्रीके समागममें स्त्रीके गर्भस्थानमें पतला खून पैदा होता है उसमें पुरुषका वीर्य जव मिलता है, तव कोइक जीव अपणे कृतकर्मानु-सार उहां आके आहार पर्याप्ति करके शरीर औदारिक वांध वटणा सरु करता है. (प्रश्न)-तुमने जीवके पहली आहारपर्याप्ति लिखी वाद शरीर लिखा ये कैसे सिद्ध

होवे शरीर विगर आहार जीव करे तो सिद्ध ईश्वरकूंभी आहार करणा सिद्ध होगा, (उत्तर) सिद्ध परमात्माके कोइभी शरीर नहीं है वे तो फक्त जीवका निज स्वभाव ज्ञान दर्शन-चारित्र अनंत गुण विराजित है, और गर्भावासमें आणेवाले जीवके दो शरीर संग है, एक तो तेजस १ जो खाये पीयेकुं हजम करे दुसरा कार्मण सूक्ष्म शरीर जिस शरीरसें दृष्टिमें आणेवाला शरीर रचा जाय इसवास्ते इस सूक्ष्म शरीरके होणेसे आहार पर्याप्ती पहली वीर्य और रजका आहार कर फेर स्थूल शरीर रचता है ये वात वेदांतीभी मानते है, कहते है परभव जाते जीवके सूक्ष्म शरीर रहता है.

(जोडेसे गर्भ पैदा होणेका कारण)–गर्भाशयमें पडा भया वीर्य वायुसें दो भाग होकर अलग२ होता है तव दो जीव पैदा होते हैं.

(नपुंसक होणेका कारण)–दोनोंका रज वीर्य सम वजन होय तो नपुंसक पैदा होता है.

(स्वप्नेमें रह जाय सो गर्भ)–ऋतुस्नान करे पीछै किसी २ औरतकूं पुरुषके संग सोवत करणेका स्वप्न आता है, उसमें जो गर्भ रह जाता है, उसमें वापके वीर्यके गुण विगरका मांसका गोला जैसा गर्भ वढ जाता है, औरतें, आपसमें समागम करणेसेंभी यही हाल होता है, ये प्रत्यक्ष तथा जैन ग्रंथोंमेंभी लिखा है,

(अंगोपांगमें हीन गर्भका कारण)–वादीके कोपसें गर्भावस्थामें औरतकुं चेष्टा करणेसें और गर्भणीके मनके पैदा भये भाव मुजव खानपानादिक काम नहीं होणेसें जिसकूं दोहद कहते है वो नहीं पूरा होणेसें जो वच्चा होता है, सो लूला पांगला काणा कूवडा होता है.

(जुदे२ रंगका कारण)–मा तथा वापके शुद्ध या अशुद्ध वीज और जादा करके माके आहारपर वच्चेके शरीरका रंग होता है, (समदिन)–वेकीका उसमें पुरुषका वीर्य जादा होता है जिस करके लडका होता है, एकीके दिनमें औरतका रज जादा होता है जिससें लडकी पैदा होती है)–माताकी चेष्टा वोही गर्भकी चेष्टा वोही चेष्टा वच्चा जणे वादभी करता है, माताके श्वासके संग वच्चा श्वास लेता है, और वोलते चलते सूते रोते जो जो चेष्टा जो क्रिया मा करती है, वो सव वच्चाभी करता है उसमें एसेही भाव वंधते है इसवास्ते गर्भवंतीने खराव चेष्टा करणी नहीं)–माताका पोषण वोही गर्भका पोषण)–गर्भकी सूंटीकी नाडी माके रस वाहनी नाडीमें वंधी भई होती है, जिससें मा जो जो खाती पीती है, उसका रस वालककूंभी मिलता है, माके पोषणका तीन हिस्सा होता है एक हिस्सा वच्चेकूं एक हिस्सेका स्तनमें दूध होता है, और तीसरे हिस्सेसें माका शरीर पोषन होता है, इसवास्ते गर्भणी औरतोंको अच्छा पोषण खुराक तथा पथ्य करना चहिये गर्भणीका सव खानपान पथ्य कल्पसूत्रकी टीकामें देखणा, जैसें भगवान महावीरकी मातानें किया.

(गर्भ रहेकी पहचाण)–गर्भ रहे वाद तीन चार महीनेसें ये लक्षण मालम देते हैं स्तनपरकी वीटणीके आसपासकी जमीन काली पडती हैं, रूं खडे होते हैं, आंखका टम-कारना वेर२ वंध होणा कारण विगर उलटी सुगंधदार पदार्थ अच्छा नहीं लगणा मूंमेंसे लार गिरैं और वदन कांपणे लगै,

(३ ओरतोंके सामान्य रोग)–

औरतोंके रोगके इहां तीन हिस्सा किया गया है, १ औरतोंके सामान्य रोग २गर्भा-वस्थाके रोग ३ जापेका सूतिका रोग और उसके रहे भये पुराणे विकार

(प्रदर)–(ल्युकोरीया)–स्त्रीके संवंध रस्तेके जुदे २ मार्गोंमेंसे कमलके और मूंमेंसें पाणी जैसा जरा२ चूणा तो हमेश होते रहता है, जिससे वो जगा हमेश गीली रहा करती है, जव कितनेक कारणोंसें ये झरणा वढता है, और प्रवाहकी तरे वाहर गिरकर कपडोंको खराव करता है तव उसकूं (प्रदर)–(वदनका धुपणा)–सुपेद गिरणा) इत्यादि नामसे कहा करते हैं,–(कारण) विषय भोगणेमें नियम नहीं रखणेसें वेर२ गर्भ रहणेसें ऋतूकूं वंध करे एसी चीजें वापरणेसें वच्चोंको वहोत वखततक चुंगाणेसें वहोत ऋतुधर्ममें खून जाणेसें गर्भ रहणेसें दुसरे रोगसें आई भई नाताकतीसें वहोत पुष्टिदार खुराक खाकर योग्य कसरत याने महनत नहीं करणेसें और सराप वगेरे गरमी पैदा कर-णेवाली वहोत चीजों वापरणेसें ये रोग पैदा होता है, (लक्षण)–पाणी जैसा अथवा जाडा और चिकणा सुपेद पीला या गूगला रसीका वहणा ये इस रोगकी प्रत्यक्ष पहचाण हैं, (धातु ये दोय रस्तेसें वहता है) संवंध मार्गमेंसें और गर्भस्थानमेंसें संवंध मार्गकी धातू पहिले तो पाणी जैसी होती है और वाहर आते उसका रंग दूध जैसा अथवा पीला शपर होता है वो खट्टी होती है, और तेज होणेसें किसी वखत उसके स्पर्शसें सुआली जगोंमें ललाई अंगार तथा खुजली आती है, इसतरेके धातु गिरणेमें अंदरके अवयवमें सोजन और दरद होता नहीं फकत कमर तथा पेडूमें जरा दरद और वहोत दिनोंवाद नाताकती मालम देती है, गर्भ स्थानकी धातु कमलके मूंमेंसें निकलती है, तव वो इंडेके अंदरके रस जैसी होती है, लेकिन् वाहर आते सावूके फेण जैसी और किसी २ वखत पीले रंगकी होती है, किसी २ वखत वहोत जाडी होती है, गर्भस्थान और कम-लके मूंके सोजनसें ये रोग पैदा होता है, उसके सग शिरमें दर्द मंदाग्नि अरुचि पेटमें वायु थकेला श्वास जीभपर मैल फीकापणा दस्तकी कब्जी छातीमें धडका चक्कर वेहोसी पीठमें तथा दहिणे पडखेमें दरद और किसी २ वखत हिस्टीरीयाके लक्षण होजाते हैं, (इलाज)–प्रदरके वहोत इलाज है, योनिमार्गमेंसे जल गिरता है, उसमें वाहरका इलाज जल्दी फायदा करता है, और गर्भाशयके धातू गिरणेमें पुष्ट दवाइयां तथा योग्य प्रमाणोपेत आहारविहारके सेवनसें सुधारा हो सकता है, (वाहरका इलाज)–१ पंच-

वल्कलके पाणीसें धोणा या पिचकारी (औरतोंके वास्ते खास अलग पिचकारी आती है) २ त्रिफलाके पाणीकी या उकालीकी पिचकारी देणी फुलाइ भई फटकडी १० से ४० ग्रेण और पाणी १० औंस ४ सल्फेट ओफ झिंक और पाणी १० औंस, (अंदर पहराणेकी दवा)–५ मुलतानी मट्टीकी गोलियों करके पहराणी ६ टेनिक एसिड कत्था तथा मैण तथा सालिडका तेल इन सबोंकों बराबर बजनमें मिलाकर इनोंकी गोली कर पहरणी (अंदरका इलाज)--७ ऊपर लिखे जोजो कारण उसकूं पहली मिटाणा आहार विहारका जाबता रखणा अथवा सखत परेज रखणा बच्चा चूंगता होय तो छुडा देणा थोडी उन्मानमुजब कसरत या महनत कराणा खुली हवामें फिराणा क्षय वगेरे रोग होय तो उसका इलाज करणा तनदुरस्ती बिगाडणेवाले सब कारणोकूं रोकणा सुधारणे वाले कारणोंका आश्रय लेणा ८ प्रमेहके बहोतसे इलाज प्रदरपरभी चलते हैं, ९ सुवर्ण मालनी वसंत (नं० ३३७) गिलोय सत्व (रसायण चूर्ण (नं० २३४) जीरापाक (नं० २७४) चंद्रप्रभा (नं० २४४) कोला पेठेका मुरब्बा पक्केकेले खेरीगूंद खापरिया शतावर आसगंध मूसली तालमखाणा गोखरू गिलोय वगेरे सब दवाइयां प्रदर तथा धातू गिरणेकूं बंध करणेवाली हैं, (रक्तप्रदर)-खून गिरणा बहोतसी वखत औरतोंके योनिमेंसें खून गिरता है, इस रोगका इलाज जादा तो रक्तपित्त मुजब तथा प्रदरमुजब करणा बहोतसी वखत जादा ऋतुधर्मका खून गिरणा वोभी रक्तप्रदर कहलाता है, श्वेत और रक्त ये दोनोंही गर्भाशयका रोग होणेसें इलाजभी एकही है, (मूत्रमार्गका वरम) मूत्रके रस्तेमें सोजन जलणके संग होती है, सुजाकके चेपसें अथवा गरम पदार्थ खाणेसें सराप पीणेसें मलीनतासे और भोग वेहद करणेसें एसा रोग होता है, (लक्षण)–तणख दाह खुजली कमर तथा जांघमें दरद दस्त उतरते दरद अंदर पहली सोजन पीछे पीप झरणे लगे पुराणा पडे पीछे प्रदर होजाता है, (इलाज)–अफीमका डोडा तथा सोडा डाल उकाले भये गरम पाणीमें बिठलाणा २ गरम पाणीकी पिचकारी लगाणी ३ अफीम तथा स्युगरलेड दोदो वाल कोकमके तलमें मिलाकर उसकी चार गोली कर एकेक फूलके अंदर चलाणी ४ झिंक आकसाइड ४० ग्रेण एक्स्ट्राक्ट बेलाडोना १२ ग्रेण उनोंकूं मिलाकर गूंदसे या सहतसे गोलिये कर पहराणी ५ प्रदररोगमें धोणेका तथा भीगा कपडा हमेस उपयोग करणा ६ ग्लीसरीन तथा टेनिक एसिडके पाणीका कपडा भिगाकर अंदर डालणा ७ एक हलका जुलाब देणा दरद मिटे जहांतक सादा हलका खुराक लेणा गरम खानपान छोडणा (आर्तव याने ऋतुधर्म संबंधी रोग)–(कारण)–जवान छोकरियोंकी पक्कीऊमर होणेके पहली अथवा तनदुरुस्त नहीं होय उसवखत विषयवासनामें लगादेणा इत्यादिक कारणोंसे औरतोंका वर्ग ऋतुधर्मसंबंधी रोगमें जा गिरती है, पहला ऋतुधर्म होणेके वखत जो बंदोबस्त

होणा सो नहीं होता है, जैसे ठंढी हवा भीगी जमीन ठंढे पाणीसे स्नान गीले कपडे वहोत वखततक खडे रहणा भारी मैदा वगेरेका खुराक वहोत महनत डर गुस्सा इन सब कामोंमें इसकूं अलग रखणा चहिये लेकिन विद्यारहित महा अज्ञान अपणे हठसें चलणेवाली औरतें ऊपर लिखे नियम न रखती न रखाती है, ऋतुधर्मकूं बंधकरणेवाली दवाइयोंके लेणेसेंभी प्रदरका रोग होजाता है, औरतें खानगी रोगोमें कोइ२ अज्ञान दाइयोंके हाथसें इलाज कराया करती है, उससेंभी रक्तप्रदर रोग होजाता है, इस्के संबंधी बात कच्ची ऊमरमें सुणणेसें गर्भस्थान उस्कराकरभी प्रदर होता है, ऋतुधर्म जलदी आणेसेभी दस्तानका रोग होता है गर्भ रहे पीछे योग्य हुसियारी नहीं रखणेसें अथवा अधूरा जाणेसेंभी दस्तानका रोग होता है, गर्भस्थानका कोईभी विगाड दस्तानका कारण होता है.

(प्रकार तथा लक्षण)--१ ऋतुका बंध होणा २ ऋतुधर्म वहोत दरद होहो करके आणा३और वहोतही ऋतुधर्म चहिये जिस्से जादा गिरणा एसे ये तीन तरेसें दस्तानका रोग होता है, इन तीनोंका इलाज आगे लिखते हैं, (नष्टार्त्तव)-(एमेनोरीया)(कारण) स्वभावसे अवयवका कमीपणा स्त्रीअंडका थोडापणा अथवा विलकुल नहीं होणा योनिके रस्तेका संकोच अथवा बंध कमलके मूंका बंध, होणा वगेरे कारणोंसें दस्तान पैदा होता नहीं अथवा पैदा होताहै,तो प्रतिबंधके लिये वाहिर दिखाई नहीं देता वहोत एसआराम आलस वहोत नींद खराब हवा और गीलासवाला घर येभी आर्त्तव रोगके कारण है, (लक्षण) हर महीने ऋतूके समय दस्तान वाहर आणेका यत्न करे लेकिन् वाहर गिरे नहीं उसकरके पेडू कम्मर तथा जांघोंमें दरद वदनमें धूजणी गलेमें गांठो किसी वखत आंखे दुखणी आवे प्रदर तथा नाक और मूंमेसें खून गिरे हिस्टीरीया छातीमें घभराट दम मंदाग्नि दस्तकी कब्जी येभी उसके लक्षण है, (इलाज)--कोइभी अवयवका विगाड होय तो उसकी दरियाप्त करणी (इलाज करणा)-१ दस्तकी कब्जी होय तो दस्त खुलासकी दवा लेणी २ गरम पाणीकी पिचकारी लेणी ३ गरम पाणीमें बैठाणा अथवा पेडूपर गरम पाणीका शेक करणा ४ एलिया तथा बीजा बोलकी वडी गोली पहराणी ५ एलिया लोह कवार पठा गूगल वगेरे दवायें दस्तानके रोगकूं मिटाती है, इसवास्ते वोइकेली अथवा दुसरी दवायोंके संग लेणी ६ एलिया ४ तोला बीजाबोल २ तोला गुलकंद ५ तोला इन सबोंको मिलाकर दोदो वालकी गोली करके पाणीके संग पीणा एकेक गोली दर टंकमें ७ सुहागा १ वाल एलिया १ रत्ती गंदूर १ रत्ती गोली जलके संग ८ कुमारिकासव लोहासव लोह ऋतूका खुलासा करती है, ९ टिंकचर आफ स्टील १० से १५ बूंद १ औंस पाणीमें मिलाकर दोनों टंक पीणा १० सल्फेट आफ्आयर्न२४ ग्रेण कारबोनेट आफ पोटास १२ ग्रेण मर १२ ग्रेण एलिया ६ ग्रेण उसकी २४ गोलि

वणाकर दोदो गोली दिनमें तीन वखत लेणी ११ टंकण ३० ग्रेण लिकीड एक्स्ट्राक्ट आफ अरगट १॥ द्राम और कम्पाउन्ड डिकोक्सन आफ एलोझ ३ औंस उसका तीन भाग कर दिनमें तीन वेर पीणा.

(दरदसे ऋतुधर्म)–(डिसमेनोरीया)–(कारण)–शारीरक तथा मानसिक नाजुकपणा गर्भस्थानका वरम और ऋतूका झरणा बंध होणेका कोइभी मुख्य कारण ये सब इस रोगका कारण है, गर्भाशयमें खून जमणेसेभी ये रोग होता है, (लक्षण)-ऋतूधर्मके सरू होणेके पहले एक दो दिन दरद सरू होता है, कम्मरमें सख्त शूल शिरमें दरद पेडूमें गांठ जैसा जमाव तथा बोझा ऋतूका झरणा कम या जादा बंध होय और फेर आवै उसके संग दरद वधे घटे हिस्टीरीया डकार तथा दस्तकी कब्जी ये सब इस रोगके लक्षण है, कमलका मूं बंध पडणेसें अथवा अंदरका रस्ता संकडा होणेसेंभी ऋतु बंध होता है, (इलाज)–(दरद होय तब करणेका इलाज)–१ अफीम ४ ग्रेण कपूर ८ ग्रेण बारे गोलियें करके एकेक दो दो गोली तीन २ घंटेसे देणी २ अफीम तथा सुहागा मिलाया भया गोलियें इसी वजनसें फायदा करती है, ३ बेलाडोणेकी सोगठी पहरणी बेलाडोणा १२ ग्रेण जसतके फूल ४८ ग्रेण सहतमें घोटकर उसकी ४ सोगठी करके हमेस रातका पहरणी ४ गोफर्याकी पिचकारी लेणी और गरम पाणीमें बैठाणा गर्भाशयमें सोजा गांठ और गर्भाशय फिर गया होय तो उसका इलाज करणा. दरद मिटाणेका इलाज एसा करणा सो फेर जडसेंही मिट जाय ५ कुमार पट्ठेका पाक कुमारिकासव अथवा उसका अवलेह ६ कोला पक्का केला मुरब्बा या अवलेही लोह कोडलीवर किनाइन ७ योगराज गूगल ओरतोंके गर्भाशयके तथा ऋतु दोषके वास्ते सर्वोपरी इलाज है.

(अत्यार्तव)–(बहोत खून गिरणा)–(मेनोहेज्या)–ऋतुधर्म हरमहीने आनेके बदले थोडी२ मुदतसे आवे या जादा आवे तीन चार दिन दर महीने होणा चहिये सो जादा दिन तक दिखाइ देवें.

(कारण) शरीरके दुसरे रोग जैसेके रक्ताशय यकृत् प्लीह तथा फेफसेका रोग तथा पांडू वगेरे रोगोमें ये रोग होता है, २ गरमी तथा गरम खुराक ३ गर्भाशयके अंदरकी गांठ अथवा मस्सा ४ गर्भाशयका खिसणा तथा गर्भ अंड और कमलके मूंके वरमका दबान ५ गर्भ धारण पीछे गर्भ सूकणेसें अथवा जापा भये पीछे पिछला भाग रह जाणेमें ६ संसार भोगका अतियोग अथवा हीन योग (लक्षण)–दस्तान थोडा२ आया करे अथवा एक समचेपूर चलकर फेर बंध होजाय वदन खाली होजाय फीका पडे श्वास बदनपर थोथर उलटी मंदाग्नि मनकी व्याकुलता और दस्तकी कब्जी (इलाज)– (उस रोगका इलाज)–१ ठंडे पाणीका पोता रखणा अथवा बरफ धरणा २ टनिक

एसिडकी पिचकारी मारणी ३ फूलाई भई फिटकडीकी पिचकारी लगाणी ४ पंचवल्कल अथवा त्रिफलाके पाणीकी पिचकारी लगाणी या इससे धोणा (अंदरका इलाज)–स्युगरलेड ८ ग्रेण अफीम १ ग्रेण गुलकंद ५ ग्रेण मिलाकर ४ गोली कर एकेक गोली तीन तीन२ घंटेसे देणी ६ गेलिक एसिड १५ से २० ग्रेण इसकी तीन पुडी कर तीन२ घंटेसे देणी जलसे ७ ग्यालिक एसिड ४० ग्रेण लिकीड एकस्ट्राकट ओफ अर्गट ड्राम १॥ डिल्युट सल्फ्युरिक एसिड ४५ बूंद तजका पाणी ३ औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर पीणा ८ एक ग्रेण अफीमकी २ गोलियें करके तीन२ घंटेसे खाणी ९ पाउडर आफ अर्गट १५ ग्रेण ग्यालिक एसिड २० ग्रेण उसकी ४ पुडी करके तीन२ घंटेसे देणी १० फिटकडी ३० ग्रेण डिल्युट सल्फ्युरिक एसिड ३० बूंद नवसादर १० ग्रेण पाणी १२ औंस चार २ घंटेसें तीन वखतमें पिलाणा ११ देशी दवायोमें अफीम आंवले ईसवगुल सुहागी कोला गुंदपाक वीजावोल चंद्रप्रभा वगेरे खूनकूं वंध करती है.

(हिस्टीरीया)–इस रोगकूं देशी वैद्यक शास्त्रवाले केइयक तो वादीके रोगोंमें और केइयक उन्माद चित्तभ्रमके रोगोंमें समावेश करते हैं, यूनानीवाले होलदिलमें और अंग्रेजीमें मानसिक याने मगजके रोगोमें गिणते है, और वेकूब लोक इस रोगकूं सेतान लगा हुवा जाणके जंत्रमंत्र उतारा पलीता वगैरे इलाज भूत निकालणेका यत्न करते हैं, हमतो जंत्रमंत्र जो यथार्थ है, उसकूं झुट नहीं कहते लेकिन् दुनियाका जव ठगाई भरा ढंग देखते हैं, तव तो झूट कह सकते हैं, क्योंकी यंत्रमंत्र उसी आदमीका सचा है, जो इन वातोमें मजवूत हो अव्वल तो जिसका शील विलकुल पूरा हो लेकिन् एसे मिलणे लखोंमें एकभी दुस्वार तोभी इसवातका जो प्रमाण मुजव नियम रखणेवाला हो पंचोंकी साक्षीसें धारण करी भई स्वदारा संतोपी हो धर्मके कायदे मुजव सदा सच वोलणेवाला हो परमेश्वरकी वंदगीवाला हो पराया दुख देखके करुणावाला हो इस वातोंवाला मन वचन कायाका स्थिरता रखके दृष्टि या पासादिक मंत्राम्नाय साधकके कर्त्तव्यताकूं धन्यवाद है, वाकी सव दुकानदारी है, वो दादा जिन दत्त जिन कुशळ जिन चंद्र सूरजीकी तरे सव कष्ट सांध्य रोगीकू मिटाणे समर्थ होता है जो कभी असाध्य पर दृष्टिपास या हस्तपासादिक अलक्ष्य मंत्रादिक क्रिया करे तो वो तो मरेही लेकिन् प्रतिकारके कर्त्ताकेभी तकलीप होय हिस्टीरीया मन संबंधी रोग है, मनकी नाताकती शरीरकी नाताकतीसें होती है, तैसे मगजके विकारोंकी वदनपर वहोत बुरी असर होती है हिस्टीरीयेका रोग जादा करके औरतोकेही होता है, और किसी२ नाताकत मनके अदमीकूंभी होता है, (कारण)–गर्भाशयका रोग आर्त्तव दोप मगजकी नाताकती भय शोक महनतसें खेचल कामविकार हवरस वहोत तमासवीनी इत्यादि कारणोसें ये रोग पैदा होता है, नाताकतीमें उठती जवानीकी छोकरियोंका मन इस्क भरी प्यारकी और

विषयकी वातें सुणके या पढके तेर२के ख्यालोसे उमंगता है, कामविकारसे वो विकार पूरा नही होणेसें पुरुषके संग अणवणतसें अप्रीतिसें और ऋतुधर्ममें कीडे पडणेसेंभी ये रोग होजाता है, (लक्षण)-(इस रोगके अनेक लक्षण है)-वाइंटे खेंचाताण हसणा रोणा धुणना बूंम मारणी गोला चढणा बिलकुल बोलणा नहीं उलटी ओहीयां ओहीयां एसे शब्द करणा लंबी निसासे डालणा ये उसके सामान्य लक्षण है, हिस्टीरीयावाली औरतोंके सब लक्षण वहोत त्रासदायक होते हैं, और बहोतसी वखत जो बेमारी वो बतलाती है वो होती नही और बोम मारती है जैसेके जलण नहीं लेकिन् कहती है, जलती हूं और पाणी मांगती है उसकूं वदवो आती है जीभ वेस्वाद गोला चढता है, और वो जाणे गलेतक भर गया है, अभी ज्यांन निकलही जायगी एसा जोर करता है, वदनमें गोटा चढता है दांत जकड जाते हैं, अवाज बैठ जाती है पेट वडा होता है, और महीने चढें होय एसा लगता है.

(इलाज)-इस रोगमें खास तोरपर एकभी दवा नहीं है, हिस्टीरीया होणेका जो मूल कारण होय उसका इलाज करणा इस कारणकूं निश्चै करणे वास्ते उसकी मिजाजका जाणकार पास रहणेवालेसें संसारकी सब स्थितीकी वाकबी होणी चहिये उसके व्यसन वगेरे सब निज खासितसें वाकब होणा चाहिये औरतोंकूं ये रोग जादा करके ऋतुधर्मके विगाडसें होता है, इसवास्ते ऋतुधर्मका जो विगाड होय सो पहली मिटाणा सुखी घरकी औरतोंने एसआराममें मसगूल होकर हरगद घरके अंदरही नहीं पडे रहणा खुली हवामें फिरणा चहिये माफकसर महनतभी करणा हिस्टीरीयावाली औरतका मन किसी तरेभी विगडणे नहीं पावे इसवास्ते उसकूं हमेस खुस रखकर उसपर दया और प्रीती बताणी हिस्टीयाका जब दोरा हो उस वखत करणेका इलाज १ मूंपर ठंढा पाणी छांटणा और नाकके आगे आमोनिया दुसरा तेजनस्य धरणा जिससे होस आवे एसा इलाज करणा २ हाथ पैरोके तले अच्छीतरे मसलणा ३ बेहोस भये विगर गोला वगेरे वादीका होय तो बीमे तलकर हींग निगलाणी गुडमें लपेटकर दस्त खुलासा आवे एसी दवा देणी ४ (दुसरे सामान्य इलाज लिखते हैं)-योगराज गुगल ५ रास्नादि क्वाथ ६ त्रिफलादि क्वाथ नं० ५२३) ७ तथा ६६४ की अंग्रेजी दवाकी मिलावटें (८ नं० ७४३) तथा ७४४ हकीमी नुमके.

(गर्भाशय प्रदर)-(देखो प्रदरका वर्णन) पृष्ठ ६५५)

(गर्भाशयका वरम)-मुआवड (जापा) के विगाडमेंसें गर्भाशय सूजकर उसमें वहोत दरद बुखार तथा दस्तकी कब्जी ऋतु तथा प्रदर वहोत जाता है, इस दरदवाली औरतके गर्भ रहना नहीं वरम पुराणा होणेसें उसमें मस्सा रसोली वगेरे गांठे जमती है, और लूंन दस्तानमें वहोत गिरता है, (इलाज)-सोजनका सब इलाज

करणा जुलाव शेक पोल्टीस लेप २ गरम पाणीकी पिचकारी ३ पेडूपर अलशीकी पोटिस
मारना अथवा आखर कमलके मूंपर थोडी जोके लगाणी ४ संसार भोगसें दूर रहणा
खुराक हलका तथा सादा लेणा पुराणा वरम मिटणा मुस्कल होता है, ५ गर्भकूं सुधा-
रणेवाली दवा खाणेसें सुधारा होता है, (फलघृत नं० २९०) वरम नीचेके भाग
तरफ होय तो कासटिक लगाणा अथवा टेनिक एसिड या जसतका फूल कोकमके तेलमें
मिलाकर अंदर चुपडणा इस वरमके सवव किसी२ वखत कमलका मूं वंध होजाता है,
उसके गर्भ नहीं रह सकता और ऋतुधर्म अंदर भरा रहणेसें दरद होता है, (कमलमें
जखम)–जखम होणेसें खून गिरता है, किसी वखत ऊपर छाला गिरता है, किसी
वखत गहरा जखम पडता है, इस रोगसेभी वेटेमवे परमाण दस्तान आता है, कम-
रमें वहोत वेतरेका दरद होता है, धातू जाता है, खूनभी गिरता है, (इलाज)–व्रणका
इलाज करणा पंचवल्कलकी अथवा त्रिफलेकी अथवा मांजूफलके पाणीकी पिचकारी
लगाणी २ फिटकडी अथवा जसतके पाणीकी पिचकारी मारणी ३ टेनिक एसिडकी
सोगठी पहरणी ४ कास्टिक लगाणा ५ ग्लीसरीन और टेनिक एसिडकी अथवा सुहागा
और टेनिक एसिड लगाणा, (गर्भाशय ग्रंथी)–गर्भाशयमें गाठ होती है, ये गांठ छोटी
पारीसे वढकर कभी२ गर्भमें वढते२ वालक जितनी होती है और उसके लिये गर्भ-
यानभी वढता है, गांठ छोटी होय तहांतक वहुत इजा नहीं करती जव वडी होती है,
ो गर्भाशयमेंसे प्रदर जैसा निकलता है, उसकूं मिटाणेका इलाज करणा गर्भाशयके
अंदरकी गांठ मिटणी मुस्किल है, क्योंके उस जगे शस्त्रका इलाज होणा मुस्किल है,
जो मस्सा होय तोभी गर्भाशयमेंसें खून झरते रहता है, मस्सा वाहर होय तो डाकतर
लोक कतरणीसे काट डालते हैं, अथवा डोरा वांधणा घोडेका वाल वांधणा मस्सा गिर-
पडता है, दवा लगाणेकी हमारेपास अर्शउन्मूलनार्क है उसके लगाणेसें मस्से खिर
पडते हैं, गर्भाशयके अंदर मस्सा होय तो वादली धरकर कमलका मूंचोडा करके पीछे
आंटा देकर या फासा देकर मस्सेकूं तोड डालते हैं, लेकिन् ये कर्त्तव्य डाकतरोंसें कर-
वाणा, (गर्भाशय भ्रंस)–जैसे गुदामेंसे कांच वाहर निकलती है, ऐसें गर्भाशयभी नीचे
उतर आता है, ये दरद वडी ऊमरकी औरतोंके होता है, वेर२ वच्चा जणणेसें वस्ति
चोडी होणेसें गर्भाशय वाहर आता है, गर्भाशय सूज जाणेसें उसमें गांठ होणेसें कराज-
णेसे गर्भस्थान तथा योनिवंधन ढीला होणेसें गर्भाशय नीचे उतरता है, तपासणेसे जो
उसके सग कमलका मू होय तो जाणनाके गर्भाशय नीचे उतरा भया है, कांचकी तरे
ऩकू दावके उंचा चढाणा रालके लेपकू करके खेंचकर पट्टा वंधवाणा औरतोंने उस
ामेंविछोणा छोड वाहर जाणा नहीं ठंडे पाणीमें वेठणा अथवा स्तंभक दवाकी पिच-
ारी मारणी अथवा सोगठिये पहरणी जिससे वंधन सखत होकर गर्भाशय नीचे उतर

सकेगा नहीं ताकत आव एसी दवा लेणी, (स्त्री अंडका वरम)–जैसे पुरुषोंके वीर्य पैदा करणेवाली वृषणकी गोलियें होती है, तैसें औरतोंकेभी रज पैदा करणेवाले दो अंड पेडूके दोनोंतरफ होते हैं, अंग्रेजीमें उसकूं (ओवरी) कहते हैं, उसमें वरम होता है, तो वाजूमें चमका होता है, पेसाव लाल होता है, ऊपरसे दवाणेसे गांठ जैसा लगता हैं, और दरद होता है, दस्त आते वखत दरद होता है, बुखार जीमित लाणा उलटी पेटमें हवा होती है, ये अंड पकते हैं, तव फूटकर पीप निकलता है, जादा करके बांये तरफ वरम होता है, (इलाज)–वरमके सव इलाज करणा गरम पाणीमें वैठणा अफीम तथा वेलाडोणेकी सोगठी पहरणी शेक तथा पोल्टिस पेडूपर दरदकी जगे मारणा पुराणा वर्भ भये पीछे दरद नरम पडता है ऋतुधर्म थोडा और वहोत कष्टसे उतरता है, वेर२पेशाव होता है, प्रदर होता है, हिस्टीरीयाकी कितनीक निशाणियें मालम देती है, (इलाज)–पेट तथा पेडूपर गरम कपडा हमेश लपेटे रखणा उस वखत गरम पाणीमें बैठणा ठंढे पाणीका स्नान पुरुप गमन सर्वथा नहीं करणा ताकत लाणेवाली दवायें देणी, (स्तन छातीका सोजा)–वहोतसी वखत स्त्रियोंका स्तन पक जाता है दूध पैदा होणेकूं खूनका जोस चढ आता है उससें स्तन भर जाता है और बुखारके संग स्तनमें सोजन चढ आता है, एक या दोनोंमें होता है, तव स्तन भरा हुवा लगता है उसमें गांठे वंधती है, सखत वरम होकर चमडी लाल होती है, ठंढ देके बुखार आता है बेचेनी अनिद्रा और पकती वखत ठणका मारता है, बच्चेकूं वखतसर नहीं चुंघाणेसें अथवा भरे स्तनमें हाथोंको वहोत हिलाणेसें वहोत गरम खुराक खाणेसे तथा मनके आवेशके असरसेभी वरम होता है, (इलाज)–१ दरदके सरुआतमें थोडा दरद होय तो फुलालीनका अथवा अफीमके डोडोंके गरम पाणीका शेक करणा अथवा सावूका मलम (सोप लीनीमेन्ट लगाणा दाह होता होय तो ३ गुलाबजलका पोता धरणा अथवा ४ चंदन रगत चंदनका लेप वेर२ करना ५ वखतपर दूध खेंचलेणेका इलाज करणा दूध खेचणेकी शीशीयां आती है, वो नहीं मिले तो किसीसे चुंघाकर निकलवा डालणा अथवा धतूरेके पत्ते और हलदीका अथवा कडवे तूंबेका लेप करणेसें दूध खींचता है, एसा संभव है, दरद वहोत वढजाय तो शेक और अलसीकी पोटिस बांधणी ७ नींबके पत्ते बाफ कर बांधणा दस्त साफ लाणेकी तथा बुखारकी दवा देणी रोगी ताकतवर होय और दरद वहोत होते होय तो स्तनके सूजे भये जगेपर ८।१० जोंक लगाणी और पीछे शेक करना जो पकणेपर होय तो पकाकर फोडणेका और बाद भरणेका इलाज करना व्रण सुजन (फूलजाना)–कितनीक औरतें वदनमें फूल जाती है, बाद किसी२कुं गर्भ नहीं रहना ऋतुधर्मके दोषके अटकणेसे अंदर जमाव होते जाता है, जिस करके औरतोंका पेट तथा पेडू फूल जाता है, किसी२के एकाध बच्चा होकर पीछे ये रोग होता है,

फेर बच्चा नहीं होता, (इलाज)-इस रोगपर दवा करते आहार और विहारका पथ्य जादा फायदे वंद है, खुल्ली हवामें फिरना घरमेंभी शरीरकूं महनत पडे एसा कामकाज करना शरीरकी वादी और चरबी कम होय एसा इलाज जैसेके दस्त साफ लाणेकी दवा हरडे जुलाफा एलीया हींग वगेरे वादीके तथा दस्तके खुलासा वास्ते देणा २ ऋतु खुलासा लाणेकूं गरम पाणीमें राई डालकर पग भीजाणा कमरपर शेक करना पेडूपर सींगडी या कपिंग (देखो पृष्ट ३७१) करणा इण इलाजोंसे पेडूका जमाव नरम पडेगा और जमा भया खूनका ऊपर खेंचाण होकर गर्भाशय खुल्ला होगा ४ योगराज गूगल वायू तथा चरवीकूं कम करता है, वास्ते वहोत दिनोंतक सेवन कराणा गर्भाशयके दुसरे दोपोकोंभी दूर करता है, ५ त्रिफलेका क्काथ सहत डालकर पीणा ६ पाणी गरमकर ठारकर उसमें सहत डाल कर हमेस पीणा इससे चरवी गल जाती है,

(गर्भवंतीके रोग)-औरतोंके गर्भ रह्यां पीछे हमलके खास रोग होते हैं, तैसें बुखार दस्त मरोडा वगेरे सामान्य रोगभी होते हैं, उसमें गर्भके कारणसे उनके इलाजोंमें कितनेक दवाओंकों छोडणा पडता है, जो इस वातका खयाल नहीं रखे तो नुकशान होणा ताजुव नहीं, (नाताकती)-दुवली और नाताकत औरतोंके गर्भ रहता है, तब उसकूं ताकतवर दवा और खुराक देणा चहिये जो नहीं दिया जायगा तो शंतानभी दुवला और नाताकत पैदा होगा थोडी ऊमर पायगा और जापेमें औरतभी मर जाय तो ताजब नहीं जोखमका काम है, (इलाज)-सामान्य इलाजोंमें दूध सर्वोत्तम इलाज है, गऊ या वकरीका मोलेठी तथा सूंठके टुकडे तीन मासा अधसेर दूध और अधसेर जल डालके उकालणा पाणी जले वाद ठंढाकर थोडा वूरा डाल पिलाणा वहोत दिन पीणेसे ताकत आती है,और वुखार खासी वगेरे कुछभी तकलीप होती है, तो मिट जाती है, २ † वसंत मालतीका साधन दूध मिश्रीके संग देणा ३ गर्भ पोपक नामकी दवा हमारेपास है वो मा और वच्चेकूं निहायत फायदे वंद है, (वुखारका इलाज)- १ मोलेठी रगत चंदण वाला उपलसिरी और कमलके पत्ते इनोंका क्काथ मिश्री सहत डालकर पीणा २ रगत चंदण उपलसरी लोह तथा मुनक्काका क्काथ मिश्री डालकर पीणा ३ वकरीके दूधमें सूंठ ऊपर लिखे मुजब उकालकर पीणेसे विपम ज्वर याने वेटेम आणेवाला ठंढदेके आणेवाला ज्वर मिटता है, दस्तका इलाज-१ मजीठ मोलेठी लोद इन तीनोंकों पीस इनोका पाणीकरके मिश्री मिलाकरके पीणा २ आंवकी तथा जामुनकी छाल उकालकर मिश्री सहत डालके दैणा इसमें चावलोकी लाईका सत्तू डाल खिलाणेसे संग्रहणी भी मिटती है, सख्त दवासे गर्भकुं नुकशान होता है, (उलटी)-१ धाणाकूं पीस चावलोंके धोवणमें छाण सहत मिश्री डालकर पीणा २ कलोंजी)-इसका चूर्ण अथवा

† तोटेका बीय रुपया दै, अनुपान इलायची वशलोचन मिश्री दूध ।

काथ मिश्री तथा सहत डालकर देणा ३ सोडावोटर तथा बरफ पिलाणा ४ कलेजेपर राईकी पट्टी मारणी अथवा लाडेनम लगाणा खुराकमें सिरप दूध अथवा दूधमें कांजी चावलोंकी गरिष्ठ खुराक देणा नहीं, (अरुचि)–१ अजमोद सूंठ पींपर तथा जीरा गुडमें गोली करके देणा, (कब्जी)–गर्भवाली औरतकूं कब्जी बहोत रहती है, लेकिन् उसकूं जुलाब वेर २ देणेसे गर्भकुं नुकशान पहुंचता है, इसवास्ते देणा नहीं १ दूधसे दस्त खुलास आता है, २ एरंडी तेल दूधमें देणा ३ सख्त कब्जीमें एरंडी तेलकी पिचकारी मारणी.

(खासी)–बहुफलीकी जड बलबीजकी जड और अरडूसेका क्वाथकर पिलाणा इस क्वाथसे गर्भणीका सोजन श्वास कास रगतपित्तमेंभी अच्छा है, खेरसार तथा कत्थेकी गोली ३ शीतोपलादि चूर्ण सहतमें (हैजा)–१ सूंठ तथा बीलकी जडका क्वाथकर पिलाणा उसके संग जवकू शेक तथा दलके शेका भया सत्तू थोडा२ पिलाणा सख्त दवासे गर्भकुं नुकशान पहोंच जाता है, (शूल)–डाभ कांस एरंड तथा गोखरूकी जडकूं पाणीमें पीस वो डालकर पकाये भये दूधमें मिश्री सहत डालकर पिलाणा सख्त दवा वापरणी नहीं.

(मट्टी खाणेकी आदत) मट्टी खाणेकी आदत बहुत औरतोंकों रहती है, सो बुरी है, गर्भणीकुं जादे चाहियेके अच्छे २ पदार्थ इच्छा मुजब खाणेका वैद्यकशास्त्र लिखता है, लेकिन् एसी नुकशानकारी वस्तु खाणेकी इजाजत वैद्यक शास्त्र नहीं देता है, मट्टी नुकशांन करणेवाली चीज है, इसका सख्त बंदोबस्त करणा चाहिये लडकेभी इसी मुजब चूना मट्टी कोयला खाते हैं.

(छातीमें दरद)–स्तनोंमे दरद होय तो फुलालीनका अथवा पोस्तके डोडेका उकाला भया पाणीका शेक करणा सोजा होय तो शोजेका इलाज करना, (नींदका नाश)–दवा नहीं आवे एसी बंध जगेमें रहणेसें और गरम खानपानसें नींदका नाश होता है, इस कारणोकों बंध करणा दस्तकी कब्जी होय तो एरंडतेलका जुलाब देणा चा काफी तथा शराब नींदका नाश करती है, इसवास्ते इनोंसे बचाणा दूध तथा वनस्पतीका सादा खुराक खिलाणा आखर जरूर पडे तो नींद लाणेवाली दवायें लेणी, (ऋतूका मरणा)–हमल रहे बाद ऋतूधर्म बंध होता है, तोभी किसी२ औरतके दिखाई देता है, उस वख्त औरतका ऋतुधर्म बंध करणेमे सख्त इलाज न करते बहोत हि फाजत रखणी चाहिये जैसे ठंडी हवा भीगी जगा उघाडे पैरोंसे चलणा भीजी जमीनपर बैठणा सोणा ठंडा पाणीमें नाहणा बहोत देरतक खडे रहणा जादा खाणा जादा महनत डर गुस्सा तथा जुलाब ये सब खून गिरणेकूं बढाता है, इसवास्ते इन बातोंमें बचाणा मुलाये रखणा हलका खुराक देना.

(धातु गिरणा)—प्रदर गर्भणीके गिरता है, (इलाज)—१ स्वच्छता रखणी प्रदर रोगमें लिखा प्रक्षालन पिचकारी तथा पोता धरणा २ ताकतवर खुराक लेणा ३ प्रदर का ठंढा इलाज करना.

(बहुमूत्रता)—गर्भणीकूं वेर२ पेसाब होता है, (इलाज)—जवका जल पिलाणा २ एरंडतेल दे दस्तका खुलासा करणा ३ दरद होय तो पेडूपर फुलालीनके कपडेका सेक करणा ४ चंद्रप्रभा वगेरे मूत्रल और सारक दवायें देणी गर्भणी स्त्रियोंके कितनेक इलाज साधारण लिखे हैं, कुदरत स्वभावसे गर्भणी औरतोंके भारी वेमारी आती नही और गर्भ रहे पहले जो वेमारी होती है, वोभी दव जाती है, गर्भके रक्षणकूं पांचसमवा-योंके संबंधसे ये कुदरत बणती है, और कोइ२ गर्भणीके इन पांचो समवायोंके प्रतिकू-लपणेसें जब वडा रोग होता है, तो या बच्चा या वो आप मरती है, एसा हमने देखा है लेकिन् प्राय वडे रोग थोडे होते हैं, फेर बच्चा भये वाद पहलेके दबे भये रोग पीछा जोर करता है.

३ सुवावड और सुआरोग.

(स्वभावजन्य प्रसव)—आहार याने खानपानकी हुसियारी नहीं रखणेसें होजरी और आंतरोमें तरेके२ विकार होते हैं, उससे मलमूत्रके हमेस वेगोमें तरे२के उपद्रव होते हैं, गर्भाधान और प्रसव ये दोनोंही स्वभावादिक पांच समवायोंका धर्म है, और उस क्रियामें विवेक विचार और संभाल जो पुरुषकृत उद्यम समवाय अच्छा नहीं रहे तो प्रसवकी वखतमें समवायोंकी प्रतिकूलतासें केइ किस्मके विकार होते हैं, इसमें अचरजही क्या निरोगी आदमीकों दस्त जितना सहजसे होता है इतनीही सुख शांतीसे प्रसव होय उसकूं सहज स्वभाव प्रसव जाणना और कष्टसें बच्चा होय उसमें विगाड भया समझणा एसे विगाड पुरुष तथा औरतोंके विरुद्ध आचरणोसे होता है, सो विरुद्ध आहार विरुद्ध विहार विरुद्ध चेष्टासे वैठणा उठणा सोणा चलणा दोडणा टेढा झुकणा वगेरे इस सबोंसें पैदा भये विकार और रोगोंका समावेश होता है, ये सब विकार और रोग मनुष्यकृत हैं, स्वभावजन्य नहीं शरीर रचनाकी खोडोंकूं कितनीक स्वभावजन्य लोक केतेहैं, वोभीतत्वदृष्टिसे देखे तो स्वभावजन्य नही कर्म और जीव दोनोंकी कुदरतने पदार्थ पैदा किया और उनोका स्वभावरूप समवायोनें उनोका धर्म पैदा किया है, इन पदार्थोंका योग होणेसें तरे२के पिंड और पदार्थ पैदा होणा ये समवायोसे पदार्थोंका कुदरती धर्म है, पदार्थ अपणे२ धर्म मुजब दुसरे पदार्थोंका मिलाप योग करलेता है, और पदार्थोंका पूरा२ धर्म केवली सर्वज्ञ जाणते हैं, तोभी उनोंका वचनरूप जो श्रुतज्ञान है, सो अपणे मतिज्ञानके क्षयोप-शम मुजब उस मति श्रुति ज्ञानसें मनुष्यभी यथाशक्ति जाण सकता है, उसमें अज्ञान कर्म के वश अनेक भूल और मिथ्या विपरीत योग याने आचरणोंमें जीवकूं लेजाता है, मनुष्यके

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्यग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सब पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोंसें स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाव वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे वेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबंधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)—अव्वल तो कच्ची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ बूरी हालतमें मा और बचेकूं डालता है, अपणं देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही बूरी हालतमें होता है, जिस काममें चतुराई और सब तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और सब तरेकी मुसीवतें धरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवारी धराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मानते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वख्त उसकूं तथा उसकी माताकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजब)—पहली तो एक अंधारी कोटडीमें एक ऊंडे खूणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन और गंदी चीजोंका भराव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा झोली जैसा खाट सुवावालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवडके काममें आई भई एसी एक गूदडी उसपर विछाणेमें आती है, जापेवालीकूं गंधे मेले फटे टूटे कपडे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते हैं की जापेमें सव चीज मलीनही चहिये जिस वच्चेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो वालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराव हवा वच्चेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं वताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोंमें चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस वातकूं जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नही रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोंकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म वहोत पालते हैं एसी जूठी गप्प मारणेकूं नही चली लेकिन् केवल मनके प्रफुल्लित और वदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें वदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोंमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा वाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमे न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतवलिकर्मा (भाषा) स्नान क्रिया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यों जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो वडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर वहोत लोकोंकों ढूढिये तेरा पंथी नामके साधू है वो वणियोको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा— (उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकूं मुक्ति साधन रूप धर्म कव लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशंकर घरवेदू ग्रंथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेमें वाद् देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमें धर्म है जहां वदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा वेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोंमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान सोले गिणगारोंमेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोई साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अंतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषको मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहंकारके वस परमेश्वरके कहे मार्ग न माने देवकी मूर्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीकों

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्यग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सब पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोसें स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाव वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे वेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबंधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)—अव्वल तो कची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ वूरी हालतमें मा और बचेकूं डालता है, अपणें देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही वूरी हालतमें होता है, जिस काममें चतुराई और सब तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और सब तरेकी मुसीवतें भरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवारी धराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मानते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वख्त उसकूं तथा उसकी माताकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजब)—पहली तो एक अंधारी कोटडीमें एक डंड खूणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन और गंदी चीजोंका भराव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा झोली जैसा खाट मुएवालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवडके काममें आई भई एसी एक गूदडी उसपर विछाणेमें आती है, जापेवालीकूं गंदे मेले फटे टूटे काडे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गंदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते हैं की जापेमें सव चीज मलीनही चहिये जिस बच्चेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो बालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराब हवा बच्चेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं बताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोंमे चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस वातकूं जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नही रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म वहोत पालते हैं एसी जूठी गप्प मारणेकूं नहीं चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और वदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें वदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा वाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमें न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतवलिकर्मा (भापा) स्नान क्रिया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यों जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो वडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर वहोत लोकोंको ढूंढिये तेरा पंथी नामके साधू है वो वणियोंको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा—(उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकूं मुक्ति साधन रूप धर्म कव लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशंकर घरवेदूं ग्रंथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेसें वाद देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमे धर्म है जहां वदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा वेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देसणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान सोले सिणगारोमेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषको मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहंकारके वस परमेश्वरके कहे मार्ग न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीको

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्पग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सव पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोंसें स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाव वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे बेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संवधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)—अव्वल तो कची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ वूरी हालतमें मा और बचेकूं डालता है, अपणें देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही वूरी हालतमें होना है, जिस काममें चतुराई और सव तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और म[illegible] तरेकी मुसीवतें भरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवारी धराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मांनते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वख्त उसकूं तथा उसकी माताकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजब)—पहली तो अंधारी कोटडीमें एक ऊंडे खूणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन [illegible] गंदी चीजोंका नगव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा झोली जैसा खाट मुएवालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवडके काममें आई भई एसी एक गूदडी उसपर विछाणेमें आती है, जापेवालीकूं गंदे मेले फटे टूटे कपडे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गंदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते हैं की जापेमें सब चीज मलीनही चहिये जिस बच्चेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो वालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराब हवा बच्चेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं बताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोमें चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस वातकू जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नही रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोंकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म वहोत पालते हैं एसी जूठी गप्प मारणेकूं नहीं चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और वदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें वदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोंमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा वाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमें न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतवलिकर्मा (भाषा) स्नान किया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यो जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो वडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर वहोत लोकोंकों ढूढिये तेरा पंथी नामके साधू है वो वणियोको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा—(उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकूं मुक्ति साधन रूप धर्म कब लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशंकर घरवेदू ग्रंथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेसें वाद देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमें धर्म है जहां वदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा वेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरे देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमे देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नही है स्नान सोले सिणगारोंमेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नही जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषकों मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहकारके वस परमेश्वरके रूद मार्ग न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर टीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुःखीकों

अज्ञान कर्मसें विपरीत वर्त्ताव प्रजाकी उत्पत्ति वगेरे दोनों भव साधनरूप धर्म नहीं पलता उस करके गर्भमेंभी विगाड अथवा दोष रहता है, धन्य है वो मनुष्य जिसने सम्यग ज्ञान पाया वो जन्म लेणेसें छुटता है, अज्ञानके वश विकारवाला दोषवाला शंतान पैदा होता है, धर्मशास्त्रमें लिखा है मनुष्यजन्म और आर्यकुल पंचेद्रीय निरोग दया धर्म श्रद्धारूप निर्मल बुद्धि पुन्य विगर जीव नहीं पाता इसवास्ते मातापिताकी अच्छी आचरणा ये पथ्य ये सव पुन्यवंत शंतान पैदा करणेका एक वडा भारी उद्यम समवाय समझणा जादा क्या लिखें जिस२ कारणोंसे शंतानके शरीरमें गर्भमें विगाड होता है, वो वो कारण प्रसव समयमें और सूवा रोगरूप कष्टका कारणभी होजाता है, जैसें औरतोंकी अज्ञानताका विगाड है, तैसे२ पुरुषभी परस्त्री गमन मिथ्या भोगादि कोंसे स्त्रीका शरीर विगाड देता है, फेर तो शंतानभी दुष्टही पैदा होते हैं.

कितनेक प्रशव तो सुख शांतिसे होते हैं, और कितनेक वडे कष्टसे इसवास्ते उसके २ भाग कल्पन किया जाय तो एक स्वभाव प्रशव १ वो तो जैसे दस्त वेसाव वगेरे शरीरके दुसरे वेगोंकीतरे ये शरीरका धर्म है, सो झट होजाता है, दस्त लगे इतनी देर लगती है, और थोडी नाताकती खेचल वगेरे और दुसरा कष्ट प्रशव २ सो दरद और दुसरे वेमारीकी संग वो अस्वाभाविक प्रशव २ पहला प्रशव तो पथ्यमें चलणेवाली स्त्री और निरोग पुरुषका वीर्य उनोंके होता है, १ दुसरा इनसे विपरीत चलणेवाली औरत तथा मर्दके संबंधसे होता है, २ गर्भवंती औरतें जिसतरे खानपान वर्त्ताव करे सोकल्प सूत्रकीटीकासें जाणना महावीर स्वामीके जन्माधिकारमें ग्रंथ वढणेके भयसे नहीं लिखा.

(देशी सुवावडका हाल)—अव्वल तो कच्ची ऊमरमें रहा भया और रोगी हालतमें रहा भया अथवा पीछेसे कुपथ्य करके विगडा भया गर्भ वूरी हालतमें मा और वचेकूं डालता है, अपणें देशमें जापेवाली औरतकी सरवरा अथवा इलाज वहोतही वूरी हालतमें होता है, जिस काममें चतुराई और सव तयारी करणी चाहिये उस जगे मलीनता और मन नेरकी मुसीवतें धरी भई नजर आती है, याद रखणा चाहियेकी ये जोखमका काम है, और मनुष्यावतार नया प्रगट होणा है, क्यों के जिसकेवास्ते अदमी वहोत उमेदवारी वराते हैं. और जपतप योगी जतीका चरण सेवते हैं, जिस विगर औरत और मर्द अपनी जिंदगानीकूं निष्फल मांनते हैं, तो एसे नररत्नकी पैदाशकी वक्त उसकूं तथा उसकी मानाकूं कैसे दुष्ट हालतमें डालते हैं, (सो इस मुजव)—पहली तो अंधारी कोटडीमें एक उंडे खूणेमें उसका खाट डालते हैं, उसके आसपास मलीन और गंदी चीजोंका भगव रखते हैं, पुराणी मूंजका टूटा ओली जैसा खाट सुवावालीके वास्ते तइयार रखते हैं, फेर जूनी पुराणी फटी टूटी अनेक वेर सूआवडके काममें आई नई एसी एक गूदडी उपरर विछानेमें आती है, जापेवालीकूं गंदे मेले फटे टूटे काटे

पहिराणेमें आता है खाटके आसपास एसीही जुनी पुराणी गंदी चीजे लाकर रखणेमे आती है ये लोक एसा जाणते है की जापेमें सब चीज मलीनही चहिये जिस वचेकूं जमीनका प्रकाश उजाला साफ हवा और सृष्टीकी सुंदरता धर्म वगेरे पुन्यके साधन वास्ते जन्म लेता है वो बालक जन्मते ही क्या देखता है अंधेरा गलीचपणा खराब हवा वचेके श्वासोश्वास वास्ते साफ हवा चहिये जिस्सें प्रफुलित रहे उसमें पूरी २ खलल पोहचणेका साधन पूर्वोक्त गंधापणा रखते हैं परम पवित्र परमेश्वर श्रीऋषभ देवने जो पवित्रताका धर्म ग्रहस्थोंकों सिखलाया विधि आत्रेयादि पुत्रकूं वताई उनोनें शास्त्रोके द्वारा प्रकाश किया वो अभीतक आर्य लोकोंमें चल रही है लेकिन् सोचणा चाहिये ये स्नान वगेरे जो शुद्धियां है वो किस कारणके वास्ते है जो इस वातकूं जाणते तो कभी किसीभी जगे अपवित्रता नही रखते स्नान वगेरे शुद्धिकी जो महिमा चली है वो लोकोंकूं दिखाणेवास्ते नहीं अथवा हम धर्म वहोत पालते है एसी जूठी गप्प मारणेकूं नहीं चली लेकिन् केवल मनके प्रफुलित और वदनकी सफाईवास्ते और इस स्नानसें वदन निरोग रहता है इसीवास्ते जैनियोके सूत्रोमें गृहस्थ श्रावगोंके वर्णनमें पहली स्नान और देव पूजा वाद किसीभी कार्यका स्वरूप लिखा है ये स्नानका स्वरूप ब्राम्हन जटाशंकरभी अपणे मासिक पत्रमें एसाही लिखा है जैनियोके सूत्रमें न्हायाकयवलिकम्मा अर्थ इस सूत्रका एसा है स्नाता कृतवलिकर्मा (भाषा) स्नान क्रिया करी अपणे इष्ट देवकी पूजा (प्रश्न०) क्यों जी हमने तो देखा और सुणा है के जैन लोक तो वडे मलीन और स्नानमें पाप मांनकर वहोत लोकोंकों ढूढिये तेरा पंथी नामके साधू है वो वणियोंको सोगन दिलाते हैं और तुमने जैनियोके सूत्रका पाठ लिखा—(उत्तर)—हे महोदय हम फक्त स्नानकूं मुक्ति साधन रूप धर्म कब लिखते हैं और न ब्राह्मण जटाशंकर धरवेदू ग्रथमें धर्म लिखता है लेकिन् शरीर शुद्ध मन प्रफुलित होनेसें वाद देवपूजा गुरुवंदन ग्यान ध्यान जो किया जाता है उसमें धर्म है जहां वदन निरोग होगा उससे धर्म सधेगा वेमार धर्म नहीं साध सकता है दुसरं देहीकी अपवित्रतासे परमेश्वरका नाम जप जाप मुखसे प्रगट स्तवना कहणेसे निरफल और पाप जैन सूत्रोमें माना है ठाणांग सूत्र तथा टीका दसमे ठाणेमें देखणा स्वाध्यायकी मनाई है अपवित्रतामें, जैन मुनिका धर्म सुच है वो अपवित्रता रखते नहीं है स्नान सोले सिणगारोमेंसे पहिला शृंगार है और जैनके मुनि शृंगारके वास्ते स्नान करते नहीं जो कोइ साधू उत्सर्ग मार्गमें चलता भया मैलका उपसर्ग सहता है तो भी क्रोध मान माया लोभसे रहित है इसवास्ते उनोका अंतरंग आत्मा शुद्ध है इसवास्ते एसे परम पुरुषको मैला कहे सो मैला है लेकिन् जो क्रोध और अहंकारके वस परमेश्वरके कहे शास्त्र न माने देवकी मूर्त्तिको पत्थर कहकर हीलना करे दया लाकर जो किसी दीन दुखीकूं

दान देवे सो देणेमें पाप वत्ताकर अणुकंपा दान निषेधे श्रुत केवलीके वनाये शास्त्रोंको न माने और ज्ञानवंत पंडितोंको तुछ समझे गृहस्थका और साधूका सब धर्म एक वतलावै इत्यादिक धर्म और पुन्यकी वातोंमे अनेक कुयुक्तियें लगाकर गृहस्थोकों उलटे जालमें फसाकर अपणे मान महत्व भोजन वस्त्रका उपाय करे रातकूं जल नहीं रखे और फरागत रातकूं जावे तो पैशावसें गुदा धोवे उसी पात्रमें पेशाब करे उसीमें प्रभातसमे आहार पाणीलाके खावै कोइ पंडित पूछे तो मोयपडिमाका (याने मुक्त पडिमा) नियम धारीका प्रमाण वतलावे शब्दार्थ और है और प्ररूपणा उलटी करे पेशावसे गुदा धोया भया आवस्यक वगेरे परमेश्वरके वचनरूप शूत्रका उच्चारण करे पेशाव कर विना हाथ धोये पुस्तक जो परमेश्वरके तुल्य सूत्र है उनोके हाथ लगावे ये सव काम ओघडोकीतरे करे वो जैन मतके साधू नहीं मन मतके बाधू हैं विचारे भोले जीवोकों धोखेवाजीसें सूत्रका नाम और कल्पित अर्थोंसे उलटा समझावे एसे लोकोंकी ऊपरकी मलीनतासें पूर्वोक्त परमेश्वरके हुकम तोडणेसें अंतरंग कषायसे अंदरकीभी मलीनता समझणी दश धर्म यती साधुओंका है उसमे सौच जो कहा है वेसा ऊपर और अंदर द्रव्य करके और भाव करके शुद्ध वो जैनके साधू है भगवती सूत्रमें पंचमे कालमें दो प्रकारके साधू अभी वतलाये हैं वो साधू ही यथार्थ है वकुस १ और कुशील २ एकेकका पांच २ भेद है उस सूत्र और टीकासे देख लेणा ग्रंढ वढणेके सवव नहीं लिखा जैन वगेरे सेवादिक पवित्रता पूर्वोक्त कारणके लिये मानते हैं इति प्रश्नोत्तर । हे महोदय, जैन धर्मका चलणा इस दुनियांमे सव धर्मोंसे पहिला है इस वातका निश्चय देश अमेरिका चीकागो सहरमें वडे २ यूरोपी विद्वानोंने दरयात करके लिख दिया है पुस्तकोमें पुस्तक पुराणा लिखा वेदका उनोने सावत किया है क्योंकी जैन धर्मका ग्यान कंठाग्र मुनियोंके था इसवास्ते सव लिखा नहीं था लेकिन् ये तो स्वतः सिद्ध हो गयाके जिसका धर्म पहली उसका ज्ञान पहली ज्ञान विगर धर्म हरगिज नहीं याद शक्ति जवरके कारण नहीं लिखा जिनोंकी वुद्धि कमथी उनोने मत चलाते लिख लिया होगा लेकिन जैन धर्ममें निकले तीन फिरका उनोंकी चलन देख अन्य लोकोंने जैन धर्मकूं तीन कलंक लगाये तीर्थंकरकी नग्न मूर्ति दिगांवरोने वनाई उससे लोक जैनोंके नंगे देव कहणे लगे नंगी मूर्ति कहती है जैनोंकी नहीं १ दुसरे मलीनता याने ऋतु धर्म स्त्रीकूं आवे उसमें भी कुछ छूत नहीं समझे चाहे गृहस्थका कमाद हो लेकिन सामायक भगवंतका नाम सुनना वगेरे शुभ काम करले छूटी ये तेरा पंथके मतका देख जैन धर्मकूं मलीन लोक कहने लगे लेकिन वानप्रस्थ आश्रममें जो मलीनता तथा वेदोंका यज्ञ अश्वमेध गउमेध सोम यज्ञमें वकरे प्रमुख अनेक जीवोंकों मारणा और मांस खाणा सौत्रामणी यज्ञ कर मदिरा पीना इत्यादि अपवित्रतासें अंतरंग है मलीन जिनोंका वो मलीन है जैन धर्म

दया मई होनेसें ये मलीनता जैनोमें नहीं २ तीसरे दान पुन्य निषेध रूप उपदेश बिल्ली चूएकूं मारती होय तो छुडाणा नही इत्यादिवातोसें तेरा पथियोंकी चलन देख लोक जैन धर्मकूं कलंक लगाते हैं ये वात भी अपणे स्वार्थमें तत्पर एसे शास्त्रोकों वणाणेवाले अपणी जातिकी उच्च दसा दिखाकर अपणे पुराण और स्मृतियोंमें केइ जगे लिखा है के फक्त दान देनेका पात्र एक जगतमें ब्राम्हन है दुसरे सव पापंडी है पापंडियोंको देनेमें वडा पाप है बिल्ली चूहेकु मारते नहीं छुडाणा ये वातभी वहोत अनार्य निर्दइ म्लेछ कहते हैं के वो उसका भक्ष है छोडावे तो अंतराय कर्म बंधता है वेदांती ब्रम्ह अद्वैत वादीयोंका भी यही सिद्धांत है ब्रह्म तो मरता नहीं वाकी तो सब स्वप्नवत् जूठा है ब्रह्मनें ब्रह्मकूं मारा ब्रह्मकूं पाप लगता है नहीं चार्वाकभी मारणेमें पाप वचाणेमें पुन्य नहीं मानते हैं जीवकूं मारते देख अपणी शक्ति मुजब नहीं छुडावे और करुणा नहीं आवे ये काम नर्क जाणेवाले चंडाल विना दुसरेके कभी नही हो सकते ये वातभी जैन धर्ममें नही है के दान न देणा और मरतेकूं नहीं वचाणा ३ जैन धर्ममें ये तीनोंही वात नहीं, पुन्य मुक्ति जाते हुये जीवके वोलाउरूप है तेरमे गुणस्थानकतक पुन्य जीवके संग रहता है ये तीनोंही कल्पना मनुष्य कृत है तीर्थंकर तो स्याद्वादनयसें उपदेश करते हैं उनोके वचनका एक नय पकडके जो अपणा मत थापे वो मिथ्यात्वी देखो भगवंत कहते हैं व्यवहार नयसें पुन्य आदरणे योग्य निश्चय नयसें छोडणे योग्य अव विचारणा साधूपणा श्रावकपणा तप जप विहार वगेरे और सब क्रियानुष्ठान व्यवहारनयकूं प्रवल मान कर व्यवहार साधते हैं और कहते हैं व्यवहार साधणा चाहिये निश्चय धर्म तो केवली जाणते हैं लोक तो जिसका व्यवहार शुद्ध देखते हैं उसका इस लोकमें प्रतिष्ठा सत्कार करते हैं सब मतोंवाले तो फेर पुन्य करणेमे व्यवहारनयकूं केसें उठाया निश्चय नयतो भाव आश्री है जिसकूं मनका परणाम कहते हैं प्रत्यक्ष देखते हैं दिया भया निरफल होता ही नहीं जेसा २ अगला पात्र इत्यलं इसवास्ते वालक जन्मणा ये एक मंगल काम है इस जगे सब सामग्री पवित्र उजाला और शुद्ध हवा चहिये जिस जगे वडी भूल अपणे २ न्यात जात मुजब अलग २ रीतरीवाज रूढी आचारके आधीन होकर वच्चा और जापेवालीका केसा संस्कार करते हैं।

(जापेवालीका उपचार)—खाट हवाकी जगे उजाला होय उहां रखणा उस जापेवालीके आस पास वहोत भीड तथा वात चीत नहीं होणे देणा पीड नरू भये पीछे वहोत करके २४ घंटेके अंदर वच्चेका जन्म होता है जो पीड वहोत कष्टके संग आवे अथवा कोइ दुसरा कारण वणे तो वच्चा होते २ औरत होलेती है और जो वच्चा सुख शांतिमें होय तो भी औरतकूं वडा परिश्रम पडता है इसवास्ते वच्चा भये वाद उनकूं थोडे घटोंतक विसरामके लिये सोणे देणा जो नींद आजायगी तो थकेला उतर जाता है

और हुसियारीमें आती है जो नाताकती वहोत मालम दे और नींद नहीं आवै तो जाग्रती और ताकत लाणेवाली दवा देणी द्राक्षासव देशी वैद्य देते हैं डाकटर वाइन और ब्रांडी देते हैं किसीतरे हुसियारीमें लाणा ऊपर लिखे मुजब एक नींद लिये पीछे और हुसियारीमें आये पीछे पाणीमें वेरकी जडकी छालकूं उकाल दिनमें दो चार वेर अथवा पाणीमें ब्रांडी मिलाय योनिके वाहरके भागोकूं धोणा चहिये और आमल गिर गये पीछे गरम पाणीमें कपडा डुवाकर वाहरके भागपर वेर २ धरणा जापेवालीकूं थोडे दिनोंतक तो खाटमेंही सुलाये रखणा विछोणेमेंसे ऊठके फिरणे घिरणेसें वैठणेसें गर्भ-स्थान खिस जाता है खून गिरणे लग जाता है और उससें दुसरे वडे २ डरावणेवाले रोग पैदा हो जाते हैं आठ दिनतक तो जरूर सुलाये ही रखणा दस्त पेसाबभी उसी खाटमें पडीकूं ही कराणा वाद वैठणे उठणेकी जरा २ टेव डालणी पनरे दिन पीछे हाल चाल करणी सो भी हलू २ अपणे लोक एसी तजवीज कुछ नहीं रखते इसवास्ते योनिमें केइ २ तकलीपें पैदा हो जाती है इस वातका पूरा २ खयाल औरतोंने रखणा परिश्रम मैथुन गुस्सा ठंढा और वासी पदार्थ हवाकी जगा उसकूं त्यागणा एक महीनेतक थोडा और हलका भोजन लेणा हमेस सेक करणा और तैल मसलाणा ।

(दुष्ट कष्टीपणा)—पीड चले पीछे २४ घंटेमें प्रसव होणा चहिये और होय नहीं कष्ट पडे जाणना चहिये वच्चा आडा पडणेसें अथवा वच्चेका शिरवडा होय अथवा और-तके कोइ दुसरी इजा होणेसें वैठकमें सख्तमल वंधा भया रहणेसें अथवा गर्भस्थानमें वहोत पाणी होणेसें वो ढीला होता सुस्त होता है और चहिये जितने जोरसे सुकडता नहीं और इसतरे होनेसें कमलका मूं चहिये जितना खुलता नहीं उस करके गर्भ वाहर नहीं निकल सकता दाइ उसकू जोरसें करांजणेका कहती है उससें भी उसकूं वहोत कष्ट होता है ।

(इलाज)—दस्त कब्ज होय तो गरम जलकी या एरंड तेलकी पिचकारी लगाणी२ वहोत थकेला होय तो थोडी देर सोणे देणा—(गर्भका वेग)—वच्चा जणती वखत जो आता है गर्भाशयकी शिथलताके कारण वहोतसी वखत वेग वंध होता है इसवास्ते एसी दवा उस वख्त देणी चहिये सो वेग चला आवे लेकिन् गर्भ अटकणेका दुसरा कोइ कारण होय तो वेगकी दवा फायदा नहीं करती टंकण और अरगट ये दोनों दवा वेग लाता है ।

(रक्त श्राव)—वच्चा भये पीछे ऋतू धर्मकीतरे खून गिरता है उस खूनके संग [illegible] कितनाक हिस्सा तथा गर्भस्थानमें रहा भया कितनाक कचरा वाहर आता है ये श्राव धीरे २ कम होता है और रंग वदलणे लगता है ये खून और खून मिला भया धुंद २ मैला पानी दश पनेर दिनतक चलते रहता है और पीछे वंध होता है

इसकूं दवा दे कर एकदम बंध करना नहीं गरम पाणीमें कपडा भिगाकर बाहरके द्वारपर धरणा अथवा ठंढा पाणी एसे श्रावकूं तुरत बंध कर देता है उससे फायदेके बदले उलटा नुकशान दुसरा रोग पैदा होता है किसी वख्त जब खून जादा जाता है तो नाताकतीकाडर होता है इसवास्ते अत्पार्त्तव रोगपर लिखे भये इलाज करणा।

(जखम)—वहोत सीदाइयें धीरज और सावचेती नहीं रखकर जल्दीसें बच्चेकूं खेंचणेकी अजमायस करती है उससें औरतके इजा होती है अंदरमें फटकर चीरे पडते हैं वो जखम वडी मुस्किलसें रुकते हैं उसकूं गरम पाणीसे धोणा आपसमें दोनो वाटियें घसीजे नहीं इसवास्ते चलणे नही देणा नरमदस्त आवै एसी दवा देणी (खुराक)— मुलक २ के जात २ के अलग २ रीत रिवाज चल रही है इसवास्ते इहां सामान्य खुराक में लिखूगा इतनाही वस है तैलंग देशमें तीन दिन जापेवालीकू लघन कराते हैं सो ताकतवर औरत या कोई सामज्वरवालीकूं फायदेवंद है लेकिन नाजुक और नाताकतीवालीके लिये अछा नहीं ये लघन इस मुजब कराणा चाहिये वचा भये वाद चार पांच दिनतक सावू दाणोका दलिया थोडा फुलका पुराणे साठी चावल दूध चाह एसा पतला और हलका खुराक देणा और पीछे हलवा वगेरे घीवाला खुराक देणा।

(अधूराजाणा)—गर्भ रह्यां पीछै ७ महीनेके अंदर अधूरा गिर जाता है सातमें महीनेसे लेकर नवमे महीनेके पहली जो वचा होता है वो सतमासिया अठमासिया कहलाता है वो भी अधूराही गिणा जाता है अधूरा जादा करके तीसरे महीने जाता है वो वधा भया जादा नही होनेसें खूनही गिरता है चोथे महीने पीछै गर्भका शरीर करडा वंधता है वो गिरणा गर्भपात कहलाता है अधूरा एक वेर पडे पीछे वेर २ गिरणेका डर है कुसुआवडसें औरतका शरीर वहोतही विगड जाता है। (कारण)— नाताकती अयोग्य आहार विहार और महनत गुस्सा डर कामविकार उंचा नीचा गिरणा गर्भाशयकी नाताकती अथवा उसका रोग वगेरे उसका कारण है गरमीके दोष वाले वीर्यसें और नाताकत औरतके रहा भया गर्भ पूरे महीने टिक नहीं सकता जो कभी हो भी जाता है तो जीता नहीं (लक्षण)—वेचैनी आलस थकेला कमर तथा पेडूमें शूल थोडा २ खून झरणा ये उसके पूर्व लक्षण है पीछे जणणेके वखत कई यक चिन्ह मालम देते ही एकदम अधूरा गिर जाता है अथवा ये चिन्ह थोडे दिन कायम रहके पीछै होता है वहोत खून गिरणा ये जोखम तथा मोतकी निसाणी है— (इलाज)—जो खून थोडा गिरे तो गर्भ थांभणेका इलाज करणा १रोगीली औरतकूं एक टटरकी जगामें करडे विछोणेपर अत्यंत सुख शांतिमें सुलाये रखणा २ अत्पार्त्तवका इलाज करणा चार आनाभर फुलाई भई फिटकडीकूं अधसेर जलमें मिला चार २ पटेमें नीनरा भया जल पिलाते रहणा ३ क्लोरोडाइनकी ३० वूंद एक औंस पाणीमें मिलाकर पीना खूनका

जोर वढता दीखे तो कुसुआ वड होगा एसा समज उसका इलाज करणा ४ फिटकडी का पाणी पिलाते रहणा और ठंढे पाणीका पोता योनीपर धरते जाणा इससे खूनका प्रवाह वंध होता है कोइ भाग अंदर रह गया होय तो अंगली डाल निकाल देणा आठ दिनोंतक सुलाये रखणा खुराक सादा देणा दस्तका खुलासा रखणा जो अधूरेवाली औरत तुरत ऊठ काममे लगती है उसके गर्भाशयके अनेक रोग होते हैं उसमें गर्भाशय भ्रष्ट होणा मुख्य है ।

(सूआ रोग)—जो जापेमें रोग रह जाता है उसकूं सूआ रोग कहते हैं वुखार खासी उलटी सोजा शूल मंदाग्नि अरुचि तथा फीकाश ये उसके लक्षण है किसी २ कूं अपचा मोल उलटी आफरा दस्त शूल अरुचि दस्तकी कव्जी शिरमें दरद वगेरे वायू प्रधान चिन्ह होते हैं किसी २ के हाथ पैरोमें दाह पेशाबमें जलण तथा उष्ण वाय मूंका आणा मसूंडे फूल जाणा शरीरमें फीकाश पेटमें दाह पसीना जादा वदनका तूटणा पित्त प्रधान चिन्ह होते हैं इसके सिवाय ऋतूसंवंधी तथा गर्भाशय वगेरे स्थानिक विकारभी मालम देता है (इलाज)—देवदार्व्यादि क्वाथ नं० २१८) नयेसु ये रोगमें वहोत फायदे वंद है और सुवाके तमाम रोगोकों मिटा देता है २ वायूके चिन्ह होय तो नं० २७६ का सौभाग्य सुंठीपाक देणा) लोक इसकूं कम देते हैं ३ पित्तके चिन्ह होय तो नं० ३७३ का) जीरापाक देणा ४ वत्तीसा तपखीर रत्तल २ सूफ तो १० धाणा तो १० सुपेद वच तो २॥ इलायची तो २॥ गुलावका फूल तो ५ कपूरकाचरी तो ५ तमालपत्र तो २॥ चूर्ण करके इनोंके वरावर मिश्री इनमें इतनाही ताजा घी विदाम पिस्ता मिलाकर गोलियें देणी मात्रा ५ से १० तोला ५ लोह अथवा मंडूर त्रिकटुके संग घी सहतमें चाटणा इसके सिवाय हमारे विद्याशालाकी सूतिका भरण रस सन जापेके रोग मिटाता है ।

वंध्यत्व-वांझडीपणा.

(विवेचन)—वांझडीपणा दो प्रकारका है पहलेसे ही गर्भका नहीं रहणा वो तो शुद्ध वांझडी और एकाददफे गर्भ रह गये पीछे गर्भ वंध पडता वो अशुद्ध वांझडीपणा वांझडीका दोष अथवा रोगकूं औरतोंके रोगोंके प्रकरणमें दाखल करणेका कारण यहकी गर्भ धारणेवाली स्त्री है इतनाही नहीं जादा संवंध तो स्त्रीके दरदोंके साथ है लेकिन गर्भ रहणेमें पुरुषोंकाभी पूरा २ विगाड है दोनों औरत और मरदमेंसे जिसकी गलत होय उसकी परिक्षा पूर्ण विद्वान वैद्य पास कराणा चहिये इकली औरतका दोष मानकर दुसरा व्याह नहीं करना चाहिये कारण इतनी दो दो चीजें आपसमें लडे विगर हरगिज नहीं रहे एक वनमें दो सेर एक थंभमें वंधे दो हत्थी एक म्यानमें दो तलवार दो गानाका दृढ एक गन्धर्व एक पुरुष दोय औरत एक राजाके वरोवरीके दो प्रधान

रोगी एक पर दोय वैद्य इतने दो दो कभी एक जगे अछे नहीं इसवास्ते राजा महरा-जोंकी वात अलग है कारण आपसमें मिलणे नहीं देते और एक स्त्रीपर प्रेम राम जेसे रख्खा वेसा रहता है वहोत स्त्रियोंपर प्रेम कृष्णने रख्खा वेसा रहता है आपसमें ताने मोसे होतेइ रहते हैं वहोत मूर्ख कहा करते हैं वांझडीका इलाज है ही नहीं क्योंकी उनोंने वैद्यक शास्त्र पूरा जाणा नहीं कारण वांझडीपणा ये वदनका येक रोग है सो शस्त्रसें या दवासें मिट सकता है जव जमीनका और वीजका स्वरूप विचारेंगें तो ये सव वात समझमें आ जायगी जेसे जमीन अशुद्ध झाडी और झाखरवाली पथरोंकी खार वाली और पाणीभी वेमोसमका खराव और खात विगर डाली भई जमीन विगर संस्कारकी होती है तो उसमें अछा वीजभी पैदा नहीं होता जो कभी पैदा होता है तो फल या दाणे नहीं पकते इस किसम जो जमीन सव किस्म अछी हो और उसमें वोणेका वीज विगडा भया सडा भया होय तो यही हाल होता है अपणे प्रत्यक्ष देखते हैं एसी खराव जमीनकूं हलसें फोड खात डाल अनेक जतनोंसे सुधारेवाद उसमें अछा वीज वोया जाय तो अछे फल लगते हैं इसी किसम औरतका वदन निरोग मेद मली-चपणा सोजा गांठ जखम गरमी पीप पकणा धातू गिरणा खून गिरणा वगेरे होय तो दूर करणा तो फल देणेवाली होती है वांझडी होणेका कारण—औरतके योनिमें स्वभावसें खोड जेसे कमलका मूं टेढा चमडीका पडदा अथवा कमलका मू संकडा और स्त्री अंडकी अपूर्ण स्थिती २ औरतके शारीरक दोष जेसेके रजोत्पत्तीकी कसर अथवा विकार अथवा वदन फूल जाणा अथवा जल जाणा जादा तातपणा सूवा रोग वगेरे ३ (स्थानिक दोष)—जेसेंके गर्भाशय प्रदर गर्भाशयका वरम गर्भाशयमें चरवी गांठ वगेरेका जमाव गर्भाशयका फिर जाणा टेढा होणा कमल मुखका वरम तथा जखम योनी मार्गका सोजा दाह तथा असहणा गरमी सुजाक वगेरे चेपी रोग ४ पुरुषके वीर्यका दोष जेसे थोडा वीर्य दूषित वीर्य गरमी सुजाक वगेरे अथवा इनोंसें भया दुसरा रोग ।

(इलाज) वहोतसे रोग तथा दोषोंका इलाज इस किरणमें तथा पीछे लिख दिया है इहां विस्तारसें लिखणेकूं अवकास नहीं है शारीरक या स्थानिक रोग मालम पडे वो मिटाणेका और सामान्य आरोग्यता वधाणेका इलाज करणा एसे रोग उलटे वंटे एसा आहार विहारसें दूर रहणा पवित्रता और अछी आचरणा और सादा खुराक देणा ।

(गर्भ पैदा करणेवाले इलाज)—गर्भाशयकी शुद्धि करके गर्भ धारणमें मदत कर एसे थोडे सामान्य इलाज इहां लिखते हैं १ फल घृत नं० २८९, २ योगराज गूगल नं० ५८, ३ उडद तिल पुराणा वांस गुड मूलीके बीज गाजरके बीज दही खट्टी छाछ कवारपठा गूगल ए लियेसें ऋतू धर्म आता है ४ मालकांगणीके पत्ते साजीखार वच

जोर वढता दीखे तो कुसुआ वड होगा एसा समज उसका इलाज करणा ४ फिटकडी का पाणी पिलाते रहणा और ठंढे पाणीका पोता योनीपर धरते जाणा इससे खूनका प्रवाह वंध होता है कोइ भाग अंदर रह गया होय तो अंगली डाल निकाल देणा आठ दिनोंतक सुलाये रखणा खुराक सादा देणा दस्तका खुलासा रखणा जो अधूरेवाली औरत तुरत ऊठ काममे लगती है उसके गर्भाशयके अनेक रोग होते हैं उसमें गर्भाशय भ्रष्ट होणा मुख्य है ।

(सूआ रोग)–जो जापेमें रोग रह जाता है उसकूं सूआ रोग कहते हैं बुखार खासी उलटी सोजा शूल मंदाग्नि अरुचि तथा फीकाश ये उसके लक्षण है किसी २ कूं अपच्चा मोल उलटी आफरा दस्त शूल अरुचि दस्तकी कब्जी शिरमें दरद वगेरे वायू प्रधान चिन्ह होते हैं किसी २ के हाथ पैरोमें दाह पेशाबमें जलण तथा उष्ण वाय मूंका आणा मसूंडे फूल जाणा शरीरमें फीकाश पेटमें दाह पसीना जादा वदनका तूटणा पित्त प्रधान चिन्ह होते हैं इसके सिवाय ऋतूसंवंधी तथा गर्भाशय वगेरे स्थानिक विकारभी मालम देता है (इलाज)–देवदार्व्यादि क्काथ नं० २१८) नयेसु ये रोगमें वहोत फायदे वंद है और सुवाके तमाम रोगोकों मिटा देता है २ वायूके चिन्ह होय तो नं० २७६ का सौभाग्य सुंठीपाक देणा) लोक इसकूं कम देते हैं ३ पित्तके चिन्ह होय तो नं० ३७३ का) जीरापाक देणा ४ वत्तीसा तपखीर रत्तल २ सूफ तो १० धाणा तो १० सुपेद वच तो २॥ इलायची तो २॥ गुलावका फूल तो ५ कपूरकाचरी तो ५ तमालपत्र तो २॥ चूर्ण करके इनोंके वरावर मिश्री इनमें इतनाही ताजा घी विदाम पिस्ता मिलाकर गोलियें देणी मात्रा ५ से १० तोला ५ लोह अथवा मंडूर त्रिकुटुके संग घी सहतमें चाटणा इसके सिवाय हमारे विद्याशालाकी सूतिका भरण रश सव जापेके रोग मिटाता है ।

वंध्यत्व-वांझडीपणा.

(विवेचन)–वांझडीपणा दो प्रकारका है पहलेसे ही गर्भका नहीं रहणा वो तो शुद्ध वांझडी और एकाददफे गर्भ रह गये पीछे गर्भ वंध पडता वो अशुद्ध वांझडीपणा वांझडीका दोष अथवा रोगकूं औरतोके रोगोके प्रकरणमें दाखल करणेका कारण यंहकी गर्भ धारणेवाली स्त्री है इतनाही नहीं जादा संवंध तो स्त्रीके दरदोंके साथ है लेकिन गर्भ रहनेमें पुरुषोंकानी पूरा २ विगाड है दोनों औरत और मरदमेंसें जिसकी खलल होय उसकी परिक्षा पूर्ण विद्वान वैद्य पास कराणा चहिये इकेली औरतका दोष मानकर दुसरा व्याह नहीं करणा चाहिये कारण इतनी दो दो चीजें आपसमें लडे विगर हरगिज नहीं रहते एक वनमें दो सेर एक थंभमें वंधे दो हत्थी एक म्यानमें दो तलवार दो राजाका दल एक गादीपर एक पुरुष दोय औरत एक राजके वरोवरीके दो प्रधान

रोगी एक पर दोय वैद्य इतने दो दो कभी एक जगे अछे नहीं इसवास्ते राजा महराजोंकी वात अलग है कारण आपसमें मिलणे नहीं देते और एक स्त्रीपर प्रेम राम जेसे रख्खा वेसा रहता है वहोत स्त्रियोंपर प्रेम कृष्णने रख्खा वेसा रहता है आपसमें ताने मोसे होतेइ रहते हैं वहोत मूर्ख कहा करते हैं वांझडीका इलाज है ही नही क्योंकी उनोंने वैद्यक शास्त्र पूरा जाणा नही कारण वांझडीपणा ये वदनका येक रोग है सो शस्त्रसें या दवासें मिट सकता है जव जमीनका और वीजका स्वरूप विचारेंगें तो ये सव वात समझमें आ जायगी जेसे जमीन अशुद्ध झाडी और झाखरवाली पथरोकी खार वाली और पाणीभी वेमोसमका खराव और खात विगर डाली भई जमीन विगर संस्कारकी होती है तो उसमें अछा वीजभी पैदा नहीं होता जो कभी पैदा होता है तो फल या दाणे नहीं पकते इस किसम जो जमीन सव किस्म अछी हो और उसमें वोणेका वीज विगडा भया सडा भया होय तो यही हाल होता है अपणे प्रत्यक्ष देखते हैं एसी खराव जमीनकूं हलसें फोड खात डाल अनेक जतनोंसे सुधारेवाद उसमें अछा वीज वोया जाय तो अछे फल लगते हैं इसी किस्म औरतका वदन निरोग मेद मलीचपणा सोजा गांठ जखम गरमी पीप पकणा धातू गिरणा खून गिरणा वगेरे होय तो दूर करणा तो फल देणेवाली होती है वांझडी होणेका कारण–औरतके योनिमें स्वभावसें खोड जेसे कमलका मूं टेढा चमडीका पडदा अथवा कमलका मूं संकडा और स्त्री अंडकी अपूर्ण थिती २ औरतके शारीरक दोष जेसेंके रजोत्पत्तीकी कसर अथवा विकार अथवा वदन फूल जाणा अथवा जल जाणा जादा तातत्तपणा सूवा रोग वगेरे ३ (स्थानिक दोष)–जेसेंके गर्भाशय प्रदर गर्भाशयका वरम गर्भाशयमें चरवी गांठ वगेरेका जमाव गर्भाशयका फिर जाणा टेढा होणा कमल मुखका वरम तथा जखम योनी मार्गका सोजा दाह तथा असहणा गरमी सुजाक वगेरे चेपी रोग ४ पुरुषके वीर्यका दोष जेसे थोडा वीर्य दूषित वीर्य गरमी सुजाक वगेरे अथवा इनोंसें भया दुसरा रोग।

(इलाज) वहोतसे रोग तथा दोषोंका इलाज इस किरणमें तथा पीछे लिख दिया है इहां विस्तारसें लिखणेकू अवकास नहीं है शारीरक या स्थानिक रोग मालम पडे वो मिटाणेका और सामान्य आरोग्यता वधाणेका इलाज करणा एसे रोग उलटे वटे एसा आहार विहारसें दूर रहणा पवित्रता और अछी आचरणा और सादा खुराक देणा।

(गर्भ पैदा करणेवाले इलाज)–गर्भाशयकी शुद्धि करके गर्भ धारणमें मदत करे एसे थोडे सामान्य इलाज इहां लिखते हैं १ फल घृत नं० २८०, २ योगराज गूगल नं० ५८, ३ उडद तिल पुराणा वांस गुड मूलीके वीज गाजरके वीज दही खट्टी छाछ कवारपठा गूगल ए लियेसें ऋतू धर्म आता है ४ मालकांगणीके पत्ते साजीखार वच

जोर वढता दीखे तो कुसुआ वड होगा एसा समज उसका इलाज करणा ४ फिटकडी का पाणी पिलाते रहणा और ठंढे पाणीका पोता योनीपर धरते जाणा इससे खूनका प्रवाह वंध होता है कोइ भाग अंदर रह गया होय तो अंगली डाल निकाल देणा आठ दिनोंतक सुलाये रखणा खुराक सादा देणा दस्तका खुलासा रखणा जो अधूरेवाली औरत तुरत ऊठ काममे लगती है उसके गर्भाशयके अनेक रोग होते हैं उसमें गर्भाशय भ्रष्ट होणा मुख्य है ।

(सूआ रोग)—जो जापेमें रोग रह जाता है उसकूं सूआ रोग कहते हैं बुखार खासी उलटी सोजा शूल मंदाग्नि अरुचि तथा फीकाश ये उसके लक्षण है किसी २ कूं अपच्चा मोल उलटी आफरा दस्त शूल अरुचि दस्तकी कब्जी शिरमें दरद वगेरे वायू प्रधान चिन्ह होते हैं किसी २ के हाथ पैरोमें दाह पेशाबमें जलण तथा उष्ण वाय मूका आणा मसूंडे फूल जाणा शरीरमें फीकाश पेटमें दाह पसीना जादा वदनका तूटणा पित्त प्रधान चिन्ह होते हैं इसके सिवाय ऋतूसंवंधी तथा गर्भाशय वगेरे स्थानिक विकारभी मालम देता है (इलाज)—देवदार्व्यादि काथ नं० २१८) नयेसु ये रोगमें वहोत फायदे वंद है और सुवाके तमाम रोगोकों मिटा देता है २ वायूके चिन्ह होय तो नं० २७६ का सौभाग्य सूंठीपाक देणा) लोक इसकूं कम देते हैं ३ पित्तके चिन्ह होय तो नं० २७३ का) जीरापाक देणा ४ वत्तीसा तपखीर रत्तल २ सूफ तो १० धाणा तो १० सुपेद वच तो २॥ इलायची तो २॥ गुलाबका फूल तो ५ कपूरकाचरी तो ५ तमालपत्र तो २॥ चूर्ण करके इनोंके वरावर मिश्री इनमें इतनाही ताजा घी विदाम पिस्ता मिलाकर गोलियें देणी मात्रा ५ से १० तोला ५ लोह अथवा मंदूर त्रिकटुके संग घी सहतमें चाटणा इसके सिवाय हमारे विद्याशालाकी सूतिका भरण रस सव जापेके रोग मिटाता है ।

वंध्यत्व-वांझडीपणा.

(विवेचन)—वांझडीपणा दो प्रकारका है पहलेसे ही गर्भका नहीं रहणा वो तो शुद्ध वांझडी और एकाददफे गर्भ रह गये पीछे गर्भ वंध पडता वो अशुद्ध वांझडीपणा वाझडीका दोष अथवा रोगकूं औरतोंके रोगोंके प्रकरणमें दाखल करणेका कारण यहकी गर्भ धारणेवाली स्त्री है इतनाही नहीं जादा संवंध तो स्त्रीके दरदोंके साथ है लेकिन गर्भ रहणेमें पुरुषोंकाभी पूरा २ विगाड है दोनों औरत और मरदमेंसे जिसकी खलल होय उसकी परिक्षा पूर्ण विद्वान वैद्य पास कराणा चहिये इकेली औरतका दोष मानकर दूसरा ब्याह नहीं करना चाहिये कारण इतनी दो दो चीजें आपसमें लडे विगर हरगिज नहीं रहते एक वनमें दो सेर एक थंभमें वंधे दो हत्थी एक म्यानमें दो तलवार दो सानका दल एक गव्वरर एक पुरुष दोय औरत एक राजाके वरोवरीके दो प्रधान

रोगी एक पर दोय वैद्य इतने दो दो कभी एक जगे अछे नही इसवास्ते राजा महराजोंकी वात अलग है कारण आपसमें मिलणे नहीं देते और एक स्त्रीपर प्रेम राम जेसे रख्खा वेसा रहता है वहोत स्त्रियोंपर प्रेम कृष्णने रख्खा वेसा रहता है आपसमें ताने मोसे होतेइ रहते हैं वहोत मूर्ख कहा करते हैं वांझडीका इलाज है ही नहीं क्योंकी उनोंने वैद्यक शास्त्र पूरा जाणा नही कारण वांझडीपणा ये वदनका येक रोग है सो शस्त्रसें या दवासें मिट सकता है जव जमीनका और वीजका स्वरूप विचारेंगें तो ये सव वात समझमें आ जायगी जेसे जमीन अशुद्ध झाडी और झाखरवाली पथरोंकी खार वाली और पाणीभी वेमोसमका खराव और खात विगर डाली भई जमीन विगर संस्कारकी होती है तो उसमें अछा वीजभी पैदा नहीं होता जो कभी पैदा होता है तो फल या दाणे नहीं पकते इस किसम जो जमीन सव किस्म अछी हो और उसमें वोणेका वीज विगडा भया सडा भया होय तो यही हाल होता है अपणे प्रत्यक्ष देखते हैं एसी खराव जमीनकूं हलसें फोड खात डाल अनेक जतनोंसे सुधारेवाद उसमें अछा वीज वोया जाय तो अछे फल लगते हैं इसी किस्म औरतका वदन निरोग मेद मलीचपणा सोजा गांठ जखम गरमी पीप पकणा धातू गिरणा खून गिरणा वगेरे होय तो दूर करणा तो फल देणेवाली होती है वांझडी होणेका कारण—औरतके योनिमें स्वभावसें खोड जेसे कमलका मूं टेढा चमडीका पडदा अथवा कमलका मू संकडा और स्त्री अंडकी अपूर्ण स्थिती २ औरतके शारीरक दोप जेसेंके रजोत्पत्तीकी कसर अथवा विकार अथवा वदन फूल जाणा अथवा जल जाणा जादा तातत‍पणा सूवा रोग वगेरे ३ (स्थानिक दोप)—जेसेंके गर्भाशय प्रदर गर्भाशयका वरम गर्भाशयमें चरवी गांठ वगेरेका जमाव गर्भाशयका फिर जाणा टेढा होणा कमल मुखका वरम तथा जखम योनी मार्गका सोजा दाह तथा असहणा गरमी सुजाक वगेरे चेपी रोग ४ पुरुषके वीर्यका दोप जेसे थोडा वीर्य दूपित वीर्य गरमी सुजाक वगेरे अथवा इनोसें भया दुसरा रोग ।

(इलाज) वहोतसे रोग तथा दोपोंका इलाज इस किरणमें तथा पीछे लिख दिया है इहां विस्तारसें लिखणेकूं अवकास नहीं है शारीरक या स्थानिक रोग मालम पडे वो मिटाणेका और सामान्य आरोग्यता वधाणेका इलाज करणा एसे रोग उलटे वढे एसा आहार विहारसें दूर रहणा पवित्रता और अछी आचरणा और सादा खुराक देणा ।

(गर्भ पैदा करणेवाले इलाज)—गर्भाशयकी शुद्धि करके गर्भ धारणमें मदद करे एसे थोडे सामान्य इलाज इहां लिखते हैं १ फल घृत नं० २८९, २ योगराज गूगल नं० ५८, ३ उडद तिल पुराणा वांस गुड मूलीके वीज गाजरके वीज दही खट्टी छाछ कवारपठा गूगल ए लियेसें ऋतू धर्म आता है ४ मालकांगनीके पत्ते साजीखार वच

तथा भिलावा इनोंकों पीस पीणेसें ऋतू धर्म आता है ५ बल बीज जेठीमधु खपाट वड वाइकी नरमसाखें नागकेशर तथा मिश्री सहत दूध तथा घीमें पीणा ६ आस गंधके काथमें पकाया भया घी प्रभातसमें पीणा ७ पुष्प नक्षत्रमें सुपेद रींगणीकी जड निकालके दूधमें पीस कर पीणा ८ पीले फूलोंका कांटा शेलियाकी जड धावडीका फूल वडकी शाख काला कमल उसकूं पीस दूधमें पीणा ९ जीरा सपेद फूलोंका सरपंखा और पारस पीपलका फल वांटकर पीणा १० खाखरा (पलासके पत्ते) दूधमें पीस कर पीणा इन इलाजोकों ऋतु स्नान करे पीछे १ से ८ दिनतक अजमाकर गर्भाधान करणा।

किरण ११ मी.

बच्चोंका रोग.

जेसें औरतोंके केइयक रोग अलग होते हें तेसे बच्चोंके केइयक रोग अलग २ होते हें जेसेके दांत आणा वांइटे कृमि ओरी अचवडा खुलखुलिया खासी गाल पचोरिया इतना और भी तफावत है के वडी ऊमरवालेका और बचेकी नाजुक मिजाजके कारण इलाजोमें फेरफार करणा पडता है बच्चोंकी पिलाणेवाली दवाओंमें अफीम सोमल पारा धतूरा बछनाग हाइड्रोस्यानिक एसिड फोसफरस तथा कितनेक सख्त ऐसिड और क्षारोका देणा बणे जहांतक कभी नहीं करणा एसा विद्वान वैद्य और तबीबोंका फुरमाण हें आरोग्यताके साथ ऊमरकी उन्नती चाहणेवाले वैद्य और डाकटर जो परोपकारी हे सो इन चीजोका वरताव बिलकुल नहीं करते हें अब बच्चोंका सादा और हमेसा केलिये अछा एसा सामान्य इलाज लिखते हें.

(जन्म घूटी)-(गलथूथी)-बच्चा जब जन्मता है तब उसकूं गलथूथी पिलाणेकी नहीन जगे चलण हे गुडघी वगेरे बचेकूं इसवास्ते ये पिलाई जाती है के बचेकी शारीरक तथा मनकी शक्ति तथा बुद्धि वधाणेकू और वैद्यक शास्त्रका हुकम हे के बहोत दिनोंतक सेवन करणा चाहिये अज्ञान इहांतक फैल गया सो मूर्ख और तें मरजी मुजब एहाथ गुड वगेरे चीज बचेके तालवेके लगाकर एक तरेका नेक चार किया करती है सोभी मुल्क २ की अलग २ रिवाज ठहरायली हें जन्म घूंटी इस वजे देणा चहिये सोना ब्राम्ही शंखावली सहत घी ये ताकत और अक्कलकूं वढाती हे घी तथा सहतमें सोना घसकर पिलाणा शंखावली तथा सुपेद वचका चूर्ण घी तथा सहतमें चटाणा ये गलथूथी पहिले महीनेमें हमेस एकेक रत्ती दुसरेमें दो रत्ती एसे वरसभरकूं १२ रत्ती पीछे वरे वरे दोढ पांच २ रत्ती मात्रा वधाणी-(बच्चोंके रोग तथा कारण)-१ बच्चोंके रोग ज्यादा करके माताके कुपथ्यसें होता है भारी तथा विषम खुराक माके दूधकूं बिगा-

डता है उसके पीणेसें वच्चा वेमार होता है २ दांत जव आणे लगते हैं तव वुखार दस्त उलटी तथा वांइटे चमकणा वगेरे वडी डरावणी हालतमें जागिरता है ३ दूध पीणा छोडे वाद खाणा जव सीखता है तव अयोग्य आहार ठंढ या गरमी हवासें वेमार होता है और मावापकी गफलत इसमें मुख्य कारण है देखते हैं सो वहोत अदमी तुल वृश्चिकी संक्रांतकूं ठंढ कालामानके गरम खान पान दिनका सोणा दही मसाले जादा गरिष्ट और पेटभर खाणा और ताकत वर दवायां खाणा सरू करते हैं कुंभ मीनकी संक्रातीमें दिनका सोणा गुड तेल वासी ठंढी चीजें लोक खाकर वेमार गिरते हैं इसी किस्म वचोंकूंभी वेमार डालते हैं ४ चेपी रोग जेसेके ओरी अचपडा वडी खासी वगेरे–वुखार दस्त खासी वाइंटे वगेरे कितनेक रोगकी परिक्षा झट हो जाती है (लक्षण)–विगर वोलणेवाले वच्चोंके कितनेक रोगोंकी मालम सहजमें नहीं पडती वालक रोता रहे तव समझणा के तो इसकूं भूख लग रही है अथवा वदनमें कोइ दरद है शिर आंख कान नाक पेट वगेरे अवयवोके अंदर जव दरद होता है तव वच्चा दम २ में उधर हाथकूं ले जाता है और दुसरा कोई उहां दवाता है तो जादा रोता है (१ वुखार)–दूध पीणेवाले वच्चेके विकारवाले दूधसे रोग होता हैं या अजीर्णसे होता है या आगंतुक कारणसें रोग होता है–(इलाज)–१ अतीस १ रत्तीसें १ वाल सहतके संग चटाणा फायदे वंद है २ कृष्णादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग वालकका दूध चुंगणा कभी वंध नहीं करणा मा या धायकूं पथ्य करणा माकूं पथ्य या लंघन येही वालकका पथ्य या लंघन समझणा ३ खाणेवाले वच्चेकूं पसीनेकी दवा तथा दस्त साफकी दवा देणी हरडे या एरंडी तेल ४ फक्त कुटकीकूं शेक उसकी फक्की जलसे देणी–(दस्त) दूधके दोपसें दांत निकलणेसे अपच्चेसें ठढी हवाकी असरसें और ओरी अचपटा वगेरे फूटके निकलणेवाले रोगसें दस्त होणे लगते हैं–(इलाज)–१ एरडी तेलका जुलाव देणेसें दस्तका कारण वंध हो जाता है २ इंद्रजव जरा सेक कर दूधमें अथवा मूमे देकर चूंची पिलाणा ३ वीलकी गिर धावडीके फूल वाला लोद तथा गजपीपर इनोंका काथ अथवा चूर्ण सहतके संग ४ अतीस सूंठ मोथ वाला इंद्रजवका काथ ५ इंद्रजव तथा वायवि डंगकूं शेक इसकी फक्की ६ डोवर्स पाउडर देणा ७ अजमोदादि गुटिका नं० २४७.

(वुखारके संग दस्त)–१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतमें देणा २ डोवर्स पाउडर तथा किनाइन देणा ३ अतीस सहतमें चटाणी.

(आम मिला दस्त)–१वायविडग अजमोद छोटी पीपरका चूर्ण गरम पाणीके संग देणा २ कुटकीकूं शेक पुराणे गुडमें गरम पाणीसे देणा–(खूनका दस्त)–१ सूंठ

तथा मिलावा इनोंकों पीस पीणेसें ऋतू धर्म आता है ५ वल बीज जेठीमधु खपाट वड वाइकी नरमसाखें नागकेशर तथा मिश्री सहत दूध तथा घीमें पीणा ६ आस गंधके काथमें पकाया भया घी प्रभातसमें पीणा ७ पुष्प नक्षत्रमें सुपेद रींगणीकी जड निकालके दूधमें पीस कर पीणा ८ पीले फूलोंका कांटा शेलियाकी जड धावडीका फूल वडकी शाख काला कमल उसकूं पीस दूधमें पीणा ९ जीरा सपेद फूलोंका सरपंखा और पारस पीपलका फल वांटकर पीणा १० खाखरा (पलासके पत्ते) दूधमें पीस कर पीणा इन इलाजोकों ऋतु स्नान करे पीछे १ से ८ दिनतक अजमाकर गर्भाधान करणा ।

किरण ११ मी.

बचोंका रोग.

जेसें औरतोंके केइयक रोग अलग होते हें तेसे बचोंके केइयक रोग अलग २ होते हें जेसेके दांत आणा वांइटे कृमि ओरी अचवडा खुलखुलिया खासी गाल पचोरिया इतना और भी तफावत है के वडी ऊमरवालेका और बचेकी नाजुक मिजाजके कारण इलाजोमें फेरफार करणा पडता हे बचोंकी पिलाणेवाली दवाओंमें अफीम सोमल पारा धतूरा वछनाग हाइड्रोस्यानिक एसिड फोसफरस तथा कितनेक सख्त ऐसिड और क्षारोंका देणा वणे जहांतक कभी नहीं करणा एसा विद्वान वैद्य और तबीवोंका फुरमाण हें आरोग्यताके साथ ऊमरकी उन्नती चाहणेवाले वैद्य ओर डाकटर जो परोपकारी हे सो इन चीजोंका बरताव बिलकुल नहीं करते हें अब बचोंका सादा और हमेसा केलिये अछा एसा सामान्य इलाज लिखते हें.

(जन्म घूंटी)-(गलथूथी)-बचा जब जन्मता है तब उसकूं गलथूथी पिलाणेकी बहोत जगे चलण हे गुडघी वगेरे बचेकू इसवास्ते ये पिलाई जाती हे के बचेकी शारीरक तथा मनकी शक्ति तथा बुद्धि बधाणेकूं और वैद्यक शास्त्रका हुकम हे के बहोत दिनोंतक मनन करणा चाहिये अज्ञान इहांतक फेल गया सो मूर्ख और तें मरजी मुजब एकान गुड वगेरे चीज बचेके तालवेकू लगाकर एक तरेका नेक चार किया करती हें लोगी मुलक २ की अलग २ रिवाज ठहरायली हें जन्म घूंटी इस वजे देणा चहिये सोना ब्राह्मी शंखावली सहत घी ये ताकत और अक्कलकूं बढाती हे घी तथा सहतमें सोना घसकर खिलाना शंखावली तथा सुपेद बचका चूर्ण घी तथा सहतमें चटाणा ये गलथूथी पहिले महीनेमें हमेस एकेक रत्ती दुसरेमें दो रत्ती एसे बरसभरकूं १२ रत्ती पीछे बरस बरस देढ पांच २ रत्ती मात्रा बधाणी-(बचोंके रोग तथा कारण)-१ बचोंके रोग बहोत करके माताके कावूमें होता हे भारी तथा विषम खुराक माके दूधकूं बिगा-

डता है उसके पीणेसें वच्चा वेमार होता है २ दांत जव आणे लगते हैं तव वुखार दस्त उलटी तथा वांइटे चमकणा वगेरे वडी डरावणी हालतमें जागिरता है ३ दूध पीणा छोडे वाद खाणा जव सीखता है तव अयोग्य आहार ठंढ या गरमी हवासें वेमार होता है और मावापकी गफलत इसमें मुख्य कारण है देखते हैं सो वहोत अदमी तुल वृश्चिकी संक्रांतकूं ठंढ कालामानके गरम खान पान दिनका सोणा दही मसाले जादा गरिष्ट और पेटभर खाणा और ताकत वर दवायां खाणा सरू करते हैं कुभ मीनकी संक्रातीमें दिनका सोणा गुड तेल वासी ठंढी चीजें लोक खाकर वेमार गिरते हैं इसी किस्म वच्चोंकूंभी वेमार डालते हैं ४ चेपी रोग जेसेके ओरी अचपडा वडी खासी वगेरे– (लक्षण)–वुखार दस्त खासी वांइटे वगेरे कितनेक रोगकी परिक्षा झट हो जाती है विगर वोलणेवाले वच्चोंके कितनेक रोगोंकी मालम सहजमें नहीं पडती वालक रोता रहै तव समझणा के तो इसकूं भूख लग रही है अथवा वदनमें कोइ दरद है शिर आंख कान नाक पेट वगेरे अवयवोंके अंदर जव दरद होता है तव वच्चा दम २ में उधर हाथकूं ले जाता है और दुसरा कोई उहां दवाता है तो जादा रोता है (१ वुखार)– दूध पीणेवाले वच्चेके विकारवाले दूधसे रोग होता हैं या अजीर्णसे होता है या आगं-तुक कारणसें रोग होता है–(इलाज)–१ अतीस १ रत्तीसें १ वाल सहतके संग चटा-णा फायदे वंद है २ कृष्णादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग वालकका दूध चुंगणा कभी वंध नहीं करणा मा या धायकूं पथ्य करणा माकूं पथ्य या लंघन येही वालकका पथ्य या लंघन समझणा ३ खाणेवाले वच्चेकूं पसीनेकी दवा तथा दस्त साफकी दवा देणी हरडे या एरंडी तेल ४ फक्त कुटकीकूं शेक उसकी फकी जलसें देणी–(दस्त) दूधके दोषसें दांत निकलणेसे अपच्चेसें ठंढी हवाकी असरसें और औरी अचपडा वगेरे फूटके निकलणेवाले रोगसें दस्त होणे लगते हैं–(इलाज)–१ एरंडी तेलका जुलाव देणेसें दस्तका कारण वंध हो जाता है २ इंद्रजव जरा सेक कर दूधमें अथवा मूमे देकर चूंची पिलाणा २ वीलकी गिर धावडीके फूल वाला लोद तथा गजपींपर इनोंका क्वाथ अथवा चूर्ण सहतके संग ४ अतीस सूंठ मोथ वाला इंद्रजवका क्वाथ ५ इंद्रजव तथा वायवि डंगकूं शेक इसकी फकी ६ डोवर्स पाउडर देणा ७ अजमोदादि गुटिका नं० २४७.

(वुखारके संग दस्त)–१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतमें देणा २ डोवर्स पाउ-डर तथा किनाइन देणा ३ अतीस सहतमें चटाणी.

(आम मिला दस्त)–१वायविडग अजमोद छोटी पींपरका चूर्ण गरम पाणीके संग देणा २ कुटकीकूं शेक पुराणे गुडमें गरम पाणीसे देणा–(सूनका दस्त)–१ सूंठ

अतीस नागरमोथा वाला तथा इंद्रजवका काथ २ वाला तथा सहत चावलोंके धोये जलमें ३ डोवर्स पाउडर.

(६ खासी)–१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२ सहतके संग २ मोथा अतीस छोटी पीपर तथा काकडासींगीका चूर्ण अथवा काथ सहतके संग ३ अतीसका चूर्ण सहतमें ४ ईपीकाक्युआना पाउडर १ ग्रेण एन्टीमोनियल पाउडर ३ ग्रेण मोलेठीका चूर्ण ९ ग्रेण दो दो ग्रेण खांडके सीरेमें देणा ५ केलोमेल ५ ग्रेण रुबार्ब पाउडर ४ ग्रेण मिलाकर दो पुडीकर एक चीणीके सीरेमें देणा उससे दस्त साफ नहीं आवे तो ५ घंटे पीछे दुसरी फेर दे देणी ६ इतने इलाजोंसे खासी कम नहीं पडे तो एन्टीमोनियल वाइन दश बूंद एपीकाक्युआन्हा वाईन २० बूंद नाइट्रेक ओफ पोटाश ग्रेण ६ केम्फर वोटर ग्रेण ६ इनोकों मिलाकर टंकमें एक छोटी चिमचीभर दवा दिनमें तीन वेर देणा.

(७ वडी खासी)–खुल खुलिया खासी एक चेपी रोग है ये वचोंकेही होती है उसमे थोडा बुखार आता है और खासते उलटी हो जाती है और खासते २ मूं लाल हो जाता है मुरझा जाता है किसी २ वखत दस्त पेशाब भी अंदर निकल जाता है इस रोगमें वाजे वखत चमक और वांइटे हो जाते हैं दुसरे अठवाडियेमें इस रोगका जोर वहोत वढता है लोकीकमें अढाई महीनेकी मुदत इसकी मानते हैं अगर अछीतरे सार संभाल दवा करणेमें आवे तो तीसरे अठवाडे पीछे मिट सकता है–(इलाज)–कस्तूरी इकेली अथवा किसी दुसरी दवाके संग देणा २ भीमसेनी कपूर फायदा करता है ३ कांटा शेलियेकी छालका उकाला पीणा ४ ईपीकाक्युआना हींग ५ भुय रींगणीका उकाला सहत डालकर पिलाणा ६ हरडेकी अवलेही नं० २६४, ७ कंटकारी अवलेह नं० २६३, ८ नींद लाणेकूं अफीम किरमाणी डोवर्स पाउडर वगेरेका उपयोग करणा.

(८ हांफणी)–१ शृंग्यादि चूर्ण नं० २२२, २ हरडे वहेडा मोलेठी सम वजन गरम पाणीमें पीस उसमें जरा सींधा निमक तथा सहत मिलाकर २ से ३ वाल दिनमें तीन वेर चटाणा जरूर लगे तो रेवचीणीका शीरा डालणा ३ अरडूसेके पत्तोंका रस जरा गरम कर अंदर सहत डालकर पीणा ४ वडी उमरके वचेकूं पापडखार विणकी दारु इलगादी गुड तथा गरम दूधमें मिलाकर पिलाणेमें उलटी होगी ५ डाकतर लोक वांडीका दो चार बूंद चिमचा भर पाणीमें पिलाते हैं (६ बाहरका इलाज)–फुलालेन टरपेन्टाइन तथा पोस्तके डोडेका छातीपर सेक टीकामाली रेवचीनी तथा एलियेका लेपर कर अरडूसेके तथा नागर वेलके पत्तोंकू पेटपर बांधणा.

(माल तथा मासी)–१ डाम अरडूसेका पत्ता हरडे तथा पीपर चूर्ण सहतमें २ बांस कपूरका चूर्ण सहतमें ३ धनासा पीपर दाख तथा हरडेका चूर्ण सहतमें ४ नाणा

तथा मिश्री चावलोंके धोवणमें ५ काकडासींगी मोथ तथा अतीसका चूर्ण सहतमें ६ अरडूसेके पत्तोंका पुटपाक कर रस निकाल उसमें सहत पींपर तथा फुलाया टकण डाल पिलाणा ७ अरडूसा सूंठ तथा भूरींगणीका उकाला सहत डाल ८ अलशीकी पोटिस गरम २ छातीपर बांधते जाणा–१० (उलटी)–मोथा अतीस काकडासींगीका चूर्ण सहतमें २ जायफलकूं सहतमें घसकर देणा ३ कुटकी सहतमें चटाणा ४ चित्रक सूंठ सहतमें.

(दूधकी उलटी)–१ आंबेकी गुठली चावलोंकी धाणी सींधा निमकका चूर्ण सहतमें २ कली चूनेका नीतरा भया पाणी दूध मिलाकर पिलाणा ३ हरडे अथवा एरंडी तेल देकर पेटका विकार होय सो निकाल डालणा–(१२ गलेका पडणा)–तालवेमें खड्डा पडता है बच्चा चूंग नहीं सकता दस्त पतला पाणीकी प्यास डोक तथा मूमें दरद दूधकी उकारी करे–(१ इलाज)–हरडे वच तथा उपलेट सम वजन दूधमें उकाल उसमें तीजे भागका सहत मिलाय फजर सांझ चिमचा २ भर पिलाणा २ एरंडीके पत्ते घीसे चोपड तालवेपर बांधणा ३ तालवेपर हमेस घी तथा तेल लगाकर चिकणा रखणा ४ सेंभरका सींग दूधमें घसकर पिलाणा तथा तालवेपर लेप करणा ५ वज तथा जायफल घीमें पीस लेप करणा.

(१३ गाल पचोरिया)–गाल पचोला कानकी जडके नीचेके गलेके दोनों भाग लाल होकर सूज जाता है तथा गांठे हो जाती है.

(इलाज)–१ फिटकडीके कुरले कराणा मांजूं फलके कुरले कराणा उकाल कर अकलकरा मूमे रखवाणा ३ जंगली उपलोंकी राख मुलतानी मट्टी सींधा निमकका लेप ४ सहत कलीचूनेका लेप कर रूई चपकाणी जादा तकलीप होती दीखे तो जोकसे खून निकलवा डालणा और कर्णक सन्निपातसे गांठ होय तो घी पिलाकर सात दिनमें या तो मिटे नही तो वाद जोक लगाणी या चित्रक आककी जड वीजोरेकी जड दारू हलदी अरणीकाष्ट रासना सूंठ इनोको पीस गरम कर उसपर लेप करणा पेटमें दवा कर्णक सन्निपातकी देणी.

(१४ पारगला)–गर्भवाली औरतका दूध पीणेसें हाथ पेर तो सूके जाते हैं पेट पडे जेसा खासी मंदाग्नि उलटी अरुचि अंधेरी झांखा पडणा भ्रम ये उसके लक्षण हैं– (इलाज)–१ छोटी पींपर सहतमें चटाणी २ वडी हरडे तजकुं घस जलमें देणा ३ अजमोद जीरा स्याहजीरा सूंठ इनोका चूर्ण सहतमें ४ काली मिरच गरमागरम जलमें डाल ठंढा भये चूरा डाल पिलाणा ५ मुंगियेकी भस्मी गुलकंदमें या सहतमें या घीमें.

(१५ आंचकी)–(वांइटे)–(चमकणा)–(कारण)–१ दांत आते वखतमें कुपथ्य खुराक देणा २ आंतरोंमें कृमियों पडणेसें ३ दस्त बंध होणेसें आंतरोंमें सख्त

मल बंध जाणेसें ४ अतीसारकी बेमारी बहोत दिनोंतक रहणेसें ५ बुखारसें ६ खुल खुलिया खासीसें ७ और मृगी वगेरे मगजके विकारसें वांइटे आंचकी हो जाती है— (इलाज)—१ गरम पाणीकी वाफ नं० ५६६ बच्चा नाताकत होय तो बाफकी एवजीमें लिखा धावलेका प्रयोग करणा २ दस्तके विगर दुसरे कारणसें आंचकी भई होय तो एक जुलाब दे देणा एरंडी तेलका अथवा सल्फेट ओफ सोडा ३ दस्त लगते होय तो दस्त बंधकी दवा देणी जेसे क्लोरोडाईन संजीवनी वगेरे ४ जो पेटमें बहोत बोझा होय और उलटी होती होय तो उलटी कराणेकी दवा देणी अथवा गलेमें पींछा फिराकर उलटी कराणी ५ पेटपर राईके पत्ते अथवा कपडा दोलडेके बीचमें राइका पलाएर लगाणा चमडी लाल होय तब निकाल डालणा ६ दांतके मसूंढे गरम और नरम होय तो शस्त्र वैद्यसें ऊपर दांत निकलणेकी जगे चीरा दिलाणा ७ कृमिसें होय तो कृमिहर दवा पृष्ट ३१६, सेन्टोनाइन १ से दो ग्रेण बूरेके संग देणा और ४ घंटे बाद चिमचा भर एरंडीका तेल पिलाणा सब निकल जायगी जो दस्त सुपेद आता होय तो डोवर्स पाउडर देणा.

(१६ मृगी)—(बाई)—सपेद पेठेके रसमें मोलेठीका चूर्ण देणा २ गऊका दूध घी दही और गोबरमें पकाया भया घी चटाणा ३ शीतल मिरच हमेश एकेक दो दो खिलाणा ४ बचकी सहतमें ।॥ सें एक बालकी गोली कर खिलाणी.

(१७ फूटकर निकलणेवाले बुखार)—इन सबोंका इलाज बुखारके किरणमें लिखा है शीतला ओरी अचबडा वगेरेका.

(१८ पेटका फूलणा)— १ सींधा निमक सूंठ इलायची तथा सेकी भई हींग घीमें चूर्ण अथवा जलके संग २ सूंठके तथा हींगके उकाले जलमें एरंडीका तेल ३ पेटपर हींग अथवा एलियेका लेप ४ साइट्रेट ओफ मेग्नीश्याका थोडा ग्रेण पाणीके संग देणा.

(१९ कृमि)—(पृष्ट ३१६) लिखे इलाज कृमिका करणा.

(२० बार)—बचोंके पेटमे भार रहता है उस करके पेट तुंबातूंब रहता है और भूखा हांफते रहता है पेटमें दरद होता है और थोडा २ दस्त टुकडा २ होता है— (इलाज)—दीपन पाचन दवाके संग दस्तकी दवा देणी २ एरंडीका तेल देणा ३ [illegible] सेक उसकी फकी गरम जलमें ३ टंकामारी देणा ४ जुलाफा अथवा रेव[illegible]चीनीका संग देना—(२१ दांत फूटणा)—१ दांत फूटतीवख्त लींडी पीपर धावडीके फूल सहतमें मिलाय मसूडोंपर रगडणा २ दांत निकले नहीं और तकलीफ करे बुखार दस्त वांइटे वगेरे तो नस्तर देकर दांतके मसूंडे चीराणा ३ दस्त बहोत होता होय तो दस्तकी दवा करणी एरोमेटिक पाउडर ओफ चोक देणा.

(२२ चूंचापणा)–आखोंकी भापणीमें खुजली दरद तथा पाणी झरता है उस करके वच्चा आंखोंकू नाककूं तथा निलाडकूं मसलते रहता है सूर्यका धूप देख नहीं सकता और आंख खोल नहीं सकता–(इलाज)–त्रिफला साटेकी जड लोद सूंठ और दोनों रींगणी इन सबोंकों जलमें पीस जरा गरम कर भांफणीपर लेप करणा.

(२३ मुखपाक)–माके दूधके दोषसें अथवा गरम खाणेसें वच्चेका मूं आजाता है १ शंखजीरा तथा सोनागेरूका चूर्ण मूंमे रगडाणा २ कंकोल मिरच मिश्री वंश लोचन फुलाई भई फिटकडी इलायची मूंमे लगाकर लाले पटकाणी ३ गोपीचंदन दूधमें पीस लगाणा ४ गिलोय सत्व मूमे लगाणा ५ वकरीके दूधकी धार मूंमे दिराणी ६ तव-खीर मूंमे लगाणी ७ सुहागी सहतमे मिला मूमे लगाणा ८ चार इलायचीके दाणेमें सोनागेरू ॥ भर पीस मूंमे लगाते रहणा लाल गिरके गरमी निकलती है.

(२४ नाभिका पकणा)–१ बकरीकी लीडिये दूधमें पीस लेप करणा २ तज चंदनका चूर्ण दवाणा.

(२५ गुदाका पकणा)–१ रसोत पिलाणा तथा गुदाके लगवाणा २ संख मोलेठी तथा रसोतका लेप करवाणा.

(२६ खुजली)–घरका धूंआ हलदी उपलेट राई तथा इंद्रजव छाछमें पीस लेप करवाणा २ गंधक कपूर खोपरेके तेलमें पीस महीन भयेवाद लेप करवाणा.

(२७ मूतका निकलणा)–वडी ऊमरके वच्चें नींदमें विछोणेमें मूत देते हैं उसकूं रोकणे १ पीपर सूंठ मिरच इलायची तथा सींधा निमकका चुर्ण वूरेकी चासणीमें डाल अवलेही वणाकर चटाणा २ कुचीलेकी फकी जरासी गहूभर देणी.

(२८ मूत्रकृच्छ्र)–१ गऊके दूधमें जरा गुड डालकर पिलाणेसें पेसाब खुल जाता है २ एरंडीके तेलमें अथवा गोमूत्रमें दूध तथा जरा गूगल मिलाकर पिलाणा.

(२९ रोते रहणा)–वच्चा रोता रहे और उसका चोकस कारण मालम नहीं पडे उहांतक एसा इलाज करणा १ त्रिफला छोटी पींपर सहतमें चटाणा दो चार दिनोंतक.

(३० नलोका वढणा)–१ नवसादरके पोते धरणा २ शुद्ध एरंड तेल पिलाणेसें वृद्धि मिट जाती है.

(३१ मट्टी खाणी)–१ सोनागेरू खिलाणेसें दस्तमें मट्टी निकल जाती है २ चोदा-रका जुलाव देणा ३ कुटकीकूं सेक गरम जलमें फकी ४ मट्टी वच्चेकू विलकुल खाणे नहीं देणा ५ मंडूर मट्टीका विकार निकाल देती है त्रिफला त्रिकुटा चित्रक नागरमोथा वाय-विडंग पीपरामूल पुराणा गुड सम वजन सब एकके वजन मुजब मंडूर तकसें देणा इससे पांडूचाहे जेसा मिट जाता है.

(३२ रेच)–छोटे वच्चेकूं वेर२ जुलाव देणा नहीं वहोतही जरूरी होय तो देणा,

१ शुद्ध एरंडीका तेल नरम जुलाब है, २ हरडे मध्यम रेचक है, ३ रेवचीणीका सत सख्त है, ४ सोनामुखी खलखलते जलमें डाल छाण गुड डाल, देणा ५ गुलाबकली जोहरडे सोनामुखीका काथ बूरा डाल ये बच्चेकूं नरम जुलाब है लेकिन् रोग देख देणा.

(दुबला नाताकत)–१ भूमिकुष्मांड (विदारी कंद) गहुं तथा जवका आटा घीमें चटाय ऊपर मिश्री सहत डाल दूध पिलाणा, २ आसगंध १ भाग दूध ८ भाग उसमें घी डाल पकाकर चटाणा, ३ हरडेकी अवलेही चटाणेसें पुराणे दोष मिटाकर कुव्वत देता है, ४ सीतोपलादि चूर्ण ५ मंडूर ६ अमृतवटी दूधके संग दुबले बच्चोंकूं पुष्ट करणे सर्वोत्तम इलाज हैं.

किरण १२ मी.

अश्वादि पशुचिकित्सा.

वैद्यदीपक पुस्तकमें घोडा वगेर जानवरोंका इलाज नहीं होय तो ग्रंथ अपूर्ण प्रकाश हो जाय एसा विचार करके इस किरणमें घरोमें रहणेवाले पशुओंका कितनेक मुख्य२ रोगोंका थोडे इलाज दाखल करणेमें आता है, जैसें औरत मर्द और बालबच्चें हैं, तैसे इस दुनियांमें जांनवरभी मनुष्योके संग रहणे वालेभी वडे उपयोगी है, मनुष्य बहोतसे इस जांनवरोंकी प्रतिपालसे अपना गुजरान चलाते हैं, सो प्रत्यक्ष है लिखणेकी जरूरी नहीं उनोके दूध दही गोबर मूत्रादिकसे अनेक रोग मिट जाते हैं, मजूरी कर अपणा और मालकका पेट भर देता है इसवास्ते सर्व जीवोंकी रक्षा करणा ये परम धर्म जैनियोंका है, दुसरोंका नहीं (प्रश्न) क्योंजी क्या दुसरे धर्मोंकी किताबोंमें दया धर्म नहीं है, और क्या नहीं पालते हैं, (उत्तर) हमारा लिखणा किसी वैर विरोधके वास्ते नहीं लेकिन् क्या तुमने नहीं सुणाके वेद शास्त्रोमें अनेक जांनवरोंका यज्ञ लिखा है और असंख्या जीवोंकूं अग्निमें हवन कर लोक खागये और बंगाली पंजाबी आदि ब्राह्मन अभीभी खाते हैं, मुसलमीन बोद्ध चीन वगेरेके सब इस वखत मांस खाते हैं, सो मत तुम देखते हो भारतमेंभी लिखा है ब्राह्मन पंचनखी जांनवर मच्छ कच्छकूं खाने तो दोष नहीं इस लेखमेंही बंगाली पंजाबी ब्राह्मन सब तरेका मांस प्रगट खाते हैं, [illegible] जैनियोंकी देखादेख दयाधर्म मानते हैं, लेकिन् पूर्वोक्त वेदादि शास्त्र पर [illegible] रखते हैं, बुद्ध खुद मांस खाता था ललितविस्तर ग्रंथमें लिखा है, तो उसके [illegible] चीन जापानभी खाते हैं, इसवास्ते जैनियोंका शास्त्र और जैनी कोइभी मांस नहीं खाते इसवास्ते दयाधर्ममें चलणेवाले सर्वोत्कृष्ट जैन है, (प्रश्न) दयानंदजी वेदोंका भाष्य बनाया उसमें तो दया सिद्ध करदी (उत्तर) हे बुद्धिमानों वेदोंमें [illegible] हुस्कनी नहीं है अगर होती तो वेदोंके भाष्यकार उव्वट महीधर सायनाचार्यभी

एसा अर्थ लिखते सो उनोने जीवोंका हवन करणाही वेदोंका अर्थ लिखा दयानंदजीनें धातुओंको खेंचताण मनकल्पित अर्थ करके अपणे मतके पूर्व भाष्यकारोंकों मूर्ख ठहराया लेकिन् उनोंका अर्थ किया भया खुद दयानंजीका उनोंके समाजकेही आधे लोक मंजूर नहीं करते भीमसेनादिक जैनियोंकीदयाकी बराबरी करणेकूं दयानंदजीनें वेदोंके अर्थोमें गडवडाट मचाया था कुछ करोजिसके मूल सूत्र और अर्थ हिंसाके भरे हैं वो कल्पित अर्थोंसें दयाके कभी नहीं होसकते कोइ कहते हैं वेदकी रुचासे जो जीव मारे जाते हैं उसमें हिसा नहीं होती कोईकहते हैं मारके जिला देते थे, कोइ कहते हैं ये यज्ञ शत युगमें होते थे कलियुगमें नहीं कोइ कहते हैं जिन जीवोंकों होमतेथे वो स्वर्ग चले जाते हैं इत्यादि वातोसें हिंसा छिपा कर वैदोका महात्म वढाणेकूं अनेक गपोडें लोकोंकों समझाया करते हैं, इसैंमसे एकभी वात यथार्थ नही सो न्याय पक्षसे हमलिख दिखातें हैं जहां जीवोके प्राण लिये जांयगें उहां परजीवकूं महाकष्ट होणेसें हिंसामें पाप नहीं एसा कोन दयाधर्मी मांन सकता है, ये कहणाभी महानिर्दयी कठोर दिलवाले मांस खाणेवाले लालचियोंका है, वेदकी हिंसा हिंसामें नहीं तो देखें वेदका मंत्र पढ तुमारे अंगली तो जरा अंगारमें दो और छुरीके धारसे मिलाओ इति १ मारके जिला देणा किसी तरे सवूत नही हो सकता अगर एसा होता तो अपणे प्यारोंकों मरे वादभी जिला लेते और आप क्यों मर गयें २ जिस युगमें घोडे गउ सांड वकरे जलचर थलचर खचर असंख्या जीव मारे जाते थे वो तो सतयुग और नहीं मारे जावे वो कलियुग भलां ये वात विना पोपोके कोइ अकलवर तो नहीं मान सकता ३ इसकुं तो एसे कारणसें उलटा नांम कहणा चाहिये पशुओंकों जीते जी जलाकर स्वर्ग पोहचाणा इसतरे स्वर्ग होता है, तव तो स्वर्ग इसवजे अपणे स्वजन संवंधियोंकों क्यों नही पहुंचाते क्या स्वर्ग तुम नहीं पोहचे चाहते विचारे उन पशुओंनें कव इच्छा करके यज्ञ करणेवालेंको कहाकी तुम हमें स्वर्ग पहुचाओ ४ इत्यादिक युक्तिये लगाकर हिंसा करणेकी पुष्टि जो मतोंवाले करते हैं, वो सव निर्दयी हैं क्योके हिंसा करणी कराणी और उसकूं अच्छी समझणी वो सव कसाई है, मनुजीनेभी आठ कसाई माने हैं, दयाधर्म है सों सव धर्मोका राजा है, कोईभी जीव मरणा नहीं चाहता कष्ट होगया होय तो उसकी रक्षा करणी जहांतक होसके वाकी तो अज्ञान कर्मके वश जीव जीवका लागू हो रहा है, ज्ञान पणेका फल वोही है की सव जीवोंकी रक्षा करणी एसे २ शास्त्रोंके सवव राजा और प्रजा मांस मदिरा खाणे पीणे लग गये आर्य थे सो अनार्यकी करतूत करणे लगे कलियुग जिसकू तुमनें यज्ञोकी मनाई करी उसमेंभी सुणते हैं के जयपुरके महाराज जयसिंघजीनें घोडेकू होमनें अनेक जानवरोकों होमा अभी किसनगढके राजाने सोम यज्ञ कर पचीस वकरोकों जीते जी होम डाला जव वेद एसी करतूतका शास्त्र है, तभी तो एसे अनर्थ करने लोक धर्म

समझते हैं एसें शास्त्र इश्वरकृत कभी नहीं हो सकते क्योंकी ईश्वर सबकी रक्षा करणेवाला है जांनवरोसे खेती होती है, गांमोके वासिदोकी प्रत्यक्ष मिल्कीयत पशू है, जब ढोर बेमार होजाता है तो विचारोंकों घरके अदमीके बराबरका फिकर होजाता है, मर जाता है तो कमाउबेटे जितना फिकर करते हैं, अबोल जांनवर मूर्ख मनुष्यसें बहोत कीमतदार चीज है. दयाधर्मरूप वेदोंकों जैनभी मांनते हैं

(१ मूंगारोग)–तालवेपर खूनका चढणा जमणा, (इलाज)–नस्तरसें खून निकलवाके फिटकडी अथवा निमकके जलसे धोणा २१४ द्राम एलिया १ द्राम सूंठ मिलाके खिलाणा २ दूध घीका जुलाब देणा.

(२ मूंका आणा)–(इलाज)–१ जुलाब देणा २ शङ्खजीरा कत्था और पठाणी (सींधा निमक) का भूका कर मूंमें छांटणा ३ जोखार सरसूं राई सोवा हलदी सींधानिमक इन सबोंकों आंबलीके कुंकचेके आटेके संग पीस लेप करणा,

(३ बोरहडीका इलाज)–१ बीन आयोडाइड आफ मर्क्युरी १ द्राम मोम और सादे मलमके संग मिलाकर बधी भयी हड्डीके जगे उस्तरेसें बाल निकालकर उसपर रगडणा तब बिलष्टर उठ आयगा और आराम होगा २ बिलष्टरकी जगे साफ चमडी भये पीछे सीसेका टुकडा धर पट्टा बांधणा.

(४ चकावल)–(इलाज) १ गोल नाल जडणी २ गरम पाणीका सेक करणा ३ पोटिस बांधणी ४ बिलष्टर मारणा ५ डांभ देणा ६ उस जगेका बाल निकाल उसपर हींग १ तोला मकडियोका जाला ६ मासा कत्था ६ मासा जमालगोटा ६ मासा इनोकों नींबूके रसमें पीस लगाणा और उसपर हलदीका टुकडा सिलगाके डांभ देणा ७ सीपका तथा कोडीका चूना महतमें लगाणा.

(५ मोचग)–(इलाज)–१ उंची एडीकी नाल जडाणी २ शेक करणा ३ हलदी २॥ सेर नवसादर ५ सेर भांग तीन पाव सबोंकी २१ गोळियें करणी एक हमेस देणी ५ पीपरामूल काली मिरच कायफल कालीजीरी सूंठ घोडावच टंकण ये एकेक पाव गुडके संगमें मिलाय २१ दिन चटाणा.

(६ श्लेष्म)–(शर्दी)–(इलाज)–१ सादी शर्दी होय तो बदनपर गरम कपडा ओढाणा और स्पिरीट नाइट्रीक इथर १ औंस २० औंस जलमें मिलाकर पिलाणा गलेके ऊपर लिनसीड [illegible] राईका प्लाष्टर मारणा २ बुखारके संग शर्दी होय तो ऊपर लिखी दवा तिसमें उसमें २ द्राम एलिया पीसके मिलाणा गरम पाणीकी बाफ देणी ३ गजनाग नेतर कृष्णमद चंदन पीस अंगारेपर डाल इसका धूआं नाकमें जाणे देना ४ [illegible] १ द्राम हमेस आठ दिनोंतक देणी पीछे फेर आठ दिनोंतक नीलाथोथा १ द्राम देना ५ अरूडेके पत्ते पांच हलदी ७ तोला अजमा ३ तोला हींग १ तोला

इण सबोंकी गोली बणाकर खिलाणी ६ पुराणे टाटका टुकडा चिलम बणाकर उसमें अजवाण और आंबीहलदी पीस, डाल उसका धूंवा देना, हरडे कालीजीरी हलदी सूंठ मिरच पींपर गुड पीस मिलाकर २ तोलेकी गोली बणाकर फजर सांझ खिलाणी.

(७ फेफसेका खून नाकके रस्ते निकलणा)-(इलाज)-१ छातीकी पसलियों- पर बरफ घसणा अथवा ठंढा कपडा रखणा २ उकलते जलमें सिरका डाल उसका बफारा देणा ३ कत्था ३ द्राम शुगर ओफ लेड १५ ग्रेण सल्फट आफ झिंक ३० ग्रेण इनोकी गोली बणाकर देणी ४ कडवी तूबीकी जड दूधमें घसकर नांकमें बूंदें डालणी.

(८ मृगी)-(इलाज)-१ शिरपर ठंढा पाणी डालणा २ फस्त खोलाणी ३ हलदी शुद्धपारा पीपरा मूल वछनाग शीसेकी भस्मी सहतमें मिलाय चटाणा.

(९ सख्त वदहजमी)-(इलाज)-एलिया २॥ भर सूंठ तीन मासा मिलाकर जुलाब देणा २ टरपीन्टाइन तेल जलमें मिलाकर गुदामें पिचकारी मारणी ३ जमाल- गोटेका तेल २० बूंद अलसीका तेल सेर मिलाकर पिलाणा ४ नवसादर १ तोला सोनामुखी ५ तोला अजवाण काली मिरच एकेक तोला इन सबोंकों नींबूके रसमें तीन दिन भिगाकर पीछै पीसके खिलाणा.

(१० थोडी वदहजमीका इलाज)-सींधेलूणकाडला घोडेके ठाणमें रख देणा जिससे वो वेर२ चाटे २ एलिया सवा रुपेभर सूंठ पाव तोला मिलाके खिलाणा इससें जुलाब होगा बहोत दस्त होता होय तो कत्था २ द्राम अफीम पाव द्राम सूंठ १ द्राम और चाक ४ द्राम मिलाकर खिलाणा.

(११ आफरेका इलाज)-१ दोडाणा २ मालिस करणी ३ स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ औंस २० औंस जलमें मिलाकर पिलाणा ४ जुलाब देणा याने टिकचर एलोज ४ औंस टिकचर ओपियम ॥ औंस पिलाणा ५ गुदमें पिचकारी मारणी ६ पीणेकी दारू २ औंस काली मिरच २ तोला कुटकी २ तोला इन सबोंको मिलायके पिलाते हैं आंधी झाडाका तथा कांगकी जड और खाखरेके बीज दरेक ४॥ मासा हींग ३ मासा इनोंको आंधी झाडेके पानके रसमें डाकतर खिलाते हैं.

(१२ कुरकुरी)-(अथवा चूंक)-(इलाज)-१ गुदामें पिचकारी देणी २ पेटपर मालस करणा ३ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ टिकचर ओपियम १ द्राम टिकचर एसेफटीडा २ द्राम स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ द्राम स्पीरीट नाइट्रीक इथर १ औंस इनोंको २० औंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ५ छ कलाकमें उसी दवासे आराम नही होय तो फेर इसी दवाकी अंदर ४ औंस टिकचर एलोज मिलाकर पिलाणा ६ पींपलामूल २ तोला लींडी पीपर २ तोला काला निमक २ तोला [illegible]

समझतें हैं एसें शास्त्र इश्वरकृत कभी नहीं हो सकते क्योंकी ईश्वर सबकी रक्षा करणे-वाला है जांनवरोसे खेती होती है, गांमोके वासिंदोकी प्रत्यक्ष मिल्कीयत पशू है, जब ढोर वेमार होजाता है तो विचारोंकों घरके अदमीके बराबरका फिकर होजाता है, मर जाता है तो कमाउवेटे जितना फिकर करते हैं, अबोल जांनवर मूर्ख मनुष्यसें वहोत कीमतदार चीज है. दयाधर्मरूप वेदोंकों जैनभी मांनते हैं

(१ मूंगारोग)-तालवेपर खूनका चढणा जमणा, (इलाज)-नस्तरसें खून निकलवाके फिटकडी अथवा निमकके जलसे धोणा २।४ द्राम एलिया १ द्राम सूंठ मिलाके खिलाणा २ दूध घीका जुलाव देणा.

(२ मूंका आणा)-(इलाज)-१ जुलाव देणा २ शङ्खजीरा कत्था और पठाणी (सींधा निमक) का भूका कर मूंमें छांटणा ३ जोखार सरसूं राई सोवा हलदी सींधानिमक इन सबोंकों आंवलीके कुंकचेके आटेके संग पीस लेप करणा,

(३ वोरहडीका इलाज)-१ वीन आयोडाइड आफ मर्क्युरी १ द्राम मोम और सादे मल्हमके संग मिलाकर वधी भयी हड्डीके जगे उस्तोरेसें बाल निकालकर उसपर रगडणा तब विलष्टर उठ आयगा और आराम होगा २ विलष्टरकी जगे साफ चमडी भये पीछे सीसेका टुकडा धर पट्टा वांधणा.

(४ चक्रावल)-(इलाज) १ गोल नाल जडणी २ गरम पाणीका सेक करणा ३ पोटिस वांधणी ४ विलष्टर मारणा ५ डांभ देणा ६ उस जगेका वाल निकाल उस-पर हींग १ तोला मकडियोका जाला ६ मासा कत्था ६ मासा जमालगोटा ६ मासा इनोंकों नींबूके रसमें पीस लगाणा और उसपर हलदीका टुकडा सिलगाके डांभ देणा ७ सीपका तथा कोडीका चूना महतमें लगाणा.

(५ मोवरा)-(इलाज)-१ उंची एडीकी नाल जडाणी २ शेक करणा ३ हलदी १॥ मेर नवसादर ५ भर भांग तीन पाव सबोंकी २१ गोळियें करणी एक हमेस देणी ५ पीपलामूल काली मिरच कायफल कालीजीरी सूंठ घोडावच टकण ये एकेक पाव गजके घीमें मिलाय २१ दिन चटाणा.

(६ डेम्म)-(शरदी)-(इलाज)-१ सादी शरदी होय तो गरदनपर गरम जल मोटाणी और सिरीट नाइट्रीक इथर १ औंस २० औंस जलमें मिलाकर पिलाणा [illegible] और कानकी लकीरपर राईका पलाष्टर मारणा २ बुखारके संग शरदी होय तो [illegible] किसी दवा सिवाने उसमें २ द्राम एलिया पीसके मिलाणा गरम पाणीकी वाफ [illegible] ३ अजमान और गूगल सम वजन पीस अंगारपर डाल इसका धूआं नाकमें नाखे देणा ४ हीराकसी १ द्राम हमेस आठ दिनोंतक देणी पीछे फेर आठ दिनोंतक नीला-थोथा १ द्राम देणा ५ नालके पत्त पांच हलदी ७ तोला अजमा २ तोला हींग १ तोला

इण सवोंकी गोली वणाकर खिलाणी ६ पुराणे टाटका टुकडा चिलम वणाकर उसमें अजवाण और आंवीहलदी पीस, डाल उसका धूंवा देना, हरडे कालीजीरी हलदी सूंठ मिरच पींपर गुड पीस मिलाकर २ तोलेकी गोली वणाकर फजर सांझ खिलाणी.

(७ फेफसेका खून नाकके रस्ते निकलणा)-(इलाज)-१ छातीकी पसलियोंपर वरफ घसणा अथवा ठंढा कपडा रखणा २ उकलते जलमें सिरका डाल उसका वफारा देणा ३ कत्था ३ द्राम शुगर ओफ लेड १५ ग्रेण सल्फट आफ झिंक ३० ग्रेण इनोंकी गोली वणाकर देणी ४ कडवी तूवीकी जड दूधमें घसकर नांकमे वूदें डालणी

(८ मृगी)-(इलाज)-१ शिरपर ठढा पाणी डालणा २ फस्त खोलाणी ३ हलदी शुद्धपारा पीपरा मूल वछनाग शीसेकी भस्मी सहतमें मिलाय चटाणा.

(९ सख्त वदहजमी)-(इलाज)-एलिया २॥ भर सूंठ तीन मासा मिलाकर जुलाव देणा २ टरपीन्टाइन तेल जलमें मिलाकर गुदामें पिचकारी मारणी ३ जमालगोटेका तेल २० वूद अलसीका तेल सेर मिलाकर पिलाणा ४ नवसादर १ तोला सोनामुखी ५ तोला अजवाण काली मिरच एकेक तोला इन सवोंको नींवूके रसमे तीन दिन भिगाकर पीछै पीसके खिलाणा.

(१० थोडी वदहजमीका इलाज)-सींधेलूणकाडला घोडेके ठाणमें रख देणा जिससे वो वेर२ चाटे २ एलिया सवा रुपेभर सूंठ पाव तोला मिलाके खिलाणा इससें जुलाव होगा वहोत दस्त होता होय तो कत्था २ द्राम अफीम पाव द्राम सूंठ १ द्राम और चाक ४ द्राम मिलाकर खिलाणा.

(११ आफरेका इलाज)-१ दोडाणा २ मालिस करणी ३ स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ औंस २०औंस जलमे मिलाकर पिलाणा ४ जुलाव देणा याने टिंकचर एलोज ४ औंस टिंकचर ओपियम ॥ औंस पिलाणा ५ गुदमें पिचकारी मारणी ६ पीणेकी दारू २ औंस काली मिरच २ तोला कुटकी २ तोला इन सवोंको मिलायके पिलाते हैं आंधी झाडाका तथा कांगकी जड और खाखरेके वीज दरेक ४॥ मासा हींग ३ मासा इनोंको आंधी झाडेके पानके रसमें डाकतर खिलाते हैं.

(१२ कुरकुरी)-(अथवा चूंक)-(इलाज)-१ गुदामें पिचकारी देणी २ पेटपर मालस करणा ३ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ टिंकचर ओपियम १ द्राम टिंकचर एसेफटीडा २ द्राम स्पीरीट एमोनिया एरोमेटिक १ द्राम स्पीरीट नाइट्रीक इथर १ औंस इनोको २० औंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ५ छ कलाकमें ऊपरकी दवासें आराम नहीं होय तो फेर इसी दवाकी अंदर ४ औंस टिंकचर एलोज मिलाकर पिलाणा ६ पींपलामूल २ तोला लींडी पीपर २ तोला काला निमक २ तोला टंकन

खार २ तोला कडू २ तोला पीणेका दारू ॥ शेर मिलाकर डाकतर लोक पिलाते हैं, ७ एरंडीकी जड साजीखार काला निमक लसण इनोंकों आदेके रसमें देणेसें आराम होताहै.

(१३ जुलाब याने दस्त होणा)–(इलाज)–१ गरम झूलवां धणी, २ पेटपर गरम दवायें मसलणी ३ अलसीकूं कूट जलमें उकाल वो चाहकी तरे पिलाणी ४ अलसीका तेल १। सेर टिंकचर ओपियम १ औंस मिलाकर पिलाणा (५ नं० १० में) थोडी बद हजमी मिटाणेकूं अंतकी लिखी दवा देणी ६ अफीम १ ड्राम चाह ४ ड्राम गहूंका आटा ८ औंस मिलाकर पिलाणा ७ खुराक अच्छा देणा ८ शंखजीरा और काली मिरच ये दरेक चार चार तोला लेकर पीसके खिलाणा ९ दोदो घंटेके अंतर हींग और सूंठ गहूका आटा घीमें गोली बणाकर देणा १० हरडे मेथी जीरा उसका दो दो तोला चूर्ण तीन दिन दहीमें पिलाणा ११ कच्चे बीलकी गीरी अनारका दाणा और धावडीके फूल इनोंका १॥ तोला चूर्ण ७ दिन दहीमें देणा.

(१४ मरोडा)–(इलाज)–१ गरम शूल अथवा गरम पट्टा बांधणा दाणा तथा चारा महीन करके देणा (३ नं० १३ में लिखी दवा) अलसीकी चाह और कांजी देणी ४ पेटपर गरम दवायें मसलणी केलो मेल और अफीम दरेक २० ग्रेण देणा ६ फिटकडी ४ ड्रामतक देणी ७ नाइट्रोम्युरीयाटीक एसिड १ ड्राम जलमें डाल दिनमें दो वेर देणा ८ टरपेन्टाइनका तेल ॥ औंस देणा ९ पोस्तके डोडे पाणीमें उकाल उस जलकी पिचकारी बैठकमें मारणी १० एपीकाक्युआन्हा पाउडर १॥ ड्रामतक दिनमें तीन वेर देणा ११ आकके जडकी छाल देणी १२ बंबूलका गूंद ६ तोला लेकर पाणीमें घिलाय देणा १३ शंखजीरा १ तोला हींग १ तोला अफीम ॥ तोला आटेके संग जलमें मिलाकर पिलाणा.

(१५ दस्त थोडा होणा अथवा बंध होणा)–(इलाज)–१ पिचकारी मारणी २ पाचक दवा देणी ३ सूंठ और चिरायता दरेक १ तोला देणा ४ सोनामुखी गरम उकालते पाणीमें डाल वो ठंडा कर पिलाणा ५ जुलाब देणा और जुलाब बहोत लगे तो बंध करणेकू मूल २ तोला लेकर सूंठ विलायती साबू और गुलकंदमें मिलाकर देणा बहोत जुलाब देणेमें पीड नरम होती होय तो ६ दस्तकी दवा एकदम बंध नहीं करणा ७ दाना थोडा देणा ८ जलमें गहूंका आटा मिलाकर पिलाणा ९ मेदा अथवा गहूंके आटाका पतीलिया खिलाणा अथवा इसकी बैठकमें पिचकारी लगाणी १० गरम शूल पट्टा बांधणा ११ और कांजी भूसा वगैरे खाणेकूं देणा १२ बहोत दिनोंकी बेमारी होय तो दस्त करके खिलाणा और १३ टिंकचर ओपियम १ औंस नाइट्रीक इथर मिलाकर
१४ दस्तकेसाम्ने पहले लिखामो इलाज करणा.

[illegible])–(बवासीर)–(इलाज)–मस्से बाहर होय तो [illegible]

लगाकर कटा डालणा २ थोडा२ तेल पिलाणा ३ नरम खाणेकूं देणा ४ एकस्ट्राक्ट ओपियम १ ड्राम गोलाडर्स एकस्ट्राक्ट २ औंस तथा पाणी ८ औंस मिलाकर पिचकारी मारणी ५ मस्सेपर बेलाडोना लगाणा.

(१७ कलेजेका सोजा)–(इलाज)–१ फस्त खुलाणी २ कलेजेकी बाजूपर राईका पलाष्टर लगाणा ३ सख्त जुलाब देणा ४ सल्फेट ओफ मेग्निस्या जिसकूं एप्सम सोल्ट कहते हैं, वो १ पाउन्ड नाइट्रिक इथर १ औंस तथा पाणी ३० औंस तीनोंकों मिलाकर पिलाणा ५ हाथ पैरपर मालिस करणा ६ गरम झूल और पट्टा बांधणा ७ चार२ घंटेके अंतर नाइट्रिक इथर एकेक औंस देणा ८ एपीकाक्युआना पाउडर अथवा आकके जडकी छाल १॥ ड्राम देणा ९ सल्फेट ओफ मेगनीशीया ६ औंस तथा नाइट्रिक इथर १ औंस पिलाणा १० हराघास और भूसा खाणेकूं देणा ११ नाइट्रोम्यु-रियाटिक एसीड १ ड्राम बहोत जल मिलाकर पिलाणा १२ थोडी महनत कराणी, १३ दूध घीका जुलाब देणा.

(१८ कमला)–(इलाज)–१ नंबर १७ में कलेजेके सोजेमें जो इलाज लिखा है सो करणा.

(१९ पेटकी कृमि)–(इलाज)–१ सल्फेट ओफ कोपर अथवा नीलाथोथा २ ड्राम बहोत महीन पीस दाणेमें मिलाकर चार दिन खिलाणा पीछे२ जुलाब देणा पाचक दवायें देणी ४ आगेके दिन सांझकूं दाणेके संग सेन्टोनाइन १ ड्राम देणा दुसरे दिन फजरमें जुलाब देणा ५ पित्त पापडा १ तोला और बाजरीका आटा १ तोला दोनोंकूं तेलमें तलकर देणा ६ राई १ तोला अजवाण १ तोला जंगली बबूलकी फली २ से ४ काला निमक ये सब छाछमें पिलाणा, ७ शीताफलके बीज पीस छाछमें पिलाणा.

(२० गुरदेका सोजा)–(इलाज)–१ फस्त खोलाणा २ जुलाब देणा ३ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ४ बकरेका चमडा कमरपर रखणा ५ टारटर इमेटिकका मलम कमरपर लगाणा ६ राईका पलाष्टर लगाणा ७ अलसीकू उकालणी कूटकर बाबु-जन पिलाणा ८ बंबूलका गूंद पाणीमें पिघलाकर पिलाणा ९ राल १ तोला शंखजीरा १ तोला इन दोनोंको गूलरके चीकमें मिलाकर गोली बणा देणी १० इलायची शख-जीरा और कत्था ये दवा दरेक चार२ मासा लेकर गोली बणाकर खिलाणी ११ कमर-पर सोराखार रखणा.

(२१ फीके रंगका पेशाब)–(इलाज)–१ घास दाणा बदलणा २ पोटाश आयोडाइड १ ड्राममें पाणी १० औंस मिलाकर दिनमे एक बेर आराम होय जहांतक

देणा ३ अफीम कत्था सींधानिमक और बावची ये दरेक ॥ तोला गुलमें गोली वणाकर खिलाणी.

(२२ पेशाबमें खर पडता है)–(इलाज)–नाईट्रोम्युरी एटिक आसीड १ द्राम पाणी २० औंस मिलाकर दररोज दो वखत पिलाणा २ अकलकरा पठाणी निमक वायफूंभा सपेद मूसली गुडसे गोलीकर खिलाणी.

(२३ पिशाबमें खून)–(इलाज)–कम्पाउन्ड टींकचर ओफ सीनामन ३ औंस कमजोर सल्फ्युरीक आसीड ५ औंस पाणी २० औंस मिलाकर दिनमें तीन वेर १ औंस की मात्रासे देणा २ गंधा बेरजा और कत्था देणा ३ चिणेके फोतरे राल और फुलाई भई फिटकडी इनोंकों मिलाकर देणा ४ बंबूलका गूंद ४ आउंस पाणीमें भिगाकर पिलाणा.

(२४ पिशाबमें पथरी)–(इलाज)–अलशीकूं पीस उकाल चाहकीतरे वणाकर उसमें अफीम १ द्राम मिलाकर पिलाणा २ नाइटोम्युरी एटिक आसीड २ द्राम जलमें मिलाकर पिलाणा ३ अफीम १ द्राम पाणीमें पिघाल दिनमें तीन वखत पिलाणा ४ आधे२ घंटेके फासले गरम जलकी पिचकारी गुदा रस्ते मारणी ५ मेथीना सपाल लाहोरी निमक नवसादर कलीचूना मोरथोथा कुसतासाक और खूबजीका बीज इनोंकी गोली वणा दररोज १ देणी ६ नवसादर वछनाग और अफीम इन चीजोंकों डाकटर लोग दारोंके सरापमें मिलाकर देते हैं.

(२५ पेशाब बेर२ थोडा२ होणा)–(इलाज)–१ कमरपर गरम पाणीका शेक करणा २ बबूलका गूंद ४ आउंस टींकचर ओपियम १ औंस और गरम पाणी २० औंसमें मिलाकर इंद्रीमें पिचकारी मारणी ३ खसखसके डोडे जलमें उकाल उस जलकी गुदामें पिचकारी मारणी ४ अलसी जलमें सिजाकर खिलाणी वो पाणीभी पिलाणा ५ गुग्गल १ द्राम सोरामार २ द्राम गंधक २ द्राम पीस दाणेमें मिलाकर खिलाणा.

(२६ प्रमेह)–(इलाज)–१ जुलाब देणा २ गहूंका भूसा जलमें भिगाकर देणा ३ सेक करणा ४ अफीम ॥ द्राम कपूर २ द्राम सल्फयुरिक इथर १ औंस इन चीजोंको अलसीकी चाह संग मिलाकर पिलाणा मुगलाई बेदाणा ५ रुपियाभर बूरा ५ [illegible] जलमें भिगाकर ऊपर देणा ६ तिलके फूल २॥ भर खिलाणा ७ पुराणे मकानका चूना ऊपर मांड पिलाना.

(२७ प्रदर)–(इलाज)–१ फिटकडी २० ग्रेन एक औंस जलमें गलाकर गुप्त स्थानमें पिचकारी मारनी २ शुगर ओफ लेड १ द्राम अफीम १ द्राम अलसीके चूर्णके संग मिला गोली कर ऊपर मांड देणी ३ ठंडे पाणीमें बैठा रखणी ४ कमरपर ठंडा जल छिडकणा ५ कथा [illegible] सुपेद [illegible] दूधमें मिलाकर पिलाणा.

(२८ चांदणी)-(इलाज)-नसा पैदा करणेवाली दवायें सरुआतमें देणी जेसे के
बेलाडोना क्लोरोफोर्म चरस डीजी टेलीस धतूरा विगेरे २ इथर अथवा क्लोरोफोर्म सुंघाकर
कोटडीके अंदर बंध करणा ३ जखम होणेके सवव भया होय तो जखम रुके एसी
दवायें करणी ४ पूंछडीके जडके पास १ आंगल चीरके उसमें सिगरफ भरणा दोनो कानोमें
दो तोला पारा भरके बंदूकका अवाज करणा.

(२९ लकवा)-(इलाज)-१ जुलाब देणा २ पलास्तर लगाणा ३ गुल देणा.

(३० खुजली)-(इलाज)-१ दुसरे सब जानवरोंसें दूर रखणा २ जुलाब
देणा ३ कील टरपेन्टाइन और अलशीका तेल बराबर सब लेकर सब जगे मसलणा
२ धोके साफ करे बाद उसपर कील १ औंस गंधक ॥ औंस मैण और तेल १॥ औंस
इनोंका मलम बणाके लगाणा ५ फस्त खोलणी ६ गंधक सुरमा वछनाग सोरा एकेक
रुपिया भर महींन पीस थोडा२ बूका दाणेमें खिलाणा ७ मनसिल १ रुपियाभर १ सेर
तेलमें मिलाकर बदनपर मसलाणा.

(३१ खून बिगडणेसें भई खुजली और फोडा)-(इलाज)-गहूके भूसेमें सोरा
२ द्राम मिलाकर खिलाणा २ नरम खुराक खिलाणा ३ सिरका पाणीमें मिलाकर
लगाणा ४ सीधे निमकका डला ठाणमें रख छोडणा जैसे वो चाटे ५ सल्फ्युरीक आसि-
डका कमजोर पाणी लगाणा ६ फाउलर्स सोल्युसन ओफ आरसेनीक १ द्राम देते
रहणा ७ छाछ मसलणी ८ काली मिरच सोनागेरू एकेक तोला भूरींगणीका बीज १
तोला पीस दाणेमें खिलाणा ९ लोबानका धूआं देणा १० काली मट्टीका शरीरपर लेप
कर धूपमें खडा रखणा.

(३२ सब बदनपर नरम सोजा अथवा पित्ती निकलणा)-(इलाज)-१ सोरा
३ द्राम दाणेके संग खिलाणा २ सिरकेका पाणी लगाणा ३ गेरु और सोरा इन दोनोंकी
गोली देणी ४ लोबानका धूआं.

(३३ दाद)-(इलाज)-१ साबू और जलसें धोकर उसपर केथेरींडीस १ औंस
८ आउंस सिरकेमें १४ दिन भिगाकर लगाणा २ नींबूका रस लगाणा ३ नींबूके रसमें
मनसिल मिलाके लगाणा.

(३४ मट्टीका बुखार)-(इलाज)-अलसीका तेल १ सेर पिलाणा २ सोरा
खार २ द्राम दाणेके संग फजर सांझ देणा २ पेटपर सोजा होय तो ग्लीमगडन
लगाणा ४ कपूर और सोरा देशी सरापमें देणेका जानवरोंका इलाज करणेवाले
कहते हैं.

(३५ जू)-(इलाज)-१ तमाम बदन धोकर तमाखूका पाणी मसलणा २ का-
रबोलिक एसिडका कमजोर पाणी लगाणा ३ सीताफलके पत्तोंका रस लगाणा.

(३६ जखममें कीडे पडणा)-(इलाज)-१ जखमकूं ढके रखणा २ कीडोंकों चिपीयेसें निकाल जतनसे डालणा ३ टरपीनटाइनका तेल १ भाग अलशीका तेल २ भाग मिलाके लगाणा ४ डीकामाली कपूर और तमाखूकूं पीस जखममें भर देणा ५ मिश्री पीसके भरणा.

(३७ गुमडां)-(फोडा)-(इलाज)-१ शेक करणा २ पोटिस बांधणा, ३ खुराक अच्छी देणी ४ छाणेसे रगड उसपर तेलमें मिलाय मनसिल लगाणा.

(३८ वरसाती)-(इलाज)-१ कास्टिक पोटाससें जलाणा २ कोयले और फुलाई भई फिटकडी जखमपर छांट जखमकूं सूका रखणा ३ मेगडुगल डीसइन फेक-टींग पाउडर छिडकणा ४ बीन आईओडाईड ओफ मरक्युरीके मलमका पलाष्टर लगाणा ५ केलोमेल २० ग्रेण तथा अफीम २० ग्रेण दिनमें तीन वेर मूं आणेकी निसाणी दीखे जहांतक देणा ६ नीलाथोथा चुना फटकडी गोमूत्र मिलाके लगाणा ७ कत्था लगाणा ८ चोमासेमें भये सहतके छत्तेके मोमसें चाठोकूं मसलणा खून निकले जहांतक फेर उसपर मोम और राईके तेलका मलम वणाकर उसमें बंदूकका देशी दारू और खुर-माणीके कोयलोंका भूका मिलाकर वो मलम लगाणा.

(३९ भाठा)-(इलाज)-१ आसपास पलास्तर मारणा २ पोटिस बांधणी ३ काली जीरी मुरदार्सींग मोम सिंदूर और थोडा नीलाथोथा इनोंका मलम लगाणा.

(४० बुखार)-(इलाज)-मालिस करके वदनपर गरम झूल बांधणी २ नाइट्रिक इथर २ आउंस लाइकर एमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणी २० औंस मिलाकर पिलाणा और घंटे २ के फासलेसें देते रहणा ३ एपीकाक्युआनेका भूका १॥ ड्राम फजर सांझ देणा अथवा इसकी एवजी आकके जडकी छाल देणी ४ कोनाइन २० ग्रेण चार २ घंटेके अंतरमें देते रहणा ५ फस्त खोलाणी ६ एलिया ५ ड्राम टींकचर ओपियम १ आउंस मिलाकर जुलाब देणा ७ गरम जलकी पिचकारी बैठकमें ८ आराम देणा ९ टींकचर एकोनाइट पांच बूंद दो दो घंटेके फासले देते रहणा १० कपूर और सोराखार एक २ तोला मिलाकर गोली देणी ११ कपूर और चिरायता मगपमें मिलाकर इलाज करणे-वाले देते है. १२ जखम अथवा फोडेके लिये बुखार होय तो उसपर बेलाडोना अथवा अफीमका लेप कर उसपर पोटिस बांधणा.

(४१ गलेका बुखार)-(इलाज)-१ गलेपर पलास्तर मारणा २ अच्छी हवामें रखना ३ एलिया १ ड्राम दस्त खोद नरम होयनां जहांतक देते रहणा ४ केलोमेल २० ग्रेन देना (५ बुखार उतारणेकी दवा नं० ४० में) सो देणी ६ नाइट्रिक इथर १ आउंस लाइकर अमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ७ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ८ वफारा देणा ९. आंबी हलदी अजवाण मीठा तेल गुड इन

सबोंकी गोली बणाकर देणी १० सोरा २ ड्राम कपूर २ ड्राम भींडीका बीज २ ड्राम सल्फेट ओफ सोडा दो आउंस मिलाकर चार२ घंटेके फासलेसें चटाणा.

(४२ संधीवा)–(इलाज)–१ टारटर इमेटीक २ ड्राम सल्फेट ओफ सोडा २ आउंस मिलाकर दो दो घंटेके फासले एकेक आउंस देणा (२ सोजेपर) बेलाडोना ३ ड्राम कपूर २ ड्राम स्पीरीट वाइन १० बूंद एकस्ट्राकट हेमलोक ॥ आउंस सादा मल्लम ७ आउंस इनोंका मल्लम बणाकर लगाणा गरम पट्टा बांधणा ३ वफारा देणा.

(४३ गंडमाला इलाज)–१ वफारा देणा २ पोटिस बांधणा ३ पीप नहीं आवे तो पलास्तर मारणा ४ पीप होय तो चीरके निकाल डालणा ५ पीप हो जाय एसी दवा लगाणी ६ बुखार होय तो सोराखार ३ ड्राम दाणेमें मिलाकर देणा ७ बुखार गये बाद पाचक दवा जेसेकै चिरायता जनशन सूंठ वगेरे देणा ८ खुराक देणा शेक करणा १० पककर चीरादिया भया होय तो उसपर डीकामालीका तेल रगडणा ११ आकका दूध लगाणा.

परचुरण—मसाला.

(४४ शरीर अकड जाणा)–(इलाज)–१ खारककी गुठली निकाल उसमे अफीम भरके कपड मिट्टी करके अंगारपर शेक ये खारक आधी खिलाणीं जितना दिन खिलाणा उतनाही दिन दाणा देणा नहीं और जल गरम कर पिलाणा २ साजीखारसें भर निमक जोड अजवाण सालम एक २ पेसे भर लेकर उसमें पावगुड मिलाकर फजर साझ फकत् गेहूके आटे सेके भयेमें मिलाकर खिलाणा दाणा खिलाणा नहीं २ दो पेसा भर गूगल गोमूत्रके संग खिलाणा ३ सेंभर निमक और लसण सम वजन खिलाणा पाणी गरम पिलाणा.

(४५ खुजली)–(इलाज)–१ गधक मनसिल और वायविडंगकूं महीन पीस एक रात पाणीमें भिगाकर फजर कडवे तेलमें मिलाकर वदनपर मालिस करणा तीन घंटे धूपमें खडा रख फेर मट्टी मसल धो डालणा.

(४६ वायूका रोग)–सोजा और लीद वध होय तब कालीजीरी गिरच फुलाया भया टंकणखार साजीखार कुटकी राई हींग एकेक पेसे भर लेके सबोंके वजन बगबर अजवाण डाल आदेके रसमें गोली वणा पांच रुपियाभर खिलाणा.

(४७ आंखका फूला)-(इलाज)–सोनामखीके पत्थर लेके उसमें फिटकडी फुलाई भई सरसूंके बीज मिश्री काली मिरच और कचूर मिलाकर महीनखरलकर सात दिन अंजन करणा २ मछली तथा वकरीका पित्त सहतमें खलकर अंजन करातेहैं.

(४८ नाकमेसें खून गिरणा)–(इलाज)–१ सूंफ धाणा जीरा सुंठ इन चारोंको महीन पीस घोडेके कपालमें लेप करणा और उटके मींगणोंको महीन पीस उनकू

(३६ जखममें कीडे पडणा)-(इलाज)-१ जखमकूं ढके रखणा २ कीडोंकों चिपीयेसें निकाल जतनसे डालणा ३ टरपीनटाइनका तेल १ भाग अलशीका तेल ३ भाग मिलाके लगाणा ४ डीकामाली कपूर और तमाखूकूं पीस जखममें भर देणा ५ मिश्री पीसके भरणा.

(३७ गुमडां)-(फोडा)-(इलाज)-१ शेक करणा २ पोटिस बांधणा, ३ खुराक अच्छी देणी ४ छाणेसे रगड उसपर तेलमें मिलाय मनसिल लगाणा.

(३८ बरसाती)-(इलाज)-१ कास्टिक पोटाससें जलाणा २ कोयले और फुलाई भई फिटकडी जखमपर छांट जखमकूं सूका रखणा ३ मेगलुगल डीसइन फेक्टींग पाउडर छिडकणा ४ बीन आईओडाईड ओफ मरक्युरीके मह्लमका पलाष्टर लगाणा ५ केलोमेल २० ग्रेण तथा अफीम २० ग्रेण दिनमें तीन वेर मूं आणेकी निसाणी दीखे जहांतक देणा ६ नीलाथोथा चुना फटकडी गोमूत्र मिलाके लगाणा ७ कत्था लगाणा ८ चोमासेमें भये सहतके छत्तेके मोमसें चाठोंकूं मसलणा खून निकले जहांतक फेर उसपर मोम और राईके तेलका मह्लम बणाकर उसमें बंदूकका देशी दारू और खुरसाणीके कोयलोंका भूका मिलाकर वो मह्लम लगाणा.

(३९ भाठा)-(इलाज)-१ आसपास पलास्तर मारणा २ पोटिस बांधणी ३ काली जीरी गुरदासींग मोम सिंदूर और थोडा नीलाथोथा इनोंका मह्लम लगाणा.

(४० बुखार)-(इलाज)-मालिस करके बदनपर गरम झूल बांधणी २ नाइट्रिक इथर २ आउंस लाइकर एमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणी २० औंस मिलाकर पिलाणा और घंटे २ के फासलेसें देते रहणा ३ एपीकाक्युआनेका भूका १॥ ड्राम फजर सांझ देणा अथवा इसकी एवजी आकके जडकी छाल देणी ४ कोनाइन २० ग्रेण चार २ घंटेके अंतरमें देते रहणा ५ फस्त खोलणी ६ एलिया ५ ड्राम टींकचर ओपियम १ आउंस मिलाकर जुलाब देणा ७ गरम जलकी पिचकारी बेठकमें ८ आराम देणा ९ टींकचर एकोनाइट पांच बुंद दो दो घंटेके फासले देते रहणा १० कपूर और सोरासार एक २ मासा मिलाकर गोली देणी ११ कपूर और चिरायता मगजमें मिलाकर इलाज करणेवाले देते हैं. १२ जखम अथवा फोडेके लिये बुखार होय तो उसपर बेलाडोना अथवा अफीमका लेप कर उसपर पोटिस बांधणा.

(४१ सर्दीका बुखार)-(इलाज)-१ गलेपर पलास्तर मारणा २ अच्छी हवामें रखना ३ एलिया १ ड्राम हमेसां जीव नरम होयवो उहांतक देते रहणा ४ केलोमेल २० ग्रेन देणा (५ बुखार उतारणेकी दवा नं० ४० में) सो देणी ६ नाइट्रीक इथर १ आउंस लाइकर अमोनिया एसीटेट १ आउंस पाणीमें मिलाकर पिलाणा ७ गरम पाणीकी पिचकारी मारणी ८ बफारा देणा ९ सोंठ हलदी अजवाण मीठा तेल गुड इन

सबोंकी गोली बणाकर देणी १० सोरा २ द्राम कपूर २ द्राम भीडीका बीज २ द्राम
सल्फेट ओफ सोडा दो आउंस मिलाकर चार२ घंटेके फासलेसें चटाणा.

(४२ संधीवा)-(इलाज)-१ टारटर इमेटीक २ द्राम सल्फेट ओफ सोडा २
आउंस मिलाकर दो दो घंटेके फासले एकेक आउंस देणा (२ सोजेपर) बेलाडोना
२ द्राम कपूर २ द्राम स्पीरीट वाइन १० बूंद एकस्ट्राकट हेमलोक ॥ आउंस सादा
मलम ७ आउंस इनोंका मलम बणाकर लगाणा गरम पट्टा बांधणा ३ वफारा देणा.

(४३ गंडमाला इलाज)-१ वफारा देणा २ पोटिस बांधणा ३ पीप नही आवे तो
पलास्तर मारणा ४ पीप होय तो चीरके निकाल डालणा ५ पीप हो जाय एसी दवा
लगाणी ६ बुखार होय तो सोराखार ३ द्राम दाणेमें मिलाकर देणा ७ बुखार गये बाद
पाचक दवा जेसेंकै चिरायता जनशन सूंठ वगेरे देणा ८ खुराक देणा शेक करणा
१० पककर चीरादिया भया होय तो उसपर डीकामालीका तेल रगडणा ११ आकका
दूध लगाणा.

परचुरण—मसाला.

(४४ शरीर अकड जाणा)-(इलाज)-१ खारककी गुठली निकाल उसमें
अफीम भरके कपड मिट्टी करके अंगारपर शेक ये खारक आधी खिलाणीं जितना दिन
खिलाणा उतनाही दिन दाणा देणा नही और जल गरम कर पिलाणा २ साजीखारसें
भर निमक जोड अजवाण सालम एक २ पेसे भर लेकर उसमे पावगुड मिलाकर फजर
साझ फकत् गेहूके आटे सेके भयेमें मिलाकर खिलाणा दाणा खिलाणा नहीं २ दो
पेसा भर गूगल गोमूत्रके संग खिलाणा ३ सेंभर निमक और लसण सम वजन खिलाणा
पाणी गरम पिलाणा.

(४५ खुजली)-(इलाज)-१ गंधक मनसिल और वायविडंगकू महीन पीस
एक रात पाणीमें भिगाकर फजर कडवे तेलमें मिलाकर बदनपर मालिस करणा तीन
घंटे धूपमें खडा रख फेर मट्टी मसल धो डालणा.

(४६ वायूका रोग)-सोजा और लीद बंध होय तब कालीजीरी मिरच फुलाया
भया टंकणखार साजीखार कुटकी राई हींग एकेक पेसे भर लेके सबोंके बजन बराबर
अजवाण डाल आदेके रसमें गोली बणा पांच रुपियाभर खिलाणा.

(४७ आंखका फूला)-(इलाज)-सोनामखीके पत्थर लेके उनमें फिटकडी फुलाई
भई सरसूंके बीज मिश्री काली मिरच और कपूर मिलाकर महीनखरलकर सात दिन
अंजन करणा २ मछली तथा बकरीका पित्त सहतमें खलकर अंजन करातेहैं.

(४८ नाकमेंसे खून गिरणा)-(इलाज)-१ सूफ धाणा जीरा सूंठ इन चारोंको
महीन पीस घोडेके कपालमें लेप करणा और ऊंटके मींगणोंको महीन पीस उसके

पाई १ भर सींधे निमकके संग गऊके घीमें मिलाकर अंगारपर धर उसका धूआं नाकमें देणा.

(४९ मूक लगणेकेवास्ते)-(इलाज)-बंबूलकी छाल सींधा निमकसंभर निमक साजीखार संचल राई लसण काली जीरी अजवाण आंबा हलदी वायविडंग सुपेद मूसली और फुलाई भई सुहागी इनोंकों सम वजन लेकर गऊके दहीमें मिलाकर हमेस एक रुपिया भर देणा गरमीकी मोसममें देणा नही.

(५० जहर बाधवास्ते)-(इलाज)-मिरच कसोंदी और अदरक खाणेके पान सम वजन सब मिलाके देणा २ राइ तथा मिरच पीपलामूल ये हरेक एकेक तोला हींग टंकणखार और अफीम ये हरेक ॥ तोला सब दवायोंके बराबर लोंग अकलकरा सूंठ और पीपलामूल मिलाकर फजर सांझ देणा.

(५१ ताकतदार मसाला)-पीपर लसण पीपलामूल कुटकी वायविडंग कचूर सोहगी कालीजीरी अजवाण हलदी घोडावज गूगल दही साजीखार मेथी सुंठ मयणफल कामणीकानीज चित्रक नधायरा जीरा भांग हींग फुलाई फिटकडी आटेके संग मिलाकर देणा.

(५२ सब रोगनाशक मसाला)-कुटकी कालीजीरी आंबीहलदी वायविडंग टंकणखार फुलाई भई फिटकडी मिरच करंज पीपला मूल हरडे बहेडा आंवला करमाला नागरमोथ अजवाण मेथी राई ये सब सम वजन सबोंसे दूणा गुड इसमेंसे पांच को भर मात्रा देणी इसमे सरदी जहर वाद सब जाता है.

(५३ चांदणीनाम्ने मसाला)-राई मिरच पीपलामूल ये सब सम वजन लेकर इसमें पीपर काली मिरच सूंठ पान सहजणेकी छाल करंज मयणफल ये सब एकेक पैसे भर मिलाकर तनमक देणा और उसका मूं बांध अंधेरेमें बांधणा २ लसण हींग टंकणखार कालीजीरी अजवाण पीपलामूल मिरच सूंठ नीमणी सींधानिमक संचल साजीखार अजवाण नया मेंढासींग नवासिकी जड अनीमकी कली पान अदरक इन सबोंकों मिलाके आदेसे मिलाकर देणा और दो पहर बांधके रखणा और गरम किया भया [illegible].

किरण १३ मी.

जहरके इलाज—

जहर दो तरहका होता है, स्थावर और जंगम, स्थावर जहरमें खानेमें पैदा भये या [illegible] वगैरेका समावेश होता है, और जंगम जहरोंमें सांप वगैरे जहरी जानवर [illegible] जुदेर जहरोंका जुदेर लक्षण होते हैं, और स्थान जाणे बाद [illegible] इलाज [illegible] जिनसे कोई बच सकते हैं, इनमें दोनोंमें जहर इसका

है, एकतो जांण बूझकर जहरी चीज खाणे पीणेसें दुसरा भूलसें या जहरी जानवरोंका डंक लगणेसें जहर चढता है, केइयक आपघात करणेकूं जहर खा लेते हैं, जहरी चीजें जगतमें थावर जंगम असंख्य है, सामान्य इलाज इहां लिखेंगें जिस करके बचाव कुछ होय बाद विशेष इलाजीका आसरा लेणा मुख्य२ जहरोंका इलाज लिखते हैं.

(सोमल)–(आर्सेनिक)–अफीमके दुसरे नंबरमें सोमल जहर है, वो थोडीभी प्राणियोंका प्राणनाशक है, सोमलमें कुछभी स्वाद नहीं है, इसवास्ते बेमालम खाणे पीणेमें आजाता है, शंखिया मारवाडमें इसकूं कहते हैं, (सोमलके जहरके चिन्ह)– खाये पीछै एक घंटे बाद पेटकी कोडीमें दरद होता है, दावणेंसे दरद होता है, पीछै उवाकी उलटी होती है, वदनमें शीतांग सन्निपात जैसा पसीना होता है, अवयव धूजता है, हाथ पैर तथा नाककी डंड़ी ठंड़ी पडती हैं, आंखोंकी आसपास आसमानी चक्कर फिरते नजर आते हैं, नाडी करडी और जल्द होती है, पीछै दस्त लगणे लग जाता है, पेटमें चूंक तथा कटाव होता है, पेशाव थोडा आता है, उसमें अंगारसी मालम दै पेशाब बंधभी होजाय खूनभी गिरणे लगे आंखोंमें जलण लाल होजाय शिरमें दर्द छातीमें धडकणा श्वास जल्द और रुकता आवै अत्यत दाह होणेसें रोगी पुकारणे लगे विछोणेमें हाथ पैर पटकै हाथ पांवोमें वांइंटे आवै नवज बैठ जाय चहरा लेवाई जाय रक्ताशय बंध पडे और मर जाय, सोमलके जहरवाला आखरतक हुसियारीमें रहता है.

(इलाज)–सोमल कमसे कम किसी वखत अदमीकूं २॥ ग्रेणमें मार डालता है, लेकिन् सोमल वजनदार होणेसें दस्त उलटीमें वहोत भाग तो निकल जाता है, इसवास्ते सोमलका जहरी आधे सुधर सकतें हैं, (१ उलटी) इसकेवास्ते अच्छा इलाज है, उलटीकेवास्ते अफीमके जहरमें लिखे उससेंकै कराणा उलटी आपसेंही होणे लगे तो उलटीकी दवा देणी नहीं (२ पालण)–उलटी भये पीछै जहर मिटाणेकूं थोडे२ मिनटोसें दो दो प्याले दूध अथवा दूध और वरफ मिलाकर देणा वरफ चुसाणा दूध तथा चूनेका पाणी सम वजन मिलाकर पिलाणा अथवा चूनेका पाणी सालिड तेल देते रहणा (दाह मिटाणेकूं)–ठंढा जल वरफ नींबूका अथवा नारंगीका सरवत और पाणी सोडावाटर साबू दाणेकी कांजी गूंदका पाणी वगेरे ठंडी चीजें एरफेरसे देते रहणा घी पिलाणा ४ आंकसी मिटाणे सल्फ्युरिक इथर तथा लाडेनमदश २ बूंद थोडे जलमें मिलाकर पिलाणा और जरूर पडे तो तीनचार घंटेसें फेर देणा ५ ईसबगोल दहीं गुलाब जल और वेदाणा पिलाणा ६ मखण और मिरच ७ करयेका पाणी ८ चंदलियेका अथवा नींबका रस ९ सहजणेकी छालका रश और दूध १० घी अथवा दहीं पिलाकरके कराणी.

(हरताल) ये दोनों सोमलका सार है इसवास्ते इनोका गुण.

(मनसिल) भी सोमल जेसा ही है इसवास्ते इलाज भी सोमल जेसा ही करणा १ चूनेका पाणी और तेल पिलाणा२ उलटीकी दवा देणी ३ राई दूध आटा और पाणी.

(पारा)-(मर्क्युरि) पारा अपणे निजस्वरूपमें जहरी नहीं है फक्त पारा खाणेमें आवे तो शरीरमें नहीं मिलकर कुछभी इजाया असर करे विगर दस्तके रस्ते निकल जाता है पारेमें खाणके दोषसें सीसा जसद कथीर वगेरे धातुओंका पारा सत है इस वास्ते उन २ चीजोंका मिलाप है वोही सात कंचुकीरूप सात जहर है सो दुसरे भाग-में हम सोधन लिखा है उस मुजब शुद्ध हो जाता है पारा हींगलूमेंसें निकाला भया शुद्ध सब रसोंमे सामान्य तोर डालणेमें बिगाड नहीं करता अशुद्ध पारेकी सब बनावटे जहरी होती है जेसें रस कपूर हींगलू रस सींदूर क्यालोमेल व्हाइट प्रेसिपिटट इनोंमें रस कपूर बडा जहर है उसके जहरसें मूं गला अन्न नल और होजरीमें दाह तथा चांदे गिरते हैं उलटी और दस्त होता है दस्तमें खून गिरता है पेटमें दरद होकर पेट फूल जाता है मूं और मसूढा फूल जाता है लाले झरती है आखर खेंचताण होकर मर जाता है (इलाज)-१ दूधमें गहूंका आटा पकाकर देणा २ दूध गूंदका पाणी अलशीकीचा तथा गहूंके आटेका पटोलिया सब मिलाकर पिलाणा ३ लोहकी पुराणी काटी गुंदके पाणीमें पिलाणा इससे उलटी होणे देणी और एरंडी तेलका जुलाब देणा ४ बंबूलके छालके पाणीका अथवा फिटकडीके कुरले करणा ५ डाकतर लोक मुरगीके इंडोंके गुदे छिलके ठंडे पाणीके संग मिलाकर ऊपरा ऊपरी पिलाकर उलटी कराया करते हैं दे और अच्छा इलाज रस कपूरके जहर उतारणेका बतलाते हैं लेकिन् ये इलाज आर्य लोकोंका नहीं क्योंके मुसलमीनोंके महोलेमें पडे मिलते हैं ६ जादा घी पिलाकर उलटी करानी ७ उलटी कराये पीछे मांजू फलका अथवा आंवलेका चूर्ण गरम पाणीसें पिलाणा ८ चांवलीके जलमें उकाल कुरले कराणा ९ नागरवेलके रसमें गंधक देणा १० गौ-माखी (ठगी) अथवा केलीकी जडका रस पिलाणा.

(नीलाथोथा)-(तांबेका जहर)-(क्युप्रिट्रीओल)-(जंगाल)-ये भी तांबे-का जहर है कलाई बिगेर कलाई भूलमें ये कदाच खाणेमें आ जाता है कदाच चढे तांबेके बरतनमें नसादरदार चीज पकानेमें जंगालका जहर आता है (लक्षण)-उलटी पेटमें दरद दस्त तथा किसी वखत खेंचताण होकर मरभी जाता है (इलाज)-खांडके जहर मुजब उलटी देकर जहर निकाल डालना २ दूध पाणी गहूंका आटा पिलाणा ३ डाक-टर इंडेके छिलके दिलाते है ४ नींबूका रस तथा मिश्री ५ कत्थेका पाणी.

(सीसा)-(सुफेदा)-(लिड)-मूंमें मीठासवाला धातुका स्वाद गलेमें जलन उसके पीछे किसी वखत खूनकी उलटी दस्त बंध पेटमें चूंक जोरसें हाथ पगमें खेंच

अथवा अंग झल जाय (इलाज)-१ एप्समसोल्ट पाणीमें मिलाकर पिलाणा उलटी
भये पीछै २ गूंदका पाणी दूध चावलोंकी घाट और दुसरी चिकणी चीजें पिलाणी.

(काच)-काचका महींन वुरादा पेटमें जाता है तो जहर जैसा विकार करता है-
(लक्षण) कै दस्त पेटपर आफरा दरद वुखार प्यास दाह-(इलाज) १ दही दूध
अथवा अंवली खूव पिलाकर उलटी कराणी २ नवसादर अथवा गोपीचदन पिलाणा.

(अफीम)-(ओपियम)-(अफीमके जहरके चिन्ह)-चक्कर आवे शिर फिरे
शिरमे दर्द होय नसेमें झोका खाय वतलाणेसे वरावर सुणे नही और पीछै आधी वेहो-
सीमें आवै वहोत जोरसे वतलाणेसें हिलाणेसें या मारणेसें जरा हुसियारीमें आता हैं,
फेर पीछै वेहोस हो जाता है फेर किसीभी तरे हुसियारी नही आती श्वास धीरे चलता
है छाती धडकती नही आंख मुंच जाती है आंखकूं उघाडके देखणेसें कीकी छोटी
सूईके अणी जेसी भई मालम देती है पसीना आता है होठ मूं काला पडता है दस्त
कब्ज जी घभराकरकै होय किसी वखत लकवा या खेंचताणभी किसीके होता है जादा
वजनमें खाणेसें उसकी जहरी असर कमसेकम आधे घंटेमें मालम देती है निराहार
पेट खाणेसे जलदी असरकरता है खाकर नीद लेणेसें जल्दी असर करता है फिरणेसे
कम असर करता है कमसे कम ५ ग्रेण याने दोयसे तीन रत्ती खाणेसें सोफीवाजे वखत
मर जाता है-(इलाज)-अफीमका जहर उतारणेकूं दो रस्ते हैं एक तो इसतरेकी
खाये पीछै जल्दी इलाज होय तो सव पेटमें गया भया तमाम अफीम निकाल डालणा
अगर जो कुछ देरी भई होय तो जहरका थोडा या वहोत असर खूनमें मिल गया होय
तो अफीमके जहरकु मिटावे एसी विरुद्ध तासीरकी दवा देणी १ पेटमेंसे जहर निका-
लणेकूं डाकटरोकी सल्लासे-(स्टम क्पंप)-का उपयोग करणा पंप हाजर नहीं होय तो
इसतरे उलटी कराणी २ गलेमें पींछा फेरकर उलटी कराणी उलटी लाणेवाली दवायें
देणी ३ सल्फेट ओफ झिक-हाजर होय तो २० ग्रेण गरम पाणीमें मिलाकर पिला
देणा वो हाजर नही होय तो ४ राई १ सें दो चमचा थोडे जलमें मिला पिलाणा-
५ इपीकाक्युआन्हा पाउडर, १५ ग्रेण गरम पाणीमें मिलाकर पिलाणा उलटीकी दरेक
दवापर गरम पाणी अथवा निमकका पाणी जादा पिलाणेसे उलटीकू जादा उत्तेजन
मिलता है जो उलटीसें सव जहर वाहर निकल पडेतो रोगी तदन अच्छा हो जाता है
और दुसरे किसीभी इलाजकी गरज नही रहती उलटी भये वाद भी जहरके ऊपर लिखे
चिन्ह जो कभी कायम रहे तो समझणाके वदनमें जहर घुस गया है एसी हालतमें
रोगीकूं जागते रखणेका इलाज करणा, (जाग्रत करणेकु) ६ ठंडे पाणीका छटका
आंखोपर खूव मारणा शिरपर ठंडा पाणी डालणा पुकारके जगाणा हिलाना चुंटिये का-
डणा हरतरे जागते रखणा नीद लगणे देणी नहीं विछोणेमें पडणे देणाही नहीं ७ सरन

काफी पाव२ घंटेमे पिलाते जाणा जोरोगी लिवरीज जाय और नाडी बेठ जाय ८ तोला-इकर एमोर्नीयूद १० अथवा ९ सालवो लेटाइल ३० से ४० बूंद थोडे जलमें मिलाकर देणा अथवा १० डाकतर लोक जलमें ब्रांडी मिलाकर देकर पांवपर गरम पाणीके बाटलीका शेक कराते हैं, लडेनम तथा मोरफीया ये अफीमकीही बनावटें है, और दवाकीतरे देणेमें आवे तो जादा वजनमें जहरी असर करता है, ११ फिटकडी तथा कपासियेका चूर्ण पिलाणा १२ हींग और पाणी अथवा अरीठेका पाणी पिलाणा.

(जहरकुचीला)-(नक्सवोमिका)-अपणे बजारमें कुचीलेका फल मिलता है, देशी वैद्य इसकी गोली चावल वगेरे दिया करते हैं, अंग्रेजीमें मुख्य इसकी दो बणावटें हैं, (स्ट्रीकनीया)-(तथा नक्सवोमिका)-पहली बनावट बहोत जहरी है, (कुचीलेके जहरके चिन्ह)-ये जहरके सब चिन्ह धनुर्वातके मिलते हैं, खाये पीछे थोडे मिनटोंमें या घंटे भरमें जहरका असर दिखाता है, नसोमें खेंचाताण होता है, (इलाज) उलटी और जुलाबकी दवा देणी २ नसोंकू ढीली करणेवाली दवा देणी जेसें अफीण नीमसेनी या आरती कपूर क्लोरोफोर्म और क्लोरलहाइड्रेट ३ एक रुमालपर ॥ ड्राम क्लोरोफोर्म छिडक कर दरदीके नाकसे दो इंच अलग धरणा और खेंचाताण होय तहांतक फेर२ इस मुजब करणा ४ महीन कूटा भया कोयला चार तोल पाणीमें फेर२ देना उसकी पिचकारी मारणी ५ जादा घी पिलाकर उलटी करानी.

(धतूरा) (स्ट्रेमोनियम)-धतूरेका सब दरख्त जहरी है, उसमें बीज जादा है, थोडे धतूरेमें जहर चढता नहीं जादासे चढता है, (चिन्ह)-खाये पीछे आधे घंटे पीछे उसका चिन्ह मालूम होता है, पहली शिरमें चक्कर आवे गलेमें शोष प्यास आंखोंकी कीकीयोंकी दृष्टिका फिरनेके अंगमें नाश होता है, आंख तथा चहरा लाल होता है, बड बडाता है, कंठमेंसें कुछ मसालता होय अथवा हवामेंसे कोइ पदार्थ पकडता होय एसा हाथ चाला करता है, आखर बेहोसी आती है, नाडी जल्द होती है, और जहर जादा चढा होय तो बदन ठंढा होकर मर जाता है, हाथके चाले आंखोंकी कीकीयोंका चेडास जहरके खास चिन्ह है, (इलाज)-उलटीकी दवा देकर उलटी कराणी तथा दस्तकी दवा देणी २ आधे२ घंटेमें तेज काफी पिलाणी नींद लेणे देणी नहीं ३ [illegible] पिलाना ४ तेज गरम जलमें पिलाणा ५ भान गांजा भया [illegible] पिलाना.

(वछनाग)-(एकोनाइट) ये बहोत तेज जहर है, ये दरख्तकी जड है, वछनागके [illegible] कहते हैं [illegible] होता है, [illegible] जिव्हमें [illegible] होता है, [illegible] बहोत जहर है, (इसके जहरके चिन्ह)-मूं जीभ तथा होठोंपर चमचमाट झणझणाट [illegible] होय [illegible] आंखोंमें [illegible] कानोंमें [illegible]

शरीर शूना होजाता है, दरदी बेहोस हो जाता है, श्वास धीरे चलता है, नाडी नाता-
कत और छोटी होजाती है, श्वासकी हवा ठंढी और हाथ पांव ठंढा पडता है, आखर
हिचकेके साथ मर जाता है, (इलाज)–१ उलटीका इलाज करणा २ पीछे आधी २
घंटेसे तेज काफी पिलाणी साबू तथा पाणीकी पिचकारी मारकर पेट साफ कराणा.

(भांग)-(गांजा)-(हेम्प)–ये दोनों एकही दरखतकी पैदाश है, भांग उसके
पत्ते हैं, गांजा उसका फूल है, इस मुलकवाले गांजेकूं चिलममें पीते हैं, भांग घोटकर
पीते हैं, इसके सिवाय चडस माजम ये सब इसकी बनावटे हैं, चरस सुलफा ये इस
दरखतका रस है, माजम इसके घीसें पाक बणता है, (जहरी चिन्ह)–आंख और
चहरा लाल होजाता है, तोफान करता है, हसता है, गालिये देता है, मारणे दोडता है,
पागल जैसा अहवाल होता है, (इलाज)–उलटी कराणी दस्तकी दवा देणी ३ शरी-
रपर ठंढे पाणीकी धार देणी ४ आमोनिया सुंघाणी ५ सोणे देणा ५ दही अथवा छाछ
पाणी अथवा छाछ चावल खिलाणा.

(कणेर)–ये फूलका दरखत जहरी है, जांनवर खाते नहीं है, जडमें जादा जहर है,
वो दवामेंभी काम आती है, (जहरके चिन्ह)–उलटी चक्कर नसा बेहोसी खेंचाताण
नाडी नाताकत शीतांग श्वासका रुकणा और मौत (इलाज)–माखणके ऊपरका जल
पिलाणा २ दूधमें अथवा दहीमें मिश्री मिलाकर पिलाणा,

(बहेडा)–बहेडेके अंदरकी गुठलीका बीज जहरी है, जादा खाणेमें आवे तो जह-
रके चिन्ह मालम देते हैं, वो चिन्ह अफीमसें कुछ मिलते भये हैं, (इलाज)–उलटी
तथा दस्तकी दवा देकर जहरकुं निकाल डालणा वदनमें गरमी लाणे दवा देणी,

(कडवी बिदाम)–बिदाम जो खाते हैं, उसमें कोइ २ कडवी निकलती है, वो
जहरी है, (इलाज)–पीठपर तथा मूंपर ठंढा पाणी छांटणा हिराकसी टींकचर ओफ
स्टील और पाणी उनमान मुजब डाकतर लोक पिलाते हैं,

(तमाखू)–तमाखू दांतोमे रगडणेसें खाणेसें चिलममें पीणेसें बांधणेसें बदनपर
रगडणेसें जादा उपयोग होणेसें हरतरे जहरी असर जताता है, जिसकूं माबरा नहीं
होय उसकूं थोडेमें शिरमें चक्कर आता है, (जहरके चिन्ह)–नाडी जरा जलद चले
चक्कर आके उलटी होय पीछे नाडी मद पडे बदन तूटे नाताकती मालम दे शरीर ढीला
पडे रक्ताशयकी अगर क्रिया बंध होजाय तो किसी वखत मरभी जाता है, इसका
पुराणे जहरी असरसें केइ मरभी चुके हैं, लेकिन् बेकून लोक इसकूं जहरी नहीं गम-
झते, (इलाज)–उलटी कराणी एरड तेलका जुलाब देणा मांजू फलका काथ अथवा
टेनिक एसिड पिलाणा,

(सुपारी)–नसा चढता है, घी पीणा मीश्री पीणा ठंढा पाणी पीणा,

(जमालगोटा)–इलायची दहीमें पिलाणा, २ धाणा दहीमें मिश्री डाल पिलाणा, ३ दही चावल मिश्री घी डाल खिलाणा.

(भिलावा)–भिलावा खाणेसें अथवा शरीरपर लग जाणेसें खुजली दाह और पाणी टपकणे लग जाता है, बाहरके इलाजोंसे मिटता हैं, १ सरसूं चंदलिया और मखणका लेप २ मखण तिल तथा दूधका लेप ३ खोपरेका तेल लगाणा ४ अंबलीके पत्ते बाफके बांधणा ५ खोपरा तिल घी खाणा इत्यादि भिलावा सोधन प्रकरणमेंभी केइ उतार देखणा.

(चिरमी)–१ चंदलियेका रस मिश्री डालकर पिलाणा घी पीलाणा.

(आक)–आकका दूध इसकेवास्ते अमलीके पत्ते पीस लेप करणा और इसका दूध पेटमें गया होय तो घी पिलाणा.

(थोर)–घी पीणा तथा घी लगाणा मिश्री ठंडे जलमें पीणा.

(सराप)–घी चूरा चटाणा सिरपर ठंडा पाणी डालणा ३ गुंदे पेठेके रसमें दही धाणा मिश्री डाल पिलाणा ५ ककडी खिलाणी.

(बेलाडोना)–(चिन्ह)–मूं तथा गलेमें शोष प्यास गलेका रुकणा बहोत तोफान करे हँसे आंखकी कीकी बडी होय चहरा लाल तथा सूजा भया नाडी धीरी मीठ आवे नींदका अंग शिल जाय हिचका और मरण मरे पीछे सब बदन सूज जाता है, नाक कान तथा मूंमेसे खून चलता है.

(इलाज)–उलटी कराणा २ अफीम बेलाडोणका उतार है, बेलाडोणका जहर उतार डालता है, इसवास्ते एक औंस पाणीमें ॥ ड्राम अफीमका अर्क देणा, जहांतक जहरका असर मिटे नहीं उहांतक दश२ मिन्टमें देणा काफी बेर२ पिलाणा अफीम नहीं मिले तो

(हाइड्रोस्यानिक एसिड)–बडा सख्त जहर है, वो दवामें वापरते हैं, लेकिन जो कभी गलतीमें ज्यादा प्रमाण उपरांत देणेमें आवे तो तत्काल जहर चढता है, इलाज करनेको वखत नहीं मिलता (इलाज)–रोगीकू सुंघाणे नाक आगे कारबोनेट ऑफ अमोनिया रखना तथा एक प्याला पाणीमें थोडा मिलाकर पिलाणा २ पीठपर बरफ तथा बरफ जैसा ठंडा पाणी डालना मूं छातीपर छांटणा इतनेमें जहरकी शांति नहीं होय तो सल्फेट ऑफ आयर्न (हीराकशी) १० ग्रेन एक औंस पाणी और १ ड्राम टिंक्चर ऑफ स्टील दोनोंको मिलाकर पिलाना ४ अथवा ऊपरकी मिलावटके संग दो औंस पाणीमें मिलाया हुवा कार्बोनेट ऑफ सोडा २० ग्रेन मिलाकर देणा.

(हेमलाक)–इस मुल्कमें हेमलाकके जहरका बनाव बहोतही कम बनता है,

तोभी दियासलाई घर२में वापरणमें आती है, उसके आगे फोसफरस होता है, इस-वास्ते वो छोटे बच्चोके हाथमें नही आवै इसकी सावधानी रखणी.

(इलाज)–१ उलटी देणी २ मेग्निस्या १ भाग और क्लोराइन वोटर ८ भाग उसमेंसें एकेक चिमचा दश२ मिन्टसें देणा.

(ओसडझ)–एसेटिक एसिड स्ट्रांग विनीगर (सरका) साइट्रिक एसिड म्युरियाटिक टार्टरिक नाइट्रिक ओग्झेलिक सल्फ्युरिक वगेरे एसिड है, और ये सब दाह करणेवाले जहर है, (इलाज)–१ मेग्निस्या पाणीके संग देणा २ गरम पाणीमें चाक मिलाकर पिलाणा ३ सोडा पाणीमें मिलाकर पिलाणा ४ कारवोलिक एसिडके उतार वास्ते साकरेट ओफ लाइम देणा ५ नीबूका सरबत देणा.

(आल्कलीझ)–आमोनिया पोटाश सोडा सालवो लेटाइल ये सब आल्कलीझ है, (इलाज)–१ आधा पाणी आधा सिरका २ लेमोनेड अथवा नींबूका रस ३ तेल.

(एन्टीमनी)–(टार्टरइमेटिक)–(इलाज)–कत्था अथवा कत्थेका अर्क पिलाणा २ मेग्निस्या ३ टेनिक एसिड तथा मांजफलका पाणी.

(झिंक)–(सल्फेट ओफ) (इलाज)–१ दूध २ सोडा मेग्निस्या.

(आयर्न)–(सल्फेट ओफ आयर्न)-(इलाज)–सोडा.

(सिल्वर)-(नाइट्रिक सिल्वर)–कोस्टिक–सेंभरका निमक पाणीमें मिलाकर खूब पीणा उलटी करणा.

(सापका जहर)-(इलाज)–१ साप काटे जब झट डंकके ऊपरके भागमें ताणकर डोरी बांधणा पीछै २ डंककू चूस२के थूक डालते जाणा अथवा काटणे लायक जगे होय तो काट डालणा ३ जो वेसा नहीं बणे तो चकूसे डंककूं कुचर कर खून निकाल डालणा और उसपर गुल देणा अथवा नाइट्रिक या कारवोलिक एसिड धरणा ४ बंदूकका दारू उस डंकपर धरके दियासलाइसे जला देणा ५ सख्तमें सख्त जो दवा हाजर होय सो पिलाणा डाकटर ब्रांडी पिलाते हैं, ६ सालवोलेटाइल आधा २ औंस पाव २ घंटेसे देते जाणा ७ इसीतरे जलमें मिलाकर डाकटर सिरिट देते हैं, ८ होजरी तथा रक्ताशयपर राईका पलाष्टर मारणा अथवा टरपेन्टाइनमें डुबाया भया कपडा धरणा ९ रोगीकूं किसीभीतरे नींद नहीं लेणे देणी १० आखर जखमपर पोल्टिस मारणी ११ सुपेद कणेर सुपेद चिरमी आक कडवा तूंबा इनोमेंसे जो मिले उसकूं जलमें घोटकर पिलाणा १२ टंकण अथवा फिटकडीका पाणी पिलाणा १३ घी सहत मखण पींपर आदा मिरच और सींधानिमक एकठाकर खिलाणा.

(वीछुका जहर)-(इलाज)–१ अफीम तथा ईपीकाक्युआन्हा पाउडर सम वजन दोनों नही मिले तो ईपीकाक्युआन्हाकी पोटिस कर डंक ऊपर बांधणा २ टार्ट-

रिक एसिड पाणीमें मिले इतने मिलाकर उसमें डूबाया भया कपडा डंकपर धरणा ३ वीनीगर याने सरकता पोता धरणा ४ निमक और पाणीका पोता धरणा ५ दस्त साफ लाणे जुलाबकी दवा देणी ६ आकके पत्ते तथा राई पीसके लेप करणा ७ वछनाग जमालगोटा नवसादर तथा हरताल नीलाथोथा दही इसमेंसे हरकोइका लेप करणा ८ धतुरेके पत्तोंका रस लगाणा आंधी झाडेकी जड पीसकर लगाणा और एक जड चबाणा काला वीछु और खारेमें पैदा भया विछु बहोत जहरी होता है, उसके डंकपर आकके पत्ते वछनाग तथा राईका लेप करणा.

(चूहेका जहर) जहरी उंदर काटणेसें वदन फूट जाता है वात रक्त जैसे चठे होते हैं, दाह होता है, (इलाज)-१ धूमस (धूंआ) मजीठ हलदी सींधेनिमकका लेप करणा २ पारा गंधक कपूर सरसूं आकके दूधमें लेप करणा ३ त्रिकटु नींबोली सींधा निमक इनोंका चूर्ण मिश्री सहतमें पिलाणा ४ उंदर कर्णीका रश १।२। तोला पिलाणा वदनके मसलणा ५ सोनामुखीका बहोत दिनोंतक सेवन करणा.

(कुत्तेका जहर) (हडकवायु)-इसका इलाज सरत बंधीसें कर सके एसा जादा देखणेमें नहीं आया जो कुछ विद्वानोने लिखे हैं उसकूं अजमाणा चहिये १ डंककूं उसी वखत जला देणा २ गुड तेल आकके दूधका लेप ३ शीतल मिरच (अंकोलका) क्वाथ घी डालकर पीलाणा ४ घोडेकी लीदका २ लींडे निचोड ३।४ मिरच डाल पिलाणा ५ भूंपथारीका रस या क्वाथ घी डालके पिलाणा ६ कूकड बेलका रस बहोत दस्त उलटी कराकर जीव जो जहरी पैदा होते हैं, उनोंकों निकाल डालता है, ७ जहर कुचीला हडकवायुके पुराणे विकारकूं निकाल डालता है, इसवास्ते इस बेमारीमें बचे भये रोगीनें कितनेक महीनोंतक लेते जाणा बिलकुल मिटा देगा पतवाणे भये इलाज काले गूलरकी जड धतूरेके फल चावलके धोये पाणीमें देणा धोवणमें पीसणा ९ कचलेके बीज हमेस वढाके खाणा निश्चे जहर मिटेगा १० आंधी झाडेकी जड नीम १ तोले नर हमेस सहतमें चटाणा ११ कवार पटेपर सींधानिमक डाल बांधणा तीन दिनमें जहर नाश.

(मधुमक्खी)-(भमरा)-(टांटिया)-१ कूंचीकी नली डंकपर दबा देणेसे डंक [illegible] जहरी पीर उसमेंसे निकल जायगा २ मालवोलटाइल विनीगर तथा [illegible] लेप लगाणा ३ वजर अथवा तमाखूकूं भिगाकर डंकपर मसलणा ४ [illegible] तथा दोघनो मूंमें वरफ रखणा ५ और बाहर नीके लगाणी [illegible] तथा [illegible] लेप करणा भमरा भमरी टांटिये इन मक्खीओंके डंकपर [illegible] अच्छी है,

(माकड)–माकडके डंकपर सरका तथा पाणी चुपडणा जो खुरसी वींच पलंगके सांधोमें टरपेन्टाइन लगादे तो फेर माकड पैदा होयभी नही.

(चींचड)–चींचडका डंक जरा काला लाल रंगका होता है, और आसपासकी जगे जादा फीकी पडी भई होती है, कितनेक बुखार एसे होते हैं, जिसमें चमडी उपस फुट जाती है, लेकिन् चींचडके जहरकूं ऊपर लिखे मुजब पहचाणना चहिये नहीं तो दोनोके सामान्य लक्षण एक होणेसे भूल होणा ताजब नहीं, (इलाज)–सिरका और जल मसलणा.

(जवा)–ये मारवाडके गांमोमें जहां ढोर वैठते हैं उस जगे जमीनमें घुसकर रहते हैं, काटे उस वखत मालम नहीं देता फेर जरा२ खुजाल आती है, तब जो उसकूं विगर खून पूरा पिये उतार दिया जावे तो वडी दाह और खुजली लाल२ वदन हो जाता है, चार पाईपर चढते नहीं, (इलाज)–सिरका पाणी गऊका गोवर या घी मसलणा (पिशु (सुरले) दुक्करकाई इत्यादि सव छोटे जहरी कीडे काटणसें घी और गोवर फायदा करता है, सांपके मलमूत्रसे या उसके मरे कलेवरसें जो कीडे पैदा होते हैं वो वडे जहरी काटणेसे वाजे वखत अदमी मर जाता हैं, दाह तो निश्चैही करता है, घी दूध गोवर प्रायें वहोतसे जहरोंका उतार मसलणे और पिलाणेसें जो प्राणी श्रीकलि कुंड पार्श्वनाथायनमः एसा मनमें जाप करते रहेगा उसकूं अचिंतपणे जहर जंगमका समागम नहीं होगा ये वडी अदभुत महिमा है, जैसें दादा श्रीजिनदत्तसूरि एसा नाम लेणेवालेकों विजलीका भय नहीं होता फेर जंगलमें उतरे भये प्राणियोनें अपणी रक्षा-वास्ते नमि जिनदत्त चले दिसावरा सदगुरु वाचा वंध चोर विछु सर्प नाहर चारुं झाडा वंध २१ वेर गुण मनवचन काया थिर करके फेर तीन ताली वजा देणा पूर्वोक्त चीजोसे भय नहीं होगा आर्य वेद या सिद्धांत ये सव आगम सफल आस्तिकोकेवास्ते तत्काल है, नास्तिकोके तो अपणे निज पितामेंभी सदेह होता है कोन जाणे यही था वा अन्य मंत्रविद्या सर्व सत्य है, कर्ता क्रियाकी भूल है, अक्षरोमें अनंत शक्ति है, हस २ एसा नामोचार करते२ भये चार पहरमें सांप खाया भया एक ब्राम्हणीका लडका जहरसें वच गया असलमें उस लडकेका नाम हंस था उसकी माने मोहकी विकलतामें इस नामका उचारण और हस्तपास ये कुदरत कांम दे गई अभी देती है, ये व्याख्या महावीर भगवानके विद्यमान समययें वणाजो वसुदेवहिंड ग्रंथ उसमें है, जिन महाज्ञानि योकू अक्षर मिलाणेकी कुदरत याद है, उनोने रचाजो अक्षर विन्यास उसमें अपर वलशक्ति है, नतु सर्वत्र अमलेसर विमलेसर झर२ स्वाहा इस मंत्रसे पीलिया चला जाता है, इत्यादि अनेक उपगारिक मंत्र मौजूद है, सद्य ग्रंथ गौरवके भयसें नहीं लिख सकते जैसे पदार्थोंके मिलणेसे अनेक चमत्कार विजली गैस तार फोनोग्राफ इत्यादि जगत्

रिक एसिड पाणीमें मिले इतने मिलाकर उसमें डूबाया भया कपडा डंकपर धरणा ३ वीनीगर याने सरकता पोता धरणा ४ निमक और पाणीका पोता धरणा ५ दस्त साफ लाणे जुलाबकी दवा देणी ६ आकके पत्ते तथा राई पीसके लेप करणा ७ वछनाग जमालगोटा नवसादर तथा हरताल नीलाथोथा दही इसमेंसे हरकोइका लेप करणा ८ धतूरेके पत्तोंका रस लगाणा आंधी झाडेकी जड पीसकर लगाणा और एक जड चवाणा काला वीछु और खारेमें पैदा भया विछु वहोत जहरी होता है, उसके डंकपर आकके पत्ते वछनाग तथा राईका लेप करणा.

(चूहेका जहर) जहरी उंदर काटणेसें वदन फूट जाता है वात रक्त जैसे चट्ठे होते है, दाह होता है, (इलाज)-१ धूमस (धूंआ) मजीठ हलदी सींधेनिमकका लेप करणा २ पारा गंधक कपूर सरसूं आकके दूधमें लेप करणा ३ त्रिकटु नींबोली सींधा निमक इनोंका चूर्ण मिश्री सहतमें पिलाणा ४ उंदर कर्णीका रश १।२। तोला पिलाणा वदनके मसलणा ५ सोनामुखीका वहोत दिनोंतक सेवन करणा.

(कुत्तेका जहर)-(हडकवायु)-इसका इलाज सरत वंधीसें कर सके एसा जादा देखणेमें नहीं आया जो कुछ विद्वानोने लिखे हैं उसकूं अजमाणा चहिये १ डंककूं उसी वखत जला देणा २ गुड तेल आकके दूधका लेप ३ शीतल मिरच (अंकोलका) क्काथ वी डालकर पीलाणा ४ घोडेकी लीदका २ लींडे निचोड ३।४ मिरच डाल पिलाणा ५ भूंपथारीका रस या क्काथ घी डालके पिलाणा ६ कूकड वेलका रस वहोत दस्त उलटी कराकर जीव जो जहरी पैदा होते हैं, उनोंकों निकाल डालता है, ७ जहर कुचीला हडकवायुके पुराणे विकारकूं निकाल डालता है, इसवास्ते इस वेमारीसे वचे भये रोगीनें कितनेक महींनोंतक लेते जाणा विलकुल मिटा देगा पतवाणे भये इलाज काले गूलरकी जड धतूरेके फल चावलके धोये पाणीसे देणा घोवणमें पीसणा ९ करंजके वीज हमेस वढाके खाणा निश्चै जहर मिटेगा १० आंधी झाडेकी जड पीस १ तोले भर हमेस सहतमें चटाणा ११ कवार पठेपर सींधानिमक डाल वांधना तीन दिनमें जहर नाश.

(मधुमखी)-(भमरा)-(टांटिया)-१ कूंचीकी नली डंकपर दवा देणेसे डंक ऊपर आकर जहरी पीप उसमेंसे निकल जायगा २ सालवोलेटाइल विनीगर तथा पाणी अथवा कोलनवाटर लगाणा ३ वजर अथवा तमाखूकूं भिगाकर डंकपर मसलणा ४ मूंके अंदर डंक भया होयतो मूंमें वरफ रखणा ५ और वाहर जोक लगाणी भमरेके घरकी मट्टी तथा त्रिफलाका लेप करणा भमरा भमरी टांटिये इन सवकीडोंके डंकपर ठंढे इलाज और ठंढे पाणीकी धार अच्छी है,

(माकड)–माकडके डंकपर सरका तथा पाणी चुपडणा जो खुरसी वींच पलंगके सांधोमें टरपेन्टाइन लगादे तो फेर माकड पैदा होयभी नही.

(चींचड)–चींचडका डंक जरा काला लाल रंगका होता है, और आसपासकी जगे जादा फीकी पडी भई होती है, कितनेक बुखार एसे होते हैं, जिसमें चमडी उपस फुट जाती है, लेकिन् चींचडके जहरकूं ऊपर लिखे मुजब पहचाणना चहिये नहीं तो दोनोके सामान्य लक्षण एक होणेसे भूल होणा ताजब नहीं, (इलाज)–सिरका और जल मसलणा.

(जवा)–ये मारवाडके गांमोमें जहां ढोर बैठते हैं उस जगे जमीनमें घुसकर रहते हैं, काटे उस वखत मालम नहीं देता फेर जरा२ खुजाल आती है, तब जो उसकूं विगर खून पूरा पिये उतार दिया जावे तो वडी दाह और खुजली लाल२ वदन हो जाता है, चार पाईपर चढते नहीं, (इलाज)–सिरका पाणी गऊका गोवर या घी मसलणा (पिशु (सुरले) दुक्करकाई इत्यादि सब छोटे जहरी कीडे काटणसें घी और गोवर फायदा करता है, सांपके मलमूत्रसे या उसके मरे कलेवरसें जो कीडे पैदा होते हैं वो वडे जहरी काटणेसे वाजे वखत अदमी मर जाता हैं, दाह तो निश्चैही करता है, घी दूध गोवर प्रायें वहोतसे जहरोंका उतार मसलणे और पिलाणेसें जो प्राणी श्रीकलि कुंड पार्श्वनाथायनमः एसा मनमें जाप करते रहेगा उसकूं अचिंतपणे जहर जंगमका समागम नही होगा ये वडी अदभुत महिमा है, जैसें दादा श्रीजिनदत्तसूरि एसा नाम लेणेवालेकों विजलीका भय नहीं होता फेर जंगलमें उतरे भये प्राणियोनें अपणी रक्षा-वास्ते नमि जिनदत्त चले दिसावरा सदगुरु वाचा वंध चोर विछु सर्प नाहर चारुं झाडा वंध २१ वेर गुण मनवचन काया थिर करके फेर तीन ताली वजा देणा पूर्वोक्त चीजोंसे भय नहीं होगा आर्य वेद या सिद्धांत ये सब आगम सफल आस्तिकोकेवास्ते तत्काल है, नास्तिकोके तो अपणे निज पितामेंभी सदेह होता है कोन जाणे यही था वा अन्य मंत्रविद्या सर्व सत्य है, कर्ता क्रियाकी भूल है, अक्षरोमें अनंत शक्ति है, हंस २ एसा नामोच्चार करते२ भये चार पहरमें सांप खाया भया एक ब्राम्हणीका लडका जहरसें वच गया असलमें उस लडकेका नाम हंस था उसकी माने मोहकी विकलतासे इस नामका उच्चारण और हस्तपास ये कुदरत कांम दे गई अभी देती है, ये व्याख्या महावीर भगवानके विद्यमान समययें वणाजो वसुदेवहिंड ग्रंथ उसमें है, जिन महाज्ञानियोकूं अक्षर मिलाणेकी कुदरत याद है, उनोने रचाजो अक्षर विन्यास उसमें अपर बलशक्ति है, नतु सर्वत्र अमलेसर विमलेसर झर२ स्वाहा इस मंत्रसे पीलिया चला जाता है, इत्यादि अनेक उपगारिक मंत्र मौजूद है, सब ग्रंथ गौरवके भयसें नहीं लिख सकते जैसे पदार्थोंके मिलणेसे अनेक चमत्कार विजली गैस तार फोनोग्राफ इत्यादि असंख्य

रिक एसिड पाणीमें मिले इतने मिलाकर उसमें डूबाया भया कपडा डंकपर धरणा ३ वीनीगर याने सरकता पोता धरणा ४ निमक और पाणीका पोता धरणा ५ दस्त साफ लाणे जुलाबकी दवा देणी ६ आकके पत्ते तथा राई पीसके लेप करणा ७ वछ-नाग जमालगोटा नवसादर तथा हरताल नीलाथोथा दही इसमेंसे हरकोइका लेप करणा ८ धतूरेके पत्तोंका रस लगाणा आंधी झाडेकी जड पीसकर लगाणा और एक जड चवाणा काला वीछु और खारमें पैदा भया विछु वहोत जहरी होता है, उसके डंकपर आकके पत्ते वछनाग तथा राईका लेप करणा.

(चूहेका जहर) जहरी उंदर काटणेसें वदन फूट जाता है वात रक्त जैसे चट्ठे होते है, दाह होता है, (इलाज)-१ धूमस (धूंआ) मजीठ हलदी सींधेनिमकका लेप करणा २ पारा गंधक कपूर सरसूं आकके दूधमें लेप करणा ३ त्रिकटु नींबोली सींधा निमक इनोंका चूर्ण मिश्री सहतमें पिलाणा ४ उंदर कर्णीका रश १।२। तोला पिलाणा वदनके मसलणा ५ सोनामुखीका वहोत दिनोंतक सेवन करणा.

(कुत्तेका जहर)-(हडकवायु)-इसका इलाज सरत वंधीसें कर सके एसा जादा देखणेमें नहीं आया जो कुछ विद्वानोने लिखे हैं उसकूं अजमाणा चहिये १ डंककूं उसी वखत जला देणा २ गुड तेल आकके दूधका लेप ३ शीतल मिरच (अंकोलका) क्काथ घी डालकर पीलाणा ४ घोडेकी लीदका २ लींडे निचोड ३।४ मिरच डाल पिलाणा ५ भूंपथारीका रस या क्काथ घी डालके पिलाणा ६ कूकड वेलका रस वहोत दस्त उलटी कराकर जीव जो जहरी पैदा होते हैं, उनोंकों निकाल डालता है, ७ जहर कुचीला हडकवायुके पुराणे विकारकूं निकाल डालता है, इसवास्ते इस वेमा-रीसे वचे भये रोगीनें कितनेक महींनोंतक लेते जाणा विलकुल मिटा देगा पतवाणे भये इलाज काले गूलरकी जड धतूरेके फल चावलके धोये पाणीसे देणा धोवणमें पीसणा ९ करंजके वीज हमेस वढाके खाणा निश्चै जहर मिटेगा १० आंधी झाडेकी जड पीस १ तोले भर हमेस सहतमें चटाणा ११ कवार पठेपर सींधानिमक डाल वांधना तीन दिनमें जहर नाश.

(मधुमखी)-(भमरा)-(टांटिया)-१ कूंचीकी नली डंकपर दवा देणेसे डंक ऊपर आकर जहरी पीप उसमेंसे निकल जायगा २ सालवोलेटाइल विनीगर तथा पाणी अथवा कोलनवाटर लगाणा ३ वजर अथवा तमाखूकूं भिगाकर डंकपर मसलणा ४ मूंके अंदर डंक भया होयतो मूंमें वरफ रखणा ५ और वाहर जोक लगाणी भमरेके घरकी मट्टी तथा त्रिफलाका लेप करणा भमरा भमरी टांटिये इन सवकीडोंके डंकपर ठंढे इलाज और ठंढे पाणीकी धार अच्छी है,

(माकड)–माकडके डंकपर सरका तथा पाणी चुपडणा जो खुरसी वींच पलंगके सांधोंमें टरपेन्टाइन लगादे तो फेर माकड पैदा होयभी नही.

(चींचड)–चींचडका डंक जरा काला लाल रंगका होता है, और आसपासकी जगे जादा फीकी पडी भई होती है, कितनेक बुखार एसे होते हैं, जिसमें चमडी उपस फुट जाती है, लेकिन् चींचडके जहरकूं ऊपर लिखे मुजब पहचाणना चहिये नहीं तो दोनोके सामान्य लक्षण एक होणेसे भूल होणा ताजब नहीं, (इलाज)–सिरका और जल मसलणा.

(जवा)–ये मारवाडके गांमोमें जहां ढोर बैठते हैं उस जगे जमीनमें घुसकर रहते हैं, काटे उस वखत मालम नहीं देता फेर जरा२ खुजाल आती है, तव जो उसकूं विगर खून पूरा पिये उतार दिया जावे तो बडी दाह और खुजली लाल२ वदन हो जाता है, चार पाईपर चढते नहीं, (इलाज)–सिरका पाणी गऊका गोवर या घी मसलणा (पिशु (सुरले) दुक्करकाई इत्यादि सव छोटे जहरी कीडे काटणसें घी और गोवर फायदा करता है, सांपके मलमूत्रसे या उसके मरे कलेवरसें जो कीडे पैदा होते हैं वो वडे जहरी काटणेसे वाजे वखत अदमी मर जाता हैं, दाह तो निश्चेही करता है, घी दूध गोवर प्रायें वहोतसे जहरोंका उतार मसलणे और पिलाणेसें जो प्राणी श्रीकलि कुंड पार्श्वनाथायनमः एसा मनमें जाप करते रहेगा उसकूं अचिंतपणे जहर जंगमका समागम नहीं होगा ये वडी अदभुत महिमा है, जैसें दादा श्रीजिनदत्तसूरि एसा नाम लेणेवालेकों विजलीका भय नहीं होता फेर जंगलमें उतरे भये प्राणियोनें अपणी रक्षा-वास्ते नमि जिनदत्त चले दिसावरा सदगुरु वाचा वंध चोर विछु सर्प नाहर चारुं झाडा वंध २१ वेर गुण मनवचन काया थिर करके फेर तीन ताली वजा देणा पूर्वोक्त चीजोसे भय नहीं होगा आर्य वेद या सिद्धांत ये सव आगम सफल आस्तिकोकेवास्ते तत्काल है, नास्तिकोके तो अपणे निज पितामेंभी संदेह होता है कोन जाणे यही था वा अन्य मंत्रविद्या सर्व सत्य है, कर्ता क्रियाकी भूल है, अक्षरोमें अनंत शक्ति है, हस २ एसा नामोच्चार करते२ भये चार पहरमें सांप खाया भया एक ब्राम्हणीका लडका जहरसें वच गया असलमें उस लडकेका नाम हंस था उसकी माने मोहकी विकलतासें इस नामका उच्चारण और हस्तपास ये कुदरत कांम दे गई अभी देती है, ये व्याख्या महावीर भगवानके विद्यमान समययें वणाजो वसुदेवहिंड ग्रंथ उसमें है, जिन महाज्ञानि योकू अक्षर मिलाणेकी कुदरत याद है, उनोने रचाजो अक्षर विन्यास उसमें अपर वलशक्ति है, नतु सर्वत्र अमलेसर विमलेसर झर२ स्वाहा इस मंत्रसे पीलिया चला जाता है, इत्यादि अनेक उपगारिक मंत्र मौजूद है, सव ग्रंथ गौरवके भयसे नहीं लिख सकते जैसे पदार्थोंके मिलणेसे अनेक चमत्कार विजली गेस तार फोनोग्राफ इत्यादि असंख्य

कुदरते होणा प्रत्यक्ष है, एसेही अक्षरोंकी मिलावट मणी मंत्र और औषधी तीनोंमें अत्यंत कुदरत है, (प्रश्न)–पदार्थोंकी शक्ति प्रत्यक्ष देखते हैं, ऐसी अक्षरोंकी नहीं दिखती, (उत्तर)–अक्षरोंकीभी शक्ति प्रगट देखते हैं, जैसें कोई शत्रु मार २ करता आ रहा है, उसकूं मीठे वचनोंसें नरमाईके संग आजीजी अक्षरोसे किया जावै शांत हो जाता है, अक्षरोसें मित्राई अक्षरोसें दुसमनी हाथीकूं अगड धत्त इत्यादि अक्षरोसें समझाया जाता है, बुचकारणा छिच कारणा इत्यादि अक्षरों द्वारा सर्व संसारमें प्रत्यक्ष फल असंक्ष तरे सिद्ध है, थोडेसे विचारो एक कुत्ता वीस कुत्तोसें मुकावला करता है, लग २ इत्यादि अक्षर कहणेसें दीर्घ दृष्टी दो अचिंत्य कुदरत अक्षरोंकी मिलावटमें वा एकमें है या नहीं नहीं तो शास्त्रोंपरयकीन केसे लाते हो वोभी सब अक्षर है, झूठी और सच्ची अक्षरोंकी दोनोंतरे मिलावट होती है, वचनात्प्रवृत्ति वचनात् निवृत्ति है, लोकोंको यथार्थ क्रिया सफल मंत्रभी पदार्थोंकी तरे फायदा देता है, पदार्थभी मिलानेवाले फायदा दिखाते हैं, एसेही अक्षर मंत्रवाले दिखा सकते हैं, वहोत पदार्थोंका मिलाणा उसमें फायदा पश्चिमी विद्वानोंनें इस वखत दिखलाया आगूं वोभी नहीं जाणते थे, इहांवालेभी कालांतरसे भूल गये थे और अभीभी असंक्ष वातें इन पदार्थोंसें होणेवाले हैं, वो प्रगट नहीं है, रत्नोंका वण जाणा मरे भये जिंदे दिखणा असलमें जिंदे नहीं क्योंके सत्ता ईस पीठ इंद्र जालमेंसें सतरे पीठ पश्चिमी विद्वानोके हाथ लगे हैं उसमेंसें अभी वहोतोंका अजमाणा और नई२ कल्पना वाकी है, कुछ आश्चर्य नहीं कभी प्रगट कभी लुप्त कालका धर्म है, हमारे वडेरे अक्षरोंकी शक्तिमें वडे वाकवकारथे आजकाल हमलोक तिरोभावमें हैं, लेकिन् सर्वथा नास्ति नहीं साधना उद्यम वडी चीज है.

(मछर)–(डांस)–(डंकी)–ये तीनो डंक मारते हैं, उस डंकमें दाह करणेवाली रस्सी पीपकूं डाल जाते हैं) उनोके डंकमें छोटा करडा सुपेद दाफड उठ जाता है, अगर किसी अदमीका खून विगडा भया होता है तो उस जगे सोजा पकणा किसी वखत पीप पडके जखम हो जाता है, (इलाज)–पाणी अथवा पाणी और सिरका मसलणा, (इलाज विछुउ तारणेका) जंगली गोवरी जलाणेसें जब धूंआ निकल चूके तव आकके दूधमें वुझा देणा वाद सूकाकर पीस रख देणा एक दो चिमठी खेचकर तमाखूकी तरे सुंघाणेसें पांच मिनटमें छींके आकर विछू उतर जाता है, विछू काटणेकी जगे वांवा होय तो खोला देणा छींके वंध करणी होय तो घी सुंघाणा हमने केइ जगे अजमाया है,

किरण १४ मी.

दृढीकरण धातुपुष्टस्तंभन इलाज संकोचन.

जो दवाइयें वदनके सातू धातुओकों अच्छीतरे पुष्टिकर अवयवोकों मजवूत करे वो

पौष्टिक औषधी कहलाती है, एसी बहोत दवाइयां है, उसमेंसें केइयक (रसायण) दवा देखो पृष्ट ३१८) में कितनेक वाजीकर (देखो पृष्ट ३१८) में और कितनेक फक्त धातू वढाणेवाली दवायें जो दवा रसायण और वाजीकर है वो धातुपुष्ट तो हेही इस के सिवाय कितनेक दुसरे वर्ग वीर्य स्तंभक दवायोंका है, जिसकूं लोक धातु पुष्टि समझके खाते हैं, लेकिन् निश्चैमें देखा जाय तो वेसी दवामें फायदा नहीं वाजीकर दवायोंकी तरे दवायेंभी कामकूं पैदा करती है, और वीर्यकूं रोकके रखती है, लेकिन् ये गुण थोडी देरका होणेसें आखरकुं नुकशान करती हैं इस दवायोंमें सच्ची पुष्टि और पोपण देणेका गुण नहीं है, वलके जहांतक इस दवायोंका दो चार पहर अमल रहता है, उहांतक तो चेतन खूवी और अमल उतरे पीछै वदनकुं उलटा ठंढा सुस्त और नाताकत वणा देती है, एसी दवा जादे खाणेलायक नहीं है जो अदमी अपणे वदनकूं निरोग रखणेकाज्ञान धराते होय उनोनें शोखके वास्तेभी एसी स्तंभक दवा लेणेकी आज्ञा हम नहीं दे सकते नाताकत कम अक्कल लोक एसी वीर्य स्तंभक दवायोंकी वहोत खोज किया करते हैं, कोई देणेवाला मिलाके झटले लेते हैं, एसी नुकशांन वाली दवायेंके फंदमें फसके वहोतसे अदमी खराव हो चूके हैं तोभी एसे२ आदमियोंके संतोप दिल जमीके वास्ते इस किरणमें आखर एसे २ वीर्यस्तंभक इलाज लिखे हैं, सो किसी वखत लेणा पडे तो नुकशांन नही करे.

(अमृतवटी)–ये सव चीजोसें अवल दरजेकी रसायण वाजीकर और धातु पौष्टिक दवा है, रसायण शब्द फक्त मारी भई धातूओंकोंही मत समझना वनस्पतीयोंमेंभी अनेक चीजें रसायणका गुण धराती है, जैसे गिलोय रुद्रवंती गुग्गल हरडे आंवले जो जीवनीय गणकी दवा मोलेठी वगेरे सव रसायण संज्ञक है, निघटमें देखणा आजकलकी वेकूव दुनियां अशुद्ध पारे सेंवणे रस कपूरहीकों रसायण समझते हैं,उससे विगडे भये रोगीकूं देख कहते हैं वैद्यजी हमकूं रसायण मत देणा हम हरगिज नही लेंगे रसायण शब्दका मायना नहीं समझते इसवास्ते इस शब्दका अर्थ लिखते है (जो दवा शरीरके सातों धातुओंकों वहोंत मुदत तक ताकत कायम रखे वुढापा और रोगोंको दूर करे उसकूं रसायण कहते हैं, जीवन नाम करके प्रसिद्ध जडी वूंटीसें वणी दवा अहम्मदावादमें वैद्य जटाशंकर रसायण वेचते हैं अपणे मासिक पत्रमें वहोत तारीफ लिखते हैं, विद्वानोंके उपयोगसें वणाइ भई सव दवायें फायदा मंद होती है कभी नुकशांन नही करती जिसकी ऊमर नहीं उसकूं अमृतभी जहर हो जाता है, जैसे नारकीके जीवोंकों कोइ देवता पूर्व भवके प्रेमसें अमृत लेजाके खिलावे तोभी उसकूं हालाहल जहरवत् मालम दे इस दृष्टांत मुजव जाणना.

(दूध)–(पुष्ट)–और वाजीकर वस्तू है, तेज अग्निवालेनें खाय कर पीना और

मध्यम तथा मंद अग्निवालेनें पांच मिन्ट फक्त गरम कर थोडा मीठा डाल पीणा क्योंके जादा मीठा दूधका जोर कम कर देता है, विदाम पिस्ता तथा दुसरीभी पौष्टिक दवायें डाल करभी पिये जाता है दूधमें केशर जायफल वगेरे स्तंभक दवायें डालणेसें वीर्यकूं स्तंभन करता है, लेकिन् दस्तकी कब्जी करता है, और एसी दवायोंसे आखरमें नुकशांन है, दूधसे वीर्य जल्दी पैदा होता है, दो घंटेमें प्राये हजम हो जाता है, वीर्यकी कमी वालेने दूध पीणेका मावरा रखणा २ गऊके गरम करे भये दूधमें घी बूरा डालकर पीणा रोगी जानवरका दूध पीणा नहीं जो जादा पढै व्याख्यानादि करे वृद्ध बालक दूध पीणे लायक रोगी एसे त्यागी आत्मार्थी साधूकुंभी दूध पीणेका हुकम सूत्रोंमें हैं, स्त्रियोंका रति प्रमोदमें मांनमर्दक दूध है.

(विदारीकंद)-(भूंकोला)-इसका चूर्ण करणा घी बूरेके संग खाणा उसपर बूरा डाला भया दूध पीणा २ इसके चूर्णकूं इसकी रसकी २१ भावना देकर फेर खिलावे तो वहोत फायदा करता है, ३ विदारीकंद गोखरू मुसली आंवले सींधानिमक पींपर इनोकों दूधमें बूरा डालके मिलाके पीणा,

(आंवले)-१ आंवला गोखरू गिलोय सम वजन चुर्ण घी बूरेमें चाटणेसें धातु वृद्धि और पुष्टी होती है, जिसने हथरस लोंडाबाजी करणेसें नपुंसकता प्राप्त करी है, वोभी मिटती है, २ आंवलेके चूर्णकों आंवलेकी रसकी २७ भावना देकर छांया सुकाकर उसमेंसें हमेस २ मासा चूर्ण मिश्री संग फाककर दूध पीणा वीर्य वृद्धिवाजीकर हें, ३ आंवलेका रस घी मिलाकर पीणा ४ त्रिफलाके चूर्णमें लोहभस्म मोलेठीका चूर्ण घी तथा सहत मिला सूर्यास्त होते वखत लेणा इससे कामकी वृद्धि होती है,

(कोंचबीज)-कोंचबीजकूं एक दिन गरम पाणीमें भिगाकर दूसरे दिन छिलके दूरकर सुकाणा पीछै दल कूट चूर्ण कर मिश्रीके संग फाकणा ऊपर धारोष्ण दूध पीणा २ कोंचबीज तालमखाणा अथवा बलबीजका चूर्ण मिला ऊपर मुजब पीणा ३ कोंचबीज गोखरू शतावर बलबीज तालमखाणा आंवलेका चूर्ण दूधमें पीणा सांझकूं ४ कोंचबीज उडद इन दोनोकों कूट दाल कर खिलाणी ।

(गोखरू)-गोखरूका चूर्ण मिश्री मिलाय फाकणा ऊपर दूध पीणा २ गोखरू सूंफ मिश्री इनोंकों उकाल दोनों वखत पीणा इससे धातु गिरणा बंध होता है, ३ गोखरूका चूर्ण १ तोला सहतमें मिलाकर बकरीके दूधके संग पीणा इसतरे दो महीना पीणेसें गया पुरुषार्थ पीछा प्राप्त होता है, ४ गोखरूका चूर्ण गऊका घी मिश्री सहत सम वजन मिलाकर उसमेंसें हमेस दो तोला गऊके दूध संग पीणा,

(अहिखरा) तालमखाणा)-१ अहिखर मूसली गोखरू मिश्री गऊके दूधमें पीणा २ तालमखाणा १ तोला इलायची दाणा एक तोला सुपेद मिरचका ३।४ दाणा कूट

कर छ पुडी करणी एकेक पुडी रातकूं केलेमे भरके चंद्रमाके उजालेमें धरणा पीछै फज-
रमें केलेकी छाल उतारकर केला खा जाणा इसतरे २१ दिन करणेसें धातू स्थानकी
गरमी दूर होकर धात पुष्ट होता हैं मगजकी गरमी दूर होती है,

(मूसली)–सुपेद मूसली सालम कोंचवीज गोखरू शतावरी आंवलेका चूर्ण १ तो०
घी तोला १ गऊके पाव दूधमें पीणा सुपेद मूसली गिलोयसत कोंचवीज गोखरू शेम-
लकी जड अथवा छाल आंवला मिश्री सम वजन चूर्ण ॥ रुपेभर गऊके दूधमें डालकर
पीणा इससे कमरमें जादा जोर आता है नामरदी दूर होती है,

(सालम)–१ सालमका चूर्ण दूधमैं उकाल थोडा बूरा डाल पीणा २ सालम
धोली मूसली काली मूसली गोखरू तालमखाणा वलवीज खारक इनोका ६ मासा चूर्ण
१ तोला मिश्री पाव दूधमें पीणा इससे स्वप्न दोष वंध होकर धातु पुष्ट होता है,
३ सालमका पाक तथा मुरव्वा होता है, वहोत तरे इसकी वणावट है,

(शतावर)–१ दूधमें शतावर उकाल बूरा मिलाकर पीणा २ शतावर नागवला
वलवीज आसगंध कोंचवीज तालमखाणा गोखरू काली मूसली मोलेठी सम वजन चूर्ण
चूर्ण वरावर घी घीसे चोगुणा गऊका दूध सबसे दूणी मिश्री पाक वणाकर खाणेसें
काम प्रदीप्त होता है,

(ज्येष्ठीमधु) मोलेठी)--एक तोला मोलेठीका चूर्ण घी सहतमें मिला फजर चाट-
णेसें पुरुषार्थ चढता है,

(आसगंध)–१ आसगंधका चूर्ण घी सहतसे चाटणा २ आसगंध तथा वधाय-
रेका चूर्ण हमेस ॥ तोला गऊके धारोंश्न दूधमें पीणा.

(गिलोय)–गिलोय सर्वोत्तम रसायण है, तीनों दोषोंकों मिटाणेवाली है, वदनके
सब दोषोंकों दूर कर वदनमें ताकत भर देती है, १ गिलोय सत्वकूं दूधमें उकाल कर
पीणा २ गिलोय सत्व अथवा गिलोयका चूर्ण आंवला गोखरू सम वजन चूर्ण घी मिश्री
अथवा घी सहतमें हमेस चाटणेसें परम पुरुषार्थ आता है,

(गूगल) अत्यंत पुष्ट है सब पौष्टिक दवायोंसे गूगलमें विशेष गुण तो ये हेकी
अदमी तथा औरतके वीर्यकूं सुधारकर ताकत देता है, उसकी वहोत वनावटें हैं,
१ योगराज गूगल २ त्रिफला गुगल किशोर चंद्रप्रभा सिंहनाद वगेरे,

(मोचरस)–१ मोचरस शेमलका गूंद है, उसकी जड तो ४ कूटकर गऊके
ताजे दूधमें भिगाकर रातकू फजरमें मसल छाण उसमे १ तोला मिश्री डाल ७ दिन
पीणा इससें वीर्य गिरता वंध होता है, २ मोचरसका चूर्ण ॥ तोला मिश्री ४ तोला
पाव दूधमें मिलाकर पीणा ३ शेमलका मूल सुकाकर चूर्ण घीमें सेक गऊके दूधमें
सिजाकर पीछै उसमें मिश्री वेदाणा विदाम वगेरे डाल हमेस फजरमें खाणा धातु पुष्ट

सुधार मगजकूं तर करता है, ४ आधा तोला मोचरश ४ तोला मिश्री गऊके दूधमें पीणेसें वीर्य जल्दी वढता है,

(उंठकंटाला)–१ इसके जडके छालका चूर्ण करना पीछे मुगलाई वेदाणा तो १ तथा मिश्री तो २ पाव पाणीमें भिगाकर फजरमें उसका लुआव कपडेसें छाण उसमें उंठकंटालेका चूर्ण ६ मासा डाल फजरमें पीणा वीर्य वढे प्रमेह मूत्रकृच्छ पेशावके शंग जाती धातू वंध होती है, २ उंठकंटाला गोखरू कोंचवीज दूधमें उकाल कर पीना ३ उंठकंटालेके जडकी छालका चूर्ण दूधमें उकाल मिश्री डाल पीना ४ ओटींगण उंठ-कंटालेका वीज होता है, एसाही गुण धराता है, इसकी दूधकी पकाई खीर मिश्री डाल पीणेसें धातु पुष्ट मरदीभी करता गिरता धातू वंध होता है धातू गिरणेंवाले रोगीनें खटाई हींग मिरच वगेरे गरम चीजें जादा खाणा नहीं औरतकाभी परेज रखणा.

(उडद)–उडदकी उकाली कर उसमें गऊका दूध तथा घी डाल कर पीणा २ शतावर वलवीज कोंचवीज तालमखाणा गोखरू उडद इन चीजोंका चूर्ण ॥ रुपे भर गऊक दूधकूं थोडा गरम कर वूरा डाल पीणा ३ उडदके लड्डू ४ उडदकूं वूरा डाले भये दूधमें मकरोय कर धूपमें सुकाकर दाल करणी उसके वडेकर तलकर खाना काम प्रदीपक है ४ उडद जव गहूंके ऊपरके छिलके दूर कर आटा करना पीछे दूधमें तथा इक्षुके रसमें मकरोय पीछे घीमें दाणा पाड चासणी वूरेकी लड्डू वणाना एक लड्डू खाकर पींपर डाल वूरा डाल गरम कर दूध पीणा ६ उडदका आटा जवका आटा तपखीर विदारी कंदका चूर्ण काली मिरचका चूर्ण वूरा डाल घीमें पुडियें तल फजरमें दूधके संग खाणा.

(माल कांकणी)–१ माल कांगणीके वीज वूरा इलायची सम भाग चूर्ण ४ मासा ४ मासा एरंडीके वीजका मगज फजरमें पाणीके संग खाना इससें मगज ठंढा और आंखोंकी गरमी जाती है.

(महुवा)–१ महुवेकी अंदरकी छालका चूर्ण २।३ मासा हमेस फजर सांझ गऊके घी तथा सहतके संग चाटणा, पाव गऊका ताजा दूध घी वूरा डालकर गरम थोडा कर ऊपरसें पीणा काम वृद्धि करे.

(ईस पूगल)–१ ईसपूगल २ भाग इलायची दाणा १ भाग वूरा तीन भाग रातकूं भिगाकर फजरमें पीणा अथवा चूर्ण फाक दूध पीणा.

(गुलवास)–१ सुपेद गुलवासकी जड गऊके दूधमें घस पीना.

(प्याज) कांदे)–१ सुपेद प्याजका रस सहत डालकर पीणा २ सुपेद कांदेके रशमें भिगाया भया अजवाण १ तोला घी १ तोला वूरा २ तो इनोंकों खाणा २१ दिन मरदमी आती है, कंदर्प भूपण पाक पाली नग्रमें नग्रसेठ साठ वर्षकी ऊमरमें सोले वर्षकी स्त्रीयुक्त खाया गर्भ रहे वाद सेठ मर गया लडका भये वाद विरादरीनें दलील १२

वर्ष रखी बाद योधपुर नरेश विजैसिंह लडकेकूं दोडाकर पसीना सूंघा कांदेकी वदवो आई लडका असली ठहरा ये पाक कांदेका रस और मसालेसें वणता है यती वैद्यनें पुत्रकेवास्तेही वणाके दिया था,

(डाक्टरोकी ताकतवर दवा कोडलीवर आइल है) उसकी केइ वनावेंट आती है, १ स्वच्छ कोडलीवर २ माल्टाइन कोडलीवर कोनेनकी तरे वदनके पुराणे विकारमें वापरते हैं, नाताकती मिटाणे पुष्टताइका गुण है लेकिन् जिसकू सदता है उसके खून भरी जता है ताकत आती है आर्य जैनोंने तथा वैष्णवोनें इस चीजसें वचके रहणा मच्छीकी वनावट है,

(क्विनाइन)—१ क्विनाइनमें शक्ति लाणेका गुण है, लेकिन् वो टोनिक तरीकेकी नाताकतीमेंही विशेष करके वापरते हैं, धातु पुष्टि तरीके नहीं वापरणेमें आता क्योंके ये गुण इसमें दिखता नहीं बुखार अथवा बुखारसें आई भई नाताकतीमें वो थोडी२ मात्रामें लेणेसें ताकत लाती है, ताकतके वास्ते जादा करके लोह सारके संग देणेमे आता है, क्विनाइन मिश्रित लोहकी पतरिये (फेरी साइट्रेट एटक्विनाइन) में क्विनाइन आता है,

(वीर्यस्तंभन इलाज)—१ अफीम लोंग जावंत्री तज अकलकरा और समुद्र शोपके बीज सबका सम भाग चूर्ण चूर्णकी वरावर मिश्री सहतमें घोट चाल २ जितनी गोलिये करणी १ गोली दूधके संग सांझकू पीणा ऊपरसें फेर गऊका ताजा दूध पीणा १ कस्तूरी केशर जायफल लोंग अफीम भांग सूंठ इलायची कपड छाणकर एकेक वाल फजर सांझ सहतमें चाट ऊपरसें ताजा दूध पीणा खुरासाणी अजवाण जायफल अजमोद अफीम सम वजन चूर्णकर तीन वर्षका पुराणा गुड डालकर गोंलियें वणाणी एक गोली सांझकू खाना ४ भांग २१ भाग आंवला सींधानिमक उपलेट कायफल पींपर छोटी सूंठ अज-मोद अजवाण मोलेठी जीरा साहजीरा धाणा कपूर काचरी काकडासींगी वचनाग केशर तालीसपत्र तज तमालपत्र इलायची और मिरच ये सब मिलाकर २१ भाग भांगके वीज समेत सेकके चूर्ण करना सबसें दूणी मिश्री लडूवणे इस अंदाजन घी तथा सहत मिलाकर चार आनीसें आधे रुपये भरकी गोली करके यथा शक्ति खानेसें वीर्य स्तंभन तथा वाजीकरण होता है.

(चोपचीणी)—१ चोपचीणी ४८ तोला पीपर पीपरामूल सूंठ मिरच तज अक-लकरा लोंग एकेक तोला सबके जितना वूरा इसका पाक करणा उपदंसकी गरमीकू मिटा कर ताकत देती है २ चोपचीणीका पाक नं० ३७९.

(कोला)—१ कुष्मांडपाक नं० ३८०) २ कुष्मांडावलेह नं० ३६६) मगजकी गरमीतथा दाहकूं मिटाता है, औरतोंके ऋतुधर्मकु सुधारता है ताकत लाता है.

(हरडे)—बडी हरडेका चूर्ण बूढे आदमीयोंकों रसायणरूप और ताकतवर है, ऋतुओंके अनुपान इस मुजब है, १ ग्रीष्म ऋतुमें तीन वर्षके पुराणे गुडके संग २ प्रावट् ऋतुमें सींधा निमक संग ३ सरद ऋतूमें मिश्री संग ४ हेमंत ऋतूमें सूंठ संग ५ वहोत मेव या ओलेगिरे हेमंत ऋतूमें एसी शिसर ऋतूमें पींपर संग ६ वशंत ऋतूमें सहत संग हरडेकूं तरुण आते भये ज्वरमें बारे दिनोंतक तथा धातू क्षीण जवान अदमीकूं देणा नहीं सन्निपात ज्वरमें औषधोंके प्रयोगमें देणा सामान्य तोरमुनक्कादाख मिश्री मिलाकर खाणेकूं देणी २ हरडे मधुपक्क आम्लपित्त तथा संग्रहणी मिटाती है पथ्य रोग मुजब करणेसें ३ हरडे पाक तथा अवलेही नं० ३६४) जीर्णज्वर तथा धातूकी क्षीणताकूं मिटाकर ताकत लाती है, ४ हरडेका मुरब्वा मलकी कब्जी मिटाती है, ऋषभ देवके पुत्र वृहदात्रेयनें त्रिफलाके तथा न्यारे २ हरडे वहेडे आंवलेके अनेकानेक गुण लिखे हैं, त्रिफलामेंसे कोइभी फलका विकार होय तो सहत खिलाणी.

(पींपर)—१ पीपर सहत घी दूध मिश्री मिलाकर खाणेसें पुष्टि करती है मंदाग्नि मिटाती है, २ सहत १ भाग घी २ भाग पीपर ४ भाग मिश्री ८ भाग दूध ३२ भाग तज तमालपत्र इलायची नागकेशर चारों मिलाकर ६ भाग इन सवोंका पाक वणाकर खाणेसें धातू क्षीणता बुखार दम फीकास अग्निमंद वगेरे मिटता है, ३ पीपर पाक (नं० ३७५) वर्द्धमान पीपल पृष्ट २९४)

(मेथी)—१ मेथीका आटा तोला ३ अधसेर दूधमें रातका भिगाकर रखणा फजर एक वरतणमें तोला ५ घी डालकर तपाकर उसमें सेकणा दाणा पडे तव लाल सक्कर अथवा गुडका पाक वणाना इससें औरतोंके स्तनमें दूध वढता है ताकत आती है, मेथीकूं घीमें सेक आटा करणा गुडकी चासणीमें लड्डू वणाना खानेसें कलतर मेटती है, ३ मेथी पाक नं० ३७४

(सूंठ)—१ दूध तोला १४ पाणी तोला २१ उसमें चार मासा सूंठके टुकडे डाल पाणी जले जहांतक उकाल सूंठके टुकडे निकाल उसमें वूरा मासा ४ डालके पीणा इससे श्वेतप्रदर मिटकर ताकत आती है २ सूंठका महीन चूर्ण १ तोला घी २ तोला गरम कर दाणा पटकणा ५ तोला गुडसे पाक करणा फजरमें खाणा इससेवादी कलतर मंदाग्नि आम वगेरे मिटके ताकत आती है, ३ सोभाग्य सूंठका पाक नं० ३७६.

इति श्रीमत् जैनधर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे निदान चिकित्सा वर्णनो नाम षष्ठप्रकाशः पूर्णमगात् ॥

प्रकाश ७ मा।

प्रकाश सातमा दुसरे भागमें लिखेंगें तथापि सप्तम परिमंगलार्थ ब्राम्ही मोदेरेकी गुटिका इहां लिखता हूं.

(ब्राम्ही गुटिका)--ब्राम्ही कस्तूरी जायफल जावंत्री लोंग दालचीनी केशर नाग-केशर अकलकरा चिरायता पींपला मूल पींपर चित्रक मिरच वडी इलायची खैरसार कुलंजन सतावर पोकर मूल तेजबल अभ्रक लोहसार तमालपत्र संखाहोली अजमोद सोवा अजवाण मिनकादाख तोला ३० बीज निकाल कर पीसकर गोली बांधणी,

(मोहरेकी गोली)--वछनाग (काला सींघी मोहरा) १ तोला मिरच काली तोला २ लोंग १ तोला दालचीनी तोला १ जावंत्री १ तोला अकलकरो तो १ सूंठके काढेमें गोली बांधणी,

(भेंरू रस गोली)--हींगूल शुद्ध १ मोहरा शुद्ध १ मिरच १ तेलिया सोहगी शुद्ध १ पींपर १ लोंग १ दालचीणी १ सूंठ रसमें गोली,

(दांतके दरदका मंजन)-नीलाथोथा भुंजाभया तो १ कूठ तो १ मजीठ तो १ कत्था तोला १

(साधारण खास गुटिका)-हरडेकी छाल वेहेडेकी छाल आंवला ववूलकी छाल काली मिरच लूण खैरसार विलायती अनारका छिलका,

(दस्त वंधकी गोली अतीसारपर)-सूंठ अफीम मोचरस पतीस आंवकी गुठली जीरा जायफल धावडीका फूल नेतरवाला अनारकली पुराणीगिरी अफीम छोतरेके रशमें गोली,

अब आगे दुसरे भागमें सातमा प्रकाश छपेगा जिसमें सात धातू उपधातू रत्न उप रत्नोंका सोधन मारण अनुपान पथ्यापथ्य सब रोगोंपर रसोंका इलाज अजीर्ण मिटाना इत्यादि अनेक अनुभविक वस्तुओंका संग्रह होगा इस ग्रथमें भूलचूक होय तो क्षमा करणा माफी मांगता हुं,

अथ ग्रंथ सग्रह कृतप्रशस्ति--आदिकह्यो श्रीऋषभने, आयुर्धर्मप्रकाश, ताविध श्रीमहा-वीरनें, प्रगट कियो सुविलाश १ चवदे पूर्व मध्य यह, व्याधिहरणको मर्म, ऋषि मुनि जन ग्रंथन रच्यो, वैद्यक ग्रंथ सुधर्म २ ता ग्रंथनकू देखके अनुभव अतिविस्तार धर्म अर्थ अरु काममें वैद्यक विद्यासार ३ परंपरा जिन वीरके, पट्ट प्रभाकर सूर श्रीजिन कुशल सूरीश्वरू ज्ञान क्रियामें पूर ४ क्षेम कीर्तिगणि राजसें क्षेम धाडवड साख धर्मशील गुरु राजके कुशल निधान सुभाख ५ विक्रम नग्र सुवाशमें उदय भयो ज्यूचद गंगासिह नर राजको तेज प्रताप समंद ६ खरतर भट्टारक महा युगवर कीर्ति सूरिंद शशि सूरज शमचिर रहो सदा करो आनंद ७ विक्रम शत उगणीशमें वर वासठके वर्ष माघ सुदि पंचमदिने ग्रंथ लिख्यो धरहर्ष ८ पाठक प्राणाचार्यनें कर संग्रह यह ग्रथ रच्यो रामऋद्धिसारगणि गुरु मंगलको पथ ९ इति श्रीमज्जैन धर्माचार्य संगृहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः कृत वैद्यदीपक ग्रंथे रोग लक्षण चिकित्सा क्रमवर्णनो नाम षष्ठ प्रकाशः वैद्यदीपक ग्रंथस्य प्रथमो भागः सम्पूर्णतामगात् ॥

(हरडे)—बडी हरडेका चूर्ण बूढे आदमीयोंकों रसायणरूप और ताकतवर है, ऋतुओंके अनुपान इस मुजब है, १ ग्रीष्म ऋतूमें तीन वर्षके पुराणे गुडके संग २ प्रावट् ऋतुमें सींधा निमक संग ३ सरद ऋतूमें मिश्री संग ४ हेमंत ऋतूमें सूंठ संग ५ वहोत मेघ या ओलेगिरे हेमंत ऋतूमें एसी शिसर ऋतूमें पींपर संग ६ वशंत ऋतूमें सहत संग हरडेकूं तरुण आते भये ज्वरमें बारे दिनोंतक तथा धातू क्षीण जवान अदमीकूं देणा नहीं सन्निपात ज्वरमें औषधोंके प्रयोगमें देणा सामान्य तोरमुनक्कादाख मिश्री मिलाकर खाणेकूं देणी २ हरडे मधुपक्क आम्लपित्त तथा संग्रहणी मिटाती है पथ्य रोग मुजब करणेसें ३ हरडे पाक तथा अवलेही नं० ३६४) जीर्णज्वर तथा धातूकी क्षीणताकूं मिटाकर ताकत लाती है, ४ हरडेका मुरब्बा मलकी कब्जी मिटाती है, ऋषभ देवके पुत्र वृहदात्रेयनें त्रिफलाके तथा न्यारे २ हरडे वहेडे आंवलेके अनेकानेक गुण लिखे हैं, त्रिफलामेंसे कोइभी फलका विकार होय तो सहत खिलाणी.

(पींपर)—१ पीपर सहत घी दूध मिश्री मिलाकर खाणेसें पुष्टि करती है मंदाग्नि मिटाती है, २ सहत १ भाग घी २ भाग पीपर ४ भाग मिश्री ८ भाग दूध ३२ भाग तज तमालपत्र इलायची नागकेशर चारों मिलाकर ६ भाग इन सवोंका पाक वणाकर खाणेसें धातू क्षीणता बुखार दम फीकास अग्निमंद वगेरे मिटता है, ३ पीपर पाक (नं० ३७५) वर्द्धमान पीपल पृष्ट २९४)

(मेथी)—१ मेथीका आटा तोला ३ अधसेर दूधमें रातका भिगाकर रखणा फजर एक वरतणमें तोला ५ घी डालकर तपाकर उसमें सेकणा दाणा पडे तब लाल सक्कर अथवा गुडका पाक वणाना इससें औरतोंके स्तनमें दूध वढता है ताकत आती है, मेथीकूं घीमें सेक आटा करणा गुडकी चासणीमें लड्डू वणाना खानेसें कलतर मेटती है, ३ मेथी पाक नं० ३७४

(सूंठ)—१ दूध तोला १४ पाणी तोला २१ उसमें चार मासा सूंठके टुकडे डाल पाणी जले जहांतक उकाल सूंठके टुकडे निकाल उसमें बूरा मासा ४ डालके पीणा इससे श्वेतप्रदर मिटकर ताकत आती है २ सूंठका महीन चूर्ण १ तोला घी २ तोला गरम कर दाणा पटकणा ५ तोला गुडसे पाक करणा फजरमें खाणा इससेवादी कलतर मंदाग्नि आम वगेरे मिटके ताकत आती है, ३ सोभाग्य सूंठका पाक नं० ३७६.

इति श्रीमत् जैनधर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे निदान चिकित्सा वर्णनो नाम षष्ठप्रकाशः पूर्णमगात् ॥

प्रकाश ७ मा।

प्रकाश सातमा दुसरे भागमें लिखेंगें तथापि सप्तम परिमंगलार्थ ब्राम्ही मोहरेकी गुटिका इहां लिखता हूं.

(ब्राम्ही गुटिका)--ब्राम्ही कस्तूरी जायफल जावंत्री लोंग दालचीनी केशर नाग-केशर अकलकरा चिरायता पींपला मूल पींपर चित्रक मिरच वडी इलायची खैरसार कुलंजन सतावर पोकर मूल तेजवल अभ्रक लोहसार तमालपत्र संखाहोली अजमोद सोवा अजवाण मिनकादाख तोला ३० बीज निकाल कर पीसकर गोली चांधणी,

(मोहरेकी गोली)--वछनाग (काला सींघी मोहरा) १ तोला मिरच काली तोला २ लोंग १ तोला दालचीनी तोला १ जावंत्री १ तोला अकलकरो तो १ सूंठके काढेमें गोली चांधणी,

(भेरू रस गोली)–हींगूल शुद्ध १ मोहरा शुद्ध १ मिरच १ तेलिया सोहगी शुद्ध १ पींपर १ लोंग १ दालचीणी १ सूंठ रसमें गोली,

(दांतके दरदका मंजन)-नीलाथोथा भुंजाभया तो १ कूठ तो १ मजीठ तो १ कत्था तोला १

(साधारण खास गुटिका)-हरडेकी छाल बेहेडेकी छाल आंवला चंबूलकी छाल काली मिरच लूण खैरसार विलायती अनारका छिलका,

(दस्त चंधकी गोली अतीसारपर)-सूंठ अफीम मोचरस पतीस आंवकी गुठली जीरा जायफल धावडीका फूल नेतरवाला अनारकली पुराणीगिरी अफीम छोतेरके रशमें गोली,

अब आगे दुसरे भागमें सातमा प्रकाश छपेगा जिसमें सात धातू उपधातू रत्न उपरत्नोंका सोधन मारण अनुपान पथ्यापथ्य सब रोगोंपर रसोंका इलाज अजीर्ण मिटाना इत्यादि अनेक अनुभविक वस्तुओंका संग्रह होगा इस ग्रंथमें भूलचूक होय तो क्षमा करणा माफी मांगता हुं,

अथ ग्रंथ सग्रह कृत्प्रशस्ति–आदिकह्यो श्रीऋषभने, आयुर्धर्मप्रकाश, ताविध श्रीमहावीरनें, प्रगट कियो सुविलाश १ चवदे पूर्व मध्य यह, व्याधिहरणको मर्म, ऋषि मुनि जन ग्रंथन रच्यो, वैद्यक ग्रंथ सुधर्म २ ता ग्रंथनकूं देखके अनुभव अतिविस्तार धर्म अर्थ अरु काममें वैद्यक विद्यासार ३ परंपरा जिन वीरके, पट्ट प्रभाकर सूर श्रीजिन कुशल सूरीश्वरू ज्ञान क्रियामें पूर ४ क्षेम कीर्तिगणि राजसें क्षेम धाडवड साख धर्मशील गुरु राजके कुशल निधान सुभाख ५ विक्रम नग्र सुवासमें उदय भयो ज्यूचंद गंगासिह नर राजको तेज प्रताप समंद ६ खरतर भट्टारक महा युगवर कीर्ति सूरिंद शशि सूरज शमचिर रहो सदा करो आनंद ७ विक्रम शत उगणीशमें वर वासठके वर्ष माघ सुदि पंचमदिने ग्रंथ लिख्यो धरहर्ष ८ पाठक प्राणाचार्यनें कर संग्रह यह ग्रंथ रच्यो रामऋद्धिसारगणि सुमंगलको पंथ ९ इति श्रीमज्जैन धर्माचार्य संगृहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः कृत वैद्यदीपक ग्रंथस्य वैद्यदीपक ग्रंथे रोग लक्षण चिकित्सा क्रमवर्णनो नाम षष्ठ प्रकाशः प्रथमो भागः सम्पूर्णतामगात् ॥

(हरडे)–बडी हरडेका चूर्ण बूढे आदमीयोंकों रसायणरूप और ताकतवर है, ऋतुओंके अनुपान इस मुजब है, १ ग्रीष्म ऋतूमें तीन वर्षके पुराणे गुडके संग २ प्रावट् ऋतुमें सींधा निमक संग ३ सरद ऋतूमें मिश्री संग ४ हेमंत ऋतूमें सूंठ संग ५ वहोत मेघ या ओलेगिरे हेमंत ऋतूमें एसी शिसर ऋतूमें पींपर संग ६ वशंत ऋतूमें सहत संग हरडेकूं तरुण आते भये ज्वरमें बारे दिनोंतक तथा धातू क्षीण जवान अदमीकूं देणा नहीं सन्निपात ज्वरमें औषधोंके प्रयोगमें देणा सामान्य तोरमुनक्कादाख मिश्री मिलाकर खाणेकूं देणी २ हरडे मधुपक्क आम्लपित्त तथा संग्रहणी मिटाती है पथ्य रोग मुजब करणेसें ३ हरडे पाक तथा अवलेही नं० ३६४) जीर्णज्वर तथा धातूकी क्षीणताकूं मिटाकर ताकत लाती है, ४ हरडेका मुरव्वा मलकी कब्जी मिटाती है, ऋषभ देवके पुत्र वृहदात्रेयनें त्रिफलाके तथा न्यारे २ हरडे वहेडे आंवलेके अनेकानेक गुण लिखे हैं, त्रिफलामेंसे कोइभी फलका विकार होय तो सहत खिलाणी.

(पीपर)–१ पीपर सहत घी दूध मिश्री मिलाकर खाणेसें पुष्टि करती है मंदाग्नि मिटाती है, २ सहत १ भाग घी २ भाग पीपर ४ भाग मिश्री ८ भाग दूध ३२ भाग तज तमालपत्र इलायची नागकेशर चारों मिलाकर ६ भाग इन सबोंका पाक वणाकर खाणेसें धातू क्षीणता बुखार दम फीकास अग्निमंद वगेरे मिटता है, ३ पीपर पाक (नं० ३७५) वर्द्धमान पीपल पृष्ट २९४)

(मेथी)–१ मेथीका आटा तोला ३ अधसेर दूधमें रातका भिगाकर रखणा फजर एक वरतणमें तोला ५ घी डालकर तपाकर उसमें सेकणा दाणा पडे तब लाल सक्कर अथवा गुडका पाक वणाना इससें औरतोंके स्तनमें दूध वढता है ताकत आती है, मेथीकूं घीमें सेक आटा करणा गुडकी चासणीमें लड्डू वणाना खानेसें कलतर मेटती है, ३ मेथी पाक नं० ३७४

(सूंठ)–१ दूध तोला १४ पाणी तोला २१ उसमें चार मासा सूंठके टुकडे डाल पाणी जले जहांतक उकाल सूंठके टुकडे निकाल उसमें बूरा मासा ४ डालके पीणा इससे श्वेतप्रदर मिटकर ताकत आती है २ सूंठका महीन चूर्ण १ तोला घी २ तोला गरम कर दाणा पटकणा ५ तोला गुडसे पाक करणा फजरमें खाणा इससेवादी कलतर मंदाग्नि आम वगेरे मिटके ताकत आती है, ३ सोभाग्य सूंठका पाक नं० ३७६.

इति श्रीमत् जैनधर्माचार्य संग्रहीते उपाध्याय रामऋद्धि सारगणि विरचिते वैद्यदीपक ग्रंथे निदान चिकित्सा वर्णनो नाम पष्ठप्रकाशः पूर्णमगात् ॥

प्रकाश ७ मा।

प्रकाश सातमा दुसरे भागमें लिखेंगें तथापि सप्तम परिमंगलार्थ ब्राम्ही मोहरेकी गुटिका इहां लिखता हूं.

(ब्राम्ही गुटिका)-ब्राम्ही कस्तूरी जायफल जावंत्री लोंग दालचीनी केशर नागकेशर अकलकरा चिरायता पींपला मूल पींपर चित्रक मिरच वडी इलायची खैरसार कुलंजन सतावर पोकर मूल तेजवल अभ्रक लोहसार तमालपत्र संखाहोली अजमोद सोवा अजवाण मिनकादाख तोला ३० वीज निकाल कर पीसकर गोली वांधणी,

(मोहरेकी गोली)--वछनाग (काला सींघी मोहरा) १ तोला मिरच काली तोला २ लोंग १ तोला दालचीनी तोला १ जावंत्री १ तोला अकलकरो तो १ संूठके काढेमें गोली वांधणी,

(भेरू रस गोली)-हींगूल शुद्ध १ मोहरा शुद्ध १ मिरच १ तेलिया सोहगी शुद्ध १ पींपर १ लोंग १ दालचीणी १ सूंठ रसमें गोली,

(दांतके दरदका मंजन)-नीलाथोथा भुंजाभया तो १ कूठ तो १ मजीठ तो १ कत्था तोला १

(साधारण खास गुटिका)-हरडेकी छाल वेहेडेकी छाल आंवला वंवूलकी छाल काली मिरच लूण खैरसार विलायती अनारका छिलका,

(दस्त वंधकी गोली अतीसारपर)-सूंठ अफीम मोचरस पतीस आंवकी गुठली जीरा जायफल धावडीका फूल नेतरवाला अनारकली पुराणीगिरी अफीम छोतरेके रशमें गोली,

अब आगे दुसरे भागमें सातमा प्रकाश छपेगा जिसमें सात धातू उपधातू रत्न उपरत्नोंका सोधन मारण अनुपान पथ्यापथ्य सव रोगोंपर रसोंका इलाज अजीर्ण मिटाना इत्यादि अनेक अनुभविक वस्तुओंका संग्रह होगा इस ग्रंथमें भूलचूक होय तो क्षमा करणा माफी मांगता हुं,

अथ ग्रंथ संग्रह कृत्प्रशस्ति—आदिकह्यो श्रीऋषभने, आयुर्धर्मप्रकाश, ताविध श्रीमहावीरनें, प्रगट कियो सुविलाश १ चवदे पूर्व मध्य यह, व्याधिहरणको मर्म, ऋषि मुनि जन ग्रंथन रच्यो, वैद्यक ग्रंथ सुधर्म २ ता ग्रंथनकूं देखके अनुभव अतिविस्तार धर्म अर्थ अरु काममें वैद्यक विद्यासार ३ परंपरा जिन वीरके, पट्ट प्रभाकर सूर श्रीजिन कुशल सूरीश्वरू ज्ञान क्रियामें पूर ४ क्षेम कीर्तिगणि राजसें क्षेम धाडवड साख धर्मशील गुरु राजके कुशल निधान सुभाख ५ विक्रम नग्र सुवाशमें उदय भयो ज्यूचद गंगासिंह नर राजको तेज प्रताप समंद ६ खरतर भट्टारक महा सुगवर कीर्ति सूरिंद शशि सूरज शगचिर रहो सदा करो आनंद ७ विक्रम शत उगणीशमें वर वासठके वर्ष माघ सुदि पंचमदिनें ग्रंथ लिख्यो धरहर्ष ८ पाठक प्राणाचार्यनें कर संग्रह यह ग्रंथ रच्यो रामऋद्धिसारगणि सुख मंगलको पथ ९ इति श्रीमज्जैन धर्माचार्य संगृहीते उपाध्याय श्रीरामऋद्धि सारगणिः कृत वैद्यदीपक ग्रंथे रोग लक्षण चिकित्सा क्रमवर्णनो नाम षष्ट प्रकाशः वैद्यदीपक ग्रंथस्य प्रथमो भागः सम्पूर्णतामगात् ॥

॥ श्रीः ॥

॥ सद्गुरुभ्योनमः ॥

॥ वैद्यदीपक पुस्तक इस आशयसें संग्रह किया गयाके हमारे भारत वर्षके आम व्यापारी लोक अपणे स्वजनोंकों पत्र देणेमें लिखा करते हैं डीलारा जावता राखीजो सारी मुदारडी लांसूं छै. विचारणेकी वात है, ये लिखणा सिरप कागद काला करणेके वास्ते है या अमल करणेके वास्ते तब तो निश्चयसें कहणा होगाके अमल (वरतावके) वास्ते वरतावतो जवही वण सकता है के आदमके काममें आणेवाले पदार्थोंका तेसेंही खानपान और चालचलनके गुण अवगुण जाणणेसें डीलांका जावता वणेगा विलकुल अजाण क्या जावता करेंगें वो सव ज्ञान होणेके वास्ते इस ग्रंथका प्रयास है, जो पढकर या सुणकर इस कायदेसें चलेगा वो तनदुरस्त रहेगा लाखों वेमारोंकों इस ग्रंथसें फायदा पोहचायगा आगे२ आनंद फलकुशल मंगल होगा.

प्रथम ग्राहक वणणेवाले महाशयोंके नाम.

१ उ० श्रीउदयचंदगणिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीपूनमचंद समेरमुनिः	भीनासर.
१ महर्षि श्रीकेशरीचंद कनइयालाल	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीजोधराजमुनिः	सिरदार सहर.
१ पं० प्र० श्रीवृद्धीचंद्र रामचंद्रमुनिः	नयाहाला सिंध.
१ पं० प्र० श्रीरत्नविजयमुनिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीपदमसागरमुनिः	नागोर.
१ महर्षि श्रीकिसनचंद केवलचंद	जयपुर.
१ महर्षि श्रीकेशरीचंद देवकर्ण	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीलखमीचंद सुंदरलालमुनिः	जयपुर.
१ महर्षि श्रीसूरजमलजी	पाली.
१ महर्षि श्रीरतनचंद पूनमचंद	रीयावडी.
१ महर्षि श्रीभैरवचंद मगनमल	सांभर.
१ पं० प्र० श्रीश्रीपालचंद्रमुनिः	वीकानेर.
१ पूज्य श्रीनरपतचंदजी चूनीलाल	
१ पं० प्र० श्रीगंभीरविजय जसविजयमुनिः	कुचामण.
१ पं० प्र० श्रीगौतमविजयमुनिः	डीसा गुजरात.
१ पं० प्र० श्रीमानविजय सुगतिविजयमुनिः	वोरसद गुजरात.

॥ श्रीः ॥

॥ सद्गुरुभ्योनमः ॥

॥ वैद्यदीपक पुस्तक इस आशयसें संग्रह किया गयाके हमारे भारत वर्षके आम व्यापारी लोक अपणे स्वजनोंकों पत्र देणेमें लिखा करते हैं डीलारा जावता राखीजो सारी मुदारडी लांसूं छै. विचारणेकी वात है, ये लिखणा सिरप कागद काला करणेके वास्ते है या अमल करणेके वास्ते तब तो निश्चयसें कहणा होगाके अमल (वरतावके) वास्ते वरतावतो जवही बण सकता है के आदमके काममें आणेवाले पदार्थोंका तेसेंही खानपान और चालचलनके गुण अवगुण जाणणेसें डीलांका जावता वणेगा विलकुल अजाण क्या जावता करेंगें वो सब ज्ञान होणेके वास्ते इस ग्रंथका प्रयास है, जो पढ-कर या सुणकर इस कायदेसें चलेगा वो तनदुरस्त रहेगा लाखों वेमारोंकों इस ग्रंथसें फायदा पोहचायगा आगे२ आनंद फलकुशल मंगल होगा.

प्रथम ग्राहक वणणेवाले महाशयोंके नाम.

१ उ० श्रीउदयचंदगणिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीपूनमचंद समेरमुनिः	भीनासर.
१ महर्षि श्रीकेशरीचंद कनइयालाल	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीजोधराजमुनिः	सिरदार सहर.
१ पं० प्र० श्रीवृद्धीचंद्र रामचंद्रमुनिः	नयाहाला सिध.
१ पं० प्र० श्रीरत्नविजयमुनिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीपदमसागरमुनिः	नागोर.
१ महर्षि श्रीकिसनचंद केवलचंद	जयपुर.
१ महर्षि श्रीकेशरीचंद देवकर्ण	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीलखमीचंद सुंदरलालमुनिः	जयपुर.
१ महर्षि श्रीसूरजमलजी	पाली.
१ महर्षि श्रीरतनचद पूनमचंद	रींयावडी.
१ महर्षि श्रीभैरवचंद मगनमल	सांभर.
१ पं० प्र० श्रीश्रीपालचंद्रमुनिः	वीकानेर.
१ पूज्य श्रीनरपतचंदजी चूनीलाल	
१ प० प्र० श्रीगंभीरविजय जसविजयमुनिः	कुचामण.
१ पं० प्र० श्रीगौतमविजयमुनिः	डीसा गुजरात.
१ पं० प्र० श्रीमानविजय सुगतिविजयमुनिः	वोरसद गुजरात.

१ पं० प्र० श्रीलालविजयमुनिः	मेडता.
१ पं० प्र० श्रीजयचंदमुनिः	वीकानेर.
२ महर्षि श्रीदयासागर	मुंबई.
१ पं० वैद्य श्रीजीवणमलमुनिः	वीकानेर.
१ पं० प्र० श्रीगणेशचंदजीमुनिः	वीदासर.
१ वाचक श्रीहुकमचंदगणिः फूलचंदमुनिः	गंगा सहर.
१ पं० श्रीरामधनमुनिः	वीकानेर.
१ साद्वी जेठी.	वीकानेर.
२ नग्रसेठ श्रीचांदमलजी ढढा.	वीकानेर.
२ सेठ श्रीमगनमल मंगलचंद झावक	वीकानेर.
२ सेठ श्रीवाहादरमल जसकरण रामपुरिया	वीकानेर.
२ सेठ श्रीपन्नालाल वाधमल रामपुरिया	खुजनेर.
१ सेठ श्रीचैनरूप संपतराम दूगड	सिरदार सहर.
१ सेठ श्रीनेमचंद सोभागमल धाडीवाल	वीकानेर.
१ सा० श्रीमुन्नालाल खुसालचंद गोलछा	वीकानेर.
१ सा० श्रीचून्नीलाल गोलछा	वीकानेर.
१ सा० श्रीभीषणचंद गोलछा	वीकानेर.
१ सा० श्रीकेसरीचंद भांडावत	वीकानेर.
१ सेठ श्रीपूनमचंद दीपचंद सांवसुखा	वीकानेर.
१ सेठ श्रीपन्नालाल सुगणचंद सांवसुखा	वंगला.
१ सेठ श्रीमोतीलाल मोहणलाल सांवसुखा	वंगला.
१ सा० श्रीसुगुणचंद नाहटा.	वीकानेर.
१ सा० श्रीरूपचंद सूराणा	कलकत्ता.
१ सा० श्रीअमोलखचंद चतर	मेडता.
१ सा० श्रीमंगलचंद वेगाणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीमुनीम माणकचंद पारख	वीकानेर.
१ सा० श्रीआसकरण वरढिया	वीकानेर.
१ सा० श्रीकेसरीचंद सांड	वीकानेर.
१ सा० श्रीकुंदणमलजी वेगाणी	वीकानेर.
१ सा० श्री वींझराज मोहणलाल गोलछा.	वीकानेर.
१ सा० श्रीधनसुखदास लुणिया	वीकानेर.

१ सा० श्रीहीरालाल बांठिया — वीकानेर.
१ सा० श्रीगेवरचंद पारख — वीकानेर.
१ सा० श्रीबुलाकीदास पुगलिया — वीकानेर.
१ सा० श्रीभोजराज कोचर मुंहता — वीकानेर.
१ सा० श्रीतेजकरण मूलचद रामपुरिया — वीकानेर.
१ सा० श्रीरेखचंद कोचर मुंहता — वीकानेर.
१ सा० श्रीइंदराजमल कोचर मुंहता — वीकानेर.
१ सा० श्रीकनइयालाल डागा — जयपुर.
१ सा० श्रीअमरचंद कोचर मुंहता — वीकानेर.
१ सा० श्रीलखमीचंद कोचर मुंहता — वीकानेर.
१ सा० श्रीजसकरण कोचर मुंहता — वीकानेर.
१ सा० श्रीसहसकिरण नाहटा — वीकानेर.
१ सा० श्रीविरधीचंद नाहटा — वीकानेर.
१ सा० श्रीवाघमलजी दूगड — वीकानेर.
१ सा० श्रीकिसनचंद दीपचंद बांठिया — भीनासर.
१ सा० श्रीकेवलचंद कोचर मुंहता — वीकानेर.
१ सा० श्रीमानसिंघ श्रीमाल — अजीमगंज.
१ सा० श्रीचोथमल मोतीलाल मालू — वरोडा.
१ सा० श्रीरिषभदास माणकचंद तातेड — मेडता.
१ सा० नथमल मूलचंद पारख — इंदोर.
१ सा० श्रीकनकमल धाडेवाल — इंदोर.
१ सा० श्रीहजारीमल लुणिया — कलकत्ता.
१ सा० श्रीकेसरीचंदजी कोठारी — कलकत्ता.
१ सा० श्रीसागरमल्ल वोथरा — कलकत्ता.
१ सा० श्रीलखमीचंद आसकरण — कलकत्ता.
१ सा० श्रीआणंदमल वगसी — कलकत्ता.
१ सा० श्रीचूनीलाल वोथरा — कलकत्ता.
१ सा० श्रीविसनचद राखेचा — कलकत्ता.
१ सा० श्रीनरायणदास शिववगस — कलकत्ता.
१ सा० श्रीकुंदणमल नाहटा — कलकत्ता,
५ सा० श्रीजानकीदास किसनलाल अग्रवाल — कलकत्ता.

सा० श्रीशोभाचंद जमड कलकत्ता.
सा० श्रीरावतमल ताजमल बोथरा कलकत्ता.
सा० श्रीरायकालकादास वद्रीदास झवरी कलकत्ता.
सा० श्रीफतेचंद पारख कलकत्ता.
सा० श्रीगंगाराम गोलछा कलकत्ता.
सा० श्रीगजानंद जालाण कलकत्ता.
सा० श्रीतनसुखदास दूगड सिरदार सहर.
सा० श्रीजेठमल नवलगढियो रततगढ.
सा० श्रीपनेचंद सींघी सुजाणगढ.
सा० श्रीआणंदमल लोढा सुजाणगढ.
सा० श्रीरिद्धकरण छत्रसिंघ कोचर मुंहता बीकानेर.
सा० श्रीहुकमचंद गोविंदराम नाहटा छापर.
सा० श्रीमाणकचंद गोकुलचंद बीदासर.
सा० श्रीभीखणचंद झवरीमल सांवसुखा राजगढ.
सा० श्रीहीराचंद पूनमचंद छजलाणी सिकंदराबाद.
सा० कस्तूरचंद नानचंद मुंबई.
सा० श्रीविजयचंद ताराचंद झवरी मुंबई.
सा० श्रीकनीराम वालचंद आभड मुंबई.
सा० श्रीनगीनचंद कपूरचंद झवरी सुरत.
सा० श्रीधनराज जीडागा गाढरवाडा.
सा० श्रीजसराजजी भांडावत मुंबई.
सा० श्रीमुनीम मूलचंद छगनमल कातेला बीकानेर.
सा० श्रीमुनीम शिवनाथजी आसावा मुंबई.
सा० श्रीप्रेमसुख भेरुंदान कोचर मुंहता अमरसर.
सा० श्रीउदयचंद कोठारी बीकानेर.
सा० श्रीलखमीचंद नेमीचंद मुणोत भोपाल.
सा० श्रीरिषभदास वैद मुंहता मेडता.
सा० श्रीपन्नालाल मोतीलाल वांठिया बीकानेर.
सा० शिववगस कोचर मुंहता बीकानेर.
सा० श्रीसमेरमल भेरूंदान वरढिया बीकानेर.
सा० श्रीरिखसीदास कासीराम कलकत्ता.

१ सा० श्रीमूलचंद सदासुख वैद	रतनगढ.
१ सा० श्रीमगनमलजी पूंजावत पोरवाड	उदयपुर.
१ सेठ श्रीकुंदणमल वाफणा	उदयपुर.
१ यतीजी श्रीदुलीचंदजी वैद्य	उदयपुर.
१ मुहता श्रीलछमीलाल वच्छावत	उदयपुर.
१ वैद सा० श्रीचूनीलाल	उदयपुर.
१ सा० श्रीपांचीलाल गोलछा	फलोधी.
१ सा० श्रीजमुनालाल कोठारी	कलकत्ता.
१ श्रीयुत शिवनारायण सुनार	वीकानेर.
१ श्रीयुत जगन्नाथ सुनार	वीकानेर.
१ उस्ता० श्रीमहम्मूद सिलावटा	वीकानेर.
१ वैद्य श्रीअगरचंद	डीडवाणा.
१ जरी श्रीलिखमीचंद वावर	सिरदार सहर.
१ सेठ श्रीरिखनाथ शिवकृष्ण वाघडी	कलकत्ता.
१ सेठ श्रीलछमी नारायण कृष्णगोपाल विहाणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीरामकिसन करणाणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीकिसनदास मीमांणी	वीकानेर.
१ सा० शिवकिसनदास मीमांणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीकालूराम मीमांणी	वीकानेर.
१ सा० श्रीईसरदास चांडक	वीकानेर.
१ सा० श्रीमंगलचंद मोहता	कलकत्ता.
१ सा० श्रीवंशीधर गोपीकिसन वाघडी	कलकत्ता.
१ सा० श्रीनारायणदास रुखमानंद मोहता	कलकत्ता.
१ सा० श्रीकिसनदास शिवकिसन	कलकत्ता.
१ सा० श्रीगोपीकिसन विन्नाणी	कलकत्ता.
१ सा० श्रीटीकमचंद मोहता	कलकत्ता.
५ सेठ श्रीरायसोभागमल वहादुर ढढा	अजमेर.
१ सेठ शिववगस पन्नालाल	लातूर.
१ सा० श्रीजोधराज धनराज	लातूर.
१ सा० श्रीमूरजी रुघनाथ	लातूर.
१ सा० श्रीचांपसी धरमसी	लातूर.

सा० श्रीशिवजीराम मणियार	लातूर.
पं० श्रीरामनाथ व्यास	लातूर.
पं० श्रीजेठमल व्यास	लातूर.
श्रीयुत नागराज सेवग वैद्य	वीकानेर.
श्रीयुत भैरवदत्त वैद्य आसोपा	वीकानेर.
श्रीयुत जगन्नाथ मिश्र वैद्य	वीकानेर.
श्रीयुत भतमाल व्यास वैद्य	वीकानेर.
श्रीयुत नथमल सेवग	कलकत्ता.
श्रीयुत डाकतर छैलविहारीलाल	
श्रीयुत अंम्बाप्रशादशर्मा माष्टर	योधपुर.
श्रीयुत हरलाल वोहरा	मेडता.
श्रीमनीराम धूलाजी सेवग	शिवगंज.
पंडितजी श्रीजयदयाल शर्म्मा	वीकानेर.
श्रीयुत कालूराम व्यास	वीकानेर.
सा० श्रीआसाराम राठी	वीकानेर.
श्रीयुत लाभचंद प्रोहित	वीकानेर.
श्रीयुत चूनीलाल पांडे	कलकत्ता.
सा० श्रीलखमीचंद छाजेड	वीकानेर.
सा० श्रीआसकरण जादवराय पूगलिया	वीकानेर.
सा० श्रीमेघकरण खजानची	मधरास.
सा० श्रीजीवराज शीताराम मुंधडा	कलकत्ता.
सा० श्रीदानमल नाहटा	वीकानेर.
सा० श्रीलाभचंद पारख	वीकानेर.
सा० श्रीकानमल वांठिया	भीनासर.
सा० श्रीपेमकरण मरोटी	नागपुर.
सा० श्रीरिषभचंद कोचर	वीकानेर.